उवंगसुत्ताणि

४

[खण्ड २]

पण्णवणा, जंबुद्दीवपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, निरयावलियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हिदसाओ

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
युवाचार्य महाप्रज्ञ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रज्ञापर्व वर्ष के उपलक्ष्य में

निग्गंथं पावयणं

उवंगसुत्ताणि

४

(खण्ड २)

पण्णवणा • जंबुद्दीवपण्णत्ती • चंदपण्णत्ती •
सूरपण्णत्ती • उवंगा निरयावलियाओ •
कप्पवडिंसियाओ • पुप्फियाओ •
पुप्फचूलियाओ • वण्हिदसाओ

वाचना प्रमुख

आचार्य तुलसी

सम्पादक

युवाचार्य महाप्रज्ञ

प्रकाशक

जैन विश्व भारती

लाडनूं [राजस्थान]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
लाडनूं [राजस्थान]

प्रबन्ध-सम्पादक :
श्रीचंद रामपुरिया

अर्थ सौजन्य :
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :
विक्रम सम्वत् २०४५ (मर्यादा महोत्सव)
ईस्वी सन् १९८९

पृष्ठांक : ११७०

: जैन विश्व भारती
मूल्य ६००/-

मुद्रक :
मित्र परिषद्, कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित
जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनूं (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

On the occasion of Pragyaprav Year

Nigganthaṁ Pāvayaṇam

UVAṄGA SUTTĀNI

IV

(PART II)

PAṆṆAVAṆĀ . JAMBUDDĪVAPAṆṆATTĪ .
CANDAPAṆṆATTĪ . SŪRAPAṆṆATTĪ .
NIRAYĀVALIYĀO . KAPPAVAḌIṂSIYĀO .
PUPPHIYĀO . PUPPHACŪLIYĀO . VAṆHIDASĀO

(Original Text Critically Edited)

Vācanā-pramukha :
ĀCĀRYA TULSI

Editor :
YUVĀCĀRYA MAHĀPRAJÑA

Publisher :
JAIN VISHVA BHARATI
LADNUN (RAJASTHAN)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Publisher :
JAIN VISHVA BHARATI.
Ladnun—**341 306**

Managing Editor :
Shrichand Rampuria,

By Munificence :
Shri Ramlal Hansraj Golchha
Viratnagar (Nepal)

Year of Publication :
Vikram Saṁvat 2045 (Maryada Mahotsava)
1989 A.D.

Pages : **1170**

जैन विश्व भारती
मूल्य ६००/-

Printers :
JAIN VISHVA BHARATI PRESS,
[Established through the financial co-operation of
Mitra Parishad, Calcutta)
Ladnun (Rajasthan)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोधपूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहें हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :	युवाचार्य महाप्रज्ञ
पाठ-संशोधन सहयोगी :	मुनि सुदर्शन
,,	मुनि हीरालाल
शब्दकोश	मुनि श्रीचन्द्र 'कमल'

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूं कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं ।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु;
होकर भी आगम-प्रधान था ।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था;
उसी भिक्षु को विमल भाव से ॥

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं ।
सज्झाय-सज्झाण-रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत ।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से ।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में ।
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से ।

●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रन्थानुक्रम

१. प्रकाशकीय
२. सम्पादकीय (हिन्दी)
३. भूमिका (हिन्दी)
४. सम्पादकीय (अंग्रेजी)
५. भूमिका (अंग्रेजी)
६. विषयानुक्रम
७. संकेत निर्देशिका
८. पण्णवण्णा
९. जंबुद्दीवपण्णत्ती
१०. चंदपण्णत्ती
११. सूरपण्णत्ती
१२. उवंगा निरयावलियाओ
१३. कप्पवडिंसियाओ
१४. पुप्फियाओ
१५. पुप्फचूलियाओ
१६. वण्हिदसाओ

परिशिष्ट

१. संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल
२. तुलनात्मक
३. शब्दकोश
४. शुद्धि-पत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

प्रस्तुत ग्रन्थ उवांगसुत्ताणि ४ का द्वितीय खण्ड है। इस में नौ आगम समाहित हैं—

१. पण्णवणा २. जंबुद्दीवपण्णत्ती ३. चंदपण्णत्ती ४. सूरपण्णत्ती ५. निरयावलियाओ ६. कप्पवडिंसियाओ ७. पुप्फियाओ ८. पुप्फचूलियाओ ९. वण्हिदसाओ।

आगम संपादन एवं प्रकाशन की योजना इस प्रकार है—

१. आगम-सुत्त ग्रन्थमाला—मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।

२. आगम-अनुसंधान ग्रन्थमाला—मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।

३. आगम-अनुशीलन ग्रंथमाला—आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।

४. आगम-कथा ग्रन्थमाला—आगमों से संबंधित कथाओं का संकलन और अनुवाद।

५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला—आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

६. आगमों के केवल हिंदी अनुवाद के संस्करण।

प्रथम आगम-सुत्त ग्रन्थमाला में निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं[1]—

(१) अंगसुत्ताणि (१)—इसमें आयारो, सुयगडो, ठाणं, समवाओ—ये चार अंग समाहित हैं।

(२) अंगसुत्ताणि (२)—इसमें पंचम अंग भगवई प्रकाशित है।

(३) अंगसुत्ताणि (३)—इसमें नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं—ये ६ अंग हैं।

(४) उवंगसुत्ताणि (४) (खं० १))—इसमें (१) ओवाइयं (२) रायपसेणियं और (३) जीवाजीवाभिगमे—ये तीन आगम ग्रन्थ हैं।

(५) उवंगसुत्ताणि (४) (खण्ड २)—प्रस्तुत ग्रन्थ। इसमें पण्णवणा, जंबुद्दीवपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, निरयावलियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हिदसाओ प्रकाशित हो रहे हैं।

(६) नवसुत्ताणि (५)—इसमें आवस्सयं, दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि, नंदी, अणुओगदाराइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीहज्झयणं—ये नौ आगम ग्रन्थ हैं।

द्वितीय आगम अनुसंधान ग्रन्थमाला में निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं—

(१) दसवेआलियं

---

१. इस ग्रंथमाला के अन्तर्गत (१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयरो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयणं, (४) ओवाइयं, (५) समवाओ—ये ग्रंथ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, कलकत्ता द्वारा भी प्रकाशित हुए थे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और २)
(३) ठाणं
(४) समवाओ
(५) सूयगडो (भाग १ और भाग २)

उक्त में से द्वितीय ग्रंथ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुआ है।

तीसरी आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला में निम्न दो ग्रन्थ निकल चुके हैं—

(१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन।
(२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी आगम-कथा ग्रन्थमाला में अभी तक कोई ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हो पाया है।

पांचवीं वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला में दो ग्रन्थ निकल चुके हैं।

(१) दसवैकालिक वर्गीकृत (धर्म प्रज्ञप्ति खं० १)
(२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति खं० २)

छठी केवल आगम हिंदी अनुवाद ग्रन्थमाला में एक 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है।

उक्त प्रकाशनों के अतिरिक्त दसवैकालिक एवं उत्तराध्ययन (मूल पाठ मात्र) गुटकों के रूप में प्रकाशित किए जा चुके हैं।

उक्त विवरण से पाठकों को विदित होगा कि मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित ३२ आगम ग्रंथ आगमसुत्त ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हो चुके हैं। ३२ आगमों का इस प्रकार का आलोचनात्मक प्रकाशन आगम प्रकाशन के इतिहास में प्रथम बार ही सम्मुख आया है।

आगम प्रकाशन कार्य की योजना में निम्न महानुभावों का सहयोग रहा—

(१) सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदालालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी)।
(२) रामलालजी हंसराजजी गोलछा, विराटनगर।
(३) स्व० जयचंदलालजी गोठी, सरदारशहर।
(४) रामपुरिया चेरिटेबल ट्रस्ट, कलकत्ता।
(५) बेगराज भंवरलाल चोरडिया चेरिटेबल ट्रस्ट।

यह ग्रन्थ जैन विश्व भारती के निजी मुद्रणालय में मुद्रित होकर प्रकाशित हो रहा है। मुद्रणालय के स्थापना में मित्र-परिषद्, कलकत्ता के आर्थिक-सहयोग का सौजन्य रहा, जिसके लिए उक्त संस्था को अनेक धन्यवाद।

आगम-संपादन के विविध आयामों के वाचना-प्रमुख हैं आचार्य श्री तुलसी और प्रधान संपादक तथा विवेचक हैं युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी। इस कार्य में अनेक साधु-साध्वी सहयोगी रहे हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस तरह अथक परिश्रम के द्वारा प्रस्तुत इस ग्रन्थ के प्रकाशन का सुयोग पाकर जैन विश्व भारती अत्यंत कृतज्ञ है।

जैन विश्व भारती
२६-६-८७
लाडनूं (राज०)

श्रीचंद रामपुरिया
कुलपति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

प्रस्तुत ग्रन्थ में नौ उपांग हैं—

१. पण्णवणा २. जंबुद्दीवपण्णत्ती ३. चंदपण्णत्ती ४. सूरपण्णत्ती ५. निरयावलियाओ ६. कप्पवडिंसियाओ ७. पुप्फियाओ ८. पुप्फचूलियाओ ९. वण्हिदसाओ ।

उपांग बारह हैं । उवंगसुत्ताणि भाग ४ खण्ड १ में तीन उपांग प्रकाशित हैं । प्रस्तुत ग्रन्थ में शेष नौ उपांगों का मूल-पाठ पाठान्तरसहित सम्मिलित है । अंगसुत्ताणि की शब्दसूची एक स्वतन्त्र पुस्तक (आगम शब्दकोश) में मुद्रित है । पाठक और शोधकर्त्ताओं की सुविधा की दृष्टि से इस खण्ड में उपर्युक्त नौ आगमों की संयुक्त शब्दसूची संलग्न है ।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन के साथ बत्तीस आगमों के प्रकाशन का कार्य सम्पन्न हो जाता है । इस आगम सुत्त ग्रन्थमाला के सात ग्रन्थ सम्पन्न हो रहे हैं:—

१. अंगसुत्ताणि भाग-१
आयारो, सूयगडो, ठाणं, समवाओ ।

२. अंगसुत्ताणि भाग-२
भगवई ।

३. अंगसुत्ताणि भाग-३
नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं ।

४. उवंगसुत्ताणि भाग-४, खण्ड १
ओवाइयं, रायपसेणियं, जीवाजीवाभिगमे ।

५. उवंगसुत्ताणि भाग-४, खण्ड २
पण्णवणा, जंबुद्दीवपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, निरियावलियाओ, कप्पवडिंसियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्हिदसाओ ।

६. नवसुत्ताणि भाग-५
आवस्सयं, दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि, नंदी, अणुओगदाराइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीहज्झयणं ।

७. आगम शब्दकोश (अंगसुत्ताणि शब्दसूची)

इस मूलपाठ की ग्रन्थमाला के अन्तर्गत अन्य ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य अभी चल रहा है । उनमें प्रकीर्णक, निर्युक्ति और भाष्य सम्भावित हैं ।

विक्रम संवत् २०१२ (सन् १९५५) महावीर जयन्ती के दिन आचार्य श्री ने आगम-सम्पादन की घोषणा की । सम्पादन का कार्य उसी वर्ष चतुर्मास में प्रारम्भ हुआ । शुद्ध पाठ के बिना सम्पादन-कार्य में अवरोध आए । तब पाठ-शोधन की ओर ध्यान गया । पाठ-शोधन का कार्य वि० सं०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०१४ (सन् १९५७) में प्रारम्भ हुआ। यह कार्य वि० सं० २०३७ (सन् १९८०) में सम्पन्न हुआ। इसका विवरण इस प्रकार है:—

दसवेआलियं	वि० सं० २०१४
उत्तरज्झयणाणि	वि० सं० २०१६
नंदी, अनुओगदाराइं	वि० सं० २०१८
ओवाइयं, रायपसेणियं	वि० सं० २०१८
ठाणं	वि० सं० २०१८
समवाओ	वि० सं० २०१८
सूयगडो	वि० सं० २०१९
नायाधम्मकहाओ	वि० सं० २०२०
आयारो, आयारचूला	वि० सं० २०२२
उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ	वि० सं० २०२६
अनुत्तरोववाइयदसाओ	वि० सं० २०२६
विपाक	वि० सं० २०२८
पण्हावागरणाइं	वि० सं० २०२८
निरयावलियाओ	वि० सं० २०२९
भगवई	वि० सं० २०३०
पण्णवणा	वि० सं० २०३१
दसाओ, पज्जोसवणाकप्पो	वि० सं० २०३२
कप्पो	वि० सं० २०३३
ववहारो	वि० सं० २०३३
जीवाजीवाभिगमे	वि० सं० २०३४
जंबुद्दीवपण्णत्ती	वि० सं० २०३५
निसीहज्झयणं	वि० सं० २०३५
चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती	वि० सं० २०३७

सम्पादन का कार्य सरल नहीं है—यह उन्हें सुविदित है, जिन्होंने इस दिशा में कोई प्रयत्न किया है। दो-ढाई हजार वर्ष पुराने ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य और भी जटिल है, जिनकी भाषा और भाव-धारा आज की भाषा और भाव-धारा से बहुत व्यवधान पा चुकी है। इतिहास की यह अपवाद-शून्य गति है कि जो विचार या आचार जिस आकार में आरब्ध होता है, वह उसी आकार में स्थिर नहीं रहता। या तो वह बड़ा हो जाता है या छोटा। यह ह्रास और विकास की कहानी ही परिवर्तन की कहानी है। और कोई भी आकार ऐसा नहीं है, जो कृत है और परिवर्तनशील नहीं है। परिवर्तनशील घटनाओं, तथ्यों, विचारों और आचारों के प्रति अपरिवर्तनशीलता का आग्रह मनुष्य को असत्य की ओर ले जाता है। सत्य का केन्द्र-बिन्दु यह है कि जो कृत है, वह सब परिवर्तन-शील है। कृत या शाश्वत भी ऐसा क्या है जहां परिवर्तन का स्पर्श न हो। इस विश्व में जो है, वह वही है जिसकी सत्ता शाश्वत और परिवर्तन की धारा से सर्वथा विभक्त नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द की परिधि में बंधने वाला कोई भी सत्य क्या ऐसा हो सकता है जो तीनों कालों में समान रूप से प्रकाशित रह सके ? शब्द के अर्थ का उत्कर्ष या अपकर्ष होता है -भाषा-शास्त्र के इस नियम को जानने वाला यह आग्रह नहीं रख सकता कि दो हजार वर्ष पुराने शब्द का आज वही अर्थ सही है, जो आज प्रचलित है । 'पाषण्ड' शब्द का जो अर्थ आगम-ग्रंथों और अशोक के शिलालेखों में है, वह आज के श्रमण-साहित्य में नहीं है । आज उसका अपकर्ष हो चुका है । आगम साहित्य के सैंकड़ों शब्दों की यही कहानी है कि वे आज अपने मौलिक अर्थ का प्रकाश नहीं दे रहे हैं । इस स्थिति में हर चिन्तनशील व्यक्ति अनुभव कर सकता है कि प्राचीन साहित्य के सम्पादन का काम कितना दुरूह है ।

मनुष्य अपनी शक्ति में विश्वास करता है और अपने पौरुष से खेलता है, अत: वह किसी भी कार्य को इसलिए नहीं छोड़ देता कि वह दुरूह है । यदि यह पलायन की प्रवृत्ति होती तो प्राप्य की सम्भावना नष्ट ही नहीं हो जाती किन्तु आज जो प्राप्त है, वह अतीत के किसी भी क्षण में विलुप्त हो जाता । आज से हजार वर्ष पहले नवांगी टीकाकार (अभयदेव सूरि) के सामने अनेक कठिनाइयां थीं । उन्होंने उनकी चर्चा करते हुए लिखा है :—

१. सत् सम्प्रदाय (अर्थबोध की सम्यक् गुरु-परम्परा) प्राप्त नहीं है ।
२. सत् ऊह (अर्थ की आलोचनात्मक कृति या स्थिति) प्राप्त नहीं है ।
३. अनेक वाचनाएं (आगमिक अध्यापन की पद्धतियां) हैं ।
४. पुस्तकें अशुद्ध हैं ।
५. कृतियां सूत्रात्मक होने के कारण बहुत गंभीर हैं ।
६. अर्थ विषयक मतभेद भी हैं ।

इन सारी कठिनाइयों के उपरान्त भी उन्होंने अपना प्रयत्न नहीं छोडा और वे कुछ कर गए । कठिनाइयां आज भी कम नहीं हैं । किन्तु उनके होते हुए भी आचार्यश्री तुलसी ने आगम-सम्पादन के कार्य को अपने हाथों में ले लिया । उनके शक्तिशाली हाथों का स्पर्श पाकर निष्प्राण भी प्राणवान् बन जाता है तो भला आगम-साहित्य जो स्वयं प्राणवान् है, उसमें प्राण-संचार करना क्या बडी बात है ? बडी बात यह है कि आचार्यश्री ने उसमें प्राण-संचार मेरी और मेरे सहयोगी साधु-साध्वियों की असमर्थ अंगुलियों द्वारा कराने का प्रयत्न किया है । संपादन कार्य में हमें आचार्यश्री का आशीर्वाद ही प्राप्त नहीं है किन्तु मार्ग-दर्शन और सक्रिय योग भी प्राप्त है । आचार्यवर ने इस कार्य को प्राथमिकता दी है और इसकी परिपूर्णता के लिए अपना पर्याप्त समय दिया है । उनके मार्ग-दर्शन, चिन्तन और प्रोत्साहन का संबल पा हम अनेक दुस्तर धाराओं का पार पाने में समर्थ हुए हैं ।

पाठ सम्पादन-पद्धति

पण्णवणा

प्रज्ञापना के पाठ-शोधन में चार हस्त-लिखित आदर्श काम में लिए गए । आचार्य मलयगिरि की वृत्ति का भी उसमें उपयोग किया गया । मुनि पुण्यविजयजी द्वारा सम्पादित प्रज्ञापना भी हमारे सामने रही । किन्तु हम किसी एक प्रति को आधार मानकर नहीं चलते । टीका की व्याख्या, अन्य आगम तथा शब्दों का अर्थ—ये सब पाठ-शोधन के महत्त्वपूर्ण आधार-बिन्दु रहे हैं । इसलिए हमारे सम्पादन में पाठ-शुद्धि के अनेक विशेष विमर्श उपलब्ध हैं । उदाहरण के लिए गण्ठी शब्द प्रस्तुत है : -"वत्थुल कच्छुल सेवाल गण्ठी" । यहां 'गण्ठी' पद अशुद्ध है । शुद्ध पाठ है 'गत्थी' । पाठ-शोधन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में प्रयुक्त हस्तलिखित आदर्शों तथा मुनिश्री पुण्यविजयजी द्वारा सम्पादित आगमों में 'गण्ठी' पाठ ही उपलब्ध है। इस पाठ का शोधन जीवीजीवाभिगम और जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के आधार पर किया गया है। इसके लिए प्रस्तुत आगम का १।३८ का पाद-टिप्पण द्रष्टव्य है।

दूसरा उदाहरण है—'तिट्ठाणवडिते'। इसके स्थान पर कुछ आदर्शों में 'चउट्ठाणवडिते' पाठ मिलता है। मुनिश्री पुण्यविजयजी ने भी 'चउट्ठाणवडिते' पाठ स्वीकार किया है। किन्तु हमने 'तिट्ठाणवडिते' पाठ वृत्ति के आधार पर मान्य किया है। इसका समर्थन पण्णवणा ५।११५, ११६, की वृत्ति से होता है। प्रज्ञापनावृत्ति पत्र १९५-१९६ तथा पण्णवणा ५।११५ का पाद-टिप्पण द्रष्टव्य है।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति

इसके पाठ-शोधन में सात प्रतियों और तीन टीकाओं का उपयोग किया गया है। उपाध्याय शान्तिचन्द्र की वृत्ति तथा हीरविजय वृत्ति में अनेक पाठान्तर और उनकी टिप्पणियां मिलती हैं। देखें —४।१५९ का पाद-टिप्पण। यह पाठान्तर-बहुल आगम है। उपाध्याय शान्तिचन्द्र ने वाचना-भेद की विस्तृत चर्चा की है।[1] उदाहरण के लिए २।१२ का पाद-टिप्पण द्रष्टव्य हैं। कहीं-कहीं अशुद्ध पाठ के कारण व्याख्या भी अशुद्ध हुई है। देखें—४।४९ का पाद-टिप्पण।

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति

इनके पाठ-शोधन में पांच हस्तलिखित आदर्शों तथा चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति की वृत्तियों का उपयोग किया गया है। एक आदर्श का क्वचित् प्रयोग किया गया है।

चन्द्रप्रज्ञप्ति का पूर्ण रूप उपलब्ध नहीं है। उसका सूर्यप्रज्ञप्ति से जो भेद है वह एक परिशिष्ट में दिया गया है। कुछ हस्तलिखित आदर्श चन्द्रप्रज्ञप्ति के नाम से उपलब्ध हैं। उनके पाठ-भेद सूर्यप्रज्ञप्ति के पाद-टिप्पण में दिए हुए हैं।

निरयावलिका

निरयावलिका आदि पांच वर्गों के पाठ-शोधन में तीन हस्तलिखित आदर्शों तथा श्रीचन्द्रसूरिकृत वृत्ति का प्रयोग किया गया है।

---

१. शान्तिचन्द्रीयवृत्ति पत्र ८७ :

पाठान्तरं—वाचनाभेदस्तद्गतपरिमाणान्तरमाह—मूले द्वादश योजनानि विष्कम्भेन मध्येऽष्ट योजनानि विष्कम्भेन उपरि चत्वारि योजनानि विष्कम्भेन, अत्रापि विष्कम्भायामतः साधिकत्रिगुणं मूलमध्यान्तपरिधिमानं सूत्रोक्तं सुबोधं। अत्राह परः— एकस्य वस्तुनो विष्कम्भादिपरिमाणे द्वैरूप्यासम्भवेन प्रस्तुतग्रन्थस्य च सातिशयस्थविरप्रणीतत्वेन कथं नान्यतरनिर्णयः? यदेकस्यापि ऋषभकूटपर्वतस्य मूलादावष्टादियोजनविस्तृतत्वादि पुनस्तत्रैवास्य द्वादशादियोजनविस्तृतत्वादीति, सत्यं, जिनभट्टारकाणां सर्वेषां क्षायिकज्ञानवतामेकमेव मतं मूलतः पश्चात्तु कालान्तरेण विस्मृत्यादिनाऽयं वाचनाभेदः, यदुक्तं श्रीमलयगिरिसूरिभिर्ज्योतिष्करण्डकवृत्तौ—"इह स्कन्दिलाचार्य प्रवृ (तिप) त्तौ दुष्षमानुभावतो दुर्भिक्षप्रवृत्त्या साधूनां पठनगुणनादिकं सर्वमप्यनेशत्, ततो दुर्भिक्षातिक्रमे सुभिक्षप्रवृत्तौ द्वयोः संघमेलापकोऽभवत्, तद्यथा—एको वलभ्यामेको मथुरायां, तत्र च सूत्रार्थसंघटने परस्परं वाचनाभेदो जातः, विस्मृतयोर्हि सूत्रार्थयोः स्मृत्वा संघटने भवत्यवश्यं वाचनाभेद" इत्यादि, ततोऽत्रापि दुष्करोऽन्यतरनिर्णयः द्वयोः पक्षयोरुपस्थितयोरनतिशायिज्ञानिभिरनभिनिविष्टमतिभिः प्रवचनाशातनाभीरुभिः पुण्यपुरुषैरिति न काचिदनुपपत्तिः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दान्तर और रूपान्तर

पण्णवणा

१।१४	बेंदिय°	बेइन्दिय	(क,ख)
१।१४	तेंदिय°	तेइन्दिय	(ख)
१।२३	ओसा	उस्सा	(क,ग)
१।२६	वायमंडलिया	वाउमंडलिया	(क)
१।३५	अंकोल्ल	अंकुल्ल	(घ)
१।३८	कोरंटय	कोरिंटय (क); कोरेंट	(घ)
१।४८।४७	बलिमोडओ	पलिमोडओ	(क,घ)
१।६३।४	वीइभयं	वीयभयं	(क,घ)
२।१०	पडीण	पयीण (क); पईण	(ख,ग,घ)
२।१३	तडागेसु	तलागेसु	(क)
२।४०	चोवट्ठि	चोसट्ठि	(क)
३।१	विसेसाहिया	विसेसाधिया	(घ,पु)
३।७	दाहिणेणं	दक्खिणेणं	(क,ख,घ)
३।१०२	विभंगणाणीण	विहंगणाणीण	(क,ग,घ)
३।१२७	अहेलोए	अहोलोए (ग); अधेलोए	(घ)
३।१७४	अस्साता°	असाता°	(ख,ग)
३।१८२	जहा	जधा	(ख,घ)
३।१८३	सकसाई	सकसादी	(क)
४।२५५	एगूणवीसं	एकूणवीसं (क,घ); एक्कूणवीस	(ख)
४।२७५	पणुवीसं	पंचवीसं (ख,घ); पणवीसं	(ग)
५।५	जदि	जइ (ख,ग,घ); जति	(पु)
५।५	महुर°	मधुर°	(क,ख)
५।५	अब्भहिए	अब्भइए (क); अब्भतिए	(पु)
५।७	°वडिए	°पडिए	(क)
५।१०१	मणुस्से	मणूसे	(क,ख,घ)
५।१७६	वड्ढिज्जंति	वुड्ढिज्जंति	(क,ग,घ)
५।२४२	एएणट्ठेणं	एणट्ठेणं	(क,ख)
६।४६	अभिलावो	अहिलावो	(ख,घ)
८।८	ओसण्ण°	उस्सण्ण°	(क)
११।६	°आणमणी	°आणवणी	(ख,ग,घ)
११।२१	वगे	विगे	(क,ख,ग,घ)
११।२५	सयणं	सतणं	(क)
११।३०	सरीरपहवा	सरीरप्पभवा	(क,ख,ग,घ)
११।३७	वोयड अव्वोयडा	वोगड अव्वोगडा	(क)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११।३७	आणमणी	याणमणी	(घ)
११।७२	परिवड्ढमाणाइं	परिवड्ढेमाणाइं	(ख,घ)
११।७५	कदलीथंभाण	कदलीखंभाण	(ग)
११।८४	णिसरति	णिस्सरति (ख) ; णिस्सिरति (ग) ; निसरति	(घ)
११।८८	बितियं	बीयं	(क,ग)
११।८८	भासज्जायं	भासजाय	(ग)
१२।७	बद्धेल्लया मुक्केल्लया	बद्धिल्लया मुक्किल्लया	(क,ख,ग,घ)
१२।७	ओसप्पिणीहि	अवसप्पिणीहि	(ग)
१३।८	अणागारो°	अणायारो°	(क,ख)
१५।३५	णग्गोह°	णिग्गोह°	(ग)
१५।३५	सादी	साती	(पु)
१५।५०	पेहमाणे पेहति	पेहेमाणे पेहेति	(ग)
१५।५३	°थिग्गले	°थिग्गिले	(ख)
१५।५८	°ओवचए	°ओवचते	(ख,घ)
१६।१५	अहवेगे	अहवेते	(क,ख)
१६।३४	पच्चत्थिमिल्लं	पच्छिमिल्लं	(पु)
१६।५१	आयरियं	आयरितं	(क)
१६।५४	सेयंसि	सेइंसि	(क,ग)
१६।५५	माउलुंगाण	मातुलिंगाण	(ग)
१६।५५	तिंदुयाण	तिंडुयाण	(ग)
१७।२४	इणट्ठे	इणमट्ठे (क) ; तिणट्ठे	(ख,घ)
१७।१०६	समभिलोएमाणे	समभिलोतेमाणे	(क)
१७।११६	किण्ह°	कण्ह°	(क,घ)
१७।१२४	हलधर°	हलहर°	(क,ग,घ)
१७।१२५	कइरसारे	कयरसारए (ख,ग) ; कतरसारए	(घ)
१७।१२६	बालिंदगोवे	बालेंदगोपे	(ग)
१७।१२८	°बलाहए	°बलाहते	(घ)
१७।१३२	अपिक्काणं	अपक्काणं	(क,ख,घ)
१७।१५०	आगारभावमाताए	आगारभावमायाए	(क,ग)
१८।१	वेदे	वेए (क,ग) ; वेते	(ख,घ)
१८।५६	वइजोगी	वयजोगी	(ख,घ,पु)
१८।६४	सकसाई	सकसादी (क) ; सकसाती	(घ)
२०।२८	सवणताए	सवणयाते	(ख)
२१।२५	सूई°	सूयी°	(क,घ)
२१।४७	धणुपुहत्तं	धणुहपुहत्तं	(ख)
२१।६२	सगाइं	सगाति (क,घ) ; सयाइं	(ग)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३।३	णियच्छति	निगच्छति (क,घ) निग्गच्छति	(क)
२३।१३	कडस्स	कतस्स (क,घ) ; कयस्स	(ख,ग)
२३।२२	णीयागोयस्स	णीतागोतस्स	(क,घ)
२३।१६१	खवए	खमए	(ख)
२८।४४	अफासाइज्ज°	अप्फासाइज्ज°	(क,घ)
३३।१	अपडिवाई	अपडिवादी	(क,घ)
३३।१७	सगाइं	सताइं (क,घ) सयाति	(ख)
३४।१	परियाइयणया	परियादिणया (ख) ; परियायणया	(क,ग)
३४।६	जाणंति	याणंति	(क,ख,ग,घ)
३४।१५	सपरियारा	सपरिचारा	(ख,ग)

जंबुद्दीवपण्णत्ती

१।८	विच्छिण्णा	विस्थिण्णा	(अ,ख)
१।१८	°णउय°	°णओत°	(अ,क,ब)
१।२३	धणुपट्ठं	धणुवट्ठं (अ) ; धणुपुट्ठं	(ख)
१।२६	°पडोयारे	°पडोगारे	(त्रि,ब)
१।२८	पासिं	पस्सिं	(अ,त्रि,ब)
१।४८	दुहा	दुधा	(ख,स)
२।४	हट्ठस्स	हिट्ठस्स	(क,ख)
२।४	उद्दू	उड्डू (त्रि) ; उऊ	(प)
२।१४	°पडोयारे	°पडोकारे	(ब)
२।१५	मेइणि	मेतिणि	(त्रि,ब)
२।२०	वेइया	वेइगा	(अ,ब)
२।२०	इत्थ	यत्थ (अ,ब) ; एत्थ	(क,ख,स)
२।३२	कहग	कधक	(अ,ख,ब)
२।७०	°हास	हस्स	(अ,ख,ब)
२।७८	वाकरेमाणाणं	वागरमाणाणं	(प)
२।१३१	हाहाभूए	हाहाब्भूते	(अ,क,ख,ब,स)
२।१३३	वलीविगय	पलीविगय	(अ)
२।१३३	टोलाकिति	डोलाकिति (अ) ; डोलागिति	(क,ख)
		टोलागित्ति (त्रि, स) ; टोलागति	(प)
२।१३३	सीउण्ह	सीयउण्ह	(क,ख,त्रि,ब,स)
३।३	जूव	जूय	(क,ख,प,स)
३।११	पउसियाओ	वउसीयाओ	(क,ख,प,स)
३।११	बब्बरी	पप्परी	(अ,ब)
३।११	बहलि	पहलि	(अ,ब)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३।११	°कडुच्छुय°	°कडिच्छुय° (ख); °कडेच्छुय	(अ,ब,स)
३।२०	दुरुहइ	द्रुहइ	(अ,ब)
३।२०	बंभयारी	पम्हचारी	(अ,त्रि,ब)
३।२१	दुरूढे	रूढे (अ); द्रुढे	(ब)
३।२२	बोल	पोल	(अ,ब)
३।२३	°बालचंद	°बालयंद	(स)
३।२४	°तुंडं	°तोंडं	(क,प,स)
३।२६	अंतवाले	अंतपाले (अ,त्रि,ब); अंतेवाले	(क,ख)
३।३५	°पट्टसंगहिय	°वट्टसंगहिय	(अ,ब)
३।३५	°खिंखिणी°	°किंकिणी°	(क,ख,स)
३।३५	अयोज्झं	अजोज्झं (अ,ब); अओज्झं	(क,ख,प,स);
		अवोज्झं	(त्रि)
३।३५	सोयामणि	सोतामणि (क); सोदामणि	(ख,स)
३।३५	°प्पगासं°	°प्पकासं	(अ,क,ख,त्रि,ब,स)
३।३५	वीसुतं	विस्सुतं	(क,स)
३।७७	°चिंधपट्टे	°चिंधवट्टे	(ब)
३।११७	°मिरीई°	°मरीई°	(त्रि)
३।११७	उऊण	उदूण (अ,ख,ब); रिदूण	(क,स)
३।१३८	°हिदय°	°हियय° (अ,त्रि,प,ब); °हितय°	(क,स);
		°हृदय°	(ख)
३।१७८	°निहिओ	°निहितो (अ,त्रि,ब); °निहओ	(ख,स)
३।१९४	अभिसेयपीढं	अभिसेयपेढं	(अ,ब)
३।२११	गंथिम	गंठिम	(त्रि,प)
३।२१४	तिसोवाण°	तिसोमाण°	(अ,ब)
३।२२०	कागणि°	काकिणि° (अ); कागिणि° (ब); काकणि°	(स)
३।२२१	पुव्वकय°	पुव्वकड°	(क,स)
३।२२३	ईहापोह	ईहापूह (अ,क,ख,स); ईहाबूह	(पुवृ)
४।३६	बार्वाट्ठ	बासट्ठि	(प)
४।५४	ह्रस्सतराए	हस्सतराए	(प)
४।५५	दक्खिणेणं	दाहिणेणं	(त्रि)
४।७७	हरिवासं	हरिवस्सं	(अ,प,ब)
४।८५	संखतल°	संखदल°	(प,शावृ,पुवृपा)
४।८६	बायाले	पायाले (अ,ब) बायालीसे	(त्रि)
४।८७	णिसहस्स	णिसअस्स	(अ,ब)
४।६१	सीतोदा	सीओता (अ,ब); सीओदा (त्रि); सीओआ	(प)
४।६३	विउत्तरे	पिउत्तरे	(ब)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४।९६	णिसढ°	णिसभ° (अ,ब); णिसह°	(क,ख,स)
४।१०२	हेमवय-हेरण्णवय	हेमवएरण्णवय	(क,ख,ब,स);
		हेमवय एरण्णवय	(त्रि)
४।१०३	णीलवंतस्स	णेलवंतस्स	(अ,क,ख,ब,स)
४।१०६	सणिच्चारी	सणिच्चारी	(प)
४।१४०	उववायसभाए	ओतावसभाए	(क)
४।१४०	जमगाओ	जवगाओ (अ,ब); जमिगाओ	(ख)
४।१४२	दस	दह	(अ,क,ख,ब,स)
४।१५७	णियया	णितिया	(अ,क,ख,त्रि,ब,स)
४।१८०	परुप्परंति	परोप्परंति	(अ,त्रि,ब)
४।२१०	सयज्जल°	सयंजल°	(त्रि)
४।२३१	पलासो	वलास	(ब)
५।२५	घंटापडेंसुया°	घंटापडेंसुका° (अ,ब); घंटापडिंसुका°	(क,ख);
		घंटापडिस्सुया° (त्रि); घंटापडंसुया°	(स)
५।५८	गायाइं	गत्ताइं (क,ख); गताइं	(ब)
५।५८	जण्णु°	जाणु°	(त्रि)
७।३१	उड्ढीमुह°	उड्ढंमुह° (अ,ब); उद्धीमुह°	(क,ख,प)
७।१२२	भावियप्पा	भावियाया	(ख)
७।१२६	अभिजियाइया	अभिजिदाइया (अ,ब); अभिजादिया	(क,स);
		अभिजादीया	(ख)
७।१२८	सवणो	समणे	(अ,ब)
७।१२८	मियसर°	मगसिर°	(ब)
७।१२९	अभिई	अभिती (अ,ब,स); अभिवी	(क,ख)
७।१३०	वहस्सई	पहस्सती (अ,ब); वहप्फई	(त्रि)
७।१५५	कत्तिगी	कत्तिकी (अ); कित्तिकी (ख,ब); कित्तिगी	(स)
७।१५९	अस्सिणी	आसिणी	(ब)
७।१७८	णंगूलाणं	लांगूलाणं	(प)

सूरपण्णत्ती

२।३	इहगतस्स	इदमतस्स	(ग,घ)
२।३	चउरुत्तरे	चउत्तरे	(ट)
४।३	पिहुला	पिधुला (क); पुहुलो	(ट)
६।१	पोग्गला	पुग्गला	(क,ग,घ)
६।१	ओयसंठिती	तोतसंठिती	(ट,व)
६।१	ओयाए	ओताए	(ट)
६।१	रयणिखेत्तस्स	रतणिखेत्तस्स (क,ग,घ); रातिखेत्तस्स	(ट)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८।१	सदा	सता	(ग,घ,ट,ब)
६।३	वयं....वदामो	वतं....वतामो	(ब)
१०।२	सवणे	समणो	(ग,घ)
१०।५	सायं	सागं	(ब)
१०।७	आसोई	अस्सोती	(ब)
१०।१०	असोइण्णं	अस्सोदिण्णं	(ग,घ)
१०।७७	आदिच्चेहिं	आतिच्चेहिं	(ब)
१०।७८	बम्हु°	बंभ°	(क,ग,घ)
१०।७६	सवणे	समणे	(ट,ब)
१०।८७	बितिया°	बिदिया°	(क,घ)
१०।८६	दुविहा तिही	दुविधा तिधी	(क)
१०।१३६	पातो	पादो	(क,घ,ब)
१०।१४७	उवाइणावेत्ता	उवादिणावेत्ता (क,ग,घ) ; उवातिणावेत्ता	(ट,ब)
१०।१७३	सयावि	सताधि (क,ग,घ,ब) ; सदावि	(ग)
१४।२	कहं	कधं	(क,ग,घ)
१५।३१	अहियं	अधियं (क,ग,घ) ; अहितं	(ट)
१८।३४	मेहुणवत्तियं	मेधुणवत्तियं	(क,ग,घ)
२०।१	अहे	अधो	(क)
२०।२	वइयरिए	वतिचरिए	(ट)

निरयावलियाओ

१।४२	अण्णया	अण्णदा (क) ; अण्णता	(ख)
१।६६	जणवदं	जणवयं	(ख)
१।७२	ऊसए	ऊसवे	(ख)
१।६१	पिइसोएणं	पितसोएणं	(ख)
१।६७	पट्ठे	प्पिट्ठे (क) ; पुट्ठे	(ग)
१।६७	अंदोलावेइ	अंदोडावेइ	(क)
१।११७	निच्छुहावेइ	निच्छुभावेइ	(क)
१।१२७	लेच्छइ	लेच्छती	(क)
३।११५	सुव्वयाओ	सुव्वदाओ	(क)
३।१३४	जुयलं	जुवलं (ख) ; जुगलं	(ग)
४।१६	इट्ठा	तिट्ठा	(क)
४।२१	°बाओसिया	°पाओसिया	(क,ग)
५।६	सव्वोउय	सव्वोदुय	(क,ग)
५।१०	आहेवच्चं	आधेवच्चं	(ख)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णवणा प्रति-परिचय

(क) पण्णवणा मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति पूनमचन्दजी बुधमलजी दूधोड़िया 'छापर' के संग्रहालय की है। इसकी पत्र संख्या ३०२ है। इसकी लम्बाई १०। इन्च व चौड़ाई ४।। इन्च है। लगभग प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ३३ से ४१ अक्षर हैं। प्रति सुन्दरतम व शुद्ध है। यह प्रति लगभग १५ वीं शताब्दी की लिखी हुई है। प्रति के अन्त में केवल ग्रन्थाग्र ७७८७ लिखा हुआ है।

(ख) पण्णवणा टब्बा (हस्तलिखित)

यह प्रति जैन विश्व भारती हस्तलिखित ग्रंथालय, लाडनूं की है। इसमें मूल पाठ तथा स्तबक लिखा हुआ है। इसकी पत्र संख्या ४६५ है। इसकी लम्बाई ९।। इंच तथा चौड़ाई ४ इंच है। प्रत्येक पत्र में मूल पाठ की पंक्तियां ७ व प्रत्येक पंक्ति में ३५ से ३९ अक्षर हैं। प्रति अति सुन्दर लिखी हुई है। प्रति के अन्त में 'प्रत्यक्षरगणनया अनुष्ठपच्छंदः समानमिदं ग्रन्थाग्रं ७७८७ प्रमाणं' लिखा हुआ है। आगे स्तबककर के ६ श्लोक हैं। संवत् १७७८ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा तिथौ रविवारे पंडित ईश्वरेण लिपी चक्रे श्री वेन्नातट नगर मध्ये...... श्री रस्तु कल्याणमस्तुः शुभं भूयाल्लेषक पाठकयोः।

(ग) पण्णवणा त्रिपाठी (हस्तलिखित) मूलपाठ सहित वृत्ति

यह प्रति हमारे संघीय हस्तलिखित ग्रंथ-भंडार 'लाडनूं' की है। इसमें मध्य में मूल पाठ व ऊपर नीचे वृत्ति लिखी हुई है। इसकी पत्र संख्या ४४८ है। इसकी लम्बाई ९।।। इंच तथा चौड़ाई ४।। इंच है। प्रत्येक पत्र में मूल पाठ की पंक्तियां १ से १६ तक है। कुछ पत्रों में केवल वृत्ति ही है। प्रत्येक पंक्ति में ३७ से ४५ तक अक्षर हैं। ग्रंथाग्र -मूल पाठ ७७८७ तथा वृत्ति का ग्रन्थाग्र १६००० । प्रति सुन्दर व शुद्ध है। लगभग १७ वीं शताब्दी की प्रति होनी चाहिए।

(घ) पण्णवणा मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति श्रीचन्दजी गणेशदासजी गधैया संग्रहालय 'सरदारशहर' की है। इसकी पत्र सख्या १३८ है। इसकी लम्बाई १३।। इंच तथा चौड़ाई ५ इंच है। प्रत्येक पत्र में बीच में तथा हासिए के बाहर चित्र सा किया हुआ है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६५ के लगभग अक्षर हैं। प्रति सुन्दर तथा शुद्ध है। यह १६ वीं शताब्दी की लिखी हुई प्रतीत होती है। ग्रंथाग्रं ७७८७ के सिवाय अन्त में कुछ लिखा हुआ नहीं है।

(गवृ) 'ग' संकेतित प्रति में लिखित वृत्ति के पाठान्तर

(वृ) हस्तलिखित वृत्ति

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया 'सरदारशहर' की है। इसकी पत्र संख्या १५९। लिपि संवत् १५७७। वैशाख शुक्ला १०।

(मवृ) मलयगिरि वृत्ति--प्रकाशक आगमोदय समिति

(मवृपा) मलयगिरि द्वारा गृहीत पाठान्तर

(हवृ) श्री हरिभद्र सूरि सूत्रित प्रदेश व्याख्या संकलितं

प्रकाशक श्री ऋषभदेव केशरीमलजी रतलाम पूर्व भाग पद ११।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंबुद्दीवपण्णत्ती प्रति-परिचय

(अ) जंबुद्दीवपण्णत्ती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति जेसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटोप्रिंट) मदनचन्द जी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र १६४ और पृष्ठ ३२८ हैं। प्रत्येक पत्र में २ से ६ तक पंक्तियां हैं। कहीं-कहीं पंक्तियां अधूरी लिखी हुई हैं। प्रत्येक पंक्ति में अक्षर ३० से ३५ तक हैं। अन्त में ग्रंथाग्र ४१४६ इतना ही लिखा हुआ है। इसके साथवाली प्रति के आधार पर यह प्रति १४ वीं शती की होनी चाहिए।

(ब) जंबुद्दीवपण्णत्ती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति जेसलमेर भंडार ताडपत्रीय (फोटोप्रिन्ट) मदनचन्दजी गोठी 'सरदारशहर' द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ९७ व पृष्ठ १९४ हैं। प्रत्येक पत्र में २ से ६ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४७ से ५० तक अक्षर हैं। लिपि सं० १३७८ लिखा हुआ है।

(स) जंबुद्दीवपण्णत्ती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति जेसलमेर भंडार पत्राकार (फोटोप्रिन्ट) मदनचन्दजी गोठी 'सरदारशहर' द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ४६ व पृ. ९२ हैं। प्रत्येक पत्र में २० पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ७० से ७४ तक अक्षर हैं। लिपि सं. १६४६ लिखा हुआ है। प्रति बहुत महीन लिखी हुई है।

(क) जंबुद्दीवपण्णत्ती मूलपाठ (हस्तलिखित)

पत्र संख्या ७३ श्रीचंद गणेशदास गधैया संग्रहालय (सरदारशहर)

(ख) जंबुद्दीवपण्णत्ती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति जैन विश्व भारती हस्तलिखित ग्रंथालय 'लाडनूं' की है। इसके पत्र १०१ व पृष्ठ २०२ हैं। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ५० से ५५ तक अक्षर हैं। प्रति प्राचीन व सुंदर लिखी हुई है। लिपि संवत् नहीं है।

(ग) जंबुद्दीवपण्णत्ती त्रिपाठी, मूलपाठ व वृत्ति (हस्तलिखित)

यह प्रति जैन विश्व भारती हस्तलिखित ग्रन्थालय 'लाडनूं' की है। इसके पत्र ३५८ व पृष्ठ ७१६ है। प्रति के मध्य में मूलपाठ व ऊपर नीचे टीका लिखी हुई है। लिपि संवत् १९१३ अंकित है। प्रति सुंदर लिखी हुई है। इसके ६९-७० दो पत्र प्राप्त नहीं हैं।

(हीवृ) हीरविजयसूरि विरचित वृत्ति त्रिपाठी (हस्तलिखित)

(हीवृपा) हीरविजय सूरि द्वारा गृहीत पाठान्तर

यह प्रति शासन ग्रंथ भंडार 'लाडनूं' की है। इसकी पत्र संख्या ५८२ है। बीच में मूलपाठ व ऊपर नीचे वृत्ति लिखी हुई है। लिपि संवत् १९१९।

(पुवृ) खरतरगच्छीय जिनहंसगणि शिष्य महोपाध्याय पुण्यसागर विरचित वृत्ति (हस्तलिखित)

(पुवृपा) पुण्यसागर द्वारा गृहीत पाठान्तर

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया संग्रहालय 'सरदारशहर' की है। इसके पत्र २४३ व पृष्ठ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८६ हैं। लिपि सं. १५७५। प्रति सुन्दर लिखी हुई है।

(शावृ) तपागच्छीय हीरविजयसूरि परशिष्य शान्त्याचार्य विरचित वृत्ति (हस्तलिखित)

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया संग्रहालय 'सरदारशहर' की है। लिपि सं. १५५१

(शावृपा) शान्त्याचार्य द्वारा गृहीत पाठान्तर

सूरपण्णत्ती प्रति-परिचय

(क) सूरपण्णत्ती मूल

यह प्रति लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर 'अहमदाबाद' की है। इसकी क्रमांक डा. २-५७ है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई १२ ।।। × ५ इंच है। इसकी पत्र संख्या ६२ है। प्रथम पत्र नहीं है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्ति व प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ७० तक अक्षर हैं। प्रति सुन्दर व सुवाच्य है। प्रति के बीच में हरी व लाल स्याही से चित्र-चित्रण किया हुआ है। लिपि संवत् नहीं दिया है। परन्तु प्रति प्राचीन है लगभग १७ वी शताब्दी की होनी चाहिए। प्रति के अन्त में प्रशस्ति के २५ श्लोक प्राकृत में लिखे हुए हैं।

(ग) सूरपण्णत्ती मूल नंबर ६० (हस्तलिखित)

यह प्रति भी पूर्व उल्लिखित 'अहमदाबाद' की है। इसकी पत्र संख्या ८७ व इसकी लम्बाई चौड़ाई १०।×४। इंच है। प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में अक्षर ३३ से ४१ तक है। प्रति की लिपि सुन्दर है पर अशुद्धि बहुल प्रति है। लिपि सं. १५७०।

(घ) सूरपण्णत्ती मूल नम्बर ६०७ (हस्तलिखित)

यह प्रति लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर 'अहमदाबाद' की है। इसकी पत्र संख्या ६६ व इसकी लम्बाई चौड़ाई १० × ४ इंच है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां है। प्रत्येक पंक्ति में अक्षर ३४ से ४२ तक हैं। प्रति की लिपि सुंदर पर अशुद्धि बहुल है। लिपि सं. १६७३ है।

उपर्युक्त तीनों प्रतियों के बीच में बावड़ी है।

(सूवृ) सूरपण्णत्ती टीका नं. ४८

यह प्रति लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, 'अहमदाबाद' की है। इसकी लम्बाई चौडाई १२॥१ × ५ इंच है। पत्र संख्या २२४ है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४४-६० अक्षर हैं। प्रति सुन्दर व स्पष्ट लिखी हुई है। लिपि सम्वत् १५७४ है।

चन्द्रप्रज्ञप्ति प्रति-परिचय

(क) चंदपण्णत्ती मूल नं. ६०० (हस्तलिखित)

यह प्रति भी लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर 'अहमदाबाद' की है। इसकी पत्र संख्या ६८ व इसकी लम्बाई चौड़ाई १०।× ४। इंच है। प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ४१ तक अक्षर है। यह प्रति भी सुन्दर है पर अशुद्धि बहुल है। इसमें पत्र के बीच में बावडी है। लिपि संवत् १५७० है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(चंवृ) चंदपण्णत्ती टीका (हस्तलिखित)

यह प्रति हमारे संघीय हस्तलिखित भण्डार 'लाडनूं' की है इसकी पत्र संख्या १७६ है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई १०×४।। इच की है। प्रत्येक पत्र में पंक्ति ६ व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर ५० करीब है। प्रति सुन्दर है। लिपि संवत् १७६२।

(ट) चंदपण्णत्ती टब्बा (हस्तलिखित)

जैन विश्व भारती लाडनूं हस्तलिखित ग्रंथालय। पत्र ५७।

निरयावलियाओ प्रति-परिचय

(क) निरयावलियाओ मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति जेसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटोप्रिन्ट) मदनचन्दजी गोठी 'सरदारशहर' द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र २५ व पृष्ठ ५० हैं। फोटो प्रिंट के पत्र ९ है। एक पत्र में ६ पृष्ठों के फोटो है। किसी में न्यूनाधिक भी है। प्रत्येक पत्र १२ इंच लम्बा व $\frac{3}{4}$ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पांच पंक्तियां हैं, किसी पत्र में दो-दो तीन-तीन पंक्तियां भी हैं। कहीं-कहीं पंक्तियां अधूरी भी हैं। प्रत्येक पंक्ति में करीब ४५ से ५० तक अक्षर है। प्रति के अंत में प्रशस्ति नहीं है।

(ख) निरयावलियाओ मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय 'सरदारशहर' की है। इसके पत्र १९ तथा पृष्ठ ३८ हैं। प्रति १३$\frac{1}{2}$ इंच लम्बी व ५ इंच चौड़ी है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तिया तथा प्रत्येक पंक्ति में करीब ७१ से ७५ तक अक्षर हैं। प्रति काली स्याही से लिखी हुई है। प्रति के मध्य भाग में बावड़ी व उसके बीच में लाल स्याही का टीका लगा हुआ है। लेखन संवत् नहीं है। परन्तु उसके साथ की प्रति के आधार पर अनुमानित १६ वीं शताब्दी की है। प्रति सुंदर, स्पष्ट तथा शुद्ध लिखी हुई है।

(ग) निरयावलियाओ टब्बा (हस्तलिखित)

यह प्रति जैन विश्व भारती हस्तलिखित ग्रन्थालय, लाडनूं की है। इसके पत्र ६३ तथा पृष्ठ १२६ है। प्रत्येक पत्र में पाठ की ७ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में अक्षर करीब ३५ से ४५ तक हैं। यह प्रति १०$\frac{1}{2}$ इंच लम्बी तथा ४$\frac{1}{2}$ इंच चौड़ी है। लिपि सं० १८३३।

(वृ) निरयावलियाओ वृत्ति (हस्तलिखित)

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय 'सरदारशहर' की है। इसके पत्र ८ हैं। यह १३$\frac{1}{2}$ इंच लंबी ५ इंच चौड़ी है। लिपि संम्वत् १५७५ है।

(मुवृ) मुद्रित वृत्ति

ए. एस. गोपाणी एण्ड वी. जे. चोकसी। प्रकाशित—शंभूभाईजगसीशाह, गुर्जर ग्रन्थरत्न कार्यालय, गांधी रोड़ अहमदाबाद प्रकाशन १९३४।

सहयोगानुभूति

जैन परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणि के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। अनेक वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था। परंतु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्तत हम उसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसंधानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थदृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य आरंभ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन कर्म के अनेक अंग हैं - पाठ का अनुसंधान, भाषान्तर, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में हमें आचार्य श्री का सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा गुरुतर कार्य में प्रवृत होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन कर भार मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत नौ उपांगो के पाठ-शोधन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि हीरालालजी, का पर्याप्त योग रहा है।

पण्णवणा में मुनि बालचंदजी, निरयावलियाओ में मुनि मधुकरजी का भी योग रहा है। प्रतिलिपि शोधन में स्व. मन्नालालाजी बोरड़ भी इसमें सहयोगी रहे हैं।

पण्णवणा की शब्दसूची मुनि श्रीचन्द जी, जंबुद्दीवपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती की मुनि सुदर्शन जी तथा निरयावलियाओ की मुनि हीरालालजी ने तैयार की है। इस ग्रन्थ के प्रथम परिशिष्ट व इसका ग्रन्थ परिमाण मुनि हीरालालजी ने तैयार किया है। पण्णवणा व जंबुद्दीवपण्णत्ती की शब्दसूची में क्रमशः साध्वी जिनप्रभाजी व साध्वी चन्दनबालाजी का भी योग रहा है।

प्रूफ निरीक्षण में मुनि सुदर्शनजी, मुनि हीरालालजी. मुनि दुलहराजजी तथा समणी कुसुम-प्रज्ञा संलग्न रही है। कहीं मुनि विमलकुमारजी, मुनि सम्पतमलजी भी सहयोगी रहे हैं। पाठ के पुनर्निरीक्षण के समय मुनि हीरालालजी विशेषतः संलग्न रहे हैं।

आगम बत्तीसी के पाठ-सम्पादन कार्य में नामोल्लेख के अतिरिक्त जिनका यत्किञ्चित् योग रहा है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञता का भाव व्यक्त करते हैं। सम्पादन कार्य में संघीयभंडार के अतिरिक्त एल० डी० इन्स्टीट्यूट अहमदाबाद, श्रीचंद गणेशदास गधैया पुस्तक भंडार सरदाशहर, तेरापंथी सभा सरदारशहर, पूनमचंद बुद्धमल दूधोडिया छापर, घेवर पुस्तकालय सुजानगढ़, जैन विश्व भारती ग्रंथालय लाडनूं, जेसलमेर भंडार, इन सब संस्थानों से प्राप्त हस्तलिखित आदर्शों का हमने प्रयोग किया। मुनिश्री पुण्यविजयजी ने 'नन्दी' की संशोधित प्रति भी हमें उपलब्ध कराई थी। इन सबका योग हमारे कार्य में मूल्यवान बना।

आचार्य श्री के वाचना-प्रमुखत्व में आगम-वाचना का जो कार्य प्रारंभ हुआ था उसका एक पर्व संशोधित पाठयुक्त आगम बत्तीसी के साथ सम्पन्न हो रहा है। बत्तीस आगमों का संशोधित पाठ पहली बार विद्वान् पाठकों के लिए सुलभ हो रहा है। यह हमारे लिए उल्लास का विषय है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि. सं. २०१२ उज्जैन में आगम-सम्पादन का कार्य प्रारंभ हुआ। उसी वर्ष प्रायः बत्तीस आगमों की शब्द सूचियां तैयार हो गईं। इस कार्य में अनेक साधु और साध्वियां संलग्न हुए। चार-चार या तीन-तीन साधु-साध्वियों के वर्ग बने और उन्होंने इस कार्य को शीघ्रता से सम्पन्न किया। मुनि चौथमलजी, सोहनलालजी (चूरू) जैसे प्रौढ़ सन्त इस कार्य में लगे, वहां उनके सहयोगी के रूप में छोटे-छोटे साधु भी जुट गए। एक अभियान जैसा कार्य चला और सब में एक नयी भावना जागृत हो गई। पहले पाठ-शोधन नहीं हुआ था इसलिए उनका पूरा उपयोग नहीं हो सका। शब्द-सूचियां फिर से बनानी पड़ीं, किन्तु जो काम हुआ वह अत्यंत श्लाघनीय है। इस सम्पादन की एक उल्लेखनीय बात यह है कि यह सारा कार्य साधु-साध्वियों के द्वारा ही सम्पादित हुआ, किसी गृहस्थ विद्वान् का इसमें योग नहीं रहा। आचार्यश्री का नेतृत्व और तेरापंथ धर्मसंघ का संगठन ही इसके लिए श्रेयोभागी बनता है।

आगमविद् और संपादन के कार्य में सहयोगी स्व. श्री मदनचंदजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया (कुलपति, जैन विश्व भारती) प्रारंभ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालात कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर वे अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष खेमचंदजी सेठिया और मंत्री श्रीचंद बेंगानी का भी इस कार्य में योग रहा है। संपादकीय और भूमिका का अंग्रेजी अनुवाद डा. नथमल टांटिया ने तैयार किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की सम प्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत भवन (दिल्ली)
२२ अक्टूबर, १९८७

युवाचार्य महाप्रज्ञ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

पण्णवणा

नाम-बोध

प्रस्तुत ग्रन्थ में नौ उपांग हैं। उसमें पहला है पण्णवणा (प्रज्ञापना)।

इसमें जीव और अजीव इन दो तत्त्वों का विस्तार से प्रज्ञापन किया गया है।[1] इसके प्रथम पद का नाम प्रज्ञापना है। संभवतः इस आदि पद के कारण ही इसका नाम प्रज्ञापना रखा गया है। प्रज्ञापना का एक कार्य प्रश्नोत्तर के माध्यम से तत्त्व का प्रतिपादन करना है। प्रस्तुत आगम में प्रश्नोत्तर के द्वारा तत्त्व का प्रतिपादन किया गया है। इसलिए भी इसका नाम प्रज्ञापना हो सकता है। प्रारंभिक गाथाओं में इस आगम को "अध्ययन" भी कहा गया है। इससे प्रतीत होता है कि इसका एक नाम "अध्ययन" रहा है। इसका संबंध दृष्टिवाद (बारहवें अंग) से है इसलिए इसे दृष्टिवाद का निःस्यन्द या सार कहा गया है।[2]

विषयवस्तु

प्रस्तुत आगम के ३६ पद हैं। उनमें जीव और अजीव के विभिन्न पर्यायों का प्रतिपादन किया गया है। यह तत्त्व-विद्या का अर्णव-ग्रन्थ है। इसके अध्ययन से भारतीय तत्त्व-विद्या के गहन स्वरूप को समझा जा सकता है। प्रथम पद में वनस्पति जीवों के दो वर्गीकरण उपलब्ध हैं:—प्रत्येकशरीरी और साधारणशरीरी।[3] साधारणशरीरी का चित्र समाजवाद का ऐसा अनूठा चित्र है जिसकी मनुष्य-समाज में कल्पना नहीं की जा सकती। इसमें आर्य और म्लेच्छ का विशद वर्णन है।

प्रस्तुत आगम तत्त्व-ज्ञान का आकर-ग्रन्थ है। भगवती अंगप्रविष्ट आगम है और यह उपांग कोटि का आगम है। ये दोनों तत्त्व-ज्ञान की दृष्टि से परस्पर जुड़े हुए हैं। देवर्धिगणी ने भगवती में प्रज्ञापना के अधिकांश भाग का समावेश किया है। वहां बार-बार "जहा पण्णवणाए" का उल्लेख है। प्रस्तुत आगम के प्रत्येक पद में गूढ़ तत्त्वों की एक व्यूह-रचना सी उपलब्ध है। इसमें लेश्या और कर्म के विषय में अनेक महत्त्वपूर्ण सूत्र मिलते हैं।

नन्दीसूत्र में आगमों के दो वर्गीकरण किए गए हैं—अंगप्रविष्ट और अंगबाह्य। अंगबाह्य के दो प्रकार हैं—आवश्यक और आवश्यकव्यतिरिक्त। आवश्यकव्यतिरिक्त के फिर दो प्रकार बतलाए गए है—कालिक और उत्कालिक। प्रस्तुत आगम अंगबाह्य, आवश्यकव्यतिरिक्त और उत्कालिक है।[4] नंदी में अंग और अंगबाह्य के संबंध की कोई चर्चा नहीं है। आगम-व्यवस्था के उत्तरकाल में अंग और

---

१. पण्णवणा, गा० २

२. वही, ,, ३

३. वही, १।३२

४. नन्दी, ७३-७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंगबाह्य की संबंध-योजना निर्धारित की गई। उसके अनुसार प्रज्ञापना समवायांग का उपांग है। यह सम्बन्ध-योजना किस आधार पर की गई, यह अन्वेषण का विषय है। यदि प्रज्ञापना को "भगवती" का उपांग माना जाता तो अधिक बुद्धिगम्य होता।

रचनाकार और रचनाकाल

प्रस्तुत आगम "दृष्टिवाद" का निःस्यन्द है, इस उक्ति से यह अनुमान किया जा सकता है कि इसका विषय "दृष्टिवाद" से संगृहीत किया गया है। इसके रचनाकार आर्यश्याम हैं।[1] वे सुधर्मा-स्वामी के तेवीसवें पट्टधर थे। वे वाचकवंश की परंपरा के शक्तिशाली वाचक थे। उनका अस्तित्व-काल वीर-निर्वाण की चौथी शताब्दी है।

प्रस्तुत आगम का रचनाकाल वीर-निर्वाण के ३३५ से ३७५ के बीच का संभव है। नंदी में महाप्रज्ञापना का उल्लेख किया गया है। वह अभी अनुपलब्ध है। महाप्रज्ञापना और प्रज्ञापना दोनों स्वतंत्र हैं। प्रज्ञापना महाप्रज्ञापना का अवतरण है अथवा इसमें कोई नया विषय है, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। बारह उपांगों में प्रज्ञापना का एक विशिष्ट स्थान है। इससे प्रतीत होता है कि इसका रचनाकाल वह है जब पूर्वों की विस्मृति हो रही थी और उसके अवशिष्ट अंशों की स्मृति शेष थी। वैसे ही समय में "षट्खण्डागम" की रचना हुई थी। शेष उपांग प्रज्ञापना की रचना के उत्तरकाल में लिखे गए थे। उनकी विषयवस्तु के आधार पर यह संभावना की जा सकती है। उमास्वाति का अस्तित्व-काल वीर निर्वाण की पांचवी शताब्दी है। उन्होंने तत्वार्थसूत्र में "आर्या म्लेच्छाश्च" सूत्र लिया है।[2] उसका आधार प्रज्ञापना का पहला पद हो सकता है। वहां जो आर्य और म्लेच्छ की स्पष्ट अवधारणा एवं परिभाषा है वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। इस आधार पर इसका रचनाकाल उमास्वाति से पूर्ववर्ती है।

व्याख्या-ग्रंथ

प्रस्तुत आगम के व्याख्या-ग्रंथ अनेक हैं। सबसे पहला ग्रन्थ हरिभद्रसूरि का है। व्याख्या-ग्रन्थ की तालिका इस प्रकार है:—

व्याख्या-ग्रंथ	ग्रन्थाग्र	ग्रन्थकर्ता	समय (वि० सं०)
१. प्रदेशव्याख्या	३७२८	हरिभद्रसूरि	८ वीं शताब्दी
२. तृतीय पद संग्रहणी	१३३	अभयदेवसूरि	१२ वीं शताब्दी का पूर्वार्ध
३. विवृति	१४५००	मलयगिरि	१३ वीं शताब्दी
४. अभयदेवसूरि कृत तृतीयपद संग्रहणी अवचूर्णि		कुलमण्डनगणी	१८ वीं शताब्दी
५. वृत्ति	—	अज्ञात	—

१. प्रज्ञापना, वृ० प० ४७—१. आर्यश्यामो यदेव ग्रन्थान्तरेषु आसालिगा पूतिपादकं गौतमप्रश्न भगवन्निर्वचनरूपं सूत्रमस्ति तदेवागम बहुमानतः पठति।
प्रज्ञापना, वृ० प० ७२—भगवान् आर्यश्यामोऽपि इत्थमेव सूत्रं रचयति।"

२. तत्वार्थ सूत्र ३।३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. वनस्पति सप्ततिका अथवा वनस्पति विचार	७१	मुनिचन्द्र	१२ वीं शताब्दी
७. अवचूरी	—	पद्मसूरि	—
८. बालावबोध	—	धनविमल	अनुमानित १७ वीं शताब्दी
९. बालावबोध	—	जीवविजय	१७८४
१०. स्तबक	—	परमानन्द	१८७६
११. पण्णवणानी जोड़	५५०	जयाचार्य	१८७८

इनके अतिरिक्त प्रज्ञापना से संबद्ध कुछ लघुकाय ग्रन्थों का विवरण मिलता है। मुनि पुण्यविजयजी ने हर्षकुलगणी द्वारा विरचित "बीजक" का उल्लेख किया है।[1] मुनिपुण्यविजयजी द्वारा लिखित प्रज्ञापना की प्रस्तावना तथा "जिनरत्नकोश" में "पर्याय" का भी उल्लेख मिलता है। "जिनरत्नकोश" में 'प्रज्ञापना सूत्र सारोद्धार' का भी उल्लेख मिलता है।

आचार्य मलयगिरि ने अपनी विवृति में चूर्णि और 'वृद्धव्याख्या' का उल्लेख किया है।[2] चूर्णि अभी अनुपलब्ध है। उपलब्ध व्याख्याओं में सबसे बड़ी व्याख्या आचार्य मलयगिरि की है। मौलिक और आधारभूत व्याख्या आचार्य हरिभद्रसूरि की है।

जंबुद्दीवपण्णत्ती

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम का नाम जंबुद्दीवपण्णत्ती (जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति) है। प्रज्ञप्ति का अर्थ है व्याकरण, उत्तर या निरूपण। इसमें जम्बूद्वीप का व्याकरण है इसलिए इसका नाम जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति है। स्थानांग में चार अंगबाह्य प्रज्ञप्तियों का उल्लेख है, १. चन्द्रप्रज्ञप्ति, २. सूरप्रज्ञप्ति, ३. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति ४. द्वीपसागरप्रज्ञप्ति।[3] 'कसायपाहुड' में प्रज्ञप्तियों को 'दृष्टिवाद' के प्रथम भेद 'परिकर्म' के पांच अर्थाधिकार माना गया है—१. चन्द्रप्रज्ञप्ति, २. सूरप्रज्ञप्ति, ३. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, ४. द्वीपसागरप्रज्ञप्ति ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति।[4] नंदी में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति को कालिक आगम के वर्गीकरण में रखा गया है।[5]

---

१. पण्णवणा सुत्तं, भाग २, प्रस्तावना पृ० १५८

२. वृत्ति प० २६९ —आह च चूर्णिकृत्।
वृ० प० २७१ —आह च चूर्णिकृतोऽपि।
वृ० प० २७२ - यत आह चूर्णिकृत्।
वृ० प० २७७ - आह च चूर्णिकृत्।
वृ० प० ५१७—'प्रज्ञापनायाश्चूर्णौ।
वृ० प० ६००—तत्रैवं वृद्धव्याख्या।

३. ठाणं, ४।१८९

४. कसायपाहुड़, प्रथम अधिकार —पेज्जदोसविहत्ती, पृ० १३७—
"परियम्मे पंच अत्थाहियारा—चंदपण्णत्ती सूरपण्णत्ती जंबुद्दीवपण्णत्ती दीवसायरपण्णत्ती वियाहपण्णत्ती चेदि।"

५. नन्दी, ७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय-वस्तु

इसका मुख्य प्रतिपाद्य जम्बूद्वीप है। पारिपार्श्विक विषयों की सूची बहुत लंबी है। भगवान् ऋषभ, कुलकर, भरत चक्रवर्ती, कालचक्र, सौरमण्डल आदि अनेक विषय इसमें प्रतिपादित हैं। इनमें भरत चक्रवर्ती का वर्णन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। चक्रवर्ती के चौदह रत्नों और नौ निधियों का वर्णन बहुत ही सजीव है।

कालचक्र के वर्णन में वर्तमान अवसर्पिणी के छठे अर का जो वर्णन है वह बहुत रोमाञ्चक है। प्रलय की जितनी भविष्य वाणियां उपलब्ध हैं, उनमें यह सर्वाधिक ध्यानाकर्षण करने वाली है। इसे पढ़ते-पढ़ते अणुयुद्ध की विभीषिका सामने आ जाती है।[1]

भगवान् ऋषभ और भगवान् महावीर में बहुत एकरूपता रही है। भगवान् ऋषभ को आदि-काश्यप और भगवान् महावीर को अन्त्यकाश्यप कहा जाता है।[2] भगवान् ऋषभ और भगवान् महावीर दोनों ने पंच महाव्रत धर्म का प्रतिपादन किया था। भगवान् महावीर की भांति भगवान् ऋषभ भी एक वर्ष से कुछ अधिक समय तक सवस्त्र रहे. फिर अचेल हो गए।[3]

भरत चक्रवर्ती काच के महल में बैठे थे। वे काच में अपना प्रतिबिंब देख रहे थे। देखते-देखते उन्हें कैवल्य प्राप्त हो गया।[4] उत्तरवर्ती ग्रन्थों में इस कथा का विकास हुआ है। अंगुली की अंगूठी गिर जाने पर सौन्दर्य की कमी का अनुभव हुआ और उस चिंतन की गहराई में गए, अन्ततः केवली हो गए।[5]

यौगलिक व्यवस्था की समाप्ति, समाज और राज्य-व्यवस्था के प्रारंभ का सुन्दर चित्र प्रस्तुत आगम में उपलब्ध है। भगवान् ऋषभ के सर्वतोमुखी व्यक्तित्व को समझने के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसका "श्रीमद्भागवत" में वर्णित ऋषभ के साथ तुलनात्मक अध्ययन करना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

प्रस्तुत आगम सात अध्यायों में विभक्त है। इन अध्यायों को "वक्खारो" या "वक्षस्कार" कहा गया है। उनके विषय इस प्रकार हैं—

१. जम्बूद्वीप

२. कालचक्र और ऋषभ-चरित

३. भरत-चरित

---

१. जंबुद्दीवपण्णत्ती, २।१३०-१३७

२. धनञ्जय नाममाला, ११४, पृ० ५७

वर्षीयान् वृषभो ज्यायान् पुनराद्यः प्रजापतिः।

ऐक्ष्वाकुः काश्यपो ब्रह्मा गौतमो नाभिजोऽग्रजः॥

धनञ्जय नाम माला, ११५, पृ० ५८

सन्मतिर्महतीर्वीरो महावीरोऽन्त्यकाश्यपः।

नाथान्वयो वर्धमानो यत्तीर्थमिह साम्प्रतम्॥

३. जंबुद्दीवपण्णत्ती, २।६६

४. वही, ३।२१२, २२२

५. आवश्यक चूर्णि, पृ० २२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. जम्बूद्वीप का विस्तृत वर्णन
५. तीर्थंकर का जन्माभिषेक
६. जम्बूद्वीप की भौगोलिक स्थिति
७. ज्योतिश्चक्र

रचनाकार और रचनाकाल

प्रस्तुत आगम उपांग के वर्गीकरण का ग्रन्थ है। इससे यह स्पष्ट है कि इसकी रचना भगवान् महावीर के निर्वाणोत्तर काल में हुई है। इसके रचनाकार कोई स्थविर थे। उनका नाम अज्ञात है। रचना का काल भी ज्ञात नहीं है। जीवाजीवाभिगम स्थविरों द्वारा कृत है। उसमें कल्पवृक्षों का विस्तृत वर्णन है। इसमें उनका संक्षिप्त रूप उपलब्ध है। विस्तार की सूचना 'जाव' पद के द्वारा दी गई है।

इससे प्रतीत होता है कि यह जीवाजीवाभिगम के उत्तरकाल की रचना है। संभवतः श्वेताम्बर और दिगम्बर का स्पष्ट भेद होने के पूर्वकाल की रचना है। जंबूद्वीप के विषय में दोनों परंपराओं में प्रायः ऐकमत्य है। इस आधार पर इसका रचनाकाल वीर निर्वाण की चौथी-पांचवीं शताब्दी के आस-पास अनुमित किया जा सकता है।

व्याख्या-ग्रन्थ

प्रस्तुत आगम पर नौ व्याख्याएं उपलब्ध हैं। उनमें केवल शांतिचन्द्रीयवृत्ति मुद्रित है, शेष अप्रकाशित हैं। शान्तिचन्द्र ने यह उल्लेख किया है कि मलयगिरि की टीका काल-दोष से विच्छिन्न हो गई है।[1] किन्तु आधुनिक विद्वानों ने उसे खोज निकाला है। वह जैसलमेर के भण्डार में उपलब्ध है।[2] शान्तिचन्द्रीय और पुण्यसागरीय वृत्ति में चूर्णि का भी उल्लेख है।[3]

इन व्याख्या-ग्रन्थों की तालिका इस प्रकार है—

ग्रन्थ	ग्रन्थाग्र	कर्ता	रचनाकाल
१. चूर्णि	—	अज्ञातकर्तृक	—
२. टीका (प्राकृतभाषा)		हरिभद्रसूरि	—
३. टीका	—	मलयगिरि	—
४. वृत्ति	१४२५२	हीरविजयसूरि	वि० सं० १६३९
५. वृत्ति	१३२७५	पुण्यसागर	" १६४५
६. टीका (प्रमेयरत्नमञ्जूषा)	१८०००	शान्तिचन्द्र	" १६६०

---

१. शान्तिचन्द्रीया वृत्ति पत्र २ —तत्र प्रस्तुतोपाङ्गस्य वृत्तिः श्रीमलयगिरिकृताऽपि संप्रति काल-दोषेण व्यवच्छिन्ना।

२. द्रष्टव्य, जैन रत्नकोश, पृ० १३०

३. शान्तिचन्द्रीया वृत्ति, पत्र १६, परिध्यानयनोपायस्त्वयं चूर्णिकारोक्तः।
वृ० प० ५३, २५२, २७८।
पुण्यसागरीयवृत्ति, पत्र १२२—"एतच्चूर्णौ च।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. टीका	१५०००	ब्रह्ममुनि		—
८. वृत्ति	१८३५२	धर्मसागर और वानरऋषि	"	१६३६
९. वृत्ति	—	अज्ञातकर्तृक		—

गुजराती भाषा में धर्मसीमुनि ने इस पर स्तबक (टब्बा या बालावबोध) भी लिखा है। इन व्याख्या-ग्रन्थों की अधिकता से प्रतीत होता है कि प्रस्तुत आगम बहुत पठनीय रहा है।

चन्दपण्णत्ती और सूरपण्णत्ती

नाम बोध

स्थानांग में चार अंगबाह्य प्रज्ञप्तियां बतलाई गई हैं। उनमें प्रथम प्रज्ञप्ति का नाम चन्द्रप्रज्ञप्ति और दूसरी का सूरप्रज्ञप्ति है।[1] कषायपाहुड में भी इसी क्रम से नामोल्लेख मिलता है।[2] प्रथम प्रज्ञप्ति में चन्द्र की वक्तव्यता है, इसलिए उसका नाम चन्द्रप्रज्ञप्ति है और द्वितीय प्रज्ञप्ति में सूर्य की वक्तव्यता है, इसलिए उसका नाम सूरप्रज्ञप्ति है।

विषय-वस्तु

आगम की प्राचीन सूचियों से पता चलता है कि चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूरप्रज्ञप्ति दो आगम हैं। 'नन्दी' की आगम सूची में चन्द्रप्रज्ञप्ति को कालिक और सूरप्रज्ञप्ति को उत्कालिक बतलाया गया है।[3] इस भेद का हेतु क्या है, यह अभी अन्वेषणीय है। चन्द्रप्रज्ञप्ति वर्तमान में प्रायः उपलब्ध नहीं है। उसका थोड़ा-सा प्रारंभिक भाग मिलता है। यद्यपि कुछ हस्तलिखित आदर्श 'चन्द्रप्रज्ञप्ति' के नाम से उपलब्ध होते हैं और कुछ आदर्श सूर्यप्रज्ञप्ति के नाम से मिलते हैं, किन्तु प्रारंभिक सूत्र को छोड़कर इनका पाठ एक जैसा है। आचार्य मलयगिरि ने इन दोनों की व्याख्याएं लिखी हैं, उनमें भी प्रायः समानता है। वर्तमान धारणा के अनुसार चन्द्रप्रज्ञप्ति आज उपलब्ध नहीं है। जो उपलब्ध है, वह सूरप्रज्ञप्ति है। डा० वाल्टर शुब्रिंग ने एक प्रकल्पना प्रस्तुत की है—सूरप्रज्ञप्ति के १० वें पाहुड़ से आगे सूर्य की अपेक्षा चन्द्र और ताराओं को अधिक महत्त्व दिया गया है अतः हम यह अनुमान करते हैं कि दसवें 'पाहुड़' से चन्द्रप्रज्ञप्ति का प्रारम्भ हुआ है।[4] किन्तु चन्द्रप्रज्ञप्ति की समग्र विषयवस्तु की जानकारी के अभाव में शुब्रिंग के निष्कर्ष को सहसा निर्णायक नहीं माना जा सकता। फिर भी उसमें विचार के लिए अवकाश है।

व्याख्या-ग्रंथ

चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूरप्रज्ञप्ति दोनों पर मलयगिरि-कृत टीकाएं उपलब्ध हैं। दोनों टीकाएं प्रायः समान हैं। उनमें जो अन्तर है, वह परिशिष्ट में दिया हुआ है। 'जिनरत्नकोश' के अनुसार चन्द्रप्रज्ञप्ति की टीका का ग्रन्थाग्र ९५००[5] तथा सूरप्रज्ञप्ति की टीका का ग्रन्थाग्र ९००० है।[6] भद्रबाहु-कृत

---

१. ठाणं, ४।१८९

२. कषायपाहुड़, प्रथम अधिकार, पेज्जदोसविहत्ती, पृ० १३७

३. नंदी, ७७, ७८

४. Doctrine of the Jains P. 102

५. जिनरत्नकोश, पृ० ११८

६. वही पृ० ४५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर्युक्तियों में सूरप्रज्ञप्ति की निर्युक्ति का उल्लेख है।[१] किन्तु वह मलयगिरि के समय में अनुपलब्ध थी।[२] उन्होंने अपनी टीका में पूर्वाचार्यों के मत का भी उल्लेख किया है।[३]

निरयावलियाओ

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम एक श्रुतस्कन्ध है। इस का प्राचीनतम नाम उपांग प्रतीत होता है। जम्बूस्वामी ने उपांग का क्या अर्थ है, यह प्रश्न पूछा। सुधर्मा स्वामी ने इसके उत्तर में कहा—उपांग के पांच वर्ग हैं—निरयावलिका, कल्पावतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका, वृष्णिदशा।[४]

'उपांग' शब्द का बहुवचन में प्रयोग किया गया है। उपांग पांच वर्गों का एक श्रुतस्कन्ध है। इसलिए संभवतः बहुवचन का प्रयोग किया गया है। इसका मूल अंग कौन-सा है, इसके बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं है। वर्तमान में प्रस्तुत श्रुतस्कन्ध के लिए 'उपांग' शब्द प्रचलित नहीं है। अभी 'उपांग' शब्द के द्वारा बारह आगमों का संग्रहण है।

'नन्दी' सूत्र की आगमसूची में 'उपांग' शब्द का उल्लेख नहीं है। वहां 'निरयावलिया' आदि पांचों स्वतंत्र आगम के रूप में उल्लिखित हैं। अनुमान किया जा सकता है कि 'नन्दी' सूत्र की रचना के उत्तरकाल में पांचों आगमों की एक श्रुतस्कन्ध के रूप में व्यवस्था की गई और श्रुतस्कन्ध का नाम 'उपांग' रखा गया। प्रो० विन्टरनित्ज के अनुसार ये पांचों आगम निरयावलिका के नाम से प्रसिद्ध थे। अंग और उपांग की व्यवस्था के समय से वे अलग-अलग गिने जाने लगे।[५]

'निरयावलिया' का दूसरा नाम 'कल्पिका' मिलता है। नंदी के कुछ आदर्शों में वह उपलब्ध है। आचार्य हरिभद्रसूरि और आचार्य मलयगिरि ने नंदी की वृत्ति में 'कल्पिका' का ही उल्लेख किया है।[६] यह संभावना की जा सकती है कि 'उवंगा' के प्रथम वर्ग का नाम 'कल्पिका' था, किन्तु नरक-परिणाम वाले कर्मों का वर्णन होने के कारण इसका दूसरा नाम 'निरयावलिका' रख दिया गया। इस प्रकार प्रथम वर्ग के दो नाम हो गए—निरयावलिका और कल्पिका।

विषय-वस्तु

निरयावलिका श्रुतस्कन्ध का प्रतिपाद्य विषय है—शुभ-अशुभ आचरण, शुभ-अशुभ कर्म और उनका विपाक।

---

१. आवश्यक निर्युक्ति, गाथा ८५

२. सूर्यप्रज्ञप्ति, वृत्ति पत्र, १, गाथा ५—

अस्या निर्युक्तिरभूत् पूर्वं श्रीभद्रबाहुसूरिकृता।
कलिदोषात् साऽनेशद्, व्याचक्षे केवलं सूत्रम्॥

३. सूर्यप्रज्ञप्ति, वृ० प० १६८—"तदेवं यथा पूर्वाचार्यैरिदमेव पर्वसूत्रमवलम्ब्य पर्वविषयं व्याख्यानं कृतं तथा मया विनेयजनानुग्रहाय स्वमत्यनुसारेणोपदर्शितम्।"

४. निरयावलियाओ १।४, ५

५. History of Indian Literature, Second edition, Vol II PP. 457-458

६. नन्दी, सूत्र ७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम वर्ग में चेटक और कोणिक के भयंकर युद्ध का वर्णन है। इसका उल्लेख भगवती[1] और आवश्यक चूर्णि[2] में भी मिलता है। बौद्ध साहित्य में भी इस युद्ध का उल्लेख मिलता है। यह आश्चर्य का विषय है कि इतिहास में इस युद्ध का कोई उल्लेख नहीं है।

युद्ध आत्मरक्षा से लिए अनिवार्य हो सकता है। उस हिंसा को एक गृहस्थ के लिए आवश्यक कहा जा सकता है। फिर भी हिंसा हिंसा है, उसे अहिंसा नहीं माना जा सकता। प्रस्तुत वर्ग में यह युद्धविरोधी स्वर उभरकर सामने आया है और वह युद्ध को धार्मिक रूप देने के प्रतिपक्ष में एक सशक्त उद्घोष है।

दूसरे वर्ग में धर्म की आराधना करने वाले श्रेणिक के दस पौत्रों की सद्गति का वर्णन है। तीसरे वर्ग में संयम और सम्यक्त्व की आराधना और विराधना का प्रतिपादन है। चौथे वर्ग में पार्श्वनाथ की दश शिष्याओं का निरूपण है। पांचवें वर्ग में वृष्णि-वंश के बारह राजकुमारों की चारित्र-आराधना और 'सर्वार्थसिद्धि' में उत्पत्ति का निरूपण है।

इस प्रकार इस लघुकाय उपांग या निरयावलिका श्रुतस्कन्ध में अनेक रुचिपूर्ण एवं महत्त्वपूर्ण विषयों का प्रतिपादन हुआ है।

रचनाकार और रचनाकाल

प्रस्तुत श्रुतस्कन्ध के रचनाकार और रचनाकाल के बारे में कोई निश्चित जानकारी प्राप्त नहीं है। यह अंगबाह्य श्रुतस्कन्ध है। इससे यह निश्चित है कि यह किसी स्थविर की रचना है। इसमें भगवती, ज्ञाता, उपासकदशा, औपपातिक और राजप्रश्नीय से संबंधित विषयों की चर्चा मिलती है। किन्तु इस आधार पर रचनाकाल का निर्णय नहीं किया जा सकता। आगमसूत्रों के व्यवस्थाकाल में पूर्ववर्ती आगमों में उत्तरवर्ती आगमों के नाम उल्लिखित किए गए हैं, अतः वे रचनाकाल के पौर्वापर्य के निर्णायक नहीं बनते।

व्याख्या-ग्रन्थ

प्रस्तुत श्रुतस्कन्ध पर एक संस्कृत व्याख्या उपलब्ध है। विक्रम संवत् १२२८ में श्री चन्द्रसूरि ने इसकी व्याख्या लिखी थी। वह बहुत संक्षिप्त है। मुनि धर्मसी (धर्मसिंह) ने इस पर गुजराती में एक टब्बा (स्तबक) लिखा था।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत ग्रन्थ के संपादन का बहुत कुछ श्रेय युवाचार्य महाप्रज्ञ को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य संपन्न हो सका है, अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलत: योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनयशीलता, श्रमपरायणता, और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण-भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्यक्षमता और कर्तव्यपरता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

---

१. भगवती, ७।१७३, २१०

२. आवश्यकचूर्णि, भाग २, पृ० १७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बलबूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया था।

प्रस्तुत आगमों के पाठ-संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

यह बृहत् कार्य सम्यग् रूप से सम्पन्न हो सका, इसका मुझे परम हर्ष है।

—आचार्य तुलसी

अणुव्रत भवन (नई दिल्ली)
२२ अक्टूबर, १९८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Editorial

The present volume consists of nine āgamas :—1. Paṇṇavaṇā, 2. Jambuddīvapaṇṇattī, 3. Candapaṇṇattī, 4. Sūrapaṇṇattī, 5. Nirayāvaliyāo, 6. Kappavaḍiṁsiyāo, 7. Pupphiyāo, 8. Pupphacūliyāo, and 9. Vaṇhidasāo.

The upāṅgas are twelve in number. Three upāṅgas have already been included in the 'Uvaṅgasuttāṇi', Part 4, Volume I. The original text of the remaining nine upāṅgas, with variant readings, has been incorporated in the present volume. The word-index of Aṅgasuttāṇi has already been published as a separate book (Āgama-śabda-kośa). To provide convenience to readers as well as the research scholars a joint word-index of the above-mentioned nine āgamas is appended in this volume.

With the publication of this volume, the publication work of all the 32 canons is now over. This Āgama-sūtra series at present contains seven volumes as under :—

1. *Aṅgasuttāṇi*, Part I :
   Āyāro, Sūyagaḍo, Ṭhāṇam, Samavāo.
2. *Aṅgasuttāṇi*, Part II :
   Bhagavaī.
3. *Aṅgasuttāṇi*, Part III :
   Nāyādhammakahāo, Uvāsagadasāo, Antagaḍadasāo, Aṇuttarovavāiyadasāo, Paṇhāvāgaraṇāiṁ, Vivāgasuyam.
4. *Uvaṅgasuttāṇi*, Part IV, Volume I :
   Ovāiyaṁ, Rāyapaseṇiyam, Jīvājīvābhigame.
5. *Uvaṅgasuttāṇi*, Part IV, Volume II :
   Paṇṇavaṇā, Jambuddīvapaṇṇattī, Candapaṇṇattī, Sūrapaṇṇattī, Nirayāvaliyāo, Kappavaḍiṁsiyāo, Pupphiyāo, Pupphacūliyāo, Vaṇhidasāo.
6. *Navasuttāṇi*, Part V :
   Āvassayam, Dasaveāliyam, Uttarajjhayaṇāṇi, Nandī, Aṇuogadārāiṁ, Dasāo, Kappo, Vavahāro, Nisīhajjhayaṇam.
7. *Āgama Śabda Kośa* (Aṅgasuttāṇi Śabdasūcī).

Under this series of original texts, the work of editing the other canons too is in progress. They are likely to contain *prakīrṇaka*, *niryukti* and *bhāṣya*.

On Mahāvīra Jayantī of 2012 Vikram Saṁvat (1955 A.D.), Ācāryaśrī

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

declared his intention to edit the āgamas, and the assignment was taken up in the caturmāsa of the same year. Many obstacles were faced in the work of editing for want of the correct versions. Consequently we thought of correcting the text to begin with. The work was actually started in 2014 V.S. (1957 A D.) and brought to completion in 2037 V.S. (1980 A D.) as follows :—

Dasaveāliyam	Vikram Saṁvat	2014
Uttarajjhayaṇāṇī	,,	2016
Nandī, Aṇuogadārāim	,,	2018
Ovāiyam, Rāyapaseṇiyam	,,	2018
Ṭhāṇam	,,	2018
Samavāo	,,	2018
Sūyagaḍo	,,	2019
Nāyādhammakahāo	,,	2020
Āyāro, Āyāracūlā	,,	2022
Uvāsagadasāo, Antagaḍadasāo	,,	2026
Anuttarovavāiyadasāo	,,	2026
Vipāka	,,	2028
Paṇhāvāgaraṇāim	,,	2028
Nirayāvaliyāo	,,	2029
Bhagavaī	,,	2030
Paṇṇavaṇā	,,	2031
Dasāo, Pajjosavaṇākappo	,,	2032
Kappo	,,	2033
Vavahāro	,,	2033
Jīvājīvābhigame	,,	2034
Jambuddīvapaṇṇattī	,,	2035
Nisīhajjhayaṇam	,,	2035
Candapaṇṇattī, Sūrapaṇṇattī	,,	2037

It is well known to all working in this field that editing is the most difficult job, specially when the texts to be edited are separated by a gap of several millennia in respect of language, style and thought. It is unexceptionally true that a thought or a custom does not continue in its original shape through the ages. It invariably expands or contracts. The story of expansion and contraction is the story of change. 'What is made up' is necessarily amenable to change. The insistence on the eternality of events, facts, thoughts and customs that are subject to change leads one to untruth and false imagination. The truth is 'what is made up' is necessarily transient. Whether 'made up' or 'eternal', it must needs be susceptible of change. Whatever there is must be of a nature that is not absolutely divorced from the stream of eternity and change.

It is possible that an idea or truth expressed by a particular word is capable

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

of being expressed with its original connotation at all times? The semantic change is a necessary phenomenon and so no one with a knowledge of linguistics will insist that a word continues to have the same connotation through a period of two thousand years. For example, the expression *pāṣaṇḍa* has not the same meaning in modern *śramaṇic* literature as it had in the times of the *Āgamas* and Ashoka's inscriptions. It has acquired a derogatory nuance. Hundreds of words in the ancient *Āgama* literature have shared the same fate. Under the circumstances, any thoughtful person will appreciate the difficulties in the task of an editor of ancient literature.

Self-confidence is an innate virtue of human beings who take great pride in the exercise of their courage, and do not shirk from responsibility however ardous. Were escapism a human virtue, not only the achievement of any enduring value would have been impossible, but whatever had been achieved in the past would have been lost at any time. About a millennium ago, Abhayadevasūri, the great commentator of the nine *Aṅgas* was confronted with a great many obstacles which he had detailed as follows :

(i) Absence of authentic tradition (*sampradāya*, about the meaning of the texts).

(ii) Lack of authentic ratiocination (*ūhā*).

(iii) Conflicting modes of recitation (*vācanā*).

(iv) Vitiated manuscripts.

(v) Unfathomable depth of the *sūtras*.

(vi) Differences of opinion (about the readings and the meaning).

In spite of all these difficulties and hurdles, he did not draw back from the Herculean task, but on the contrary achieved something that was of a permanent value.

Even today the difficulties are not fewer, but as the work of editing has been taken up by Ācāryaśrī Tulsī himself, the task has acquired a new dimension. Any programme that is undertaken by him opens up new vistas, what to speak of the editing of the canonical literature which is by itself full of new possibilities. What is most conspicuous is that Ācāryaśrī has infused life in the programme through me and my colleagues, monks and nuns, who were quite tyros in the field. Not only are his inarticulate blessings with us but also his concrete guidance and active co-operation are always available to us. He has given priority to the work and devoted plenty of time to it. Under his direction, deliberative counsel and encouragement, we could solve the problems, however formidable, that cropped up from time to time in the course of our difficult enterprise.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Procedure adopted in editing the text

Paṇṇavaṇā

In editing the text of Prajñāpana, four Ms. ādarśas were consulted, Ācārya Malayagiri's Vṛtti was also used for this purpose. Muni Puṇyavijaya's edition was also before us. But we do not take for granted a single particular edition or manuscript for our work. The important basic points for us are the critical exposition of the commentary, other parallel āgamic texts and the meanings of words. Accordingly, the reader will find many a deliberation in our edition for the purpose of arriving at correct readings. For example, take the word "gaṇṭhī" in 'vatthula kacchula sevāla gaṇṭhī'. Here 'gaṇṭhī' is incorrect. The correct version should be 'gatthī'. We have come across the reading 'gaṇṭhī' alone in all the available manuscripts as also in the āgamas edited by Muni Puṇyavijayaji. This reading has been revised on the basis of Jīvājīvābhigama and Jambūdvīpaprajñapti. Please refer to the footnote of 1/38 of this āgama.

Another instance is 'tiṭṭhāṇavaḍite', in place of which some ādarśas contain the reading as "cauṭṭhāṇavaḍite", and Muni Puṇyavijayaji too has accepted the latter reading. But on the basis of the Vṛtti, we have preferred 'tiṭṭhāṇavaḍite', which is endorsed by the vṛtti of Paṇṇavaṇā, 5/115,116. Please refer to Prajñāpanā Vṛtti patra 195-196 as also the footnote of Paṇṇavaṇā, 5/115.

Jambūdvīpaprajñapti

Seven different texts and three commentaries were consulted in the revision of the text. We find many variant readings and notes thereon in the vṛttis of Upādhyāya Śānticandra and Hīravijaya. Please refer to the footnote of 4/159. This āgama abounds in variant readings. Upādhyāya Śānticandra has described in detail the variant readings, as is evident from the footnote of 2/12. At other

---

1. Śānticandrīyavṛtti, patra 87 :

Variation of text—vācanābhedastadgatapariṇāmāntaramāha—mū e dvādaśa yojanāni viṣkambhena madhye'ṣṭayojanāni viṣkambhena upari catvāri yojanāni viṣkambhena, atrāpi viṣkambhāyāmataḥ sādhikatriguṇaṃ mūlamadhyāntaparidhimānaṃ sūtroktaṃ subodham. atrāha paraḥ—ekasya vastuno viṣkambhādiparimāṇe dvairupyāsambhavena prastutagranthasya ca sātiśayasthavirapraṇītatvena kathaṃ nānyataranirṇayaḥ ? yadekasyāpi ṛṣabhakūṭaparvatasya mūlādāvaṣṭādiyojanavistṛtatvādi punastraivāsya dvādaśādiyojanavistṛtatvāditi, satyam jinabhaṭṭārakaṇāṃ sarveṣāṃ kṣāyikajñānavatāmekameva mataṃ mūlataḥ paścāttu kālāntareṇa vismṛtyādina'yaṃ vācanābhedaḥ, yaduktaṃ śrīmalayagirisūribhirjyotiṣkaraṇḍakavṛttau—"iha skandilācārya pravṛ (tipa)ttau duṣṣamānubhāvato durbhikṣapravṛttyā sādhūnām paṭhanaguṇanādikam sarvamapyaneśat, tato durbhikṣātikrame subhikṣapravṛttau dvayoḥ saṅghamelāpako' bhavat, tadyathā—eko valabhyāmeko mathurāyām, tatra ca sūtrārthasaṃghaṭane parasparaṃ vācanābhedo jātaḥ, vismṛtayorhi sūtrārthayoḥ smṛtvā saṅghaṭane bhavatyavaśyaṃ vācanābheda" ityādi, tato'trāpi duṣkaro'nyataranirṇayaḥ dvayoḥ pakṣayorupasthitayoranatiśāyi—jñānibhiranabhiniviṣṭamatibhiḥ pravacanāśātanābhīrubhiḥ puṇyapuruṣairiti na kācidanupapattiḥ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

places we come across incorrect explanation due to faulty text, as is given in footnote 4/49.

Candraprajñapti and Sūryaprajñapti

In order to revise the text, we consulted five manuscripts and the vṛttis of these āgamas. We rarely depended on a particular ādarśa.

The complete text of Candraprajñapti is not available. Its variation from Sūryaprajñapti has been given in an Appendix. We come across some manuscripts which have passed for Candraprajñapti. Their variant readings are contained in the footnotes of Sūryaprajñapti.

Nirayāvalikā

Three manuscripts and the Vṛtti by Śrīcandrasūri have been consulted in revising the text of the five chapters of Nirayāvalikā.

Transformation of Words and Metamorphosis

PAṆṆAVAṆĀ

1/14	bendiya°	beindiya	(ka, kha)
1/14	tendiya°	teindiya	(kha)
1/23	osā	ussā	(ka, ga)
1/29	vāyamaṇḍaliyā	vāumaṇḍaliyā	(ka)
1/35	aṅkolla	aṅkulla	(gha)
1/38	koranṭaya	korinṭaya	(ka)
		korenṭa	(gha)
1/48/47	balimoḍao	palimoḍao	(ka, gha)
1/93/4	vīibhayaṁ	vīyabhayam	(ka, gha)
2/10	paḍīṇa	payīṇa	(ka)
		paīṇa	(kha, ga, gha)
2/13	taḍāgesu	talāgesu	(ka)
2/40	covaṭṭhiṁ	cosaṭṭhim	(ka)
3/1	visesāhiyā	visesādhiyā	(gha, pu)
3/7	dāhiṇeṇaṁ	dakkhiṇeṇam	(ka, kha, gha)
3/102	vibhaṅgaṇāṇīṇa	vihaṅgaṇāṇīṇa	(ka, ga, gha)
3/127	aheloe	aholoe	(ga)
		adheloe	(gha)
3/174	assāṭā°	asāṭā°	(kha, ga)
3/182	jahā	jadhā	(kha, gha)
3/183	sakasāī	sakasādī	(ka)
4/255	egūṇavīsaṁ	ekūṇavīsam	(ka, gha)
		ekkūṇavīsam	(kha)
4/275	paṇuvīsam	pañcavīsam	(kha, gha)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

		paṇavīsaṃ	(ga)
5/5	jadi	jai	(kha, ga, gha)
		gati	(pu)
5/5	mahura°	madhur°	(ka, kha)
5/5	abbhahie	abbhaie	(ka)
		abbhatie	(pu)
5/7	°vaḍie	°paḍie	(ka)
5/101	maṇusse	maṇūse	(ka, kha, gha)
5/179	vaḍḍhijjanti	vuḍḍhijjanti	(ka, ga, gha)
5/242	eeṇaṭṭheṇam	eṇaṭṭheṇam	(ka, kha)
6/46	abhilāvo	ahilāo	(kha, gha)
8/8	osaṇṇa°	ussaṇṇa°	(ka)
11/6	°āṇamaṇī	°āṇavaṇī	(kha, ga, gha)
11/21	vage	vige	(ka, kha, ga, gha)
11/25	sayaṇam	sataṇam	(ka)
11/30	sarīrapahavā	sarīrappabhavā	(ka, kha, ga, gha)
11/37	voyaḍa avvoyaḍā	vogaḍa avvogaḍā	(ka)
11/37	āṇamaṇī	yāṇamaṇī	(gha)
11/72	parivaḍḍhamāṇāim	parivaḍḍhemāṇāim	(kha, gha)
11/75	kadalīthaṁbhāṇa	kadalīkhambhāṇa	(ga)
11/84	ṇisarati	ṇissarati	(kha)
		ṇissirati	(ga)
		nisarati	(gha)
11/88	bitiyam	bīyam	(ka, ga)
11/88	bhāsajjāyam	bhāsajāya	(ga)
12/7	baddhellayā mukkellayā	baddhillayā mukkillayā	(ka, kha, ga, gha)
12/7	osappiṇīhi	avasappiṇihi	(ga)
13/8	aṇāgāro°	aṇāyāro°	(ka, kha)
15/35	ṇaggoha°	ṇiggoha°	(ga)
15/35	sādī	sātī	(pu)
15/50	pehamāṇe pehati	pehemāṇe peheti	(ga)
15/53	°thiggale	°thiggile	(kha)
15/58	°ovacaye	°ovacate	(kha, gha)
16/15	ahavege	ahavete	(ka, kha)
16/34	paccatthlmillam	pacchimillam	(pu)
16/51	āyariyam	āyaritam	(ka)
16/54	seyansi	seinsi	(ka, ga)
16/55	māuluṅgāṇa	mātuliṅgāṇa	(ga)
16/55	tinduyāṇa	tiṇḍuyāṇa	(ga)
17/24	iṇaṭṭhe	iṇamaṭṭhe	(ka)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

		tiṇaṭṭhe	(kha, gha)
17/106	samabhiloemāṇe	samabhilotemāṇe	(ka)
17/119	kiṇha°	kaṇha°	(ka, gha)
17/124	haladhara°	halahara°	(ka, ga, gha)
17/125	kairasāre	kayarasārae	(kha, ga)
		katarasārae	(gha)
17/126	bālindagove	bālendagope	(ga)
17/128	°balāhae	°balāhate	(gha)
17/132	apikkāṇam	apakkāṇam	(ka, kha, gha)
17/150	āgārabhāvamātāe	āgārabhāvamāyāe	(ka, ga)
18/1	vede	vee	(ka, ga)
		vete	(kha, gha)
18/56	vaijogī	vayajogī	(kha, gha, pu)
18/64	sakasāī	sakasādī	(ka)
		sakasātī	(gha)
20/28	savaṇatāe	savaṇayāte	(kha)
21/25	sūī°	sūyī°	(ka, gha)
21/47	dhaṇupuhattam	dhaṇuhapuhattam	(kha)
21/92	sagāim	sagāti	(ka, gha)
		sayāim	(ga)
23/3	ṇiyacchati	nigacchati	(ka, gha)
		niggacchati	(ka)
23/13	kaḍassa	katassa	(ka, gha)
		kayassa	(kha, ga)
23/22	ṇīyāgoyassa	ṇītāgotassa	(ka, gha)
23/191	khavae	khamae	(kha)
28/44	aphāsāijja°	apphāsāijja°	(ka, gha)
33/1	apaḍivāī	apaḍivādī	(ka, gha)
33/17	sagāim	satāim	(ka, gha)
		sayātim	(kha)
34/1	pariyāiyaṇayā	pariyādiṇayā	(kha)
		pariyāyanayā	(ka, ga)
34/6	jāṇanti	yāṇanti	(ka, kha, ga, gha)
34/15	sapariyārā	saparicārā	(kha, ga)

JAMBUDDĪVAPAṆṆATTĪ

1/8	vicchiṇṇā	vitthiṇṇā	(a, kha)
1/18	°ṇauya°	°ṇaota°	(a, ka, ba)
1/23	dhaṇupaṭṭham	dhaṇuvaṭṭham	(a)
		dhaṇupuṭṭham	(kha)
1/26	°paḍoyāre	°paḍogāre	(tri, ba)
1/28	pāsim	passim	(a, tri, ba)
1/48	duhā	dudhā	(kha, sa)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2/4	haṭṭhassa	hiṭṭhassa	(ka, kha)
2/4	udū	uḍū	(tri)
		ūu	(pa)
2/14	°paḍoyāre	°paḍokāre	(ba)
2/15	meiṇi	metiṇi	(tri, ba)
2/20	ittha	yattha	(a, ba)
		ettha	(ka, kha, sa)
2/32	kahaga	kadhaka	(a, kha, ba)
2/70	°hāsa	hassa	(a, kha, ba)
2/78	vākaremāṇāṇam	vāgaramāṇāṇam	(pa)
2/131	hāhābhūe	hāhābbhūte	(a, ka, kha, ba, sa)
2/133	valīvigaya	palīvigaya	(a)
2/133	ṭolākiti	ḍolākiti	(a)
		ḍolāgiti	(ka, kha)
		ṭolāgitti	(tri, sa)
		ṭolagati	(pa)
2/133	sīuṇha	sīyauṇha	(ka, kha, tri, ba, sa)
3/3	jūva	jūya	(ka, kha, pa, sa)
3/11	pausiyāo	vausīyāo	(ka, kha, pa, sa)
3/11	babbarī	papparī	(a, ba)
3/11	bahali	pahali	(a, ba)
3/11	°kaḍucchuya°	°kaḍicchuya°	(kha)
		°kaḍecchuya	(a, ba, sa)
3/20	duruhai	druhai	(a, ba)
3/20	bambhayārī	paṁhacārī	(a, tri, ba)
3/21	durūḍhe	rūḍhe	(a)
		druḍhe	(ba)
3/22	bola	pola	(a, ba)
3/23	°bālacanda	°bālayanda	(sa)
3/24	°tuṇḍam	°toṇḍam	(ka, pa, sa)
3/26	antavāle	antapāle	(a, tri, ba)
		antevāle	(ka, kha)
3/35	°paṭṭasaṅgahiya	°vaṭṭasaṅgahiya	(a, ba)
3/35	°khiṅkhiṇī°	°kiṅkiṇī°	(ka, kha, sa)
3/35	ayojjham	ajojjham	(a, ba)
		aojjham	(ka, kha, pa, sa)
		avojjham	(tri)
3/35	soyāmaṇi	sotāmaṇi	(ka)
		sodāmaṇi	(kha, sa)
3/35	°ppagāsam°	°ppakāsam	(a, ka, kha, tri, ba, sa)
3/35	vīsuṭam	vissuttam	(ka, sa)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3/77	°cindhapaṭṭe	°cindhavaṭṭe	(ba)
3/117	°mirīi°	°marīi°	(tri)
3/117	uūṇa	udūṇa	(a, kha, ba)
		riduṇa	(ka, sa)
3/138	°hidaya°	°hiyaya°	(a, tri, pa, ba)
		°hitaya°	(ka, sa)
		°hadaya°	(kha)
3/178	°nihio	°nihito	(a, tri, ba)
		°nihao	(kha, sa)
3/194	abhiseyapīḍham	abhiseyapeḍham	(a, ba)
3/211	ganthim	ganṭhim	(tri, pa)
3/214	tisovāṇa°	tisomāṇa°	(a, ba)
3/220	kāgaṇı	kākiṇi°	(a)
		kāgiṇi°	(b)
		kākaṇi°	(sa)
3/221	puvvakaya°	puvvakaḍa°	(ka, sa)
3/223	īhāpoha	īhāpūha	(a, ka, kha, sa)
		īhāvūha	(pu, vṛ)
4/36	bāvaṭṭhim	bāsaṭṭhim	(pa)
4/54	hrassatarāe	hassatarāe	(pa)
4/55	dakkhiṇeṇam	dāhiṇeṇam	(tri)
4/77	harivāsam	harivassam	(a, pa, ba)
4/85	saṅkhatala°	saṅkhadala°	(pa, śāvṛ, puvṛpā)
4/86	bāyāle	pāyāle	(a, ba)
		bāyālīse	(tri)
4/87	ṇisahassa	ṇisaassa	(a, ba)
4/91	sītodā	sīotā	(a, ba)
		sīodā	(tri)
		sīoā	(pa)
4/93	viuttare	piuttare	(ba)
4/96	ṇisaḍha°	ṇisabha°	(a, ba)
		ṇisaha°	(ka, kha, sa)
4/102	hemavaya-heraṇṇavaya	hemavaeraṇṇavaya	(ka, kha, ba, sa)
		hemavaya eraṇṇavaya	(tri)
4/103	ṇīlavantassa	ṇelavantassa	(a, ka, kha, ba, sa)
4/109	saṇiccārī	saṇiṁccārī	(pa)
4/140	uvavāyasabhāe	otāvasabhāe	(ka)
4/140	jamagāo	javagāo	(a, ba)
		jamigāo	(kha)
4/142	dasa	daha	(a, ka, kha, ba, sa)
4/157	ṇiyayā	ṇitiyā	(a, ka, kha, tri, ba, sa)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

4/180	parupparanti	paropparanti	(a, tri, ba)
4/210	sayajjala°	sayañjala°	(tri)
4/231	palāso	valāsa	(ba)
5/25	ghanṭāpaḍensuyā°	ghanṭāpaḍensukā°	(a, ba)
		ghanṭāpaḍmsukā°	(ka, kha)
		ghanṭāpaḍissuyā°	(tri)
		ghanṭāpaḍansuyā°	(sa)
5/58	gāyāim	gattāim	(ka, kha)
		gatāim	(ba)
5/58	jaṇṇu°	jāṇu°	(tri)
7/31	uḍḍhīmuha°	uḍḍhaṁmuha	(a, ba)
		uddhīmuha°	(ka, kha, pa)
7/122	bhāviyappā	bhāviyāyā	(kha)
7/126	abhijiyāiyā	abhijidāiyā	(a, ba)
		abhijādiyā	(ka, sa)
		abhijādīyā	(kha)
7/128	savaṇo	samaṇe	(a, ba)
8/128	miyasara°	magasira°	(ba)
7/129	abhiī	abhitī	(a, ba, sa)
		abivī	(ka, kha)
7/130	vahassaī	pahassatī	(a, ba)
		vahapphaī	(tri)
7/155	kattigī	kattikī	(a)
		kittikī	(kha, ba)
		kittigī	(sa)
7/159	assiṇī	āsiṇī	(ba)
7/178	ṇaṅgūlāṇam	lāṅgūlāṇam	(pa)

SŪRAPAṆṆATTĪ

2/3	ihagatassa	idagatassa	(ga, gha)
2/3	cauruttare	cauttare	(ṭa)
4/3	pihulā	pidhulā	(ka)
		puhulo	(ṭa)
6/1	poggalā	puggalā	(ka, ga, gha)
6/1	oyasanṭhitī	totasanṭhitī	(ṭa, va)
6/1	oyāe	otāe	(ṭa)
6/1	rayaṇikhettassa	ratanikhettassa	(ka, ga, gha)
		rātikhettassa	(ṭa))
8/1	sadā	satā	(ga, gha, ṭa, va)
9/3	vayam...vadāmo	vatam...vatāmo	(va)
10/2	savaṇe	samaṇo	(ga, gha)
10/5	sāyam	sāgam	(va)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

10/7	āsoī	assotī	(va)
10/10	asoiṇṇam	assodiṇṇam	(ga, gha)
10/77	ādiccehim	āticcehim	(va)
10/78	baṁha°	bambha°	(ka, ga, gha)
10/79	savaṇe	samaṇe	(ṭa, va)
10/87	bitiyā°	bidiyā°	(ka, gha)
10/89	duvihā tihī	duvidhā tidhī	(ka)
10/136	pāto	pādo	(ka, gha, va)
10/147	uvaiṇāvettā	uvādiṇāvettā	(ka, ga, gha)
		uvātiṇāvettā	(ṭa, ba)
10/173	sayāvi	satāvi	(ka, ga, gha, va)
		sadāvi	(ga)
14/2	kaham	kadham	(ka, ga, gha)
15/31	ahiyam	adhiyam	(ka, ga, gha)
		ahitam	(ṭa)
18/34	mehuṇavattiyam	medhuṇavattiyam	(ka, ga, gha)
20/1	ahe	adho	(ka)
20/2	vaiyarie	vaticarie	(ṭa)

NIRAYĀVALIYĀO

1/42	aṇṇayā	aṇṇadā	(ka)
		aṇṇatā	(kha)
1/66	jaṇavadam	jaṇavayam	(kha)
1/72	ūsae	ūsave	(kha)
1/91	piisoeṇam	pitasoeṇam	(kha)
1/97	paṭṭhe	ppiṭṭhe	(ka)
		puṭṭhe	(ga)
1/97	andolāvei	andoḍāvei	(ka)
1/117	nicchuhāvei	nicchubhāvei	(ka)
1/127	lecchai	lecchatī	(ka)
3/115	suvvayāo	suvvadāo	(ka)
3/134	juyalaṁ	juvalam	(kha)
		jugalam	(ga)
4/19	iṭṭhā	tiṭṭhā	(ka)
4/21	°bāosiyā	°pāosiyā	(ka, ga)
5/6	savvouya	savvoduya	(ka, ga)
5/10	āhevaccam	ādhevaccam	(kha)

DESCRIPTION OF MANUSCRIPTS AND PRINTED VERSIONS

PAṆṆAVAṆĀ

(क) PAṆṆAVAṆĀ Text (manuscript)

Place Punamchand Budhmal Dudhoria, Chhāpar.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Size	10¼" x 4½"
No. of folios	302 patras
Lines per page	11
No. of letters per line	33 to 41
Script	Most beautiful and correct.
Special information	It belongs to 15th century approximately. It ends only with the mention of granthāgra 7787.

(ख) PAṆṆAVAṆĀ Ṭabbā (Manuscript)

Place	Ms. Section, JVB Library, Ladnun.
Size	9½" x 4"
No. of folios	465 patras
Lines per page	7
No. of letters per line	35 to 39
Script	Beautiful
Colophon	"Pratyakaṣaragaṇanayā anuṣṭhapacchandaḥ samānamidaṁ granthāgram 7787 pramāṇam". Six verses of stabaka :— "Samvat 1778 varṣe phālguna māse śuklapakṣe pratipadā tithau ravivāre paṇḍita īśvareṇa lipī cakre śrī vennātaṭa nagara madhye···śrīrastu kalyāṇamastu : śubham bhūyāllekhakapāṭhakayoḥ."
Special Information	It contains the text and stabaka.

(ग) Ms. PAṆṆAVAṆĀ TRIPĀṬHĪ with Text and Vṛtti

Place	Order's Ms. Grantha Bhaṇḍāra, Ladnun,
Size	9¾" x 4½"
No. of folios	448 patras
Lines per page	1 to 16
No. of letters per line	37 to 45
Special Information	Text is given in the middle, with vṛtti up and down. Some pages have vṛtti alone. Granthāgra of text is 7787 and that of vṛtti is 16000. The Ms. is beautiful and faultless. It must belong to 17th cen. approximately.

(घ) PAṆṆAVAṆĀ Text (Manuscript)

Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar.
Size	13½" x 5"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

No. of folios	138 patras.
Lines per page	15
No. of letters per line	60 to 65
Script	Beautiful and correct.
Special Information	Every patra is illustrated in the middle and out of the margin too. It appears to belong to 16th cen. Nothing else is mentioned at the end except 'granthāgram 7787'.

(गवृ) Variations of Vṛtti written in Ms. bearing ग sign.

(वृ) Vṛtti (Manuscript)

Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar.
No. of folios	159 patras.
Special Information	Manuscript, Scribing year 1577, Vaiśākha Śukla 10

(मवृपा) Variation as approved by Malayagiri.

(हवृ) Compliled with 'Pradeśa' commentary by Harībhadra sūri'.

Publisher—Shri Ṛṣabhadeva Keśarīmal, Ratlam,

Part I; verses 11

JAMBUDDĪVAPAṆṆATTĪ

(अ) Jambuddīvapaṇṇattī Text (Manuscript)

Place	Palm-leaf (photoprint) Ms. of Jaisalmer. Bhaṇḍāra, belonging to Madanchand Gauti, Sardarshahar.
No. of folios & pages	164, 328
Lines per page	2 to 6
No. of letters per line	30 to 35
Special Information	Some of the lines are incomplete. The Ms. ends only with the mention of Granthāgra 4146. It must be belonging to 14th century in view of its accompanying ms.

(ब) Jambuddīvapaṇṇattī Text (Manuscript)

Place	Palm-leaf (Photoprint) Ms. belonging to Madanchand Gauti, Sardarshahar.
No. of folios & pages	97 and 194
Lines per page	2 to 6

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	Letters per line	47 to 50
	Script year	Saṁvat 1378
(स)	Jambuddīvapaṇṇattī Text (Manuscript)	
	Place	Palm-leaf (Photoprint) of Jaisalmer Bhaṇḍāra, belonging to Madanchand Gauti, Sardarshahar.
	No. of folios & pages	46 & 92
	Lines per page	20
	Letters per lines	70 to 74
	Script year	Samvat 1646
	Special Information	The size of letters is very small.
(क)	Jambuddīvapaṇṇattī Text (Manuscript)	
	Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar.
	No. of patras	73
(ख)	Jambuddīvapaṇṇattī Text (Manuscript)	
	Place	Ms. Section, JVB Library, Ladnun
	No. of folios & pages	101 & 202
	Lines per page	13
	Letters per line	50 to 55
	Special Information	Ms. is antiquated and beautifully scribed. Script year is not mentioned.
(ग)	Jambuddīvapaṇṇattī Tripāṭhī, Text and Vṛtti (Manuscript)	
	Place	Ms. Section, JVB Library, Ladnun.
	No. of folios & pages	358 & 716 Pages 69-70 missing.
	Scribing year	Samvat 1913
	Special Information	Original text scribed in the middle, with commentary at top and bottom margin. Script beautifully written.
(ही वृ)	Vṛtti Tripāṭhi by Hīravijaya Sūri (Manuscript)	
(हीवृपा)	Variant readings as approved by Hīravijaya Sūri	
	Place	Order's Library, Ladnun.
	No. of patras	582
	Scribing year	Samvat 1919
	Sepecial Information	Original text scribed in the middle and Vṛttī at top and bottom margin
(पु वृ)	Vṛtti by Mahopādhyāya Puṇyasāgara, the disciple of Jinahansagaṇi of Kharataragaccha (Manuscript).	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पुवृपा) Variant readings as approved by Puṇyasāgara.

Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar.
No. of folios & pages	243 and 486
Scribing year	Samvat 1575
Special Information	Beautifully scribed.

(शा वृ) Vṛtti by Śāntyācārya, the disciple of Hīravijaya Sūri of Tapāgaccha Order (Manuscript).

Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar.
Scribing year	Saṁvat 1551

(शावृपा) Variant readings as approved by Śāntyacārya.

SŪRAPAṆṆATTĪ

(क) Sūrapaṇṇattī Text

Place	L D. Institute of Indology, Ahmedabad.
Serial No. of Ms.	Ḍā 2/57
Size	12¾" x 5"
No. of folios	62 [The first leaf is missing].
Lines in each page	13
Letters in each line	48 to 70
Ink	Picture drawing in Green and Red ink in the centre of each page.
Scribing year	Not mentioned.
Special Information	It is beautiful and easily legible. It is a very antiquated Ms. belonging to about 17th century. It ends with 25 verses in Prakrit language.

(ग) Sūrapaṇṇattī, Original, No. 60 (Manuscript)

Place	L.D. Institute of Indology, Ahmedabad.
Size	10¼" x 4¼"
No. of patras	87
Line in each page	11
Letters in each line	33 to 41
Scribing year	Saṁvat 1570
Special Information	Script is beautiful, but abounds in mistakes.

(घ) Sūrapaṇṇattī, Original, No. 607 (Manuscript)

Place	L.D. Institute of Indology, Ahmedabad.
Size	10" x 4"
No. of patras	66

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Lines per page	13
Letters per line	34 to 42
Scribing year	Saṁvat 1673
Special Information	Beautiful script but abounds in mistakes.

(सूवृ) Sūrapaṇṇattī, Commentary, No. 48.

Place	L.D. Institute of Indology, Ahmedabad.
Size	12½" x 5"
No. of patras	224
Lines per page	13
Letters per line	44 to 60
Scribing year	Saṁvat 1574
Special Information	Script beautiful and distinct.

CANDRAPRAJÑAPTĪ

(क) Candapaṇṇattī Original No. 600 (Manuscript)

Place	L.D. Institute of Indology, Ahmedabad.
Size	10½" x 4¼"
No. of patras	68
Lines per page	11
Letters per line	32 to 41
Scribing year	Saṁvat 1570
Special Information	Beautiful script, but abounds in errors. A bāvaḍī in the middle of the page.

(चं वृ) Candapaṇṇattī Commentary (Manuscript)

Place	Order's Ms. Library, Ladnun.
Size	10" x 4½"
No. of patras	179
Lines per page	6
Letters per line	about 50
Scribing year	Saṁvat 1762
Special Information	Script beautiful

(ट) Candapaṇṇattī Ṭabbā (Manuscript)

Place	Ms. Section, JVB Library, Ladnun.
No. of patras	57

NIRAYĀVALIYĀO

(क) Nirayāvaliyāo Text (Manuscript)

Place	Palm-leaf (Photoprint) copy of Jaisalmer Bhaṇḍāra, belonging to Madanchand Gauti, Sardarshahar.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	No. of folios & pages	25 & 50. Nine patras are photoprinted. Each page contains photos of six pages. Somewhere it is less or more.
	Size	12″ x ¾″
	Lines per page	5 lines of the text. Some patra contains 2 or 3 lines also. Some lines are even incomplete.
	Letters per line	45 to 50
	Special Information	No colophon at the end.
(ख)	Nirayāvaliyāo Text (Manuscript)	
	Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar.
	Size	13½″ x 5″
	No. of folios & pages	19 & 38
	Lines per page	15
	Letters per line	71 to 75
	Ink	Black colour. A bāvaḍī in the middle portion and a टीका in Red ink in its centre.
	Scribing year	Not mentioned
	Special Information	It should belong to 16th cen. approximately on the basis of the copy accompanying it.
(ग)	Nirayāvaliyāo Ṭabbā (Manuscript)	
	Place	Ms. Section, JVB Library, Ladnun.
	No. of folios & pages	63 and 126
	Lines per page	7
	Letters per line	35 to 45
	Size	10½″ x 4½″
	Scribing year	Saṁvat 1833
(वृ)	Nirayāvaliyāo Vṛtti (Manuscript)	
	Place	Śrīchand Ganeshdass Gadhaiya Library, Sardarshahar
	No. of patras	8
	Size	13½″ x 5″
	Scribing year	Saṁvat 1575
(मुवृ)	Printed Vṛtti	
	Editors	A.S. Gopani & V.J. Choksi
	Publisher	Shambubhai J. Shah, Gurjar Granthratna Karyalaya, Gandhi Road, Ahmedabad.
	Year of publication	1934 A.D.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Acknowledgement of Collaboration

The tradition of councils in Jainism is very old. As many as four councils had been held before the period that ended ere a millennium and a half from now. After the time of Devardhigaṇi no well-organised council was held. The Āgamas committed to writing in his time were disorganised to a very great extent in this long interval. A fresh council was therefore a desideratum. Ācārya Śrī Tulsī made an attempt at holding a Comprehensive Consentaneous Council, but could not succeed. Ultimately we arrived at the view that our Council will serve the same purpose, if it was based on impartial research and complete dedication to the cause of truth. We started our work in accordance with this resolution.

The chief inspiration to this council is the Ācārya Śrī. The council is a deliberative assembly headed by an eminent personality who combines in himself a variety of functions, the chief among them being teaching and instruction, translation, investigation, critical study, sorting out correct reading and so on.

We enjoyed the active cooperation, guidance and encouragement in all these activities from the Ācārya Śrī. This indeed was our strength and support for undertaking such an arduous task.

Instead of feeling relieved of the burden by expressing my gratitude to the Ācārya Śrī, it would be better for me to feel more burdened by the support of his blessing for the future work and responsibility.

In editing the text of the nine upāṅgas in the present volume I received sufficient cooperation from Muni Sudarshanji and Muni Hiralalji.

In the work of ascertaining the readings in Paṇṇavaṇā and Nirayāvaliyāo, Muni Balchandji and Muni Madhukarji respectively offered assistance. In preparing the press copy, Late Mannalalji Borad also proved helpful.

The work index of Paṇṇavaṇā has been prepared by Muni Śrīchandji, of Jambuddīvapaṇṇattī, Sūrapaṇṇattī and Candapaṇṇattī by Muni Sudarshanji and of Nirayāvaliyāo by Muni Hiralalji. The first Appendix and the extent of the text was determined by Muni Hiralalji. In preparing the word indexes of Paṇṇavaṇā and Jambuddīvapaṇṇattī, Sādhvī Jinaprabhā and Sādhvī Chandanbālā respectively contributed a lot.

In proof-reading Muni Sudarshanji, Muni Hiralalji, Muni Dulaharajji and Samaṇī Kusumprajñā actively cooperated. At certain stages Muni Vimalkumarji and Muni Sampatmalji also proved helpful. Muni Hiralalji was specially engaged in revising the text again.

I express sentiments of gratitude for all those, in addition to the names already mentioned, who contributed whatever little they could in editing the text of the 32 āgamas. In this task we utilised the mss. belonging to the institutions such as L.D. Institute of Indology, Ahmedabad, Shrichand Ganeshdass Gadhaiya

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Pustak Bhaṇḍāra, Sardarshahar, Terapantha Sabha, Sardarshahar, Punamchand Buddhamal Dudhoriya, Chhapar, Ghewar Pustakalaya, Sujangarh, Jain Vishva Bharti, Ladnun and Jaisalmer Bhaṇḍāra, in addition to Order's Bhaṇḍāra. The text of Nandī revised by Muni Puṇyavijayaji was also made available to us. All this proved a valuable assistance to us.

An important stage of the publication of the revised text of 32 āgamas, which began under the able stewardship of Ācārya Śrī Tulsi as Vācanā-pramukha, is completing today. For the first time the revised and authorised version of the 32 āgamas is being made available to the scholars. It is a matter of ineffable joy for us.

The work of the editing of āgamas first started in V.S. 2012 at Ujjain. In that year the word indexes of almost all the 32 āgamas had been prepared. Several monks and nuns were actively engaged in it. Groups, each containing three or four monks or nuns, were formed and they finished the assignment without any loss of time. On the one hand the aged monks like Muni Chauthmalji, Muni Sohanlalji (Churu) etc. were actively engaged in it while on the other hand the younger monks too devoted themselves wholeheartedly to this job, which was like a campaign and every participant was full of the awakening of a new spirit. The text was unrevised so far, so it could not be utilised fully well. Word-indexes had got to be prepared anew, but whatever line of action was chalked out, was quite commendable. One special and worth-mentioning characteristic of this editing is that everything was done by the monks themselves and no external help from any scholar-householder was required. The whole credit goes to the leadership of Ācārya Śrī as also to the Terapanth Religious Order.

I cannot afford to forget on this occasion the services rendered by the late Madanchandji Goṭhi who had a very sound knowledge of āgamas and was exceedingly helpful in revising the text of āgamas. Had he been alive, he would have felt satisfied on the publication of this volume.

The Managing Director of the Āgama series, Śrī Śrīchand Rampuria (Vice-Chancellor, Jain Vishva Bharti) has been taking interest in this work since its inception. He is ever devoted to the task of popularising the Āgamic lore. After retiring completely from his well-established profession, he has been devoting a major part of his time to the service of Āgama literature. Śrī Khemchand Sethia and Śrī Śrīchand Bengani, the President and the Secretary respectively of Jain Vishva Bharti have cooperated a lot towards the successful completion of this task. The English rendering of 'Editorial' and 'Introduction' has been made by Dr. Nathmal Tatia.

The mention of the cooperation of the co-workers in a common enterprise is only a formality. In fact it was a sacred duty of all of us and that we have fulfilled.

Anuvrata Bhawan, Delhi.
22nd Oct., 1987.

—Yuvācārya Mahāprajña

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Introduction

The present volume consists of nine āgamas —uvaṅgas—Paṇṇavaṇā, Jambuddīvapaṇṇattī, Candapaṇṇattī, Sūrapaṇṇattī, Nirayāvaliyāo (five in number).

PAṆṆAVAṆĀ

The canon under review is *Paṇṇavaṇā* (*Prajñāpanā*). It treats extensively the two substances—sentient being *(jīva)* and insentient being (*ajīva*).[1] The term used in the beginning is'*prajñāpanā*', hence the whole canon bears the name '*Prajñāpanā*'. One of its aims is to interpret the Reality through Question-Answer method, and the same thing has been done in this canonical text. That also justifies its nomenclature as *Prajñāpanā*. In the opening gāthās, this āgama has been named as '*Adhyayana*' which shows that one of its names is '*Adhyayana*' also. It relates to *Dṛṣṭivāda*, the twelfth aṅga, so it has been called as the essence or *niḥsyanda* of *Dṛṣṭivāda*.[2]

Subject-Matter

It contains 36 topics (*padas*) which discuss the various aspects (*paryāyas*) of soul *(jīva)* and non-soul (*ajīva*). It is like an ocean of the Science of Reality (*tattva vidyā*) through which the deeper meaning of Indian Science of Reality can be appreciated. The first topic (*pada*) provides two classifications of vegetable-bodied beings—the individual-bodied (*pratyekaśarīrī*) and common-bodied (*sādhāraṇaśarīrī*).[3] The common-bodied presents such a unique picture of Socialism which cannot even be imagined in human society. It deals in greater details with the *āryas* and the *mlecchas*.

This canon is the source book of the Science of Truth (*tattvajñāna*). Whereas the *Bhagavatī* is an *aṅga-praviṣṭa* canon, the *Paṇṇavaṇā* is an *Upāṅga*. Both these Āgamas are inter-related on account of their common theme of the Science of Truth. Most of the Prajñāpanā has been included in Bhagavatī by Devarddhigaṇī, as is evident from the use of '*jahā paṇṇavaṇāe*' time and again. Its every *pada* is like the embodiment of abstruse metaphysical problems. It contains various important *sūtras* about *leśyā* and *karma*.

Nandisūtra gives us the two classifications of Āgamas—*aṅgapraviṣṭa* and

1. *Paṇṇavaṇā, gāthā* 2
2. " " 3
3. " " 1/32

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

aṅgabāhya. The former is again twofold—*Āvaśyaka* and *Āvaśyaka-vyatirikta.*

The latter is again classified as *kālika* and *utkālika*. Thus *Paṇṇavaṇā* is *Aṅgabāhya*, *Āvaśyaka-vyatirikta* and *Utkālika.*[1] *Nandī* does not contain any reference to *Aṅga* and *Aṅgabāhya*. In the latter part of the Āgama age the interrelation between *Aṅga* and *Aṅgabāhya* was determined. Accordingly, *Prajñāpanā* turns to be the *upāṅga* of *Samavāyāṅga*. On what basis this inter-relationship was determined is a matter of research. It would have been all the more intelligible if *Prajñāpanā* had been recognised as *Upāṅga* of *Bhagavatī*.

Author and the Period of Composition

Paṇṇavaṇā is the sum and substance (*niḥsyanda*) of *Dṛṣṭivāda*. We can thus infer that its subject-matter has been derived from *Dṛṣṭivāda*. Its author is Ārya Śyāma [2] He was the 23rd in lineage from Ācārya Sudharmāsvāmī He was a powerful *vācaka* in the tradition of the lineage of *vācakas*. He flourished in the 4th century of *Vīra-nirvāṇa*.

The date of composition of *Paṇṇavaṇā* is probably between the year 335 and 375 of *Vīra-nirvāṇa*. *Nandī* mentions the '*Mahāprajñāpanā*' which is now extinct. Both *Mahāprajñāpanā* and *Prajñāpanā* are independent works. It cannot be said definitely whether the former is the progenitor of the latter or the latter contains any new topic. Among the twelve *upāṅgas*, *Prajñāpanā* holds a unique position. We can guess from this that it was composed at the period when the *Pūrvas* were passing into oblivion and their remaining portions alone were in memory. Ṣaṭkhaṇḍāgama too came into existence at such a period. The remaining *upāṅgas* were composed in the period subsequent to the composition of *Prajñāpanā*. All this conjecture has been made on the basis of their subject-matter. Umāsvāti flourished in 5th century of Vīra-nirvāṇa. His Tattvārtha-sūtra mentions the sūtra "āryā mlecchāśca",[3] which must be based on the first '*pada*' of *Prajñāpanā*. The clearcut idea and definition of '*ārya*' and '*mleccha*' appearing there is not to be found elsewhere. On this basis *Paṇṇavaṇā* precedes the period of Umāsvāti.

Commentaries

Many commentaries of *Paṇṇavaṇā* are available. They are as follows :—

Commentaries	Granthāgra	Author	Date
1. *Pradeśa-commentary*	3728	Haribhadrasūri	8th Cen.
2 *Tṛtīya-pada-Saṅgrahaṇī*	133	Abhayadevasūri	First half of 12th Cen.

1. *Nandī*, 73-77
2. *Prajñāpanā Vṛ, patra*, 47/1, *āryaśyāmo yadeva granthāntareṣu āsāligā pratipādakam gautama-praśnabhagavannirvacanarūpam sūtramasti tadevāgama bahumānataḥ paṭhati.*
Prajñāpanā Vṛ. Patra, 72; *bhagavān āryaśyāmo'pi itthameva sūtram racayati.*
3. *Tattvārthasūtra*, 3/36

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3.	*Vivṛti*	14500	Malayagiri	13th Cen.
4.	Abhayadeva's *Tṛtīya-pada-saṅgrahaṇī avacūrṇi*	—	Kulamaṇḍanagaṇī	15th Cen.
5.	*Vṛtti*	—	Anonymous	—
6.	*Vanaspati-saptikā* or *Vanaspati-Vicāra*	71	Municandra	12th Cen
7	*Avacūri*	—	Padmasūri	—
8.	*Bālāvabodha*	—	Dhanavimala	17th Cen.
		—	Jīvavijaya	Year 1785
10.	*Stabaka*	—	Parmānanda	" 1876
11.	*Paṇṇavaṇā nī Joḍa*	550	Jayācārya	" 1878

In addition to this, we also find some smaller commentaries of *Paṇṇavaṇā*. Muni Puṇyavijaya has mentioned the commentary named '*Bījaka*' by Harṣakulagaṇī'.[1] In Muni Puṇyavijaya's "*Introduction to Prajñāpanā*" and in '*Jinaratnakośa*' we find mention of '*paryāya*'. "*Prajñāpanā-sūtra-sāroddhāra*" is also mentioned in '*Jinaratnakośa*'.

Acarya Malayagiri mentions *cūrṇi* and *Vṛddhavyākhyā* in his *Vṛtti*.[2] *Cūrṇi* is untraceable at present. Malayagiri's commentary is the most elaborate among all the available commentaries. Ācārya Haribhadra Sūri's commentary is the most original and basic too.

JAMBUDDĪVAPAṆṆATTĪ

Nomenclature

This canon is known as *Jambuddīvapaṇṇattī* (*Jambūdvīpaprajñapti*). *Prajñāpti* means exposition, information or treatment. It contains the exposition of Jambūdvīpa, hence it is called *Jambūdvīpaprajñapti*. *Sthānāṅga sūtra* mentions four *aṅgabāhya prajñaptis*—(1) *Candraprajñapti*, (2) *Sūryaprajñapti*, (3) *Jambūdvīpaprajñapti*, and (4) *Dvīpasāgaraprajñapti*.[3] In *Kasāyopāhuḍa*, *prajñaptis* have been classified as the five *arthādhikāras* of '*parikarma*' which is the first division of *Dṛṣṭivāda*—(1) *Candraprajñapti*, (2) *Sūryaprajñapti*, (3) *Jambūdvīpaprajñapti*, (4) *Dvīpasāgara prajñapti* and (5) *Vyākhyāprajñapti*.[4] In *Nandī*, *Jambūdvīpaprajñapti*

1. *Paṇṇavaṇā Suttam*, Part II, Introduction, p. 158
1. *Vṛtti patra*, 269 : *āha ca cūrṇikṛt*.
    " " 271 : *āha ca cūrṇikṛto'pi*.
    " " 272 : *yadāh cūrṇikṛt*.
    " " 277 : *āha ca cūrṇikṛt*.
    " " 517 : *prajñāpanāyāścūrṇo*.
    " " 600 : *tatrāivaṃ vṛddhavyākhyā*.
1. *Ṭhāṇam*, 4/189
2. *Kasāyapāhuḍa, Adhikāra I, pejjadosavihattī*, p. 137; *parivamme pañca atthāhivārā—candapaṇṇattī sūrapaṇṇattī jambūddīvapaṇṇattī dīvasāyarapaṇṇattī viyāhapaṇṇattī cedi*.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

has been categorised as *Kālika āgama.*[1]

Subject-matter

Its main theme is Jambūdvīpa. The list of peripheral and incidental topics is very long. Lord Ṛṣabha, Kulakara, Bharata Cakravartī, Kālacakra, Sauramaṇḍala, and many others are the subjects dealt with in it. The description about Bharata Cakravartī's fourteen jewels and nine treasures has been described here in a lively manner.

Under the 'wheel of eternity' (*kālacakra*), thrilling account has been given about the sixth spoke of the present descending cycle. Of all the available forecasts about the universal annihilation, it invites our attention most effectively. By going through it one is confronted with the horrors of the atomic warfare.[2]

Both Lord Ṛṣabha and Lord Mahāvīra have similarity in various respects. The former is called Ādi Kāśyapa while the latter is called Antyakāśyapa.[3] Both propounded the path of five Great Vows. Like Lord Mahāvīra, Lord Ṛṣabha also put on garment for more than a year, followed by absolute nudity.[4]

Bharata Cakravartī was seated in his palace of glass. While he was looking at his reflection in the mirror, he attained liberation.[5] In later literature this incident is developed in a number of ways. At the loss of his finger-ring he felt the diminution of his beauty, which led him to deeper thought culminating into the attainment of a kevalihood.[6]

The canon gives us a beautiful picture of the termination of the '*yaugalika*' state, and the beginning of social life and political administration, It is a very important document to get a clear idea of the multifaceted personality of Lord Ṛṣabha. A comparative study of the delineation of Ṛṣabha in the present text with that in the *Śrīmadbhāgavata* is bound to be very fruitful.

The canon is divided into seven chapters which are called '*vakkhāro*' or '*vakṣaskāra*'. Some of the topics are :—

1. Jambūdvīpa
2. Kālacakra & Ṛṣabha-carita
3. Bharata-Carita
4. Jambūdvīpa : detailed description

1. *Nandī*, 78
2. *Jambuddīvapaṇṇattī*, 2/130-137
3. *Dhanañjaya-nāmamālā*, 114, page 57 : *vṛharsīyān vṛṣabho jyāyān punarādyaḥ prajāpatiḥ / aikṣvākuḥ kāśyapo brahmā gautamo nābhijo'grajaḥ //*
   Ibid, 115, p. 58 : *sanmatirmahatīrvīro mahāvīro'ntyakāśyapaḥ / nāthānvayo vardhamāno yattīrthamiha sāmpratam //*
4. *Jambuddīvapaṇṇattī*, 2/66
5. *Ibid*, 3/221,222
6. *Āvaśyakacūrṇi*, p. 227

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

5 Birth Celebration of Tīrthaṅkara
6. Geographical condition of Jambūdvīpa
7. Jyotiścakra.

Author and Date

This canon has been categorised as *Upāṅga* which shows that it was composed at a later period after Lord Mahāvīra's *nirvāṇa*. Its author must be some anonymous elderly monk. The date of composition too is unknown. *Jīvājīvābhigame*, containing detailed accounts of the *Kalpavṛkṣas*, was also composed by the elders. *Jambūdvīpaprajñapti* gives only a brief account of them indicating the details through '*jāva*'. This shows that *Jambūdvīpaprajñapti* was composed at a later period than that of *Jīvājīvābhigame*. Possibly we may ascribe it to an earlier date than the emergence of a clear-cut distinction between Śvetāmbara and Digambara schools which are mostly unanimous about the contents of *Jambūdvīpaprajñapti*. On this basis we can guess it to belong to the 4th-5th century of Vīranirvāṇa.

Commentaries

About nine commentaries are available on this canon. Out of them, the *Vṛtti* by Śānticandra alone, has been printed; the remaining ones are unpublished. Śānticandra has mentioned that Malayagiri's commentary was lost with the passage of time,[1] but modern scholars have traced it out in the Jaisalmer Bhaṇḍāra.[2] The *Vṛttis* by Śānticandra and Puṇyasāgara bear the mention of *Cūrṇi*.[3] These Commentaries are as follows :—

S N. Canon	Granthāgra	Author	Date
1. *Cūrṇi*	--	Anonymous	—
2. *Ṭīkā* (in Prakrit)	—	Haribhadrasūri	—
3. ”	—	Malayagiri	—
4. *Vṛtti*	14252	Hīravijayasūri	1639 (Vikram Saṁ)
5. *Vṛtti*	13275	Puṇyasāgara	1645
6. *Ṭīkā* (*Prameyaratnamañjūṣā*)	18000	Śānticandra	1660
7. *Ṭīkā*	15000	Brahma Muni	
8. *Vṛtti*	18352	Dharmasāgara and Vānara Ṛṣi	1639
9. *Vṛtti*	—	Anonymous	—

1. Śānticandra : *Vṛtti patra* 2 : "*tatra prastuto'pāṅgasya vṛttiḥ śrīmalayagirikṛtā'pi sampratikāladoṣeṇa vyavacchinnā.*"
2. See, *Jinaratnakośa*, p. 130.
3. (a) *Śānticandra, Vṛtti patra*, 19 : "*paridhyānayanopāyastvayaṃ cūrṇikāroktaḥ.*"
   (b) *Vṛ. p.* 53,252,278.
   (c) *Puṇyasāgarī vṛtti, patra*, 122 : "*etaccūrṇo ca.*"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Muni Dharmasī has composed *stabaka* (ṭabbā or bālāvabodha) on it in Gujarati. The abundance of commentaries reveals that this canon was studied very frequently.

CANDAPAṆṆATTĪ AND SŪRAPAṆṆATTĪ

Nomenclature

Sthānāṅga mentions four aṅgabāhya prajñaptis, of which the first is *Candraprajñapti* and the second is *Sūryaprajñapti*.[1] *Kasāyapāhuḍa* also mentions them in the same order.[2] As the name connotes, the first *prajñapti* deals with the moon while the second one deals with the sun, so they are named as *Candraprajñapti* and *Sūryaprajñapti* respectively.

Subject-Matter

The list of *āgamas* contains both these *āgamas*--*Candraprajñapti* and *Sūryaprajñapti*. *Nandī's* Āgama-list too tells of *Candraprajñapti* as *Kālika* and *Sūryaprajñapti* as *Utkālika*.[3] The cause of this distinction demands investigation. The former is not available at present but for a very small portion of its beginning. We come across some manuscripts entitled *Candraprajñapti* and *Sūryaprajñapti* but their text throughout is identical except the initial sūtra. Ācārya Malayagiri has composed commentaries on both of them, and they are almost identical The general impression prevailing at present is that *Candraprajñapti* is not at all available these days. Whatever is available is *Sūryaprajñapti* alone. Dr. Walter Schubring has put forward a conjecture—*Sūryaprajñapti*, from its 7th *pāhuḍa* onwards, ascribes more importance to the moon and the stars, so we imagine that *Candraprajñapti* begins from the 10th *pāhuḍa*.[4] But in the absence of the whole subject-matter of *Candraprajñapti*, Schubring's conclusions cannot be taken as authoritative outright. Even then there is much room for consideration.

Commentaries

Malayagiri's commentaries are available on both—*Candraprajñapti* and *Sūryaprajñapti*. The commentaries are identical and whatever their difference is has been noted in the Appendix. According to *Jinaratnakośa*, the *granthāgra* of the commentaries of these *āgamas* is 9500[5] and 9000[6] respectively. Bhadrabāhu's *Niryuktis* mention the *Niryukti* on *Sūryaprajñapti*,[7] which was, however, not

1. *Ṭhāṇaṃ*, 4/189.
2 *Kasāyapāhuḍa*, Chapter I—"*pejjadosa vihatti*", p. 137
3. *Nandī*, 77,78
4. Schubring : *The Doctrine of the Jaina*, p. 102
5. *Jinaratnakośa*, p. 118
6 *Ibid*, p 452
7. *Āvaśyaka-niryukti*, *gāthā*, 85

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

traceable in Malayagiri's period.[1] He has mentioned the views of his foregoing *ācāryas* also in his commentary.[2]

NIRAYĀVALIYĀO

Nomenclature

This āgama is a *śrutaskandha*. Its oldest name seems to be *upāṅga* Jambūsvāmī enquired of Sudharmāsvāmī the meaning of *upāṅga*, whereon the latter replied—"*Upāṅga* is fivefold—*Nirayāvalikā*, *Kalpāvataṁśikā*, *Puṣpikā*, *Puṣpacūlikā*, *Vṛṣṇidaśā*."[3]

The term '*upāṅga*' is here used in plural number. It is a *śrutaskandha* consisting of five sections. The plural number is probably used on this reason. We do not know about its original *āṅga*. The term '*upāṅga*' is not in vogue at present for the text. *Upāṅga* stands for the 'collection of twelve āgamas.'

Nandī's list of canons does not mention the term '*upāṅga*', but only '*Nirayāvaliyāo*' etc. are mentioned as five independent āgamas. It may be supposed that the five canons were regarded as a *śrutaskandha* in later times after the composition of the *Nandī*, and the *śrutaskandha* was named as *upāṅga*. According to Prof. Winternitz, these five āgamas were earlier known as '*Nirayāvalikā*'. They were regarded as separate entities when the contents of *aṅgas* and *upāṅgas* were determined.[4]

Nirayāvaliyāo is also known as *kalpikā*, as we find this in some manuscripts of *Nandī*. The same term has been used in the *vṛtti* of *Nandī* by Ācārya Haribhadrasūri and Ācārya Malayagiri.[5] It is just possible that the first group of the '*uvaṅgā*' was named as '*kalpikā*', but as it related to the karmas leading to hell, it was given the second name *Nirāyāvalikā*. In this way, the two names viz. '*Nirayāvalikā*' and '*kalpikā*' originated.

Subject-matter

The main theme of the *Nirayāvalikā* *śrutaskandha* is the auspicious and inauspicious conduct and karma, and their *vipāka*.

In the first section we find the description of fierce battle between Ceṭaka

1. *Vṛtti* p. 1, *gāthā* 5

   asyā niryuktirabhūtpūrvam śrībhadrabāhusūrikṛtā |
   kalidoṣāt sā'neśada vyācakṣe kevalam sūtram ||

2. *Sūryaprajñapti*, *Vṛtti* p 168 :
   tadevam yathā pūrvācāryairidameva pūrvasūtramavalambya pūrvaviṣayam vyākhyānam kṛtam tathā mayā vineyajanānugrahāya svamatyanusāreṇopadarśitam ||

3. *Nirayāvaliyāo*, 1/4,5

4. *History of Indian Literature*, II Edn, Vol. II, pp. 457-458

5. *Nandī*, 78

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

and Śreṇika, which has been referred to not only in the *Bhagavatī*[1] and the *Āvaśyaka cūrṇi*[2], but in the Buddhist literature too. It is surprising that history does not record this battle.

Battle may be indispensable for self-protection, and the consequent violence may be regarded as inevitable for a householder. Even then none can deny that violence is, for all purposes, but violence and it can never masquerade as non-violence. In the section under review, this anti-war attitude has come to the forefront, and it is a spiritual edict against the religious justification of holy wars.

The second section contains the description of the salvation of Śreṇika's ten grandchildren, who adopted the path of religious austerities. The third section propounds the observance and non-observance of restraint and equanimity. The fourth section contains the description of the ten nuns (disciples) of Pārśvanātha. We find the description of the observance of conduct by the twelve princes of Vṛṣṇi dynasty and their birth in '*Sarvārthasiddhi*' in the fifth section.

Thus various interesting and important topics have been propounded in this small-sized *upāṅga*, that is, *Nirayāvalikā śrutaskandha*.

Author and Date of Composition

No definite information is available about the author and the date of composition of this *aṅgabāhya śrutaskandha*. It is, however, certain that some elderly monk composed it. It deals with the topics related with *Bhagavatī*, *Jñātā*, *Upāsakadasā*, *Aupapātika* and *Rājapraśnīya*, but this is not a sufficient ground to determine the date of its composition. When the Āgamas were analysed, it was found that the earlier āgamas contain the names of the later āgamas, so they cannot determine which āgamas were composed earlier and which at a later date.

Commentaries

A Sanskrit commentary is available on this *śrutaskandha*. Śrīcandrasūri wrote its commentary, a very abridged piece of composition, in the Vikram era 1228. A *ṭabbā* (*stabaka*) was composed on it in Gujarati by Muni Dharmasī (Dharmasingh).

Completion of the Assignment

The overall credit of its editing goes to Yuvācārya Mahāprajña. The work has come to successful completion due to the single-mindedness with which he applied himself to the task day and night, without which this gigantic task would have been insurmountable Being a yogi basically, he is able to ever maintain concentration of mind. Engaged as he has been in the editing of the āgamas for a

1. *Bhagavatī*, 7/173,210
2. *Āvaśyaka cūrṇi*, part II, p. 174

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

very long period, he is eminently endowed with the power to penetrate into the deeper mysteries of the canonical texts. Modesty, perseverance and complete dedication to the guru have contributed to the development of these merits in him. Such merits were inherent in him since childhood. Since the time he came to me, I have found gradual intensification of these merits. I have derived utmost satisfaction from his capability and wholehearted devotion to duty.

Many other monks also contributed towards the editing of the text of these canons I bless them all with the wish that their working capacity may be all the more developed.

I had embarked upon this Herculean work of āgamas, having complete faith in my disciples—the monks and nuns of the Order.

I feel highly satisfied that this gigantic task has been accomplished successfully in a right way.

Anuvrata Bhawan,
New Delhi,
22nd October, 1987

—Acharya Tulsi

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयानुक्रम

पण्णवणा

पढमं पण्णवणापयं सू० १ से १३८ पृ० ३ से ३९.

मंगल-पदं, अभिधेयपदं, पदाभिधाण-पदं, उक्खेव-पदं १, अजीवपण्णवणा-पदं २, जीवपण्णवणा-पदं १०, पुढवीकाय-पदं १६, आउक्काय-पदं-२१, तेउक्काय-पदं २४, वाउकाय-पदं २६, वणस्सइकाय-पदं ३०, पइण्णगं ४८।८, अणंतजीवलक्खणं ४८।१०, पत्तेयसरीरजीवलक्खणं ४८।२०, छल्ली-अणंत-जीवलक्खणं ४८।३०, छल्ली-पत्तेयसरीरजीवलक्खणं ४८।३४, अणंतजीवलक्खणं ४८।३८, पइण्णगं ४८।४०, साहरणसरीरलक्खणं ४८।५३, जीवपमाणं ४८।५८, बेइंदियजीव-पदं ४९, तेइंदियजीव-पदं ५०, चउरिंदियजीव-पदं ५१, पंचिंदियजीव-पदं ५२, नेरइयजीव-पदं ५३, तिरिक्खजोणियजीव-पदं ५४, मणुस्सजीव-पदं ८२, मिलक्खु-पदं ८९, आरिय-पदं ९०, खेत्तारिय-पदं ९३, जातिआरिय-पदं ९४, कुलारिय-पदं ९५, कम्मारिय-पदं ९६, सिप्पारिय-पदं ९७, भासारिय-पदं ९८, णाणारिय-पदं ९९, दंसणारिय-पदं १००, देवजीव-पदं १३०.

बिइयं ठाणपयं सू० १ से ६७ पृ० ४० से ६८

पुढविकायठाण-पदं १, आउक्कायठाण-पदं ४, तेउक्कायठाण-पदं ७, वाउक्कायठाण-पदं १०, वणस्सइकायठाण-पदं १३, बेइंदियठाण-पदं १६, तेइंदियठाण-पदं १७, चउरिंदियठाण-पदं १८, पंचिंदिय-ठाण-पदं १९, नेरइयठाण-पदं २०, पंचिंदियतिरिक्खजोणियठाण-पदं २८, मणुस्सठाण-पदं २९, भवणवासिदेवठाण-पदं ३०, वाणमंतरदेवठाण-पदं ४१, जोइसियदेवठाण-पदं ४८, वेमाणियदेवठाण-पदं ४९, सिद्धठाण-पदं ६४.

तइयं बहुवत्तव्वयपदं सू० १ से १८३ पृ० ६९ से ९२

दिसि-पदं १, गति-पदं ३८, इंदिय-पदं ४०, काय-पदं ५०, जोग-पदं ९६, वेद-पदं ९७, कसाय-पदं ९८, लेस्सा-पदं ९९, सम्मत्त-पदं १००, णाण-पदं १०१, दंसण-पदं १०४, संजय-पदं १०५, उवओग-पदं १०६, आहार-पदं १०७, भासग-पदं १०८, परित्त-पदं १०९, पज्जत्त-पदं ११०, सुहुम-पदं १११, सण्णि-पदं ११२, भव-पदं ११३, अत्थिकाय-पदं ११४, चरिम-पदं १२३, जीव-पदं १२४, खेत्त-पदं १२५, बंध-पदं १७४, पोग्गल-पदं १७५, महादंडय-पदं १८३.

चउत्थं ठिइपयं सू० १ से २९९ पृ० ९३ से १११

नेरइयठिइ-पदं १, देवठिइ-पदं २५, भवणवासिठिइ-पदं ३१, एगिंदियठिइ-पदं ५६, बेइंदियठिइ-पदं ९५, तेइंदियठिइ-पदं ९८, चउरिंदियठिइ-पदं १०१, पंचिंदियतिरिक्खजोणियठिइ-पदं १०४, मणुस्सठिइ-पदं १५८, वाणमंतरठिइ-पदं १६५, जोइसियठिइ-पदं १७१, वेमाणियठिइ-पदं २०७.

पंचमं विसेसपयं सू० १ से २४४ पृ० ११२ से १३२

पज्जव-पदं १, जीवपज्जव-पदं २, नेरइयाणं पज्जव-पदं ४, भवणवासीणं पज्जव-पदं ६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगिंदियाणं पज्जव-पदं ६, विगलिंदियाणं पज्जव-पदं १६, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जव-पदं २२, मणुस्साणं पज्जव-पदं २३, वाणमंतराणं पज्जव-पदं २५, जोइसिय-वेमाणियाणं पज्जव-पदं २६, ओगाहणाइं पडुच्च नेरइयाणं पज्जव-पदं २७, ओगाहणाइं पडुच्च भवणवासीणं पज्जव-पदं ४८, ओगाहणाइं पडुच्च एगिंदियाणं पज्जव-पदं ५२, ओगाहणाइं पडुच्च विगलिंदियाणं पज्जव-पदं ६७, ओगाहणाइं पडुच्च पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जव-पदं ८२, ओगाहणाइं पडुच्च मणुस्साणं पज्जव-पदं १००, ओगाहणाइं पडुच्च वाणमंतराईणं पज्जव-पदं १२१, अजीवपज्जव-पदं १२३.

छट्ठं वक्कंतिपयं सू० १ से १२३ पृ० १३३ से १४८

वारसदारं उववाय-उव्वट्टणा-विरह-पदं १, चउवीसाइं दारं उववाय-उवट्टणा-विरह-पदं १० संतरदारं उववाय-उव्वट्टणा-पदं ४७, एगसमयदारं उववाय-उव्वट्टणा-पदं ६०, कत्तोदारं उववाय-उव्वट्टणा-पदं ७०, उव्वट्टणादारं उव्वट्टणापुव्वं उववाय-पदं ६६, परभवियाउयदारं परभवायुबंध-काल-पदं ११४, आगरिसदारं आउयबंधस्स आगरिस-पदं ११८.

सत्तमं उस्सासपयं सू० १ से ३० पृ० १४६ से १५१

चउवीसदंडएसु उस्सासविरहकाल-पदं १.

अट्ठमं सण्णापयं सू० १ से ११ पृ० १५२, १५३

सण्णाभेय-पदं १, नेरइयाईणं सण्णा-पदं २, नेरइयाणं सण्णावियार-पदं ४, तिरिक्खजोणियाणं सण्णावियार-पदं ६, मणुस्साणं सण्णावियार-पदं ८, देवाणं सण्णावियार-पदं १०.

नवमं जोणीपयं सू० १ से २६ पृ० १५४ से १५६

सीयाइजोणि-पदं १, सचित्ताइजोणि-पदं १३, संवुडाइजोणि-पदं २० कुम्मुण्णयाइजोणि-पदं २६.

दसमं चरिमपयं सू० १ से ५३ पृ० १५७ से १६७

चरिमाचरिमविभाग-पदं १ चरिमाचरिमपयाणं अप्पबहुत्त-पदं ३, परमाणुपोग्गलाईणं चरिमाइ-विभाग-पदं ६, संठाणाणं चरिमाइविभाग-पदं १५, गतिचरिमाइ-पदं ३१, ठितिचरिमाइ-पदं ३४, भवचरिमाइ-पदं ३६, भासाचरिमाइ-पदं ३८, आणापाणुचरिमाइ-पदं ४०, आहारचरिमाइ-पदं ४२, भावचरिमाइ-पदं ४४, वण्णचरिमाइ-पदं ४६, गंधचरिमाइ-पदं ४८, रसचरिमाइ-पदं ५०, फासचरिमाइ-पदं ५२.

एक्कारसमं भासापयं सू० १ से ६० पृ० १६८ से १७८

ओहारिणीभासा-पदं १, पण्णवणीभासा-पदं ४, मंदकुमाराइभासासण्णा-पदं ११, एगवयणाइ-भासा-पदं २१, भासासरूव-पदं ३०, भासाभेय-पदं ३१, भासगाभासग-पदं ३८, भासज्जाय-पदं ४२, भासदव्वगहण-निसिरण-पदं ४७ सोलसविहवयण-पदं ८६.

बारसमं सरीरपयं सू० १ से ३८ पृ० १७६ से १८२

सरीरभेय-पदं १, चउवीसदंडएसु सरीर-पदं २, ओहेण बद्ध-मुक्कसरीर-पदं ७, चउवीसदंडएसु बद्ध-मुक्कसरीर-पदं ११.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेरसमं परिणामपयं सू० १ से ३१ पृ० १८३ से १८६

परिणामभेय-पदं १, जीवपरिणाम-पदं २, चउवीसदंडएसु परिणाम-पदं १४, अजीवपरिणाम-पदं २१.

चोद्दसमं कसायपयं सू० १ से २८ पृ० १८७, १८८

कसायभेय-पदं १, चउवीसदंडएसु कसायपरूवण-पदं २, कसायपइट्ठा-पदं ३, कसायउप्पत्ति-पदं ५, कसायभेय-पदं ७, कसाएहिं कम्मचयोवचयादि-पदं ११.

पणरसमं इंदियपयं सू० १ से १४३ पृ० १८९ से २०४

इंदियाणं भेद-पदं १, संठाण-पदं २, बाहल्ल-पदं ७, पोहत्त-पदं ८, कतिपएस-पदं ११, ओगाढ-पदं १२, अप्पाबहुय-पदं १३, चउवीसदंडएसु संठाणाइ-पदं १७, पुट्ठ-पदं ३६, पविट्ठ-पदं ३९, विसय-पदं ४० अणगारदारे निज्जरापोग्गल-पदं ४३, आहारदारे निज्जरापोग्गल-पदं ४६, अद्दायाइदारसत्तगे पडिबिंबपेहा-पदं ५०, कंबलफुसणा-पदं ५१, थूणादारे ओगाहणा-पदं ५२ थिग्गलदारे फुड-पदं ५३, दीवोदहिदारे फुड-पदं ५४, लोगदारे फुड-पदं ५६, अलोगदारे फुड-पदं ५७, इंदियाणं उवचय-पदं ५८, निव्वत्तणा-पदं ६०, निव्वत्तणासमय-पदं ६१, लद्धि-पदं ६२ उवओगद्धा-पदं ६३, उवओगद्ध-अप्पबहुय-पदं ६४, ओगाहण-पदं ६५, अवाय-पदं ६६, ईहा-पदं ६७, उग्गह-पदं ६८, दव्व-भाव-पदं ७६, दव्विंदिय-पदं ७७, भाविंदिय-पदं १३३.

सोलसमं पओगपयं सू० १ से ५५ पृ० २०६ से २१५

पओगभेय-पदं १, जीवेसु ओहेणं पओग-पदं २, चउवीसदंडएसु ओहेणं पओग-पदं ३, जीवेसु विभागेणं पओग-पदं १०, चउवीसदंडएसु विभागेणं पओग-पदं ११, गइप्पवाय-पदं १७, पओगगइ-पदं १८, ततगइ-पदं २२, बंधणच्छेदणगइ-पदं २३, उववायगइ-पदं २४, विहायगति-पदं ३८,

सत्तरसमं लेस्सापयं सू० १ से १७२ पृ० २१६ से २३८

नेरइएसु समाहारादि-पदं १, भवणवासिसु समाहारादि-पदं-१४, एगिंदिय-विगलिंदिएसु समाहारादि-पदं १८, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु समाहारादि-पदं २३, मणुस्सेसु समाहारादि-पदं २४, वाणमंतराइसु समाहारादि-पदं २६, लेस्सेसु चउवीसदंडएसु समाहारादि-पदं २८ लेस्सा पदं ३६ चउवीसदंडएसु लेस्सापरूवण-पदं ३७, अप्पाबहुय-पदं ५६, इड्ढिअप्पाबहुय-पदं ८४, उववाय-उव्वट्टणा-पदं ९०, ओहेणं उववाय-उव्वट्टणा-पदं ९२, विभागेणं उववाय-उव्वट्टणा-पदं १००, कण्हाइलेस्सेसु नेरइएसु ओहिखेत्त-पदं १०६, णाण-पदं ११२ लेस्सा-पदं ११४, लेस्साणं परिणति-पदं ११५, वण्ण-पदं १२३, रस-पदं १३०, गंधादि-पदं १३६, परिणाम-पदं १३९ पदेस-पदं १४०, अवगाह-पदं १४१, वग्गण-पदं १४२, ठाण-पदं १४३, अप्पबहु-पदं १४४, लेस्सा-पदं १४७, परिणमणभाव-पदं १४८, लेस्सा-पदं १५६, मणुस्सेसु लेस्सा-पदं १५७, लेस्सं पडुच्च गब्भुप्पत्ति-पदं १६६.

अट्ठारसमं कायट्ठिइपयं सू० १ से १२७ पृ० २३९ से २४९

जीव-पदं १, गइ-पदं २, इंदिय-पदं १३, काय-पदं २५, जोग-पदं ५५, वेद-पदं ५९, कसाय-पदं ६४, लेस्सा-पदं ६८, सम्मत्त-पदं ७६, णाण-पदं ७९, दंसण-पदं ८५, संजय-पदं ८९, उवओग-पदं ९३, आहार-पदं ९४, भासग-पदं १०४, परित्त-पदं १०६, पज्जत्त-पदं ११३, सुहुम-पदं ११६, सण्णि-पदं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११६, भवसिद्धिय-पदं १२२, अत्थिकाय-पदं १२५, चरिम-पदं १२६.

एगूणवीसइमं सम्मत्तपयं सू० १ से ५ पृ० २५०

वीसइमं अंतकिरियापयं सू० १ से ६४ पृ० २५१ से २५८

अंतकिरिया-पदं १, अणंतर-पदं ६, एगसमय-पदं ६, उव्वट्ट-पदं १४, तित्थगर-पदं ३८, चक्कवट्टि-पदं ५०, बलदेव-पदं ५५, वासुदेव-पदं ५६, मंडलिय-पदं ५७, रयण-पदं ५८, देवउववाय-पदं ६१, असण्णिआउय-पदं ६२.

एगवीसइमं ओगाहणसंठाणपयं सू० १ से १०५ पृ० २५६ से २७३

सरीर-पदं १, ओरालियसरीरे विहि-पदं २, ओरालियसरीरे संठाण-पदं २१, ओरालियसरीरे पमाण-पदं ३८ वेउव्वियसरीरे विहि-पदं ४६, वेउव्वियसरीरे संठाण-पदं ५६, वेउव्वियसरीरे पमाण-पदं ६३, आहारगसरीरे विहि-पदं ७२, आहारगसरीरे संठाण-पदं ७३, आहारगसरीरे पमाण-पदं ७४, तेयगसरीरे विहि-पदं ७५, तेयगसरीरे संठाण-पदं ७८, तेयगसरीरे पमाण-पदं ७४, कम्मगसरीर-पदं ६४, पोग्गलचिणणा-पदं ८५, सरीरसंजोग-पदं ६८, दव्व-पएसप्पबहु-पदं, १०४, सरीरओगाहणप्पबहु-पदं १०५.

बावीसइमं किरियापयं सू० १ से १०१ पृ० २७४ से २८३

किरियाभेय-पदं १ सकिरियत्त-अकिरियत्त-पदं ७, किरियाविसय-पदं ६, किरियाहेऊहिं कम्म-पगडिबंध-पदं १२, कम्मबंधमहिकिच्चकिरिया-पदं २६, एगत्त-पुहत्तेहिं किरिया-पदं २६, किरिया-सह-भाव-पद ४६, आओजियकिरिया-पदं ५७, पुट्ठापुट्ठभाव-पदं ५६, किरियासामित्त-पदं ६०, किरियाणं सहभाव-पदं ६७, पावट्ठाणविरइ-पदं ७७, कम्मपगडिबंध-पदं ८३, किरियाभेय-पदं ६१, अप्पाबहुय-पदं १०१.

तेवीसइमं कम्मपगडिपयं सू० १ से २०२ पृ० २८४ से ३०२

कतिपगडि-पदं, कहबंधति-पदं ३, कतिठाणबंध-पदं ६, कतिपयडिवेद-पदं ६, कतिविधाणुभाव-पदं १३, मूलोत्तरपगडिभेद-पदं २४, कम्मपयडीणं ठिइ-पदं ६०, एगिंदिएसु कम्मपयडीणं ठिइबंध-पदं १३४, बेइंदिएसु कम्मपयडीणं ठिइबंध-पदं १५५, तेइंदिएसु कम्मपयडीणं ठिइबंध पदं १६०, चउरिंदिएसु कम्मपयडीणं ठिइबंध-पदं १६४, असण्णीसु कम्मपयडीणं ठिइबंध-पदं १६७, सण्णीसु कम्मपयडीणं ठिइबंध-पदं १७६, जहण्णठिइबंधग-पदं १६१, उक्कोसठिइबंधग-पदं १६४.

चउवीसइमं कम्मबंधपयं सू० १ से १५ पृ० ३०४, ३०५

पंचवीसइमं कम्मबंधवेयपयं सू० १ से ५ पृ० ३०६

छव्वीसइमं कम्मवेयबंधपयं सू० १ से १२ पृ० ३०७, ३०८

सत्तावीसइमं कम्मवेयवेयगपयं सू० १से ६ पृ० ३०६

अट्ठावीसइमं आहारपयं सू० १ से १४५ पृ० ३१० से ३२३

सचित्ताहार-पदं १, नेरइएसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं ३, भवणवासीसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं २५, एगिंदिएसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं २८, विगलिंदिएसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं ३७ पंचिंदिय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिरिक्खजोणिएसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं ४७ मणुस्सेसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं ४९, देवेसु आहारट्ठि-आइसत्तग-पदं ७२, लोमाहार-पदं १०२, मणभक्खि-पदं १०४, आहारदारे आहारगादि-पदं१०६, भवियदारे आहारगादि-पदं १११, सण्णिदारे आहारगादि-पदं ११५, लेस्सादारे आहारगादि-पदं १२२, दिट्ठिदारे आहारगादि पदं १२५, संजयदारे आहारगादि-पदं१२८, कसायदारे आहारगादि-पदं १३२, णाणदारे आहारगादि-पदं १३५. जोगदारे आहारगादि-पदं १३८, उवओगदारे आहारगादि-पदं १३९, वेददारे आहारगादि-पदं १४०, सरीरदारे आहारगादि-पदं १४१, पज्जत्तिदारे आहारगादि-पदं १४२.

एगूणतीसइमं उवओगपयं	सू० १ से २२	पृ० ३२४ से ३२६
तीसइमं पासणयापयं	सू० १ से२८	पृ० ३२७ से ३२९
एगतीसइमं सण्णिपयं	सू० १ से ६	पृ० ३३०
बत्तीसइमं संजमपयं	सू० १ से ६	पृ० ३३१
तेत्तीसइमं ओहिपयं	सू० १ से ३७	पृ० ३३२ से ३३४

ओहिभेय-पदं १, ओहिविसय-पयं २, ओहिसंठाण-पयं १९, ओहिअब्भितर-बाहिर-पदं २७, देस-सव्वोहि-पदं ३१, ओहिस्स खयवुड्ढिआदि पदं ३५.

चउतीसइमं परियारणापयं	सू० १ से २५	पृ० ३३५ से ३३९

अणंतराहार-पदं १, आहाराभोगणा-पदं ५, पोग्गलजाणणा-पदं ६, अज्झवसाण-पदं १३, सम्मत्ता-भिगम-पदं १४ परियारणा-पदं १५.

पंचतीसइमं वेयणापयं	सू० १ से २३	पृ० ३४० से ३४३

सीताइवेदणा-पदं १, दव्वाइवेदणा-पदं ४, सारीराइवेदणा-पदं ६ साताइवेदणा-पदं ८, दुक्खाइ-वेदणा-पदं १०, अब्भोवगमियाइवेयणा-पदं १२, णिदाइवेदणा-पदं १६.

छत्तीसइमं समुग्घापयं	सू० १ से ९४	पृ० ३४४ से ३५६

सम्मुग्घायभेद-पदं १ समुग्घायकाल-पदं २, समुग्घायसामित्त-पदं ४, एगत्तेणं अतीताइसमुग्घाय-पदं ८, पुहत्तेणं अतीताइसमुग्घाय-पदं १२, तब्भाव एव एगत्तेणं अतीताइसमुग्घाय-पदं १८, तब्भाव एव पुहत्तेणं अतीताइसमुग्घाय-पदं ३२, समोहयासमोहयाणं अप्पाबहुय-पदं ३५. कसायसमुग्घाय-पदं ४२, छाउमत्थियसमुग्घाय-पदं ५३, ओगाहफासाइ-पदं ५९ केवलिसमुग्घाय-पदं ७९, सिद्धसरूव-पदं ९३.

जंबुद्दीवपण्णत्ती

पढमो वक्खारो	सू० १ से ५१	पृ० ३५९ से ३७०
बीओ वक्खारो	सू० १ से १६४	पृ० ३७१ से ४०३
तइओ वक्खारो	सू० १ से २२६	पृ० ४०४ से ४६७
चउत्थो वक्खारो	सू० १ से २७७	पृ० ४६८ से ५२४
पंचमो वक्खारो	सू० १ से ७४	पृ० ५२५ से ५४८
छट्ठो वक्खारो	सू० १ से २६	पृ० ५४९ से ५५१
सत्तमो वक्खारो	सू० १ से २१४	पृ० ५५२ से ५८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदपण्णत्ती

	सू० १ से १०	पृ० ५९१ से ५९३

सूरपण्णत्ती

पढमं पाहुडं	सू० १ से ३१	पृ० ५९४ से ६०९
बीयं पाहुडं	सू० १ से ३	पृ० ६१० से ६१५
तच्चं पाहुडं	सू० १ से २	पृ० ६१६ से ६१७
चउत्थं पाहुडं	सू० १ से १०	पृ० ६१८ से ६२२
पंचमं पाहुडं	सू० १	पृ० ६२२
छट्ठं पाहुडं	सू० १	पृ० ६२३ से ६२५
सत्तमं पाहुडं	सू० १	पृ० ६२५
अट्ठमं पाहुडं	सू० १	पृ० ६२६ से ६२९
नवमं पाहुडं	सू० १ से ५	पृ० ६३० से ६३३
दसमं पाहुडं	सू० १ से १७३	पृ० ६३४ से ६६१
एक्कारसमं पाहुडं	सू० १ से ६	पृ० ६६२ से ६६३
बारसमं पाहुडं	सू० १ से ३०	पृ० ६६४ से ६६८
तेरसमं पाहुडं	सू० १ से १७	पृ० ६६९ से ६७१
चउद्दसमं पाहुडं	सू० १ से ८	पृ० ६७२
पण्णरसमं पाहुडं	सू० १ से ३७	पृ० ६७३ से ६७५
सोलसमं पाहुडं	सू० १ से ६	पृ० ६७६
सत्तरसमं पाहुडं	सू० १	पृ० ६७७
अट्ठारसमं पाहुडं	सू० १ से ३७	पृ० ६७८ से ६८३
एगूणवीसइमं पाहुडं	सू० १ से ३८	पृ० ६८३ से ६९३
वीसइमं पाहुडं	सू० १ से ९	पृ० ६९३ से ७०५
परिसिट्ठं		पृ० ७०६ से ७१२

उवंगा निरयावलियाओ

पढमं अज्झयणं	सू० १ से १४२	पृ० ७१५ से ७३९

उक्खेव-पदं १, कालीए चिंता-पदं १२, भगवओ महावीरस्स समवसरण-पदं १६, कालीए पुच्छा-पदं २१, भगवओ उत्तर-पदं २२, कालीए मुच्छा-पदं २३ कालीए पडिगमण-पदं २४ कालकुमारस्स निरय-उववत्ति-पदं २५ चेल्लणाए दोहद-पदं २८, दोहद-संपन्नता-पदं ४२, गब्भसाडणचिंतणा-पदं ५०, पुत्तपसव-पदं ५२, पुत्तस्स उक्कुरुडियाए उज्झणा-पदं ५४ सेणिएण पुत्तस्स परिचरिया-पदं ५९, पुत्तस्स कूणिएत्ति नाम-पदं ६३ कूणिएण सेणियस्स निग्गह-पदं ६५, चेलणाए पडिबोह-पदं ७०, कूणियस्स निवेद-पदं ८८, सेणियस्स अप्पघाय-पदं ८९ कूणियस्स विलावकरण-पदं ९२, कूणिएण रायहाणी परिवत्तण-पदं ९३ वेहल्लस्स गंधहत्थिकीला-पदं ९४, हार-गंधहत्थि-विवाद-पदं ९८, वेहल्लस्स चेडग-सरण-पदं १०५, कूणिएण दूय-पेसण-पदं १०७, कूणियस्स जुद्धसज्जा-पदं ११५, चेडगस्स जुद्धसज्जा-पदं १२७,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहमुसल-संगाम-पदं १३४, कालकुमारस्स मरण-पदं १४० निक्खेव-पदं १४२.

२-१० अज्झयणाणि सू० १४३ से १४८ पृ० ७४०

कप्पवडिंसियाओ

पढमं अज्झयणं सू० १ से १४ पृ० ७४१, ७४२

पुप्फियाओ

पढमं अज्झयणं सू० १ से १९ पृ० ७४४ से ७४६
बीअं अज्झयणं सू० २० से २२ पृ० ७४६
तइयं अज्झयणं सू० २३ से ८७ पृ० ७४७ से ७५८

उक्खेव-पदं २३, सोमिलस्स अरहया पासेण संवाद-पदं २७, सोमिलस्स सावगधम्मगहण-पदं ४५, सोमिलस्स मिच्छत्त-पदं ४७, सोमिलस्स तावसपव्वज्जा-पदं ५०, सोमिलस्स साधना-पदं ५१, सोमिलस्स देवेण पसिणोत्तर-पदं ७८, सोमिलस्स पुणो सावगधम्मगहण-पदं ८२, सोमिलस्स सुक्कमहग्गहत्ताए उववत्ति-पदं ८३, निक्खेव-पदं ८७.

चउत्थं अज्झयणं सू० ८८ से १५३ पृ० ७५८ से ७७०

उक्खेव-पदं ८८, बहुपुत्तिया-पदं ९०, सुभद्दाए संताणपिवासा पदं ९५, सुभद्दागिहे अज्जागमण-पदं ९९, सुभद्दाए संताणलाभोवायपुच्छ-पदं १०१, अज्जाए धम्मकहा-पदं १०६, सुभद्दाए अज्जाए संताणपिवासाणुभव-पदं ११४, सुभद्दाए बहुपुत्तियदेवित्ताए उववत्ति-पदं १२० सोमाए संताणुप्पत्ति-पदं १२५, सोमाए बहुसंताणजणियखेद-पदं १३०, सोमागिहे अज्जागमण-पदं १३२, सोमाए धम्मपडिवत्ति-पदं १३५, सोमाए पव्वज्जा-पदं १४५, सोमाए सामाणियदेवत्ताए उववत्ति-पदं १५०, निक्खेव-पदं १५३.

पंचमं अज्झयणं सू० १५४ से १६६ पृ० ७७०, ७७१
छट्ठं अज्झयणं सू० १६७ से १७० पृ० ७७२
७-१० अज्झयणाणि सू० १७१ पृ० ७७२

पुप्फचूलियाओ

पढमं अज्झयणं सू० १ से २७ पृ० ७७३ से ७७६
२-१० अज्झयणाणि सू० २८ पृ० ७७७

वण्हिदसाओ

पढमं अज्झयणं सू० १ से ४४ पृ० ७७८ से ७८४
२-१२ अज्झयणाणि सू० ४५ पृ० ७८५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णवणासुत्तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमं पण्णवणापयं

मंगल-पदं

१. ववगयजर[1]-मरणभए, सिद्धे अभिवंदिऊण तिविहेणं।
वंदामि जिणवरिंदं, तेलोक्कगुरुं महावीरं ॥१॥

अभिधेय-पदं

सुयरयणनिहाणं जिणवरेण, भवियजणणिव्वुइकरेण।
उवदंसिया भयवया, पण्णवणा सव्वभावाणं[2] ॥२॥
अज्झयणमिणं चित्तं, सुयरयणं दिट्ठिवाय-णीसंदं।
जह वण्णियं भगवया, अहमवि तह वण्णइस्सामि ॥३॥

पदाभिधाण-पदं

१. पण्णवणा २. ठाणाइं ३. बहुवत्तव्वं ४. ठिई ५. विसेसा य।
६. वक्कंती[3] ७. उस्सासो ८. सण्णा ९. जोणी य १०. चरिमाइं ॥४॥
११. भासा १२. सरीर १३. परिणाम १४. कसाए १५. इंदिए १६. पओगे य।
१७. लेसा १८. कायठिई या १९. सम्मत्ते २०. अंतकिरिया य ॥५॥

---

१. णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ववगय° (क,ख,घ); वृत्योर्नास्ति व्याख्यातः।

२. अतोग्रे 'ख, ग, घ' सङ्केतितादर्शेषु गाथाद्वयं लभ्यते—
वायगवरवंसाओ तेवीसइमेण धीरपुरिसेण।
दुद्धरधरेण मुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीण ॥१॥
सुयसागरा विएऊण, जेण सुयरयणमुत्तमं दिन्नं।
सीसगणस्स भगवओ तस्स नमो अज्जसामस्स ॥२॥
वृत्तिकृद्भ्यां इदं गाथायुगलं अन्यकर्तृकमिति सूचयित्वापि व्याख्यातम्। अनयोः केचित् पाठभेदा अपि दृश्यन्ते—°बुद्धीण°बुद्धीणं (क, घ); °बुद्धीणा (ख); °बुद्धी (ग); समिद्धबुद्धीणे' त्यत्र णाशब्दस्य ह्रस्वत्वं द्धिशब्दस्य च दीर्घताऽर्षत्वात् (मवृ)। विएऊण—विऊएण (ख); विणेऊण (क, घ, पु, मुद्रितमवृ); हस्तलिखितमलयगिरिवृत्तौ 'विएऊण' इति पाठो दृश्यते हरिभद्रवृत्तौ च 'चियेऊण' इति पाठोस्ति।

३. वुक्कंती (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१. ओगाहणसंठाणे[1] २२. किरिया २३. कम्मे 'त्ति यावरे'[2]।
२४. कम्मस्स बंधए २५. कम्मवेदए २६. वेदस्स बंधए २७. वेयवेयए ।।६।।
२८. आहारे २९. उवओगे ३०. पासणया ३१. सण्णि ३२. संजमे चेव ।
३३. ओही ३४. पवियारण ३५. वेयणा य ३६. तत्तो समुग्घाए ।।७।।

उक्खेव-पदं

से किं तं पण्णवणा ? पण्णवणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपण्णवणा य अजीवपण्णवणा य ।।

अजीवपण्णवणा-पदं

२. से किं तं अजीवपण्णवणा ? अजीवपण्णवणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूवि-अजीवपण्णवणा य अरूविअजीवपण्णवणा य ।।

३. से किं तं अरूविअजीवपण्णवणा ? अरूविअजीवपण्णवणा दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए । से त्तं अरूविअजीवपण्णवणा ।।

४. से किं तं रूविअजीवपण्णवणा ? रूविअजीवपण्णवणा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा खंधदेसा खंधप्पएसा परमाणुपोग्गला ।

ते समासतो पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—वण्णपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया ।

जे वण्णपरिणता ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—कालवण्णपरिणता नीलवण्णपरिणता लोहियवण्णपरिणता हालिद्दवण्णपरिणता सुक्किलवण्णपरिणता ।

जे गंधपरिणता ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुब्भिगंधपरिणता य दुब्भिगंधपरिणता य ।

जे रसपरिणता ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—तित्तरसपरिणता कडुयरसपरिणता कसायरसपरिणता अंबिलरसपरिणता महुररसपरिणता ।

जे फासपरिणता ते अट्ठविहा पण्णत्ता, तं जहा—कक्खडफासपरिणता मउयफासपरिणता[3] गरुयफासपरिणता लहुयफासपरिणता सीयफासपरिणता उसिणफासपरिणता निद्धफास-परिणता लुक्खफासपरिणता ।

जे संठाणपरिणता ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—परिमंडलसंठाणपरिणता वट्टसंठाण-परिणता तंससंठाणपरिणता चउरंससंठाणपरिणता आयतसंठाणपरिणता २५ ।।

५. जे वण्णओ कालवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरस-परिणता वि महुररसपरिणता वि, फासओ कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीयफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि

---

१. अवगाहनास्थानं (मवृ) ।
२. इ यावरे (क, ख); इयर (ख) ।
३. मउफास° (ग), मृदुस्पर्श° (मवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २० ।

जे वण्णओ नीलवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणता[1] वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासओ कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीतफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २० ।

जे वण्णओ लोहियवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासओ कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीतफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २० ।

जे वण्णओ हालिद्दवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासओ कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीतफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २० ।

जे वण्णओ सुक्किलवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासओ कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीयफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २०।१०० ॥

६. जे गंधओ सुब्भिगंधपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि णीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि

१. सुरभि° (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महुररसपरिणता वि, फासतो कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीयफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २३।

जे गंधओ दुब्भिगंधपरिणया ते वण्णओ 'कालवण्णपरिणया वि नीलवण्णपरिणया वि लोहियवण्णपरिणया वि हालिद्दवण्णपरिणया वि सुक्किलवण्णपरिणया वि, रसतो तित्तरसपरिणया वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासओ कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीयफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणया वि वट्टसंठाणपरिणया वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणया वि'[1] २३।४६ ॥

७. जे रसओ तित्तरसपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि णीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, फासओ कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीतफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २० ॥

जे रसओ कडुयरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, फासतो कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीतफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २० ॥

जे रसओ कसायरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, फासओ कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीतफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयय-

---

१. कालवण्णपरिणया वि जाव सुक्किलवण्णपरिणया वि, रसओ तित्तरसपरिणया वि जाव महुररसपरिणया वि, फासओ कक्खडफासपरिणया वि जाव लुक्खफासपरिणया वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणया वि जाव आययसंठाणपरिणया वि (ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संठाणपरिणता वि २०।

जे रसओ अंबिलरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, फासओ कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीतफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २०।

जे रसओ महुररसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, फासतो कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता[1] वि लहुयफासपरिणता वि सीयफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठापरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २०।१००॥

८. जे फासतो कक्खडफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासतो गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीतफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २३।

जे फासतो मउयफासपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणला वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणया वि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासओ गरुयफासपरिणया वि लहुयफासपरिणता वि सीतफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणया वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणया वि २३।

जे फासतो गरुयफासपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासओ कक्खडफास-

---

१. गुरुय° (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिणता वि मउयफासपरिणता वि सीयफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्ट-संठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणया वि २३।

जे फासतो लहुयफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि णीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासतो कक्खडफास-परिणता वि मउयफासपरिणया वि सीयफासपरिणया वि उसिणफासपरिणया वि निद्धफास-परिणया वि लुक्खफासपरिणया वि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरिणया वि वट्टसंठाण-परिणया वि तंससंठाणपरिणया वि चउरंससंठाणपरिणया वि आयतसंठाणपरिणया वि २३।

जे फासतो सीयफासपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासओ कक्खडफास-परिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि निद्धफास-परिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाण-परिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २३।

जे फासतो उसिणफासपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसतो तित्तरसपरिणया वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासतो कक्खडफास-परिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि निद्धफास-परिणता वि लुक्खफासपरिणता वि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाण-परिणता वि तंससंठाणपरिणता वि चउरंससंठाणपरिणता वि आयतसंठाणपरिणता वि २३।

जे फासतो निद्धफासपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधतो सुब्भि-गंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसतो तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासतो कक्खडफास-परिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीतफास-परिणता वि उसिणफासपरिणता वि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाण-परिणता वि तंससंठाणपरिणया वि चउरंससंठाणपरिणया वि आयतसंठाणपरिणता वि २३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे फासतो लुक्खफासपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासतो कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीयफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरिणता वि वट्टसंठाणपरिणता वि तंससंठाणपरिणया वि चउरंससंठाणपरिणया वि आयतसंठाणपरिणता वि २३।१८४ ॥

९. जे संठाणतो परिमंडलसंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसतो तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासतो कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीयफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि णिद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि २० ।

जे संठाणओ वट्टसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासओ कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीतफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि णिद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि २० ।

जे संठाणतो तंससंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणया वि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसओ तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासओ कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीयफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि २० ।

जे संठाणओ चउरंससंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसतो तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासतो कक्खडफासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीतफासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि २० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे संठाणतो आयतसंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरिणता वि नीलवण्णपरिणता वि लोहियवण्णपरिणता वि हालिद्दवण्णपरिणता वि सुक्किलवण्णपरिणता वि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणता वि दुब्भिगंधपरिणता वि, रसतो तित्तरसपरिणता वि कडुयरसपरिणता वि कसायरसपरिणता वि अंबिलरसपरिणता वि महुररसपरिणता वि, फासतो कक्खड-फासपरिणता वि मउयफासपरिणता वि गरुयफासपरिणता वि लहुयफासपरिणता वि सीत-फासपरिणता वि उसिणफासपरिणता वि निद्धफासपरिणता वि लुक्खफासपरिणता वि २०।१००। से त्तं रूविअजीवपण्णवणा। से त्तं अजीवपण्णवण्णा॥

जीवपण्णवणा-पदं

१०. से किं तं जीवपण्णवणा? जीवपण्णवणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संसारसमा-वण्णजीवपण्णवणा य असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा य॥

११. से किं तं असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा? असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरसिद्ध-असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा य परंपरसिद्ध-असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा य॥

१२. से किं तं अणंतरसिद्ध-असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा? अणंतरसिद्ध-असंसार-समावण्णजीवपण्णवणा पन्नरसविहा पण्णत्ता, तं जहा—तित्थसिद्धा अतित्थसिद्धा तित्थगर-सिद्धा अतित्थगरसिद्धा सयंबुद्धसिद्धा पत्तेयबुद्धसिद्धा बुद्धबोहियसिद्धा इत्थीलिंगसिद्धा पुरिसलिंगसिद्धा नपुंसकलिंगसिद्धा सलिंगसिद्धा अण्णलिंगसिद्धा गिहिलिंगसिद्धा एगसिद्धा अणेगसिद्धा। से त्तं अणंतरसिद्ध-असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा॥

१३. से किं तं परंपरसिद्ध-असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा? परंपरसिद्ध-असंसारसमा-वण्णजीवपण्णवणा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमय-सिद्धा चउसमयसिद्धा जाव संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्जसमयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा। से त्तं परंपरसिद्ध-असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा। से त्तं असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा॥

१४. से किं तं संसारसमावण्णजीवपण्णवणा? संसारसमावण्णजीवपण्णवणा पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा बेंदियसंसारसमावण्णजीवपण्ण-वणा[1] तेंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा[2] चउरिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा पंचेंदिय-संसारसमावण्णजीवपण्णवणा॥

१५. से किं तं एगेंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा? एगेंदियसंसारसमावण्णजीव-पण्णवणा पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया॥

पुढवीकाय-पदं

१६. से किं तं पुढविकाइया? पुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढवि-काइया य बादरपुढविकाइया य॥

१७. से किं तं सुहुमपुढविकाइया? सुहुमपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—

---

१. बेइन्दिय° (क,ख)। २. तेइन्दिय° (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जत्तसुहुमपुढविकाइया य अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइया य। से त्तं सुहुमपुढविकाइया ॥

१८. से किं तं बादरपुढविकाइया? बादरपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सण्हबादरपुढविकाइया य खरबादरपुढविकाइया य ॥

१९. से किं तं सण्हबादरपुढविकाइया? सण्हबादरपुढविकाइया सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—किण्हमत्तिया नीलमत्तिया लोहियमत्तिया हालिद्दमत्तिया सुक्किलमत्तिया[1] पंडुमत्तिया पणगमत्तिया। से त्तं सण्हबादरपुढविकाइया ॥

२०. से किं तं खरबादरपुढविकाइया? खरबादरपुढविकाइया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

पुढवी[2] य सक्करा वालुया य उवले सिला य लोणूसे।
अय [3]तंब तउय[3] सीसय, रुप्प सुवण्णे य वइरे य ॥१॥
हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला सासगंजण पवाले।
अब्भपडलब्भवालुय, बादरकाए मणिविहाणा ॥२॥
गोमेज्जए य रुयए, अंके फलिहे य लोहियक्खे य।
मरगय मसारगल्ले, भुयमोयग इंदनीले य ॥३॥
चंदण गेरुय हंसे, पुलए सोगंधिए य बोधव्वे।
चंदप्पभ वेरुलिए, जलकंते सूरकंते य ॥४॥

जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता। तत्थ णं जेते पज्जत्तगा एतेसि णं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसतसहस्साइं। पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति— जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा। से त्तं खरबादरपुढविकाइया। से त्तं बादरपुढविकाइया। से त्तं पुढविकाइया ॥

आउक्काय-पदं

२१. से किं तं आउक्काइया? आउक्काइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमआउक्काइया य बादरआउक्काइया य ॥

२२. से किं तं सुहुमआउक्काइया? सुहुमआउक्काइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तसुहुमआउक्काइया य अपज्जत्तसुहुमआउक्काइया य। से त्तं सुहुमआउक्काइया ॥

२३. से किं तं बादरआउक्काइया? बादरआउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—ओसा[4] हिमए महिया करए हरतणुए[5] सुद्धोदए सीतोदए उसिणोदए खारोदए

---

१. °मट्टिया (घ); सुक्किल्ल° (ख)।

२. उत्तरज्झयणाणि ३६।७३-७६। चतस्रोपि गाथास्तुल्या वर्तन्ते, केवलं 'हंसे' इति पदस्य स्थाने 'हंसगब्भ' इति पदमस्ति। आचाराङ्गनिर्युक्तौ आद्यं गाथाद्वयं तुल्यमस्ति। अन्त्यं गाथाद्वयं भिन्नपाठं लभ्यते—
गोमेज्जए य रुयगे अंको फलिहे य लोहियक्खे य।
चंदण गेरुय हंसग भुयमो मसारगल्ले य ॥७५॥
चंदप्पह वेरुलिए जलकंते चेव सूरकंते य।
एए खरपुढवीए नामं छत्तीसयं होइ ॥७६॥

३. तउय तंब (क, ख, ग, घ)।

४. उस्सा (क, ग)।

५. हरतणु (क, ख); हरतणूए (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खट्टोदए अंबिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए घओदए[1] खोतोदए[2] रसोदए। जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता। तत्थ णं जेते पज्जत्तगा एतेसि णं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं। पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति—जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा। से त्तं बादरआउक्काइया। से त्तं आउक्काइया॥

तेउक्काय-पदं

२४. से किं तं तेउक्काइया? तेउक्काइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमतेउक्काइया य बादरतेउक्काइया य॥

२५. से किं तं सुहुमतेउक्काइया? सुहुमतेउक्काइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। से त्तं सुहुमतेउक्काइया॥

२६. से किं तं बादरतेउक्काइया? बादरतेउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—इंगाले जाला मुम्मुरे अच्ची अलाए सुद्धागणी उक्का विज्जू असणी णिग्घाए संघरिससमुट्ठिए सूरकंतमणिणिस्सिए। जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता। तत्थ णं जेते पज्जत्तगा एएसि णं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं। पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति—जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा। से त्तं बादरतेउक्काइया। से त्तं तेउक्काइया॥

वाउकाय-पदं

२७. से किं तं वाउक्काइया? वाउक्काइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमवाउक्काइया य बादरवाउक्काइया य॥

२८. से किं तं सुहुमवाउक्काइया? सुहुमवाउक्काइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगसुहुमवाउक्काइया य अपज्जत्तगसुहुमवाउक्काइया य। से त्तं सुहुमवाउक्काइया॥

२९. से किं तं बादरवाउक्काइया? बादरवाउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—पाईणवाए पडीणवाए दाहिणवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसीवाए[3] वाउब्भामे वाउक्कलिया वायमंडलिया[4] उक्कलियावाए मंडलियावाए गुंजावाए झंझावाए संवट्टगवाए[5] घणवाए तणुवाए सुद्धवाए। जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता। तत्थ णं जेते पज्जत्तगा एतेसि णं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं

---

१. एतत् पदं वृत्यांनास्ति व्याख्यातम्।

२. खातोदए (ख); भगवतीवृत्तौ 'खाओदयाणं' इति पाठो व्याख्यातोस्ति, यथा—'खाओदयाणं ति खातायां—भूमौ यान्युदकानि तानि खातोदकानि। (भ० वृ० पत्र ६६४)। भगवत्यादर्शेष्वपि एष एव पाठो दृश्यते, अत एष एव स्वीकृतोस्ति, (अंगसुत्ताणि भाग २, पृष्ठ ७०६)। प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ—'क्षोदोदकं इक्षुसमुद्रे' इति व्याख्यातमस्ति।

३. विदिसिवाए (ख)।

४. वाउमंडलिया (क)।

५. संवट्टवाए (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं। पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तया वक्कमंति—जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा। से त्तं बादरवाउक्काइया। से त्तं वाउक्काइया ॥

वणस्सइकाय-पदं

३०. से किं तं वणस्सइकाइया? वणस्सइकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमवणस्सइकाइया[1] य बादरवणस्सइकाइया य ॥

३१. से किं तं सुहुमवणस्सइकाइया? सुहुमवणस्सइकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइया य अपज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइया य। से त्तं सुहुमवणस्सइकाइया ॥

३२. से किं तं बादरवणस्सइकाइया? बादरवणस्सइकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया य साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया य ॥

३३. से किं तं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया? पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया दुवालसविहा पण्णत्ता, तं जहा—

रुक्खा[2] गुच्छा गुम्मा, लता य वल्ली य पव्वगा चेव।
तण वलय हरिय ओसहि, जलरुह कुहणा य बोधव्वा ॥१॥

३४. से[3] किं तं रुक्खा? रुक्खा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगट्ठिया य बहुबीयगा य ॥

३५. से किं तं एगट्ठिया? एगट्ठिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

णिंबंब जंबु कोसंब, साल अंकोल्ल[4] पीलु सेलू य।
सल्लइ मोयइ मालुय, बउल पलासे करंजे य ॥१॥
पुत्तंजीवयरिट्ठे 'बिभेलए हरडए य भल्लाए'[5]।
उंबेभरिया खीरिणि[6] बोधव्वे धायइ पियाले ॥२॥
'पूई य निंबकरए'[7] सेण्हा, तह सीसवा य असणे य।
पुण्णाग णागरुक्खे सीवण्णि तहा असोगे य ॥३॥

'जे यावण्णे तहप्पगारा'[8]। एतेसि णं मूला वि असंखेज्जजीविया, कंदा वि खंधा वि

---

१. °वणप्फइ (क) सर्वत्र।

२. तुलना—आचाराङ्गनिर्युक्ति, गाथा १२९। उत्तराध्ययने (३६) असौ गाथा किञ्चिद् भेदेन लभ्यते—

रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य,
लया वल्ली तणा तहा।९४।
लयावलया पव्वगा कुहणा,
जलरुहा ओसही तणा।९५।

३. से किं तं असंखेज्जजीविया? असंखेज्जजीविया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगट्ठिया य बहुबीयगा य (भ० ८।२१८)।

४. अंकुल्ल (घ)।

५. बिहेलए हरिडए भिल्लाए (क, घ)।

६. खीरणी (घ)।

७. पूइकरंज (पु); पूतिकरज्ज (मवृ); पूइयनिंबारग (भ० ८।२१९।३; २२।२)।

८. एतद् वाक्यमपूर्णमस्ति। अत्र वृत्तिसूचितं एतद् वाक्यमध्याहर्यम्—ते सर्वेप्येकास्थिका वेदितव्याः (मवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तया वि साला वि पवाला वि। पत्ता पत्तेयजीविया। पुप्फा अणेगजीविया। फला एगट्ठिया। से त्तं एगट्ठिया॥

३६. से किं तं बहुबीयगा? बहुबीयगा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

अत्थिय तिंदु कविट्ठे, अंबाडग माउलिंग बिल्ले य।
आमलग फणस दाडिम, आसोत्थे उंबर वडे य॥१॥
णग्गोह णंदिरुक्खे, पिप्परि सयरी पिलुक्खरुक्खे य।
काउंबरि कुत्थुंभरि, बोधव्वा देवदाली य॥२॥
तिलए लउए[1] छत्तोह सिरीसे, सत्तिवण्ण[2] दहिवण्णे।
लोद्ध धव चंदणज्जुण, णीमे कुडए कयंबे य॥३॥

जे यावण्णे तहप्पगारा[3]। एएसि णं मूला वि असंखेज्जजीविया, कंदा वि खंधा वि तया वि साला वि पवाला वि। पत्ता पत्तेयजीविया। पुप्फा अणेगजीविया फला बहुबीया। से त्तं बहुबीयगा। से त्तं रुक्खा॥

३७. से किं तं गुच्छा[4]? गुच्छा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

'वाइंगण सल्लइ बोंडई'[5] य तह कच्छुरी य जासुमणा।
रूवी आढइ नीली, तुलसी तह माउलिंगी य॥१॥
कुत्थुंभरि[6] पिप्पलिया, अतसी बिल्ली य कायमाई या।
'चुच्चु[7] पडोला कंदलि'[8], बाउच्चा[9] वत्थुले[10] बदरे॥२॥
पत्तउर सीयउरए, हवति तहा जवसए य बोधव्वे।
'णिग्गुंडि अक्क तूवरि'[11], अट्टई[12] चेव तलऊडा[13]॥३॥
सण वाण[14] कास मद्दग[15], अग्घाडग साम सिंदुवारे य।
करमद्द अट्टरूसग[16], करीर एरावण महित्थे॥४॥
जाउलग माल परिली, गयमारिणि कुच्च कारिया भंडी।
जावइ केयइ तह गंज पाडला दासि अंकोल्ले॥५॥

---

१. लवक (मवृ)।
२. सत्तवण्ण (क, ख, ग, घ)।
३. तेपि च बहुबीजका मन्तव्याः (मवृ)।
४. गच्छा (क)।
५. वाइंगणि सल्लइ घुएडइ (क); °वोंदई (घ); वाइंगणि-अल्लइ-पोंडइ (भ० २२।४)।
६. कत्थुंभरि (पु)।
७. चंचू (ख); चुन्न (ग, घ)।
८. चुच्चू पडोल कंद (क)।
९. विउव्वा (क); वीउच्चा (ग)।
१०. बबुले (क)।
११. णिग्गुंडि अंक तवरि (क); णिगुंडि यंकत्थबरि (घ)।
१२. उड्डइ (ख); अद्धई (ग,घ)।
१३. तउडा (क); तलउडा (घ)।
१४. पाण (क,ख,ग,घ)।
१५. मुद्दग (क,घ)।
१६. लिपिपरिवर्तनेन संयुक्तटकारस्य स्थाने संयुक्तदकारः प्रचलितोभूत्। स्तबके समालोच्य पाठस्य स्थाने 'अरडूसो' (अडूसा) अर्थः कृतोस्ति। शालिग्रामनिघण्टुमध्ये अस्य वाचकं पदमस्ति आटरूषकः वनस्पतिकोशे च 'अटरूषकः', तेनात्र 'अट्टरूसग' पाठ एव प्रतीयते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे यावण्णे तहप्पगारा[1]। से त्तं गुच्छा ॥

३८. से किं तं गुम्मा ? गुम्मा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

सेरियए[2] णोमालिय कोरंटय[3] बंधुजीवग मणोज्जे।
बीयय[4] बाण[5] कणइर[6], कुज्जय तह सिंदुवारे य ॥१॥
जाई मोग्गर तह जूहिया य तह मल्लिया य वासंति।
वत्थुल कच्छुल सेवाल, ऽगत्थि[7] मगदंतिया चेव ॥२॥
चंपग-जाती णवणीइया, य कुंदो तहा महाजाई।
एवमणेगागारा, हवंति गुम्मा मुणेयव्वा ॥३॥

से त्तं गुम्मा ॥

३९. से किं तं लयाओ ? लयाओ अणेगविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

पउमलता नागलता, असोग-चंपयलता य चूतलता[8] ॥
वणलय वासंतिलया, अइमुत्तय-कुंद[9]-सामलता ॥१॥

जे यावण्णे तहप्पगारा। से त्तं लयाओ ॥

४०. से किं तं वल्लीओ ? वल्लीओ अणेगविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

पूसफली कालिंगी, तुंबी तउसी[10] य एलवालुंकी।
घोसाडई पडोला, पंचंगुलिया य णालीया ॥१॥
'कंगूया कद्दुइया'[11], कक्कोडइ कारियल्लई[12] सुभगा।
कुवधा[13] य वागली या, पाववल्लि तह देवदारू[14] य ॥२॥
अप्फोया अइमुत्तय- णागलया कण्ह-सूरवल्ली य।
संघट्ट सुमणसा वि य, जासुवण कुविंदवल्ली य ॥३॥

---

१. ते सव्वे गुच्छजातीया इति शेषः।

२. सेणियए (क)।

३. कोरिंटय (क); कोरेंटे (घ)।

४,५,७. प्रस्तुतसूत्रे सर्वेष्वपि आदर्शेषु 'पीईय, पाण, गंठी' एतानि त्रीणि पदानि अशुद्धानि दृश्यन्ते। जीवाजीवाभिगमवृत्तौ मलयगिरिणा 'बीयगगुल्माः बाणगुल्माः अगस्त्यगुल्माः, एवं व्याख्यातमस्ति, तत्र तिस्रो गाथा उद्धृताः सन्ति—

सेरियए नोमालियकोरंटयबंधुजीवगमणोज्जा।
बीययबाणयकणवीरकुज्ज तह सिंदुवारे च॥१॥
जाई मोग्गर तह जूहिया य तह मल्लिया य वासंती।
वत्थुलकत्थुलसेवालगत्थिमगदंतिया चेव ॥२॥
चंपकजाई नवनाइया य कुंदे तहा महाकुंदे।
एवमणेगागारा, हवंति गुम्मा मुणेयव्वा ॥३॥

आसु 'बीयय, बाणय, ऽगत्थि' इति पाठोस्ति, अत्रापि एवमेव युज्यते। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ता- (२।१०) वपि 'बीय, बाण, अगत्थि, इति पाठोस्ति। शान्तिचन्द्रगणिनापि तद्वृत्तौ 'बीयकगुल्माः बाणगुल्मा, अगस्त्यगुल्माः' इति व्याख्यातमस्ति।

६. कणयर (क)।

८. भूतलता (क,घ)।

९. कंद (घ)।

१०. तयसी (क)।

११. केमूयी कडुईया (क)।

१२. कारवेल्लई (ख)।

१३. कुवया (क)।

१४. देवदाली (क)।

मुद्दिय अप्पा भल्ली, छीरविराली जियंति गोवल्ली[1]।
पाणी मासावल्ली[2], गुंजावली य वच्छाणी ॥४॥
ससबिंदु गोत्तफुसिया, गिरिकण्णइ मालुया य अंजणई।
'दहफुल्लइ कागणि'[3], मोगली य तह अक्कबोंदी य ॥५॥

जे यावण्णे तहप्पगारा। से त्तं वल्लीओ।

४१. से किं तं पव्वगा? पव्वगा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—
इक्खू य इक्खुवाडी, बीरण[4] तह एक्कडे भमासे य।
सुंबे[5] सरे य वेत्ते, तिमिरे सतपोरग णले य ॥१॥
वंसे वेलू कणए, 'कंकावंसे य चाववंसे'[6] य।
'उदए कुडए विमए, कंडावेलू य'[7] कल्लाणे ॥२॥

जे यावण्णे तहप्पगारा। से त्तं पव्वगा।

४२. से किं तं तणा? तणा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—
सेडिय 'भत्तिय होत्तिय'[8], डब्भ[9] कुसे पव्वए य पोडइला[10]।
अज्जुण असाढए[11] रोहियंसे सुय 'वेय खीर'[12] भुसे[13] ॥१॥
एरंडे कुरुविंदे[14], करकर[15] सुंठे तहा विभंगू य।
महुरतण थुरय[16] सिप्पिय, बोधव्वे सुंकलितणा य ॥२॥

जे यावण्णे तहप्पगारा। से त्तं तणा।

४३. से किं तं वलया? वलया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—
ताल तमाले तक्कलि, तेयलि[17] साले[18] य सारकल्लाणे।
सरले जावति केयइ[19], कंदलि तह धम्मरुक्खे[20] य ॥१॥
भुयरुक्ख हिंगुरुक्खे, लवंगरुक्खे य होति बोधव्वे।
पूयफली खज्जूरी, बोधव्वा नालिएरी य ॥२॥

जे यावण्णे तहप्पगारा। से त्तं वलया।

---

१. गोवाली (क,ख,पु)।
२. सामावल्ली (क)।
३. दहिफोल्लई कागल्लि (क); दधिफोल्लइ-कार्कलि (भ० २२।६)।
४. वीरुणा (क)।
५. सुंठे (क, घ)।
६. कक्कावंस चारुवंस (भ० २१।२७)।
७. दंडा कुडा विमा कंडा वेलुया (भ० २१।१७)।
८. भंतिय होंतिय (क); भंतिय कोंतिय (भ० २१।१९)।
९. दब्भ (क)।
१०. पोदइल (भ० २१।१९)।
११. आसाढए (क)।
१२. वखीर (२१।१९)।
१३. तुसे (पु)।
१४. कुरुकुंद (भ० २१।१९)।
१५. करके (ख); कक्खड (पु)।
१६. चुरय (क); छुरय (क,ग,घ); लुणय (पु)।
१७. तेयाली (क,घ)।
१८. सालिया (क,ख,ग,घ)।
१९. केवइ (क)।
२०. चम्मरुक्ख (भ० २२।१)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४४. से किं तं हरिया ? हरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

अब्भोरुह[1] वोडाणे[2], हरितग तंदुलेज्जग तणे य ।
वत्थुल पोरग[3] मज्जार, पाइ बिल्ली[4] य पालक्का ॥१॥
दगपिप्पली य दव्वी, सोत्थिय-साए तहेव मंडुक्की ।
मूलग सरिसव अंबिलसाए य जियंतए चेव ॥२॥
तुलसी कण्ह उराले, फणिज्जए अज्जए[5] य भूयणए[6] ।
चोरग[7] दमणग[8] मरुयग, सयपुप्फिदीवरे[9] य तहा ॥३॥

जे यावण्णे तहप्पगारा । से त्तं हरिया ॥

४५. से किं तं ओसहीओ ? ओसहीओ अणेगविहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—

साली वीही गोधूम-जवा[10], जवजवा कल-मसूर-तिल-मुग्गा ।
मास-निप्फाव-कुलत्थ आलिसंद[11]-सतीण-पलिमंथा[12] ॥१॥
अयसी-कुसुंभ-कोद्दव कंगू रालग-वरसामग[13]-कोदूसा ।
सण-सरिसव-मूलग-वीय-जे यावण्णा तहप्पगारा ॥२॥

से त्तं ओसहीओ ॥

४६. से किं तं जलरुहा ? जलरुहा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—उदए अवए पणए सेवाले कलंबुया हढे कसेरुया 'कच्छा भाणी'[14] उप्पले पउमे कुमुदे नलिणे सुभए सुगंधिए पोंडरीए महापोंडरीए सयपत्ते[15] सहस्सपत्ते कल्हारे कोकणदे अरविंदे तामरसे भिसे भिसमुणाले पोक्खले पोक्खलत्थिभए[16] । जे यावण्णे तहप्पगारा । से त्तं जलरुहा ॥

४७. से किं तं कुहणा ? कुहणा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—आए काए कुहणे कुणक्के[17] दव्वहलिया[18] सप्फाए सज्जाए छत्ताए[19] 'वंसी णहिया'[20] कुरए । जे यावण्णे तहप्पगारा । से त्तं कुहणा ।

णाणाविहसंठाणा, रुक्खाणं एगजीविया पत्ता ।
खंधो वि एगजीवो, ताल-सरल-नालिएरीणं ॥१॥

---

१. अज्झोरुह (ख); अज्जोरुह (क, पु); अब्भरुह (भ० २१।२०) ।
२. वोयाण (भ० २१।२०) ।
३. पारग (पु) ।
४. चिल्ला (ख); चिली (ग); व्विलीया (घ) ।
५. अज्जुणे (ख) ।
६. भुयगणए (ग) ।
७. वोरग (ग) ।
८. मदणग (ख) ।
९. सयपुष्पि °(घ) ।
१०. × (ग, पु) ।
११. अलिसंद (ख, पु) ।
१२. पलिमंथग (क, घ) ।
१३. वेरासामा (क); सामा (घ) ।
१४. कच्छताणी (घ) ।
१५. °वत्ते (घ) ।
१६. °त्थिभुए (घ) ।
१७. कुंदुरुक्क (भ० २३।४) ।
१८. उव्वेहलिया (भ० २३।४) ।
१९. सेत्ताए (ख, घ); सित्ताए (पु) ।
२०. वंसाणिय (भ० २३।४) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जह सगलसरिसवाणं, सिलेसमिस्साण वट्टिया वट्टी ।
पत्तेयसरीराणं, तह होंति सरीरसंघाया ॥२॥
जह वा तिलपप्पडिया, बहुएहिं तिलेहिं संहिता संती ।
पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया ॥३॥

से त्तं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया[1] ॥

४८. से किं तं साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया ? साहारणसरीरबादरवणस्सइ-काइया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

अवए पणए सेवाले, 'लोहि णीहू त्थिहू त्थिभगा'[2] ।
असकण्णी[3] सीहकण्णी, सिउंढि तत्तो मुसुंढी य ॥१॥
रुरु कंडुरिया[4] जारू, छीरविराली तहेव किट्टीया[5] ।
हलिद्दा सिंगबेरे य, आलुगा मूलए इ य ॥२॥
कंबू[6] य कण्हकडबू, 'महु-पोवलई'[7] तहेव महुसिंगी ।
णिरुहा[8] सप्पसुयंधा, छिण्णरुहा चेव बीयरुहा ॥३॥
पाढा मियवालुंकी, महुररसा चेव रायवल्ली य ।
पउमा य 'माढरी दंती'[9], चंडी किट्टि त्ति यावरा ॥४॥
मासपण्णी मुग्गपण्णी, 'जीविय रसभेय रेणुया'[10] चेव ।
काओली खीरकाओली, तहा[11] भंगी णही इ य ॥५॥
किमिरासी[12] भद्दमुत्था, णंगलई पेलुगा[13] इ य ।
किण्हे पउले य हढे, हरतणुया[14] चेव लोयाणी[15] ॥६॥
कण्हे कंदे वज्जे, सूरणकंदे तहेव खल्लूडे ।
एए अणंतजीवा, जे यावण्णे तहाविहा ॥७॥

पद्दण्णगं

तणमूल कंदमूले, वंसमूले[16] त्ति यावरे ।
संखेज्जमसंखेज्जा, बोधव्वाणंतजीवा य ॥८॥

---

१. °वणप्फइ° (क,घ, पु) ।
२. लोहिणी विहु विभुगा (क); लोहिणी मिहू° (ख, पु); लोहिणी निहू° (घ) ।
३. अस्स° (क,घ) ।
४. कुणुरिया (क); कुंदुरिया (ग); कुंदरीया (घ); कंडरीय (भ० २३।१) ।
५. किट्टिय (ख); किट्टिया (ग); किट्टीय (घ); किट्टि (भ० २३।१) ।
६. कुंदु (भ० २३।१); कंबूया (घ) ।
७. महुओ वलई (पु); मधु-पुलयइ (भ० २३।१)
८. विरुहा (घ) ।
९. माढमदंती (ग); मोढरिदंति (भ० २३।१) ।
१०. जीवग-सरिसव-करेणुय (भ० २३।८); °रसि-केय° (क) ।
११. तया (क) ।
१२. किमिरासि (क,घ,पु) ।
१३. पलुगा (पु); पग्गुय (भ० २३।८) ।
१४. हरेणुया (भ० २३।८) ।
१५. लोहीणं (भ० २३।८) ।
१६. वंसीमूले (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंघाडगस्स गुच्छो, अणेगजीवो उ होति नायव्वो ।
पत्ता पत्तेयजिया, दोण्णि य जीवा फले भणिता ।।९।।

अणंतजीवलक्खणं

जस्स मूलस्स भग्गस्स, समो भंगो पदीसए[1] ।
अणंतजीवे उ से मूले, जे यावण्णे तहाविहा ।।१०।।
जस्स कंदस्स भग्गस्स, समो भंगो पदीसए ।
अणंतजीवे उ से कंदे, जे यावण्णे तहाविहा ।।११।।
जस्स खंधस्स भग्गस्स, समो भंगो पदीसए[2] ।
अणंतजीवे उ से खंधे, जे यावण्णे तहाविहा ।।१२।।
जीसे तयाए भग्गाए, समो भंगो पदीसए ।
अणंतजीवा तया सा उ, जा यावण्णा तहाविहा ।।१३।।
जस्स सालस्स भग्गस्स, समो भंगो पदीसई ।
अणंतजीवे उ से साले, जे यावण्णे तहाविहा ।।१४।।
जस्स पवालस्स भग्गस्स, समो भंगो पदीसई ।
अणंतजीवे पवाले से, जे यावण्णे तहाविहा ।।१५।।
जस्स पत्तस्स[3] भग्गस्स, समो भंगो पदीसई ।
अणंतजीवे उ से पत्ते, जे यावण्णे तहाविहा ।।१६।।
जस्स पुप्फस्स भग्गस्स, समो भंगो पदीसई ।
अणंतजीवे उ से पुप्फे, जे यावण्णे तहाविहा ।।१७।।
जस्स फलस्स भग्गस्स, समो भंगो पदीसती ।
अणंतजीवे फले से उ, जे यावण्णे तहाविहा ।।१८।।
जस्स बीयस्स भग्गस्स, समो भंगो पदीसई ।
अणंतजीवे उ से बीए, जे यावण्णे तहाविहा ।।१९।।

पत्तेयसरीरजीवलक्खणं

जस्स मूलस्स भग्गस्स, हीरो भंगे[4] पदीसई ।
परित्तजीवे उ से मूले, जे यावण्णे तहाविहा ।।२०।।
जस्स कंदस्स भग्गस्स, हीरो भंगे पदीसई ।
परित्तजीवे उ से कंदे, जे यावण्णे तहाविहा ।।२१।।
जस्स खंधस्स भग्गस्स, हीरो भंगे पदीसई ।
परित्तजीवे उ से खंधे, जे यावण्णे तहाविहा ।।२२।।
जीसे तयाए भग्गाए, हीरो भंगे पदीसई ।
परित्तजीवा तया सा उ, जा यावण्णा तहाविहा ।।२३।।
जस्स सालस्स भग्गस्स, हीरो भंगे पदीसती ।
परित्तजीवे उ से साले, जे यावण्णे तहाविहा ।।२४।।

---

१. य दीसए (ख,ग,घ) सर्वत्र ।
२. य दीसई (घ) ।
३. पण्णस्स (घ) ।
४. भंगो (क) सर्वत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जस्स पवालस्स भग्गस्स, हीरो भंगे पदीसति ।
परित्तजीवे पवाले उ, जे यावण्णे तहाविहा ॥२५॥
जस्स पत्तस्स भग्गस्स, हीरो भंगे पदीसति ।
परित्तजीवे उ से पत्ते, जे यावण्णे तहाविहा ॥२६॥
जस्स पुप्फस्स भग्गस्स, हीरो भंगे पदीसति ।
परित्तजीवे उ से पुप्फे, जे यावण्णे तहाविहा ॥२७॥
जस्स फलस्स भग्गस्स, हीरो भंगे पदीसति ।
परित्तजीवे फले से उ, जे यावण्णे तहाविहा ॥२८॥
जस्स बीयस्स भग्गस्स, हीरो भंगे पदीसति ।
परित्तजीवे उ से बीए, जे यावण्णे तहाविहा ॥२९॥

छल्ली-अणंतजीवलक्खणं

जस्स मूलस्स कट्ठाओ, छल्ली बहलतरी[1] भवे ।
अणंतजीवा उ सा छल्ली, जा यावण्णा तहाविहा ॥३०॥
जस्स कंदस्स कट्ठाओ, छल्ली बहलतरी भवे ।
अणंतजीवा उ सा छल्ली, जा यावण्णा तहाविहा ॥३१॥
जस्स खंधस्स कट्ठाओ, छल्ली बहलतरी भवे ।
अणंतजीवा उ सा छल्ली, जा यावण्णा तहाविहा ॥३२॥
जीसे सालाए कट्ठाओ, छल्ली बहलतरी भवे ।
अणंतजीवा उ सा छल्ली, जा यावण्णा तहाविहा ॥३३॥

छल्ली-पत्तेयसरीरजीवलक्खणं

जस्स मूलस्स कट्ठाओ, छल्ली तणुयतरी भवे ।
परित्तजीवा उ सा छल्ली, जा यावण्णा तहाविहा ॥३४॥
जस्स कंदस्स कट्ठाओ, छल्ली तणुयतरी भवे ।
परित्तजीवा उ सा छल्ली, जा यावण्णा तहाविहा ॥३५॥
जस्स खंधस्स कट्ठाओ, छल्ली तणुयतरी भवे ।
परित्तजीवा उ सा छल्ली, जा यावण्णा तहाविहा ॥३६॥
जीसे सालाए कट्ठाओ. छल्ली तणुयतरी भवे ।
परित्तजीवा उ सा छल्ली, जा यावण्णा तहाविहा ॥३७॥

अणंतजीवलक्खणं

चक्कागं भज्जमाणस्स, गंठी चुण्णघणो भवे ।
पुढवीसरिसभेदेण[2] अणंतजीवं वियाणाहि ॥३८॥
गूढछिरागं पत्तं, सच्छीरं जं च होति णिच्छीरं ।
जं पि य पणट्ठसंधिं, अणंतजीवं वियाणाहि ॥३९॥

१. बहुलतरी (क) सर्वत्र ।
२. पुढवि° (क,ख,ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पइण्णगं

पुप्फा[1] जलया थलया य, वेंटबद्धा य णालबद्धा य ।
संखेज्जमसंखेज्जा, बोधव्वाणंतजीवा य ॥४०॥
जे केइ नालियावद्धा, पुप्फा संखेज्जजीविया भणिता ।
णिहुया अणंतजीवा, जे यावण्णे तहाविहा ॥४१॥
'पउमुप्पलिणीकंदे, अंतरकंदे'[2] तहेव झिल्ली य ।
एते अणंतजीवा, एगो जीवो भिस-मुणाले ॥४२॥
'पलंडू-ल्हसणकंदे'[3] य, कंदली य कुडुंवए[4] ।
एए परित्तजीवा, जे यावण्णे तहाविहा ॥४३॥
पउमुप्पल-नलिणाणं, सुभग-सोगंधियाण य ।
अरविंद-कोकणदाणं[5], 'सतवत्त-सहस्सवत्ताणं'[6] ॥४४॥
वेंटं वाहिरपत्ता य, कण्णिया चेव एगजीवस्स ।
अब्भितरगा पत्ता, पत्तेयं केसरा[7] मिंजा ॥४५॥
वेणु णल इक्खुवाडिय, 'भमास इखू'[8] य इक्कडेरंडे ।
करकर सुंठ[9] विहंगु[10] तणाण तह पव्वगाणं च ॥४६॥
अच्छि पव्वं बलिमोडओ[11] य एगस्स होंति जीवस्स ।
पत्तेयं पत्ताइं, पुप्फाइं अणेगजीवाइं ॥४७॥
पुस्सफलं कालिंगं, तुंबं तउसेलवालु वालुंकं ।
घोसाडयं[12] पडोलं, तिंदूयं चेव तेंदूसं ॥४८॥
'विंटं भंस'[13]-कडाहं, एयाइं होंति[14] एगजीवस्स ।
पत्तेयं पत्ताइं, सकेसरमकेसरं मिंजा ॥४९॥

---

१. पुप्पा (घ) ।
२. °कदेऽणंतरकंदे (ख); °कंदे अणंतरकंदे (ग,घ)।
३. °ल्हसु° (क) । उत्तराध्ययने पलाण्डु-लशुनकंदे अनंतजीवत्वेन निरूपिते स्तः—
साहारणसरीरा उ, णेगहा ते पकित्तिया ।
आलुए मूलए चेव सिंगबेरे तहेव य ॥
हिरिली सिरिली सिस्सिरिली जावई केदकंदली ।
पलंडूलसणकंदे य, कंदली य कुडुंबए ॥
(उत्त० ३६।९६,९७) ।
जीवाजीवाभिगमे (१।७३) पि एवमेव दृश्यते ।
४. कसुंबए (क); कुडंबए (घ); कुसुंबए (पु); कुस्तुम्बक: (मवृ) ।
५. कुकुणाणं (क); कोकणाणं (ग,पु); कोंकणाणं (घ) ।
६. °पत्त° °पत्ता° (क) ।
७. केसरं (क) ।
८. समा इक्खू (ख); समासइक्खू (ग); न समासइक्खू (घ); मसमा सइक्खू (पु); लिपिदोषेण अस्य पदस्य अनेकरूपत्वं जातम्, किन्तु पर्वजवनस्पतिसूत्रे (१।४१) 'भमास' इति पदं विद्यते । अत्रापि तदेव युक्तम् ।
९. सुंबि (क,ख); सुंठि (ग,घ) ।
१०. विहुंगं (ख); विहुंगुं (ग,घ,पु) ।
११. पलि° (क,घ) ।
१२. घोसालयं (क,घ) ।
१३. खिहू वढमंस (ख); विंट समंस (पु); विंटं समंस (मवृ); विंटं गिरं (हवृ) ।
१४. हवंति (क,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्फाए[1] सज्जाए, उव्वेहलिया य कुहण कंदुक्के[2] ।
एए अणंतजीवा, कंडुक्के[3] होति भयणा उ ॥५०॥
'बीए जोणिब्भूए'[4], जीवो वक्कमइ सो व अण्णो वा ।
जो वि य मूले जीवो, सो वि य पत्ते पढमताए ॥५१॥
सव्वो वि किसलओ खलु, उग्गममाणो अणंतओ भणिओ ।
सो चेव विवड्ढंतो, होइ परित्तो अणंतो वा ॥५२॥

साहारणसरीरलक्खणं

समयं वक्कंताणं, समयं तेसिं सरीरनिव्वत्ती ।
समयं आणुग्गहणं, समयं ऊसास-नीसासे ॥५३॥
एक्कस्स उ जं गहणं, बहूण साहारणाण तं चेव ।
जं बहुयाणं गहणं, समासओ तं पि एगस्स ॥५४॥
साहारणमाहारो, साहारणमाणुपाणगहणं च ।
साहारणजीवाणं, साहारणलक्खणं एयं ॥५५॥
जह अयगोलो धंतो, जाओ तत्ततवणिज्जसंकासो ।
सव्वो अगणिपरिणतो, निगोयजीवे तहा जाण ॥५६॥
एगस्स दोण्ह तिण्ह व, संखेज्जाण व न पासिउं सक्का ।
दीसंति सरीराइं, णिगोयजीवाणऽणंताणं[5] ॥५७॥

जीवपमाणं

लोगागासपएसे, णिगोयजीवं[5] ठवेहि एक्केक्कं ।
एवं मवेज्जमाणा, हवंति लोया अणंता उ ॥५८॥
लोगागासपएसे, परित्तजीवं ठवेहि एक्केक्कं ।
एवं मविज्जमाणा, हवंति लोया असंखेज्जा ॥५९॥
पत्तेया पज्जत्ता, पयरस्स असंखभागमेत्ता उ ।
लोगासंखापज्जत्तगाण साहारणमणंता[6] ॥६०॥

जे यावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता । तत्थ णं जेते पज्जत्तगा तेसिं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं, संखेज्जाइं जोणिप्पमुह-सयसहस्साइं । पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति—जत्थ एगो तत्थ सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा सिय अणंता । एएसि णं इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ, तं जहा—

कंदा य कंदमूला य, रुक्खमूला इ यावरे ।
गुच्छा[7] य गुम्म वल्ली य, वेलुयाणि तणाणि य ॥६१॥

---

१. सप्पासे (ख,ग) ।
२. कुंडक्के (क); कुंदुक्के (घ) ।
३. कंदुक्के (क); कुंदुक्के (घ) ।
४. जोणिब्भूए बीए (ख,घ,पु) ।
५. णिओय॰ (क,घ) ।
६. साहारणमणंता ।
एएहिं सरीरेहिं, पच्चक्खं ते परूविया जीवा ।
सुहुमा आणागेज्झा, चक्खुप्फासं न ते एंति ॥
(क ख,ग,घ); असौ गाथा वृत्तिकृद्भ्यां नास्ति व्याख्याता ।
७. गच्छा (क) ।

पउमुप्पल संघाडे[1], हढे य सेवाल 'किण्हए पणए।
अवए'[2] कच्छ भाणी[3] कंडुक्केक्कूणवीसइमे[4] ॥६२॥
तय-छल्लि-पवालेसु य, पत्त-पुप्फ-फलेसु य।
मूलग्ग-मज्झ-बीएसु, जोणी कस्स य कित्तिया ? ॥६३॥

से त्तं साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया। से त्तं बादरवणस्सइकाइया। से त्तं वणस्सइकाइया। से त्तं एगिंदिया।

बेइंदियजीव-पदं

४९. से किं तं बेंदिया[5] ? [से किं तं बेइंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा ?] बेंदिया [बेइंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा][6] अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुला-किमिया कुच्छि-किमिया गंडूयलगा गोलोमा णेउरा सोमंगलगा वंसीमुहा सूईमुहा गोजलोया जलोया जलोउया[7] संखा संखणगा 'घुल्ला खुल्ला'[8] वराडा सोत्तिया मोत्तिया कलुया वासा एगओवत्ता दुहओवत्ता णंदियावत्ता संबुक्का माईवाहा सिप्पिसंपुडा चंदणा समुद्दलिक्खा, जे यावण्णे तहप्पगारा[9]। सव्वेते सम्मुच्छिमा नपुंसगा। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। एएसि णं एवमादियाणं बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्त जाइकुलकोडिजोणीपमुहसतसहस्सा भवंतीति मक्खातं[10]। से त्तं बेइंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा ॥

तेइंदियजीव-पदं

५०. से किं तं तेंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा[11] ? तेंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—ओवइया रोहिणीया कुंथू पिपीलिया उद्दंसगा उद्देहिया उक्कलिया उप्पाया[12] उक्कडा[13] उप्पाडा तणाहारा कट्ठाहारा[14] मालुया पत्ताहारा तणबिंटिया[15] पुप्फबिंटिया फलबिंटिया बीयबिंटिया तेदुरणमज्जिया[16] तउसमिंजिया[17] कप्पासट्ठि-

१. सिंघाडे (क)।
२. कृष्णकावकपनक (मवृ)।
३. ताणी (ख,घ)।
४. °गूण° (क,घ)।
५. बेइंदिया (क,ख,घ)।
६. कोष्ठकवर्तिपाठद्वयं आदर्शेषु नोपलभ्यते, वृत्तावपि नास्ति व्याख्यातम्, तथापि एकेन्द्रियसूत्रे त्रीन्द्रियादिसूत्रे च एतादृशी एव रचनाशैली दृश्यते। अत्रापि तथैव अपेक्षितास्ति।
७. जालाउया (घ)। जीवाजीवाभिगमस्य वृत्तौ द्वीन्द्रियादीनां प्रकारेषु महान् पाठभेदो विद्यते। स च यथा स्थानमवलोकनीयः।
८. घेल्ला फुल्ला गुलया (क,ग); घेला पुल्ला गुलया (ख); घुल्ला खुल्ला गुलया खुल्ली (घ)। हरिभद्रकृतप्रदेशव्याख्यायां 'खुल्ला खुडा वराडा' इति पाठानुसारेण व्याख्यातमस्ति।
९. ते सर्वे द्वीन्द्रिया ज्ञातव्याः (मवृ)।
१०. मकारोऽलाक्षणिकः (मवृ)।
११. तेइंदिय° (क,ग,घ)।
१२. बप्पाया (क,घ)।
१३. × (क,ख,ग,घ)।
१४. कट्ठहारा (घ)।
१५. तणवेंटिया (ख)।
१६. तेभुरणमिंजिया (क, ग); तेतरुण° (ख); तेभूरुणु° (घ)।
१७. तेउसिमिंजिया (क); तेउसमज्जिया (ख); तेओसमिंजिया (ग); तेउ° (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समिजिया हिल्लिया झिल्लिया झिगिरा[1] झिगिरिडा[2] पाहुया[3] सुभगा सोवच्छिया सुयविंटा इंदिकाइया[4] इंदगोवया उरुलुंचगा[5] कोत्थलवाहगा[6] जूया हालाहला पिसुया[7] सतवाइया गोम्ही हत्थिसोंडा, जे यावण्णे तहप्पगारा। सव्वेते सम्मुच्छिमा[8] नपुंसगा। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। एएसि णं एवमाइयाणं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अट्ठ जातिकुलकोडिजोणिप्पमुहसतसहस्सा भवंतीति मक्खायं। से त्तं तेंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा ॥

चउरिंदियजीव-पदं

५१. से किं तं चउरिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा? चउरिंदियसंसारसमावण्ण-जीवपण्णवणा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

अंधिय पोत्तिय[9] मच्छिय, 'मसगा कीडे'[10] तहा पयंगे य।
ढिंकुण[11] कुक्कुड कुक्कुह, णंदावत्ते य सिंगिरिडे ॥१॥

किण्हपत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हलिद्दपत्ता सुक्किलपत्ता चित्तपक्खा विचित्तपक्खा 'ओभंजलिया जलचारिया'[12] गंभीरा णीणिया[13] तंतवा अच्छिरोडा अच्छिवेहा सारंगा णेउरा[14] दोला भमरा भरिली[15] जरुला तोट्ठा[16] विच्छुता[17] पत्तविच्छुया छाणविच्छुया जलविच्छुया पियंगाला कणगा[18] गोमयकीडगा, जे यावण्णे तहप्पगारा। सव्वेते सम्मुच्छिमा नपुंसगा। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। एतेसि णं एवमाइयाणं चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं णव जातिकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं। से त्तं चउरिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा ॥

पंचिंदियजीव-पदं

५२. से किं तं पंचिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा? पंचिंदियसंसारसमावण्णजीव-पण्णवणा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइयपंचिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा, तिरिक्खजोणियपंचिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा, मणुस्सपंचिंदियसंसारसमावण्ण-जीवपण्णवणा देवपंचिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा ॥

---

१. भिंगिरा (क); भिंगोरिया (ख); भिंगोरा (ग)।
२. किंगरिडा (ख); सिंगिरिडा (घ); किंगिरिडा (पु)।
३. पहुया लहुया (घ)।
४. इंदकाइया (उत्तरा० ३६।१३८)।
५. उरुतुंभुगा (क,घ); उरुतुंबगा (ख); गुरु-तुंभुगा (ग)।
६. × (ख)।
७. पिसुया (ग)।
८. सम्मुच्छिम (ख,ग,घ)।
९. णेत्तिय (पु)।
१०. मगसिरलाडे (ख); मगमिगकीडे (क, पु); मगसिरकीडे (घ)।
११. ढंकुण (क,ग,घ); ढिंकण (ख)।
१२. ओहुंज० (क); ओहिंजलिया जलकारी य (उत्त० ३६।१४८)।
१३. गीणिया (घ)।
१४. णेउला (पु)।
१५. भमरिली (ख)।
१६. तोट्टा (क,ख,घ)।
१७. विब्बुता (घ)।
१८. कणभा (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेरइयजीव-पदं

५३. से किं तं नेरइया ? नेरइया सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइया, सक्करप्पभापुढविनेरइया, वालुयप्पभापुढविनेरइया, पंकप्पभापुढविनेरइया, धूमप्पभापुढविनेरइया, तमप्पभापुढविनेरइया, तमतमप्पभापुढविनेरइया[1]। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । से त्तं नेरइया ।।

तिरिक्खजोणियजीव-पदं

५४. से किं तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ? पंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया, थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया, खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया ।।

५५ से किं तं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया ? जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—मच्छा, कच्छभा[2], गाहा, मगरा, सुंसुमारा[3] ।।

५६. से किं तं मच्छा ? मच्छा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—सण्हमच्छा खवल्लमच्छा[4] जुगमच्छा विज्झिडियमच्छा[5] हलिमच्छा[6] मग्गरिमच्छा[7] रोहियमच्छा हलीसागरा गागरा वडा वडगरा[8] तिमी तिमिंगिला[9] णक्का तंदुलमच्छा कणिक्कामच्छा सालिसच्छियामच्छा लंभणमच्छा पडागा पडागातिपडागा । जे यावण्णे तहप्पगारा । से त्तं मच्छा ।।

५७. से किं तं कच्छभा ? कच्छभा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठिकच्छभा य मंसकच्छभा य । से त्तं कच्छभा ।।

५८. से किं तं गाहा ? गाहा पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—दिली वेढला मुद्धया[10] पुलगा सीमागारा । से त्तं गाहा ।।

५९. से किं तं मगरा ? मगरा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोंडमगरा य मट्ठमगरा य । से त्तं मगरा ।।

६०. से किं तं सुंसुमारा ? सुंसुमारा एगागारा पण्णत्ता । से त्तं सुंसुमारा । 'जे यावण्णे तहप्पगारा'[11] ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य । तत्थ णं जेते सम्मुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा । तत्थ णं जेते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा पण्णत्ता तं जहा—इत्थी पुरिसा नपुंसगा । एतेसि णं एवमाइयाणं जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अद्धतेरस जाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं । से त्तं जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ।।

---

१. तमतमापुढवि (ख,घ) ।
२. कच्छहा (क,ख,घ,पु) ।
३. शिशुमाराः प्राकृतत्वात् सूत्रे 'सुंसुमारा' इति पाठः (मवृ) ।
४. खतमच्छा (ख) ।
५. विज्झभडिय° (ख); विब्भिडिय° (घ) ।
६. हालिद्दमच्छा (ख) ।
७. मगरिमच्छा (क); मगरीमच्छा (ख) ।
८. वडगरा कूयागारा (ग) ।
९. तिमंगिला (घ) ।
१०. मुद्धया (क); सुद्धया (ख,ग,घ) ।
११. चिन्हाङ्कितं वाक्यं पूर्वसूत्रेषु उत्तरसूत्रेष्वपि च निगमनवाक्यात् पूर्वं वर्तते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६१. से किं तं थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य परिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य ॥

६२. से किं तं चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—एगखुरा दुखुरा[1] गंडीपदा सणप्फदा ॥

६३. से किं तं एगखुरा ? एगखुरा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—अस्सा अस्सतरा घोडगा गद्दभा गोरक्खरा कंदलगा सिरिकंदलगा आवत्ता । जे यावण्णे तहप्पगारा । से त्तं एगखुरा ॥

६४. से किं तं दुखुरा ? दुखुरा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—उट्टा गोणा गवया रोज्झा पसया महिसा मिया संवरा वराहा अय-एलग-रुरु-सरभ-चमर-कुरंग-गोकण्णमादी । 'जे यावण्णे तहप्पगारा'[2] । से त्तं दुखुरा ॥

६५. से किं तं गंडीपया ? गंडीपया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—हत्थी पूयणया[3] मंकुणहत्थी खग्गा गंडा । जे यावण्णे तहप्पगारा । से तं गंडीपया ॥

६६. से किं तं सणप्फदा ? सणप्फदा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—सीहा वग्घा दीविया अच्छा तरच्छा[4] परस्सरा सियाला बिडाला सुणगा कोलसुणगा कोकंतिया ससगा चित्तगा चित्तलगा[5] । जे यावण्णे तहप्पगारा । से त्तं सणप्फदा । ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य । तत्थ णं जेते सम्मुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा । तत्थ णं जेते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी पुरिसा णपुंसगा । एतेसि णं एवमादियाणं थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं दस जाइकुल-कोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीति मक्खातं । से त्तं चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ॥

६७. से किं तं परिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? परिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य भुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य ॥

६८. से किं तं उरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया ? उरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—अही अयगरा आसालिया महोरगा ॥

६९. से किं तं अही ? अही दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वीकरा य मउलिणो य ॥

७०. से किं तं दव्वीकरा ? दव्वीकरा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—आसीविसा दिट्ठीविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा[6] उस्सासविसा निस्सासविसा कण्हसप्पा सेदसप्पा काओदरा दब्भपुप्फा[7] कोलाहा मेलिमिंदा[8] । जे यावण्णे तहप्पगारा ।

१. विखुरा (क,घ) ।
२. × (क,ख,घ,पु) ।
३. हत्थिपूयणया (क,ग,घ); पुयलया (ख) ।
४. अरच्छा (घ) ।
५. चिल्ललगा (क); बिल्ललगा (घ) ।
६. लालविस्सा (ग) ।
७. दज्झपुप्फा (ग) ।
८. सेलिसिंदा (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से त्तं दव्वीकरा ।।

७१. से किं तं मउलिणो ? मउलिणो अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—दिव्वा[1] गोणसा कसाहिया[2] वइउला चित्तलिणो मंडलिणो मालिणो अही अहिसलागा पडागा[3]। जे यावण्णे तहप्पगारा। से त्तं मउलिणो। से त्तं अही ।।

७२. से किं तं अयगरा ? अयगरा एगागारा पण्णत्ता, से त्तं अयगरा ।।

७३. 'से किं तं आसालिया ? आसालिया एगागारा पण्णत्ता ।।

७४. कहि णं भंते ! आसालिया सम्मुच्छति'[4] ? गोयमा ! अंतोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवेसु, निव्वाघाएणं पण्णरससु कम्मभूमीसु, वाघातं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु, चक्कवट्टिखंधावारेसु[5] वासुदेवखंधावारेसु बलदेवखंधावारेसु मंडलियखंधावारेसु महामंडलियखंधावारेसु गामनिवेसेसु नगरनिवेसेसु[6] निगमणिवेसेसु खेडनिवेसेसु कब्बड-निवेसेसु मडंबनिवेसेसु दोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु आगरनिवेसेसु आसमनिवेसेसु संवाहनिवेसेसु रायहाणीनिवेसेसु एतेसि णं चेव विणासेसु एत्थ णं आसालिया सम्मुच्छति, जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए उक्कोसेणं बारसजोयणाइं, तयणुरूवं च णं विक्खंभबाहल्लेणं भूमिं दालित्ताणं समुट्ठेति अस्सण्णी मिच्छद्दिट्ठी अण्णाणी अंतोमुहुत्तद्धाउया चेव कालं करेइ[7]। से त्तं आसालिया ।।

७५ से किं तं महोरगा ? महोरगा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थेगइया अंगुलं पि अंगुलपुहत्तिया वि वियत्थिं पि वियत्थिपुहत्तिया वि रयणिं पि रयणिपुहत्तिया वि कुच्छिं पि कुच्छिपुहत्तिया वि धणुं पि धणुपुहत्तिया वि गाउयं पि गाउयपुहत्तिया वि जोयणं पि जोयणपुहत्तिया वि जोयणसतं पि जोयणसतपुहत्तिया वि जोयणसहस्सं[8] पि। ते णं थले जाता जले वि चरंति थले वि चरंति[9]। ते णत्थि इहं, बाहिरएसु दीव-समुद्दएसु हवंति। जे यावण्णे तहप्पगारा। से त्तं महोरगा। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—

---

१. दिव्वागा (क,ग,घ)।

२. कसाहीया (क,घ,पु)।

३. वासपडागा (ग)।

४. से किं तं आसालिया ? कहि णं भंते ! आसालिया सम्मुच्छति ? (क,ग,घ,पु); 'ख' प्रतिं मुक्त्वा अन्येषु आदर्शेषु मलयगिरिवृत्तावपि एष पाठः अपूर्णो दृश्यते। जीवाजीवाभिगमस्य तृतीयप्रतिपत्तौ, २१३ सूत्रे सम्मूच्छिममनुष्याणां एकाकारत्वं प्रतिपादितमस्ति, तेन 'ख' प्रतिगतपाठस्य पुष्टिर्जायते। द्रष्टव्यमस्यैव पदस्य ८३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्। मलयगिरिणा एवं विवृतमस्ति—'से किं तं आसालिया' अथ का सा आसालिया ? एवं शिष्येण प्रश्ने कृते सति भगवान् आर्यश्यामो यदेव ग्रन्थान्तरेषु आसालिगाप्रतिपादकं गौतमप्रश्नभगवन्निर्वचनरूपं सूत्रमस्ति तदेवागमबहुमानतः पठति—'कहि णं भंते इत्यादि (मवृ)।

५. मलयगिरिवृत्तौ 'चक्कवट्टिखंधावारेसु' इत्यत आरभ्य 'रायहाणीनिवेसेसु' इत्यन्तानां पदानामनन्तरं 'वा' शब्दो व्याख्यातोस्ति—वा शब्दः सर्वत्रापि विकल्पार्थो द्रष्टव्यः।

६. मलयगिरिवृत्तौ एतत्पदं नास्ति व्याख्यातम्।

७. तदेव ग्रन्थान्तरगतं सूत्रं पठित्वा सूत्रकृद् उपसंहारमाह—'से त्तं आसालिया' (मवृ)।

८. जोयणसहस्सिया (क,ग)।

९. चरंति जले जाता जले वि चरंति (ख,ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थ णं जेते सम्मुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा। तत्थ णं जेते गब्भवक्कंतिया ते णं तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी पुरिसा नपुंसगा। एएसि णं एवमाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं उरपरिसप्पाणं दस जाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसतसहस्सा हवंतीति मक्खातं। से त्तं उरपरिसप्पा॥

७६. से किं तं भुयपरिसप्पा? भुयपरिसप्पा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—णउला गोहा[1] सेहा[2] सरडा सल्ला सरंडा[3] सारा घरोइला विस्संभरा मूसा मंगुसा[4] पयलाइया छीरविरालिया जाहा चउप्पाइया। जे यावऽण्णे तहप्पगारा। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थ णं जेते सम्मुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा। तत्थ णं जेते गब्भवक्कंतिया ते णं तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी पुरिसा नपुंसगा। एतेसि णं एवमाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं भुयपरिसप्पाणं णव जाइकुलकोडिजोणीपमुहसयसहस्सा हवंतीति मक्खायं। से त्तं भुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया। से त्तं परिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया॥

७७. से किं तं खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया? खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी विततपक्खी॥

७८. से किं तं चम्मपक्खी? चम्मपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—वग्गुली जलोया अडिला[5] भारंडपक्खी जीवंजीवा समुद्दवायसा कण्णत्तिया पक्खिबिराली, जे यावण्णे तहप्पगारा। से त्तं चम्मपक्खी॥

७९. से किं तं लोमपक्खी? लोमपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—ढंका कंका कुरला वायसा चक्कागा[6] हंसा कलहंसा पायहंसा रायहंसा अडा सेडी बगा बलागा पारिप्पवा कोंचा सारसा मेसरा मसूरा मयूरा सतवच्छा गहरा पोंडरीया कागा कामंजुगा[7] वंजुलगा तित्तिरा वट्टगा[8] लावगा कवोया कविंजला पारेवया चिडगा चासा कुक्कुडा सुगा बरहिणा 'मदणसलागा कोइला'[9] सेहा वरेल्लगमादी। से त्तं लोमपक्खी॥

८०. से किं तं समुग्गपक्खी[10]? समुग्गपक्खी एगागारा पण्णत्ता, ते णं णत्थि इहं, बाहिरएसु दीव-समुद्दएसु भवंति। से त्तं समुग्गपक्खी॥

८१. से किं तं विततपक्खी? विततपक्खी एगागारा पण्णत्ता, ते णं नत्थि इहं, बाहिरएसु दीव-समुद्दएसु भवंति। से त्तं विततपक्खी। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थ णं जेते सम्मुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा। तत्थ णं जेते गब्भवक्कंतिया ते णं तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थी पुरिसा नपुंसगा।

---

१. × (क,ख,ग,घ)।
२. 'ग' संकेतितादर्शे स्वीकृतपाठो लभ्यते। जीवाजीवाभिगमे (२।६) भुजपरिसर्पप्रकरणे 'सेधाओ' इति पाठो दृश्यते।
३. सरंठा (क,ख,पु); सरठा (घ)।
४. मंगूसा (क); मुगुंस (उवा० २।२१, पण्हा० १।८)।
५. अडिल्ला (क)।
६. चक्कग (क,घ); चक्कवागा (ख)।
७. कामिजगा (क); कामिंजुगा (घ)।
८. वट्टागा (क)।
९. मद्दणसलागा कोकिला (क); सद्दण° (घ)।
१०. सामुग्ग° (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एएसि णं एवमाइयाणं खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं बारस जातिकुलकोडीजोणिप्पमुहसतसहस्सा[1] भवंतीति मक्खातं ।

संगहणी-गाहा

सत्तट्ठ जातिकुलकोडिलक्ख[2] नव अद्धतेरसाइं च ।
दस दस य होंति णवगा, तह बारस चेव बोधव्वा ॥१॥

से त्तं खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया । से त्तं पंचेंदियतिरिक्खजोणिया । 'से त्तं तिरिक्खजोणिया'[3] ॥

८२. से किं तं मणुस्सा ? मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—समुच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य ॥

८३. 'से किं तं सम्मुच्छिममणुस्सा ? सम्मुच्छिममणुस्सा एगागारा पण्णत्ता ॥

८४. कहि णं भंते'[4] ! सम्मुच्छिममणुस्सा सम्मुच्छंति ? गोयमा ! अंतोमणुस्सखेत्ते पणतालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पण्णाए अंतरदीवएसु गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चेव उच्चारेसु वा पासवणेसु वा खेलेसु वा सिंघाणेसु[5] वा वंतेसु वा पित्तेसु वा पूएसु वा सोणिएसु वा सुक्केसु वा सुक्कपोग्गलपरिसाडेसु वा विगतजीवकलेवरेसु वा थी-पुरिससंजोएसु वा [गामणिद्धमणेसु वा[6] ?] णगरणिद्धमणेसु वा सव्वेसु चेव 'असुइएसु ठाणेसु'[7], एत्थ णं सम्मुच्छिममणुस्सा सम्मुच्छंति । अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए असण्णी मिच्छद्दिट्ठी अण्णाणी[8] सव्वाहिं पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउया चेव कालं करेंति । से त्तं सम्मुच्छिममणुस्सा ॥

८५. से किं तं गब्भवक्कंतियमणुस्सा ? गब्भवक्कंतियमणुस्सा तिविहा पण्णत्ता, तं

---

१. जाती° (क,घ,पु) ।

२. °कोडि होंति (क,ख,ग,घ) ।

३. मलयगिरिवृत्तौ तदेवमुक्ता पञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका' इत्येव निगमनमस्ति ।

४. से किं तं सम्मुच्छिममणुस्सा ? कहि णं भंते ! (क,ख,ग,घ,पु); एष पाठः अपूर्णोस्ति, लिपिदोषेण अन्येन केनापि कारणेण त्रुटितोभूत् । जीवाजीवाभिगमे तृतीयप्रतिपत्तौ, २१३ सूत्रे अस्य पूर्णरूपं प्राप्यते—'से किं तं सम्मुच्छिममणुस्सा ? सम्मुच्छिममणुस्सा एगागारा पण्णत्ता' । एतस्यानन्तरं 'कहि णं भंते सम्मुच्छिममणुस्सा सम्मुच्छंति ?' इति सूत्रमस्ति । वृत्तिकृतापि आदर्शेषु अपूर्णः पाठो लब्धः, तेन तत्र इति विवृतम्—अत्रापि सम्मूर्च्छिममनुष्यविषये प्रवचनबहुमानतः शिष्याणामपि च साक्षाद् भगवतेदमुक्तमिति बहुमानोत्पादनार्थमङ्गान्तर्गतमालापकं पठति—'कहि णं भंते' इत्यादि (मवृ) ।

५. सिंघाणएसु (घ) ।

६. नन्दीसूत्रस्य हारिभद्रीयवृत्तौ (पृ० ३३) मलयगिरिवृत्तौ (पत्र १०१, १०२) च उद्धृते प्रज्ञापनायाः पाठे कोष्ठकान्तर्वर्त्ति पाठो लभ्यते । तत्र 'पूएसु' इति पदं नैव दृश्यते । जीवाजीवाभिगमस्य मलयगिरिवृत्तावपि (पत्र ४५-४६) एष पाठ उद्धृतोस्ति, तत्र कोष्ठकान्तर्वर्त्तिपाठो नास्ति । पूएसु' इति पदमपि च नास्ति । अनेन आदर्शगतो वाचना भेदः सम्भाव्यते ।

७. असुयठाणेसु (ग) ।

८. × (क,ख,घ,पु) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा—कम्मभूमगा[1] अकम्मभूमगा[2] अंतरदीवगा ।।

८६. से किं तं अंतरदीवया ? अंतरदीवया अट्ठावीसतिविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगोरुया[3] आभासिया[4] वेसाणिया णंगोली हयकण्णा गयकण्णा गोकण्णा सक्कुलिकण्णा[5] आयंसमुहा मेंढमुहा अयोमुहा गोमुहा आसमुहा हत्थिमुहा सीहमुहा वग्घमुहा आसकण्णा सीहकण्णा अकण्णा कण्णपाउरणा उक्कामुहा मेहमुहा विज्जुमुहा विज्जुदंता घणदंता लट्ठदंता गूढदंता सुद्धदंता । से त्तं अंतरदीवगा ।।

८७. से किं तं अकम्मभूमगा ? अकम्मभूमगा तीसतिविहा पण्णत्ता, तं जहा—पंचहिं हेमवएहिं, पंचहिं हिरण्णवएहिं, पंचहिं हरिवासेहिं, पंचहिं रम्मगवासेहिं, पंचहिं देवकुरूहिं, पंचहिं उत्तरकुरूहिं[6] । से त्तं अकम्मभूमगा ।।

८८. से किं तं कम्मभूमगा ? कम्मभूमगा पण्णरसविहा पण्णत्ता, तं जहा—पंचहिं भरहेहिं, पंचहिं एरवतेहिं, पंचहिं महाविदेहेहिं । ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—आरिया[7] य मिलक्खू य ।।

मिलक्खु-पदं

८९. से किं तं मिलक्खू[8] ? मिलक्खू[9] अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—सग[10] जवण चिलाय[11] सवर बब्बर काय मुरुंड[12] उड्ड भडग णिण्णग पक्कणिय कुलक्ख गोड[13] सिंहल[14]

१. कम्मभूमिगा (ख,ग) ।

२. अकम्मभूमिगा (ख,ग) ।

३. एगोरूया (ख,ग,घ) ।

४. आहा° (क,घ) ।

५. संकुलीकण्णा (ख) ।

६. °कुराहिं (क); °कुरुहिं (घ) ।

७. आयरिया (क,ख,ग,घ) ।

८. पण्हावागरणाइं (१।२१) सूत्रे म्लेच्छजातिनामानि किञ्चित् संख्याभेदेन पाठभेदेन च प्रतिपादितानि सन्ति—कूरकम्मकारी इमे य बहवे मिलक्खुया किं ते ?—सक जवण सवर बब्बर काय मुरुंड उड्ड भडग निण्णग पक्काणिय कुलक्ख गोड सीहल पारस कोंच अंध दविल चिल्लल पुलिंद आरोस डोंब पोक्कण गंधहारग बहलीय जल्ल रोम माय बउस मलया य चुंचुया य चूलिय कोंकणगा मेद पल्हव मालव मग्गर आभासिया अणक्क चीण ल्हासिय खस खासिय नेट्ठर मरहठ मुट्ठिय आरब डोंबिलग कुहण केकय हूण रोमग रुरु मरुगा चिलायविसयवासी य पावमतिणो ।
'ओवाइयं' (७०) सूत्रे कुब्जाप्रकरणे देससम्बन्धीनि पदानि लभ्यन्ते, यथा—बहूहिं खुज्जाहिं चिलाईहिं वामणीहिं वडभीहिं बब्बरीहिं पउसियाहिं जोणियाहिं पल्हवियाहिं ईसिणियाहिं थारुइणियाहिं लासियाहिं लउसियाहिं सिंहलीहिं दमिलीहिं आरबीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं बहलीहिं मरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं णाणादेसीहिं° ।

९. मिलक्खा (ग) ।

१०. सगा (क,ग); सक्का (ख) ।

११. पण्हावागरणाइं (१।२१) सूत्रे एतत् पदं नास्ति अस्मिन्नेव सूत्रे 'चिलायविसयवासी' एतत्पदं विद्यमानमस्ति तेनास्य पौनरुक्त्यमेव प्रतीयते ।

१२. मुरुंडोड्ड (क,घ,पु); मुरंड (ग) ।

१३. गोंड (ग,घ,पु) ।

१४. सिहर (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पारस 'गोध कोंच'[1] दमिल चिल्लल पुलिंद हारोस[2] डोंब[3] वोक्काण गंधाहारग[4] बहलिय[5] अज्जल रोम पास पउसा मलया य चुंचुया[6] य सूयलि[7] कोंकणग मेय पल्हव मालव मग्गर[8] 'आभासिय णक्क'[9] चीणा ल्हसिय 'खस खासिय'[10] णेद्दर[11] मोंढ[12] डोंबिलग लउस बउस[13] केक्कया अरवागा हूण 'रोमग भरु मरुय'[14] चिलायाविसयवासी'[15] य एवमादी। से त्तं मिलक्खू ॥

आरिय-पदं

९०. से किं तं आरिया? आरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—इड्ढिपत्तारिया य अणिड्ढिपत्तारिया य ॥

९१. से किं तं इड्ढिपत्तारिया? इड्ढिपत्तारिया छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा। से त्तं इड्ढिपत्तारिया ॥

९२. से किं तं अणिड्ढिपत्तारिया? अणिड्ढिपत्तारिया णवविहा पण्णत्ता, तं जहा—खेत्तारिया जातिआरिया[16] कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया भासारिया णाणारिया दंसणारिया चरित्तारिया ॥

खेत्तारिय-पदं

९३. से किं तं खेत्तारिया? खेत्तारिया अद्धछव्वीसतिविहा पण्णत्ता, तं जहा—

रायगिह[17] मगह चंपा, अंगा तह तामलित्ति वंगा य।
कंचणपुरं कलिंगा, वाणारसि चेव कासी य ॥१॥

---

१. गोधाइञ्च (क); गोधोच्च (ख); गोधाइ (ग,घ); गोधोडंब (पु)।

२. हारोसा (ख)।

३. ढोंच (ख,घ); दोव (ग)।

४. गंधाहारवा (ख)।

५. पहल (ख); पहलिल (ग)।

६. बंधुया (क,ख,ग,घ)।

७. मूयलि (पु)।

८. सग्गर (क,घ); गग्गर (पु)।

९. आभासियाणक्क (क,ख,ग,घ)।

१०. खगघासिय (क,ख,ग)।

११. णद्दर (ग,घ); णेदर (क); णेडूर (पु)।

१२. मेढ (ख) मंढ (घ), मंड (पु)।

१३. पओस (ख); पउस (क,ग,घ)।

१४. एतानि च प्रायो लुप्तबहुवचनानि।

१५. रोमग भरु सभयच्छिय° (क); रोसग-भरुग-रुय-निलाय° (पु)।

१६. जाता आरिया (ख)।

१७. मलयगिरिवृत्तौ जनपदनगरसम्बन्धः इत्थं प्रदर्शितोस्ति—१. मगधेषु जनपदेषु राजगृहं नगरम् २. अङ्गेषु चम्पा। ३. वङ्गेषु ताम-लिप्ती ४. कलिङ्गेषु काञ्चनपुरं ५. काशिषु वाराणसी ६. कोशलासु साकेतं ७. कुरुषु गजपुरं ८. कुशावर्तेषु सौरिकं ९. पाञ्चालेषु काम्पिल्यं १०. जङ्गलेषु अहिच्छत्रा ११. सुराष्ट्रेषु द्वारावती १२. विदेहेषु मिथिला १३. वत्सेषु कौशाम्बी १४. शाण्डिल्येषु नन्दिपुरं १५. मलयेषु भद्दिलपुरं १६. वत्सेषु वैराटपुरं १७. वरणेषु अच्छापुरी १८. दशार्णेषु मृत्तिकावती १९. चेदिषु शौक्तिकावती २०. वीतभयं सिंधुषु सौवीरेषु २१. मथुरा शूरसेनेषु २२. पापाभङ्गेषु २३. मास (सा) पुरिवट्टा (र्तायां) २४. कुणालेषु श्रावस्ती २५. लाटासु कोटिवर्षं २६. श्वेताम्बिका केकयजनपदार्द्धे एतावदर्द्धषड्विंशति जनपदात्मकं क्षेत्रमार्यं भणितम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साएय कोसला गयपुरं च, कुरु सोरियं कुसट्टा[1] य ।
कंपिल्लं पंचाला, अहिछत्ता जंगला चेव ॥२॥
'बारवती य सुरट्ठा,'[2] मिहिल विदेहा य वच्छ कोसंबी ।
णंदिपुरं संडिल्ला, भद्दिलपुरमेव मलया य ॥३॥
वइराड वच्छ वरणा, अच्छा तह मत्तियावइ दसण्णा ।
सुत्तीमई[3] य चेदी, वीइभयं[4] सिंधुसोवीरा ॥४॥
महुरा य सूरसेणा, पावा भंगी य मासपुरि वट्टा ।
सावत्थी य कुणाला, कोडीवरिसं च लाढा य ॥५॥
सेयविया वि य णयरी, केयइअद्धं च आरियं भणितं ।
एत्थुप्पत्ति जिणाणं, चक्कीणं राम-कण्हाणं ॥६॥

से त्तं खेत्तारिया ॥

जातिआरिय-पदं

९४. से किं तं जातिआरिया[5] ? जातिआरिया छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—
अंबट्ठा य कलिंदा, विदेहा वेदगा[6] इ य ।
हरिया चुंचुणा[7] चेव, 'छ एया इब्भजातिओ'[8] ॥१॥

से त्तं जातिआरिया ॥

कुलारिय-पदं

९५. से किं तं कुलारिया[9]? कुलारिया छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा णाता कोरव्वा । से त्तं कुलारिया ॥

कम्मारिय-पदं

९६. से किं तं कम्मारिया[10] ? कम्मारिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—दोस्सिया सोत्तिया कप्पासिया सुत्तवेयालिया भंडवेयालिया कोलालिया णरदावणिया[11] । जे यावण्णे तहप्पगारा । से त्तं कम्मारिया ॥

---

१. °त्ता (क,घ) ।
२. सोरठा बारवइ (ख); बारवती सोरठा (घ)।
३. सोत्तियवइ (क,घ) ।
४. वीयभयं (क,घ) ।
५. ठाणं ६।३४ सूत्रे एतत्संवादी पाठो दृश्यते—छव्विहा जाइआरिया मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा—
अंबट्ठा य कलंदा य, वेदेहा वेदिगादिया ।
हरिता चुंचुणा चेव, छप्पेता इब्भजातिया ॥
६. वेंदगा (ख) ।
७. चंचुणा (घ) ।
८. छप्पया इइजा° (क) ।
९. ठाणं ६।३५ सूत्रे एतत्संवादी पाठो दृश्यते—छव्विहा कुलारिया मणुस्सा पण्णत्ता, तं जहा—उग्गा, भोगा राइण्णा, णाता, कोरव्वा।
१०. अणुओगदाराइं ३५९ सूत्रे एतत्संवादी पाठो दृश्यते—से किं तं कम्मनामे ? कम्मनामे—दोसिए सोत्तिए कप्पासिए भंडवेयालिए कोलालिए । से तं कम्मनामे ।
११. णरवावण्णिया (ख,घ); नरंदावणिया (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिप्पारिय-पदं

९७. से किं तं सिप्पारिया[1] ? सिप्पारिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—तुण्णागा तंतुवाया पट्टगारा[2] देयडा वरुट्टा[3] छव्विया कट्ठपाउयारा मुंजपाउयारा छत्तारा वज्झारा[4] पोत्थारा लेप्पारा चित्तारा संखारा दंतारा भंडारा जिब्भगारा[5] सेल्लरा[6] कोडिगारा। जे यावण्णे तहप्पगारा। से त्तं सिप्पारिया॥

भासारिय-पदं

९८. से किं तं भासारिया ? भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासिंति, जत्थ वि य णं बंभी लिवी पवत्तइ।

बंभीए[7] णं लिवीए अट्ठारसविहे लेक्खविहाणे पण्णत्ते, तं जहा—बंभी जवणाणिया[8] दोसापुरिया[9] खरोट्ठी[10] पुक्खरसारिया भोगवईया[11] पहाराईयाओ य अंतक्खरिया अक्खरपुट्ठिया वेणइया णिण्हइया अंकलिवी गणितलिवी गंधव्वलिवी आयंसलिवी माहेसरी दामिली पोलिंदी। से त्तं भासारिया॥

णाणारिय-पदं

९९. से किं तं णाणारिया ? णाणारिया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—आभिणिबोहियणाणारिया सुयणाणारिया ओहिणाणारिया मणपज्जवणाणारिया केवलणाणारिया। से त्तं णाणारिया॥

दंसणारिय-पदं

१००. से किं तं दंसणारिया ? दंसणारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सरागदंसणारिया य वीयरागदंसणारिया य॥

१०१. से किं तं सरागदंसणारिया ? सरागदंसणारिया दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—

निस्सग्गुवएसरुई आणारुइ, सुत्त-बीयरुइ मेव[12]।
अहिगम-वित्थाररुई किरिया-संखेव-धम्मरुई॥१॥

---

१. अणुओगदाराइं ३६० सूत्रे एतत्संवादी पाठो दृश्यते—से किं तं सिप्पनामे ? सिप्पनामे—वत्थिए तंतिए तुन्नाए तंतुवाए पट्टकारे देअडे वरुडे मुंजकारे कट्ठकारे छत्तकारे वज्झकारे पोत्थकारे चित्तकारे दंतकारे लेप्पकारे कोट्टिमकारे।

२. वड्ढागारा (क); पट्टागारा (ख,ग,घ)।

३. वरुडा (क); वरुणा (ख); वरणा (पु); मलयगिरिणा 'वरुट्टा—पिच्छकारा' इति व्याख्यातम्।

४. पभारा (क); पब्भारा (ब)।

५. जिब्भारा (ख); जिज्झगारा (पु)।

६. सेलारा (क); सेल्लगारा (पु)।

७. समवाओ १८।५ सूत्रे एतत्संवादी पाठो दृश्यते—बंभीए णं लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पण्णत्ते, तं जहा—बंभी जवणालिया दोसऊरिया खरोट्ठिया खरसाहिया पहाराइया उच्चत्तरिया अक्खरपुट्ठिया भोगवइया वेणइया णिण्हइया अंकलिवी गणियलिवी गंधव्वलिवी आयंसलिवी माहेसरी दामिली पोलिंदी।

८. जवणालिया (क,ख,घ,पु); मलयगिरिवृत्तौ यवनानी।

९. दासा° (क,घ)।

१०. खरोट्टी (क,ख,ग,घ)।

११. °इया (घ)।

१२. चेव (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूयत्थेणाधिगया, 'जीवाजीवा य'[1] पुण्णपावं च ।
सहसम्मुइयासवसंवरो[2] य रोएइ[3] उ णिसग्गो ।।२।।
जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव ।
एमेव णण्णह त्ति य, णिस्सग्गरुइ त्ति णायव्वो ।।३।।
एते चेव उ भावे, उवदिट्ठे जो परेण सद्दहइ ।
छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ त्ति नायव्वो ।।४।।
'जो हेउमयाणंतो, आणाए रोयए पवयणं तु ।
एमेव णण्णह त्ति य, एसो आणारुई नाम'[4] ।।५।।
जो सुत्तमहिज्जंतो, सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं ।
अंगेण बाहिरेण व, सो सुत्तरुइ त्ति णायव्वो ।।६।।
'एगपएणेगाइं, पदाइं जो पसरई उ सम्मत्तं ।
उदए व्व तेल्लबिंदू, सो बीयरुइ त्ति णायव्वो'[5] ।।७।।
सो होइ अहिगमरुई[6], सुयणाणं जस्स अत्थओ दिट्ठं ।
एक्कारस अंगाइं, पइण्णगं दिट्ठिवाओ य ।।८।।
दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहि णयविहीहिं, वित्थाररुइ त्ति णायव्वो ।।९।।
दंसण-णाण-चरित्ते, तवविणए सच्चसमिइ[7]- गुत्तीसु ।
जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई णाम ।।१०।।
अणभिग्गहियकुदिट्ठी, संखेवरुइ त्ति होइ णायव्वो ।
अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओ य सेसेसु ।।११।।
जो अत्थिकायधम्मं, सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च ।
सद्दहइ जिणाभिहियं, सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ।।१२।।
परमत्थसंथवो[8] वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि ।
वावण्ण-कुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ।।१३।।
निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।
उववूह थिरीकरणे वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ।।१४।।

से त्तं सरागदंसणारिया ।।

---

१. जीवाजीवा इ (क); जीवाजीवं च (पु); उत्तरज्झयणाणि २८।१७ 'जीवाजीवा य' इति विद्यते ।

२. सहसंमइया° (घ); °संवरे (पु) ।

३. रोइओ (क); रोइय (घ) ।

४. रागो दोसो मोहो, अण्णाणं जस्स अवगयं होइ ।
आणाए रोयंतो, सो खलु आणारुई नाम ।।
(उत्त० २८।२०)

५. एगेण अणेगाइ, पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं ।
उदए व्व तेल्लबिंदू, सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ।।
(उत्त० २८।२२) ।

६. अभिगमरुई (ग,घ) ।

७. सव्वसमिइ (क,ग,घ, मवृ) ।

८. तदेवं निसर्गाद्युपाधिभेदाद् दशधा रुचिरूपं दर्शनमुक्तं, सम्प्रति यैर्लिङ्गैरिदमुत्पन्नमस्ति इति निश्चीयते तानि लिङ्गान्युपदर्शयन्नाह (मवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०२. से किं तं वीयरागदंसणारिया ? वीयरागदंसणारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया खीणकसायवीयरागदंसणारिया ॥

१०३. से किं तं उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया ? उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा पढमसमयउवसंतकसायवीयरागदंसणारिया अपढमसमयउवसंतकसायवीयरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयउवसंतकसायवीयरागदंसणारिया[1] य अचरिमसमयउवसंतकसायवीयरागदंसणारिया य ॥

१०४. से किं तं खीणकसायवीयरागदंसणारिया ? खीणकसायवीयरागदंसणारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—छउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया य केवलिखीणकसायवीयरागदंसणारिया य ॥

१०५. से किं तं छउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया ? छउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया य बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया य ॥

१०६. से किं तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया ? सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया य अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया य, अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया य अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया य। से त्तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया ॥

१०७. से किं तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया ? बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया य अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया य, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया य अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया य। से त्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से त्तं छउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया ॥

१०८. से किं तं केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य ॥

१०९. से किं तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य, अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य। से त्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ॥

११०. से किं तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागदंसणारिया ? अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागदंसणारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयअजोगिकेवलिखीण-

---

१. चरम° (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कसायवीतरागदंसणारिया य अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागदंसणारिया य। से त्तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से त्तं केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से त्तं खीणकसायवीतरागदंसणारिया। से त्तं वीयरागदंसणारिया। से त्तं दंसणारिया ॥

चरित्तारिय-पदं

१११. से किं तं चरित्तारिया? चरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सरागचरित्तारिया य वीयरागचरित्तारिया य ॥

११२. से किं तं सरागचरित्तारिया? सरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य बायरसंपरायसरागचरित्तारिया य ॥

११३. से किं तं सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया? सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संकिलिस्समाणा य विसुज्झमाणा य। से त्तं सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया ॥

११४. से किं तं बादरसंपरायसरागचरित्तारिया? बादरसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयबादरसंपरायसरागचरित्तारिया य अपढमसमयबादरसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयबादरसंपरायसरागचरित्तारिया य अचरिमसमयबादरसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा बादरसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पडिवाती य अपडिवाती य। से त्तं बादरसंपरायसरागचरित्तारिया। से त्तं सरागचरित्तारिया ॥

११५. से किं तं वीयरागचरित्तारिया? वीयरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवसंतकसायवीयरागचरित्तारिया य खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य ॥

११६. से किं तं उवसंतकसायवीयरागचरित्तारिया? उवसंतकसायवीयरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयउवसंतकसायवीयरागचरित्तारिया य अपढमसमयउवसंतकसायवीयरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयउवसंतकसायवीयरागचरित्तारिया य अचरिमसमयउवसंतकसायवीयरागचरित्तारिया य। से त्तं उवसंतकसायवीयरागचरित्तारिया ॥

११७. से किं तं खीणकसायवीयरागचरित्तारिया? खीणकसायवीयरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य ॥

११८. से किं तं छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया? छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११९. से किं तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य। से त्तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसाय वीतरागचरित्तारिया ।।

१२०. से किं तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य। से त्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीयरागचरित्तारिया। से त्तं छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ।।

१२१. से किं तं केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य ।।

१२२. से किं तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया ? सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य। से त्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया ।।

१२३. से किं तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया ? अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया य अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। से त्तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागचरित्तारिया। से त्तं केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से त्तं खीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से त्तं वीयरागचरित्तारिया।

१२४. अहवा चरित्तारिया[1] पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयचरित्तारिया छेदोवट्ठावणियचरित्तारिया परिहारविसुद्धियचरित्तारिया सुहुमसंपरायचरित्तारिया अहक्खायचरित्तारिया ।।

१२५. से किं तं सामाइयचरित्तारिया ? सामाइयचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्तरियसामाइयचरित्तारिया य आवकहियसामाइयचरित्तारिया य। से त्तं सामाइयचरित्तारिया ।।

---

१. चारित्तारिया (ख,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२६. से किं तं छेदोवट्ठावणियचरित्तारिया ? छेदोवट्ठावणियचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—साइयारछेदोवट्ठावणियचरित्तारिया य णिरइयारछेदोवट्ठावणियचरित्तारिया य। से त्तं छेदोवट्ठावणियचरित्तारिया ॥

१२७. से किं तं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया ? परिहारविसुद्धियचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—निव्विसमाणपरिहारविसुद्धियचरित्तारिया य निव्विट्ठकाइयपरिहारविसुद्धियचरित्तारिया य। से त्तं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया ॥

१२८. से किं तं सुहुमसंपरायचरित्तारिया ? सुहुमसंपरायचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संकिलिस्समाणसुहुमसंपरायचरित्तारिया य विसुज्झमाणसुहुमसंपरायचरित्तारिया य। से त्तं सुहुमसंपरायचरित्तारिया ॥

१२९. से किं तं अहक्खायचरित्तारिया ? अहक्खायचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—छउमत्थअहक्खायचरित्तारिया य केवलिअहक्खायचरित्तारिया य। से त्तं अहक्खायचरित्तारिया। से त्तं चरित्तारिया। से त्तं अणिड्ढिपत्तारिया। से त्तं आरिया। से त्तं कम्मभूमगा। से त्तं गब्भवक्कंतिया। से त्तं मणुस्सा ॥

देवजीव-पदं

१३०. से किं तं देवा ? देवा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया ॥

१३१. से किं तं भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—असुरकुमारा नागकुमारा सुवण्णकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउकुमारा थणियकुमारा। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। से त्तं भवणवासी ॥

१३२. से किं तं वाणमंतरा ? वाणमंतरा अट्ठविहा पण्णत्ता, तं जहा—किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा जक्खा रक्खसा भूया पिसाया। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। से त्तं वाणमंतरा ॥

१३३. से किं तं जोइसिया ? जोइसिया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—चंदा सूरा गहा 'नक्खत्ता तारा'[1]। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। से त्तं जोइसिया ॥

१३४. से किं तं वेमाणिया ? वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—कप्पोवगा य कप्पातीता य ॥

१३५. से किं तं कप्पोवगा ? कप्पोवगा बारसविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोहम्मा ईसाणा सणंकुमारा माहिंदा बंभलोया लंतया सुक्का[2] सहस्सारा आणता पाणता आरणा अच्चुता। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। से त्तं कप्पोवगा ॥

१३६. से किं तं कप्पातीया ? कप्पातीया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—गेवेज्जगा य अणुत्तरोववाइया य ॥

---

१. तारा नक्खत्ता (ख)। २. महासुक्का (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३७. से किं तं गेवेज्जगा ? गेवेज्जगा णवविहा पण्णत्ता, तं जहा—हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगा हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जगा हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जगा मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जगा मज्झिममज्झिमगेवेज्जगा मज्झिमउवरिमगेवेज्जगा उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जगा उवरिममज्झिमगेवेज्जगा उवरिमउवरिमगेवेज्जगा। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। से त्तं गेवेज्जगा ॥

१३८. से किं तं अणुत्तरोववाइया ? अणुत्तरोववाइया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—विजया वेजयंता जयंता अपराजिता सव्वट्ठसिद्धा। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। से त्तं अणुत्तरोववाइया। से त्तं कप्पाईया। से त्तं वेमाणिया। से त्तं देवा। से त्तं पंचिंदिया। से त्तं संसारसमावण्णजीवपण्णवणा। से त्तं जीवपण्णवणा। से त्तं पण्णवणा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिइयं ठाणपयं

पुढविकायठाण-पदं

१. कहि णं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु, तं जहा—रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए इसीपब्भाराए। अहोलोए—पायालेसु भवणेसु भवण-पत्थडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु। उड्ढलोए—कप्पेसु विमाणेसु विमाणाव-लियासु विमाणपत्थडेसु। तिरियलोए—टंकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पब्भारेसु विजएसु वक्खारेसु वासेसु वासहरपव्वएसु वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु। एत्थ णं बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे ॥

२. कहि णं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे ॥

३. कहि णं भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाण य ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइया जे पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावण्णगा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

आउक्कायठाण-पदं

४. कहि णं भंते ! बादरआउक्काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घणोदधिवलएसु। अहोलोए—पायालेसु भवणेसु भवण-पत्थडेसु। उड्ढलोए—कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु। तिरियलोए—अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलेसु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु[1] पल्ललेसु[2] वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु। एत्थ णं बादरआउक्काइयाणं पज्जत्त-गाणं[3] ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइ-

१. चिल्ललएसु (ख,ग,घ)।
२. पल्ललएसु (ग)।
३. पज्जत्ताणं (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे ।।

५. कहि णं भंते ! बादरआउक्काइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरआउक्काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरआउक्काइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइ-भागे ।।

६. कहि णं भंते ! सुहुमआउक्काइयाणं 'पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाण य'[1] ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमआउक्काइया जे पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावण्णगा पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

तेउक्कायठाण-पदं

७. कहि णं भंते ! बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु निव्वाघाएणं पण्णरससु कम्मभूमीसु, वाघायं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु, एत्थ णं बादरतेउक्काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता । 'उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे'[2] ।।

८. कहि णं भंते ! बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स 'दोसु उड्ढकवाडेसु'[3] तिरियलोयतट्टे य, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे ।।

९. कहि णं भंते ! सुहुमतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाण य ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमतेउकाइया जे पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावण्णगा पण्णत्ता समणाउसो !।।

वाउकायठाण-पदं

१०. कहि णं भंते ! बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणवाएसु सत्तसु घणवायवलएसु सत्तसु तणुवाएसु सत्तसु तणुवायवलएसु । अहोलोए—पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु भवणछिद्देसु भवणणिक्खुडेसु[4] निरएसु[5] निरयावलियासु निरयपत्थडेसु निरयछिद्देसु निरयणिक्खुडेसु । उड्ढलोए—कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु विमाणछिद्देसु विमाणणिक्खुडेसु । तिरियलोए—पाईण-पडीण[6]-दाहिण-उदीण[7] सव्वेसु चेव लोगागासछिद्देसु लोगणिक्खुड्डेसु य । एत्थ णं बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु ।।

११. कहि णं भंते ! अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव

---

१. पज्जत्तापज्जत्ताणं (घ) ।

२. तीसु वि लोगस्स असंखेज्जतिभागे (हवृ) ।

३. दोसुद्धकवाडेसु (पु, हवृ) ।

४. °णिखुडेसु (पु) सर्वत्र । हारिभद्रीयवृत्तौ 'निकुटो' इति पदं मुद्रितं दृश्यते ।

५. नरएसु (ख) ।

६. पयीण (क); पईण (ख,ग,घ) ।

७. विभक्तिरहितपदम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बादरवाउक्काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरवाउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु ॥

१२. कहि णं भंते ! सुहुमवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाण य ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमवाउकाइया जे पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावण्णगा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

वणस्सइकायठाण-पदं

१३. कहि णं भंते ! बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहिवलएसु। अहोलोए—पायालेसु भवणेसु भवण-पत्थडेसु। उड्ढलोए—कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु। तिरियलोए—अगडेसु तडागेसु[1] नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलेसु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु[2] दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु। एत्थ णं बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्त-गाणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे ॥

१४. कहि णं भंते ! बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्त-गाणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे ॥

१५. कहि णं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाण य ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमवणस्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावण्णगा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

बेइंदियठाण-पदं

१६. कहि णं भंते ! बेइंदियाणं[3] पज्जत्तगापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेक्कदेसभागे। अहोलोए तदेक्कदेसभागे[4]। तिरियलोए—अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलेसु[5] बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु। एत्थ णं बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे ॥

तेइंदियठाण-पदं

१७. कहि णं भंते ! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा !

---

१. तलागेसु (क)।
२. विप्पणेसु (क); वप्पेसु (ख)।
३. बेंदियाणं (क,घ)।
४. तदेकदेस° (क,घ) सर्वत्र।
५. × (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उड्ढलोए तदेक्कदेसभाए। अहोलोए तदेक्कदेसभाए। तिरियलोए—अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलेसु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु। एत्थ णं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं[1] ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे॥

चउरिंदियठाण-पदं

१८. कहि णं भंते! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! उड्ढलोए तदेक्कदेसभाए। अहोलोए तदेक्कदेसभाए। तिरियलोए—अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु[2] दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलेसु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु। एत्थ णं चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे॥

पंचिंदियठाण-पदं

१९. कहि णं भंते! पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! उड्ढलोए[3] तदेक्कदेसभाए। अहोलोए[4] तदेक्कदेसभाए। तिरियलोए—अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलेसु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु। एत्थ णं पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे॥

नेरइयठाण-पदं

२०. कहि णं भंते! नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहि णं भंते! नेरइया परिवसंति? गोयमा! सट्ठाणेणं सत्तसु पुढवीसु, तं जहा—रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए, एत्थ णं णेरइयाणं चउरासीति णिरयावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खायं। ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिता[5] णिच्चंधयारतमसा ववगयगह-चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसपहा[6] मेद-वसा-पूय[7]-रुहिर-मंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला[8] असुई वीसा[9] परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा णरगा असुभा णरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं

१. °पज्जत्ताणं (घ)।
२. पुष्करि° (क)।
३,४. °लोयस्स (घ)।
५. खुरासंठाण° (ख)।
६. मलयगिरिवृत्तौ समुद्धृते पाठे 'जोइसियपहा' इति दृश्यते।
७. पूयपडल (क,ख,ग,घ); समवायाङ्गे (प०सू० १४१) 'पडल' इति पदं नास्ति।
८. °चिक्खल्ल° (क,ख,घ सर्वत्र)।
९. बीभच्छा (मवृ); वीसा (मवृपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे णेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो[1]! ते णं तत्थ णिच्चं भीता णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहं संबद्धं णरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥

२१. कहि णं भंते! रयणप्पभापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहि णं भंते! रयणप्पभापुढविणेरइया परिवसंति? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए[2] उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं रयणप्पभापुढविनेरइयाणं तीसं णिरयावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं। ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिता णिच्चंधयारतमसा ववगयगह-चंद-सूर-णक्खत्तजोइसप्पभा मेद-वसा-पूय[3]-रुहिर-मंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा णरगा असुभा णरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं रयणप्पभापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घातेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति काला कोलोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो! ते णं णिच्चं भीता णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहं संबद्धं णरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥

२२. कहि णं भंते! सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहि णं भंते! सक्करप्पभापुढविनेरइया परिवसंति? गोयमा! सक्करप्पभाए पुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे तीसुत्तरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं सक्करप्पभापुढविणेरइयाणं पणवीसं णिरयावाससतसहस्सा हवंतीति मक्खातं। ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिता णिच्चंधयारतमसा ववगयगह-चंद-सूर-णक्खत्तजोइसप्पहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे सक्करप्पभापुढविणेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो! ते णं णिच्चं भीता णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहं संबद्धं नरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥

२३. कहि णं भंते! वालुयप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! वालुयप्पभाए पुढवीए अट्ठावीसुत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं

१. × (ख)।
२. आसीदुत्तर° (हवृ)।
३. पूयपडल (क,ख,ग,घ,पु) सर्वत्र।

जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे छव्वीसुत्तरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं वालुयप्पभापुढविनेरइयाणं पण्णरस णिरयावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं। ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिता णिच्चंधयारतमसा ववगयगह-चंद-सूर-नक्खत्तजोइसप्पहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेदणाओ, एत्थ णं वालुयप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे वालुयप्पभापुढवीनेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो ! ते णं णिच्चं भीता णिच्चं तत्था णिच्चं तसिता णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहं संबद्धं णरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति॥

२४. कहि णं भंते ! पंकप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंकप्पभाए पुढवीए वीसुत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हिट्ठा[1] वेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठारसुत्तरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं पंकप्पभापुढविनेरइयाणं दस णिरयावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं। ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिता णिच्चंधयारतमसा ववगयगह-चंद-सूर-नक्खत्त-जोइसपहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं पंकप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे पंकप्पभापुढविनेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो ! ते णं निच्चं भीता निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहं संबद्धं णरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति॥

२५. कहि णं भंते ! धूमप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! धूमप्पभाए पुढवीए अट्ठारसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हिट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे सोलसुतरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं धूमप्पभापुढविनेरइयाणं तिन्नि निरयावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं। ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिता णिच्चंधयारतमसा ववगयगह-चंद-सूर-नक्खत्त-जोइसपहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं धूमप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे धूमप्पभापुढविनेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा

१. अहे (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो ! ते णं णिच्चं भीता णिच्चं तत्था णिच्चं तसिता णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहं संबद्धं णरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥

२६. कहि णं भंते ! तमप्पभापुढविनेरइयाणं[1] पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! 'तमप्पभाए पुढवीए'[2] सोलसुत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हिट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे चोद्दसुत्तरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं तमप्पभापुढविनेरइयाणं एगे पंचूणे णरगावाससतसहस्से हवंतीति[3] मक्खातं। ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिता निच्चंधयारतमसा ववगयगह-चंद-सूर-नक्खत्तजोइसप्पहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा[4] कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणाओ, एत्थ णं तमप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे तमप्पभापुढविणेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो ! ते णं णिच्चं भीता णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहं संबद्धं नरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥

२७. कहि णं भंते ! तमतमापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तमतमाए पुढवीए अट्ठोत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं अद्धतेवण्णं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता हिट्ठा वि अद्धतेवण्णं जोयणसहस्साइं वज्जेत्ता मज्झे तिसु[5] जोयणसहस्सेसु, एत्थ णं तमतमापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महइमहालया महाणिरया पण्णत्ता, तं जहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे। ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिता निच्चंधयारतमसा ववगयगह-चंद-सूर-नक्खत्तजोइसपहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा[6] कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ, एत्थ णं तमतमापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे तमतमापुढविनेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो ! ते णं णिच्चं भीता णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहं संबद्धं णरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति।

संगहणी-गाहा—

आसीतं बत्तीसं अट्ठावीसं च होइ[7] वीसं च।
अट्ठारस सोलसगं, अट्ठुत्तरमेव हिट्ठिमिया[8] ॥१॥

---

१. तमा° (क,ख,ग,घ)।
२. तमाए पुढवीए (क,ग,घ); तमापुढवीए (ख)।
३. अत्र बहुवचनं प्रवाहपाति दृश्यते।
४. दुब्भिगंधा नो काउअगणिवण्णाभा (ख)।
५. तिसुत्तर (ख)।
६. दुब्भिगंधा नो काउअगणिवण्णाभा (ख)।
७. होंति (ख,ग,घ)।
८. हिट्ठिमया (पु)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठुत्तरं[1] च तीसं, छव्वीसं चेव सतसहस्सं तु ।
अट्ठारस सोलसगं, चोद्दसमहियं तु छट्ठीए ॥२॥
अद्धतिवण्णसहस्सा, उवरिमऽहे वज्जिऊण तो भणियं ।
मज्झे 'उ तिसहस्सेसु'[2], होंति[3] नरगा तमतमाए ॥३॥
तीसा य पण्णवीसा, पण्णरस दसेव सयसहस्साइं ।
तिण्णि य पंचूणेगं, पंचेव अणुत्तरा नरगा ॥४॥

पंचिंदियतिरिक्खजोणियठाण-पदं

२८. कहि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेक्कदेसभाए, अहोलोए तदेक्कदेसभाए, तिरियलोए—अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलेसु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु । एत्थ णं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे ॥

मणुस्सठाण-पदं

२९. कहि णं भंते ! मणुस्साणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! अंतो-मणुस्सखेत्ते पणतालीसाए जोयणसतसहस्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पणाए अंतरदीवेसु, एत्थ णं मणुस्साणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे ॥

भवणवासिदेवठाण-पदं

३०. कहि णं भंते ! भवणवासीणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! भवणवासी देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर-जोयणसतसहस्सबाहल्लाए[4] उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं भवणवासीणं देवाणं सत्त भवणकोडीओ बावत्तरिं च भवणावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं । ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो समचउरंसा अहे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिता उक्किण्णंतरविउलगंभीरखात[5]-परिहा[6] पागारट्टालय-कवाड[7]-तोरण-पडिदुवारदेसभागा जंत-सयग्घि-मुसल-मुसुंढिपरिवारिया[8]

---

१. अट्ठुत्तरं (क); अट्ठुत्तरिं (ग,घ); अडहुत्तरं (पु) ।
२. उ तिसु सहस्सेसु (क); तिसहस्सेसु (ख,ग,घ) ।
३. होंति उ (ख,ग,घ) ।
४. आसीउत्तर° (ख) ।
५. उक्किण्णंतरगंभीरखात (हावृ); समवायांगे (प०सू० १४४) 'विपुल' इति पदं दृश्यते ।
६. मलयगिरिवृत्तौ समुद्धृते पाठे 'फलिहा' इति पदं दृश्यते । समवायाङ्गे (प०सू० १४४) पि एतदेव दृश्यते ।
७. कवाडया (ख) ।
८. मुसंढि° (क,घ); मुसंढिपरियारिया (ख,ग); समवायाङ्गे (प०सू० १४४) 'मुसुंढि' इति पदं दृश्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अओज्झा[1] 'सदाजता सदागुत्ता'[2] अडयालकोट्ठगरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीस-सरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितला उवचियवंदणकलसा वंदणघडसुकततोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवण्णसरससुरहिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागरु[3]-पवरकुंदुरुक्क[4]-तुरुक्क[5]-धूवमघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामा 'सुगंध-वरगंध-गंधिया'[6] गंधवट्टिभूता अच्छरगण-संघ-संविगिण्णा[7] दिव्वतुडितसद्दसंपणदिता सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पहा सस्सिरीया[8] समिरीया[9] सउज्जोया पासादीया[10] दरिसणिज्जा[11] अभिरूवा पडिरूवा, एत्थ णं भवणवासीणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे भवणवासी देवा परिवसंति, तं जहा—

असुरा नाग सुवण्णा, विज्जू अग्गी य दीव उदही य।
दिसि पवण थणिय नामा, दसहा एए भवणवासी ॥१॥

चूडामणिमउडरयण[12]-भूसणणागफडगरुलवइर[13]-पुण्णकलसंकिउप्फेस[14]-'सीह-हयवर-गयअंक-मगर-वद्धमाण'[15]-निज्जुत्तचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया महज्जुतीया महायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा[16] हारविराइयवच्छा कडग-तुडियथंभियभुया अंगद-कुंडल-मट्ठगंडतलकण्णपीढधारी[17] विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमाला-मउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा[18] भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं[19] दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए

---

१. अउज्झा (क). आउज्झा (ग)।
२. सदा गुत्ता सदा जेया (ख)।
३. कालागुरु (ख,ग,घ)।
४. °कंदुरुक्क (क)।
५. तुरुक्कउज्झंत (प०सू० १४४)।
६. सुगंधिवरगंधिया (ख); सुगंधवरगंधिया (ग)।
७. संधिगिणा (ख)।; विगिण्णा (ग); मलयगिरिवृत्तौ—'संघः समुदायस्तेन सम्यक् रमणीयतया विकीर्णानि व्याप्तानि अप्सरो गणसंघविकीर्णानि' इति व्याख्यातमस्ति अत्र सम्यग् रमणीयतया इति 'सं' पदस्यैव व्याख्या संभाव्यते तथापि समस्तपदे 'विकीर्णानि' इति पदमेव लिखितं लभ्यते।
८. सस्सिरिया (घ)।
९. समरिईया (क); × (ख); समिरिया (ग); समरिइया (घ)।
१०. पासाईया (ख); पासातीता (घ,पु)।
११. दरसणिज्जा (क,ख,घ)।
१२. °रइया (क); °रइय (ख,घ); °रयणा (ग)।
१३. °फण° (ख)।
१४. °संकितुप्पेसा (क,घ); °सकिउप्फेस (पु)।
१५. सीहअस्सगयमयरवद्धमाण (ख); सीहहयवरगयंकमगरवरवद्धमाण (व)।
१६. महेसक्खा (मवृ); महासोक्खा, महासक्खा (मवृपा)।
१७. घट्ठगंड° (ख); मट्ठगंडकण्ण° (मवृ)।
१८. °मालाणु° (ख)।
१९. संधायणेणं (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुतीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं[1] दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा। ते णं तत्थ साणं-साणं भवणावाससयसहस्साणं साणं-साणं सामाणियसाहस्सीणं साणं-साणं तावत्तीसाणं[2] साणं-साणं लोगपालाणं साणं-साणं अग्गमहिसीणं साणं-साणं परिसाणं साणं-साणं अणियाणं साणं-साणं अणियाहिवतीणं साणं-साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं भवणवासीणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं[3] आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महताहत-नट्ट-गीत-वाइत-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंगपडुप्पवाइयरवेणं[4] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति।

३१. कहि णं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहि णं भंते! असुरकुमारा देवा परिवसंति? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं असुरकुमाराणं देवाणं चोवट्ठिं भवणावाससतसहस्सा हवंतीति मक्खायं। ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिता उक्किण्णंतरविउलगंभीरखाय-परिहा पागारट्टालय-कवाड-तोरण-पडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घि-मुसल-मुसुंढिपरिवारिया अओज्झा[5] सदाजया सदागुत्ता अडयालकोट्ठगरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीस-सरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितला उवचितवंदणकलसा वंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्कधूवमघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधवट्टिभूता अच्छरगणसंघसंविगिण्णा दिव्वतुडितसद्दसंपणदिया सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया समिरीया[6] सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एत्थ णं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे असुरकुमारा देवा परिवसंति—काला लोहियक्ख-बिंबोट्ठा धवलपुप्फदंता असियकेसा वामेयकुंडलधरा[7] अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता, ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवर परिहिया, वयं च पढमं समइक्कंता, बिइयं च असंपत्ता, भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा, तलभंगय-तुडित-पवरभूसण[8]-निम्मलमणि-रयणमंडितभुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिचित्तचिंधगता[9] सुरूवा महिड्ढिया महज्जुइया महायसा महब्बला महाणुभागा[10]

---

१. भोगेणं (ख); स्तबके 'दिव्यभोग' इति अर्थो दृश्यते।
२. तायत्तीसाणं (ख,ग,घ); तायत्तीसगाणं (पु)।
३. महयरगत्तं (पु)।
४. °मुयगं° (पु)।
५. अउज्झा (क,ख,ग)।
६. समरीइया (क घ)।
७. वामएगकुंडलधरा (क,ख,ग,घ)।
८. वर° (मवृ)।
९. चूडामणिविचित्त° (क,ख,ग,घ)।
१०. महाणुभावा (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडय-तुडियथंभियभुया अंगय-कुंडल-मट्ठगंडयलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमाला-मउली[1] कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा। ते णं तत्थ साणं-साणं भवणावाससतसहस्साणं साणं-साणं सामाणियसाहस्सीणं साणं-साणं तावत्तीसाणं साणं-साणं लोगपालाणं साणं-साणं अग्गमहिसीणं साणं-साणं परिसाणं साणं साणं अणियाणं साणं-साणं अणियाधिवतीणं साणं-साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं भवणवासीणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं[2] भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महताहतणट्ट-गीत-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाणं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति।

चमर-बलिणो इत्थ दुवे असुरकुमारिंदा असुरकुमाररायाणो परिवसंति—काला महानीलसरिसा णीलगुलिय-गवल-अयसिकुसुमप्पगासा वियसियसयवत्तणिम्मलईसीसित[3]-रत्ततंबणयणा गरुलाययउज्जुतुंगणासा ओयवियसिलप्पवाल[4]-बिंबफलसन्निभाहरोट्ठा पंडरससिसगलविमल[5]-निम्मलदहिघण-संख-गोखीर-कुंद-दगरय-मुणालियाधवलदंतसेढी हुयवहणिद्धंतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततल-तालु-जीहा अंजण-घणकसिणरुयगरमणिज्जणिद्धकेसा[6] वामेयकुंडलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता, ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवर परिहिया, वयं च पढमं समइक्कंता, बिइयं तु असंपत्ता, भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा, तलभंगय-तुडित-पवरभूसण-निम्मलमणि-रयणमंडितभुया दसमुद्दामंडितग्गहत्था चूडामणिचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढिया महज्जुइया महायसा महाबला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडय-तुडितथंभियभुया अंगद-कुंडल-मट्ठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमाला-मउली कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुतीए 'दिव्वाए भासाए'[7] दिव्वाए छायाए दिव्वाए पहाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा। ते णं तत्थ साणं-साणं भवणावाससतसहस्साणं साणं-साणं सामाणियसाहस्सीणं साणं-साणं तावत्तीसाणं साणं-साणं लोगपालाणं साणं-साणं अग्गमहि-

---

१. त्रिंशत्तमे सूत्रे 'मउलिमउडा' इति पाठोस्ति, मलयगिरिवृत्तौ स व्याख्यातोस्ति। अत्र आदर्शेषु 'मउडा' इति पदं नैव दृश्यते।

२. सामिच्चं (पु)।

३. °इसि° (क,ग,छ)।

४. उयचिय° (क)।

५. पंडुर (क,घ); पंडुल° (ख)।

६. °कसिणगरुयग° (ग)।

७. × (ग); पूर्वसूत्रे अस्य सूत्रस्य पूर्वालापके च दिव्वाए जुती (ई) ए 'दिव्वाए पभाए' एवं पाठोस्ति 'दिव्वाए भासाए' इति पाठो नास्ति। 'दिव्वाए पहाए' इति पाठोप्यत्र व्युत्क्रमेण वर्तते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीणं साणं-साणं परिसाणं साणं-साणं अणियाणं साणं-साणं अणियाधिवतीणं साणं-साणं आतरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं भवणवासीणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महताहत-नट्ट-गीत-वाइत-तंती-तल-ताल-तुडित-घण-मुइंगपडु-प्पवाइतरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ।।

३२. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! दाहिणिल्ला असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वतस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसतसहस्स-बाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं चोत्तीसं भवणावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं । ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा, सो च्चेव वण्णओ जाव[1] पडिरूवा । एत्थ णं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे दाहिणिल्ला असुरकुमारा देवा य देवीओ य परिवसंति—काला लोहियक्खबिंबोट्ठा तहेव जाव[2] भुंजमाणा विहरंति । एतेसि णं तहेव[3] तावत्तीसगलोगपाला भवंति । एवं सव्वत्थ भाणितव्वं भवणवासीणं । चमरे अत्थ असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसति—काले महानीलसरिसे जाव[4] पभासेमाणे । से णं तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससतसहस्साणं चउसट्ठीए सामाणियसाह-स्सीणं तायत्तीसाए[5] तावत्तीसाणं चउण्हं लोगपालाणं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाधिवतीणं चउण्ह य चउसट्ठीणं आयरक्ख-देवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं देवाणं देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव[6] विहरति ।।

३३. कहि णं भंते ! उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! उत्तरिल्ला असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाह-ल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं तीसं भवणावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं । ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा, सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव[7] विहरंति ।

बलि यत्थ[8] वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसति—काले महानीलसरिसे जाव[9] पभासेमाणे । से णं तत्थ तीसाए भवणावाससयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं

---

१. प० २।३१ ।
२. प० २।३१ ।
३. × (ख) ।
४. प० २।३१ ।
५. तावत्तीसाए (क,ख,घ,पु) ।
६. प० २।३० ।
७. प० २।३२ ।
८. एत्थ (ख,ग,घ) ।
९. प० २।३१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाधिवतीणं चउण्ह य सट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरवच्चं कुव्वमाणे[1] विहरति ॥

३४. कहि णं भंते ! णागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! णागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता[2] मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ णं णागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं चुलसीइ भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खातं । ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा जाव[3] पडिरूवा । तत्थ णं णागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे णागकुमारा देवा परिवसंति—महिड्ढीया[4] महाजुतीया, सेसं जहा ओहियाणं जाव[5] विहरंति ।

धरण-भूयाणंदा एत्थ दुवे णागकुमारिंदा णागकुमाररायाणो परिवसंति—महिड्ढीया, सेसं जहा ओहियाणं जाव[6] विहरंति ॥

३५. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं णागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! दाहिणिल्ला णागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं णागकुमाराणं देवाणं चोयालीसं भवणावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खातं । ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा जाव[7] पडिरूवा । एत्थ णं दाहिणिल्लाणं णागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे । एत्थ णं बहवे दाहिणिल्ला नागकुमारा देवा परिवसंति —महिड्ढीया जाव[8] विहरंति ।

धरणे यत्थ[9] णागकुमारिंदे णागकुमारराया परिवसति—महिड्ढीए जाव[10] पभासेमाणे । से णं तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साणं छण्हं सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाधिवतीणं चउव्वीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं णागकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे विहरति ॥

---

१. पूर्वालापकेषु कारेमाणे इति पदमस्ति, अत्र च 'कुव्वमाणे' इति पदमस्ति यथा सामित्तं इत्यादि पदानां सूचकं जाव पदमपि नास्ति।

२. वज्जिऊण (क,घ,पु) ।

३. प० २।३० ।

४. एषां वर्णादिरूपणमत्र नहि दृश्यते । तत् उत्तरवर्त्तिसंग्रहगाथाभ्योऽवसेयम् ।

५. प० २।३० ।

६. प० २।३० ।

७,८. प० २।३० ।

९. एत्थ (घ) ।

१०. प० २।३० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६. कहि णं भंते ! उत्तरिल्लाणं णागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! उत्तरिल्ला णागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ? जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वतस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसतसहस्स-बाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं उत्तरिल्लाणं णागकुमाराणं देवाणं चत्तालीसं भवणा-वाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं। ते णं भवणा बाहिं वट्टा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव[1] विहरंति।

भूयाणंदे यत्थ णागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसति—महिड्ढीए जाव[2] पभासेमाणे। से णं तत्थ चत्तालीसाए भवणावाससतसहस्साणं आहेवच्चं जाव[3] विहरति ॥

३७. कहि णं भंते[4] ! सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव[5] एत्थ णं सुवण्णकुमाराणं देवाणं बावत्तरिं भवणावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं। ते णं भवणा बाहिं वट्टा जाव[5] पडिरूवा। तत्थ णं सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति— महिड्ढिया[6], सेसं जहा ओहियाणं जाव[7] विहरंति।

वेणुदेव-वेणुदाली यत्थ[8] दुवे सुवण्णकुमारिंदा सुवण्णकुमाररायाणो परिवसंति—महिड्ढीया जाव[9] विहरंति ॥

३८. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! दाहिणिल्ला सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए जाव[10] मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं अट्ठतीसं[11] भवणावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं। ते णं भवणा बाहिं वट्टा जाव[12] पडिरूवा। एत्थ णं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे। एत्थ णं बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति।

वेणुदेवे यत्थ सुवण्णिंदे सुवण्णकुमारराया परिवसइ। सेसं जहा[13] णागकुमाराणं ॥

३९. कहि णं भंते ! उत्तरिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए जाव[14] एत्थ णं उत्तरिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं चोत्तीसं भवणावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं। ते णं भवणा बाहिं वट्टा जाव[14] एत्थ णं बहवे उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारा

---

१. प० २।३५।
२. प० २।३०।
३. प० २।३०।
४. प० २।३१।
५. प० २।३०।
६. महिड्ढीया (ग)।
७. पं० २।३०।
८. य इत्थ (क,ख,ग,घ)।
९. प० २।३०।
१०. प० २।३१।
११. अट्ठत्तीसं (ग)।
१२. प० २।३०।
१३. प० २।३५।
१४. प० २।३१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवा परिवसंति—महिड्ढिया जाव[1] विहरंति ।
वेणुदाली यत्थ सुवण्णकुमारिंदे सुवण्णकुमारराया परिवसति—महिड्ढीए, सेसं जहा[2] णागकुमाराणं ॥

४०. एवं जहा सुवण्णकुमाराणं वत्तव्वया भणिता तहा सेसाण वि चोद्दसण्हं इंदाणं भाणितव्वा[3], नवरं—भवणनाणत्तं इंदनाणत्तं वण्णनाणत्तं परिहाणनाणत्तं च इमाहिं गाहाहिं अणुगंतव्वं—

चोवट्ठिं[4] असुराणं, चुलसीती चेव होति[5] णागाणं ।
बावत्तरिं सुवण्णे, वाउकुमाराण छण्णउई ॥१॥
दीव-दिसा-उदहीणं, विज्जुकुमारिंद-थणिय-मग्गीणं ।
छण्हं पि जुवलयाणं, छावत्तरिमो[6] सतसहस्सा ॥२॥
चोत्तीसा चोयाला, अट्ठतीसं च सयसहस्साइं ।
पण्णा चत्तालीसा, दाहिणओ होंति भवणाइं ॥३॥
तीसा चत्तालीसा, चोत्तीसं चेव सयसहस्साइं ।
छायाला छत्तीसा, उत्तरओ होंति भवणाइं ॥४॥
चउसट्ठी सट्ठी खलु, छच्च सहस्सा उ असुरवज्जाणं ।
सामाणिया उ एए, चउग्गुणा आयरक्खा उ ॥५॥
चमरे धरणे तह वेणुदेव हरिकंत अग्गिसीहे य ।
पुण्णे जलकंते या, अमिय विलंबे य घोसे य ॥६॥
बलि भूयाणंदे वेणुदालि हरिस्सहे अग्गिमाणव विसिट्ठे ।[7]
जलप्पहे अमियवाहण पभंजणे या महाघोसे ॥७॥

उत्तरिल्ला॰ जाव विहरंति ।

काला असुरकुमारा, णागा उदही य पंडरा[8] दो वि ।
वरकणगणिहसगोरा, होंति सुवण्णा दिसा थणिया ॥८॥
उत्तत्तकणगवण्णा विज्जू अग्गी य होंति दीवा य ।
सामा पियंगुवण्णा, वाउकुमारा मुणेयव्वा ॥९॥
असुरेसु[9] होंति रत्ता, सिलिंधपुप्फप्पभा य नागुदही ।
आसासगवसणधरा, होंति सुवण्णा दिसा थणिया ॥१०॥
णीलाणुरागवसणा, विज्जू अग्गी य होंति दीवा य ।
संझाणुरागवसणा, वाउकुमारा मुणेयव्वा ॥११॥

१. प० २।३० ।
२. प० २।३६ ।
३. प० २।३७-३१ ।
४. चोसट्ठिं (क) ।
५. होंति (ख) ।
६. बावत्तरिमो (ख) एष पाठो लिपिदोषेण अशुद्धो जातः । समवायाङ्ग (७६।२) सूत्रेण 'छावत्तरिमो' इति पाठस्यैव पुष्टिर्जायते ।
७. वसिट्ठे (ख,घ) ।
८. पांडुरा (ख); पंडुरा (ग,घ) ।
९. असुरेहिं (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाणमंतरदेवठाण-पदं

४१. कहि णं भंते ! वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! वाणमंतरा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसतं ओगाहित्ता हेट्ठा वि एगं जोयणसतं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु, एत्थ णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जणगरावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं । ते णं भोमेज्जा णगरा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिता उक्किण्णंतरविउलगंभीरखाय-परिहा पागार-ट्टालय-कवाड-तोरण-पडिदुवारदेसभागा जंत-सयग्घि-मुसल-मुसुंढिपरिवारिया[1] अओज्झा सदाजता सदागुत्ता अडयालकोट्ठगरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडो-वरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीस-सरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचितवंदण-कलसा वंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदाम-कलावा पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्कधूव-मघमघेंतगंधुद्धयाभिरामा सुगंध-वरगंध-गंधिया गंधवट्टिभूता अच्छरगणसंघसंविकिण्णा दिव्वतुडितसद्दसंपणदिता पडागमालाउलाभिरामा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया[2] सउज्जोता पासादीया[3] दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एत्थ णं वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्ता-पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे वाणमंतरा देवा परिवसंति, तं जहा—पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा, भयगवइणो य महाकाया, गंधव्वगणा य निउणगंधव्वगीतरइणो अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसिवाइय-भूयवाइय-कंदित-महाकंदिय[4]-कुहंड-पयगदेवा चंचलचलचवलचित्तकीलण-दवप्पिया गहिरहसिय[5]-गीय-णच्चणरई वणमालामेल-मउल[6]-कुंडल-सच्छंदविउव्वियाभरणचारुभूसण-धरा सव्वोउयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंतकंतवियसंताचित्तवणमालरइयवच्छा[7] कामगमा[8] कामरूवदेहधारी णाणाविहवण्णरागवरवत्थ-चित्तचिल्लगणियंसणा[9] विविहदेसिणेवच्छ-गहियवेसा[10] पमुइयकंदप्प-कलह-केलि-कोलाहलप्पिया हास-बोलबहुला असि-मोग्गर-सत्ति-कुंतहत्था अणेगमणि-रयणविविहणिजुत्तविचित्तचिंधगया[11] सुरूवा महिड्ढीया महज्जुतीया महायसा महाबला महाणुभागा[12] महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडय-तुडितथंभियभुया अंगय[13]-कुंडल-मट्ठगंडयलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा[14] विचित्तमाला-मउली कल्लाणग-

---

१. परियारिया (क,ख,घ) ।
२. × (क,ख,ग,घ) ।
३. पासातीता (घ) ।
४. महाकंदिया य (क,ग,घ,पु) ।
५. गहिरहसियपिय (क,ख,ग,घ) ।
६. मउड (क,ग,घ) ।
७. °विहसंत° (घ) ।
८. कामकामा (क,ख,ग, मवृपा); कामकमा (घ) ।
९. भलत्तिचित्तरूवगणियंसणा (ख); मुद्रितवृत्तौ 'चिल्ललगानि' इति दृश्यते ।
१०. °देसणेवत्थ° (ख,ग,घ) ।
११. °णिजुत्तचित्त° (क,ख,ग,घ) ।
१२. महाणुभावा (घ) ।
१३. संगय (क,ख,ग,घ) ।
१४. °वत्थाभरणा (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुतीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेस्साए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा। ते णं तत्थ साणं-साणं भोमेज्जगणगरावाससतसहस्साणं[1] साणं-साणं सामाणियसाहस्सीणं साणं-साणं अग्गमहिसीणं साणं-साणं परिसाणं साणं-साणं अणियाणं साणं-साणं अणियाधिवतीणं साणं-साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहतणट्ट-गीय-वाइयतंती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ।।

४२. कहि णं भंते ! पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! पिसाया देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसतं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसतं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु, एत्थ णं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जाणगरावाससतसहस्सा[2] भवंतीति मक्खातं। ते णं भोमेज्जाणगरा बाहिं वट्टा जहा ओहिओ भवणवण्णओ तहा भाणितव्वो जाव[3] पडिरूवा। एत्थ णं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे पिसाया देवा परिवसंति—महिड्ढिया जहा ओहिया जाव[4] विहरंति।

काल-महाकाल यत्थ दुवे पिसायइंदा[5] पिसायरायाणो परिवसंति—महिड्ढिया महज्जुइया जाव[6] विहरंति ।।

४३. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं[7] ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसतं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसतं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु, एत्थ णं दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जगनगरावाससतसहस्सा[8] भवंतीति मक्खातं। 'ते णं भोमेज्जगणगरा बाहिं वट्टा जहा'[9] ओहिओ भवणवण्णओ तहा[10] भाणियव्वो जाव[11] पडिरूवा। एत्थ णं दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे दाहि-

---

१. भोमेज्जणगरा° (क,ख); असंखेज्जा भोमेज्जानगरा° (ग)।
२. भोमेज्ज° (ख,ग,घ); स्वीकृतपाठे एकपदे सन्धिवर्त्तते।
३. प० २।३०।
४. प० २।४१।
५. पिसाइंदा (ख,घ); पिसायंदा (ग)।
६. प० २।४१।
७. × (क,ख,ग)।
८. भोमेज्जनगरा° (क,ख,ग,घ)।
९. ते णं भवणा जहा (क,ख,ग,घ)।
१०. तहेव (क)।
११. प० २।३०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिल्ला पिसाया देवा परिवसंति—महिड्ढिया जहा ओहिया जाव[1] विहरंति।

काले यत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसति--महिड्ढीए जाव[2] पभासेमाणे। से णं तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं भोमेज्जगनगरावाससतसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्ह-मग्गमहिसीणं[3] सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाधिवतीणं सोलसण्हं आतरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव[4] विहरति॥

४४. उत्तरिल्लाणं पुच्छा। गोयमा! जहेव दाहिणिल्लाणं वत्तव्वया तहेव[5] उत्तरिल्लाणं पि, नवरं—मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं।

महाकाले यत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसति जाव[6] विहरति॥

४५. एवं जहा पिसायाणं तहा[7] भूयाणं पि जाव गंधव्वाणं, णवरं—इंदेसु णाणत्तं भाणियव्वं इमेण विहिणा—भूयाणं सुरूव-पडिरूवा, जक्खाणं पुण्णभद्द-माणिभद्दा, रक्खसाणं भीम-महाभीमा, किण्णराणं किण्णर-किंपुरिसा, किंपुरिसाणं सप्पुरिस-महापुरिसा, महोरगाणं अइकाय-महाकाया, गंधव्वाणं गीतरति[8]-गीतजसे जाव[9] विहरति।

१ काले य महाकाले, २ सुरूव पडिरूव ३ पुण्णभद्दे य।
अमरवइ माणिभद्दे, ४ भीमे य तहा महाभीमे॥१॥
५ किण्णर किंपुरिसे खलु, ६ सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे।
७ अइकाय महाकाए, ८ गीयरई चेव गीतजसे॥२॥

४६. कहि णं भंते! अणवन्नियाणं देवाणं [पज्जत्तापज्जत्ताणं?] ठाणा पण्णत्ता? कहि णं भंते! अणवण्णिया देवा परिवसंति? गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स 'उवरिं हेट्ठा य एगं जोयणसयं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु'[10] जोयणसतेसु, एत्थ णं अणवण्णियाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा[11] णगरावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खातं। ते णं जाव[12] पडिरूवा, एत्थ णं अणवण्णियाणं देवाणं ठाणा। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे अणवन्निया देवा परिवसंति—महड्ढिया जहा पिसाया जाव[13] विहरंति।

सन्निहिय-सामाणा[14] यत्थ दुवे अणवण्णिदा अणवण्णियकुमाररायाणो परिवसंति—महिड्ढीया जहा[15] काल-महाकाला॥

---

१. प० २।४१।
२. प० २।४१।
३. चउण्हं य अग्ग° (क); चउण्ह य मग्ग° (ख, ग); चउण्ह य अग्ग° (घ)।
४. प० २।३०।
५. प० २।४३।
६. प० २।४३।
७. प० २।४३,४४।
८. गीतरती (क,ग)।
९. प० २।४३,४४।
१०. उवरिं जाव अट्ठसु (ख,ग,घ)।
११. × (क,ख,ग,पु)।
१२. प० २।४१।
१३. प० २।४२।
१४. सामाणी (क); सामाणि (ग)।
१५. प० २।४२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४७. एवं जहा काल-महाकालाणं दोण्हं पि दाहिणिल्लाणं उत्तरिल्लाण य भणिया तहा सन्निहिय-सामाणाणं[1] पि भाणियव्वा[2]।

संगहणिगाहा—

१ अणवन्निय, २ पणवन्निय, ३ इसिवाइय, ४ भूयवाइया चेव।
५ 'कंदिय, ६ महाकंदिय, ७ कुहंड य, ८ पयगा देवा"[3] ॥१॥

इमे इंदा

१ सण्णिहिया सामाणा, २ धाय विधाए, ३ इसी य इसिपाले।
४ ईसर महेसरे या, ५ हवइ सुवच्छे विसाले य ॥२॥
६ हासे हासरई 'वि य"[4], ७ सेते य तहा भवे महासेते।
८ पयते[5] 'पययपई वि य"[6], नेयव्वा आणुपुव्वीए ॥३॥

जोइसियदेवठाण-पदं

४८. कहि णं भंते ! जोइसियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! जोइसिया देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रतणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्ताणउते जोयणसते उड्ढं उप्पइत्ता दसुत्तरे[7] जोयणसतबाहल्ले तिरियमसंखेज्जे जोतिसविसये, एत्थ णं जोइसियाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा जोइसियविमाणावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं। ते णं विमाणा अद्धकविट्ठगसंठाणसंठिता सव्वफालियामया अब्भुग्गयमूसियपहसिया इव विविहमणि-कणग-रतणभत्तिचित्ता वाउद्धुत-विजयवेजयंतीपडाग-छत्ताइछत्तकलिया तुंगा गगणतलमणुलिहमाणसिहरा जालंतररतणपंजरुम्मिलिय व्व मणि-कणगथूभियागा वियसियसयवत्तपुंडरीय[8]-तिलय-रयणद्धचंदचित्ता णाणामणिमयदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जरुइलवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीया सुरूवा पासाईया दरिसणिज्जा[9] अभिरूवा पडिरूवा, एत्थ णं जोइसियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखिज्जतिभागे। तत्थ णं बहवे जोइसिया देवा परिवसंति, तं जहा—बहस्सती चंदा सूरा सुक्का सणिच्छरा राहू धूमकेऊ बुहा अंगारगा तत्ततवणिज्जकणगवण्णा, जे य गहा जोइसम्मि चारं चरंति केतू य गइरइया अट्ठावीसतिविहा य नक्खत्तदेवयगणा, णाणासंठाणसंठियाओ य पंचवण्णाओ तारयाओ, ठितलेस्सा चारिणो अविस्साममंडलगई पत्तेयणामंकपागडियचिंधमउडा[10] महिड्ढिया जाव[11] पभासेमाणा। ते णं तत्थ साणं-साणं विमाणावाससतसहस्साणं साणं-साणं सामाणिय-

१. सामाणीणं (ख, ग)।
२. प० २।४३, ४४।
३. कंदिय महाकंदिय कुहंडपयदेवा इमे इंदा (ख); कंदिय महाकंदियकोहंडी पयगए चेव (ग); कंदिय महाकंदिय कुहंड य पयगदेवा य (घ); कंद महाकंदिय कुहंडे पययदेवा इमे इंदा (पु)।
४. चेव (क); वसे (ख,घ)।
५. पयगे (क); पयए (घ)।
६. पयते यावि य (ख); पयंग वियते (ग); य पयय पयए (घ)।
७. दसुत्तर (क,ख,ग,घ)।
८. °पुंडरीया (पु); मलयगिरिवृत्त्याश्रयेण 'पुंडरीय' इति पदं गम्यते।
९. दरमणिज्जा (क,ख)।
१०. °पगडिय° (घ)।
११. प० २।३०।

साहस्सीणं साणं-साणं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं साणं-साणं परिसाणं साणं-साणं अणियाणं साणं-साणं अणियाधिवतीणं साणं-साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं जोइसियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव[1] विहरंति ।

चंदिम-सूरिया यत्थ दुवे जोईसिंदा जोइसियरायाणो परिवसंति—महिड्ढिया जाव पभासेमाणा । ते णं तत्थ साणं-साणं जोइसियविमाणावाससतसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाधिवतीणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं जोइसियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति ।।

वेमाणियदेवठाण-पदं

४९. कहि णं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! वेमाणिया देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रतणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो उड्ढं चंदिम-सूरिय-गह[2]-णक्खत्त-ताराख्वाणं बहूइं जोयणसताइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगीओ[3] जोयणकोडीओ बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोय-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुत-गेवेज्ज-अणुत्तरेसु, एत्थ णं वेमाणियाणं देवाणं चउरासीइ विमाणावाससतसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीति मक्खातं । ते णं विमाणा सव्वरतणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एत्थ णं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसु वि लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति, तं जहा—सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोग-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुय-गेवेज्जग-अणुत्तरोववाइया देवा । ते णं मिग-महिस-वराह-सीह-छगल-दद्दुर-हय-गयवइ-भुयग-खग्ग-उसभंक-विडिम-पागडियचिंधमउडा पसढिलवरमउड-तिरीडधारिणो वरकुंडलुज्जोइयाणणा मउडदित्तसिरया रत्ताभा पउमपम्हगोरा सेया सुहवण्ण-गंध-फासा उत्तमवेउव्विणो पवरवत्थ-गंध-मल्लाणुलेवणधरा महिड्ढीया महज्जुइया महायसा महाबला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडय-तुडियथंभियभुया अंगद-कुंडल-मट्ठगंडतलकण्णपीढधारी[4] विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमाला-मउली कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुतीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेस्साए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा । ते णं तत्थ साणं-साणं विमाणावाससयसहस्साणं साणं-साणं सामाणियसाहस्सीणं साणं-साणं तावत्तीसगाणं साणं-साणं लोगपालाणं साणं-साणं सपरिवाराणं अग्गमहिसीणं साणं-साणं परिसाणं साणं-साणं अणियाणं साणं-साणं अणियाधिवतीणं साणं-

१. प० २।३० ।
२. गहगण (ख,घ) ।
३. बहुगाओ (क,ख,ग) ।
४. °तलपीठधारी (घ) ।

साणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं वेमाणियाणं देवाणं देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महताहत-नट्ट-गीय-वाइततंती-तल-ताल-तुडित-घणमुइंगपडुप्पवाइतरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ।।

५०. कहि णं भंते ! सोहम्मगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! सोहम्मगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वतस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय-गह-नक्खत्ततारारूवाणं वहूइं जोयणसताणि बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसतसहस्साइं बहुगीओ जोयणकोडीओ बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं सोहम्मे णामं कप्पे पण्णत्ते—पाईण-पडीणायते उदीण-दाहिणवित्थिण्णे अद्धचंदसंठाणसंठिते अच्चि-मालिभासरासिवण्णाभे असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं, सव्वरयणामए अच्छे जाव[1] पडिरूवे । तत्थ णं सोहम्मगदेवाणं बत्तीसं विमाणावाससतसहस्सा हवंतीति मक्खातं । ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसि णं विमाणाणं बहुमज्झदेसभागे पंच वडेंसया पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेंसए सत्तिवण्णवडेंसए[2] चंपगवडेंसए चूयवडेंसए मज्झे यत्थ सोहम्मवडेंसए । ते णं वडेंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थ णं सोहम्मग-देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे सोहम्मगदेवा परिवसंति—महिड्ढीया जाव[3] पभासेमाणा । ते णं तत्थ साणं-साणं विमाणा-वाससतसहस्साणं साणं-साणं सामाणियसाहस्सीणं एवं जहेव ओहियाणं तहेव एतेसिं पि भाणितव्वं जाव[4] आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं सोहम्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव[5] विहरंति ।

सक्के यत्थ देविंदे देवराया परिवसति, वज्जपाणी पुरंदरे सतक्कतू सहस्सक्खे मघवं पागसासणे दाहिणड्ढलोगाधिवती बत्तीसविमाणावाससतसहस्साधिवती एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइयमाल-मउडे णवहेमचारुचित्तचंचलकुंडलविलिहिज्जमाणगंडे महिड्ढिए जाव पभासेमाणे । से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससतसहस्साणं चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाधिवतीणं चउण्हं चउरासीईणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं सोहम्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे[6] जाव विहरइ ।।

५१. कहि णं भंते ! ईसाणगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते! ईसाणगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वतस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-

---

१. प० २।४६ ।

२. सत्तवण्ण° (ग,घ) ।

३,४,५. प० २।४६ ।

६. ३३ सूत्रे 'कुव्वमाणे' इतिपदानन्तरं 'जाव' इति पदं नास्ति ।

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

तारारूवाणं बहूइं जोयणसताइं बहूइं जोयणसहस्साइं जाव[1] उप्पइत्ता, एत्थ णं ईसाणे णामं कप्पे पण्णत्ते—पाईण-पडीणायते उदीण-दाहिणविच्छिण्णे एवं जहा सोहम्मे जाव[2] पडिरूवे। तत्थ णं ईसाणगदेवाणं अट्ठावीसं विमाणावाससतसहस्सा हवंतीति मक्खातं। ते णं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। तेसि णं बहुमज्झदेसभाए पंच वडेंसगा पण्णत्ता, तं जहा—अंकवडेंसए फलिहवडेंसए रतणवडेंसए जातरूववडेंसए मज्झे यत्थ[3] ईसाणवडेंसए। ते णं वडेंसया सव्वरयणामया जाव[4] पडिरूवा. एत्थ णं ईसाणाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जतिभागे। सेसं जहा सोहम्मगदेवाणं जाव विहरंति।

ईसाणे यत्थ देविंदे देवराया परिवसति—सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरड्ढलोगाधिवती अट्ठावीसविमाणावाससतसहस्साधिवती अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स जाव[5] पभासेमाणे। से णं तत्थ अट्ठावीसाए विमाणावाससतसहस्साणं असीतीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाधिवतीणं चउण्हं असीतीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं ईसाणकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे जाव[6] विहरति॥

५२. कहि णं भंते! सणंकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहि णं भंते! सणंकुमारदेवा[7] परिवसंति? गोयमा! सोहम्मस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं 'बहूइं जोयणाइं'[8] बहूइं जोयणसताइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसतसहस्साइं बहुगीओ जोयणकोडीओ बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं सणंकुमारे णामं कप्पे पाईण-पडीणायते उदीण-दाहिणविच्छिण्णे जहा सोहम्मे जाव[9] पडिरूवे, एत्थ णं सणंकुमाराणं देवाणं बारस विमाणावाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं। ते णं विमाणा सव्वरयणामया जाव[10] पडिरूवा। तेसि णं विमाणाणं बहुमज्झदेसभागे पंच वडेंसगा पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेंसए सत्तिवण्णवडेंसए चंपगवडेंसए चूयवडेंसए मज्झे यत्थ सणंकुमारवडेंसए। ते णं वडेंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थ णं सणंकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे सणंकुमारा देवा परिवसंति—महिड्ढिया जाव[11] पभासेमाणा विहरंति, णवरं—अग्गमहिसीओ णत्थि।

सणंकुमारे यत्थ देविंदे देवराया परिवसति—अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा[12] सक्कस्स। से णं तत्थ बारसण्हं विमाणावाससतसहस्साणं बावत्तरीए सामाणियसाहस्सीणं सेसं जहा सक्कस्स अग्गमहिसीवज्जं, णवरं—चउण्हं बावत्तरीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ॥

१,२. प० २।५०।
३. एत्थ (पु)।
४. प० २।४६
५. प० २।५०।
६. प० २।४६।
७. सणंकुमारा देवा (ग,घ)।
८. 'बहूइं जोयणाइं' इति पाठः 'सनत्कुमार-माहेन्द्रब्रह्मलोकालापकेषु एव दृश्यते।
९. प० २।५०।
१०,११. प० २।४६।
१२. प० २।५०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३. कहि णं भंते ! माहिंदाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! माहिंदगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं जाव[1] बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं माहिंदे णामं कप्पे पायीण-पडीणायए एवं जहेव[2] सणंकुमारे, णवरं—अट्ठ विमाणावाससतसहस्सा । वडेंसया जहा[3] ईसाणे, णवरं—मज्झे यत्थ माहिंदवडेंसए । एवं सेसं जहा सणंकुमारदेवाणं[4] जाव[5] विहरंति ।

माहिंदे यत्थ देविंदे देवराया परिवसति—अरयंबरवत्थधरे, एवं जहा सणंकुमारे जाव[6] णवरं—अट्ठण्हं विमाणावाससतसहस्साणं सत्तरीए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं सत्तरीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव[7] विहरइ ।।

५४. कहि णं भंते ! बंभलोगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते! बंभलोगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं उप्पिं सपक्खिं[8] सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं जाव[9] उप्पइत्ता, एत्थ णं बंभलोए णामं कप्पे पाईण-पडीणायए उदीण-दाहिणविच्छिण्णे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिते अच्चिमाली-भासरासिप्पभे अवसेसं जहा[10] सणंकुमाराणं, णवरं—चत्तारि विमाणावाससतसहस्सा । वडिंसगा जहा[11] सोहम्मवडेंसया, णवरं—मज्झे यत्थ बंभलोयवडिंसए, एत्थ णं बंभलोगाणं देवाणं ठाणा पण्णत्ता । सेसं तहेव जाव[12] विहरंति ।

बंभे यत्थ देविंदे देवराया परिवसति—अरयंबरवत्थधरे, एवं जहा सणंकुमारे जाव[13] विहरति, णवरं—चउण्हं विमाणावाससतसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं चउण्ह य सट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं जाव[14] विहरति ।।

५५. कहि णं भंते ! लंतगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! लंतगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! बंभलोगस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं बहूइं जोयणसयाइं जाव[15] बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं लंतए णामं कप्पे पण्णत्ते—पाईण-पडीणायए जहा[16] बंभलोए, णवरं—पण्णासं[17] विमाणावाससहस्सा भवंतीति मक्खातं । वडेंसगा जहा[18] ईसाणवडेंसगा, णवरं—मज्झे यत्थ लंतगवडेंसए । देवा तहेव जाव[19] विहरंति ।

लंतए यत्थ देविंदे देवराया परिवसति जहा[20] सणंकुमारे, णवरं—पण्णासाए विमाणावास-सहस्साणं पण्णासाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्ह य पण्णासाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं जाव[21] विहरति ।।

५६. कहि णं भंते ! महासुक्काणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! महासुक्का देवा परिवसंति ? गोयमा ! लंतयस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं

१,२. प० २।५२ ।
३. प० २।५१ ।
४. सणंकुमारगदेवाणं (क) ।
५,६. प० २।५२ ।
७. प० २।५० ।
८. सपक्ख (ग) ।
९. प० २।५२ ।
१०. प० २।५३ ।
११. प० २।५० ।
१२,१३. प० २।५२ ।
१४. प० २।५० ।
१५. प० २।५२ ।
१६. प० २।५४ ।
१७. पण्णासा (क) ।
१८. प० २।५१ ।
१९. प० २।५० ।
२०. प० २।५२ ।
२१. प० २।५० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव[१] उप्पइत्ता, एत्थ णं महासुक्के णामं कप्पे पण्णत्ते—पाईण[२]-पडीणायए उदीण-दाहिणविच्छिण्णे जहा[३] बंभलोए, णवरं—चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा भवंतीति मक्खातं। वडेंसगा जहा[४] सोहम्मवडेंसगा, णवरं—मज्झे यत्थ महासुक्कवडेंसए जाव[५] विहरति।

महासुक्के यत्थ देविंदे देवराया जहा[६] सणंकुमारे, णवरं—चत्तालीसाए विमाणावास-सहस्साणं चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्ह य चत्तालीसाणं आयरक्खदेवसाह-स्सीणं जाव[७] विहरति ॥

५७. कहि णं भंते ! सहस्सारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! सहस्सारदेवा परिवसंति ? गोयमा ! महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसिं जाव[८] उप्पइत्ता, एत्थ णं सहस्सारे णामं कप्पे पण्णत्ते—पाईण-पडीणायते जहा[९] बंभलोए, णवरं छव्विमाणावाससहस्सा भवंतीति मक्खातं। देवा तहेव जाव[१०] वडेंसगा जहा[११] ईसाणवडेंसगा[१२], णवरं—मज्झे यत्थ सहस्सारवडेंसए जाव[१३] विहरंति।

सहस्सारे यत्थ देविंदे देवराया परिवसति जहा[१४] सणंकुमारे, णवरं—छण्हं विमाणावास-सहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्ह य तीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव[१५] आहेवच्चं कारेमाणे विहरति ॥

५८. कहि णं भंते ! आणय-पाणयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! आणय-पाणया देवा परिवसंति ? गोयमा ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसिं जाव[१६] उप्पइत्ता, एत्थ णं आणय-पाणयनामेणं दुवे कप्पा पण्णत्ता—पाईण-पडीणायता उदीण-दाहिणविच्छिण्णा अद्धचंदसंठाणसंठिता अच्चिमाली-भासरासि-प्पभा, सेसं जहा सणंकुमारे[१७] जाव[१८] पडिरूवा। तत्थ णं आणय-पाणयदेवाणं चत्तारि विमाणावाससता भवंतीति मक्खायं जाव[१९] पडिरूवा। वडिंसगा जहा[२०] सोहम्मे, णवरं—मज्झे पाणयवडेंसए। ते णं वडेंसगा सव्वरयणामया अच्छा जाव[२१] पडिरूवा, एत्थ णं आणय-पाणयदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे आणय-पाणयदेवा परिवसंति—महिड्ढीया जाव[२२] पभासेमाणा। ते णं तत्थ साणं-साणं विमाणावाससयाणं जाव[२३] विहरंति।

पाणए यत्थ देविंदे देवराया परिवसति जहा सणंकुमारे, णवरं—चउण्हं विमाणावाससयाणं वीसाए सामाणियसाहस्सीणं असीतीए आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं जाव[२४] विहरति ॥

५९. कहि णं भंते ! आरणच्चुताणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! आरणच्चुता देवा परिवसंति ? गोयमा ! आणय-पाणयाणं कप्पाणं

१. प० २।५२।	९. प० २।५४।	१६,१७. प० २।५२।
२. पायीण (क,ख,घ)।	१०. प० २।५०।	१८. प० २।४६।
३. प० २।५४।	११. प० २।५१।	१९. प० २।५०।
४,५. प० २।५०।	१२. ईसाणस्स वडेंसगा (ख)।	२०,२१. प० २।४६।
६. प० २।५२।	१३. प० २।५०।	२२. प० ४६।
७. प० २।५०।	१४. प० २।५२।	२३. प० २।५२।
८. प० २।५२।	१५. प० २।५०।	२४. प० २।५०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं 'जाव' उप्पइत्ता'[1], एत्थ णं आरणच्चुया णामं दुवे कप्पा पण्णत्ता—पाईण-पडीणायया उदीण-दाहिणविच्छिण्णा अद्धचंदसंठाणसंठिता अच्चिमाली-भासरासिवण्णाभा असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एत्थ णं आरणच्चुताणं देवाणं तिण्णि विमाणावाससता हवंतीति मक्खायं। ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोता पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तेसि णं विमाणाणं[3] बहुमज्झदेसभाए पंच वडेंसगा पण्णत्ता, तं जहा—अंकवडेंसए फलिहवडेंसए रयणवडेंसए जायरूववडेंसए मज्झे यत्थ अच्चुतवडेंसए। ते णं वडेंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा, एत्थ णं आरणच्चुयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे आरणच्चुता देवा जाव[4] विहरंति।

अच्चुते यत्थ देविंदे देवराया परिवसति जहा पाणए जाव[5] विहरति, णवरं—तिण्हं विमाणा-वाससताणं दसण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं आहेवच्चं कुव्वमाणे जाव[6] विहरति।

बत्तीस अट्ठवीसा,[7] बारस अट्ठ चउरो सतसहस्सा।
पण्णा चत्तालीसा, छ च्च सहस्सा सहस्सारे ॥१॥
आणय-पाणयकप्पे, चत्तारि सयारणच्चुए तिण्णि।
सत्त विमाणसयाइं, चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥२॥

सामाणियसंगहणीगाहा—

चउरासीइ १ असीई २ बावत्तरि ३ सत्तरी य ४ सट्ठी य ५।
पण्णा ६ चत्तालीसा ७ तीसा ८ वीसा ९-१० दस सहस्सा ११-१२ ॥३॥

एते चेव आयरक्खा चउगुणा॥

६०. कहि णं भंते! हेट्ठिमगेवेज्जगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहि णं भंते! हेट्ठिमगेवेज्जा देवा परिवसंति? गोयमा! आरणच्चुताणं कप्पाणं उप्पिं जाव[8] उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं हेट्ठिमगेवेज्जगाणं देवाणं तओ गेवेज्जविमाणपत्थडा पण्णत्ता—पाईण-पडीणायया उदीण-दाहिणविच्छिण्णा पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिता अच्चिमाली-भास-रासिवण्णाभा सेसं जहा बंभलोगे जाव[9] पडिरूवा। तत्थ णं हेट्ठिमगेवेज्जगाणं देवाणं

१. पृ० २१५२।
२. आदर्शेषु असौ पाठो नास्ति, किन्तु पूर्वक्रमेण तथा भगवत्यां (१४।९४-९८) प्रतिपादित-अन्तरसूत्रैश्च अस्य पाठस्य अपेक्षा अनुभूयते।
३. विमाणाणं कप्पाणं (ग); कप्पाणं (घ)।
४. पृ० २१४९।
५. पृ० २१५८।
६. पृ० २१५०।
७. ट्ठावीस (क,ग)।
८. पृ० २१५९।
९. पृ० २१५४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'एक्कारसुत्तरे विमाणावाससते'[1] हवतीति[2] मक्खातं। ते णं विमाणा सव्वरयणामया जाव[3] पडिरूवा, एत्थ णं हेट्ठिमगेवेज्जगाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे हेट्ठिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति—सव्वे समिड्ढिया सव्वे समज्जुतीया सव्वे समजसा सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा 'सव्वे समसोक्खा'[4] अणिंदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिंदा णामं ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो !॥

६१. कहि णं भंते ! मज्झिमगाणं गेवेज्जगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! मज्झिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! हेट्ठिमगेवेज्जगाणं उप्पि सपक्खि सपडिदिसिं जाव[5] उप्पइत्ता, एत्थ णं मज्झिमगेवेज्जगदेवाणं तओ गेवेज्जगविमाण-पत्थडा पण्णत्ता—पाईण-पडीणायता जहा[6] हेट्ठिमगेवेज्जगाणं, णवरं—सत्तुत्तरे विमाणा-वाससते हवतीति[7] मक्खातं। ते णं विमाणा जाव[8] पडिरूवा, एत्थ णं मज्झिमगेवेज्जगाणं देवाणं जाव[9] तिसु वि लोगस्स असंखेज्जतिभागे। तत्थ णं बहवे मज्झिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति जाव[10] अहमिंदा नामं ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो !॥

६२. कहि णं भंते ! उवरिमगेवेज्जगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! उवरिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेवेज्जगदेवाणं उप्पि जाव[11] उप्पइत्ता, एत्थ णं उवरिमगेवेज्जगाणं देवाणं तओ गेवेज्जगविमाणपत्थडा पण्णत्ता—पाईण-पडीणायता सेसं जहा[12] हेट्ठिमगेवेज्जगाणं, नवरं—एगे विमाणावाससते भवतीति[13] मक्खातं। सेसं तहेव[14] भाणियव्वं जाव अहमिंदा णामं ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो !

एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमेसु, सत्तुत्तरं च मज्झिमए।
सयमेगं उवरिमए, पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥१॥

६३. कहि णं भंते ! अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय-गह-नक्खत्त-तारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसतसहस्साइं बहुगीओ जोयणकोडीओ बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोय-

---

१. एक्कारसुत्तरविमाणवाससया (ग)।
२. हवंतीति (क,ख,ग,घ)।
३. प० २।४६।
४. महासोक्खा (क,ख,ग,घ,पु); प्रज्ञापनावृत्तौ 'समज्जुइया' इत्यादिपदानि नैव व्याख्यातानि सन्ति—एवं 'समज्जुइया' इत्याद्यपि भावनीयम्। जीवाजीवाभिगमवृत्तौ 'समिड्ढीया' इत्यादीनि सर्वाणि पदानि व्याख्यातानि सन्ति—सर्वे—निरवशेषाः समा ऋद्धिर्येषां ते समर्द्धिकाः एवं सर्वे समद्युतिकाः सर्वे समबलाः सर्वे समयशसः सर्वे समानुभागाः सर्वे समसौख्याः (वृत्ति पत्र ३६३)। अनया व्याख्यया 'सव्वे समसोक्खा' इति पाठः एव फलति। एष एवात्र प्रकरणानुसारी वर्तते।
५. प० २।५६।
६. प० २।६०।
७. हवंतीति (क,ख,ग)।
८. प० २।४६।
९,१०. प० २।६०।
११. प० २।५६।
१२,१४. प० २।६०।
१३. भवंतीति (क,ख,ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लंतग-सुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुयकप्पा तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेवेज्ज-विमाणावाससते वीतीवतित्ता तेण परं दूरं गता णीरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा पंच-दिसिं पंच अणुत्तरा महतिमहालया विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—विजए वेजयंते जयंते अपराजिते सव्वट्ठसिद्धे। ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एत्थ णं अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसु वि लोगस्स असंखेज्जतिभागे। तत्थ णं बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति—सव्वे समिड्ढिया सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा 'सव्वे समसोक्खा'[1] अणिंदा अप्पेस्सा अपुरोहिता अहमिंदा णामं ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो!॥

सिद्धठाण-पदं

६४. कहि णं भंते! सिद्धाणं ठाणा पण्णत्ता? कहि णं भंते! सिद्धा परिवसंति? गोयमा! सव्वट्ठसिद्धस्स[2] महाविमाणस्स[3] उवरिल्लाओ[4] थूभियग्गाओ 'दुवालस जोयणे उड्ढं'[5] अबाहाए, एत्थ णं ईसीपब्भारा णामं पुढवी पण्णत्ता—पणतालीसं जोयणसतसह-स्साणि आयाम-विक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सतसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसते किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता। ईसीपब्भाराए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते, ततो अणंतरं च णं माताए माताए—पएसपरिहाणीए परिहायमाणी-परिहायमाणी सव्वेसु चरिमंतेसु[6] मच्छियपत्तातो तणुयरी अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं बाहल्लेणं पण्णत्ता॥

६५. ईसीपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस नामधिज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ईसी ति वा ईसीपब्भारा ति वा तणू ति वा तणुतणू[7] ति वा सिद्धी ति वा सिद्धालए ति वा मुत्ती इ वा मुत्तालए ति वा लोयग्गे इ वा लोयग्गथूभिया ति वा लोयग्गपडिवुज्झणा इ वा सव्वपाण-भूत-जीव-सत्तसुहावहा इ वा॥

६६. ईसीपब्भारा णं पुढवी सेता 'संखदल-विमलसोत्थिय'[8]-मुणाल-दगरय-तुसार-गोक्खीर-हारवण्णा उत्ताणयछत्तसंठाणसंठिता सव्वज्जुणसुवण्णमती अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोता पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा॥

६७. ईसीपब्भाराए णं[9] सीताए जोयणम्मि लोगंतो। तस्स णं जोयणस्स जेसे उवरिल्ले गाउए तस्स णं गाउयस्स जेसे उवरिल्ले छब्भागे, एत्थ[10] णं सिद्धा भगवंतो सादिया[11] अपज्ज-

---

१. महासोक्खा (क,ख,ग,घ,पु); द्रष्टव्यं २।६० सूत्रस्य टिप्पणम्। अत्र ६० सूत्रवर्तिविशेषण-द्वयं—'सव्वे समज्जुतीया सव्वे समजसा' आदर्शेषु नैव लभ्यते।

२. सव्वट्ठस्स (क,ख,ग,घ)।

३. विमाणस्स (ग)।

४. सव्वुवरिल्लाओ (ओ० सू० १९२)।

५. दुवालसजोयणाइं (ओ० सू० १९२)।

६. चरिम-पेरंतेसु (ओ० सू० १९२)।

७. तणुयरी (ओ० सू० १९३)।

८. संखतलविमलसोल्लिय (ओ० सू० १९४)।

९. णं पुढवीए (ओ० सू० १९५)।

१०. तत्थ (ओ० सू० १९५)।

११. सादीया (क,ख,पु); सातिया (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वसिता अणेगजाति-जरा-मरण-जोणिसंसारकलंकलीभाव[1]-पुणब्भवगब्भवसहीपवंचसमति-क्कंता[2] सासयमणागतद्धं कालं चिट्ठंति।

तत्थ[3] वि य ते अवेदा, अवेदणा निम्ममा असंगा य।
संसारविप्पमुक्का, पदेसनिव्वत्तसंठाणा ॥१॥
कहिं पडिहता सिद्धा? कहिं सिद्धा पइट्ठिता?।
कहिं बोंदिं चइत्ताणं? कत्थ[4] गंतूण सिज्झई? ॥२॥
अलोए पडिहता सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया।
इहं बोंदिं चइत्ताणं, तत्थ गंतूण सिज्झई ॥३॥
दीहं वा हस्सं[5] वा, जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं।
तत्तो[6] तिभागहीणा, सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥४॥
जं[7] संठाणं तु इहं, भवं चयंतस्स चरिमसमयम्मि[8]।
आसी य पदेसघणं, तं संठाणं तहिं तस्स ॥५॥
तिण्णि सया तेत्तीसा, धणुत्तिभागो य होति बोधव्वो[9]।
एसा खलु सिद्धाणं, उक्कोसोगाहणा भणिया ॥६॥
चत्तारि य रयणीओ, रयणितिभागूणिया य बोधव्वा।
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिम ओगाहणा भणिया ॥७॥
एगा य होइ रयणी, 'अट्ठेव य अंगुलाइं साहीया'[10]।
एसा खलु सिद्धाणं, जहण्ण ओगाहणा भणिया ॥८॥
ओगाहणाए[11] सिद्धा, भव-त्तिभागेण होंति परिहीणा।
संठाणमणित्थंथं, जरा-मरणविप्पमुक्काणं ॥९॥
जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का।
अण्णोण्णसमोगाढा, पुट्ठा सव्वे वि[12] लोयंते ॥१०॥
फुसइ अणंते सिद्धे, सव्वपएसेहिं नियमसो सिद्धो।
ते वि असंखेज्जगुणा, देस-पदेसेहिं जे पुट्ठा ॥११॥
असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणे य नाणे य।
सागारमणागारं, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥१२॥

---

१. जोणि-वेयणं संसारकलंकलीभाव (ओ० सू० १६५)।
२. °गब्भवासवसही° (क,ख,घ,पु); °गब्भवास-वसही-पवंचं अइक्कंता (ओ० सू० १६५)।
३. औपपातिके (सू० १६५) एषा गाथा नैव दृश्यते।
४. कच्छ (क,ख); कहिं (पु)।
५. हुस्सं (क,ख,पु)।
६. ततो (ख)।
७. औपपातिके (सू० १६५) 'जं संठाणं तु इहं' एषा गाथा 'दीहं वा हसं वा' अस्या गाथायाः पूर्वं दृश्यते।
८. चरम° (क,ग)।
९. नायव्वो (क,ख,ग,घ)।
१०. साहीया अंगुलाइ अट्ठभवे (ओ० सू० १६५। ७)।
११. ओगाहणा (ग); ओगाहणाइ (घ)।
१२. य (ओ० सू० १६५।६)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवलणाणुवउत्ता, जाणंती सव्वभावगुण-भावे ।
पासंति सव्वतो खलु, केवलदिट्ठीहिणंताहिं[1] ।।१३।।
न वि अत्थि माणुसाणं, तं सोक्खं न वि य सव्वदेवाणं ।
जं सिद्धाणं सोक्खं, अव्वाबाहं उवगयाणं ।।१४।।
'सुरगणसुहं समत्तं'[2], सव्वद्धापिंडितं अणंतगुणं ।
'ण वि पावे'[3] मुत्तिसुहं, 'णंताहि वि'[4] वग्गवग्गूहिं ।।१५।।
सिद्धस्स सुहो रासी, सव्वद्धापिंडितो जइ हवेज्जा ।
सोणंतवग्गभइतो, सव्वागासे ण माएज्जा ।।१६।।
जह णाम कोइ मेच्छो, णगरगुणे बहुविहे वियाणंतो ।
न चएइ परिकहेउं, उवमाए तहिं असंतीए ।।१७।।
इय सिद्धाणं सोक्खं, अणोवमं णत्थि तस्स ओवम्मं ।
किंचि विसेसेणेत्तो, सारिक्खमिणं[5] सुणह वोच्छं ।।१८।।
जह सव्वकामगुणितं, पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोइ ।
तण्हा-छुहाविमुक्को, अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो ।।१९।।
इय सव्वकालतित्ता, अतुलं णेव्वाणमुवगया सिद्धा ।
सासयमव्वाबाहं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ।।२०।।
सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य, पारगतत्ति य परंपरगतत्ति ।
उम्मुक्ककम्मकवया, अजरा अमरा असंगा य ।।२१।।
णिच्छिण्णसव्वदुक्खा, जाति-जरा-मरणबंधणविमुक्का ।
अव्वाबाहं सोक्खं, अणुहोंती[6] सासयं सिद्धा[7] ।।२२।।

---

१. °दिट्ठीहिणंताहि (क,ख,घ); °दिट्ठीहणंताहि (पु) ।
२. जं देवाण सोक्खं (ओ० सू० १९५।१४) ।
३. ण य पावइ (ओ० सू० १९५।१४) ।
४. णंताहि (ग); णंताहि वि (पु) ।
५. सारक्खमिणं (ख); ओवम्ममिणं (ओ० सू० १९५।१७) ।
६. अणुहंती (क,ख); अणुहोंति (ग) ।
७. अतोग्रे औपपातिके (सू० १९५) एषा गाथा दृश्यते—
अतुलसुहसागरगया, अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता ।
सव्वमणागयमद्धं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ।।१।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइयं बहुवत्तव्वयपयं

गाहा—

१. दिसि २. गति ३. इंदिय ४. काए, ५. जोगे ६. वेदे ७. कसाय ८. लेसा[1] य ।
९. सम्मत्त १०. णाण ११. दंसण, १२. संजय १३. उवओग १४. आहारे ॥१॥
१५. भासग १६. परित्त १७. पज्जत्त, १८. सुहुम १९. सण्णी २०,२१. भवत्थिए[2] २२ चरिमे ।
२३. जीवे य २४. खेत्त २५. बंधे, २६. पोग्गल २७. महदंडए चेव ॥२॥

दिसि-पदं

१. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा पच्चत्थिमेणं, पुरत्थिमेणं विसेसाहिया[3], दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥

२. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया दाहिणेणं, उत्तरेणं विसेसाहिया, पुरत्थिमेणं विसेसाहिया, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया ॥

३. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा आउक्काइया पच्चत्थिमेणं, पुरत्थिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥

४. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउक्काइया दाहिणुत्तरेणं, पुरत्थिमेणं संखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया ॥

५. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया पुरत्थिमेणं, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया ॥

६. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पच्चत्थिमेणं, पुरत्थिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥

७. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया पच्चत्थिमेणं, पुरत्थिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं[4] विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥

८. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया पच्चत्थिमेणं, पुरत्थिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥

९. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया पच्चत्थिमेणं, पुरत्थिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥

---

१. लेसे (ख) ।
२. भवत्थिमे (क,ख) ।
३. विसेसाधिया (घ,पु) ।
४. दक्खिणेणं (क,ख,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा नेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

११. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा रयणप्पभापुढविनेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

१२. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सक्करप्पभापुढविनेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

१३. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वालुयप्पभापुढविनेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

१४. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंकप्पभापुढविनेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

१५. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा धूमप्पभापुढविनेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

१६. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा 'तमप्पभापुढविनेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा'[1] ॥

१७. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा अहेसत्तमापुढविनेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

१८. दाहिणिल्लेहिंतो[2] अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

१९. दाहिणिल्लेहिंतो तमापुढविणेरइएहिंतो पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

२०. दाहिणिल्लेहिंतो धूमप्पभापुढविनेरइएहिंतो चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

२१. दाहिणिल्लेहिंतो पंकप्पभापुढविनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखिज्जगुणा ॥

२२. दाहिणिल्लेहिंतो वालुयप्पभापुढविनेरइएहिंतो दुइयाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखिज्जगुणा ॥

२३. दाहिणिल्लेहिंतो सक्करप्पभापुढविनेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिण्णेणं असंखेज्जगुणा ॥

२४. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचेंदियतिरिक्खजोणिया पच्चत्थिमेणं, पुरत्थिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥

२५. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा दाहिण-उत्तरेणं, पुरत्थिमेणं संखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया ॥

२६. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासी देवा पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

---

१. तमप्प । पु । ने । पु । प । उ । दा । असं (ग) । २. दाहिणेहिंतो (क,ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वाणमंतरा देवा पुरत्थिमेणं, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया ॥

२८. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिया देवा पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ॥

२९. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया ।

३०. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा ईसाणे कप्पे पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया ॥

३१. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सणंकुमारे कप्पे पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया ॥

३२. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा माहिंदे कप्पे पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया ॥

३३. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा 'देवा बंभलोए कप्पे'[1] पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

३४. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा लंतए कप्पे पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

३५. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा महासुक्के कप्पे पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा ॥

३६. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरत्थिम-पच्चत्थिम-उत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । तेण परं बहुसमोववण्णगा समणाउसो ! ॥

३७. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणुत्तरेणं, पुरत्थिमेणं संखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया ॥

गति-पदं

३८. एएसि णं भंते! नेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं देवाणं सिद्धाण य पंचगतिसमासेणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा, नेरइया असंखेज्जगुणा, देवा असंखेज्जगुणा, सिद्धा अणंतगुणा, तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥

३९. एतेसि णं भंते ! नेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं मणुस्साणं मणुस्सीणं देवाणं देवीणं सिद्धाण य अट्ठगतिसमासेणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ, मणुस्सा असंखेज्जगुणा, नेरइया असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ, देवा असंखेज्जगुणा, देवीओ संखेज्जगुणाओ, सिद्धा अणंतगुणा, तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥

इंदिय-पदं

४०. एतेसि णं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं

---

१. बंभलोए कप्पे देवा (क,ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचेंदियाणं अणिंदियाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचेंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया, अणिंदिया अणंतगुणा, एगिंदिया अणंतगुणा, सइंदिया विसेसाहिया ॥

४१. एतेसि णं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचेंदियाणं अपज्जत्तगाणं[1] कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचेंदिया अपज्जत्तगा, चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ॥

४२. एतेसि णं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचेंदियाणं पज्जत्तगाणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा, पंचेंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया ॥

४३. एतेसि णं भंते ! सइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं[2] कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्तगा, सइंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

४४. एतेसि णं भंते ! एगिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया अपज्जत्तगा, एगिंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

४५. एतेसि णं भंते ! बेंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेंदिया पज्जत्तगा, बेंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥

४६. एतेसि णं भंते ! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेंदिया[3] पज्जत्तगा, तेंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥

४७. एतेसि णं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा, चउरिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥

४८. एतेसि णं भंते ! पंचेंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचेंदिया पज्जत्तगा, पंचेंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥

४९. एतेसि णं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेंदियाणं तेंदियाणं चउरिंदियाणं

१. अपज्जत्तगाणं (ख); अपज्जत्ताणं (घ)।
२. पज्जत्ता २ णं (क); पज्जत्ताणं २ (ग)।
३. तेइंदिया (क,ख,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचेंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा, पंचेंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, पंचेंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगेंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सइंदिया विसेसाहिया ॥

काय-पदं

५०. एतेसि णं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सतिकाइयाणं तसकाइयाणं अकाइयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया, तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया, अकाइया अणंतगुणा, वणस्सइकाइया अणंतगुणा, सकाइया विसेसाहिया ॥

५१. एतेसि णं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सतिकाइयाणं तसकाइयाण य अपज्जत्तगाणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया[1] अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ॥

५२. एतेसि णं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाण य पज्जत्तगाणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया[2] पज्जत्तगा अणंतगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया ॥

५३. एतेसि णं भंते ! सकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ।

५४. एतेसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा, पुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ।

५५. एतेसि णं भंते ! आउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तगा, आउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

१. वणप्फइ° (क,घ) । २. वणप्फइ° (क,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५६. एतेसि णं भंते ! तेउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

५७. एतेसि णं भंते ! वाउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

५८. एतेसि णं भंते ! वणस्सइकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

५९. एतेसि णं भंते ! तसकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥

६०. एतेसि णं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, 'सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया'[1], वणस्सतिकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, 'सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया विसेसाहिया'[2] ॥

६१. एतेसि णं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं[3] सुहुमणिओयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अणंतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया ॥

६२. एतेसि णं भंते ! सुहुमअपज्जत्तगाणं सुहुमपुढविकाइयापज्जत्तयाणं सुहुमआउकाइयापज्जत्तयाणं सुहुमतेउकाइयापज्जत्तयाणं सुहुमवाउकाइयापज्जत्तयाणं सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्तयाणं सुहुमणिगोदापज्जत्तयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया

१,२. मलयगिरिवृत्तौ 'सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया विसेसाहिया,' एतानि त्रीणि पदानि व्याख्यातानि नैव दृश्यते, इन्द्रियद्वारपदे 'सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सइंदिया विसेसाहिया,' एतानि पदानि दृश्यन्ते, अत्रापि एतानि युक्तान्येव ।

३. °वणप्फइ° (क,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया ।।

६३. एतेसि णं भंते ! सुहुमपज्जत्तगाणं सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमवाउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमनिगोदपज्जत्तगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमणिओया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया ।।

६४. एतेसि णं भंते ! सुहुमाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमा अपज्जत्तगा, सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ।।

६५. एतेसि णं भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ।।

६६. एतेसि णं भंते ! सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ।।

६७. एतेसि णं भंते ! सुहुमतेउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ।।

६८. एतेसि णं भंते ! सुहुमवाउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ।।

६९. एतेसि णं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ।।

७०. एतेसि णं भंते ! सुहुमनिगोदाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ।।

७१. एतेसि णं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमा विसेसाहिया ।।

७२. एतेसि णं भंते ! बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउ-काइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया, बादरा तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा, बादरा निगोदा असंखेज्जगुणा, बादरपुढवि-काइया असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा, बादरा विसेसाहिया ।।

७३. एतेसि णं भंते ! बादरअपज्जत्तगाणं बादरपुढविकाइयअपज्जत्तगाणं बादरआउ-काइयअपज्जत्तगाणं बादरतेउकाइयअपज्जत्तगाणं बादरवाउकाइयअपज्जत्तगाणं बादरवण-स्सइकाइयअपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तगाणं बादरनिगोदापज्जत्त-गाणं बादरतसकाइयापज्जत्तागाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया ।।

७४. एतेसि णं भंते ! बादरपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइयपज्जत्तयाणं बादरआउ-काइयपज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवाउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवणस्सइ-काइयपज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्तयाणं बादरतसकाइयपज्जत्तयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउक्काइया पज्जत्तया, बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरा पज्जत्तया विसेसाहिया ।।

७५. एतेसि णं भंते ! बादराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं[1] कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरा पज्जत्तगा, बादरा अप्पज्ज-त्तगा असंखेज्जगुणा ।।

---

१. पज्जत्तापज्जत्तयाणं (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७६. एतेसि णं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा, बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ।।

७७. एतेसि णं भंते ! बादरआउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तगा, बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ।।

७८. एतेसि णं भंते ! बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तगा, बादरतेउक्काइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ।।

७९. एतेसि णं भंते ! बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्जत्तगा, बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ।।

८०. एतेसि णं भंते ! बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवणस्सइ-काइया पज्जत्तगा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ।।

८१. एतेसि णं भंते ! पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पत्तेय-सरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ।।

८२. एतेसि णं भंते ! बादरनिगोदाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तगा, बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ।।

८३. एतेसि णं भंते ! बादरतसकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया पज्जत्तगा, बादरतसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ।।

८४. एतेसि णं भंते ! बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउ-काइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तगा, बादर-तसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरतसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेय-सरीरबादरवणस्सइकाइया[1] पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्ज-गुणा, बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्ज-गुणा, बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्ज-गुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा

१. बादरपत्तेयसरीरवण° (क,ग); बादरपत्तेयवण° (ख,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइ-काइया पज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरपज्जत्तगा विसेसाहिया, बादरवणस्सइकाइया अपज्ज-त्तगा असंखेज्जगुणा, बादरअपज्जत्तगा विसेसाहिया, बादरा विसेसाहिया ॥

८५. एतेसि णं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउ-काइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणं बादराणं बादरपुढवि-काइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवण्णस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया, बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा, बादर-निगोदा असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया असंखेज्जगुणा सुहुमपुढविकाइया विसेसा-हिया, सुहुमआउकाइया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा असं-खेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा, बादरा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा, सुहुमा विसेसाहिया ॥

८६. एतेसि णं भंते ! सुहुमअपज्जत्तयाणं सुहुमपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुम-आउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमतेउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमवाउकाइयाणं अपज्जत्त-याणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुमणिगोदापज्जत्तयाणं बादरअपज्जत्तयाणं[1] 'बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तयाणं'[2] बादरआउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं बादरवाउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तयाणं बादरणिगोदाणं अपज्जत्तयाणं बादरतस-काइयाणं अपज्जत्तयाणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असं-खेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरणिगोदा अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउक्का-इया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुम-तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम-आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम-निगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमा अपज्ज-त्तगा विसेसाहिया ॥

८७. एतेसि णं भंते ! सुहुमपज्जत्तयाणं सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमआउका-इयपज्जत्तयाणं सुहुमतेउकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमवाउकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमवणस्सइकाइय-पज्जत्तयाणं सुहुमनिगोयपज्जत्तयाणं बादरपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइयपज्जत्तयाणं बादर-

१. बादरापज्जत्तयाणं (क,ख) । बादरपुढविकाइयअपज्जत्तयाणं (ग) ।
२. बादरपुढविकाइयापज्जत्तयाणं (ख,घ);

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आउकाइयपज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवाउकाइयपज्जत्तयाणं बादर-वणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्त-याणं बादरतसकाइयपज्जत्तयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसा-हिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तगा, बादरतसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा, बादरा पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तया विसेसाहिया ।।

८८. एएसि णं भंते ! सुहुमाणं बादराण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरा पज्जत्तगा, बादरा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्ज-गुणा ।।

८९. एएसि णं भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणं बादरपुढविकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा, बादरपुढविकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढवि-काइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा ।।

९०. एएसि णं भंते ! सुहुमआउकाइयाणं बादरआउकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तया, बादरआउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमआउकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा ।।

९१. एएसि णं भंते ! सुहुमतेउकाइयाणं बादरतेउकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादर-तेउकाइया पज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्ज-त्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ।।

९२. एएसि णं भंते ! सुहुमवाउकाइयाणं बादरवाउकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्जत्तया, बादरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ।।

९३. एएसि णं भंते ! सुहुमवणस्सतिकाइयाणं बादरवणस्सतिकाइयाण य पज्जत्ता-पज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, बादरवणस्सतिकाइया अपज्जत्तया असंखेज्ज-गुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संखेज्जगुणा ।।

९४. एतेसि णं भंते ! सुहुमनिगोदाणं बादरनिगोदाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तगा, बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ।।

९५. एएसि णं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणं बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सतिकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया, बादरतसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरतेउवकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरणिगोया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायरआउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा[1], सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तया संखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा, बादरपज्जत्तगा विसेसाहिया, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरअपज्जत्तया विसेसाहिया, बादरा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सतिकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सतिकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमा विसेसाहिया ।।

जोग-पदं

९६. एतेसि णं भंते ! जीवाणं सजोगीणं मणजोगीणं वइजोगीणं कायजोगीणं अजोगीण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणजोगी, वइजोगी असंखेज्जगुणा, अजोगी अणंतगुणा, कायजोगी अणंतगुणा, सजोगी विसेसाहिया ।।

---

१. असंखेज्जगुणा (ख,घ,पु); ततः सूक्ष्मपर्याप्तास्तेजस्कायिकाः संख्येयगुणाः सूक्ष्मेष्वपर्याप्तेभ्यः पर्याप्तानामोघत एव संख्येयगुणत्वात् (मवृ); स्तबके 'असंख्यातगुणा' इति व्याख्यातमस्ति । असौ व्याख्यावृत्तेर्भिन्नास्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेद-पदं

९७. एएसि णं भंते ! जीवाणं सवेदगाणं इत्थीवेदगाणं पुरिसवेदगाणं नपुंसगवेदगाणं अवेदगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा, इत्थीवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा, नपुंसगवेदगा अणंतगुणा, सवेयगा विसेसाहिया ॥

कसाय-पदं

९८. एतेसि णं भंते ! जीवाणं सकसाईणं[1] कोहकसाईणं माणकसाईणं मायकसाईणं लोभकसाईणं अकसाईण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अकसाई, माणकसाई अणंतगुणा, कोहकसाई विसेसाहिया, मायकसाई विसेसाहिया, लोहकसाई विसेसाहिया, सकसाई विसेसाहिया ॥

लेस्सा-पदं

९९. एएसि णं भंते ! जीवाणं सलेस्साणं[2] किण्हलेस्साणं नीललेस्साणं काउलेस्साणं तेउलेस्साणं पम्हलेस्साणं सुक्कलेस्साणं अलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा संखेज्जगुणा, तेउलेस्सा संखेज्जगुणा, अलेस्सा अणंतगुणा, काउलेस्सा अणंतगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, किण्हलेस्सा विसेसाहिया, सलेस्सा विसेसाहिया ॥

सम्मत्त-पदं

१००. एतेसि णं भंते ! जीवाणं सम्मद्दिट्ठीणं मिच्छद्दिट्ठीणं[3] सम्मामिच्छादिट्ठीणं[4] च कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छदिट्ठी, सम्मद्दिट्ठी अणंतगुणा, मिच्छद्दिट्ठी अणंतगुणा ॥

णाण-पदं

१०१. एतेसि णं भंते ! जीवाणं अभिणिबोहियणाणीणं सुतणाणीणं ओहिणाणीणं मणपज्जवणाणीणं केवलणाणीण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवणाणी, ओहिणाणी असंखेज्जगुणा, आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी य दो वि तुल्ला विसेसाहिया, केवलणाणी अणंतगुणा ॥

१०२. एतेसि णं भंते ! जीवाणं मइअण्णाणीणं सुतअण्णाणीणं विभंगणाणीण[5] य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभंगणाणी, मइअण्णाणी सुतअण्णाणी य दो वि तुल्ला अणंतगुणा ॥

१०३. एतेसि णं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियणाणीणं सुयणाणीणं ओहिणाणीणं मणपज्जवणाणीणं केवलणाणीणं मतिअण्णाणीणं सुतअण्णाणीणं विभंगणाणीण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवणाणी, ओहिणाणी असंखेज्जगुणा, आभिणिबोहियणाणी सुतणाणी य दो वि

---

१. सकसादी (क) ।
२. सलेसाणं (क,ख,घ) ।
३. मिच्छा° (ग) ।
४. सम्ममिच्छादिट्ठीणं (क); सम्मामिच्छ° (घ)।
५. विहंग° (क,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुल्ला विसेसाहिया, विभंगणाणी असंखेज्जगुणा, केवलणाणी अणंतगुणा, मइअण्णाणी सुतअण्णाणी य दो वि तुल्ला अणंतगुणा ॥

दंसण-पदं

१०४. एतेसि णं भंते! जीवाणं चक्खुदंसणीणं अचक्खुदंसणीणं ओहिदंसणीणं केवलदंसणीण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा ओहिदंसणी, चक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा, केवलदंसणी अणंतगुणा, अचक्खुदंसणी अणंतगुणा ॥

संजय-पदं

१०५. एतेसि णं भंते! जीवाणं संजयाणं असंजयाणं संजयासंजयाणं नोसंजय-नोअसंजय-नोसंजतासंजताण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा संजता, संजयासंजया असंखेज्जगुणा, नोसंजत-नोअसंजत-नोसंजतासंजता अणंतगुणा, असंजता अणंतगुणा ॥

उवओग-पदं

१०६. एतेसि णं भंते! जीवाणं सागरोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा अणागारोवउत्ता, सागरोवउत्ता संखेज्जगुणा ॥

आहार-पदं

१०७. एतेसि णं भंते! जीवाणं आहारगाणं अणाहारगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा अणाहारगा, आहारगा असंखेज्जगुणा ॥

भासग-पदं

१०८. एतेसि णं भंते! जीवाणं भासगाणं अभासगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा भासगा, अभासगा अणंतगुणा ॥

परित्त-पदं

१०९. एतेसि णं भंते! जीवाणं परित्ताणं अपरित्ताणं नोपरित्त-नोअपरित्ताण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा परित्ता, नोपरित्त-नोअपरित्ता अणंतगुणा, अपरित्ता अणंतगुणा ॥

पज्जत्त-पदं

११०. एएसि णं भंते! जीवाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं नोपज्जत्त-नोअपज्जत्ताण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा नोपज्जत्त-नोअपज्जत्तगा, अपज्जत्तगा अणंतगुणा, पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

सुहुम-पदं

१११. एएसि णं भंते! जीवाणं सुहुमाणं बादराणं नोसुहुम-नोबादराण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नोसुहुम-नोबादरा, बादरा अणंतगुणा, सुहुमा असंखेज्जगुणा ।।

सण्णि-पदं

११२. एतेसि णं भंते ! जीवाणं सण्णीणं असण्णीणं नोसण्णी-नोअसण्णीण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सण्णी, नोसण्णी-णोअसण्णी अणंतगुणा, असण्णी अणंतगुणा ।।

भव-पदं

११३. एतेसि णं भंते ! जीवाणं भवसिद्धियाणं अभवसिद्धियाणं नोभवसिद्धिय-णोअभवसिद्धियाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अभवसिद्धिया, नोभवसिद्धिय-णोअभवसिद्धिया अणंतगुणा, भवसिद्धिया अणंतगुणा ।।

अत्थिकाय-पदं

११४. एतेसि णं भंते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय-आगासत्थिकाय-जीवत्थिकाय-पोग्गलत्थिकाय[1]-अद्धासमयाणं दव्वट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए य एए तिण्णि वि तुल्ला दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवा, जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे, पोग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे[2], अद्धासमए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे ।।

११५. एतेसि णं भंते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय-आगासत्थिकाय-जीवत्थिकाय-पोग्गलत्थिकाय-अद्धासमयाणं पदेसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए य एते णं दो वि तुल्ला पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा, जीवत्थिकाए पदेसट्ठयाए अणंतगुणे, पोग्गलत्थिकाए पदेसट्ठयाए अणंतगुणे, अद्धासमए पदेसट्ठयाए अणंतगुणे, आगासत्थिकाए पदेसट्ठयाए अणंतगुणे ।।

११६. एतस्स णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे धम्मत्थिकाए दव्वट्ठताए, से चेव पदेसट्ठताए असंखेज्जगुणे ।।

११७. एतस्स णं भंते ! अधम्मत्थिकायस्स दव्वट्ठ-पदेसट्ठताए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे अधम्मत्थिकाए दव्वट्ठताए, से चेव पदेसट्ठताए असंखेज्जगुणे ।।

११८. एतस्स णं भंते ! आगासत्थिकायस्स दव्वट्ठ-पदेसट्ठताए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे आगासत्थिकाए दव्वट्ठताए, से चेव पदेसट्ठताए अणंतगुणे ।।

११९. एतस्स णं भंते ! जीवत्थिकायस्स दव्वट्ठ-पदेसट्ठताए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए, से चेव पदेसट्ठताए असंखेज्जगुणे ।।

१२०. एतस्स णं भंते ! पोग्गलत्थिकायस्स दव्वट्ठ-पदेसट्ठताए कतरे कतरेहिंतो अप्पा

---

१. पुग्गलत्थि° (क) ।

२. अणंतगुणा (क,ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे पोग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए, से चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणे ॥

१२१. अद्धासमए ण पुच्छिज्जइ पदेसाभावा ॥

१२२. एतेसि णं भंते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय-आगासत्थिकाय-जीवत्थिकाय-पोग्गलत्थिकाय-अद्धासमयाणं दव्वट्ठ-पदेसट्ठताए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए य एते णं तिण्णि वि तुल्ला दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवा, धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए य एते णं दोण्णि वि तुल्ला पदेसट्ठताए असंखेज्जगुणा, जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे, से चेव पदेसट्ठताए असंखेज्जगुणे, पोग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे, से चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणे, अद्धासमए 'दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए'[१] अणंतगुणे, आगासत्थिकाए पएसट्ठयाए अणंतगुणे ॥

चरिम-पदं

१२३. एतेसि णं भंते ! जीवाणं चरिमाणं अचरिमाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा, चरिमा अणंतगुणा ॥

जीव-पदं

१२४. एतेसि णं भंते ! जीवाणं पोग्गलाणं अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपदेसाणं सव्वपज्जवाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा, पोग्गला अणंतगुणा, अद्धासमया अणंतगुणा, सव्वदव्वा विसेसाहिया, सव्वपदेसा अणंतगुणा, सव्वपज्जवा अणंतगुणा ॥

खेत्त-पदं

१२५. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ॥

१२६. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा नेरइया तेलोक्के, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए असंखेज्जगुणा ॥

१२७. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए[२] विसेसाहिया ॥

१२८. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ तिरिक्खजोणिणीओ उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, तेलोक्के संखेज्जगुणाओ, अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणाओ, अहेलोए संखेज्जगुणाओ, तिरियलोए संखेज्जगुणाओ ॥

---

१. दव्वट्ठयाए (ख); पूर्वसूत्रे 'पदेसाभावा' इति उल्लिखितमस्ति, तेन 'अपदेसट्ठयाए' इति पाठः सम्भाव्यते। अत्र अकारो लुप्तो दृश्यः। क्वचिद् 'दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए' इति पाठोपि लभ्यते।

२. अहोलोए (ग); अधेलोए (घ); प्रायः सर्वत्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२९. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलोक्के, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्ज-गुणा, अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अधेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ।।

१३०. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ तेलोक्के, उड्ढलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणाओ, अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणाओ, उड्ढलोए संखेज्जगुणाओ, अहेलोए संखेज्जगुणाओ, तिरियलोए संखेज्जगुणाओ ।।

१३१. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्ज-गुणा, तेलोक्के संखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ।।

१३२. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ देवीओ उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, तेलोक्के संखेज्जगुणाओ, अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणाओ, अहेलोए संखेज्जगुणाओ, तिरियलोए संखेज्जगुणाओ ।।

१३३. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासी देवा उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के संखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए असंखेज्जगुणा ।।

१३४. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ भवणवासिणीओ देवीओ उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, तेलोक्के संखेज्जगुणाओ, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्ज-गुणाओ, तिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, अहेलोए असंखेज्जगुणाओ ।।

१३५. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाणमंतरा देवा उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के संखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ।।

१३६. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ वाणमंतरीओ देवीओ उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, तेलोक्के संखेज्जगुणाओ, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्ज-गुणाओ, अहेलोए संखेज्जगुणाओ, तिरियलोए संखेज्जगुणाओ ।।

१३७. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिया देवा उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के संखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्ज-गुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा ।।

१३८. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ जोइसिणीओ देवीओ उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणाओ, तेलोक्के संखेज्जगुणाओ, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्ज-गुणाओ, अहेलोए संखेज्जगुणाओ, तिरियलोए असंखेज्जगुणाओ ।।

१३९. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा उड्ढलोय-तिरियलोए, तेलोक्के संखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्ज-गुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा ।।

१४०. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ वेमाणिणीओ देवीओ उड्ढलोय-तिरियलोए, तेलोक्के संखेज्जगुणाओ, अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणाओ, अहेलोए संखेज्जगुणाओ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिरियलोए संखेज्जगुणाओ, उड्ढलोए असंखेज्जगुणाओ ।।

१४१. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ।।

१४२. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ।।

१४३. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा पज्जत्तगा उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ।।

१४४. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ।।

१४५. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया अपज्जत्तया उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ।।

१४६. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेंदिया पज्जत्तया उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ।।

१४७. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ।।

१४८. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया अपज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ।।

१४९. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ।।

१५०. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया जीवा उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ।।

१५१. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया जीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ।।

१५२. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया जीवा पज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा ॥

१५३. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया तेलोक्के, उड्ढलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा ॥

१५४. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्तया तेलोक्के, उड्ढलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा ॥

१५५. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्तया उड्ढलोए, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के संखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा ॥

१५६. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ॥

१५७. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ॥

१५८. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ॥

१५९. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ॥

१६०. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ॥

१६१. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ॥

१६२. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ॥

१६३. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ॥

१६४. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोय-तिरियलोए,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ।।

१६५. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ।।

१६६. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ।।

१६७. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ।।

१६८. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ।।

१६९. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ।।

१७०. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पज्जत्तया उड्ढलोय-तिरियलोए, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ।।

१७१. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया तेलोक्के, उड्ढलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुण, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा ।।

१७२. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तया तेलोक्के, उड्ढलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणा, अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा ।।

१७३. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तया तेलोक्के, उड्ढलोय-तिरियलोए असंखेज्जगुणा[1], अहेलोय-तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहेलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा ।।

बंध-पद

१७४. एतेसि णं भंते ! जीवाणं आउयस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं सुत्ताणं जागराणं समोहयाणं असमोहयाणं सातावेदगाणं असातावेदगाणं इंदियउवउत्ताणं नोइंदियउवउत्ताणं सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताण य कतरे कतरेहिंतो

१. संखेज्जगुणा (क,ग); 'इमानि पंचेन्द्रियसूत्रवद् भावनीयानि' इति वृत्त्युल्लेखेन 'संखेज्जगुणा' इति पदं शुद्धं न प्रतिभाति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स बंधगा, अपज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुत्ता संखेज्जगुणा, समोहता संखेज्जगुणा, सातावेदगा संखेज्जगुणा, इंदिओवउत्ता संखेज्जगुणा, अणागारोवउत्ता संखेज्जगुणा, सागारोवउत्ता संखेज्जगुणा, नोइंदियउवउत्ता विसेसाहिया, अस्सातावेदगा[1] विसेसाहिया, असमोहता विसेसाहिया, जागरा विसेसाहिया, पज्जत्तया विसेसाहिया, आउयस्स कम्मस्स अबंधगा विसेसाहिया ।।

पोग्गल-पदं

१७५. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला तेलोक्के, उड्ढलोय-तिरियलोए अणंतगुणा, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहेलोए विसेसाहिया ।।

१७६. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए, अहेदिसाए विसेसाहिया, उत्तर-पुरत्थिमेणं दाहिणपच्चत्थिमेण य दो वि तुल्ला असंखेज्जगुणा, दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तर-पच्चत्थिमेण य दो वि तुल्ला विसेसाहिया, पुरत्थिमेणं असंखेज्जगुणा, पच्चत्थिमेणं विसेसा-हिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया ।।

१७७. खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं तेलोक्के, उड्ढलोय-तिरियलोए अणंतगुणाइं, अहेलोय-तिरियलोए विसेसाहियाइं, उड्ढलोए असंखेज्जगुणाइं, अहेलोए अणंतगुणाइं, तिरियलोए संखेज्जगुणाइं ।।

१७८. दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं अहेदिसाए, उड्ढदिसाए अणंतगुणाइं, उत्तर-पुरत्थिमेणं दाहिणपच्चत्थिमेण य दो वि तुल्लाइं असंखेज्जगुणाइं, दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेण य दो वि तुल्लाइं विसेसाहियाइं, पुरत्थिमेणं असंखेज्जगुणाइं, पच्चत्थि-मेणं विसेसाहियाइं, दाहिणेणं विसेसाहियाइं, उत्तरेणं विसेसाहियाइं ।।

१७९. एतेसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं संखेज्जपदेसियाणं असंखेज्जपदेसियाणं अणंतपदेसियाण य खंधाणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा; पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए, परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए[2] अणंतगुणा, संखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा; दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए, ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए[3] अणंतगुणा, संखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्ज-गुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ।।

१८०. एतेसि णं भंते ! एगपदेसोगाढाणं संखेज्जपदेसोगाढाणं असंखेज्जपदेसोगाढाण

---

१. असातावेदगा (ख,ग) ।

२. पदेसट्ठयाए (ग,घ) ।

३. पदेसट्ठयाए (ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा; पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए, संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपएसोगाढा पोग्गला पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा; दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए, संखेज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, ते चेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ।।

१८१. एतेसि णं भंते ! एगसमयठितीयाणं संखेज्जसमयठितीयाणं असंखेज्जसमयठितीयाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगसमयठितीया पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्जसमयठितीया पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जसमयठितीया पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा; पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगसमयठितीया पोग्गला अपदेसट्ठयाए, संखेज्जसमयठितीया पोग्गला पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जसमयठितीया पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा; दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगसमयठितीया पोग्गला दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए[1], संखेज्जसमयठितीया पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जसमयठितीया पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ।।

१८२. एतेसि णं भंते ! एगगुणकालगाणं संखेज्जगुणकालगाणं असंखेज्जगुणकालगाणं अणंतगुणकालगाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! जहा परमाणुपोग्गला तहा भाणितव्वा[2] । एवं संखेज्जगुणकालयाण वि । एवं सेसा वि 'वण्णा गंधा रसा'[3] भाणितव्वा । फासाणं कक्खड-मउय-गरुय-लहुयाणं जहा एगपदेसोगाढाणं भणंति तहा भाणितव्वं[4] । अवसेसा फासा जहा[5] वण्णा भणिता तहा भाणितव्वा[6] ।।

महादंडय-पदं

१८३. अह भंते ! सव्वजीवप्पबहुं महादंडयं वत्तइस्सामि[7]—१. सव्वत्थोवा 'गब्भवक्कंतिया मणुस्सा'[8], २. मणुस्सीओ संखेज्जगुणाओ, ३. बादरतेउक्काइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, ४. अणुत्तरोववाइया देवा असंखेज्जगुणा, ५. उवरिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा, ६. मज्झिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा, ७. हेट्ठिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा, ८. अच्चुते कप्पे देवा संखेज्जगुणा, ९. आरणे कप्पे देवा संखेज्जगुणा, १०. पाणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा, ११. आणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा, १२. अधेसत्तमाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा,

१. पदेसट्ठयाए (क,ख,ग,घ) ।
२. प० ३।११८ ।
३. वण्णगंधरसा (ख,पु) ।
४. प० ३।११९ ।
५. जधा (ख,घ) ।
६. भाणियव्वं (क,ख घ) ।
७. वण्णइस्सामि (हवृ) ।
८. गब्भवक्कंतियमणुस्सा (क,ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा, १४. सहस्सारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, १५. महासुक्के कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, १६. पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा, १७. लंतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, १८. चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा, १९. बंभलोए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, २०. तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा, २१. माहिंदे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, २२. सणंकुमारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, २३. दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा, २४. सम्मुच्छिममणुस्सा असंखेज्जगुणा, २५. ईसाणे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, २६. ईसाणे कप्पे देवीओ संखेज्जगुणाओ, २७. सोहम्मे कप्पे देवा संखेज्जगुणा, २८. सोहम्मे कप्पे देवीओ संखेज्जगुणाओ, २९. भवणवासी देवा असंखेज्जगुणा, ३०. भवणवासिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, ३१. इमीसे रतणप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा, ३२. खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा, ३३. खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, ३४. थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा संखेज्जगुणा, ३५. थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, ३६. जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा संखेज्जगुणा, ३७. जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, ३८. वाणमंतरा देवा संखेज्जगुणा, ३९. वाणमंतरीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, ४०. जोइसिया देवा संखेज्जगुणा, ४१. जोइसिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, ४२. खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया णपुंसया संखेज्जगुणा, ४३. थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया णपुंसया संखेज्जगुणा, ४४. जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया णपुंसया संखेज्जगुणा, ४५. चउरिंदिया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, ४६. पंचेंदिया पज्जत्तया विसेसाहिया, ४७. बेइंदिया पज्जत्तया विसेसाहिया, ४८. तेइंदिया पज्जत्तया विसेसाहिया, ४९. पंचिंदिया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, ५०. चउरिंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया, ५१. तेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया, ५२. बेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया, ५३. पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ५४. बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ५५. बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ५६. बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ५७. बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ५८. बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ५९. पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ६०. बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ६१. बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ६२. बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ६३. बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ६४. सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ६५. सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, ६६. सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, ६७. सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, ६८. सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, ६९. सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, ७०. सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, ७१. सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, ७२. सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, ७३. सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, ७४. अभवसिद्धिया अणंतगुणा, ७५. पडिवडितसम्मद्दिट्ठी[1] अणंतगुणा, ७६. सिद्धा अणंत-

---

१. परिवडितसम्मत्ता (ख,पु); परिवडितसम्म (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणा, ७७. बादरवणस्सतिकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा, ७८. बादरपज्जत्तया विसेसाहिया, ७९. बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, ८०. बादरअपज्जत्तगा विसेसाहिया, ८१. बादरा विसेसाहिया, ८२. सुहुमवणस्सतिकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, ८३. सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया, ८४. सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, ८५. सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया, ८६. सुहुमा विसेसाहिया, ८७. भवसिद्धिया विसेसाहिया, ८८. निगोदजीवा विसेसाहिया, ८९. वणस्सतिजीवा विसेसाहिया, ९०. एगिंदिया विसेसाहिया, ९१. तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया, ९२. मिच्छद्दिट्ठी विसेसाहिया, ९३. अविरता विसेसाहिया, ९४. सकसाई[1] विसेसाहिया, ९५. छउमत्था विसेसाहिया, ९६. सजोगी विसेसाहिया, ९७. संसारत्था विसेसाहिया, ९८. सव्वजीवा विसेसाहिया ॥

१. सकसादी (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं ठिइपयं

नेरइयठिइ-पदं

१. नेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वास-सहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

२. अपज्जत्तनेरइयाणं[1] भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

३. पज्जत्तयणेरइयाणं[2] भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

४. रयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं सागरोवमं ॥

५. अपज्जत्तयरयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

६. पज्जत्तयरयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥

७. सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं सागरोवमं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ॥

८. अपज्जत्तयसक्करप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

९. पज्जत्तयसक्करप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

१०. वालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ॥

११. अपज्जत्तयवालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१२. पज्जत्तयवालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ? केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?

---

१. अपज्जत्तनेर° (ख,ग) ।   २. पज्जत्तणेर° (ख,ग) ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

गोयमा ! जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

१३. पंकप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ।।

१४. अपज्जत्तयपंकप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

१५. पज्जत्तयपंकप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेण दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

१६. धूमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ।।

१७. अपज्जत्तयधूमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

१८. पज्जत्तयधूमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

१९. तमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ।।

२०. अपज्जत्तयतमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

२१. पज्जत्तयतमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

२२. अहेसत्तमपुढविनेरइयाणं[1] भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।।

२३. अपज्जत्तयअहेसत्तमपुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ? जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

२४. पज्जत्तयअहेसत्तमपुढविनेरइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

देवठिइ-पदं

२५. देवाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।।

२६. अपज्जत्तयदेवाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं

१. अहेसत्तमापुढवि° (क); अधेसत्तमापुढवि° (ख); अधेसत्तम° (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२७. पज्जत्तयदेवाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२८. देवीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं ॥

२९. अपज्जत्तयदेवीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

३०. पज्जत्तयदेवीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

भवणवासिठिइ-पदं

३१. भवणवासीणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं ॥

३२. अपज्जत्तयभवणवासीणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

३३. पज्जत्तयभवणवासीणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥

३४. भवणवासिणीणं भंते ! देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं ॥

३५. अपज्जत्तियाणं भंते ! भवणवासिणीणं देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

३६. पज्जत्तियाणं भंते ! भवणवासिणीणं देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

३७. असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं ॥

३८. अपज्जत्तयअसुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

३९. पज्जत्तयअसुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥

४०. असुरकुमारीणं भंते ! देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं ॥

४१. अपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भंते ! देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

४२. पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भंते ! देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

४३. नागकुमाराणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाइं ॥

४४. अपज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

४५. पज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

४६. नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं ॥

४७. अपज्जत्तियाणं नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण वि अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

४८. पज्जत्तियाणं नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥

४९. सुवण्णकुमाराणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाइं ॥

५०. अपज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

५१. पज्जत्तयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

५२. सुवण्णकुमारीणं भंते ! देवीणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं ॥

५३. अपज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

५४. पज्जत्तियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥

५५. एवं एएणं अभिलावेणं ओहिय-अपज्जत्त-पज्जत्तसुत्तत्तयं देवाण देवीण य णेयव्वं जाव थणियकुमाराणं जहा[1] नागकुमाराणं ॥

एगिंदियठिइ-पदं

५६. पुढविकाइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ॥

५७. अपज्जत्तयपुढविकाइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

५८. पज्जत्तयपुढविकाइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

---

१. पृ० ४।४३-४८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५९. सुहुमपुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

६०. अपज्जत्तयसुहुमपुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

६१. पज्जत्तयसुहुमपुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

६२. बादरपुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ॥

६३. अपज्जत्तयबादरपुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

६४. पज्जत्तयबादरपुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

६५. आउकाइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं ॥

६६. अपज्जत्तयआउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

६७. पज्जत्तयआउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

६८. सुहुमआउकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्तयाणं पज्जत्तयाण य जहा[1] सुहुमपुढविकाइयाणं तहा भाणितव्वं ॥

६९. बादरआउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं ॥

७०. अपज्जत्तयबादरआउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

७१. पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

७२. तेउकाइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि रातिंदियाइं ॥

७३. अपज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

७४. पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि रातिंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

७५. सुहुमतेउकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्तयाणं पज्जत्तयाण य जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

७६. बादरतेउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि रातिंदियाइं ॥

---

१. प० ४।५९-६१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७७. अपज्जत्तयबादरतेउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

७८. पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि रातिंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

७९. वाउकाइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं ॥

८०. अपज्जत्तयवाउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

८१. पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

८२. सुहुमवाउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

८३. अपज्जत्तयसुहुमवाउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

८४. पज्जत्तयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

८५. बादरवाउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं ॥

८६. अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

८७. पज्जत्तबादरवाउकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

८८. वणस्सइकाइयाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ॥

८९. अपज्जत्तवणस्सतिकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

९०. पज्जत्तवणस्सइकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

९१. सुहुमवणस्सइकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्ताणं पज्जत्ताण य जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

९२. बादरवणस्सइकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ॥

९३. अपज्जत्तबादरवणस्सइकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

९४. पज्जत्तबादरवणस्सइकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

बेइंदियठिइ-पदं

९५. बेइंदियाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं ॥

९६. अपज्जत्तबेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

९७. पज्जत्तबेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

तेइंदियठिइ-पदं

९८. तेइंदियाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं एगूणवण्णं रातिंदियाइं ॥

९९. अपज्जत्ततेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१००. पज्जत्ततेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं एगूणवण्णं रातिंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

चउरिंदियठिइ-पदं

१०१. चउरिंदियाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

१०२. अपज्जत्तयचउरिंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१०३. पज्जत्तयचउरिंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छम्मासा अंतोमुहुत्तूणा ॥

पंचिंदियतिरिक्खजोणियठिइ-पदं

१०४. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥

१०५. अपज्जत्तयपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१०६. पज्जत्तयपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

१०७. सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥

१०८. अपज्जत्तयसम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१०९. पज्जत्तयसम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ॥

११०. गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥

१११. अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

११२. पज्जत्तयगब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

११३. जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥

११४. अपज्जत्तयजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

११५. पज्जत्तयजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ॥

११६. सम्मुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥

११७. अपज्जत्तयसम्मुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

११८. पज्जत्तयसम्मुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ॥

११९. गब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥

१२०. अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१२१. पज्जत्तयगब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ॥

१२२. चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥

१२३. अपज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१२४. पज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

१२५. सम्मुच्छिमचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं ॥

१२६. अपज्जत्तयसम्मुच्छिमचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१२७. पज्जत्तयसम्मुच्छिमचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

१२८. गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥

१२९. अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३०. पज्जत्तयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

१३१. उरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥

१३२. अपज्जत्तयउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१३३. पज्जत्तयउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ॥

१३४. [1]°सम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा°। 'गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेवण्णं वाससहस्साइं'[2] ॥

१३५. सम्मुच्छिमअपज्जत्तयउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१३६. पज्जत्तयसम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेवण्णं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

१३७. गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥

१३८. अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१३९. पज्जत्तयगब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ॥

१४०. भुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥

१४१. अपज्जत्तयभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१४२. पज्जत्तयभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ॥

१४३. सम्मुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं ॥

१४४. अपज्जत्तयसम्मुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१४५. पज्जत्तयसम्मुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

---

१. सं० पा०—सम्मुच्छिमसामण्णपुच्छा कायव्वा। अस्यपूर्तिः पर्याप्तकसम्मूर्च्छिमस्य आधारेण कृतास्ति।

२. मुनिपुण्यविजयजीद्वारासंपादिते प्रज्ञापनापाठे अस्य पाठस्य एकस्मिन्नादर्शे उपलब्धिः सूचितास्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४६. गब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥

१४७. अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१४८. पज्जत्तयगब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा ॥

१४९. खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो ॥

१५०. अपज्जत्तयखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१५१. पज्जत्तयखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो अंतोमुहुत्तूणो ॥

१५२. सम्मुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं ॥

१५३. अपज्जत्तयसम्मुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१५४. पज्जत्तयसम्मुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

१५५. गब्भवक्कंतियखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागो ॥

१५६. अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१५७. पज्जत्तयगब्भवक्कंतियखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो अंतोमुहुत्तूणो ॥

मणुस्सठिइ-पदं

१५८. मणुस्साणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥

१५९. अपज्जत्तयमणुस्साणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१६०. पज्जत्तयमणुस्साणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

१६१. सम्मुच्छिममणुस्साणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१६२. गब्भवक्कंतियमणुस्साणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६३. अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियमणुस्साणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

१६४. पज्जत्तयगब्भवक्कंतियमणुस्साणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

वाणमंतरठिइ-पदं

१६५. वाणमंतराणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं पलिओवमं ।।

१६६. अपज्जत्तयवाणमंतराणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

१६७. पज्जत्तयवाणमंतराणं[1] देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ।।

१६८. वाणमंतरीणं भंते ! देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ।।

१६९. अपज्जत्तियाणं भंते ! वाणमंतरीणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

१७०. पज्जत्तियाणं भंते ! वाणमंतरीणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ।।

जोइसियठिइ-पदं

१७१. जोइसियाणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो[2], उक्कोसेणं पलिओवमं वाससतसहस्समब्भहियं ।।

१७२. अपज्जत्तयजोइसियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

१७३. पज्जत्तयजोइसियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो अंतोमुहुत्तूणो, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससतसहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ।।

१७४. जोइसिणीणं भंते ! देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासवाससहस्समब्भहियं ।।

१७५. अपज्जत्तियाणं जोइसिणीणं पुच्छा। गोयम ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

१७६. पज्जत्तियाणं जोइसिणीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो अंतोमुहुत्तूणो, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ।।

१७७. चंदविमाणे णं भंते ! देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससतसहस्समब्भहियं ।।

१७८. चंदविमाणे णं भंते ! अपज्जत्तयदेवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि

१. पज्जत्तयाणं वाणमंतराणं (ख,ग,घ)।

२. सातिरेगं अट्ठभागपलिओवमं (अणुओगदाराइं सू० ४३३ टिप्पण)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१७९. चंदविमाणे णं पज्जत्तयदेवाणं[1] पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससतसहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ॥

१८०. चंदविमाणे णं भंते! देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिमब्भहियं ॥

१८१. चंदविमाणे णं भंते! अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१८२. चंदविमाणे णं भंते! पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ॥

१८३. सूरविमाणे णं भंते! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं. उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं ॥

१८४. सूरविमाणे अपज्जत्तयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१८५. सूरविमाणे पज्जत्तयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ॥

१८६. सूरविमाणे देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससतेहिमब्भहियं ॥

१८७. सूरविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१८८. सूरविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससतेहिं अब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं ॥

१८९. गहविमाणे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं ॥

१९०. गहविमाणे अपज्जत्तयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१९१. गहविमाणे पज्जत्तयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥

१९२. गहविमाणे देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ॥

१९३. गहविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१९४. 'गहविमाणे पज्जत्तियाणं'[2] देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलि-

---

१. पज्जत्तयाणं देवाणं (क)।

२. आदर्शेषु 'पज्जत्तियाणं गहविमाणे' इति पाठो दृश्यते। प्रस्तुतक्रमावलोकनेन सम्भाव्यते लिपिकाले पदविपर्ययो जातः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥

१९५. णक्खत्तविमाणे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ॥

१९६. णक्खत्तविमाणे अपज्जत्तयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१९७. णक्खत्तविमाणे पज्जत्तयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥

१९८. णक्खत्तविमाणे देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगं चउभागपलिओवमं ॥

१९९. णक्खत्तविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२००. णक्खत्तविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं सातिरेगं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥

२०१. ताराविमाणे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं चउभागपलिओवमं ॥

२०२. ताराविमाणे अपज्जत्तयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२०३. ताराविमाणे पज्जत्तयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥

२०४. ताराविमाणे देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगं अट्ठभागपलिओवमं ॥

२०५. ताराविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२०६. ताराविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं सातिरेगं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं ॥

वेमाणियठिइ-पदं

२०७. वेमाणियाणं भंते! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

२०८. अपज्जत्तयवेमाणियाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२०९. पज्जत्तयवेमाणियाणं[1] पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२१०. वेमाणिणीणं भंते! देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं ॥

---

१. पज्जत्तयाणं वेमाणियाणं (ख,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२११. अपज्जत्तियाणं वेमाणिणीणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२१२. पज्जत्तियाणं वेमाणिणीणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२१३. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ॥

२१४. सोहम्मे कप्पे अपज्जत्तयदेवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२१५. सोहम्मे कप्पे पज्जत्तयदेवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२१६. सोहम्मे कप्पे देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमाइं ॥

२१७. सोहम्मे कप्पे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२१८. सोहम्मे कप्पे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२१९. सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं ॥

२२०. सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२२१. सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२२२. सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमाइं ॥

२२३. सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाणं अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२२४. सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाणं पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पण्णासं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२२५. ईसाणे कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ॥

२२६. ईसाणे कप्पे अपज्जत्तयाणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२२७. ईसाणे कप्पे पज्जत्तयाणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२२८. ईसाणे कप्पे देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं ॥

२२९. ईसाणे कप्पे 'अपज्जत्तियाणं देवीणं'[1] पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२३०. ईसाणे कप्पे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२३१. ईसाणे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं णव पलिओवमाइं ॥

२३२. ईसाणे कप्पे परिग्गहियाणं अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२३३. ईसाणे कप्पे परिग्गहियाणं पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ! गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं नव पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२३४. ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं ॥

२३५. ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाणं अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२३६. ईसाणे कप्पे 'अपरिग्गहियाणं पज्जत्तियाणं देवीणं'[2] पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२३७. सणंकुमारे कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं दो सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ॥

२३८. सणंकुमारे कप्पे अपज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२३९. सणंकुमारे कप्पे पज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२४०. माहिंदे कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्त साहियाइं सागरोवमाइं ॥

२४१. माहिंदे अपज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२४२. माहिंदे पज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२४३. बंभलोए कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ॥

२४४. बंभलोए अपज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

---

१. देवीणं अपज्जत्तियाणं (क,ख,ग,घ)।

२. देवीणं पज्जत्तियाणं (ख, घ); देवीणं अपरिग्गहियाणं पज्जत्तियाणं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४५. बंभलोए पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

२४६. लंतए कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं दस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं चोद्दस सागरोवमाइं ।।

२४७. लंतए अपज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

२४८. लंतए पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं चोद्दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

२४९. महासुक्के देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं चोद्दस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ।।

२५०. महासुक्के अपज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

२५१. महासुक्के पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं चोद्दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

२५२. सहस्सारे देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ।।

२५३. सहस्सारे अपज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

२५४. सहस्सारे पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

२५५. आणए देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं एगूणवीसं[1] सागरोवमाइं ।

२५६. आणए अपज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

२५७. आणए पज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

२५८. पाणए कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ।

२५९. पाणए अपज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

२६०. पाणए पज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

२६१. आरणे देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं एगवीसं[2] सागरोवमाइं ।।

२६२. आरणे अपज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि

१. एकूणवीसं (क,घ); एक्कूणवीसं (ख)। २. एक्कवीसं (क,ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतोमुहुत्तं ॥

२६३. आरणे पज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं एगवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२६४. अच्चुए कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगवीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ॥

२६५. अच्चुए अपज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२६६. अच्चुए पज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२६७. हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगदेवाणं[1] पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं ॥

२६८. हेट्ठिमहेट्ठिमअपज्जत्तदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२६९. हेट्ठिमहेट्ठिमपज्जत्तदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं, अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२७०. हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ॥

२७१. हेट्ठिममज्झिमअपज्जत्तयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२७२. हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जगदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२७३. हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउवीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं पणुवीसं[2] सागरोमाइं ॥

२७४. हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जगदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२७५. हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जगदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं पणुवीसं[3] सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२७६. मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं पणुवीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ॥

२७७. मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जगदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२७८. मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जगदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं पणुवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

---

१. गेवेज्जदेवाणं (क,ख)।

२. पंचवीसं (क,ख,ग,घ)।

३. पंचवीसं (ख,घ); पणवीसं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७९. मज्झिममज्झिमगेवेज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं छव्वीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ॥

२८०. मज्झिममज्झिमगेवेज्जगदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२८१. मज्झिममज्झिमगेवेज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं छव्वीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२८२. मज्झिमउवरिमगेवेज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ॥

२८३. मज्झिमउवरिमगेवेज्जगदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२८४. मज्झिमउवरिमगेवेज्जगदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं।

२८५. उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ॥

२८६. उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जगदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२८७. उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जगदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२८८. उवरिममज्झिमगेवेज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं ॥

२८९. उवरिममज्झिमगेवेज्जगदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२९०. उवरिममज्झिमगेवेज्जगदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२९१. उवरिमउवरिमगेवेज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ॥

२९२. उवरिमउवरिमगेवेज्जगदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२९३. उवरिमउवरिमगेवेज्जगदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

२९४. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिएसु णं भंते! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

२९५. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२९६. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

२९७. सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं[1] भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

२९८. सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

२९९. सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं पज्जत्ताणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ठिती पण्णत्ता ॥

१. सव्वट्ठगसिद्धदेवाणं (ख); सव्वट्ठगसिद्धगदेवाणं (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमं विसेसपयं

पज्जव-पदं

१. कतिविहा णं भंते ! पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पज्जवा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपज्जवा य अजीवपज्जवा य ॥

जीवपज्जव-पदं

२. जीवपज्जवा णं भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥

३. से केणट्ठे णं भंते ! एवं वुच्चति—जीवपज्जवा नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ? गोयमा ! असंखेज्जा नेरइया, असंखेज्जा असुरा, असंखेज्जा णागा, असंखेज्जा सुवण्णा, असंखेज्जा विज्जुकुमारा, असंखेज्जा अग्गिकुमारा, असंखेज्जा दीवकुमारा, असंखेज्जा उदहिकुमारा, असंखेज्जा दिसाकुमारा, असंखेज्जा वाउकुमारा, असंखेज्जा थणियकुमारा, असंखेज्जा पुढविकाइया, असंखेज्जा आउकाइया, असंखेज्जा तेउकाइया, असंखेज्जा वाउकाइया, अणंता वणस्सइकाइया, असंखेज्जा बेइंदिया, असंखेज्जा तेइंदिया, असंखेज्जा चउरिंदिया, असंखेज्जा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया, असंखेज्जा मणुस्सा, असंखेज्जा वाणमंतरा, असंखेज्जा जोइसिया, असंखेज्जा वेमाणिया, अणंता सिद्धा, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—ते णं नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥

नेरइयाणं पज्जव-पदं

४. नेरइयाणं भंते ! केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! नेरइए नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए सिए हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जदि[1] हीणे असंखेज्जभागहीणे[2] वा संखेज्जभागहीणे[3] वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखेज्जभागमब्भहिए[4] वा संखेज्जभागमब्भहिए[5] वा

---

१. जइ (ख,ग,घ) जति (पु)।

२. असंखेज्जइभाग° (क, ग, घ, पु); अग्रेपि क्वचित्-क्वचित् 'असंखेज्जइ संखेज्जइ' इति पाठान्तरं दृश्यते।

३. संखेज्जदिभाग° (क); संखेज्जइभाग° (ग,घ,पु)।

४. असंखेज्जभागब्भहिए (ख,घ,पु)।

५. संखेज्जभागब्भहिए (ख,घ,पु)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुणमब्भहिए वा। ठिईए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जइ हीणे असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुणमब्भहिए वा। कालवण्णपज्जवेहिं सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए[1]—जदि हीणे अणंतभागहीणे वा असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा अणंतगुणहीणे वा। अह अब्भहिए[2] अणंतभागमब्भहिए वा असंखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुणमब्भहिए वा अणंतगुणमब्भहिए वा। णीलवण्णपज्जवेहिं लोहियवण्णपज्जवेहिं हालिद्दवण्णपज्जवेहिं[3] सुक्किलवण्णपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। सुब्भिगंधपज्जवेहिं दुब्भिगंधपज्जवेहि य छट्ठाणवडिए। तित्तरसपज्जवेहिं कडुयरसपज्जवेहिं कसायरसपज्जवेहिं अंबिलरसपज्जवेहिं महुररसपज्जवेहिं[4] य छट्ठाणवडिए। कक्खडफासपज्जवेहिं मउयफासपज्जवेहिं गरुयफासपज्जवेहिं लहुयफासपज्जवेहिं सीयफासपज्जवेहिं उसिणफासपज्जवेहिं निद्धफासपज्जवेहिं लुक्खफासपज्जवेहिं य छट्ठाणवडिए। आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं सुयणाणपज्जवेहिं ओहिणाणपज्जवेहिं मतिअण्णाणपज्जवेहिं सुयअण्णाणपज्जवेहिं विभंगणाणपज्जवेहिं चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं ओहिदंसणपज्जवेहिं य छट्ठाणवडिते। से एएणट्ठेणं[5] गोयमा! एवं वुच्चति—नेरइयाणं नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता पज्जवा पण्णत्ता।।

भवणवासीणं पज्जव-पदं

६. असुरकुमाराणं भंते! केवतिया पज्जवा पण्णता? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता।।

७. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! असुरकुमारे असुरकुमारस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। ठितीए चउट्ठाणवडिए[6]। कालवण्णपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं णीलवण्णपज्जवेहिं लोहियवण्णपज्जवेहिं हालिद्दवण्णपज्जवेहिं सुक्किलवण्णपज्जवेहिं[7], सुब्भिगंधपज्जवेहिं दुब्भिगंधपज्जवेहिं, तित्तरसपज्जवेहिं कडुयरसपज्जवेहिं कसायरसपज्जवेहिं अंबिलरसपज्जवेहिं महुररसपज्जवेहिं, कक्खडफासपज्जवेहिं मउयफासपज्जवेहिं गरुयफासपज्जवेहिं लहुयफासपज्जवेहिं सीतफासपज्जवेहिं उसिणफासपज्जवेहिं निद्धफासपज्जवेहिं लुक्खफासपज्जवेहिं, आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं सुतणाणपज्जवेहिं ओहिणाणपज्जवेहिं, मतिअण्णाणपज्जवेहिं सुतअण्णाणपज्जवेहिं विभंगणाणपज्जवेहिं, चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं ओहिदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति—असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता।।

---

१. मब्भहिए (ख,घ,पु)।
२. अब्भइए (क); अब्भतिए (पु)।
३. पीयवण्ण° (क,ख)।
४. मधुर° (क,ख)।
५. एणट्ठेणं (क,ख,ग)।
६. °पडिए (क)।
७. सुक्किल्ल° (ग,पु)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. एवं जहा नेरइया जहा[1] असुरकुमारा तहा नागकुमारा वि जाव थणियकुमारा ।।

एगिंदियाणं पज्जव-पदं

९. पुढविकाइयाणं भंते ! केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

१०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! पुढविकाइए पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जदि हीणे असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जभागअब्भहिए वा संखेज्जभागअब्भहिए वा संखेज्जगुणअब्भहिए वा असंखेज्जगुणअब्भहिए वा । ठितीए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जदि हीणे असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जभागअब्भहिए वा संखेज्जभागअब्भहिए वा संखेज्जगुणअब्भहिए वा । वण्णेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहिं, मतिअण्णाणपज्जवेहिं सुयअण्णाणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते ।।

११. आउकाइयाणं भंते ! केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

१२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—आउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! आउकाइए आउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए तिट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रस-फास-मतिअण्णाण-सुतअण्णाण-अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते ।।

१३. तेउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

१४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—तेउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! तेउकाइए तेउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए तिट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रस-फास-मतिअण्णाण-सुयअण्णाण-अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते ।।

१५. वाउकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! वाउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

१६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—वाउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! वाउकाइए वाउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए तिट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रस-फास-मतिअण्णाण-सुयअण्णाण-अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते ।।

१७. वणस्सइकाइयाणं भंते ! केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

१८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—वणस्सइकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! वणस्सइकाइए वणस्सइकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए तिट्ठाणवडिए । वण्ण-गंध-रस-फास-मतिअण्णाण-

१. तहा (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुयअण्णाण-अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति— वणस्सतिकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥

विगलिंदियाणं पज्जव-पदं

१९. बेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥

२०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! बेइंदिए बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जति हीणे असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुणमब्भहिए वा। ठितीए तिट्ठाणवडिते। वण्ण-गंध-रस-फास-आभिणिबोहियणाण-सुतणाण-मतिअण्णाण-सुतअण्णाण-अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते॥

२१. एवं तेइंदिया वि। एवं चउरिंदिया वि, णवरं—दो दंसणा—चक्खुदंसणं अचक्खुदंसणं च॥

पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जव-पदं

२२. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जवा जहा[1] नेरइयाणं तहा भाणितव्वा॥

मणुस्साणं पज्जव-पदं

२३. मणुस्साणं भंते ! केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥

२४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! मणुस्से मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पएसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए चउट्ठाणवडिते। वण्ण-गंध-रस-फास-आभिणिबोहियणाण-सुतणाण-ओहिणाण-मणपज्जवणाणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते। केवलणाणपज्जवेहिं तुल्ले। तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते। केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले॥

वाणमंतराणं पज्जव-पदं

२५. वाणमंतरा ओगाहणट्ठयाए ठितीए य चउट्ठाणवडिया, वण्णादीहिं छट्ठाणवडिता॥

जोइसिय-वेमाणियाणं पज्जव-पदं

२६. जोइसिय-वेमाणिया वि एवं चेव, णवरं—ठितीए तिट्ठाणवडिता॥

ओगाहणाइं पडुच्च नेरइयाणं पज्जव-पदं

२७. जहण्णोगाहणगाणं भंते ! नेरइयाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥

२८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जहण्णोगाहणगाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए नेरइए जहण्णोगाहणगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पएसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए तुल्ले। ठितीए चउट्ठाणवडिते। वण्ण-गंध-रस-फास-

---

१. प० ५।४,५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जवेहिं तिहिं णाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहि य छट्ठाणवडिते ।।

२९. उक्कोसोगाहणयाणं भंते ! नेरइयाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

३०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति - उक्कोसोगाहणयाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! उक्कोसोगाहणए नेरइए उक्कोसोगाहणगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जति हीणे असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जभागअब्भहिए वा संखेज्जभागअब्भहिए वा । वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं तिहिं णाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते ।।

३१. अजहण्णुक्कोसोगाहणगाणं भंते ! नेरइयाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।

३२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—अजहण्णुक्कोसोगाहणगाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहण्णुक्कोसोगाहणए नेरइए अजहण्णुक्कोसोगाहणगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए सिए हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जति हीणे असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जभागअब्भहिए वा संखेज्जभागअब्भहिए वा संखेज्जगुणअब्भहिए वा असंखेज्जगुणअब्भहिए वा । ठितीए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जति हीणे असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जभागअब्भहिए वा संखेज्जभागअब्भहिए वा संखेज्जगुणअब्भहिए वा असंखेज्जगुणअब्भहिए वा । वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं तिहिं णाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—अजहण्णुक्कोसोगाहणगाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।

३३. जहण्णट्ठितीयाणं भंते ! नेरइयाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

३४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णट्ठितीयाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णट्ठितीए नेरइए जहण्णट्ठितीयस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए तुल्ले । वण्ण-गंध-रस-फास-पज्जवेहिं तिहिं णाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहि य छट्ठाणवडिते ।।

३५. एवं उक्कोसट्ठितीए वि । अजहण्णमणुक्कोसट्ठितीए[1] वि एवं चेव, णवरं—सट्ठाणे चउट्ठाणवडिते ।।

३६. जहण्णगुणकालयाणं भंते ! नेरइयाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

३७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जहण्णगुणकालयाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए नेरइए जहण्णगुणकालगस्स नेरइयस्स

---

१. अजहण्णुक्कोस° (ध,पु) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए चउट्ठाणवडिते। कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले। अवसेसेहिं वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं तिहिं णाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहि य छट्ठाणवडिते। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति— जहण्णगुणकालयाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥

३८. एवं उक्कोसगुणकालए वि। अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, णवरं— कालवण्णपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते॥

३९. एवं अवसेसा चत्तारि वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणितव्वा॥

४०. जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं भंते! नेरइयाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥

४१. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति— जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णाभिणिबोहियणाणी नेरइए जहण्णाभिणिबोहियणाणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए चउट्ठाणवडिते। वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते। आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले। सुतणाण-ओहिणाणपज्जवेहिं[1] छट्ठाणवडिते। तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते॥

४२. एवं उक्कोसाभिणिबोहियणाणी वि। अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणी वि एवं चेव, नवरं—आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं सट्ठाणे छट्ठाणवडिते॥

४३. एवं सुतणाणी ओहिणाणी वि, णवरं—जस्स णाणा तस्स अण्णाणा णत्थि। जहा नाणा तहा अण्णाणा वि भाणितव्वा, नवरं—जस्स अण्णाणा तस्स नाणा न भवंति॥

४४. जहण्णचक्खुदंसणीणं भंते! नेरइयाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥

४५. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति जहण्णचक्खुदंसणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णचक्खुदंसणी णं नेरइए जहण्णचक्खुदंसणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए चउट्ठाणवडिते। वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं तिहिं णाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं छट्ठाणवडिते। चक्खुदंसणपज्जवेहिं तुल्ले। अचक्खुदंसणपज्जवेहिं ओहिदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते॥

४६. एवं उक्कोसचक्खुदंसणी वि। अजहण्णमणुक्कोसचक्खुदंसणी वि एवं चेव, नवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते॥

४७. एवं अचक्खुदंसणी वि ओहिदंसणी वि॥

ओगाहणाइं पडुच्च भवणवासीणं पज्जव-पदं

४८. जहण्णोगाहणगाणं भंते! असुरकुमाराणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥

४९. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति—जहण्णोगाहणगाणं असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णोगाहणए असुरकुमारे जहण्णोगाहणगस्स असुरकुमारस्स

---

१. ओधिनाण° (पु)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए तुल्ले। ठितीए चउट्ठाणवडिते। वण्णादीहिं छट्ठाणवडिते। आभिणिबोहियणाण-सुतणाण-ओहिणाणपज्जवेहिं तिहिं अण्णाणेहिं दंसणेहि य छट्ठाणवडिते॥

५०. एवं उक्कोसोगाहणए वि। एवं अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए[1] वि, नवरं—उक्कोसोगाहणए वि असुरकुमारे ठितीए चउट्ठाणवडिते॥

५१. एवं जाव[2] थणियकुमारा॥

ओगाहणाइं पडुच्च एगिंदियाणं पज्जव-पदं

५२. जहण्णोगाहणगाणं भंते! पुढविकाइयाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥

५३. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति—जहण्णोगाहणगाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णोगाहणए पुढविकाइए जहण्णोगाहणगस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए तुल्ले। ठितीए तिट्ठाणवडिते। वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते॥

५४. एवं उक्कोसोगाहणए वि। अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए वि एवं चेव, नवरं—सट्ठाणे चउट्ठाणवडिते॥

५५. जहण्णट्ठितीयाणं भंते! पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥

५६. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति—जहण्णट्ठितीयाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णठितीए पुढविकाइए जहण्णठितीयस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए तुल्ले। वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं मतिअण्णाण-सुतअण्णाण-अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते॥

५७. एवं उक्कोसट्ठितीए वि। अजहण्णमणुक्कोसट्ठितीए वि एवं चेव, णवरं—सट्ठाणे तिट्ठाणवडिते॥

५८. जहण्णगुणकालयाणं भंते! पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥

५९. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति—जहण्णगुणकालयाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णगुणकालए पुढविकाइए जहण्णगुणकालगस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए तिट्ठाणवडिते। कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले। अवसेसेहिं वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते। दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते॥

६०. एवं उक्कोसगुणकालए वि। अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, णवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते॥

६१. एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणितव्वा॥

---

१. अणुक्कोसजहण्णोगाहणए (ख)।

२. अत्र यावत्शब्देन असुरकुमारालापके स्थित्यादीनां ग्रहणं तथा शेषभवनवासिनिकायानां ग्रहणं च जायते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२. जहण्णमतिअण्णाणीणं भंते ! पुढविकाइयाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

६३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जहण्णमतिअण्णाणीणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णमतिअण्णाणी पुढविकाइए जहण्णमतिअण्णाणिस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए तिट्ठाणवडिते। वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते। मतिअण्णाणपज्जवेहिं तुल्ले। सुयअण्णाणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते ॥

६४. एवं उक्कोसमतिअण्णाणी वि। अजहण्णमणुक्कोसमतिअण्णाणी वि एवं चेव, नवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

६५. एवं सुयअण्णाणी वि। अचक्खुदंसणी वि एवं चेव ॥

६६. एवं जाव वणस्सइकाइयाणं ॥

ओगाहणाइं पडुच्च विगलिंदियाणं पज्जव-पदं

६७. जहण्णोगाहणगाणं भंते ! बेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

६८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जहण्णोगाहणगाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए बेइंदिए जहण्णोगाहणगस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पएसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए तुल्ले। ठितीए तिट्ठाणवडिते। वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं दोहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते ॥

६९. एवं उक्कोसोगाहणए वि, णवरं—णाणा णत्थि। अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए जहा जहण्णोगाहणए, णवरं—सट्ठाणे ओगाहणाए चउट्ठाणवडिते ॥

७०. जहण्णट्ठितीयाणं भंते ! बेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

७१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जहण्णट्ठितीयाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णट्ठितीए बेइंदिए जहण्णट्ठितीयस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए तुल्ले। वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते ॥

७२. एवं उक्कोसट्ठितीए वि, णवरं—दो णाणा अब्भहिया। अजहण्णमणुक्कोसट्ठितीए जहा उक्कोसट्ठितीए, णवरं—ठितीए तिट्ठाणवडिते ॥

७३. जहण्णगुणकालयाणं बेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

७४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जहण्णगुणकालयाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए बेइंदिए जहण्णगुणकालयस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए तिट्ठाणवडिते। कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले। अवसेसेहिं वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं दोहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते ॥

७५. एवं उक्कोसगुणकालए वि। अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, णवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७६. एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणितव्वा ।।

७७. जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं भंते ! बेंदियाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

७८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णाभिणिबोहियणाणी बेइंदिए जहण्णाभिणिबोहियणाणिस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए तिट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते । आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले । सुयणाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते । अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते ।।

७९. एवं उक्कोसाभिणिबोहियणाणी वि । अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणी वि एवं चेव, णवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ।।

८०. एवं सुतणाणी वि, सुतअण्णाणी वि, मतिअण्णाणी वि, अचक्खुदंसणी वि, णवरं— जत्थ णाणा तत्थ अण्णाणा णत्थि, जत्थ अण्णाणा तत्थ णाणा णत्थि । जत्थ दंसणं तत्थ णाणा वि अण्णाणा वि ।।

८१. एवं तेइंदियाण वि । चउरिंदियाण वि एवं चेव, णवरं—चक्खुदंसणं अब्भहियं ।।

ओगाहणाइं पडुच्च पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जव-पदं

८२. जहण्णोगाहणगाणं भंते ! पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

८३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जहण्णोगाहणगाणं पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए पंचेंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णोगाहणयस्स पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए तिट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं दोहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं दोहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते ।।

८४. उक्कोसोगाहणए वि एवं चेव, णवरं—तिहिं णाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते । जहा उक्कोसोगाहणए तहा अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए वि, णवरं—ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठिईए चउट्ठाणवडिए ।।

८५. जहण्णट्ठितीयाणं भंते ! पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

८६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णट्ठितीए पंचेंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णट्ठितीयस्स पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए तुल्ले । वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं दोहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते ।।

८७. उक्कोसट्ठितीए वि एवं चेव, नवरं—दो नाणा दो अण्णाणा दो दंसणा । अजहण्णमणुक्कोसट्ठितीए वि एवं चेव, नवरं—ठितीए चउट्ठाणवडिते । तिण्णि णाणा, तिण्णि अण्णाणा, तिण्णि दंसणा ।

८८. जहण्णगुणकालगाणं भंते ! पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जवा पण्णत्ता ॥

८९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए पंचेंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णगुणकालगस्स पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले । अवसेसेहिं वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं तिहिं णाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते ॥

९०. एवं उक्कोसगुणकालए वि । अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, णवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

९१. एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणियव्वा[1] ॥

९२. जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं भंते ! पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

९३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णाभिणिवोहियणाणी पंचेंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णाभिणिबोहियणाणिस्स पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते । आभिणिवोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले । सुयणाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते । चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते ॥

९४. एवं उक्कोसाभिणिबोहियणाणी वि, णवरं—ठितीए तिट्ठाणवडिते, तिण्णि णाणा, तिण्णि दंसणा, सट्ठाणे तुल्ले, सेसेसु छट्ठाणवडिते । अजहण्णुक्कोसाभिणिवोहियणाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियणाणी, णवरं— ठितीए चउट्ठाणवडिते । सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

९५. एवं सुतणाणी वि ॥

९६. जहण्णोहिणाणीणं भंते ! पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

९७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णोहिणाणी पंचेंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णोहिणाणिस्स पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए तिट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं आभिणिवोहियणाण-सुतणाणपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते । ओहिणाणपज्जवेहिं तुल्ले । अण्णाणा णत्थि । चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं [ओहिदंसणपज्जवेहि ?][2] य छट्ठाणवडिते ॥

९८. एवं उक्कोसोहिणाणी वि । अजहण्णुक्कोसोहिणाणी वि एवं चेव, नवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

९९. जहा आभिणिवोहियणाणी तहा मतिअण्णाणी सुयअण्णाणी य । जहा ओहिणाणी

---

१. × (क,ख,घ) ।

२. कोष्ठकवर्तिपाठः प्रयुक्तादर्शेषु नोपलभ्यते । आगमोदयसमितिद्वारा प्रकाशिते प्रस्तुतसूत्रे एष पाठो दृश्यते । मुनिपुण्यविजयजीद्वारा सम्पादिते एष पाठान्तरे मुद्रितोऽस्ति । अस्यैव पदस्य ११५ सूत्रे जघन्यावधिमनुष्यस्यालापके 'तिहिं दंसणेहिं' इति पाठोऽस्ति; अत्रापि तथैव युज्यते । तेन 'ओहिदंसणपज्जवेहि' इतिपाठो मूले आदृतः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहा विभंगणाणी वि। चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी य जहा आभिणिबोहियणाणी। ओहिदंसणी जहा ओहिणाणी। जत्थ णाणा तत्थ अण्णाणा णत्थि, जत्थ अण्णाणा तत्थ णाणा णत्थि, जत्थ दंसणा तत्थ णाणा वि अण्णाणा वि अत्थि त्ति भाणितव्वं ॥

ओगाहणाइं पडुच्च मणुस्साणं पज्जव-पदं

१००. जहण्णोगाहणगाणं भंते ! मणुस्साणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

१०१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णोगाहणगाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए मणुस्से[1] जहण्णोगाहणगस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए तुल्ले। ठितीए तिट्ठाणवडिते। वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं तिहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते ॥

१०२. उक्कोसोगाहणए वि एवं चेव, नवरं—ठितीए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जदि हीणे असंखेज्जभागहीणे। अह अब्भहिए असंखेज्जभागमब्भहिए। दो णाणा दो अण्णाणा दो दंसणा। अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए वि एवं चेव, णवरं—ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए चउट्ठाणवडिते। आइल्लेहिं चउहिं नाणेहिं छट्ठाणवडिते। केवलणाणपज्जवेहिं तुल्ले। तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते। केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले ॥

१०३. जहण्णट्ठितीयाणं भंते ! मणुस्साणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

१०४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णट्ठितीए मणुस्से जहण्णट्ठितीयस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए तुल्ले। वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं दोहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते ॥

१०५. एवं उक्कोसट्ठितीए वि, नवरं—दो णाणा, दो अण्णाणा, दो दंसणा। अजहण्णमणुक्कोसट्ठितीए वि एवं चेव, नवरं—ठितीए चउट्ठाणवडिते। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। आदिल्लेहिं चउनाणेहिं छट्ठाणवडिते। केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले। तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते। केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले ॥

१०६. जहण्णगुणकालयाणं भंते ! मणुस्साणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

१०७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए मणुस्से जहण्णगुणकालगस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए चउट्ठाणवडिते। कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले। अवसेसेहिं वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते। चउहिं णाणेहिं छट्ठाणवडिते। केवलणाणपज्जवेहिं तुल्ले। तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते। केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले ॥

१०८. एवं उक्कोसगुणकालए वि। अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, नवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

---

१. मणूसे (क,ख,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०९. एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा भाणितव्वा ।।

११०. जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं भंते ! मणुस्साणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

१११. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णाभिणिबोहियणाणी मणुस्से जहण्णाभिणिबोहियणाणिस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं छट्ठाण-वडिते । आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले । सुतणाणपज्जवेहिं तुल्ले । दोहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते ।।

११२. एवं उक्कोसाभिणिबोहियणाणी वि, नवरं—आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले । ठितीए तिट्ठाणवडिते । तिहिं णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिते । अजहण्णमणु-क्कोसाभिणिबोहियणाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियणाणी, णवरं—ठितीए चउट्ठाणवडिते । सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ।।

११३. एवं सुतणाणी वि ।।

११४. जहण्णोहिणाणीणं भंते ! मणुस्साणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

११५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णोहिणाणी मणुस्से जहण्णोहिणाणिस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए तिट्ठाण-वडिते[1] । ठिईए तिट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं छट्ठाणवडिए । ओहिणाणपज्जवेहिं तुल्ले । मणपज्जवणाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । तिहिं दंसणेहिं छट्ठाण-वडिए ।।

११६. एवं उक्कोसोहिणाणी वि । अजहण्णमणुक्कोसोहिणाणी वि एवं चेव, णवरं—'ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते'[2] सट्ठाणे छट्ठाणवडिए ।।

११७. जहा ओहिणाणी तहा मणपज्जवणाणी वि भाणितव्वे, नवरं—ओगाहणट्ठयाए तिट्ठाणवडिए । जहा आभिणिबोहियणाणी तहा मतिअण्णाणी सुतअण्णाणी य भाणितव्वे । जहा ओहिणाणी तहा विभंगणाणी वि भाणियव्वे । चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी य जहा आभिणिबोहियणाणी । ओहिदंसणी जहा ओहिणाणी । जत्थ णाणा तत्थ अण्णाणा णत्थि, जत्थ अण्णाणा तत्थ णाणा णत्थि, जत्थ दंसणा तत्थ णाणा वि अण्णाणा वि ।।

११८. केवलणाणीणं भंते ! मणुस्साणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

११९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—केवलणाणीणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! केवलनाणी मणुस्से केवलणाणिस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेस-ट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए तिट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रस-फास-पज्जवेहिं छट्ठाणवडिते । केवलणाणपज्जवेहिं केवलदंसणपज्जवेहि य तुल्ले ।।

---

१. चउट्ठाणवडिते (ख,घ); वृत्तौ स्वीकृतपाठस्य संवादिविवरणं दृश्यते—जघन्यावधिरुत्कृष्टावधिर्वाऽवगाहनया त्रिस्थानपतितः (मवृ) ।

२. × (ख,घ,पु) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२०. एवं केवलदंसणी वि मणुस्से भाणियव्वे ।।

ओगाहणाइं पडुच्च वाणमंतराईणं पज्जव-पदं

१२१. वाणमंतरा जहा असुरकुमारा ।।

१२२. एवं जोइसिया वेमाणिया, नवरं—सट्ठाणे ठितीए तिट्ठाणवडिते भाणितव्वे। से त्तं जीवपज्जवा ।।

अजीवपज्जव-पदं

१२३. अजीवपज्जवा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवपज्जवा य अरूविअजीवपज्जवा य ।

१२४. अरूविअजीवपज्जवा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए ।।

१२५. रूविअजीवपज्जवा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा[1] पण्णत्ता, तं जहा—खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गले ।।

१२६. ते णं भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ।।

१२७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ? गोयमा ! अणंता परमाणुपोग्गला, अणंता दुपदेसिया खंधा जाव अणंता दसपदेसिया खंधा, अणंता संखेज्जपदेसिया खंधा, अणंता असंखेज्जपदेसिया खंधा, अणंता अणंतपदेसिया खंधा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति ते णं नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा अणंता ।।

१२८. परमाणुपोग्गलाणं भंते ! केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! परमाणुपोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ।।

१२९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—परमाणुपोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाते तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जदि हीणे असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुणमब्भहिए वा । कालवण्णपज्जवेहिं सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जदि हीणे अणंतभागहीणे वा असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा अणंतगुणहीणे वा । अह अब्भहिए अणंतभागमब्भहिए वा असंखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुणमब्भहिए वा अणंतगुणमब्भहिए वा । एवं अवसेसवण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते । फासा णं सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खेहिं छट्ठाणवडिते[2] । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—परमाणुपोग्गलाणं अणंता

---

१. चउविहा (क) ।

२. असौ पाठः 'फासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते' इति पूर्ववर्तिपाठस्य व्याख्यारूपो दृश्यते । 'फासा' इति प्रथमान्तं पदम्, अस्य 'लुक्खेहिं' इति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जवा पण्णत्ता ॥

१३०. दुपदेसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

१३१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! दुपदेसिए दुपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जदि हीणे पदेसहीणे । अह अब्भहिए पदेसमब्भहिए । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णादीहिं उवरिल्लेहिं चउहिं फासेहि य छट्ठाणवडिते ॥

१३२. एवं तिपएसिए वि, नवरं—ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जदि हीणे पएसहीणे वा दुपएसहीणे वा । अह अब्भहिए पएसमब्भहिए वा दुपएसमब्भहिए वा । एवं जाव दसपएसिए, नवरं—ओगाहणाए पएसपरिवुड्ढी कायव्वा जाव दसपएसिए णवपएसहीणे त्ति ॥

१३३. संखेज्जपदेसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

१३४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! संखेज्जपएसिए खंधे संखेज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जदि हीणे संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए एवं चेव । ओगाहणट्ठयाए वि दुट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णादि उवरिल्लचउफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते ॥

१३५. असंखेज्जपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

१३६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! असंखेज्जपएसिए खंधे असंखेज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णादि-उवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिते ॥

१३७. अणंतपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

१३८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे अणंतपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते ॥

१३९. एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

१४०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णादि-उवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिते ॥

१४१. एवं दुपएसोगाढे वि जाव दसपएसोगाढे ॥

१४२. संखेज्जपएसोगाढाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

१४३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! संखेज्जपएसोगाढे पोग्गले

तृतीयान्तपदेन सङ्गतिरपि नास्ति । तथा च वृत्ति—परमाण्वादीनामसङ्ख्यातप्रदेशस्कन्धपर्यन्तानां केषांचिदनन्तप्रादेशिकानामपि स्कन्धानां तथैकप्रदेशावगाढानां यावत् सङ्ख्यातप्रदेशावगाढानां शीतोष्णस्निग्धरूक्षरूपाश्चत्वार एव स्पर्शा इति तैरेव परमाण्वादीनां षट्स्थानपतितता वक्तव्या, न शेषैः ।

संखेज्जपएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिते। ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिते। ठितीए चउट्ठाणवडिते। वण्णाइ-उवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिते ॥

१४४. असंखेज्जपएसोगाढाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा ॥

१४५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! असंखेज्जपएसोगाढे पोग्गले असंखेज्जपएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिते। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए चउट्ठाणवडिते। वण्णादि-अट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिते ॥

१४६. एगसमयट्ठितीयाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

१४७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! एगसमयट्ठितीए पोग्गले एगसमयट्ठितीयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिते। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए तुल्ले। वण्णादि-अट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिते ॥

१४८. एवं जाव दससमयट्ठिईए। संखेज्जसमयट्ठितीयाणं एवं चेव, नवरं— ठितीए दुट्ठाणवडिते। असंखेज्जसमयट्ठितीयाणं एवं चेव, नवरं— ठिईए चउट्ठाणवडिते।

१४९. एगगुणकालगाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा ॥

१५०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिते। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते। ठितीए चउट्ठाणवडिते। कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले। अवसेसेहिं वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते। 'अट्ठहिं फासेहिं छट्ठाणवडिते' ॥[1]

१५१. एवं जाव दसगुणकालए। संखेज्जगुणकालए वि एवं चेव, नवरं—सट्ठाणे दुट्ठाणवडिते। एवं असंखेज्जगुणकालए वि, णवरं— सट्ठाणे चउट्ठाणवडिते। एवं अणंतगुणकालए वि, नवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

१५२. एवं जहा कालवण्णस्स वत्तव्वया भणिया तहा सेसाण वि वण्ण-गंध-रस-फासाणं वत्तव्वया भाणितव्वा जाव अणंतगुणलुक्खे ॥

१५३. जहण्णोगाहणगाणं भंते ! दुपएसियाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता।

१५४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए दुपएसिए खंधे जहण्णोगाहणगस्स दुपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले। पएसट्ठयाए तुल्ले। ओगाहणट्ठयाए तुल्ले। ठितीए चउट्ठाणवडिते। कालवण्णपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते। सेसवण्ण-गंध-रसपज्जवेहिं[2] छट्ठाणवडिते। सीय-उसिण-णिद्ध-लुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति जहण्णोगाहणगाणं दुपएसियाणं पोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

१५५. उक्कोसोगाहणए वि एवं चेव। अजहण्णमणुक्कोसोगाहणओ नत्थि ॥

१५६. जहण्णोगाहणयाणं भंते ! तिपएसियाणं पुच्छा। गोयमा ! अणंता पज्जवा ॥

१५७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहा दुपएसिए जहण्णो-

१. × (ख); चिह्नाङ्कितपाठः 'फासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते' इति पूर्ववर्तिपाटस्य व्याख्यारूपो दृश्यते।
२. रसफासपज्जवेहिं (ख,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाहणए ।।

१५८. उक्कोसोगाहणए वि एवं चेव । एवं अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए वि ।।

१५९. जहण्णोगाहणयाणं भंते ! चउपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा जहण्णोगाहणए दुपएसिए तहा जहण्णोगाहणए चउपएसिए ।।

१६०. एवं जहा उक्कोसोगाहणए दुपएसिए तहा उक्कोसोगाहणए चउप्पएसिए वि । एवं अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए वि चउप्पएसिए, णवरं–ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए–जदि हीणे पएसहीणे । अह अब्भहिए पएसमब्भहिए[1] ।।

१६१. एवं जाव दसपएसिए णेयव्वं, णवरं–अजहण्णुक्कोसोगाहणए पदेसपरिवुड्ढी कातव्वा जाव दसपएसियस्स सत्त पएसा परिवड्ढिज्जंति ।।

१६२. जहण्णोगाहणगाणं भंते ! संखेज्जपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

१६३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए संखेज्जपएसिए जहण्णोगाहणगस्स संखेज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए दुट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए चउट्ठाणवडिए । वण्णादि-चउफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते ।।

१६४. एवं उक्कोसोगाहणए वि । अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए वि एवं चेव, णवरं–सट्ठाणे दुट्ठाणवडिते ।।

१६५. जहण्णोगाहणगाणं भंते ! असंखेज्जपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

१६६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए असंखेज्जपएसिए खंधे जहण्णोगाहणगस्स असंखेज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णादि-उवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिते ।।

१६७. एवं उक्कोसोगाहणए वि । अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए वि एवं चेव, नवरं–सट्ठाणे चउट्ठाणवडिते ।।

१६८. जहण्णोगाहणगाणं भंते ! अणंतपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

१६९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए अणंतपएसिए खंधे जहण्णोगाहणगस्स अणंतपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णादि-उवरिल्लचउफासेहिं छट्ठाणवडिए ।।

१७०. उक्कोसोगाहणए वि एवं चेव, नवरं–ठितीए[2] तुल्ले ।।

१७१. अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगाणं भंते ! अणंतपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

१७२. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए अणंतपएसिए खंधे अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स अणंतपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णादि-अट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिते ।।

---

१. पएसअब्भहिए (क) ।

२. ठितीए वि (क,ख,ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७३. जहण्णट्ठितीयाणं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

१७४. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णट्ठितीए परमाणुपोग्गले जहण्णट्ठितीयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए तुल्ले । वण्णादि-दुफासेहि य छट्ठाणवडिते ।।

१७५. एवं उक्कोसट्ठितीए वि । अजहण्णमणुक्कोसट्ठितीए वि एवं चेव, नवरं--ठितीए चउट्ठाणवडिते ।।

१७६. जहण्णट्ठितीयाणं दुपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

१७७. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णट्ठितीए दुपएसिए जहण्णट्ठितीयस्स दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जदि हीणे पदेसहीणे । अह अब्भहिए पदेसमब्भहिए । ठितीए तुल्ले । वण्णादि-चउफासेहि य छट्ठाणवडिते ।।

१७८. एवं उक्कोसट्ठितीए वि । अजहण्णमणुक्कोसट्ठितीए वि एवं चेव, नवरं—ठितीए चउट्ठाणवडिते ।।

१७९. एवं जाव दसपदेसिए नवरं—पदेसपरिवुड्ढी कातव्वा । ओगाहणट्ठयाए तिसु वि गमएसु जाव दसपएसिए णव पएसा वड्ढिज्जंति[1] ।।

१८०. जहण्णट्ठितीयाणं भंते ! संखेज्जपदेसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

१८१. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णट्ठितीए संखेज्जपदेसिए खंधे जहण्णट्ठितीयस्स संखेज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए दुट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिते । ठितीए तुल्ले । वण्णादि-उवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिते ।।

१८२. एवं उक्कोसट्ठितीए वि । अजहण्णमणुक्कोसट्ठितीए वि एवं चेव, नवरं—ठितीए चउट्ठाणवडिते ।।

१८३. जहण्णट्ठितीयाणं असंखेज्जपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

१८४. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णट्ठितीए असंखेज्जपएसिए जहण्णट्ठितीयस्स असंखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए तुल्ले । वण्णादि-उवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिते ।।

१८५. एवं उक्कोसट्ठिईए वि । अजहण्णमणुक्कोसट्ठितीए वि एवं चेव, नवरं—ठितीए चउट्ठाणवडिते ।।

१८६. जहण्णट्ठितीयाणं अणंतपदेसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

१८७. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णट्ठितीए अणंतपएसिए जहण्णट्ठितीयस्स अणंतपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए तुल्ले । वण्णादि-अट्ठफासेहि य छट्ठाणवडिते ।।

१८८. एवं उक्कोसट्ठितीए वि । अजहण्णमणुक्कोसट्ठितीए वि एवं चेव, नवरं—ठितीए चउट्ठाणवडिते ।।

१८९. जहण्णगुणकालयाणं परमाणुपोग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

---

१. वुड्ढिज्जंति (क,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९०. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए परमाणुपोग्गले जहण्णगुणकालगस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए चउट्ठाणवडिते । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले । अवसेसा वण्णा णत्थि, गंध-रस-दुफासपज्जवेहि[1] य छट्ठाणवडिते ।

१९१. एवं उक्कोसगुणकालए वि । एवमजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि, णवरं--सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

१९२. जहण्णगुणकालयाणं भंते ! दुपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

१९३. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए दुपएसिए जहण्णगुणकालगस्स दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए --जदि हीणे पदेसहीणे । अह अब्भहिए पएसमब्भहिए । ठितीए चउट्ठाणवडिते । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले । अवसेसवण्णादि-उवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिते ॥

१९४. एवं उक्कोसगुणकालए वि । अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि एवंचेव, नवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ।

१९५. एवं जाव दसपएसिए, णवरं -- दस पएसपरिवुड्ढी, ओगाहणा तहेव ॥

१९६. जहण्णगुणकालयाणं भंते ! संखेज्जपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

१९७. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए संखेज्जपएसिए जहण्णगुणकालगस्स संखेज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए दुट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णादि-उवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिते ।

१९८. एवं उक्कोसगुणकालए वि । एवं अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि, नवरं--सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

१९९. जहण्णगुणकालयाणं भंते ! असंखेज्जपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

२००. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए असंखेज्जपएसिए जहण्णगुणकालगस्स असंखेज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले । अवसेसेहिं वण्णादि-उवरिल्लचउफासेहि य छट्ठाणवडिते ॥

२०१. एवं उक्कोसगुणकालए वि । अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, णवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

२०२. जहण्णगुणकालयाणं भंते ! अणंतपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

२०३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए अणंतपएसिए जहण्णगुणकालयस्स अणंतपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले । अवसेसेहिं वण्णादि-अट्ठफासेहि य छट्ठाणवडिते ॥

२०४. एवं उक्कोसगुणकालए वि । अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, नवरं—

१. फासपज्जवेहि (ख,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ।।

२०५. एवं नील-लोहित-हालिद्द-सुक्किल-सुब्भिगंध-दुब्भिगंध-तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-महुररसपज्जवेहि य वत्तव्वया भाणियव्वा, नवरं—परमाणुपोग्गलस्स सुब्भिगंधस्स दुब्भिगंधो न भण्णति, दुब्भिगंधस्स सुब्भिगंधो न भण्णति, तित्तस्स अवसेसा ण भण्णंति। एवं कडुयादीण वि । सेसं[1] तं चेव ।।

२०६. जहण्णगुणकक्खडाणं अणंतपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

२०७. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणकक्खडे अणंतपएसिए जहण्णगुण-कक्खडस्स अणंतपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रसेहिं छट्ठाणवडिते । कक्खडफासपज्ज-वेहिं तुल्ले । अवसेसेहिं सत्तफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते ।।

२०८. एवं उक्कोसगुणकक्खडे वि । अजहण्णमणुक्कोसगुणकक्खडे वि एवं चेव, नवरं— सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ।।

२०९. एवं मउय-गरुय-लहुए वि भाणितव्वे ।।

२१०. जहण्णगुणसीयाणं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

२११. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणसीते परमाणुपोग्गले जहण्णगुणसीतस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए चउट्ठाणवडिते वण्ण-गंध-रसेहिं छट्ठाणवडिते । सीतफासपज्जवेहि य तुल्ले । उसिणफासो न भण्णति । णिद्ध-लुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते ।।

२१२. एवं उक्कोसगुणसीते वि । अजहण्णमणुक्कोसगुणसीते वि एवं चेव, नवरं— सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ।

२१३. जहण्णगुणसीयाणं दुपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

२१४. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणसीते दुपएसिए जहण्णगुणसीयस्स दुपएसिस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जइ हीणे पएसहीणे । अह अब्भहिए पएसमब्भहिए । ठिईए चउट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रसपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते । सीतफासपज्जवेहिं तुल्ले । उसिण-निद्ध-लुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते ।।

२१५. एवं उक्कोसगुणसीए वि । अजहण्णमणुक्कोसगुणसीते वि एवं चेव, नवरं— सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ।।

२१६. एवं जाव दसपएसिए, नवरं—ओगाहणट्ठयाए पदेसपरिवुड्ढी[2] कायव्वा जाव दसपएसियस्स णव पएसा वड्ढिज्जंति ।।

२१७. जहण्णगुणसीयाणं संखेज्जपएसियाणं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! अणंता ।।

२१८. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणसीते संखेज्जपएसिए जहण्णगुणसीयस्स संखेज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए दुट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णाईहिं छट्ठाणवडिते । सीतफासपज्जवेहिं तुल्ले । उसिण-निद्ध-

---

१. अवसेसं (क) । २. परिवड्ढी (क) ।

लुक्खेहिं छट्ठाणवडिते ॥

२१९. एवं उक्कोसगुणसीए वि । अजहण्णमणुक्कोसगुणसीए वि एवं चेव, नवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

२२०. जहण्णगुणसीताणं असंखेज्जपएसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

२२१. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणसीते असंखेज्जपएसिए जहण्णगुणसीयस्स असंखेज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण-वडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णादिपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते । सीतफासपज्जवेहिं तुल्ले । उसिण-निद्ध-लुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते ॥

२२२ एवं उक्कोसगुणसीते वि । अजहण्णमणुक्कोसगुणसीते वि एवं चेव, नवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

२२३. जहण्णगुणसीताणं अणंतपदेसियाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

२२४. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणसीते अणंतपदेसिए जहण्णगुणसीतस्स अणंतपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण-वडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णादिपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते । सीतफासपज्जवेहिं तुल्ले । अवसेसेहिं सत्तफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते ॥

२२५. एवं उक्कोसगुणसीते वि । अजहण्णमणुक्कोसगुणसीते वि एवं चेव, नवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

२२६. एवं उसिणे निद्धे लुक्खे जहा सीते । परमाणुपोग्गलस्स तहेव पडिवक्खो, सव्वेसिं न भण्णइ त्ति भाणितव्वं[1] ॥

२२७. जहण्णपदेसियाणं भंते ! खंधाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

२२८. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णपदेसिते खंधे जहण्णपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए—जदि हीणे पदेसहीणे । अह अब्भहिए पदेसमब्भहिए । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्ण-गंध-रस-उवरिल्लचउफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते ॥

२२९. उक्कोसपएसियाणं भंते ! खंधाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

२३०. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! उक्कोसपएसिए खंधे उक्कोसपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पएसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाण-वडिते । वण्णादि-अट्ठफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते ॥

२३१. अजहण्णमणुक्कोसपदेसियाणं भंते ! खंधाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता ॥

२३२. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसपदेसिए खंधे अजहण्णमणुक्कोस-पदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण-वडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णादि-अट्ठफासपज्जवेहि य छट्ठाणवडिते ॥

२३३. जहण्णोगाहणगाणं भंते ! पोग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

---

१. भाणितव्वं । साम्प्रतं सामान्यसूत्रमारभ्यते (क,ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३४. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए पोग्गले जहण्णोगाहणगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णादि-उवरिल्लफासेहिं य छट्ठाणवडिते ॥

२३५. उक्कोसोगाहणए वि एवं चेव, नवरं—ठितीए तुल्ले ॥

२३६. अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगाणं भंते ! पोग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

२३७. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । वण्णादि-अट्ठफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिते ॥

२३८. जहण्णट्ठितीयाणं भंते ! पोग्गलाणं पुच्छा । गोयमा ! अणंता ॥

२३९. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णट्ठितीए पोग्गले जहण्णट्ठितीयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए तुल्ले । वण्णादि-अट्ठफासपज्जवेहिं य छट्ठाणवडिते ॥

२४०. एवं उक्कोसट्ठितीए वि । अजहण्णमणुक्कोसट्ठितीए वि एवं चेव, नवरं—ठितीए[1] चउट्ठाणवडिते ॥

२४१. जहण्णगुणकालयाणं भंते ! पोग्गलाणं केवतिया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता ॥

२४२. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए पोग्गले जहण्णगुणकालयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिते । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिते । ठितीए चउट्ठाणवडिते । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले । अवसेसेहिं वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवेहिं य छट्ठाणवडिते । से एएणट्ठेणं[2] गोयमा ! एवं वुच्चति जहण्णगुणकालयाणं पोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥

२४३. एवं उक्कोसगुणकालए वि । अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि एवं चेव, नवरं—सट्ठाणे छट्ठाणवडिते ॥

२४४. एवं जहा कालवण्णपज्जवाणं वत्तव्वया भणिता तहा सेसाण वि वण्ण-गंध-रस-फासपज्जवाणं[3] वत्तव्वया भणितव्वा जाव अजहण्णमणुक्कोसलुक्खे सट्ठाणे छट्ठाणवडिते । से त्तं रूविअजीवपज्जवा । से त्तं अजीवपज्जवा ॥

---

१. ठितीए वि (क) ।

२. एणट्ठेणं (क,ख); तेणट्ठेणं (ग) ।

३. फासाणं (क,ख,ग,घ) ।

छट्ठं वक्कंतिपयं

गाहा—

> १ 'बारस २ चउवीसाइं',[1] ३ सअंतरं ४ एगसमय ५ कत्तो य ।
> ६ उव्वट्टण ७ परभवियाउयं ८ च अट्ठेव आगरिसा ॥१॥

बारसदारं

उववाय-उव्वट्टणा-विरह-पदं

१. निरयगती णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥

२. तिरियगती[2] णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥

३. मणुयगती णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥

४. देवगती णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥

५. सिद्धगती णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया सिज्झणयाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

६. निरयगती णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उव्वट्टणयाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥

७. तिरियगती णं भंते ! केवतियं कालं विरहिता उव्वट्टणयाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥

८. मणुयगती णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उव्वट्टणाए[3] पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥

९. देवगती णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उव्वट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥

---

१. बारस य चउवीसा (क,ख,ग,घ) ।
२. °गतीया (ख) ।
३. उद्वर्तनया । पूर्वसूत्रयोः 'उव्वट्टणयाए' इति पदमस्ति, तत्र 'या' प्रत्ययः स्वार्थिकोऽस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउवीसाइं दारं

उववाय-उव्वट्टणा-विरह-पदं

१०. रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं[1] समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ॥

११. सक्करप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं सत्त रातिंदियाणि ॥

१२. वालुयप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अद्धमासं ॥

१३ पंकप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं मासं ॥

१४. धूमप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं दो मासा ॥

१५. तमापुढविनेरइया णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चत्तारि मासा ॥

१६. अहेसत्तमापुढविनेरइया णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

१७ असुरकुमारा णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ॥

१८. नागकुमारा णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता । एवं सुवण्णकुमाराणं विज्जुकुमाराणं अग्गिकुमाराणं दीवकुमाराणं 'उदहिकुमाराणं दिसाकुमाराणं'[2] वाउकुमाराणं थणियकुमाराण य 'पत्तेयं-पत्तेयं'[3] जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ॥

१९. पुढविकाइया णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! अणुसमयमविरहियं उववाएणं पण्णत्ता । एवं आउकाइयाण वि तेउकाइयाण वि वाउकाइयाण वि वणप्फइकाइयाण वि अणुसमयं अविरहिया उववाएणं पण्णत्ता ॥

२०. बेइंदिया णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । एवं 'तेइंदिय-चउरिंदिया'[4] ॥

२१. सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

२२. गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥

२३. सम्मुच्छिममणुस्सा णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ॥

---

१. एक्कं (क) ।
२. दिसाकुमाराणं उदहिकुमाराणं (ग,घ) ।
३. पत्तेयं (क,ख,घ) ।
४. 'चउरिंदिय (क,ग,घ); तेइंदियाण चउरिंदियाणं (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. गब्भवक्कंतियमणुस्साणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥

२५. वाणमंतराणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ॥

२६. जोइसियाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ॥

२७. 'सोहम्मकप्पे देवा'[1] णं भंते! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ॥

२८. ईसाणे कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ॥

२९. सणंकुमारदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं नव रातिंदियाइं वीसा य मुहुत्ता ॥

३०. माहिंददेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस राइंदियाइं दस मुहुत्ता।

३१. बंभलोए देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अद्धतेवीसं रातिंदियाइं ॥

३२. लंतगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं पणतालीसं रातिंदियाइं ॥

३३. महासुक्कदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असीतिं रातिंदियाइं ॥

३४. सहस्सारदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं रातिंदियसतं[2] ॥

३५. आणयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जा मासा ॥

३६. पाणयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जा मासा ॥

३७. आरणदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जा वासा ॥

३८. अच्चुयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जा वासा ॥

३९. हेट्ठिमगेवेज्जाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससताइं ॥

४०. मज्झिमगेवेज्जाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं ॥

---

१. सोहम्मकप्पदेवा (क,ग,घ)। २. सोराइंदियाइं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१. उवरिमगेवेज्जगदेवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससतसहस्साइं ॥

४२. विजय-वेजयंत-जयंतापराजियदेवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥

४३. सव्वट्ठसिद्धगदेवा णं भंते ! केवतियं कालं विरहिता उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स संखेज्जइभागं ॥

४४. सिद्धा णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया सिज्झणयाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ।

४५. रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केवतियं कालं विरहिया उव्वट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता ।

४६. एवं सिद्धवज्जा उव्वट्टणा वि भाणितव्वा जाव अणुत्तरोववाइय त्ति, नवरं—जोइसिय-वेमाणिएसु चयणं ति अभिलावो[1] कातव्वो ॥

संतरदारं

उववाय-उव्वट्टणा-पदं

४७. नेरइया णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति ? निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरं पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति ।

४८. तिरिक्खजोणिया णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति ? निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरं पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति ॥

४९. मणुस्सा णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति ? निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरं पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति ॥

५०. देवा णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति ? निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरं पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति ॥

५१. रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति ? निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरं पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति । एवं जाव अहेसत्तमाए संतरं पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति ॥

५२. असुरकुमारा णं भंते ! देवा[2] किं संतरं उववज्जंति ? निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरं पि उववज्जंति ? निरंतरं पि उववज्जंति । एवं जाव थणियकुमारा संतरं पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति ॥

५३. पुढविकाइया णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति ? निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! नो संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति । एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ॥

५४. बेइंदिया णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति ? निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरं पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति । एवं जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिया ॥

५५. मणुस्सा णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति ? निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरं पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति ॥

---

१. अहिलावो (ख,घ) । २. भंते देवा णं (क,ग); देवा णं भंते (ख,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५६. एवं वाणमंतरा जोइसिया सोहम्म-ईसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोय-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-'आरण-अच्चुय'[1]-हेट्ठिमगेवेज्जग-मज्झिमगेवेज्जग-उवरिम-गेवेज्जग-विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजित-सव्वट्ठसिद्धदेवा य संतरं पि उववज्जंति निरंतरं पि उववज्जंति ॥

५७. सिद्धा णं भंते ! किं संतरं सिज्झंति ? निरंतरं सिज्झंति ? गोयमा ! संतरं पि सिज्झंति, निरंतरं पि सिज्झंति ।

५८. नेरइया णं भंते ! किं संतरं उव्वट्टंति ? निरंतरं उव्वट्टंति ? गोयमा ! संतरं पि उव्वट्टंति, निरंतरं पि उव्वट्टंति ॥

५९. एवं जहा उववाओ भणितो तहा उव्वट्टणा वि सिद्धवज्जा भाणितव्वा जाव वेमाणिया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिएसु चयणं ति अभिलावो कातव्वो ॥

एगसमयदारं

उववाय-उव्वट्टणा-पदं

६०. नेरइया णं भंते ! एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

६१. असुरकुमारा णं भंते ! एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा । एवं नागकुमारा जाव थणियकुमारा वि भाणियव्वा ॥

६२. पुढविकाइया णं भंते ! एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा ! अणुसमयं अविरहियं असंखेज्जा उववज्जंति । एवं जाव वाउकाइया ॥

६३. वणस्सतिकाइया णं भंते ! एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? गोयमा ! सट्ठाणुववायं पडुच्च अणुसमयं अविरहिया अणंता उववज्जंति, परट्ठाणुववायं पडुच्च अणुसमयं अविरहिया असंखेज्जा उववज्जंति ॥

६४. बेइंदिया णं भंते ! केवतिया एगसमएणं उववज्जंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एगो वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा ॥

६५. एवं तेइंदिया चउरिंदिया सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया गब्भवक्कंतिय-पंचेंदियतिरिक्खजोणिया सम्मुच्छिममणूस्सा वाणमंतर-जोइसिय-सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोय-लंतग-महासुक्क[2]-सहस्सारकप्पदेवा—एते जहा नेरइया ॥

६६. गब्भवक्कंतियमणूस्सा आणय-पाणय-आरण-अच्चुय-गेवेज्जग-अणुत्तरोववाइया य एते जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति ॥

६७. सिद्धा णं भंते ! एगसमएणं केवतिया सिज्झंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अट्ठसतं ॥

६८. नेरइया णं भंते ! एगसमएणं केवतिया उव्वट्टंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उव्वट्टंति ॥

६९. एवं जहा उववाओ भणितो तहा उव्वट्टणा वि सिद्धवज्जा भाणितव्वा जाव

१. आरणच्चुय (क,ख,ग,घ) । २. सुक्क (ख, ग, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुत्तरोववाइया, णवरं—जोइसिय-वेमाणियाणं चयणेणं अभिलावो कातव्वो ।।

कत्तोदारं

उववाय-उव्वट्टणा-पदं

७०. नेरइया णं भंते ! कत्तोहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ![1] नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति ।।

७१. जदि तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? बेइंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? तेइंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? चउरिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो नो बेइंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो नो तेइंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो नो चउरिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ।

जदि पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति, थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! सम्मुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति, गब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि सम्मुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किंपज्जत्तयसम्मुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तयसम्मुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तयसम्मुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तयसम्मुच्छिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ।

जदि गब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तयगब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ।

जदि थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? परिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति, परिसप्पथलयर-

---

१. गोयमा नेरइया (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि चउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिमेहिंतो उववज्जंति ? गब्भवक्कंतिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! सम्मुच्छिमचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति, गब्भवक्कंतियचउप्पएहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि सम्मुच्छिमचउप्पएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तगसम्मुच्छिमचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तगसम्मुच्छिमचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तगसम्मुच्छिमचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ।

जदि गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउगगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति, नो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ।

जदि संखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तयसंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ।

जदि परिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं उरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? भुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि उरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! सम्मुच्छिमेहिंतो वि उववज्जंति, गब्भवक्कंतिएहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि सम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तगेहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तगेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तगसम्मुच्छिमेहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तगसम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ।

जदि गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो ? अपज्जत्तएहिंतो ? गोयमा ! पज्जत्तगगब्भवक्कंतिएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ।

जदि भुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि सम्मुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तयसम्मुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ।
जदि गब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ।
जदि खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गब्भवक्कंतियखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतो वि उववज्जंति ।
जदि सम्मुच्छिमखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ।
जदि गब्भवक्कंतियखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति, नो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ।
जदि संखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियखहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ।

७२. जदि मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिममणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो सम्मुच्छिममणुस्सेहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ।
जदि गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो[1] उववज्जंति ? अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ।
जदि कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ।
जदि संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ॥

७३. एवं जहा ओहिया उववाइया तहा रयणप्पभापुढविनेरइया वि उववाएयव्वा ॥

७४. सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! एते वि जहा ओहिया तहेवोववाएयव्वा, नवरं—सम्मुच्छिमेहिंतो पडिसेहो कातव्वो ॥

---

१. कम्मभूमिगगब्भ° (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७५. वालुयप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जहा सक्करप्पभापुढविनेरइया, नवरं भुयपरिसप्पेहिंतो वि पडिसेहो कातव्वो ॥

७६. पंकप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा वालुयप्पभापुढविनेरइया, नवरं—खहयरेहिंतो वि पडिसेहो कातव्वो ।

७७. धूमप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा! जहा पंकप्पभापुढविनेरइया, नवरं—चउप्पएहिंतो वि पडिसेहो कातव्वो ।।

७८. तमापुढविनेरइया णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जहा धूमप्पभापुढविनेरइया, नवरं थलयरेहिंतो वि पडिसेहो कातव्वो ।

इमेणं अभिलावेणं जदि पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं जलयरपंचेंदिएहिंतो उववज्जंति ? थलयरपंचेंदिएहिंतो उववज्जंति ? खहयरपंचेंदिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जलयरपंचेंदिएहिंतो उववज्जंति, नो थलयरेहिंतो नो खहयरेहिंतो उववज्जंति ।।

७९. जदि मणूसेहिंतो उववज्जंति किं कम्मभूमएहिंतो अकम्मभूमएहिंतो अंतरदीवएहिंतो ? गोयमा ! कम्मभूमएहिंतो उववज्जंति, नो अकम्मभूमएहिंतो उववज्जंति, नो अंतरदीवएहिंतो ।

जदि कम्मभूमएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति, नो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ।

जदि संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववजंति, नो अपज्जत्तएहिंतो ।

जदि पज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमएहिंतो उववजंति किं इत्थीहिंतो उववज्जंति ? पुरिसेहिंतो उववज्जंति ? नपुंसएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! इत्थीहिंतो वि उववज्जंति, पुरिसेहिंतो वि उववज्जंति, नपुंसएहिंतो वि उववज्जंति ।।

८०. अहेसत्तमापुढविनेरइया णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एवं चेव, नवरं—इत्थीहिंतो पडिसेहो कातव्वो ।

गाहा —

अस्सण्णी खलु पढमं, दोच्चं च सिरीसवा तइय पक्खी ।
सीहा जंति चउत्थि, उरगा पुण पंचमिं[1] पुढविं ।। १ ।।
छट्ठिं च इत्थियाओ, मच्छा मणुया य सत्तमिं पुढविं ।
एसो परमुववाओ, बोधव्वो नरयपुढवीणं ।। २ ।।

८१. असुरकुमारा णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुएहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति । एवं जेहिंतो नेरइयाणं उववाओ तेहिंतो असुरकुमाराण वि भाणितव्वो, नवरं—असंखेज्जवासाउय-अकम्मभूमग-अंतरदीवगमणुस्सतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति । सेसं तं चेव । एवं जाव थणियकुमारा ।।

---

१. पंचमं (क,ख,) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८२. पुढविकाइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो जाव देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो मणुस्सेहिंतो देवेहिंतो वि उववज्जंति ।।

८३. जदि तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एगिंदियतिरिक्ख-जोणिएहिंतो वि जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पुढविकाइएहिंतो जाव वणप्फइ-काइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पुढविकाइएहिंतो वि जाव वणप्फइकाइएहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि पुढविकाइएहिंतो उववज्जंति किं सुहुमपुढविकाइएहिंतो उववज्जंति ? बादर-पुढविकाइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि सुहुमपुढविकाइएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तयपुढविकाइएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तयपुढविकाइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि बादरपुढविकाइएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतो वि उववज्जंति । एवं जाव वणस्सतिकाइया चउक्कएणं भेदेणं उववाएयव्वा ।

जदि बेइंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तयबेइंदिएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तयबेइंदिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतो वि उववज्जंति । एवं तेइंदिय-चउरिंदिएहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं जलयरपंचेंदिएहिंतो उववज्जंति ? एवं जेहिंतो नेरइयाणं उववाओ भणितो तेहिंतो एतेसिं पि भाणितव्वो, नवरं—पज्जत्तग-अपज्जत्तगेहिंतो वि उववज्जंति । सेसं तं चेव ।।

८४. जदि मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिममणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? गब्भ-वक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? सेसं जहा नेरइयाणं, नवरं—अपज्जत्तएहिंतो वि उववज्जंति ।।

८५. जदि देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासि-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहतो उववज्जंति ? गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति किं असुरकुमारदेवेहिंतो जाव थणियकुमारदेवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! असुरकुमारदेवेहिंतो वि जाव थणियकुमारदेवेहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि वाणमंतरदेवेहिंतो उववज्जंति किं पिसाएहिंतो जाव गंधव्वेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पिसाएहिंतो वि जाव गंधव्वेहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि जोइसियदेवेहिंतो उववज्जंति किं चंदविमाणेहिंतो जाव ताराविमाणेहिंतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववज्जंति ? गोयमा ! चंदविमाणजोइसियदेवेहिंतो वि जाव ताराविमाणजोइसियदेवेहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति किं कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति ? कप्पातीतगवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति, नो कप्पातीतगवेमाणियदेवेहिंतो[1] उववज्जंति ।

जदि कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति किं सोहम्मेहिंतो जाव अच्चुएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! सोहम्मीसाणेहिंतो उववज्जंति, नो सणंकुमार जाव अच्चुएहिंतो उववज्जंति ।।

८६. एवं आउक्काइया वि । एवं तेउ-वाऊ वि, नवरं—देववज्जेहिंतो उववज्जंति । वणस्सइकाइया जहा पुढविकाइया । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरेंदिया एते जहा तेउ-वाऊ देववज्जेहिंतो भाणितव्वा ।।

८७. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइएहिंतो वि तिरिक्खजोणिएहिंतो वि मणूसेहिंतो वि देवेहिंतो वि उववज्जंति ।।

८८. जदि नेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो वि जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो वि उववज्जंति ।।

८९. जदि तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदिएहिंतो उववज्जंति जाव पंचेंदिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एगिंदिएहिंतो वि जाव पंचेंदिएहिंतो वि उववज्जंति ।

जदि एगिंदिएहिंतो उववज्जंति किं पुढविकाइएहिंतो उववज्जंति ? एवं जहा पुढविकाइयाणं उववाओ भणितो तहेव एएसि पि भाणितव्वो, नवरं—देवेहिंतो जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जंति, नो आणयकप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो जाव अच्चुएहिंतो[2] उववज्जंति ।।

९०. मणूसा णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो जाव देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइएहिंतो वि उववज्जंति जाव देवेहिंतो वि उववज्जंति ।।

९१. जदि नेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! रतणप्पभापुढविनेरइएहिंतो वि जाव तमापुढविनेरइएहिंतो वि उववज्जंति, नो अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ।।

९२. जदि तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? एवं जेहिंतो पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं उववाओ भणितो तेहिंतो मणूसाण वि णिरवसेसो भाणितव्वो, नवरं—अहेसत्तमापुढविनेरइय-तेउ-वाउकाइएहिंतो ण उववज्जंति । सव्वदेवेहिंतो वि उववज्जावेयव्वा[3] जाव कप्पातीतगवेमाणिय-सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो वि उववज्जावेयव्वा ।।

९३. वाणमंतरदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो जाव देवेहिंतो

१. कप्पातीतदे° (क,घ) ।
२. °हिंतो वि (क,ख,ग) ।
३. उववाओ कायव्वो (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववज्जंति ? गोयमा ! जेहिंतो असुरकुमारा ॥

९४. जोइसियदेवा णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एवं चेव, नवरं— सम्मुच्छिमअसंखेज्जवासाउयखहयर-अंतरदीवमणुस्सवज्जेहिंतो उववज्जावेयव्वा ॥

९५. 'एवं चेव' वेमाणिया वि सोहम्मीसाणगा[1] भाणितव्वा । एवं 'सणंकुमारगा वि,'[2] णवरं - असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमगवज्जेहिंतो उववज्जंति । एवं जाव सहस्सारकप्पोवग-वेमाणियदेवा भाणितव्वा ॥

९६. आणयदेवा णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो जाव देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो ॥

९७. जदि मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिममणुस्सेहिंतो गब्भवक्कंतियमणुस्से-हिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो सम्मुच्छिममणु-स्सेहिंतो ।

जदि गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं कम्मभूमगेहिंतो उववज्जंति ? अकम्मभूमगेहिंतो उववज्जंति ? अंतरदीवगेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो अकम्मभूमगेहिंतो, नो अंतरदीवगेहिंतो ।

जदि कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिंतो, नो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ।

जदि संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तए-हिंतो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भ-वक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, णो अपज्जत्तएहिंतो ।

जदि पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगेहिंतो उववज्जंति ? मिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तग-संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? सम्मामिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउय-कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, मिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगेहिंतो[4] उववज्जंति, णो सम्मामिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगेहिंतो उववज्जंति ।

जदि सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संजतसम्मद्दिट्ठीहिंतो ? असंजतसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तएहिंतो ? संजयासंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तग-संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! तीहिंतो वि उववज्जंति ॥

९८. एवं जाव अच्चुओ कप्पो । एवं गेवेज्जगदेवा वि, णवरं—असंजत-संजतासंजते-

---

१. × (क) ।

२. वेमाणिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उव किं पंचेंदियतिरिक्खजोणि-हिंतो उव किं मणुस्सेहिंतो उव किं देवेहिंतो उव गोयमा ! नो नेरइयहिंतो उव पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उव मणुस्सेहिंतो उव नो देवेहिंतो उव । एवं सोहम्मीसाणगदेवा वि (ग) ।

३. सणंकुमारा देवा (ग) ।

४ °हिंतो वि (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिंतो वि एते पडिसेहेयव्वा। एवं जहेव गेवेज्जगदेवा तहेव अणुत्तरोववाइया वि, णवरं—इमं णाणत्तं—संजया चेव।

जदि संजतसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं पमत्तसंजतसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तएहिंतो अपमत्तसंजतेहिंतो उववज्जंति? गोयमा! अपमत्तसंजएहिंतो उववज्जंति, नो पमत्तसंजएहिंतो उववज्जंति।

जदि अपमत्तसंजएहिंतो उववज्जंति किं इड्ढिपत्तअपमत्तसंजतेहिंतो उववज्जंति? अणिड्ढिपत्तअपमत्तसंजतेहिंतो उववज्जंति? गोयमा! दोहिंतो वि उववज्जंति॥

उव्वट्टणादारं

उव्वट्टणापुव्वं उववाय-पदं

९९. नेरइया णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति? कहिं उववज्जंति? किं नेरइएसु उववज्जंति? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति? मणुस्सेसु उववज्जंति? देवेसु उववज्जंति? गोयमा! णो नेरइएसु उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति, मणुस्सेसु उववज्जंति, नो देवेसु उववज्जंति॥

१००. जदि तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएसु जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति? गोयमा! नो एगिंदिएसु जाव नो चउरिंदिएसु उववज्जंति, 'पंचेंदिएसु उववज्जंति'[1]। एवं जेहिंतो उववाओ भणितो[2] तेसु उव्वट्टणा वि भाणितव्वा, नवरं—सम्मुच्छिमेसु ण उववज्जंति। एवं सव्वपुढवीसु भाणितव्वं, नवरं—अहेसत्तमाओ मणुस्सेसु ण उववज्जंति॥

१०१. असुरकुमारा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति? कहिं उववज्जंति? किं नेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति? गोयमा! नो नेरइएसु उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति, मणुस्सेसु उववज्जंति, नो देवेसु उववज्जंति॥

१०२. जदि तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएसु जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति? गोयमा! एगिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति, नो बेइंदिएसु जाव नो चउरिंदिएसु उववज्जंति, पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति।

जदि एगिंदिएसु उववज्जंति किं पुढविकाइयएगिंदिएसु जाव वणस्सइकाइयएगिंदिएसु उववज्जंति? गोयमा! पुढविकाइयएगिंदिएसु वि आउकाइयएगिंदिएसु वि उववज्जंति, नो तेउकाइएसु नो वाउकाइएसु उववज्जंति, वणस्सइकाइएसु उववज्जंति।

जदि पुढविकाइएसु उववज्जंति किं सुहुमपुढविकाइएसु उववज्जंति? बादरपुढविकाइएसु उववज्जंति? गोयमा! 'बादरपुढविकाइएसु उववज्जंति, नो सुहुमपुढविकाइएसु'[3]।

जदि बादरपुढविकाइएसु उववज्जंति किं पज्जत्तगबादरपुढविकाइएसु उववज्जंति? अपज्जत्तगबायरपुढविकाइएसु उववज्जंति? गोयमा! पज्जत्तएसु उववज्जंति, नो अपज्जत्तएसु। एवं आउ-वणस्सतीसु वि भाणितव्वं।

---

१. × (क,ख,घ)।

२. प० ६।७१।

३. नो सुहुमपुढविकाइएसु उवव० बादरपुढविकाइएसु उववज्जंति (क)।

४. प० ६।१००।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचेंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्सेसु य जहा[1] नेरइयाणं उव्वट्टणा सम्मुच्छिमवज्जा तहा भाणितव्वा। एवं जाव थणियकुमारा॥

१०३. पुढविकाइया णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छन्ति? कहिं उववज्जंति? किं नेरइएसु जाव देवेसु? गोयमा! नो नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजोणिय-मणुस्सेसु उववज्जंति, नो देवेसु। एवं जहा एतेसिं चेव उववाओ तहा उव्वट्टणा वि देववज्जा[3] भाणितव्वा[2]॥

१०४. एवं आउ-वणस्सइ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया वि। एवं तेऊ वाऊ वि णवरं—मणुस्सवज्जेसु उववज्जंति॥

१०५. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति? किं नेरइएसु जाव देवेसु? गोयमा! नेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति॥

१०६. जदि नेरइएसु उववज्जंति किं रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जंति जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएसु उववज्जंति? गोयमा! रयणप्पभापुढविनेरइएसु वि उववज्जंति जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएसु वि उववज्जंति॥

१०७. जदि तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति किं एगिंदिएसु जाव पंचिंदिएसु? गोयमा! एगिंदिएसु वि उववज्जंति जाव पंचिंदिएसु वि उववज्जंति। एवं जहा एतेसिं चेव[1] उववाओ उव्वट्टणा वि तहेव भाणितव्वा, नवरं—असंखेज्जवासाउएसु वि एते उववज्जंति।

१०८. जदि मणुस्सेसु उववज्जंति किं सम्मुच्छिममणुस्सेसु उववज्जंति? गब्भवक्कंतिय-मणुस्सेसु उववज्जंति? गोयमा! दोसु वि उववज्जंति। एवं जहा उववाओ तहेव उव्वट्टणा वि भाणितव्वा, नवरं—अकम्मभूमग-अंतरदीवग-असंखेज्जवासाउएसु वि एते उववज्जंति त्ति भाणितव्वं॥

१०९. जदि देवेसु उववज्जंति किं भवणवतीसु[4] उववज्जंति जाव वेमाणिएसु उववज्जंति? गोयमा! सव्वेसु चेव उववज्जंति।

जदि भवणवतीसु उववज्जंति किं असुरकुमारेसु उववज्जंति जाव थणियकुमारेसु उववज्जंति? गोयमा! सव्वेसु चेव उववज्जंति। एवं वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु निरंतरं उववज्जंति जाव सहस्सारो कप्पो त्ति॥

११०. मणुस्सा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति? कहिं उववज्जंति? किं नेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति? गोयमा! नेरइएसु वि उववज्जंति जाव देवेसु वि उववज्जंति। एवं निरंतरं सव्वेसु ठाणेसु पुच्छा। गोयमा! सव्वेसु ठाणेसु उववज्जंति, ण कहिंचि पडिसेहो कायव्वो जाव सव्वट्ठगसिद्धदेवेसु वि उववज्जंति। अत्थेगतिया सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति॥

१११. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया सोहम्मीसाणा य जहा असुरकुमारा, नवरं—जोइसियाणं वेमाणियाण य चयंतीति अभिलावो कातव्वो॥

---

१. प० ६।८३,८४।
२. × (ख,घ)।
३. च (ख)।
४. भवणवासीसु (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११२. सणंकुमारदेवाणं पुच्छा। गोयमा ! जहा असुरकुमारा, नवरं—एगिंदिएसु ण उववज्जंति। एवं जाव सहस्सारगदेवा ।।

११३. आणय जाव अणुत्तरोववाइया देवा एवं चेव, णवरं- णो तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति, मणुस्सेसु पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेसु उववज्जंति ।।

परभवियाउयदारं

परभवायुबंधकाल-पदं

११४. नेरइया णं भंते ! कतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति[1] ? गोयमा ! णियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति। एवं असुरकुमारा वि जाव थणिय-कुमारा ।।

११५. पुढविकाइया णं भंते! कतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति? गोयमा! पुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोवक्कमाउया य निरुवक्कमाउया य। तत्थ णं जेते निरुवक्कम्माउया ते णियमा तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति। तत्थ णं जेते सोवक्कमाउया ते सिय तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सिय तिभागतिभा-गावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सिय तिभागतिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति। आउ-तेउ-वाउ-वणस्सकाइयाणं बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण वि एवं चेव ।।

११६. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! कतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? गोयमा ! पंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संखेज्जवासाउया य असंखेज्जवासाउया य। तत्थ णं जेते असंखेज्जवासाउया ते नियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति। तत्थ णं जेते संखेज्जवासाउया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोवक्कमाउया य निरुवक्कमाउया य। तत्थ णं जेते निरुवक्कमाउया ते णियमा तिभागाव-सेसाउया परभवियाउयं पकरेंति। तत्थ णं जेते सोवक्कमाउया ते णं सिय तिभागे परभवियाउयं पकरेंति, सिय तिभागतिभागे य परभवियाउयं पकरेंति, सिय तिभागतिभाग-तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति। एवं मणुस्सावि ।।

११७. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।।

आगरिसदारं

आउयबंधस्स आगरिस-पदं

११८. कतिविधे णं भंते ! आउयबंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विधे आउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा—जातिणामणिहत्ताउए, गइनामणिहत्ताउए, ठितीनामणिहत्ताउए, ओगाहणा-णामणिहत्ताउए, पदेसणामणिहत्ताउए, अणुभावणामणिहत्ताउए ।।

११९. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे आउयबंधे[2] पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा—जातिनामनिहत्ताउए, गतिणामनिहत्ताउए, ठितीणामणिहत्ताउए, ओगाहणानामनिहत्ताउए, पदेसणामनिहत्ताउए, अणुभावणामनिहत्ताउए। एवं जाव वेमाणियाणं ।।

---

१. बंधंति (मवृ)। २. आउबंधे (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२०. जीवा णं भंते ! जातिणामणिहत्ताउयं कतिहिं आगरिसेहिं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं अट्ठहिं ॥

१२१. नेरइया णं भंते ! जाइनामनिहत्ताउयं कतिहिं आगरिसेहिं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं अट्ठहिं। एवं जाव वेमाणिया ॥

१२२. एवं गतिणामनिहत्ताउए वि ठितीणामनिहत्ताउए वि ओगाहणाणामनिहत्ताउए वि पदेसणामनिहत्ताउए वि अणुभावणामनिहत्ताउए वि ॥

१२३. एतेसि णं भंते ! जीवाणं जातिनामनिहत्ताउयं जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा उक्कोसेणं अट्ठहिं आगरिसेहिं पकरेमाणाणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा जातिणामणिहत्ताउयं अट्ठहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा, सत्तहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा संखेज्जगुणा, छहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा संखेज्जगुणा, एवं पंचहिं संखेज्जगुणा, चउहिं संखेज्जगुणा, तिहिं संखेज्जगुणा, दोहिं संखेज्जगुणा, एगेणं आगरिसेणं पगरेमाणा संखेज्जगुणा। एवं एतेणं अभिलावेणं जाव अणुभावनिहत्ताउयं। एवं एते छप्पि य अप्पाबहुदंडगा जीवादीया भाणियव्वा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तमं उस्सासपयं

चउवीसदंडएसु उस्सासविरहकाल-पदं

१. नेरइया णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ? गोयमा ! सततं संतयामेव आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।।

२. असुरकुमारा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं सातिरेगस्स पक्खस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ।।

३. णागकुमारा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं मुहुत्तपुहत्तस्स[1] । एवं जाव थणियकुमाराणं ।।

४. पुढविकाइया णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! वेमायाए आणमंति वा जाव नीससंति वा । एवं जाव मणुस्सा ।।

५. वाणमंतरा जहा णागकुमारा ।।

६. जोइसिया णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं मुहुत्तपुहत्तस्स, उक्कोसेण वि मुहुत्तपुहत्तस्स जाव नीससंति वा ।।

७. वेमाणिया णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं मुहुत्तपुहत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

८. सोहम्मगदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं मुहुत्तपुहत्तस्स, उक्कोसेणं दोण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

९. ईसाणगदेवा णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं सातिरगेस्स मुहुत्तपुहत्तस्स, उक्कोसेणं सातिरेगाणं दोण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

१०. सणंकुमारदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं दोण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं सत्तण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

११. माहिंदगदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा !

---

१. °पुहुत्तस्स (क,ग); पुहुत्त° (ख,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहण्णेणं सातिरेगाणं[1] दोण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं सातिरेगाणं सत्तण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

१२. बंभलोगदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं दसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

१३. लंतगदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं चोद्दसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

१४. महासुक्कदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं चोद्दसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

१५. सहस्सारगदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं अट्ठारसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

१६. आणयदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठारसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं एगूणवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

१७. पाणयदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगूणवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं वीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

१८. आरणदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं वीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं एगवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

१९. अच्चुयदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं बावीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

२०. हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगा देवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं बावीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं तेवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

२१. हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जगा देवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं तेवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं चउवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

२२. हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जगा देवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं पणुवीसाए[2] पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

२३. मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जगा देवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ?

१. × (ख,ग) ।   २. पंचवीसाए (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! जहण्णेणं पणुवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं छव्वीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

२४. मज्झिममज्झिमगेवेज्जगा देवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं छव्वीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं सत्तावीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

२५. मज्झिमउवरिमगेवेज्जगा देवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तावीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं अट्ठावीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

२६. उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जगा देवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठावीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं एगूणतीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

७. उवरिममज्झिमगेवेज्जगा देवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा ! जहण्णेणं एगूणतीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं तीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

२८. उवरिमउवरिमगेवेज्जगा देवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं तीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं एक्कतीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

२९. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजितविमाणेसु णं भंते ! देवा केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कतीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

३०. सव्वट्ठसिद्धगदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमं सण्णापयं

सण्णाभेय-पदं

१. कति णं भंते ! सण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा, कोहसण्णा, माणसण्णा, मायासण्णा, लोभसण्णा लोगसण्णा, ओघसण्णा ।।

नेरइयाईणं सण्णा-पदं

२. नेरइयाणं भंते ! कति सण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा, कोहसण्णा, माणसण्णा, मायासण्णा, लोभसण्णा, लोगसण्णा, ओघसण्णा ।।

३. असुरकुमाराणं भंते ! कति सण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा जाव ओघसण्णा । एवं जाव थणियकुमाराणं । एवं पुढविकाइयाणं वेमाणियावसाणाणं णेयव्वं ।।

नेरइयाणं सण्णाविचार-पदं

४. नेरइया णं भंते ! किं आहारसण्णोवउत्ता भयसण्णोवउत्ता मेहुणसण्णोवउत्ता परिग्गहसण्णोवउत्ता ? गोयमा ! ओसण्णकारणं[1] पडुच्च भयसण्णोवउत्ता, संतइभावं पडुच्च आहारसण्णोवउत्ता वि जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वि ।।

५. एतेसि णं भंते ! नेरइयाणं आहारसण्णोवउत्ताणं भयसण्णोवउत्ताणं मेहुणसण्णोवउत्ताणं परिग्गहसण्णोवउत्ताण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया मेहुणसण्णोवउत्ता, आहारसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, परिग्गहसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, भयसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा ।।

तिरिक्खजोणियाणं सण्णाविचार-पदं

६. तिरिक्खजोणिया णं भंते ! किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता ? गोयमा ! ओसण्णकारणं पडुच्च आहारसण्णोवउत्ता, संतइभावं पडुच्च आहारसण्णोवउत्ता वि जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वि ।।

७. एतेसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा !

१. ओसण्णं कारणं (ग) सर्वत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया परिग्गहसण्णोवउत्ता, मेहुणसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, भयसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, आहारसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा ॥

मणुस्साणं सण्णाविचार-पदं

८. मणुस्सा णं भंते ! किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता ? गोयमा ! ओसण्णकारणं[1] पडुच्च मेहुणसण्णोवउत्ता, संततिभावं पडुच्च आहारसण्णोवउत्ता वि जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वि ॥

९. एतेसि णं भंते ! मणुस्साणं आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणं य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा भयसण्णोवउत्ता, आहारसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, परिग्गहसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, मेहुणसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा ॥

देवाणं सण्णाविचार-पदं

१०. देवा णं भंते ! किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता ? गोयमा ! ओसण्णकारणं पडुच्च परिग्गहसण्णोवउत्ता, संततिभावं पडुच्च आहारसण्णोवउत्ता वि जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वि ।

११. एतेसि णं भंते ! देवाणं आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताण य कतरे कतरेहिंत अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा देवा आहारसण्णोवउत्ता, भयसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, मेहुणसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, परिग्गहसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा ॥

---

१. उस्सण्ण° (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णवमं जोणीपयं

सीयाइजोणि-पदं

१. कतिविहा णं भंते ! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा—सीता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ।।

२. नेरइयाणं भंते ! किं सीता जोणी ? उसिणा जोणी ? सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! सीता वि जोणी, उसिणा वि जोणी, नो सीतोसिणा जोणी ।।

३. असुरकुमाराणं भंते ! किं सीता जोणी ? उसिणा जोणी ? सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! नो सीता, नो उसिणा, सीतोसिणा जोणी । एवं जाव थणियकुमाराणं ।।

४. पुढविकाइयाणं भंते ! किं सीता जोणी ? उसिणा जोणी ? सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! सीता वि जोणी, उसिणा वि जोणी, सीतोसिणा वि जोणी । एवं आउ-वाउ-वणस्सति-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण वि पत्तेयं भाणियव्वं ।।

५. तेउक्काइयाणं नो सीता, उसिणा, नो सीतोसिणा ।।

६. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं सीता जोणी ? उसिणा जोणी ? सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! सीता वि जोणी, उसिणा वि जोणी, सीतोसिणा वि जोणी । सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं एवं चेव ।।

७. गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं सीता जोणी ? उसिणा जोणी ? सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! नो सीता जोणी, नो उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ।।

८. मणुस्साणं भंते ! किं सीता जोणी ? उसिणा जोणी ? सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! सीता वि जोणी, उसिणा वि जोणी, सीतोसिणा वि जोणी ।।

९. सम्मुच्छिममणुस्साणं भंते ! किं सीता जोणी ? उसिणा जोणी ? सीतोसिणा जोणि ? गोयमा ! तिविहा वि[1] जोणी ।।

१०. गब्भवक्कंतियमणुस्साणं भंते ! किं सीता जोणी ? उसिणा जोणी ? सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! नो सीता जोणी, नो उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ।।

११. वाणमंतरदेवाणं भंते ! किं सीता जोणी ? उसिणा जोणी ? सीतोसिणा

---

१. × (क,ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोणी ? गोयमा ! नो सीता, नो उसिणा, सीतोसिणा जोणी । जोइसिय-वेमाणियाण वि एवं चेव ॥

१२. एतेसि णं भंते ! जीवाणं सीतजोणियाणं उसिणजोणियाणं सीतोसिणजोणियाणं अजोणियाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सीतोसिणजोणिया, उसिणजोणिया असंखेज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सीतजोणिया अणंतगुणा ॥

सचित्ताइजोणि-पदं

१३. कतिविहा णं भंते ! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता । तं जहा—सचित्ता, अचित्ता, मीसिया ॥

१४. नेरइयाणं भंते ! किं सचित्ता जोणी ? अचित्ता जोणी ? मीसिया जोणी ? गोयमा ! नो सचित्ता जोणि, अचित्ता जोणी, णो मीसिया जोणी ॥

१५. असुरकुमाराणं भंते ! किं सचित्ता जोणी ? अचित्ता जोणी ? मीसिया जोणी ? गोयमा ! नो सचित्ता जोणी, अचित्ता जोणी, नो मीसिया जोणी । एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

१६. पुढविकाइयाणं भंते ! किं सचित्ता जोणी ? अचित्ता जोणी ? मीसिया जोणी ? गोयमा ! सचित्ता वि जोणी, अचित्ता वि जोणी, मीसिया वि जोणी । एवं जाव चउरिंदियाणं । सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं सम्मुच्छिममणुस्साण य एवं चेव ॥

१७. गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं गब्भवक्कंतियमणुस्साण य नो सचित्ता, नो अचित्ता, मीसिया जोणी ॥

१८. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥

१९. एतेसि णं भंते ! जीवाणं सचित्तजोणीणं अचित्तजोणीणं मीसजोणीणं अजोणीण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मीसजोणिया, अचित्तजोणिया असंखेज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सचित्तजोणिया अणंतगुणा ॥

संवुडाइजोणि-पदं

२०. कतिविहा णं भंते ! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा—संवुडा जोणी, वियडा जोणी, संवुडवियडा जोणी ॥

२१. नेरइयाणं भंते ! किं संवुडा जोणी ? वियडा जोणी ? संवुडवियडा जोणी ? गोयमा ! संवुडा जोणी, नो वियडा जोणी, नो संवुडवियडा जोणी । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं ॥

२२. बेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! नो संवुडा जोणी, वियडा जोणी, णो संवुडवियडा जोणी । एवं जाव चउरिंदियाणं । सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं सम्मुच्छिममणुस्साण य एवं चेव ॥

२३. गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं गब्भवक्कंतियमणुस्साण य नो संवुडा जोणी, नो वियडा जोणी, संवुडवियडा जोणी ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ॥

२५. एतेसि णं भंते ! जीवाणं संवुडजोणियाणं वियडजोणियाणं संवुडवियडजोणियाणं अजोणियाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा संवुडवियडजोणिया, वियडजोणिया असंखेज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, संवुडजोणिया अणंतगुणा ॥

कुम्मुण्णयाइजोणि-पदं

२६. कतिविहा णं भंते ! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा—कुम्मुण्णया, संखावत्ता, वंसीपत्ता । कुम्मुण्णया णं जोणी उत्तमपुरिसमाऊणं । कुम्मुण्णयाए णं जोणीए उत्तमपुरिसा गब्भे वक्कमंति, तं जहा—अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा । संखावत्ता णं जोणी इत्थिरयणस्स । संखावत्ताए णं जोणीए बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उवचयंति, नो चेव णं निप्फज्जंति । वंसीपत्ता णं जोणी पिहुजणस्स । वंसीपत्ताए णं जोणीए पिहुजणा[1] गब्भे वक्कमंति ॥

---

१. पिहुजणे (ख,ग,घ) ।

दसमं चरिमपयं

चरिमाचरिमविभाग-पदं

१. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा— रयणप्पभा, सक्करप्पभा, वालुयप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा, तमप्पभा, तमतमप्पभा, ईसीपब्भारा ॥

२. इमा णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी किं चरिमा अचरिमा चरिमाइं अचरिमाइं चरिमंतपदेसा अचरिमंतपदेसा ? गोयमा ! इमा णं रतणप्पभा पुढवी नो चरिमा नो अचरिमा नो चरिमाइं नो अचरिमाइं नो चरिमंतपदेसा नो अचरिमंतपदेसा, णियमा अचरिमं च चरिमाणि य चरिमंतपदेसा य अचरिमंतपएसा य। एवं जाव अहेसत्तमा पुढवी। सोहम्मादी जाव अणुत्तरविमाणा एवं चेव। ईसीपब्भारा वि एवं चेव। लोगे वि एवं चेव। एवं अलोगे वि ॥

चरिमाचरिमपयाणं अप्पबहुत्त-पदं

३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए अचरिमस्स य चरिमाण य चरिमंतपएसाण य अचरिमंतपएसाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अचरिमं च चरिमाणि य दो वि विसेसाहियाइं। पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए चरिमंतपदेसा, अचरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, चरिमंतपएसा य अचरिमंतपएसा य दो वि विसेसाहिया। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा इमीसे रतणप्पभाए पुढवीए दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अचरिमं च चरिमाणि य दो वि विसेसाहियाइं, चरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, अचरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, चरिमंतपएसा य अचरिमंतपएसा य दो वि विसेसाहिया। एवं जाव अहेसत्तमा। सोहम्मस्स जाव लोगस्स य एवं चेव ॥

४. अलोगस्स णं भंते ! अचरिमस्स य चरिमाण य चरिमंतपएसाण य अचरिमंतपएसाण य दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे अलोगस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अचरिमं च चरिमाणि य दो वि विसेसाहियाइं। पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा अलोगस्स चरिमंतपदेसा, अचरिमंतपदेसा अणंतगुणा, चरिमंतपदेसा य अचरि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंतपदेसा य दो वि विसेसाहिया। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवे अलोगस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अचरिमं च चरिमाणि य दो वि विसेसाहियाइं, चरिमंतपदेसा असंखेज्जगुणा, अचरिमंतपदेसा अणंतगुणा, चरिमंतपएसा य अचरिमंतपएसा य दो वि विसेसाहिया।।

५. लोगालोगस्स णं भंते ! अचरिमस्स य चरिमाण य चरिमंतपएसाण य अचरिमंतपएसाण य दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे लोगालोगस्स दव्वट्ठयाए एगमेगे अचरिमे, लोगस्स चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अलोगस्स चरिमाइं विसेसाहियाइं, लोगस्स य अलोगस्स य अचरिमं च चरिमाणि य दो वि विसेसाहियाइं। पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा लोगस्स चरिमंतपदेसा, अलोगस्स चरिमंतपदेसा विसेसाहिया, लोगस्स अचरिमंतपदेसा असंखेज्जगुणा, अलोगस्स अचरिमंतपदेसा अणंतगुणा, लोगस्स य अलोगस्स य चरिमंतपदेसा य अचरिमंतपदेसा य दो वि विसेसाहिया। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवे लोगालोगस्स दव्वट्ठयाए एगमेगे अचरिमे, लोगस्स चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अलोगस्स चरिमाइं विसेसाहियाइं, लोगस्स य अलोगस्स य अचरिमं च चरिमाणि य दो वि विसेसाहियाइं, लोगस्स चरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, अलोगस्स चरिमंतपएसा विसेसाहिया, लोगस्स अचरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, अलोगस्स अचरिमंतपएसा अणंतगुणा, लोगस्स य अलोगस्स य चरिमंतपएसा य अचरिमंतपएसा य दो वि विसेसाहिया, सव्वदव्वा विसेसाहिया, सव्वपएसा अणंतगुणा, सव्वपज्जवा अणंतगुणा।।

परमाणुपोग्गलाईणं चरिमाइविभाग-पदं

६. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं चरिमे १ अचरिमे २ अवत्तव्वए ३ ? चरिमाइं ४ अचरिमाइं ५ अवत्तव्वयाइं ६ ? उदाहु चरिमे य अचरिमे य ७ उदाहु चरिमे य अचरिमाइं च ८ उदाहु चरिमाइं च अचरिमे य ९ उदाहु चरिमाइं च अचरिमाइं च १० ? [पढमा चउभंगी]। उदाहु चरिमे य अवत्तव्वए य ११ उदाहु चरिमे य अवत्तव्वयाइं च १२ उदाहु चरिमाइं च अवत्तव्वए य १३ उदाहु चरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४ ? [बीया चउभंगी]। उदाहु अचरिमे य अवत्तव्वए य १५ उदाहु अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च १६ उदाहु अचरिमाइं च अवत्तव्वए य १७ उदाहु अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८ ? [तइया चउभंगी]।

उदाहु चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वए य १९ उदाहु चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च २० उदाहु चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वए य २१ उदाहु चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२ उदाहु चरिमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वए य २३ उदाहु चरिमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च २४ उदाहु चरिमाइं च अचरिमाइं च अवत्तव्वए य २५ उदाहु चरिमाइं च अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६ ? [एवं एते छव्वीसं भंगा]। गोयमा ! परमाणुपोग्गले नो चरिमे १ नो अचरिमे २ नियमा अवत्तव्वए ३, सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा।।

७. दुपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा। गोयमा ! दुपएसिए खंधे सिय चरिमे १

नो अचरिमे २ सिय अवत्तव्वए ३, सेसा भंगा परिसेहेयव्वा।

८. तिपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा। गोयमा ! तिपएसिए खंधे सिय चरिमे १ नो अचरिमे २ सिय अवत्तव्वए ३ नो चरिमाइं ४ नो अचरिमाइं ५ नो अवत्तव्वयाइं ६, नो चरिमे य अचरिमे य ७ नो चरिमे य अचरिमाइं ८ सिय चरिमाइं च अचरिमे य ९ नो चरिमाइं च अचरिमाइं च १०, सिय चरिमे य अवत्तव्वए य 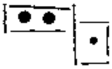 ११, सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा॥

९. चउपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा। गोयमा ! चउपएसिए णं खंधे सिय चरिमे १ नो अचरिमे २ सिय अवत्तव्वए ३ नो चरिमाइं ४ नो अचरिमाइं ५ नो अवत्तव्वयाइं ६, नो चरिमे य अचरिमे य ७ नो चरिमे य अचरिमाइं च ८ सिय चरिमाइं च अचरिमे य ९ सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च १०, सिय चरिमे य अवत्तव्वए य 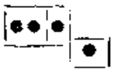 ११ सिय चरिमे य अवत्तव्वयाइं च 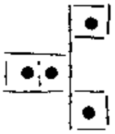 १२ नो चरिमाइं च अवत्तव्वए य १३ नो चरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४, नो अचरिमे य अवत्तव्वए य १५ नो अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च १६ नो अचरिमाइं च अवत्तव्वए य १७ नो अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८, नो चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वए य १९ नो चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च २० नो चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वए य २१ नो चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२ सिय चरिमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वए य २३, सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा॥

१०. पंचपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा। गोयमा ! पंचपएसिए णं खंधे सिय चरिमे 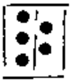 १ नो अचरिमे २ सिय अवत्तव्वए 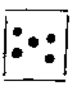 ३ नो चरिमाइं ४ नो अचरिमाइं ५ नो अवत्तव्वयाइं ६, सिय चरिमे य अचरिमे य 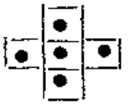 ७ नो चरिमे य अचरिमाइं च ८ सिय चरिमाइं च अचरिमे य ९ सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च १०, सिय चरिमे य अवत्तव्वए य 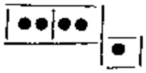 ११, सिय चरिमे य अवत्तव्वयाइं च 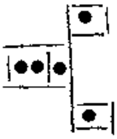 १२ सिय चरिमाइं च अवत्तव्वए य 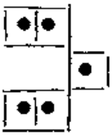 १३ नो चरिमाइं च अवत्तव्व-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

याइं च १४, नो अचरिमे य अवत्तव्वए य १५ नो अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च १६ नो अचरिमाइं च अवत्तव्वए य १७ नो अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८, नो चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वए य १९ नो चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च २० नो चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वए य २१ नो चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२ सिय चरिमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वए य 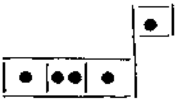 २३ सिय चरिमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च 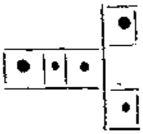 २४ सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च अवत्तव्वए य 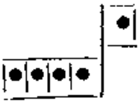 २५ नो चरिमाइं च अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६ ॥

११. छप्पएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा। गोयमा ! छप्पएसिए णं खंधे सिय चरिमे 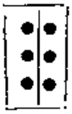 १ नो अचरिमे २ सिय अवत्तव्वए 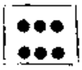 ३ नो चरिमाइं ४ नो अचरिमाइं ५ नो अवत्तव्वयाइं ६, सिय चरिमे य अचरिमे य 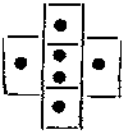 ७ सिय चरिमे य अचरिमाइं च 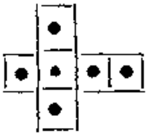 ८ सिय चरिमाइं च अचरिमे य 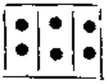 ९ सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च 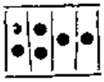 १०, सिय चरिमे य अवत्तव्वए य 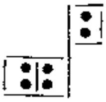 ११ सिय चरिमे य अवत्तव्वयाइं च 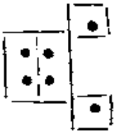 १२ सिय चरिमाइं च अवत्तव्वए य 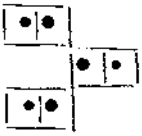 १३ सिय चरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च 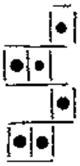 १४, नो अचरिमे य अवत्तव्वए य १५ नो अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च १६ नो अचरिमाइं च अवत्तव्वए य १७ नो अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च १८, सिय चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वए य 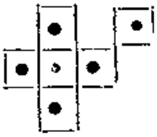 १९ नो चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च २० नो चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वए य २१ नो चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२ सिय चरिमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वए य 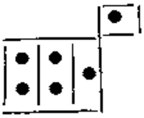 २३ सिय चरिमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च 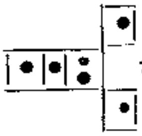 २४ सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च अवत्तव्वए य 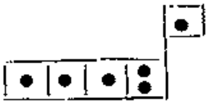 २५ सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च 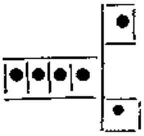 २६ ॥

१२. सत्तपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! सत्तपएसिए णं खंधे सिय चरिमे 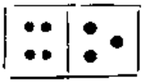 १ नो अचरिमे २ सिय अवत्तव्वए 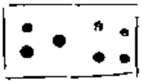 ३ नो चरिमाइं ४ नो अचरिमाइं ५ नो अवत्तव्वयाइं ६, सिय चरिमे य अचरिमे य 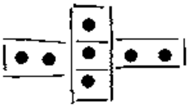 ७ सिय चरिमे य अचरिमाइं च 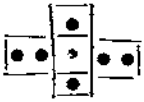 ८ सिय चरिमाइं च अचरिमे य ९ सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च १०, सिय चरिमे य अवत्तव्वए य 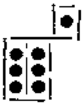 ११ सिय चरिमे य अवत्तव्वयाइं च 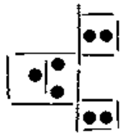 १२ सिय चरिमाइं च अवत्तव्वए य 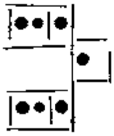 १३ सिय चरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च 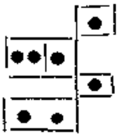 १४, नो अचरिमे य अवत्तव्वए १५ नो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च १६ नो अचरिमाइं च अवत्तव्वए य १७ नो अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८, सिय चरिमे अचरिमे य अवत्तव्वए य 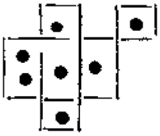 १९ सिय चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च 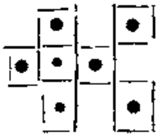 २० सिय चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वए य 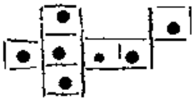 २१ नो चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२ सिय चरिमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वए य 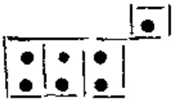 २३ सिय चरिमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च 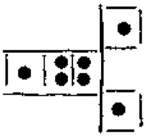 २४ सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च अवत्तव्वए य 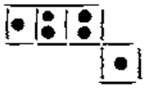 २५ सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च 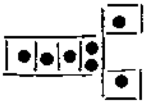 २६ ॥

१३. अट्ठपदेसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा। गोयमा ! अट्ठपदेसिए खंधे सिय चरिमे १ नो अचरिमे २ सिय अवत्तव्वए 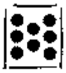 ३ नो चरिमाइं ४ नो अचरिमाइं ५ नो अवत्तव्वयाइं ६, सिय चरिमे य अचरिमे य 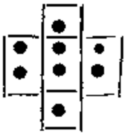 ७ सिय चरिमे य अचरिमाइं च 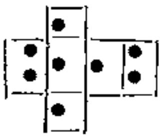 ८ सिय चरिमाइं च अचरिमे य ९ सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च १०, सिय चरिमे य अवत्तव्वए य 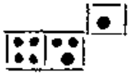 ११ सिय चरिमे य अवत्तव्वयाइं च 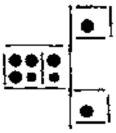 १२ सिय चरिमाइं च अवत्तव्वए य 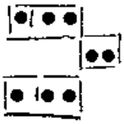 १३ सिय चरिमाइं च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवत्तव्वयाइं च 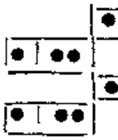 १४, नो अचरिमे य अवत्तव्वए य १५ नो अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च १६ नो अचरिमाइं च अवत्तव्वए य १७ नो अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८, सिय चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वए य 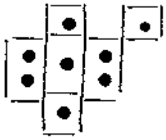 १९ सिय चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च 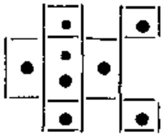 २० सिय चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वए य 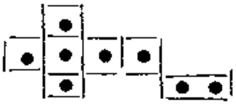 २१ सिय चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च 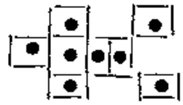 २२ सिय चरिमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वए य 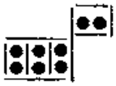 २३ सिय चरिमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च 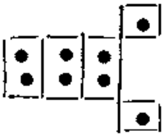 २४ सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च अवत्तव्वए य 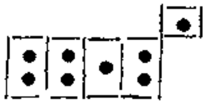 २५ सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च 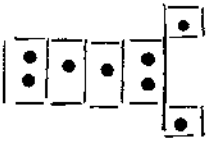 २६ ॥

१४. संखेज्जपएसिए असंखेज्जपएसिए अणंतपएसिए खंधे जहेव अट्ठपदेसिए तहेव पत्तेयं भाणितव्वं ।

गाहा—

परमाणुम्मि य ततिओ, पढमो ततिओ य होति दुपदेसे ।
पढमो ततिओ नवमो, एक्कारसमो य तिपदेसे ॥१॥

पढमो ततिओ नवमो, दसमो एक्कारसो य बारसमो ।
भंगा चउप्पदेसे, तेवीसइमो य बोद्धव्वो ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमो ततिओ सत्तम, नव दस एक्कार बार तेरसमो ।
तेवीस चउव्वीसो, पणुवीसइमो य पंचमए ।।३।।
बि चउत्थ पंच छट्ठं, पण्णर[1] सोलं च सत्तरट्ठारं ।
वीसेक्कवीस बावीसगं च वज्जेज्ज छट्ठम्मि ।।४।।
बि चउत्थ पंच छट्ठं, पण्णर सोलं च सत्तरट्ठारं ।
बावीसइमविहूणा, सत्तपदेसम्मि खंधम्मि ।।५।।
बि चउत्थ पंच छट्ठं, पण्णर सोलं च सत्तरट्ठारं ।
'एते वज्जिय भंगा, सेसा सेसेसु खंधेसु'[2] ।।६।।

संठाणाणं चरिमाइविभाग-पदं

१५. कति णं भंते ! संठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच संठाणा पण्णत्ता, तं जहा—परिमंडले वट्टे तंसे चउरंसे आयते ।।

१६. परिमंडला णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता । एवं जाव आयता ।।

१७. परिमंडले णं भंते ! संठाणे किं संखेज्जपएसिए असंखेज्जपएसिए अणंतपएसिए ? गोयमा ! सिय संखेज्जपएसिए सिय असंखेज्जपदेसिए सिय अणंतपदेसिए । एवं जाव आयते ।।

१८. परिमंडले णं भंते ! संठाणे संखेज्जपदेसिए किं संखेज्जपदेसोगाढे असंखेज्जपएसोगाढे अणंतपएसोगाढे ? गोयमा ! संखेज्जपएसोगाढे, नो असंखेज्जपएसोगाढे नो अणंतपएसोगाढे । एवं जाव आयते ।।

१९. परिमंडले णं भंते ! संठाणे असंखेज्जपदेसिए किं संखेज्जपदेसोगाढे असंखेज्जपदेसोगाढे अणंतपएसोगाढे ? गोयमा ! सिय संखेज्जपएसोगाढे सिय असंखेज्जपदेसोगाढे, णो अणंतपदेसोगाढे । एवं जाव आयते ।।

२०. परिमंडले णं भंते ! संठाणे अणंतपएसिए किं संखेज्जपएसोगाढे असंखेज्जपएसोगाढे अणंतपएसोगाढे ? गोयमा ! सिय संखेज्जपएसोगाढे सिय असंखेज्जपएसोगाढे, नो अणंतपएसोगाढे । एवं जाव आयते ।।

२१. परिमंडले णं भंते ! संठाणे संखेज्जपदेसिए संखेज्जपएसोगाढे किं चरिमे अचरिमे चरिमाइं अचरिमाइं चरिमंतपदेसा अचरिमंतपदेसा ? गोयमा ! परिमंडले णं संठाणे संखेज्जपदेसिए संखेज्जपदेसोगाढे नो चरिमे नो अचरिमे नो चरिमाइं नो अचरिमाइं नो चरिमंतपदेसा नो अचरिमंतपएसा, नियमा अचरिमं च चरिमाणि य चरिमंतपदेसा य अचरिमंतपदेसा य । एवं जाव आयते ।।

२२. परिमंडले णं भंते ! संठाणे असंखेज्जपएसिए संखेज्जपदेसोगाढे किं चरिमे पुच्छा । गोयमा ! असंखेज्जपएसिए संखेज्जपएसोगाढे जहा[3] संखेज्जपएसिए । एवं जाव आयते ।।

---

१. पण्णरस (क); पण्णा (ख); पणर (घ) । तेण परमवद्दिया सेसा (वृ) ।
२. अन्ये त्वेवमुत्तरार्द्धं पठन्ति—एए वज्जियभंगा, ३. प० १०।२१ ।

२३. परिमंडले णं भंते ! संठाणे असंखेज्जपदेसिए असंखेज्जपएसोगाढे किं चरिमे पुच्छा । गोयमा ! असंखेज्जपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे नो चरिमे जहा[1] संखेज्ज-पदेसोगाढे । एवं जाव आयते ॥

२४. परिमंडले णं भंते ! संठाणे अणंतपएसिए संखेज्जपएसोगाढे किं चरिमे पुच्छा। गोयमा ! तहेव[2] जाव आयते ॥

२५. अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे जहा संखेज्जपदेसोगाढे । एवं जाव आयते ॥

२६. परिमंडलस्स णं भंते ! संठाणस्स संखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स अचरिमस्स य चरिमाण य चरिमंतपदेसाण य अचरिमंतपदेसाण य दव्वट्ठयाए पदेस-ट्ठयाए दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स संखेज्जपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे १ चरिमाइं संखेज्जगुणाइं २ अचरिमं च चरिमाणि य दो वि विसेसाहियाइं ३ । पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा परिमंडलस्स संठाणस्स संखेज्जपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स चरिमंतपदेसा १ अचरिमंतपदेसा संखेज्जगुणा २ चरिमंतपदेसा य अचरिमंतपदेसा य दो वि विसेसाहिया ३ । दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स संखेज्जपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे १ चरिमाइं संखेज्जगुणाइं २ अचरिमं च चरिमाणि य दो वि विसेसाहियाइं ३ चरिमंतपदेसा संखेज्जगुणा ४ अचरिमंतपएसा संखेज्जगुणा ५ चरिमंतपदेसा य अचरिमंतपदेसा य दो वि विसेसाहिया ६ । एवं वट्ट-तंस-चउरंस-आयएसु वि जोएयव्वं ॥

२७. परिमंडलस्स णं भंते ! संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स अचरिमस्स य चरिमाण य चरिमंतपएसाण य अचरिमंतपएसाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे १ चरिमाइं संखेज्जगुणाइं २ अचरिमं च चरिमाणि य दो वि विसेसाहियाइं ३ । पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स चरिमंतपएसा १ अचरिमंतपएसा संखेज्जगुणा २ चरिमंतपएसा य अचरिमंतपएसा य दो वि विसेसाहिया ३ । दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे १ चरिमाइं संखेज्जगुणाइं २ अचरिमं च चरिमाणि य दो वि विसेसाहियाइं ३ चरिमंतपएसा संखेज्ज-गुणा ४ अचरिमंतपएसा संखेज्जगुणा ५ चरिमंतपएसा य अचरिमंतपएसा य दो वि विसेसाहिया ६ । एवं जाव आयते ॥

२८. परिमंडलस्स णं भंते ! संठाणस्स असंखेज्जपदेसियस्स असंखेज्जपएसोगाढस्स अचरिमस्स य चरिमाण य चरिमंतपएसाण य अचरिमंतपएसाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! जहा[3] रयणप्पभाए अप्पाबहुयं तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं । । एवं जाव आयते ॥

---

१. प.१०।२२ । २. प० १०।२१ । ३. प० १०।३ ।

२९. परिमंडलस्स णं भंते ! संठाणस्स अणंतपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स अचरिमस्स य चरिमाण य चरिमंतपएसाण य अचरिमंतपएसाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! जहा[1] संखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स, णवरं—संकमे[2] अणंतगुणा । एवं जाव आयते ॥

३०. परिमंडलस्स णं भंते ! संठाणस्स अणंतपएसियस्स असंखेज्जपएसोगाढस्स अचरिमस्स य चरिमाण य चरिमंतपएसाण य अचरिमंतपएसाण य जहा[3] रयणप्पभाए, णवरं—संकमे अणंतगुणा । एवं जाव आयते ॥

गतिचरिमाइ-पदं

३१. जीवे णं भंते ! गतिचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥

३२. णेरइए णं भंते ! गतिचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे । एवं णिरंतरं जाव वेमाणिए ॥

३३. णेरइया णं भंते ! गतिचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि । एवं णिरंतरं जाव वेमाणिया ॥

ठितिचरिमाइ-पदं

३४. णेरइए णं भंते ! ठितीचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे । एवं णिरंतरं जाव वेमाणिए ॥

३५. णेरइया णं भंते ! ठितीचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ।

भवचरिमाइ-पदं

३६. णेरइए णं भंते ! भवचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ॥

३७. णेरइया णं भंते ! भवचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ॥

भासाचरिमाइ-पदं

३८. णेरइए णं भंते ! भासाचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ॥

३९. णेरतिया णं भंते ! भासाचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि । एवं एगिंदियवज्जा निरंतरं जाव वेमाणिया ॥

आणापाणुचरिमाइ-पदं

४०. णेरइए णं भंते ! आणापाणुचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे । एवं णिरंतरं जाव वेमाणिए ॥

४१. णेरइया णं भंते ! आणापाणुचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा

---

१. १०।२६ । २. संकमेणं (क,घ); संकमेण (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि अचरिमा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ।।

आहारचरिमाइ-पदं

४२. णेरइए णं भंते ! आहारचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ।।

४३. नेरइया णं भंते ! आहारचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ।।

भावचरिमाइ-पदं

४४. णेरइए णं भंते ! भावचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ।।

४५. णेरइया णं भंते ! भावचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ।।

वण्णचरिमाइ-पदं

४६. णेरइए णं भंते ! वण्णचरिमेणं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ।।

४७. णेरइया णं भंते ! वण्णचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ।।

गंधचरिमाइ-पदं

४८. णेरइए णं भंते ! गंधचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ।।

४९. णेरइया णं भंते ! गंधचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ।।

रसचरिमाइ-पदं

५०. णेरइए णं भंते ! रसचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ।।

५१. नेरइया णं भंते ! रसचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ।

फासचरिमाचरिमाइं

५२. णेरइए णं भंते ! फासचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ।।

५३. णेरइया णं भंते ! फासचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमा वि अचरिमा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ।।

संगहणीगाहा—

गति ठिति भवे य भासा, आणपाणुचरिमे[1] य बोधव्वे ।
आहार भावचरिमे वण्ण रस गंध फासे य ।। १ ।।

---

१. आणापाणु° (क,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कारसमं भासापयं

ओहरिणीभासा-पदं

१. से णूणं भंते ! मण्णामीति ओहारिणी भासा ? चिंतेमीति ओहारिणी भासा ? अह मण्णामीति ओहारिणी भासा ? अह चिंतेमीति ओहारिणी भासा ? तह मण्णामीति ओहारिणी भासा ? तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा ? हंता गोयमा ! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा, अह मण्णामीति ओहारिणी भासा, अह चिंतेमीति ओहारिणी भासा, तह मण्णामीति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा ।।

२. ओहारिणी णं भंते ! भासा किं सच्चा मोसा सच्चामोसा असच्चामोसा ? गोयमा ! सिय सच्चा, सिय मोसा, सिय सच्चामोसा, सिय असच्चामोसा ।।

३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—ओहारिणी णं भासा सिय सच्चा सिय मोसा सिय सच्चामोसा सिय असच्चामोसा ? गोयमा ! आराहणी सच्चा, विराहणी मोसा, आराहण-विराहणी सच्चामोसा, जा[1] णेव आराहणी णेव विराहणी णेव आराहण-विराहणी असच्चामोसा णाम सा चउत्थी भासा । से एतेणट्ठेणं[2] गोयमा ! एवं वुच्चइ—ओहारिणी णं भासा सिय सच्चा सिय मोसा सिय सच्चामोसा सिय असच्चामोसा ।।

पण्णवणीभासा-पदं

४. अह[3] भंते ! गाओ मिया पसू पक्खी पण्णवणी णं एसा भासा ? ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! गाओ मिया पसू पक्खी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।।

५. अह भंते ! जा य इत्थिवऊ[4] जा य पुमवऊ जा य णपुंसगवऊ पण्णवणी णं एसा भासा ? ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जा य इत्थिवऊ जा य पुमवऊ जा य णपुंसगवऊ पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।।

६. अह भंते ! जा य इत्थिआणमणी[5] जा य पुमआणमणी जा य णपुंसगआणमणी पण्णवणी णं एसा भासा ? ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जा य इत्थिआणमणी

---

१. जे (क,ख) ।
२. एणट्ठेणं (ग) ।
३. अहण्णं (ख) सर्वत्र ।
४. इत्थीवयू (क) ।
५. °आणवणी (ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जा य पुमआणमणी जा य णपुंसगआणमणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।।

७. अह भंते ! जा य इत्थीपण्णवणी जा य पुमपण्णवणी जा य णपुंसगपण्णवणी पण्णवणी णं एसा भासा ? ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जा य इत्थिपण्णवणी जा य पुमपण्णवणी जा य णपुंसगपण्णवणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।।

८. अह भंते ! जा जातीति इत्थिवऊ जातीति पुमवऊ जातीति णपुंसगवऊ पण्णवणी णं एसा भासा ? ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जातीति इत्थिवऊ जातीति पुमवऊ जातीति णपुंसगवऊ पण्णवणी णं एसा भासा, न एसा भासा मोसा ।।

९. अह भंते ! जातीति इत्थिआणमणी जातीति पुमआणमणी जातीति णपुंसगाणमणी[1] पण्णवणी णं एसा भासा ? ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जातीति इत्थीआणमणी जातीति पुमआणमणी जातीति णपुंसगाणमणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।।

१०. अह भंते ! जातीति इत्थिपण्णवणी जातीति पुमपण्णवणी जातीति णपुंसग-पण्णवणी पण्णवणी णं एसा भासा ? ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जातीति इत्थिपण्णवणी जातीति पुमपण्णवणी जातीति णपुंसगपण्णवणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।।

मंदकुमाराइभासासण्णा-पदं

११. अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणइ बुयमाणे अहमेसे[2] बुयामि अहमेसे बुयामीति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ।।

१२. अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति आहारमाहारेमाणे अहमेसे आहारमाहारेमि अहमेसे आहारमाहारेमि त्ति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ।।

१३. अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति अयं मे अम्मा-पियरो अयं मे अम्मा-पियरो त्ति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ।।

१४. अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति अयं मे अतिराउले अयं मे अतिराउले त्ति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ।।

१५. अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति अयं मे भट्टिदारए अयं मे भट्टिदारए त्ति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ।।

१६. अह भंते ! उट्टे गोणे खरे घोडए अए एलए जाणति बुयमाणे अहमेसे बुयामि अहमेसे बुयामि त्ति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ।।

१७. अह भंते ! उट्टे[3] °गोणे खरे घोडए अए° एलए जाणति आहारेमाणे अहमेसे आहारेमि अहमेसे आहारेमि त्ति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ।।

१८. अह भंते ! उट्टे गोणे खरे घोडए अए एलए जाणति अयं मे अम्मा-पियरो अयं मे अम्मा-पियरो त्ति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ।।

---

१. णपुंसआणमणी (ग) ।

२. अहमेसा (ख,घ) ।

३. सं० पा०—उट्टे जाव एलए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. अह भंते ! उट्टे[1] •गोणे खरे घोडए अए° एलए जाणति अयं मे अतिराउले अयं मे अतिराउले त्ति ? गोयमा[2] ! •णो इणट्ठे समट्ठे°, णण्णत्थ सण्णिणो ।।

२०. अह भंते ! उट्टे[3] •गोणे खरे घोडए अए° एलए जाणति अयं मे भट्टिदारए अयं मे भट्टिदारए त्ति ? गोयमा[4] ! •णो इणट्ठे समट्ठे°, णण्णत्थ सण्णिणो ।।

एगवयणाइभासा-पदं

२१. अह भंते ! मणुस्से महिसे आसे हत्थी सीहे वग्घे वगे[5] दीविए अच्छे तरच्छे परस्सरे सियाले विराले सुणए कोलसुणए 'कोक्कंतिए ससए'[6] चित्तए चिल्ललए जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वा सा एगवऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्से जाव चिल्ललए जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वा सा एगवऊ ।।

२२. अह भंते ! मणुस्सा जाव चिल्ललगा जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वा सा बहुवऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्सा जाव चिल्ललगा सव्वा सा बहुवऊ ।।

२३. अह भंते ! मणुस्सी महिसी वलवा हत्थिणिया सीही वग्घी वगी[7] दीविया अच्छी तरच्छी परस्सरी[8] सियाली विराली सुणिया कोलसुणिया कोक्कंतिया ससिया चित्तिया चिल्ललिया जा यावण्णा तहप्पगारा सव्वा सा इत्थिवऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्सी जाव चिल्ललिया जा यावण्णा तहप्पगारा सव्वा सा इत्थिवऊ ।।

२४. अह भंते ! मणुस्से जाव चिल्ललए जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वा सा पुमवऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्से जाव चिल्ललए जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वा सा पुमवऊ ।।

२५. अह भंते ! कंसं[9] कंसोयं[10] परिमंडलं सेलं थूभं जालं थालं तारं रूवं अच्छि पव्वं कुंडं पउमं दुद्धं दहिं णवणीयं आसणं सयणं[11] भवणं विमाणं छत्तं चामरं भिंगारं अंगणं निरंगणं आभरणं रयणं जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वं तं णपुंसगवऊ ? हंता गोयमा ! कंसं जाव रयणं जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वं तं णपुंसगवऊ ।।

२६. अह भंते ! पुढवीति इत्थीवऊ आउत्ति पुमवऊ धण्णेत्ति णपुंसगवऊ पण्णवणी णं एसा भासा ? ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! पुढवित्ति इत्थिवऊ आउत्ति पुमवऊ, धण्णेत्ति णपुंसगवऊ, पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।।

२७. अह भंते ! पुढवीति इत्थीआणमणी आउत्ति पुमआणमणी धण्णेत्ति नपुंसगाणमणी[12] पण्णवणी णं एसा भासा ? ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! पुढवीति इत्थिआणमणी, आउत्ति पुमआणमणी, धण्णेत्ति णपुंसगाणमणी, पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।।

२८. अह भंते ! पुढवीति इत्थिपण्णवणी आउत्ति पुमपण्णवणी धण्णेत्ति णपुंसगपण्णवणी आराहणी णं एसा भासा ? ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! पुढवीति

---

१. सं० पा०—उट्टे जाव एलए ।
२. सं० पा०—गोयमा जाव णण्णत्थ ।
३. सं० पा०—उट्टे जाव एलए ।
४. सं० पा०—गोयमा जाव णण्णत्थ ।
५. विगे (क,ख,ग,घ) ।
६. ससए कोक्कंतिए (मवृ) ।
७. विगी (क,ख,ग,घ) ।
८. परस्सरी रासभी (क) ।
९. कस्सं (क) ।
१०. संस्कृतकोशेषु 'कंसीयं' इति शब्दो लभ्यते ।
११. सतणं (क) ।
१२. नपुंसकाणमणी (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इत्थिपण्णवणी आउत्ति पुमपण्णवणी अण्णेत्ति णपुंसगपण्णवणी आराहणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥

२९. इच्चेवं भंते ! इत्थिवयणं वा पुमवयणं वा णपुंसगवयणं वा वयमाणे पण्णवणी णं एसा भासा ? ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! इत्थिवयणं वा पुमवयणं वा णपुंसगवयणं वा वयमाणे पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ॥

भासासरूव-पदं

३०. भासा णं भंते ! किमादीया किंपहवा[1] किंसंठिया किंपज्जवसिया ? गोयमा ! भासा णं जीवादीया सरीरपहवा[2] वज्जसंठिया लोगंतपज्जवसिया पण्णत्ता ॥

गाहा—

भासा कओ य पभवति ? कतिहिं च समएहिं भासती भासं ?
भासा कतिप्पगारा ? कति वा भासा अणुमयाओ ? ॥१॥
सरीरप्पभवा भासा, दोहि य समएहिं भासती भासं ।
भासा चउप्पगारा, दोण्णि य भासा अणुमयाओ ॥२॥

भासाभेय-पदं

३१. कतिविहा णं भंते ! भासा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा भासा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तिया य अपज्जत्तिया य ॥

३२. पज्जत्तिया णं भंते ! भासा कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सच्चा य मोसा य ॥

३३. सच्चा णं भंते ! भासा पज्जत्तिया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—जणवयसच्चा सम्मतसच्चा ठवणासच्चा णामसच्चा रूवसच्चा पडुच्च-सच्चा ववहारसच्चा भावसच्चा जोगसच्चा ओवम्मसच्चा ॥

गाहा—

जणवय सम्मत ठवणा, णामे रूवे पडुच्चसच्चे य ।
ववहार भाव जोगे, दसमे ओवम्मसच्चे य ॥१॥

३४. मोसा णं भंते ! भासा पज्जत्तिया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—कोहणिस्सिया माणणिस्सिया मायाणिस्सिया लोभणिस्सिया पेज्ज-णिस्सिया दोसणिस्सिया हासणिस्सिया भयणिस्सिया अक्खाइयाणिस्सिया[3] उवघाय-णिस्सिया ॥

गाहा—

कोहे माणे माया, लोभे पेज्जे तहेव दोसे य ।
हास भए अक्खाइय, उवघाइयणिस्सिया दसमा ॥१॥

३५. अपज्जत्तिया णं भंते ! भासा कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सच्चामोसा य असच्चामोसा य ॥

---

१. किंपवहा (ख,ग,घ) ।
२. सरीरप्पभवा (क,ख,ग,घ) ।
३. अक्खाइयणि० (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६. सच्चामोसा णं भंते ! भासा अपज्जत्तिया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—उप्पण्णमिस्सिया, विगयमिस्सिया, उप्पण्णविगयमिस्सिया, जीवमिस्सिया अजीवमिस्सिया जीवाजीवमिस्सिया अणंतमिस्सिया परित्तमिस्सिया, अद्धामिस्सिया अद्धद्धामिस्सिया ॥

३७. असच्चामोसा णं भंते ! भासा अप्पज्जत्तिया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुवालसविहा पण्णत्ता, तं जहा—

गाहा—

आमंतणि आणमणी[1], जायणि तह पुच्छणी य पण्णवणी ।
पच्चक्खाणी भासा, भासा इच्छाणुलोमा य ॥१॥
अणभिग्गहिया भासा, भासा य अभिग्गहम्मि बोधव्वा ।
संसयकरणी भासा, 'वोयड अव्वोयडा'[2] चेव ॥२॥

भासगाभासग-पदं

३८. जीवा णं भंते ! किं भासगा अभासगा ? गोयमा ! जीवा भासगा वि अभासगा वि ॥

३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जीवा भासगा वि अभासगा वि ? गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संसारसमावण्णगा य असंसारसमावण्णगा य । तत्थ णं जेते असंसारसमावण्णगा ते णं सिद्धा । सिद्धा णं अभासगा । तत्थ णं जेते संसारसमावण्णगा ते णं दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्थ णं जेते सेलेसिपडिवण्णगा ते णं अभासगा । तत्थ णं जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदिया य अणेगिंदिया य । तत्थ णं जेते एगिंदिया ते णं अभासगा । तत्थ णं जेते अणेगिंदिया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं अभासगा । तत्थ णं जेते पज्जत्तगा ते णं भासगा । से एतेणट्ठेणं[3] गोयमा ! एवं वुच्चति—जीवा भासगा वि अभासगा वि ॥

४०. नेरइया णं भंते ! किं भासगा अभासगा ? गोयमा ! नेरइया भासगा वि अभासगा वि ॥

४१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—नेरइया भासगा वि अभासगा वि ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं अभासगा । तत्थ णं जेते पज्जत्तगा ते णं भासगा । से एतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया भासगा वि अभासगा वि । एवं एगिंदियवज्जाणं णिरंतरं भाणियव्वं ॥

भासज्जाय-पदं

४२. कति णं भंते ! भासज्जाता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि भासज्जाता पण्णत्ता, तं जहा—सच्चमेगं भासज्जातं, बितियं मोसं, ततियं सच्चामोसं, चउत्थं असच्चामोसं ॥

४३. जीवा णं भंते ! किं सच्चं भासं भासंति ? मोसं भासं भासंति ? सच्चामोसं

१. याणमणी (घ) ।
२. वोगड अव्वोगडा (क) ।
३. एणट्ठेणं (क,ग,घ); तेणट्ठेणं (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भासं भासंति ? असच्चामोसं भासं भासंति ? गोयमा ! जीवा सच्चं पि भासं भासंति, मोसं पि भासं भासंति, सच्चामोसं पि भासं भासंति, असच्चामोसं पि भासं भासंति ।।

४४. णेरइया णं भंते ! किं सच्चं भासं भासंति जाव असच्चामोसं भासं भासंति ? गोयमा ! णेरइया णं सच्चं पि भासं भासंति जाव असच्चामोसं पि भासं भासंति। एवं असुरकुमारा जाव थणियकुमारा ।।

४५. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया य णो सच्चं णो मोसं णो सच्चामोसं भासं भासंति, असच्चामोसं भासं भासंति ।।

४६. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! किं सच्चं भासं भासंति जाव असच्चामोसं भासं भासंति ? गोयमा ! पंचेंदियतिरिक्खजोणिया णो सच्चं भासं भासंति, णो मोसं भासं भासंति, णो सच्चामोसं भासं भासंति, एगं असच्चामोसं भासं भासंति, णण्णत्थ सिक्खा-पुव्वगं उत्तरगुणलद्धिं वा पडुच्च सच्चं पि भासं भासंति, मोसं पि भासं भासंति, सच्चामोसं पि भासं भासंति, असच्चामोसं पि भासं भासंति। मणुस्सा जाव वेमाणिया एए जहा[1] जीवा तहा भाणियव्वा ।।

भासादव्वगहण-निसिरण-पदं

४७. जीवे णं भंते। जाइं दव्वाइं भासत्ताए गेण्हति ताइं किं ठियाइं गेण्हति ? अठियाइं गेण्हति ? गोयमा ! ठियाइं गेण्हति, णो अठियाइं गेण्हति ।।

४८. जाइं भंते ! ठियाइं गेण्हति ताइं किं दव्वओ गेण्हति ? खेत्तओ गेण्हति ? कालओ गेण्हति ? भावओ गेण्हति ? गोयमा ! दव्वओ वि गेण्हति, खेत्तओ वि गेण्हति, कालओ वि गेण्हति, भावओ वि गेण्हति ।।

४९. जाइं दव्वओ गेण्हति ताइं किं एगपएसियाइं गेण्हति दुपएसियाइं गेण्हति जाव अणंतपएसियाइं गेण्हति ? गोयमा ! णो एगपएसियाइं गेण्हति जाव णो असंखेज्जपएसियाइं गेण्हति, अणंतपएसियाइं गेण्हति ।।

५०. जाइं खेत्तओ गेण्हति ताइं किं एगपएसोगाढाइं गेण्हति दुपएसोगाढाइं गेण्हति जाव असंखेज्जपएसोगाढाइं गेण्हति ? गोयमा ! णो एगपएसोगाढाइं गेण्हति जाव णो संखेज्जपएसोगाढाइं गेण्हति, असंखेज्जपएसोगाढाइं गेण्हति ।।

५१. जाइं कालओ गेण्हति ताइं किं एगसमयट्ठितीयाइं[2] गेण्हति दुसमयट्ठितीयाइं गेण्हति जाव असंखेज्जसमयट्ठितीयाइं गेण्हति ? गोयमा ! एगसमयट्ठितीयाइं पि गेण्हति, दुसमयट्ठितीयाइं पि गेण्हति जाव असंखेज्जसमयट्ठितीयाइं पि गेण्हति ।।

५२. जाइं भावओ गेण्हति ताइं किं वण्णमंताइं गेण्हति गंधमंताइं गेण्हति रसमंताइं गेण्हति फासमंताइं गेण्हति ? गोयमा ! वण्णमंताइं पि गेण्हति जाव फासमंताइं पि गेण्हति ।।

५३. जाइं भावओ वण्णमंताइं गेण्हति ताइं किं एगवण्णाइं गेण्हति जाव पंचवण्णाइं गेण्हति ? गोयमा ! गहणदव्वाइं पडुच्च एगवण्णाइं पि गेण्हति जाव पंचवण्णाइं पि गेण्हति, सव्वग्गहणं पडुच्च णियमा पंचवण्णाइं गेण्हति, तं जहा—कालाइं नीलाइं लोहियाइं हालिद्दाइं सुक्किलाइं ।।

१. प० ११।४३।

२. °ठियाइं (क,ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५४. जाइं वण्णओ कालाइं गेण्हति ताइं किं एगगुणकालाइं गेण्हति जाव अणंतगुण-कालाइं गेण्हति ? गोयमा ! एगगुणकालाइं पि गेण्हति जाव अणंतगुणकालाइं पि गेण्हति । एवं जाव सुक्किलाइं पि ॥

५५. जाइं भावओ गंधमंताइं गेण्हति ताइं किं एगगंधाइं गेण्हति दुगंधाइं गेण्हति ? गोयमा ! गहणदव्वाइं पडुच्च एगगंधाइं पि गेण्हति दुगंधाइं पि गेण्हति, सव्वग्गहणं पडुच्च नियमा दुगंधाइं गेण्हति ॥

५६. जाइं गंधओ सुब्भिगंधाइं गेण्हति ताइं किं एगगुणसुब्भिगंधाइं गेण्हति जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइं गेण्हति ? गोयमा ! एगगुणसुब्भिगंधाइं पि गेण्हति जाव अणंतगुण-सुब्भिगंधाइं पि गेण्हति । एवं दुब्भिगंधाइं पि गेण्हति ॥

५७. जाइं भावतो रसमंताइं गेण्हति ताइं किं एगरसाइं गेण्हति जाव[1] पंचरसाइं गेण्हति ? गोयमा ! गहणदव्वाइं पडुच्च एगरसाइं पि गेण्हति जाव पंचरसाइं पि गेण्हति, सव्वगहणं पडुच्च णियमा पंचरसाइं गेण्हति ॥

५८. जाइं रसतो तित्तरसाइं गेण्हति ताइं किं एगगुणतित्तरसाइं गेण्हति जाव अणंत-गुणतित्तरसाइं गेण्हति ? गोयमा ! एगगुणतित्तरसाइं पि गेण्हति जाव अणंतगुणतित्तरसाइं पि गेण्हति । एवं जाव महुरो रसो ॥

५९. जाइं भावतो फासमंताइं गेण्हति ताइं किं एगफासाइं गेण्हति जाव अट्ठफासाइं गेण्हति ? गोयमा ! गहणदव्वाइं पडुच्च णो एगफासाइं गेण्हति, दुफासाइं गेण्हति जाव चउफासाइं पि गेण्हति, णो पंचफासाइं गेण्हति जाव णो अट्ठफासाइं पि गेण्हति । सव्वग्गहणं पडुच्च णियमा चउफासाइं गेण्हति, तं जहा-- सीयफासाइं गेण्हति, उसिणफासाइं गेण्हति, णिद्धफासाइं गेण्हति, लुक्खफासाइं गेण्हति ॥

६०. जाइं फासओ सीयाइं गेण्हति ताइं किं एगगुणसीयाइं गेण्हति जाव अणंतगुण-सीयाइं गेण्हति ? गोयमा ! एगगुणसीयाइं पि गेण्हति जाव अणंतगुणसीयाइं पि गेण्हति । एवं उसिण-णिद्ध-लुक्खाइं जाव अणंतगुणाइं पि गेण्हति ॥

६१. जाइं भंते ! जाव अणंतगुणलुक्खाइं गेण्हति ताइं किं पुट्ठाइं गेण्हति ? अपुट्ठाइं गेण्हति ? गोयमा ! पुट्ठाइं गेण्हति, णो अपुट्ठाइं गेण्हति ॥

६२. जाइं भंते ! पुट्ठाइं गेण्हति ताइं किं ओगाढाइं गेण्हति ? अणोगाढाइं गेण्हति ? गोयमा ! ओगाढाइं गेण्हति, णो अणोगाढाइं गेण्हति ॥

६३. जाइं भंते ! ओगाढाइं गेण्हति ताइं किं अणंतरोगाढाइं गेण्हति ? परंपरोगाढाइं गेण्हति ? गोयमा ! अणंतरोगाढाइं गेण्हति, णो परंपरोगाढाइं गेण्हति ॥

६४. जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं गेण्हति ताइं किं अणूइं गेण्हति ? बादराइं गेण्हति ? गोयमा ! अणूइं पि गेण्हति, बादराइं पि गेण्हति ॥

६५. जाइं भंते ! अणूइं पि गेण्हति बायराइं पि गेण्हति ताइं किं उड्ढं गेण्हति ? अहे गेण्हति ? तिरियं गेण्हति ? गोयमा ! उड्ढं पि गेण्हति, अहे वि गेण्हति, तिरियं पि गेण्हति ॥

६६. जाइं भंते ! उड्ढं पि गेण्हति अहे वि गेण्हति तिरियं पि गेण्हति ताइं किं आदिं

---

१. जाव किं (क,ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गेण्हति ? मज्झे गेण्हति ? पज्जवसाणे गेण्हति ? गोयमा ! आदिं पि गेण्हति, मज्झे वि गेण्हति, पज्जवसाणे वि गेण्हति ।।

६७. जाइं भंते ! आदिं पि गेण्हति मज्झे वि गेण्हति पज्जवसाणे वि गेण्हति ताइं किं सविसए गेण्हति ? अविसए गेण्हति ? गोयमा ! सविसए गेण्हति, णो अविसए गेण्हति ।।

६८. जाइं भंते ! सविसए गेण्हति ताइं किं आणुपुव्विं गेण्हति ? अणाणुपुव्विं गेण्हति ? गोयमा ! आणुपुव्विं गेण्हति, णो अणाणुपुव्विं गेण्हति ।।

६९. जाइं भंते ! आणुपुव्विं गेण्हति ताइं किं तिदिसिं गेण्हति जाव छद्दिसिं गेण्हति ? गोयमा ! णियमा छद्दिसिं गेण्हति ।।

गाहा—

पुट्ठोगाढ अणंतर, अणू य तह बायरे य उड्ढमहे ।
आदि विसयाणुपुव्वि, णियमा तह छद्दिसिं चेव ।।१।।

७०. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गेण्हति ताइं किं संतरं गेण्हति ? निरंतरं गेण्हति ? गोयमा ! संतरं पि गेण्हति, निरंतरं पि गेण्हति । संतरं गिण्हमाणे जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जसमए अंतरं कट्टु गेण्हति । निरंतरं गिण्हमाणे जहण्णेणं दो समए, उक्कोसेणं असंखेज्जसमए अणुसमयं अविरहियं निरंतरं गेण्हति ।।

७१. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं णिसिरति ताइं किं संतरं णिसिरति ? णिरंतरं णिसिरति ? गोयमा ! संतरं णिसिरति, णो णिरंतरं णिसिरति । संतरं णिसिरमाणे एगेणं समएणं गेण्हइ एगेणं समएणं णिसिरति[1] । एएणं गहण-णिसिरणोवाएणं जहण्णेणं दुसमइयं उक्कोसेणं असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं गहण-णिसिरणं[2] करेति ।।

७२. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं णिसिरति ताइं किं भिण्णाइं णिसिरति ? अभिण्णाइं णिसिरति ? गोयमा ! भिण्णाइं पि णिसिरति अभिण्णाइं पि णिसिरति । जाइं भिण्णाइं णिसिरति ताइं अणंतगुणपरिवुड्ढीए[3] 'परिवड्ढमाणाइं-परिवड्ढमाणाइं'[4] लोयंतं

१. अस्य स्थापना एवं—

०	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि
ग्र	ग्र	ग्र	ग्र	ग्र	ग्र	ग्र	०

आदर्शेषु अस्य स्थापना अन्यथा पि लभ्यते—

ग्र	ग्र	ग्र	ग्र	ग्र	०
०	नि	नि	नि	नि	नि

२. णिसरणोवायं (क, ख, ग, घ) ।

३. °परिवड्ढीए (क); °परिवुड्ढीए णं (ख,ग,घ) ।

४. परिवड्ढेमाणाइं २ (ख,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फुसंति । जाइं अभिण्णाइं णिसिरति ताइं असंखेज्जाओ ओगाहणवग्गणाओ[1] गंता भेयमावज्जंति, संखेज्जाइं जोयणाइं गंता विद्धंसमागच्छंति ।।

७३. तेसि[2] णं भंते ! दव्वाणं कतिविहे भेए पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे भेए पण्णत्ते, तं जहा—खंडाभेए पयराभेए[3] चुण्णियाभेए अणुतडियाभेए उक्करियाभेए ।।

७४. से किं तं खंडाभेए ? खंडाभेए—जण्णं अयखंडाण वा तउखंडाण वा तंबखंडाण वा सीसाखंडाण[4] वा रययखंडाण[5] वा जायरूवखंडाण वा खंडएण भेदे भवति । से त्तं खंडाभेदे ।।

७५. से किं तं पयराभेदे ? पयराभेए—जण्णं वंसाण वा वेत्ताण वा णलाण वा कदलीथंभाण[6] वा अब्भपडलाण वा पयरएणं[7] भेए भवति । से त्तं पयराभेदे ।।

७६. से किं तं चुण्णियाभेए ? चुण्णियाभेए—जण्णं तिलचुण्णाण वा मुग्गचुण्णाण वा मासचुण्णाण वा पिप्पलिचुण्णाण वा मिरियचुण्णाण[8] वा सिंगबेरचुण्णाण वा चुण्णियाए भेदे भवति । से त्तं चुण्णियाभेदे ।।

७७. से किं तं अणुतडियाभेदे ? अणुतडियाभेदे - जण्णं अगडाण वा तलागाण वा दहाण वा णदीण वा वावीण वा पुक्खरिणीण वा दीहियाण वा गुंजालियाण वा सराण वा सरपंतियाण वा सरसरपंतियाण वा अणुतडियाए भेदे भवति । से त्तं अणुतडियाभेदे ।।

७८. से किं तं उक्करियाभेदे ? उक्करियाभेदे—जण्णं मूसगाण[9] वा मगूसाण[10] वा तिलसिंगाण वा मुग्गसिंगाण वा माससिंगाण वा एरंडबीयाण वा फुडित्ता[11] उक्करियाए भेदे भवति । से त्तं उक्करियाभेदे ।।

७९. एएसि णं भंते ! दव्वाणं खंडाभेदेणं पयराभेदणं चुण्णियाभेदेणं अणुतडियाभेदेणं उक्करियाभेदेण[12] य भिज्जमाणाणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाइं दव्वाइं उक्करियाभेदेणं[13] भिज्जमाणाइं, अणुतडियाभेदेणं भिज्जमाणाइं अणंतगुणाइं चुण्णियाभेदेणं भिज्जमाणाइं अणंतगुणाइं, पयराभेदेणं भिज्जमाणाइं अणंतगुणाइं, खंडाभेदेणं भिज्जमाणाइं अणंतगुणाइं ।।

८०. णेरइएणं[14] भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गेण्हति ताइं किं ठियाइं गेण्हति ? अट्ठियाइं गेण्हति ? गोयमा ! एवं चेव जहा[15] जीवे वत्तव्वया भणिया तहा णेरइयस्सवि जाव अप्पाबहुयं । एवं एगिंदियवज्जो दंडओ जाव वेमाणिया ।।

८१. जीवा णं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गेण्हंति ताइं किं ठियाइं गेण्हंति ?

---

१. ओगाहणावगहणाओ (ग); ओगाहणाओ (घ) ।
२. एएसि (ग) ।
३. पयर° (क,ख,ग,घ) ।
४. सीस° (ग) ; सीसग° (पु) ।
५. रयण° (क,ग,घ) ।
६. °खंभाण (ग) ।
७. पयरेणं (ख,ग) ।
८. मरिय° (क,ग) ; मिरी° (ख,घ) ।
९. मूसाण (ग) ।
१०. मंडूसाण (क,ख,ग,घ) ।
११. फुडिया (क), फढेता (ख,घ); फुट्टिया (ग) ।
१२. उक्कारिया° (घ) ।
१३. उक्कारिया° (ख,ग,घ) ।
१४. णेरइयाणं (क) ।
१५. प० ११।४७-७६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठियाइं गेण्हंति ? गोयमा ! एवं चेव पुहत्तेण[1] वि णेयव्वं जाव वेमाणिया ।।

८२. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं सच्चभासत्ताए गेण्हति ताइं किं ठियाइं गेण्हति ? अट्ठियाइं गेण्हति ? गोयमा ! जहा ओहियदंडओ[2] तहा एसो वि, नवरं—विगलेंदिया ण पुच्छिज्जंति । एवं मोसभासाए वि सच्चामोसभासाए वि ।।

८३. असच्चामोसभासाए वि एवं चेव, नवरं—असच्चामोसभासाए विगलिंदिया वि पुच्छिज्जंति इमेणं अभिलावेणं—विगलिंदिए णं भंते ! जाइं दव्वाइं असच्चामोस-भासत्ताए गेण्हति ताइं किं ठियाइं गेण्हति ? अट्ठियाइं गेण्हति ? गोयमा ! जहा[3] ओहिय-दंडओ । एवं एते एगत्त-पुहत्तेणं[4] दस दंडगा भाणियव्वा ।।

८४. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं सच्चभासत्ताए गेण्हति ताइं किं सच्चभासत्ताए णिसिरति[5] ? मोसभासत्ताए णिसिरति ? सच्चामोसभासत्ताए णिसिरति ? असच्चामोस-भासत्ताए णिसिरति ? गोयमा ! सच्चभासत्ताए णिसिरति, णो मोसभासत्ताए णिसिरति, णो सच्चामोसभासत्ताए णिसिरति, णो असच्चामोसभासत्ताए णिसिरति । एवं एगिंदिय-विगलिंदियवज्जो दंडओ जाव वेमाणिए । एवं पुहत्तेण[6] वि ।।

८५. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं मोसभासत्ताए गेण्हति ताइं किं सच्चभासत्ताए णिसिरति ? मोसभासत्ताए णिसिरति ? सच्चामोसभासत्ताए णिसिरति ? असच्चामोस-भासत्ताए णिसिरति ? गोयमा ! णो सच्चभासत्ताए णिसिरति, मोसभासत्ताए णिसिरति, णो सच्चामोसभात्ताए णिसिरति, णो असच्चामोसभासत्ताए णिसिरति । एवं सच्चा-मोसभासत्ताए वि । असच्चामोसभासत्ताए वि एवं चेव, णवरं—असच्चामोसभासत्ताए विगलिंदिया तहेव पुच्छिज्जंति । जाए चेव गेण्हति ताए चेव णिसिरति । एवं एते एगत्त-पुहत्तिया[7] अट्ठ दंडगा भाणियव्वा ।।

सोलसविहवयण-पदं

८६. कतिविहे णं भंते ! वयणे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविहे वयणे पण्णत्ते, तं जहा—एगवयणे दुवयणे बहुवयणे इत्थिवयणे पुमवयणे णपुंसगवयणे अज्झत्थवयणे उवणीयवयणे अवणीयवयणे उवणीयअवणीयवयणे अवणीयउवणीयवयणे तीतवयणे पडुप्पन्न-वयणे अणागयवयणे पच्चक्खवयणे परोक्खवयणे ।।

८७. इच्चेयं भंते ! एगवयणं वा जाव परोक्खवयणं वा वयमाणे पण्णवणी णं एसा भासा ? ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! इच्चेयं एगवयणं वा जाव परोक्खवयणं वा वयमाणे पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।।

८८. कति णं भंते ! भासज्जाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि भासज्जाया पण्णत्ता, तं जहा—सच्चमेगं भासज्जायं बितियं[8] मोसं भासज्जायं[9] ततियं सच्चामोसं भासज्जायं

---

१. बहुत्तेण (घ); पुहुत्तेण (पु) ।
२. प० ११।४७-७६ ।
३. प० ११।४७-७६ ।
४. पुहुत्तेण (क,घ) ।
५. णिस्सरति (ख); णिस्सिरति (ग); निसरति (घ) ।
६. पुहुत्तेण (क,ख,ग,घ) ।
७. पुहुत्तिया (ख,ग); पोहित्तिया (ग) ।
८. बीयं (क,ग) ।
९. भासजायं (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं असच्चामोसं भासज्जायं ॥

८९. इच्चेयाइं भंते ! चत्तारि भासज्जायाइं भासमाणे किं आराहए विराहए ? गोयमा ! इच्चेयाइं चत्तारि भासज्जायाई आउत्तं भासमाणे आराहए, णो विराहए। तेण परं 'अस्संजए अविरए'[1] अपडिहय-अपच्चक्खायपावकम्मे सच्चं वा भासं भासंतो, मोसं वा सच्चामोसं वा असच्चामोसं वा भासं भासमाणे णो आराहए, विराहए ॥

९०. एतेसि णं भंते ! जीवाणं सच्चभासगाणं मोसभासगाणं सच्चामोसभासगाणं असच्चामोसभासगाणं अभासगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सच्चभासगा, सच्चामोसभासगा असंखेज्जगुणा, मोसभासगा असंखेज्जगुणा, असच्चामोसभासगा असंखेज्जगुणा, अभासगा अणंतगुणा ॥

१. °अविरय (क,ख,घ); अस्संजय-अविरय (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारसमं सरीरपयं

सरीरभेय-पदं

१. कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए ॥

चउवीसदंडएसु सरीर-पदं

२. णेरइयाणं भंते ! कति सरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—वेउव्विए तेयए कम्मए । एवं असुरकुमाराणं वि जाव थणियकुमाराणं ॥

३. पुढविक्काइयाणं भंते ! कति सरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए तेयए कम्मए । एवं वाउक्काइयवज्जं जाव चउरिंदियाणं ॥

४. वाउक्काइयाणं भंते ! कति सरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए । एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण[1] वि ॥

५. मणुस्साणं[2] भंते ! कति सरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए ॥

६. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियाणं जहा णारगाणं ॥

ओहेण बद्ध-मुक्कसरीर-पदं

७. केवतिया णं भंते ! ओरालियसरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लया[3] य मुक्केल्लया[4] य । तत्थ णं जेते बद्धेल्लया ते णं असंखेज्जगा, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं[5] अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा । तत्थ णं जेते मुक्केल्लया ते णं अणंता, अणंताहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा, दव्वओ अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणा 'सिद्धाणं अणंत-भागो'[6] ॥

८. केवतिया णं भंते ! वेउव्वियसरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य । तत्थ णं जेते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा, असंखेज्जाहिं

१. °जोणिया (ख,ग) ।
२. मणूसाणं (क) ।
३. बद्धिल्लया (क,ख,ग,घ) ।
४. मुक्किल्लया (क,ख,ग,घ) ।
५. अवसप्पिणीहिं (ग) ।
६. सिद्धाणणंत° (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जतिभागो। तत्थ णं जेते मुक्केल्लगा ते णं अणंता, अणंताहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, जहा ओरालियस्स मुक्केल्लया तहेव वेउव्वियस्स वि भाणियव्वा ॥

९. केवतिया णं भंते ! आहारगसरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णता, तं जहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जेते बद्धेल्लगा ते णं सिय अत्थि सिय णत्थि। जति अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं[1]। तत्थ णं जेते मुक्केल्लया ते णं अणंता जहा ओरालियस्स मुक्केल्लया तहा य भाणियव्वा ॥

१०. केवतिया णं भंते ! तेयगसरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जेते बद्धेल्लगा ते णं अणंता, अणंताहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा, दव्वओ सिद्धेहिंतो अणंतगुणा सव्वजीवाणंतभागूणा। तत्थ णं जेते मुक्केल्लया ते णं अणंता, अणंताहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा, दव्वओ सव्वजीवेहिंतो अणंतगुणा, जीववग्गस्स अणंतभागो। एवं कम्मगसरीरा वि भाणियव्वा ॥

चउवीसदंडएसु बद्ध-मुक्कसरीर-पदं

११. णेरइयाणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जेते बद्धेल्लगा ते णं णत्थि। तत्थ णं जेते मुक्केल्लगा ते णं अणंता जहा[2] ओरालियमुक्केल्लगा तहा भाणियव्वा ॥

१२. णेरइयाणं भंते ! केवइया वेउव्वियसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जेते बद्धेल्लया ते णं असंखेज्जा, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पतरस्स असंखेज्जतिभागो, तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलं बीयवग्गमूल-पडुप्पण्णं[3], अहव णं अंगुलवितियवग्गमूलघणप्पमाणमेत्ताओ सेढीओ। तत्थ णं जेते मुक्केल्लगा ते णं जहा ओरालियस्स मुक्केल्लगा तहा भाणियव्वा ॥

१३. णेरइयाणं भंते ! केवतिया आहारगसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। एवं जहा ओरालिया बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य भणिया तहेव आहारगा वि भाणियव्वा ॥

१४. तेया-कम्मगाइं जहा एतेसिं चेव वेउव्वियाइं ॥

१५. असुरकुमाराणं भंते ! केवतिया ओरालियसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहा[4] णेरइयाणं ओरालिया[5] भणिया तहेव एतेसिं पि भाणियव्वा ॥

१६. असुरकुमाराणं भंते ! केवतिया वेउव्वियसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जेते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा,

---

१. °पुहुत्तं (क,ख,ग,घ)।
२. प० १२।७।
३. बितीयव° (क)।
४. प० १२।११।
५. ओरालियसरीरा (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पतरस्स असंखेज्जतिभागो, तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलस्स संखेज्जतिभागो। तत्थ णं जेते मुक्केल्लया ते णं जहा[1] ओरालियस्स मुक्केल्लगा तहा भाणियव्वा ॥

१७. आहारयसरीरा जहा एतेसि णं चेव ओरालिया तहेव दुविहा भाणियव्वा ॥

१८. तेया-कम्मसरीरा दुविहा वि जहा एतेसिं णं चेव वेउव्विया ॥

१९. एवं जाव थणियकुमारा ॥

२०. पुढविकाइयाणं भंते ! केवतिया ओरालियसरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा– बद्धेल्लया य मुक्केल्लया य। तत्थ णं जेते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा। तत्थ णं जेते मुक्केल्लगा ते णं अणंता, अणंताहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा, अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणा, सिद्धाणं अणंतभागो ॥

२१. पुढविकाइयाणं भंते ! केवतिया वेउव्वियसरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जेते बद्धेल्लगा ते णं णत्थि। तत्थ णं जेते मुक्केल्लगा ते णं जहा एतेसिं चेव ओरालिया भणिया तहेव भाणियव्वा। एवं आहारगसरीरा वि। तेया-कम्मगा जहा एतेसिं चेव ओरालिया ॥

२२. एवं आउक्काइया तेउक्काइया वि ॥

२३. वाउक्काइयाणं भंते ! केवतिया ओरालियसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। दुविहा वि जहा पुढविकाइयाणं ओरालिया ॥

२४. वेउव्वियाणं पुच्छा। गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जेते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा, समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति, णो चेव णं अवहिया सिया। मुक्केल्लया जहा पुढविक्काइयाणं ॥

२५. आहारय-तेया-कम्मा जहा पुढविकाइयाणं तहा भाणियव्वा ॥

२६. वणप्फइकाइयाणं जहा पुढविकाइयाणं, णवरं—तेया-कम्मगा जहा[2] ओहिया तेया-कम्मगा ॥

२७. बेइंदियाणं भंते ! केवतिया ओरालियसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जेते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जतिभागो, तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ असंखेज्जाइं सेढिवग्गमूलाइं। बेइंदियाणं ओरालियसरीरेहिं बद्धेल्लगेहिं पयरो[3] अवहीरति असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं कालओ, खेत्तओ अंगुलपयरस्स आवलियाए य असंखेज्जतिभागपलिभागेणं। तत्थ णं जेते मुक्केल्लगा ते जहा[4] ओहिया ओरालिया

---

१. प० १२।७।
२. प० १२।१०।
३. पयरं (पु); प्रतरं (वृ)।
४. प० १२।७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुक्केल्लया ॥

२८. वेउव्विया आहारगा य बद्धेल्लगा णत्थि, मुक्केल्लगा जहा ओहिया ओरालिया मुक्केल्लया ॥

२९. तेया-कम्मगा जहा एतेसिं चेव ओहिया ओरालिया ॥

३०. एवं जाव चउरिंदिया ॥

३१. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं एवं चेव, नवरं—वेउव्वियसरीरएसु इमो विसेसो—पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवतिया वेउव्वियसरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जेते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा जहा[1] असुरकुमाराणं, णवरं—तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जतिभागो। मुक्केल्लगा तहेव ॥

३२. मणुस्साणं भंते ! केवतिया ओरालियसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जेते बद्धेल्लगा ते णं सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा। जहण्णपए संखेज्जा—संखेज्जाओ कोडाकोडीओ[2] तिजमलपयस्स उवरिं चउजमलपयस्स हेट्ठा, अहव णं छट्ठो वग्गो पंचमवग्गपडुप्पण्णो, अहव णं छण्णउईछेयणगदाई रासी। उक्कोसपदे असंखेज्जा, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ रूवपक्खित्तेहिं मणुस्सेहिं सेढी अवहीरति, 'तीसे सेढीए काल-खेत्तेहिं अवहारो मग्गिज्जइ'[3] —असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं कालओ, खेत्तओ अंगुलपढमवग्गमूलं ततियवग्गमूलपडुप्पण्णं। तत्थ णं जेते मुक्केल्लगा ते जहा ओरालिया ओहिया मुक्केल्लगा ॥

३३. वेउव्वियाणं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जेते बद्धेल्लगा ते णं संखेज्जा, समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा संखेज्जेणं कालेणं अवहीरंति, णो चेव णं अवहिया सिया। तत्थ णं जेते मुक्केल्लगा ते णं जहा ओरालिया ओहिया ॥

३४. आहारगसरीरा जहा[4] ओहिया ॥

३५. तेया-कम्मया जहा एतेसिं चेव ओरालिया ॥

३६. वाणमंतरणं जहा णेरइयाणं ओरालिया आहारगा य। वेउव्वियसरीरगा जहा णेरइयाणं, णवरं—तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई संखेज्जजोयणसयवग्गपलिभागो पयरस्स। मुक्केल्लया जहा ओहिया[5] ओरालिया[6]। तेया-कम्मया जहा एएसिं चेव वेउव्विया ॥

३७. जोतिसियाणं एवं चेव, णवरं—तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई बेछप्पण्णंगुलसयवग्गपलिभागो[7] पयरस्स ॥

३८. वेमाणियाणं एवं चेव, णवरं—तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलबितियवग्गमूलं ततियवग्गमूलपडुप्पण्णं, अहव णं अंगुलततियवग्गमूलघणपमाणमेत्ताओ सेढीओ। सेसं तं चेव ॥

---

१. प० १२।१६।

२. अनुयोगद्वारस्य मल्लधारीयवृत्तौ 'कोडाकोडीओ' इति पाठो व्याख्यातोस्ति। 'क' संकेतित आदर्शे 'कोडीओ' इति पाठो लभ्यते।

३. × (घ)।

४. प० १२।६।

५. × (क,ग,घ)।

६. आहारगसरीरा जहा असुरकुमाराणं ते (क)।

७. वि० (क,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेरसमं परिणामपयं

परिणामभेय-पदं

१. कतिविहे णं भंते ! परिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे परिणामे पण्णत्ते, तं जहा—जीवपरिणामे य अजीवपरिणामे य ॥

जीवपरिणाम-पदं

२. जीवपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—गतिपरिणामे इंदियपरिणामे कसायपरिणामे लेसापरिणामे जोगपरिणामे उवओगपरिणामे 'णाणपरिणामे दंसणपरिणामे'[1] चरित्तपरिणामे वेदपरिणामे ॥

३. गतिपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—णिरयगतिपरिणामे तिरियगतिपरिणामे मणुयगतिपरिणामे देवगतिपरिणामे ॥

४. इंदियपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ? पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियपरिणामे चक्खिदियपरिणामे घाणिंदियपरिणामे जिब्भिदियपरिणामे[2] फासिंदियपरिणामे ॥

५. कसायपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—कोहकसायपरिणामे माणकसायपरिणामे मायाकसायपरिणामे लोभकसायपरिणामे ॥

६. लेस्सापरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—कण्हलेस्सापरिणामे णीललेस्सापरिणामे काउलेस्सापरिणामे तेउलेस्सापरिणामे पम्हलेस्सापरिणामे सुक्कलेस्सापरिणामे ॥

७. जोगपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—मणजोगपरिणामे वइजोगपरिणामे कायजोगपरिणामे ॥

८. उवओगपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सागारोवओगपरिणामे य अणागारोवओगपरिणामे[3] य ॥

९. णाणपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियनाणपरिणामे सुयणाणपरिणामे ओहिणाणपरिणामे मणपज्जवणाणपरिणामे केवलणाणपरिणामे ॥

---

१. दंसणपरिणामे णाणपरिणामे (घ) ।
२. रसनिंदिय° (ग) ।
३. अणायारो° (क,ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. अण्णाणपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—मतिअण्णाणपरिणामे सुयअण्णाणपरिणामे विभंगणाणपरिणामे ॥

११. दंसणपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मद्दंसणपरिणामे मिच्छादंसणपरिणामे सम्मामिच्छादंसणपरिणामे ॥

१२. चरित्तपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—सामाइयचरित्तपरिणामे छेदोवट्ठावणियचरित्तपरिणामे परिहारविसुद्धियचरित्तपरिणामे सुहुमसंपरायचरित्तपरिणामे अहक्खायचरित्तपरिणामे ॥

१३. वेयपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—इत्थिवेयपरिणामे पुरिसवेयपरिणामे णपुंसगवेयपरिणामे ॥

चउवीसदंडएसु परिणाम-पदं

१४. णेरइया गतिपरिणामेणं णिरयगतिया, इंदियपरिणामेणं पंचिंदिया, कसायपरिणामेणं कोहकसाई वि जाव लोभकसाई वि, लेस्सापरिणामेणं कण्हलेस्सा वि णीललेस्सा वि काउलेस्सा वि, जोगपरिणामेणं मणजोगी वि वइजोगी वि कायजोगी वि, उवओगपरिणामेणं सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि, णाणपरिणामेणं आभिणिबोहियणाणी वि सुयणाणी वि ओहिणाणी वि, अण्णाणपरिणामेणं मतिअण्णाणी वि सुयअण्णाणी वि विभंगणाणी वि, दंसणपरिणामेणं सम्मद्दिट्ठी वि मिच्छद्दिट्ठी वि सम्मामिच्छद्दिट्ठी वि, चरित्तपरिणामेणं णो चरित्ती णो चरित्ताचरित्ती अचरित्ती, वेदपरिणामेणं णो इत्थिवेदगा णो पुरिसवेदगा णपुंसगवेदगा ॥

१५. असुरकुमारा वि एवं चेव, नवरं—देवगतिया, कण्हलेसा वि जाव तेउलेसा वि, वेदपरिणामेणं इत्थिवेयगा वि पुरिसवेयगा वि णो णपुंसगवेदगा। सेसं तं चेव। एवं जाव थणियकुमारा ॥

१६. पुढविकाइया गतिपरिणामेणं तिरियगतिया, इंदियपरिणामेणं एगिंदिया, सेसं जहा णेरइयाणं, णवरं—लेस्सापरिणामेणं तेउलेस्सा वि, जोगपरिणामेणं कायजोगी, णाणपरिणामो णत्थि, अण्णाणपरिणामेणं मतिअण्णाणी वि सुयअण्णाणी वि, दंसणपरिणामेणं मिच्छदिट्ठी। सेसं तं चेव। एवं आउ-वणप्फइकाइया वि। तेऊ वाऊ एवं चेव, णवरं—लेस्सापरिणामेणं जहा णेरइया ॥

१७. बेइंदिया गतिपरिणामेणं तिरियगतिया, इंदियपरिणामेणं बेइंदिया, सेसं जहा णेरइयाणं, णवरं—जोगपरिणामेणं वइयोगी वि काययोगी वि, णाणपरिणामेणं आभिणिबोहियणाणी वि सुयणाणी वि, अण्णाणपरिणामेणं मतिअण्णाणी वि सुयअण्णाणी वि णो विभंगणाणी, दंसणपरिणामेणं सम्मद्दिट्ठी वि मिच्छदिट्ठी वि णो सम्मामिच्छदिट्ठी। सेसं तं चेव। एवं जाव चउरिंदिया। णवरं—इंदियपरिवुड्ढी[1] कायव्वा ॥

१८. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया गतिपरिणामेणं तिरियगतिया[2]। सेसं जहा[3] णेरइयाणं, णवरं—लेस्सापरिणामेणं जाव सुक्कलेस्सा वि, चरित्तपरिणामेणं णो चरित्ती अचरित्ती वि

---

१. °परिवड्ढी (क,ख,घ)।

२. °गतीया (घ)।

३. प० १३।१४।

चरित्ताचरित्ती वि, वेदपरिणामेणं इत्थीवेदगा वि पुरिसवेदगा वि णपुंसगवेदगा वि ।।

१९. मणुस्सा गतिपरिणामेणं मणुयगतिया, इंदियपरिणामेणं पंचेंदिया अणिंदिया वि, कसायपरिणामेणं कोहकसाई वि जाव अकसाई वि, लेस्सापरिणामेणं कण्हलेस्सा वि जाव अलेस्सा वि, जोगपरिणामेणं मणजोगी वि जाव अजोगी वि, उवओगपरिणामेणं जहा णेरइया, णाणपरिणामेणं आभिणिबोहियणाणी वि जाव केवलणाणी वि, अण्णाणपरिणामेणं तिण्णि वि अण्णाणा, दंसणपरिणामेणं तिण्णि वि दंसणा, चरित्तपरिणामेणं चरित्ती वि अचरित्ती वि चरित्ताचरित्ती वि, वेदपरिणामेणं इत्थिवेदगा वि पुरिसवेदगा वि नपुंसगवेदगा वि अवेदगा वि ।।

२०. वाणमंतरा गतिपरिणामेणं देवगइया जहा[1] असुरकुमारा। एवं जोतिसिया वि, णवरं—लेस्सापरिणामेणं तेउलेस्सा। वेमाणिया वि एवं चेव, णवरं—लेस्सापरिणामेणं तेउलेस्सा वि पम्हलेस्सा वि सुक्कलेस्सा वि। से त्तं जीवपरिणामे ।।

अजीवपरिणाम-पदं

२१. अजीवपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—बंधणपरिणामे गतिपरिणामे संठाणपरिणामे भेदपरिणामे वण्णपरिणामे गंधपरिणामे रसपरिणामे फासपरिणामे अगरुयलहुयपरिणामे[2] सद्दपरिणामे ।।

२२. बंधणपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—निद्धबंधणपरिणामे य लुक्खबंधणपरिणामे य।

गाहा—

समणिद्धयाए बंधो ण होति, समलुक्खयाए वि ण होति।
वेमायणिद्ध-लुक्खत्तणेण बंधो उ खंधाणं ।।१।।
णिद्धस्स णिद्धेण दुयाहिएणं, लुक्खस्स लुक्खेण दुयाहिएणं।
णिद्धस्स लुक्खेण उवेइ बंधो, जहण्णवज्जो विसमो समो वा ।।२।।

२३. गतिपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—फुसमाणगतिपरिणामे[3] य अफुसमाणगतिपरिणामे य, अहवा दीहगइपरिणामे य हस्सगइपरिणामे य ।।

२४. संठाणपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिमंडलसंठाणपरिणामे जाव[4] आययसंठाणपरिणामे ।।

२५. भेयपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—खंडाभेदपरिणामे जाव[5] उक्करियाभेदपरिणामे ।।

२६. वण्णपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालवण्णपरिणामे जाव[6] सुक्किलवण्णपरिणामे ।।

२७. गंधपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—

१. प० १३।१५।
२. अगुरु° (क,ग)।
३. फुसण° (घ)।
४. प० १।४।
५. प० ११।७३।
६. प० १।४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुब्भिगंधपरिणामे य दुब्भिगंधपरिणामे य ।।

२८. रसपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—तित्तरसपरिणामे जाव[1] महुररसपरिणामे ।।

२९. फासपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—कक्खडफासपरिणामे य जाव[2] लुक्खफासपरिणामे य ।।

३०. अगरुयलहुयपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ।।

३१. सद्दपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुब्भिसद्दपरिणामे य दुब्भिसद्दपरिणामे य । से त्तं अजीवपरिणामे ।।

१,२. प० १।४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोद्दसमं कसायपयं

कसायभेय-पदं

१. कति णं भंते ! कसाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए ।।

चउवीसदंडएसु कसायपरूवण-पदं

२. णेरइयाणं भंते ! कति कसाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाए जाव लोभकसाए। एवं जाव वेमाणियाणं ।।

कसायपइट्ठा-पदं

३. कतिपतिट्ठिए णं भंते ! कोहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउपतिट्ठिए कोहे पण्णत्ते, तं जहा—आयपतिट्ठिए परपतिट्ठिए तदुभयपतिट्ठिए अप्पतिट्ठिए। एवं णेरइयाणं[1] जाव वेमाणियाणं दंडओ ।।

४. एवं माणेणं दंडओ, मायाए दंडओ, लोभेणं दंडओ ।।

कसायउप्पत्ति-पदं

५. 'कतिहि णं'[2] भंते ! ठाणेहिं कोहुप्पत्ती भवति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती भवति, तं जहा— खेत्तं पडुच्च, वत्थुं पडुच्च, सरीरं पडुच्च, उवहिं पडुच्च। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ।।

६. एवं माणेण वि मायाए वि लोभेण वि। एवं एते वि चत्तारि दंडगा ।।

कसायपभेय-पदं

७. कतिविहे णं भंते ! कोहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, तं जहा—अणंताणुबंधी कोहे अप्पच्चक्खाणे कोहे पच्चक्खाणावरणे कोहे संजलणे कोहे। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ।।

८. एवं माणेणं मायाए लोभेणं। एए वि चत्तारि दंडगा[3] ।।

९. कतिविहे णं भंते ! कोहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे कोहे पण्णत्ते, तं जहा—आभोगणिव्वत्तिए अणाभोगणिव्वत्तिए उवसंते अणुवसंते। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ।।

---

१. णेरइयादीणं (पु)।

२. कतिविहेणं (क,ख,ग)।

३. दंडगा भाणियव्वा (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. एवं माणेण वि मायाए वि लोभेण वि चत्तारि दंडगा ॥

कसाएहिं कम्मचयोवचयादि-पदं

११. जीवा णं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु, तं जहा—कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं[1] ॥

१२. जीवा णं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणंति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं[2] तं जहा—कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं। एवं णेरइया जाव वेमाणिया ॥

१३. जीवा णं भंते । कतिहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिस्संति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिस्संति, तं जहा—कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं। एवं णेरइया जाव वेमाणिया ॥

१४. जीवा णं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ उवचिणिंसु ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ उवचिणिंसु, तं जहा—कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं। एवं णेरइया जाव वेमाणिया ॥

१५. जीवा णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं उवचिणंति कोहेणं जाव लोभेणं। एवं णेरइया जाव वेमाणिया ॥

१६. एवं उवचिणिस्संति ॥

१७. जीवा णं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ बंधिसु ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं, तं जहा—कोहेणं जाव लोभेणं ॥

१८. एवं णेरइया जाव वेमाणिया बंधेंसु बंधंति बंधिस्संति, उदीरेंसु उदीरंति उदीरिस्संति, वेइंसु वेएंति वेइस्संति[3], निज्जरेंसु निज्जरंति[4] निज्जरिस्संति। एवं एते जीवाईया वेमाणियपज्जवसाणा अट्ठारस दंडगा जाव वेमाणिया निज्जरिंसु निज्जरंति निज्जरिस्संति[5]।

गाहा—

आयपइट्ठिय खेत्तं, पडुच्चणंताणुबंधि आभोगे।
चिण उवचिण बंध उईर वेय तह निज्जरा चेव ॥१॥

---

१. अग्रिमसूत्रेषु सर्वत्र प्रथमाविभक्तेर्बहुवचनं दृश्यते।

२. ११, १३ सूत्रयोः पाठपद्धत्या अत्रापि 'अट्ठकम्मपगडीओ चिणंति' इति पाठो युज्यते।

३. वेदइस्संति (ख,घ)।

४. निज्जरेंति (क,ग)।

५. भगवत्या अष्टादशशतकस्य चतुर्थोद्देशकस्य वृत्तौ—'निज्जरिस्संति' अस्य पदस्य पूर्णं सूत्रमुल्लिखितमस्ति—वेमाणिया णं भंते ! कइहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपयडीओ निज्जरिस्संति? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं, तं जहा—कोहेणं जाव लोभेणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पनरसमं इंदियपयं

पढमो उद्देसो

गाहा—

१ संठाणं २ बाहल्लं, ३ पोहत्तं ४ कतिपएस ५ ओगाढे ।
६ अप्पाबहु ७ पुट्ठ ८ पविट्ठ[1], ९ विसय १० अणगार ११ आहारे[2] ॥१॥
१२ अद्दाय १३ असी १४ य मणी, १५ उडुपाणे[3] १६ तेल्ल १७ फाणिय
१८ वसा य ।
१९ कंबल २० थूणा २१ थिग्गल[4], २२ दीवोदहि २३,२४ लोगलोगे य ॥२॥

इंदियाणं भेद-पदं

१. कति णं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच इंदिया पण्णत्ता, तं जहा— सोइंदिए चक्खिदिए घाणिंदिए जिब्भिदिए फासिंदिए ॥

संठाण-पदं

२. सोइंदिए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! कलंबुयापुप्फसंठाणसंठिए पण्णत्ते ॥

३. चक्खिदिए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! मसूरचंदसंठाणसंठिए पन्नत्ते ॥

४. घाणिंदिए णं पुच्छा । गोयमा ! अइमुत्तगचंदसंठाणसंठिए[5] पण्णत्ते ॥

---

१. पविट्ठं (क,ष) ।

२. आहारए (ख) ।

३. दुद्ध° (क,ग,घ); दुट्ठ° (ख); हस्तलिखिते मलयगिरिवृत्यादर्शे तदनन्तरमसिविषयं, ततो मणिविषयं ततो दुग्धोपलक्षितपानकविषयं, ततस्तैलविषयं, ततः फाणितविषयं, तदनन्तरं वशाविषयं, इति व्याख्याक्रमोऽस्ति । अस्यानुसारेण षट्सूत्राण्येव जायन्ते । एतेषां सूत्राणामालापके मलयगिरिणा षट्सूत्राणामेव सूचनं कृतमस्ति— एवमसिमण्यादि विषयाण्यपि षट् सूत्राणि भावनीयानि । मलयगिरिणा दुग्धपानकं इति एकमेव सूत्रं स्वीकृतं, न तु द्वयम् । तस्याचार्यप्रवरस्य सम्मुखे 'दुद्धपाणए' इति पाठ आसीत् तेन तस्यैव व्याख्या कृता । मुनि पुण्यविजयजी द्वारा सम्पादनप्रयुक्तेषु आदर्शेषु 'उडुपाणे' इति पाठो दृश्यते । निशीथसूत्रस्य पाठेऽपि अस्य पुष्टिर्जायते ।

४. थिभिगल (ग,घ) ।

५. अइमुत्तगसंठाण° (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. जिब्भिदिए णं पुच्छा । गोयमा ! खुरप्पसंठाणसंठिए पण्णत्ते ॥

६. फासिंदिए णं पुच्छा । गोयमा ! णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते ॥

बाहल्ल-पदं

७. सोइंदिए णं भंते ! केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं[1] बाहल्लेणं पण्णत्ते एवं जाव फासिंदिए ॥

पोहत्त-पदं

८. सोइंदिए णं भंते ! केवतियं पोहत्तेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं पोहत्तेणं पण्णत्ते । एवं चक्खिंदिए वि घाणिंदिए वि ॥

९. जिब्भिदिए णं पुच्छा । गोयमा ! अंगुलपुहत्तं पोहत्तेणं पण्णत्ते ॥

१०. फासिंदिए णं पुच्छा । गोयमा ! सरीरपमाणमेत्ते पोहत्तेणं पण्णत्ते ॥

कतिपएस-पदं

११. सोइंदिए णं भंते ! कतिपएसिए पण्णत्ते ? गोयमा ! अणंतपएसिए पण्णत्ते । एवं जाव फासिंदिए ॥

ओगाढ-पदं

१२. सोइंदिए णं भंते ! कतिपएसोगाढे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जपएसोगाढे पण्णत्ते । एवं जाव फासिंदिए ॥

अप्पाबहुय-पदं

१३. एएसि णं भंते ! सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियाण ओगाहणट्ठयाए पएसट्ठयाए ओगाहण-पएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे चक्खिदिए ओगाहणट्ठयाए, सोइंदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, घाणिंदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, जिब्भिदिए ओगाहणट्ठयाए असंखेज्जगुणे, फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे; पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवे चक्खिदिए पएसट्ठयाए, सोइंदिए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणे, घाणिंदिए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणे, जिब्भिदिए पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे, फासिंदिए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणे; ओगाहण-पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवे चक्खिदिए ओगाहणट्ठयाए सोइंदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, घाणिंदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, जिब्भिदिए ओगाहणट्ठयाए असंखेज्जगुणे, फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, फासिंदियस्स ओगाहणट्ठयाएहिंतो चक्खिदिए पएसट्ठयाए अणंतगुणे, सोइंदिए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणे, घाणिंदिए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणे, जिब्भिदिए पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे, फासिंदिए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणे ॥

१४. सोइंदियस्स णं भंते ! केवतिया कक्खडगरुयगुणा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता कक्खडगरुयगुणा पण्णत्ता । एवं जाव फासिंदियस्स ॥

१५. सोइंदियस्स णं भंते ! केवतिया मउयलहुयगुणा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता मउयलहुयगुणा पण्णत्ता । एवं जाव फासिंदियस्स ॥

१६. एएसि णं भंते ! सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियाणं

---

१. भागे (क); भागो (ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कक्खडगरुयगुणाणं मउयलहुयगुणाणं कक्खडगरुयगुणमउयलहुयगुणाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चक्खिदियस्स कक्खडगरुयगुणा, सोइंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, घाणिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, जिब्भिदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा; मउयलहुयगुणाणं—सव्वत्थोवा फासिंदियस्स मउयलहुयगुणा, जिब्भिदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, घाणिंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, सोइंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, चक्खिदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा; कक्खडगरुयगुणाणं मउयलहुयगुणाण य—सव्वत्थोवा चक्खिदियस्स कक्खडगरुयगुणा, सोइंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, घाणिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, जिब्भिदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणेहिंतो तस्स चेव मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, जिब्भिदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, घाणिंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, सोइंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, चक्खिदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा ॥

चउवीसदंडएसु संठाणाइ-पदं

१७. णेरइयाणं भंते ! कति इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचेंदिया पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदिए जाव फासिंदिए ॥

१८. णेरइयाणं भंते ! सोइंदिए किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! कलंबुयासंठाणसंठिए पण्णत्ते। एवं जहा ओहियाणं वत्तव्वया भणिया तहेव णेरइयाणं पि जाव[1] अप्पाबहुयाणि दोण्णि वि, णवरं—णेरइयाणं भंते ! फासिंदिए किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भवधारणिज्जे य उत्तरवेउव्विए य। तत्थ णं जेसे भवधारणिज्जे से णं हुंडसंठाणसंठिए पण्णत्ते। तत्थ णं जेसे उत्तरवेउव्विए से वि तहेव। सेसं तं चेव ॥

१९. असुरकुमाराणं भंते ! कति इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचेंदिया पण्णत्ता। एवं जहा ओहियाणं जाव अप्पाबहुयाणि दोण्णि वि, णवरं—फासेंदिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भवधारणिज्जे य उत्तरवेउव्विए य। तत्थ णं जेसे भवधारणिज्जे से णं समचउरंससंठाणसंठिए पण्णत्ते। तत्थ णं जेसे उत्तरवेउव्विए से णं णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते। सेसं तं चेव। एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

२०. पुढविकाइयाणं भंते ! कति इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! एगे फासिंदिए पण्णत्ते ॥

२१. पुढविकाइयाणं भंते। फासिंदिए किंसंठिए[2] पण्णत्ते ? गोयमा ! मसूरचंदसंठाणसंठिए पण्णत्ते ॥

२२. पुढविकाइयाणं भंते ! फासिंदिए केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्जइभागं बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

२३. पुढविकाइयाणं भंते ! फासिंदिए केवतियं पोहत्तेणं पण्णत्ते गोयमा ! सरीरपमाणमेत्ते पोहत्तेणं पण्णत्ते ॥

१. प० १५।२-१६। २. किं संठाणसंठिए (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. पुढविकाइयाणं भंते ! फासिंदिए कतिपएसिए पण्णत्ते ? गोयमा ! अणंतपएसिए पण्णत्ते ।।

२५. पुढविकाइयाणं भंते ! फासिंदिए कतिपएसोगाढे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जपएसोगाढे पण्णत्ते ।।

२६. एतेसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं फासिंदियस्स ओगाहण-पएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे पुढविकाइयाणं फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए, से चेव पएसट्ठयाए अणंतगुणे ।।

२७. पुढविकाइयाणं भंते ! फासिंदियस्स केवतिया कक्खडगरुयगुणा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता । एवं मउयलहुयगुणा वि ।।

२८. एतेसि णं भंते ! पुढविकाइयाण फासेंदियस्स कक्खडगरुयगुण-मउयलहुयगुणाणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइयाणं फासेंदियस्स कक्खडगरुयगुणा, तस्स चेव मयउलहुयगुणा अणंतगुणा ।।

२९. एवं आउक्काइयाणं वि जाव वणस्सइकाइयाणं, णवरं—संठाणे इमो विसेसो दट्ठव्वो—आउक्काइयाणं थिबुगबिंदुसंठाणसंठिए पण्णत्ते, तेउक्काइयाणं सूईकलावसंठाणसंठिए पण्णत्ते, वाउक्काइयाणं पडागासंठाणसंठिए पण्णत्ते, वणप्फइकाइयाणं णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते ।।

३०. बेइंदियाणं भंते ! कति इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दो इंदिया पण्णत्ता, तं जहा—जिब्भिदिए य फासिंदिए य । दोण्हं पि इंदियाणं संठाणं बाहल्लं पोहत्तं पदेसा ओगाहणा य जहा[1] ओहियाणं भणिया तहा भाणियव्वा, णवरं—फासेंदिए हुंडसंठाणसंठिए पण्णत्ते त्ति इमो विसेसो ।।

३१. एतेसि णं भंते ! बेइंदियाणं जिब्भिदिय-फासेंदियाणं ओगाहणट्ठयाए पएसट्ठयाए ओगाहण-पएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे बेइंदियाणं जिब्भिदिए ओगाहणट्ठयाए, फासेंदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे[2] । पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवे बेइंदियाणं जिब्भिदिए पएसट्ठयाए, फासेंदिए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणे[3] । ओगाहण-पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवे बेइंदियस्स जिब्भिदिए ओगाहणट्ठयाए, फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे[4], फासेंदियस्स ओगाहणट्ठयाएहिंतो जिब्भिदिए पएसट्ठयाए अणंतगुणे, फासिंदिए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणे[5] ।।

३२. बेइंदियाणं भंते ! जिब्भिदियस्स केवइया कक्खडगरुयगुणा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता । एवं फासेंदियस्स वि । एवं मउयलहुयगुणा वि ।

३३. एतेसि णं भंते ! बेइंदियाणं जिब्भिदिय-फासेंदियाणं कक्खडगरुयगुणाणं मउयलहुयगुणाणं कक्खडगरुयगुण-मउयलहुयगुणाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदियाणं जिब्भिदियस्स कक्खड-

---

१. प० १५।५-१२

२. असंखेज्ज° (क,ख,घ) ।

३. असंखेज्ज° (क,ख,ग,घ) ।

४. असंखेज्ज° (क,ख,ग,घ) ।

५. असंखेज्ज° (क,ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गरुयगुणा, फासेंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, फासेंदियस्स कक्खडगरुयगुणेहिंतो तस्स चेव मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, जिब्भिदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा ।।

३४. एवं जाव चउरिंदिय त्ति, णवरं—इंदियपरिवुड्ढी[1] कायव्वा। तेइंदियाणं घाणेंदिए थोवे, चउरिंदियाणं चक्खिदिए थोवे। सेसं तं चेव ।।

३५. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणूसाण य जहा[2] णेरइयाणं, णवरं—फासिंदिए छव्विहसंठाणसंठिए पण्णत्ते, तं जहा—समचउरंसे णग्गोहपरिमंडले[3] सादी[4] खुज्जे वामणे हुंडे। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियाणं जहा[5] असुरकुमाराणं ।।

पुट्ठ-पदं

३६. पुट्ठाइं[6] भंते ! सद्दाइं सुणेइ ? अपुट्ठाइं सद्दाइं सुणेइ ? गोयमा ! पुट्ठाइं सद्दाइं सुणेइ, नो अपुट्ठाइं सद्दाइं सुणेइ ।।

३७. पुट्ठाइं भंते ! रूवाइं पासति ? अपुट्ठाइं रूवाइं पासति ? गोयमा ! णो पुट्ठाइं रूवाइं पासति, अपुट्ठाइं रूवाइं पासति ।।

३८. पुट्ठाइं भंते ! गंधाइं अग्घाति ? अपुट्ठाइं गंधाइं अग्घाति ? गोयमा ! पुट्ठाइं गंधाइं अग्घाति, णो अपुट्ठाइं गंधाइं अग्घाति। एवं रसाणवि फासाणवि, णवरं—रसाइं अस्साएइ, फासाइं पडिसंवेदेति त्ति अभिलावो कायव्वो ।।

पविट्ठ-पदं

३९. पविट्ठाइं भंते ! सद्दाइं सुणेति ? अपविट्ठाइं सद्दाइं सुणेति ? गोयमा ! पविट्ठाइं सद्दाइं सुणेति, णो अपविट्ठाइं सद्दाइं सुणेति। एवं जहा पुट्ठाणि तहा पविट्ठाणि वि ।।

विसय-पदं

४०. सोइंदियस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागाओ[7], उक्कोसेणं बारसहिं जोयणेहिंतो अच्छिण्णे पोग्गले पुट्ठे पविट्ठाइं सद्दाइं सुणेति ।।

४१. चक्खिदियस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागाओ, उक्कोसेणं सातिरेगाओ जोयणसयसहस्साओ अच्छिण्णे पोग्गले अपुट्ठे अपविट्ठाइं रूवाइं पासति ।।

४२. घाणिंदियस्स पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागातो, उक्कोसेणं णवहिं जोयणेहिंतो अच्छिण्णे पोग्गले पुट्ठे पविट्ठाइं गंधाइं अग्घाति। एवं जिब्भिदियस्स वि फासिंदियस्स वि ।।

अणगारदारे निज्जरापोग्गल-पदं

४३. अणगारस्स णं भंते ! भाविअप्पणो मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स जे चरिमा

---

१. °परिवड्ढी (क,ख,घ)।
२. प० १५।१७,१८।
३. णिग्गोह° (ग)।
४. साती (पु)।
५. प० १५।१९।
६. पुट्ठाणं (ख); पुट्ठाति (घ)।
७. °भागो (ख,ग,घ) सर्वत्र। मलयगिरिवृत्तौ 'अङ्गुलासंख्येयभागात्' इति पञ्चम्यन्तं पदं दृश्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिज्जरापोग्गला सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो !? सव्वलोगं पि य णं ते ओगाहित्ता णं चिट्ठंति ? हंता गोयमा ! अणगारस्स णं भाविअप्पणो मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स जे चरिमा णिज्जरापोग्गला सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्व-लोगं पि य णं ते ओगाहित्ता णं चिट्ठंति ।।

४४. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं किं आणत्तं वा णाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणति पासति ? गोयमा ! णो इणट्ठे[1] समट्ठे ।।

४५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति— छउमत्थे णं मणूसे तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि आणत्तं वा णाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणति पासति ? गोयमा ! देवे वि य णं अत्थेगइए जे णं तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि आणत्तं वा णाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणति पासति । से एणट्ठेणं[2] गोयमा ! एवं वुच्चति— छउमत्थे णं मणूसे तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि आणत्तं वा णाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणति पासति, सुहुमा[3] णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोगं पि य णं ते ओगाहित्ताणं चिट्ठंति ।।

आहारदारे निज्जरापोग्गल-पदं

४६. णेरइया णं भंते ! ते णिज्जरापोग्गले किं जाणंति पासंति आहारेंति ? उदाहु ण याणंति ण पासंति ण आहारेंति ? गोयमा ! णेरइया णं ते णिज्जरापोग्गले ण जाणंति ण पासंति आहारेंति । एवं जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिया[4] ।।

४७. मणूसा णं भंते ! ते णिज्जरापोग्गले किं जाणंति पासंति आहारेंति ? उदाहु ण जाणंति ण पासंति ण आहारेंति ? गोयमा ! अत्थेगइया जाणंति पासंति आहारेंति, अत्थेगइया ण जाणंति ण पासंति आहारेंति ।।

४८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति— अत्थेगइया जाणंति पासंति आहारेंति ? अत्थेगइया ण याणंति ण पासंति आहारेंति ? गोयमा ! मणूसा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सण्णिभूया य असण्णिभूया य । तत्थ णं जेते असण्णिभूया ते णं ण जाणंति ण पासंति आहारेंति । तत्थ णं जेते सण्णिभूया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवउत्ता य अणुवउत्ता य । तत्थ णं जेते अणुवउत्ता ते णं ण याणंति ण पासंति आहारेंति । तत्थ णं जेते उवउत्ता ते णं जाणंति पासंति आहारेंति । से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—'अत्थेगइया जाणंति पासंति आहारेंति, अत्थेगइया ण जाणंति ण पासंति आहारेंति'[5] । वाणमंतर-जोइसिया जहा णेरइया ।।

४९. वेमाणिया णं भंते ! ते णिज्जरापोग्गले किं जाणंति पासंति आहारेंति ? गोयमा ! जहा मणूसा णवरं - वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—माइमिच्छद्दिट्ठि-

१. इणमट्ठे (क,घ) ।
२. तेणट्ठेणं (क,ख) ।
३. एए सुहुमा (क) ।
४. °जोणिया णं (क ग,घ) ।
५. अत्थेगइया ण जाणंति ण पासंति आहारेंति, अत्थेगइया जाणंति पासंति आहारेंति (क,ग, पु) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववण्णगा य अमाइ सम्मद्दिट्ठिउववण्णगा य। तत्थ णं जेते माइमिच्छद्दिट्ठिउववन्नगा ते णं न याणंति न पासंति आहारेंति। तत्थ णं जेते अमाइसम्मद्दिट्ठिउववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोववण्णगा य परंपरोववण्णगा य। तत्थ णं जेते अणंतरोववण्णगा ते णं ण याणंति ण पासंति आहारेंति। तत्थ णं जेते परंपरोववण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं ण याणंति ण पासंति आहारेंति। तत्थ णं जेते पज्जत्तगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवउत्ता य अणुवउत्ता य। तत्थ णं जेते अणुवउत्ता ते णं ण याणंति ण पासंति आहारेंति। तत्थ णं जेते उवउत्ता ते णं जाणंति पासंति आहारेंति। से एणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति—अत्थेगइया जाणंति[1] •पासंति आहारेंति,° अत्थेगइया ण जाणंति ण पासंति आहारेंति॥

अद्दायाइदारसत्तगे पडिबिंबपेहा-पदं

५०. अद्दाए णं भंते[2]! पेहमाणे[3] मणूसे किं अद्दायं पेहति[4]? अत्ताणं[5] पेहति? पलिभागं पेहति? गोयमा! नो अद्दायं पेहति णो अत्ताणं[6] पेहति, पलिभागं पेहति। एवं एतेणं अभिलावेणं असिं मणिं उडुपाणं[7] तेल्लं फाणियं वसं॥

कंबलफुसणा-पदं

५१. कंबलसाडए[8] णं भंते! आवेढिय-परिवेढिए समाणे जावतियं ओवासंतरं फुसित्ता णं चिट्ठति, विरल्लिए वि य णं समाणे तावतियं चेव ओवासंतरं फुसित्ता णं चिट्ठति? हंता! गोयमा! कंबलसाडए णं आवेढिय-परिवेढिए समाणे जावतियं[9] •ओवासंतरं फुसित्ता णं चिट्ठति, विरल्लिए वि य णं समाणे तावतियं चेव ओवासंतरं फुसित्ता णं चिट्ठति° ॥

थूणादारे ओगाहणा-पदं

५२. थूणा णं भंते! उड्ढं ऊसिया[10] समाणी जावतियं खेत्तं ओगाहित्ता णं चिट्ठति, तिरियं पि य णं आयता समाणी तावतियं चेव खेत्तं ओगाहित्ता णं चिट्ठति? हंता गोयमा! थूणा णं उड्ढं ऊसिया[11] [12]•समाणी जावतियं खेत्तं ओगाहित्ता णं चिट्ठति, तिरियं पि य णं आयता समाणी तावतियं चेव खेत्तं ओगाहित्ता णं° चिट्ठति।

थिग्गलदारे फुड-पदं

५३. आगासथिग्गले[13] णं भंते! किणा[14] फुडे? कइहिं वा काएहिं फुडे—किं धम्मत्थिकाएणं फुडे? किं धम्मत्थिकायस्स देसेणं फुडे? धम्मत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे? एवं अधम्मत्थिकाएणं आगासत्थिकाएणं? एएणं भेदेणं जाव किं पुढविकाइएणं फुडे जाव

१. सं० पा०—जाणंति जाव अत्थेगइया।
२. × (ख,घ)।
३. पेहेमाणे (ग)।
४. पेहेति (ग)।
५. अद्दाणं (ख)।
६. अप्पाणं (ख,ग,घ)।
७. दुद्धं पाणं (क,ख,घ); दुद्धं फाणिं (ग)।
८. °साडे (क,ख)।
९. सं० पा०—जावतियं तं चेव।
१०. उसासिया (ख)।
११. ऊसासिया (ख); ऊसइया (घ)।
१२. संपा०—तं चेव जाव चिट्ठति।
१३. °थिग्गिले (ख)।
१४. किणे (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तसकाएणं फुडे ? अद्धासमएणं फुडे ? गोयमा ! धम्मत्थिकाएणं फुडे, णो धम्मत्थिकायस्स देसेणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे। एवं अधम्मत्थिकाएण वि। णो आगासत्थिकाएणं फुडे, आगासत्थिकायस्स देसेणं फुडे, आगासत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे जाव वणप्फइकाइएणं फुडे। तसकाएणं सिय फुडे, सिय णो फुडे। अद्धासमएणं देसे फुडे, देसे णो फुडे ॥

दीवोदहिदारे फुड-पदं

५४. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे किणा फुडे ? कतिहिं वा काएहिं फुडे—किं धम्मत्थिकाएणं जाव आगासत्थिकाएणं फुडे ? गोयमा ! णो धम्मत्थिकाएणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स देसेणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स पएसेहिं फुडे। एवं अधम्मत्थिकायस्स वि आगासत्थिकायस्स वि। पुढविकाइएणं फुडे जाव वणप्फइकाइएणं फुडे। तसकाएणं सिय फुडे सिय णो फुडे। अद्धासमएणं फुडे ॥

५५. एवं लवणसमुद्दे धायइसंडे दीवे कालोए समुद्दे अब्भितरपुक्खरद्धे। बाहिरपुक्खरद्धे एवं चेव, णवरं—अद्धासमएणं णो फुडे। एवं जाव सयंभुरमणे समुद्दे। एसा परिवाडी इमाहिं गाहाहिं अणुगंतव्वा, तं जहा—

जंबुद्दीवे लवणे, धायइ कालोय पुक्खरे वरुणे।
खीर घत खोत नंदि य, अरुणवरे कुंडले रुयए ॥१॥
आभरण-वत्थ-गंधे, उप्पल-तिलए[1] य पुढवि-णिहि-रयणे।
वासहर-दह-नदीओ, विजया वक्खार-कप्पिदा ॥२॥
कुरु-मंदर-आवासा, कूडा णक्खत्त-चंद-सूरा य।
देवे णागे जक्खे, भूए य सयंभुरमणे य ॥३॥

एवं जहा बाहिरपुक्खरद्धे भणितं तहा जाव सयंभुरमणे समुद्दे जाव अद्धासमएणं णोफुडे ॥

लोगदारे फुड-पदं

५६. लोगे णं भंते ! किणा फुडे ? कतिहिं वा काएहिं ? जहा आगासथिग्गले ॥

अलोगदारे फुड-पदं

५७. अलोए णं भंते ! किणा फुडे ? कतिहिं वा काएहिं पुच्छा। गोयमा ! णो धम्मत्थिकाएणं फुडे जाव णो आगासत्थिकाएणं फुडे, आगासत्थिकायस्स देसेणं फुडे, आगासत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे। णो पुढविक्काइएणं फुडे जाव णो अद्धासमएणं फुडे। एगे अजीवदव्वदेसे अगरुलहुए[2] अणंतेहिं अगरुलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे ॥

१. पउम (मवृ); अनुयोगद्वारे (१८५) सूत्रे 'तिलए' पदस्यस्थाने 'पउमे' इति पाठान्तरं लभ्यते। २. अगुरु° (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीओ उद्देसो

गाहा—

१ इंदिय-उवचय २ णिव्वत्तणा य ३ समया भवे असंखेज्जा।
४ लद्धी ५ उवओगद्धा, ६ अप्पाबहुए विसेसहिया[1] ॥१॥
७ ओगाहणा ८ अवाए ९ ईहा तह १० वंजणोग्गहे चेव।
११ दव्विंदिय १२ भाविंदिय, तीया बद्धा पुरेक्खडिया ॥२॥

इंदियाणं उवचय-पदं

५८. कतिविहे णं भंते ! इंदिओवचए पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदिओवचए पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदिओवचए[2] चक्खिदिओवचए घाणिंदिओवचए जिब्भिदिओवचए फासिंदिओवचए ॥

५९. णेरइयाणं भंते ! कतिविहे इंदिओवचए पण्णत्ते ? गोयमा ? पंचविहे इंदिओवचए पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदिओवचए जाव फासिंदिओवचए। एवं जाव वेमाणियाणं। जस्स जइ इंदिया तस्स तइविहो चेव इंदिओवचयो भाणियव्वो ॥

निव्वत्तणा-पदं

६०. कतिविहा णं भंते ! इंदियनिव्वत्तणा पण्णत्ता ? गोयमा ? पंचविहा इंदियनिव्वत्तणा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियनिव्वत्तणा जाव फासिंदियनिव्वत्तणा। एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं—जस्स जतिंदिया अत्थि ॥

निव्वत्तणासमय-पदं

६१. सोइंदियणिव्वत्तणा णं भंते ! कतिसमइया पण्णत्ता ? गोयमा ? असंखिज्ज-समइया अंतोमुहुत्तिया पण्णत्ता। एवं जाव फासिंदियनिव्वत्तणा। एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥

लद्धि-पदं

६२. कतिविहा णं भंते ! इंदियलद्धी पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इंदियलद्धी पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियलद्धी जाव फासिंदियलद्धी। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं—जस्स जति इंदिया अत्थि तस्स तावतिया लद्धी भाणियव्वा ॥

उवओगद्धा-पदं

६३. कतिविहा णं भंते ! इंदियउवओगद्धा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इंदियउवओगद्धा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियउवओगद्धा जाव फासिंदियउवओगद्धा। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं—जस्स जति इंदिया अत्थि ॥

उवओगद्ध-अप्पाबहुय-पदं

६४. एतेसि णं भंते ! सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियाणं जहण्णियाए उवओगद्धाए उक्कोसियाए उवओगद्धाए जहण्णुक्कोसियाए उवओगद्धाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चक्खिदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा, सोइंदियस्स जहण्णिया विसेसाहिया, घाणिंदियस्स

---

१. °साहिया (ख,घ)। २. °चते (ख,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासेंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया।
उक्कोसियाए उवओगद्धाए सव्वत्थोवा चक्खिदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा, सोइंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासेंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया।
जहण्णुक्कोसियाए उवओगद्धाए सव्वत्थोवा चक्खिदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा, सोइंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासेंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया। फासेंदियस्स जहण्णियाहिंतो उवओगद्धाहिंतो चक्खिदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, सोइंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासेंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया ॥

ओगाहण-पदं

६५. कतिविहा णं भंते ! इंदियओगाहणा पण्णत्ता ! गोयमा ? पंचविहा इंदिय-ओगाहणा पण्णत्ता, तं जहा-सोइंदियओगाहणा जाव फासेंदियओगाहणा। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं--जस्स जइ इंदिया अत्थि ॥

अवाय-पदं

६६. कतिविहे णं भंते ? इंदियअवाए पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदियअवाए पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियअवाए जाव फासेंदियअवाए। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं—जस्स जत्तिया इंदिया अत्थि ॥

ईहा-पदं

६७. कतिविहा णं भंते ! ईहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा ईहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियईहा जाव फासेंदियईहा। एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं—जस्स जति इंदिया ॥

उग्गह-पदं

६८. कतिविहे णं भंते ! उग्गहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य ॥

६९. वंजणोग्गहे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियवंजणोग्गहे घाणिंदियवंजणोग्गहे जिब्भिदियवंजणोग्गहे फासिंदियवंज-णोग्गहे ॥

७०. अत्थोग्गहे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियअत्थोग्गहे चक्खिदियअत्थोग्गहे घाणिंदियअत्थोग्गहे जिब्भिदियअत्थोग्गहे फासिं-दियअत्थोग्गहे णोइंदियअत्थोग्गहे ॥

७१. णेरइयाणं भंते ! कतिविहे उग्गहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उग्गहे पण्णत्ते,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं जहा —अत्थोग्गहे जाव वंजणोग्गहे य । एवं असुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं ।।

७२. पुढविकाइयाणं भंते ! कतिविहे उग्गहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उग्गहे पण्णत्ते, तं जहा —अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य ।।

७३. पुढविकाइयाणं भंते ! वंजणोग्गहे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगे फासिंदिय-वंजणोग्गहे पण्णत्ते ।।

७४. पुढविकाइयाणं भंते ! कतिविहे अत्थोग्गहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगे फासिंदिय-अत्थोग्गहे पण्णत्ते । एवं जाव वणप्फइकाइयाणं ।।

७५. एवं बेइंदियाण वि, णवरं —बेइंदियाणं वंजणोग्गहे दुविहे पण्णत्ते, अत्थोग्गहे दुविहे पण्णत्ते । एवं तेइंदिय-चउरिंदियाण वि, णवरं —इंदियपरिवुड्ढी कायव्वा । चउरिंदियाणं वंजणोग्गहे तिविहे पण्णत्ते, अत्थोग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते । सेसाणं जहा णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ।।

दव्व-भाव-पदं

७६. कतिविहा णं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्विंदिया य भाविंदिया य ।।

दव्विंदिय-पदं

७७. कति णं भंते ! दव्विंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ दव्विंदिया पण्णत्ता, तं जहा —दो सोत्ता[1] दो णेत्ता दो घाणा जीहा फासे ।।

७८. णेरइयाणं भंते ! कति दव्विंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ, एते चेव । एवं असुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराण वि ।।

७९. पुढविकाइयाणं भंते ! कति दव्विंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! एगे फासेंदिए पण्णत्ते । एवं जाव वणस्सतिकाइयाणं ।।

८०. बेइंदियाणं भंते ! कति दव्विंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दो दव्विंदिया पण्णत्ता, तं जहा—फासिंदिए य जिब्भिंदिए य ।

८१. तेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! चत्तारि दव्विंदिया पण्णत्ता, तं जहा—दो घाणा जीहा फासे ।

८२. चउरिंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! छ दव्विंदिया पण्णत्ता, तं जहा—दो णेत्ता दो घाणा जीहा फासे । सेसाणं जहा णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ।।

८३. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! अट्ठ । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा[2] ! अट्ठ वा सोलस्स वा सत्तरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा ।।

८४. एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! अट्ठ । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अट्ठ वा णव वा[3] संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं जाव थणियकुमाराणं ताव भाणियव्वं ।।

---

१. सोता (क) ।

२. × (क,ख,ग,घ) ।

३. वा सत्तरस्स वा (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८५. एवं पुढविक्काइय-आउक्काइय-वणस्सइकाइयस्स वि, णवरं—केवतिया बद्धेल्लग ? त्ति पुच्छाए उत्तरं एक्कं फासिदियं पण्णत्तं। एवं तेउक्काइय-वाउक्काइयस्स वि, णवरं—पुरेक्खडा णव वा दस वा ॥

८६. एवं बेइंदियाण वि, णवरं—बद्धेलगपुच्छाए दोण्णि। एवं तेइंदियस्स वि, णवरं—बद्धेल्लगा चत्तारि। एवं चउरिंदियस्स वि, णवरं बद्धेल्लगा छ ॥

८७. पंचेंदियतिरिक्खजोणिय-मणूस-वाणमंतर-जोइसिय-सोहम्मीसाणगदेवस्स जहा असुरकुमारस्स, नवरं—मणूसस्स पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि अट्ठ वा नव वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा ॥

८८. सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-सुक्क- सहस्सार- आणय- पाणय- आरण- अच्चुय -गेवेज्जगदेवस्स य जहा नेरइयस्स ॥

८९. एगमेगस्स णं भंते ! विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवस्स केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! अट्ठ। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा ॥

९०. सव्वट्ठसिद्धगदेवस्स अतीता अणंता, बद्धेल्लगा अट्ठ, पुरेक्खडा अट्ठ ॥

९१. णेरइयाणं भंते ! केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ? अणंता। बद्धेल्लगा ? गोयमा ! असंखेज्जा। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता। एवं जाव गेवेज्जगदेवाणं, णवरं—मणूसाणं बद्धेल्लगा सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा ॥

९२. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवाणं पुच्छा। गोयमा ! अतीता अणंता, बद्धेल्लगा असंखेज्जा, पुरेक्खडा असंखेज्जा ॥

९३. सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं पुच्छा। गोयमा ! अतीता अणंता, बद्धेल्लगा संखेज्जा, पुरेक्खडा संखेज्जा ॥

९४. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स णेरइअत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया बद्धेल्लया ? गोयमा ! अट्ठ। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा ॥

९५. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥

९६. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स पुढविकाइयत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि एक्को वा दो वा तिण्णि वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। एवं जाव वणप्फइकाइयत्ते ॥

९७. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स बेइंदियत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि[1] दो वा चत्तारि वा छ वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं तेइंदियत्ते वि, णवरं—पुरेक्खडा चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं चउरिंदियत्ते वि, नवरं—पुरेक्खडा छ वा बारस वा अट्ठारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । पंचेंदियतिरिक्खजोणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते ॥

९८. मणूसत्ते वि एवं चेव, णवरं—केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । सव्वेसिं मणूसवज्जाणं पुरेक्खडा मणूसत्ते कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि त्ति एवं ण वुच्चति ॥

९९. वाणमंतर-जोइसिय-सोहम्मग जाव गेवेज्जगदेवत्ते अतीता अणंता । बद्धेल्लगा णत्थि । पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि । जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा ॥

१००. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा ॥

१०१. सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते अतीता णत्थि । बद्धेल्लगा णत्थि । पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ ॥

१०२. एवं जहा णेरइयदंडओ णीओ तहा असुरकुमारेण वि णेयव्वो जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिएणं, णवरं—जस्स सट्ठाणे जति बद्धेल्लगा तस्स तइ भाणियव्वा ॥

१०३. एगमेगस्स णं भंते ! मणूसस्स णेरयइत्ते केवतिया दव्वेंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणियत्ते, णवरं—एगिंदिय-विगलिंदिएसु जस्स जत्तिया पुरेक्खडा तस्स तत्तिया भाणियव्वा ॥

१०४. एगमेगस्स णं भंते ! मणूसस्स मणूसत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! अट्ठ । केवतिया पुरेक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । वाणमंतर-जोतिसिय जाव गेवेज्जगदेवत्ते जहा णेरइयत्ते ॥

१०५. एगमेगस्स णं भंते ! मणूसस्स विजय-वेजयंत-जयंत अपराजियदेवत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा ॥

१०६. एगमेगस्स णं भंते ! मणूसस्स सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ । केवतिया बद्धेल्लगा ?

१. जस्सत्थि एको वा (क,ख घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ ।।

१०७. वाणमंतर-जोतिसिए जहा[1] णेरइए ।।

१०८. सोहम्मगदेवे वि जहा णेरइए, णवरं—सोहम्मगदेवस्स विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा । सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते जहा णेरइयस्स । एवं जाव गेवेज्जगदेवस्स सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते ताव णेयव्वं ।।

१०९. एगमेगस्स णं भंते ! विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवस्स णेरइयत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि । एवं जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणियत्ते ।।

११०. मणूसत्ते अतीता अणंता, बद्धेल्लगा णत्थि । पुरेक्खडा अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा ।।

१११. वाणमंतर-जोतिसियत्ते जहा[2] णेरइत्ते ।।

११२. सोहम्मगदेवत्ते अतीता अणंता । बद्धेल्लगा णत्थि । पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ बा सोलस बा चउवीसा वा संखेज्जा बा । एवं जाव गेवेज्जगदेवत्ते ।।

११३. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियत्ते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! अट्ठ । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ ।।

११४. एगमेगस्स णं भंते ! विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवस्स सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! णत्थि केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ ।।

११५. एगमेगस्स णं भंते ! सव्वट्ठसिद्धगदेवस्स णेरइयत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि । एवं मणूसवज्जं जाव गेवेज्जगदेवत्ते, णवरं—मणूसत्ते अतीता अणंता । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अट्ठ ।।

११६. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवत्ते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि ।

११७. एगमेगस्स णं भंते ! सव्वट्ठसिद्धगदेवस्स सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! अट्ठ । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि ।।

११८. णेरइयाणं भंते ! णेरइयत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता ।

---

१. प० १५।९४-१०१ । २. प० १५।१०९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! असंखेज्जा। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता ।।

११९. णेरइयाणं भंते ! असुरकुमारत्ते केवतिया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता। एवं जाव गेवेज्जगदेवत्ते ।।

१२० णेरइयाणं भंते ! विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवत्ते केवतिया दव्विदिया अतीता ? णत्थि। केवतिया बद्धेल्लगा ? णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ? असंखेजा। एवं सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते वि ।।

१२१. एवं जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते भाणियव्वं, णवरं—वणस्सइकाइयाणं विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवत्ते सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते य पुरेक्खडा अणंता। सव्वेसिं मणूस-सव्वट्ठसिद्धगवज्जाणं सट्ठाणे बद्धेल्लगा असंखेज्जा, परट्ठाणे बद्धेल्लगा णत्थि। वणस्सइकाइयाणं सट्ठाणे बद्धेल्लगा अणंता ।।

१२२. मणुस्साणं णेरइयत्ते अतीता अणंता। बद्धेल्ला णत्थि। पुरेक्खडा अणंता। एवं जाव गेवेज्जगदेवत्ते, णवरं—सट्ठाणे अतीता अणंता, बद्धेल्लगा सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा, पुरेक्खडा अणंता ।।

१२३. मणूसाणं भंते ! विजय-वेजयंत-जयंत अपराजियदेवत्ते केवतिया दव्विदिया अतीता ? संखेज्जा। केवतिया बद्धेल्लगा ? णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ? 'सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा। एवं सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते वि ।।

१२४. वाणमंतर-जोइसियाणं जहा णेरइयाणं ।।

१२५. सोहम्मगदेवाणं एवं चेव, णवरं—विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवत्ते अतीता असंखेज्जा, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेक्खडा असंखेज्जा"। सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते अतीता णत्थि। बद्धेल्लगा णत्थि। पुरेक्खडा असंखेज्जा। एवं जाव गेवेज्जगदेवाणं ।।

१२६. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवाणं भंते ! णेरइयत्ते केवतिया दव्वेंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया बद्धेल्लगा ? णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ? णत्थि। एवं जाव जोइसियत्ते, णवरमेसिं मणूसत्ते अतीता अणंता। केवतिया बद्धेल्लगा ? णत्थि। पुरेक्खडा असंखेज्जा ।।

१२७. एवं जाव गेवेज्जगदेवत्ते। सट्ठाणे अतीता असंखेज्जा। केवतिया बद्धेल्लगा ? असंखेज्जा। केवितया पुरेक्खडा ? असंखेज्जा ।।

१२८. सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते अतीता णत्थि। बद्धेल्लगा णत्थि पुरेक्खडा असंखेज्जा ।।

१२९ सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं भंते ! णेरइयत्ते केवतिया दव्वेंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया बद्धेल्लगा ? णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ? णत्थि। एवं मणूसवज्जं जाव गेवेज्जगदेवत्ते ।।

१३० मणूसत्ते अतीता अणंता। बद्धेल्लगा णत्थि। पुरेक्खडा संखेज्जा ।।

१३१. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवत्ते केवतिया दव्विदिया अतीता ? संखेज्जा। केवतिया बद्धेल्लगा ? णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ? णत्थि ।।

१. × (ख,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३२. सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं भंते ! सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? णत्थि । केवतिया बद्धेल्लगा ? संखेज्जा । केवतिया पुरेक्खडा ? णत्थि ॥

भाविंदिय-पदं

१३३. कति णं भंते ! भाविंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच भाविंदिया पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदिए जाव फासिंदिए ॥

१३४. णेरइयाणं भंते ! कति भाविंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच भाविंदिया पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदिए जाव फासेंदिए । एवं जस्स जति इंदिया तस्स तति[1] भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं ॥

१३५. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स केवतिया भाविंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया बद्धेल्लगा ? पंच । केवतिया पुरेक्खडा ? पंच वा दस वा एक्कारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा ॥

१३६. एवं असुरकुमारस्स वि, णवरं पुरेक्खडा पंच वा छ वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं जाव थणियकुमारस्स ॥

१३७. एवं पुढविकाइय-आउकाय-वणस्सकाइयस्स वि, बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियस्स वि तेउक्काइय-वाउक्काइयस्स वि एवं चेव, णवरं—पुरेक्खडा छ वा सत्त वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा ॥

१३८. पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स जाव ईसाणस्स जहा असुरकुमारस्स, णवरं—मणूसस्स पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि, कस्सइ णत्थित्ति भाणियव्वं । सणंकुमार जाव गेवेज्जगस्स जहा णेरइयस्स ॥

१३९. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवस्स अतीता अणंता । बद्धेल्लगा पंच । पुरेक्खडा पंच वा दस वा पण्णरस वा संखेज्जा वा[2] । सव्वट्ठसिद्धगदेवस्स अतीता अणंता । बद्धेल्लगा पंच । केवतिया पुरेक्खडा ? पंच ॥

१४०. णेरइयाणं भंते ! केवतिया भाविंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया बद्धेल्लगा ? असंखेज्जा । केवतिया पुरेक्खडा ? अणंता । एवं जहा दव्विंदिएसु पोहत्तेणं दंडओ भणिओ तहा भाविंदिएसु वि पोहत्तेणं दंडओ भाणियव्वो, णवरं—वणप्फइकाइयाणं बद्धेल्लगा वि अणंता ॥

१४१. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवतिया भाविंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता । बद्धेल्लगा पंच । पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि, कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि पंच वा दस वा पण्णरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं असुरकुमारत्ते[3] जाव थणियकुमारत्ते[4], णवरं—बद्धेल्लगा णत्थि ॥

१४२. पुढविक्काइयत्ते जाव बेइंदियत्ते जहा दव्विंदिया । तेइंदियत्ते तहेव, णवरं—पुरेक्खडा तिण्णि वा छ वा णव वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं चउरिंदियत्ते

१. तत्तिया (ग,घ) ।
२. वा असंखेज्जा (घ) ।
३. असुरकुमाराणं (क,घ) ।
४. थणियकुमाराणं (क,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि णवरं—पुरेक्खडा चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा ॥

१४३. एवं एते चेव गमा चत्तारि णेयव्वा जे चेव दव्विंदिएसु। नवरं—तइयगमे जाणियव्वा जस्स जइ इंदिया ते पुरेक्खडेसु मुणेयव्वा। चउत्थगमे जहेव दव्वेंदिया जाव सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते केवतिया भाविंदिया अतीता? णत्थि। बद्धेल्लगा संखेज्जा। पुरेक्खडा णत्थि ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोलसमं पओगपयं

पओगभेय-पदं

१. कइविहे णं भंते ! पओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! पण्णरसविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—सच्चमणप्पओगे, मोसमणप्पओगे, सच्चामोसमणप्पओगे, असच्चामोसमणप्पओगे, एवं वइप्पओगे वि चउहा, ओरालियसरीरकायप्पओगे ओरालियमीससरीरकायपओगे वेउव्वियसरीरकायप्पओगे वेउव्वियमीससरीरकायप्पओगे आहारगसरीरकायप्पओगे[1] आहारगमीससरीरकायप्पओगे[2] कम्मासरीरकायप्पओगे ।।

जीवेसु ओहेणं पओग-पदं

२. जीवाणं भंते ! कतिविहे पओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! पण्णरसविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—सच्चमणप्पओगे जाव कम्मासरीरकायप्पओगे ।।

चउवीसदंडएसु ओहेणं पओग-पदं

३. णेरइयाणं भंते ! कतिविहे पओगे पण्णत्ते ? गोयमा ? ! एक्कारसविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—सच्चमणप्पओगे जाव असच्चामोसवइप्पओगे वेउव्वियसरीरकायप्पओगे वेउव्वियमीससरीरकायप्पओगे कम्मासरीरकायप्पओगे। एवं असुरकुमाराण वि जाव थणियकुमाराणं ।।

४. पुढविक्काइयाणं पुच्छा । गोयमा ! तिविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियसरीरकायप्पओगे ओरालियमीससरीरकायप्पओगे कम्मासरीरकायप्पओगे। एवं जाव वणप्फइकाइयाणं, णवरं—

५. वाउक्काइयाणं पंचविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियसरीरकायप्पओगे ओरालियमीससरीरकायप्पओगे वेउव्विए दुविहे कम्मासरीरकायप्पओगे य ।।

६. बेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! चउव्विहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—असच्चामोसवइप्पओगे ओरालियसरीरकायप्पओगे ओरालियमीससरीरकायप्पओगे कम्मासरीरकायप्पओगे। एवं जाव चउरिंदियाणं ।।

७. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! तेरसविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—सच्चमणप्पओगे मोसमणप्पओगे सच्चामोसमणप्पओगे असच्चामोसमणप्पओगे, एवं वइप्पओगे वि, ओरालियसरीरकायप्पओगे ओरालियमीससरीरकायप्पओगे वेउव्विय-

१. आहारस° (व) ।   २. आहारमी° (ध) ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

सरीरकायप्पओगे वेउव्वियमीससरीरकायप्पओगे कम्मासरीरकायप्पओगे ।।

८. मणूसाणं पुच्छा। गोयमा ! पण्णरसविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा—सच्चमणप्पओगे जाव कम्मासरीरकायप्पओगे ।।

९. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ।।

जीवेसु विभागेणं पओग-पदं

१०. जीवा णं भंते ! किं सच्चमणप्पओगी जाव किं कम्मासरीरकायप्पओगी ? गोयमा ! जीवा सव्वे वि ताव होज्जा सच्चमणप्पओगी वि जाव वेउव्वियमीससरीरकायप्पओगी वि कम्मासरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे य आहारगमीससरीरकायप्पयोगी य ३ अहवेगे य आहारगमीससरीरकायप्पओगिणो य ४ चउभंगो, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य—एए जीवाणं अट्ठ भंगा ।।

चउवीसदंडएसु विभागेणं पओग-पदं

११. णेरइया णं भंते ! किं सच्चमणप्पओगी जाव किं कम्मासरीरकायप्पओगी ? गोयमा ! णेरइया सव्वे वि ताव होज्जा सच्चमणप्पयोगी वि जाव वेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २। एवं असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा ।।

१२. पुढविकाइया णं भंते ! किं ओरालियसरीरकायप्पओगी ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी[1] कम्मासरीरकायप्पओगी ? गोयमा ! पुढविकाइया णं ओरालियसरीरकायप्पओगी वि ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी वि कम्मासरीरकायप्पओगी वि। एवं जाव वणप्फतिकाइयाणं, णवरं—वाउक्काइया वेउव्वियसरीरकायप्पओगी वि वेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगी वि ।।

१३. बेइंदिया णं भंते ! किं ओरालियसरीरकायप्पओगी[2] जाव कम्मासरीरकायप्पओगी[3] ? गोयमा ! बेइंदिया सव्वे वि ताव होज्जा असच्चामोसवइप्पओगी वि ओरालियसरीरकायप्पओगी वि ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पयोगी य १ अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २। एवं जाव चउरिंदिया ।।

१४. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया जहा णेरइया, णवरं—ओरालियसरीरकायप्पओगी वि ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पपोगी य १ अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २ ।।

१५. मणूसा णं भंते ! किं सच्चमणप्पओगी जाव किं कम्मासरीरकायप्पओगी ? गोयमा ! मणूसा सव्वे वि ताव होज्जा सच्चमणप्पओगी वि जाव ओरालियसरीरकायप्पओगी वि वेउव्वियसरीरकायप्पओगी वि वेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगी वि, अहवेगे

---

१. °मीस° (क,घ)। २,३. °पओगी वि (क,घ)।

य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य ४ अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ५ अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ३ अहवेगे य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ७ अहवेगे य कम्मगसरीकायप्पओगिणो य ८ एते अट्ठ भंगा पत्तेयं।

अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य ४—एवं एते चत्तारि भंगा। अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे ओरालियमीसासरीरकायमप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ४—चत्तारि भंगा। अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ४—एते चत्तारि भंगा। अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीससरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ४—चत्तारि भंगा। अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ४—चउरो भंगा। अहवेगे य आहारगमीसगसरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य आहारगमीसगसरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ४—चत्तारि भंगा। एवं चउवीसं भंगा।

अहवेगे[1] य ओरालियमीसगसरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे य

१. अहवा एगे (ग) सर्वत्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओरालियमीसगसरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ४ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ५ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ६ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ७ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ८—एते अट्ठ भंगा। अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी[1] य १ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ४ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ५ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ६ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ७ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ८—एते अट्ठ भंगा। अहवेगे य ओरालियमीसासरीकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहागमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ४ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य ५ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ६ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ७ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ८—एते अट्ठ भंगा। अहवेगे[2] य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २ अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसा-

१. कम्मा° (ग); कम्म° (घ)। २. अहवेते° (क,ख) सर्वत्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ४ अहवेगे य आहारगसरीर-कायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य ५ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ६ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ७ अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीर-कायप्पओगिणो य ८—एवं एते तियसंजोएणं चत्तारि अट्ठभंगा। सव्वे वि मिलिया बत्तीसं भंगा जाणियव्वा[1]।

अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य १ अहवेगे य ओरालिय-मीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणोय २ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारग-सरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ४ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीर-कायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य ५ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीर-कायप्पओगिणो य ६ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीर-कायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ७ अहवेगे य ओरालियमीसगसरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसारीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ८ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीर-कायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य ९ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्प-ओगिणो य १० अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्प-ओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ११ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसा-सरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य १२ अहवेगे य ओरालियमीसा-सरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य १३ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्प-ओगिणो य १४ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्प-ओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य १५ अहवेगे

१. भाणियव्वा (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसा-सरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य १६—एवं एते चउसंजोएणं सोलस भंगा भवंति । सव्वे वि य णं संपिंडिया असीतिं[1] भंगा भवंति ८० ।।

१६. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ।।

गइप्पवाय-पदं

१७. कतिविहे णं भंते ! गइप्पवाए पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे[2] पण्णत्ते, तं जहा—पओगगती ततगती बंधणच्छेदणगती उववायगती विहायगती ।।

पओगगइ-पदं

१८. से किं तं पओगगती ? पओगगती पण्णरसविहा पण्णत्ता, तं जहा—सच्च-मणप्पओगगती एवं जहा पओगे भणिओ तहा एसा वि भाणियव्वा जाव कम्मगसरीर-कायप्पओगगती ।।

१९. जीवाणं भंते ! कतिविहा पओगगती पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरसविहा पण्णत्ता, तं जहा—सच्चमणप्पओगगती जाव कम्मासरीरकायप्पओगगती ।।

२०. णेरइयाणं भंते ! कतिविहा पओगगती पण्णत्ता ? गोयमा ! एक्कारसविहा पण्णत्ता, तं जहा—सच्चमणप्पओगगती एवं उवउज्जिऊण[3] जस्स जतिविहा तस्स ततिविहा भाणितव्वा जाव वेमाणियाणं ।।

२१. जीवा णं भंते ! किं सच्चमणप्पओगगती जाव कम्मगसरीरकायप्पओगगती ? गोयमा ! जीवा सव्वे वि ताव होज्जा सच्चमणप्पओगगती वि, एवं तं चेव पुव्ववण्णियं[4] भाणियव्वं, भंगा तहेव जाव वेमाणियाणं । से त्तं पओगगती ।।

ततगइ-पदं

२२. से किं तं ततगती ? ततगती—जेणं जं गामं वा जाव[5] सण्णिवेसं वा संपट्ठिते असंपत्ते अंतरापहे वट्टति । से त्तं ततगती ।।

बंधणच्छेदणगइ पदं

२३. से किं तं बंधणच्छेदणगती ? बंधणच्छेदणगती—जेणं जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ । से त्तं बंधणच्छेदणगती ।।

उववायगइ-पदं

२४. से किं तं उववायगती ? उववायगती तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—खेत्तोववायगती भवोववायगती णोभवोववायगती ।।

२५. से किं तं खेत्तोववायगती ? खेत्तोववायगती पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—णेरइयखेत्तोववायगती तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती मणूसखेत्तोववायगती देवखेत्तोववाय-गती सिद्धखेत्तोववायगती ।।

२६. से किं तं णेरइयखेत्तोववायगती ? णेरइयखेत्तोववायगती सत्तविहा पण्णत्ता, तं

---

१. असीइ (क,ग) ; असीती (ख,घ) ।

२. पंचविहे गइप्पवाए (क,ग) ; पंचविहे गइप्पा-वाए (घ) ।

३. उववज्जिऊण (क,ख,ग) ; उववेज्जिऊण (ग) ।

४. पुव्वभणियं (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा– रयणप्पभापुढविणेरइयखेत्तोववायगती जाव अहेसत्तमापुढविणेरइयखेत्तोववायगती। से त्तं णेरइयखेत्तोववायगती ॥

२७. से किं तं तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती ? तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदियतिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती। से त्तं तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती ॥

२८. से किं तं मणूसखेत्तोववायगती ? मणूसखेत्तोववायगती दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मुच्छिममणूसखेत्तोववायगती गब्भवक्कंतियमणूसखेत्तोववायगती। से त्तं मणूसखेत्तोववायगती ॥

२९. से किं तं देवखेत्तोववायगती ? देवखेत्तोववायगती चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवइदेवखेत्तोववायगती जाव वेमाणियदेवखेत्तोववायगती। से त्तं देवखेत्तोववायगती ॥

३०. से किं तं सिद्धखेत्तोववायगती ? सिद्धखेत्तोववायगती अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवयवाससपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे चुल्लहिमवंत-सिहरिवासहरपव्वयसपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे हेमवय[1]-हेरण्णवयवाससपक्खि[2] सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे सद्दावति-वियडावतिवट्टवेयड्ढसपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे महाहिमवंत-रुप्पिवासहरपव्वयसपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे हरिवास-रम्मग-वाससपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे गंधावति-मालवंतपरियायवट्ट-वेयड्ढसपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे णिसढ-णीलवंतवासहरपव्वय-सपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे पुव्वविदेह-अवरविदेहसपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे देवकुरूत्तरकुरुसपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स सपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तो-ववायगती, लवणसमुद्दे सपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, धायइसंडे दीवे पुरिमद्ध-पच्छिमद्धमंदरपव्वयस्स सपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, कालोयसमुद्दे सपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, पुक्खरवरदीवड्ढपुरिमड्ढभरहेरवयवाससपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, एवं जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्छिमड्ढमंदरपव्वयसपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती। से त्तं सिद्धखेत्तोववायगती। से त्तं खेत्तोववायगती ॥

३१. से किं तं भवोववायगती ? भवोववायगती चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइय-भवोववायगती जाव देवभवोववायगती ॥

३२. से किं तं णेरइयभवोववायगती ? णेरइयभवोववायगती सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—एवं सिद्धवज्जो भेओ भाणियव्वो, जो चेव खेत्तोववायगतीए सो चेव भवोववायगतीए। से त्तं भवोववायगती ॥

३३. से किं तं णोभवोववायगती ? णोभवोववायगती दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पोग्गलणोभवोववायगती य सिद्धणोभवोववायगती य ॥

३४. से किं तं पोग्गलणोभवोववायगती ? पोग्गलणोभवोववायगती जण्णं परमाणु-

---

१. हिमवंत (ख)। २. हिरण्णवास° (क,ख,घ); एरण्णवय° (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोग्गले लोगस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पच्चत्थिमिल्लं[1] चरिमंतं एगसमएणं गच्छति, पच्चत्थिमिल्लाओ वा चरिमंताओ पुरत्थिमिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छति, दाहिणिल्लाओ वा चरिमंताओ उत्तरिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छति, एवं उत्तरिल्लाओ दाहिणिल्लं, उवरिल्लाओ हेट्ठिल्लं, हेट्ठिल्लाओ वा उवरिल्लं । से त्तं पोग्गलणोभवोववायगती ॥

३५. से किं तं सिद्धणोभवोववायगती ? सिद्धणोभवोववायगती दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरसिद्धणोभवोववायगती य परंपरसिद्धणोभवोववायगती य ॥

३६. से किं तं अणंतरसिद्धणोभवोववायगती ? अणंतरसिद्धणोभवोववायगती पन्नरसविहा पण्णत्ता, तं जहा—तित्थसिद्धअणंतरसिद्धणोभवोववायगती[2] य जाव अणेग-सिद्धणोभवोववायगती[3] य [से त्तं अणंतरसिद्धणोभवोववायगती ?]

३७. से किं तं परंपरसिद्धणोभवोववायगती ? परंपरसिद्धणोभवोववायगती अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—अपढमसमयसिद्धणोभवोववायगती एवं दुसमयसिद्धणोभवोववायगती जाव अणंतसमयसिद्धणोभवोववायगती । से त्तं परंपरसिद्धणोभवोववायगती । से त्तं सिद्धणोभवो-ववायगती । से त्तं णोभवोववायगती । से त्तं उववायगती ॥

विहायगति-पदं

३८. से किं तं विहायगती ? विहायगती सत्तरसविहा पण्णत्ता, तं जहा—फुसमाणगती अफुसमाणगती उवसंपज्जमाणगती अणुवसंपज्जमाणगती पोग्गलगती मंडूयगती णावागती णयगती छायागती छायाणुवायगती लेसागती लेस्साणुवायगती उद्दिस्सपविभत्तगती[4] चउपुरिसपविभत्तगती[5] वंकगती पंकगती बंधणविमोयणगती[6] ॥

३९. से किं तं फुसमाणगती ? फुसमाणगती—जण्णं परमाणुपोग्गले दुपदेसिय जाव अणंतपदेसियाणं खंधाणं अण्णमण्णं फुसित्ता णं गती पवत्तइ । से त्तं फुसमाणगती ॥

४०. से किं तं अफुसमाणगती ? अफुसमाणगती—जण्णं एतेसिं चेव अफुसित्ता णं गती पवत्तइ । से त्तं अफुसमाणगती ॥

४१. से किं तं उवसंपज्जमाणगती ? उवसंपज्जमाणगती—जण्णं रायं वा जुवरायं वा ईसरं वा तलवरं वा माडंबियं वा कोडुंबियं वा इब्भं वा सेट्ठिं[7] वा सेणावइं वा सत्थवाहं वा उवसंपज्जित्ता णं गच्छति । से त्तं उवसंपज्जमाणगती ॥

४२. से किं तं अणुवसंपज्जमाणगती ? अणुवसंपज्जमाणगती—जण्णं एतेसिं चेव अण्णमण्णं अणुवसंपज्जित्ता णं गच्छति । से त्तं अणुवसंपज्जमाणगती ॥

४३. से किं तं पोग्गलगती ? पोग्गलगती—जण्णं परमाणुपोग्गलाणं जाव अणंत-पएसियाणं खंधाणं गती पवत्तति । से त्तं पोग्गलगती ॥

---

१. पच्छिमिल्लं (पु) ।
२. 'अणंतरणो° (ख,ग,घ) ।
३. अस्मिन् पदे 'अणंतरसिद्ध' इति पदं नोल्लिखितमस्ति । किन्तु पूर्वक्रमेण युज्यते । अग्रिमसूत्रे 'परंपरसिद्ध' पदस्यापि एषैव स्थितिरस्ति ।
४. उद्दिसियविभत्त° (क,ख,घ); उद्दिसियपविभत्त° (ग) ।
५. चउपुरिसविभत्त° (ख,घ) ।
६. बंधणमोयण° (ग) ।
७. सिट्ठिं (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४४. से किं तं मंडूयगती ? मंडूयगती—जण्णं मंडूए उप्फिडिया-उप्फिडिया गच्छति । से त्तं मंडूयगती ।।

४५. से किं तं णावागती ? णावागती—जण्णं णावा पुव्ववेयालीओ दाहिणवेयालिं जलपहेणं गच्छति, दाहिणवेयालीओ वा अवरवेयालिं जलपहेणं गच्छति । से त्तं णावागती ।।

४६. से किं तं णयगती ? णयगती—जण्णं णेगम-संगह-ववहार-उज्जुसुय-सद्द-समभिरूढ-एवंभूयाणं णयाणं जा गती, अहवा सव्वणया वि जं इच्छंति । से त्तं णयगती ।।

४७. से किं तं छायागती ? छायागती जण्णं हयच्छायं वा गयच्छायं वा नरच्छायं वा किन्नरच्छायं वा महोरगच्छायं वा गंधव्वच्छायं वा उसहच्छायं वा रहच्छायं वा छत्तच्छायं वा उवसंपज्जित्ताणं गच्छति । से त्तं छायागती ।।

४८. से किं तं छायाणुवायगती ? छायाणुवायगती—जण्णं पुरिसं छाया अणुगच्छति णो पुरिसे छायं अणुगच्छति । से त्तं छायाणुवायगती ।।

४९. से किं तं लेस्सागती ? लेस्सागती—जण्णं कण्हलेस्सा णीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति । एवं णीललेस्सा काउलेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव ताफासत्ताए परिणमति । एवं काउलेस्सा वि तेउलेस्सं, तेउलेस्सा वि पम्हलेस्सं, पम्हलेस्सा वि सुक्कलेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव ताफासत्ताए परिणमति । से त्तं लेस्सागती ।।

५०. से किं तं लेस्साणुवायगती ? लेस्साणुवायगती—जल्लेस्साइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेति तल्लेस्सेसु उववज्जति, तं जहा—कण्हलेस्सेसु वा जाव सुक्कलेस्सेसु वा । से त्तं लेस्साणुवायगती ।।

५१. से किं तं उद्दिस्सपविभत्तगती[1] ? उद्दिस्सपविभत्तगती—जेणं आयरियं[2] वा उवज्झायं वा थेरं वा पवत्तिं वा गणिं वा गणहरं वा गणावच्छेइयं वा उद्दिसिय-उद्दिसिय गच्छति । से त्तं उद्दिस्सपविभत्तगती[3] ।।

५२. से किं तं चउपुरिसपविभत्तगती ? चउपुरिसपविभत्तगती से जहाणामए—चत्तारि पुरिसा 'समगं पट्ठिता समगं पज्जुवट्ठिया समगं पट्ठिया विसमं पज्जुवट्ठिया विसमं पट्ठिया समगं पज्जुवट्ठिया विसमं पट्ठिया विसमं पज्जुवट्ठिया'[4] । से तं चउपुरिसपविभत्तगती ।।

५३. से किं तं वंकगती ? वंकगती चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—घट्टणया थंभणया लेसणया पवडणया । से त्तं वंकगती ।।

५४. से किं तं पंकगती ? पंकगती से जहाणामए—केइ पुरिसे सेयंसि[5] वा पंकंसि वा

१. उद्दिसियवि° (ख,घ) ; उद्दिसियपवि° (ग) ।

२. आयरितं (क) ।

३. उद्दिसियपवि° (क,ग) ; उद्दिसियवि° (ख,घ)

४. समगं पज्जवट्ठिया समगं पट्ठिया, विसमं पज्जवट्ठिया विसमं पट्ठिया, समगं पज्जवट्ठिया, विसमं पट्ठिया समं पज्जवट्ठिया समं पट्ठिया° (ख,घ) ; 'ग' प्रतौ सर्वत्र 'पज्जुवट्ठिया' दृश्यते । मुनिपुण्यविजयजी सम्पादिते प्रज्ञापना-सूत्रे मुद्रितवृत्तौ च चतुर्ष्वपिस्थानेषु 'पज्जवट्ठिया' इति पदं दृश्यते । हस्तलिखितवृत्तौ 'पज्जुवट्ठिया इति पदं लभ्यते ।

५. सेइंसि (क,ग) × (ख,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदयंसि वा कायं उब्बहिया[1] गच्छति । से त्तं पंकगती ॥

५५. से किं तं बंधणविमोयणगती ? बंधणविमोयणगती–जण्णं अंबाण[2] वा अंबाडगाण[3] वा माउलुंगाण[4] वा बिल्लाण वा कविट्ठाण वा भव्वाण[5] वा फणसाण वा दालिमाण वा पारेवताण वा अक्खोडाण[6] वा चाराण[7] वा बोराण वा तिंदुयाण[8] वा पक्काणं परियागयाणं बंधणाओ विप्पमुक्काणं णिव्वाघाएणं अहे वीससाए गती पवत्तइ । से त्तं बंधणविमोयणगती । से त्तं विहायगती । से त्तं गइप्पवाए ॥

१. उव्विहता (क) ; उव्विहिया (ख,ग,घ) ।
२. अंबाणगं (क) ।
३. अंबाडाण (ख,घ) ।
४. मातुलिंगाण (ग) ।
५. भवाण (क) ; भद्दाण (ख) ; भल्लाण (पु) ।
६. अखोलाण (क); अक्खेलोण (ख); अक्खेलाण (ग,घ) ।
७. चोराण (क); वाराण (ख,घ) ।
८. तंदुयाण (क); तिंडुयाण (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तरसमं लेस्सापयं

पढमो उद्देसओ

गाहा—

१ आहार सम सरीरा, उस्सासे २ कम्म ३ वण्ण ४ लेस्सासु[1]।
५ समवेदण ६ समकिरिया, ७ समाउया चेव बोधव्वा ।।१।।

नेरइएसु समाहारादि-पदं

१. णेरइया णं भंते ! सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा सव्वे समुस्सासणिस्सा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति – णेरइया णो सव्वे समाहारा जाव 'णो सव्वे'[2] समुस्सासणिस्सासा ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—महासरीरा य अप्प-सरीरा य । तत्थ णं जेते महासरीरा ते णं बहुतराए पोग्गले आहारेंति बहुतराए पोग्गले परिणामेंति बहुतराए पोग्गले ऊससंति[3] बहुतराए पोग्गले णीससंति, अभिक्खणं आहारेंति अभिक्खणं परिणामेंति अभिक्खणं ऊससंति अभिक्खणं णीससंति । तत्थ णं जेते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पोग्गले आहरेंति अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति अप्पतराए पोग्गले ऊससंति अप्पतराए पोग्गले णीससंति, आहच्च आहारेंति आहच्च परिणामेंति आहच्च ऊससंति आहच्च णीससंति । से तेणट्ठेणं[4] गोयमा ! एवं वुच्चइ—णेरइया णो सव्वे समाहारा णो सव्वे समसरीरा णो सव्वे समुस्सासणीसासा ।।

३. णेरइया णं भंते ! सव्वे समकम्मा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—णेरइया णो सव्वे समकम्मा ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववण्णगा य पच्छोववण्णगा य । तत्थ णं जेते पुव्वोववण्णगा ते णं अप्पकम्मतरागा । तत्थ णं जेते पच्छोववण्णगा ते णं महाकम्मतरागा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—णेरइया णो सव्वे समकम्मा ।।

५. णेरइया णं भंते ! सव्वे समवण्णा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति णेरइया णो सव्वे समवण्णा ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववण्णगा य पच्छोववण्णगा य । तत्थ णं जेते पुव्वोववण्णगा

१. लेसासु (क) ।
२. सव्वे नो (क,ख,घ) ।
३. उस्ससंति (ग) ।
४. एणट्ठेणं (क,ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते णं विसुद्धवण्णतरागा। तत्थ णं जेते पच्छोववण्णगा ते णं अविसुद्धवण्णतरागा। से तेणट्ठेणं[1] गोयमा ! एवं वुच्चति—णेरइया णो सव्वे समवण्णा ।।

७. एवं जहेव वण्णेण भणिया तहेव लेस्सासु वि विसुद्धलेस्सतरागा अविसुद्धलेस्सतरागा य भाणियव्वा ।।

८. णेरइया णं भंते ! सव्वे समवेदणा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—णेरइया णो सव्वे समवेदणा ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सण्णिभूया य असण्णिभूया य। तत्थ णं जेते सण्णिभूया ते णं महावेदणतरागा। तत्थ णं जेते असण्णिभूया ते णं अप्पवेदणतरागा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—नेरइया णो सव्वे समवेदणा ।।

१०. णेरइया णं भंते ! सव्वे समकिरिया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

११. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—णेरइया णो सव्वे समकिरिया ? गोयमा ! णेरइया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मद्दिट्ठी मिच्छद्दिट्ठी सम्मामिच्छद्दिट्ठी। तत्थ णं जेते सम्मद्दिट्ठी तेसि णं चत्तारि किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया। तत्थ णं जेते मिच्छद्दिट्ठी जे य[2] सम्मामिच्छद्दिट्ठी तेसि णं णियतियाओ[3] पंच किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया मिच्छादंसणवत्तिया। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—णेरइया णो सव्वे समकिरिया ।।

१२. णेरइया णं भंते ! सव्वे समाउया ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! णेरइया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थेगइया समाउया समोववण्णगा अत्थेगइया समाउया विसमोववण्णगा अत्थेगइया विसमाउया समोववण्णगा अत्थेगइया विसमाउया विसमोववण्णगा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—णेरइया णो सव्वे समाउया णो सव्वे समोववण्णगा ।।

भवणवासिसु समाहारादि-पदं

१४. असुरकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा ? स चेव पुच्छा। गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, जहा[4] णेरइया ।।

१५. असुरकुमारा णं भंते ! सव्वे समकम्मा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववण्णगा य पच्छोववण्णगा य। तत्थ णं जेते पुव्वोववण्णगा ते णं महाकम्मतरागा। तत्थ णं जेते पच्छोववण्णगा ते णं अप्पकम्मतरागा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—असुरकुमारा णो सव्वे समकम्मा ।।

१७. एवं वण्ण-लेस्साए पुच्छा। तत्थ णं जेते पुव्वोववण्णगा ते णं अविसुद्धवण्णतरागा। तत्थ णं जेते पच्छोववण्णगा ते णं विसुद्धवण्णतरागा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—

---

१. एएणट्ठेणं (घ)।

२. × (क,ख,ग,घ)।

३. णिवतिताओ (क); नियनियाओ (ख,घ), नियताओ (ग)।

४. प० १७।१,२।

असुरकुमारा णो सव्वे समवण्णा । एवं लेस्साए वि । वेदणाए जहा[1] णेरइया । अवसेसं जहा[2] णेरइया । एवं जाव थणियकुमारा ।।

एगिंदिय-विगलिंदिएसु समाहारादि-पदं

१८. पुढविक्काइया आहार-कम्म-वण्ण-लेस्साहिं जहा[3] णेरइया ।।

१९. पुढविक्काइया णं भंते ! सव्वे समवेदणा ? हंता गोयमा ! सव्वे समवेदणा ।।

२०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! पुढविक्काइया सव्वे असण्णी असण्णीभूयं अणिययं[4] वेदणं वेदेंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ —पुढविक्काइया सव्वे समवेदणा ।।

२१. पुढविक्काइया णं भंते ! सव्वे समकिरिया ? हंता गोयमा ! पुढविक्काइया सव्वे समकिरिया ।।

२२. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढविक्काइया सव्वे माइमिच्छद्दिट्ठी, तेसिं णेयतियाओ पंच किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाण-किरिया मिच्छादंसणवत्तिया । एवं जाव चउरिंदिया ।।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु समाहारादि-पदं

२३. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा[5] णेरइया, णवरं—किरियाहिं सम्मद्दिट्ठी मिच्छद्दिट्ठी सम्मामिच्छद्दिट्ठी । तत्थ णं जेते सम्मद्दिट्ठी ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—असंजया य संजयासंजया य । तत्थ णं जेते संजयासंजया तेसि णं तिण्णि किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया । तत्थ णं जेते असंजया तेसि णं चत्तारि किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाण-किरिया । तत्थ णं जेते मिच्छद्दिट्ठी जे य सम्मामिच्छद्दिट्ठी तेसिं णं णियतियाओ पंच किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया मिच्छादंसणवत्तिया । सेसं तं चेव ।।

मणुस्सेसु समाहारादि-पदं

२४. मणूसाणं भंते ! सव्वे समाहारा ? गोयमा ! णो इणट्ठे[6] समट्ठे ।।

२५. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! मणूसा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—महासरीरा य अप्पसरीरा य । तत्थ णं जेते महासरीरा ते णं बहुतराए पोग्गले आहारेंति जाव[7] बहुतराए पोग्गले णीससंति, आहच्च आहारेंति जाव[8] आहच्च णीससंति । तत्थ णं जेते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पोग्गले आहारेंति जाव अप्पतराए पोग्गले णीससंति, अभिक्खणं आहारेंति जाव अभिक्खणं नीससंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति- -मणूसा णो सव्वे समाहारा । सेसं जहा[9] णेरइयाणं, णवरं—किरियाहिं मणूसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—

१. प० १७।८,९ ।
२. प० १७।१०-१३ ।
३. प० १७।१-७ ।
४. × (ख) ।
५. प० १७।१-१३ ।
६. इणमट्ठे (क); तिणट्ठे (ख,घ) ।
७. प० १७।२ ।
८. × (ख,ग,घ) ।
९. प० १७।२-१३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मद्दिट्ठी मिच्छद्दिट्ठी सम्मामिच्छद्दिट्ठी। तत्थ णं जे ते सम्मद्दिट्ठी ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजया असंजया संजयासंजया। तत्थ णं जेते संजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सरागसंजया य वीतरागसंजया य। तत्थ णं जेते वीतरागसंजया ते णं अकिरिया। तत्थ णं जेते सरागसंजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसंजया य अपमत्तसंजया य। तत्थ णं जेते अपमत्तसंजया तेसिं एगा मायावत्तिया किरिया कज्जति, तत्थ णं जेते पमत्तसंजया तेसिं दो किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया मायावत्तिया य। तत्थ णं जेते संजया-संजया तेसिं तिण्णि किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया। तत्थ णं जेते असंजया तेसिं चत्तारि किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया। तत्थ णं जेते मिच्छद्दिट्ठी जे य सम्मामिच्छद्दिट्ठी तेसिं णेयतियाओ पंच किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया मिच्छादंसणवत्तिया। सेसं जहा[1] णेरइयाणं॥

वाणमंतराइसु समाहारादि-पदं

२६. वाणमंतराणं जहा[2] असुरकुमाराणं॥

२७. एवं जोइसिय-वेमाणियाण वि, णवरं—ते वेदणाए दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—माइमिच्छद्दिट्ठीउववण्णगा य अमाइसम्मद्दिट्ठीउववण्णगा य। तत्थ णं जेते माइमिच्छद्दिट्ठि-उववण्णगा ते णं अप्पवेदणतरागा। तत्थ णं जेते अमाइसम्मद्दिट्ठिउववण्णगा ते णं महावेद-णतरागा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सेसं तहेव॥

लेस्सेसु चउवीसदंडएसु समाहारादि-पदं

२८. सलेस्सा णं भंते ! णेरइया सव्वे समाहारा समसरीरा समुस्सासणिस्सासा ? स च्चेव पुच्छा। एवं जहा[3] ओहिओ गमओ[4] तहा सलेस्सगमओ वि णिरवसेसो भाणियव्वो जाव वेमाणिया॥

२९. कण्हलेस्सा णं भंते ! णेरइया सव्वे समाहारा समसरीरा समुस्सासणिस्सासा पुच्छा। गोयमा ! जहा ओहिया, णवरं—णेरइया वेदणाए माइमिच्छद्दिट्ठिउववण्णगा य अमाइसम्मद्दिट्ठिउववण्णगा य भाणियव्वा। सेसं तहेव जहा ओहियाणं॥

३०. असुरकुमारा जाव वाणमंतरा एते जहा ओहिया, णवरं—मणूसाणं किरियाहिं विसेसो जाव तत्थ णं जेते सम्मद्दिट्ठी ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजया असंजया संजयासंजया य, जहा[5] ओहियाणं। जोइसिय-वेमाणिया आइल्लिगासु तिसु लेस्सासु ण पुच्छिज्जंति॥

३१. एवं जहा किण्हलेस्सा चारिया तहा णीललेस्सा वि चारियव्वा॥

३२. काउलेस्सा णेरइएहिंतो आरब्भ जाव वाणमंतरा, णवरं—काउलेस्सा णेरइया वेदणाए जहा[6] ओहिया॥

---

१. प० १७।१२,१३।
२. प० १७।१४-१७।
३. प० १७।१-२७।
४. गमओ भणिओ (पु)।
५. प० १७।२५।
६. प० १७।८,९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. तेउलेस्साणं भंते ! असुरकुमाराणं ताओ चेव पुच्छाओ। गोयमा ! जहेव[1] ओहिया तहेव, णवरं—वेदणाए जहा[2] जोतिसिया। पुढवि-आउ-वणस्सइ-पंचेंदियतिरिक्ख-मणूसा जहा[1] ओहिया तहेव भाणियव्वा, णवरं—मणूसा किरियाहिं जे संजया ते पमत्ता य अपमत्ता य भाणियव्वा, सरागा वीयरागा णत्थि ॥

३४. वाणमंतरा तेउलेस्साए जहा असुरकुमारा एवं जोतिसिय-वेमाणिया वि। सेसं तं चेव ॥

३५. एवं पम्हलेस्सा वि भाणियव्वा, णवरं—जेसिं अत्थि। सुक्कलेसा वि तहेव जेसिं अत्थि। सव्वं तहेव जहा ओहियाणं गमओ, णवरं—पम्हलेस्स-सुक्कलेस्साओ पंचेंदिय-तिरिक्खजोणिय-मणूस-वेमाणियाणं चेव, ण सेसाणं ति ॥

बीओ उद्देसओ

लेस्सा-पदं

३६. कति णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा णीललेस्सा काउलेस्सा तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा ॥

चउवीसदंडएसु लेस्सापरूवण-पदं

३७. णेरइयाणं भंते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तिण्णि, तं जहा—किण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा ॥

३८ तिरिक्खजोणियाणं भंते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेस्साओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥

३९. एगिंदियाणं भंते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ॥

४०. पुढविक्काइयाणं भंते ! कति लेस्साओ ? गोयमा ! एवं चेव आउ-वणप्फति-काइयाण वि एवं चेव। तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं जहा णेरइयाणं ॥

४१. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! छल्लेस्साओ—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥

४२. सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहा णेरइयाणं ॥

४३. गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! छल्लेसाओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥

४४. तिरिक्खजोणिणीणं पुच्छा। गोयमा ! छल्लेस्साओ एताओ चेव ॥

४५. मणुस्साणं पुच्छा। गोयमा ! छल्लेसाओ एताओ चेव ॥

---

१. प० १७।१४-१७।

२. प० १७।२७।

३. प० १७।१८-२५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६. सम्मुच्छिममणुस्साणं पुच्छा। गोयमा ! जहा णेरइयाणं॥

४७. गब्भवक्कंतियमणूसाणं पुच्छा। गोयमा ! छल्लेसाओ, तं जहा--कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा॥

४८. मणुस्सीणं पुच्छा। गोयमा ! एवं चेव॥

४९. देवाणं पुच्छा। गोयमा ! छ एताओ चेव॥

५०. देवीणं पुच्छा। गोयमा ! चत्तारि, तं जहा--कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा॥

५१. भवणवासीणं भंते ! देवाणं पुच्छा। गोयमा ! एवं चेव। एवं भवणवासिणीण वि॥

५२. वाणमंतरदेवाणं पुच्छा। गोयमा ! एवं चेव। एवं वाणमंतरीण वि॥

५३. जोइसियाणं पुच्छा। गोयमा ! एगा तेउलेस्सा। एवं जोइसिणीण वि॥

५४. वेमाणियाणं पुच्छा। गोयमा ! तिण्णि, तं जहा--तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा॥

५५. वेमाणिणीणं पुच्छा। गोयमा ! एगा तेउलेसा॥

अप्पाबहुय-पदं

५६. एतेसि णं भंते ! सलेस्साणं जीवाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साणं अलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा संखेज्जगुणा, तेउलेस्सा संखेज्जगुणा, अलेस्सा अणंतगुणा, काउलेस्सा अणंतगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, सलेस्सा विसेसाहिया॥

५७. एतेसि णं भंते ! णेरइयाणं कण्हलेस्साणं नीललेस्साणं काउलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा गोयमा ! सव्वत्थोवा णेरइया कण्हलेस्सा, णीललेस्सा असंखेज्जगुणा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा॥

५८. एतेसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?गोयमा ! सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया सुक्कलेसा, एवं जहा[1] ओहिया, णवरं--अलेस्सवज्जा[2]॥

५९. एतेसि णं भंते ! एगिंदियाणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया तेउलेस्सा, काउलेस्सा अणंतगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया॥

६०. एतेसि णं भंते ! पुढविक्काइयाणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! जहा ओहिया एगिंदिया, णवरं--काउलेस्सा असंखेज्जगुणा। एवं आउक्कायइयाण वि॥

६१. एतेसि णं भंते ! तेउक्काइयाणं कण्हलेस्साणं णीललेस्साणं काउलेस्साणं य

---

१. प० १७।५६।

२. अलेससलेसवज्जा (क,ख,ग,घ); मलयगिरिवृत्तौ 'अलेश्यावर्जाः' इति पाठः सम्मतोस्ति--नवरमलेश्यावर्जास्तिरश्चामलेश्यानामसम्भवात्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउक्काइया काउलेस्सा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया । एवं वाउक्काइयाण वि ॥

६२. एतेसि णं भंते ! वणप्फइकाइयाणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? जहा एगिंदियओहियाणं बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं जहा तेउक्काइयाणं ॥

६३. एतेसि णं भंते ! पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! जहा ओहियाणं तिरिक्खजोणियाणं, णवरं—काउलेस्सा असंखेज्जगुणा । सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं जहा तेउक्काइयाणं । गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं जहा ओहियाणं तिरिक्खजोणियाणं, णवरं—काउलेस्सा संखेज्जगुणा । एवं तिरिक्खजोणिणीण वि ॥

६४. एतेसि णं भंते ! सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाण य कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया व तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा संखेज्जगुणा, तेउलेस्सा संखेज्जगुणा, काउलेस्सा संखेज्जगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्सा सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥

६५. एतेसि णं भंते ! सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! जहेव[1] पंचमं तहा इमं पि छट्ठं भाणियव्वं ॥

६६. एतेसि णं भंते ! गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण[2] य कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया सुक्कलेस्सा, सुक्कलेस्साओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, पम्हलेस्सा गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, पम्हलेस्साओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, तेउलेस्सा[3]० संखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ० संखेज्जगुणाओ, काउलेस्सा० संखेज्जगुणा, णीललेस्सा० विसेसाहिया, कण्हलेस्सा० विसेसाहिया, काउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ० विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ० विसेसाहियाओ ॥

६७. एतेसि णं भंते ! सम्मुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो

१. पृ० १७।६४; इदं किल पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाधिकारे षष्ठं सूत्रमनन्तरोक्तं च पंचममत उक्तं 'जहेव पंचमं तहा इमं छट्ठं भाणियव्वं (मवृ) ।

२. 'गब्भवक्कंतियपंचेंदिय' इति पदांशः अध्याहार्यः ।

३. 'तेउलेस्सा' इत्यादिपदानामग्रे 'गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाः' इति पदं गम्यमस्ति । एतत् सर्वत्रापि बोध्यम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतिय-पंचेंदियतिरिक्खजोणिया सुक्कलेस्सा सुक्कलेस्साओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, पम्हलेस्सा गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, पम्हलेस्साओ तिरिक्ख-जोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, तेउलेस्सा गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, काउलेस्सा तिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, णील-लेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ, काउलेस्सा सम्मुच्छिमपंचेंदिय-तिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ।।

६८. एतेसि णं भंते ! पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचेंदियतिरिक्खजोणिया सुक्कलेस्सा, सुक्कलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, पम्हलेस्सा संखेज्जगुणा, पम्हलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, तेउलेस्सा संखेज्जगुणा तेउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, काउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ।।

६९. एतेसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?गोयमा ! जहेव णवमं[1] अप्पाबहुगं तहा इमं पि, नवरं—काउलेस्सा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा । एवं एते दसअप्पाबहुगा तिरिक्खजोणियाणं ।।

७०. एवं मणूसाणं पि अप्पाबहुगा भाणियव्वा, 'णवरं पच्छिमगं अप्पाबहुगं णत्थि'[2] ।।

७१. एतेसि णं भंते ! देवाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, तेउलेस्सा संखेज्जगुणा ।।

७२. एतासि[3] णं भंते ! देवीणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ देवीओ काउलेस्साओ, णीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ, तेउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ ।।

---

१. 'सामान्यतः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकतिर्यक्स्त्री-विषयं नवमम्' (मवृ) ।

२. नवरं पश्चिमं दशममल्पबहुत्वं नास्ति, मनुष्याणामनन्तत्वाभावात्, तदभावे काउलेस्सा अनन्तगुणा इति पदासम्भवात् ।

३. एतेसि (क,ख,ग,घ,पु) एतत्पदं 'देवी' पदस्य विशेषणमस्ति, अतः एतत् सम्यग् नास्ति । प्रवाहपातिलेखनवृत्त्या अस्य प्रयोगो जातः '८२' सूत्रे 'एतासि' इति पदं लब्धमस्ति । तदस्ति समीचीनम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७३. एतेसि[1] णं भंते ! देवाणं देवीण य कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्साओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ, तेउलेस्सा देवा संखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ देवीओ संखेज्जगुणाओ ।।

७४. एतेसि णं भंते ! भवणवासीणं देवाणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा भवणवासी देवा तेउलेस्सा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ।।

७५. एतासि णं भंते ! भवणवासीणीणं देवीणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! एवं चेव ।।

७६. एतेसि णं भंते ! भवणवासीणं देवाणं देवीण य कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा भवणवासी देवा तेउलेस्सा, भवणवासिणीओ तेउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, काउलेस्सा भवणवासी असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्साओ भवणवासिणीओ संखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ ।।

७७. एवं वाणमंतराण वि तिण्णेव अप्पाबहुया जहेव भवणवासीणं तहेव भाणियव्वा ।।

७८. एतेसि णं भंते ! जोइसियाणं देवाणं देवीण य तेउलेस्साणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जोइसियदेवा तेउलेस्सा, जोइसिणिदेवीओ तेउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ ।।

७९. एतेसि णं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं तेउलेस्साणं पम्हलेस्साणं सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणिया सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्सा असंखेज्जगुणा ।।

८०. एतेसि णं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं देवीण य तेउलेस्साणं पम्हलेस्साणं सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ वेमाणिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ ।।

८१. एतेसि णं भंते ! भवणवासीणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाण य देवाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्सा असंखेज्जगुणा; तेउलेस्सा भवणवासी देवा असंखेज्जगुणा, काउलेस्सा असंखेज्ज-

---

१. एवं एतेसि (क,ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया; तेउलेस्सा वाणमंतरा देवा असंखेज्जगुणा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, किण्हलेस्सा विसेसाहिया; तेउलेस्सा जोइसियदेवा संखेज्जगुणा ।।

८२. एतासि[1] णं भंते ! भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसिणीणं वेमाणिणीण य कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कतरे कतरेहिंता अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा गोयमा ! सव्वत्थोवाओ देवीओ वेमाणिणीओ तेउलेस्साओ; भवणवासिणीओ तेउलेस्साओ असंखेज्जगुणाओ, काउलेस्साओ असंखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ; तेउलेस्साओ वाणमंतरीओ देवीओ असंखेज्जगुणाओ, काउलेस्साओ असंखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ; तेउलेस्साओ जोइसिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ ।।

८३. एतेसि णं भंते ! भवणवासीणं जाव वेमाणियाणं देवाण य देवीण य कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ वेमाणिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ; तेउलेस्सा भवणवासी देवा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ भवणवासिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, काउलेस्सा भवणवासी असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्साओ भवणवासिणीओ संखेज्जगुणाओ, णीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ; तेउलेस्सा वाणमंतरा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ वाणमंतरीओ संखेज्जगुणाओ, काउलेस्सा वाणमंतरा असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्साओ वाणमंतरीओ संखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ; तेउलेस्सा जोइसिया संखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ जोइसिणीओ संखेज्जगुणाओ ।।

इड्ढिअप्पाबहुय-पदं

८४. एतेसि णं भंते ! जीवाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पिड्ढिया[2] वा महिड्ढिया[3] वा ? गोयमा ! कण्हलेस्सेहिंतो णीललेस्सा महिड्ढिया, णीललेस्सेहिंतो काउलेस्सा महिड्ढिया, एवं काउलेस्सेहिंतो तेउलेस्सा महिड्ढिया, तेउलेस्सेहिंतो पम्हलेस्सा महिड्ढिया, पम्हलेस्सेहिंतो सुक्कलेस्सा महिड्ढिया । सव्वप्पिड्ढिया[4] जीवा किण्हलेस्सा, सव्वमहिड्ढिया जीवा सुक्कलेस्सा ।।

८५. एतेसि णं भंते ! णेरइयाणं कण्हलेसाणं णीललेस्साणं काउलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पिड्ढिया वा महिड्ढिया वा ? गोयमा ! कण्हलेस्सेहिंतो णीललेस्सा महिड्ढिया, णीललेस्सेहिंतो काउलेस्सा महिड्ढिया । सव्वप्पिड्ढिया णेरइया कण्हलेस्सा, सव्वमहिड्ढिया णेरइया काउलेस्सा ।।

८६. एतेसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कतरे

१. एएसि (क,ख,ग) ।

२. अप्पड्ढिया (क,ख,ग,घ) सर्वत्र ।

३. महड्ढिया (ख,ग) सर्वत्र ।

४. सव्वप्पड्ढिया (क,ख,ग,घ) सर्वत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कतरेहिंतो अप्पिड्ढिया वा महिड्ढिया वा ? गोयमा ! जहा जीवा ।।

८७. एतेसि णं भंते ! एगिंदियतिरिक्खजोणियाणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कतरे कतरेहिंतो अप्पिड्ढिया वा महिड्ढिया वा ? गोयमा ! कण्हलेस्सेहिंतो एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो णीललेस्सा महिड्ढिया, णीललेस्सेहिंतो काउलेस्सा महिड्ढिया, काउलेस्सेहिंतो तेउलेस्सा महिड्ढिया । सव्वप्पिड्ढिया एगिंदियतिरिक्खजोणिया कण्हलेस्सा, सव्वमहिड्ढिया तेउलेस्सा । एवं पुढविक्काइयाण वि ।।

८८. एवं एतेणं अभिलावेणं जहेव लेस्साओ भावियाओ तहेव णेयव्वं जाव चउरिंदिया ।।

८९. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं सम्मुच्छिमाणं गब्भवक्कंतियाण य सव्वेसिं भाणियव्वं जाव अप्पिड्ढिया वेमाणिया देवा तेउलस्सा, सव्वमहिड्ढिया वेमाणिया देवा सुक्कलेस्सा ।। [केइ[1] भणंति—चउवीसदंडएणं इड्ढी भाणियव्वा ।]

तइओ उद्देसओ

उववाय-उव्वट्टणा-पदं

९०. णेरइए णं भंते ! णेरइएसु उववज्जति ? अणेरइए णेरइएसु उववज्जति ? गोयमा ! णेरइए णेरइएसु उववज्जइ, णो अणेरइए णेरइएसु उववज्जति । एवं जाव वेमाणिए[2] ।।

९१. णेरइए णं भंते ! णेरइएहिंतो उव्वट्टति ? अणेरइए णेरइएहिंतो उव्वट्टति ? गोयमा ! अणेरइए णेरइएहिंतो उव्वट्टति, णो णेरइए णेरइएहिंतो उव्वट्टति । एवं जाव वेमाणिए, णवरं—जोतिसिय-वेमाणिएसु चयणं ति अभिलावो कायव्वो ।।

ओहेणं उववाय-उव्वट्टणा-पदं

९२. से णूणं भंते ! कण्हलेसे णेरइए कण्हलेसेसु णेरइएसु उववज्जति ? कण्हलेसे उव्वट्टति ? जल्लेस्से उववज्जति तल्लेसे उव्वट्टति ? हंता गोयमा ! कण्हलेसे णेरइए कण्हलेसेसु णेरइएसु उववज्जति, कण्हलेसे उव्वट्टति, जल्लेसे उववज्जति तल्लेसे उव्वट्टति । एवं णीललेसे वि काउलेसे वि ।।

९३. एवं असुरकुमारा[3] वि जाव थणियकुमारा वि, णवरं—तेउलेस्सा अब्भहिया ।।

९४. से णूणं भंते ! कण्हलेसे पुढविक्काइए कण्हलेस्सेसु पुढविक्काइएसु उववज्जति ? कण्हलेस्से उव्वट्टति ? जल्लेसे उववज्जति तल्लेसे उव्वट्टति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से पुढविक्काइए कण्हलेस्सेसु पुढविक्काइएसु उववज्जति; सिय कण्हलेस्से उव्वट्टति, सिय नीललेसे उव्वट्टति, सिय काउलेसे उव्वट्टति; सिय जल्लेसे उववज्जति तल्लेसे उव्वट्टति । एवं णील-काउलेस्सासु वि ।।

---

१. वृत्तिकृतापि मनुष्यवैमानिकसूत्राणां संकेतः कृतोस्ति—एवं नैरयिकतिर्यग्योनिकमनुष्यवैमानिकविषयाण्यपि सूत्राणि येषां यावत्यो लेश्यास्तेषां तावतीः परिभाव्य भावनीयानि ।

२. वेमाणियाणं (क,ख,ग,घ,पु); उद्वर्त्तना सूत्रे 'वेमाणिए' इति पदमस्ति, अत्रापि तथैव युज्यते किन्तु आदर्शेषु नोपलब्धमिदम्, मलयगिरिवृत्तौ 'एवं जाव वेमाणिए' इति पाठो लब्धः । स एव अस्माभिः स्वीकृतः ।

३. असुरकुमाराण (क,ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९५. से णूणं भंते ! तेउलेस्से पुढविक्काइए तेउलेस्सेसु पुढविक्काइएसु उववज्जइ ? पुच्छा। हंता गोयमा ! तेउलेसे पुढविक्काइए तेउलेसेसु पुढविक्काइएसु उववज्जति; सिय कण्हलेसे उव्वट्टति, सिय णीललेसे उव्वट्टति, सिय काउलेसे उव्वट्टति ; तेउलेसे उववज्जति, णो चेव णं तेउलेस्से उव्वट्टति ।।

९६. एवं आउक्काइय-वणप्फइकाइया वि । तेऊ वाऊ एवं चेव, णवरं—एतेसिं तेउलेस्सा णत्थि । बि-तिय-चउरिंदिया एवं चेव तिसु लेसासु ।।

९७. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मणूसा य जहा[1] पुढविक्काइया आदिल्लियासु तिसु लेस्सासु भणिया तहा छसु वि लेसासु भाणियव्वा, णवरं—छप्पि लेसाओ चारियव्वाओ ।।

९८. वाणमंतरा जहा असुरकुमारा ।।

९९. से णूणं भंते ! तेउलेसे जोइसिए तेउलेसेसु जोइसिएसु उववज्जति ? जहेव असुरकुमारा । एवं वेमाणिया वि, णवरं दोण्ह वि चयंतीति अभिलावो ।।

विभागेणं उववाय-उव्वट्टणा-पदं

१००. से णूणं भंते ! कण्हलेस्से णीललेस्से काउलेस्से णेरइए कण्हलेस्सेसु णीललेस्सेसु काउलेस्सेसु णेरइएसु उववज्जति ? कण्हलेस्से णीललेस्से काउलेस्से उव्वट्टति ? जल्लेस्से उववज्जति तल्लेसे उव्वट्टति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्स-णीललेस्स-काउलेस्सेसु उववज्जति, जल्लेसे उववज्जति तल्लेसे उव्वट्टति ।।

१०१. से णूणं भंते ! कण्हलेस्से जाव तेउलेस्से असुरकुमारे कण्हलेस्सेसु जाव तेउलेस्सेसु असुरकुमारेसु उववज्जति ? एवं जहेव नेरइए तहा असुरकुमारे वि जाव थणियकुमारे वि ।।

१०२. से णूणं भंते ! कण्हलेस्से जाव तेउलेस्से पुढविकाइए कण्हलेस्सेसु जाव तेउलेस्सेसु पुढविक्काइएसु उववज्जति ? एवं पुच्छा जहा असुरकुमाराणं । हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव तेउलेस्से पुढविक्काइए कण्हलेस्सेसु जाव तेउलेस्सेसु पुढविक्काइएसु उववज्जति; सिय कण्हलेस्से उव्वट्टति सिय णीललेसे सिय काउलेस्से उव्वट्टति, सिय जल्लेस्से उववज्जति तल्लेसे उव्वट्टति, तेउलेसे उववज्जति, णो चेव णं तेउलेस्से उव्वट्टति । एवं आउक्काइय-वणप्फइकाइया वि भाणियव्वा ।।

१०३. से णूणं भंते ! कण्हलेस्से णीललेस्से काउलेस्से तेउक्काइए कण्हलेसेसु णीललेसेसु काउलेसेसु तेउक्काइएसु उववज्जति ? कण्हलेसे णीललेसे काउलेसे उव्वट्टति ? जल्लेसे उववज्जति तल्लेसे उव्वट्टति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से णीललेस्से काउलेस्से तेउक्काइए कण्हलेसेसु णीललेसेसु काउलेसेसु तेउक्काइएसु उववज्जति; सिय कण्हलेसे उव्वट्टति, सिय णीललेसे सिय काउलेस्से उव्वट्टति; सिय जल्लेसे उववज्जति तल्लेसे उव्वट्टति । एवं वाउक्काइया बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया वि भाणियव्वा ।।

१०४. से णूणं भंते ! कण्हलेसे जाव सुक्कलेसे पंचेंदियतिरिक्खजोणिए कण्हलेसेसु जाव सुक्कलेसेसु पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ? पुच्छा । हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से पंचेंदियतिरिक्खजोणिए कण्हलेस्सेसु जाव सुक्कलेस्सेसु पंचेंदियतिरिक्ख-

---

१. प० १७।९४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोणिएसु उववज्जति; सिय कण्हलेस्से उव्वट्टति जाव सिय सुक्कलेस्से उव्वट्टति, सिय जल्लेसे उववज्जति तल्लेसे उव्वट्टति। एवं मणूसे वि॥

१०५. वाणमंतरे जहा असुरकुमारे। जोइसिय-वेमाणिए वि एवं चेव, णवरं—जस्स जल्लेसा। दोण्ह वि चयणं ति भाणियव्वं॥

कण्हाइलेस्सेसु नेरइएसु ओहिखेत्त-पदं

१०६. कण्हलेस्से णं भंते ! णेरइए कण्हलेस्सं णेरइयं पणिहाए ओहिणा सव्वओ समंता समभिलोएमाणे[1]-समभिलोएमाणे केवतियं खेत्तं जाणति ? केवतियं खेत्तं पासति ? गोयमा ! णो वहुयं खेत्तं जाणति णो वहुयं खेत्तं पासति, णो दूरं खेत्तं जाणति णो दूरं खेत्तं पासति, इत्तरियमेव[2] खेत्तं जाणति इत्तरियमेव खेत्तं पासति॥

१०७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—कण्हलेसे णं णेरइए[3] °कण्हलेस्सं णेरइयं पणिहाए ओहिणा सव्वओ समंता समभिलोएमाणे-समभिलोएमाणे णो बहुयं खेत्तं जाणति णो वहुयं खेत्तं पासति, णो दूरं खेत्तं जाणति णो दूरं खेत्तं पासति, इत्तरियमेव खेत्तं जाणति° इत्तरियमेव खेत्तं पासति ? गोयमा ! से जहाणामए—केइ[4] पुरिसे बहुसम-रमणिज्जंसि भूमिभागंसि ठिच्चा सव्वओ समंता समभिलोएज्जा, तए णं से पुरिसे धरणि-तलगतं पुरिसं पणिहाए सव्वओ समंता समभिलोएमाणे-समभिलोएमाणे णो बहुयं खेत्तं[5] °जाणति णो बहुयं खेत्तं पासति, णो दूरं खेत्तं जाणति णो दूरं खेत्तं पासति, इत्तरियमेव खेत्तं जाणति° इत्तरियमेव खेत्तं पासति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—कण्हलेसे णं णेरइए[6] °कण्हलेस्सं णेरइयं पणिहाए ओहिणा सव्वओ समंता समभिलोएमाणे-समभिलोए-माणे णो बहुयं खेत्तं जाणति णो बहुयं खेत्तं पासति, णो दूरं खेत्तं जाणति णो दूरं खेत्तं पासति, इत्तरियमेव खेत्तं जाणति° इत्तरियमेव खेत्तं पासति॥

१०८. णीललेसे णं भंते ! णेरइए कण्हलेसं णेरइयं पणिहाए[7] ओहिणा सव्वओ समंता समभिलोएमाणे-समभिलोएमाणे केवतियं खेत्तं जाणइ ? केवतियं खेत्तं पासइ ? गोयमा ! बहुतरागं[8] खेत्तं जाणति बहुतरागं खेत्तं पासति, दूरतरागं खेत्तं जाणइ दूरतरागं खेत्तं पासति, वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ वितिमिरतरागं खेत्तं पासइ, विसुद्धतरागं खेत्तं जाणति विसुद्धतरागं खेत्तं पासति॥

१०९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—णीललेस्से णं णेरइए कण्हलेस्सं णेरइयं पणिहाए जाव विसुद्धतरागं खेत्तं पासइ ? गोयमा ! से जहाणामए—केइ पुरिसे बहुसम-रमणिज्जाओ भूमिभागाओ पव्वयं दुरुहति[9], दुरुहित्ता सव्वओ समंता समभिलोएज्जा, तए णं से पुरिसे धरणितलगयं पुरिसं पणिहाए सव्वओ समंता समभिलोएमाणे-समभिलोएमाणे बहुतरागं खेत्तं जाणइ जाव विसुद्धतरागं खेत्तं पासति। से तेणट्ठेणं[10] गोयमा ! एवं वुच्चति—णीललेस्से णेरइए कण्हलेस्सं णेरइयं पणिहाए जाव विसुद्धतरागं खेत्तं पासति॥

---

१. समभिलोतेमाणे (क)।
२. इतिरियमेव (ध)।
३. सं० पा०—णेरइए तं चेव जाव इत्तरिय°।
४. केति (क,ख,घ)।
५. सं० पा०—खेत्तं जाव पासति जाव इत्तरिय°।
६. सं० पा०—णेरइए जाव इत्तरिय°।
७. पणिहाय (ग)।
८. बहुतरगं (ख)।
९. दुरूहति (ग)।
१०. एणट्ठेणं (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११०. काउलेसे णं भंते ! णेरइए णीललेस्सं णेरइयं पणिहाए ओहिणा सव्वओ समंता समभिलोएमाणे-समभिलोएमाणे केवतियं खेत्तं जाणइ ? केवतियं खेत्तं पासइ ? गोयमा ! बहुतरागं खेत्तं जाणइ बहुतरागं खेत्तं पासइ[1], °दूरतरागं खेत्तं जाणति दूरतरागं खेत्तं पासति, वितिमिरतरागं खेत्तं जाणति वितिमिरतरागं खेत्तं पासति, विसुद्धतरागं खेत्तं जाणति° विसुद्धतरागं खेत्तं पासइ ।।

१११. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति -काउलेसे णं णेरइए जाव विसुद्धतरागं खेत्तं पासति ? गोयमा ! से जहाणामए—केइ पुरिस बहुसमरणिज्जाओ भूमिभागाओ पव्वतं दुरुहति, दुरुहित्ता रुक्खं दुरुहति, दुरुहित्ता दो वि पादे उच्चाविय[2] सव्वओ समंता समभिलोएज्जा, तए णं से पुरिसे पव्वतगयं धरणितलगयं च पुरिसं पणिहाए सव्वओ समंता समभिलोएमाणे-समभिलोएमाणे बहुतरागं खेत्तं जाणति बहुतरागं खेत्तं पासति 'जाव विसुद्धतरागं'[3] खेत्तं पासति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—काउलेस्से णं णेरइए णीललेस्सं णेरइयं पणिधाए तं चेव 'जाव विसुद्धतरागं'[4] खेत्तं पासति ।।

णाण-पदं

११२. कण्हलेस्से णं भंते ! जीवे कतिसु णाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा णाणेसु होज्जा—दोसु होमाणे आभिणिबोहिय-सुयणाणेसु होज्जा, तिसु होमाणे आभिणिबोहिय-सुयणाण-ओहिणाणेसु होज्जा, अहवा तिसु होमाणे आभिणिबोहिय-सुयणाण-मणपज्जवणाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे आभिणिबोहियणाण-सुयणाण-ओहिणाण-मणपज्जव-णाणेसु होज्जा । एवं जाव पम्हलेस्से ।।

११३. सुक्कलेस्से णं भंते ! जीवे कतिसु णाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा एगम्मि वा होज्जा—दोसु होमाणे आभिणिबोहियणाण-[5] °सुयणाणेसु होज्जा, तिसु होमाणे आभिणिबोहिय-सुयणाण-ओहिणाणेसु होज्जा, अहवा तिसु होमाणे आभिणि-बोहिय-सुयणाण-मणपज्जवणाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे आभिणिबोहियणाण-सुयणाण-ओहि-णाण-मणपज्जवणाणेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे एगम्मि केवलणाणे होज्जा ।।

चउत्थो उद्देसओ

गाहा—

परिणाम १ वण्ण २ रस ३ गंध ४, सुद्ध ५ अपसत्थ ६ संकिलिट्ठुण्हा ७, ८ ।
गति ९ परिणाम १० पदेसावगाह ११,१२ वग्गण १३ ठाणाणमप्पबहुं १४,१५ ।।१।।

लेस्सा-पदं

११४. कति णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ।।

---

१. सं० पा०—पासइ जाव विसुद्धतरागं ।
२. उच्चाविया (ग); उच्चावइत्ता (मवृ) ।
३. जाव वितिमिरतरागं (क,ख,ग); × (घ); 'जाव' पदस्य प्रयोगे बहुवारं यथा पाठस्य अशुद्धिर्भवति तथा अत्रापि विद्यते । यथोपरि-जावविसुद्धतरागं 'खेत्तं पासति' तथा अत्रापि स एव पाठः संगतोस्ति ।
४. वितिमिरतरागं (क,ख,ग,घ) ।
५. सं० पा०—आभिणिबोहियणाण एवं जहेव कण्हलेस्साणं तहेव भाणियव्वं जाव चउहिं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेस्साणं परिणति-पदं

११५. से णूणं भंते ! कण्हलेस्सा णीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्सा णीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ।।

११६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—कण्हलेस्सा णीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ? गोयमा ! से जहाणामए—खीरे 'दूसिं पप्प'[1] सुद्धे वा वत्थे रागं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—कण्हलेस्सा णीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ।।

११७. एवं[2] एतेणं अभिलावेणं णीललेस्सा काउलेस्सं पप्प, काउलेस्सा तेउलेस्सं पप्प, तेउलेस्सा पम्हलेस्सं पप्प, पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सं पप्प जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ।।

११८. से णूणं भंते ! कण्हलेस्सा णीललेस्सं काउलेस्सं तेउलेस्सं पम्हलेस्सं सुक्कलेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्सा णीललेस्सं जाव सुक्कलेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ।।

११९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—किण्हलेस्सा णीललेस्सं जाव सुक्कलेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ? गोयमा ! से जहाणामए—वेरुलियमणी सिया किण्हसुत्तए[3] वा णीलसुत्तए वा लोहियसुत्तए वा हालिद्दसुत्तए वा सुक्किलसुत्तए[4] वा आइए समाणे तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—किण्हलेस्सा णीललेस्सं जाव सुक्कलेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ।।

१२०. से णूणं भंते ! णीललेस्सा किण्हलेस्सं जाव सुक्कलेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ? हंता गोयमा ! एवं चेव ।।

१२१. एवं काउलेस्सा कण्हलेस्सं णीललेस्सं तेउलेस्सं पम्हलेस्सं सुक्कलेस्सं, एवं तेउलेस्सा किण्हलेसं णीललेसं काउलेस्सं पम्हलेस्सं सुक्कलेस्सं, एवं पम्हलेस्सा कण्हलेसं णीललेसं काउलेसं तेउलेसं सुक्कलेस्सं 'पप्प जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ? हंता गोयमा ! तं चेव'[5] ।।

१२२. से णूणं भंते ! सुक्कलेस्सा किण्हलेस्सं णीललेस्सं काउलेस्सं तेउलेस्सं पम्हलेस्सं पप्प जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ? हंता गोयमा ! तं चेव ।।

वण्ण-पदं

१२३. कण्हलेस्सा णं भंते ! वण्णेणं केरिसिया पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहाणामए—

---

१. दूरं पप्प (ख,ग,घ) ।
२. एवं नीललेश्या कापोतलेश्यां प्राप्येत्यादीन्यपि चत्वारि सूत्राणि भावनीयानि (मवृ) ।
३. कण्ह° (क,घ) ।
४. सुक्किल्ल° (ग) ।
५. × (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीमूए इ वा अंजणे इ वा खंजणे इ वा कज्जले इ वा गवले इ वा 'गवलवलए इ वा'[1] जंबूफले इ वा अद्दारिट्ठए[2] इ वा परपुट्ठे इ वा भमरे इ वा भमरावली इ वा गयकलभे इ वा किण्हकेसरे[3] इ वा आगासथिग्गले इ वा किण्हासोए इ वा किण्हकणवीरए इ वा किण्हबंधुजीवए इ वा, भवेतारूवा[4] ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, किण्हलेस्सा णं एत्तो अणिट्ठतरिया चेव अकंततरिया चेव अप्पियतरिया चेव अमणुण्णतरिया चेव अमणामतरिया चेव वण्णेणं पण्णत्ता ।।

१२४. णीललेस्सा णं भंते ! केरिसिया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहाणामए—भिंगे इ वा भिंगपत्ते इ वा चासे इ वा चासपिच्छे इ वा सुए इ वा सुयपिच्छे इ वा सामा इ वा वणराई इ वा उच्चंतए[5] इ वा पारेवयगीवा इ वा मोरगीवा इ वा हलधरवसणे[6] इ वा अयसिकुसुमे इ वा वाणकुसुमे[7] इ वा अंजणकेसियाकुसुमे इ वा णीलुप्पले इ वा नीलासोए इ वा णीलकणवीरए इ वा णीलबंधुजीवए इ वा, भवेतारूवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे[8], •णीललेसा णं एत्तो अणिट्ठतरिया चेव अकंततरिया चेव अप्पियतरिया चेव अमणुण्णतरिया चेव° अमणामतरिया चेव वण्णेणं पण्णत्ता ।।

१२५. काउलेस्सा णं भंते ! केरिसिया[9] वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहाणामए—खइरसारे[10] इ वा कइरसारे[11] इ वा धमाससारे[12] इ वा तंबे[13] इ वा तंबकरोडए इ वा तंबछिवाडिया[14] इ वा वाइंगणिकुसुमए[15] इ वा कोइलच्छद[16]-कुसुमए इ वा 'जवासाकुसुमे इ वा कलकुसुमे इ वा'[17], भवेतारूवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, काउलेस्सा णं एत्तो अणिट्ठतरिया[18] •चेव अकंततरिया चेव अप्पियतरिया चेव अमणुण्णतरिया चेव° अमणामतरिया चेव वण्णेणं पण्णत्ता ।।

---

१. चिन्हाङ्कितः पाठो मलयगिरिवृत्तौ नास्ति व्याख्यातः ।

२. अद्दारिट्ठभे (क); अद्दाअरेट्ठए (ख,घ); अद्दारिट्ठपुष्फे (ग); अरिष्टकं फलविशेषः अस्यां मलयगिरिवृत्तौ 'अद्द' पदं नास्ति व्याख्यातम् ।

३. किण्हकेसे (ख,पु) ।

४. भवेतारुवे (क,ख,ग,घ) ।

५. मुद्रितायां मलयगिरिवृत्तौ उच्चन्तको—दन्तरागः आह च मूलटीकाकारः 'उच्चंतगो' दंतरागो भवइ' इति पाठो दृश्यते । हस्तलिखिते मलयगिरिवृत्त्यादर्शे 'उद्न्तको' दतरागः आह च मूलटीकाकारः उद्दंतको दंतरागो भन्नइ । 'उच्चत्तए' (प्रदेशव्याख्या) ।

६. हलहर° (क,ग,घ) ।

७. वणकुसुमे (ग) ।

८. सं० पा०—समट्ठे एत्तो जाव अमणामतरिया ।

९. केसरिया (ख,ग,घ) ।

१०. खयर० (ख,घ) ।

११. कयरसारए (ख, ग,); कतरसारए (घ) ।

१२. धमाससारते (घ) ।

१३. तंबे (घ) ।

१४. तंबाछिवाए (ग) ।

१५. वाइंगिणि° (ख,घ) ।

१६. कोइच्छा° (क,ख,घ) ।

१७. एते पदे वृत्तौ व्याख्याते न स्तः 'क,ख,घ' संकेतितादर्शेषु 'कलकुसुमे इवा' इति पाठो नैव दृश्यते ।

१८. सं० पा०—अणिट्ठतरिया जाव अमणामतरिया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२६. तेउलेस्सा णं भंते ! केरिसिया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहाणामए— ससरुहिरे इ वा उरब्भरुहिरे इ वा वराहरुहिरे इ वा संबररुहिरे[1] इ वा मणुस्सरुहिरे इ वा बालिंदगोवे[2] इ वा बालदिवागरे इ वा संझब्भरागे इ वा गुंजद्धरागे इ वा जाइहिंगुलए[3] इ वा पवालंकुरे इ वा लक्खारसे इ वा लोहियक्खमणी इ वा किमिरागकंबले इ वा गयतालुए इ वा चीणपिट्ठरासी इ वा पालियायकुसुमे[4] इ वा जासुमणकुसुमे इ वा किंसुयपुप्फरासी इ वा रत्तुप्पले इ वा रत्तासोगे इ वा रत्तकणवीरए इ वा रत्तबंधुजीवए इ वा, भवेयारूवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, तेउलेस्सा णं एत्तो इट्ठतरिया चेव[5] •कंततरिया चेव पियतरिया चेव मणुण्णतरिया चेव° मणामतरिया चेव वण्णेणं पण्णत्ता ॥

१२७. पम्हलेस्सा णं भंते ! केरिसिया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहाणामए— चंपे इ वा चंपछल्ली इ वा चंपभेदे इ वा हलिद्दा इ वा हालिद्दगुलिया इ वा हालिद्दाभेदे इ वा हरियाले इ वा हरियालगुलिया इ वा हरियालभेदे इ वा चिउरे इ वा चिउररागे इ वा सुवण्णसिप्पी इ वा वरकणगणिहसे इ वा वरपुरिसवसणे इ वा अल्लइकुसुमे इ वा चंपयकुसुमे इ वा कणियारकुसुमे इ वा कुहंडियाकुसुमे इ वा सुवण्णजूहिया इ वा सुहिरण्णियाकुसुमे इ वा कोरेंटमल्लदामे[6] इ वा पीयासोगे इ वा पीयकणवीरए इ वा पीयबंधुजीवए इ वा, भवेतारूवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, पम्हलेस्सा णं एत्तो इट्ठतरिया चेव[7] •कंततरिया चेव पियतरिया केव मणुण्णतरिया चेव° मणामतरिया चेव वण्णेणं पण्णत्ता ॥

१२८. सुक्कलेस्सा णं भंते ! केरिसिया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहाणामए— अंके इ वा संखे इ वा चंदे इ वा कुंदे इ वा दगे इ वा दगरए इ वा दही[8] इ वा दहिघणे[9] इ वा खीरे इ वा खीरपूरे इ वा सुक्कछिवाडिया इ वा पेहुणमिंजिया इ वा धंत-धोयरुप्पपट्टे इ वा सारइयबलाहए[10] इ वा कुमुददले इ वा पोंडरियदले इ वा सालिपिट्ठरासी इ वा कुडगपुप्फरासी इ वा सिंदुवारवरमल्लदामे इ वा सेयासोए इ वा सेयकणवीरे इ वा सेयबंधुजीवए इ वा, भवेतारुवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सुक्कलेस्सा णं एत्तो इट्ठतरिया चेव कंततरिया चेव पियतरिया चेव मणुण्णतरिया चेव मणामतरिया चेव वण्णेणं पण्णत्ता ॥

१२९. एयाओ णं भंते ! छल्लेस्साओ कतिसु वण्णेसु साहिज्जंति ? गोयमा ! पंचसु वण्णेसु साहिज्जंति, तं जहा—कण्हलेसा कालएणं वण्णेणं साहिज्जति, णीललेस्सा णीलएणं वण्णेणं साहिज्जति, काउलेस्सा काललोहिएणं वण्णेणं साहिज्जति, तेउलेस्सा लोहिएणं वण्णेणं साहिज्जइ, पम्हलेस्सा हालिद्दएणं वण्णेणं साहिज्जइ, सुक्कलेस्सा सुक्किलएणं वण्णेणं साहिज्जइ ॥

---

१. × (ख)।
२. इंदगोपे बालेंदगोपे (ग)।
३. °हिंगुलुए (क, पु)।
४. पालियाकुसुमे (ख), पारिजाय° (ग)।
५. सं० पा०—इट्ठतरिया चेव जाव मणामतरिया।
६. कोरंट° (क); कोरिंट° (ग)।
७. सं० पा०—इट्ठतरिया चेव जाव मणामतरिया।
८. दधी (क,घ)।
९. दधि° (ख,घ)।
१०. सारय° (क); °बलाहते (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रस-पदं

१३०. कण्हलेस्सा णं भंते ! केरिसिया आसाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहाणामए—णिंबे इ वा णिंबसारे इ वा णिंबछल्ली इ वा णिंबफाणिए इ वा कुडए इ वा कुडगफले इ वा कुडगछल्ली इ वा कुडगफाणिए इ वा कडुगतुंबी इ वा कडुगतुंबीफले इ वा खारतउसी इ वा खारतउसीफले इ वा देवदाली इ वा देवदालिपुप्फे इ वा मियवालुंकी इ वा मियवालुंकीफले इ वा घोसाडिए इ वा घोसाडइफले इ वा कण्हकंदए इ वा वज्जकंदए इ वा, भवेतारूवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे, समट्ठे, कण्हलेस्सा णं एत्तो अणिट्ठतरिया चेव[1] •अकंततरिया चेव अप्पियतरिया चेव अमणुण्णतरिया चेव° अमणामतरिया चेव आसाएणं[2] पण्णत्ता ॥

१३१. णीललेस्साए पुच्छा। गोयमा ! से जहाणामए—भंगी ति वा भंगीरए इ वा पाढा इ वा चविया[3] इ वा चित्तामूलए इ वा पिप्पलीमूलए इ वा पिप्पली इ वा पिप्पलिचुण्णे इ वा मिरिए इ वा मिरियचुण्णे इ वा सिंगबेरे इ वा सिंगबेरचुण्णे इ वा, भवेतारूवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णीललेस्सा णं एत्तो[4] •अणिट्ठतरिया चेव अकंततरिया चेव अप्पियतरिया चेव अमणुण्णतरिया चेव° अमणामतरिया चेव आसाएणं पण्णत्ता।

१३२. काउलेस्साए पुच्छा। गोयमा ! से जहाणामए—अंबाण वा अंबाडगाण वा माउलुंगाण[5] वा बिल्लाण वा कविट्ठाण वा भव्वाण[6] वा फणसाण वा दालिमाण वा पारेवताण वा अक्खोडयाण[7] वा चाराण[8] वा बोराण वा तेंदुयाण वा अपिक्काणं[9] अपरियागाणं वण्णेणं अणुववेताणं गंधेणं अणुववेताणं फासेणं अणुववेताणं, भवेतारूवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, एत्तो[10] •अणिट्ठतरिया चेव अकंततरिया चेव अप्पियतरिया चेव अमणुण्णतरिया चेव° अमणामतरिया चेव काउलेस्सा आसाएणं पण्णत्ता ॥

१३३. तेउलेस्सा णं पुच्छा। गोयमा ! से जहाणामए—अंबाण वा जाव तेंदुयाण वा पिक्काणं परियावण्णाणं वण्णेणं उववेताणं पसत्थेणं[11] •गंधेणं उववेताणं पसत्थेणं फासेणं उववेताणं पसत्थेणं, भवेतारूवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे° एत्तो इट्ठतरिया चेव कंततरिया चेव पियतरिया चेव मणुण्णतरिया चेव मणामतरिया चेव तेउलेस्सा आसाएणं पण्णत्ता ॥

१३४. पम्हलेस्साए पुच्छा। गोयमा ! से जहाणामए—चंदप्पभा इ वा मणिसिलागा[12] इ वा वरसीधू इ वा वरवारुणी इ वा पत्तासवे इ वा पुप्फासवे इ वा फलासवे इ वा

---

१. सं० पा०—अणिट्ठतरिया चेव जाव अमणामतरिया।
२. अस्साएणं (पु) सर्वत्र।
३. चचिया (क); वछिया (ख); मलयगिरिवृत्तौ एतत् पदं नास्ति व्याख्यातम्।
४. सं० पा०—एत्तो जाव अमणामतरिया।
५. माउलिंगाण (घ)।
६. भद्दाण (क) × (ग); भज्जाण (घ); भट्ठाण (पु); एतत् पदं मलयगिरिवृत्तौ नास्ति।
७. अक्खोलाण (पु)।
८. पोराण (ख); चोराण (ग,पु)।
९. अपक्काण (क,ख,घ)।
१०. सं० पा०—एत्तो जाव अमणामतरिया।
११. सं० पा०—पसत्थेणं जाव फासेणं जाव एत्तो।
१२. मणिसलागा (क); मणिसिला (ख,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोयासवे इ वा आसवे इ वा मधू इ वा मेरए इ वा काविसायणे[1] इ वा खज्जूरसारए इ वा मुद्दियासारए इ वा सुपिक्कखोयरसे इ वा अट्ठपिट्ठणिट्ठिया इ वा जंबूफलकालिया इ वा वरपसण्णा इ वा आसला[2] मासला[3] पेसला ईसिं[4] ओट्ठावलंबिणी ईसिं वोच्छेयकडुई ईसिं[5] तंबच्छिकरणी उक्कोसमदपत्ता[6] वण्णेणं उववेया[7] °पसत्थेणं गंधेणं उववेया पसत्थेणं फासेणं उववेया पसत्थेणं° आसायणिज्जा वीसायणिज्जा पीणणिज्जा विंहणिज्जा[8] दीवणिज्जा दप्पणिज्जा मयणिज्जा सव्विदिय-गायपल्हायणिज्जा, भवेतारूवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, पम्हलेस्सा णं एत्तो इट्ठतरिया चेव[9] °कंततरिया चेव पियतरिया चेव° मणुण्णतिरिया चेव मणामतरिया चेव आसाएणं पण्णत्ता ।।

१३५. सुक्कलेस्सा णं भंते ! केरिसिया आसाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहाणामए—गुले इ वा खंडे इ वा सक्करा इ वा मच्छंडिया[10] इ वा पप्पडमोदए इ वा भिसकंदे इ वा पुप्फुत्तरा इ वा पउमुत्तरा इ वा आदंसिया इ वा सिद्धत्थिया इ वा 'आगासफलिओवमा इ वा'[11] अणोवमा इ वा, भवेतारूवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सुक्कलेस्सा णं एत्तो इट्ठतरिया चेव कंततरिया चेव पियतरिया चेव मणुण्णतरिया चेव मणामतरिया चेव आसाएणं पण्णत्ता ।।

गंधादि-पदं

१३६. कति णं भंते ! लेस्साओ दुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओ लेस्साओ दुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—किण्हलेस्सा णीललेस्सा काउलेस्सा ।।

१३७. कति णं भंते ! लेस्साओ सुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओ लेस्साओ सुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा ।।

१३८. एवं तओ अविसुद्धाओ तओ विसुद्धाओ, तओ अप्पसत्थाओ तओ पसत्थाओ, तओ संकिलिट्ठाओ तओ असंकिलिट्ठाओ, तओ सीयलुक्खाओ तओ निद्धण्हाओ, तओ दुग्गइगामिणीओ[12] तओ सुगइगामिणीओ[13] ।।

परिणाम-पदं

१३९. कण्हलेस्सा णं भंते ! कतिविधं परिणामं परिणमति ? गोयमा ! तिविहं वा नवविहं वा सत्तावीसतिविहं वा एक्कासीतिविहं वा बेतेयालसतविहं[14] वा बहुं वा बहुविहं

---

१. कविसाणए (क,ख,ग,घ,पु); लिपिदोषेणात्र वर्णविपर्ययो जातः । वृत्तौ 'मधुमेरककापिशायनानि मद्यविशेषाः, इति व्याख्यातमस्ति । जीवाजीवाभिगमे (३।८६०) पि 'कापिसायणेइ वा' इति पाठो लभ्यते ।

२. एतत् पदं मलयगिरिवृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।

३. मंसला (ग) ।

४. ईसि (क,ख); ईसी (पु) ।

५. ईसी (पु) ।

६. उक्कोसमयपत्ता (पु) ।

७. सं० पा०—उववेया जाव फासेणं ।

८. एतत् पदं मलयगिरिवृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।

९. सं० पा०—इट्ठतरिया चेव जाव मणामतरिया ।

१०. मच्छंडिया (क); मच्छिंडिया (ख,ग,घ) ।

११. °फालितोवमा इ वा उवमा इ वा (ख,ग,घ) ।

१२. °गामियाओ (क,ख,ग,घ) ।

१३. °गामियाओ (क,ख,ग,घ) ।

१४. बेतेयालीसतिविहं (क,ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा परिणामं परिणमति । एवं जाव सुक्कलेसा ।।

पदेस-पदं

१४०. कण्हलेस्सा णं भंते ! कतिपदेसिया पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंतपदेसिया पण्णत्ता । एवं जाव सुक्कलेस्सा ।।

अवगाह-पदं

१४१. कण्हलेस्सा णं भंते ! कइपएसोगाढा पण्णत्ता ? गोयमा असंखेज्जपएसोगाढा पण्णत्ता । एवं जाव सुक्कलेस्सा ।।

वग्गण-पदं

१४२. कण्हलेस्साए णं भंते ! केवतियाओ वग्गणाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अणंताओ वग्गणाओ पण्णत्ताओ । एवं जाव सुक्कलेस्साए ।।

ठाण-पदं

१४३. केवतिया णं भंते ! कण्हलेस्साठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा कण्हलेस्साठाणा पण्णत्ता । एवं जाव सुक्कलेस्साए ।।

अप्पबहु-पदं

१४४. एतेसि णं भंते ! कण्हलेस्साठाणाणं जाव सुक्कलेस्साठाणाण य जहण्णगाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेस्साठाणा दव्वट्ठयाए, जहण्णगा णीललेस्साठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा कण्हलेस्साठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा तेउलेस्साठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा पम्हलेस्साठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा सुक्कलेस्साठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा; पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेस्साठाणा पएसट्ठयाए, जहण्णगा णीललेस्सट्ठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा कण्हलेस्साठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा तेउलेस्सट्ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा पम्हलेस्सट्ठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा सुक्कलेस्साठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा; दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेस्सट्ठाणा दव्वट्ठयाए, जहण्णगा णीललेस्सट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हलेस्सट्ठाणा तेउलेस्सट्ठाणा पम्हलेस्सट्ठाणा, जहण्णगा सुक्कलेस्सट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णएहिंतो सुक्कलेस्सट्ठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए जहण्णगा काउलेस्सट्ठाणा पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, जहण्णगा णीललेस्सट्ठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा । एवं जाव सुक्कलेस्सट्ठाणा ।।

१४५. एतेसि णं भंते ! कण्हलेस्सट्ठाणाणं जाव सुक्कलेस्सट्ठाणाण य उक्कोसगाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा उक्कोसगा काउलेस्सट्ठाणा दव्वट्ठयाए, उक्कोसगा णीललेस्सट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा । एवं जहेव जहण्णगा तहेव उक्कोसगा वि, णवरं —उक्कोस त्ति अभिलावो ।।

१४६. एतेसि णं भंते ! कण्हलेस्सट्ठाणाणं जाव सुक्कलेस्सट्ठाणाण य जहण्णुक्कोस-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेस्सट्ठाणा दव्वट्ठयाए, जहण्णया णीललेस्सट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हलेस्सट्ठाणा तेउलेस्सट्ठाणा पम्हलेस्सट्ठाणा, जहण्णगा सुक्कलेसट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णएहिंतो सुक्कलेस्सट्ठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए उक्कोसा काउलेस्सट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसा णीललेसट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हलेसट्ठाणा तेउलेसट्ठाणा, पम्हलेसट्ठाणा, उक्कोसा सुक्कलेस्सट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ; पदेसट्ठयाए — सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेस्सट्ठाणा पएसट्ठाए, जहण्णगा णीललेसट्ठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं जहेव दव्वट्ठयाए तहेव पएसट्ठयाए वि भाणियव्वं, णवरं—पएसट्ठयाए त्ति अभिलावविसेसो; दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेस्सट्ठाणा दव्वट्ठयाए, जहण्णगा णीललेसट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हलेसट्ठाणा तेउलेसट्ठाणा पम्हलेसट्ठाणा, जहण्णया सुक्कलेसट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णएहिंतो सुक्कलेसट्ठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए उक्कोसा काउलेसट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसा णीललेसट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हलेसट्ठाणा तेउलेसट्ठाणा पम्हलेसट्ठाणा, उक्कोसगा सुक्कलेसट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसएहिंतो सुक्कलेसट्ठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए जहण्णगा काउलेसट्ठाणा पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, जहण्णगा णीललेसट्ठाणा पएसट्ठाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हलेसट्ठाणा तेउलेसट्ठाणा पम्हलेसट्ठाणा, जहण्णगा सुक्कलेसट्ठाणा असंखेज्जगुणा, जहण्णएहिंतो सुक्कलेसट्ठाणेहिंतो पदेसट्ठयाए उक्कोसा काउलेसट्ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसया णीललेसट्ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हलेसट्ठाणा तेउलेसट्ठाणा पम्हलेसट्ठाणा, उक्कोसया सुक्कलेसट्ठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ।।

पंचमो उद्देसओ

लेस्सा-पदं

१४७. कति णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ।।

परिणमणभाव-पदं

१४८. से णूणं भंते ! कण्हलेस्सा णीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ? इतो आढत्तं जहा[1] चउत्थुद्देसए तहा भाणियव्वं जाव वेरुलियमणिदिट्ठंतो त्ति ।।

१४९. से णूणं भंते ! कण्हलेस्सा णीललेस्सं पप्प णो तारूवत्ताए णो तावण्णत्ताए णो तागंधत्ताए णो तारसत्ताए णो ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्सा णीललेस्सं पप्प णो तारूवत्ताए णो तावण्णत्ताए णो तागंधत्ताए णो तारसत्ताए णो ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ।।

१५०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प णो तारूवत्ताए

---

१. प० १७।११५-११६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ? गोयमा ! आगारभावमाताए[1] वा से सिया पलिभाग-भावमाताए वा से सिया कण्हलेस्सा णं सा, णो खलु सा णीललेस्सा, तत्थ गता उस्सक्कति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—कण्हलेस्सा णीललेस्सं पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ॥

१५१. से णूणं भंते ! णीललेस्सा काउलेस्सं पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ? हंता गोयमा ! णीललेस्सा काउलेस्सं पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ॥

१५२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—णीललेस्सा काउलेस्सं पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ? गोयमा ! आगारभावमाताए वा से सिया पलिभागभाव-माताए वा सिया णीललेस्सा णं सा, णो खलु सा काउलेस्सा, तत्थ गता उस्सक्कति 'वा ओसक्कति वा'[2]. से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—णीललेस्सा काउलेस्सं पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति ॥

१५३. एवं काउलेस्सा तेउलेस्सं पप्प, तेउलेस्सा पम्हलेस्सं पप्प, पम्हलेस्सा सुक्क-लेस्सं पप्प ॥

१५४. से णूणं भंते ! सुक्कलेस्सा पम्हलेस्सं पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणिमति ? हंता गोयमा ! सुक्कलेस्सा [3]°पम्हलेस्सं पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमति° ॥

१५५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—सुक्कलेस्सा जाव णो परिणमति ? गोयमा ! आगारभावमाताए वा जाव सुक्कलेस्सा णं सा, णो खलु सा पम्हलेस्सा, तत्थ गता ओसक्कति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव णो परिणमति ॥

छट्ठो उद्देसओ

लेस्सा-पदं

१५६. कति णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥

मणुस्सेसु-लेस्सा-पदं

१५७. मणूसाणं भंते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥

१५८. मणूसीणं पुच्छा। गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥

१५९. कम्मभूमयमणूसाणं भंते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छलेस्साओ

---

१. °मायाए (क,ग)।

२. × (क); जम्हा कण्हलेसाए जहण्णियाए हेट्ठा अन्नलेसा नत्थि, तेण तत्थ गता चेव उस्सक्कति त्ति भणितं, मज्झमिल्लियाओ तत्थ गता ओसक्कति, कहं ? जेण णीलाए हिट्ठा कण्ह-लेसाए अत्थि तेण ओसक्कति, उवरिं पि काऊं अत्थि तेण उस्सक्कति, एवं सेसयाओवि, सुक्क-लेसाए उवरिं अण्णा लेसा णत्थि तेण ओस-क्कति चेव भाणियव्वं। (हावृ)।

३. सं० पा०—तं चेव।

पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा। एवं कम्मभूमयमणूसीण वि ॥

१६०. भरहेरवयमणूसाणं भंते! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ? गोयमा! छल्लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा। एवं मणुस्सीण वि ॥

१६१. पुव्वविदेह-अवरविदेहकम्मभूमयमणूसाणं भंते! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ? गोयमा! छ लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा। एवं मणूसीण वि ॥

१६२. अकम्मभूमयमणूसाणं पुच्छा। गोयमा! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा। एवं अकम्मभूमयमणूसीण वि। एवं अंतरदीवयमणूसाणं मणूसीण वि ॥

१६३. हेमवय[1]-एरण्णवयअकम्मभूमयमणूसाणं मणूसीण य कति लेस्साओ पण्णत्ताओ? गोयमा! चत्तारि, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ॥

१६४. हरिवास-रम्मयअकम्मभूमयमणुस्साणं मणूसीण य पुच्छा। गोयमा! चत्तारि, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा। देवकुरूत्तरकुरुअकम्मभूमयमणुस्साणं एवं चेव। एतेसिं चेव मणूसीणं एवं चेव ॥

१६५. धायइसंडपुरिमद्धे[2] एवं चेव, पच्छिमद्धे[3] वि। एवं पुक्खरद्धे[4] वि भाणियव्वं ॥

लेस्सं पडुच्च गब्भुप्पत्ति-पदं

१६६. कण्हलेस्से णं भंते! मणूसे कण्हलेस्सं गब्भं जणेज्जा[5]? हंता गोयमा! जणेज्जा ॥

१६७. कण्हलेस्से णं भंते! मणूसे णीललेस्सं गब्भं जणेज्जा? हंता गोयमा! जणेज्जा। एवं काउलेस्सं तेउलेस्सं पम्हलेस्सं सुक्कलेस्सं छप्पि आलावगा भाणियव्वा ॥

१६८. एवं णीललेसेणं काउलेसेणं तेउलेसेण वि पम्हलेसेण वि सुक्कलेसेण वि। एवं एते छत्तीसं आलावगा ॥

१६९. कण्हलेस्सा णं भंते! इत्थिया कण्हलेस्सं गब्भं जणेज्जा? हंता गोयमा! जणेज्जा। एवं एते वि छत्तीसं आलावगा ॥

१७०. कण्हलेसे णं भंते! मणूसे कण्हलेसाए इत्थियाए कण्हलेस्सं गब्भं जणेज्जा। हंता गोयमा! जणेज्जा। एवं एते वि छत्तीसं आलावगा ॥

१७१ कम्मभूमयकण्हलेस्से णं भंते! मणुस्से कण्हलेस्साए इत्थियाए कण्हलेस्सं गब्भं जणेज्जा? हंता गोयमा! जणेज्जा। एवं एते वि छत्तीसं आलावगा ॥

१७२. अकम्मभूमयकण्हलेसे णं भंते! मणूसे अकम्मभूमयकण्हलेस्साए इत्थियाए अकम्मभूमयकण्हलेस्सं गब्भं जणेज्जा? हंता गोयमा! जणेज्जा, णवरं—चउसु लेसासु सोलस आलावगा। एवं अंतरदीवगा वि ॥

---

१. एवं हेमवय (ख,ग)।

२. °पुरत्थिमद्धे (क)।

३. पच्चत्थिमद्धे (ग)।

४. पुक्खरदीवे (क,ग,घ); पुक्खरवरदीवे (ख)।

५. जाणेज्जा (ख,ग) सर्वत्र)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठारसमं कायट्ठिइपयं

गाहा

१ जीव २,३ गतिंदिय[1] ४ काए, ५ जोगे[2] ६ वेदे[3] कसाय ८ लेस्सा य ।
९ सम्मत्त १० णाण ११ दंसण १२ संजय १३ उवओग आहारे ।।१।।
१५ भासग १६ परित्त १७ पज्जत्त, १८ सुहुम १९ सण्णो २०,२१ भवत्थि २२ चरिमे य ।
एतेसिं तु पदाणं कायठिई होति णायव्वा ।।२।।

जीव-पदं

१. जीवे णं भंते ! जीवे त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सव्वद्धं ।।

गइ-पदं

२. णेरइए णं भंते ! नेरइए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।।

३. तिरिक्खजोणिए णं भंते ! तिरिक्खजोणिए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालतो, खेत्तओ अणंता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पोग्गलपरियट्टा आवलियाए[4] असंखेज्जतिभागो ।।

४. तिरिक्खजोणिणी णं भंते ! तिरिक्खजोणिणीति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तअब्भइयाइं[5] । एवं मणूसे वि । मणूसी वि एवं चेव ।।

५. देवे णं भंते ! देवे त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहेव णेरइए ।।

६. देवी णं भंते ! देवी ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं ।।

७. सिद्धे णं भंते ! सिद्धे ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ।।

---

१. गइ इंदिय (क,ख,ग) ।
२. जोए (ख,ग) ।
३. वेए (क,ग); वेते (ख,घ) ।
४. आउलिए (क) ।
५. °पुहुत्त° (क,ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. णेरइयअपज्जत्तए णं भंते ! णेरइयअपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । एवं जाव देवी अपज्जत्तिया ।।

९. णेरइयपज्जत्तए णं भंते ! णेरइयपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

१० तिरिक्खजोणियपज्जत्तए णं भंते ! तिरिक्खजोणियपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। एवं तिरिक्खजोणिणिपज्जत्तिया वि । मणूसे[1] मणूसी वि एवं चेव ।।

११. देवपज्जत्तए जहा णेरइयपज्जत्तए ।।

१२. देविपज्जत्तिया णं भंते ! देविपज्जत्तिय[2] त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ।।

इंदिय-पदं

१३. सइंदिए णं भंते ! सइंदिए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सइंदिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणाईए वा अपज्जवसिए, अणाईए वा सपज्जवसिए ।।

१४. एगिंदिए णं भंते ! एगिंदिए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं वणप्फइकालो[3] ।।

१५. बेइंदिए णं भंते ! बेइंदिए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । एवं तेइंदिय-चउरिंदिए वि ।।

१६. पंचेंदिए णं भंते ! पंचेंदिए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं ।।

१७. अणिंदिए णं [4]°भंते ! अणिंदिए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ।।

१८. सइंदियअपज्जत्तए णं भंते ! [5]°सइंदियअपज्जत्तए त्ति कालतो केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । एवं जाव पंचेंदियअपज्जत्तए ।।

१९. सइंदियपज्जत्तए णं भंते ! सइंदियपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं[6] सातिरेगं ।।

२०. एगिंदियपज्जत्तए णं भंते ! [7]°एगिंदियपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं ।।

२१. बेइंदियपज्जत्तए णं भंते ! बेइंदियपज्जत्तए त्ति [8]°कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वासाइं ।।

२२. तेइंदियपज्जत्तए णं भंते ! तेइंदियपज्जत्तए त्ति [9]°कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं राँतिदियाइं ।।

---

१. एवं मणूसे वि (ग) ।
२. °पज्जत्तिए (क,ग,घ) ।
३. वणस्सइ° (ख,ग) ।
४,५. सं० पा०—पुच्छा ।
६. °पुहुत्तं (क,ग,घ) ।
७,८,९. सं० पा०—पुच्छा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. चउरिंदियपज्जत्तए णं भंते ! [1]•चउरिंदियपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जा मासा ।।

२४. पंचेंदियपज्जत्तए णं भंते ! पंचेंदियपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहत्तं[2] ।।

काय-पदं

२५. सकाइए णं भंते ! सकाइए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सकाइए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए अणादीए वा सपज्जवसिए ।।

२६. पुढविक्काइए णं भंते ! [3]•पुढविक्काइए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा । एवं आउ-तेउ-वाउक्काइया वि ।।

२७. वणस्सइकाइया णं [4]•भंते ! वणस्सइकाइए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो ।।

२८. तसकाइए णं भंते ! तसकाइए त्ति [5]•कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं ।।

२९ अकाइए णं भंते ! [6]•अकाइए त्ति कालओ केवचिरं होइ !° गोयमा ! अकाइए सादीए अपज्जवसिए ।।

३०. सकाइयअपज्जत्तए णं [7]•भंते ! सकाइयअपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । एवं जाव तसकाइयअपज्जत्तए ।।

३१. सकाइयपज्जत्तए णं [8]•भंते ! सकाइयपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहत्तं सातिरेगं ।।

३२. पुढविक्काइयपज्जत्तए णं [9]•भंते ! पुढविक्काइयपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ; जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं । एवं आऊ वि ।।

३३. तेउक्काइयपज्जत्तए णं [10]•भंते ! तेउक्काइयपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं राइंदियाइं ।।

३४. वाउक्काइयपज्जत्तए णं [11]•भंते ! वाउक्काइयपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं ।।

३५. वणस्सइकाइयपज्जत्तए णं [12]•भंते ! वणस्सइकाइयपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं ।।

३६. तसकाइयपज्जत्तए णं [13]•भंते ! तसकाइयपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं ।।

---

१. सं०पा०—पुच्छा ।
२. °पुहुत्तं (क,ग,घ) ।
३-१३. सं० पा०—पुच्छा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७. सुहुमे णं भंते ! सुहुमे त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा ।।

३८. सुहुमपुढविक्काइए सुहुमआउक्काइए सुहुमतेउक्काइए सुहुमवाउक्काइए सुहुमवणप्फइक्काइए सुहुमणिगोदे वि जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा ।।

३९ सुहुमअपज्जत्तए णं भंते ! सुहुमअपज्जत्तए[1] त्ति [2]°कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

४० पुढविक्काइय-आउक्काइय-तेउक्काइय-वाउक्काइय-वणस्सइकाइयाण य एवं चेव । पज्जत्तयाण वि एवं चेव ।।

४१. बादरे णं भंते ! बादरे त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालतो, खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं ।।

४२. बादरपुढविक्काइए णं भंते ! [3]°बादरपुढविक्काइए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ । एवं बादरआउक्काइए वि जाव बादरवाउक्काइए वि ।।

४३. बादरवणस्सइकाइए णं भंते ! [4]°बादरवणस्सइकाइए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं[5]—°असंखेज्जाओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालतो°, खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं ।।

४४. पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइए णं भंते ! [6]°पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ ।।

४५. णिगोए णं भंते ! णिगोए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अड्ढाइज्जा पोग्गलपरियट्टा ।।

४६. बादरनिगोदे णं भंते ! बादर [7]°णिगोदे त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ ।।

४७. बादरतसकाइए णं भंते ! बादरतसकाइए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं ।।

४८. एतेसिं चेव अपज्जत्तगा सव्वे वि जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

४९. बादरपज्जत्तए णं भंते ! बादरपज्जत्तए [8]°त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहत्तं सातिरेगं ।।

---

१. सुहुमे णं भंते ! अपज्जत्तए (क,ग,घ); सुहुमे णं भंते ! अपज्जत्तपज्ज (ख) ।
२,३,४. सं० पा०—पुच्छा ।
५. सं० पा०—कालं जाव खेत्तओ ।
६,७,८. सं० पा०—पुच्छा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०. बादरपुढविक्काइयपज्जत्तए णं भंते ! बादर [1]°पुढविक्काइयपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं। एवं आउक्काइए वि ॥

५१. तेउक्काइयपज्जत्तए णं भंते ! तेउक्काइयपज्जत्तए [2]°त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं राइंदियाइं ॥

५२. वाउक्काइए वणस्सइकाइए पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइए य पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं ॥

५३. णिगोयपज्जत्तए बादरणिगोयपज्जत्तए य पुच्छा। गोयमा ! दोण्णि वि जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

५४. बादरतसकाइयपज्जत्तए णं भंते ! बादरतसकाइयपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं ॥

जोग-पदं

५५. सजोगी णं भंते ! सजोगि त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सजोगी दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए ॥

५६. मणजोगी णं भंते ! मणजोगि त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। एवं वइजोगी[3] वि ॥

५७. कायजोगी णं भंते ! [4]°कायजोगी त्ति कालओ केवचिरं होई ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥

५८. अजोगी णं भंते ! अजोगी ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥

वेद-पदं

५९. सवेदए णं भंते सवेदए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सवेदए तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

६०. इत्थिवेदे णं भंते ! इत्थवेदे त्ति कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दसुत्तरं पलिओवमसतं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियं १ एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अट्ठारस पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं २ एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चोद्दस पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं ३ एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं पलिओवमसयं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियं ४ एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं पलिओवमपुहत्तं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियं ५ ॥

१,२. सं०पा०—पुच्छा।
३. वयजोगी (ख,घ,पु)।
४. सं० पा०—पुच्छा।

६१. पुरिसवेदे णं भंते ! पुरिसवेदे त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं ॥

६२. नपुंसगवेदे णं भंते ! णपुंसगवेदे त्ति [1]•कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥

६३. अवेदए णं भंते ! अवेदए त्ति [2]•कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! अवेदए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

कसाय-पदं

६४. सकसाई णं भंते ! 'सकसाई ति'[3] कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सकसाई[4] तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए[5]। •तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणी-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ° अवड्ढं पोग्गल-परियट्टं देसूणं ॥

६५. कोहकसाई णं भंते ! [6]•कोहकसाई ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। एवं जाव मायकसाई[7] ॥

६६. लोभकसाई णं भंते ! लोभ [8]•कसाई ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

६७. अकसाई णं भंते ! अकसाई ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! अकसाई दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

लेस्सा-पदं

६८. सलेसे णं भंते ! सलेसे त्ति [9]•कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! सलेसे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए ॥

६९. कण्हलेसे[10] णं भंते ! कण्हलेसे त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं ॥

७०. णीललेसे णं भंते ! णीललेसे त्ति [11]•कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं पलिओवमासंखेज्जइभागमब्भहियाइं[12] ॥

७१. काउलेस्से णं [13]•भंते ! काउलेस्सेत्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं पलिओवमासंखेज्जइभागमब्भहियाइं ॥

१,२. सं० पा०—पुच्छा।
३. सकसादित्ति (क,ख)।
४. सकसादी (क); सकसाती (ध)।
५. सं० पा०—सपज्जवसिए जाव अवड्ढं।
६. सं० पा०—पुच्छा।
७. माणमाय° (क,ग)।
८,९. सं० पा०—पुच्छा।
१०. कण्हलेस्सा (ग)।
११. सं० पा०—पुच्छा।
१२. पलिओवमाइं असंखे° (क)।
१३. सं० पा०—पुच्छा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७२. तेउलेस्से णं [1]•भंते ! तेउलेस्से त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोमाइं पलिओवमासंखेज्जइभागमब्भहियाइं ॥

७३. पम्हलेस्से णं [2]•भंते ! पम्हलेस्से त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं ॥

७४. सुक्कलेस्से णं भंते ! [3]•सुक्कलेस्से त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं ॥

७५. अलेस्से णं [4]•भंते अलेस्से त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥

सम्मत्त-पदं

७६. सम्मद्दिट्ठी णं भंते ! सम्मद्दिट्ठी त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए । तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं सातिरेगाइं ॥

७७. मिच्छद्दिट्ठी णं भंते ! [5]•मिच्छद्दिट्ठी त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! मिच्छद्दिट्ठी तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए । तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

७८. सम्मामिच्छद्दिट्ठी णं [6]•भंते ! सम्मामिच्छद्दिट्ठी ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

णाण-पदं

७९. णाणी णं भंते ! णाणीति कालओ केवचिरं होई ? गोयमा ! णाणी दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए । तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं साइरेगाइं ॥

८०. आभिणिबोहियणाणी णं भंते ! [7]•आभिणिबोहियणाणी ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा एवं चेव । एवं सुयणाणी वि । ओहिणाणी वि एवं चेव । णवरं—जहण्णेणं एक्कं समयं ॥

८१. मणपज्जवणाणी णं भंते ! मणपज्जवणाणी ति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणं पुव्वकोडिं ॥

८२. केवलणाणी णं [8]•भंते ! केवलणाणी ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥

८३. अण्णाणी-मइअण्णाणी-सुयअण्णाणी णं पुच्छा । गोयमा ! अण्णाणी मतिअण्णाणी सुयअण्णाणी तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए । तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं,

---

१-८. सं० पा०—पुच्छा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

८४. विभंगणाणी णं भंते ! [1]•विभंगणाणी त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ॥

दंसण-पदं

८५. चक्खुदंसणी णं भंते ! [2]•चक्खुदंसणी त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं ॥

८६. अचक्खुदंसणी णं भंते ! अचक्खुदंसणी त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! अचक्खुदंसणी दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए ॥

८७. ओहिदंसणी णं [3]•भंते ! ओहिदंसणी त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो छावट्ठीओ सागरोवमाइं[4] सातिरेगाओ ॥

८८. केवलदंसणी णं [5]•भंते ! केवलदंसणी त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥

संजय-पदं

८९. संजए णं भंते ! संजए त्ति [6]• कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणं पुव्वकोडिं ॥

९०. असंजए णं भंते ! असंजए त्ति [7]•कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! असंजए तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, अणादिए वा सपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

९१. संजयासंजए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणं पुव्वकोडिं ॥

९२. णोसंजए-णोअसंजए-णोसंजयासंजए णं पुच्छा। गोयमा !सादीए अपज्जवसिए ॥

उवओग-पदं

९३. सागारोवउत्ते णं भंते ! [8]•सागारोवउत्ते त्ति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। अणागारोवउत्ते वि एवं चेव ॥

आहार-पदं

९४. आहारए णं भंते ! [9]•आहारए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! आहारए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—छउमत्थआहारए य केवलिआहारए य ॥

९५. छउमत्थाहारए णं भंते ! छउमत्थाहारए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डागभवग्गहणं दुसमऊणं[10], उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ

१,२,३. सं० पा०—पुच्छा।
४. सागरोवमाणं (ख,ग,पु)।
५-९. सं० पा०—पुच्छा।
१०. दुसमयऊणं (ख,ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालतो, खेत्ततो अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ॥

९६. केवलिआहारए णं भंते ! केवलिआहारए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणं पुव्वकोडिं ॥

९७. अणाहारए णं भंते ! अणाहारए त्ति [1]° कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! अणाहारए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—छउमत्थअणाहारए य, केवलिअणाहारए य ॥

९८. छउमत्थअणाहारए णं भंते ! [2]°छउमत्थअणाहारए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो समया ॥

९९. केवलिअणाहारए णं भंते ! केवलिअणाहारए त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! केवलिअणाहारए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सिद्धकेवलिअणाहारए य, भवत्थ-केवलिअणाहारए य ॥

१००. सिद्धकेवलिअणाहारए णं भंते ! [3]°सिद्धकेवलिअणाहारए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥

१०१. भवत्थकेवलिअणाहारए णं भंते ! [4]°भवत्थकेवलिअणाहारए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! भवत्थकेवलिअणाहारए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सजोगिभवत्थ-केवलिअणाहारए य, अजोगिभवत्थकेवलिअणाहारए य ॥

१०२. सजोगिभवत्थकेवलिअणाहारए णं भंते ! [5]°सजोगिभवत्थकेवलिअणाहारए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तिण्णि समया ॥

१०३. अजोगिभवत्थकेवलिअणाहारए णं [6]°भंते ! अजोगिभवत्थकेवलिअणाहारए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

भासग-पदं

१०४. भासए णं [7]°भंते ! भासए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

१०५. अभासए णं [8]°भंते ! अभासए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! अभासए तिविहे[9] पण्णत्ते, तं जहा—अणाईए वा अपज्जवसिए, अणाईए वा सपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जेसे सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणप्फइकालो ॥

परित्त-पदं

१०६. परित्ते णं भंते ! [10]°परित्ते त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! परित्ते दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—कायपरित्ते य, संसारपरित्ते य ॥

१०७. कायपरित्ते णं [11]°भंते ! कायपरित्ते त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुढविकालो—असंखेज्जाओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ ॥

१०८. संसारपरित्ते णं [12]°भंते ! संसारपरित्ते त्ति कालओ केवचिरं होइ ?°

१-८. सं० पा०—पुच्छा ,

९. जीवाजीवाभिगमे (९।५८) अभाषकस्य द्विविधत्वमेव स्वीकृतमस्ति—अभासए दुविहे पण्णत्ते—साइए वा अपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए।

१०-१२. सं० पा०—पुच्छा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं[1]—•अणंताओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ° अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ।।

१०९. अपरित्ते णं [2]•भंते ! अपरित्ते त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! अपरित्ते दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—कायअपरित्ते य, संसारअपरित्ते य ।।

११०. कायअपरित्ते णं [3]•भंते ! कायअपरित्ते त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणप्फइकालो ।।

१११. संसारअपरित्ते णं [4]•भंते ! संसारअपरित्तेत्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! संसारअपरित्ते दुविहे पण्णत्ते तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए ।।

११२. णोपरित्ते-णोअपरित्ते णं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ।।

पज्जत्त-पदं

११३. पज्जत्तए णं [5]•भंते ! पज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं ।।

११४. अपज्जत्तए णं [6]•भंते ! अपज्जत्तए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

११५. णोपज्जत्तए-णोअपज्जत्तए णं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ।।

सुहुम-पदं

११६. सुहुमे णं भंते ! सुहुमे त्ति [7]•कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुढविकालो ।।

११७. बादरे णं [8]•भंते ! बादरे त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं[9]—•असंखेज्जाओ उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ कालओ°, खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।।

११८. णोसुहुम-णोबादरे णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ।।

सण्णि-पदं

११९. सण्णी णं भंते ! [10]•सण्णी ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं ।।

१२०. असण्णी णं भंते ! [11]•असण्णी ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणप्फइकालो ।।

१२१. णोसण्णी—णोअसण्णी णं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ।।

भवसिद्धिय-पदं

१२२. भवसिद्धिए णं भंते ! [12]•भवसिद्धिए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! अणादीए सपज्जवसिए ।।

१२३. अभवसिद्धिए णं भंते ! [13]•अभवसिद्धिए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?°

१. सं० पा०—कालं जाव अवड्ढं ।
२-८. सं० पा०—पुच्छा ।
९. सं० पा०—कालं जाव खेत्तओ ।
१०-१३. सं० पा०—पुच्छा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! अणादीए अपज्जवसिए ।।

१२४. णोभवसिद्धिय-णोअभवसिद्धिए णं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ।।

अत्थिकाय-पदं

१२५. धम्मत्थिकाए णं [1]•भंते ! धम्मत्थिकाए त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! सव्वद्धं । एवं जाव अद्धासमए ।।

चरिम-पदं

१२६. चरिमे णं [2]•भंते ! चरिमे त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! अणादीए सपज्जवसिए ।।

१२७. अचरिमे णं [3]•भंते ! अचरिमे त्ति कालओ केवचिरं होइ ?° गोयमा ! अचरिमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा अपज्जवसिए ।।

१-३. सं० पा०—पुच्छा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगूणवीसइमं सम्मत्तपयं

१. जीवा णं भंते ! किं सम्मद्दिट्ठी मिच्छद्दिट्ठी सम्मामिच्छद्दिट्ठी ? गोयमा ! जीवा सम्मद्दिट्ठी वि मिच्छद्दिट्ठी वि सम्मामिच्छद्दिट्ठी वि । एवं णेरइया वि । असुरकुमारा वि एवं चेव जाव थणियकुमारा ॥

२. पुढविक्काइयाणं पुच्छा । गोयमा ! पुढविक्काइया णो सम्मद्दिट्ठी, मिच्छद्दिट्ठी, णो सम्मामिच्छद्दिट्ठी । एवं जाव वणप्फइकाइया ॥

३. बेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! बेइंदिया सम्मद्दिट्ठी वि मिच्छद्दिट्ठी वि, णो सम्मामिच्छद्दिट्ठी । एवं जाव चउरेंदिया ॥

४. पंचेंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्सा वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया य सम्मद्दिट्ठी वि मिच्छद्दिट्ठी वि सम्मामिच्छद्दिट्ठी वि ॥

५. सिद्धाणं पुच्छा । गोयमा ! सिद्धा णं सम्मद्दिट्ठी, णो मिच्छद्दिट्ठी णो सम्मामिच्छद्दिट्ठी ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीसइमं अंतकिरियापयं

गाहा—

१ णेरइय अंतकिरिया, २ अणंतरं ३ एगसमय ४ उव्वट्टा ।
५ तित्थगर ६ चक्कि ७ बल[1], ८ वासुदेव ९ मंडलिय १० रयणा य ।।१।।

अंतकिरिया-पदं

१. जीवे णं भंते ! अंतकिरियं करेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए णो करेज्जा । एवं णेरइए जाव वेमाणिए ।।

२. णेरइए णं भंते ! णेरइएसु अंतकिरियं करेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

३. णेरइए णं भंते ! असुरकुमारेसु अंतकिरियं करेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

४. एवं जाव वेमाणिएसु, णवरं—मणूसेसु अंतकिरियं करेज्ज त्ति पुच्छा । गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए णो करेज्जा ।।

५. एवं असुरकुमारे जाव वेमाणिए । एवमेते[2] चउवीसं चउवीसदंडगा ।।

अणंतर-पदं

६. णेरइया णं भंते ! किं अणंतरागता अंतकिरियं करेंति ? परंपरागया अंतकिरियं करेंति ? गोयमा ! अणंतरागया वि अंतकिरियं करेंति, परंपरागता वि अंतकिरियं करेंति। एवं रयणप्पभापुढविणेरइया वि जाव पंकप्पभापुढविणेरइया ।।

७. धूमप्पभापुढविणेरइया णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! णो अणंतरागया अंतकिरियं करेंति, परंपरागया अंतकिरियं करेंति । एवं जाव अहेसत्तमापुढविणेरइया ।।

८. असुरकुमारा जाव थणियकुमारा पुढवि-आउ-वणस्सइकाइया य अणंतरागया वि अंतकिरियं करेंति, परंपरागया वि अंतकिरियं करेंति । तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया णो अणंतरागया अंतकिरियं पकरेंति, परंपरागया अंतकिरियं पकरेंति । सेसा अणंतरागया वि अंतकिरियं पकरेंति, परंपरागया वि अंतकिरियं पकरेंति ।।

एगसमय-पदं

९. अणंतरागया णं भंते ! णेरइया एगसमएणं केवतिया अंतकिरियं पकरेंति ?

---

१. बलदेव (क,ख) ।

२. एवमेव (क,ग,घ); एवामेव (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं दस। रयणप्पभापुढविणेरइया वि एवं चेव जाव वालुयप्पभापुढविणेरइया ।।

१०. अणंतरागया णं भंते ! पंकप्पभापुढविणेरइया एगसमएणं केवतिया अंतकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं चत्तारि ।।

११. अणंतरागया णं भंते ! असुरकुमारा एगसमएणं केवइया अंतकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं दस ।।

१२. अणंतरागयाओ णं भंते ! असुरकुमारीओ एगसमएणं केवतियाओ अंतकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को [क्का ?] वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं पंच। एवं जहा असुरकुमारा सदेवीया तहा जाव थणियकुमारा ।।

१३. अणंतरागया णं भंते ! पुढविक्काइया एगसमएणं केवतिया अंतकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं चत्तारि। एवं आउक्काइया वि चत्तारि। वणप्फइकाइया छ। पंचेंदियतिरिक्खजोणिया दस। तिरिक्खजोणिणीओ दस। मणूसा दस। मणूसीओ वीसं। वाणमंतरा दस। वाणमंतरीओ पंच। जोइसिया दस। जोइसिणीओ वीसं। वेमाणिया अट्ठसतं। वेमाणिणीओ वीसं ।।

उव्वट्ट-पदं

१४. णेरइए णं भंते ! णेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता णेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१५. णेरइए णं भंते ! णेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता असुरकुमारेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१६. एवं निरंतरं जाव चउरिंदिएसु पुच्छा। गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१७. णेरइए णं भंते ! णेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा।

जे णं भंते ! णेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जेज्जा से णं केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा।

जे णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए से णं केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए बुज्झेज्जा, अत्थेगइए णो बुज्झेज्जा।

जे णं भंते ! केवलं बोहिं बुज्झेज्जा से णं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ? गोयमा ! सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा।

जे णं भंते ! सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा से णं आभिणिबोहियणाण-सुयणाणाइं उप्पाडेज्जा ? हंता गोयमा ! उप्पाडेज्जा।

जे णं भंते ! आभिणिबोहियणाण-सुयणाणाइं उप्पाडेज्जा से णं संचाएज्जा सीलं वा वयं वा गुणं वा वेरमणं वा पच्चक्खाणं वा पोसहोववासं वा पडिवज्जित्तए ? गोयमा ! अत्थेगइए संचाएज्जा, अत्थेगइए णो संचाएज्जा।

जे णं भंते ! संचाएज्जा सीलं वा जाव पोसहोववासं वा पडिवज्जित्तए से णं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए णो उप्पाडेज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे णं भंते ओहिणाणं उप्पाडेज्जा से णं संचाएज्जा मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१८. णेरइए णं भंते ! णेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मणूसेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा ।

जे णं भंते ! उववज्जेज्जा से णं केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! [1]°अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा ।

जे णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए से णं केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए बुज्झेज्जा, अत्थेगइए नो बुज्झेज्जा ।

जे णं भंते ! केवलं बोहिं बुज्झेज्जा से णं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ? गोयमा ! सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ।

जे णं भंते ! सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा से णं आभिणिबोहियणाण-सुयणाणाइं उप्पाडेज्जा ? हंता ! गोयमा ! उप्पाडेज्जा ।

जे णं भंते ! आभिणिबोहियणाण-सुयणाणाइं उप्पाडेज्जा से णं संचाएज्जा सीलं वा वयं वा गुणं वा वेरमणं वा पच्चक्खाणं वा पोसहोववासं वा पडिवज्जित्तए ? गोयमा ! अत्थेगइए संचाएज्जा, अत्थेगइए णो संचाएज्जा ।

जे णं भंते ! संचाएज्जा सीलं वा जाव पोसहोववासं वा पडिवज्जित्तए से णं ओहिणाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए णो उप्पाडेज्जा ।°

जे णं भंते ! ओहिणाणं उप्पाडेज्जा से णं संचाएज्जा मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? गोयमा ! अत्थेगइए संचाएज्जा, अत्थेगइए णो संचाएज्जा ।

जे णं भंते ! संचाएज्जा मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए से णं मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए णो उप्पाडेज्जा ।

जे णं भंते ! मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा से णं केवलणाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए णो उप्पाडेज्जा ।

जे णं भंते ! केवलणाणं उप्पाडेज्जा से णं सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा मुच्चेज्जा सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ? गोयमा ! सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ।।

१९. णेरइए णं भंते ! णेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

२०. असुरकुमारे णं भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता णेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

२१. असुरकुमारे णं भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता असुरकुमारेसु उववज्जिज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । एवं जाव थणियकुमारेसु ।।

२२. असुरकुमारे णं भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता पुढविक्काइएसु उववज्जेज्जा ? हंता गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ।

जे णं भंते ! उववज्जेज्जा से णं केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! नो

---

१. सं० पा०—जहा पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु जाव जे णं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इणट्ठे समट्ठे । एवं आउ-वणप्फईसु वि ।।

२३. असुरकुमारे णं भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । अवसेसेसु पंचसु पंचेंदियतिरिक्खजोणियादिसु असुरकुमारे जहा[1] णेरइए । एवं जाव थणियकुमारे ।।

२४. पुढविकाइए णं भंते ! पुढविक्काइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता णेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । एवं असुरकुमारेसु वि जाव थणियकुमारेसु वि ।।

२५. पुढविक्काइए णं भंते ! पुढविक्काइएहिंतो अणंतरं उवट्टित्ता पुढविक्काइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा ।
जे णं भंते ! उववज्जेज्जा से णं केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । एवं आउक्काइयादीसु णिरंतरं भाणियव्वं जाव चउरिंदिएसु । पंचेंदियतिरिक्खजोणिय-मणूसेसु जहा[2] णेरइए । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु पडिसेहो ।।

२६. एवं जहा पुढविक्काइओ भणिओ तहेव आउक्काइओ वि वणप्फइकाइओ वि भाणियव्वो ।।

२७. तेउक्काइए णं भंते ! तेउक्काइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता णेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । एवं असुरकुमारेसु वि जाव थणियकुमारेसु वि ।

२८. पुढविक्काइय-आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिएसु अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा ।
जे णं भंते ! उववज्जेज्जा से णं केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणताए[3] ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

२९. तेउक्काइए णं भंते ! तेउक्काइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा ।
जे णं भंते ! उववज्जेज्जा से णं केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा ।
जे णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए से णं केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

३०. मणूस-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु पुच्छा । गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

३१. एवं जहेव तेउक्काइए णिरंतरं एवं वाउक्काइए वि ।।

३२. बेइंदिए णं भंते ! बेइंदिएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता णेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहा[4] पुढविक्काइए, णवरं—मणूसेसु जाव मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा ।।

३३. एवं तेइंदिय-चउरिंदिया वि जाव मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा ।
जे णं भंते ! मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा से णं केवलणाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

---

१. प० २०।१७-१९ ।
२. प० २०।१७,१८ ।
३. सवणयाते (ख) ।
४. प० २०।२४,२५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४. पंचेंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो अणंतरं उवट्टित्ता णेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा।
जे णं भंते ! उववज्जेज्जा से णं केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा।
जे णं केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए से णं केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए बुज्झेज्जा, अत्थेगइए नो बुज्झेज्जा।
जे णं भंते ! केवलं बोहिं बुज्झेज्जा से णं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ? हंता गोयमा[1] ! °सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा° रोएज्जा।
जे णं भंते ! सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा से णं आभिणिबोहियणाण-सुयणाण-ओहिणाणाणि उप्पाडेज्जा ? हंता गोयमा ! उप्पाडेज्जा।
जे णं भंते ! आभिणिबोहियणाण-सुयणाण-ओहिणाणाइं उप्पाडेज्जा से णं संचाएज्जा सीलं वा[2] °वयं वा गुणं वा वेरमणं वा पच्चक्खाणं वा पोसहोववासं वा° पडिवज्जित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

३५. एवं असुरकुमारेसु वि जाव थणियकुमारेसु। एगिंदिय-विगलिंदिएसु जहा[3] पुढविक्काइए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु मणूसेसु य जहा[4] णेरइए। वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिएसु जहा[5] णेरइएसु उववज्जेज्जत्ति पुच्छाए भणियाए ॥

३६. एवं मणूसे वि ॥

३७. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिए जहा[6] असुरकुमारे ॥

तित्थगर-पदं

३८. रयणप्पभापुढविणेरइए णं भंते ! रयणप्पभापुढविणेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता तित्थगरत्तं लभेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा ॥

३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा ? गोयमा ! जस्स णं रयणप्पभापुढविणेरइयस्स तित्थगरणाम-गोयाइं कम्माइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं णिविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमण्णागयाइं उदिण्णाइं णो उवसंताइं भवंति से णं रयणप्पभापुढविणेरइए रयणप्पभापुढविणेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता तित्थगरत्तं लभेज्जा, जस्स णं रयणप्पभापुढविणेरइयस्स तित्थगरणाम-गोयाइं णो बद्धाइं जाव णो उदिण्णाइं उवसंताइं भवंति से णं रयणप्पभापुढविणेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता तित्थगरत्तं णो लभेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइए लभेज्जा अत्थेगइए णो लभेज्जा। एवं जाव वालुयप्पभापुढविणेरइएहिंतो तित्थगरत्तं लभेज्जा ॥

४०. पंकप्पभापुढविणेरइए णं भंते ! पंकप्पभापुढविणेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता तित्थगरत्तं लभेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। अंतकिरियं पुण करेज्जा ॥

---

१. सं० पा०—गोयमा जाव रोएज्जा।
२. सं० पा०—सीलं वा जाव पडिवज्जित्तए।
३. प० २०।२५।
४. प० २०।१७,१८।
५. प० २०।३४।
६. प० २०।२०-२३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१. धूमप्पभापुढविणेरइए णं पुच्छा। गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, विरतिं पुण लभेज्जा॥

४२. तमापुढविणेरइए णं पुच्छा। गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, विरयाविरतिं पुण लभेज्जा॥

४३. अहेसत्तमाए पुच्छा। गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, सम्मत्तं पुण लभेज्जा॥

४४. असुरकुमारे णं पुच्छा। गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, अंतकिरियं पुण करेज्जा। एवं निरंतरं जाव आउक्काइए॥

४५. तेउक्काइए णं भंते! तेउक्काइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता 'तित्थगरत्तं लभेज्जा'[1]? गोयमा! णो इणट्ठे[2] समट्ठे, केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए। एवं वाउक्काइए वि॥

४६. वणप्फइकाइए णं पुच्छा। गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, अंतकिरियं पुण करेज्जा॥

४७. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिए णं पुच्छा। गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, मणपज्जवणाणं पुण उप्पाडेज्जा॥

४८. पंचेंदियतिरिक्खजोणिय-मणूस-वाणमंतर-जोइसिए णं पुच्छा। गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, अंतकिरियं पुण करेज्जा॥

४९. सोहम्मगदेवे णं भंते! अणंतरं चयं चइत्ता तित्थगरत्तं लभेज्जा? गोयमा! अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा। एवं जहा[3] रयणप्पभापुढविणेरइए। एवं जाव सव्वट्ठसिद्धगदेवे॥

चक्कवट्टि-पदं

५०. रयणप्पभापुढविणेरइए णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता चक्कवट्टित्तं लभेज्जा? गोयमा! अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा॥

५१. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति? गोयमा! जहा[4] रयणप्पभापुढविणेरइयस्स तित्थगरत्ते॥

५२. सक्करप्पभापुढविणेरइए अणंतरं उव्वट्टित्ता चक्कवट्टित्तं लभेज्जा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे। एवं जाव अहेसत्तमापुढविणेरइए॥

५३. तिरिय-मणुएहिंतो पुच्छा। गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥

५४. भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएहिंतो पुच्छा। गोयमा! अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए नो लभेज्जा॥

बलदेव-पदं

५५. एवं बलदेवत्तं पि, णवरं—सक्करप्पभापुढविणेरइए वि लभेज्जा॥

---

१. उववज्जेज्जा (क,ख,ग,घ); अस्मिन् तीर्थकर-द्वारे 'तित्थगरत्तं लभेज्जा' इति प्रश्नसूचकः पाठः सर्वत्र साधारणोस्ति। पूर्वस्मिन् द्वारे 'उववज्जेज्जा' इति पदं साधरणमस्ति। केनापि कारणेन तदेवात्र अनुवृत्तमिति प्रतीयते।

२. इणमट्ठे (क)।

३. प० २०।३८,३९।

४. प० २०।३९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वासुदेव-पदं

५६. एवं वासुदेवत्तं दोहिंतो पुढवीहिंतो वेमाणिएहिंतो य अणुत्तरोववातियवज्जेहिंतो, सेसेसु णो इणट्ठे समट्ठे ।।

मंडलिय-पदं

५७. मंडलियत्तं अहेसत्तमा-तेउ-वाउवज्जेहिंतो ।।

रयण-पदं

५८. सेणावइरयणत्तं गाहावइरयणत्तं वड्ढइरयणत्तं पुरोहियरयणत्तं इत्थिरयणत्तं च एवं चेव, णवरं— अणुत्तरोववाइयवज्जेहिंतो ।।

५९. आसरयणत्तं हत्थिरयणत्तं च रयणप्पभाओ णिरंतरं जाव सहस्सारो अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा ।।

६०. चक्करयणत्तं 'छत्तरयणत्तं चम्मरयणत्तं'[1] दंडरयणत्तं असिरयणत्तं मणिरयणत्तं कागिणिरयणत्तं एतेसि णं असुरकुमारेहिंतो आरद्धं निरंतरं जाव ईसाणेहिंतो उववातो, सेसेहिंतो णो इणट्ठे समट्ठे ।।

देवउववाय-पदं

६१. अह भंते ! असंजयभवियदव्वदेवाणं अविराहियसंजमाणं विराहियसंजमाणं अविराहियसंजमासंजमाणं विराहियसंजमासंजमाणं असण्णीणं तावसाणं कंदप्पियाणं चरग-परिव्वायगाणं किब्बिसियाणं तेरिच्छियाणं[2] आजीवियाणं आभिओगियाणं सलिंगीणं दंसणवावण्णगाणं[3] देवलोगेसु उववज्जमाणाणं कस्स कहिं उववाओ पण्णत्तो ? गोयमा ! अस्संजयभवियदव्वदेवाणं जहण्णेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं उवरिमगेवेज्जगेसु । अविराहियसंजमाणं जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे[4] । विराहियसंजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे । अविराहियसंजमासंजमाणं जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे । विराहियसंजमासंजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं जोइसिएसु । असण्णीणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं वाणमंतरेसु[5] । तावसाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं जोइसिएसु । कंदप्पियाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे । चरग-परिव्वायगाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं बंभलोए

---

१. चम्मरयणत्तं छत्तरयणत्तं (क) ।

२. तेरच्छियाणं (ख) ।

३. दंसणवावण्णाणं (ख); दंसणवावण्णगाणं— एतेसि णं (भ० १।११३) ।

४. सव्वट्ठसिद्धे विमाणे (भ० १।११३) ।

५. अतोग्रे भगवत्यां (१।११३) रचनाभेदो दृश्यते—अवसेसा सव्वे जहण्णेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं वोच्छामि—तावसाणं जोतिसिएसु, कंदप्पियाणं सोहम्मे कप्पे, चरग—परिव्वातगाणं बंभलोए कप्पे, किब्बिसियाणं लंतगे कप्पे, तेरिच्छियाणं सहस्सारे कप्पे, आजीवियाणं अच्चुए कप्पे, अभिओगियाणं अच्चुए कप्पे, सलिंगीणं दंसणवावन्नगाणं उवरिमगेविज्जएसु । 'अवसेसा सव्वे जहण्णेणं भवणवासीसु' इति नियमानुसारेण किल्विषिकाणामपि जघन्येन भवनवासिषु उपपातो भवति, किन्तु प्रस्तुतसूत्रे 'किब्बिसियाणं जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे' इति पाठोऽस्ति तेनास्य कथं संगतिः स्यादिति चिन्त्यमस्ति । अथवा स्याद् वाचनाभेदः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कप्पे। किब्बिसियाणं जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं लंतए कप्पे। तेरिच्छियाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे। आजीवियाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे। एवं आभिओगाण वि। सलिंगीणं दंसणवावण्णगाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं उवरिमगेवेज्जएसु ॥

असण्णिआउय-पदं

६१. कतिविहे णं भंते! असण्णिआउए पण्णत्ते? गोयमा! चउव्विहे असण्णिआउए पण्णत्ते, तं जहा—णेरइयअसण्णिआउए जाव देवअसण्णिआउए ॥

६३. असण्णी णं भंते! जीवे किं णेरइयाउयं पकरेति जाव देवाउयं पकरेति? गोयमा! णेरइयाउयं पकरेति जाव देवाउयं पकरेति। णेरइयाउयं पकरेमाणे जहण्णेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेति। तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेति। एवं मणुयाउयं पि। देवाउयं जहा णेरइयाउयं ॥

६४. एयस्स णं भंते! णेरइयअसण्णिआउयस्स जाव देवअसण्णिआउयस्स य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवे देव-असण्णिआउए, मणुयअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए असंखेज्ज-गुणे, नेरइयअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगवीसइमं ओगाहणसंठाणपयं

गाहा—

१ विहि २ संठाण ३ पमाणं, ४ पोग्गलचिणणा ५ सरीरसंजोगो ।
६ दव्व-पएसप्पबहुं, ७ सरीरओगाहणप्पबहुं ॥१॥

सरीर-पदं

१. कति णं भंते ! सरीरया[1] पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए ॥

ओरालियसरीरे विहि-पदं

२. ओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियओरालियसरीरे जाव पंचेंदियओरालियसरीरे ॥

३. एगिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे जाव वणप्फइकाइयएगिंदियओरालिय-सरीरे ॥

४. पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे य बादरपुढविक्काइय-एगिंदियओरालियसरीरे य ॥

५. सुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पज्जत्तगसुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे य अपज्जत्तग-सुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे य । बादरपुढविक्काइया वि एवं चेव । एवं जाव वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरे[2] त्ति ॥

६. बेइंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पज्जत्तबेइंदियओरालियसरीरे य अपज्जत्तबेइंदियओरालियसरीरे य । एवं तेइंदिय-चउरिंदिया वि ॥

७. पंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—तिरिक्खपंचेंदियओरालियसरीरे य मणुस्सपंचेंदियओरालियसरीरे य ॥

८. तिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा !

---

१. सरीरा (ग) ।   २. °ओरालिय (क,ख,घ) ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—जलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य थलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य खहयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य ॥

९. जलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मुच्छिमजलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य गब्भवक्कंतियजलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य ॥

१०. सम्मुच्छिमजलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पज्जत्तगसम्मुच्छिमतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य अपज्जत्तगसम्मुच्छिमतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य । एवं गब्भवक्कंतिए वि ॥

११. थलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—चउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य परिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य ॥

१२. चउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मुच्छिमचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य ॥

१३. सम्मुच्छिमचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पज्जत्तगसम्मुच्छिमचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य अपज्जत्तगसम्मुच्छिमचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य । एवं गब्भवक्कंतिए वि ॥

१४. परिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य भुयपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य ॥

१५. उरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य ॥

१६. सम्मुच्छिमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अपज्जत्तसम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य पज्जत्तसम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे य । एवं गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पचउक्कओ भेदो । एवं भुयपरिसप्पा वि सम्मुच्छिम-गब्भवक्कंतिय-पज्जत्त-अपज्जत्ता ॥

१७. खहयरा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य ॥

१८. सम्मुच्छिमा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्ता य अपज्जत्ता य । गब्भवक्कंतिया वि पज्जत्ता य अपज्जत्ता य ॥

१९. मणूसपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मुच्छिममणूसपंचेंदियओरालियसरीरे य गब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदिय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओरालियसरीरे य[६]।।

२०. गब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पज्जत्तगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियओरालियसरीरे य अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियओरालियसरीरे य ।।

ओरालियसरीरे संठाण-पदं

२१. ओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते ।।

२२. एगिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! णाणासंठाण-संठिए पण्णत्ते ।।

२३. पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! मसूरचंदसंठाणसंठिए[१] पण्णत्ते । एवं सुहुमपुढविक्काइयाण वि । बायराण वि एवं चेव । पज्जत्तापज्जत्ताण वि एवं चेव ।।

२४. आउक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! थिबुगबिंदुसंठाणसंठिए पण्णत्ते । एवं सुहुम-बायर-पज्जत्तापज्जत्ताण वि ।।

२५. तेउक्काइयएगिंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! सूईकलावसंठाणसंठिए[२] पण्णत्ते । एवं सुहुम-बादर-पज्जत्तापज्जत्ताण वि ।।

२६. वाउक्काइयाणं[३] पडागासंठाणसंठिए[४] पण्णत्ते । एवं सुहुम-बायर-पज्जत्तापज्ज-त्ताण वि ।।

२७. वणप्फइकाइयाणं णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते । एवं सुहुम-बायर-पज्जत्तापज्जत्ताण वि ।।

२८. बेइंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! हुंडसंठाण-संठिए पण्णत्ते । एवं पज्जत्तापज्जत्ताण वि । एवं तेइंदिय-चउरिंदियाण वि ।।

२९. तिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहसंठाणसंठिए पण्णत्ते, तं जहा—समचउरंससंठाणसंठिए जाव[५] हुंडसंठाण-संठिए[६] । एवं पज्जत्तापज्जत्ताण वि ।।

३०. सम्मुच्छिमतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! हुंडसंठाणसंठिए पण्णत्ते । एवं पज्जत्तापज्जत्ताण वि ।।

३१. गब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहसंठाणसंठिए पण्णत्ते, तं जहा समचउरंसे जाव हुंडसंठाण-संठिए । एवं पज्जत्तापज्जत्ताण वि । एवमेते तिरिक्खजोणियाणं ओहियाणं णव आलावगा ।।

३२. जलयरतिरिक्खजोणियपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिए पण्णत्ते?

---

१. मसूराचंद° (घ) ।
२. सूयी° (क,घ) ।
३. °याण वि (ख,ग,घ) ।
४. पडाग° (ख) ।
५. प० १५।३५ ।
६. °संठिए वि (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! छव्विहसंठाणसंठिए पण्णत्ते, तं जहा—समचउरंसे जाव हुंडे। एवं पज्जत्ता-पज्जत्ताण वि ।।

३३. सम्मुच्छिमजलयरा हुंडसंठाणसंठिया। एतेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्तगा वि एवं चेव ।।

३४. गब्भवक्कंतियजलयरा छव्विहसंठाणसंठिया। एवं पज्जत्तापज्जत्तगा वि ।।

३५. एवं थलयराण वि णव सुत्ताणि। एवं चउप्पयथलयराण वि उरपरिसप्पथलयराण वि भुयपरिसप्पथलयराण वि। एवं खहयराण वि णव सुत्ताणि, णवरं—सव्वत्थ सम्मुच्छिमा हुंडसंठाणसंठिया भाणियव्वा, इयरे छसु वि ।।

३६. मणूसपंचेंदियओरालियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहसंठाणसंठिए पण्णत्ते, तं जहा—समचउरंसे जाव हुंडे। पज्जत्तापज्जत्ताण वि एवं चेव। गब्भवक्कंतियाण वि एवं चेव। पज्जत्तापज्जत्तगाण वि एवं चेव ।।

३७. सम्मुच्छिमाणं पुच्छा। गोयमा ! हुंडसंठाणसंठिया पण्णत्ता ।।

ओरालियसरीरे पमाण-पदं

३८. ओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं ।।

३९. एगिंदियओरालियस्स वि एवं चेव जहा ओहियस्स ।।

४०. पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया [1]°सरीरओगाहणा पण्णत्ता ?° गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। एवं अपज्जत्तयाण वि पज्जत्तयाण वि। एवं सुहुमाण वि पज्जत्तापज्जत्ताणं। बादराणं पज्जत्तापज्जत्ताण वि एवं। एसो णवओ भेदो। जहा पुढविक्काइयाणं तहा आउक्काइयाण वि तेउक्काइयाण वि वाउक्काइयाण वि ।।

४१ वणस्सइकाइयओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं। अपज्जत्तगाणं जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। पज्जत्तगाणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं। बादराणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं। पज्जत्ताण वि एवं चेव। अपज्जत्ताणं जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। सुहुमाणं पज्जत्तापज्जत्ताण य तिण्ह वि जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।।

४२. बेइंदियओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं। एवं सव्वत्थ वि अपज्जत्तयाणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं जहण्णेण वि उक्कोसेण वि। पज्जत्तयाणं जहेव ओहियस्स[2]। एवं तेइंदियाणं तिण्णि गाउयाइं, चउरिंदियाणं चत्तारि गाउयाइं ।।

---

१. सं०पा०—पुच्छा।

२. सर्वेष्वपि आदर्शेषु 'ओरालियस्स ओहियस्स' इति पाठो लभ्यते, किन्तु 'ओरालियस्स' इति पदं अत्र सङ्गतं नास्ति। यदि 'ओरालियस्स ओहियस्स' इति पाठः स्वीकृतः स्यात् तदा द्वीन्द्रियौदारिकशरीरस्य उत्कृष्टावगाहना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ३, एवं सम्मुच्छिमाणं ३, गब्भवक्कंतियाण वि ३। एवं चेव णवओ भेदो भाणियव्वो। एवं जलयराण वि जोयण-सहस्सं, णवओ भेदो ॥

४४. थलयराण वि णवओ भेदो[1] ओहियचउप्पयपज्जत्तय-गब्भवक्कंतियपज्जत्तयाण य उक्कोसेणं छग्गाउयाइं। सम्मुच्छिमाणं पज्जत्ताण य गाउयपुहत्तं उक्कोसेणं ॥

४५. एवं उरपरिसप्पाण वि ओहिय-गब्भवक्कंतियपज्जत्ताणं जोयणसहस्सं सम्मुच्छिमाणं जोयणपुहत्तं ॥

४६. भुयपरिसप्पाणं ओहिय-गब्भवक्कंतियाण य उक्कोसेणं गाउयपुहत्तं। सम्मुच्छिमाणं धणुपुहत्तं ॥

४७. खहयराणं ओहिय-गब्भवक्कंतियाणं सम्मुच्छिमाण य तिण्ह वि उक्कोसेणं धणु-पुहत्तं। इमाओ संगहणिगाहाओ—

जोयणसहस्स छग्गाउयाइं तत्तो य जोयणसहस्सं।
गाउयपुहत्त भुयए, धणुहपुहत्तं[2] च पक्खीसु ॥१॥
जोयणसहस्स गाउयपुहत्त तत्तो य जोयणपुहत्तं।
दोण्हं तु धणुपुहत्तं[3], सम्मुच्छिमे होति उच्चत्तं ॥२॥

४८. मणुस्सोरालियसरीरस्स णं भंते! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। अपज्जत्ताणं जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। सम्मुच्छिमाणं जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंगुलस्स

सातिरेकं योजनसहस्रं प्रसज्येत द्रष्टव्यं ३८ सूत्रम्। तच्च अनिष्टम्। द्वीन्द्रियौदारिक-शरीरस्य औघिकसूत्रे तस्य उत्कृष्टावगाहना द्वादशयोजनानि एव विद्यते—द्रष्टव्यं ४२ सूत्रम्। अनुयोगद्वारस्य विस्तृतवाचनायां अस्यैव संवादी पाठो दृश्यते—'पज्जत्तगाणं° उक्कोसेणं बारसजोयणाणि'। मलयगिरिवृत्ता-वपि अस्य संवादिव्याख्या लभ्यते—तत्रौघिक-सूत्रे पर्याप्तसूत्रे च द्वीन्द्रियाणामुत्कर्षतो द्वादश योजनानि। एतैः कारणैः 'ओरालियस्स' इति पदं नास्माभिर्मूले स्वीकृतम्। सम्भाव्यते लिपिदोषेण असौ मूले प्रवेशं प्राप्तः।

'जहेव ओहियस्स' इति समर्पणसूत्रेण पर्याप्तकानां द्वीन्द्रियाणां जघन्यावगाहना अंगुलस्य असंख्येयभागमापद्यते। अन्यत्रापि (४८ सूत्रपर्यन्तम्) एष एव क्रमोस्ति। अनु-योगद्वारस्य विस्तृतवाचनायां पर्याप्तानां द्वीन्द्रियादीनां जघन्यावगाहना अंगुलस्य संख्येय-भागं दृश्यते। द्रष्टव्यम्—४०५ सूत्रस्य पाद-टिप्पणम्।

१. भेदो उक्कोसेणं छग्गाउयाइं, पज्जत्ताण वि एवं चेव ३। सम्मुच्छिमाणं पज्जत्ताण य उक्कोसेणं गाउयपुहत्तं। गब्भवक्कंतियाणं उक्कोसेणं छग्गाउयाइं पज्जत्ताण य २ (क,ख, ग,घ); असौ पाठः सर्वेष्वपि आदर्शेषु लभ्यते, वृत्तौ च नास्ति व्याख्यातः, अनावश्यकोपि प्रतिभाति। 'ओहियचउप्पयपज्जत्तय' इत्यादि पाठः अर्थसिद्धचै पर्याप्तोस्ति वृत्तावपि एवमे-वास्ति व्याख्यातः—स्थलचरेषु चतुष्पदस्थल-चरेषु चौघिकेषु गर्भव्युत्क्रान्तिकेषु च षट्गव्यू-तानि, सम्मूर्च्छिमेषु गव्यूतपृथक्त्वम्।

२. धणुपुहत्तं (क,पु)।

३. धणुहपुहत्तं (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंखेज्जइभागं। गब्भवक्कंतियाणं पज्जत्तयाण य जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं ।।

वेउव्वियसरीरे विहि-पदं

४६. वेउव्वियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा –एगिंदियवेउव्वियसरीरे य पंचेंदियवेउव्वियसरीरे य ।।

५०. जदि एगिंदियवेउव्वियसरीरे किं वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे अवाउक्काइय-एगिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे, णो अवाउक्काइय-एगिंदियवेउव्वियसरीरे।

जदि वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे किं सुहुमवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे ? बादरवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! णो सुहुमवाउक्काइयएगिंदियवेउव्विय-सरीरे, बादरवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे।

जदि बादरवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे किं पज्जत्तबादरवाउक्काइयएगिंदिय-वेउव्वियसरीरे ? अपज्जत्तबादरवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्त-बादरवाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे, णो अपज्जत्तबादरवाउक्काइयएगिंदियवेउव्विय-सरीरे ।।

५१. जदि पंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं णेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे जाव किं देवपंचें-दियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! णेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि जाव देवपंचेंदियवेउव्विय-सरीरे वि ।।

५२. जदि णेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं रयणप्पभापुढविणेरइयपंचेंदियवेउव्विय-सरीरे जाव किं अहेसत्तमापुढविणेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! रयणप्पभापुढवि-णेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि जाव अहेसत्तमापुढविणेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि।

जदि रयणप्पभापुढविणेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं पज्जत्तगरयणप्पभापुढविणेरइय-पंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? अपज्जत्तगरयणप्पभापुढविणेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तगरयणप्पभापुढविणेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि अपज्जत्तगरयणप्पभा-पुढविणेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि। एवं जाव अहेसत्तमाए दुगतो भेदो णेयव्वो[1] ।।

५३. जदि तिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं सम्मुच्छिमतिरिक्खजोणियपंचें-दियवेउव्वियसरीरे[2] ? गब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! णो सम्मुच्छिमतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे, गब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचें-दियवेउव्वियसरीरे।

जदि गब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं संखेज्जवासाउयगब्भ-वक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्ख-जोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणिय-पंचेंदियवेउव्वियसरीरे, णो असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्विय-सरीरे।

---

१. भाणियव्वो (ख,ग,घ)।
२. °पंचेंदियतिरिक्खजोणिय° (क,ख,ग) प्रायः सर्वत्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जदि संखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे, णो अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ।

जदि संखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं जलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? थलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? खहयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! जलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि, थलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि, खहयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि ।

जदि जलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं पज्जत्तगजलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? अपज्जत्तगजलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तगजलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे, णो अपज्जत्तगजलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ।

जदि थलयरसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे[1] किं चउप्पय जाव सरीरे ? परिसप्प जाव सरीरे ? गोयमा ! चउप्पय जाव सरीरे वि, परिसप्प जाव सरीरे वि । एवं सव्वेसिं णेयं जाव खहयराणं पज्जत्ताणं, णो अपज्जत्ताणं ।।

५४. जदि मणूसपंचेंदियवेउव्वियरीरे किं सम्मुच्छिममणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! णो सम्मुच्छिममणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे, गब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ।

जदि गब्भवक्कंतियमणूपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे[2] ? अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? अंतरदीवयगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे, णो अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे, णो अंतरदीवयगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे[3] ।

जदि कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे, णो असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतिमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ।

१. °पंचेंदिय जाव सरीरे (ग) ।
२. कम्मभूमिग° (ख) ।
३. °सरीरे य (क ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जदि संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं पज्जत्तग-संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? अपज्जत्तगसंखेज्ज-वासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तगसंखेज्ज-वासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे, णो अपज्जत्तगसंखेज्जवासा-उयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ।।

५५. जदि देवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं भवणवासिदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे जाव वेमाणियदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! भवणवासिदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि जाव वेमाणियदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि ।

जदि भवणवासिदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं असुरकुमारभवणवासिदेवपंचेंदियवेउव्विय-सरीरे जाव थणियकुमारभवणवासिदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! असुरकुमार जाव थणियकुमारभवणवासिदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि ।

जदि असुरकुमारभवणवासिदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे किं पज्जत्तगअसुरकुमारभवणवासि-देवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? अपज्जत्तगअसुरकुमारभवणवासिदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तगअसुरकुमारभवणवासिदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि अपज्जत्तग-असुरकुमारभवणवासिदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे वि । एवं जाव थणियकुमाराणं दुगओ भेदो । एवं वाणमंतराणं अट्ठविहाणं, जोइसियाणं पंचविहाणं । वेमाणिया दुविहा—कप्पोवगा कप्पातीता य । कप्पोवगा बारसविहा । तेसिं पि एवं चेव दुगतो भेदो । कप्पातीता दुविहा—गेवेज्जगा य अणुत्तरा य । गेवेज्जगा णवविहा । अणुत्तरोववाइया पंचविहा । एतेसिं पज्जत्तापज्जत्ताभिलावेणं दुगतो भेदो ।।

वेउव्वियसरीरे संठाण-पदं

५६. वेउव्वियसरीरे णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते ।।

५७. वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरे णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! पडागासंठाणसंठिए पण्णत्ते ।।

५८. णेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! णेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—भवधारणिज्जे य उत्तरवेउव्विए य । तत्थ णं जेसे भवधारणिज्जे से हुंडसंठाणसंठिए पण्णत्ते । तत्थ णं जेसे उत्तरवेउव्विए से वि हुंडसंठाणसंठिए पण्णत्ते ।।

५९. रयणप्पभापुढविणेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरे णं भंते! किंसंठाणसंठिए पण्णत्ते? गोयमा ! रयणप्पभापुढविणेरइयाणं दुविहे सरीरे पण्णत्ते, तं जहा—भवधारणिज्जे य उत्तरवेउव्विए य । तत्थ णं जेसे भवधारणिज्जे से वि हुंडे, जे वि उत्तरवेउव्विए से वि हुंडे । एवं जाव अहेसत्तमापुढविणेरइयवेउव्वियसरीरे ।।

६०. तिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरे णं भंते ! किंसंठाणसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते । एवं जलयर-थलयर-खहयराण वि । थलयराण चउप्पय-परिसप्पाण वि । परिसप्पाण उरपरिसप्प-भुयपरिसप्पाण वि । एवं मणूसपंचेंदिय-वेउव्वियसरीरे वि ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६१. असुरकुमारभवणवासिदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! असुरकुमाराणं देवाणं दुविहे सरीरे पण्णत्ते, तं जहा—भवधारणिज्जे य उत्तरवेउव्विए य। तत्थ णं जेसे भवधारणिज्जे से णं समचउरंससंठाणसंठिए पण्णत्ते। तत्थ णं जेसे उत्तरवेउव्विए से णं णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते। एवं जाव थणियकुमारदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे। एवं वाणमंतराण वि, णवरं—ओहिया वाणमंतरा पुच्छिज्जंति। एवं जोइसियाण वि ओहियाणं। एवं सोहम्मे जाव अच्चुयदेवसरीरे ।।

६२. गेवेज्जगकप्पातीयवेमाणियदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरे णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! गेवेज्जगदेवाणं एगे भवधारणिज्जे सरीरए। से णं समचउरंसंठाणसंठिए पण्णत्ते। एवं अणुत्तरोववातियाण वि ।।

वेउव्वियसरीरे पमाण-पदं

६३. वेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसतसहस्सं ।।

६४. वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं ।।

६५. णेरइयपंचेंदियवेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जासा[1] भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं। तत्थ णं जासा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुसहस्सं ।।

६६. रयणप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सत्त धणूइं तिण्णि रयणीओ छच्च अंगुलाइं। तत्थ णं जासा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जाओ रयणीओ ।।

६७. सक्करप्पभाए पुच्छा। गोयमा ! जाव तत्थ णं जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जाओ रयणीओ। तत्थ णं जासा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं एक्कतीसं धणूइं एक्का य रयणी। वालुयप्पभाए भवधारणिज्जा एक्कतीसं धणूइं एक्का य रयणी, उत्तरवेउव्विया बावट्ठिं धणूइं दोण्णि य रयणीओ। पंकप्पभाए भवधारणिज्जा बावट्ठिं धणूइं दोण्णि य रयणीओ, उत्तरवेउव्विया पणुवीसं धणुसतं। धूमप्पभाए भवधारणिज्जा पणुवीसं धणुसतं, उत्तरवेउव्विया अड्ढाइज्जाइं धणुसताइं। तमाए भवधारणिज्जा अड्ढाइज्जाइं धणुसताइं, उत्तरवेउव्विया पंच धणुसताइं। अहेसत्तमाए भवधारणिज्जा पंच धणुसताइं, उत्तरवेउव्विया धणुसहस्सं। एयं उक्कोसेणं। जहण्णेणं भवधारणिज्जा अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उत्तरवेउव्विया अंगुलस्स संखेज्जइभागं ।।

---

१. जेसे (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६८. तिरिक्खजोणियपंचेंदियवेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसतपुहत्तं ।।

६९. मणूसपंचेंदियवेउव्वियसरीररस्स णं भंते! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसतसहस्सं ।।

७०. असुरकुमारभवणवासिदेवपंचिदियवेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असुरकुमाराणं देवाणं दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता, तं जहा —भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सत्त रयणीओ। तत्थ णं जासा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसतसहस्सं। एवं जाव थणियकुमाराणं। एवं ओहियाणं वाणमंतराणं। एवं जोइसियाण वि। सोहम्मीसाणगदेवाणं एवं चेव उत्तरवेउव्विया जाव अच्चुओ कप्पो, णवरं—सणंकुमारे भवधारणिज्जा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं छ रयणीओ। एवं माहिंदे वि। बंभलोय-लंतगेसु पंच रयणीओ। महासुक्क-सहस्सारेसु चत्तारि रयणीओ। आणय-पाणय-आरण-अच्चुएसु तिण्णि रयणीओ ।।

७१. गेवेज्जगकप्पातीतवेमाणियदेवपंचेंदियवेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! गेवेज्जगदेवाणं एगा भवधारणिज्जा सरीरोगाहणा पण्णत्ता। सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं दो रयणीओ। एवं अणुत्तरोववाइयदेवाण वि, णवरं—एक्का रयणी ।।

आहारगसरीरे विहि-पदं

७२. आहारगसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते।
जदि एगागारे पण्णत्ते किं मणूसआहारगसरीरे ? अमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा! मणूसआहारगसरीरे, णो अमणूसआहारगसरीरे।
जदि मणूसआहारगसरीरे किं सम्मुच्छिममणूसआहारगसरीरे ? गब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! णो सम्मुच्छिममणूसआहारगसरीरे, गब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे।
जदि गब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे किं कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, णो अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, णो अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे।
जदि कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे किं संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे? असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, णो असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे।
जदि संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे किं पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भ-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, णो अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूस-आहारगसरीरे।

जदि पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे किं सम्म-द्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे? मिच्छद्दिट्ठि-पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे? सम्मामिच्छद्दिट्ठि-पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे? गोयमा! सम्मद्दि-ट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, णो मिच्छद्दिट्ठि-पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, णो सम्मामिच्छद्दिट्ठि-पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे।

जदि सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे किं संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे? असंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे? संजतासंजतसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे? गोयमा! संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारग-सरीरे, णो असंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारग सरीरे,[1] णो संजयासंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूस-आहारगसरीरे।

जदि संजतसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे किं पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतिमणूसआहारग-सरीरे? अपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआ-हारगसरीरे? गोयमा! पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भव-क्कंतियमणूसआहारगसरीरे, णो अपमत्तसंजतसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे।

जदि पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारग-सरीरे किं इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतिय-मणूसआहारगसरीरे? अणिड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे? गोयमा! इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तग-संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे, णो अणिड्ढिपत्तपमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसआहारगसरीरे॥

आहारगसरीरे संठाण-पदं

७३. आहारगसरीरे णं भंते! किंसंठिए पण्णत्ते? गोयमा! समचउरंससंठाणसंठिए पण्णत्ते॥

आहारगसरीर पमाण-पदं

७४. आहारगसरीरस्स णं भंते! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा!

---

१. अस्संजत° (क,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहण्णेणं देसूणा रयणी, उक्कोसेणं पडिपुण्णा रयणी ॥

तेयगसरीरे विहि-पदं

७५. तेयगसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियतेयगसरीरे जाव पंचेंदियतेयगसरीरे ॥

७६. एगिंदियतेयगसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविक्काइयएगिंदियतेयगसरीरे जाव वणप्फइकाइयएगिंदियतेयगसरीरे। एवं जहा[1] ओरालियसरीरस्स भेदो भणिओ तहा तेयगस्स वि जाव चउरिंदियाणं ॥

७७. पंचेंदियतेयगसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—णेरइयतेयगसरीरे जाव देवतेयगसरीरे। णेरइयाण दुगतो भेदो भाणियव्वो जहा[2] वेउव्वियसरीरे। पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं मणूसाण य जहा[3] ओरालियसरीरे भेदो भणितो तहा भाणियव्वो। देवाणं जहा[4] वेउव्वियसरीरे भेओ भणितो तहा भाणियव्वो जाव सव्वट्ठसिद्धदेवे त्ति ॥

तेयगसरीरे संठाण-पदं

७८. तेयगसरीरे णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते ॥

७९. एगिंदियतेयगसरीरे णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते।

८०. पुढविक्काइयएगिंदियतेयगसरीरे णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! मसूरचंदसंठाणसंठिए[5] पण्णत्ते। एवं ओरालियसंठाणाणुसारेणं भाणियव्वं जाव[6] चउरिंदियाणं ति ॥

८१. णेरइयाणं भंते ! तेयगसरीरे किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! जहा[7] वेउव्वियसरीरे ॥

८२. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं मणूसाण य जहा[8] एतेसिं चेव ओरालिय त्ति ॥

८३. देवाणं भंते ! तेयगसरीरे किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! जहा[9] वेउव्वियस्स जाव अणुत्तरोववाइय त्ति ॥

तेयगसरीरे पमाण-पदं

८४. जीवस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभ-बाहल्लेणं; आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागो, उक्कोसेणं लोगंताओ लोगंतो ॥

८५. एगिंदियस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! एवं चेव जाव पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-वणप्फइ-

१. प० २१।४-६।
२. प० २१।५२।
३. प० २१।७-२०।
४. प० २१।५५।
५. मसूराचंद° (ख,घ)।
६. प० २१।२४-२८।
७. प० २१।५८,५९।
८. प० २१।२९-३७।
९. प० २१।६१,६२।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

काइयस्स ॥

८६. बेइंदियस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभ-बाहल्लेणं; आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं तिरियलोगाओ लोगंते। एवं जाव चउरिंदियस्स ॥

८७. णेरइयस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभ-बाहल्लेणं; आयामेणं जहण्णेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं, उक्कोसेणं अहे जाव अहेसत्तमा पुढवी, तिरियं जाव सयंभूरमणे समुद्दे, उड्ढं जाव पंडगवणे पुक्खरिणीओ ॥

८८. पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहा[1] बेइंदियसरीरस्स ॥

८९. मणूसस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! समयखेत्ताओ लोगंते ॥

९०. असुरकुमारस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभ-बाहल्लेणं; आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं अहे जाव तच्चाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते, तिरियं जाव सयंभुरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्ले वेइयंते, उड्ढं जाव इसीपब्भारा पुढवी। एवं जाव थणियकुमारतेयगसरीरस्स। वाणमंतर-जोइसिया सोहम्मीसाणगा य एवं चेव ॥

९१. सणंकुमारदेवस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरपमाणमेत्ता 'विक्खंभ-बाहल्लेणं'[2]; आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं अहे जाव महापातालाणं दोच्चे तिभागे, तिरियं जाव सयंभुरमणसमुद्दे, उड्ढं जाव अच्चुओ कप्पो। एवं जाव सहस्सारदेवस्स ॥

९२. आणयदेवस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभ-बाहल्लेणं; आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं अहे जाव अहेलोइयगामा, तिरियं जाव मणूसखेत्ते, उड्ढं जाव अच्चुओ कप्पो। एवं जाव आरणदेवस्स। अच्चुयदेवस्स वि एवं चेव, णवरं—उड्ढं जाव सगाइं[3] विमाणाइं ॥

९३. गेवेज्जगदेवस्स णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभ-बाहल्लेणं; आयामेणं जहण्णेणं विज्जाहरसेढीओ, उक्कोसेणं जाव अहेलोइयगामा, तिरियं जाव मणूसखेत्ते, उड्ढं जाव सगाइं विमाणाइं। अणुत्तरोववाइयस्स वि एवं चेव ॥

---

१. प० २१।८६।

२. विक्खंभेणं बाहल्लेणं (ख,ग)।

३. सगाति (क,घ); सयाइं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मगसरीर-पदं

९४. कम्मगसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियकम्मगसरीरे जाव पंचेंदियकम्मगसरीरे। एवं जहेव तेयगसरीरस्स भेदो संठाणं ओगाहणा य भणिया तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं जाव[1] अणुत्तरोववाइय त्ति ।।

पोग्गलचिणणा-पदं

९५. ओरालियसरीरस्स णं भंते ! कतिदिसिं पोग्गला चिज्जंति ? गोयमा ! णिव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघातं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं ।।

९६. वेउव्वियसरीरस्स णं भंते ! कतिदिसिं पोग्गला चिज्जंति ? गोयमा ! णियमा छद्दिसिं। एवं आहारगसरीरस्स वि। तेया-कम्मगाणं जहा[2] ओरालियसरीरस्स ।।

९७. 'एवं उवचिज्जंति'[3] अवचिज्जंति ।।

सरीरसंजोग-पदं

९८. जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स णं वेउव्वियसरीरं ? जस्स वेउव्वियसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि ! जस्स वेउव्वियसरीरं तस्स ओरालियसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि ।।

९९. जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं ? जस्स आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि। जस्स पुण आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं णियमा अत्थि ।।

१००. जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स तेयगसरीरं ? जस्स तेयगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स तेयगसरीरं णियमा अत्थि। जस्स पुण तेयगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं सिय अत्थि सिय णत्थि।
एवं कम्मगसरीरं पि ।।

१०१. जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरं तस्स आहारगसरीरं ? जस्स आहारगसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं ? गोयमा ! जस्स वेउव्वियसरीरं तस्साहारगसरीरं णत्थि। जस्स वि य आहारगसरीरं तस्स वि[4] वेउव्वियसरीरं णत्थि ।।

१०२. तेया-कम्माइं जहा[5] ओरालिएण समं तहेव आहारगसरीरेण वि समं तेया-कम्माइं चारेयव्वाणि ।।

१०३. जस्स णं भंते ! तेयगसरीरं तस्स कम्मगसरीरं ? जस्स कम्मगसरीरं तस्स तेयगसरीरं ? गोयमा ! जस्स तेयगसरीरं तस्स कम्मगसरीरं नियमा अत्थि। जस्स वि

---

१. प० २१।७५-९३।

२. प० २१।९५।

३. ओरालियसरीरस्स णं भंते ! कति दिसिं पोग्गला उवचिज्जंति ? गोयमा ! एवं चेव जाव कम्मगसरीरस्स। एवं उवचिज्जंति (क, ख,ग,घ,पु); एतत् सूत्रं तथा एवं उवचिज्जंति' एते द्वे अपि समानार्थके स्तः नैतयोः कश्चित् तात्पर्यभेदः। सम्भाव्यते कथमपि द्वयोर्वाचनयोः मिश्रणं संजातम्। तेन आदर्शेषु उपलब्धमपि सूत्रमेतत् पाठान्तरे स्वीकृतम्। भगवत्यामपि (१।२०,२१) 'चिज्जंति' सूत्रानन्तरं 'एवं उवचिज्जंति' इति सूत्रं दृश्यते।

४. × (क,ख,घ)।

५. प० २१।१००।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मगसरीरं तस्स वि तेयगसरीरं णियमा अत्थि ।।

दव्व-पएसप्पबहु-पदं

१०४. एतेसि णं भंते ! ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेया-कम्मगसरीराणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आहारगसरीरा दव्वट्ठयाए, वेउव्वियसरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ओरालियसरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तेया-कम्मगसरीरा दो वि तुल्ला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा; पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवा आहारगसरीरा पएसट्ठयाए, वेउव्वियसरीरा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ओरालियसरीरा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तेयगसरीरा पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, कम्मगसरीरा पदेसट्ठयाए अणंतगुणा; दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा आहारगसरीरा दव्वट्ठयाए, वेउव्वियसरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ओरालियसरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ओरालियसरीरेहिंतो दव्वट्ठयाए आहारगसरीरा पएसट्ठयाए अणंतगुणा, वेउव्वियसरीरा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ओरालियसरीरा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तेया-कम्मगसरीरा दो वि तुल्ला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, तेयगसरीरा पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, कम्मगसरीरा पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ।।

सरीरओगाहणप्पबहु-पदं

१०५. एतेसि णं भंते ! ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेया-कम्मगसरीराणं जहण्णियाए ओगाहणाए उक्कोसियाए ओगाहणाए जहण्णुक्कोसियाए ओगाहणाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा, तेया-कम्मगाणं दोण्ह वि तुल्ला जहण्णिया ओगाहणा विसेसाहिया, वेउव्वियसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा, आहारगसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा; उक्कोसियाए ओगाहणाए—सव्वत्थोवा आहारगसरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा, ओरालियसरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा संखेज्जगुणा, वेउव्वियसरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा संखेज्जगुणा, तेया-कम्मगाणं दोण्ह वि तुल्ला उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा; जहण्णुक्कोसियाए ओगाहणाए—सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा, तेया-कम्मगाणं दोण्ह वि तुल्ला जहण्णिया ओगाहणा विसेसाहिया, वेउव्वियसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा, आहारगसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा, आहारगसरीरस्स जहण्णियाहिंतो ओगाहणाहिंतो तस्स चेव उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया, ओरालियसरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा संखेज्जगुणा, वेउव्वियसरीरस्स णं उक्कोसिया ओगाहणा संखेज्जगुणा, तेया-कम्मगाणं दोण्ह वि तुल्ला उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बावीसइमं किरियापयं

किरियाभेय-पदं

१. कति णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया अहिगरणिया[1] पादोसिया पारियावणिया पाणाइवातकिरिया ।।

२. काइया णं भंते ! किरिया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणुवरयकाइया य दुप्पउत्तकाइया य ।।

३. अहिगरणिया णं भंते ! किरिया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजोयणाहिकरणिया य निव्वत्तणाहिकरणिया य ।।

४. पादोसिया णं भंते ! किरिया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जेणं अप्पणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा असुभं मणं पधारेति[2]। से त्तं पादोसिया किरिया ।।

५. पारियावणिया णं भंते ! किरिया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जेणं अप्पणो वा परस्स वा तदुभयस्स वा असायं वेदणं उदीरेति । से त्तं पारियावणिया किरिया ।।

६. पाणातिवातकिरिया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जेणं अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा जीवियाओ ववरोवेइ । से त्तं पाणाइवाय-किरिया ।।

सकिरियत्त-अकिरियत्त-पदं

७. जीवा णं भंते ! किं सकिरिया ? अकिरिया ? गोयमा ! जीवा सकिरिया वि अकिरिया वि ।।

८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जीवा सकिरिया वि अकिरिया वि ? गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संसारसमावण्णगा य असंसारसमावण्णगा य । तत्थ णं जेते असंसारसमावण्णगा ते णं सिद्धा, सिद्धा णं अकिरिया । तत्थ णं जेते संसारसमावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्थ णं जेते सेलेसिपडिवण्णगा ते णं अकिरिया । तत्थ णं जेते असेलेसिपडिवण्णगा ते णं सकिरिया । से

---

१. आहिगरणिया (पु) ।   २. वा धारेति (क,ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—जीवा सकिरिया वि अकिरिया वि ।।

किरियाविसय-पदं

९. अत्थि णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जति ? हंता गोयमा ! अत्थि ।।

१०. कम्हि णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ? गोयमा ! छसु जीवणिकाएसु ।।

११. अत्थि णं भंते ! णेरइयाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जति ? गोयमा ! एवं चेव । एवं जाव निरंतरं वेमाणियाणं ।।

१२. अत्थि णं भंते ! जीवाणं मुसावाएणं किरिया कज्जति ? हंता ! अत्थि ।।

१३. कम्हि णं भंते ! जीवाणं मुसावाएणं किरिया कज्जति ? गोयमा ! सव्वदव्वेसु । एवं णिरंतरं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ।।

१४. अत्थि णं भंते ! जीवाणं अदिण्णादाणेणं किरिया कज्जति ? हंता अत्थि ।।

१५. कम्हि णं भंते ! जीवाणं अदिण्णादाणेणं किरिया कज्जइ ? गोयमा ! गहण-धारणिज्जेसु दव्वेसु । एवं णेरइयाणं णिरंतरं जाव वेमाणियाणं ।।

१६. अत्थि णं भंते ! जीवाणं मेहुणेणं किरिया कज्जति ? हंता ! अत्थि ।।

१७. कम्हि णं भंते ! जीवाणं मेहुणेणं किरिया कज्जति ? गोयमा ! रूवेसु वा रूवसहगतेसु वा दव्वेसु । एवं णेरइयाणं णिरंतरं जाव वेमाणियाणं ।।

१८. अत्थि णं भंते ! जीवाणं परिग्गहेणं किरिया कज्जति ? हंता ! अत्थि ।।

१९. कम्हि णं भंते ! जीवाणं परिग्गहेणं किरिया कज्जति ? गोयमा ! सव्वदव्वेसु । एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ।।

२०. एवं कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं पेज्जेणं दोसेणं कलहेणं अब्भक्खाणेणं पेसुण्णेणं परपरिवाएणं अरतिरतीए मायामोसेणं मिच्छादंसणसल्लेणं सव्वेसु 'जीव-णेरइयभेदेसु'[1] भाणियव्वं णिरंतरं जाव वेमाणियाणं ति । एवं अट्ठारस एते दंडगा ।।

किरियाहेऊहिं कम्मपगडिबंध-पदं

२१. जीवे णं भंते ! पाणाइवाएणं कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविह-बंधए वा अट्ठविहबंधए वा । एवं णेरइए जाव णिरंतरं वेमाणिए ।।

२२. जीवा णं भंते ! पाणाइवाएणं कति कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सत्तविह-बंधगा वि अट्ठविहबंधगा वि ।।

२३. णेरइया णं भंते ! पाणाइवाएणं कति कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा, अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य, अहवा सत्तविह-बंधगा य अट्ठविहबंधगा य । एवं असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा ।।

२४. पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-वणप्फइकाइया य, एते सव्वे वि जहा ओहिया जीवा । अवसेसा जहा णेरइया ।।

२५. एवं एते जीवेगिंदियवज्जा तिण्णि-तिण्णि भंगा सव्वत्थ भाणियव्वं त्ति जाव

---

१. जीवानेरइयभेदेणं (क,ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छादंसणसल्लेणं । एवं एगत्त-पोहत्तिया छत्तीसं दंडगा होंति ।।

कम्मबंधमहिकिच्च किरिया-पदं

२६. जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए । एवं णेरइए जाव वेमाणिए ।।

२७. जीवा णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणा कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि चउकिरिया वि पंचकिरिया वि । एवं णेरइया निरंतरं जाव वेमाणिया ।।

२८. एवं दरिसणावरणिज्जं वेयणिज्जं मोहणिज्जं आउयं णामं गोयं अंतराइयं च अट्ठविहकम्मपगडीओ भाणियव्वाओ । एगत्त-पोहत्तिया सोलस दंडगा ।।

एगत्त-पुहत्तेहिं किरिया-पदं

२९. जीवे णं भंते ! जीवातो कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए सिय अकिरिए ।।

३० जीवे णं भंते ! णेरइयाओ कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चतुकिरिए सिय अकिरिए । एवं जाव थणियकुमाराओ ।।

३१. पुढविक्काइयाओ आउक्काइयाओ तेउक्काइयाओ वाउक्काइयाओ वणस्सइकाइयाओ बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणूसातो जहा जीवातो । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियाओ जहा णेरइयाओ ।।

३२. जीवे णं भंते ! जीवेहिंतो कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए सिय अकिरिए ।।

३३. जीवे णं भंते ! णेरइएहिंतो कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय अकिरिए । एवं जहेव[1] पढमो दंडओ तहा एसो वि बितिओ भाणियव्वो ।।

३४. जीवा णं भंते ! जीवाओ कतिकिरिया ? गोयमा ! 'तिकिरिया वि चउकिरिया वि पंचकिरिया वि अकिरिया वि'[2] ।।

३५. जीवा णं भंते ! णेरइयाओ कतिकिरिया ? गोयमा ! जहेव[3] आइल्लदंडओ तहेव भाणियव्वो जाव वेमाणिय त्ति ।।

३६. जीवा णं भंते ! जीवेहिंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि चउकिरिया वि पंचकिरिया वि अकिरिया वि ।।

३७. जीवा णं भंते ! णेरइएहिंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि चउकिरिया वि अकिरिया वि । असुरकुमारेहिंतो वि एवं चेव जाव वेमाणिएहिंतो । ओरालियसरीरेहिंतो जहा[4] जीवेहिंतो ।।

३८. णेरइए णं भंते ! जीवातो कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए ।।

---

१. प० २२।३०,३१ ।

२. सिय तिकिरिया वि सिय चउकिरिया वि सिय पंचकिरिया वि सिय अकिरिया वि (क,ख,ग,घ); अस्मिन् रचनाक्रमे यत्र 'अपि' शब्दस्य प्रयोगोस्ति तत्र 'सिय' शब्दस्य प्रयोगो नास्ति, द्रष्टव्यं—२७,३६,३७ सूत्राणि ।

३. प० २२।३०,३१ ।

४. प० २२।३६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३९. णेरइए णं भंते ! णेरइयाओ कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए। 'एवं जाव थणियकुमाराओ। पुढविकाइयाओ जाव मणुस्साओ जहा[1] जीवाओ। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियाओ जहा नेरइयाओ ॥

४०. णेरइए णं भंते ! जीवेहिंतो कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए ॥

४१. णेरइए णं भंते ! णेरइएहिंतो कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए। एवं जहेव[2] पढमो दंडओ तहा एसो वि बितिओ भाणियव्वो"[3]। एवं जाव वेमाणिएहिंतो, णवरं—णेरइयस्स णेरइएहिंतो देवेहिंतो य पंचमा किरिया णत्थि ॥

४२. णेरइया णं भंते ! जीवाओ कतिकिरिया ? गोयमा ! सिय तिकिरिया सिय चउकिरिया सिय पंचकिरिया। एवं जाव वेमाणियाओ, णवरं—णेरइयाओ देवाओ य पंचमा[4] किरिया णत्थि ॥

४३. णेरइया णं भंते ! जीवेहिंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि चउकिरिया वि पंचकिरिया वि ॥

४४. णेरइया णं भंते ! णेरइएहिंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि चउकिरिया वि। एवं जाव वेमाणिएहिंतो, णवरं—ओरालियसरीरेहिंतो जहा[5] जीवेहिंतो ॥

४५. असुरकुमारे णं भंते ! जीवातो कतिकिरिए ? गोयमा ! जहेव[6] णेरइए चत्तारि दंडगा तहेव असुरकुमारे वि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा। एवं उवउज्जिऊण भावेयव्वं ति—जीवे मणूसे य अकिरिए वुच्चति, सेसा अकिरिया ण वुच्चंति। सव्वजीवा ओरालियसरीरेहिंतो पंचकिरिया, णेरइय-देवेहिंतो य पंचकिरिया ण वुच्चंति। एवं एक्केक्कजीवपए चत्तारि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा। एवं एयं दंडगसयं। सव्वे वि य जीवादीया दंडगा ॥

किरिया-सहभाव-पदं

४६. कति णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया जाव पाणाइवायकिरिया ॥

४७. णेरइयाणं भंते ! कति किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया जाव पाणाइवायकिरिया। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

४८. जस्स णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स अहिगरणिया किरिया कज्जति ? जस्स अहिगरणिया किरिया कज्जति तस्स काइया किरिया कज्जति ? गोयमा ! जस्स णं जीवस्स काइया किरिया कज्जति तस्स अहिगरणी णियमा कज्जति, जस्स अहिगरणी किरिया कज्जति तस्स वि काइया किरिया णियमा कज्जति ॥

४९. जस्स णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जति तस्स पाओसिया किरिया कज्जति ? जस्स पाओसिया किरिया कज्जति तस्स काइया किरिया कज्जति ? गोयमा !

---

१. २२।३८।

२. प० २२।३९।

३. चिह्नाङ्कितपाठः 'ख,घ' प्रत्योर्नास्ति।

४. पंचमी (ख)।

५. प० २२।४३।

६. प० २२।३८-४४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं चेव[1]॥

५०. जस्स णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ ? जस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स काइया किरिया कज्जति ? गोयमा ! जस्स णं जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स पारियावणिया किरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति, जस्स पुण पारियावणिया किरिया कज्जति तस्स काइया नियमा कज्जति । एवं पाणाइवायकिरिया वि ॥

५१. एवं आदिल्लाओ परोप्परं नियमा तिण्णि कज्जंति । जस्स आदिल्लाओ तिण्णि कज्जंति तस्स उवरिल्लाओ दोण्णि सिय कज्जंति सिय णो कज्जंति । जस्स उवरिल्लाओ दोण्णि कज्जंति तस्स आइल्लाओ तिण्णि णियमा कज्जंति ॥

५२. जस्स णं भंते ! जीवस्स पारियावणिया किरिया कज्जइ तस्स पाणाइवाय-किरिया कज्जति ? जस्स पाणाइवायकिरिया कज्जति तस्स पारियावणिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! जस्स णं जीवस्स पारियावणिया किरिया कज्जति तस्स पाणाइवाय-किरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति, जस्स पुण पाणाइवायकिरिया कज्जति तस्स पारियावणिया किरिया नियमा कज्जति ॥

५३. जस्स णं भंते ! णेरइयस्स काइया किरिया कज्जति तस्स अहिगरणिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! जहेव[1] जीवस्स तहेव णेरइयस्स वि । एवं 'निरंतरं जाव'[2] वेमाणियस्स ॥

५४. जं 'समयं णं'[3] भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जति तं समयं अहिगरणिया किरिया कज्जति ? जं समयं अहिगरणिया किरिया कज्जति तं समयं काइया किरिया कज्जति ? एवं जहेव[4] आइल्लओ दंडओ भणिओ तहेव भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स ॥

५५. जं 'देसं णं'[5] भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जति तं देसं णं अहिगरणिया किरिया कज्जति ? तहेव जाव वेमाणियस्स ॥

५६. जं पएसं णं भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जति तं पएसं अहिगरणिया किरिया कज्जति ? एवं तहेव जाव वेमाणियस्स । एवं एते—जस्स, जं समयं, जं देसं, जं 'पएसं णं'[6]—चत्तारि दंडगा होंति ॥

आओजियकिरिया-पदं

५७. कति णं भंते ! आओजिताओ[7] किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंच आओजिताओ किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया जाव पाणाइवायकिरिया । एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥

५८. जस्स णं भंते ! जीवस्स काइया आओजिया किरिया अत्थि तस्स अहिकरणिया आओजिया किरिया अत्थि ? जस्स अहिगरणिया आओजिया किरिया अत्थि तस्स काइया

---

१. २२।४८-५२ ।
२. जाव निरंतर (क,घ) ।
३. समय णं (क,ख); समयण्णं (ग) ।
४. प० २२।४८-५३ ।
५. देसे णं (क,घ); देस णं (ख); देसण्णं (ग) ।
६. पदेसत्तं (क,घ); पदेस णं (ख); पदेसण्णं (ग) ।
७. आतोजितातो (क,ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आओजिया किरिया अत्थि ? एवं एतेणं अभिलावेणं ते चेव चत्तारि दंडगा भाणियव्वा—जस्स, जं समयं, जं देसं, जं पदेसं जाव[1] वेमाणियाणं ॥

पुट्ठापुट्ठभाव-पदं

५९. जीवे णं भंते ! जं समयं काइयाए अहिगरणियाए पाओसियाए किरियाए पुट्ठे तं समयं पारियावणियाए किरियाए पुट्ठे ? पाणाइवायकिरियाए पुट्ठे ? गोयमा ! अत्थेगइए जीवे एगइयाओ जीवाओ जं समयं काइयाए अहिगरणियाए पाओसियाए किरियाए पुट्ठे तं समयं पारियावणियाए किरियाए पुट्ठे पाणाइवाय किरियाए पुट्ठे। अत्थेगइए जीवे एगइओ जीवाओ जं समयं काइयाए अहिगरणियाए पाओसियाए किरियाए पुट्ठे तं समयं पारियावणियाए किरियाए पुट्ठे पाणाइवायकिरियाए अपुट्ठे, अत्थेगइए जीवे एगइयाओ जीवाओ जं समयं काइयाए अहिगरणियाए पाओसियाए किरियाए पुट्ठे तं समयं पारियावणियाए किरियाए अपुट्ठे पाणाइवायकिरियाए अपुट्ठे। अत्थेगइए जीवे एगइयाओ जीवाओ जं समयं काइयाए अहिगरणियाए पाओसियाए किरियाए अपुट्ठे तं समयं पारियावणियाए किरियाए अपुट्ठे पाणाइवायकिरियाए अपुट्ठे ॥

किरियासामित्त-पदं

६०. कइ णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया मिच्छादंसणवत्तिया ॥

६१. आरंभिया णं भंते ! किरिया कस्स कज्जति ? गोयमा ! अण्णयरस्सावि पमत्तसंजयस्स ॥

६२. परिग्गहिया णं भंते ! किरिया कस्स कज्जति ? गोयमा ! अण्णयरस्सावि संजयासंजयस्स ॥

६३. मायावत्तिया णं भंते ! किरिया कस्स कज्जति ? गोयमा ! अण्णयरस्सावि अपमत्तसंजयस्स ॥

६४. अपच्चक्खाणकिरिया णं भंते ! कस्स कज्जति ? गोयमा ! अण्णयरस्सावि अपच्चक्खाणिस्स ॥

६५. मिच्छादंसणवत्तिया णं भंते ! किरिया कस्स कज्जति ? गोयमा ! अण्णयरस्सावि मिच्छदंसणिस्स ॥

६६. णेरइयाणं भंते ! कति किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

किरियाणं सहभाव-पदं

६७. जस्स णं भंते ! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तस्स परिग्गहिया किरिया कज्जति ? जस्स परिग्गहिया किरिया कज्जइ तस्स आरंभिया किरिया कज्जति ? गोयमा! जस्स णं जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तस्स परिग्गहिया किरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जइ, जस्स पुण परिग्गहिया किरिया कज्जइ तस्स आरंभिया किरिया नियमा कज्जति ॥

---

१. प० २२।४८-५६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६८. जस्स णं भंते ! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तस्स मायावत्तिया किरिया कज्जइ पुच्छा । गोयमा ! जस्स णं जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जइ तस्स मायावत्तिया किरिया णियमा कज्जइ, जस्स पुण मायावत्तिया किरिया कज्जइ तस्स आरंभिया किरिया सिय कज्जइ सिय णो कज्जइ ।।

६९. जस्स णं भंते ! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जइ तस्स अप्पच्चक्खाणकिरिया कज्जइ पुच्छा । गोयमा ! जस्स णं जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जइ तस्स अप्पच्चक्खाणकिरिया सिय कज्जइ सिय णो कज्जइ, जस्स पुण अप्पच्चक्खाणकिरिया कज्जति तस्स आरंभिया किरिया णियमा कज्जति । एवं मिच्छादंसणवत्तियाए वि समं ।।

७०. एवं परिग्गहिया वि तिहिं उवरिल्लाहिं समं चारेयव्वा ।।

७१. जस्स मायावत्तिया किरिया कज्जति तस्स उवरिल्लाओ दो वि सिय कज्जंति सिय णो कज्जंति, जस्स उवरिल्लाओ दो कज्जंति तस्स मायावत्तिया णियमा कज्जति ।।

७२. जस्स अपच्चक्खाणकिरिया कज्जति तस्स मिच्छादंसणवत्तिया किरिया सिय कज्जइ सिय णो कज्जइ, जस्स पुण मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जति तस्स अपच्चक्खाणकिरिया णियमा कज्जति ।।

७३. णेरइयस्स आइल्लियाओ चत्तारि परोप्परं णियमा कज्जंति, जस्स एताओ चत्तारि कज्जंति तस्स मिच्छादंसणवत्तिया किरिया भइज्जति, जस्स पुण मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जति तस्स एयाओ चत्तारि णियमा कज्जंति । एवं जाव थणियकुमारस्स । पुढविक्काइयस्स जाव चउरिंदियस्स पंच वि परोप्परं णियमा कज्जंति ।।

७४. पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स आइल्लियाओ तिण्णि वि परोप्परं णियमा कज्जंति, जस्स एयाओ कज्जंति तस्स उवरिल्लाओ दो भइज्जंति, जस्स उवरिल्लाओ दोण्णि कज्जंति तस्स एताओ तिण्णि वि[1] णियमा कज्जंति; जस्स अपच्चक्खाणकिरिया तस्स मिच्छादंसणवत्तिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति; जस्स पुण मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जति तस्स अप्पच्चक्खाणकिरिया णियमा कज्जति ।।

७५. मणूसस्स जहा जीवस्स । वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियस्स जहा णेरइयस्स ।।

७६. जं समयं णं भंते ! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तं समयं परिग्गहिया किरिया कज्जति ? एवं एते—जस्स, जं समयं, जं देसं, जं पदेसं णं—चत्तारि दंडगा णेयव्वा । जहा णेरइयाणं तहा सव्वदेवाणं णेयव्वं जाव वेमाणियाणं ।।

पावट्ठाणविरइ-पदं

७७. अत्थि णं भंते ! जीवाणं पाणाइवायवेरमणे कज्जति ? हंता ! अत्थि ।।

७८. कम्हि णं भंते ! जीवाणं पाणाइवायवेरमणे कज्जति ? गोयमा ! छसु जीवणिकाएसु ।।

७९. अत्थि णं भंते ! णेरइयाणं पाणाइवायवेरमणे कज्जति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं—मणूसाणं जहा जीवाणं ।।

८०. एवं मुसावाएणं जाव मायामोसेणं जीवस्स य मणूसस्स य, सेसाणं णो इणट्ठे

१. × (क,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समट्ठे, णवरं—अदिण्णादाणे गहण-धारणिज्जेसु दव्वेसु, मेहुणे रूवेसु वा रूवसहगएसु वा दव्वेसु, सेसाणं सव्वदव्वेसु[1] ।।

८१. अत्थि णं भंते ! जीवाणं मिच्छादंसणसल्लवेरमणे कज्जति ? हंता ! अत्थि ।।

८२. कम्हि णं भंते ! जीवाणं मिच्छादंसणसल्लवेरमणे कज्जइ ? गोयमा ! सव्वदव्वेसु। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं—एगिंदिय-विगलिंदियाणं णो इणट्ठे समट्ठे ।।

कम्मपगडिबंध-पदं

८३. पाणाइवायविरए णं भंते ! जीवे कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा छव्विहबंधए वा एगविहबंधए वा अबंधए वा। एवं मणूसे वि भाणियव्वे ।।

८४. पाणाइवायविरया णं भंते ! जीवा कति कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य १. ।

अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा अट्ठविहबंधगे य १. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य २. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगे य ३. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगा य ४. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अबंधगे य ५. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अबंधगा य ६. ।

अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य छव्विहबंधगे य १. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य छव्विहबंधगा य २. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगे य ३. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगा य ४. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य अबंधए य १. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य अबंधगा य २. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य अबंधगे य ३. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य अबंधगा य ४, अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगे य अबंधगे य १ अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगे य अबंधगा य २ अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगा य अबंधए य ३ अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगा य अबंधगा ४ य ।

अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य छव्विहबंधगे य अबंधगे य १. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य छव्विहबंधगे य अबंधगा य २. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य छव्विहबंधगा य अबंधगे य ३. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य छव्विहबंधगा य अबंधगा य ४. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगे य अबंधगे य ५. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगे य अबंधगा य ६. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगा य अबंधगे य ७. अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगा य अबंधगा

१. सव्वेसु दव्वेसु (क,ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य ८—एते अट्ठ भंगा। सव्वे वि मिलिया सत्तावीसं भंगा भवंति। एवं मणूसाण वि एते चेव सत्तावीसं भंगा भाणियव्वा ॥

८५. एवं मुसावायविरयस्स जाव मायामोसविरयस्स जीवस्स य मणूसस्स य ॥

८६. मिच्छादंसणसल्लविरए णं भंते ! जीवे कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा एगविहबंधए वा अबंधए वा ॥

८७. मिच्छादंसणसल्लविरए णं भंते ! णेरइए कति कम्मपगडीओ बंधति? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिए ॥

८८. मणूसे जहा[1] जीवे। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिए जहा णेरइए ॥

८९. मिच्छादंसणसल्लविरया णं भंते ! जीवा कति कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! ते चेव सत्तावीसं भंगा भाणियव्वा ॥

९०. मिच्छादंसणसल्लविरया णं भंते ! णेरइया कति कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज सत्तविहबंधगा १ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य २ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य ३। एवं जाव वेमाणिया, णवरं—मणूसाणं जहा जीवाणं ॥

किरियाभेय-पदं

९१. पाणाइवायविरयस्स णं भंते ! जीवस्स किं आरंभिया किरिया कज्जति[2] ? गोयमा ! पाणाइवायविरयस्स जीवस्स आरंभिया किरिया सिय कज्जइ सिय णो कज्जइ ॥

९२. पाणाइवायविरयस्स णं भंते ! जीवस्स परिग्गहिया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९३. पाणाइवायविरयस्स णं भंते! जीवस्स मायावत्तिया किरिया कज्जइ? गोयमा ! सिय कज्जइ सिय णो कज्जइ ॥

९४. पाणाइवायविरयस्स णं भंते ! जीवस्स अप्पच्चक्खाणवत्तिया किरिया कज्जति? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९५. मिच्छादंसणवत्तियाए पुच्छा। गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९६. एवं पाणाइवायविरयस्स मणूसस्स वि। एवं जाव मायामोसविरयस्स जीवस्स मणूसस्स य ॥

९७. मिच्छादंसणसल्लविरयस्स णं भंते ! जीवस्स किं आरंभिया किरिया कज्जति जाव मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! मिच्छादंसणसल्लविरयस्स जीवस्स आरंभिया किरिया सिय कज्जति सिय नो कज्जति। एवं जाव अप्पच्चक्खाणकिरिया। मिच्छादंसणवत्तिया किरिया नो कज्जति ॥

९८. मिच्छादंसणसल्लविरयस्स णं भंते ! णेरइयस्स किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! आरंभिया वि किरिया कज्जति जाव अपच्चक्खाणकिरिया वि कज्जति, मिच्छादंसणवत्तिया किरिया णो कज्जति। एवं

---

१. प० २२।८६।

२. कज्जति जाव मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जति (क,ख,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जावथणियकुमारस्स ॥

९९. मिच्छादंसणसल्लविरयस्स णं भंते ! पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स एवमेव पुच्छा। गोयमा ! आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मायावत्तिया किरिया कज्जइ, अपच्चक्खाण-किरिया सिय कज्जइ सिय णो कज्जइ, मिच्छादंसणवत्तिया किरिया णो कज्जति ॥

१००. मणूसस्स जहा जीवस्स। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियाणं जहा[1] णेरइयस्स ॥

अप्पाबहुय-पदं

१०१. एतासि णं भंते ! आरंभियाणं जाव मिच्छादंसणवत्तियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ मिच्छादंसण-वत्तियाओ किरियाओ, अप्पच्चक्खाणकिरियाओ विसेसाहियाओ, परिग्गहियाओ विसेसाहि-याओ आरंभियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ, मायावत्तियाओ विसेसाहियाओ ॥

---

१. प० २२।९९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेवीसइमं कम्मपगडिपयं

पढमो उद्देसओ

गाहा—

कति पगडी ? कह बंधति ? कतिहि व ठाणेहिं बंधए जीवो ?
कति वेदेइ य पयडी ? अणुभावो कतिविहो कस्स ? ॥ १ ॥

कतिपयडि-पदं

१. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं[1] वेदणिज्जं मोहणिज्जं आउयं णामं गोयं अंतराइयं ॥

२. णेरइयाणं भंते ! कति कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! एवं चेव । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

कहबंधति-पदं

३. कहण्णं भंते ! जीवे अट्ठ कम्मपगडीओ बंधइ ? गोयमा ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दंसणावरणिज्जं कम्मं णियच्छति, दंसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दंसणमोहणिज्जं कम्मं णियच्छति[2], दंसणमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मिच्छत्तं णियच्छति[3], 'मिच्छत्तेणं उदिण्णेणं'[4] गोयमा ! एवं खलु जीवे अट्ठ कम्मपगडीओ बंधइ ॥

४. कहण्णं भंते ! णेरइए अट्ठ कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! एवं चेव । एवं जाव वेमाणिए ॥

५. कहण्णं भंते ! जीवा अट्ठ कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! एवं चेव । एवं जाव वेमाणिया ॥

कतिठाणबंध-पदं

६. जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं कतिहिं ठाणेहिं बंधति ? गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं, तं जहा—रागेण य दोसेण य । रागे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—माया य लोभे य ।

---

१. दरिसणावरणिज्जं (पु) ।
२. निगच्छति (क,ख) ।
३. निग्गच्छति (क) ।
४. मलयगिरिणा 'तत एवं मिथ्यात्वोदयेन जीवोष्टौ प्रकृतीर्बध्नाति' अस्यां व्याख्यायां उदीर्णेन नैव व्याख्यातम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोसे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा— कोहे य माणे य । इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं वीरिओवग्गहिएहिं[1] एवं खलु जीवे णाणावरणिज्जं कम्मं बंधति । एवं णेरइए जाव वेमाणिए ।।

७. जीवा णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं कतिहिं ठाणेहिं बंधंति ? गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं, एवं चेव । एवं णेरइया जाव वेमाणिया ।।

८. एवं दंसणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । एवं एते एगत्त-पोहत्तिया सोलस दंडगा ।।

कतिपयडिवेद-पदं

९. जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेति ? गोयमा ! अत्थेगइए वेदेति, अत्थेगइए णो वेदेति ।।

१०. णेरइए णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेति ? गोयमा ! णियमा वेदेति । एवं जाव वेमाणिए, णवरं—मणूसे जहा जीवे ।।

११. जीवा णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेंति ? गोयमा ! एवं चेव । एवं जाव वेमाणिया ।।

१२. एवं जाव णाणावरणिज्जं तहा दंसणावरणिज्जं मोहणिज्जं अंतराइयं च । वेदणिज्जाउय-णाम-गोयाइं एवं चेव, णवरं—मणूसे वि णियमा वेदेति । एवं एते एगत्त-पोहत्तिया सोलस दंडगा ।।

कतिविधाणुभाव-पदं

१३. णाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स पुट्ठस्स बद्ध-फास-पुट्ठस्स संचियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कडस्स[2] जीवेणं णिव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स सयं वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिज्जमाणस्स गतिं पप्प ठितिं पप्प भवं पप्प पोग्गलं पप्प पोग्गलपरिणामं पप्प कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ? गोयमा ! णाणावरणिज्जस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प दसविहे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—सोयावरणे सोयाविण्णाणावरणे णेत्तावरणे णेत्तविण्णाणावरणे घाणावरणे घाणविण्णाणावरणे रसावरणे रसविण्णाणावरणे फासावरणे फासविण्णाणावरणे ।
जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं वा उदएणं जाणियव्वं ण जाणइ, जाणिउकामे वि ण याणति, जाणित्ता वि ण याणति, उच्छण्णणाणी यावि भवति णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं । एस णं गोयमा ! णाणावरणिज्जे कम्मे । एस णं गोयमा ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प दसविहे अणुभावे पण्णत्ते ।।

१४. दरिसणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स[3] °पुट्ठस्स बद्ध-फास-पुट्ठस्स संचियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कडस्स जीवेणं णिव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स सयं वा उदिण्णस्स परेणं वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिज्जमाणस्स गतिं पप्प ठितिं पप्प भवं पप्प पोग्गलं पप्प° पोग्गलपरिणामं

१. वीरियउवग्गहिएहिं (क) ।
२. कतस्स (क, घ); कयस्स (ख, ग) ।
३. सं० पा०—बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पप्प कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ? गोयमा ! दरिसणावरणिज्जस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प णवविहे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—णिद्दा णिद्दाणिद्दा पयला पयलापयला थीणद्धी[1] चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे ।
जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं वा उदएणं पासियव्वं ण पासति, पासिउकामे वि ण पासति, पासित्ता वि ण पासति, उच्छन्नदंसणी[2] यावि[3] भवति दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं । एस णं गोयमा ! दरिसणावरणिज्जे कम्मे । एस णं गोयमा ! दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प णवविहे अणुभावे पण्णत्ते ।।

१५. सातावेदणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स[4] •पुट्ठस्स बद्ध-फास-पुट्ठस्स संचियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कडस्स जीवेणं णिव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स सयं वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिज्जमाणस्स गतिं पप्प ठितिं पप्प भवं पप्प पोग्गलं पप्प° पोग्गलपरिणामं पप्प कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ? गोयमा ! सायावेदणिज्जस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प अट्ठविहे[5] अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—मणुण्णा सद्दा मणुण्णा रूवा मणुण्णा गंधा मणुण्णा रसा मणुण्णा फासा मणोसुहता वइसुहता[6] कायसुहता ।
जं वेदए पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं वा उदएणं सातावेदणिज्जं कम्मं वेदेति । एस णं गोयमा ! सातावेदणिज्जे कम्मे । एस णं गोयमा ! सातावेयणिज्जस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते ।।

१६. अस्सातावेयणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं [7]•बद्धस्स पुट्ठस्स बद्ध-फास-पुट्ठस्स संचियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कडस्स जीवेणं णिव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स सयं वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिज्जमाणस्स गतिं पप्प ठितिं पप्प भवं पप्प पोग्गलं पप्प पोग्गल-परिणामं पप्प कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ? गोयमा ! अस्सातावेदणिज्जस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—अमणुण्णा सद्दा अमणुण्णा रूवा अमणुण्णा गंधा अमणुण्णा रसा अमणुण्णा फासा मणोदुहता वइदुहता कायदुहता ।
जं वेएइ पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं वा उदएणं असायावेयणिज्जं कम्मं वेदेति । एस णं गोयमा ! असायावेदणिज्जे कम्मे° । एस

---

१. थीणगिद्धी (पु) ।
२. 'दंसणावरणणाणी (ख,घ) ; 'दंसणानाणी' (ग) ।
३. तावि (क, घ) ।
४. सं० पा०—बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं ।
५. 'ख' प्रतौ सातासातयोरालापके 'सत्तविहे अणुभावे पण्णत्ते' इति पाठोस्ति तदनुसारेण 'कायसुहता, कायदुहता' एते द्वे पदे न स्तः ।
६. वतिसुहता (क, घ) ; वयसुहता (ख ग) ।
७. सं० पा०—तहेव पुच्छा उत्तरं च, णवरं—अमणुण्णा सद्दा जाव कायदुहता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं गोयमा ! असायावेयणिज्जस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते ॥

१७. मोहणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स[1] °पुट्ठस्स बद्ध-फास-पुट्ठस्स संचियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कडस्स जीवेणं णिव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स सयं वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिज्जमाणस्स गतिं पप्प ठितिं पप्प भवं पप्प पोग्गलं पप्प पोग्गलपरिणामं पप्प° कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ? गोयमा ! मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प पंचविहे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मत्तवेयणिज्जे मिच्छत्त-वेयणिज्जे सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जे कसायवेयणिज्जे णोकसायवेयणिज्जे ।

जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं वा उदएणं मोहणिज्जं कम्मं वेदेति । एस णं गोयमा ! मोहणिज्जे कम्मे । एस णं गोयमा ! मोहणिज्जस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प पंचविहे अणुभावे पण्णत्ते ॥

१८. आउयस्स[2] णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं [3]°बद्धस्स पुट्ठस्स बद्ध-फास-पुट्ठस्स संचियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कडस्स जीवेणं णिव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स सयं वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभ-एण वा उदीरिज्जमाणस्स गतिं पप्प ठितिं पप्प भवं पप्प पोग्गलं पप्प पोग्गलपरिणामं पप्प कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ?° गोयमा ! आउयस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गल-परिणामं पप्प चउविहे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—णेरइयाउए तिरियाउए मणुयाउए देवाउए ।

जं वेइए पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं वा उदएणं आउयं कम्मं वेदेति । एस णं गोयमा ! आउए कम्मे । एस णं गोयमा ! आउ-यस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प चउव्विहे अणुभावे पण्णत्ते ॥

१९. सुभणामस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं [4]°बद्धस्स पुट्ठस्स बद्ध-फास-पुट्ठस्स संचि-यस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कडस्स जीवेणं णिव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स सयं वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिज्जमाणस्स गतिं पप्प ठितिं पप्प भवं पप्प पोग्गलं पप्प पोग्गलपरिणामं पप्प कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ? गोयमा ! सुभणामस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प चोद्दसविहे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—इट्ठा सद्दा इट्ठा रूवा इट्ठा गंधा इट्ठा रसा इट्ठा फासा इट्ठा गती इट्ठा ठिती इट्ठे लावण्णे इट्ठा जसोकित्ती इट्ठे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे इट्ठस्सरता कंतस्सरता पियस्सरता मणुण्णस्सरता ।

जं वेइए पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं वा उदएणं सुभणामं कम्मं वेदेति । एस णं गोयमा ! सुभणामे कम्मे । एस णं गोयमा !

---

१. सं० पा०—बद्धस्स जाव कतिविहे ।
२. आउस्स (ग) ।
३. सं पा०—तहेव पुच्छा ।
४. सं० पा०—पुच्छा ।

सुभणामस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प चोद्दसविहे अणुभावे पण्णत्ते ।।

२०. दुहणामस्स णं भंते ! [1]•कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स पुट्ठस्स बद्ध-फास-पुट्ठस्स संचियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कडस्स जीवेणं णिव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स सयं वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिज्जमाणस्स गतिं पप्प ठितिं पप्प भवं पप्प पोग्गलं पप्प पोग्गलपरिणामं पप्प कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुहणामस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प चोद्दसविहे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—अणिट्ठा सद्दा अणिट्ठा रूवा अणिट्ठा गंधा अणिट्ठा रसा अणिट्ठा फासा अणिट्ठा गती अणिट्ठा ठिती अणिट्ठे लावण्णे अणिट्ठा जसोकित्ती अणिट्ठे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे हीणस्सरता दीणस्सरता अणिट्ठस्सरता अकंतस्सरता ।
जं वेएइ पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं वा उदएणं दुहणामं कम्मं वेदेति । एस णं गोयमा ! दुहणामे कम्मे । एस णं गोयमा ! दुहणामस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प° चोद्दसविहे अणुभावे पण्णत्ते ।।

२१. उच्चागोयस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं [2]•बद्धस्स पुट्ठस्स बद्ध-फास-पुट्ठस्स संचियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कडस्स जीवेणं णिव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स सयं वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिज्जमाणस्स गतिं पप्प ठितिं पप्प भवं पप्प पोग्गलं पप्प पोग्गलपरिणामं पप्प कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ? गोयमा ! उच्चागोयस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—जातिविसिट्ठया कुलविसिट्ठया बलविसिट्ठया रूवविसिट्ठया तवविसिट्ठया सुयविसिट्ठया लाभविसिट्ठया इस्सरियविसिट्ठया ।
जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं वा उदएणं[3] •उच्चागोयं कम्मं वेदेति । एस णं गोयमा ! उच्चागोए कम्मे । एस णं गोयमा ! उच्चागोयस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प° अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते ।।

२२. णीयागोयस्स[4] णं भंते ! [5]•कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स पुट्ठस्स बद्ध-फास-पुट्ठस्स संचियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कडस्स जीवेणं णिव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स सयं वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिज्जमाणस्स गतिं पप्प ठितिं पप्प भवं पप्प पोग्गलं पप्प पोग्गल-

---

१. सं० पा०—पुच्छा । गोयमा ! एवं चेव, णवरं—अणिट्ठा सद्दा जाव हीणस्सरता दीणस्सरता अणिट्ठस्सरता अकंतस्सरता जं वेदेति सेसं तं चेव जाव चोद्दसविहे ।

२. सं० पा०—पुच्छा ।

३. सं० पा०—उदएणं जाव अट्ठविहे

४. णीतागोतस्स (क, घ)

५. सं० पा०—पुच्छा । गोयमा ! एवं चेव, णवरं—जातिविहीणया जाव इस्सरियविहीणया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिणामं पप्प कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ? गोयमा ! णीयागोयस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—जातिविहीणया कुलविहीणया बलविहीणया रूवविहीणया तवविहीणया सुयविहीणया लाभविहीणया इस्सरियविहीणया° ।

जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं तेसिं वा उदएणं [1]•णीयागोयं कम्मं वेदेति । एस णं गोयमा ! णीयागोए कम्मे । एस णं गोयमा ! णीयागोयस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प° अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते ।।

२३. अंतराइस्स णं भंते ! कम्मस्स जीवेणं [2]•बद्धस्स पुट्ठस्स बद्ध-फास-पुट्ठस्स संचियस्स चियस्स उवचियस्स आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेणं कडस्स जीवेणं णिव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स सयं वा उदिण्णस्स परेण वा उदीरियस्स तदुभएण वा उदीरिज्जमाणस्स गतिं पप्प ठितिं पप्प भवं पप्प पोग्गलं पप्प पोग्गलपरिणामं पप्प कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ?° गोयमा ! अंतराइयस्स णं कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प पंचविहे अणुभावे पण्णत्ते, तं जहा—दाणंतराए लाभंतराए भोगंतराए उवभोगंतराए वीरियंतराए ।

जं वेदेति पोग्गलं वा पोग्गले वा पोग्गलपरिणामं वा वीससा वा पोग्गलाणं परिणामं, तेसिं वा उदएणं अंतराइयं कम्मं वेदेति । एस णं गोयमा ! अंतराइए कम्मे । एस णं गोयमा ! अंतराइयस्स कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प पंचविहे अणुभावे पण्णत्ते ।।

बीओ उद्देसो

मूलोत्तरपयडिभेद-पदं

२४. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ।।

२५. णाणावरणिज्जे णं भंते पण्णत्ते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणावरणिज्जे सुयणाणावरणिज्जे ओहिणाणावरणिज्जे मणपज्जवणाणावरणिज्जे केवलणाणावरणिज्जे ।।

२६. दरिसणावरणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—णिद्दापंचए य दंसणचउक्कए य ।।

२७. णिद्दापंचए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—णिद्दा जाव[3] थीणद्धी[4] ।।

२८. दंसणचउक्कए णं भंते ! [5]•कतिविहे पण्णत्ते ?° गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—चक्खुदंसणावरणिज्जे जाव[6] केवलदंसणावरणिज्जे ।।

२९. वेयणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं

१. सं० पा०—उदएणं जाव अट्ठविहे ।
२ सं० पा०—पुच्छा ।
३. प० २३/१४ ।
४. थीणगिद्धे (क), थीणगिद्धी (घ) ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।
६. प० २३।१४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा—सातावेदणिज्जे य असातावेयणिज्जे य ॥

३०. सातावेयणिज्जे णं भंते ! कम्मे [1]•कतिविहे पण्णत्ते ?° गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा— मणुण्णा सद्दा जाव[2] कायसुहया ॥

३१. अस्सायावेदणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा— अमणुण्णा सद्दा जाव[3] कायदुहया ॥

३२. मोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा दुविहे पण्णत्ते, तं जहा— दंसणमोहणिज्जे य चरित्तमोहणिज्जे य ॥

३३. दंसणमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सम्मत्तवेयणिज्जे मिच्छत्तवेयणिज्जे[4] सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जे ॥

३४. चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा— कसायवेयणिज्जे य णोकसायवेयणिज्जे य ॥

३५. कसायवेयणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविहे पण्णत्ते, तं जहा— अणंताणुबंधी कोहे अणंताणुबंधी माणे अणंताणुबंधी माया अणंताणुबंधी लोभे, अपच्चक्खाणे कोहे एवं माणे माया लोभे, पच्चक्खाणावरणे कोहे एवं माणे माया लोभे, संजलणे कोहे एवं माणे माया लोभे ॥

३६. णोकसायवेयणिज्जे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! णवविहे पण्णत्ते, तं जहा—इत्थिवेए पुरिसवेए णपुंसगवेदे हासे रती अरती भए[5] सोगे दुगुंछा ॥

३७. आउए णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—णेरइयाउए जाव[6] देवाउए ॥

३८. णामे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! बायालीसविहे[7] पण्णत्ते, तं जहा— गतिणामे जाइणामे सरीरणामे सरीरंगोवंगणामे सरीरबंधणणामे सरीरसंघायणामे[8] संघयणणामे संठाणणामे वण्णणामे गंधणामे रसणामे फासणामे अगुरुलहुणामे उवघायणामे पराघायणामे आणुपुव्वीणामे उस्सासणामे आयवणामे उज्जोयणामे विहायगतिणामे[9] तसणामे थावरणामे सुहुमणामे बादरणामे पज्जत्तगणामे[10] अपज्जत्तगणामे[11] साहारणसरीरणामे पत्तेयसरीरणामे थिरणामे अथिरणामे सुभणामे असुभणामे सुभगणामे दूभगणामे सूसरणामे[12] दूसरणामे आदेज्जणामे अणादेज्जणामे जसोकित्तिणामे अजसोकित्तिणामे णिम्माणणामे तित्थगरणामे ॥

३९. गतिणामे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—णिरयगतिणामे तिरियगतिणामे मणुयगतिणामे देवगतिणामे ॥

---

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. प० २३।१५ ।
३. प० २३।१६ ।
४. °वेयणिज्जे य (क, ख, घ) ।
५. भये (क, ख, घ) ।
६. प० २३।१८ ।
७. बातालीसतिविहे (क, ख, घ) ।
८. °संघायणणामे (ग) ।
९. विहायो° (ग) ।
१०. पज्जत्तणामे (ख,ग) ।
११. अपज्जत्तणामे (ख, ग) ।
१२. सुसरणामे (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०. जाइणामे णं भंते ! कम्मे '•कतिविहे पण्णत्ते ?° गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियजाइणामे जाव पंचेंदियजाइणामे ।।

४१. सरीरणामे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियसरीरणामे जाव कम्मगसरीरणामे ।।

४२. सरीरंगोवंगणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियसरीरंगोवंगणामे वेउव्वियसरीरंगोवंगणामे आहारगसरीरंगोवंगणामे ।।

४३. सरीरबंधणणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियसरीरबंधणणामे जाव कम्मगसरीरबंधणणामे ।।

४४. सरीरसंघायणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा – ओरालियसरीरसंघातणामे जाव कम्मगसरीरसंघायणामे ।।

४५. संघयणणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—वइरोसभणारायसंघयणणामे उसभणारायसंघयणणामे णारायसंघयणणामे अद्धणारायसंघयणणामे खीलियासंघयणणामे[2] छेवट्टसंघयणणामे[3] ।।

४६. संठाणणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—समचउरंससंठाणणामे णग्गोहपरिमंडलसंठाणणामे[4] सातिसंठाणणामे 'वामणसंठाणणामे खुज्जसंठाणणामे'[5] हुंडसंठाणणामे ।।

४७. वण्णणामे णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालवण्णणामे जाव सुक्किलवण्णणामे ।।

४८. गंधणामे णं भंते ! कम्मे पुच्छा । गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुरभिगंधणामे दुरभिगंधणामे ।।

४९. रसणामे णं पुच्छा । गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—तित्तरसणामे जाव महुररसणामे ।।

५०. फासणामे णं पुच्छा । गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—कक्खडफासणामे जाव लुक्खफासणामे ।।

५१. अगुरुलहुअणामे एगागारे पण्णत्ते ।।

५२. उवघायणामे एगागारे पण्णत्ते ।।

५३. पराघायणामे एगागारे पण्णत्ते ।।

५४. आणुपुव्विणामे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा – णेरइयाणुपुव्विणामे जाव देवाणुपुव्विणामे ।।

५५. उस्सासणामे एगागारे पण्णत्ते ।।

५६. सेसाणि सव्वाणि एगागाराइं पण्णत्ताइं जाव तित्थगरणामे, णवरं—विहायगति

---

१. सं० पा०—पुच्छा ।

२. कीलिया° (क, ख, ग) ।

३. छेवट्ठ° (ख, घ) ।

४. णिग्गोह° (ख) ।

५. खुज्जे वामणे (ठाणं ६।३१) ।

णामे[1] दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थविहायगतिणामे[2] य अपसत्थविहायगतिणामे[3] य ।।

५७. गोए णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उच्चागोए य णीयागोए य ।।

५८. उच्चागोए णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—जाइविसिट्ठया जाव[4] इस्सरियविसिट्ठिया । एवं णीयागोए वि, णवरं–जातिविहीणया जाव[5] इस्सरियविहीणया ।।

५९. अंतराइए णं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दाणंतराइए जाव[6] वीरियंतराइए ।।

कम्मपयडीणं ठिइ-पदं

६०. णाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; तिण्णि[7] य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

६१. निद्दापंचयस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया[8], उक्कोसेणं तीसं सारोवमकोडाकोडीओ; तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

६२. दंसणचउक्कस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

६३. सातावेयणिज्जस्स इरियावहियबंधगं पडुच्च अजहण्णमणुक्कोसेणं दो समया, संपराइयबंधगं पडुच्च जहण्णेणं बारस मुहुत्ता, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमकोडाकोडीओ; पण्णरस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

६४. असायावेयणिज्जस्स जहण्णेणं सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; तिण्णि व वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

६५. सम्मत्तवेयणिज्जस्स पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं साइरेगाइं ।।

६६. मिच्छत्तवेयणिज्जस्स जहण्णेणं सागरोवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं सत्तरिं कोडाकोडीओ; सत्त य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।

६७. सम्मामिच्छत्तवेदणिज्जस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

---

१. विहायो° (ग) ।
२. °विहागति° (क, घ); °विहायो° (ग) ।
३. °विहागति° (क, घ); °विहायो° (ग) ।
४. प० २३।२१ ।
५. प० २३।२२ ।
६. प० २३।२३ ।
७. इदमपृष्टस्य व्याकरणम् (हवृ) ।
८. ऊणता (क,घ); ऊणिया (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६८. कसायवारसगस्स जहण्णेणं सागरोवमस्स चत्तारि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; चत्तालीसं वाससताइं अबाहा[1], •अबाहूणिया कम्मठिती—कम्म°णिसेगो ।।

६९. कोहसंजलणाए[2] पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं दो मासा, उक्कोसेणं चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; चत्तालीसं वाससताइं[3] •अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्म°-णिसेगो ।।

७०. माणसंजलणाए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं मासं, उक्कोसेणं जहा कोहस्स ।।

७१. मायासंजलणाए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अद्धमासं, उक्कोसेणं जहा कोहस्स ।।

७२. लोभसंजलणाए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं जहा कोहस्स ।।

७३. इत्थिवेदस्स णं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमकोडाकोडीओ; पण्णरस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

७४. पुरिसवेयस्स णं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ संवच्छराइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ; दस य वाससयाइं अबाहा[4] •अबाहूणिया कम्मठिती—कम्म°-निसेगो ।।

७५. नपुंसगवेदस्स णं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दुण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; वीसतिं वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

७६. हास-रतीणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स एक्कं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणं, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ; दस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

७७. अरइ-भय-सोग-दुगुंछाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; वीसतिं वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

७८. णेरइयाउयस्स णं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं[5] उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीतिभागमब्भहियाइं ।।

७९. तिरिक्खजोणियाउयस्स पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडितिभागमब्भहियाइं । एवं मणूसाउयस्स वि ।।

८०. देवाउयस्स जहा णेरइयाउयस्स ठिति त्ति ।।

८१. णिरयगतिणामाए[6] णं भंते ! कम्मस्स पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवम-

१. सं पा०—अबाहा जाव णिसेगो ।
२. °संजलणे (क,ख,ग,घ) ।
३. सं० पा०—वाससताइं जाव णिसेगो ।
४. सं० पा०—अबाहा जाव णिसेगो ।
५. °मब्भइयाइं (क,घ) ।
६. °णामए (क,ख,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहस्सस्स दो सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; वीस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

८२. तिरियगतिणामाए जहा[1] णपुंसगवेदस्स ॥

८३. मणुयगतिणामाए पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमकोडाकोडीओ; पण्णरस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

८४. देवगतिणामाए णं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमसहस्सस्स एक्कं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं जहा[2] पुरिसवेयस्स ॥

८५. एगिंदियजाइणामाए णं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; 'वीस य'[3] वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती— कम्मणिसेगो ॥

८६. बेइंदियजातिणामाए णं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स णव पणतीसतिभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ; अट्ठारस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

८७. तेइंदियजाइणामाए णं जहण्णेणं एवं[4] चेव, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ; अट्ठारस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

८८. चउरिंदियजाइणामाए णं पुच्छा। जहण्णेणं सागरोवमस्स नव पणतीसतिभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ; अट्ठारस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

८९. पंचेंदियजाइणामाए णं पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; वीस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो। ओरालियसरीरणामाए वि एवं चेव ॥

९०. वेउव्वियसरीरणामाए णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; वीस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती— कम्मणिसेगो ॥

९१. आहारगसरीरणामाए जहण्णेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेण वि अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ ॥

९२. तेया-कम्मसरीरणामाए जहण्णेणं [सागरोवमस्स ?]दोण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवकोडाकोडीओ; वीस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो। ओरालिय-वेउव्विय-आहारगसरीरंगोवंगणामाए तिण्णि वि एवं चेव। सरीरबंधणणामाए वि पंचण्ह वि एवं चेव ॥

---

१. प० २३।७५।
२. प० २३।७४।
३. वीसइ (क,ख,ग,घ)।
४. प० २३।८६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६३. सरीरसंघायणामाए वि पंचण्ह वि जहा[1] सरीरणामाए कम्मस्स ठिति त्ति ॥

६४. वइरोसभणारायसंघयणणामाए जहा[2] रतिणामाए ॥

६५. उसभणारायसंघयणणामाए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स छ पणतीसतिभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं बारस सागरोवमकोडाकोडीओ; बारस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

६६. णारायसंघयणणामाए जहण्णेणं सागरोवमस्स सत्त पणतीसतिभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं चोद्दस सागरोवमकोडाकोडीओ; चोद्दस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

६७. अद्धणारायसंघयणणामस्स जहण्णेणं सागरोवमस्स अट्ठ पणतीसतिभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं सोलस सागरोवमकोडाकोडीओ; सोलस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

६८. खीलियासंघयणे[3] णं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स णव पणतीसतिभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ; अट्ठारस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

६९. छेवट्टसंघयणणामस्स पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; वीस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती – कम्मणिसेगो ॥

१००. एवं जहा संघयणणामाए छ भणिया एवं संठाणाए वि छ भाणियव्वा ॥

१०१. सुक्किलवण्णनामाए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स एगं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखिज्जइभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ; दस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

१०२. हालिद्दवण्णणामाए[4] पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स पंच अट्ठावीसतिभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं अद्धतेरस सागरोवमकोडाकोडीओ; अद्धतेरस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

१०३. लोहियवण्णणामाए णं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स छ अट्ठावीसतिभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमकोडाकोडीओ; पण्णरस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

१०४. णीलवण्णणामाए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स सत्त अट्ठावीसतिभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं अद्धट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ; अद्धट्ठारस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

१०५. कालवण्णणामाए जहा[5] छेवट्टसंघयणस्स ॥

१०६. सुब्भिगंधणामाए पुच्छा । गोयमा ! जहा[6] सुक्किलवण्णणामस्स ॥

---

१. प० २३।८९-९२ ।
२. प० २३।७६ ।
३. कीलिया° (ग) ।
४. हलिद्द° (क,घ) ।
५. प० २३।९९ ।
६. प० २३।१०१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०७. दुब्भिगंधणामाए जहा[1] छेवट्टसंघयणस्स ॥

१०८. रसाणं महुरादीणं जहा[2] वण्णाणं भणियं तहेव परिवाडीए भाणियव्वं ॥

१०९. फासा जे अपसत्था तेसिं जहा[3] छेवट्टस्स, जे पसत्था तेसिं जहा[4] सुक्किलवण्णणामस्स ॥

११०. अगुरुलहुणामाए जहा[5] छेवट्टस्स । एवं उवघायणामाए वि । पराघायणामाए वि एवं चेव ॥

१११. णिरयाणुपुव्विणामाए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; वीस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

११२. तिरियाणुपुव्वीए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दो सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा, उक्कोसेणं वीसं सागरवमकोडाकोडीओ; वीस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

११३. मणुयाणुपुव्विणामाए णं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवमकोडाकोडीओ; पण्णरस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

११४. देवाणुपुव्विणामाए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमसहस्सस्स एगं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ; दस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

११५. उस्सासणामाए पुच्छा । गोयमा ! जहा[6] तिरियाणुपुव्वीए । आयवणामाए वि एवं चेव, उज्जोवणामाए वि ॥

११६. पसत्थविहायगतिणामाए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं एगं सागरोवमस्स सत्तभागं, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ; दस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

११७. अपसत्थविहायगतिणामस्स पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; वीस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो । तसणामाए थावरणामाए य एवं चेव ॥

११८. सुहुमणामाए पुच्छा । गोयमा जहण्णेणं सागरोवमस्स णव पणतीसतिभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ; अट्ठारस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

११९. बादरणामाए जहा[7] अप्पसत्थविहायगतिणामस्स ॥

---

१. प० २३।९९ ।
२. प० २३।१०१-१०५ ।
३. प० २३।९९ ।
४. प० २३।१०१ ।
५. प० २३।९९ ।
६. प० २३।११२ ।
७. प० २३।११७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२०. एवं पज्जत्तगणामाए वि । अपज्जत्तगणामाए जहा[1] सुहुमणामस्स ।।

१२१. पत्तेयसरीरणामाए वि दो सत्तभागा । साहारणसरीरणामाए जहा[2] सुहुमस्स ।।

१२२. थिरणामाए एगं सत्तभागं । अथिरणामाए दो ।।

१२३. सुभणामाए एगो । असुभणामाए दो ।।

१२४. सुभगणामाए एगो । दूभगणामाए दो ।।

१२५. सूसरणामाए एगो । दूसरणामाए दो ।।

१२६. आएज्जणामाए एगो । अणाएज्जणामाए दो ।।

१२७. जसोकित्तिणामाए जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ता, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ; दस य वाससताइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

१२८. अजसोकित्तिणामाए पुच्छा । गोयमा ! जहा[3] अपसत्थविहायगतिणामस्स । एवं णिम्माणणामाए वि ।।

१२९. तित्थगरणामाए णं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेण वि अंतोसागरोवकोडाकोडीओ ।।

१३०. एवं जत्थ एगो सत्तभागो तत्थ उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ; दस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो । जत्थ दो सत्तभागा तत्थ उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडाओ वीस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

१३१. उच्चागोयस्स पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ता, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ; दस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

१३२. णीयागोयस्स पुच्छा । गोयमा ! जहा[4] अप्पसत्थविहायगतिणामस्स ।।

१३३. अंतराइयस्स णं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ।।

एगिंदिएसु कम्मपयडीणं ठिइबंध-पदं

१३४. एगिंदिया णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागे पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति । एवं णिद्दापंचकस्स वि दंसणचउक्कस्स वि ।।

१३५. एगिंदिया णं भंते ! जीवा सातावेयणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति ।।

१३६. असायावेयणिज्जस्स जहा[5] णाणावरणिज्जस्स ।।

१३७. एगिंदिया णं भंते ! जीवा सम्मत्तवेयणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा णत्थि किंचि बंधंति ।।

१-२. प० २३।११८ ।
३-४. प० २३।११७ ।
५. प० २३।१३४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३८. एगिंदिया णं भंते ! जीवा मिच्छत्तवेयणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति ॥

१३९. एगिंदिया णं भंते ! जीवा सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जस्स किं बंधंति ? गोयमा ! णत्थि किंचि बंधंति ॥

१४०. एगिंदिया णं भंते ! कसायबारसगस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स चत्तारि सत्तभागे पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति । एवं कोहसंजलणाए वि जाव लोभसंजलणाए वि ॥

१४१. इत्थिवेयस्स जहा[1] सायावेयणिज्जस्स ॥

१४२. एगिंदिया पुरिसवेदस्स कम्मस्स जहण्णेणं सागरोवमस्स एक्कं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति ॥

१४३. एगिंदिया णपुंसगवेदस्स कम्मस्स जहण्णेणं सागरोवमस्स दो सत्तभागे पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति ॥

१४४. हास-रतीए जहा[2] पुरिसवेयस्स ॥

१४५. अरति-भय-सोग-दुगुंछाए जहा[3] णपुंसगवेयस्स ॥

१४६. णेरइयाउय देवाउय णिरयगतिणाम देवगतिणाम वेउव्वियसरीरणाम आहारगसरीरणाम णेरइयाणुपुव्विणाम देवाणुपुव्विणाम तित्थगरणाम[4] एयाणि[5] पयाणि ण बंधंति ॥

१४७. तिरिक्खजोणियाउयस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिं[6] सत्तहिं वाससहस्सेहिं वाससहस्सतिभागेण य अहियं बंधंति । एवं मणुस्साउयस्स वि ॥

१४८. तिरियगतिणामाए जहा[7] णपुंसगवेदस्स ॥

१४९. मणुयगतिणामाए जहा[8] सातावेदणिज्जस्स ॥

१५०. एगिंदियजाइणामाए पंचेंदियजातिणामाए य जहा[9] णपुंसगवेदस्स ॥

१५१. बेइंदिय-तेइंदियजातिणामाए जहण्णेणं सागरोवमस्स णव पणतीसतिभागे पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति ॥

१५२. चउरिंदियनामाए वि जहण्णेणं सागरोवमस्स णव पणतीसतिभागे पलिओवमस्स असंखिज्जइभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति ।
एवं जत्थ जहण्णगं दो सत्तभागा तिण्णि वा चत्तारि वा सत्तभागा अट्ठावीसतिभागा भवंति तत्थ णं जहण्णेणं ते चेव पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा भाणियव्वा,- उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति । जत्थ णं जहण्णेणं एगो वा दिवड्ढो वा सत्तभागो तत्थ जहण्णेणं तं चेव भाणियव्वं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति ॥

---

१. प० २३।१३५ ।
२. प० २३।१४२ ।
३. प० २३।१४३ ।
४. विभक्तिरहितं पदम् ।
५. एयाणि णव (ग) ।
६. पुव्वकोडी (क,ख,ग,घ) ।
७. प० २३।१४३ ।
८. प० २३।१३५ ।
९. प० २३।१४३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५३. जसोकित्ति-उच्चागोयाणं जहण्णेणं सागरोवमस्स एगं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति ।।

१५४. अंतराइयस्स णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! जहा[1] णाणावरणिज्जस्स जाव उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति ।।

बेइंदिएसु कम्मपयडीणं ठिइबंध-पदं

१५५. बेइंदिया णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमपणुवीसाए तिण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति । एवं णिद्दापंचगस्स वि ।।

१५६. एवं जहा एगिंदियाणं भणियं तहा बेइंदियाण वि भाणियव्वं, णवरं—सागरोवमपणुवीसाए[2] सह भाणियव्वा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणा, सेसं तं चेव, जत्थ एगिंदिया ण बंधंति तत्थ एते वि ण बंधंति ।।

१५७ बेइंदिया णं भंते ! जीवा मिच्छत्तवेयणिज्जस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमपणुवीसं पलिओवमस्स असंखिज्जइभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति ।।

१५८. तिरिक्खजोणियाउअस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिं चउहिं वासेहिं अहियं बंधंति । एवं मणुयाउअस्स वि ।।

१५९. सेसं जहा एगिंदियाणं जाव अंतराइयस्स ।।

तेइंदिएसु कम्मपयडीणं ठिइबंध-पदं

१६०. तेइंदिया णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमपण्णासाए तिण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणया, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति । एवं जस्स जइ भागा ते तस्स सागरोवमपण्णासाए सह भाणियव्वा ।।

१६१. तेइंदिया णं भंते !जीवा मिच्छत्तवेयणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमपण्णासं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति ।।

१६२. तिरिक्खजोणियाउअस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिं सोलसहिं राइंदिएहिं राइंदियतिभागेण य अहियं बंधंति । एवं मणुस्साउयस्स वि ।।

१६३. सेसं जहा बेइंदियाणं जाव अंतराइयस्स ।।

चउरिंदिएसु कम्मपयडीणं ठिइबंध-पदं

१६४. चउरिंदिया णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमसयस्स तिण्णि सत्तभागे पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति । एवं जस्स जइ भागा ते तस्स सागरोवमसतेण सह भाणियव्वा ।।

१६५. तिरिक्खजोणियाउअस्स कम्मस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिं

---

१. प० २३।१३४।   २. °पणुवीसा (क,ख,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोहिं मासेहिं अहियं । एवं मणुस्साउअस्स वि ॥

१६६. सेसं जहा बेइंदियाणं, णवरं—मिच्छत्तवेयणिज्जस्स जहण्णेणं सागरोवमसतं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति । [सेसं जहा बेइंदियाणं[1]] जाव अंतराइयस्स ॥

असण्णीसु कम्मपयडीणं ठिइबंध-पदं

१६७. असण्णी णं भंते ! जीवा पंचेंदिया णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमसहस्सस्स तिण्णि सत्तभागे पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे बंधंति । एवं सो चेव गमो जहा बेइंदियाणं, णवरं—सागरोवमसहस्सेण समं भाणियव्वा जस्स जति भाग त्ति ॥

१६८. मिच्छत्तवेदणिज्जस्स जहण्णेणं सागरोवमसहस्सं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं ॥

१६९. णेरइयाउअस्स जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडितिभागमब्भहियं बंधंति ॥

१७०. एवं तिरिक्खजोणियाउयस्स वि, णवरं—जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं । एवं मणुस्साउयस्स वि । देवाउयस्स जहा णेरइयाउयस्स ॥

१७१. असण्णी णं भंते ! जीवा पंचेंदिया णिरयगतिणामाए कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तभागे पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं ते चेव पडिपुण्णे ॥

१७२. एवं तिरियगतीए वि । मणुयगतिणामाए वि एवं चेव, णवरं—जहण्णेणं सागरोवमसहस्सस्स दिवड्ढं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं बंधंति । एवं देवगतिणामाए वि, णवरं—जहण्णेणं सागरोवमसहस्सस्स एगं सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तं चेव पडिपुण्णं ॥

१७३ वेउव्वियसरीरणामाए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमसहस्सस्स दो सत्तभागे पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणए, उक्कोसेणं दो पडिपुण्णे बंधंति ॥

१७४. सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-आहारगसरीरणामाए तित्थगरणामाए य ण किंचि बंधंति ॥

१७५. अवसिट्ठं जहा बेइंदियाणं, णवरं—जस्स जत्तिया भागा तस्स ते सागरोवमसहस्सेणं सह भाणियव्वा सव्वेसिं आणुपुव्वीए जाव अंतराइयस्स ॥

सण्णीसु कम्मपयडीणं ठिइबंध-पदं

१७६. सण्णी णं भंते ! जीवा पंचेंदिया णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

१७७. सण्णी णं भंते ! पंचेंदिया णिद्दापंचगस्स किं बंधंति ? गोयमा ? जहण्णेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; तिण्णि य वास-

---

१. एष पाठः पुनरावृत्तिरूपोस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

१७८. दंसणचउक्कस्स जहा णाणावरणिज्जस्स ॥

१७९. सातावेदणिज्जस्स जहा ओहिया ठिती भणिया तहेव भाणियव्वा इरियावहिय-बंधयं पडुच्च संपराइयबंधयं च ॥

१८०. असातावेयणिज्जस्स जहा णिद्दापंचगस्स ॥

१८१. सम्मत्तवेदणिज्जस्स सम्मामिच्छत्तवेदणिज्जस्स य जा ओहिया ठिती भणिया तं बंधंति ॥

१८२. मिच्छत्तवेदणिज्जस्स जहण्णेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेणं सत्तरिं सागरोवमकोडाकोडीओ; सत्त य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

१८३. कसायबारसगस्स जहण्णेणं एवं चेव, उक्कोसेणं चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ; चत्तालीस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

१८४. कोह-माण-माया-लोभसंजलणाए य दो मासा मासो अद्धमासो अंतोमुहुत्तो एयं जहण्णगं, उक्कोसगं पुण जहा कसायबारसगस्स ॥

१८५. चउण्ह वि आउयाणं जा ओहिया ठिती भणिया तं बंधंति ॥

१८६. आहारगसरीरस्स तित्थगरणामाए य जहण्णेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेण वि अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ बंधंति ॥

१८७. पुरिसवेदस्स जहण्णेणं अट्ठ संवच्छराइं, उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडाकोडीओ; दस य वाससयाइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिती—कम्मणिसेगो ॥

१८८. जसोकित्तिणामाए उच्चागोयस्स य एवं चेव, णवरं—जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ता ॥

१८९. अंतराइयस्स जहा णाणावरणिज्जस्स ॥

१९०. सेसएसु सव्वेसु ठाणेसु संघयणेसु संठाणेसु वण्णेसु गंधेसु य जहण्णेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेणं जा जस्स ओहिया ठिती भणिया तं बंधंति, णवरं इमं णाणत्तं—अबाहा अबाहूणिया ण वुच्चति । एवं आणुपुव्वीए सव्वेसिं जाव अंतराइयस्स ताव भाणियव्वं ॥

जहण्णठिइबंधग-पदं

१९१. णाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स जहण्णठितिबंधए के ? गोयमा ! अण्णयरे सुहुमसंपराए—उवसामए वा खवए[1] वा, एस णं गोयमा ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स जहण्णठितिबंधए, तव्वइरित्ते अजहण्णे । एवं एतेणं अभिलावेणं मोहाउयवज्जाणं सेसकम्माणं भाणियव्वं ॥

१९२. मोहणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स जहण्णठितिबंधए के ? गोयमा ! अण्णयरे बायरसंपराए—उवसामए वा खवए वा, एस णं गोयमा ! मोहणिज्जस्स कम्मस्स जहण्णठितिबंधए, तव्वतिरित्ते अजहण्णे ॥

१९३. आउयस्स णं भंते ! कम्मस्स जहण्णठितिबंधए के ? गोयमा ! जे णं जीवे

१. खवगए (क,ग,घ); खमए (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंखेप्पद्धप्पविट्ठे[1] सव्वणिरुद्धे से आउए, सेसे सव्वमहंतीए आउयबंधद्धाए, तीसे णं आउय-बंधद्धाए चरिमकालसमयंसि सव्वजहण्णियं ठिइं[2] पज्जत्तापज्जत्तियं णिव्वत्तेति। एस णं गोयमा ! आउयकम्मस्स जहण्णठितिबंधए, तव्वइरित्ते अजहण्णे ।।

उक्कोसठिइबंधग-पदं

१९४. उक्कोसकालठितीयं णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं किं णेरइओ बंधति तिरिक्खजोणिओ बंधति तिरिक्खजोणिणी बंधति मणुस्सो बंधति मणुस्सी बंधति देवो बंधति देवी बंधति ? गोयमा ! णेरइओ वि बंधति जाव देवी वि बंधति ।।

१९५. केरिसए णं भंते ! णेरइए उक्कोसकालठितीयं णाणावरणिज्जं कम्मं बंधति ? गोयमा ! सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्ते सागारे जागरे सुतोवउत्ते[3] मिच्छा-दिट्ठी कण्हलेसे उक्कोससंकिलिट्ठपरिणामे ईसिमज्झिमपरिणामे वा, एरिसए णं गोयमा ! णेरइए उक्कोसकालठितीयं णाणावरणिज्जं कम्मं बंधति ।।

१९६. केरिसए णं भंते ! तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालठितीयं णाणावरणिज्जं कम्मं बंधति ? गोयमा ! कम्मभूमए वा कम्मभूमगपलिभागी वा सण्णी पंचेंदिए सव्वाहिं पज्ज-त्तीहिं पज्जत्तए, सेसं तं चेव जहा णेरइयस्स । एवं तिरिक्खजोणिणी वि, मणूसे वि मणूसी वि । देव-देवी जहा णेरइए ।।

१९७. एवं आउयवज्जाणं सत्तण्हं कम्माणं ।।

१९८. उक्कोसकालठितीयं णं भंते ! आउयं कम्मं किं णेरइओ बंधइ जाव देवी बंधइ ? गोयमा ! णो णेरइओ बंधति, तिरिक्खजोणिओ बंधति, णो तिरिक्खजोणिणी बंधति, मणुस्सो वि बंधति, मणुस्सी वि बंधति, णो देवो बंधति, णो देवी बंधति ।।

१९९. केरिसए णं भंते ! तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालठितीयं आउयं कम्मं बंधति ? गोयमा ! कम्मभूमए वा कम्मभूमगपलिभागी वा सण्णी पंचेंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए सागारे जागरे सुतोवउत्ते मिच्छद्दिट्ठी परमकिण्हलेस्से उक्कोससंकिलिट्ठपरिणामे, एरिसए णं गोयमा ! तिरिक्खजोणिए उक्कोसकालठितीयं आउयं बंधति ।।

२००. केरिसए णं भंते ! मणूसे उक्कोसकालठितीयं आउयं कम्मं बंधति ? गोयमा ! कम्मभूमगे वा कम्मभूमगपलिभागी वा[4] °सण्णी पंचेंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए सागारे जागरे° सुतोवउत्ते सम्मद्दिट्ठी वा मिच्छद्दिट्ठी वा कण्हलेसे वा सुक्कलेसे वा णाणी वा अण्णाणी वा उक्कोससंकिलिट्ठपरिणामे वा तप्पाउग्गविसुज्झमाणपरिणामे वा, एरिसए णं गोयमा ! मणूसे उक्कोसकालठिईयं आउयं कम्मं बंधति ।।

२०१. केरिसिया णं भंते ! मणूसी उक्कोसकालठितीयं आउयं कम्मं बंधति ? गोयमा ! कम्मभूमिगा वा कम्मभूमगपलिभागी वा[5] °सण्णी पंचेंदिया सव्वाहिं पज्जत्तीहिं

---

१. असंखेप्पद्धापविट्ठे (क) ।

२. ठियं (क,ख,ग,घ); मलयगिरिणा 'स्थिति-मितिगम्यते' इति लिखितम्, तेनानुमीयते वृत्तिकारेण नासौ पाठः साक्षाल्लब्धः ।

३. सुत्तोवउत्ते (क) ।

४. सं० पा०—कम्मभूमगपलिभागी वा जाव सुत्तोवउत्ते ।

५. सं० पा०—कम्मभूमगपलिभागी वा जाव सुत्तोवउत्ता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जत्तीया सागारा जागरा° सुतोवउत्ता सम्मद्दिट्ठी सुक्कलेस्सा तप्पाउग्गविसुज्झमाणपरि-णामा एरिसिया णं गोयमा! मणुस्सी उक्कोसकालठितीयं आउयं कम्मं बंधति ॥

२०२. अंतराइयं[1] जहा णाणावरणिज्जं ॥

१. 'एवं आउयवज्जाणं सत्तण्हं कम्माणं १९८' इति सूत्रस्य सन्दर्भे प्रस्तुतसूत्रस्य पुनरावृत्तिः परिभाव्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउवीसइमं कम्मबंधपयं

१. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा––णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥

२. जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा छव्विहबंधए वा ॥

३. णेरइए णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा। एवं जाव वेमाणिए, णवरं––मणूसे जहा जीवे ॥

४. जीवा णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणा कति कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य १ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगे य २ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगा य ३ ॥

५. णेरइया णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणा कति कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा १ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य २ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य ३, तिण्णि भंगा। एवं जाव थणियकुमारा ॥

६. पुढविक्काइयाणं पुच्छा। गोयमा ! सत्तविहबंधगा वि अट्ठविहबंधगा वि। एवं जाव वणस्सतिकाइया ॥

७. वियलाणं पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण य तियभंगो—सव्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा १ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य २ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य ३ ॥

८. मणूसा णं भंते ! णाणावरणिज्जस्स पुच्छा। गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा १ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य २ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य ३ अहवा सत्तविहबंधगा य छव्विहबंधए य ४ अहवा सत्तविहबंधगा य छव्विहबंधगा य ५ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य छव्विहबंधए य ६ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य छव्विहबंधगा य ७ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधए य ८ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगा य ९, एवं एते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णव भंगा। सेसा वाणमंतराइया जाव वेमाणिया जहा[1] णेरइया सत्तविहादिबंधगा भणिया तहा भाणियव्वा ॥

९. एवं जहा णाणावरणं बंधमाणा जाहिं भणिया दंसणावरणं पि बंधमाणा ताहिं जीवादीया एगत्त-पोहत्तेहिं भाणियव्वा ॥

१०. वेयणिज्जं बंधमाणे जीवे कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा छव्विहबंधए वा एगविहबंधए वा। एवं मणूसे वि। सेसा णारगादीया सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य जाव वेमाणिए ॥

११. जीवा णं भंते ! वेयणिज्जं कम्मं[2] बंधमाणा कति कम्मपगडीओ बंधंति ?° गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा 'सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य एगविहबंधगा य १ अहवा'[3] सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगे य २ अहवा सत्त-विहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगा य ३। अवसेसा णारगा-दीया जाव वेमाणिया जाओ णाणावरणं बंधमाणा बंधंति ताहिं भाणियव्वा, णवरं—

१२. मणूसा णं भंते ! वेदणिज्जं कम्मं बंधमाणा कति कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य १ अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य २ अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविह-बंधगा य ३ अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगे य ४ अहवा सत्तविह-बंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगा य ५ अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य छव्विहबंधए य ६ अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य छव्विहबंधगा य ७ अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विह-बंधए य ८ अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगा य ९, एवं णव भंगा[4]।

१३. मोहणिज्जं बंधमाणे जीवे कति कम्मपगडीओ बंधइ ? गोयमा ! जीवेगिंदिय-वज्जो तियभंगो। जीवेगिंदिया सत्तविहबंधगा वि अट्ठविहबंधगा वि ॥

१४. जीवे णं भंते ! आउयं कम्मं बंधमाणे कति कम्मपगडीओ बंधइ ? गोयमा ! णियमा अट्ठ। एवं णेरइए जाव वेमाणिए। एवं पुहत्तेण वि ॥

१५. णाम-गोय-अंतरायं बंधमाणे जीवे कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! जाओ णाणावरणिज्जं बंधमाणे बंधइ ताहिं भाणियव्वो। एवं णेरइए वि जाव वेमाणिए। एवं पुहत्तेण वि भाणियव्वं ॥

---

१. प० २४।५।

२. सं० पा०—पुच्छा।

३. चिन्हाङ्कितः पाठः प्रयुक्तादर्शेषु नास्ति। असौ वृत्त्याधारेण स्वीकृतः। वृत्तौ त्रयो विकल्पा विद्यन्ते—इह जीवाः सप्तविधबन्धकाः अष्ट-विधबन्धकाश्च सदैव बहुत्वेन लभ्यन्ते, षड्विधबन्धकस्तु कदाचित्सर्वथा न भवति, षण्मासान् यावत् उत्कर्षतस्तदन्तरस्य प्रति-पादनाद्, यदापि लभ्यते तदापि जघन्यपदे एको द्वौ वा उत्कर्षतोऽष्टाधिकं शतं, तत्र यदैकोऽपि न लभ्यते तदा प्रथमो भङ्गः, यदा त्वेको लभ्यते तदा द्वितीयो, बहूनां लाभे तु तृतीय इति।

४. भंगा भाणियव्वा (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचवीसइमं कम्मबंधवेयपय

१. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ।।

२. जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कति कम्मपगडीओ वेदेति ? गोयमा ! णियमा अट्ठ कम्मपगडीओ वेदेति । एवं णेरइए जाव वेमाणिए । एवं पुहत्तेण वि ।।

३. एवं वेयणिज्जवज्जं जाव अंतराइयं ।।

४. जीवे णं भंते ! वेयणिज्जं कम्मं बंधमाणे कइ कम्मपगडीओ वेदेइ ? गोयमा ! सत्तविहवेयए वा अट्ठविहवेयए वा चउव्विहवेयए वा । एवं मणूसे वि । सेसा णेरइयाई एगत्तेण वि पुहत्तेण वि णियमा अट्ठ कम्मपगडीओ वेदेंति जाव वेमाणिया ।।

५. जीवा णं भंते ! वेदणिज्जं कम्मं बंधमाणा कति कम्मपगडीओ वेदेंति ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा अट्ठविहवेदगा य चउव्विहवेदगा य १ अहवा अट्ठविहवेदगा य चउव्विहवेदगा य सत्तविहवेदगे य २ अहवा अट्ठविहवेदगा य चउव्विहवेदगा य सत्तविहवेदगा य ३ । एवं मणूसा वि भाणियव्वा ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छव्वीसइमं कम्मवेयबंधपयं

१. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ।।

२. जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा छव्विहबंधए वा एगविहबंधए वा ।।

३. णेरइए णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा । एवं जाव वेमाणिए । मणूसे जहा जीवे ।।

४. जीवा णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेमाणा कति कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य १ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधए य २ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगा य ३ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य एगविहबंधगे य ४ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य एगविहबंधगा य ५ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधए य एगविहबंधए य ६ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधए य एगविहबंधगा य ७ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगा य एगविहबंधए य ८ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य छव्विहबंधगा य एगविहबंधगा य ९, एवं एते नव भंगा । अवसेसाणं एगिंदिय-मणूसवज्जाणं तियभंगो[1] जाव वेमाणियाणं ।।

५. एगिंदिया णं सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य ।।

६. मणूसाणं पुच्छा । गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा १ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य २ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य ३ अहवा सत्तविहबंधगा य छव्विहबंधए य, एवं छव्विहबंधएण वि समं दो भंगा ५ एगविहबंधएण वि समं दो भंगा ७ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य छव्विहबंधए य चउभंगो ११ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य चउभंगो १५ अहवा सत्तविहबंधगा य छव्विहबंधगे य एगविहबंधए य चउभंगो १९ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधए य छव्विहबंधए य एगविहबंधए य भंगा अट्ठ २७, एवं एते सत्तावीसं भंगा ।।

७. एवं जहा णाणावरणिज्जं तहा दरिसणावरणिज्जं पि अंतराइयं पि ।।

१. तियभंगा (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. जीवे णं भंते ! वेयणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा छव्विहबंधए वा एगविहबंधए वा अबंधए वा। एवं मणूसे वि। अवसेसा णारगादीया सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य। एवं जाव वेमाणिए ॥

९. जीवा णं भंते ! वेदणिज्जं कम्मं वेदेमाणा कति कम्मपगडीओ बंधंति ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य एगविहबंधगा य १ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगे य २ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधगा य ३ अबंधगेण वि समं दो भंगा भाणियव्वा ५ अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधए य अबंधए य चउभंगो ९, एवं एते णव भंगा। एगिंदियाणं अभंगयं। णारगादीणं तियभंगो जाव वेमाणियाणं, णवरं—

१०. मणूसाणं पुच्छा। गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य १ अहवा सत्तविहबंधगा य एगविहबंधगा य छव्विहबंधए य अट्ठविहबंधए य अबंधए य, एवं एते सत्तावीसं भंगा भाणियव्वा जहा[1] किरियासु पाणाइवायविरतस्स ॥

११. एवं जहा वेदणिज्जं तहा आउयं णामं गोयं च भाणियव्वं ॥

१२. मोहणिज्जं वेदेमाणे जहा[2] बंधे णाणावरणिज्जं तहा भाणियव्वं ॥

---

१. प० २२।६६। २. प० २४।२-८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तावीसइमं कम्मवेयवेयगपयं

१. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ, तं जहा—णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥

२. जीवे णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ वेदेति ? गोयमा ! सत्तविहवेदए वा अट्ठविहवेदए वा। एवं मणूसे वि। अवसेसा एगत्तेण वि पुहत्तेण वि नियमा अट्ठविहकम्मपगडीओ वेदेंति जाव वेमाणिया ॥

३. जीवा णं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेमाणा कति कम्मपगडीओ वेदेंति ? गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा अट्ठविहवेदगा १ अहवा अट्ठविहवेदगा य सत्तविहवेदगे य २ अहवा अट्ठविहवेदगा य सत्तविहवेदगा य ३। एवं मणूसा वि ॥

४. दरिसणावरणिज्जं अंतराइयं च एवं चेव भाणियव्वं ॥

५. वेदणिज्ज-आउअ-णाम-गोयाइं वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ वेदेति ? गोयमा ! जहा[1] बंधगवेयगस्स वेदणिज्जं तहा भाणियव्वं ॥

६. जीवे णं भंते ! मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ वेदेति ? गोयमा ! णियमा अट्ठ कम्मपगडीओ वेदेति। एवं णेरइए जाव वेमाणिए। एवं पुहत्तेण वि ॥

---

१. प० २५।४,५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठावीसइमं आहारपयं

पढमो उद्देसओ

गाहा—

१,२ सच्चित्ताहारट्ठी[1] ३ केवति ४ किं वा वि ५ सव्वओ चेव ।
६ कतिभागं ७ सव्वे खलु, ८ परिणामे चेव बोधव्वे ॥१॥
९ एगिंदिसरीरादी, १० लोमाहारे तहेव ११ मणभक्खी ।
एतेसिं तु[2] पयाणं, विभावणा होइ कायव्वा ॥२॥

सचित्ताहार-पदं

१. णेरइया णं भंते ! किं सचित्ताहारा अचित्ताहारा मीसाहारा ? गोयमा ! णो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, णो मीसाहारा । एवं असुरकुमारा जाव वेमाणिया ॥

२. ओरालियसरीरी[3] जाव मणूसा सचित्ताहारा वि अचित्ताहारा वि मीसाहारा वि ॥

नेरइएसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं

३. णेरइया णं भंते ! आहारट्ठी ? हंता गोयमा ! आहारट्ठी ॥

४. णेरइयाणं भंते ! केवतिकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ? गोयमा ! णेरइयाणं आहारे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभोगणिव्वत्तिए य अणाभोगणिव्वत्तिए य । तत्थ णं जेसे अणाभोगणिव्वत्तिए से णं अणुसमयमविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जति । तत्थ णं जेसे आभोगणिव्वत्तिए से णं असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए आहारट्ठे समुप्पज्जति ॥

५. णेरइया णं भंते ! किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपदेसियाइं दव्वाइं,[4] खेत्तओ असंखेज्जपदेसोगाढाइं, कालतो अण्णतरठितियाइं,[5] भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं ॥

६. जाइं भावओ वण्णमंताइं आहारेंति ताइं किं एगवण्णाइं आहारेंति जाव किं पंचवण्णाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइं पि आहारेंति जाव

---

१. सचित्ता° (क,ख,घ) ।
२. त्थ (क) ।
३. ओरालियसरीरा (क,ख,ग) ।
४. एतत्पदं वृत्त्याधारेण स्वीकृतम्, जीवाजीवाभिगमे (१।३३) पि एवमेव दृश्यते ।
५. अण्णतरकालठितियाइं (क,ग,घ); अणंतरकालठितियाइं (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचवण्णाइं पि आहारेंति, विहाणमग्गणं पडुच्च कालवण्णाइं पि आहारेंति जाव सुक्किलाइं पि आहारेंति ।।

७. जाइं वण्णओ कालवण्णाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणकालाइं आहारेंति जाव दसगुणकालाइं आहारेंति ? संखेज्जगुणकालाइं असंखेज्जगुणकालाइं अणंतगुणकालाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणकालाइं पि आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइं पि आहारेंति । एवं जाव सुक्किलाइं पि ।।

८. एवं गंधओ वि रसतो वि ।।

९. जाइं भावओ फासमंताइं ताइं णो एगफासाइं आहारेंति णो दुफासाइं आहारेंति णो तिफासाइं आहारेंति, चउफासाइं आहारेंति जाव अट्ठफासाइं पि आहारेंति, विहाण-मग्गणं पडुच्च कक्खडाइं पि आहारेंति जाव लुक्खाइं पि ।।

१०. जाइं फासओ कक्खडाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणकक्खडाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणकक्खडाइं पि आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइं पि आहारेंति । एवं अट्ठ वि फासा भाणियव्वा जाव अणंतगुणलुक्खाइं पि आहारेंति ।।

११. जाइं भंते ! अणंतगुणलुक्खाइं आहारेंति ताइं किं पुट्ठाइं आहारेंति ? अपुट्ठाइं आहारेंति ? गोयमा ! पुट्ठाइं आहारेंति, णो अपुट्ठाइं आहारेंति ।।

१२. [1]•जाइं भंते ! पुट्ठाइं आहारेंति, ताइं किं ओगाढाइं आहारेंति ? अणोगाढाइं आहारेंति ? गोयमा ! ओगाढाइं आहारेंति, णो अणोगाढाइं आहारेंति ।।

१३. जाइं भंते ! ओगाढाइं आहारेंति, ताइं किं अणंतरोगाढाइं आहारेंति ? परंपरोगाढाइं आहारेंति ? गोयमा ! अणंतरोगाढाइं आहारेंति, णो परंपरोगाढाइं आहारेंति ।।

१४. जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं आहारेंति, ताइं किं अणूइं आहारेंति ? बादराइं आहारेंति ? गोयमा ! अणूइं पि आहारेंति, बादराइं पि आहारेंति ।।

१५. जाइं भंते ! अणूइं पि आहारेंति, बादराइं पि आहारेंति, ताइं किं उड्ढं आहारेंति ? अहे आहारेंति ? तिरियं आहारेंति ? गोयमा ! उड्ढं पि आहारेंति, अहे वि आहारेंति, तिरियं पि आहारेंति ।।

१६. जाइं भंते ! उड्ढं पि आहारेंति, अहे वि आहारेंति, तिरियं पि आहारेंति, ताइं किं आदिं आहारेंति ? मज्झे आहारेंति ? पज्जवसाणे आहारेंति ? गोयमा ! आदिं पि आहारेंति, मज्झे वि आहारेंति पज्जवसाणे वि आहारेंति ।।

१७. जाइं भंते ! आदिं पि आहारेंति, मज्झे वि आहारेंति, पज्जवसाणे वि आहारेंति, ताइं किं सविसए आहारेंति ? अविसए आहारेंति ? गोयमा ! सविसए आहारेंति, णो अविसए आहारेंति ।।

१८. जाइं भंते ! सविसए आहारेंति, ताइं किं आणुपुव्विं आहारेंति ? अणाणुपुव्विं आहारेंति ? गोयमा ! आणुपुव्विं आहारेंति, णो अणाणुपुव्विं आहारेंति ।।

---

१. सं० पा०—जहा भासुद्देसए जाव णियमा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. जाइं भंते ! आणुपुव्विं आहारेंति, ताइं किं तिदिसिं आहारेंति जाव छद्दिसिं आहारेंति ? गोयमा !° णियमा छद्दिसिं आहारेंति ।।

२०. ओसण्णकारणं पडुच्च वण्णओ काल-नीलाइं गंधओ दुब्भिगंधाइं रसतो तित्तरस-कडुयाइं फासओ कक्खड-गरुय-सीय-लुक्खाइं, तेसिं पोराणे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे विप्परिणामइत्ता परिपीलइत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धंसइत्ता अण्णे अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे उप्पाएत्ता आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले सव्वप्पणयाए आहारमाहरेंति[1] ।।

२१. णेरइया णं भंते ! सव्वतो आहारेंति सव्वतो परिणामेंति सव्वओ ऊससंति सव्वओ णीससंति, अभिक्खणं आहारेंति अभिक्खणं परिणामेंति अभिक्खणं ऊससंति अभिक्खणं णीससंति, आहच्च आहारेंति आहच्च परिणामेंति आहच्च ऊससंति आहच्च णीससंति ? हंता गोयमा ! णेरइया सव्वतो आहारेंति एवं तं[2] चेव जाव आहच्च णीससंति ।।

२२. णेरइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते णं तेसिं पोग्गलाणं सेयालंसि कतिभागं आहारेंति ? कतिभागं आसाएंति ? गोयमा ! असंखेज्जतिभागं आहारेंति, अणंतभागं अस्साएंति ।।

२३. णेरइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति णो सव्वे आहारेंति ? गोयमा ! ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति ।।

२४. णेरइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए अणिट्ठत्ताए अकंतत्ताए अप्पियत्ताए असुभत्ताए अमणुण्णत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए अहत्ताए—णो उड्ढत्ताए दुक्खत्ताए—णो सुहत्ताए 'ते तेसिं'[3], भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।।

भवणवासीसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं

२५. असुरकुमारा णं भंते ! आहारट्ठी ? हंता ! आहारट्ठी । एवं जहा णेरइयाणं तहा असुरकुमाराण वि भाणियव्वं जाव[4] ते तेसिं भुज्जो-भुज्जो परिणमंति । तत्थ णं जेसे आभोगणिव्वत्तिए से णं जहण्णेणं चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेणं सातिरेगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ।।

२६. ओसण्णकारणं पडुच्च वण्णओ हालिद्द-सुक्किलाइं गंधओ सुब्भिगंधाइं रसओ अंबिल-महुराइं फासओ मउय-लहुअ-णिद्धुण्हाइं, तेसिं पोराणे वण्णगुणे जाव फासिंदियत्ताए जाव मणामत्ताए इच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए उड्ढत्ताए—णो अहत्ताए सुहत्ताए—णो दुहत्ताए ते तेसिं भुज्जो-भुज्जो परिणमंति । सेसं जहा णेरइयाणं ।।

२७. एवं जाव थणियकुमाराणं, णवरं—आभोगणिव्वत्तिए उक्कोसेणं दिवसपुहत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ।।

---

१. आहारगमाहारेंति (क,घ) ।
२. ते (क); × (ख,ग,घ) ।
३. एतेसिं (क,ख,ग,घ) ।
४. प० २८।४-२४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगिंदिएसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं

२८. पुढविकाइया णं भंते ! आहारट्ठी ? हंता ! आहारट्ठी ।।

२९. पुढविक्काइयाणं भंते ! केवतिकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ? गोयमा ! अणुसमयं अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जति ।।

३०. पुढविक्काइया णं भंते ! किमाहारमाहारेंति एवं जहा णेरइयाणं जाव[1]—

३१. ताइं भंते ! कति दिसिं आहारेंति ? गोयमा ! णिव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं, णवरं—

३२. ओसण्णकारणं ण भवति, वण्णतो काल-णील-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलाइं, गंधओ सुब्भिगंध-दुब्भिगंधाइं, रसओ तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-महुराइं, फासतो कक्खड-मउय-गरुय-लहुय-सीय-उसिण-णिद्ध-लुक्खाइं, तेसिं पोराणे वण्णगुणे °[2]गंधगुणे रसगुणे फासगुणे विप्परिणामइत्ता परिपीलइत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धंसइत्ता अण्णे अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे उप्पाएत्ता आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति ।।

३३. पुढविक्काइयाणं भंते ! सव्वतो आहारेंति सव्वतो परिणामेंति सव्वतो ऊससंति सव्वतो णीससंति, अभिक्खणं आहारेंति अभिक्खणं परिणामेंति अभिक्खणं ऊससंति अभिक्खणं णीससंति, आहच्च आहारेंति आहच्च परिणामेंति आहच्च ऊससंति आहच्च णीससंति ? हंता गोयमा ! पुढविक्काइया सव्वतो आहारेंति एवं तं चेव जाव° आहच्च णीससंति ।।

३४. पुढविक्काइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति तेसिं णं भंते ! पोग्गलाणं सेयालंसि कतिभागं आहारेंति ? कतिभागं आसाएंति ? गोयमा ! असंखेज्जतिभागं आहारेंति, अणंतभागं आसाएंति ।।

३५. पुढविक्काइया णं भंते ! जे पुग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति ? णो सव्वे आहारेंति ?[3]° गोयमा ! ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति° ।।

३६. पुढविक्काइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! फासेंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति । एवं जाव वणप्फइकाइयाणं ।।

विगलिंदिएसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं

३७. बेइंदिया णं भंते ! आहारट्ठी ? हंता गोयमा ! आहारट्ठी ।।

३८. बेइंदिया णं भंते ! केवतिकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ? जहा[4] णेरइयाणं, णवरं—तत्थ णं जेसे आभोगणिव्वत्तिए से णं असंखेज्जसमइए[5] अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पज्जति । सेसं जहा पुढविक्काइयाणं जाव[6] आहच्च णीससंति, णवरं—णियमा छद्दिसिं ।।

---

१. प० २८।५-१९ ।
२. सं०पा०—सेसं जहा नेरइयाणं जाव आहच्च ।
३. सं०पा०—जहेव नेरइया तहेव ।
४. प० २८।४ ।
५. असंखेज्जतिसमतिए (क,घ) ।
६. प० २८।३०-३३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३९. बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते णं तेसिं पोग्गलाणं सेयालंसि कतिभागं आहारेंति ? कतिभागं अस्साएंति ?[1]• गोयमा ! असंखेज्जतिभागं आहारेंति, अणंतभागं अस्साएंति° ॥

४०. बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति ? णो सव्वे आहारेंति ? गोयमा ! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—लोमाहारे य पक्खेवाहारे य । जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गेण्हंति ते सव्वे अपरिसेसे आहारेंति, जे पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गेण्हंति तेसिं असंखेज्जइभागमाहारेंति णेगाइं च णं भागसहस्साइं अफासाइज्जमाणाइं[2] अणासाइज्जमाणाइं[3] विद्धंसमागच्छंति ॥

४१. एतेसि णं भंते ! पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणासाइज्जमाणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ॥

४२. बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए [4]•गेण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ?° गोयमा ! जिब्भिंदिय-फासिंदियवेमायत्ताए ते तेसिं भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ॥

४३. एवं जाव चउरिंदिया, णवरं—णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणग्घाइज्जमाणाइ अफासाइज्जमाणाइं अणस्साइज्जमाणाइं विद्धंसमागच्छंति ॥

४४. एतेसि णं भंते ! पोग्गलाणं अणाघाइज्जमाणाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणग्घाइज्जमाणा, अणस्साइज्जमाणा अणंतगुणा, अफासाइज्जमाणा[5] अणंतगुणा ॥

४५. तेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गले [6]•आहारत्ताए गेण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ?° गोयमा ! घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियवेमायत्ताए ते तेसिं भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ॥

४६. चउरिंदियाणं[7] चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियवेमायत्ताए ते तेसिं भुज्जो-भुज्जो परिणमंति, 'सेसं जहा ते [बे ?] इंदियाणं'[8] ॥

पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं

४७. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया जहा ते [बे ?] इंदिया[9], णवरं—तत्थ णं जेसे आभोग-

---

१. सं० पा०—एवं जहा नेरइयाणं ।

२,३. °माणाणं (क,ख,ग,घ,पु,मवृ) ; हरिभद्रसूरिणा 'तत्र प्रक्षेपाहारे बहून्यस्पृष्टानि' इति व्याख्यातम् । चतुरिंद्रियसूत्रे पि अफासाइज्जमाणाइं इत्यादीनि कर्तृपदानि दृश्यन्ते ।

४. सं० पा०—पुच्छा ।

५. अप्फासा° (क,घ) ।

६. सं० पा०—पुच्छा ।

७. चोरिंदियाणं (ख) ।

८,९. एतस्य समर्पणसूत्रस्य किञ्चित् तात्पर्यं नावबुध्यते 'तेइंदिय' सूत्रे 'चउरिंदिय°' सूत्रात् अतिरिक्तं किमपि नास्ति, तत् कथं समर्पणं क्रियेत । अतोऽनुमीयते 'सेसं जहा बेइंदियाणं' इति पाठः आसीत् किन्तु लिपिदोषेण, स्मृतिदोषेण वा 'बेइंदियाणं' स्थाने 'तेइंदियाणं' इति परिवर्त्तनं जातम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिव्वत्तिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ।।

४८. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए[1] गेण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ?° गोयमा ! सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासेंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।।

मणुस्सेसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं

४९. [2]मणूसा णं भंते ! आहारट्ठी ? हंता गोयमा ! आहारट्ठी ।।

५०. मणूसा णं भंते ! केवतिकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ? गोयमा ! मणूसाणं आहारे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभोगणिव्वत्तिए य अणाभोगणिव्वत्तिए य । तत्थ णं जेसे अणाभोगणिव्वत्तिए से णं अणुसमयमविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जति । तत्थ णं जेसे आभोगणिव्वत्तिए से णं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ।।

५१. मणूसा णं भंते ! किमाहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपदेसियाइं खेत्तओ असंखेज्जपदेसोगाढाइं, कालतो अण्णतरठितियाइं, भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं ।।

५२. जाइं भावओ वण्णमंताइं आहारेंति ताइं किं एगवण्णाइं आहारेंति जाव किं पंचवण्णाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइं पि आहारेंति जाव पंच-वण्णाइं पि आहारेंति, विहाणमग्गणं पडुच्च कालवण्णाइं पि आहारेंति जाव सुक्किलाइं पि आहारेंति ।।

५३. जाइं वण्णओ कालवण्णाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणकालाइं आहारेंति जाव दसगुणकालाइं आहारेंति ? संखेज्जगुणकालाइं असंखेज्जगुणकालाइं अणंतगुणकालाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणकालाइं पि आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइं पि आहारेंति । एवं जाव सुक्किलाइं पि ।

५४. एवं गंधओ वि रसतो वि ।।

५५. जाइं भावओ फासमंताइं ताइं णो एगफासाइं आहारेंति णो दुफासाइं आहारेंति णो तिफासाइं आहारेंति, चउफासाइं आहारेंति जाव अट्ठफासाइं पि आहारेंति, विहाणमग्गणं पडुच्च कक्खडाइं पि आहारेंति जाव लुक्खाइं पि ।।

५६. जाइं फासओ कक्खडाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणकक्खडाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणकक्खडाइं पि आहारेंति जाव अणंतगुण-कक्खडाइं पि आहारेंति । एवं अट्ठ वि फासा भाणियव्वा जाव अणंतगुणलुक्खाइं पि आहारेंति ।।

५७. जाइं भंते ! अणंतगुणलुक्खाइं आहारेंति ताइं किं पुट्ठाइं आहारेंति ? अपुट्ठाइं आहारेंति ? गोयमा ! पुट्ठाइं आहारेंति, णो अपुट्ठाइं आहारेंति ।।

५८. जाइं भंते ! पुट्ठाइं आहारेंति, ताइं किं ओगाढाइं आहारेंति ? अणोगाढाइं

---

१. सं० पा०—पुच्छा ।

२. सं० पा०—मणुस्सा एवं चेव, णवरं—आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहारेंति ? गोयमा ! ओगाढाइं आहारेंति, णो अणोगाढाइं आहारेंति ।।

५९. जाइं भंते ! ओगाढाइं आहारेंति, ताइं किं अणंतरोगाढाइं आहारेंति ? परंपरोगाढाइं आहारेंति ? गोयमा ! अणंतरोगाढाइं आहारेंति, णो परंपरोगाढाइं आहारेंति ।।

६०. जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं आहारेंति, ताइं किं अणूइं आहारेंति ? बादराइं आहारेंति ? गोयमा ! अणूइं पि आहारेंति, बादराइं पि आहारेंति ।।

६१. जाइं भंते ! अणूइं पि आहारेंति, बादराइं पि आहारेंति, ताइं किं उड्ढं आहारेंति ? अहे आहारेंति ? तिरियं आहारेंति ? गोयमा ! उड्ढं पि आहारेंति, अहे वि आहारेंति, तिरियं पि आहारेंति ।।

६२. जाइं भंते ! उड्ढं पि आहारेंति, अहे वि आहारेंति, तिरियं पि आहारेंति, ताइं किं आदिं आहारेंति ? मज्झे आहारेंति ? पज्जवसाणे आहारेंति ? गोयमा ! आदिं पि आहारेंति, मज्झे वि आहारेंति, पज्जवसाणे वि आहारेंति ।।

६३. जाइं भंते ! आदिं पि आहारेंति, मज्झे वि आहारेंति, पज्जवसाणे वि आहारेंति, ताइं किं सविसए आहारेंति ? अविसए आहारेंति ? गोयमा ! सविसए आहारेंति, णो अविसए आहारेंति ।।

६४. जाइं भंते ! सविसए आहारेंति, ताइं किं आणुपुव्विं आहारेंति ? अणाणुपुव्विं आहारेंति ? गोयमा ! आणुपुव्विं आहारेंति, णो अणाणुपुव्विं आहारेंति ।।

६५. जाइं भंते ! आणुपुव्विं आहारेंति, ताइं किं तिदिसिं आहारेंति जाव छद्दिसिं आहारेंति ? गोयमा ! णियमा छद्दिसिं आहारेंति ।।

६६. ओसण्णकारणं ण भवति, वण्णतो काल-णील-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलाइं, गंधओ सुब्भिगंध-दुब्भिगंधाइं, रसओ तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-महुराइं, फासतो कक्खड-मउय-गरुअ-लहुय-सीय-उसिण-णिद्ध-लुक्खाइं, तेसिं पोराणे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे विप्परिणामइत्ता परिपीलइत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धंसइत्ता अण्णे अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे उप्पाएत्ता आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति ।।

६७. मणूसा णं भंते ! सव्वतो आहारेंति सव्वतो परिणामेंति सव्वओ ऊससंति सव्वओ णीससंति, अभिक्खणं आहारेंति अभिक्खणं परिणामेंति अभिक्खणं ऊससंति अभिक्खणं णीससंति, आहच्च आहारेंति आहच्च परिणामेंति आहच्च ऊससंति आहच्च णीससंति ? हंता ! गोयमा ! मणूसा सव्वतो आहारेंति एवं तं चेव जाव आहच्च णीससंति ।।

६८. मणूसा णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते णं तेसिं पोग्गलाणं सेयालंसि कतिभागं आहारेंति ? कतिभागं आसाएंति ? गोयमा ! असंखेज्जतिभागं आहारेंति, अणंतभागं आसाएंति ।।

६९. मणूसा णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति ? णो सव्वे आहारेंति ? गोयमा ! मणूसाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—लोमाहारे य पक्खेवाहारे य । जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गेण्हंति ते सव्वे अपरिसेसे आहारेंति, जे पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गेण्हंति तेसिं असंखेज्जइभागमाहारेंति णेगाइं च णं भागसहस्साइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणग्घाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं अणस्साइज्जमाणाइं विद्धंसमागच्छंति ।।

७०. एतेसि भंते ! पोग्गलाणं अणाघाइज्जमाणाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वथोवा पोग्गला अणग्घाइज्जमाणा, अणस्साइज्जमाणा अणंतगुणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ।।

७१. मणुसा णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिदिय-फासिंदिय-वेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति° ।।

देवेसु आहारट्ठिआइसत्तग-पदं

७२. वाणमंतरा जहा[1] णागकुमारा ।।

७३. एवं जोइसिया वि, णवरं—आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेणं दिवसपुहत्तस्स, उक्कोसेण वि दिवसपुहत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ।।

७४. एवं वेमाणिया वि, णवरं—आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेणं दिवसपुहत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जति । सेसं जहा[2] असुरकुमाराणं जाव ते तेसिं भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।।

७५. सोहम्मे आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेणं दिवसपुहत्तस्स, उक्कोसेणं दोण्हं वाससहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।।

७६. ईसाणे[3] पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं दिवसपुहत्तस्स सातिरेगस्स, उक्कोसेणं सातिरेगाणं दोण्हं वाससहस्साणं ।।

७७. सणंकुमारे[4] पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं दोण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं सत्तण्हं वाससहस्साणं ।।

७८. माहिंदे पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं दोण्हं वाससहस्साणं सातिरेगाणं, उक्कोसेणं सत्तण्हं वाससहस्साणं सातिरेगाणं ।।

७९. बंभलोए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं दसण्हं वाससहस्साणं ।।

८०. लंतए[5] पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं दसण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं चोद्दसण्हं वाससहस्साणं ।।

८१. महासुक्के पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं चोद्दसण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं सत्तरसण्हं वाससहस्साणं ।।

८२. सहस्सारे पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरसण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं अट्ठारसण्हं वाससहस्साणं ।।

८३. आणए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठारसण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं एगूण-

---

१. प० २७ ।

२. प० २८।२५,२६ ।

३. ईसाणं (क,घ); इसाणेणं (ग) ।

४. सणंकुमाराणं (क,ख,घ) ।

५. लंतए णं (क,ख,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीसाए वाससहस्साणं ॥

८४. पाणए पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगूणवीसाए वाससहस्साणं, उक्कोसेणं वीसाए वाससहस्साणं ॥

८५. आरणे पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं वीसाए वाससहस्साणं, उक्कोसेणं एक्कवीसाए वाससहस्साणं ॥

८६. अच्चुए पुच्छा। गोयमा! जहण्णे एक्कवीसाए वाससहस्साणं, उक्कोसेणं बावीसाए वाससहस्साणं ॥

८७. हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं बावीसाए वाससहस्साणं, उक्कोसेणं तेवीसाए वाससहस्साणं। एवं सव्वत्थ सहस्साणि भाणियव्वाणि जाव सव्वट्ठं ॥

८८. हेट्ठिममज्झिमाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं तेवीसाए, उक्कोसेणं चउवीसाए ॥

८९. हेट्ठिमउवरिमाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं चउवीसाए, उक्कोसेणं पणुवीसाए ॥

९०. मज्झिमहेट्ठिमाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं पणुवीसाए, उक्कोसेणं छव्वीसाए ॥

९१. मज्झिममज्झिमाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं छव्वीसाए, उक्कोसेणं सत्तावीसाए ॥

९२. मज्झिमउवरिमाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं सत्तावीसाए, उक्कोसेणं अट्ठावीसाए ॥

९३. उवरिमहेट्ठिमाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं अट्ठावीसाए, उक्कोसेणं एगूणतीसाए ॥

९४. उवरिममज्झिमाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगूणतीसाए, उक्कोसेणं तीसाए ॥

९५. उवरिमउवरिमगेवेज्जगाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं तीसाए, उक्कोसेणं एक्कतीसाए ॥

९६. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियाणं पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एक्कतीसाए, उक्कोसेणं तेत्तीसाए ॥

९७. सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं[1] पुच्छा। गोयमा! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जति ॥

सरीराहार-पदं

९८. णेरइया णं भंते! किं एगिंदियसरीराइं आहारेंति जाव पंचेंदियसरीराइं आहारेंति? गोयमा! पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च एगिंदियसरीराइं पि आहारेंति जाव पंचेंदियसरीराइं पि, पडुप्पण्णभावपण्णवणं पडुच्च णियमा पंचेंदियसरीराइं आहारेंति। एवं जाव थणियकुमारा ॥

९९. पुढविक्काइयाणं पुच्छा। गोयमा! पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च एवं चेव, पडुप्पण्ण-

---

१. सव्वट्ठगदेवाणं (क,ध)।

भावपण्णवणं पडुच्च णियमा एगिंदियसरीराइं आहारेंति ।।

१००. बेइंदिया पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च एवं चेव, पडुप्पण्णभावपण्णवणं पडुच्च बेइंदियसरीराइं आहारेंति ।।

१०१. एवं जाव चउरिंदिया ताव[1] पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च एवं, पडुप्पण्णभावपण्णवणं पडुच्च णियमा जस्स जति इंदियाइं तइंदियसरीराइं[2] ते आहारेंति । सेसा जहा णेरइया जाव वेमाणिया ।।

लोमाहार-पदं

१०२. णेरइया णं भंते ! किं लोमाहारा पक्खेवाहारा ? गोयमा ! लोमाहारा, णो पक्खेवाहारा । एवं एगिंदिया सव्वे देवा य भाणियव्वा जाव वेमाणिया ।।

१०३. बेइंदिया जाव मणुसा लोमाहारा वि पक्खेवाहारा वि ।।

मणभक्खि-पदं

१०४. णेरइया णं भंते ! किं ओयाहारा ? मणभक्खी ? गोयमा ! ओयाहारा, णो मणभक्खी । एवं सव्वे ओरालियसरीरा वि ।।

१०५. देवा सव्वे जाव वेमाणिया ओयाहारा वि मणभक्खी वि । तत्थ णं जेते मणभक्खी देवा तेसि णं इच्छामणे[3] समुप्पज्जइ—इच्छामो णं मणभक्खणं करित्तए । तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकते समाणे खिप्पामेव जे पोग्गला इट्ठा कंता[4] °पिया सुभा मणुण्णा° मणामा ते तेसिं मणभक्खत्ताए परिणमंति, से जहाणामए—सीता पोग्गला सीयं पप्प[5] सीयं चेव अतिवतित्ताणं चिट्ठंति, उसिणा वा पोग्गला उसिणं पप्प उसिणं चेव अतिवतित्ताणं चिट्ठंति, एवामेव तेहिं देवेहिं मणभक्खणे कते समाणे से इच्छामणे खिप्पामेव अवेति[6] ।।

बीओ उद्देसओ

गाहा—

आहार १ भविय २ सण्णी ३ लेस्सा ४ दिट्ठी य ५ संजय ६ कसाए ७ ।
णाणे ८ जोगुवओगे ९,१० वेदे य ११ सरीर १२ पज्जत्ती १३ ।।

आहारदारे आहारगादी-पदं

१०६. जीवे णं भंते ! किं आहारए ? अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए । एवं नेरइए जाव असुरकुमारे जाव वेमाणिए ।।

१०७. सिद्धे णं भंते ! किं आहारए ? अणाहारए ? गोयमा ! णो आहारए, अणाहारए ।।

१०८. जीवा णं भंते ! किं आहारया ? अणाहारया ? गोयमा ! आहारगा वि

---

१. जाव (ख,घ) ।
२. तेइंदिय (क,ग,घ); तेंदिय (ख); तइ+इंदिय°=तइंदिय° ।।
३. 'मणे' अत्र मलयगिरिणा इच्छा पदं नैव व्याख्यातम्, अस्य विषयस्योपसंहारे 'इच्छाप्रधानं मनः' इति व्याख्यातमस्ति ।
४. सं० पा०—कंता जाव मणामा ।
५. पप्पा (ख) उभयत्रापि ।
६. वावेति (क,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणाहारगा वि ।।

१०९. णेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा आहारगा १ अहवा आहारगा य अणाहारगे य २ अहवा आहारगा य अणाहारगा य ३ । एवं जाव वेमाणिया, णवरं—एगिंदिया जहा जीवा ।।

११०. सिद्धाणं पुच्छा । गोयमा ! णो आहारगा, अणाहारगा ।।

भवियदारे आहारगादि-पदं

१११. भवसिद्धिए णं भंते ! जीवे किं आहारए ? अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिए अणाहारए । एवं जाव वेमाणिए ।।

११२. भवसिद्धिया णं भंते ! जीवा किं आहारगा ? अणाहारगा ? गोयमा ! जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । अभवसिद्धिए वि एवं चेव ।।

११३. णोभवसिद्धिए-णोअभवसिद्धिए णं भंते ! जीवे किं आहारए ? अणाहारए ? गोयमा ! णो आहारए, अणाहारए । एवं सिद्धे वि ।।

११४. णोभवसिद्धिया-णोअभवसिद्धिया णं भंते ! जीवा किं आहारगा ? अणाहारगा? गोयमा ! णो आहरगा, अणाहारगा । एवं सिद्धा वि ।।

सण्णिदारे आहारगादि-पदं

११५. सण्णी णं भंते ! जीवे किं आहारगे? अणाहारगे ? गोयमा ! सिय आहारगे सिय अणाहारगे । एवं जाव वेमाणिए, णवरं—एगिंदिय-विगलिंदिया ण पुच्छिज्जंति ।।

११६. सण्णी णं भंते ! जीवा किं आहारगा ? अणाहारगा ? गोयमा ! जीवाईओ तियभंगो जाव वेमाणिया ।।

११७. असण्णी णं भंते ! जीवे किं आहारए ? अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए । एवं णेरइए जाव वाणमंतरे[१] । जोइसिय-वेमाणिया ण पुच्छिज्जंति ।।

११८. असण्णी णं भंते ! जीवा किं आहारगा ? अणाहारगा ? गोयमा ! आहारगा वि अणाहारगा वि, एगो भंगो ।।

११९. असण्णी णं भंते ! णेरइया किं आहारगा ? अणाहारगा ? गोयमा ! आहारगा वा १ अणाहारगा वा २ अहवा आहारए य अणाहारए य ३ अहवा आहारए य अणाहारगा य ४ अहवा आहारगा य अणाहारगे य ५ अहवा आहारगा य अणाहारगा य ६, एवं एते छब्भंगा । एवं जाव थणियकुमारा । एगिंदिएसु अभंगयं । बेइंदिय जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणीएसु तियभंगो । मणूस-वाणमंतरेसु छब्भंगा ।।

१२०. णोसण्णी-णोअसण्णी णं भंते ! जीवे किं आहारए ? अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए । एवं मणूसे वि । सिद्धे अणाहारए ।।

१२१. पुहत्तेणं णोसण्णी-णोअसण्णी जीवा आहारगा वि अणाहारगा वि । मणूसेसु तियभंगो । सिद्धा अणाहारगा ।।

---

१. प्रयुक्तेषु सर्वेष्वादर्शेषु 'णवरं' इति पदमस्ति । मलयगिरिणा एतत्पदं नास्ति व्याख्यातम् न च उपयुक्तमस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेस्सादारे आहारगादि-पदं

१२२. सलेसे णं भंते ! जीवे किं आहारए ? अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय आणाहारए। एवं जाव वेमाणिए ।।

१२३. सलेसा णं भंते ! जीवा किं आहारगा ? अणाहारगा ? गोयमा ! जीवेगिंदिवज्जो तियभंगो। एवं 'कण्हलेसाए वि णीललेसाए वि काउलेसाए'[1] वि जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। तेउलेस्साए पुढवि-आउ-वणप्फइकाइयाणं छब्भंगा। सेसाणं जीवादीओ तियभंगो जेसिं अत्थि तेउलेस्सा। पम्हलेस्साए य सुक्कलेस्साए य जीवादीओ तियभंगो ।।

१२४. अलेस्सा जीवा मणूसा सिद्धा य एगत्तेण वि पुहत्तेण वि णो आहारगा, अणाहारगा ।।

दिट्ठिदारे आहारगादि-पदं

१२५. सम्मद्दिट्ठी णं भंते ! जीवे किं आहारए ? अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया छब्भंगा। सिद्धा अणाहारगा। अवसेसाणं तियभंगो ।।

१२६. मिच्छद्दिट्ठीसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ।।

१२७. सम्मामिच्छद्दिट्ठी णं भंते ! किं आहारए ? अणाहारए ? गोयमा ! आहारए, णो अणाहारए। एवं एगिंदिय-विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिए। एवं पुहत्तेण वि ।।

संजयदारे आहारगादि-पदं

१२८. संजए णं भंते ! जीवे किं आहारए ? अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए। एवं मणूसे वि। पुहत्तेण तियभंगो ।।

१२९. अस्संजए पुच्छा। गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए। पुहत्तेणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ।।

१३०. संजयासंजए जीवे पंचेंदियतिरिक्खजोणिए मणूसे य एते एगत्तेण वि पुहत्तेण वि आहारगा, णो अणाहारगा ।।

१३१. णोसंजए-णोअसंजए-णोसंजयासंजए जीवे सिद्धे य एते एगत्तेण वि पुहत्तेण वि णो आहरगा, अणाहारगा ।।

कसायदारे आहारगादि-पदं

१३२. सकसाई[2] णं भंते ! जीवे किं आहारए ? अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए। एवं जाव वेमाणिए। पुहत्तेणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ।।

१३३. कोहकसाईसु जीवादीसु एवं चेव, णवरं—देवेसु छब्भंगा। माणकसाईसु मायाकसाईसु य देव-णेरइएसु छब्भंगा। अवसेसाणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। लोभकसाईसु णेरएसु छब्भंगा। अवसेसेसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ।।

१३४. अकसाई जहा णोसण्णी-णोअसण्णी ।।

१. कण्हलेसा वि नीललेसा वि काउलेसा (ख,ग)।
२. सकसादी (क,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाणदारे आहारगादि-पदं

१३५. णाणी जहा सम्मद्दिट्ठी ॥

१३६. आभिणिबोहियणाणि-सुतणाणिसु बेइंदिय-तेइंदिय चउरिंदिएसु छब्भंगा । अवसेसेसु जीवादीओ तियभंगो जेसिं अत्थि । ओहिणाणी पंचेंदियतिरिक्खजोणिया आहारगा णो अणाहारगा । अवसेसेसु जीवादीओ तियभंगो जेसिं अत्थि ओहिणाणं । मणपज्जवणाणी जीवा मणूसा य एगत्तेण वि पुहत्तेण वि आहारगा, णो अणाहारगा । केवलणाणी जहा[1] णोसण्णी-णोअसण्णी ॥

१३७. अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । विभंगणाणी पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मणूसा य आहारगा, णो अणाहारगा । अवसेसेसु जीवादीओ तियभंगो ॥

जोगदारे आहारगादि-पदं

१३८. सजोगीसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । मणजोगी वइजोगी य जहा सम्मामिच्छद्दिट्ठी,णवरं—वइजोगो विगलिंदियाण वि । कायजोगीसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । अजोगी जीव-मणूस-सिद्धा अणाहारगा ॥

उवओगदारे आहारगादि-पदं

१३९. सागाराणागारोवउत्तेसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । सिद्धा अणाहारगा ॥

वेददारे आहारगादि-पदं

१४०. सवेदे[2] जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । इत्थिवेद-पुरिसवेदेसु जीवादीओ तियभंगो । णपुंसगवेदए जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । अवेदए जहा[3] केवलणाणी ॥

सरीरदारे आहारगादि-पदं

१४१. ससरीरी जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । ओरालियसरीरीसु जीव-मणूसेसु तियभंगो । अवसेसा आहारगा, णो अणाहारगा, जेसिं अत्थि ओरालियसरीरं । वेउव्वियसरीरी आहारगसरीरी य आहारगा, णो अणाहारगा, जेसिं अत्थि । तेय-कम्मगसरीरी जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । असरीरी जीवा सिद्धा य णो आहारगा, अणाहारगा ॥

पज्जत्तिदारे आहारगादि-पदं

१४२. आहारपज्जत्तीए[4] पज्जत्तए सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तए इंदियपज्जत्तीए पज्जत्तए आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तए भासा-मणपज्जत्तीए पज्जत्तए एयासु पंचसु वि पज्जत्तीसु जीवेसु मणूसेसु य तियभंगो । अवसेसा आहारगा, णो अणाहारगा । भासा-मणपज्जत्ती पंचेंदियाणं, अवसेसाणं णत्थि ॥

१४३. आहारपज्जत्तीए अपज्जत्तए णो आहारए, अणाहारए, एगत्तेण वि पुहत्तेण वि । सरीरपज्जत्तीए अपज्जत्तए सिय आहारए सिय अणाहारए । उवरिल्लियासु चउसु अपज्जत्तीसु णेरइय-देव-मणूसेसु छब्भंगा, अवसेसाणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ॥

---

१. प० २८।१२० ।
२. सव्वेद (क,घ) ।
३. प० २८।१३६ ।
४. आहारपज्जत्ती (क,ख,घ) सर्वत्रापि ।
५. भासा-मणपज्जत्तीते (क,ख,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४४. 'भासा-मणपज्जत्तीए अपज्जत्तएसु' जीवेसु पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु य तियभंगो, णेरइय-देव-मणुएसु छब्भंगा ।।

१४५. सव्वपदेसु एगत्त-पुहत्तेणं जीवादीया दंडगा पुच्छाए भाणियव्वा। जस्स जं अत्थि तस्स तं पुच्छिज्जति, जं णत्थि तं ण पुच्छिज्जति जाव भासा-मणपज्जत्तीए अपज्जत्तएसु णेरइय-देव-मणुएसु य छब्भंगा। सेसेसु तियभंगो ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगूणतीसइमं उवओगपयं

१. कतिविहे णं भंते ! उवओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते, तं जहा—सागारोवओगे य अणागारोवओगे य ॥

२. सागारोवओगे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणसागारोवओगे सुयणाणसागारोवओगे ओहिणाणसागारोवओगे मणपज्जवणाणसागारोवओगे[1] केवलणाणसागारोवओगे मतिअण्णाणसागारोवओगे सुय-अण्णाणसागारोवओगे विभंगणाणसागारोवओगे ॥

३. अणागारोवओगे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—चक्खुदंसणअणागारोवओगे अचक्खुदंसणअणागारोवओगे ओहिदंसणअणागारोव-ओगे केवलदंसणअणागारोवओगे ॥

४. एवं जीवाणं पि[2] ।

५. णेरइयाणं भंते ! कतिविहे उवओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते, तं जहा—सागारोवओगे य अणागारोवओगे य ॥

६. णेरइयाणं भंते ! सागारोवओगे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—मतिणाणसागारोवओगे सुयणाणसागारोवओगे ओहिणाणसागारोवओगे मतिअण्णाणसागारोवओगे सुयअण्णाणसागारोवओगे विभंगणाणसागारोवओगे ॥

७. णेरइयाणं भंते ! अणागारोवओगे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—चक्खुदंसणअणागारोवओगे अचक्खुदंसणअणागारोवओगे ओहिदंसणअणागारोव-ओगे । एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

८. पुढविक्काइयाणं पुच्छा । गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते, तं जहा—सागारोव-ओगे य अणागारोवओगे य ॥

९. पुढविक्काइयाणं भंते ! सागारोवओगे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—मतिअण्णाणे सुतअण्णाणे ॥

१०. पुढविक्काइयाणं भंते ! अणागारोवओगे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगे अचक्खुदंसणअणागारोवओगे पण्णत्ते । एवं जाव वणप्फइकाइयाणं ॥

---

१. मणपज्जय°, मणपज्जाय° (मवृ)।   २. × (क,ख,ग,घ) ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

११. बेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा! दुविहे उवओगे पण्णत्ते, तं जहा—सागारे अणागारे य ॥

१२. बेइंदियाणं भंते! सागारोवओगे कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणसागारोवओगे सुयणाणसागारोवओगे मतिअण्णाण-सागारोवओगे सुतअण्णाणसागारोवओगे ॥

१३. बेइंदियाणं भंते! अणागारोवओगे कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! एगे अचक्खु-दंसणअणागारोवओगे। एवं तेइंदियाण वि ॥

१४. चउरिंदियाण वि एवं चेव, णवरं—अणागारोवओगे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—चक्खुदंसअणागारोवओगे य अचक्खुदंसणअणागारोवओगे य ॥

१५. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं जहा[1] णेरइयाणं मणुस्साणं जहा[2] ओहिए उवओगे भणियं तहेव भाणियव्वं। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥

१६. जीवा णं भंते! किं सागारोवउत्ता? अणागारोवउत्ता? गोयमा! सागारोव-उत्ता वि अणागारोवउत्ता वि ॥

१७. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति—जीवा सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि? गोयमा! जे णं जीवा आभिणिबोहियणाण-सुतणाण-ओहिणाण-मण-केवल-मतिअण्णाण-सुतअण्णाण-विभंगणाणोवउत्ता ते णं जीवा सागारोवउत्ता, जे णं जीवा चक्खुदंसण-अचक्खुदंसण-ओहिदंसण-केवलदंसणोवउत्ता ते णं जीवा अणागारोवउत्ता। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति—जीवा सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि ॥

१८. णेरइया णं भंते! किं सागारोवउत्ता? अणागारोवउत्ता? गोयमा! णेरइया सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि ॥

१९. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति—गोयमा! जे णं णेरइया आभिणिबोहियणाण-सुत-ओहिणाण- मतिअण्णाण-सुतअण्णाण-विभंगणाणोवउत्ता ते णं णेरइया सागारोवउत्ता, जे णं णेरइया चक्खुदंसण-अचक्खुदंसण-ओहिदंसणोवउत्ता ते णं णेरइया अणागारोवउत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति—णेरइया[3] सागारोवउत्ता वि अणागारोवउत्ता वि। एवं जाव थणियकुमारा ॥

२०. पुढविक्काइयाणं पुच्छा। गोयमा! तहेव जाव जे णं पुढविकाइया मतिअण्णाण-सुतअण्णाणोवउत्ता ते णं पुढविकाइया सागारोवउत्ता, जे णं पुढविकाइया अचक्खु-दंसणोवउत्ता ते णं पुढविक्काइया अणागारोवउत्ता। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति जाव वणप्फइकाइया ॥

२१. बेइंदियाणं अट्ठसहिया[4] तहेव पुच्छा। गोयमा! जाव जे णं बेइंदिया आभिणि-बोहियणाण-सुतणाण-मतिअण्णाण-सुयअण्णाणोवउत्ता ते णं बेइंदिया सागारोवउत्ता, जे णं बेइंदिया अचक्खुदंसणोवउत्ता ते णं बेइंदिया अणागारोवउत्ता। से तेणट्ठेणं

---

१. प० २९।५-७।

२. प० २९।१-३।

३. जाव (क,ख,ग,घ)।

४. 'से केणट्ठेणं भंते!' इति सूत्रसहिता।

गोयमा ! एवं वुच्चति । एवं जाव चउरिंदिया, णवरं—चक्खुदंसणं अब्भहियं चउरिंदियाणं ॥

२२. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया जहा[1] णेरइया । मणूसा जहा[2] जीवा । वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा णेरइया ॥

---

१. प० २६।१८,१६। २. प० २६।१६,१७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीसइमं पासणयापयं

१. कतिविहा णं भंते ! पासणया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पासणया पण्णत्ता, तं जहा—सागारपासयणा अणागारपासणया ।।

२. सागारपासणया णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—सुयणाणसागारपासणया ओहिणाणसागारपासणया मणपज्जवणाणसागारपासणया केवलणाणसागारपासयणया सुयअण्णाणसागारपासणया विभंगनाणसागारपासणया ।।

३. अणागारपासणया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—चक्खुदंसणअणागारपासणया ओहिदंसणअणागारपासणया केवलदंसणअणागारपासणया ।।

४. एवं जीवाणं पि ।।

५. णेरइयाणं भंते ! कतिविहा पासणया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सागारपासणया अणागारपासणया ।।

६. णेरइयाणं भंते ! सागारपासणया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—सुतणाणसागारपासणया ओहिणाणसागारपासणया सुयअण्णाणसागारपासणया विभंगणाणसागारपासणया ।।

७. णेरइयाणं भंते ! अणागारपासणया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—चक्खुदंसणअणागारपासणया य ओहिदंसणअणागारपासणया य । एवं जाव थणियकुमारा ।।

८. पुढविक्काइयाणं भंते ! कतिविहा पासणया पण्णत्ता ? गोयमा ! एगा सागारपासणया ।।

९. पुढविक्काइयाणं भंते ! सागारपासणया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगा सुयअण्णाणसागारपासणया पण्णत्ता । एवं जाव वणप्फइकाइयाणं ।।

१०. बेइंदियाणं भंते ! कतिविहा पासणया पण्णत्ता ? गोयमा ! एगा सागारपासणया पण्णत्ता ।।

११. बेइंदियाणं भंते ! सागारपासणया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुतणाणसागारपासणया य सुयअण्णाणसागारपासणया य । एवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेइंदियाण वि ।।

१२. चउरिंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सागारपासणया य अणागारपासणया य । सागारपासणया जहा बेइंदियाणं ।।

१३. चउरिंदियाणं भंते ! अणागारपासणया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगा चक्खुदंसणअणागारपासणया पण्णत्ता ।।

१४. मणूसाणं जहा[1] जीवाणं । सेसा जहा[2] णेरइया जाव वेमाणिया ।।

१५. जीवा णं भंते ! किं सागारपस्सी ? अणागारपस्सी ? गोयमा ! जीवा सागारपस्सी वि अणागारपस्सी वि ।।

१६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जीवा सागारपस्सी वि अणागारपस्सी वि ? गोयमा ! जे णं जीवा सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी सुयअण्णाणी विभंगणाणी ते णं जीवा सागारपस्सी । जे णं जीवा चक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी ते णं जीवा अणागारपस्सी । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—जीवा सागारपस्सी वि अणागारपस्सी वि ।।

१७. णेरइया णं भंते ! किं सागारपस्सी ? अणागारपस्सी ? गोयमा ! एवं चेव, णवरं—सागारपासणयाए मणपज्जवणाणी केवलणाणी ण वुच्चंति, अणागारपासणयाए केवलदंसणं णत्थि । एवं जाव थणियकुमारा ।।

१८. पुढविक्काइयाणं पुच्छा । गोयमा ! पुढविक्काइया सागारपस्सी, णो अणागारपस्सी ।।

१९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! पुढविक्काइयाणं एगा सुयअण्णाण-सागारपासणया पण्णत्ता । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति । एवं जाव वणस्सति-काइया ।।

२०. बेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! सागारपस्सी णो अणागारपस्सी ।।

२१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! बेइंदियाणं दुविहा सागारपासणया पण्णत्ता, तं जहा—सुयणाणसागारपासणया य सुयअण्णाणसागारपासणया य । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति । एवं तेइंदियाण वि ।।

२२. चउरिंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! चउरिंदिया सागारपस्सी वि अणागार-पस्सी वि ।।

२३. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जे णं चउरिंदिया सुयणाणी सुतअण्णाणी ते णं चउरिंदिया सागारपस्सी, जे णं चउरिंदिया चक्खुदंसणी ते णं चउरिंदिया अणागारपस्सी । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति ।।

२४. मणूसा जहा[3] जीवा । अवसेसा जहा[4] णेरइया जाव वेमाणिया ।।

२५. केवली णं भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं आगारेहिं हेतूहिं उवमाहिं दिट्ठंतेहिं वण्णेहिं संठाणेहिं पमाणेहिं पडोयारेहिं जं समयं जाणति तं समयं पासति ? जं समयं

---

१. प० ३०।४ ।

२. प० ३०।५-७ ।

३. प० ३०।१५, १६ ।

४. प० ३०।१७ ।

पासति तं समयं जाणति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

२६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—केवली णं इमं रयणप्पभं पुढविं आगारेहिं[1] •हेतूहिं उवमाहिं दिट्ठंतेहिं वण्णेहिं संठाणेहिं पमाणेहिं पडोयारेहिं° जं समयं जाणति णो तं समयं पासति ? जं समयं पासति णो तं समयं जाणति ? गोयमा ! सागारे से णाणे भवति, अणागारे से दंसणे भवति । से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एवं वुच्चति—केवली णं इमं रयणप्पभं पुढविं आगारेहिं हेतूहिं उवमाहिं दिट्ठंतेहिं संठाणेहिं पमाणेहिं पडोयारेहिं जं समयं जाणति णो तं समयं पासति, जं समयं पासति° णो तं समयं जाणति । एवं जाव अहेसत्तमं । एवं सोहम्मं कप्पं जाव अच्चुयं गेवेज्जगविमाणा अणुत्तरविमाणा ईसीपब्भारं पुढविं परमाणुपोग्गलं दुपएसियं खंधं जाव अणंतपदेसियं खंधं ।।

२७. केवली णं भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं अणागारेहिं अहेतूहिं अणुवमाहिं अदिट्ठंतेहिं अवण्णेहिं असंठाणेहिं अपमाणेहिं अपडोयारेहिं पासति, ण जाणति ? हंता गोयमा ! केवली णं इमं रयणप्पभं पुढविं अणागारेहिं[3] •अहेतूहिं अणुवमाहिं अदिट्ठंतेहिं अवण्णेहिं असंठाणेहिं अपमाणेहिं अपडोयारेहिं° पासति, ण जाणइ ।।

२८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—केवली णं इमं रयणप्पभं पुढविं अणागारेहिं[4] •अहेतूहिं अणुवमाहिं अदिट्ठंतेहिं अवण्णेहिं असंठाणेहिं अपमाणेहिं अपडोयारेहिं° पासति, ण जाणइ ? गोयमा ! अणागारे से दंसणे भवति, सागारे से णाणे भवति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—केवली णं इमं रयणप्पभं पुढविं अणागारेहिं[5] •अहेतूहिं अणुवमाहिं अदिट्ठंतेहिं अवण्णेहिं असंठाणेहिं अपमाणेहिं अपडोयारेहिं° पासति, ण जाणति । एवं जाव ईसीपब्भारं पुढविं परमाणुपोग्गलं अणंतपदेसियं खंधं पासइ, ण जाणइ ।।

१. सं० पा०—आगारेहिं जाव जं ।
२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव णो ।
३,४,५. सं० पा०—अणागारेहिं जाव पासति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगतीसइमं सण्णिपयं

१. जीवा णं भंते ! किं सण्णी ? असण्णी ? णोसण्णी-णोअसण्णी ? गोयमा ! जीवा सण्णी वि असण्णी वि णोसण्णी-णोअसण्णी वि ॥

२. णेरइयाणं पुच्छा। गोयमा ! णेरइया सण्णी वि असण्णी वि, णो णोसण्णी-णोअसण्णी। एवं असुरकुमारा जाव थणियकुमारा ॥

३. पुढविक्काइयाणं पुच्छा। गोयमा ! णो सण्णी, असण्णी, णो णोसण्णी-णोअसण्णी। एवं बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया वि ॥

४. मणूसा जहा जीवा। पंचेंदियतिरिक्खजोणिया वाणमंतरा य जहा णेरइया ॥

५. जोइसिय-वेमाणिया सण्णी, णो असण्णी णो णोसण्णी-णोअसण्णी ॥

६. सिद्धाणं पुच्छा। गोयमा ! णो सण्णी णो असण्णी, णोसण्णि-णोअसण्णी ॥

गाहा—

णेरइय-तिरिय-मणुया य, वणयरसुरा[1] य सण्णासण्णी[2] य।
विगलिंदिया असण्णी, जोतिस-वेमाणिया सण्णी ॥१॥

---

१. वनचरा—व्यन्तरा, असुरादयः—समस्ता भवनपतयः।

२. संज्ञिनोऽसंज्ञिनश्च।

बत्तीसइमं संजमपयं

१. जीवा णं भंते ! किं संजया ? असंजया ? संजतासंजता ? 'णोसंजत-णोअसंजत-णोसंजयासंजया'[1] ? गोयमा ! जीवा संजया वि असंजया वि संजयासंजया वि णोसंजय-णोअसंजय-णोसंजतासंजया वि ॥

२. णेरइया णं भंते ! किं संजया ? असंजया ? संजयासंजया ? णोसंजत-णोअसंजत-णोसंजयासंजया ? गोयमा ! णेरइया णो संजया, असंजया, णो संजयासंजया णो णोसंजय-णोअसंजय-णोसंजतासंजया । एवं जाव चउरिंदिया ॥

३. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! पंचेंदियतिरिक्खजोणिया णो संजया, असंजया वि संजतासंजता वि, णो णोसंजय-णोअसंजय-णोसंजयासंजया ॥

४. मणूसा णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! मणूसा संजया वि असंजया वि संजता-संजया वि, णो णोसंजत-णोअसंजय-णोसंजतासंजया ॥

५. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा णेरइया ॥

६. सिद्धाणं पुच्छा । गोयमा ! सिद्धा नो संजया नो असंजया नो संजयासंजया, णोसंजय-णोअसंजय-णोसंजयासंजया ॥

गाहा—

संजय अस्संजय मीसगा य, जीवा तहेव मणुया य ।
संजतरहिया तिरिया, सेसा अस्संजता होंति ॥१॥

१. णोसंजता णोअसंजता णोसंजतासंजता (क,ख,ग,घ) सर्वत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेत्तीसइमं ओहिपयं

गाहा—

१ भेद २ विसय ३ संठाणे, ४ अब्भितर-बाहिरे य ५ देसोही ।
६ ओहिस्स य खय-वुड्ढी, ७ पडिवाई चेवऽपडिवाई[1] ।।१।।

ओहिभेय-पदं

१. कतिविहा णं भंते ! ओही पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा ओही पण्णत्ता, तं जहा—भवपच्चइया य खओवसमिया य । दोण्हं भवपच्चइया, तं जहा—देवाण य णेरइयाण य । दोण्हं खओवसमिया, तं जहा—मणूसाणं पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण य ।।

ओहिविसय-पदं

२. णेरइया णं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं अद्धगाउयं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति ।।

३. रयणप्पभापुढविणेरइया णं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं अद्धट्ठाइं गाउयाइं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति ।।

४. सक्करप्पभापुढविणेरइया जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेणं अद्धट्ठाइं गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति ।।

५. वालुयप्पभापुढविणेरइया जहण्णेणं अड्ढाइज्जाइं गाउयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति ।।

६. पंकप्पभापुढविणेरइया जहण्णेणं दोण्णि गाउयाइं, उक्कोसेणं अड्ढाइज्जाइं गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति ।।

७. धूमप्पभापुढविणेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं दिवड्ढं गाउयं, उक्कोसेणं दो गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासंति ।।

८. तमापुढवीए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेणं दिवड्ढं गाउयं ओहिणा जाणंति पासंति ।।

९. अहेसत्तमाए पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं अद्धगाउयं, उक्कोसेणं गाउयं ओहिणा

---

१. अपडिवादी (क,घ) ; अपडिवाई (ख,ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाणंति पासंति ।।

१०. असुरकुमारा णं भंते ! ओहिणा केवतियं खेत्तं जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं पणुवीसं जोयणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जे दीव-समुद्दे ओहिणा जाणंति पासंति ।।

११. णागकुमारा णं जहण्णेणं पणुवीसं जोयणाइं, उक्कोसेणं संखेज्जे दीव-समुद्दे ओहिणा जाणंति पासंति । एवं जाव थणियकुमारा ।।

१२. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जे दीव-समुद्दे ।।

१३. मणूसा णं भंते ! ओहिणा केवतियं खेत्तं जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयपमाणमेत्ताइं खंडाइं ओहिणा जाणंति पासंति ।।

१४. वाणमंतरा जहा णागकुमारा ।।

१५. जोइसिया णं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं संखेज्जे दीव-समुद्दे, उक्कोसेण वि संखेज्जे दीव-समुद्दे ।।

१६. सोहम्मगदेवा णं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते तिरियं जाव असंखेज्जे दीव-समुद्दे उड्ढं जाव सगाइं विमाणाइं ओहिणा जाणंति पासंति । एवं ईसाणगदेवा वि । सणंकुमारदेवा वि एवं चेव, णवरं—अहे जाव दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते । एवं माहिंदगदेवा वि । बंभलोग-लंतगदेवा तच्चाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते । महासुक्क-सहस्सारगदेवा चउत्थीए पंकप्प-भाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते । आणय-पाणय-आरण-अच्चुयदेवा अहे जाव पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते । हेट्ठिम-मज्झिमगेवेज्जगदेवा अहे जाव छट्ठाए तमाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते ।।

१७. उवरिमगेवेज्जगदेवा णं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं अहेसत्तमाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते तिरियं जाव असंखेज्जे दीव-समुद्दे उड्ढं जाव सगाइं[1] विमाणाइं ओहिणा जाणंति पासंति ।।

१८. अणुत्तरोववाइयदेवा णं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! संभिन्नं लोगणालिं ओहिणा जाणंति पासंति ।।

ओहिसंठाण-पदं

१९. णेरइयाणं भंते ! ओही किंसठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! तप्पागारसंठिए पण्णत्ते ।।

२०. असुरकुमाराणं पुच्छा । गोयमा ! पल्लगसंठिए । एवं जाव थणिय-कुमाराणं ।।

२१. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते । एवं

---

१. सताइं (क,घ); सयाति (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणूसाण वि ॥

२२. वाणमंतराणं पुच्छा । गोयमा ! पडहसंठाणसंठिए पण्णत्ते ॥

२३. जोतिसियाणं पुच्छा । गोयमा ! झल्लरिसंठाणसंठिए पण्णत्ते ॥

२४. सोहम्मगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! उद्धमुइंगागारसंठिए[1] पण्णत्ते । एवं जाव अच्चुयदेवाणं पुच्छा ॥

२५. गेवेज्जगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! पुप्फचंगेरिसंठिए पण्णत्ते ॥

२६. अणुत्तरोववाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जवणालियासंठिए ओही पण्णत्ते ॥

ओहिअब्भितर-बाहिर-पदं

२७. णेरइया णं भंते ! ओहिस्स किं अंतो ? बाहिं ? गोयमा ! अंतो, नो बाहिं । एवं जाव थणियकुमारा ॥

२८. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! णो अंतो, बाहिं ॥

२९. मणूसाणं पुच्छा । गोयमा ! अंतो वि बाहिं पि ॥

३०. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥

देस-सव्वोहि-पदं

३१. णेरइया णं भंते ! किं देसोही ? सव्वोही ? गोयमा ! देसोही, णो सव्वोही । एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

३२. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! देसोही, णो सव्वोही ॥

३३. मणूसाणं पुच्छा । गोयमा ! देसोही वि सव्वोही वि ॥

३४. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥

ओहिस्स खयवुड्ढिआदि-पदं

३५. णेरइयाणं भंते ! ओही किं आणुगामिए अणाणुगामिए ? वड्ढमाणए हायमाणए ? पडिवाई अपडिवाई ? अवट्ठिए अणवट्ठिए ? गोयमा ! आणुगामिए, नो अणाणुगामिए नो वड्ढमाणए णो हायमाणए णो पडिवाई, अपडिवाई अवट्ठिए, णो अणवट्ठिए । एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

३६. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! आणुगामिए वि जाव अणवट्ठिए वि । एवं मणूसाण वि ॥

३७. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥

---

१. उड्ढ° (पु) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउतीसइमं पवियारणापयं

१ अणंतरागयाहारे[1], २ आहाराभोयणाइ य ।
३ पोग्गला नेव[2] जाणंति, ४ अज्झवसाणा य आहिया ।।१।।
५ सम्मत्तस्स अभिगमे, ६ तत्तो परियारणा य बोद्धव्वा ।
काए फासे रूवे, सद्दे य मणे य अप्पबहुं ।।२।।

अणंतराहार-पदं

१. णेरइया णं भंते ! अणंतराहारा तओ णिव्वत्तणया ततो परियाइयणया[3] ततो परिणामणया ततो परियारणया ततो पच्छा विउव्वणया ? हंता गोयमा ! णेरइया णं अणंतराहारा तओ निव्वत्तणया ततो परियाइयणया[4] तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा विउव्वणया ।।

२. असुरकुमारा णं भंते ! अणंतराहारा तओ णिव्वत्तणया तओ परियाइयणया तओ परिणामणया तओ विउव्वणया तओ पच्छा परियारणया ? हंता गोयमा ! असुरकुमारा अणंतराहारा तओ णिव्वत्तणया जाव तओ पच्छा परियारणया । एवं जाव थणियकुमारा ।।

३. पुढविक्काइया णं भंते ! अणंतराहारा तओ णिव्वत्तणया तओ परियाइयणया तओ परिणामणया तओ परियारणया ततो विउव्वणया ? हंता गोयमा ! तं चेव जाव परियारणया, णो चेव णं विउव्वणया । एवं जाव चउरिंदिया, णवरं—वाउक्काइया पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा[5] य जहा णेरइया ।।

४. वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ।।

आहाराभोगणा-पदं

५. णेरइयाणं भंते ! आहारे किं आभोगणिव्वत्तिए ? अणाभोगणिव्वत्तिए ?

---

१. अणंतरगयाहारे (ख) ; अणंतराय आहरे(पु) ।
२. मेव (क,ख,घ) ।
३. परियायणया (क) ।
४. परियादिणया (ख); परियायणया (ग) ।
५. मनुष्यालापकस्य पूर्णं सूत्रमेवं स्यात्—मणुस्सा णं भंते! अणंतराहारा तओ निव्वत्तणया ततो परियाइयणया ततो परिणामणया ततो परियारणया ततो पच्छा विउव्वणया ? हंता गोयमा ! मणुस्सा णं अणंतराहारा तओ निव्वत्तणया ततो परियाइयणया तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा विउव्वणया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! आभोगणिव्वत्तिए वि अणाभोगणिव्वत्तिए वि। एवं असुरकुमाराणं जाव वेमाणियाणं, णवरं—एगिंदियाणं णो आभोगणिव्वत्तिए, अणाभोगणिव्वत्तिए ॥

पोग्गलजाणणा-पदं

६. णेरइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं जाणंति पासंति आहारेंति ? उदाहु ण जाणंति[1] ण पासंति आहारेंति ? गोयमा ! ण जाणंति ण पासंति, आहारेंति। एवं जाव तेइंदिया ॥

७. चउरिंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगइया ण जाणंति पासंति आहारेंति, अत्थेगइया, ण जाणंति ण पासंति आहारेंति ॥

८. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगइया जाणंति पासंति आहारेंति, अत्थेगइया जाणंति न पासंति आहारेंति, अत्थेगइया ण याणंति पासंति आहारेंति, अत्थेगइया ण जाणंति ण पासंति आहारेंति ॥

९. [2]•मणूसाणं पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगइया जाणंति पासंति आहारेंति, अत्थेगइया जाणंति न पासंति आहारेंति, अत्थेगइया ण जाणंति पासंति आहारेंति, अत्थेगइया ण जाणंति ण पासंति आहारेंति° ॥

१०. वाणमंतर-जोतिसिया जहा णेरइया ॥

११. वेमाणियाणं पुच्छा। गोयमा ! अत्थेगइया जाणंति पासंति आहारेंति, अत्थेगइया ण याणंति ण पासंति आहारेंति ॥

१२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—अत्थेगइया जाणंति पासंति आहारेंति ? अत्थेगइया ण जाणंति ण पासंति आहारेंति ? गोयमा ! वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—माइमिच्छद्दिट्ठिउववण्णगा य अमाइसम्मद्दिट्ठिउववण्णगा य। [3]•तत्थ णं जेते माइमिच्छद्दिट्ठिउववन्नगा ते णं न याणंति न पासंति आहारेंति। तत्थ णं जेते अमाइसम्मद्दिट्ठिउववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोववण्णगा य परंपरोववण्णगा य। तत्थ णं जेते अणंतरोववण्णगा ते णं ण याणंति ण पासंति आहारेंति। तत्थ णं जेते परंपरोववण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जेते अपज्जत्तगा ते णं ण याणंति ण पासंति आहारेंति। तत्थ णं जेते पज्जत्तगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवउत्ता य अणुवउत्ता य। तत्थ णं जेते अणुवउत्ता ते णं ण याणंति ण पासंति आहारेंति। तत्थ णं जेते उवउत्ता ते णं जाणंति पासंति आहारेंति°। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—अत्थेगइया जाणंति पासंति आहारेंति, अत्थेगइया ण याणंति ण पासंति आहारेंति ॥

अज्झवसाण-पदं

१३. णेरइयाणं[4] भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा

१. याणंति (क,ख,ग,घ)।

२. सं० पा०—एवं मणूसाण वि।

३. सं०पा०—एवं जहा इंदियउद्देसए पढमे भणियं तहा भाणियव्वं जाव से तेणट्ठेणं।

४. मनुष्यालापकस्य पूर्णं सूत्रमेवं स्यात्—मणुस्साणं भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता? गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता। ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ? गोयमा ! पसत्था वि अप्पसत्था वि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्झवसाणा पण्णत्ता। ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ? गोयमा ! पसत्था वि अप्पसत्था वि। एवं जाव वेमाणियाणं॥

सम्मत्ताभिगम-पदं

१४. णेरइया णं भंते ! किं सम्मत्ताभिगमी[1] ? मिच्छत्ताभिगमी ? सम्मामिच्छत्ताभिगामी ? गोयमा ! सम्मत्ताभिगमी वि मिच्छत्ताभिगमी वि सम्मामिच्छत्ताभिगमी वि। एवं जाव वेमाणिया, णवरं—एगिंदिय-विगलिंदिया णो सम्मत्ताभिगमी, मिच्छत्ताभिगमी, णो सम्मामिच्छत्ताभिगमी॥

परियारणा-पदं

१५. देवा णं भंते ! किं सदेवीया सपरियारा[2] ? सदेवीया अपरियारा ? अदेवीया सपरियारा ? अदेवीया अपरियारा ? गोयमा ! अत्थेगइया देवा सदेवीया सपरियारा, अत्थेगइया देवा अदेवीया सपरियारा, अत्थेगइया देवा अदेवीया अपरियारा, णो चेव णं देवा सदेवीया अपरियारा॥

१६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—अत्थेगइया देवा सदेवीया सपरियारा, [3]°अत्थेगइया देवा अदेवीया सपरियारा, अत्थेगइया देवा अदेवीया अपरियारा°, णो चेव णं देवा सदेवीया अपरियारा ? गोयमा ! भवणवति-वाणमंतर-जोतिस-सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवा सदेवीया सपरियारा, सणंकुमार-माहिंद-बंभलोग-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुएसु कप्पेसु देवा अदेवीया सपरियारा, गेवेज्जणुत्तरोववाइयदेवा अदेवीया अपरियारा, णो चेव णं देवा सदेवीया अपरियारा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—अत्थेगइया देवा सदेवीया सपरियारा, [4]°अत्थेगइया देवा अदेवीया सपरियारा, अत्थेगइया देवा अदेवीया अपरियारा,° णो चेव णं देवा सदेवीया अपरियारा॥

१७. कतिविहा णं भंते ! परियारणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा परियारणा पण्णत्ता, तं जहा—कायपरियारणा[5] फासपरियारणा रूवपरियारणा सद्दपरियारणा मणपरियारणा॥

१८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—पंचविहा परियारणा पण्णत्ता, तं जहा—कायपरियारणा जाव मणपरियारणा ? गोयमा ! भवणवति-वाणमंतर-जोइस-सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा, सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा, बंभलोय-लंतगेसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा, महासुक्क-सहस्सारेसु देवा सद्दपरियारगा, आणय-पाणय-आरण-अच्चुएसु कप्पेसु देवा मणपरियारगा, गेवेज्जअणुत्तरोववाइया देवा अपरियारगा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! [6]°एवं वुच्चति—पंचविहा परियारणा पण्णत्ता, तं जहा—कायपरियारणा जाव° मणपरियारणा॥

१९. तत्थ णं जेते कायपरियारगा देवा तेसि णं इच्छामणे समुप्पज्जइ—इच्छामो णं अच्छराहिं सद्धिं कायपरियारं[7] करेत्तए। तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे खिप्पा-

१. सम्यक्त्वाधिगामिनः (मवृ)।
२. सपरिचारा (ख,ग)।
३. सं०पा०—तं चेव जाव णो।
४. सं०पा०—तं चेव जाव णो।
५. °परियारणया (क,ख,घ) प्रायः सर्वत्र।
६. सं०पा०—तं चेव जाव मणपरियारणा।
७. वृत्तावपि 'कायपरिचारं कर्त्तुमिति' दृश्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेव ताओ अच्छराओ ओरालाइं सिंगाराइं मणुण्णाइं मणोहराइं मणोरमाइं उत्तरवेउ-व्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता तेसिं देवाणं अंतियं पादुब्भवंति। तए णं ते देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं कायपरियारणं करेंति, से जहाणामए—सीता पोग्गला सीतं पप्प सीतं चेव अतिवतित्ता णं चिट्ठंति, उसिणा वा पोग्गला उसिणं पप्प उसिणं चेव अइवइत्ताणं चिट्ठंति, एवमेव तेहिं देवेहिं ताहिं अच्छराहिं सद्धिं कायपरियारणे कते समाणे से इच्छामणे खिप्पामेवावेति ।।

२०. अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं सुक्कपोग्गला ? हंता अत्थि। ते णं भंते ! तासिं अच्छराणं कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ? गोयमा ! सोइंदियत्ताए चक्खिदियत्ताए घाणिंदियत्ताए रसिंदियत्ताए फासिंदियत्ताए इट्ठत्ताए कंतत्ताए मणुण्णत्ताए मणामत्ताए सुभगत्ताए सोहग्ग-रूव-जोव्वण-गुणलायण्णत्ताए ते तासिं भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।।

२१. तत्थ णं जेते फासपरियारगा देवा तेसि णं इच्छामणे समुप्पजइ—इच्छामो णं अच्छराहिं सद्धिं फासपरियारं करेत्तए। तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे खिप्पामेव ताओ अच्छाराओ ओरालाइं सिंगाराइं मणुण्णाइं मणोहराइं मणोरमाइं उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता तेसिं देवाणं अंतियं पादुब्भवंति। तए णं ते देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं फासपरियारणं करेंति, एवं जहेव कायपरियारगा तहेव निरवसेसं भाणियव्वं ।।

२२. तत्थ णं जेते रूवपरियारगा देवा तेसि णं इच्छामणे समुप्पज्जइ—इच्छामो णं अच्छराहिं सद्धिं रूवपरियारणं करेत्तए। तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे तहेव जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता जेणामेव ते देवा तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं देवाणं अदूरसामंते ठिच्चा ताइं ओरालाइं जाव मणोरमाइं उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं उवदंसेमाणीओ-उवदंसेमाणीओ चिट्ठंति। तए णं ते देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं रूवपरियारणं करेंति, सेसं तं चेव जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।।

२३. तत्थ णं जेते सद्दपरियारगा देवा तेसि णं इच्छामणे समुप्पज्जति—इच्छामो णं अच्छराहिं सद्धिं सद्दपरियारणं करेत्तए। तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे तहेव जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता जेणामेव ते देवा तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं देवाणं अदूरसामंते ठिच्चा अणुत्तराइं उच्चावयाइं सद्दाइं समुदीरेमाणीओ—समुदीरेमाणीओ चिट्ठंति। तए णं ते देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं सद्दपरियारणं करेंति, सेसं तं चेव जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।।

२४. तत्थ णं जेते मणपरियारगा देवा तेसिं इच्छामणे समुप्पज्जइ—इच्छामो णं अच्छराहिं सद्धिं मणपरियारणं करेत्तए। तए णं तेहिं देवेहिं एवं मणसीकए समाणे खिप्पामेव ताओ अच्छराओ तत्थगताओ चेव समाणीओ अणुत्तराइं उच्चावयाइं मणाइं पहारेमाणीओ-पहारेमाणीओ चिट्ठंति। तए णं ते देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं मणपरियारणं करेंति, सेसं णिरवसेसं तं चेव जाव भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।।

२५. एतेसि णं भंते ! देवाणं कायपरियारगाणं जाव मणपरियारगाणं अपरियारगाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वत्थोवा देवा अपरियारगा, मणपरियारगा संखेज्जगुणा, सद्दपरियारगा असंखेज्जगुणा, रूवपरियारगा असंखेज्जगुणा, फासपरियारगा[1] असंखेज्जगुणा, कायपरियारगा असंखेज्जगुणा ॥

१. फरिस° (क,ग,घ) ; फरस° (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचतीसइमं वेयणापदं

गाहा—

१ 'सीता २ य दव्व ३ सारीर, ४ सात'[1] तह वेदणा हवति ५ दुक्खा ।
६ अब्भुवगमोवक्कमिया, ७ णिदा य अणिदा य णायव्वा ॥१॥
सातमसातं सव्वे, सुहं च दुक्खं अदुक्खमसुहं च ।
माणसरहियं विगलिंदिया उ सेसा दुविहमेव ॥२॥

सीताइवेदणा-पदं

१. कतिविहा णं भंते ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेदणा पण्णत्ता, तं जहा—सीता उसिणा सीतोसिणा ॥

२. णेरइया णं भंते ! किं सीतं वेदणं वेदेंति ? उसिणं वेदणं वेदेंति ? सीतोसिणं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! सीयं पि वेदणं वेदेंति, उसिणं पि वेदणं वेदेंति, णो सीतोसिणं वेदणं वेदेंति[2] ॥

३. असुरकुमाराणं पुच्छा । गोयमा ! सीयं पि वेदणं वेदेंति, उसिणं पि वेदणं वेदेंति, सीतोसिणं पि वेदणं वेदेंति । एवं[3] जाव वेमाणिया ॥

---

१. सीता दव्व सारीर साता (क); सीता दव्व सरीरा साता (ख,ग); सीता दव्व सारीरा साता (घ) ।

२. अतोनन्तरं, मलयगिरिणा एवं टीकितम्—एतावत् सूत्रं चिरन्तनेष्वविप्रतिपत्त्या श्रूयते, केचिदाचार्याः पुनरेतद्विषयमधिकमपि सूत्रं पठन्ति, सतस्तन्मतमाह—केई एक्केक्कीए पुढवीए वेदणाओ भणंति—रयणप्पभापुढविणेरइया णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! णो सीयं वेदणं वेदेंति, उसिणं वेदणं वेदेंति, णो सीतोसिणं वेदणं वेदेंलि । एवं जाव वालुयप्पभापुढविणेरइया । पंकप्पभापुढविणेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! सीयं पि वेदणं वेदेंति, उसिणं पि वेदणं वेदेंति, णो सीओसिणं वेदणं वेदेंति । ते बहुयतरागा जे उसिणं वेदणं वेदेंति, ते थोवतरागा जे सीयं वेदणं वेदेंति । धूमप्पभाए एवं चेव दुविहा, नवरं— ते बहुयतरागा जे सीयं वेदणं वेदेंति, ते थोवतरागा जे उसिणं वेयणं वेदेंति । तमाए तमतमाए य सीयं वेदणं वेदेंति, णो उसिणं वेदणं वेदेंति, णो सीओसिणं वेदणं वेदेंति । आदर्शेषु एष पाठः संलग्नरूपेण लिखितोस्ति ।

३. मनुष्यालापकस्य पूर्णं सूत्रमेवं स्यात्—मणुस्साणं पुच्छा । गोयमा ! सीयं पि वेदणं वेदेंति, उसिणं पि वेदणं वेदेंति, सीतोसिणं पि वेदणं वेदेंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दव्वाइवेदणा-पदं

४. कतिविहा णं भंते ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा वेदणा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ ।।

५. णेरइया णं भंते ! किं दव्वओ वेदणं वेदेंति जाव किं भावओ वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! दव्वओ वि वेदणं वेदेंति जाव भावओ वि वेदणं वेदेंति। एवं[1] जाव वेमाणिया ।।

सारीराइवेदणा-पदं

६. कतिविहा णं भंते ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेदणा पण्णत्ता, तं जहा—सरीरा माणसा सारीरमाणसा ।।

७. णेरइया णं भंते ! किं सारीरं वेदणं वेदेंति ? माणसं वेदणं वेदेंति ? सारीरमाणसं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! सारीरं पि वेदणं वेदेंति, माणसं पि वेदणं वेदेंति सरीरमाणसं पि वेदणं वेदेंति । एवं[2] जाव वेमाणिया, णवरं—एगिंदिय-विगलिंदिया सारीरं वेदणं वेदेंति, णो माणसं वेदणं वेदेंति णो सारीरमाणसं वेदणं वेदेंति ।।

साताइवेदणा-पदं

८. कतिविहा णं भंते ! वेयणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, तं जहा—साता असाता सातासाता ।।

९. णेरइया णं भंते ! किं सातं वेदणं वेदेंति ? असातं वेदणं वेदेंति ? सातासातं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! तिविहं पि वेदणं वेदेंति । एवं[3] सव्वजीवा जाव वेमाणिया ।।

दुक्खाइवेदणा-पदं

१०. कतिविहा णं भंते ! वेयणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, तं जहा—दुक्खा सुहा अदुक्खमसुहा[4] ।।

११. णेरइया णं भंते ! किं दुक्खं वेदणं वेदेंति पुच्छा । गोयमा ! दुक्खं पि वेदणं वेदेंति, सुहं पि वेदणं वेदेंति, अदुक्खमसुहं पि वेदणं वेदेंति । एवं[5] जाव वेमाणिया ।।

अब्भोवगमियाइवेयणा-पदं

१२. कतिविहा णं भंते ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा वेदणा पण्णत्ता, तं जहा—अब्भोवगमिया य ओवक्कमिया य ।।

---

१. मनुष्यालापके पूर्णं सूत्रमेवं स्यात्—मणुस्सा णं भंते किं दव्वओ वेदणं वेदेंति जाव किं भावओ वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! दव्वओ वि वेदणं वेदेंति जाव भावओ वि वेदणं वेदेंति ।

२. मनुष्यालापके पूर्णं सूत्रमेवं स्यात्—मणुस्सा णं भंते ! किं सारीरं वेदणं वेदेंति ? माणसं वेदणं वेदेंति ? सारीरमाणसं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! सारीरं पि वेदणं वेदेंति, माणसं पि वेदणं वेदेंति, सारीरमाणसं पि वेदणं वेदेंति ।

३. मनुष्यालापके पूर्णं सूत्रमेवं स्यात्—मणुस्सा णं भंते ! किं सातं वेदणं वेदेंति ? असातं वेदणं वेदेंति ? सातासातं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! तिविहं पि वेदणं वेदेंति ।

४. अदुक्खा असुहा (ख) ।

५. मनुष्यालापके पूर्णं सूत्रमेवं स्यात्—मणुस्सा णं भंते! किं दुक्खं वेदणं वेदेंति पुच्छा। गोयमा! दुक्खं पि वेदणं वेदेंति, सुहं पि वेदणं वेदेंति, अदुक्खमसुहं पि वेदणं वेदेंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. णेरइया णं भंते ! किं अब्भोवगमियं वेदणं वेदेंति ? ओवक्कमियं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! णो अब्भोवगमियं वेदणं वेदेंति, ओवक्कमियं वेदणं वेदेंति । एवं जाव चउरिंदिया ।।

१४. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मणूसा[1] य दुविहं पि वेदणं वेदेंति ।।

१५. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा णेरइया ।।

णिदाइवेदणा-पदं

१६. कतिविहा णं भंते ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा वेदणा पण्णत्ता, तं जहा—णिदा य अणिदा य ।।

१७. णेरइया णं भंते ! किं णिदायं वेदणं वेदेंति ? अणिदायं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! णिदायं पि वेदणं वेदेंति अणिदायं पि वेदणं वेदेंति ।।

१८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—णेरइया णिदायं पि वेदणं वेदेंति अणिदायं पि वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सण्णिभूया य असण्णिभूया य । तत्थ णं जेते सण्णिभूया ते णं निदायं वेदणं वेदेंति, तत्थ णं जेते असण्णिभूया ते णं अणिदायं वेदणं वेदेंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—णेरइया निदायं पि वेदणं वेदेंति, अणिदायं पि वेदणं वेदेंति । एवं जाव थणियकुमारा ।।

१९. पुढविक्काइयाणं पुच्छा । गोयमा ! णो निदायं वेदणं वेदेंति, अणिदायं वेदणं वेदेंति ।।

२०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—पुढविक्काइया णो णिदायं वेदणं वेदेंति अणिदायं वेयणं वेदेंति ? गोयमा ! पुढविक्काइया सव्वे असण्णी असण्णिभूतं अणिदायं वेदणं वेदेंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—पुढविक्काइया णो णिदायं वेदणं वेदेंति, अणिदायं वेदणं वेदेंति । एवं जाव चउरिंदिया ।।

२१. पंचेंदियतिरिक्खजोणिया मणूसा[2] वाणमंतरा जहा णेरइया ।।

२२. जोइसियाणं पुच्छा । गोयमा ! णिदायं पि वेदणं वेदेंति अणिदायं पि वेदणं वेदेंति ।।

२३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—जोइसिया णिदायं पि वेदणं वेदेंति अणिदायं पि वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! जोतिसिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—माइमिच्छद्दिट्ठिउव-

---

१. मनुष्यालापके पूर्णं सूत्रमेवं स्यात्— मणुस्सा णं भंते ! किं अब्भोवगमियं वेदणं वेदेंति ? ओवक्कमियं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! दुविहं पि वेदणं वेदेंति ।

२. मनुष्यालापके पूर्णं सूत्रमेवं स्यात्—मणुस्सा णं भंते ! किं णिदायं वेदणं वेदेंति ? अणिदायं वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! णिदायं पि वेदणं वेदेंति अणिदायं पि वेदणं वेदेंति । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—मणुस्सा णिदायं पि वेदणं वेदेंति अणिदायं पि वेदणं वेदेंति ? गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सण्णिभूया य असण्णिभूया य । तत्थ णं जेते सण्णिभूया ते णं णिदायं वेदणं वेदेंति, तत्थ णं जेते असण्णिभूया ते णं अणिदायं वेदणं वेदेंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—मणुस्सा णिदायं पि वेदणं वेदेंति, अणिदायं पि वेदणं वेदेंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वण्णगा य अमाइसम्मद्दिट्ठिउववण्णगा य। तत्थ णं जेते माइमिच्छद्दिट्ठिउववण्णगा ते णं अणिदायं वेदणं वेदेंति, तत्थ णं जेते अमाइसम्मद्दिट्ठिउववण्णगा ते णं णिदायं वेदणं वेदेंति। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति—जोतिसिया दुविहं पि वेदणं वेदेंति। एवं वेमाणिया वि॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छत्तीसइमं समुग्घायपयं

गाहा—

१ वेयण २ कसाय ३ मरणे, ४ वेउव्विय ५ तेयए य ६ आहारे।
७ केवलिए[1] चेव भवे, जीव-मणुस्साण सत्तेव ॥

समुग्घायभेय-पदं

१. कति णं भंते! समुग्घाया पण्णत्ता? गोयमा! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयासमुग्घाए आहारगसमुग्घाए[2] केवलिसमुग्घाए ॥

समुग्घायकाल-पदं

२. वेदणासमुग्घाए णं भंते! कतिसमइए पण्णत्ते? गोयमा! असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए पण्णत्ते। एवं जाव आहारगसमुग्घाए ॥

३. केवलिसमुग्घाए णं भंते! कतिसमइए पण्णत्ते? गोयमा! अट्ठसमइए पण्णत्ते ॥

समुग्घायसामित्त-पदं

४. णेरइयाणं भंते! कति समुग्घाया पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए ॥

५. असुरकुमाराणं भंते! कति समुग्घाया पण्णत्ता? गोयमा! पंच समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयासमुग्घाए। एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

६. पुढविक्काइयाणं भंते! कति समुग्घाया पण्णत्ता? गोयमा! तिण्णि समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए। एवं जाव चउरिंदियाणं, णवरं—वाउक्काइयाणं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए ॥

७. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं जाव वेमाणियाणं भंते! कति समुग्घाया पण्णत्ता?

---

१. केवलए (क,ग)।
२. आहारसमु° (क,ख,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! पंच समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयासमुग्घाए, णवरं—मणूसाणं सत्तविहे समुग्घाए पण्णत्ते, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयासमुग्घाए आहारगसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए ॥

एगत्तेणं अतीताइसमुग्घाय-पदं

८. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स केवतिया वेदणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि । जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं असुरकुमारस्स वि, णिरंतरं जाव वेमाणियस्स । एवं जाव तेयगसमुग्घाए । एवं एते पंच चउवीसा दंडगा ॥

९. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स केवतिया आहारगसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि । जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा, उक्कोसेणं तिण्णि । केवतिया पुरेक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि । जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं चत्तारि । एवं णिरंतरं जाव वेमाणियस्स, नवरं—

१०. [1]°एगमेगस्स णं भंते ! मणूसस्स केवतिया आहारगसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि । जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं चत्तारि । केवतिया पुरेक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि । जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं चत्तारि° ॥

११. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स केवतिया केवलिसमुग्घया अतीता ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि । जस्सत्थि एक्को । एवं जाव वेमाणियस्स, णवरं—मणूसस्स अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि । जस्सत्थि एक्को । एवं पुरेक्खडा वि ॥

पुहत्तेणं अतीताइसमुग्घाय-पदं

१२. णेरइयाणं भंते ! केवतिया वेदणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता । एवं जाव वेमाणियाणं । एवं जाव तेयगसमुग्घाए । एवं एते वि पंच चउवीसा दंडगा ॥

१३. णेरइयाणं भंते ! केवतिया आहारगसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! असंखेज्जा । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! असंखेज्जा । एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं—वणप्फइकाइयाणं मणूसाण य इमं णाणत्तं—

१४. वणप्फइकाइयाणं भंते ! केवतिया आहारगसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता ।

मणूसाणं भंते ! केवतिया आहारगसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा ।

एवं पुरेक्खडा वि ॥

1 सं०पा०—मणूसस्स अतीता वि पुरेक्खडा वि जहा णेरइयस्स पुरेक्खडा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. णेरइयाणं भंते ! केवतिया केवलिसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! असंखेज्जा। एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं---वणप्फइ-काइय-मणूसेसु इमं णाणत्तं---

१६. वणप्फइकाइयाणं भंते ! केवतिया केवलिसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता ॥

१७. मणूसाणं भंते ! केवतिया केवलिसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! सिय अत्थि सिय णत्थि। जदि अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सतपुहत्तं। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा ॥

तब्भाव एव एगत्तेणं अतीताइसमुग्घाय-पदं

१८ एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवतिया वेदणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। एवं असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते ॥

१९. एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स णेरइयत्ते केवतिया वेदणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि तस्स सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा सिय अणंता ॥

२०. एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स असुरकुमारत्ते केवतिया वेदणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। एवं णागकुमारत्ते वि जाव वेमाणियत्ते। एवं जहा वेदणासमुग्घाएणं असुरकुमारे णेरइयादिवेमाणियपज्जवसाणेसु भणिए तहा णागकुमारादीया अवसेसेसु सट्ठाण-परट्ठाणेसु भाणियव्वा जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। एवमेते चउव्वीसं चउव्वीसा दंडगा भवंति ॥

२१. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवतिया कसायसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि एगुत्तरिया जाव अणंता ॥

२२. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवतिया कसायसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा सिय अणंता। एवं जाव णेरइयस्स थणियकुमारत्ते। पुढविकाइयत्ते एगुत्तरियाए णेयव्वं, एवं जाव मणूसत्ते। वाणमंतरत्ते जहा असुरकुमारत्ते। जोतिसियत्ते अतीता अणंता, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि सिय असंखेज्जा सिय अणंता। एवं वेमाणियत्ते वि सिय असंखेज्जा सिय अणंता ॥

२३. असुरकुमारस्स णेरइयत्ते अतीता अणंता। पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा सिय अणंता ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. असुरकुमारस्स असुरकुमारत्ते अतीता अणंता। पुरेक्खडा एगुत्तरिया। एवं नागकुमारत्ते निरंतरं जाव वेमाणियत्ते जहा णेरइयस्स भणियं तहेव भाणियव्वं। एवं जाव थणियकुमारस्स वि [जाव ?] वेमाणियत्ते, णवरं—सव्वेसिं सट्ठाणे एगुत्तरिए परट्ठाणे जहेव असुरकुमारस्स ॥

२५. पुढविक्काइयस्स णेरइयत्ते जाव थणियकुमारत्ते अतीता अणंता। पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा सिय अणंता ॥

२६. पुढविक्काइयस्स पुढविक्काइयत्ते जाव मणूसत्ते अतीता अणंता। पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि एगुत्तरिया। वाणमंतरत्ते जहा णेरइयत्ते। जोतिसिय-वेमाणियत्ते अतीता अणंता। पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि सिय असंखेज्जा सिय अणंता। एवं जाव मणूसे वि णेयव्वं। वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारे, णवरं—सट्ठाणे एगुत्तरियाए भाणियव्वा जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। एवं एते चउवीसं चउवीसा दंडगा ॥

२७. मारणंतियसमुग्घाओ सट्ठाणे वि परट्ठाणे वि एगुत्तरियाए नेयव्वो जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। एवमेते चउवीसं चउवीसा दंडगा भाणियव्वा ॥

२८. वेउव्वियसमुग्घाओ जहा कसायसमुग्घाओ तहा णिरवसेसो भाणियव्वो, णवरं—जस्स णत्थि तस्स ण वुच्चति। एत्थ वि चउवीसं चउवीसा दंडगा भाणियव्वा ॥

२९. तेयगसमुग्घाओ जहा मारणंतियसमुग्घाओ, णवरं—जस्स अत्थि। एवं एते वि चउवीसं चउवीसा दंडगा भाणियव्वा ॥

३० एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवतिया आहारगसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि। एवं जाव वेमाणियत्ते, णवरं—मणूसत्ते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा, उक्कोसेणं तिण्णि। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं चत्तारि। एवं सव्वजीवाणं मणूसेसु भाणियव्वं। मणूसस्स मणूसत्ते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो तिण्णि वा, उक्कोसेणं चत्तारि। एवं पुरेक्खडा वि। एवमेते चउवीसं चउवीसा दंडगा जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥

३१. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवतिया केवलिसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि। एवं जाव वेमाणियत्ते, णवरं—मणूसत्ते अतीता णत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि एक्को। मणूसस्स मणूसत्ते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि। जस्सत्थि एक्को। एवं पुरेक्खडा वि। एवमेते चउवीसं चउवीसा दंडगा ॥

तब्भाव एव पुहत्तेणं अतीताइसमुग्घाय-पदं

३२. णेरइयाणं भंते ! णेरइयत्ते केवतिया वेदणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता। एवं जाव वेमाणियत्ते। एवं सव्वजीवाणं भाणियव्वं जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते। एवं जाव तेयगसमुग्घाओ, णवरं—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववज्जिऊण[1] णेयव्वं जस्सत्थि वेउव्विय-तेयगा ।।

३३. णेरइयाणं भंते ! णेरइयत्ते केवतिया आहारगसमुग्घाता अतीता ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! नत्थि । एवं जाव वेमाणियत्ते, णवरं—मणूसत्ते अतीता असंखेज्जा, पुरेक्खडा असंखेज्जा । एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं—वणस्सइकाइयाणं मणूसत्ते अतीता अणंता, पुरेक्खडा अणंता । मणूसाणं मणूसत्ते अतीता सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा, एवं पुरेक्खडा वि । सेसा सव्वे जहा णेरइया । एवं एते चउव्वीसं चउव्वीसा दंडगा ।।

३४. णेरइयाणं भंते ! णेरइयत्ते केवतिया केवलिसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि । एवं जाव वेमाणियत्ते, णवरं—मणूसत्ते अतीता णत्थि, पुरेक्खडा असंखेज्जा । एवं जाव वेमाणिया, णवरं—वणप्फइकाइयाणं मणूसत्ते अतीता णत्थि, पुरेक्खडा अणंता । मणूसाणं मणूसत्ते अतीता सिय अत्थि सिय णत्थि । जदि अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सतपुहत्तं । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा । एवं एते चउव्वीसं चउव्वीसा दंडगा सव्वे पुच्छाए भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते ।।

समोहयासमोहयाणं अप्पाबहुय-पदं

३५. एतेसि णं भंते ! जीवाणं वेयणासमुग्घाएणं कसायसमुग्घाएणं मारणंतियसमुग्घाएणं वेउव्वियसमुग्घाएणं तेयगसमुग्घाएणं आहारगसमुग्घाएणं केवलिसमुग्घाएणं समोहयाणं[2] असमोहयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसमुग्घाएणं समोहया, केवलिसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, तेयगसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया अणंतगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, वेदणासमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया असंखेज्जगुणा ।।

३६. एतेसि णं भंते ! णेरइयाणं वेदणासमुग्घाएणं कसायसमुग्घाएणं मारणंतियसमुग्घाएणं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा णेरइया मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, वेदणासमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया संखेज्जगुणा ।।

३७. एतेसि णं भंते ! असुरकुमाराणं वेदणासमुग्घाएणं कसायसमुग्घाएणं मारणंतियसमुग्घाएणं वेउव्वियसमुग्घाएणं तेयगसमुग्घाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा असुरकुमारा तेयगसमुग्घाएणं समोहया, मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, वेयणासमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया असंखेज्जगुणा । एवं जाव थणियकुमारा ।।

---

१. उव्वेज्जिऊण (क); उववज्जिऊण (घ) । २. सम्मोहयाणं (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. एतेसि णं भंते ! पुढविक्कइयाणं वेदणासमुग्घाएणं कसायसमुग्घाएणं मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविक्काइया मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया, कसायसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, वेदणासमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया असंखेज्जगुणा । एवं जाव वणप्फइकाइया । णवरं—सव्वत्थोवा वाउक्काइया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहया, मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा,[1] वेदणासमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया असंखेज्जगुणा[2] ॥

३९. बेइंदियाणं भंते ! वेयणासमुग्घाएणं कसायसमुग्घाएणं मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदिया मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया, वेदणासमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा[3], असमोहया संखेज्जगुणा । एवं जाव चउरिंदिया ॥

४०. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! वेदणासमुग्घाएणं कसायसमुग्घाएणं मारणंतियसमुग्घाएणं वेउव्वियसमुग्घाएणं तेयासमुग्घाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचेंदियतिरिक्खजोणिया तेयासमुग्घाएणं समोहया, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, वेदणासमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा[4], असमोहया संखेज्जगुणा ॥

४१. मणुस्साणं भंते ! वेदणासमुग्घाएणं कसायसमुग्घाएणं मारणंतियसमुग्घाएणं वेउव्वियसमुग्घाएणं तेयगसमुग्घाएणं आहारगसमुग्घाएणं केवलिसमुग्घाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणूसा आहारगसमुग्घाएणं समोहया, केवलिसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, तेयगसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा, वेयणासमुग्घाएणं समोहया

---

१. असंखेज्जगुणा (क,ख,घ); अस्माकं पार्श्वे मलयगिरिवृत्तेः हस्तलिखितादर्शद्वयं वर्तते । तत्र 'ग' संकेतितादर्शे लिखितायां वृत्तौ 'तेभ्यो पि कषायसमुद्घातेन समुद्धता 'संख्येयगुणा' इति पाठोस्ति । अपरस्मिन् वृत्यादर्शे 'तेभ्योपि कषायसमुद्घातेन समुद्धता 'असंख्येयगुणा' इति पाठोस्ति । मुद्रितवृत्तौ 'संख्येयगुणाः' इति विद्यते । पृथ्व्यादिसूत्रेषु द्वीन्द्रियादिसूत्रेषु च 'कसायसमुग्घाएणं समोहया 'संखेज्जगुणा' इति पाठो दृश्यते, तमनुसृत्य अत्रापि 'संखेज्जगुणा' इति पाठः स्वीकृतः ।

२. संखेज्जगुणा (क) ।

३. मलयगिरिवृत्तौ 'असंखेज्जगुणा' इति पाठोस्ति—'तेभ्यः कषायसमुद्घातेन समुद्धता असंख्येयगुणाः, अतिप्रभूततराणां लोभादिकषायसमुद्घातभावात्' । अत्र अतिप्रभूततराणामितिप्रयोगः संख्येयगुणत्वमेव सूचयति । असंख्येयगुणत्वमिति न जाने कथं जातम् ।

४. असंखेज्जगुणा (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया असंखेज्जगुणा। वाणमंतर-जोतिसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

कसायसमुग्घाय-पदं

४२. कति णं भंते ! कसायसमुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसायसमुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहसमुग्घाए माणसमुग्घाए मायासमुग्घाए लोभसमुग्घाए ॥

४३. णेरइयाणं भंते ! कति कसायसमुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाय-समुग्घाया पण्णत्ता । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

४४. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स केवइया कोहसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि । जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं जाव वेमाणियस्स । एवं जाव लोभसमुग्घाए । एते चत्तारि दंडगा ॥

४५. णेरइयाणं भंते ! केवतिया कोहसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता । एवं जाव वेमाणियाणं । एवं जाव लोभसमुग्घाए वि चत्तारि दंडगा ॥

४६. एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवतिया कोहसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । एवं जहा[1] वेदणासमुग्घाओ भणिओ तहा कोहसमुग्घाओ वि भाणियव्वो णिरवसेसं जाव वेमाणियत्ते । माणसमुग्घाओ मायासमुग्घातो य णिरवसेसं जहा[2] मारणं-तियसमुग्घाओ । लोभसमुग्घाओ जहा[3] कसायसमुग्घाओ, णवरं—सव्वजीवा असुरादी णेरइएसु लोभकसाएणं एगुत्तरिया णेयव्वा ॥

४७. णेरइयाणं भंते ! णेरइयत्ते केवतिया कोहसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता । एवं जाव वेमाणियत्ते । एवं सट्ठाण-परट्ठाणेसु सव्वत्थ वि भाणियव्वा सव्वजीवाणं चत्तारि समुग्घाया जाव लोभसमुग्घातो जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते ॥

४८. एतेसि णं भंते ! जीवाणं कोहसमुग्घाएणं माणसमुग्घाएणं मायासमुग्घाएणं लोभसमुग्घाएण य समोहयाणं अकसायसमुग्घाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अकसायसमुग्घाएणं समोहया, माणसमुग्घाएणं समोहया अणंतगुणा, कोहसमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, मायासमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, लोभसमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया संखेज्जगुणा ॥

४९. एतेसि णं भंते ! णेरइयाणं कोहसमुग्घाएणं माणसमुग्घाएणं मायासमुग्घाएणं लोभसमुग्घाएणं समोहयाणं असमोहयाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा णेरइया लोभसमुग्घाएणं समोहया, मायासमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, माणसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, कोहसमुग्घाएणं समोहया

---

१. प० ३६।१८-२० ।
२. प० ३६।२७ ।
३. प० ३६।२१-२६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संखेज्जगुणा, असमोहया संखेज्जगुणा ।।

५०. असुरकुमाराणं पुच्छा। गोयमा ! सव्वत्थोवा असुरकुमारा कोहसमुग्घाएणं समोहया, माणसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, मायासमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, लोभसमुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया संखेज्जगुणा। एवं सव्वदेवा जाव वेमाणिया ।।

५१. पुढविक्काइयाणं पुच्छा। गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविक्काइया माणसमुग्घाएणं समोहया, कोहसमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, मायासमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, लोभसमुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया संखेज्जगुणा। एवं जाव पंचेंदिय-तिरिक्खजोणिया ।।

५२. मणुस्सा जहा जीवा, णवरं—माणसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा ।।

छाउमत्थियसमुग्घाय-पदं

५३. कति णं भंते ! छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्विय-समुग्घाए तेयगसमुग्घाए आहारगसमुग्घाए ।।

५४. णेरइयाणं भंते ! कति छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतिय-समुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए ।।

५५. असुरकुमाराणं पुच्छा। गोयमा ! पंच छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयग-समुग्घाए ।।

५६. एगिंदिय-विगलिंदियाणं पुच्छा। गोयमा ! तिण्णि छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए, णवरं—वाउक्का-इयाणं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतिय-समुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए ।।

५७. पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! पंच समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयग-समुग्घाए ।।

५८. मणूसाणं भंते ! कति छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! छ छाउम-त्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयगसमुग्घाए आहारगसमुग्घाए ।।

ओगाहफुसाइ-पदं

५९. जीवे णं भंते ! वेदणासमुग्घाए समोहए समोहणित्ता जे पोग्गले णिच्छुभति तेहिं[1] णं भंते ! पोग्गलेहिं केवतिए खेत्ते अफुण्णे ? केवतिए खेत्ते फुडे ? गोयमा ! सरीरपमाणमेत्ते विक्खंभ-बाहल्लेणं णियमा छद्दिसिं एवइए खेत्ते अफुण्णे एवइए खेत्ते फुडे ।।

१. ते (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०. से णं भंते ! खेत्ते केवइकालस्स अफुण्णे ? केवइकालस्स फुडे ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण वा एवइकालस्स अफुण्णे एवइकालस्स फुडे ।।

६१. ते णं भंते ! पोग्गला केवइकालस्स णिच्छुभति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तस्स ।।

६२. ते णं भंते ! पोग्गला णिच्छूढा समाणा जाइं तत्थ पाणाइं भूयाणं जीवाइं सत्ताइं अभिहणंति वत्तेंति लेसेंति संघाएंति संघट्टेंति परियावेंति किलावेंति उद्दवेंति तेहिंतो णं भंते ! से जीवे कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए ।।

६३. ते णं भंते ! 'जीवा ताओ'[1] जीवाओ कतिकिरिया ? गोयमा ! सिय तिकिरिया सिय चउकिरिया सिय पंचकिरिया ।।

६४. से णं भंते ! जीवे ते य जीवा अण्णेसिं जीवाणं परंपराघाएणं कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरिया वि चउकिरिया वि पंचकिरिया वि ।।

६५. णेरइए णं भंते ! वेदणासमुग्घाएणं समोहए, एवं जहेव[2] जीवे, णवरं—णेरइयाभिलावो । एवं णिरवसेसं जाव वेमाणिए । एवं कसायसमुग्घातो वि भाणियव्वो ।।

६६. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता जे पोग्गले णिच्छुभति तेहि णं भंते ! पोग्गलेहिं केवतिए खेत्ते अफुण्णे ? केवतिए खेत्ते फुडे ? गोयमा ! सरीरपमाणमेत्ते विक्खंभ-बाहल्लेणं आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं जोयणाइं एगदिसिं एवइए खेत्ते अफुण्णे एवतिए खेत्ते फुडे ।।

६७. से णं भंते ! खेत्ते केवतिकालस्स अफुण्णे ? केवतिकालस्स फुडे ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं एवतिकालस्स अफुण्णे एवतिकालस्स फुडे । सेसं तं चेव जाव[3] पंचकिरिया ।।

६८. एवं णेरइए वि, णवरं—आयामेणं जहण्णेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं जोयणाइं एगदिसिं एवतिए खेत्ते अफुण्णे एवतिए खेत्ते फुडे; विग्गहेणं एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा, णवरं—चउसमइएण ण भण्णति । सेसं तं चेव जाव[4] पंचकिरिया वि ।।

६९. असुरकुमारस्स जहा जीवपए, णवरं—विग्गहो तिसमइओ जहा णेरइयस्स सेसं तं चेव । जहा असुरकुमारे एवं जाव वेमाणिए, णवरं - एगिंदिए जहा जीवे णिरवसेसं ।।

७०. जीवे णं भंते ! वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता जे पोग्गले णिच्छुभति तेहि णं भंते ! पोग्गलेहिं केवतिए खेत्ते अफुण्णे ? केवतिए खेत्ते फुडे ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ते विक्खंभ-बाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं जोयणाइं एगदिसिं विदिसिं वा एवतिए खेत्ते अफुण्णे एवतिए खेत्ते फुडे ।।

७१. से णं भंते ! खेत्ते केवतिकालस्स अफुण्णे ? केवतिकालस्स फुडे ? गोयमा !

---

१. × (क,ख,ग,घ) ।
२. प० ३६।५६-६४ ।
३. प० ३६।६१-६४ ।
४. प० ३६।६६,६७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण एवतिकालस्स अफुण्णे एवतिकालस्स फुडे। सेसं तं चेव जाव[1] पंचकिरिया वि॥

७२. एवं णेरइए वि, णवरं—आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं जोयणाइं एगदिसिं एवतिए खेत्ते। केवतिकालस्स तं चेव जहा जीवपए। एवं जहा णेरइयस्स तहा असुरकुमारस्स, णवरं—एगदिसिं विदिसिं वा। एवं जाव थणिय-कुमारस्स। वाउक्काइयस्स जहा जीवपदे, णवरं—एगदिसिं। पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स णिरवसेसं जहा णेरइयस्स मणूस-वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियस्स णिरवसेसं जहा असुर-कुमारस्स॥

७३. जीवे णं भंते! तेयगसमुग्घाएणं[2] समोहए समोहणित्ता जे पोग्गले णिच्छुभइ तेहि णं भंते! पोग्गलेहिं केवतिए खेत्ते अफुण्णे? एवं जहेव[3] वेउव्वियसमुग्घाए तहेव, णवरं—आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागं[4], सेसं तं चेव। एवं जाव वेमाणियस्स, णवरं—पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्स एगदिसिं एवतिए खेत्ते अफुण्णे॥

७४. जीवे णं भंते! आहारगसमुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता जे पोग्गले णिच्छुभइ तेहि णं भंते! पोग्गलेहिं केवतिए खेत्ते अफुण्णे? केवतिए खेत्ते फुडे? गोयमा! सरीरपमाणमेत्ते विक्खंभ-बाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं जोयणाइं एगदिसिं एवइए खेत्ते अफुण्णे एवइए खेत्ते फुडे॥

७५. से णं भंते! केवइकालस्स अफुण्णे? केवइकालस्स फुडे? गोयमा! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं एवतिकालस्स अफुण्णे एवतिकालस्स फुडे॥

७६. ते णं भंते! पोग्गला केवतिकालस्स णिच्छुभति? गोयमा! जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तस्स॥

७७. ते णं भंते! पोग्गला णिच्छूढा समाणा जाइं तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणंति जाव उद्दवेंति तओ[5] णं भंते! जीवे कतिकिरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए। ते णं भंते! जीवा तातो जीवाओ कतिकिरिया? गोयमा! एवं चेव॥

७८. से णं भंते! जीवे ते य जीवा अण्णेसिं जीवाणं परंपराघाएणं कतिकिरिया? गोयमा! तिकिरिया वि चउकिरिया वि पंचकिरिया वि। एवं मणूसे वि॥

---

१. प० ३६।६१-६४।
२. तेयास°(क); तेयस° (ग)।
३. प० ३६।७०-७२।
४. असंखेज्जतिभागं (क,ख,ग,घ); वृत्तौ 'असंखेज्जतिभागं' इति पाठस्यैव समर्थनं कृतमस्ति—तेषां तेजससमुद्‌घातमारभमाणानां जघन्यतोपि क्षेत्रमायामतोऽङ्गुलासंङ्ख्येयभाग-प्रमाणं भवति, न तु संङ्ख्येयभागमानम्। तथापि समग्रपाठाध्ययनेन अत्र 'संखेज्जतिभागं' इति पाठ एव समीचीनः। वैक्रियसमुद्‌घात-सूत्रे 'असंखेज्जतिभागं' इति पाठो विद्यते। यदि अत्र 'असंखेज्जतिभागं' इति पाठ इष्टो भवेत् तथा 'एवं जहेव वेउव्वियसमुग्घाए तहेव' इति पाठान्तरं णवरं—'आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, सेसं तं चेव' इति पाठस्य व्यर्थता स्यात्।
५. ते (क,ग,घ); तते (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवलिसमुग्घाय-पदं

७९. अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो केवलिसमुग्घाएणं समोहयस्स जे चरिमा णिज्जरापोग्गला सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोगं पि य णं ते फुसित्ता णं चिट्ठंति ? हंता गोयमा ! अणगारस्स भावियप्पणो केवलिमुग्घाएणं समोहयस्स जे चरिमा णिज्जरापोग्गला सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोगं पि य णं ते फुसित्ता णं चिट्ठंति ।।

८०. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेण वा फासं जाणति पासति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

८१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—छउमत्थे णं मणूसे तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि वि वण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेण वा फासं जाणति पासति ? गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए, वट्टे तेल्ला-पूयसंठाणसंठिए, वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिए, वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए, वट्टे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिए, एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसय-सहस्साइं सोलस य सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसते तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसतं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते। देवे णं महिड्ढीए[1] *महज्जुतीए महायसे महब्बले महाणुभागे° महासोक्खे[2] एगं महं सविलेवणं गंधसमुग्गयं गहाय तं अवदालेति, तं महं एगं सविलेवणं गंधसमुग्गयं अवदालेत्ता इणामेव कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छराणिवातेहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा, से णूणं गोयमा ! से केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे ? हंता फुडे। छउमत्थे णं गोयमा ! मणूसे तेसिं घाणपोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं जाणति पासति ? भगवं ! णो इणट्ठे समट्ठे। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—छउमत्थे णं मणूसे तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं जाणति पासति। एसुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोगं पि य णं फुसित्ता णं चिट्ठंति ।।

८२. कम्हा णं भंते ! केवली समुग्घायं गच्छति ? गोयमा ! केवलिस्स चत्तारि कम्मंसा अक्खीणा अवेदिया अणिज्जिण्णा भवंति, तं जहा—वेयणिज्जे आउए णामे गोए। सव्वबहुप्पएसे से वेदणिज्जे कम्मे भवति, सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवति।

गाहा—

विसमं समं करेति, बंधणेहिं ठितीहि य।
विसमसमीकरणयाए, बंधणेहिं ठितीहि य ।।१।।

एवं खलु केवली समोहण्णति, एवं खलु समुग्घायं गच्छति ।।

८३. सव्वे वि णं भंते ! केवली समोहण्णंति ? सव्वे वि णं भंते ! केवली समुग्घायं गच्छंति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

---

१. सं०पा०—महिड्ढीए जाव महासोक्खे। महिड्ढिए (क,घ) महड्ढीए (ख)।

२. महासुक्खे (ख); महेसक्खे, महासक्खे (मवृपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जस्साउएण तुल्लाइं, बंधणेहिं ठितीहि य ॥
भवोवग्गहकम्माइं, समुग्घायं से ण गच्छति ॥१॥
अगंतूणं समुग्घायं, अणंता केवली जिणा ।
जर-मरणविप्पमुक्का, सिद्धिं वरगतिं गता ॥२॥

८४. कतिसमइए णं भंते ! आउज्जीकरणे[1] पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए आउज्जीकरणे पण्णत्ते ॥

८५. कतिसमइए णं भंते ! केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठसमइए पण्णत्ते, तं जहा—पढमे समए दंडं करेति, बिइए समए कवाडं करेति, ततिए समए मंथं करेति, चउत्थे समए लोगं पूरेइ, पंचमे समए लोगं पडिसाहरति, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरति, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरति, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरति, पडिसाहरित्ता ततो पच्छा सरीरत्थे भवति ॥

८६. से णं भंते ! तहासमुग्घायगते किं मणजोगं जुंजति ? वइजोगं जुंजति ? कायजोगं जुंजति ? गोयमा ! णो मणजोगं जुंजइ, णो वइजोगं जुंजइ, कायजोगं जुंजति ॥

८७. कायजोगण्णं भंते ! जुंजमाणे किं ओरालियसरीरकायजोगं जुंजति ? ओरालियमीसासरीरकारजोगं जुंजति ? किं वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजति ? वेउव्वियमीसासरीरकायजोगं जुंजति ? किं आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ ? आहारगमीसासरीरकायजोगं जुंजति ? किं कम्मगसरीरकायजोगं जुंजइ ? गोयमा ! ओरालियसरीरकायजोगं पि जुंजति ओरालियमीसासरीरकायजोगं पि जुंजति, णो वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजति णो वेउव्वियमीसासरीरकायजोगं जुंजति, णो आहारगसरीरकायजोगं जुंजति णो आहारगमीसासरीरकायजोगं जुंजति, कम्मगसरीरकायजोगं पि जुंजति; पढमट्ठमेसु समएसु ओरालियसरीरकायजोगं जुंजति, बितिय-छट्ठ-सत्तमेसु समएसु ओरालियमीसगसरीरकायजोगं जुंजति, ततिय-चउत्थ-पंचमेसु समएसु कम्मगसरीरकायजोगं जुंजति ॥

८८. से णं भंते ! तहासमुग्घायगते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वाइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से णं तओ पडिनियत्तति, पडिनियत्तित्ता ततो पच्छा मणजोगं पि जुंजति वइजोगं पि जुंजति कायजोगं पि जुंजति ॥

८९. मणजोगण्णं जुंजमाणे किं सच्चमणजोगं जुंजति ? मोसमणजोगं जुंजति ? सच्चामोसमणजोगं जुंजति ? असच्चामोसमणजोगं जुंजति ? गोयमा ! सच्चमणजोगं जुंजति, णो मोसमणजोगं जुंजति णो सच्चामोसमणजोगं जुंजति, असच्चामोसमणजोगं पि जुंजइ ॥

९०. वइजोगं जुंजमाणे किं सच्चवइजोगं जुंजति ? मोसवइजोगं जुंजति ? सच्चामोसवइजोगं जुंजति ? असच्चामोसवइजोगं जुंजति ? गोयमा ! सच्चवइजोगं जुंजति, णो मोसवइजोगं जुंजइ णो सच्चामोसवइजोगं जुंजति, असच्चामोसवइजोगं पि जुंजइ ॥

९१. कायजोगं जुंजमाणे आगच्छेज्ज वा गच्छेज वा चिट्ठेज्ज वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा उल्लंघेज्ज वा पलंघेज्ज वा पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं

---

१. आउज्जियाकरणे, आउस्सियाकरणे। (मवृपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चप्पिणेज्जा ।।

९२. से णं भंते ! तहासजोगी सिज्झति[1] °बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्व-दुक्खाणं° अंतं करेति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से णं पुव्वामेव सण्णिस्स पंचेंदियस्स पज्जत्तयस्स जहण्णजोगिस्स हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं पढमं मणजोगं णिरुंभइ, तओ अणंतरं च णं बेइंदियस्स पज्जत्तस्स जहण्णजोगिस्स हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं दोच्चं वइजोगं णिरुंभति, तओ अणंतरं च णं सुहुमस्स पणगजीवस्स अपज्जत्तयस्स जहण्ण-जोगिस्स हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं तच्चं कायजोगं णिरुंभति । से णं एतेणं उवाएणं पढमं मणजोगं णिरुंभइ, णिरुंभित्ता वइजोगं णिरुंभति, णिरुंभित्ता कायजोगं णिरुंभति, णिरुंभित्ता जोगणिरोहं करेति, करेत्ता अजोगयं पाउणति, पाउणित्ता ईसीहस्सपंचक्ख-रुच्चारणद्धाए असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं सेलेसिं पडिवज्जइ, पुव्वरइतगुणसेढीयं च णं कम्मं तीसे सेलेसिमद्धाए असंखेज्जाहिं गुणसेढीहिं असंखेज्जे कम्मखंधे खवयति, खवइत्ता वेदणिज्जाउय-णाम-गोत्ते इच्चेते चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेति, खवेत्ता ओरालियतेया-कम्मगाइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहति, विप्पजहित्ता उजुसेढीपडिवण्णे[2] अफुसमाणगतीए एगसमएणं अविग्गहेणं उड्ढं गंता सागारोवउत्ते सिज्झति[3] ।।

सिद्धसरूव-पदं

९३. ते णं तत्थ सिद्धा भवंति—असरीरा जीवघणा दंसण-णाणोवउत्ता णिट्ठियट्ठा णीरया णिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सासयणागतद्धं कालं चिट्ठंति ।।

९४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति—ते णं तत्थ सिद्धा भवंति—असरीरा जीव-घणा दंसण-णाणोवउत्ता णिट्ठियट्ठा णीरया णिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सासतमणागयद्धं कालं चिट्ठंति ? गोयमा ! से जहाणामए—बीयाणं अग्गिदड्ढाणं पुणरवि अंकुरुप्पत्ती न हवइ, एवामेव सिद्धाण वि कम्मबीएसु दड्ढेसु पुणरवि जम्मुप्पत्ती न हवति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—ते णं तत्थ सिद्धा भवंति—असरीरा जीवघणा दंसण-णाणो-वउत्ता निट्ठियट्ठा णीरया णिरेयणा वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठंति त्ति ।।

गाहा—

णिच्छिण्णसव्वदुक्खा, जाति-जरा-मरण-बंधणविमुक्का ।
सासयमव्वाबाहं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ।।१।।

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर २,७३,०७८

अनुष्टुप् श्लोक ८,५३३ अक्षर २२

---

१. सं०पा०—सिज्झति जाव अंतं ।

२. उज्जु० (क,ख,घ) ।

३. सिज्झति बुज्झति (क,ख,ग,घ,पु) ; वृत्तिकृद्भ्यां नैतत्पदं व्याख्यातम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंबुद्दीवपण्णत्ती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंबुद्दीवपण्णत्ती

पढमो वक्खारो

१. णमो अरहंताणं[1] ।।

२. तेणं[2] कालेणं तेणं समएणं मिहिला णामं णयरी होत्था—रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धा, वण्णओ[3] ।।

३. तीसे णं मिहिलाए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं माणिभद्दे णामं चेइए होत्था, वण्णओ[4] । जियसत्तू राया, धारिणी देवी, वण्णओ[5] ।।

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढो, परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ।।

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोयमे[6] गोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए[7] वज्जरिसभनारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपह्मगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबह्मचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगए सव्वक्खर-सन्निवाती समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

६. तते णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले समुप्पन्नसड्ढे समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं

---

१. अरिहंताणं (त्रि, प) ; क्वचिन् नमो अरि-हंताणं नमो अरुहंताणं चेति पाठान्तरं दृश्यते (हीवृ) ; अरिहंताणंति पाठान्तरं, अरुहं-ताणं इत्यादि पाठान्तरम् (पुवृ) ।

२. 'ते' इति प्राकृतशैलीवशात्तस्मिन्निति द्रष्टव्यम् 'ण' मिति वाक्यालंकारे, अथवा सप्तम्यर्थे तृतीया आर्षत्वात् (पुवृ, शावृ, हीवृ) ।

३. ओ० सू० १ ।

४. ओ० सू० २-१३ ।

५. ओ० सू० १४, १५ ।

६. गोयम (त्रि) ।

७. सं० पा०—समचउरंसे जाव आयाहिण पयाहिणं करेइ जाव वंदति वंदित्ता जाव एवं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे पज्जुवासमाणे° एवं वयासी—

७. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ? केमहालए णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ? किंसंठिए णं भंते ! जंबुदीवे दीवे ? किमागारभावपडोयारे[1] णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भितरए[2] सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूयसंठाणसंठिए, वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिए वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाण-संठिए, वट्टे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिए एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते। से णं एगाए वइरामईए जगईए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ।।

८. सा णं जगई अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले बारस जोयणाइं विक्खंभेणं, मज्झे अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, मूले विच्छिण्णा[3], मज्झे संक्खित्ता, उवरिं[4] तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया सव्ववइरामई अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरीया[5] सउज्जोया पासा-दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।।

९. सा णं जगई एगेणं महंतगवक्खकडएणं[6] सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता। से णं गवक्खकडए[7] अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ।।

१०. तीसे णं जगईए उप्पिं बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महई[8] एगा पउमवरवेइया पण्णत्ता—अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं, जगईसमिया परिक्खे-वेणं सव्वरयणामई अच्छा जाव पडिरूवा ।।

११. तीसे णं पउमवरवेइयाए अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया णेमा[9] एवं जहा[10] जीवाभिगमे जाव अट्ठो जाव धुवा णियया सासया[11] °अक्खया अव्वया अवट्ठिया° णिच्चा ।।

१२. तीसे णं जगईए उप्पिं 'पउमवरवेइयाए बाहिं'[12] एत्थ णं महं एगे वणसंडे

---

१. किमागारपडोयारे (क, ख)।
२. सव्वब्भंतरए (प)।
३. वित्थिण्णा (अ, ख)।
४. उप्पि (अ).
५. सस्सिरीया (क, त्रि) ; समरीइया (प) ; सस्सिरीय' त्ति सश्रीका बहिर्विनिर्गतकिरण-जालेनापि श्रेष्ठा जीवाभिगमे तु समरीइत्ति पाठः (ह्रीवृ)।
६. °गवक्खजालकडएणं (अ, त्रि, पुवृ) ; °गव-क्खजालवाडएणं (ख) ; °गवक्खकडएणं (पुवृपा) ; जालकडएणं (जी० ३।२६२)।
७. गवक्खवाडए (ख) ; जालकडए (जी० ३।२६२)।
८. महं (अ, क, ख, त्रि, स)।
९. णिम्म (त्रि) ; णेम्मा (प)।
१०. जी० ३।२६४-२७२।
११. सं० पा०—सासया जाव णिच्चा।
१२. बाहिं पउमवरवेइयाए (अ, क, ख, त्रि, प, स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ते—देसूणाइं दो जोयणाइं विक्खंभेणं[1], जगईसमए परिक्खेवेणं, वणसंडवण्णओ णेयव्वो[2] ।।

१३. तस्स णं वणसंडस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए—आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[3] णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहि य तणेहि य उवसोभिए, तं जहा—किण्हेहिं 'जाव सुक्किलेहिं'[4] । एवं वण्णो गंधो फासो सद्दो पुक्खरिणीओ पव्वयगा घरगा मंडवगा पुढविसिलावट्टया य णेयव्वा[5] । तत्थ णं बहवे वाणमंतरा देवा य देवीओ य आसयंति सयंति[6] चिट्ठंति णिसीयंति तुयट्टंति रमंति ललंति कीलंति मोहंति, पुरापोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा विहरंति ।।

१४. तीसे णं जगईए उप्पि 'पउमवरवेइयाए अंतो'[7] एत्थ णं महं एगे वणसंडे पण्णत्ते—देसूणाइं दो जोयणाइं विक्खंभेणं, वेदियासमए[8] परिक्खेवेणं किण्हे जाव[9] तणविहूणे[10] णेयव्वे ।।

१५. जंबुद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्स कति दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता, तं जहा—विजए वेजयंते जयंते अपराजिते ।।

१६. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवस्स दीवस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पणयालीसं जोयणसहस्साइं वीइवइत्ता जंबुद्दीवे दीवे पुरत्थिमपेरंते लवणसमुद्दपुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं सीआए महाणईए उप्पि, एत्थ णं जंबुद्दीवस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते—अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, तावइयं चेव पवेसेणं, सेए वरकणगथूभियाए जाव दारस्स वण्णओ जाव[11] रायहाणी । एवं चत्तारिवि दारा सरायहाणिया भाणियव्वा ।।

---

१. चक्कवालविक्खंभेणं (जी० ३।२७३) ।

२. जी० ३।२७३, २७४ ।

३. जी० ३।२७५ ।

४. × (अ, क, ख, त्रि, प, स); पुण्यसागरवृत्तौ लिखितपाठानुसारी पाठोसौ गृहीतः जीवाजीवाभिगमेपि (३।२७५) एवमेव पाठो दृश्यते ।

५. जी० ३।२७६-२९५ ।

६. 'प' प्रति विहाय अन्येष्वादर्शेषु अतः परवर्त्तिपाठो नैव लिखितो दृश्यते, वृत्तित्रयेपि व्याख्यातोस्ति, पुण्यसागरमहोपाध्यायेन इति टिप्पणी कृतास्ति—सूत्रैकदेशग्रहणात् सम्पूर्णं सूत्रमेव ज्ञातव्यम् । प्रमेयरत्नमञ्जूषायामपि एवमस्ति—'चिट्ठंती' त्यादिकः पाठो जीवाभिगमोक्तो लिखितोस्ति ।

७. अंतो पउमवरवेइयाए (अ,क,ख,प,त्रि,स) ।

८. द्रष्टव्यम्-जीवाजीवाभिगमस्य ३।२९६ सूत्रस्य पाद टिप्पणम् ।

९. जं० १।१२,१३ ।

१०. शान्त्याचार्येण 'तणविहूणे' इति पाठो व्याख्यातः नवरं तृणविहीणो ज्ञातव्यः अत्र तृणजन्यः शब्दोपि तृणशब्देनाभिधीयते उपचारादतस्तृणशब्दविहीनो ज्ञातव्यः उपलक्षणत्वादस्य मणिशब्दविहीनोपि, पद्मवरवेदिकान्तरिततया तथाविधः वाताभावतो मणीनां तृणानां चाचलनेन परस्परं संघर्षाभावात् शब्दाभावः उपपन्नश्चायमर्थः जीवाभिगमसूत्रवृत्त्योस्तथैव दर्शनादिति । हीरविजयवृत्तावपि एवमेवास्ति । पुण्यसागरमहोपाध्येन 'तणसद्दविहूणे' इति पाठो व्याख्यातः ।

११. जी० ३।२९८-५६३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. जंबुद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्स दारस्स य दारस्स य केवइए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! अउणासीइं जोयणसहस्साइं बावण्णं च जोयणाइं देसूणं च अद्धजोयणं दारस्स य दारस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

संगहणीगाहा—

अउणासीइ सहस्सा, बावण्णं चेव जोयणा हुंति ।
ऊणं च अद्धजोयण, दारंतर जंबुद्दीवस्स ।।१।।

१८. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भरहे णामं वासे पण्णत्ते ? गोयमा ! चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं, दाहिणलवणसमुद्दस्स उत्तरेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे भरहे णामं वासे पण्णत्ते—खाणुबहुले कंटकबहुले विसमबहुले दुग्गबहुले पव्वयबहुले पवायबहुले उज्झरबहुले णिज्झरबहुले खड्डाबहुले[1] दरिबहुले णदीबहुले दहबहुले रुक्खबहुले गुच्छबहुले गुम्मबहुले लयाबहुले वल्लीबहुले अडवीबहुले सावयबहुले तेणबहुले तक्करबहुले डिंबबहुले डमरबहुले दुब्भिक्खबहुले दुक्कालबहुले पासंडबहुले किवणबहुले वणीमगबहुले ईतिबहुले मारिबहुले कुवुट्ठिबहुले अणावुट्ठिबहुले रायबहुले रोगबहुले संकिलेसबहुले अभिक्खणं-अभिक्खणं संखोहबहुले पादीणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे उत्तरओ पलियंकसंठाणसंठिए दाहिणओ धणुपट्ठसंठिए तिधा लवणसमुद्दं[2] पुट्ठे गंगासिंधूहिं महाणईहिं[3] वेयड्ढेण य पव्वएण छब्भागपविभत्ते जंबुद्दीवदीवणउयसयभागे[4] पंचछव्वीसे जोयणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंभेणं ।।

१९. भरहस्स णं वासस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं वेयड्ढे णामं पव्वए[5] जे णं भरहं[6] वासं दुहा विभयमाणे-विभयमाणे चिट्ठई, तं जहा—दाहिणड्ढभरहं च उत्तरड्ढभरहं च ।।

२०. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणद्धे भरहे णामं वासे पण्णत्ते ? गोयमा ! वेयड्ढस्स पव्वयस्स दाहिणेणं, दाहिणलवणसमुद्दस्स उत्तरेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणद्धभरहे णामं वासे पण्णत्ते—पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे अद्धचंदसंठाणसंठिए तिहा लवणसमुद्दं पुट्ठे, गंगासिंधूहिं महाणईहिं तिभागपविभत्ते दोण्णि अट्ठतीसे जोयणसए तिण्णि य एगूणवीसइभागे जोयणस्स विक्खंभेणं । तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा—पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा, णव जोयणसहस्साइं सत्त य अडयाले जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं, तीसे धणुपट्ठे दाहिणेणं णव जोयणसहस्साइं

---

१. गड्डबहुले (क,ख); खड्डाबहुले गड्डबहुले (त्रि) ।
२. लवणं (अ,त्रि,ब) ।
३. × (अ,ब) ।
४. °णओतसयभागे (अ,क,ब) ।
५. पव्वए पण्णत्ते (क,ख,त्रि,प,स,पुवृ,शावृ,हीवृ); एतत्पदं ताडपत्रीयादर्शयोर्नास्ति, अर्वाचीनादर्शेषु वर्तते अतएव वृत्तित्रयेपि व्याख्यातोस्ति, अग्रे 'यत्' पदस्य प्रयोगोस्ति तेन नापेक्षितोप्यस्ति ।
६. भारहं (क,ख,स) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तछावट्ठे जोयणसए इक्कं च एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।।

२१. दाहिणड्ढभरहस्स णं भंते ! वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए--आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[1] 'णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहि य'[2] उवसोभिए, तं जहा --कित्तिमेहिं[3] चेव अकित्तिमेहिं चेव ।।

२२. दाहिणड्ढभरहे णं भंते ! वासे मणुयाणं केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! ते णं मणुया बहुसंघयणा बहुसंठाणा बहुउच्चत्तपज्जवा बहुआउपज्जवा बहूइं वासाइं आउं पालेंति, पालेत्ता अप्पेगइया णिरयगामी, अप्पेगइया तिरियगामी, अप्पेगइया मणुयगामी, अप्पेगइया देवगामी, अप्पेगइया सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति[4] सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ।।

२३. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे वेयड्ढे णामं पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! उत्तरद्धभरहवासस्स दाहिणेणं, दाहिणड्ढभरहवासस्स उत्तरेणं, 'पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं'[5], एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे भरहे[6] वासे वेयड्ढे णामं पव्वए पण्णत्ते--पाईणपडीणायए[7] उदीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे--पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे, पणवीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, छस्सकोसाइं[8] जोयणाइं उव्वेहेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं। तस्स बाहा पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं चत्तारि अट्ठासीए जोयणसए सोलस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं पण्णत्ता। तस्स जीवा उत्तरेणं पाइणपडीणायया[9] दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा--पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा, दस जोयणसहस्साइं सत्त य वीसे जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स आयामेणं। तीसे धणुपट्ठं[10] दाहिणेणं दस जोयणसहस्साइं सत्त य तेयाले जोयणसए पण्णरस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं, रुयगसंठाणसंठिए सव्वरययामए[11] अच्छे सण्हे लण्हे

---

१. जी० ३।२७५ ।

२. णाणामणिपंचवण्णेहिं तणेहिं मणीहि य (अ, क,ख,त्रि,ब); नानाप्रकारपञ्चवर्णैर्मणिभिश्-चोपशोभितः (पुवृ); यत्तु क्वचिद् 'णाणाम-णिवण्णेहिं' तिपाठः स चाशुद्धः सम्भाव्यते, जीवाभिगमादौ व्याख्यातपाठस्यैव दर्शनात् (हीवृ) ।

३. कत्तिमेहिं (त्रि) ।

४. परिनिव्वायंति (क,ख,त्रि,प); 'परिनिर्वान्ति' वृत्तित्रयेपि स्वीकृतपाठस्य संस्कृतरूपं दृश्यते ।

५. 'प' प्रतिं विहाय शेषादर्शेषु 'लवणपच्चत्थिमेणं लवणपुरत्थिमेणं' इति संक्षिप्तरूपं विद्यते ।

६. भारहे (अ,क,ख,त्रि,स) ।

७. पातीणपडियायते (अ,त्रि) ।

८. छच्च कोसाइं (प) ।

९. पाईणपडियायता (अ,त्रि) ।

१०. धणुवट्ठं (अ); धणुपुट्ठं (ख) ।

११. सव्वरयणामए (अ,ख,त्रि); एष पाठोशुद्धः प्रतिभाति 'वृत्तित्रयेपि 'रजतमयः' इति व्याख्यातत्वात् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घट्ठे मट्ठे णीरए णिम्मले णिप्पंके णिक्कंकडच्छाए सप्पभे समिरीए[1] पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। ताओ णं पउमवरवेइयाओ अद्धजोयणं उद्धं उच्चत्तेणं, पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं, पव्वयसमियाओ आयामेणं। वण्णओ भाणियव्वो[2]। ते णं वणसंडा देसूणाइं दो जोयणाइं विक्खंभेणं, पउमवरवेइयासमगा आयामेणं, किण्हा किण्होभासा जाव वण्णओ[3]॥

२४. वेयड्ढस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं दो गुहाओ पण्णत्ताओ—उत्तर-दाहिणाययाओ पाईणपडीणविच्छिण्णाओ पण्णासं जोयणाइं आयामेणं, दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं, अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं, वइरामयकवाडोहाडिआओ[4] जमलजुयलकवाड-घणदुप्पवेसाओ णिच्चंधयारतिमिस्साओ ववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसपहाओ जाव[5] पडिरूवाओ, तं जहा—तिमिसगुहा चेव, खंडप्पवायगुहा[6] चेव। तत्थ णं दो देवा महिड्ढीया महज्जुईया महाबला[7] महायसा महासोक्खा[8] महाणुभागा पलिओवमट्ठिईया परिवसंति, तं जहा—कयमालए[9] चेव, णट्टमालए चेव॥

२५. तेसि णं वणसंडाणं बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ वेयड्ढस्स पव्वयस्स उभओ पासिं दस-दस जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं दुवे विज्जाहरसेढीओ पण्णत्ताओ—पाईणपडीणाययाओ[10] उदीणदाहिणविच्छिण्णाओ दस-दस जोयणाइं विक्खंभेणं, पव्वय-समियाओ आयामेणं, उभओ पासिं[11] दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खि-त्ताओ। ताओ णं पउमवरवेइयाओ अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं, पव्वयसमियाओ आयामेणं, वण्णओ णेयव्वो[12]। वणसंडावि पउमवरवेइयासमगा आयामेणं, वण्णओ[13]॥

२६. विज्जाहरसेढीणं भंते! भूमीणं केरिसए आगारभावपडोयारे[14] पण्णत्ते? गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए—आलिंगपुक्खरेइ वा जाव 'णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहि य'[15] उवसोभिए, तं जहा—कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं

---

१. ससिरिए (अ,त्रि); ससिरीए (क,ख); सस्सिरिए (प)।
२. जी० ३।२६३-२७२।
३. जी० ३।२७३-२९५।
४. वइरामयगवाडो° (अ)।
५. यावच्छब्दाद् वैताढ्यस्य अवयवरूपत्वेन वैता-ढ्यवत् अनयोरपि 'सव्वरयणामयाओ अच्छाओ सण्हाओ' इति विशेषणानि वक्तव्यानि (हीवृ)।
६. खंडगप्पवायगुहा (अ, क, ख, त्रि, ब, स, ठाणं २।२७९); वृत्तित्रयेपि 'खंडप्रपात' रूपं व्याख्यातमिति तन्मूलेगृहीतम्।
७. महब्बला (क,ख,त्रि,स)।
८. महेसक्का (अ); महेसक्खा (स, जी० ३।३४८)।
९. कतमालए (क,ख,स,)।
१०. पाईणपडियायताओ (अ,त्रि)।
११. पस्सिं (अ,त्रि)।
१२. जी० ३।२६३-२७२।
१३. जी० ३।२७३-२९५।
१४. °पडोगारे (त्रि,ब)।
१५. णाणामणिपंचवण्णेहिं (अ,क,ख,त्रि,ब); शान्तिचन्द्राचार्येणापि अत्र वृत्तौ टिप्पणीकृतास्ति-अत्र बहुष्वादर्शेषु 'णाणामणिपंचवण्णेहिं मणीहिं' इति पाठो दृश्यते, परं राजप्रश्नीयसूत्रवृत्त्यो-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेव । तत्थ णं दक्खिणिल्लाए[1] विज्जाहरसेढीए गगणवल्लभपामोक्खा पण्णासं विज्जाहरणगरावासा पण्णत्ता, उत्तरिल्लाए[2] विज्जाहरसेढीए रहनेउरचक्कवालपामोक्खा सट्ठिं विज्जाहरणगरावासा पण्णत्ता । एवामेव सपुव्वावरेणं[3] दाहिणिल्लाए उत्तरिल्लाए विज्जाहरसेढीए एगं दसुत्तरं 'विज्जाहरणगरावाससयं भवतीतिमक्खायं । ते विज्जाहरणगरा रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धा पमुइयजण-जाणवया जाव[4] पडिरूवा । 'तेसु णं विज्जाहरणगरेसु'[5] विज्जाहररायाणो परिवसंति—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारा, रायवण्णओ भाणियव्वो[6] ॥

२७. विज्जाहरसेढीणं भंते ! मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे[7] पण्णत्ते ? गोयमा ! ते णं मणुया बहुसंघयणा बहुसंठाणा बहुउच्चत्तपज्जवा बहुआउपज्जवा जाव[8] सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ॥

२८. तासि णं विज्जाहरसेढीणं बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ वेयड्ढस्स पव्वयस्स उभओ पासिं[9] दस-दस जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं दुवे आभिओगसेढीओ पण्णत्ताओ– पाईणपडीणाययाओ[10] उदीणदाहिणविच्छिण्णाओ दस-दस जोयणाइं विक्खंभेणं, पव्वयसमियाओ आयामेणं, उभओ पासिं[11] दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खित्ताओ, वण्णओ[12] दोण्हवि, पव्वयसमियाओ आयामेणं ।

२९. आभिओग्गसेढीणं[13] भंते ! केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव तणेहिं उवसोभिए, वण्णाइ जाव[14] तणाणं सद्दोत्ति ॥

३०. तासि णं आभिओग्गसेढीणं तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं जाव[15] वाणमंतरा देवा य देवीयो अ आसयंति सयंति[16] •चिट्ठंति णिसीयंति तुयट्टंति रमंति ललंति कीडंति मोहंति, पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं° फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥

३१. तासु णं आभिओग्गसेढीसु सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोम-जम[17]-वरुण-वेसमणकाइयाणं आभिओग्गाणं देवाणं बहवे भवणा पण्णत्ता । ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा वण्णओ जाव[18] अच्छरगण-संघ-संविकिण्णा[19] •दिव्वतुडितसद्दसंपणादिता सव्व-

---

दृष्टत्वात् सङ्गतत्वाच्च 'नाणामणिपंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहिं' इति पाठो लिखितोस्तीति बोध्यम् ।

१. दाहिणिल्लाए (प) ।

२. उवरिल्लाए (अ,क) ।

३. पुव्वावरेणं (अ,क,ख,ब,स, हीवृ) ।

४. ओ०सू० १ ।

५. विज्जाहरणगरसयं तेसु बहवे (अ,ब) ।

६. ओ०सू० १४ ।

७. °पडोमारे (ब) ।

८. जं० १।२२ ।

९. पसिं (अ,त्रि,ब) ।

१०. पाईणपडियायताओ (अ,त्रि,ब) ।

११. पसिं (अ,त्रि,ब) ।

१२. जी० ३।२६३-२६५ ।

१३. आभिओगसेढीणं (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।

१४. जी० ३।२७५-२८३ ।

१५. जी० ३।२८४-२९५ ।

१६. सं०पा०—सयंति जाव फलवित्तिविसेसं ।

१७. यम (ब) ।

१८. पण्ण० २।३० ।

१९. विकिण्णा (अ,क,ख,त्रि,प,ब); सं०पा०—अच्छरगणसंघसंविकिण्णा जाव पडिरूवा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्टा मट्ठा णीरया णिम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पहा सस्सिरीया समिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा° पडिरूवा। तत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोम-जम-वरुण-वेसमणकाइया बहवे आभिओग्गा देवा महिड्ढीया महज्जुईया[1] •महाबला महायसा° महासोक्खा महाणुभागा पलिओवमट्ठिईया परिवसंति ।।

३२. तासि णं आभिओग्गसेढीणं बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ वेयड्ढस्स पव्वयस्स उभओ पासिं पंच-पंच जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं वेयड्ढस्स पव्वयस्स सिहरतले पण्णत्ते—पाईणपडीणायए[2] उदीणदाहिणविच्छिण्णे दस जोयणाइं विक्खंभेणं, पव्वयसमगे आयामेणं। से णं एक्काए पउमवरवेइयाए एक्केण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। पमाणं वण्णगो[3] दोण्हंपि ।।

३३. वेयड्ढस्स णं भंते! पव्वयस्स सिहरतलस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते? गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए—आलिंगपुक्खरेइ वा जाव णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहि य उवसोभिए जाव वावीओ पुक्खरिणीओ जाव[4] वाणमंतरा देवा य देवीओ य आसयंति[5] •सयंति चिट्ठंति णिसीयंति तुयट्टंति रमंति ललंति कीडंति मोहंति, पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं° भुंजमाणा विहरंति ।।

३४. जंबुद्दीवे णं भंते! दीवे भारहे वासे वेयड्ढपव्वए कइ कूडा पण्णत्ता? गोयमा! णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धायतणकूडे दाहिणड्ढभरहकूडे खंडप्पवायगुहाकूडे माणिभद्दकूडे वेयड्ढकूडे पुण्णभद्दकूडे तिमिसगुहाकूडे उत्तरड्ढभरहकूडे वेसमणकूडे ।।

३५. कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढपव्वए सिद्धायतणकूडे णामं कुडे पण्णत्ते? गोयमा! पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं दाहिणड्ढभरहकूडस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढपव्वए सिद्धायतणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते, छ सक्कोसाइं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले छ सक्कोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं, मज्झे देसूणाइं पंच जोयणाइं विक्खंभेणं, उवरि साइरेगाइं तिण्णि जोयणाइं विक्खंभेणं, मूले देसूणाइं वीसं जोयणाइं परिक्खेवेणं, मज्झे देसूणाइं पण्णरस जोयणाइं परिक्खेवेणं, उवरि साइरेगाइं णव जोयणाइं परिक्खेवेणं, मूले विच्छिण्णे मज्झे संखित्ते उप्पि तणुए गोपुच्छ-संठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे सण्हे जाव[6] पडिरूवे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिखित्ते, पमाणं वण्णओ[7] दोण्हंपि ।।

३६. सिद्धायतणकूडस्स णं उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए—आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[8] वाणमंतरा देवा य[9] •देवीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति

---

१. सं०पा०—महज्जुईया जाव महासोक्खा।
२. पाईणपडियायए (अ,त्रि,प)।
३. जी० ३.२६३-२६५।
४. जी० ३।२७५-२६५।
५. सं०पा०—आसयंति जाव भुंजमाणा।
६. जं० १।८।
७. जी० ३।२६३-२६५।
८. जी० ३।२७५-२६५।
९. सं० पा०—देवा य जाव विहरंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिसीयंति तुयट्टंति रमंति ललंति कीलंति मोहंति, पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा° विहरंति ॥

३७. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महं एगे सिद्धायतणे पण्णत्ते—कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसयसन्निविट्ठे खंभुग्गयसुकयवइरवेइयातोरण-वररइयसालभंजिय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थवेरुलियविमलखंभे णाणामणिरयणखचिय-उज्जलबहुसमसुविभत्त-भूमिभागे ईहामिग - उसभ तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्ते कंचणमणिरयणथूभियाए णाणाविहपंचवण्णघंटापडागपरि-मंडियग्गसिहरे धवले[1] मरीइकवयं[2] विणिम्मुयंते लाउल्लोइयमहिए जाव[3] झया[4] ॥

३८. तस्स णं सिद्धायतणस्स तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता। ते णं दारा पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं विक्खंभेणं, तावइयं चेव पवेसेणं सेया वरकणग-थूभियागा, दारवण्णओ जाव[5] वणमाला ॥

३९. तस्स णं सिद्धायतणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए —आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[6]—

४०. तस्स णं सिद्धायतणस्स बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे देवच्छंदए[7] पण्णत्ते—पंचधणुसयाइं आयामविक्खंभेणं, साइरेगाइं पंच धणु-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सव्वरयणामए, एत्थ णं अट्ठसयं जिणपडिमाणं जिणुस्सेहप्पमाण-मेत्ताणं संनिक्खित्तं चिट्ठइ। एवं जाव[8] धूवकडुच्छुगा ॥

४१. कहि णं भंते ! वेयड्ढपव्वए दाहिणड्ढभरहकूडे णामं कूडे पण्णत्ते ? गोयमा !

---

१. 'चवले' त्यादि चपलं चञ्चलं चिकचिकाय-मानत्वात् (हीवृ)।

२. मिरीयियकवयं (ब)।

३. 'जाव झया' इति समर्पणपदात् पूर्णोऽपिपाठः समर्पितो भवति। द्रष्टव्यं जीवाजीवाभि-गमस्य प्रतिपत्तेः ३।४१०-४१८। शान्तिचन्द्र-सूरिणापि एतस्मिन् विषये एका टिप्पणी कृतास्ति—'जाव झया' इति अत्र यावत्कर-णात् वक्ष्यमाणयमिकाराजधानीप्रकरणगत-सिद्धायतनवर्णकेतिदिष्टः सुधर्मासभागमो वाच्यो, यावत्सिद्धायतनोपरि ध्वजा उपवर्णिता भवन्ति, यद्यत्र यावत्पदग्राह्ये द्वारवर्णकप्रतिमा-वर्णकधूपकडुच्छादिकं सर्वमन्तर्भवति तथापि स्थानाशून्यतार्थं किञ्चित् सूत्रे दर्शयति— 'तस्स णं सिद्धायतणस्स' इत्यादि।

४. सया (अ,ब)।

५. जी० ३।२९८-३०४।

६. जी० ३।३७५।

७. अत्रानुक्तापि आयामविष्कम्भाभ्यां देवच्छन्द-कसमाना उच्चैस्त्वेन तु तदर्द्धमाना मणि-पीठिका सम्भाव्यते, अन्यत्र राजप्रश्नीयादिषु देवच्छन्दकाधिकारे तथाविधमणिपीठिकाया दर्शनात् यथासूर्याभविमाने 'तस्स णं सिद्धायत-णस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णत्ता सोलसजोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं अट्ठ जोयणाइं उच्चत्तेणं' ति, तथा विजयाराजधान्यामपि 'तस्स णं सिद्धाययणस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगा मणि-पेढिया पण्णत्ता दो जोयणाइं आयामविक्खं-भेणं जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमया अच्छा जाव पडिरूवा' इति (शावृ)।

८. जी० ३।४१३-४१७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंडप्पवायकूडस्स पुरत्थिमेणं सिद्धायतणकूडस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं वेयड्ढपव्वए दाहिणड्ढभरहकूडे णामं कूडे पण्णत्ते, सिद्धायतणकूडप्पमाणसरिसे जाव[1]—

४२. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते—कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसियपहसिए जाव[2] पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

४३. तस्स णं पासायवडेंसगस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णत्ता—पंच धणुसयाइं आयामविक्खंभेणं, अड्ढाइज्जाहिं धणुसयाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई[3] ॥

४४. तीसे णं मणिपेढियाए उप्पिं सीहासणे पण्णत्ते, सीहासणं[4] सपरिवारं भाणियव्वं[5] ॥

४५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—दाहिणड्ढभरहकूडे दाहिणड्ढभरहकूडे ? गोयमा ! दाहिणड्ढभरहकूडे णं दाहिणड्ढभरहे णामं देवे महिड्ढीए जाव[6] पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं दाहिणड्ढभरहकूडस्स दाहिणड्ढाए[7] रायहाणीए, अण्णेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य[8] • आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे° विहरइ[9] ॥

४६. कहि णं भंते ! दाहिणड्ढभरहकूडस्स देवस्स दाहिणड्ढा णामं रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वतस्स दक्खिणेणं तिरियमसंखेज्जदीवसमुद्दे वीईवइत्ता 'अण्णं जंबुद्दीवं दीवं'[10] दक्खिणेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं दाहिणड्ढभरहकूडस्स देवस्स दाहिणड्ढभरहा णामं रायहाणी भाणिअव्वा, जहा[11] विजयस्स देवस्स। एवं सव्व कूडा णेयव्वा जाव[12] वेसमणकूडे परोप्परं पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं, इमेसिं वण्णावासे गाहा—

मज्झे वेयड्ढस्स उ, कणयमया तिण्णि होंति कूडा उ।
सेसा पव्वयकूडा, सव्वे रयणामया होंति ॥१॥

---

१. जं० १।३५,३६।
२. जं० ४।४८।
३. सर्वात्मना रत्नमयी अच्छेत्यादि प्राग्वत् (पुवृ)।
४. × (क,ख,त्रि,प,स)।
५. जी० ३।३०६-३११, ३३७-३४३।
६. जं० १।२४।
७. दक्षिणार्द्धया इति पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात्, पाठान्तरानुसाराद् वा दक्षिणार्द्धभरताया राजधान्या इति (शावृ)।
८. सं० पा०—देवीण य जाव विहरइ।
९. अत्र सूत्रेऽदृश्यमानमपि 'से तेणट्ठेण' मित्यादि सूत्रं स्वयं ज्ञेयम् (शावृ)।
१०. अण्णं जंबुद्दीवे दीवे (अ,क,ख,ब,स); अयण्णं जंबुद्दीवं दीवं (त्रि); अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे (जी० ३।३४९)।
११. जी० ३।३४९-५६३।
१२. जं० १।३४।

माणिभद्दकूडे वेयड्ढकूडे पुण्णभद्दकूडे—एए तिण्णि कणगामया सेसा छप्पि रयणामया। 'छण्हं सरिणामया देवा, दोण्हं कयमालए चेव णट्टमालए चेव"[1]।

गाहा—

जण्णामया य कूडा, तन्नामा खलु हवंति ते देवा।
पलिओवमट्ठिईया, हवंति पत्तेय पत्तेयं ॥१॥

रायहाणीओ[2] ? जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियं असंखेज्जदीवसमुद्दे वीईवइत्ता अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं रायहाणीओ भाणियव्वाओ[3] विजयरायहाणी सरिसियाओ ॥

४७. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—वेयड्ढे पव्वए वेयड्ढे पव्वए ? गोयमा! वेयड्ढे णं पव्वए भरहं वासं दुहा विभयमाणे-विभयमाणे चिट्ठइ, तं जहा—दाहिणड्ढभरहं च उत्तरड्ढभरहं च। वेयड्ढगिरिकुमारे य एत्थ देवे महिड्ढीए जाव[4] पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—वेयड्ढे पव्वए वेयड्ढे पव्वए।

अदुत्तरं च णं गोयमा ! वेयड्ढस्स पव्वयस्स सासए णामधेज्जे पण्णत्ते—जं ण कयाइ ण आसि ण कयाइ ण अत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे णियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ॥

४८. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे उत्तरड्ढभरहे णामं वासे पण्णत्ते ? गोयमा ! चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं, वेयड्ढस्स पव्वयस्स उत्तरेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे उत्तरड्ढभरहे णामं वासे पण्णत्ते—पाईणपडीणायए[5] उदीणदाहिणविच्छिण्णे पलियंकसंठिए दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे—पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे, पच्चत्थिमिल्लाए[6] • कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं° पुट्ठे, गंगासिंधूहिं महाणईहिं

---

१ दोण्हं वि सरिसणामया देवा कयमालए चेव णट्टमालए चेव, सेसाणं छण्ह सरिसणामया (प); हीरविजयवृत्तौ शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ च एष पाठो व्यत्ययेन व्याख्यातोस्ति—दोण्हमित्यादि नवानां कूटानां मध्ये प्रथमस्य सिद्धायतनकूटस्य स्वामी अर्हन्नेव नापरो देव इत्यष्टानां तु मध्ये द्वयोः खण्डप्रपाततमिस्राभिधानयोः कूटयोः विसदृशनामकौ देवौ तद्यथा—कृतमालकश्च नृत्तमालकश्च चकारैवकारौ समुच्चयावधारणार्थौ सेसाणं छण्हं ति शेषाणां दक्षिणार्द्धभरतकूट १ मणिभद्रकूट २ वैताढ्यकूट ३ पूर्णभद्रकूट ४ उत्तरभरतार्द्धकूट ५ वैश्रमणकूट ६ नाम्नां कूटानां सदृशनामकाः सदृशं कूटेन समानं नाम येषां ते सदृशनामका देवा अधिपतयो भवन्ति अथोक्तमेवार्थंव्यक्ती कुर्वन् स्थितिं प्रतिपादयितुं गाथामाह (हीवृ); द्वयोः कूटयोर्विसदृशनामकौ देवौ स्वामिनौ, तद्यथा—कृतमालकश्चैव नृत्तमालकश्चैव, तमिस्रगुहाकूटस्य कृतमालः स्वामी खण्डप्रपातगुहाकूटस्य नृत्तमालः स्वामी, शेषाणां षण्णां कूटानां सदृक्—कूटनामसदृशं नाम येषां ते सदृग्नामका देवाः स्वामिनः (शावृ)।

२. 'रायहाणीओ' त्ति एतेषां राजधान्यः क्व सन्तीति प्रश्नवाक्यं सूचितम् (पुवृ)।

३. जी० ३।३४९-५६३।

४. जं० १।२४।

५. °पडीयायए (त्रि,ब)।

६. सं० पा०—पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे।

तिभागपविभत्ते दोण्णि अट्ठतीसे जोयणसए तिण्णि य एगूणवीसइभागे जोयणस्स विक्खंभेणं। तस्स बाहा पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं अट्ठारस बाणउए जोयणसए सत्त य एगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं। तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया[1] दुहा[2] लवणसमुद्दं पुट्ठा तहेव जाव चोद्दस जोयणसहस्साइं चत्तारि य एक्कहत्तरे[3] जोयणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणे आयामेणं पण्णत्ता। तीसे धणुपट्ठे दाहिणेणं चोद्दस जोयणसहस्साइं पंच अट्ठावीसे जोयणसए एक्कारस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं॥

४९. उत्तरड्ढभरहस्स णं भंते! वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते? गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[4] णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहि य उवसोभिए, तं जहा—कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव॥

५०. उत्तरड्ढभरहे णं भंते! वासे मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते? गोयमा! ते णं मणुया बहुसंघयणा[5] °बहुसंठाणा बहुउच्चत्तपज्जवा बहुआउपज्जवा बहूइं वासाइं आउं पालेंति, पालेत्ता अप्पेगइया णिरयगामी अप्पेगइया तिरियगामी अप्पेगइया मणुयगामी अप्पेगइया देवगामी° अप्पेगइया सिज्झंति[6] °बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति° सव्वदुक्खाणमंतं करेंति॥

५१. कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे उत्तरड्ढभरहे वासे उसभकूडे णामं पव्वए पण्णत्ते? गोयमा! गंगाकुंडस्स पच्चत्थिमेणं, सिंधुकुंडस्स पुरत्थिमेणं, चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे उत्तरड्ढभरहे वासे उसहकूडे णामं पव्वए पण्णत्ते—अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दो जोयणाइं उव्वेहेणं, मूले अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, मज्झे छ जोयणाइं विक्खंभेणं, उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, मूले साइरेगाइं पणवीसं जोयणाइं परिक्खेवेणं, मज्झे साइरेगाइं अट्ठारस जोयणाइं परिक्खेवेणं, उवरिं साइरेगाइं दुवालस जोयणाइं परिक्खेवेणं, [पाठांतरं[7]—मूले बारस जोयणाइं विक्खंभेणं, मज्झे अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, उप्पिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, मूले साइरेगाइं सत्ततीसं जोयणाइं परिक्खेवेणं, मज्झे साइरेगाइं पणवीसं जोयणाइं परिक्खेवेणं, उप्पिं साइरेगाइं बारस जोयणाइं परिक्खेवेणं] मूले विच्छिण्णे मज्झे संक्खित्ते उप्पिं तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वजंबूणयामए अच्छे सण्हे जाव[8] पडिरूवे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए तहेव जाव[9] भवणं कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं। अट्ठो[10] तहेव, उप्पलाणि पउमाणि जाव[11] उसभे य एत्थ देवे महिड्ढीए जाव[12] दाहिणेणं रायहाणी तहेव मंदरस्स पव्वयस्स जहा विजयस्स अविसेसियं॥

---

१. °पडीयायता (त्रि,ब)।
२. दुधा (ख,स)।
३. एक्कसत्तरे (अ)।
४. जी० ३।२७५।
५. सं० पा०—बहुसंघयणा जाव अप्पेगइया।
६. सं० पा०—सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणमंतं।
७. अयं वाचनाभेदः आगमसङ्कलनकालीन एव विद्यते, न तु आदर्शगतः।
८. जं० १।८।
९. जं० १।३५,३६,४२-४४।
१०. एतत्पदं 'से केणट्ठेणं भंते!' इति पदस्य सूचकमस्ति।
११. जी० ३।६३५।
१२. जी० ३।३४८-५६३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीओ वक्खारो

कालचक्क-पदं

१. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे कतिविहे काले पण्णत्ते ? गोयमा ? दुविहे काले पण्णत्ते, तं जहा—ओसप्पिणिकाले य उस्सप्पिणिकाले य ।।

२. ओसप्पिणिकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सुसमसुसमाकाले सुसमाकाले सुसमदुस्समाकाले दुस्समसुसमाकाले दुस्समाकाले दुस्सम-दुस्समाकाले ।।

३. उस्सप्पिणिकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दुस्समदुस्समाकाले[1] °दुस्समाकाले दुस्समसुसमाकाले सुसमदुस्समाकाले सुसमाकाले° सुसम-सुसमाकाले ।

४. एगमेगस्स णं भंते ! मुहुत्तस्स केवइया उस्सासद्धा विआहिया ? गोयमा ! असंखेज्जाणं समयाणं समुदय-समिइ-समागमेणं सा एगा आविलिअत्ति वुच्चइ[2], संखेज्जाओ आवलियाओ ऊसासो, संखेज्जाओ आवलियाओ नीसासो ।

सिलोगा—

हट्ठस्स[3] अणवगल्लस्स, णिरुवकिट्ठस्स जंतुणो ।
एगे ऊसासनीसासे, एस पाणुत्ति वुच्चई ।।१।।
सत्त पाणूइं से थोवे, सत्त थोवाइं से लवे ।
लवाणं सत्तहत्तरीए, एस मुहुत्तेति आहिए ।।२।।

गाहा—

तिण्णि सहस्सा सत्त य, सयाइं तेवत्तरिं च ऊसासा ।
एस मुहुत्तो भणिओ, सव्वेहिं अणंतनाणीहिं ।।३।।

एएणं मुहुत्तप्पमाणेणं तीसं मुहुत्ता अहोरत्तो, पण्णरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासो, दो मासा उदू[4], तिण्णि उदू अयणे, दो अयणा संवच्छरे, पंच संवच्छरिए जुगे, वीसं

---

१. सं० पा०—दुस्समदुस्समाकाले जाव सुसम-सुसमाकाले ।
२. पवुच्चइ (प) ।
३. हिट्ठस्स (क,ख) ।
४. उडू (त्रि); उऊ (प) अग्रेपि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुगाइं[1] वाससए, दस वाससयाइं वाससहस्से, सयं वाससहस्साणं वाससयसहस्से, चउरासीइं वाससयसहस्साइं से एगे पुव्वंगे, चउरासीई पुव्वंगसयसहस्साइं से एगे पुव्वे, एवं बिगुणं बिगुणं णेयव्वं—तुडियंगे तुडिए अडडंगे अडडे अववंगे अववे हुहुयंगे हुहुए[2] उप्पलंगे उप्पले पउमंगे पउमे णलिणंगे णलिणे अत्थणिउरंगे[3] अत्थणिउरे अउयंगे अउए 'नउयंगे नउए पउयंगे पउए'[4] चूलियंगे चूलिया जाव चउरासीइं सीसपहेलियंगसयसहस्साइं सा एगा सीसपहेलिया। एतावताव गणिए, एतावताव गणियस्स विसए[5], तेण परं ओवमिए।।

५. से किं तं ओवमिए ? ओवमिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पलिओवमे य सागरोवमे य।।

६. से किं तं पलिओवमे ? पलिओवमस्स परूवणं करिस्सामि—परमाणू दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुहुमे य वावहारिए य। अणंताणं सुहुमपरमाणुपोग्गलाणं समुदय-समिइ-समागमेणं वावहारिए परमाणू णिप्फज्जइ, तत्थ णो सत्थं कमइ—

गाहा—

सत्थेण सुतिक्खेणवि, छेत्तुं भित्तुं च जं किर ण सक्का।
तं परमाणुं सिद्धा, वयंति आदिं[6] पमाणाणं।।१।।

---

१. जूयाइं (त्रि,प,ब)।

२. हूहुए (अ,प,पुवृ); हूहूए (ब,हीवृ)।

३. अत्थिणीउरे (प)।

४. पउते २ णउते २ (अ,क,ब,हीवृ); द्रष्टव्यम्—अणुओगद्दाराइं ४१७ सूत्रस्यपादटिप्पणम्।

५. अत्र हीरविजयवृत्तौ वाचनाभेदः समालोचितोऽस्ति—अयं च संख्यानुक्रमो माथुरीवाचनानुगतो वलभीवाचनानुगतस्तु ज्योतिष्करण्डेऽन्यथापि दृश्यते। तथाहि—पूर्वाङ्गं १ पूर्वं २ लतांगं ३ लता ४ महालतांगं ५ महालता ६ नलिनांगं ७ नलिनं ८ महानलिनांगं ९ महानलिनं १० पद्मांगं ११ पद्मं १२ महापद्मांगं १३ महापद्मं १४ कमलांगं १५ कमलं १६ महाकमलांगं १७ महाकमलं १८ कुमुदांगं १९ कुमुदं २० महाकुमुदांगं २१ महाकुमुदं २२ त्रुटितांगं २३ त्रुटितं २४ महात्रुटितांगं २५ महात्रुटितं २६ अटटांगं २७ अटटं २८ महाअटटांगं २९ महाअटटं ३० ऊहांगं ३१ ऊहं ३२ महोहांगं ३३ महोहं ३४ शीर्षप्रहेलिकांगं ३५ शीर्षप्रहेलिका चेति ३६ न चात्र संमोहः कर्त्तव्यः दुर्भिक्षादिदोषेण श्रुतहान्या यस्य यादृशं स्मृतिगोचरीभूतं तेन तथा सम्मलीकृत्य लिखितं तच्च लिखनमेकं मथुरायां अपरं च वलभ्यामिति। यदुक्तम्—ज्योतिष्करण्डवृत्तावेव इह स्कन्दिलाचार्यप्रवृत्तौ दुष्षमानुभावतो दुर्भिक्षप्रवृत्त्या साधूनां पठनगणनादिकं सर्वमप्यनेशत् ततो दुर्भिक्षातिक्रमे सुभिक्षाप्रवृत्तौ द्वयोः सङ्घयोर्मेलापकोऽभवत् तद्यथा एको वलभ्यामेको मथुरायाम्। तत्र सूत्रार्थसंघटने परस्परं वाचनाभेदो जातः विस्मृतयोर्हि सूत्रार्थयोः स्मृत्वा स्मृत्वा संघटने भवत्यवश्यं वाचनाभेदो न कदाचिदनुपपत्तिः। तत्रानुयोगद्वारादिकमिदानीं च वर्त्तमानं माथुरवाचनानुगतं ज्योतिष्करंडसूत्रकर्ता चाचार्यो वालभ्यस्तत इदं संख्यास्थानं प्रतिपादनं वालभ्यवाचनानुगतमिति नास्यानुयोगद्वारप्रतिपादितसंख्यास्थानैः सह विसदृशत्वमुपलभ्य विचिकित्सितव्यमिति तथानुयोगद्वारे प्रयुतनयुतयोः परावृत्तिरप्यस्तीति।

६. आदी (त्रि,ब); आयं (प)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणंताणं वावहारियपरमाणूणं[1] समुदय-समिइ-समागमेणं सा एगा उस्सण्हसण्हिआइ वा सण्हसण्हियाइ वा उद्धरेणूइ वा तसरेणूइ वा रहरेणूइ वा वालग्गेइ वा लिक्खाइ वा जूयाइ वा जवमज्झेइ वा उस्सेहंगुलेइ[2] वा अट्ठ उस्सण्हसण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया, अट्ठ सण्हसण्हियाओ सा एगा उद्धरेणू, अट्ठ उद्धरेणूओ सा एगा तसरेणू, अट्ठ तसरेणूओ सा एगा रहरेणू, अट्ठ रहरेणूओ से एगे देवकुरूत्तरकुराणं मणुस्साणं वालग्गे, अट्ठ देवकुरूत्तरकुराणं मणुस्साणं वालग्गा से एगे हरिवास-रम्मयवासाणं मणुस्साणं वालग्गे[3], °अट्ठ हेमवय-एरण्णवयाणं मणुस्साणं वालग्गा से एगे पुव्वविदेह-अवरविदेहाणं मणुस्साणं वालग्गे, अट्ठ पुव्वविदेह-अवरविदेहाणं मणुस्साणं° वालग्गा सा एगा लिक्खा[4], अट्ठ लिक्खाओ सा एगा जूया, अट्ठ जूयाओ से एगे जवमज्झे, अट्ठ जवमज्झा से एगे अंगुले।

एतेणं अंगुलप्पमाणेणं छ अंगुलाइं पाओ, बारस अंगुलाइं वितत्थी[5], चउवीसं अंगुलाइं रयणी, अडयालीसं अंगुलाइं कुच्छी, छण्णउइं अंगुलाइं से एगे अक्खेइ वा दंडेइ वा धणूइ वा जुगेइ[6] वा मुसलेइ वा णालिआइ वा। एतेणं धणुप्पमाणेणं दो धणुसहस्साइं गाउयं, चत्तारि गाउयाइं जोयणं। एएणं जोयणप्पमाणेणं जे पल्ले जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं। से णं पल्ले—

गाहा—

एगाहिय-बेहिय-तेहिय[7], उक्कोसेणं सत्तरत्तपरूढाणं।
संमट्ठे सण्णिचिए, भरिए वालग्ग कोडीणं ॥१॥

ते णं वालग्गा णो कुच्छेज्जा, णो परिविद्धंसेज्जा, णो अग्गी डहेज्जा, णो वाए हरेज्जा, णो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा, तओ णं वाससए-वाससए एगमेगं वालग्गं अवहाय जावइएणं कालेणं से पल्ले खीणे णीरए णिल्लेवे णिट्ठिए भवइ, से तं पलिओवमे।

गाहा—

एएसिं पल्लाणं, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिआ।
तं सागरोवमस्स उ, एगस्स भवे परीमाणं ॥२॥

एएणं सागरोवमप्पमाणेणं चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा, तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा, दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमदुस्समा,

---

१. यद्यपि ग्रन्थान्तरे (अणुओगद्दाराइं सू० ३९५) 'परमाणु तसरेणू' इत्यादि गाथायामुछ्श्लक्ष्णिकादीनि त्रीणि पदानि नोक्तानि (हीवृ)।

२. अंगुले (भ० ६।१३४)।

३. सं० पा०—वालग्गे एवं हेमवयएरण्णवयाणं मणुस्साणं पुव्वविदेहअवरविदेहाणं मणुस्साणं।

४. प्रस्तुतपाठे भरतैरवतयोर्मनुष्याणामुल्लेखो नास्ति, अनुयोगद्वारसूत्रे विद्यते—अट्ठ हेमवय-हेरण्णवयाणं मणुस्साणं वालग्गा पुव्वविदेह-अवरविदेहाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे। अट्ठ पुव्वविदेह-अवरविदेहाणं मणुस्साणं वालग्गा भरहेरवयाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे। अट्ठ भरहेरवयाणं मणुस्साणं वालग्गा सा एगा लिक्खा [अ० सू० ३९९]।

५. विहत्थी (क,ख,प,स, भ० ६।१३४, अणुओगद्दाराइं सू० ४००)।

६. जुतेति (ब)।

७. 'एगाहिय बेहिय तेहिय' त्ति षष्ठी बहुवचनलोपात् एकाहिक-द्वयाहिक - त्र्याहिकानाम् (हीवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगा सागरोवमकोडाकोडीओ बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दुस्समसुसमा, एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दुस्समा, एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दुस्समदुस्समा। पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दुस्समदुस्समा, एवं पडिलोमं णेयव्वं जाव चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा। दससागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी, दससागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणी, वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी-उस्सप्पिणी ॥

७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भरहे[1] वासे इमीसे ओसप्पिणीए[2] सुसमसुसमाए समाए उत्तमकट्ठपत्ताए[3] भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे होत्था ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[4] णाणाविध-पंचवण्णेहिं[5] तणेहि य मणीहि य उवसोभिए, तं जहा—किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं। एवं वण्णो गंधो फासो सद्दो य तणाण य भाणिअव्वो जाव[6] तत्थ णं बहवे मणुस्सा मणुस्सीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति णिसीयंति तुयट्टंति हसंति रमंति ललंति[7] ॥

८. तीसे णं समाए भरहे वासे बहवे उद्दाला 'कोद्दाला मोद्दाला'[8] कयमाला णट्टमाला 'दंतमाला नागमाला सिंगमाला संखमाला'[9] सेयमाला णामं दुमगणा पण्णत्ता, कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला[10] पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य उच्छण्ण-पडिच्छण्णा सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

९. तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ-तत्थ बहवे सेरुतालवणाइं हेरुतालवणाइं भेरुतालवणाइं[11] मेरुतालवणाइं[12] पयालवणाइं[13] सालवणाइं सरलवणाइं[14] सत्तिवण्णवणाइं पूअफलिवणाइं खज्जूरीवणाइं णालिएरीवणाइं कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूलाइं[15] •पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य उच्छण्ण-पडिच्छण्णा सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणा° चिट्ठंति ॥

१०. तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ-तत्थ बहवे सेरियागुम्मा 'णोमालियागुम्मा कोरंटयगुम्मा बंधुजीवगगुम्मा मणोज्जगुम्मा बीयगुम्मा बाणगुम्मा कणइरगुम्मा कुज्जाय-

---

१. भारहे (क)।
२. ओसप्पिणीसमाए (ब)।
३. उत्तमट्ठपत्ताए (पुवृ, शावृपा); उत्तिमट्ठ-पत्ताए (भ० ६।१३५)।
४. जी० ३।२७७।
५. णाणामणिपंचवण्णेहिं (अ,क,ख,त्रि,ब)।
६. जी० ३।२७८-२९७।
७. यावच्छब्दात् पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं फलवित्तिविसेसे पच्चणुभवमाणा विहरंति (हीवृ)।
८. मोद्दाला कुद्दाला (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
९. संखमाला दंतमाला नागमाला (अ,क,ख,ब,स, पुवृ); वट्टमाला दंतमाला सिंगमाला संखमाला (जी० ३।५८२)।
१०. °मूला मूलमंतो कंदमंतो जाव बीयमंतो (ख,प,शावृ)।
११. सूत्रे पुंस्त्वं प्राकृतत्वात् (हीवृ)।
१२. भेरुतालादयो वृक्षविशेषा (शावृ)।
१३. × (अ,क,ख,ब,स); जीवाजीवाभिगमे (३।५८१) पि एतत्पदं दृश्यते।
१४. पभवालवणाइं (ख,त्रि); क्वचित् प्रभवाल-वणा इति पाठः (शावृ)।
१५. × (त्रि)।
१६. सं० पा०—विसुद्धरुक्खमूलाइं जाव चिट्ठंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुम्मा सिंदुवारगुम्मा जातिगुम्मा मोग्गरगुम्मा जूहियागुम्मा मल्लियागुम्मा वासंतियागुम्मा वत्थुलगुम्मा कत्थुलगुम्मा सेवालगुम्मा अगत्थिगुम्मा मगदंतियागुम्मा चंपकगुम्मा जातिगुम्मा णवणीइयागुम्मा कुंदगुम्मा[1] महाजाइगुम्मा[2] रम्मा महामेहणिकुरंबभूया दसद्धवण्णं कुसुमं कुसुमेंति, जे णं भरहे वासे बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं वायविधुअग्गसाला मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेंति ॥

११. 'तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ-तत्थ बहुईओ पउमलयाओ जाव सामलयाओ णिच्चं कुसुमियाओ जाव[3] लयावण्णओ'[4] ॥

१२. तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ-तत्थ बहुईओ[5] वणराईओ पण्णत्ताओ—किण्हाओ किण्होभासाओ जाव[6] मणोहराओ[7] रयमत्तछप्पय[8]-कोरग[9]-भिंगारग-कोंडलग[10]-जीवंजीवग-नंदीमुह-कविल-पिंगलक्खग-कारंडव-चक्कवाय- कलहंस-हंस[11]-सारसअणेगसउणगणमिहुणवियरियाओ[12] सद्दुण्णइयमहुरसरणाइयाओ संपिंडियदरियभमरमहुयरिपहकरपरिलितमत्तछप्पय-कुसुमासवलोलमहुरगुमगुमंतगुंजंतदेसभागाओ णाणाविहगुच्छ-गुम्म-मंडवगसोहियाओ वावीपुक्खरणीदीहियाहि य सुणिवेसियरम्मजालघरगाओ[13] विचित्तसुहकेउ-

---

१. जाव (अ,क,ख,त्रि,ब,स, पुवृ, हीवृ)।

२. यावन्महाकुन्दगुल्मा (हीवृ); यावन्महाजातिगुल्मा जीवाभिगमे तु सर्वगुल्मप्रान्ते महाकुन्दगुल्मा इति दृश्यते (पुवृ) मूलपाठः 'प' संकेतितां प्रतिं प्रमेयरत्नमञ्जूषां चानुसृत्य स्वीकृतः। पुण्यसागरमहोपाध्यायेन जीवाजीवाभिगमवृत्तिं लक्षीकृत्य 'महाकुन्दगुल्मा' इति सूचितम्।

३. जी० ३।५८४।

४. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स, पुवृ, हीवृ)।

५. बहवे (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

६. ओ० सू० ४।

७. अस्य स्थाने औपपातिके 'रम्माओ' इति पदमस्ति।

८. रइयमत्तछप्पय (अ,ख,ब,त्रि,स); शान्तिचन्द्रेण 'रतमत्ताः—सुरतोन्मादिनः' इति व्याख्यातम्, एतत्पाठानुसारी वर्तते। हीरविजयवृत्तौ 'रइयमत्ते' त्यादि, रतिं ददातीति रतिदाः गुञ्जनशब्दैः श्रोतॄणामिति गम्यम्। पुण्यसागरवृत्तौ 'उपरचितं कृतम्' इति व्याख्यातम्। एते द्वे अपि व्याख्ये 'रइय' पाठमनुसृत्य कृते स्तः, तेन बुद्धिप्रधाने जाते।

९. कोरंगा (अ,क,ख,त्रि,ब,स); कोरण्टक (हीवृ)।

१०. कोणाल (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

११. × (क,ख,त्रि,प,स)।

१२. प्रमेयरत्नमञ्जूषायां प्रथमवक्षस्कारे वनषण्डवर्णकः उद्धृतोऽस्ति (वृत्ति पत्र २७,२८) तत्र 'विरइय' इति पाठो विद्यते 'विरचितं' इति व्याख्यातमस्ति (वृत्तिपत्र ३०)। औपपातिके (सू० ६) पि 'विरइय' इति पाठो लभ्यते। तथा अस्मात् पाठात् परं 'एवं जाव तहेव इच्चाइ वण्णाओ सेसं जहा' इत्यादिपदाभिव्यङ्ग्यैरतिदेशैर्दर्शितविवक्षणीयवाच्याः सूत्रे लाघवं दर्शयन्ति, यत उक्तं निशीथभाष्ये षोडशोद्देशके—

कत्थइ देसग्गहणं, कत्थइ भण्णंति निरवसेसाइं।
उक्कमकमजुत्ताइं, कारणवसओ निरुत्ताइं ॥१॥

१३. झुणि (क); आदर्शेषु संक्षिप्तपाठाः लिखिताः सन्ति, तेन वृत्तौ अर्थविपर्यासोऽपि दृश्यते, यथा—'झुणि' त्ति पदेन 'झुणिविचित्तभंगाओ' त्ति विशेषणं ध्वनिविचित्रा भृङ्गा यासु तास्तथा (हीवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूयाओ अब्भितरपुप्फफलाओ बाहिरपत्तच्छण्णाओ पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छण्ण-परिच्छण्णाओ साउफलाओ णिरोगयाओ अकंटयाओ सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धाओ पिंडिम[1] •णीहारिम सुगंधि सुहसुरभि मणहरं च महया गंधद्धणि मुयंतीओ सुहसेउकेउबहुलाओ अणेगसगड-रह-जाण-जुग्ग-सीया-संदमाणिय-पडिमोयणाओ सुरम्माओ° पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ।।

१३. तीसे णं समाए भरहे वासे तत्थ-तत्थ मत्तंगाणाणं दुमगणा पण्णत्ता, जहा से चंदप्पभ जाव[2] ओछण्णपडिच्छण्णा चिट्ठंति। एवं जाव[3] अणिगणा[4] णामं दुमगणा पण्णत्ता।

१४. तीसे णं भंते! समाए भरहे वासे मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे[5] पण्णत्ते? गोयमा! तेणं मणुया सुपइट्ठियकुम्मचारुचलणा जाव[6] लक्खण-वंजण-गुणोववेया सुजाय-सुविभत्त-संगयंगा पासादीया[7] •दरिसणिज्जा अभिरूवा° पडिरूवा।।

१५. तीसे णं भंते! समाए भरहे वासे मणुईणं केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते? गोयमा! ताओ णं मणुईओ सुजायसव्वंगसुंदरीओ पहाणमहिलागुणेहिं जुत्ताओ अइकंत[8]-विसप्पमाणमउय[9]-सुकुमाल-कुम्मसंठिय-विसिट्ठचलणाओ 'उज्जु-मउय'[10]-पीवर-सुसाहयंगुलीओ अब्भुण्णय-रइय-तलिण-'तंब-सुइ'[11] णिद्धणक्खा रोमरहिय-वट्ट-लट्ठसंठिय-अजहण्ण-पसत्थलक्खण-अक्कोप्पजंघजुयला 'सुणिम्मिय-सुगूढसुजाणू मंसलसुबद्धसंधीओ'[12] कयलीखंभाइरेकसंठिय-णिव्वण-सुकुमाल-मउय-मंसलअविरलसमसंहियसुजायवट्टपीवरणिरंतरोरू अट्ठावयवीचिपट्ठसंठिय[13]-पसत्थ-विच्छिण्ण-पिहुलसोणी वयणायामप्पमाणदुगुणियविसाल-मंसलसुबद्धजहणवरधारिणीओ[14] वज्जविराइय-'पसत्थलक्खणनिरोदरा तिवलियवलिय'[15]-तणुणमियमज्झियाओ[16] उज्जुय-सम-सहिय-जच्चतणु-कसिण-'णिद्ध-आदेज्ज'[17]-लडह-सुजाय-सुविभत्त-कंत-सोभंत-रुइल-रमणिज्जरोमराई गंगावत्त-पयाहिणावत्त-तरंगभंगुर-रविकिरण-

---

१. सं० पा० — पिंडिम जाव पासादीयाओ।

२. जी० ३।५८६।

३. जी० ३।५८७-५९५।

४. अणियाणी (अ,ब); आयीणा (क); आयाणी (त्रि)।

५. °पडोकारे (ब)।

६. जी० ३।५९६।

७. सं० पा० — पासादीया जाव पडिरूवा।

८. अक्कंत (अ,क,ब,स)।

९. °मउया (अ,ख,ब)।

१०. पउमजुग (अ,ब); पउममउयसुजात (क, त्रि); पउममउय (प,स, पुवृ हीवृ) उज्जुमउय (पुवृपा)।

११. तंबसुचिरुइल (अ,ब, पुवृ); आतंबविरइय (क); आतंबसुचिरयित (ख); सुविरइय (त्रि); आतंबसुचिरुइल (स)। ताम्रा सुचय रुचिरा (हीवृ)।

१२. °जण्णुमंडल° (प), जानुमण्डले (हीवृ)।

१३. प्रमेयरत्नमञ्जूषायां 'वीति' इति पदं व्याख्यातमस्ति—वीतिः — विगतेतिको घुणाद्यक्षत इति भावः एवंविधोऽष्टापदो द्यूतफलकम्, विशेषणव्यत्ययः प्राकृतत्वात् (पत्र ११४)।

१४. °वरहारिणीओ (ब)।

१५. °निरोदरतिवलिय° (क,ख,प)।

१६. नतं—नम्रं (शावृ)।

१७. णिद्धआइज्ज (प); णिद्धादेज्ज (ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तरुणबोहिय-आकोसायंतपउम[1]-गंभीरवियडणाभा[2] अणुब्भड-पसत्थ-पीणकुच्छी सण्णयपासा संगयपासा सुजायपासा मियमाइयपीणरइयपासा अकरंडुय[3]-कणगरुयगणिम्मल-सुजाय-णिरुवहयगायलट्ठी कंचणकलसप्पमाण-सम-सहित-लट्ठ-चूचुयआमेलग[4]-जमलजुयल-वट्टिय-अब्भुण्णयपीणरइयपीवरपयोहराओ भुजंगअणुपुव्वतणुय-गोपुच्छवट्टसम-संहिय-णमिय-आदेज्ज[5]-ललियबाहा तंबणहा मंसलग्गहत्था पीवरकोमलबरंगुलीया णिद्धपाणिलेहा[6] रवि-ससि-संख-चक्क-सोत्थिय-विभत्तसुविरइयपाणिलेहा[7] पीणुण्णयकक्ख-वक्ख-वत्थिप्पएसा पडिपुण्णगलकवोला[8] चउरंगुलसुप्पमाण-कंबुवरसरिसगीवा मंसल-संठिय-पसत्थहणुगा दाडिमपुप्फप्पगास-पीवरपलंबकुंचियवराधरा सुंदरुत्तरोट्ठा दहिदगरयचंदकुंदवासंति-मउलधवल[9]-अच्छिद्दविमलदसणा रत्तुप्पलपत्त-मउयसुकुमालतालुजीहा कणवीरमउल[10]-अकुडिलअब्भुग्गय-उज्जुतुंगणासा सारदणवकमलकुमुयकुवलयविमलदलणियरसरिस-लक्खणपसत्थअजिम्हकंतणयणा पत्तल-'चवलायंत-तंवलोयणाओ'[11] आणामियचावरुइल-किण्हब्भराइ-संगय-सुजाय-भुमगा अल्लीण-पमाणजुत्तसवणा सुसवणा पीण-मट्ठ-गंडलेहा चउरंस-पसत्थ-समणिडाला कोमुईरयणियर-विमलपडिपुण्णसोमवयणा छत्तुण्णयउत्तिमंगा[12] अकविल-सुसिणिद्ध-सुगंधदीहसिरया छत्त-ज्झय-जूय-थूभ-दामिणि-कमंडलु-कलस-वावि-सोत्थिय-पडाग-जव-मच्छ-कुम्म-रहवर - मगरज्झय - अंक[13]-थाल-अंकुस-अट्ठावय-सुपइट्ठग-मयूर-सिरियाभिसेय-तोरण - मेइणि[14]-उदहि-वरभवण-गिरि-वरआयंस-सलीलगय[15]-उसभ-सीह-चामर-उत्तमपसत्थबत्तीसलक्खणधरीओ हंससरिसगईओ कोइलमहुरगिरसुस्सराओ कंता सव्वस्स अणुमयाओ ववगयवलिपलिय-वंग-दुव्वण्ण-वाहि-दोहग्ग-सोगमुक्का उच्चत्तेण य णराण थोवूणमुस्सिआओ सभावसिंगारचारुवेसा संगयगय-हसिय-भणिय-चिट्ठिय-विलास-संलाव-णिउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जहण-वयण-कर-चलण-णयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलासकलिया णंदणवणविवरचारिणीउव्व अच्छराओ भरहवासमाणुसच्छराओ

---

१. अकोसायंत° (अ,त्रि,प,स, पुवृ, हीवृ)।
२. अत्समासान्तेन 'णाभा' इतिसिद्धि (हीवृ)।
३. अकरंडय (अ, ब)।
४. चुच्चुय० (अ, क, ख, ब); चुचुआमेलग (प)।
५. आइज्ज (प); आदेय (ब)।
६. °रेहा (प)।
७. सुविभत्त० (क, ख, प, स, पुवृ, शावृ)।
८. °कयोला (प)।
९. °मउल (अ, क, ख, त्रि, ब, स, पुवृ, हीवृ); उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण 'धवल' शब्दः जीवाभिगमवृत्तिमनुसृत्य स्वीकृतो व्याख्यातश्च—जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति-प्रश्नव्याकरणाद्यादर्शेष्वदृष्टोपि धवलशब्दो जीवाभिगमवृत्तौ दर्शनाल्लिखितोस्ति।
१०. °मुकुल (अ, क, ख, ब, स,)।
११. धवलायततंबं० (अ, ब, पुवृ); धवलायत-आतंब (क, स); धवलायतआयंब (प); क्वचिद्धवले कर्णान्तिवर्त्तिनी क्वचित्ताम्रलोचने यासां ताः (शावृ); चवलायंततंब (पुवृपा)।
१२. °उत्तमंगा (ख, त्रि, ब)।
१३. सुक (अ, त्रि, ब, स, हीवृ); क्वचिदङ्कस्थाने शुक इति दृश्यते (शावृ)।
१४. मेतिणि (त्रि, ब)।
१५. सुललियगय (पण्हा० ४।८); ललियगय (जी० ३।५९७)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अच्छेरगपेच्छणिज्जाओ पासाईयाओ[1] •दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ।।

१६. ते णं मणुया ओहस्सरा हंसस्सरा कोंचस्सरा णंदिस्सरा णंदिघोसा सीहस्सरा सीहघोसा[2] सूसरा सूसरणिग्घोसा छायाउज्जोवियंगमंगा वज्जरिसहनारायसंघयणा समचउरंससंठाणसंठिया छवि-णिरातंका अणुलोमवाउवेगा कंकग्गहणी कवोयपरिणामा सउणिपोसपिट्ठंतरोरुपरिणया छद्धणुसहस्समूसिया । तेसि णं मणुयाणं बे छप्पण्णा पिट्ठिकरंडकसया[3] पण्णत्ता समणाउसो ! पउमुप्पलगंधसरिसणीसाससुरभिवयणा । ते णं मणुया पगइउवसंता[4] पगइपयणुकोहमाणमायालोभा मिउमद्दवसंपन्ना अल्लीणा भद्दगा विणीया अप्पिच्छा असण्णिहिसंचया विडिमंतरपरिवसणा जहिच्छियकामकामिणो 'पुढवीपुप्फफलाहारा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो'[5] ! ।।

१७. तीसे णं भंते ! पुढवीए केरिसए आसाए पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहाणामए गुलेइ वा खंडेइ वा सक्कराइ वा मच्छंडियाइ वा पप्पडमोयएइ वा भिसेइ वा पुप्फुत्तराइ वा पउमुत्तराइ वा विजयाइ वा महाविजयाइ वा आकासियाइ वा आदंसियाइ वा आगासफलोवमाइ वा उग्गाइ वा अणोवमाइ वा[6], भवे एयारूवे ? णो इणट्ठे समट्ठे । सा णं पुढवी इत्तो इट्ठतरिया चेव[7] •कंततरिया चेव पियतरिया चेव मणुण्णतरिया चेव° मणमतरिया चेव आसाएणं पण्णत्ता ।।

१८. तेसि णं भंते ! पुप्फफलाणं केरिसए आसाए पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहाणामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स कल्लाणे भोयणजाए सयसहस्सनिप्फन्ने वण्णेणुववेए[8] •गंधेणुववेए रसेणुववेए°फासेणुववेए आसायणिज्जे विसायणिज्जे दीवणिज्जे[9] दप्पणिज्जे[10] मयणिज्जे बिंहणिज्जे[11] सव्विंदिअगायपल्हायणिज्जे, भवे एयारूवे ? णो इणट्ठे समट्ठे । तेसि णं पुप्फफलाणं एत्तो इट्ठतराए चेव[12] •कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव° आसाए पण्णत्ते ।।

१९. ते णं भंते ! मणुया तमाहारमाहारेत्ता कहिं वसहिं उवेंति ? गोयमा ! रुक्ख-

---

१. सं० पा०—पासाईयाओ जाव पडिरूवाओ ।

२. जीवाभिगमादौ दुन्दुभिस्वरा मञ्जुस्वरा मञ्जुघोषा इत्यपि दृश्यते (पुवृ) ।

३. पिट्ठित० (अ, त्रि, ब); पिट्ठ० (क, ख); पृष्ठकरण्डुकशते पाठान्तरेण पृष्ठकरंडकशते (शावृ) ।

४. पगइभद्दगा पगइउवसंता (त्रि, स, पुवृ, हीवृ) ।

५. उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण प्रमेयरत्नमञ्जूषायां अस्मिन् विषये एका टिप्पणी कृतास्ति—अत्र च जीवाभिगमादिषु युग्मिवर्णनाधिकारे आहारार्थप्रश्नोत्तरसूत्रं दृश्यते, अत्र च कालदोषेण त्रुटितं सम्भाव्यते, अत्रैवोत्तरत्र द्वितीयतृतीयारकवर्णकसूत्रे आहारार्थसूत्रस्य साक्षाद् दृश्यमानत्वादिति, तेनात्र स्थानाशून्यार्थं जीवाभिगमादिभ्यो लिख्यते— तेसि णं भंते ! मणुआणं केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ, पुढवी पुप्फफलाहारा णं ते मणुआ पण्णत्ता समणाउसो !

६. वा इमेए अज्झोववणाए (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स); द्रष्टव्यम्—जीवा० ३।६०१, पण्ण० १७।१३५ ।

७. सं०पा०—इट्ठतरियाचेवजावमणामतरिया ।

८. सं० पा०—वण्णेणुववेए जाव फासेणुववेए ।

९. × (अ, क, ख, त्रि, प, ब) ।

१०. × (ब) ।

११. विग्घणिज्जे (ब) ।

१२. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव आसाए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गेहालया णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

२०. तेसि णं भंते ! रुक्खाणं केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कूडागारसंठिया पेच्छा-'च्छत्त-झय'[1]-थूभ-तोरण-गोपुर-वेइया[2]-चोप्पालग[3]-अट्टालग-पासाय-हम्मिय-गवक्ख-वालग्गपोइया-वलभीघरसंठिया, अण्णे इत्थ[4] बहवे वरभवणविसिट्ठसंठाण-संठिया दुमगणा सुहसीयलच्छाया पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

२१. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे गेहाइ वा गेहाव [य ?] णाइ[5] वा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, रुक्खगेहालया णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

२२. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे 'गामाइ वा'[6] °णगराइ वा णिगमाइ वा रायहाणीइ वा खेडाइ वा कब्बडाइ वा मडंबाइ वा दोणमुहाइ वा पट्टणाइ वा आगराइ वा आसमाइ वा संबाहाइ वा° सण्णिवेसाइ वा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, जहिच्छिय-कामगामिणो[7] णं ते मणुया पण्णत्ता ॥

२३. अत्थि णं भंते ! 'तीसे समाए भरहे वासे'[8] असीइ वा मसीइ वा किसीइ वा 'वणिएत्ति वा'[9] पणिएत्ति वा वाणिज्जेइ वा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयअसि-मसि-किसि 'वणिय-पणिय'[10]-वाणिज्जा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

२४. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे हिरण्णेइ वा सुवण्णेइ[11] वा कंसेइ वा

---

१. छयरुप्प (अ, ब) ।

२. वेइगा (अ, ब) ।

३. चोयालग (अ, ब); चोपालग (क, ख, स); चोवालग (त्रि); चोप्फाल (प, शावृ) ।

४. यत्थ (अ, ब); एत्थ (क, ख, स) ।

५. वृत्तित्रयेपि 'आयतनानि' इति व्याख्यातम-स्ति । द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।८४१. सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

६. सं० पा०—गामाइ वा जाव सण्णिवेसाइ । 'अ, क, ख, त्रि, ब, स, हीवृ' एषु 'गामाइ वा' इत्यस्य स्थाने 'नगराइ वा' इति पाठो दृश्यते ।

७. °गामगामिणो (अ, ख, ब); जं नेच्छियका-मगामिणो (त्रि); हीरविजयसूरिणा 'जं जेच्छियकामगामिणो' इति पाठो व्याख्यातः, 'जहिच्छियकामगामिणो' इति पाठान्तरत्वेन च —क्वचिदादर्शे 'जहिच्छियकामगामिणो' इति पाठो दृश्यते, परं जीवाभिगमवृत्तौ तथा व्याख्यान-स्यानुपलम्भान्न व्याख्यातः (हस्तलिखितपत्र ११०); उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण जीवाभिगम-वृत्तेः पाठः उट्टङ्कितः—'जहिच्छिअकामगा-मिणो' इत्यस्य स्थाने 'जं नेच्छियअकामगा-मिणो' इतिपाठः ।

८. × (अ, क, ख, त्रि, प, ब, स); अग्रेपि क्वचिद् एष पाठो पि नास्ति, क्वचिद् 'भरहे वासे' इत्येव विद्यते । लिपिसंक्षेपादेवं जात-मस्ति ।

९. × (हीवृ); 'विवणित्ति' विपणिरिति हट्टोप-जीविनः (पुवृ) ।

१०. वणिपणि (अ, क, ख, त्रि, ब, स) ।

११. प्रस्तुतप्रकरणे 'सुवर्ण कांस्य दूष्य' पदत्रयस्य प्रयोगः कथं संभवेत् ? उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण एष प्रश्नः समुपढौकितस्तस्य समाधानमपि कृतम् —घटितं सुवर्णं तथा ताम्रत्रपुसंयोगजं कांस्यं तथा तन्तुसन्तानसम्भवं दूष्यं तत्र कथं सम्भ-वेयुः? शिल्पिप्रयोगजन्यत्वात् तेषां, न च तान्य-त्रातीतोत्सर्पिणीसत्कानिधानगतानि सम्भवं-तीति वाच्यं, सादिसपर्यवसितप्रयोगबन्ध-स्यासंख्येयकाल-स्थितेरसम्भवात्, एगोरुगोत्तर-कुरुसूत्रयोरेतदालापकस्याकथनप्रसङ्गात्, उच्यते,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूसेइ[1] वा मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सावज्जेइ वा ? हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छइ ।।

२५. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे रायाइ वा जुवराया इ वा ईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाइ वा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयइड्ढिसक्कारा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

२६. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे दासेइ[2] वा पेसेइ वा सिस्सेइ[3] वा भयगेइ वा भाइल्लएइ वा कम्मारएइ[4] वा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयआभिओगा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

२७. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे मायाइ वा पियाइ वा भाया[5]-भगिणि-भज्जा-पुत्त-धूया-सुण्हाइ वा ? हंता अत्थि, णो चेव णं तिव्वे पेम्मबंधणे समुप्पज्जइ ।।

२८. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे अरीइ वा वेरिएइ वा घायएइ वा वहएइ वा पडिणीयए वा पच्चामित्तेइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयवेराणुसया णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

२९. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे मित्ताइ वा वयंसाइ वा णायएइ वा घाडिएइ[6] वा सहाइ वा सुहीइ वा संगइएति[7] वा ? हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुयाणं तिव्वे रागबंधणे समुप्पज्जइ ।।

३०. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे आवाहाइ वा वीवाहाइ वा जण्णाइ वा सद्धाइ[8] वा थालीपागाइ वा पितिपिंडनिवेदणाइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयआवाह-वीवाह-जण्ण-सद्ध-थालीपाग पितिपिंडनिवेदणा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

३१. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे इंदमहाति वा खंद-णाग-जक्ख-भूय-अगड-तलाग[9]-दह-णदि-रुक्ख-पव्वय-थूभ-चेइयमहाइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयमहिमा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! ।।

३२. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे णडपेच्छाइ वा णट्ट-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग[10]-पवग-लासगपेच्छाइ वा[11] ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयकोउहल्ला णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ।।

संहरणप्रवृत्तक्रीडाप्रवृत्तदेवप्रयोगात् तानि सम्भवन्तीति सम्भाव्यते, (वृत्ति पत्र १२२) । प्रस्तुतप्रश्नस्य एतत् समाधानं स्वाभाविकं भवति—वर्णके कानिचित् पदानि प्रवाहपातीन्यपि भवन्ति ।

१. दोसेइ (अ,ख,त्रि,ब) ।

२. निवाएति (अ); निवाइ (ब) ।

३. × (अ, क, ख, ब, ग) ।

४. कर्मकरः—छगणपुञ्जाद्यपनेताः (शावृ) ।

५. भाति (अ,त्रि,ब) ।

६. संघाडिए (ख,त्रि,प); संघाटिकः—सहचारी (शावृ) ।

७ × (अ,क,ख,ब,स) ।

८. सड्ढेति (अ,क,ख,त्रि,ब) ।

९ मितपिंड° (त्रि,प,शावृ,हीवृ) ।

१०. कधक (अ,ख,ब) ।

११. इतः परम्—आइक्खग लंख मंख तूणइल्ल तुंबवीणिय काय मागहपेच्छाइ वा इति जीवाभिगमे (३।६१६) उपलभ्यते (पुवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे सगडाइ वा रहाइ वा जाणाइ वा जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीअ-संदमाणिआइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे, पायचारविहारा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

३४. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे गावीइ वा महिसीइ वा अयाइ वा एलगाइ वा ? हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वामागच्छंति ॥

३५. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे आसाइ वा हत्थि-उट्ट-गोण-गवय-अय-एलग-पसय-मिय-वराह-रुरु-सरभ-चमर-कुरंग-गोकण्णमाइया ? हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

३६. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे सीहाइ वा वग्घाइ वा विग-दीविग-अच्छ-तरच्छ-सियाल-बिडाल-सुणग-कोकंतिय-कोलसुणगाइ वा ? हंता अत्थि, णो चेव णं 'ते अण्णमण्णस्स तेसिं वा'[1] मणुयाणं आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेयं वा उप्पाएंति, पगइभद्दया णं ते सावयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

३७. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे सालीति वा वीहि-गोहूम-जव[2]-जवजवाइ वा कल[3]-मसूर-मुग्ग-मास-तिल-कुलत्थ-णिप्फावग-आलिसंदग-अयसि-कुसुंभ[4]-कोद्दव-कंगु-वरग[5]-रालग-सण-सरिसव-मूलाबीआइ[6] वा ? हंता अत्थि, णो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

३८. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे गड्ढाइ वा दरी-ओवाय-पवाय-विसम-विज्जलाइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे, भरहे वासे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा[7] ॥

३९. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे खाणूइ वा कंटग-तणय-कयवराइ वा पत्तकयवराइ वा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयखाणुकंटगतणकयवर-पत्तकयवरा णं सा समा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

४०. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे डंसाइ वा मसगाइ वा जूआइ वा लिक्खाइ वा ढिंकुणाइ वा पिसुआइ वा ?णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय डंस-मसग-जूअ-लिक्ख-ढिंकुण-पिसुआ उवद्दवविरहिया[8] णं सा समा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

४१. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे अहीइ वा अयगराइ वा ? हंता अत्थि, णो चेव णं[9] •ते अण्णमण्णस्स तेसिं वा मणुयाणं आवाहं वा वावाहं वा छविच्छेयं वा

---

१. स्वीकृतपाठ: हीरविजय-पुण्यसागरवृत्त्योरनुसारीवर्तते जीवाजीवाभिगमे (३।६२०) पि एवमेव पाठो दृश्यते। शेषादर्शेषु प्रमेयरत्नमञ्जूषायां च 'नो चेव णं तेसिं मणुयाणं' इत्येव पाठो दृश्यते।

२. × (अ,ब)।

३. कलम (क,त्रि,हीवृ)।

४. कुसुंभग (अ,ख,त्रि,ब)।

५. वग (अ,ब); × (त्रि, पुवृ,हीवृ)।

६. मूलबीजाति (क, ख, त्रि, प); मूलक:—शाकविशेष: तस्य बीजानि, प्राकृतत्वात् ककारलोपसन्धिभ्यां निष्पत्ति: (शावृ)।

७. जी० ३ २७७।

८. उवद्दवबाहाविरहिया (क,ख,त्रि,स,हीवृ)।

९. सं० पा०—णो चेव णं तेसिं मणुयाणं आवाहं वावाहं वा जाव पगइभद्दया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्पाएंति°, पगइभद्दया णं ते वालगगणा पण्णत्ता समणाउसो[१] ! ॥

४२. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे डिंबाइ वा डमराइ वा कलह-'बोल-खार'[२]-वेर[३]-महाजुद्धाइ वा महासंगामाइ वा महासत्थपडणाइ वा महापुरिसपडणाइ वा महारुधिरपडणाति वा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयवेराणुबंधा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

४३. अत्थि णं भंते ! तीसे समाए भरहे वासे दुब्भूयाति[४] वा कुलरोगाइ वा 'गामरोगाइ वा मंडलरोगाइ वा'[५] पोट्ट-सीसवेयणाइ वा कण्णोट्ठ-अच्छि-णह-दंतवेयणाइ वा कासाइ वा सासाइ वा सोसाइ वा 'जराइ वा'[६] दाहाइ वा अरिसाइ वा अजीरगाइ वा दओदराइ[७] वा पंडुरोगाइ वा भगंदराइ वा एगाहियाइ वा बेयाहियाइ वा तेयाहियाइ वा चउत्थाहियाइ वा 'धणुग्गहाइ वा इंदग्गहाइ वा'[८] खंदग्गहाइ वा कुमारग्गहाइ वा जक्खग्गहाइ वा भूयग्गहाइ वा मत्थगसूलाइ वा हिययसूलाइ वा पोट्ट-कुच्छि-जोणिसूलाइ वा गाममारीइ वा जाव सण्णिवेसमारीइ वा पाणक्खया जणक्खया कुलक्खया वसणब्भूय-मणारिआ ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगयरोगायंका णं ते मणुया[९] पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

४४. तीसे णं[१०] समाए भारहे वासे मणुयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं देसूणाइं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥

४५. तीसे णं[११] समाए भरहे वासे मणुयाणं सरीरा केवइयं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं देसूणाइं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं ॥

४६. ते णं भंते ! मणुया किं संघयणी पण्णत्ता ? गोयमा[१२] ! वइरोसभणाराय-संघयणी पण्णत्ता ॥

४७. तेसि णं भंते ! मणुयाणं सरीरा किंसंठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! समचउरंस-संठाणसंठिया पण्णत्ता ॥

४८. तेसि णं मणुयाणं बेछप्पणा पिट्ठिकरंडगसया पण्णत्ता समणाउसो[१३] ! ॥

४९. ते णं भंते ! मणुया कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ? गोयमा ! छम्मासावसेसाउया जुयलगं पसवंति, एगूणवण्णं राइंदियाइं

---

१. अत्र ग्रहयुद्धसूत्रं जीवाभिगमादिषु साक्षाद् दृष्टमपि एतत्सूत्रादर्शेषु न दृष्टमिति न व्याख्यायामप्यलेखि (शावृ) ।

२. पोली खारा (अ); बोली खारा (ब) ।

३. वइर (क,ख,त्रि,प,स) ।

४. दुब्भुगगाइ (अ,ब), दुब्भुरोगाति (क,ख, त्रि,स) दुब्भूयरोगाति (हीवृ) ।

५. मंडलरोगाति वा गामरोगाति वा (अ,त्रि,ब, पुवृ, हीवृ) ।

६. × (प, शावृ) ।

७. दओअराति (अ,ब) ; तओराति (क); तउअराति (त्रि); त्रपुकरः कुष्ठविशेषः सम्भाव्यते (हीवृ) ।

८. धणुग्गहाति वा (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ); इंदग्गहाति वा धणुग्गहाति वा (प) ।

९. मणुयगणा (अ,ब) ।

१०. णं भंते (प) ।

११. णं भंते (प) ।

१२. × (अ,ब) ।

१३. द्वितीयारके षष्ठमभक्तेनाहारार्थस्य वक्ष्यमाणत्वादिहानुक्तोप्यष्टमभक्तेनाहारार्थो द्रष्टव्यः (हीवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारक्खंति संगोवेंति, सारविखत्ता संगोवेत्ता कासित्ता छीइत्ता जंभाइत्ता अक्किट्ठा अव्वहिया अपरिताविया कालमासे कालं किच्चा देवलोएसु उववज्जंति, देवलोगपरिग्गहा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

५०. तीसे णं समाए भरहे वासे कइविहा मणुस्सा अणुसज्जित्था ? गोयमा ! छव्विहा, तं जहा—पम्ह [पम्म ?] गंधा[1] मियगंधा[2] 'अममा तेतली सहा सणिचारी'[3] ॥

५१. तीसे णं समाए चउहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं काले वीइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतेहिं फासपज्जवेहिं अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिं अणंतेहिं संठाणपज्जवेहिं अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतेहिं गरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं अगरुयलहुयपज्जवेहिं[4] अणंतेहिं उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमपज्जवेहिं अणंतगुणपरिहाणीए परिहायमाणे-परिहायमाणे, एत्थ णं सुसमा णामं समा काले पडिवज्जिसु समणाउसो ! ॥

५२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसमाए समाए उत्तमकट्ठपत्ताए[5] भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे होत्था ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा, तं चेव जं सुसमसुसमाए पुव्ववण्णियं[6], णवरं—णाणत्तं चउधणुसहस्समूसिया एगे अट्ठावीसे पिट्ठिकरंडुकसए छट्ठभत्तस्स आहारट्ठे, चउसट्ठिं राइंदियाइं सारक्खंति, दो पलिओवमाइं आऊ[7], सेसं तं चेव ॥

५३. तीसे णं समाए चउव्विहा मणुस्सा अणुसज्जित्था, तं जहा—एका पउरजंघा कुसुमा सुसमणा ॥

५४. तीसे णं समाए तिहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं काले वीइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं [8]•अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतेहिं फासपज्जवेहिं अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिं अणंतेहिं संठाणपज्जवेहिं अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतेहिं गरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं अगरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमपज्जवेहिं° अणंतगुणपरिहाणीए 'परिहायमाणे-परिहायमाणे'[9] एत्थ णं सुसमदुस्समा णामं समा काले पडिवज्जिसु समणाउसो ! ॥

---

१. पउमगंधा (जी० ३।६३१); द्रष्टव्यः तस्यैव पादटिप्पणम् ।

२. विगयगंधा (अ,क,ख,स); भिगमयगंधा (त्रि) ।

३. अमया सहीए ताली साणिच्चारी (अ,ब) ।

४. अगुरुलहु° (त्रि,प) ।

५. उत्तिमट्ठपत्ताए (अ,ब); उत्तिमकट्ठपत्ताए (क,स,हीवृ); उत्तमट्ठपत्ताए (त्रि) ।

६. जं २।७-५० ।

७. आउं (अ,क,त्रि,ब,स) ।

८. सं० पा०—वण्णपज्जवेहिं जाव अणंतगुण° ।

९. परिहायमाणी २ (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स) ५१ सूत्रस्थानुसारेण 'परिहायमाणे' इति पाठो युक्तोस्ति, हीरविजयवृत्तौ पुण्यसागरवृत्तौ च 'परिहीयमानः' इति व्याख्यातमस्ति, 'उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण 'परिहायमाणी' पाठ एव व्याख्यातः—नवरं परिहायमाणी इत्यत्र स्त्रीलिङ्गनिर्देशः समा विशेषणार्थस्तेन समाकालं इति पदद्वयं पृथग् मन्तव्यम् अयमेवाशयः सूत्रकृता 'सा णं समे' त्युत्तरसूत्रे प्रादुश्चक्रे इति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५. सा णं समा तिहा विभज्जइ[1]—पढमे तिभाए, मज्झिमे तिभाए, पच्छिमे तिभाए ॥

५६. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसमदुस्समाए समाए पढम-मज्झिमेसु तिभाएसु भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे होत्था[2] ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, सो चेव गमो णेयव्वो[3], णाणत्तं—दो धणुसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, तेसिं च मणुयाणं चउसट्ठि पिट्ठिकरंडगा, चउत्थभत्तस्स आहारत्थे समुप्पज्जइ, ठिई पलिओवमं, एगूणासीइं राइंदियाइं सारक्खंति संगोवेंति जाव देवलोगपरिग्गहिया णं ते मणुया[4] पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

५७. तीसे णं भंते[5] ! समाए पच्छिमे तिभाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभाव-पडोयारे होत्था ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहाणामए आलिंग-पुक्खरे इ वा जाव[6] णाणाविह पंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहि य उवसोभिए, तं जहा—कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव ॥

५८. तीसे णं भंते ! समाए पच्छिमे तिभागे भरहे वासे मणुयाणं केरिसए आगार-भावपडोयारे होत्था ? गोयमा ! तेसिं मणुयाणं छव्विहे संघयणे, छव्विहे संठाणे, बहूणि धणुसयाणि उड्ढं उच्चत्तेणं[7], जहण्णेणं संखेज्जाणि वासाणि, उक्कोसेणं असंखेज्जाणि वासाणि आउयं पालेंति, पालेत्ता अप्पेगइया णिरयगामी, अप्पेगइया तिरियगामी, अप्पेगइया मणुस्स-गामी, अप्पेगइया देवगामी, अप्पेगइया सिज्झंति[8] °बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति° सव्व-दुक्खाणमंत करेंति ॥

५९. तीसे णं समाए पच्छिमे तिभाए पलिओवमट्ठभागावसेसे, एत्थ णं इमे पण्णरस कुलगरा समुप्पज्जित्था, तं जहा—सम्मुती[9] पडिस्सुई सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे विमलवाहणे चक्खुमं जसमं अभिचंदे चंदाभे पसेणई मरुदेवे णाभी उसभे त्ति ॥

६०. तत्थ णं सम्मुति[10]-पडिस्सुइ-सीमंकर-सीमंधर-खेमंकराणं—एतेसिं पंचण्हं कुल-गराणं हक्कारे णामं दण्डणीई होत्था । ते णं मणुया हक्कारेणं दंडेणं हया समाणा लज्जिया विलिया वेड्डा[11] भीया तुसिणीया विणओणया चिट्ठंति ॥

६१. तत्थ णं खेमंधर-विमलवाहण-चक्खुम-जसम-अभिचंदाणं—एतेसिं णं पंचण्हं कुलगराणं मक्कारे णामं दंडणीई होत्था । ते णं मणुया मक्कारेणं दंडेणं हया समाणा लज्जिया विलिया वेड्डा भीया तुसिणीया विणओणया चिट्ठंति ॥

६२. तत्थ णं चंदाभ-पसेणइ-मरुदेव-णाभि-उसभाणं—एतेसि णं पंचण्हं कुलगराणं धिक्कारे णामं दंडणीई होत्था । ते णं मणुया धिक्कारेणं दंडेणं हया समाणा लज्जिया

---

१. भिज्जति (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
२. पुच्छा (अ,क,ख,त्रि,प,ब) ।
३. जं २।७-५० ।
४. मणुयगणा (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
५. एतादृशे सूत्रसंरचने क्वचिदेव 'भंते' इति पदं आदर्शेषु लभ्यते ।
६. जी० ३।२७७ ।
७. ते मनुजा इत्यध्याहार्यम् (हीवृ) ।
८. सं० पा०—सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणमंतं ।
९. सुमती (त्रि,प,स,शावृ,हीवृ,पुवृपा) ।
१०. सुमति (त्रि,प) ।
११. वड्डा (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विलिया वेड्डा भीया तुसिणीया विणओणया चिट्ठंति[1] ॥

६३. णाभिस्स णं कुलगरस्स मरुदेवाए भारियाए कुच्छिंसि, एत्थ णं उसहे णामं अरहा कोसलिए पढमराया पढमजिणे पढमकेवली पढमतित्थकरे पढमधम्मवरचक्कवट्टी समुप्पज्जित्था ॥

६४. तए णं उसभे अरहा कोसलिए वीसं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झावसइ[2], अज्झावसित्ता तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं महारायवासमज्झावसइ, तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं महारायवासमज्झावसमाणे लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ[3], चोसट्ठिं महिलागुणे सिप्पसयं च कम्माणं तिण्णि वि पयाहियाए उवदिसइ, उवदिसित्ता पुत्तसयं रज्जसए अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं महारायवासमज्झावसइ, अज्झावसत्ता जेसे गिम्हाणं पढमे मासे पढमे पक्खे चित्तबहुले, तस्स णं चित्तबहुलस्स णवमीपक्खेणं दिवसस्स पच्छिमे भागे चइत्ता हिरण्णं चइत्ता सुवण्णं चइत्ता कोसं चइत्ता कोट्ठागारं चइत्ता बलं चइत्ता वाहणं चइत्ता पुरं चइत्ता अंतेउरं चइत्ता विउलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण[4]-संतसार-सावइज्जं विच्छड्डयित्ता विगोवइत्ता दायं[5] दाइयाणं परिभाएत्ता सुदंसणाए सीयाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणुगम्ममाणमग्गे संखिय-चक्किय-णंगलिय-मुहमंगलिय-पूसमाणव[6]वद्धमाणग-आइक्खग[7]-लंख-मंख-घंटियगणेहिं[8], [गणा ?] ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरियाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं कण्णमणणिव्वुइकरीहिं अपुणरुत्ताहिं अट्ठसइयाहिं वग्गूहिं अणवरयं अभिणंदंता य अभिथुणंता य एवं वयासी—जय जय नंदा[9] ! जय जय भद्दा ! धम्मेणं, अभीए परीसहोवसग्गाणं, खंतिखमे भयभेरवाणं, धम्मे ते अविग्घं भवउत्ति कट्टु अभिणंदंति य अभिथुणंति य ॥

६५. तए णं उसभे अरहा कोसलिए णयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे-पेच्छिज्जमाणे[10] •हिययमालासहस्सेहिं अभिणंदिज्जमाणे-अभिणंदिज्जमाणे मणोरहमालासहस्सेहिं

---

१. संचिट्ठंति (अ,ब,स) ।

२. कुमारमासमज्झे वसति (अ,क,ख,त्रि,प,म, पुवृ, शावृ,हीवृ); °मज्झावसति (पुवृपा,शावृपा) अग्रेपि एवमेव ।

३. द्रष्टव्यं औपपातिकस्य कलाविषयकं परिशिष्टम् ।

४. रयणरत्त (क,ख,स) ।

५. दाणं (त्रि) ।

६. पूसमाणग (क,ख,त्रि,ब,स) ।

७. आइंख (ब) ।

८. पडियगणेहिं (ब); औपपातिके (सू० ६८) 'खंडियगणा' इति प्रथमान्तः पाठो विद्यते । अत्रापि प्रथमान्त एव पाठो युक्तोस्ति, किन्तु आदर्शेषु तादृशः पाठो नोपलभ्यते, अतएव उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण इत्युल्लिखितम्—सूत्रे च आर्षत्वात् प्रथमार्थे तृतीया ।

९. दीर्घत्वं च प्राकृतत्वात् (हीवृ) ।

१०. सं० पा०—पेच्छिज्जमाणे एवं जाव णिग्गच्छइ जहा ओववाइए जाव आउलबोलबहुलं । अस्य पाठसंक्षेपस्य पूर्त्यर्थं औपपातिकस्य निर्देशः कृतोस्ति । असौ पाठः औपपातिकसूत्रं वृत्तिगतवाचनान्तरं तथा प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तित्रयं सम्मुखीकृत्य पूरितः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे-अभिथुव्वमाणे कंतिसोहग्गगुणेहिं पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे बहूणं नरनारीसहस्साणं दाहिणहत्थेणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे मंजुमंजुणा घोसेणं आपडिपुच्छमाणे-आपडिपुच्छमाणे भवणपंतिसहस्साइं समइच्छमाणे - समइच्छमाणे तंतीतलतालतुडियगीयवाइयरवेणं महुरेणं मणहरेणं जयसद्दुग्घोसविसएणं मंजुमंजुणा घोसेणं अपडिबुज्झमाणे कंदरगिरिविवरकुहरगिरिवरपासादुद्धघणभवणदेवकुलसिंघाडग -तिगचउक्कचच्चरआरामुज्जाणकाणणसभापवापदेसभागे पडिसुयासयसहस्ससंकुलं करेंते हयहेसियहत्थिगुलगुलाइयरहघणघणसद्दमीसएणं महया कलकलरवेण जणस्स महुरेणं पूरयंते सुगंधवरकुसुमचुण्णउव्विद्धवासरेणुकविलं नभं करेंते कालागुरुकुंदुरुक्कतुरुक्कधूव निवहेणंजीवलोगमिव वासयंते समंतओ खुभियचक्कवालं - पउरजणबालं बुड्ढयपमुइयतुरियपहाविय - विउल° आउलबोलबहुलं णभं करेंते विणीयाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता आसिय-संमज्जिय-सित्तसुइकपुप्फोवयारकलियं सिद्धत्थवणविउलरायमग्गं करेमाणे हयगयरहपहकरेण पाइक्कचडकरेण य मंदं मंदायं[1] उद्धतरेणुयं[2] करेमाणे-करेमाणे जेणेव सिद्धत्थवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे सीयं ठवेइ, ठवेत्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता सयमेवाभरणालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव चउहिं अट्टाहिं[3] लोयं करेइ, करेत्ता छट्ठे भत्तेणं अपाणएणं आसाढाहिं[4] णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं उग्गाणं भोगाणं राइण्णाणं खत्तियाणं चउहिं सहस्सेहिं सद्धिं एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥

६६. उसभे णं अरहा कोसलिए संवच्छरं साहियं चीवरधारी होत्था, तेण परं अचेलए ॥

६७. जप्पभिइं च णं उसभे अरहा कोसलिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तप्पभिइं च णं 'उसभे अरहा कोसलिए'[5] णिच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति, तं जहा—दिव्वा वा[6] •माणुस्सा वा तिरिक्खजोणिया वा° पडिलोमा वा अणुलोमा वा। तत्थ पडिलोमा—वेत्तेण वा[7] •तयाए वा छियाए वा लयाए वा° कसेण वा काए आउट्टेज्जा, अणुलोमा—वंदेज्ज वा[8] •नमंसेज्ज वा सक्कारेज्ज वा सम्माणेज्ज वा कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासेज्ज वा ते सव्वे[9] सम्मं सहइ[10] •खमइ तितिक्खइ°

---

१. मंदं (क,ख,त्रि,प,स)।

२. उद्धरेणुयं (अ,ब)।

३. मुट्ठीहि (क); मुट्ठाहिं (ब)।

४. 'आसाढाहिं' ति आषाढशब्देन उत्तराषाढा पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् 'पंचउत्तरासाढे' त्ति वक्ष्यमाणत्वाच्च बहुत्वमार्षत्वात् सूत्रानुलोम्याच्च उत्तराषाढानक्षत्रेण योगमुपागते-नार्थाच्चन्द्रेणेति योज्यम् (हीवृ)।

५. उसभस्स अरहओ कोसलियस्स (अ,क,ख,प, स, पुवृ); केषुचिदादर्शेषु 'उसभस्स णं अरहओ कोसलिए वोसट्ठकाए' इत्यादि पाठो दृश्यते तत्रान्वयाभावात् विभक्तिपरिणामो लेखकदोषो वान्यथा संगति वा घटनीया (हीवृ)।

६. सं० पा०—दिव्वा वा जाव पडिलोमा।

७. सं० पा० वेत्तेण वा जाव कसेण।

८. सं० पा०—वंदेज्ज वा जाव पज्जुवासेज्ज।

९. उत्पन्नानिति गम्यम् (हीवृ)।

१०. सं० पा०—सहइ जाव अहियासेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहियासेइ ॥

६८. तए णं से भगवं समणे जाए ईरियासमिए[1] •भासासमिए एसणासमिए आयाण-भंड-मत्तणिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल°पारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते[2] •वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए° गुत्तबंभयारी अकोहे[3] •अमाणे अमाए° अलोहे संते पसंते उवसंते परिणिव्वुडे छिण्णसोए निरुवलेवे संखमिव निरंजणे[4], जच्चकणगमिव[5] जायरूवे, आदरिसपलिभागे[6] इव पागडभावे, कुम्मो इव[7] गुत्तिंदिए, पुक्खरपत्तमिव निरुवलेवे, गगणमिव निरालंबणे, अणिले इव णिरालए, चंदो इव सोमदंसणे, सूरो विव तेयस्सी, विहगो विव अपडिबद्धगामी, सागरो विव गंभीरे, मंदरो विव अकंपे, पुढवी विव सव्वफासविसहे, जीवो विव अप्पडिहयगती ॥

६९. णत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे। 'से पडिबंधे चउव्विहे'[8] भवति, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ—इह खलु माया मे पिया मे भाया मे भगिणी मे[9] •भज्जा मे पुत्ता मे धूया मे नत्ता मे सुण्हा मे सही मे सयण° संगंथसंथुया मे हिरण्णं मे सुवण्णं मे[10] •धणं मे धण्णं मे कंसं मे दूसं मे विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावतेयं मे° उवगरणं मे। अहवा समासओ सच्चित्ते वा अचित्ते वा मीसए वा दव्वजाए सेवं तस्स ण भवइ। खेत्तओ गामे वा णगरे वा अरण्णे वा खेत्ते वा खले वा गेहे वा अंगणे वा एवं तस्स ण भवइ। कालओ—थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊ वा अयणे वा संवच्छरे वा अण्णयरे वा दीहकालपडिबंधे एवं तस्स ण भवइ। भावओ—कोहे वा[11] •माणे वा मायाए वा° लोहे वा भए वा हासे वा एवं तस्स ण भवइ ॥

७०. से णं भगवं वासावासवज्जं हेमंत-गिम्हासु गामे एगराइए, णगरे पंचराइए, ववगयहास[12]-सोग-अरइ-भयपरित्तासे णिम्ममे णिरहंकारे लहुभूए अगंथे वासीतच्छणे अदुट्ठे, चंदणाणुलेवणे अरत्ते, लेट्ठुंमि कंचणंमि य समे, इहपरलोए य अपडिबद्धे, जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए विहरइ ॥

७१. तस्स णं भगवंतस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विइक्कंते

---

१. सं० पा०—ईरियासमिए जाव पारिट्ठावणियासमिए।
२. सं० पा०—मणगुत्ते जाव गुत्तबंभयारी।
३. सं० पा०—अकोहे जाव अलोहे।
४. निरंगणे (ब)।
५. जच्चकणगं पिव (क,स); जच्चकणगं व (प)।
६. °तलिभागे (ख); °पडिभागे (प)।
७. विव (ब)।
८. × (अ,क,ख,त्रि,ब,पुवृ,शावृ,हीवृ)।
९. सं० पा०—भगिणी मे जाव संगंथसंथुया। °संथुयं (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
१०. सं० पा०—सुवण्णं मे जाव उवगरणं। उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण अत्र एका टिप्पणी कृतास्ति सा च यावत्पदपूर्तये उल्लेखनीयास्ति—अयं च यावत्पदसङ्ग्रहोऽदृष्टमूलकत्वेन मयैव सिद्धान्तशैलया प्राकृतीकृत्य स्थानाशून्यतार्थं लिखितोस्ति तेन सैद्धान्तिकैरेतन्मूलपाठगवेषणायामुद्यमः कार्यः।
११. सं० पा०—कोहे वा जाव लोहे।
१२. °हस्स (अ,ख,ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाणे पुरिमतालस्स नगरस्स बहिया 'सगडमुहंसि उज्जाणंसि'[1] णग्गोहवरपायवस्स अहे झाणंतरियाए वट्टमाणस्स फग्गुणबहुलस्स इक्कासीए पुव्वण्हकालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं उत्तरासाढाणक्खत्तेणं[2] जोगमुवागएणं अणुत्तरेणं नाणेणं[3] •अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं° चरित्तेणं अणुत्तरेणं[4] तवेणं बलेणं वीरिएणं आलएणं विहारेणं भावणाए खंतीए गुत्तीए मुत्तीए तुट्ठीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सुचरियसोवचियफलणिव्वाणमग्गेणं[5] अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवर-नाणदंसणे समुप्पन्ने, जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सणेरइयतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासइ,[6] तं जहा—आगइं गइं ठिइं उववायं भुत्तं कडं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं तं तं कालं मणवइकाइए जोगे एवमादी जीवाणवि सव्वभावे अजीवाणवि सव्वभावे मोक्खमग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे, एस खलु मोक्खमग्गे 'मम अण्णेसिं'[7] च जीवाणं हियसुहणिस्सेसकरे सव्वदुक्खविमोक्खणे परम-सुहसमाणणे भविस्सइ ।।

७२. तते णं से भगवं समणाणं निग्गंथाण य णिग्गंथीण य पंच महव्वयाइं सभावण-गाइं छच्च जीवणिकाए धम्मे[8] देसमाणे विहरति, तं जहा—पुढविकाइए भावणागमेणं पंच महव्वयाइं सभावणगाइं भाणियव्वाइं[9] ।।

७३. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स चउरासीतिं[10] गणहरा होत्था ।।

७४. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स उसभसेणपामोक्खाओ चुलसीइं समण-साहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ।।

७५. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स बंभी-सुंदरीपामोक्खाओ तिण्णि अज्जियासय-साहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था ।।

७६. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स सेज्जंसपामोक्खाओ तिण्णि समणोवासगसय-साहस्सीओ पंच य साहस्सीओ उक्कोसिया समणोवासगसंपया होत्था ।।

७७. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स सुभद्दापामोक्खाओ पंच समणोवासियासय-साहस्सीओ चउपण्णं च सहस्सा उक्कोसिया समणोवासियासंपया होत्था ।।

७८. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्नि-

---

१. सगडामुहउज्जाणंसि (ब) ।

२. उत्तरासाढणक्खत्तेणं (त्रि, ब) ।

३. सं० पा०—नाणेणं जाव चरित्तेणं ।

४. एतत्पदं सर्वत्र संयोजनीयम् ।

५. °सोवच्चफले णेव्वाण° (अ, ब) ।

६. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ) ।

७. ममयमण्णेसि (ब) ।

८. धम्मं (ख,त्रि,प,स,पुवृ); धम्मे (पुवृपा) ।

९. आ० चू० १५।४२-७८ ।

१०. पर्युषणाकल्पे (सू० १९७) 'चउरासीइं गणा चउरासीइं गणहरा' इतिपाठो लभ्यते। उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण अस्मिन् विषये प्रस्तुत-सूत्रस्य जीर्णादर्शेपि एतादृशस्य पाठस्योल्लेखः कृतोस्ति—'जस्स जावइया गणहरा तस्स तावइया गणा' इति वचनाद् गणाः सूत्रे साक्षा-दनिर्दिष्टा अपि तावन्त एव बोध्याः, क्वचि-ज्जीर्णप्रस्तुतसूत्रादर्शे 'चउरासीतिं गणा गणहरा होत्था' इत्यपि पाठो दृश्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाईणं जिणो विव अवितहं वाकरेमाणाणं[1] चत्तारि चउद्दसपुव्वीसहस्सा अद्धट्ठमा य सया उक्कोसिया चउदसपुव्वीसंपया होत्था ।।

७९. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स णव ओहिणाणिसहस्सा उक्कोसिया ओहिणाणिसंपया होत्था ।।

८०. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स[2]—वीसं जिणसहस्सा, वीसं वेउव्वियसहस्सा छच्च सया उक्कोसिया[3], बारस विउलमईसहस्सा छच्च सया पण्णासा, बारस वाईसहस्सा छच्च सया पण्णासा ।।

८१. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं बावीसं 'अणुत्तरोववाइयाणं सहस्सा'[4] णव य सया ।।

८२. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स वीसं समणसहस्सा सिद्धा, चत्तालीसं अज्जियासहस्सा सिद्धा—सट्ठिं अंतेवासीसहस्सा सिद्धा ।।

८३. अरहओ णं उसभस्स बहवे अंतेवासी अणगारा भगवंतो अप्पेगइया मासपरियाया एवं जहा ओववाइए सच्चेव[5] अणगारवण्णओ जाव[6] उड्ढं जाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।।

८४. अरहओ णं उसभस्स दुविहा अंतकरभूमी[7] होत्था, तं जहा—जुगंतकरभूमी य परियायंतकरभूमी य । जुगंतकरभूमी जाव असंखेज्जाइं पुरिसजुगाइं, परियायंतकरभूमी अंतोमुहुत्तपरियाए अंतमकासी ।।

८५. उसभे[8] णं अरहा पंचउत्तरासाढे अभीइछट्ठे होत्था, तं जहा—उत्तरासाढाहिं

---

१. वागरमाणाणं (प) ।

२. अतः परं सर्वेष्वपि आदर्शेषु संक्षिप्तपाठो लभ्यते । पर्युषणाकल्पे (सू० १७४-१७७) पूर्णपाठः उपलब्धोस्ति, स चैवम्—१७४ उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स वीससहस्सा केवलणाणीणं उक्कोसिया संपया होत्था ।। १७५ उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स वीससहस्सा छच्च सया वेउव्वियाणं उक्कोसिया संपया होत्था ।। १७६. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स बारस सहस्सा छच्च सया पन्नासा विउलमईणं अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु सण्णीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगए भावे जाणमाणाणं पासमाणाणं उक्कोसिया विउलमइसंपया होत्था ।। १७७. उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स बारस सहस्सा छच्च सया पन्नासा वाईणं संपया होत्था ।।

३. उत्कृष्टा सम्पदभूदिति सर्वत्र योज्यम् (हीवृ) ।

४. अणुत्तरोववाइयसहस्सा (अ,क,ख,त्रि,ब,स); 'अणुत्तरोववाइय' त्ति षष्ठी बहुवचनलोपः प्राकृतत्वात् (पुवृ) ।

५. सच्चेव वया (अ); सव्वओ (क,ख,त्रि,प); सच्चेव वत्तव्वया (ब) । सर्व (शावृ,हीवृ) ।

६. ओ० सू० २३-४५ ।

७. °कडभूमी (त्रि) सर्वत्र ।

८. पर्युषणाकल्पे (सू० १९०) 'चउउत्तरासाढे' इति प्रतिपादकं सूत्रमस्ति, यथा—तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभेणं अरहा कोसलिए चउउत्तरासाढे अभीइपंचमे होत्था, तं जहा—उत्तरासाढाहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते । उत्तरासाढाहिं जाए । उत्तरासाढाहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए । उत्तरासाढाहिं अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने । अभीइणा परिनिव्वुए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते, उत्तरासाढाहिं जाए, उत्तरासाढाहिं रायाभिसेयं पत्ते, उत्तरासाढाहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ[1] अणगारियं पव्वइए, उत्तरासाढाहिं अणंते[2] •अणुत्तरे णिव्वाधाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे° समुप्पन्ने, अभीइणा परिणिव्वुए ॥

८६. उसभे णं अरहा कोसलिए वज्जरिसहनारायसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिए पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥

८७. उसभे णं अरहा कोसलिए वीसं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झावसित्ता[3], तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं रज्जवासमज्झावसित्ता, तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥

८८. उसभे णं अरहा कोसलिए एगं वाससहस्सं छउमत्थपरियायं पाउणित्ता, एगं पुव्वसयसहस्सं वाससहस्सूणं[4] केवलिपरियायं पाउणित्ता, एगं पुव्वसयसहस्सं बहुपडिपुण्णं सामण्णपरियायं पाउणित्ता, चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जेसे हेमंताणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे माहबहुले, तस्स णं माहबहुलस्स तेरसीपक्खेणं दसहिं अणगारसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे अट्ठावयसेलसिहरंसि चोद्दसमेणं भत्तेणं अपाणएणं संपलियंकणिसण्णे पुव्वण्हकालसमयंसि अभीइणा णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं सुसमदूसमाए समाए एगूणणउतीहिं[5] पक्खेहिं सेसेहिं[6] कालगए वीइक्कंते[7] •समुज्जाए छिण्णजाइ-जरा-मरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतकडे परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

८९. जं समयं च णं उसभे अरहा कोसलिए कालगए वीइक्कंते समुज्जाए छिण्णजाइ-जरा-मरण-बंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतकडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे, तं समयं च णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणे चलिए ॥

९०. तए णं से सक्के देविंदे देवराया आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता भयवं तित्थयरं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता एवं वयासी–परिणिव्वुए खलु जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे उसहे अरहा कोसलिए, तं जीयमेयं[8] तीयपच्चुप्पण्णमणागयाणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं तित्थगराणं परिनिव्वाणमहिमं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भगवतो तित्थगरस्स परिनिव्वाणमहिमं करेमित्ति कट्टु एवं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता चउरासीईए सामाणियसाहस्सीहिं, तायत्तीसाए तावत्तीसएहिं,[9] चउहिं लोगपालेहिं[10] •अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं° चउहिं चउरासीईहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं, अण्णेहि य बहूहिं सोहम्मकप्पवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे ताए उक्किट्ठाए[11] •तुरियाए चवलाए चंडाए

---

१. आकाराओ (ब)।
२. सं० पा०—अणंते जाव समुप्पन्ने।
३. °मज्झेवसित्ता (ख,त्रि,प,स) सर्वत्र।
४. °स्सूणग (अ,क,ख,ब,स)।
५. °णउतिहिं (अ,ब); णउएहिं (त्रि,प)।
६. × (अ,ब)।
७. सं० पा०—वीइक्कंते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।
८ जीवमेतं (अ,ब)।
९. तायत्तीसएहिं (त्रि,प,स)।
१०. सं० पा०—लोगपालेहिं जाव चउहिं।
११. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

सिग्घाए उद्धुयाए जइणाए छेयाए दिव्वाए देवगतीए° 'तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे'[1] जेणेव अट्ठावयपव्वए, जेणेव भगवओ तित्थगरस्स सरीरए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विमणे णिराणंदे अंसुपुण्णणयणे तित्थयरसरीरयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे[2] •णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे° पज्जुवासइ ।।

९१. तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीस-विमाणसयसहस्साहिवई सूलपाणी वसहवाहणे सुरिंदे अरयंवरवत्थधरे जाव[3] विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।।

९२. तए णं तस्स ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणं चलइ ।।

९३. तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता भगवं तित्थगरं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता जहा सक्के नियगपरिवारेणं भाणेयव्वो जाव[4] पज्जुवासइ ।।

९४. एवं सव्वे देविंदा जाव अच्चुए णियगपरिवारेणं आणेयव्वा । एवं[5] जाव भवणवासीणं इंदा, वाणमंतराणं सोलस, जोइसियाणं दोण्णि नियगपरिवारा णेयव्वा ।।

९५. तए णं सक्के देविंदे देवराया बहवे भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिए देवे एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! णंदणवणाओ सरसाइं गोसीसवरचंदणकट्ठाइं साहरह, साहरित्ता तओ चियगाओ[6] रएह—एगं भगवओ तित्थगरस्स, एगं गणहराणं, एगं अवसेसाणं अणगाराणं ।।

९६. तए णं ते भवणवइ[7]-•वाणमंतर-जोइस°-वेमाणिया देवा णंदणवणाओ सरसाइं गोसीसवरचंदणकट्ठाइं साहरंति, साहरित्ता तओ चियगाओ रएंति—एगं भगवओ तित्थगरस्स, एगं गणहराणं, एगं अवसेसाणं अणगाराणं ।।

९७. तए णं से सक्के देविंदे देवराया आभिओगे देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खीरोदसमुद्दाओ खीरोदगं साहरह ।।

९८. तए णं ते आभिओगा[8] देवा खीरोदसमुद्दाओ खीरोदगं साहरंति ।।

९९. तए णं से सक्के देविंदे देवराया तित्थगरसरीरगं खीरोदगेणं ण्हाणेति, ण्हाणेत्ता सरसेणं गोसीसवरचंदणेणं अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता हंसलक्खणं पडसाडयं[9] णियंसेइ, णियंसेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेति ।।

१००. तए णं ते भवणवइ[10]-•वाणमंतर-जोइस°-वेमाणिया देवा 'गणहरसरीरगाइं अणगारसरीरगाणि य'[11] खीरोदगेणं ण्हावेंति[12], ण्हावेत्ता सरसेणं गोसीसवरचंदणेणं

१. वीईवयमाणे वीईवयमाणे तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं (पुवृ,शावृ,हीवृ) ।
२. सं० पा०—सुस्सूसमाणे जाव पज्जुवासइ ।
३. पण्ण० २।५१ ।
४. जं० २।९०,९१ ।
५. पण्ण० २।३०-६३ ।
६. चिइगाओ (प) सर्वत्र ।
७. सं० पा०—भवणवइ जाव वेमाणिया ।
८. अभिजोग्गिया (अ,क,ब); आभिओग्गिया (क); आभियोगिया (त्रि, स) ।
९. पडगं (अ,ब) ।
१०. सं० पा०—भवणवइ जाव वेमाणिया ।
११. गणहरअणगारसरीराइं (त्रि,हीवृ) ।
१२. ण्हवेंति (ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुलिपंति, अणुलिंपित्ता अहताइं दिव्वाइं देवदूसजुयलाइं णियंसंति, णियंसित्ता सव्वालंकार-विभूसियाइं करेंति ।।

१०१. तए णं से सक्के देविंदे देवराया ते बहवे भवणवइ[१]-•वाणमंतर-जोइस°-वेमाणिए देवे एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! ईहामिग-उसभ-तुरग[२]-•णर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय°-भत्तिचित्ताओ तओ सिवियाओ विउव्वह—एगं भगवओ तित्थगरस्स, एगं गणहराणं, एगं अवसेसाणं अणगाराणं ।।

१०२. तए णं ते बहवे भवणवइ[३]-•वाणमंतर-जोइस-°वेमाणिया देवा तओ सिबियाओ विउव्वंति—एगं भगवओ तित्थगरस्स, एगं गणहराणं, एगं अवसेसाणं अणगाराणं ।।

१०३. तए णं से सक्के देविंदे देवराया विमणे णिराणंदे अंसुपुण्णणयणे भगवओ तित्थगरस्स विणट्ठजम्मजरामरणस्स सरीरगं सीयं आरुहेति, आरुहेत्ता चियगाए ठवेइ ।।

१०४. तए णं बहवे भवणवइ[४]-•वाणमंतर-जोइस°-वेमाणिया देवा गणहराणं अणगाराण य विणट्ठजम्मजरामरणाणं सरीरगाइं सीयाओ[५] आरुहेंति, आरुहेत्ता चियगाए ठवेंति ।।

१०५. तए णं से सक्के देविंदे देवराया अग्गिकुमारे देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तित्थगरचियगाए[६] •गणहरचियगाए° अणगारचियगाए अगणिकायं विउव्वह, विउव्वित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

१०६. तए णं ते अग्गिकुमारा देवा विमणा णिराणंदा अंसुपुण्णणयणा तित्थगरचियगाए[७] •गणहरचियगाए° अणगारचियगाए य अगणिकायं विउव्वंति ।।

१०७. तए णं से सक्के देविंदे देवराया वाउकुमारे देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तित्थगरचियगाए[८] •गणहरचियगाए° अणगारचियगाए य वाउक्कायं विउव्वह, विउव्वित्ता अगणिकायं उज्जालेह, तित्थगरसरीरगं गणहरसरीरगाइं अणगारसरीरगाइं च झामेह ।।

१०८. तए णं ते वाउकुमारा देवा विमणा णिराणंदा अंसुपुण्णणयणा तित्थगरचियगाए[९] •गणहरचियगाए अणगारचियगाए य वाउक्कायं° विउव्वंति, अगणिकायं उज्जालेंति, तित्थगरसरीरगं[१०] •गणहरसरीरगाइं° अणगारसरीरगाणि य झामेंति ।।

१०९. तए णं से सक्के देविंदे देवराया ते बहवे भवणवइ[११]-•वाणमंतर-जोइस°-वेमाणिए देवे एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तित्थगरचियगाए[१२] •गणहरचियगाए° अणगारचियगाए य अगुरु[१३]-तुरुक्क[१४]-घय-मधुं च कुंभग्गसो य भारग्गसो य साहरह ।।

१,११. सं० पा०—भवणवइ जाव वेमाणिए ।

२. सं० पा०—तुरग जाव वणलयभत्तिचित्ताओ ।

३,४. सं० पा०—भवणवइ जाव वेमाणिया ।

५. सीयं (क,ख,त्रि,प,स) ।

६,७,८,१२. सं० पा०—तित्थगरचियगाए जाव अणगारचियगाए ।

९. सं० पा०—तित्थगरचियगाए जाव विउव्वंति ।

१०. सं० पा०—तित्थगरसरीरगं जाव अणगारसरीरगाणि ।

१३. × (अ,ब) ।

१४. तुरक्कं (अ,ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११०. तए णं ते भवणवइ[1]-•वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा तित्थगरचियगाए गणहरचियगाए अणगारचियगाए य अगुरु-तुरुक्क-घय-मधुं च कुंभग्गसो य° भारग्गसो य साहरंति ।।

१११. तए णं से सक्के देविंदे देवराया मेहकुमारे देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तित्थगरचियगं[2] •गणहरचियगं° अणगारचियगं च खीरोदगेणं णिव्वावेह ।।

११२. तए णं ते मेहकुमारा देवा तित्थगरचियगं[3] •गणहरचियगं अणगारचियगं च खीरोदगेणं° णिव्वावेंति ।।

११३. तए णं से सक्के देविंदे देवराया भगवओ तित्थगरस्स उवरिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ, ईसाणे देविंदे देवराया उवरिल्लं वामं सकहं[4] गेण्हइ, चमरे असुरिंदे असुरराया हेट्ठिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ, बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया हेट्ठिल्लं वामं सकहं गेण्हइ, अवसेसा भवणवइ[5]-•वाणमंतर-जोइस°-वेमाणिया देवा जहारिहं अवसेसाइं अंगमंगाइं—केइ जिणभत्तीए, केइ जीयमेयंतिकट्टु, केइ धम्मोत्तिकट्टु—गेण्हंति ।।

११४. तए णं से सक्के देविंदे देवराया बहवे भवणवइ[6]-•वाणमंतर-जोइस°-'वेमाणिए देवे'[7] एवं[8] वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सव्वरयणामए महइमहालए तओ चेइयथूभे करेह—एगं भगवओ तित्थगरस्स चियगाए, एगं गणहरचियगाए, एगं अवसेसाणं अणगाराणं चियगाए ।।

११५. तए णं ते बहवे[9] •भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा खिप्पामेव सव्व-रयणामए महइमहालए तओ चेइथूभे° करेंति ।।

११६. तए णं ते बहवे भवणवइ[10]-•वाणमंतर-जोइस°-वेमाणिया देवा तित्थगरस्स परिणिव्वाणमहिमं करेंति, करेत्ता जेणेव नंदीसरवरे दीवे तेणेव उवागच्छंति ।।

११७. तए णं से सक्के देविंदे देवराया पुरत्थिमिल्ले अंजणगपव्वए अट्ठाहियं महा-महिमं करेंति ।।

११८. तए णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चत्तारि लोगपाला चउसु दहिमुहपव्वएसु[11] अट्ठाहियं महामहिमं करेंति ।।

११९. ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरिल्ले अंजणगे अट्ठाहियं[12], तस्स लोगपाला चउसु दहिमुहेसु अट्ठाहियं । चमरो य दाहिणिल्ले अंजणगे, तस्स लोगपाला दहिमुहपव्वएसु । बली पच्चत्थिमिल्ले अंजणगे, तस्स लोगपाला दहिमुहेसु ।।

१२०. तए णं बहवे भवणवइ[13] •वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा° अट्ठाहियाओ

१. सं० पा०—भवणवइ जाव तित्थगर जाव भारग्गसो ।
२. सं० पा०—तित्थगरचियगं जाव अणगार-चियगं ।
३. सं० पा० —तित्थगरचियगं जाव णिव्वावेंति ।
४. सगधं (अ,क,ख,ब,स) ; सगहं (त्रि) ।
५,१०. सं० पा०—भवणवइ जाव वेमाणिया ।
६. सं० पा०—भवणवइ जाव वेमाणिया ।
७. वेमाणिया देवा (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
८. जहारियं एवं (त्रि) ।
९. सं० पा०—बहवे जाव करेंति ।
११. दहिमुखगपव्वएसु (अ,क,ख,ब) ।
१२. 'महामहिमं करेती' ति शेषः, एवं सर्वत्रापि ।
१३. सं० पा०—भवणवइ जाव अट्ठाहियाओ ।

महामहिमाओ करेंति, करेत्ता जेणेव साइं-साइं विमाणाइं जेणेव साइं-साइं भवणाइं जेणेव साओ-साओ सभाओ सुहम्माओ जेणेव सगा-सगा माणवगा चेइयखंभा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिण-सकहाओ पक्खिवंति, पक्खिवित्ता अग्गेहिं वरेहिं मल्लेहि य गंधेहि य अच्चेंति, अच्चेत्ता विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ॥

१२१. तीसे णं समाए दोहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं काले वीइक्कंते अणंतेहिं वण्ण-पज्जवेहिं[1] •अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतेहिं फासपज्जवेहिं अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिं अणंतेहिं संठाणपज्जवेहिं अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतेहिं गरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं अगरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमपज्जवेहिं अणंतगुणपरिहाणीए° परिहायमाणे-परिहायमाणे, एत्थ णं दूसमसुसमाणामं समा काले पडिवज्जिसु समणाउसो ! ॥

१२२. तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[2] णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहि य उवसोभिए, तं जहा- कत्तिमेहिं चेव अकत्ति-मेहिं चेव ॥

१२३. तीसे णं भंते ! समाए भरहे वासे मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! तेसि मणुयाणं छव्विहे संघयणे, छव्विहे संठाणे, बहूइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिं[3] आउयं पालेंति, पालेत्ता अप्पेगइया णिरयगामी[4] •अप्पेगइया तिरियगामी, अप्पेगइया मणुयगामी, अप्पेगइया° देवगामी, अप्पेगइया सिज्झंति[5] •बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति° सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ॥

१२४. तीसे णं समाए [भरहे वासे] तओ वंसा समुप्पज्जित्था, तं जहा—अरहंतवंसे चक्कवट्टिवंसे दसारवंसे ॥

१२५. तीसे णं समाए [भरहे वासे] तेवीसं तित्थकरा, एक्कारस चक्कवट्टी, णव बलदेवा, णव वासु देवा समुप्पज्जित्था ॥

१२६. तीसे णं समाए [भरहे वासे] एक्काए सागरोवमकोडाकोडीए बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणियाए काले वीइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं[6] •अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतेहिं फासपज्जवेहिं अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिं अणंतेहिं संठाण-पज्जवेहिं अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतेहिं गरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं अगरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कम-पज्जवेहिं अणंतगुण°परिहाणीए परिहायमाणे-परिहायमाणे, एत्थ णं दूसमा णामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! ॥

---

१. सं० पा०—वण्णपज्जवेहिं तहेव जाव अणंतेहिं उट्ठाणकम्म जाव परिहायमाणे ।

२. जी० ३।२७७ ।

३. पुव्वकोडी (अ,त्रि,प,ब) ।

४. सं० पा०—णिरयगामी जाव देवगामी ।

५. सं० पा०—सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणमंतं ।

६. सं० पा०—वण्णपज्जवेहिं तहेव जाव परि-हाणीए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२७. तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे भविस्सइ, से जहाणामए आलिंग-पुक्खरेइ वा मुइंगपुक्खरेइ वा जाव[1] णाणाविहपंचवण्णेहिं[2] •मणीहिं तणेहि य उवसोभिए, तं जहा°—कत्तिमेहिं चेव अकत्तिमेहिं चेव ।।

१२८. तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! तेसिं मणुयाणं छव्विहे संघयणे, छव्विहे संठाणे, बहुईओ रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं साइरेगं वाससयं आउयं पालेंति,[3] पालेत्ता अप्पेगइया णिरयगामी,[4] •अप्पेगइया तिरियगामी, अप्पेगइया मणुयगामी, अप्पेगइया देवगामी, अप्पेगइया सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति° सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ।।

१२९. तीसे णं समाए पच्छिमे तिभागे[5] गणधम्मे पासंडधम्मे रायधम्मे जायतेए धम्म-चरणे य वोच्छिज्जिस्सइ ।।

१३०. तीसे णं समाए एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं काले विइक्कंते अणंतेहिं वण्ण-पज्जवेहिं, अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतेहिं फासपज्जवेहिं[6] •अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिं अणंतेहिं संठाणपज्जवेहिं अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतेहिं गरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं अगरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमपज्जवेहिं अणंतगुणपरिहाणीए° परिहायमाणे-परिहायमाणे, एत्थ णं दूसमदूसमणामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! ।।

१३१. तीसे णं भंते ! समाए उत्तमकट्ठपत्ताए[7] भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभाव-पडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! काले भविस्सई हाहाभूए[8] भंभाभूए[9] कोलाहलभूए समाणुभावेण 'य णं'[10] खरफरुसधूलिमइला दुव्विसहा वाउला भयंकरा य वाया संवट्टगा य वाहिंति । इह अभिक्खं धूमाहिंति य दिसा समंता रउस्सला[11] रेणुकलुस-तमपडल-णिरालोया । समयलुक्ख-याए य णं अहियं चंदा सीयं मोच्छिहिंति, अहियं सूरिया तविस्संति । अदुत्तरं च णं गोयमा ! अभिक्खणं अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा[12] अग्गिमेहा विज्जुमेहा विसमेहा

---

१. जी० ३।२७७ ।
२. सं० पा०—णाणामणिपंच जाव कित्तिमेहिं ।
३. अत्र भविष्यदर्थे वर्तमानक्रियाप्रयोगः (हीवृ); अत्र पालयन्ति अन्तं कुर्वन्ति इत्यादौ भविष्य-त्कालप्रयोगे कथं वर्त्तमाननिर्देशः ? उच्यते, सर्वास्वप्यवसर्पिणीषु पञ्चमसमासु इदमेव स्वरूपमिति नित्यप्रवृत्तवर्त्तमानकाले वर्तमान-प्रयोगः (शावृ) ।
४. सं० पा०—णिरयगामी जाव सव्वदुक्खाण-मंतं ।
५. भागे (स) ।
६. सं० पा०—फासपज्जवेहिं जाव परिहायमाणे ।
७. उत्तिमट्ठपत्ताए (अ,ब); उत्तिमकट्ठपत्ताए (क,स) ।
८. हाहब्भूते (अ,क,ख,ब,स) ।
९. भंभब्भूए (भ० ७।११७) ।
१०. × (अ,त्रि,ब,पुवृ) ।
११. रयोसला (अ,क,ब,स) ।
१२. खट्टमेहा (ख, पुवृपा, शावृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असणिमेहा[1] अजवणिज्जोदगा[2] वाहिरोगवेदणोदीरण-'परिणामसलिला अमणुण्णपाणियगा'[3] चंडानिलपहत-तिक्खधारा-णिवातपउरं वासं वासिहिंति, जेणं भरहे वासे गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासमगयं जणवयं,चउप्पयगवेलए, खहयरे पक्खिसंघे गामारण्णप्पयारणिरए तसे य पाणे बहुप्पयारे रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-पवालंकुर-मादीए तणवणस्सइकाइए ओसहीओ य विद्धंसेहिंति, पव्वय-गिरि-डोंगरुत्थलभट्ठिमादीए य वेयड्ढगिरिवज्जे विरावेहिंति, सलिलबिल-'विसम-गड्ड'[4]-णिण्णुण्णयाणि य गंगासिंधुवज्जाइं समीकरेहिंति ॥

१३२. तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! भूमी भविस्सइ इंगालभूया मुम्मुरभूया छारियभूया[5] तत्तकवेल्लुय-भूया तत्तसमजोइभूया धूलिबहुला रेणुबहुला पंकबहुला पणयबहुला चलणिबहुला बहूणं धरणिगोयराणं सत्ताणं दुन्निकम्मा[6] यावि भविस्सई ॥

१३३. तीसे णं भंते ! समाए भरहे वासे मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! मणुया भविस्संति दुरूवा दुवण्णा[7] दुग्गंधा[8] दुरसा दुफासा अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुभा अमणुण्णा अमणामा हीणस्सरा दीणस्सरा अणिट्ठस्सरा अकंतस्सरा अपियस्सरा अमणुण्णस्सरा अमणामस्सरा अणादेज्जवयणपच्चायाता[9] णिल्लज्जा कूड-कवड-कलह-वह-बंध-वेरनिरया मज्जायातिक्कमप्पहाणा अकज्जणिच्चुज्जया[10] गुरुणिओग-विणय-रहिया य विकलरूवा परूढणह-केस-मंसु-रोमा काला खर-फरुस-सामवण्णा[11] फुट्टसिरा[12] कविलपलियकेसा[13] बहुण्हारुणिसंपिणद्ध-दुद्दंसणिज्जरूवा[14] संकुडियवलीतरंग-परिवेढिअंग-मंगा जरापरिणयव्व थेरग-णरा पविरल-परिसडिय-दंतसेढी उब्भडघडामुहा[15] विसमणयण-वंकणासा वंक[16]-वलीविगय[17]-भेसणमुहा दद्दु-किटिभ-सिब्भ-फुडियफरुसच्छवी चित्तलंगमंगा[18]

१. × (अ,क,त्रि,प,ब,स); 'असणिमेह' त्ति क्वचित् (पुवृ); 'असणिमेहा' इत्यपि पदं क्वचिद् दृश्यते (शावृ); भगवत्या (७.११७) मपि एतत्पदं दृश्यते ।

२. अपिबणिज्जोदगा (पुवृपा, शावृपा, भ० ७।११७) ।

३. परिणामा सलिलसमणुण्णपाणियगा (अ,ब) ।

४. गड्ड-दुग्गविसम (भ० ७।११७); क्वचिद् दुर्गपदमपि दृश्यते (शावृ) ।

५. छारिभूया (त्रि) ।

६. दुन्निग्गमा (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ) ।

७. दुव्वण्णा (क,ख,स) ।

८. दुगंधा (अ,प,ब) ।

९. °पच्चाया (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।

१०. °णिच्चुज्जुता (अ,त्रि,प,ब,स) ।

११. समवण्णा (अ); समावण्णा (प); श्याम-वर्णा (पुवृपा, शावृपा); भगवत्या (७।११९) मपि 'झामवण्णा' इति पदं दृश्यते ।

१२. फट्टसिरा (क,ख) ।

१३. °वलियकेसा (अ,क,ख,त्रि,ब) ।

१४. दुद्दंसणीयरूवा (क,ख) ।

१५. उब्भडघाडामुहा (क, स, पुवृपा, शावृपा, हीवृपा) ।

१६. °वंधा (अ,ब); °वंग (क,ख,स,पुवृपा, शावृपा) ।

१७. पलीविगय (अ) ।

१८. चित्तलगा (पुवृ,हीवृ, भ० ७।११९) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कच्छूखसराभिभूया खरतिक्खणक्ख-कंडूइय-विक्खयतणू[1] टोलाकिति[2]-विसमसंधिबंधण-उक्कुडुयट्ठियविभत्त-दुब्बल-कुसंघयण-कुप्पमाणकुसंठिया कुरूवा कुट्ठाणासण-कुसेज्ज-कुभो-इणो असुइणो अणेगवाहिपरिपीलिअंगमंगा खलंत-विब्भलगई णिरुच्छाहा सत्तपरिवज्जिता विगयचेट्ठा नट्ठतेया अभिक्खणं सीउण्ह[3]-खरफरुसवायविज्झडिय-मलिणपंसुरओगुंडिअंगमंगा बहुकोहमाणमायालोभा बहुमोहा असुभदुक्खभागी ओसण्णं धम्मसण्ण-सम्मत्तपरिभट्ठा उक्कोसेणं रयणिप्पमाणमेत्ता सोलस-वीसइवास-परमाउसो[4] बहुपुत्तणत्तुपरियाल-पणय-बहुला[5] गंगासिंधूओ महाणईओ 'वेयड्ढं च पव्वयं'[6] नीसाए बावत्तरिं णिगोया[7] बीयं[8] बीयमेत्ता बिलवासिणो मणुया भविस्संति ।।

१३४ ते णं भंते ! मणुया किमाहारिस्संति ? गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं गंगासिंधूओ महाणईओ रहपहमित्तवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्तं जलं वोज्झिहिंति, सेवि य णं जले बहुमच्छकच्छभाइण्णे, णो चेव णं आउबहुले[9] भविस्सइ । तए णं ते मणुया सूरुग्गमणमुहुत्तंसि य सूरत्थमणमुहुत्तंसि य बिलेहिंतो णिद्धाइस्संति, णिद्धाइत्ता मच्छ-कच्छभे थलाइं गाहेहिंति, गाहेत्ता सीयातवतत्तेहिं मच्छकच्छभेहिं इक्कवीसं वाससहस्साइं वित्तिं कप्पेमाणा विहरिस्संति ।।

१३५. ते णं भंते ! मणुया णिस्सीला णिव्वया णिग्गुणा णिम्मेरा णिप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा ओसण्णं मंसाहारा मच्छाहारा खोद्दाहारा[10] कुणिमाहारा कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिंति ? कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! ओसण्णं णरगतिरिक्ख-जोणिएसु उववज्जिहिंति ।।

१३६. 'ते णं भंते !'[11] सीहा वग्घा वगा[12] दीविया अच्छा तरच्छा परस्सरा सियाल[13]-बिराल-सुणगा कोलसुणगा ससगा चित्तलगा[14] चिल्ललगा ओसण्णं मंसाहारा मच्छाहारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिंति ? कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! ओसण्णं णरगतिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति ।।

१३७. ते णं भंते ! ढंका कंका पिलगा मद्दुगा[15] सिही ओसण्णं मंसाहारा[16] •मच्छा-

१. विकयतणू (प,शावृ) ।
२. डोलाकिति (अ); डोलागिति (क,ख); टोलागिति (त्रि,स); टोलागति (प); टोलगति (पुवृपा, शावृपा, हीवृपा, भ० ७।११६) ।
३. सीयउण्ह (क,ख,त्रि,ब,स) ।
४. परायुसो (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
५. °पणयपरियालबहुला (क,ख,त्रि,ब,स); °पुत्त-णत्तुपरियालबहुला (पुवृपा,हीवृपा) ।
६. वेयड्ढपव्वयं च (ब) ।
७. णिओता (अ,क,ख,ब,स) ।
८. बीतं (अ,व) ।
९. आवबहुले (अ,व) ।
१०. डगडाहारा (अ,ब); खुद्दाहारा (क,ख); खुड्डाहारा (त्रि,प); केषुचिदादर्शेषु अत्र 'गड्डाहारा' इति दृश्यते, स लिपिप्रमाद एव सम्भाव्यते पञ्चमाङ्गे सप्तमशते षष्ठोद्देशे दुष्षमदुष्षमावर्णनेऽदृश्यमानत्वात् (शावृ) ।
११. तीसे णं भंते समाए (शावृ, हीवृ) ।
१२. विगा (त्रि, प, स) ।
१३. सरभसियाल (क,ख,त्रि,प) ।
१४. चित्तगा (ख,त्रि,प); × (स) ।
१५. मद्दूई (अ,ब); मद्दुई (क,ख); मड्डुई (त्रि); मग्गुगा (प); मद्दू (स) ।
१६. सं० पा० — मंसाहारा जाव कहिं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे कालं किच्चा° कहिं गच्छिहिंति ? कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! ओसण्णं णरगतिरिक्खजोणिएसु[1] उववज्जिहिंति ॥

१३८. तीसे णं समाए एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं काले वीइक्कंते आगमेस्साए[2] उस्सप्पिणीए सावणबहुलपडिवए बालवकरणंसि अभीइणक्खत्ते चोद्दसपढमसमये अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं[3] •अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतेहिं फासपज्जवेहिं अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिं अणंतेहिं संठाणपज्जवेहिं अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतेहिं गरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं अगरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमपज्जवेहिं° अणंतगुणपरिवड्ढीए परिवड्ढेमाणे-परिवड्ढेमाणे, एत्थ णं दूसमदूसमाणामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! ॥

१३९. तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! काले भविस्सइ हाहाभूए भंभाभूए एवं सो चेव दूसमदूसमावेढो[4] णेयव्वो[5] ॥

१४०. तीसे णं समाए एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं काले विइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं[6] •अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतेहिं फासपज्जवेहिं अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिं अणंतेहिं संठाणपज्जवेहिं अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतेहिं गरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं अगरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमपज्जवेहिं° अणंतगुणपरिवड्ढीए परिवड्ढेमाणे-परिवड्ढेमाणे, एत्थ णं दूसमाणामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! ॥

१४१. तेणं कालेणं तेणं समएणं पुक्खलसंवट्टए णामं महामेहे पाउब्भविस्सइ—भरहप्पमाणमेत्ते आयामेणं, तदणुरूवं[7] च णं विक्खंभ-बाहल्लेणं[8]। तए णं से पुक्खलसंवट्टए महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ, पतणतणाइत्ता खिप्पामेव पविज्जुयाइस्सइ, पविज्जुयाइत्ता खिप्पामेव जुग-मुसल-मुट्ठिप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासिस्सइ, जेणं भरहस्स वासस्स भूमिभागं इंगालभूयं मुम्मुरभूयं छारियभूयं तत्तकवेल्लुगभूयं[9] तत्तसमजोइभूयं णिव्वाविस्सति[10] ॥

१४२. तंसि च णं पुक्खलसंवट्टगंसि महामेहंसि सत्तरत्तं णिवतितंसि समाणंसि, एत्थ णं खीरमेहे णामं महामेहे पाउब्भविस्सइ—भरप्पमाणमेत्ते आयामेणं, तदणुरूवं च णं विक्खंभबाहल्लेणं। तए णं से खीरमेहे णामं महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ[11] •पतणतणाइत्ता खिप्पामेव पविज्जुयाइस्सइ, पविज्जुयाइत्ता° खिप्पामेव जुग-मुसल-मुट्ठि[12] •प्पमाणमेत्ताहिं

१. °तिरिक्खजाव (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स)।
२. आगमेसाए (अ,ब)।
३. सं० पा०—वण्णपज्जवेहिं जाव अणंत°।
४. °वेढओ (प)।
५. जं० २।१३१-१३७।
६. सं० पा०—वण्णपज्जवेहिं जाव अणंतगुण°।
७. तदाणुरूवं (अ,क,ख,प,ब,स) सर्वत्र।
८. बाहुल्लेणं (अ,ब)।
९. °कविल्लय° (क); °कविलग° (ख); °कवेल्लय° (त्रि,ब); °कवेलूय° (प)।
१०. णिव्ववेसइ (अ,ब); णिव्वदेस्सति (क,प); णिव्ववेस्सति (ख); णिव्वावेस्सति (त्रि)।
११. सं० पा० पतणतणाइस्सइ जाव खिप्पामेव।
१२. सं० पा०—जुगमुसलमुट्ठि जाव सत्तरत्तं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धाराहिं ओघमेघं° सत्तरत्तं वासं वासिस्सइ, जेणं भरहस्स वासस्स भूमीए वण्णं गंधं रसं फासं च जणइस्सइ ।।

१४३. तंसि च णं खीरमेहंसि सत्तरत्तं णिवतितंसि समाणंसि, एत्थ णं घयमेहे णामं महामेहे पाउब्भविस्सइ—भरहप्पमाणमेत्ते आयामेणं, तदणुरूवं च णं विक्खंभ-बाहल्लेणं । तए णं से घयमेहे महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ[1], •पतणतणाइत्ता खिप्पामेव पविज्जुयाइस्सइ, पविज्जुयाइत्ता खिप्पामेव जुग-मुसल-मुट्ठिप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं° वासं वासिस्सइ, जेणं भरहस्स वासस्स भूमीए सिणेहभावं जणइस्सइ ।।

१४४. तंसि च णं घयमेहंसि सत्तरत्तं णिवतितंसि समाणंसि, एत्थ णं अमयमेहे णामं महामेहे पाउब्भविस्सइ—भरहप्पमाणमेत्ते आयामेणं[2], •तदणुरूवं च णं विक्खंभ-बाहल्लेणं । तए णं से अमयमेहे महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ, पतणतणाइत्ता खिप्पामेव पविज्जुयाइस्सइ, पविज्जुयाइत्ता खिप्पामेव जुग-मुसल-मुट्ठिप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं° वासं वासिस्सइ, जेणं भरहे वासे रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरित-ओसहि-पवालंकुरमाईए तणवणस्सइकाइए जणइस्सइ ।।

१४५. तंसि च णं अमयमेहंसि सत्तरत्तं णिवतितंसि समाणंसि, एत्थ णं रसमेहे णामं महामेहे पाउब्भविस्सइ—भरहप्पमाणमेत्ते आयामेणं[3] •तदणुरूवं च णं विक्खंभ-बाहल्लेणं । तए णं से रसमेहे महामेहे खिप्पामेव पतणतणाइस्सइ, पतणतणाइत्ता खिप्पामेव पविज्जुयाइस्सइ, पविज्जुयाइत्ता खिप्पामेव जुग-मुसल-मुट्ठिप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं° वासं वासिस्सइ, जेणं तेसिं बहूणं रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरित-ओसहि-पवालंकुरमादीणं तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-महुरे पंचविहे रसविसेसे जणइस्सइ । तए णं भरहे वासे भविस्सइ परूढरुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरिय-ओसहिए, उवचियतय-पत्त-पवालंकुर[4]-पुप्फ-फलसमुइए सुहोवभोगे यावि भविस्सइ ।।

१४६. तए णं ते मणुया भरहं वासं परुढरुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वय-हरिय-ओसहीयं उवचियतय-पत्त-पवालंकुर-पुप्फ-फलसमुइयं सुहोवभोगं जायं चावि[5] पासिहिंति, पासित्ता बिलेहिंतो णिद्धाइस्संति. णिद्धाइत्ता हट्ठतुट्ठा अण्णमण्णं सद्दाविस्संति, सद्दावित्ता एवं वदिस्संति—जाते णं देवाणुप्पिया ! भरहे वासे परूढरुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वय-हरिय[6]-•ओसहीए उवचियतय-पत्त-पवालंकुर-पुप्फ-फलसमुइए° सुहोवभोगे, तं जे णं देवाणुप्पिया ! अम्हं केइ अज्जप्पभिइअसुभं कुणिमं आहारं आहारिस्सइ, से णं अणेगाहिं छायाहिं वज्जणिज्जेत्तिकट्टु[7] संठितिं ठवेस्संति, ठवेत्ता भरहे वासे सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरमाणा विहरिस्संति ।।

---

१. सं० पा०—पतणतणाइस्सइ जाव वासं ।

२. सं० पा० —आयामेणं जाव वासं ।

३. सं० पा०—आयामेणं जाव वासं ।

४. पवालिपल्लवंकुर (अ,ब); पवालपल्लवंकुर (क,ख,त्रि,स,पुवृ, शावृ); पवालपल्लवांकुर (ख) अग्रेपि ।

५. वावि (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।

६. सं० पा० —हरिय जाव सुहोवभोगे ।

७. क्वचिद् 'वर्ज्जं' इति सूत्रपाठेतु वर्ज्यो वर्जनीय इत्यर्थः (शावृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४७. तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे भविस्सइ, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[1] णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहिं य उवसोभिए, तं जहा—कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव ।।

१४८. तीसे णं भंते ! समाए मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! तेसि णं मणुयाणं छव्विहे संघयणे, छव्विहे संठाणे, बहूईओ रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं साइरेगं वाससयं आउयं पालेहिंति, पालेत्ता अप्पेगइया णिरयगामी[2], •अप्पेगइया तिरियगामी, अप्पेगइया मणुयगामी,° अप्पेगइया देवगामी, ण सिज्झंति[3] ।।

१४९. तीसे णं समाए एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं काले वीइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं[4] •अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतेहिं फासपज्जवेहिं अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिं अणंतेहिं संठाणपज्जवेहिं अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतेहिं गरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं अगरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमपज्जवेहिं अणंतगुणपरिवड्ढीए° परिवड्ढेमाणे-परिवड्ढेमाणे, एत्थ णं दुसमसूसमाणामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! ।।

१५०. तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे भविस्सइ, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहि य उवसोभिए, तं जहा—कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव ।।

१५१. तेसि णं भंते ! मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! तेसि णं मणुयाणं छव्विहे संघयणे, छव्विहे संठाणे, बहूइं धणूइं[5] उड्ढं उच्चत्तेणं, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिं[6] आउयं पालेहिंति, पालेत्ता अप्पेगइया णिरयगामी[7], •अप्पेगइया तिरियगामी, अप्पेगइया मणुयगामी, अप्पेगइया देवगामी, अप्पेगइया सिज्जिहिंति बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति परिणिव्वाहिंति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेहिंति ।।

१५२. तीसे णं समाए तओ वंसा समुप्पज्जिस्संति, तं जहा—तित्थगरवंसे चक्कवट्टिवंसे दसारवंसे ।।

१५३. तीसे णं समाए तेवीसं तित्थगरा, एक्कारस चक्कवट्टी, णव बलदेवा, णव वासुदेवा समुप्पज्जिस्संति ।।

१५४. तीसे णं समाए सागरोवमकोडाकोडीए बायलीसाए वाससहस्सेहिं ऊणियाए

---

१. जी० ३।२७७ ।
२. सं० पा०—णिरयगामी जाव अप्पेगइया ।
३. नवरं 'न सिज्झंति' त्ति 'द्वितीयारकवर्तिनो मनुजा न सिध्यन्ति' वर्तमान प्रयोगोपि भविष्यत्तयाऽवसातव्यः, तेन न सेत्स्यन्ति सकलकर्मक्षयलक्षणां सिद्धिं न प्राप्स्यन्तीत्यर्थः (हीवृ) ।
४. सं० पा०—वण्णपज्जवेहिं जाव परिवड्ढेमाणे ।
५. धणूयाइं (अ, त्रि, ब) ।
६. पुव्वकोडी (प) ।
७. सं० पा०—णिरयगामी जाव अंतं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काले वीइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं[1] °अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतेहिं फासपज्जवेहिं अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिं अणंतेहिं संठाणपज्जवेहिं अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतेहिं गरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं अगरुय-लहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमपज्जवेहिं° अणंतगुण-परिवड्ढीए परिवड्ढेमाणे-परिवड्ढेमाणे, एत्थ णं सुसमदूसमाणामं समा काले पडिवज्जि-स्सइ समणाउसो ! ।।

१५५. सा णं समा तिहा विभजिस्सइ, तं जहा—पढमे तिभागे मज्झिमे तिभागे पच्छिमे तिभागे ।।

१५६. तीसे णं भंते! समाए पढमे तिभाए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे[2] °भूमिभागे भविस्सइ, से जहाणामए आलिंग-पुक्खरेइ वा जाव णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं तणेहि य उवसोभिए, तं जहा—कित्तिमेहिं चेव अकित्तिमेहिं चेव ।।

१५७. तीसे णं भंते ! समाए पढमे तिभागे भरहे वासे मणुयाणं केरिसए आगार-भावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! तेसिं मणुयाणं छव्विहे संघयणे, छव्विहे संठाणे, बहुणि धणुसयाणि उड्ढं उच्चत्तेणं, जहण्णेणं संखेज्जाणि वासाणि, उक्कोसेणं असंखेज्जाणि वासाणि आउयं पालेहिंति, पालेत्ता अप्पेगइया णिरयगामी, अप्पेगइया तिरियगामी, अप्पेगइया मणुस्सगामी, अप्पेगइया देवगामी, अप्पेगइया सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति परिणिव्वाहिंति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिंति° ।।

---

१. सं० पा०—वण्णपज्जवेहिं जाव अणंतगुण° ।

२. सं० पा०—बहुसमरमणिज्जे जाव भविस्सइ, मणुयाणं जा चेव ओसप्पिणीए पच्छिमे तिभागे वत्तव्वया सा भाणियव्वा, कुलगरवज्जा उसभ-सामिवज्जा । 'उसभसामिवज्जा' इत्यस्य स्पष्टीकरणं प्रमेयरत्नमञ्जूषायां इत्थं लभ्यते—अत्रैवापवादसूत्रमाह—कीदृशी च सा वक्त-व्यतेत्याह—कुलकरान् वर्ज्जयतीति कुलकर-वर्ज्जा, 'वृजैण् वर्जने' इत्यस्याचि प्रत्यये रूप-सिद्धि, एवं ऋषभस्वामिवर्ज्जा:, अवसर्प्पिण्यां कुलकरसम्पाद्यानां दण्डनीत्यादीनामिव ऋषभ-स्वामिसम्पाद्यानां चान्नपाकादिप्रक्रियाशिल्प-कलोपदर्शनादीनामिवोत्सर्प्पिण्यामपि द्वितीयार-कभाविकुलकरप्रवर्त्तितानां तेषां तदानीमनुवर्त्ति-ष्यमाणत्वेन तत्प्रतिपादकपुरुषकथनप्रयोजना-भावात् यथा अवसर्प्पिणीतृतीयारकतृतीय-भागे कुलकराणां स्वरूपं ऋषभस्वामिरूपं च प्राक् प्ररूपितं तथा नात्र वक्तव्यमिति भाव:, अथवा ऋषभस्वामिवर्ज्जेत्यत्र ऋषभस्वामिअभि-लापवर्जेति तात्पर्यं, तेन ऋषभस्वाम्यभिलापं वर्ज्जयित्वा भद्रकृत्तीर्थंकृतोऽभिलाप: कार्यं इत्यागतम्, उत्सर्पिणीचरमतीर्थंकरस्य प्रायो-वसर्प्पिणीप्रथमतीर्थंकृत्समानशीलत्वात्, अन्य-थोत्सर्प्पिणी - चतुर्विंशतितमतीर्थंकृत: क्व सम्भव: स्यादिति संशयादयोपि स्यात् कलाद्युप-दर्शनस्य तु अर्थादेव निषेधप्राप्ते तद्विषय-कोभिलाप एव नास्तीति ।

कुलकरविषयको वाचनाभेद: आगमादर्शेषु एव-मस्ति—अण्णे पढंति—तीसे णं समाए पढमे तिभाए इमे पण्णरस कुलगरा समुप्पज्जिस्संति, तं जहा—सम्मुइ जाव उसभे सेसं तं चेव, दंडणीईओ पडिलोमाओ णेयव्वाओ [जं० २।५६-६२] ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५८. तीसे णं समाए पढमे तिभाए रायधम्मे[1] •जायतेए° धम्मचरणे य वोच्छिज्जिस्सइ ।।

१५९. तीसे णं समाए मज्झिम-पच्छिमेसु तिभागेसु[2] •भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे भविस्सइ, सो चेव गमो णेयव्वो[3], णाणत्तं—दो धणुसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, तेसिं च मणुयाणं चउसट्ठि पिट्ठिकरंडगा, चउत्थभत्तस्स आहारत्थे समुप्पज्जिस्सइ, ठिई पलिओवमं, एगूणासीइं राइंदियाइं सारक्खिस्संति संगोवेस्संति जाव देवलोगपरिग्गहिया णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ?°।।

१६०. [4]•तीसे णं समाए दोहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं काले वीइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतेहिं फासपज्जवेहिं अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिं अणंतेहिं संठाणपज्जवेहिं अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतेहिं गरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं अगरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमपज्जवेहिं अणंतगुणपरिवड्ढीए परिवड्ढेमाणे-परिवड्ढेमाणे, एत्थ णं सुसमाणामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! ।।

१६१. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए उत्तमकट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे भविस्सइ, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा, तं चेव जं सुसमसुसमाए पुव्ववण्णियं[5], णवरं—णाणत्तं चउधणुसहस्समूसिया एगे अट्ठावीसे पिट्ठिकरंडकसए छट्ठभत्तस्स आहारट्ठे, चउसट्ठि राइंदियाइं सारक्खिस्संति, दो पलिओवमाइं आऊ, सेसं तं चेव ।।

१६२. तीसे णं समाए चउव्विहा मणुस्सा अणुसज्जिस्संति, तं जहा—एका पउरजंघा कुसुमा सुसमणा° ।।

१६३. [6]•तीसे णं समाए तिहिं सागरोवमकोडाकोडिहिं काले वीइक्कंते अणंतेहिं वण्णपज्जवेहिं अणंतेहिं गंधपज्जवेहिं अणंतेहिं रसपज्जवेहिं अणंतेहिं फासपज्जवेहिं अणंतेहिं संघयणपज्जवेहिं अणंतेहिं संठाणपज्जवेहिं अणंतेहिं उच्चत्तपज्जवेहिं अणंतेहिं आउपज्जवेहिं अणंतेहिं गरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं अगरुयलहुयपज्जवेहिं अणंतेहिं उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमपज्जवेहिं अणंतगुणपरिवड्ढीए परिवड्ढेमाणे-परिवड्ढेमाणे, एत्थ णं सुसमसुसमाणामं समा काले पडिवज्जिस्सइ समणाउसो ! ।।

१६४. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भरहे वासे इमीसे उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए उत्तमकट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा !

---

१. सं० पा०—रायधम्मे जाव धम्मचरणे । यावत्करणात् तुलामध्यन्यायेन मध्यग्रहणे आद्यन्तयोर्ग्रहणमितिन्यायात् राजधर्मस्योभयोः पार्श्ववर्त्तिनां गणधर्मपाषण्डजाततेजसामुपादानं कार्य्यं तेषामपि तत्र व्युच्छेत्स्यमानत्वात् (हीवृ) ।

२. सं० पा०—तिभागेसु जा पढममज्झिमेसु वत्तव्वया ओसप्पिणीए सा भाणियव्वा ।

३. जं० २।७-५० ।

४. सं० पा०—सुसमा तहेव ।

५. जं० २।७-५० ।

६. सं० पा०—सुसमासुसमावि तहेव ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे भविस्सइ, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव णाणाविहपंच-वण्णेहिं मणीहिं तणेहि य उवसोभिए, तं जहा—किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं° तहेव[1] जाव छव्विहा मणुस्सा अणुसज्जिस्संति,[2] •तं जहा—पम्हगंधा मियगंधा अममा तेतली सहा° सणिचारी ॥

१. जं० २।७-५०।

२. सं० पा०—अणुसज्जिस्संति जाव सणिचारी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइओ वक्खारो

१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चई—भरहे वासे ? भरहे वासे ? गोयमा ! भरहे णं वासे वेयड्ढस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चोद्दसुत्तरं जोयणसयं एगारस[1] य एगूणवीसइभाए जोयणस्स अबाहाए, लवणसमुद्दस्स उत्तरेणं चोद्दसुत्तरं जोयणसयं एगारस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स अबाहाए, गंगाए महाणईए पच्चत्थिमेणं, सिंधूए महाणईए पुरत्थिमेणं, दाहिणड्ढभरहमज्झिल्लतिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं विणीया णामं रायहाणी पण्णत्ता—पाईणपडीणायया,[2] उदीणदाहिणविच्छिण्णा, दुवालसजोयणायामा णवजोयण-विच्छिण्णा धणवइमति-णिम्माया चामीकरपागारा णाणामणिपंचवण्णकविसीसगपरि-मंडियाभिरामा अलकापुरीसंकासा पमुइयपक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया रिद्ध[3]-त्थिमिय-समिद्धा पमुइय-जण-जाणवया जाव[4] पडिरूवा ।।

२. तत्थ[5] णं विणीयाए रायहाणीए भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी समुप्प-ज्जित्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[6] रज्जं पसासेमाणे विहरइ ।।

३. बिइओ गमो रायवण्णगस्स इमो—तत्थ असंखेज्जकालवासंतरेण[7] उपज्जए

---

१. एक्कारस (क, त्रि, ब) ।

२. पातीणपडियायता (अ, क, ख, त्रि, ब, स) ।

३. रिद्धि (अ, ख, ब) ।

४. ओ० सू० १ ।

५. आवश्यकचूर्णौ राजवर्णकसूत्रं भरतस्य रत्नोत्पत्तिस्थलनिर्देशानन्तरं विद्यते (पृ० २०७-२०९) । प्रस्तुतसूत्रस्य उपलब्धादर्शेषु राजवर्णकसूत्रस्य किञ्चिद्भागः प्रस्तुतप्रकरणे विद्यते, किञ्चिच्च रत्नोत्पत्तिस्थलनिर्देशानन्तरं (३।२२०) विद्यते । प्रस्तुतप्रकरणे आवश्यकचूर्णौ उपलब्धजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिपाठे ये केचन पाठभेदास्ते एवं सन्ति—य संखेज्जकालवासाउए असंसी······संघतणतणुकबुद्धि····देहधारी उज्जुगभिगार·····सोत्थियंकुसचंददिव्वअग्गि ······· गागरभेगभवणविमाण ···हयणासणकोसिसन्निभ···· जातिजूतवितवरचंपग····छत्तीसाएवि पसत्थ····अव्वोच्छिन्ननवत्तपागड····कुलपुत्तयं देवेंद······थिमिते फणवतिव्व····भरहचक्कवट्टी चोद्दसण्हं ।

६. ओ० सू० १४ ।

७. य संखेज्ज° (अ,क,ख,त्रि,ब); उपाध्याय—शान्तिचन्द्रेण आवश्यकचूर्णेः पाठोत्र उद्धृतः—आवश्यकचूर्णौ तु 'तत्थ य संखिज्जकालवासाउए' इति पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जसंसो उत्तमे 'अभिजाए सत्त'[1]-वीरियपरक्कमगुणे पसत्थवण्ण-सर-सार-संघयण[2]-बुद्धि-धारण[3]-मेहा-संठाण-सील-प्पगई पहाणगारवच्छायागइए अणेगवयणप्पहाणे तेय-आउ-बल-वीरियजुत्ते अझुसिरघणणिचियलोहसंकल-णारायवइरउसहसंघयणदेहधारी[4] 'झस-जुग'[5]-भिंगार-वद्धमाणग-भद्दासण-संख-छत्त-वीयणि-पडाग-चक्क-णंगल-मुसल-रह-सोत्थिय-अंकुस-चंदाइच्च-अग्गि-जूव[6]-सागर-इंदज्झय-पुहवि-पउम-कुंजर-सीहासण-दंड-कुम्भ-गिरिवर-तुरग-वर[7]-मउड-कुंडल-णंदावत्त-धणु-कोंत-गागर[8]-भवणविमाण - णेगलक्खणपसत्थसुविभत्तचित्त-करचरणदेसभागे उड्ढमुहलोमजात[9]-सुकुमालणिद्धमउयावत्तपसत्थलोमविरइयसिरिवच्छ-च्छण्णविउलवच्छे देसखेत्तसुविभत्तदेहधारी तरुणरविरस्सिबोहिय-वरकमलविबुद्धगब्भ-वण्णे हयपोसण-कोससण्णिभ-पसत्थपिट्ठंतणिरुवलेवे पउमुप्पल-कुंद-जाइ-जूहिय-वरचंपग-णागपुप्फ-सारंग-तुल्लगंधी छत्तीसाहियपसत्थपत्थिवगुणेहिं[10] जुत्ते अव्वोच्छिण्णातपत्ते पागड उभयजोणी[11] विसुद्धणियगकुलगयणपुण्णचंदे, चंदे इव सोमयाए णयणमणणिव्वुईकरे, अक्खोभे सागरोव्वथिमिए, धणवइव्व भोगसमुदयसद्दव्वयाए, समरे अपराइए परमविक्कम-गुणे अमरवइसमाणसरिसरूवे मणुयवई भरहचक्कवट्टी भरहं भुंजइ पण्णट्ठसत्तू ।।

४. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अण्णया कयाइ आउहघरसालाए दिव्वे चक्करयणे समुप्पज्जित्था ।।

५. तए णं से आउहघरिए भरहस्स रण्णो आउहघरसालाए दिव्वं चक्करयणं समुप्पन्नं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिस-वसविसप्पमाणहियए जेणामेव से[12] दिव्वे चक्करयणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता करयल[13]°परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु चक्करयणस्स पणामं करेइ, करेत्ता आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणामेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणामेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[14] °परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं आउहघरसालाए दिव्वे चक्क-रयणे समुप्पन्ने, तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं णिवेदेमो, पियं भे भवउ[15] ।।

---

१. अभियातसत्त (क, ख, स); अहियातसत्त (त्रि, ब, पुवृ, हीवृ) ।

२. संघयणतणुग (क, ख, त्रि, प, स, पुवृ, शावृ, हीवृ); ताडपत्रीयादर्शयोः 'तणुग' इति पदं नास्ति, उपाध्यायपुण्यसागरकृतवृत्तावपि अस्य पदस्यादर्शनस्योल्लेखोस्ति—क्वचित्तनु-कशब्दो न दृश्यते ।

३. × (ब) ।

४. नारायणवइर° (अ, ख, ब) ।

५. झसयुगं—मत्स्युग्मम् (पुवृ) ।

६. जूय (क, ख, प, स) ।

७. तुरंगवर (अ, क, ख, त्रि, ब, स) ।

८. मगर (क, ख) ।

९. उद्धामुहलोमजात (अ, ब, पुवृ); उड्ढामुह-लोमजाल (क,त्रि,प,स); उड्ढमुहलोमजाल (ख); °लोमजाल (शावृ, हीवृ, पुवृपा) ।

१०. छतीसा अहिय° (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स) ।

११. °उभतो° (अ,क,ख,ब,स) ।

१२. × (त्रि, प) ।

१३. सं० पा०—करयल जाव कट्टु ।

१४. सं० पा०—करयल जाव जएणं ।

१५. भवइ (अ, ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. तते णं से भरहे राया तस्स आउहघरियस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ[1] •तुट्ठ-चित्तमाणंदिए नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए° वियसियवरकमलणयणवयणे पयलियवरकडगतुडियकेऊर-मउड-कुंडल-हारविरायंतरइयवच्छे पालंबपलंबमाणघोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं णरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ. पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियग्गहत्थे[2] चक्करयणाभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि णिहट्टु करयल[3]-•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए° अंजलिं कट्टु चक्करयणस्स पणामं करेइ, करेत्ता तस्स आउहघरियस्स अहामालियं मउडवज्जं ओमोयं दलयइ, दलइत्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

७. तए णं से भरहे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विणीयं रायहाणिं सब्भितरबाहिरियं[4] आसिय-संमज्जिय-सित्त-सुइगसंमट्ठ-रत्थंतरवीहियं मंचाइमंचकलियं णाणाविहरागवसण[5]-ऊसियझयपडागाइपडागमंडियं लाउल्लोइयमहियं गोसीससरसरत्तदद्दरदिण्णपंचंगुलितलं उवचियवंदणकलसं वंदणघडसुकय[6]-•तोरणपडिदुवारदेसभायं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागुरुपवरकुंदुरुक्क-तुरुक्कधूवमघमघेंत° गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह कारवेह, करेत्ता कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

८. तए णं से कोडुंबियपुरिसा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ[7] •तुट्ठ-चित्तमाणंदिया नंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता विणीयं रायहाणिं जाव[8] करेत्ता कारवेत्ता य तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

९. तए णं से भरहे राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे विचित्तमणिरयणकुट्टिमतले[9] रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि णाणामणिरयण-भत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहणिसण्णे सुहोदएहिं गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुद्धोदएहिं[10] य पुण्णे कल्लाणगपवरमज्जणविहीए मज्जिए तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे पम्हलसुकुमालगंधकासाइय-लूहियंगे सरससुरहि-

---

१. सं० पा०—हट्ठ जाव सोमणस्सिए ।
२. °मउलितहत्थे (अ, क, ब) ।
३. सं० पा०—करयल जाव अंजलिं ।
४. अब्भिंतर° (अ,ब)) ।
५. °वसणं (अ,क,ख,ब,स) ।
६. सं० पा०—वंदणघडसुकय जाव गंधुद्धुयाभिरामं ।
७. सं० पा०—हट्ठ करयल जाव एवं ।
८. जं० ३।७।
९. °कोट्टिमतले (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
१०. × (अ,ब) ।

गोसीसचंदणाणुलित्तगत्ते अहयसुमहग्घदूसरयणसुसंवुए[1] सुइमाला-वण्णग-विलेवणे आविद्ध-मणिसुवण्णे कप्पियहारद्धहार-तिसरय[2]-पालंबपलंबमाण-कडिसुत्तसुकयसोहे पिणद्धगेविज्जगअंगुलिज्जग[3]-ललितंगयललियकयाभरणे णाणामणिकडगतुडियथंभियभुए 'अहियरूव-सस्सिरीए'[4] कुंडलउज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए हारोत्थयसुकयरइयवच्छे पालंबपलंबमाणसुकयपडउत्तरिज्जे मुद्दियापिंगलंगुलीए णाणामणिकणग[5]-विमल-महरिह-णिउणोविय[6]- मिसिमिसेंत[7]-विरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थआविद्धवीरवलए, किं बहुणा ? कप्परुक्खए चेव अलंकियविभूसिए णरिंदे सकोरंट[8]•मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं° चउचामरवालवीइअंगे मंगलजयसद्दकयालोए अणेगगणणायग-दंडणायग[9]-•राईसर-तलवर-मांडबिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड - पीढमद्द- नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह° दूय-संधिवालसद्धिं संपरिवुडे धवल-महामेहणिग्गए इव[10] •गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे° ससिव्व पियदंसणे णरवई धूवपुप्फगंधमल्लहत्थगए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव आउहघरसाला जेणेव चक्करयणे तेणामेव पहारेत्थ गमणाए ।।

१०. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बहवे ईसर[11]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहं° पभितओ—अप्पेगइया पउमहत्थगया अप्पेगइया उप्पलहत्थगया[12]•अप्पेगइया कुमुयहत्थगया अप्पेगइया नलिणहत्थगया अप्पेगइया सोगंधियहत्थगया अप्पेगइया पुंडरीयहत्थगया अप्पेगइया महापुंडरीयहत्थगया अप्पेगइया सयपत्तहत्थगया° अप्पेगइया सहस्सपत्तहत्थगया भरहं रायाणं पिट्ठओ-पिट्ठओ अणुगच्छंति ।।

११. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बहूओ—

खुज्ज चिलाइ वामणि, वडभीओ बब्बरी[13] पउसियाओ[14] ।
जोणियपल्हवियाओ, ईसिणिय[15] थारुकिणियाओ[16] ।।१।।
लासिय लउसिय दमिली, सिंहलि तह आरबी पुलिंदी य ।
पक्कणि बहलि[17] मुरुंडी, सबरीओ पारसीओ य ।।२।।

---

१. °सुसंवुत (अ) ; °सुसंवुडे (त्रि,प) ।
२. तिसरिय (त्रि,प,शावृ,हीवृ) ।
३. °अंगुलेज्जग (अ,ब) ।
४. अहिअसस्सिरीए (अ,क,ख,प,ब,स,पुवृ,शावृ) ।
५. नागामणिमयं (शावृ) ।
६. हीरविजयवृत्तौ शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ च 'ओयविय' इति पाठः उद्धृतोस्ति ।
७. मिसिमिसंत (क,ख,त्रि,स) ।
८. सं० पा०—सकोरंट जाव चउचामर° । हीरविजयसूरिणा वाचनान्तरगतस्य छत्रचामरवर्णकस्य उल्लेखः कृतोस्ति, द्रष्टव्यं औपपातिकस्य ६३ सूत्रस्य वाचानान्तरम् ।
९. सं० पा०—दंडणायग जाव दूय । औपपातिकस्य उपलब्धादर्शेषु प्रस्तुतपाठः किञ्चिद् भिन्नोस्ति । द्रष्टव्यं ओवाइयं ६३ सूत्रम् । भगवतीवृतौ (पत्र ३१८) औपपातिकस्य पाठः उद्धृतोस्ति स प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तोः संवादी वर्तते । ओवाइयसूत्रस्य अष्टादशे सूत्रे पि एतत्संवादी पाठो लभ्यते ।
१०. सं० पा०—इव जाव ससिव्व ।
११. सं० पा० ईसर जाव पभितयो ।
१२. सं० प०—उप्पलहत्थगया जाव अप्पेगइया ।
१३. पप्परी (अ,ब) ।
१४. वउसीयाओ (क,ख,प,स) ।
१५. तिसिणामगा (अ,ब) ।
१६. चारुविणियाओ (त्रि) ।
१७. पहलि (अ,ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पेगइयाओ वंदणकलसहत्थगयाओ भिंगार-आदंस-थाल-पाति-सुपइट्ठग[1]-वायकरग-रयण-करंड[2]-पुप्फचंगेरी-मल्ल-वण्ण-चुण्ण[3]-गंधहत्थगयाओ वत्थ-आभरण-लोमहत्थयचंगेरी[4]-पुप्फपडलहत्थगयाओ जाव[5] लोमहत्थगपडलहत्थगयाओ[6] अप्पेगइयाओ सीहासणहत्थ-गयाओ 'छत्त-चामर-हत्थगयाओ'[7] तेल्लसमुग्गयहत्थगयाओ 'कोट्ठसमुग्गयहत्थगयाओ जाव सासवसमुग्गयहत्थगयाओ'[8]।

संगहणी गाहा----

तेल्ले कोट्ठसमुग्गे, पत्ते चोए य तगरमेला य।
हरियाले हिंगुलए, मणोसिला सासवसमुग्गे॥३॥

अप्पेगइयाओ तालियंटहत्थगयाओ धूवकडुच्छुयहत्थगयाओ[9] भरहं रायाणं पिट्ठओ-पिट्ठओ अणुगच्छंति॥

१२. तए णं से भरहे राया सव्विड्ढीए[10] सव्वजुईए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वायरेणं सव्वविभूसाए सव्वविभूईए सव्ववत्थ-पुप्फ-गंध-मल्लालंकारविभूसाए सव्वतुरिय[11]-सद्दसण्णि-णाएणं महया इड्ढीए जाव[12] महया वरतुरिय[13]-जमगसमगपवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-मुरव[14]-मुइंग-दुंदुहिनिग्घोषणाइएणं जेणेव आउहघरसाला तेणेव उवाग-च्छइ, उवागच्छित्ता आलोए चक्करयणस्स पणामं करेइ, करेत्ता जेणेव चक्करयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थयं परामुसइ, परामुसित्ता चक्करयणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिंपइ, अणुलिंपित्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहि य अच्चिणइ, पुप्फारुहणं मल्ल-गंध-वण्ण-चुण्ण-वत्थारुहणं आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता अच्छेहिं सण्हेहिं सेतेहिं 'रययामएहिं[15] अच्छरसातं-डुलेहिं'[16] चक्करयणस्स पुरओ अट्ठट्ठ मंगलए आलिहइ, [तं जहा—सोत्थिय सिरिवच्छ

---

१ सुपतिट्ठ (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
२. रयणकरंडग (क,ख,त्रि,स)।
३. × (अ,ब)।
४. पुष्पचङ्गेरीत आरभ्य मालादिपदविशेषिता-स्तच्चङ्गेर्यो ज्ञातव्याः लोमहस्तकचङ्गेरी तु साक्षादुपात्तास्ति (शावृ)।
५. यावत्करणात् अप्येकिकाः पुष्पपटलकमाल्य-पटलक - चूर्णपटलकगंधवस्त्राभरणसिद्धार्थक-हस्तगता वाच्याः (हीवृ); अस्यां वृत्तौ 'वर्ण' इति पदं व्याख्यातं नास्ति, मूलपाठे तत्स्वीकृतमस्ति, तेन 'वण्णपडलहत्थगयाओ' इत्यपि वाच्यम्।
६. लोमहत्थगया २ पडलहत्थगया (अ,त्रि,ब); लोमहत्थगयाओ (क,ख,प)।
७. × (त्रि,प,स,हीवृ)।
८. आदर्शेषु चिह्नाङ्कितः पाठो नास्ति, असौ प्रमेयरत्नमञ्जूषाया आधारेण अस्माभिः संस्कृतं प्राकृतीकृत्य स्वीकृतः। हीरविजयवृत्तौ अस्य पूर्णपाठस्य निर्देशोस्ति, ततश्च सङ्ग्रहणी-गाथाया उल्लेखोस्ति।
९. °कडेच्छुय° (अ,ब,स); °कडिच्छुय° (ख)।
१०. 'युक्त' इति गम्यम्।
११. °तुडिय (क,ख,त्रि,प,स)।
१२. अत्र यावत्करणात् पूर्वोक्तानि द्युत्यादि पदानि महच्छब्दयुक्तानि वाच्यानि (पुवृ)।
१३. °तुडिय (क,ख,त्रि,प,स)।
१४. मुरज (प)।
१५. रयणमएहिं (अ)।
१६. द्वयोरपि पदयोः पूर्वपदस्य दीर्घान्तता प्राकृत-त्वात् (हीवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णंदियावत्त वद्धमाणग भद्दासण मच्छ कलस दप्पण[1] अट्ठमंगलए][2] आलिहित्ता काऊणं[3] करेइ उवयारं, किं ते ? पाडल-मल्लिय-चंपग-असोग-पुण्णाग-चूयमंजरि-णवमालिय-बकुल-तिलग-कणवीर-कुंद-कोज्जय-कोरंटय-पत्त-दमणय-वरसुरहिसुगंधगंधियस्स कयग्गहगहिय[4]-करयलपब्भट्ठविप्पमुक्कस्स दसद्धवण्णस्स कुसुमणिगरस्स तत्थ चित्तं जण्णुस्सेहप्पमाणमेत्तं ओहिनिगरं करेत्ता चंदप्पभ-वइर-वेरुलियविमलदंडं कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धुवगंधुत्तमाणुविद्धं च धूमवट्टिं विणिम्मुयंतं वेरुलियमयं कडुच्छुयं[5] पग्गहेत्तु पयते धूवं दहइ, दहित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता वामं जाणुं अंचेइ[6], •अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु चक्करयणस्स° पणामं करेइ, करेत्ता आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसीयइ, सण्णिसीयित्ता अट्ठारस सेणि-पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलिय-सपुरजणजाण-वयं 'विजयवेजइयं चक्करयणस्स'[7] अट्ठाहियं महामहिमं करेह, करेत्ता ममेयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।।

१३. तए णं ताओ अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठाओ जाव[8] विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमेंति, पडिणिक्खमेत्ता उस्सुक्कं उक्करं जाव[9] अट्ठाहियं महामहिमं करेंति य कारवेंति य, करेत्ता य कारवेत्ता य जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता[10] तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

१४. तए णं से दिव्वे चक्करयणे अट्ठाहियाए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहस्ससंपरि-वुडे दिव्वतुडियसद्दसण्णिणाएणं[11] आपूरेंते[12] चेव अंबरतलं विणीयाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता गंगाए महाणईए 'दाहिणिल्लेणं कूलेणं'[13] पुरत्थिमं दिसिं मागह-तित्थाभिमुहे पयाते यावि होत्था ।।

---

१. प्राकृतत्वाद् विभक्तिलोपो द्रष्टव्यः (हीवृ) ।
२. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
३. कृत्वा—अन्तर्वर्णकादिभरणेन पूर्णानि कृत्वेत्यर्थः ।
४. कयगाह° (अ,क,ब,स) ।
५. कडेच्छुयं (ख,ब,स) ।
६. सं० पा०—अंचेइ जाव पणामं ।
७ विजयवेजयंत चक्करयणस्स (अ,क,ख,त्रिब,स, पुवृपा, शावृपा) ।
८. जं० ३।८ ।
९. जं० ३।१२ ।
१०. जाव (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स) ।
११. सर्वेष्वादर्शेषु 'तुडिय' इत्येव पदं दृश्यते ।
१२. पूरेंते (अ,ब) ; पूरेंति (ख) ।
१३. वृत्तित्रयेपि 'णं' शब्दो वाक्यालङ्कारे लिखितोस्ति, किन्तु बहुषु स्थानेषु सप्तम्यर्थे तृतीयापि भवति, अतोस्माभिरेषपाठः तृतीयान्तः स्वीकृतः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं गंगाए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिसिं मागहतित्थाभिमुहं पयातं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[1]-•चित्तमाणंदिए नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हयगयरह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेण्णं सण्णाहेह, एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

१६. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[2] पच्चप्पिणंति ।।

१७. तए णं से भरहे राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे तहेव जाव[3] धवल-महामेह-णिग्गए इव[4] •गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे° ससिव्व पियदंसणे णरवई मज्जण-घराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता हय-गय-रह-पवरवाहण-भड-चडगर-पहकरसंकुलाए सेणाए[5] पहियकित्ती जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंजणगिरिकडगसण्णिभं गयवइं णरवई दुरुढे ।।

१८. तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थयसुकयरइयवच्छे कुंडलउज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसभे मरुयरायवसभकप्पे[6] अब्भहियरायतेय-लच्छीए[7] दिप्पमाणे पसत्थमंगलसएहिं संथुव्वमाणे जयसद्दकयालोए हत्थिखंधवरगए संकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं जक्खसहस्ससंपरिवुडे वेसमणे चेव धणवई अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती गंगाए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-संबाह-सहस्समंडियं थिमियमेइणीयं[8] वसुहं अभिजिणमाणे-अभिजिणमाणे अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे तं दिव्वं चक्करयणं अणुगच्छमाणे-अणुगच्छमाणे जोयणंतरियाहिं वसहीहिं वसमाणे-वसमाणे जेणेव मागहतित्थे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मागह-तित्थस्स अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णवजोयणविच्छिण्णं वरणगरसरिच्छं विजय-खंधावारनिवेसं करेइ, करेत्ता वड्ढइरयणं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मम आवासं पोसहसालं च करेहि, करेत्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।।

१९. तए णं से वड्ढइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए नंदिए पीइमणे[9] •परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए करयलपरिग्गहियं सिरसा-वत्तं मत्थए° अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडि-सुणेत्ता भरहस्स रण्णो आवसहं पोसहसालं च करेइ, करेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणति ।।

२०. तए णं से भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता

---

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
२. जं ३।८,१५ ।
३. जं० ३।९ ।
४. सं० पा०—इव जाव ससिव्व ।
५. सार्द्धमिति शेषः (शावृ) ।
६. मणुयराय° (त्रि, हीवृ) ।
७. अब्भहियरायलच्छीए (अ, त्रि, ब) ।
८. °मेतिणीयं (अ, ब) ।
९. सं० पा०—पीइमाणे जाव अंजलिं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ[1], दुरुहित्ता मागहतित्थकुमारस्स देवस्स[2] अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी[3] उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले दब्भसंथारोवगए एगे अबीए[4] अट्ठमभत्तं पडिजागरमाणे[5]-पडिजागरमाणे विहरइ ।।

२१. तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेण्णं सण्णाहेइ, चाउग्घंटं अस्सरहं[6] पडिकप्पेहत्ति कट्टु मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे तहेव जाव[7] धवल-महामेहणिग्गए[8] •इव गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससिव्व पियदंसणे णरवई धूवपुप्फगंधमल्लहत्थगए° मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता हय-गय-रह-पवरवाहण[9]-•भडचडगर-पहकरसंकुलाए° सेणाए पहियकित्ति जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे अस्सरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं अस्सरहं दुरुढे[10] ।।

२२. तए णं से भरहे राया चाउग्घंटं अस्सरहं दुरुढे[11] समाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए[12] सद्धिं संपरिवुडे महयाभड-चडगर-पहगरवंदपरिक्खित्ते चक्करयणदेसियमग्गे अणेगरायवरसहस्साणुजायमग्गे[13] महया उक्किट्ठि[14]-सीहणाय-बोल[15]-कलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयं[16] पिव करेमाणे-करेमाणे पुरत्थिमदिसाभिमुहे मागहतित्थेणं लवणसमुद्दं ओगाहइ जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला ।।

२३. तए णं से भरहे राया तुरगे निगिण्हई, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता धणुं परामुसइ ।।

२४. तए णं तं अइरुग्गयबालचंद[17]-इंदधणु-सन्निकासं वरमहिस-दरिय-दप्पिय-दढघणसिंगग्गरइयसारं[18] उरगवर-पवरगवल[19]-पवरपरहुय-भमरकुल-णीलि-णिद्ध-धंत-धोयपट्टं णिउणोविय-मिसिमिसेंत-मणिरयण-घंटियाजालपरिक्खित्तं तडितरुणकिरण[20]-तवणिज्ज-

१. द्रुहइ (अ,ब) ।
२. आराधनार्थमितिशेषः (हीवृ) ।
३. पम्हचारी (अ,त्रि,ब) ।
४. अबितीए (अ,बि); अबियए (क) ।
५. पडियागरमाणे (त्रि, ब) ।
६. आसरहं (पा) ।
७. जं० ३।६ ।
८. सं० पा०—महामेहणिग्गए जाव मज्जणघराओ ।
९. सं० पा०—पवरवाहण जाव सेणाए ।
१०. रूढे (अ); द्रुढे (ब) ।
११. रूढे (अ); द्रुढे (ब) ।
१२. सेनया इति गम्यम् (शावृ) ।
१३. °णुयायमग्गे (अ,प,ब) ।
१४. उक्किट्ठ (अ,त्रि,प, हीवृ); उक्कट्ठि (स) ।
१५. पोल (अ,ब,) ।
१६ सेनामिति गम्यम् (हीवृ) ।
१७. बालयंद (स) ।
१८. °संगग्गरइय° (अ,ब) ।
१९. °गवलय (त्रि) ।
२०. तडितरुणतरणिकिरण (क, ख, स, हीवृ, पुवृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बद्धचिंधं दद्दरमलयगिरिसिहर-केसरचामरवाल-द्धचंदचिंधं काल-हरिय-रत्त-पीय-सुक्किल-बहुण्हारुणि[1]-संपिणद्धजीवं चलजीवं[2] जीवियंतकरणं धणुं गहिऊण से णरवई उसुं च वर-वइरकोडियं[3] वइरसारतुंडं[4] कंचणमणिकणगरयणधोइट्ठसुकयपुंखं अणेगमणिरयण-विविह-सुविरइयनामचिंधं[5] वइसाहं ठाईऊण ठाणं आयतकण्णायतं च काऊण उसुमुदारं इमाइं वयणाइं तत्थ भाणिय[6] से णरवई—

हंदि ! सुणंतु भवंतो, बाहिरओ खलु सरस्स जे देवा ।
णागासुरा सुवण्णा, तेसिं 'खु णमो'[7] पणिवयामि ॥१॥
हंदि ! सुणंतु भवंतो, अब्भितरओ सरस्स जे देवा ।
णागासुरा सुवण्णा, सव्वे मे ते विसयवासी[8] ॥२॥

इतिकट्टु उसुं णिसिरइ—

परिगरणिगरियमज्झो, वाउद्धुयसोभमाणकोसेज्जो ।
चित्तेण सोभते धणुवरेण इंदोव्व पच्चक्खं ॥३॥
तं चंचलायमाणं, पंचमिचंदोवमं महाचावं ।
छज्जइ वामे हत्थे, णरवइणो तंमि विजयंमि ॥४॥

२५. तए णं से सरे भरहेणं रण्णा णिसट्ठे समाणे खिप्पामेव दुवालस जोयणाइं गंता[9] मागहतित्थाधिपतिस्स देवस्स भवणंसि निवइए ॥

२६. तए णं से मागहतित्थाहिवई देवे भवणंसि सरं णिवइयं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे चंडिक्किए कुविए भिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं णिडाले साहरइ, साहरित्ता एवं वयासी—केस णं भो ! एस अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे[10] हिरिसिरि-परिवज्जिए, जे णं मम इमाए एयारूवाए[11] दिव्वाए देवड्ढीए[12] दिव्वाए देवजुईए[13] दिव्वेणं दिवाणुभावेणं लद्धाए पत्ताए अभिसमण्णागयाए उप्पिं अप्पुस्सुए[14] भवणंसि सरं णिसिरइत्ति-कट्टु सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ[15], अब्भुट्ठेत्ता जेणेव से णामाहयके[16] सरे तेणेव उवागच्छइ,

---

१. पुहुण्हारुणि (अ,ब) ।
२. बलजीवं (ख,स, पुवृपा) ; × (प) ; चलजीव-मिति विशेषणं त्वेतद्वर्णकवृत्तौ षष्ठाङ्गे श्री अभयदेवसूरिभि र्न व्याख्यातमिति न व्याख्यायते यदि च भूयस्सु जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति-सूत्रादर्शेषु दृश्यमानत्वाद् व्याख्यातं विलोक्यते तदा टङ्कारकरणक्षणे चला—चञ्चला जीवा यस्य तत्तथा (शावृ) ।
३. वरवइरकोडिमं (अ, त्रि, हीवृ); वरवइर-कोट्टिमं (ब, पुवृपा) ।
४. °चुंडं (अ) ; °तोंडं (क,प,स) ।
५. °चित्तं (त्रि, हीवृ) ।
६. भणिय (त्रि, हीवृ) ।
७. थुणिमो (पुवृ); खु णमो (पुवृपा) ।
८. विसतवासी (क) ।
९. गंगा (अ,ख,ब) ।
१०. हिण्ण° (अ,ख,त्रि,ब) ; भिण्ण° (क,स, हीवृ, पुवृपा, शावृपा); हीण° (हीवृपा) ।
११. एआणुरूवाए (प) ।
१२. देविड्ढीए (क,ख,प,स) ।
१३. °जुत्तीए (अ,ख,त्रि,ब,स); युतिर्वा इष्ट-परिवारादिसंयोगलक्षणा (शावृ) ।
१४. अप्पस्सुए (अ,ब) ।
१५. उट्ठेइ (अ,क,ख,त्रि,ब,स, पुवृ, हीवृ) ।
१६. णामपहंके (त्रि,हीवृ); णामाहयंके (प, शावृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छित्ता तं णामाहयकं सरं गेण्हइ, गेण्हित्ता णामकं अणुप्पवाएइ, णामकं अणुप्पवाए-माणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—उप्पन्ने खलु भो ! जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं मागहतित्थकुमाराणं देवाणं राईणमुवत्थाणियं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भरहस्स रण्णो उवत्थाणियं करेमित्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता हारं मउडं कुंडलाणि कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहयं मागह-तित्थोदगं च गेण्हइ, गेण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाए उद्धु-याए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणीयाइं[1] पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए करयलपरिग्ग-हियं "दसणहं सिरसावत्तं मत्थए"[2] अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे पुरत्थिमेणं मागहतित्थमेराए, तं अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी, अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्ती-किंकरे, अहण्णं देवाणुप्पियाणं पुरत्थिमिल्ले अंतवाले,[3] तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! ममं इमेयारूवं पीइदा-णंतिकट्टु हारं मउडं कुंडलाणि कडगाणि य[4] °तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहयं° मागहतित्थोदगं च उवणेइ ।।

२७. तए णं से भरहे राया मागहतित्थकुमारस्स देवस्स इमेयारूवं पीइदाणं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मागहतित्थकुमारं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडि-विसज्जेइ ।।

२८. तए णं से भरहे राया रहं परावत्तेइ, परावत्तेत्ता मागहतित्थेणं लवणसमुद्दाओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव विजयखंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरगे णिगिण्हइ, णिगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जाव[5] ससिव्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्ख-मित्ता जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ, पारेत्ता भोयणमंडवाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहि-रिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[6] सीहासणवरगए पुरत्था-भिमुहे णिसीयइ, णिसीइत्ता अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी[7]—खिप्पमेव भो देवाणुप्पिया ! उस्सुक्कं उक्करं[8] °उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं

---

१. सखिंखियाइं (अ,ब); अखिंखिणियाइं (त्रि) ।

२. सिरे जाव (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।

३. अंतपाले (अ,त्रि,ब); अंतेवाले (क,ख) ।

४. सं० पा०—कडगाणि य जाव मागह° ।

५. जं० ३।६ ।

६. २ जाव (अ,क,ब); एतद् यावत्पदं लिपि-प्रमादादागतं दृश्यते ।

७. वयासी जाव (ब); अत्र सूत्रे यावत् शब्दो लिपिप्रमादापतित एव दृश्यते, सङ्ग्राहकपदा-भावात्, अन्यत्र तद्गमादावदृश्यमानत्वाच्चेति (शावृ) ।

८. सं० पा०—उक्करं जाव मागह° ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलिय-सपुरजणजाणवयं विजयवेजइयं मागहतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियं महाहिमं करेह, करेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

२९. तए णं ताओ अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठतुट्ठाओ जाव[1] करेंति, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

३०. तए णं से दिव्वे चक्करयणे वइरामयतुंबे लोहियक्खामयारए जंबूणयणेमीए णाणामणिखुरप्पथालपरिगए[2] मणिमुत्ताजालभूसिए सणंदिघोसे सखिंखिणीए दिव्वे तरुण-रविमंडलणिभे णाणामणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्ते सव्वोउयसुरभिकुसुमआसत्तमल्लदामे अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहस्ससंपरिवुडे दिव्वतुडियसद्दसण्णिणादेणं पूरेंते चेव अंबरतलं, णामेण सुदंसणे, णरवइस्स पढमे चक्करयणे मागहतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता दाहिणपच्चत्थिमं[3] दिसिं वरदामतित्थाभिमुहे पयाए यावि होत्था ॥

३१. तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं वरदाम-तित्थाभिमुहं पयातं चावि पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[4]-•चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परम-सोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए° कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेण्णं सण्णाहेह, आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह त्ति कट्टु मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता तेणेव कमेणं जाव[5] धवल-महामेहणिग्गए जाव[6] सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं, मगइयवरफलग[7]-पवरपरिगरखेडय-वरवम्म[8]-कवय-माढी-सहस्सकलिए उक्कडवरमउड[9]-तिरीड-पडाग-झय-वेजयंति-चामरचलंत-छत्तंधयारकलिए, असि-खेवणि-खग्ग-चाव[10]-णाराय-कणय-कप्पणि-सूल-लउड-भिंडिमाल[11]-धणुह-तोण-सरपहरणेहि य काल-णील-रुहिर-पीय-सुक्किल-अणेगचिंधसयसंविणद्धे[12], अप्फोडियसीहणाय-छेलिय-हयहेसिय-हत्थिगुलुगुलाइय-अणेगरहसयसहस्सघणघणेंत-णीहम्ममाणसद्दसहिएण जमगसमगभंभा-होरंभ-किणित-खरमुहि-मुगुंद-संखिय-पिरिलि[13]-पव्वग[14]-परिवायणि[15]-वंस-वेणु-विवंचि[16]-महति-कच्छभि-रिगिसिगि-कलताल[17]-कंसताल-करधाणुव्विद्धेण[18] महता सद्दसण्णिणादेण सयलमवि जीवलोगं पूरयंते,

---

१. जं० ३।१३।
२. °थालपरिगए (प); स्थालं—अन्तः परिधिरूपम् (शावृ)।
३. दक्खिणपच्चत्थिमे (अ,ब); दक्खिण° (क,ख, त्रि,स)।
४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबिय।
५. जं० ३।१५-१७।
६. जं० ३।१७।
७. माइय° (प, शावृ); विपाकश्रुते (१।३।४३) पि 'मगइयएहिं' इति पाठ एव दृश्यते।
८. वरचम्म (अ,क,ख,त्रि,ब, पुवृ, हीवृ)।
९. उक्कुड्डय° (ब)।
१०. याव (अ,ब)।
११. हिमाल (अ,ब)।
१२. संविणद्धं (अ,ब); सण्णिविट्ठं (क, ख, त्रि, स, शावृ, हीवृ, पुवृपा); सण्णिविट्ठे (प)।
१३. परिलि (अ,स)।
१४. पच्चग (अ,ब); वव्वग (प)।
१५. पवाइणि (क,स)।
१६. बीवंचि (अ,ब)।
१७. तलताल (ख); करताल (स)।
१८ करधाणुत्थिदेण (प, शावृ, आवश्यकचूर्णि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बलवाहणसमुदएणं[1], एवं जक्खसहस्ससंपरिवुडे वेसमणे चेव धणवई अमरपतिसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती गामागर-णगर-खेड-कब्बड-[2]•मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-संवाहसहस्समंडियं थिमियमेइणीयं वसुहं अभिजिणमाणे-अभिजिणमाणे अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे तं दिव्वं चक्करयणं अणुगच्छमाणे-अणुगच्छमाणे जोयणंतरियाहिं वसहीहिं वसमाणे-वसमाणे जेणेव वरदामतित्थे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वरदामतित्थस्स अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णवजोयणविच्छिण्णं वरणगरसरिच्छं° विजयखंधावार-णिवेसं करेइ, करेत्ता वड्ढइरयणं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! मम आवसहं पोसहसालं च करेहि, ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥

३२. तए णं से आसम-दोणमुह-गाम-पट्टण-पुरवर-खंधावार-गिहावणविभागकुसले, एगासीतिपदेसु सव्वेसु चेव वत्थूसु णेगगुणजाणए पंडिए विहिण्णू पणयालीसाए देवयाणं, 'वत्थुपरिच्छाए णेमिपासेसु'[3] भत्तसालासु कोट्टणिसु य वासघरेसु य विभागकुसले, 'छेज्जे वेज्झे'[4] य दाणकम्मे पहाणबुद्धी, जलयाणं भूमियाण य भायणे, जलथलगुहासु जंतेसु परिहासु[5] य कालनाणे, तहेव सद्दे वत्थुप्पएसे पहाणे, गब्भिणि-कण्ण[6]-रुक्ख-वल्लिवेढिय-गुण-दोसवियाणए, गुणड्ढे, सोलसपासायकरणकुसले, चउसट्ठिविकप्पवित्थयमई, 'णंदावत्ते य वद्धमाणे सोत्थियरुयग[7] तह सव्वओभद्दसण्णिवेसे य बहुविसेसे'[8], उद्दंडिय-देव-कोट्ठ-दारु-गिरि खाय-वाहण-विभागकुसले—

इय तस्स बहुगुणड्ढे, थवईरयणे णरिंदचंदस्स।
तवसंजमनिव्विट्ठे, किं करवाणीतुवट्ठाई[9] ॥१॥
सो देवकम्मविहिणा, खंधावारं णरिंदवयणेणं।
आवसहभवणकलियं, करेइ सव्वं मुहुत्तेणं ॥२॥

करेत्ता पवरपोसहघरं करेइ, करेत्ता जेणेव भरहे राया[10] •तेणेव उवागच्छति, उवगच्छित्ता° तमाणत्तियं[11] खिप्पामेव पच्चप्पिणइ[12] ॥

३३. •तए णं से भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता

पृष्ठ १८७)। वाद्यविषये पाठपरिवर्तनस्याध्ययनार्थं रायपसेणइयसूत्रस्य ७७ सूत्रं तथा जीवाजीवाभिगमस्य ३।५८८ सूत्रं द्रष्टव्यम्।

१. 'सह' इतिगम्यम् (हीवृ)।

२. सं० पा०—तहेव सेसं जाव विजयखंधावार°।

३. वत्थुपरिच्छायणेमिपासेसु (अ,त्रि,ब, पुवृपा); वत्थुपरिच्छए णेमिपासेसु (हीवृ, शावृपा); वत्थुपरिच्छाए णेमिपासेसु, वत्थुपरिच्छायणे णेमिपासेसु (हीवृपा)।

४. छज्जे वज्जे (पुवृपा)।

५. परिगुहासु (अ,त्रि,ब,पुवृ); परिहासु (पुवृपा)।

६. कण्णग (क,ख,त्रि,स, पुवृ); कण्णि (ब)।

७. सूत्रे च क्वचित् सप्तमीलोपः प्राकृतत्वात् (शावृ)।

८. चिन्हाङ्कितपाठस्थाने 'अ, ब' प्रत्योः 'णंदाव' इत्येव लिखितं दृश्यते।

९. करवाणि° (अ,ब)।

१०. सं० पा०—राया जाव तमाणत्तियं।

११. एतमाणत्तियं (क,ख,प, शावृ, हीवृ)।

१२. सं० पा०—पच्चप्पिणइ सेसं तहेव जाव मज्जणघराओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता वरदामतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले दब्भसंथारोवगए एगे अबीए अट्ठमभत्तं पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥

३४. तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेण्णं सण्णाहेह, चाउग्घंटं अस्सरहं पडिकप्पेहत्तिकट्टु मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे तहेव जाव धवल-महामेहणिग्गए इव गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससिव्व पियदंसणे णरवई धूवपुप्फगंधमल्लहत्थगए° मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ[1] ॥

३५. तते णं तं 'धरणितलगमणलहु-ततोव्विद्ध-लक्खणपसत्थं'[2] हिमवंत-कंदरंतर-णिवाय-संवद्धिय-चित्त-तिणिसदलियं जंबूणयसुकयकुव्वरं[3] कणयदंडियारं पुलय-'वइर-इंदणील'[4]-सासग-पवाल-फलिहवर[5]-रयण-'लेट्ठु-मणि-'[6] विद्दुमविभूसियं अडयालीसाररइय-तवणिज्जपट्टसंगहिय[7]-जुत्ततुंबं पघसियपसियनिम्मियनवपट्ट[8]-पुट्ठ-परिणिट्ठियं विसिट्ठलट्ठणव-लोहबद्धकम्मं हरिपहरणरयणसरिसचक्कं कक्केयणइंदणी सासगसुसमाहिय-बद्धजालकंकडं[9] 'पसत्थविच्छिण्णसम-धुरं'[10] पुरवरं व गुत्तं सुकरणतवणिज्जजुत्तकलियं[11] कंकडगणिजुत्तकप्पणं

---

१. उवागच्छइ २ (अ, क, ख, त्रि, प, ब, स); उपागच्छति उपागत्य (पुवृ, शावृ, हीवृ) आवश्यकचूर्णौ (पृ० १८८) एतत्पदं नैव दृश्यते ।

२. धरणितलगमणलहुततोविहुलक्खणपसत्थे (अ, ब, पुवृपा) धरणितलगमणलहुततोविहुलक्खणपसत्थं (क, ख, स), धरणितलगमण लहुततोविहूणलक्खपत्रेसे (त्रि); धरणितलगमणलहुं ततो बहुलक्खणपसत्थं (प, शावृ); धरणितलगमणलहुं तया विद्धलक्खणपसत्थं (हीवृ); धरणितलगमणलहुं ततो विद्धलक्खणपसत्थे (हीवृपा); आवश्यकचूर्णौ (पृ० १८८) स्वीकृतपाठस्य संवादित्वं दृश्यते ।

३. °कूबरं (प); ° कुप्परं (आवश्यकचूर्णि पृ० १८८) ।

४. वरइंदणील (अ, क, ख, त्रि, प, ब, स, पुवृ, शावृ); 'वइर' इति पाठः आवश्यकचूर्णे (पृ० १८८) राधारेण स्वीकृतः ।

५. वरफरिह (अ, क, ख, ब, स, पुवृ०) ।

६. क्वचिल्लेष्टुमणिशब्दौ न दृश्येते (पुवृ) ।

७. °वट्टसंगहिय (अ, ब); °पट्टसंगहिय (क, स, हीवृ, पुवृपा) ।

८. पघसियनिम्मियनवपट्ट (अ, ब, पुवृ) ।

९. बद्धजालगवाडं (ख); बद्धजालकडगं (त्रि, प, शावृ, पुवृपा); जालकटकं (हीवृ) ।

१०. 'विच्छिण्णसुमहुरं (अ, ब) अत्र लिपिप्रमादः सम्भाव्यते ।

११. सुकयरयणतवणिज्जजालकलियं (अ, पुवृपा); सुकरणतवणिज्जजालकलियं (क, ख); सुकरयणतवणिज्जजालकलियं (त्रि, ब, स); सुकिरणतवणिज्जजुत्तकलियं (प, शावृ); सुकयरयणतवणिज्जुज्जलकलियं (पुवृ); सुकरणतवणिज्जजालकलियं (हीवृ); वृत्तिकारैर्यथापाठोलब्धस्तथा व्याख्यातः । शान्तिचन्द्रेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहरणाणुजायं[1] खेडग-कणग-धणु-मंडलग्ग-वरसत्ति-कोंत-तोमर-सरसयबत्तीसतोणपरिमंडियं कणगरयणचित्तं जुत्तं हलीमुह-बलाग-गयदंत-चंद-मोत्तिय-तणसोल्लिय[2]-कुंद-कुडय-वरसिंदुवार-कंदल-वरफेणणिगर-हार-कासप्पगासधवलेहिं अमरमणपवणजइण-चवलसिग्घगामीहिं चउहिं चामराकणगभूसियंगेहिं तुरगेहिं सच्छत्तं सज्झयं सघंटं सपडागं सुकयसंधिकम्मं सुसमाहियसमरकणग-गंभीरतुल्लघोसं वरकुप्परं सुचक्कं वरनेमीमंडलं[3] वरधुरातोंडं वरवइरबद्धतुंबं वरकंचणभूसियं वरायरियणिम्मियं वरतुरगसंपउत्तं[4] वरसारहिसुसंपग्गहियं वरपुरिसे वरमहारहं दुरुढे[5] आरूढे[6] पवररयणपरिमंडियं कणयखिखिणीजालसोभियं[7] अयोज्झं[8] सोयामणि[9]-कणगतविय-पंकय-जासुयण[10]-जलणजलिय-सुयतोंडरागं गुंजद्ध-बंधुजीवग-रत्तहिंगुलगणिगर[11]-सिंदूर-रुइलकुंकुम-पारेवयचलण-णयणकोइल-दसणावरणरइतातिरेग-रत्तासोग-कणग-केसुय[12]-गयतालु-सुरिंदगोवग-[13]-समप्पभप्पगासं[14] बिंबफल-सिलप्पवाल-उट्ठेंतसूरसरिसं सव्वोउयसुरहिकुसुम-आसत्तमल्लदामं[15] ऊसियसेयज्झयं महामेहरसिय-गंभीरणिद्धघोसं सत्तुहिययकंपणं[16] पभाए[17] य[18] सस्सिरीयं, णामेणं पुहविविजयलंभंति वीसुतं[19] लोगविस्सुतजसो अहतं चाउग्घंटं आसरहं पोसहिए णरवई दुरुढे ।।

३६. तए णं से भरहे राया चाउग्घंटं आसरहं दुरुढे समाणे[20] •हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए[21] सद्धिं संपरिवुडे महयाभड-चडगर-पहगरवंदपरिक्खित्ते चक्करयणदेसियमग्गे अणेगरायवरसहस्साणुजायमग्गे महया उक्किट्ठि-सीहणाय-बोल-कलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयंपिव करेमाणे-करेमाणे° दाहिणाभिमुहे वरदामतित्थेणं लवणसमुद्दं ओगाहइ जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला[22] ।।

प्रस्तुतपाठांशविषये एकाटिप्पणीकृतास्ति—अत्र च एतत्सूत्रादर्शेषु 'तवणिज्जजालकलिय' मिति पाठोऽशुद्ध एव सम्भाव्यते, आवश्यकचूर्णौ (पृ० १८८) अस्यैव पाठस्य दर्शनात् ।

१. परपहरणाणुयातं (अ, ब, पुवृ) ।

२. तणसोत्तिय (आवश्यकचूर्णि पृ० १८८) ।

३. वरणेम° (ब) ।

४. वरतुरंग° (त्रि, आवश्यकचूर्णि पृ० १८८) ।

५. दुरूढेत्ति आरूढः क्वचिद्दुरूढे आरूढे इति पाठद्वयम् (पुवृ) ।

६. × (हीवृ) ।

७. कणयकिंकिणीजालपरिसोभियं (क, ख, स) ।

८. अजोज्झं (अ, ब); अओज्झं (क, ख, प, स); अवोज्झं (त्रि) ।

९. सोतामणि (क); सोदामणि (ख, स) ।

१०. जासुमणा (अ, ब); जासुमण (क, स); जासुमणि (ख) ।

११. °हिंगुलग (ख, स) ।

१२. केंसुय (त्रि) ।

१३. °गोपग (क, ख, स) ।

१४. °प्पकासं (अ, क, ख, त्रि, ब, स) ।

१५. मल्लदामं (अ, त्रि, ब, स, पुवृ, शावृ, हीवृ)। सुत्तमल्लदामं (ख); आसत्तमल्लदामं (पुवृपा, हीवृपा) ।

१६. सत्तुहितय° (अ, ब) सत्तुहिदय° (आवश्यकचूर्णि पृ० १८९) ।

१७. प्रभाते (क, ख, स) ।

१८. × (ख, आवश्यकचूर्णि पृ० १८९) ।

१९. विस्सुतं (क, स)।

२०. सं० पा०—समाणे सेसं तहेव ।

२१ द्रष्टव्यम्—३/२२ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

२२. सं० पा०—उल्ला जाव पीइदाणं से, णवरिं चूडामणिं च दिव्वं उरत्थगेविज्जगं सोणियसुत्तगं कडगाणि य तुडियाणि य जाव दाहिणिल्ले अंतवाले जाव अट्ठाहियं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७. •तए णं से भरहे राया तुरगे निगिण्हई, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता धणुं परामुसइ जाव[1] उसुं णिसिरइ—

परिगरणिगरियमज्झो, वाउद्धुयसोभमाणकोसेज्जो।
चित्तेण सोभते धणुवरेण इंदोव्व पच्चक्खं ॥१॥
तं चंचलायमाणं, पंचमिचंदोवमं महाचावं।
छज्जइ वामे हत्थे, णरवइणो तंमि विजयंमि ॥२॥

३८. तए णं से सरे भरहेणं रण्णा णिसट्ठे समाणे खिप्पामेव दुवालस जोयणाइं गंता वरदामतित्थाधिपतिस्स देवस्स भवणंसि निवइए ॥

३९. तए णं से वरदामतित्थाहिवई देवे भवणंसि सरं णिवइयं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे चंडिक्किए कुविए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं णिडाले साहरइ, साहरित्ता एवं वयासी—केस णं भो! एस अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे हिरिसिरिपरिवज्जिए, जे णं मम इमाए एयारूवाए दिव्वाए देवड्ढीए दिव्वाए देवजुईए दिव्वेणं देवाणुभावेणं लद्धाए पत्ताए अभिसमण्णागयाए उप्पिं अप्पुस्सुए भवणंसि सरं णिसिरइत्तिकट्टु सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव से णामाहयके सरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं णामाहयकं सरं गेण्हइ, गेण्हित्ता णामकं अणुप्पवाएइ, णामकं अणुप्पवाएमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—उप्पन्ने खलु भो! जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं वरदामतित्थकुमाराणं देवाणं राईणमुवत्थाणियं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भरहस्स रणो उवत्थाणियं करेमित्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता चूडामणिं च दिव्वं उरत्थगेविज्जगं सोणियसुत्तगं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहयं वरदामतित्थोदगं गेण्हइ, गेण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाये उद्धुयाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणीयाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे दाहिणिल्ले वरदामतित्थमेराए तं अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी, अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्ती-किंकरे, अहण्णं देवाणुप्पियाणं दाहिणिल्ले अंतवाले, तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! ममं इमेयारूवं पीइदाणंतिकट्टु चूडामणिं च दिव्वं उरत्थगेविज्जगं सोणियसुत्तगं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहयं वरदामतित्थोदगं च उवणेइ ॥

४०. तए णं से भरहे राया वरदामतित्थकुमारस्स देवस्स इमेयारूवं पीइदाणं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता वरदामतित्थकुमारं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

४१. तए णं से भरहे राया रहं परावत्तेइ, परावत्तेत्ता वरदामतित्थेणं लवणसमुद्दाओ

१. जं० ३।२४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव विजयखंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरगे णिगिण्हइ, णिगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जाव ससिव्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता, जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ, पारेत्ता भोयणमंडवाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसीइत्ता अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलिय-सपुरजणजाणवयं विजयवेजइयं वरदामतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियं महामहिमं करेह, करेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

४२. तए णं ताओ अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठतुट्ठाओ जाव° अट्ठाहियं महामहिमं करेंति, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

४३. तए णं से दिव्वे चक्करयणे वरदामतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे[1] •जक्खसहस्ससंपरिवुडे दिव्वतुडियसद्दसण्णिणादेणं° पूरेंते चेव अंबरतलं उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं पभासतित्थाभिमुहे पयाते यावि होत्था ।।

४४. तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं पभासतित्थाभिमुहं पयातं चावि पासइ, पासित्ता तहेव जाव[2] पच्चत्थिमदिसाभिमुहे पभासतित्थेणं लवणसमुद्दं ओगाहेइ जाव से रहवरस्स कुप्परा उल्ला[3] ।।

४५. •तए णं से भरहे राया तुरगे निगिण्हई, निगिण्हत्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता धणुं परामुसइ जाव[4] उसुं णिसिरइ—

परिगरणिगरियमज्झो, वाउयद्धुसोभमाणकोसेज्जो ।
चित्तेण सोभते धणुवरेण इंदोव्व पच्चक्खं ।।१।।
तं चंचलायमाणं, पंचमिचंदोवमं महाचावं ।
छज्जइ वामे हत्थे, णरवइणो तंमि विजयंमि ।।२।।

४६. तए णं से सरे भरहेणं रण्णा णिसट्ठे समाणे खिप्पामेव दुवालस जोयणाइं गंता पभासतित्थाधिपतिस्स देवस्स भवणंसि निवइए ।।

४७. तए णं से पभासतित्थाहिवई देवे भवणंसि सरं णिवइयं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते

---

१. सं० पा०—अंतलिक्खपडिवण्णे जाव पूरेंते ।

२. जं० ३।१५-२२ ।

३. सं० पा०—उल्ला जाव पीइदाणं से, णवरं मालं मउडिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणि य तुडियाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहयं पभासतित्थोदगं च गिण्हइ २ त्ता जाव पच्चत्थिमेणं पभासतित्थमेराए अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी जाव पच्चत्थिमिल्ले अंतवाले सेसं तहेव जाव अट्ठाहिया निव्वत्ता ।

४. जं० ३।२४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुट्ठे चंडिक्किए कुविए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं णिडाले साहरइ, साहरित्ता एवं वयासी—केस णं भो ! एस अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे हिरिसिरिपरिवज्जिए, जे णं मम इमाए एयारूवाए दिव्वाए देवड्ढीए दिव्वाए देवजुईए दिव्वेणं देवाणुभावेणं लद्धाए पत्ताए अभिसमण्णागयाए उप्पिं अप्पुस्सुए भवणंसि सरं णिसिरइत्तिकट्टु सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव से णामाहयके सरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं णामाहयकं सरं गेण्हइ, गेण्हित्ता णामकं अणुप्पवाएइ, णामकं अणुप्पवाएमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—उप्पन्ने खलु भो ! जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं पभासतित्थकुमाराणं देवाणं राईणमुवत्थाणियं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भरहस्स रण्णो उवत्थाणियं करेमित्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता मालं मउडिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहयं पभासतित्थोदगं गेण्हइ, गेण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणीयाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे पच्चत्थिमिल्ले पभासतित्थमेराए तं अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी, अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्ती-किंकरे, अहण्णं देवाणुप्पियाणं पच्चत्थिमिल्ले अंतवाले, तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! ममं इमेयारूवं पीइदाणंतिकट्टु मालं मउडिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहयं पभासतित्थोदगं च उवणेइ ॥

४८. तए णं से भरहे राया पभासतित्थकुमारस्स देवस्स इमेयारूवं पीइदाणं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता पभासतित्थकुमारं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

४९. तए णं से भरहे राया रहं परावत्तेइ, परावत्तेत्ता पभासतित्थेणं लवणसमुद्दाओ पच्चुत्तरइ,पच्चुत्तरित्ता जेणेव विजयखंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरगे णिगिण्हइ, णिगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति,पच्चोरुहित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जाव ससिव्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ,पारेत्ता भोयणमंडवाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ,णिसीइत्ता अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलियसपुरजणजाणवयं विजयवेजइयं पभासतित्थकुमारस्य देवस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठाहियं महामहिमं करेह, करेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

५०. तए णं ताओ अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठतुट्ठाओ जाव अट्ठाहियं महामहिमं करेंति, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति° ।।

५१. तए[1] णं से दिव्वे चक्करयणे पभासतित्थकुमारस्स[2] देवस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता[3] •अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहस्ससंपरिवुडे दिव्वतुडियसद्दसण्णिणादेणं° पूरेंते चेव अंबरतलं सिंधूए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिसिं सिंधुदेवीभवणाभिमुहे[4] पयाते यावि होत्था ।।

५२. तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं सिंधूए महाणईए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिसिं सिंधुदेवीभवणाभिमुहं पयातं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए तहेव जाव[5] जेणेव 'सिंधूए देवीए भवणं'[6] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिंधूए देवीए भवणस्स अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णवजोयणविच्छिण्णं वरणगरसरिच्छं विजयखंधावारणिवेसं करेइ, करेत्ता[7] •वड्ढइरयणं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! ममं आवासं पोसहसालं च करेहि, करेत्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।।

५३. तए णं से वड्ढइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता भरहस्स रण्णो आवसहं पोसहसालं च करेइ, करेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणति ।।

५४. तए णं से भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता

---

१. आवश्यकचूर्णौ (पृ० १८६) अतः ५८ सूत्रपर्यन्तं भिन्नवाचनायाः पाठो लभ्यते—तते णं से दिव्वे चक्के पभासतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियाए महिमाए णिव्वत्ताए अंतलिक्खपडिवण्णे जाव अंबरतलं सिंधूए महाणदीए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिसिं सिंधुदेविभवणाहिमुहे पयाते यावि होत्था, भरहे वि य णं तहेव जाव तीए भवणस्स अदूरसामंते विजयखंधावारनिवेसेणं तहेव अट्ठमभत्तग्गहणं तंमि परिणममाणंसि सिंधुदेविए आसणचलणं ओहिपउंजणं जीतकप्पसरणं जाव करेमित्तिकट्टु कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभित्तिचित्ताणि य दुवे कणकभद्दासणाइं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य गेण्हित्ता जाव उवागच्छति जहा मागहकुमारे जाव आभरणाणि य उवणेति, रायावि तं सक्कारेति जाव अट्ठाहियाए महिमाए णिव्वत्ताए समाणीए से चक्करयणे । एवमग्रेपि वाचनाभेदो दृश्यते ।

२. पहास° (अ, त्रि, ब) ।

३. सं० पा०—पडिणिक्खमित्ता जाव पूरेंते ।

४. सिंधुदेव° (अ, ब) ।

५. जं० ३।१५-१८ ।

६. सिंधुमहाणदी दीवे (अ, ब) ।

७. सं० पा०—करेत्ता जाव सिंधूए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता° सिंधूए देवीए अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हत्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी[1] •उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले° दब्भसंथारोवगए अट्ठमभत्तिए सिंधुदेविं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ।।

५५. तए णं सा तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सिंधूए देवीए आसणं चलइ ।।

५६. तए णं सा सिंधू देवी आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता भरहं रायं ओहिणा आभोएइ[2], आभोएत्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—उप्पन्ने खलु भो ! जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं सिंधूणं देवीणं भरहाणं[3] राईणं उवत्थाणियं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भरहस्स रण्णो उवत्थाणियं करेमित्ति कट्टु कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगभद्दासणाणि य कडगाणि य तुडियाणि य 'वत्थाणि य'[4] आभरणाणि य गेण्हइ, गेण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए[5] •तुरियाए चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणी-वीईवयमाणी जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णा सखिंखिणीयाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिया करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता° एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे, अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासिणी, अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्ति-किंकरी तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! मम इमं एयारूवं पीइदाणंति-कट्टु कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणकभद्दासणाणि य कडगाणि य[6] •तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य उवणेइ ।।

५७. तए णं से भरहे राया सिंधूए देवीए इमेयारूवं पीइदाणं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सिंधुं देविं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता° पडिविसज्जेइ ।।

५८. तए णं से भरहे राया पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जाव[7] जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ, पारेत्ता[8] •भोयणमंडवाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ,

---

१. सं० पा०—बंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए ।
२. परिणाइ (अ,ब) ।
३. पूर्वं मागधादि प्रकरणे (२६) 'भरहाणं' इति पदं नैव दृश्यते । अत्र आदर्शेषु एतत्पदमुपलभ्यते, वृत्तावपि व्याख्यातमस्ति ।
४. जाव (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स) ।
५. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव एवं ।
६. सं० पा०—कडगाणि य जाव सो चेव गमो जाव पडिविसज्जेइ ।
७. जं० ३।२८ । यावत्पदस्य पूरकसूत्रे 'ण्हाए कयबलिकम्मे' एतद् विशेषणद्वयं नैव लभ्यते, तेन ज्ञायते एतत् स्नानक्रियायाः सूचकमेवास्ति ।
८. सं० पा०—पारेत्ता जाव सीहासणवरगए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिसीइत्ता अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता[1] •एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उस्सक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धयमुइंगं अमिलाय-मल्लदामं पमुइयपक्कोलिय-सपुरजणजाणवयं विजयवेजइयं सिंधूए देवीए अट्ठाहियं महामहिमं करेह, करेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

५९. तए णं ताओ अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठतुट्ठाओ जाव अट्ठाहियं महामहिमं करेंति, करेत्ता° तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

६०. तए णं से दिव्वे चक्करयणे सिंधूए देवीए अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालओ[2] •पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे जक्ख-सहस्ससंपरिवुडे दिव्वतुडियसद्दसण्णिणादेणं पूरेंते चेव अंबरतलं° उत्तरपुरत्थिमं दिसिं वेयड्ढपव्वयभिमुहे पयाए यावि होत्था ।।

६१. तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं उत्तरपुरत्थिमं दिसिं वेयड्ढपव्वयाभि-मुहं पयातं चावि पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[3] जेणेव वेयड्ढपव्वए जेणेव वेयड्ढस्स पव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेयड्ढस्स पव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे दुवालसजोयणायामं णवजोयणविच्छिण्णं वरणगरसरिच्छं विजयखंधा वारनिवेसं करेइ, करेत्ता[4] •वड्ढइरयणं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणु-प्पिया ! मम आवासं पोसहसालं च करेहि, करेत्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।।

६२. तए णं से वड्ढइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए नंदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता भरहस्स रण्णो आवसहं पोसहसालं च करेइ, करेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणति ।।

६३. तए णं से भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता° वेयड्ढगिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए[5] •पोस-हिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले दब्भ-संथारोवगए° अट्ठमभत्तिए वेयड्ढगिरिकुमारं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ।।

६४. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि वेयड्ढगिरिकुमारस्स देवस्स आसणं चलइ । एवं सिंधुगमो णेयव्वो[6] । पीइदाणं—आभिसेक्कं रयणालंकारं[7]

१. सं० पा०—सद्दावेत्ता जाव अट्ठाहियाए महामहिमाए ।
२. सं० पा०—आउहघरसालाओ तहेव जाव उत्तरपुरत्थिमं ।
३. जं० ३।१५-१८ ।
४. सं० पा०—करेत्ता जाव वेयड्ढगिरिकुमारस्स ।
५. सं० पा०—पोसहसालाए जाव अट्ठमभत्तिए ।
६. जं० ३.५६ ।
७. भंडालंकारं (अ, ब, पुवृ); रयणालंकारं (पुवृपा); रत्नालङ्कारं—मुकुट मिति आवश्यक-चूर्णौ तथैव दर्शनात् (शावृ); आवश्यकचूर्णौ (पृ० १९०)'मउडालंकारे' इति पाठो दृश्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य गेण्हइ, गेण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए[1] •तुरियाए चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीई-वयमाणे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणी-याइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी---अभिजिए णं देवाणुप्पि-एहिं केवलकप्पे भरहे वासे, अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी, अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्ति-किंकरे, तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! मम इमं एयारूवं पीइदाणंतिकट्टु आभिसेक्कं रयणालंकारं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य उवणेइ ।।

६५. तए णं से भरहे राया वेयड्ढगिरिकुमारस्स देवस्स इमेयारूवं पीइदाणं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता वेयड्ढगिरिकुमारं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडि-विसज्जेइ ।।

६६. तए णं से भरहे राया पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जाव जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ, पारेत्ता भोयणमंडवाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसी-इत्ता अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी---खिप्पामेव भो देवाणु-प्पिया ! उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइय-पक्कीलिय-सपुरजणजाणवयं विजयवेजइयं वेयड्ढगिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियं महामहिमं करेह, करेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

६७. तए णं ताओ अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठतुट्ठाओ जाव अट्ठाहियं महामहिमं करेंति, करेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ।।

६८. तए णं से दिव्वे चक्करयणे वेयड्ढगिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए[2] •आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अंतलिक्खपडि-वण्णे जक्खसहस्ससंपरिवुडे दिव्वतुडियसद्दसण्णिणादेणं पूरेंते चेव अंबरतलं° पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहे पयाए आवि होत्था ।।

६९. तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं[3] पच्चत्थिमं दिसिं तिमिसगुहाभिमुहं पयातं चावि पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[4] तिमिसगुहाए अदूरसामंते दुवालस-जोयणायामं णवजोयणविच्छिण्णं[5] •वरणगरसरिच्छं विजयखंधावारनिवेसं करेइ, करेत्ता

१. सं० पा०---उक्किट्ठाए जाव अट्ठाहियं जाव पच्चप्पिणंति ।

२. सं० पा---समाणीए जाव पच्चत्थिमं ।

३. चक्करयणं जाव (अ, क, ख, ग, ट, त्रि,) शावृ); अत्र 'जाव' पदं लिपिप्रमादादागतं सम्भाव्यते ।

४. जं० ३।१५-१८ ।

५. सं० पा०---णवजोयणविच्छिण्णं जाव कय-मालस्स ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वड्ढइरयणं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मम आवासं पोसहसालं च करेहि, करेत्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।।

७०. तए णं से वड्ढइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए करलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता भरहस्स रण्णो आवसहं पोसहसालं च करेइ, करेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणति ।।

७१. तए णं से भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता° कयमालस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी[1] •उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले दब्भसंथारोवगए अट्ठमभतिए° कयमालगं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ।।

७२. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि कयमालस्स देवस्स आसणं चलइ तहेव जाव[2] वेयड्ढगिरिकुमारस्स, णवरं[3]—पीइदाणं—इत्थीरयणस्स[4] तिलगचोद्दसं[5] भंडालंकारं कडगाणि य[6] •तुडियाणि य वत्थाणि य° आभरणाणि य गेण्हइ, गेण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए[7] •तुरियाए चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणीयाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी, अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्ति-किंकरे तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! मम इमं एयारूवं पीइदाणंतिकट्टु इत्थीरयणस्स तिलगचोद्दसं भंडालंकारं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य उवणेइ ।।

७३. तए णं से भरहे राया कयमालस्स देवस्स इमेयारूवं पीइदाणं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता कयमालं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

७४. तए णं से भरहे राया पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जाव जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ, पारेत्ता

१. सं० पा०—बंभयारी जाव कयमालगं ।

२. जं० ३।६४ ।

३. णवरि (अ, क, ब, स) ।

४. थीरयणस्स (आवश्यक चूर्णि पृ० १९०) ।

५. प्रमेयरत्नमञ्जूषायां चतुर्दशाभरणानयां सांङ्गिका गाथा उद्धृतास्ति—

हारद्धहार इग कणय रयण मुत्तावली उ केऊरे ।
कडए तुडिए मुद्दा कुंडल उरसुत्त चूलामणि तिलयं ।।१।।

हीरविजयवृत्तौ 'रयण' स्थाने 'दप्पण' इति पदं दृश्यते ।

६. सं० पा०—कडगाणि य जाव आभरणाणि ।

७. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव सक्कारेइ, सम्माणेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ जाव भोयणमंडवे, तहेव महामहिमा कयमालस्स पच्चप्पिणंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोयणमंडवाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसीइत्ता अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उसुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धयमुइंगं अमिलायमल्ल-दामं पमुइयपक्कीलिय-सपुरजणजाणवयं विजयवेजइयं कयमालं देवं अट्ठाहियं महामहिमं करेह, करेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

७५. तए णं ताओ अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठतुट्ठाओ जाव अट्ठाहियं महामहिमं करेंति, करेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

७६. तए णं से भरहे राया कयमालस्स देवस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए सुसेणं सेणावइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छाहि णं भो देवाणुप्पिया ! सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि य ओयवेहि, ओयवेत्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छाहि, पडिच्छित्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥

७७. तते णं से सेणावई बलस्स णेया, भरहे वासंमि विस्सुयजसे, महाबलपरक्कमे महप्पा ओयंसी 'तेयंसी लक्खणजुत्ते'[1] मिलक्खुभासाविसारए चित्तचारुभासी भरहे वासंमि णिक्खुडाणं निण्णाण य दुग्गमाण[2] य दुक्खप्पवेसाण[3] य वियाणए अत्थसत्थकुसले रयणं सेणावई सुसेणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए[4] °नंदिए पीइमणे परम-सोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए° करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सए आवासे[5] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव[6] भो देवाणु-प्पिया ! आभिसेक्कं[7] हत्थिरयणं पडिकप्पेह हय-गय-रह-पवर[8] °जोहकलियं° चाउरंगिणिं सेण्णं सण्णाहेहत्तिकट्टु जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप-विसइ, अणुपविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सन्नद्धबद्धवम्मिय-कवए उप्पीलियसरासणपट्टिए पिणद्धगेवेज्ज[9]-बद्धआविद्धविमलवरचिंधपट्टे[10] गहियाउह-प्पहरणे अणेगगणणायग-दंडणायग[11]-°राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-मंति - महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर- निगम- सेट्ठि- सेणावइ-सत्थवाह- दूय- संधिवाल°

१. तेयलक्खणजुत्ते (क, ख, त्रि, प, स, शावृ, हीवृ पुवृपा, आवश्यकचूर्णि पृ० १६०)।
२. दुसमाण (अ, ब)।
३. दुप्पवेसाण (प, स, शावृ)।
४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव करयल°।
५. आवासए (ब)।
६. सिग्घामेव (अ, ब)।
७. अभिसेक्कं (अ,ब)।
८. सं० पा०—हयगयरहपवर जाव चाउरंगिणिं।
९. °गेवेज्जे (अ,ख,ब,स,पुवृ); °गेवेज्ज (पुवृपा)।
१०. °चिंधवट्टे (ब)।
११. सं० पा०—दंडणायग जाव सद्धिं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्धिं संपरिवुडे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मंगलजयसद्दकयालोए मज्जण-घराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरुढे[1] ।।

७८. तए णं से सुसेणे सेणावई हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्ज-माणेणं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगर-पहगरवंदपरिक्खित्ते महयाउक्किट्ठिसीहणायबोलकलकलसद्देणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयंपिव करेमाणे-करेमाणे सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए सव्वबलेणं[2] सव्वसमुदएणं सव्वायरेणं सव्वविभूसाए सव्वविभूईए सव्ववत्थपुप्फ-गंध-मल्लालंकारविभूसाए सव्वतुरिय-सद्दसण्णिणाएणं महया इड्ढीए जाव महया वरतुरिय-जमगसमगपवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-मुरव-मुइंग-दुंदुहि°-निग्घोसनाइएणं[3] जेणेव सिंधू महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चम्मरयणं परामुसइ ।।

७९. तए णं तं सिरिवच्छसरिसरूवं मुत्ततारद्धचंदचित्तं[4] अयलमकंपं अभेज्जकवयं, जंतं सलिलासु सागरेसु य उत्तरणं दिव्वं चम्मरयणं, सणसत्तरसाइं[5] सव्वधण्णाइं जत्थ रोहंति एगदिवसेण वावियाइं, वासं णाऊण चक्कवट्टिणा परामुट्ठे दिव्वे चम्मरयणे दुवालस जोयणाइं तिरियं पवित्थरइ तत्थ साहियाइं ।।

८०. तए णं से दिव्वे चम्मरयणे सुसेणसेणावइणा परामुट्ठे समाणे खिप्पामेव णावाभूए जाए यावि होत्था ।।

८१. तए णं से सुसेणे सेणावई सखंधावारबलवाहणे णावाभूयं चम्मरयणं दूरुहइ[6], दुरुहित्ता सिंधुं महाणइं विमलजलतुंगवीचिं[7] णावाभूएणं चम्मरयणेणं सबलवाहणे ससासणे समुत्तिण्णे[8] । तओ महाणइमुत्तरित्तु सिंधुं अप्पडिहयसासणे य सेणावई कहिंचि गामागरण-गरपव्वयाणि खेडमडंबाणि[9] पट्टणाणि य सिंहलए बब्बरए य सव्वं च अंगलोयं बलावलोयं[10] च परमरम्मं, जवणदीवं च पवरमणिकणगरयणकोसागारसमिद्धं[11], आरबके रोमके य अलसं-

---

१. द्रूढे (अ,क,ख,ब) ।

२. सं० पा०—सव्वबलेणं जाव निग्घोसनाइएणं ।

३. °नाइयरवेणं (आवश्यकचूर्णि पृ० १९०) ।

४. °यंदचित्तं (अ,क,ब,म) ।

५. सणमत्तगमाइं (अ,ब); सत्तसत्तरसयाइं (पुवृपा) । प्रमेयरत्नमञ्जूषायां सप्तदशधान्य-सङ्ग्राहिका गाथा उद्धृतास्ति—

सालि जव वीहि कुद्दव रालय तिल मुग्ग मास चवल चिणा ।
तूअरि मसूरि कुलत्था गोहुम णिप्फाव अयसि सणा ।।१।।

प्रायो बहूपयोगिनीमानीत्युक्तानि, अन्यत्र-चतुर्विंशतिरप्युक्तानि, लोके च क्षुद्रधान्यानि बहून्यपि ।

६. द्रुहइ (ब) ।

७. °वीतीं (अ,क,ख,त्रि,ब,स) वीइयं (आवश्यक-चूर्णि पृ० १९१) ।

८. × (अ,ब); उत्तरति (आवश्यकचूर्णि पृ० १९१) ।

९. खेडकब्बडमंडबाणि (आवश्यकचूर्णि पृ० १९१) ।

१०. च लावलोकं (क, त्रि,हीवृ); विलायलोकं (आवश्यकचूर्णि पृ० १९१) ।

११. परममणि° (अ,ब); पवरमणिरयणकणग° (प, शावृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डविसयवासी[1] य पिक्खुरे कालमुहे जोणए य उत्तरवेयड्ढसंसियाओ य मेच्छजाई बहुप्पगारा दाहिणअवरेण जाव सिंधुसागरंतोत्ति[2] सव्वपवरकच्छं च ओयवेऊण पडिणियत्तो बहुसमरमणिज्जे य भूमिभागे तस्स कच्छस्स सुहणिसण्णे। ताहे ते जणवयाण णगराण पट्टणाण य जे य तहिं सामिया पभूया आगरपती य मंडलपती य पट्टणपती य सव्वे घेत्तूण पाहुडाइं आभरणाणि भूसणाणि रयणाणि य वत्थाणि य महरिहाणि, अण्णं च जं वरिट्ठं रायारिहं जं च इच्छियव्वं एयं सेणावइस्स उवणेंति मत्थयकयंजलिपुडा, पुणरवि काऊण अंजलिं मत्थयंमि पणया "तुब्भे अम्हत्थ[3] सामिया, देवयं व[4] सरणागया मो तुब्भं विसयवासित्ति"[5] विजयं[6] जंपमाणा सेणावइणा जहारिहं ठविय पूइय विसज्जिया णियत्ता सगाणि णगराणि पट्टणाणि अणुपविट्ठा। ताहे[7] सेणावई सविणओ घेत्तूण पाहुडाइं आभरणाणि भूसणाणि रयणाणि य पुणरवि तं सिंधुणामधेज्जं उत्तिण्णे अणहसासणबले, तहेव 'रण्णो भरहाहिवस्स'[8] णिवेएइ, णिवेइत्ता य अप्पिणित्ता[9] य पाहुडाइं सक्कारिय-सम्माणिए[10] सहरिसे विसज्जिए सगं पडमंडवमइगए।।

८२. तते णं सुसेणे सेणावई ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते जिमियभुत्तुत्तरागए समाणे[11] °आयंते चोक्खे परमसुइभूए° सरसगोसीसचंदणुक्किण्णगायसरीरे[12] उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धेहिं णाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे-उवणच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे महयाहयणट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरइ।।

८३. तए णं से भरहे राया अण्णया कयाइ[13] सुसेणं सेणावइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छ णं खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि, विहाडेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि।।

८४. तए णं से सुसेणे सेणावई भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए[14] °नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए° करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु[15] °एवं सामी! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता भरहस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सए आवासे

---

१. अलसंडविसय (अ,ब); अलसंडविसयासी य (क)।
२. सिंधुससागरंतोत्ति य (क,ख)।
३. अम्हित्थ (क,त्रि,स); अम्हेत्थ (ख,प)।
४. च (पुवृ); व (पुवृपा)।
५. °वासिणोत्ति (प, आवश्यकचूर्णि पृ १९१)।
६. वि य (अ,त्र,पुवृ); विजयं (पुवृपा)।
७. ताव (अ,ब)।
८. भरहस्स रण्णो (प,शावृ,हीवृ)।
९. अप्पणित्ता (ख,त्रि,प,स)।
१०. 'तए णं भरहेणं रण्णा' इति शेषः (हीवृ)।
११. सं० पा०—समाणे जाव सरसगोसीस°। समाणे सरसगोसीस° (पुवृ)।
१२. °चंदणुक्खित्त° (त्रि, प, शावृ)।
१३. कदाचि (अ,त्रि,ब); कयाति (आवश्यकचूर्णि पृ० १९२)।
१४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव करयल°।
१५. सं० पा०—कट्टु जाव पडिसुणेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भसंथारगं संथरइ[1], •संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता° कयमालस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी[2] •उम्मुकमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले दब्भसंथारोवगए एगे अबीए अट्ठमभत्तं पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ।।

८५. तए णं से सुसेणे सेणावई° अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं[3] मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे धूवपुप्फगंधमल्लहत्थगए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा[4] तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

८६. तए णं तस्स सुसेणस्स सेणावइस्स बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय[5]-•कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थबाहप्पभियओ —अप्पेगइया उप्पलहत्थगया जाव[6] अप्पेगइया सहस्सपत्तहत्थगया सुसेणं सेणावइं पिट्ठओ-पिट्ठओ अणुगच्छंति ।।

८७. तए णं तस्स सुसेणस्स सेणावइस्स बहूओ[7] खुज्जाओ चिलाइयाओ जाव[8] इंगिय-चिंतिय-पत्थिय-विआणियाओ णिउणकुसलाओ विणीयाओ अप्पेगइयाओ वंदणकलसहत्थगयाओ जाव[9] सुसेणं सेणावइं पिट्ठओ-पिट्ठओ अणुगच्छंति ।।

८८. तए णं से सुसेणे सेणावई सव्विड्ढीए सव्वजुईए जाव[10] णिग्घोसणाइएणं जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेइ, करेत्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितले चच्चए य दलयति, दलयित्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहि य मल्लेहि य अच्चिणेइ, अच्चिणेत्ता पुप्फारुहणं[11] •मल्ल-गंध-वण्ण-चुण्ण°-वत्थारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविपुलवट्ट[12]-•वग्घारियमल्लदामकलावं पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवमघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं° करेइ, करेत्ता अच्छेहिं सण्हेहिं सेतेहिं रययामएहिं अच्छरसातंडुलेहिं तिमिस्सगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडाणं पुरओ अट्ठट्ठ मंगलए आलिहइ, [तं जहा—सोत्थिय सिरिवच्छ[13] •णंदियावत्त वद्धमाणग भद्दासण मच्छ कलस दप्पण अट्ठमंगलए] आलिहित्ता काऊणं[14] करेइ उवयारं, किं ते? पाडल-मल्लिय-चंपग-असोग-पुण्णाग, चूयमंजरि-णवमालिय-

---

१. सं० पा०—संथरइ जाव कयमालस्स ।
२. सं० पा०—बंभयारी जाव अट्ठमभत्तंसि ।
३. °प्पवेसाइं (अ,ब) ।
४. कवाडाओ (ब) ।
५. सं० पा०—माडंबिय जाव सत्थवाह° ।
६. जं० ३।१० ।
७. बहूईओ (प) ।
८. ओ० सू० ७० ।
९. जं० ३।११ ।
१०. जं० ३।१२ ।
११. सं० पा०—पुप्फारुहणं जाव वत्थारुहणं ।
१२. सं० पा०—आसत्तोसत्तविपुलवट्ट जाव करेइ ।
१३. सं० पा०—सिरिवच्छ जाव कयग्गह° ।
१४. द्रष्टव्यम्—१२ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बकुल-तिलग-कणवीर-कुंद-कोज्जय-कोरंटय-पत्त-दमणय-वरसुरहिसुगंधगंधियस्स° कयग्ग-हगहिय-करयलपब्भट्ठ[1] विप्पमुक्कस्स दसद्धवण्णस्स कुसुमणिगरस्स तत्थ चित्तं जण्णुस्सेह-प्पमाणमेत्तं ओहिनिगरं करेत्ता चंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंडं[2] °कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवगंधुत्तमाणुविद्धं च धूमवट्टिं विणिम्मुयंतं वेरुलियमयं कडुच्छुयं पग्गहेत्तु पयते° धूवं दलयइ[3], दलयित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता करयल[4] °परिग्गहियं सिरसावत्तं° मत्थए अंजलिं कट्टु कवाडाणं पणामं करेइ, करेत्ता दंडरयणं परामुसइ, तए णं[5] तं दंडरयणं पंचलइयं[6] वइरसारमइयं, विणासणं सव्वसत्तुसेण्णाणं[7], खंधावारे णरवइस्स गड्ड-दरि-विसम-पब्भार-गिरीवर-पवायाणं[8] समीकरणं, संतिकरं 'सुभकरं हितकरं'[9] रण्णो हियइच्छियमणोरहपूरगं दिव्वमप्पडिहयं दंडरयणं गहाय सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे दंडरयणेणं महया-महया सद्देणं तिक्खुत्तो आउडेइ[10] ॥

८९. तए णं तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सुसेणसेणावइणा दंडरयणेणं महया-महया सद्देणं तिखुत्तो आउडिया समाणा महया-महया सद्देणं कोंचारवं करेमाणा सरसरस्स[11] सगाइं-सगाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था ॥

९०. तए[12] णं से सुसेणे सेणावई तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेइ, विहाडेत्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[13] भरहं रायं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—विहाडिया णं देवाणुप्पिया ! तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा, एयण्णं देवाणुप्पियाणं पियं णिवेदेमो, पियं भे[14] भवउ ॥

९१. तए णं से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ-

---

१. अस्मात् पदात् 'करेत्ता' पर्यन्तः पाठः आदर्शेषु लिखितो नैव दृश्यते । बहुषु स्थानेषु लिपिकारैः पूर्वागतः पाठः संक्षिप्यैव लिख्यते ।

२. सं० पा०—वेरुलियविमलदंडं जाव धूवं ।

३. ३।१२ सूत्रे 'धूवं दहइ' इति पाठो विद्यते ।

४. सं० पा०—करयल जाव मत्थए ।

५. णं भंते (ख,ब); णं भवे (आवश्यकचूर्णि पृ० १९२) ।

६. पंचरतिय (क) ।

७. सेणाणं (त्रि,प, शावृ, हीवृ) ।

८. पहाणा (अ,ख,ब, शावृपा) ।

९. हितकरं सुभकरं (क,ब,स, पुवृ) ।

१०. आउड्डेइ (ख) आउट्टेइ (त्रि) ।

११. सरसरसरस्स (ब) ।

१२. अस्य सूत्रस्य स्थाने आवश्यकचूर्णौ (पृ० १९२) 'तते णं सेणावती जाव भरहस्स तं निवेदेइ' इति पाठोऽस्ति । अस्मिन् विषये उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण एवं समीक्षा कृतास्ति—इदं च सूत्रमावश्यकचूर्णौ वर्द्धमानसूरिकृतादिचरित्रे च न दृश्यते, ततोऽनन्तरपूर्वसूत्र एव कपाटोद्घाटनमभिहितं, यदि चैतत्सूत्रादर्शानुसारेणेदं सूत्रमवश्यं व्याख्येयं तदा पूर्वसूत्रे सगाइं २ ठाणाइं इत्यत्रार्षत्वात् पञ्चमी व्याख्येया तेन स्वकाभ्यां २ स्थानाभ्यां कपाटद्वयसम्मीलनारपदाभ्यां प्रत्यवस्तृताविति—किञ्चिद्विकसितावित्यर्थः तेन विघाटनार्थकमिदं न पुनरुक्तमिति ।

१३. उवागच्छित्ता जाव (अ,क,ख,त्रि,प ब,स); एतत्पदं लिपिप्रमादादागतं सम्भाव्यते ।

१४. × (त्रि, हीवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुट्ठ-चित्तमाणंदिए[1] •नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए सुसेणं सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेण्णं सण्णाहेह तहेव जाव[2] अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवरं णरवई दुरुढे ।।

६२. तए णं से भरहे राया मणिरयणं परामुसइ—तो[3] तं चउरंगुलप्पमाणमेत्तं च अणग्घियं[4] 'तंस-च्छलंसं'[5] अणोवमजुइं दिव्वं मणिरयणपतिसमं[6] वेरुलियं सव्वभूयकंतं वेढो—

जेण य मुद्धागएणं दुक्खं, ण किंचि जायइ[7] 'हवइ आरोग्गे य'[8] सव्वकालं ।
तेरिच्छिय-देवमाणुसकया य, उवसग्गा सव्वे ण करेंति तस्स दुक्खं ।
संगामे वि असत्थवज्झो, होइ णरो मणिवरं धरेंतो ।
ठियजोव्वण-केसअवट्ठियणहो, हवइ य सव्वभयविप्पमुक्को ।

तं मणिरयणं गहाय से णरवई हत्थिरयणस्स दाहिणिल्लाए कुंभीए णिक्खिवइ ।।

६३. तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थयसुकयरइयवच्छे[9] •कुंडलउज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसभे मरुयरायवसभकप्पे अब्भहियरायतेय-लच्छीए दिप्पमाणे पसत्थमंगलसएहिं संथुव्वमाणे जयसद्दकयालोए हत्थिखंधवरगए सकोरंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं जक्खसहस्स-संपरिवुडे वेसमणे चेव धणवई° अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती मणिरयणकउज्जोए[10] चक्करयणदेसियमग्गे अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे महयाउक्किट्ठिसीहणायबोलकलकल-रवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयंपिव करेमाणे-करेमाणे जेणेव तिमिसगुहाए दाहिणिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिमिसगुहं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अतीति ससिव्व मेहंधकारनिवहं ।।

६४. तए णं से भरहे राया छत्तलं दुवालसंसियं अट्ठकण्णियं अहिगरणिसंठियं अट्ठसोवण्णियं कागणिरयणं परामुसइ ।।

६५. तए णं तं चउरंगुलप्पमाणमित्तं[11] अट्ठसुवण्णं च विसहरणं अउलं चउरंससंठाण-

---

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव हियए ।
२. जं० ३।१५-१७ ।
३. ततो (स); उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण 'तोत' मितिपाठः परामृष्टः—'तोत' मिति सम्प्रदायाद् गम्यम् ।
४. अणग्घेतं (ख,ब,स, पुवृ, आवश्यकचूर्णि पृ० १९३); अणक्खेयं (पुवृपा) ।
५. तस्सच्छलंसं (अ,क,त्रि,ब,स, पुवृ); तंसं छलंसं (आवश्यकचूर्णि पृ० १९३) ।
६. °पडिमं (क) ।
७. जाति (अ,ख,ब); जाव (अवश्यकचूर्णि पृ० १९३); 'जाव' इति पदं लिपिदोषाज्जातं दृश्यते ।
८. पाठान्तरे—भवत्यरोगता (पुवृ) ।
९. सं० पा०—हारोत्थयसुकयरइयवच्छे जाव अमरवइ° ।
१०. °कयउज्जोए (क); °कयउज्जोवे (ख) ।
११. हीरविजयसूरिणा अनुयोगद्वारेणास्य विसंवादित्वविषये विस्तृता चर्चा कृतास्ति—यत्तु एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संठियं समतलं, माणुम्माणजोगा जतो लोगे चरंति सव्वजणपण्णावगा, णवि चंदो 'णवि तत्थ'[1], सूरो 'णवि अग्गी'[2] णवि तत्थ मणिणो तिमिरं णासेंति अंधकारे, जत्थ तकं दिव्वप्पभावजुत्तं[3] दुवालसजोयणाइं तस्स लेसाओ विवड्ढंति तिमिरणिगरपडिसेहियाओ[4], रत्तिं च सव्वकालं खंधावारे करेइ 'आलोयं दिवसभूयं'[5] जस्स पभावेण चक्कवट्टी, तिमिसगुहमतीति सेण्णसहिए अभिजेतुं[6] बितियमद्धभरहं रायपवरे[7] कागणिं गहाय तिमिसगुहाए पुरत्थिमिल्ल-पच्चत्थिमिल्लेसुं कडएसुं जोयणंतरियाइं पंचधणुसयायामविक्खंभाइं[8] जोयणुज्जोयकराइं चक्कणेमीसंठियाइं चंदमंडलपडिणिकासाइं एगूणपण्णं मंडलाइं आलिहमाणे-आलिहमाणे अणुप्पविसइ ।।

६६. तए णं सा तिमिसगुहा भरहेणं रण्णा तेहिं जोयणंतरिएहिं[9] •पंचधणुसयायामविक्खंभेहिं° जोयणुज्जोयकरेहिं एगूणपण्णाए मंडलेहिं आलिहिज्जमाणेहिं-आलिहिज्जमाणेहिं खिप्पामेव आलोगभूया उज्जोयभूया दिवसभूया जाया यावि होत्था ।।

अट्ठसोवण्णिए कागिणीरयणे छत्तले दुवालसंसिए अट्ठकण्णिए अहिगरणीसंठाणसंठिए पण्णत्ते । तस्स णं एगमेगा कोडी उस्सेहंगुलविक्खंभा इति श्री अनुयोगद्वारसूत्रे तद्वृत्तौ च एतानि च मधुरतृणफलादीनि भरतचक्रवर्त्तिकालसंभवान्येव गृह्यन्ते अन्यथा कालभेदेन वैषम्यसंभवे काकिणीरत्नं सर्वचक्रिणां तुल्यं न स्यात् तुल्यं चेष्यते इति व्याख्यातं तच्च विचार्य्यमाणं सम्यगभिप्रायविषयो न भवति यतः सूत्रे उत्सेधांगुलप्रमाणं कागिणीरत्नं भणितं तद्वृत्तौ च प्रमाणांगुलप्रमाणं उभयमपि प्रवचनसारोद्धारादिना विसंवादिदुर्लक्षमं च यत्तु चतुरंगुलो मणी पुणेति गाथां व्याख्यानयता श्रीमलयगिरिणापि इहांगुलं प्रमाणांगुलमवगन्तव्यं सर्वचक्रवर्त्तिनामपि काकिण्यादिरत्नानां तुल्यप्रमाणत्वादिति बृहत्संग्रहणीवृत्तौ एतदपि प्राग्वद् विचारणास्पदमेवेति बहुश्रुतैः सम्यक्पर्यालोच्य यथावत् श्रद्धेयमिति ।

चतुरंगुलप्रमाणमात्रं नाधिकं न च न्यूनमिति यत्तु 'उस्सेहंगुलविक्खंभा' इत्यनुयोगद्वारवचनेन एकांगुलप्रमाणमुक्तं तद्वाचनाभेदहेतुकं संभाव्यते । शान्तिचन्द्रीयवृत्तावपि एष मतभेदश्चर्चितोस्ति—यत्तु 'तस्स णं एगमेगा कोडी उस्सेहंगुलविक्खंभा तं च समणस्स भगवओ महावीरस्स अद्धंगुलं; इत्यनुयोगद्वारसूत्रे उक्तं तन्मतान्तरमवसेयम् । पुण्यसागरवृत्तावपि एषा चर्चा विद्यते । (हस्तलिखितवृति पत्र १०१) ।

१. णाइ तत्थ (अ,ब,स); ण इव तत्थ (क,प); ण इर तत्थ (ख, शावृ, आवश्यकचूर्णि पृ० १९३); णइवात्थ (त्रि) ।
२ ण इवग्गी (अ,ख,त्रि,ब); ण इव अग्गी (क,प, स) अग्रे पि ।
३. दिव्वभावजुत्तं (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स,पुवृ,हीवृ) ।
४. °पडिसेधियाओ (ब); °पडिसिहिक्काओ (आवश्यकचूर्णि पृ० १९३) ।
५. आलोयदिवसभूयं (पुवृ); आलोकं दिवसभूये (पुवृपा) ।
६. अभिजेत्तुं (त्रि) ।
७. रायवर (अ,क,ख,प,ब,स, पुवृ,शावृ) ।
८. पंचधणुसयाइं पंचधणुयामविक्खंभाइं (अ,ब); पंचधणुसयाइं विक्खंभाइं (त्रि); पंचधणुसयविक्खंभाइं (शावृ) ।
९. सं० पा०—जोयणंतरिएहिं जाव जोयणुज्जोयकरेहिं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९७. तीसे णं तिमिसगुहाए बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं 'उम्मुग्ग-णिमुग्गजलाओ'[1] णामं दुवे महाणईओ पण्णत्ताओ, जाओ णं तिमिसगुहाए पुरत्थिमिल्लाओ भित्तिकडगाओ पवूढाओ समाणीओ पच्चत्थिमेणं सिंधुं महाणइं समप्पेंति ।।

९८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—उम्मुग्ग-णिमुग्गजलाओ महाणईओ ? गोयमा ! जण्णं उम्मुग्गजलाए महाणईए तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करा वा आसे वा हत्थी वा रहे[2] वा जोहे वा मणुस्से वा पक्खिप्पइ[3], तण्णं उम्मुग्गजला महाणई तिक्खुत्तो आहुणिय-आहुणिय एगंते थलंसि एडेइ । जण्णं णिमुग्गजलाए महाणईए तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करा वा[4] °आसे वा हत्थी वा रहे वा जोहे वा° मणुस्से वा पक्खिप्पइ, तण्णं णिमुग्गजला महाणई तिक्खुत्तो आहुणिय-आहुणिय अंतो जलंसि णिमज्जावेइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—उम्मुग्गणिमुग्गजलाओ महाणईओ ।।

९९. तए णं से भरहे राया चक्करयणदेसियमग्गे अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे महया उक्किट्ठिसीहणाय[5] °बोलकलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयंपिव° करेमाणे-करेमाणे सिंधूए महाणईए 'पुरत्थिमिल्लेणं कूलेणं'[6] जेणेव उम्मुग्गणिमुग्गजलाओ महाणईओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वड्ढइरयणं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उम्मुग्गणिमुग्गजलासु महाणईसु अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे अचलमकंपे अभेज्जकवए सालंबणबाहाए सव्वरयणामए सुहसंकमे करेहि, करेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणाहि ।।

१००. तए णं से वड्ढइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए[7] °णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए° विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव उम्मुग्गणिमुग्गजलासु महाणईसु अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे[8] °अचलमकंपे अभेज्जकवए सालंबणबाहाए सव्वरयणामए° सुहसंकमे करेइ, करेत्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ।।

१०१. तए णं से भरहे राया सखंधावारबले उम्मुग्गणिमुग्गजलाओ महाणईओ तेहिं अणेगखंभसयसण्णिविट्ठेहिं[10] °अचलमकंपेहिं अभेज्जकवएहिं सालंबणबाहाएहिं सव्वरयणामएहिं° सुहसंकमेहिं उत्तरइ ।।

१०२. तए णं तीसे तिमिसगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सयमेव महया-महया कोंचारवं करेमाणा सरसरस्स सगाइं[11] सगाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था ।।

१०३. तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरड्ढभरहे वासे बहवे आवाडा णामं चिलाया

---

१. उम्मग्गणिम्मग्ग° (प) ; उम्मग्गणिमग्ग (स) ।
२. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ) ।
३. परिक्खिप्पति (ख.त्रि) ; पक्खिपति (पुवृ) ; पक्खिप्पति (पुवृपा)।
४. सं० पा०—सक्करा वा जाव मणुस्से ।
५. सं० पा०—उक्किट्ठिसीहणाय जाव करेमाणे ।
६. उभयत्रापि 'णं' शब्दो वाक्यालङ्कारे (शावृ) ।
७. सं०पा०—हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव विणएणं ।
८. सं० पा०—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे जाव सुहसंकमे ।
९. उवागच्छित्ता जाव (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स) ।
१०. सं० पा०—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठेहिं जाव सुहसंकमेहिं ।
११. साइं (क,ख,) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिवसंति--अड्ढा दित्ता वित्ता विच्छिण्णविउलभवण-सयणासण-जाणवाहणाइण्णा बहुधण[1]-बहुजायरूवरयया आओगपओगसंपउत्ता विच्छड्डियपउरभत्तपाणा बहुदासीदास-गो-महिस-गवेलगप्पभूया बहुजणस्स अपरिभूया सूरा वीरा विक्कंता विच्छिण्णविउलबलवाहणा बहुसु समरसंपराएसु लद्धलक्खा यावि होत्था ।।

१०४. तए णं तेसिमावाडचिलायाणं अण्णया कयाइ विसयंसि बहूइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भवित्था, तं जहा--अकाले गज्जियं, अकाले विज्जुयं, अकाले पायवा पुप्फंति, अभिक्खणं-अभिक्खणं आगासे देवयाओ णच्चंति ।।

१०५. तए णं ते आवाडचिलाया विसयंसि बहूइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं पासंति, पासित्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं विसयंसि बहूइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं तं जहा—अकाले गज्जियं, अकाले विज्जुयं, अकाले पायवा पुप्फंति, अभिक्खणं-अभिक्खणं आगासे देवयाओ णच्चंति तं ण णज्जइ णं देवाणुप्पिया ! अम्हं विसयस्स के मन्ने उवद्दवे भविस्सइत्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा चिंतासोगसागरं पविट्ठा करयलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठिया झियायंति ।।

१०६. तए णं से भरहे राया चक्करयणदेसियमग्गे[2] °अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे महया उक्किट्ठिसीहणाय बोलकलकलरवेणं पक्खुभियमहा° समुद्दरवभूयं पिव करेमाणे-करेमाणे तिमिसगुहाओ उत्तरिल्लेणं दारेणं णीति ससिव्व मेहंधयारणिवहा ।।

१०७. तए णं ते आवाडचिलाया भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता, आसुरुत्ता रुट्ठा चंडिक्किया कुविया मिसिमिसेमाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! केइ अप्पत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे हिरिसिरिपरिवज्जिए[3], जे णं अम्हं विसयस्स 'उवरिं विरिएणं'[4] हव्वमागच्छइ, तं तहा णं घत्तामो देवाणुप्पिया! जहा णं एस अम्हं विसयस्स 'उवरिं विरिएणं'[5] णो हव्वमागच्छइत्ति-कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सण्णद्धबद्धवम्मियकवया उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्धगेवेज्जा बद्धआविद्धविमलवरचिंधपट्टा गहिआउहप्पहरणा जेणेव भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भरहस्स रण्णो अग्गाणीएण सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ।।

१०८. तए णं ते आवाडचिलाया भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं हयमहियपवरवीरघाइय-विवडियचिंधद्धयपडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसोदिसिं पडिसेहेंति[6] ।।

१०९. तए णं से सेणावलस्स णेया[7] °भरहे वासंमि विस्सुयजसे महाबलपरक्कमे महप्पा ओयंसी तेयंसी लक्खणजुत्ते मिलक्खुभासाविसारए चित्तचारुभासी भरहे वासंमि णिक्खुडाणं निण्णाण य दुग्गमाण य दुक्खप्पवेसाण य वियाणए अत्थसत्थकुसले रयणं

---

१. बहुधणा (आवश्यकचूर्णि पृ १९४) ।
२. सं० पा०--°मग्गे जाव समुद्दरवभूयं ।
३. हरि °(अ,ख,ब) ।
४. अवरवरिएणं (अ,क,त्रि,ब,हीवृ) ।
५. अपरवरिएणं (अ,क,त्रि,प,ब,स,हीवृ) ।
६. पडिसेवंति (क,त्रि,प,ब) ; प्राचीनलिप्यां धकार वकारयो : प्रायः सादृश्येन अर्वाचीनादर्शेषु धकारस्थाने वकारो जात : ।
७. सं० पा०—णेया वेढो जाव भरहस्स ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेणावई सुसेणे[1] भरहस्स रण्णो अग्गाणीयं आवाडचिलाएहिं हयमहियपवरवीर[1]घाइय-विवडियचिंधद्धयपडागं किच्छप्पाणोवगयं[1] दिसोदिसिं पडिसेहियं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे चंडिक्किए कुविए मिसिमिसेमाणे कमलामेलं आसरयणं दुरुहइ, तए णं तं असीइमंगुलमूसियं णवणउइमंगुलपरिणाहं अट्ठसयमंगुलमायतं बत्तीसमंगुलमूसियसिरं चउरंगुलकण्णाकं वीसइअंगुलबाहाकं[2] चउरंगुलजण्णुकं[3] सोलसअंगुलजंघाकं चउरंगुलमूसियखुरं मुत्तोलीसंवत्तवलियमज्झं[4] 'ईसिं अंगुट्ठपणयपट्ठं'[5] संणयपट्ठं संगयपट्ठं सुजायपट्ठं पसत्थपट्ठं विसिट्ठपट्ठं 'एणीजण्णुण्णय-वित्थय-थद्धपट्ठं'[6] वित्तलय-कसणिवाय-अंकेल्लणपहार[7]-परिवज्जिअंगं तवणिज्जथासगाहिलाणं वरकणगसुफुल्लथासग-विचित्तरयणरज्जुपासं कंचणमणिकणगपयरग[8]-णाणाविहघंटियाजाल-मुत्तियाजालएहिं परिमंडिएणं पट्ठेणं सोभमाणेणं सोभमाणं कक्केयण-इंदनील-मरगय-मसारगल्ल-मुहमंडणरइयं आविद्धमाणिक्कसुत्तगविभूसियं कणगामयपउमसुकयतिलकं देवमइ-विकप्पियं 'सुरवरिंदवाहणजोग्गं च तं'[9] सुरूवं दूइज्जमाणपंचचारुचामरामेलगं धरेंतं अणदब्भवाहं[10] अभेलणयणं कोकासियवहलपत्तलच्छं सयावरणनवकणग-तवियतवणिज्जतालु-जीहासयं सिरिआभिसेयघोणं[11] पोक्खरपत्तमिव सलिलबिंदु[12] अचंचलं चंचलसरीरं[13] चोक्ख[14]-चरग-परिव्वायगो विव हिलीयमाणं-हिलीयमाणं[15] खुरचलणचच्चपुडेहिं[16] धरणियलं अभिहणमाणं-अभिहणमाणं, दोवि य चलणे जमगसमगं मुहाओ विणिग्गमंतं व, सिग्घयाए मुणालतंतुउदगमवि[17] णिस्साए पक्कमंतं, जाइकुलरूवपच्चय-पसत्थबारसावत्तगविसुद्धलक्खणं सुकुलप्पसूयं मेहाविं भद्दयं विणीयं अणुकतणुकसुकुमाललोमनिद्धच्छविं[18] सुयातं[19] अमर-मण-

---

१. सं० पा०—°पवरवीर जाव दिसोदिसिं ।
२. विंसति° (त्रि) ।
३. °जंणूकं (क,ख,त्रि,प,ब,स) ।
४. सुत्तोली °(त्रि,ब) ; लिपिदोषाद् वर्णविपर्यासो जातः ।
५. °अंगुलपणयपट्ठं (अ,ख,त्रि,प,ब,स,पुवृ,शावृ); अंगुलाष्टप्रणतं (हीवृ) ।
६. एणीजंतुणयवित्थतत्थपट्ठं (ब,पुवृ० शावृ) ; एणीजण्णुण्णयवित्थयत्थद्धपट्ठं (पुवृपा) ।
७. अण्हेल्लणपहार (अ,ब) ।
८. °पत्थरक (ख) ।
९. °जोग्गं वयं (प) ; °जोग्गं व तं (पुवृ) ; °जोग्गावयं (शावृ) ।
१०. × (अ, ब); अणब्भवाहं (ख,प,स,पुवृ,शावृ हीवृपा) ; अणवब्भवाहं (त्रि,हीवृ) ; अदब्भवाहं (शावृपा) ; अणदब्भवाहं(हीवृपा) ; आवश्यकचूर्णौ (पृ० १९५) 'अणदुब्भवाहं' इति पाठो मुद्रितोस्ति, किन्तु सोपि 'अणदब्भवाहं' इति प्रतीयते ।
११. सिरियाभिसेयघोसणं (ख,त्रि,ब,पुवृपा, हीवृपा) ; सिरिसाभिसेअघोणं (शावृपा) ।
१२. सलिलबिंदुजुवं (आवश्यकचूर्णि पृ० १९५) ।
१३. चवल° (ब,आवश्यकचूर्णि पृ० १९५) ।
१४. चुक्ख (क,ख,स) ।
१५. हीलिज्जमाणं (त्रि,) ; हीलियमाणं (ब) ; प्राकृतशैल्या अकार प्रश्लेषादभिलीयमानम् (शावृ) ।
१६. पक्खुर° (हीवृपा) ।
१७. मुणालयंतु° (त्रि,ब) ।
१८. अणुपयणुक° (अ,ब) ।
१९. सुजातं (हीवृ, आवश्यकचूर्णि पृ० १९५) ; सुयातं (हीवृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवण[1]-गरुलजइणचवलसिग्घगामिं, इसिमिव खंतिखमाए[2], सुसीसमिव पच्चक्खयाविणीयं उदग-हुतवह-पासाण-पंसु-कद्दम-ससक्कर-सवालुइल्ल-तड[3]-कडग[4]-विसम-पब्भार - गिरिदरीसु लंघण-पिल्लण-णित्थारणासमत्थं, अचंडपाडियं[5] दंडपातिं अणंसुपातिं अकालतालुं[6] च कालहेसिं जियनिद्दं गवेसगं जियपरिसहं जच्चजातीयं मल्लिहाणिं[7] सुगपत्तसुवण्ण[8]-कोमलं मणाभिरामं कमलामेलं णामेणं आसरयणं सेणावई कमेण समभिरूढे कुवलयदलसामलं च रयणिकर-मण्डलनिभं सत्तुजणविणासणं कणगरयणदंडं णवमालियपुप्फसुरभिगंधिं[9] णाणामणिलय-भत्तिचित्तं च पधोत-मिसिमिसिंत-तिक्खधारं दिव्वं खग्गरयणं लोके अणोवमाणं तं च पुणो वंस-रुक्ख सिंगट्ठि-दंत-कालायस विपुललोहदंडक-वरवइरभेदकं जाव सव्वत्थअप्पडिहयं किं पुण देहेसु जंगमाणं ?

गाहा—

पण्णासगुंलदीहो, सोलस सो अंगुलाइं विच्छिण्णो ।
अद्धंगुलसोणीको, जेट्ठपमाणो असी भणिओ ॥१॥

असिरयणं णरवइस्स हत्थाओ तं गहिऊण जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आवाडचिल्लाएहिं सद्धिं संपलग्गे आवि होत्था ॥

११०. तए णं से सुसेणे सेणावई ते आवाडचिलाए हयमहियपवरवीरघाइय[10]-°विवडियचिंधद्धयपडागं किच्छप्पाणोवगयं° दिसोदिसिं पडिसेहेइ ॥

१११. तए णं ते आवाडचिलाया सुसेणसेणावइणा हयमहिय[11]°पवरवीरघाइय-विवडिय-चिंधद्धयपडागा किच्छप्पाणोवगया दिसोदिसिं° पडिसेहिया समाणा भीया तत्था वहिया[12] उव्विग्गा संजायभया अत्थामा अवला अवीरिया अपुरिसक्कारपरक्कमा अधारणिज्जमितिकट्टु अणेगाइं जोयणाइं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता एगयओ मिलायंति, मिलायित्ता जेणेव सिंधू महाणई तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वालुयासंथारए संथरेंति, संथरेत्ता वालुयासंथारए

१. पवर (त्रि,ब) ।
२. खंतिखमं (अ,ब) ; खंतिखमए (आवश्यक चूर्णि पृ० १६५) ।
३. तर (अ,ब) ; तडाग (त्रि,हीवृ) ; तड (हीवृपा) ।
४. करक (अ, ब) ।
५. °पासियं (त्रि, स, हीवृपा); °पाडियं (आवश्यकचूर्णि पृ० १६५) ।
६. × (अ, स) ।
७. अत्र सर्वेष्वपि आदर्शेषु स्वीकृतपाठ एव लभ्यते। वृत्तित्रयेपि (शावृपत्र २३७, पुवृ पत्र १०२, हीवृ पत्र २४८, २४९) एष एव पाठो व्याख्यातोस्ति, यथा शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ—मल्लिः—विचकिलकुसुमं तद्वच्छुभ्रः अश्लेष्मलत्वेनानाविलमपूतिगन्धि च घ्राणं—प्रोथो यस्य तत्तथा, ईकारः प्राकृतशैलीभवः । हीरविजयवृत्तौ 'मल्लिहाणं' अस्य पाठान्तर-रूपेण उल्लेखोस्ति । ७।१७८ सूत्रे 'मल्लिहायणाणं' इति पाठः आदर्शेषु वृत्तित्रये पि दृश्यते। औपपातिके (६४) पि तथैव वर्तते । पाठद्वयमपि प्रसिद्ध-मस्ति इति सम्भाव्यते ।
८. सुकपत्त° (अ, ब, आवश्यकचूर्णि पृ० १६५) ।
९. °गंधं (त्रि) ।
१०. सं० पा०—°घाइय जाव दिसोदिसिं ।
११. सं० पा०— हयमहिय जाव पडिसेहिया ।
१२. तसिया (ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुरुहंति, दुरुहित्ता अट्ठमभत्ताइं पगिण्हंति, पगिण्हित्ता वालुयासंथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्ठमभत्तिया जे तेसिं कुलदेवया मेहमुहा णामं णागकुमारा देवा ते मणसीकरेमाणा-मणसीकरेमाणा चिट्ठंति ।।

११२. तए णं तेसिमावाडचिलायाणं अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि मेहमुहाणं णागकुमाराणं आसणाइं चलंति ।।

११३. तए णं ते मेहमुहा णागकुमारा देवा आसणाइं चलियाइं पासंति, पासित्ता ओहिं पउंजंति, पउंजित्ता आवाडचिलाए ओहिणा आभोएंति, आभोएत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे उत्तरड्ढभरहे वासे आवाडचिलाया सिंधूए महाणईए वालुयासंथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्ठमभत्तिया अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसीकरेमाणा-मणसीकरेमाणा चिट्ठंति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं आवाडचिलायाणं अंतिए पाउब्भवित्तएत्तिकट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए[1] °चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए देवगईए° वीतिवयमाणा-वीतिवयमाणा जेणेव जंबुद्दीवे दीवे उत्तरड्ढभरहे वासे जेणेव सिंधू महाणई जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णा सखिंखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिया ते आवाडचिलाए एवं वयासी—हं भो आवाडचिलाया ! जण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वालुयासंथारोवगया उत्ताणगा अवसणा अट्ठमभत्तिया अम्हे कुलदेवए मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसीकरेमाणा-मणसीकरेमाणा चिट्ठह, तए णं अम्हे मेहमुहा णागकुमारा देवा तुब्भं कुलदेवया तुम्हं अंतियण्णं पाउब्भूया, तं वदह णं देवाणुप्पिया ! किं करेमो ? किं आचिट्ठामो ? के व भे मणसाइए ? ।।

११४. तए णं ते आवाडचिलाया मेहमुहाणं णागकुमाराणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया[2] °णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण° हियया उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता जेणेव मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं[3] °सिरसावत्तं° मत्थए अंजलिं कट्टु मेहमुहे णागकुमारे देवे जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! केइ अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे[4] °हीणपुण्णचाउद्दसे° हरिसिरिपरिवज्जिए, जे णं अम्हं विसयस्स 'उवरिं विरिएणं'[5] हव्वमागच्छइ, तं तहा णं छत्तेह देवाणुप्पिया ! जहा णं एस अम्हं विसयस्स 'उवरिं विरिएणं'[6] णो हव्वमागच्छइ ।।

११५. तए णं ते मेहमुहा णागकुमारा देवा ते आवाडचिलाए एवं वयासी—एस णं भो देवाणुप्पिया ! भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी महिड्ढीए महज्जुईए[7] °महाबले महायसे° महासोक्खे[8] महाणुभागे णो खलु एस सक्को केणइ देवेण वा दाणवेण वा

---

१. सं०पा०—तुरियाए जाव वीतिवयमाणा ।
२. सं०पा०—हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव हियया ।
३. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव मत्थए ।
४. सं०पा०—दुरंतपंतलक्खणे जाव हिरिसिरि° ।
५, ६. अवर वरिएण (अ, क, ख, त्रि, ब) ।
७. सं०पा०—महज्जुईए जाव महासोक्खे ।
८. महासक्खे (अ, क, त्रि, ब, आवश्यकचूर्णि पृ० १९६); महेसक्खे (पुवृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा सत्थप्पओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा उद्दवित्तए वा पडिसेहित्तए वा तहावि य णं तुब्भं पियट्ठयाए भरहस्स रण्णो उवसग्गं करेमोत्तिकट्टु तेसिं आवाडचिलायाणं अंतियाओ अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति[1], समोहणित्ता मेहाणीयं विउव्वंति, विउव्वित्ता जेणेव भरहस्स रण्णो विजयखंधावारणिवेसे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता उप्पिं विजयखंधावारणिवेसस्स खिप्पामेव पतणतणायंति, पतणतणायित्ता खिप्पामेव पविज्जुयायंति, पविज्जुयायित्ता खिप्पामेव जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासिउं पवत्ता यावि होत्था ॥

११६. तए णं से भरहे राया उप्पिं विजयखंधावारस्स जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासमाणं पासइ, पसित्ता चम्मरयणं परामुसइ—तए णं तं सिरिवच्छसरिसरूवं[2] •मुत्ततारद्धचंदचित्तं अयलमकंपं अभेज्जकवयं जंतं सलिलासु सागरेसु य उत्तरणं दिव्वं चम्मरयणं, सणसत्तरसाइं सव्वधण्णाइं जत्थ रोहंति एगदिवसेण वावियाइं, वासं णाऊण चक्कवट्टिणा परामुट्ठे दिव्वे चम्मरयणे° दुवालसजोयणाइं तिरियं पवित्थरइ तत्थ साहियाइं ॥

११७. तए णं से भरहे राया सखंधारबले चम्मरयणं दुरुहइ, दुरुहित्ता दिव्वं छत्तरयणं परामुसइ—तए णं णवणउइसहस्सकंचणसलागपरिमंडियं महरिहं अओज्झं[3] णिव्वण-सुपसत्थ-विसिट्ठलट्ठ-कंचणसुपुट्ठदंडं मिउरायतवट्टलट्ठअरविंदकण्णिय[4]-समाणरूवं वत्थिपएसे य पंजरविराइयं विविहभत्तिचित्तं मणि-मुत्त-पवाल-तत्ततवणिज्ज[5]-पंचवण्णिय-धोतरयणरूवरइयं रयणमिरीईसमोप्पणाकप्पकारमणुरंजिएल्लियं[6] रायलच्छिचिंधं अज्जुण-सुवण्णपंडुरपच्चत्थुयपट्ठदेसभागं[7] तहेव तवणिज्जपट्टधम्मंतपरिगयं अहियसस्सिरीयं सारयरयणियरविमलपडिपुण्णचंदमण्डलसमाणरूवं णरिंदवामप्पमाणपगइवित्थडं[8] कुमुद-संडधवलं रण्णो संचारिमं विमाणं, सुरातववायवुट्ठिदोसाण य खयकरं, तवगुणेहिं लद्धं—

गाहा—

अहयं बहुगुणदाणं, उऊण[9] विवरीयसुकयच्छायं ।
छत्तरयणं पहाणं सुदुल्लहं अप्पपुण्णाणं ॥१॥

पमाणराईण तवगुणाण फलेगदेसभागं, विमाणवासेवि दुल्लहतरं, वग्घारियमल्लदाम-

---

१. समोहणंति (अ, क, ख, प, ब, स) ।
२. सं० पा०—सिरिवच्छसरिसरूवं वेढो भाणियव्वो जाव दुवालस ।
३. अयोज्झं (अ, ब); अउज्झं (क,ख,त्रि,प,स); अवोज्झं (आवश्यकचूर्णि पृ० १९७) ।
४. मिदुगयतवट्ट° (अ, ब, पुवृपा); मिदुरायंत° (पुवृपा) ।
५. रत्त° (अ, ब, पुवृपा) ।
६. °मरीईसमप्पणा° (त्रि) °मरीइ° (प); °मरीइसमोवणा° (पुवृ); तणुमरीइसमोवणा° (पुवृपा); °मरीइसमोप्पणा° (पुवृपा) ।
७. °पंडर° (अ,क,ख,ब,स) ।
८. °पगीयवित्थडं (अ, ब, पुवृपा); °पगतीयवित्थडं (क, ख) °पगतीइवित्थडं (स); पगतिपवित्थडं (आवश्यकचूर्णि पृ० १९७) ।
९. उदूण (अ, ख, ब); रिदूण (क, स) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलावं 'सारयधवलब्भ-रयणिगरप्पगासं'[1] दिव्वं छत्तरयणं महिवइस्स धरणियलपुण्णचंदो ।।

११८. तए णं से दिव्वे छत्तरतणे भरहेणं रण्णा परामुट्ठे समाणे खिप्पामेव दुवालस जोयणाइं पवित्थरइ साहियाइं तिरियं ।।

११९. तए णं से भरहे राया छत्तरयणं खंधावारस्सुवरिं ठवेइ, ठवेत्ता मणिरयणं परामुसइ[2]—•तो तं चउरंगुलप्पमाणमेत्तं च अणग्घियं तंस-च्छलंसं अणोवमजुइं दिव्वं मणि-रयणपतिसमं वेरुलियं सव्वभूयकंतं—

वेढो—

जेण य मुद्धागएणं दुक्खं, ण किंचि जायइ हवइ आरोग्गे य सव्वकालं ।
तेरिच्छिय-देवमाणुसकया य, उवसग्गा सव्वे ण करेंति तस्स दुक्खं ।।१।।
संगामे वि असत्थवज्झो, होइ णरो मणिवरं धरेंतो ।
ठियजोव्वण-केसअवट्ठिय-णहो, हवइ य सव्वभयविप्पमुक्को ।।२।।

तं मणिरयणं गहाय॰ छत्तरयणस्स वत्थिभागंसि ठवेइ, तस्स य अणतिवरं[3] चारुरूवं सिलणिहियत्थमंतसित्त[4]-सालि-जव-गोहूम-मुग्ग-मास - तिल-कुलत्थ-सट्ठिग - निप्फाव-चणग-कोद्दव-कोत्थुंभरि-कंगु-बरग-रालग[5]-अणेगधण्णावरण[6]-हारितग-अल्लग-मूलग-हलिद्दि-लाउय-तउस-तुंब-कालिंग-कविट्ठ-अंब-अंबिलिय-सव्वणिप्फायए सुकुसले गाहावइरयणेत्ति[7] सव्व-जणवीसुतगुणे ।।

१२०. तए णं से गाहावइरयणे भरहस्स रण्णो तद्दिवसप्पइण्ण-णिप्फाइय-पूयाणं[8] सव्वधण्णाणं अणेगाइं कुंभसहस्साइं उवट्ठवेति ।।

१२१. तए णं से भरहे राया चम्मरयणसमारूढे छत्तरयणसमोच्छन्ने[9] मणिरयणकउ-ज्जोए[10] समुग्गयभूएणं सुहंसुहेणं सत्तरत्तं परिवसइ—

गाहा—

णवि से खुहा ण तण्हा[11], 'णेव भयं'[11] णेव विज्जए दुक्खं ।
भरहाहिवस्स रण्णो, खंधावारस्सवि तहेव ।।१।।

---

१. सारयधवलरयणि॰ (अ, ब, पुवृ); सारयधव-लब्भयंदणिगरप्पगासं (क,स, पुवृपा, आवश्यक-चूर्णि पृ० १९७)।

२. सं०पा०—परामुसइ वेढो जाव छत्तरयणस्स।

३. अणतीवरं (अ, ब, पुवृपा); अणतिचरं (त्रि, हीवृ); आणतिपरं (पुवृ)।

४. सिलनिहयच्छमत्तसेत्त (अ,ब); सिलनिहियत्थ-मंतसेत्तु (क, आवश्यकचूर्णि पृ० १९७); सिल-निहियत्थमंतमेरु (ख); सिलनिहियच्छमंत-सित्त (स)।

५. वरालग (अ, क, त्रि, ब, आवश्यकचूर्णि पृ० १९७); परालग (स)।

६. ॰वरण्ण (अ,क,ख,ब,स); ॰वरत्त (आवश्यक-चूर्णि पृ० १९७)।

७. गाहवति॰ (अ); गहवति॰ (क, ब, स)।

८. पूइयाणं (प, आवश्यक चूर्णि पृ १९८)।

९. ॰समोच्छइत्ते (स)।

१०. ॰कयउज्जोवे (ब); ॰कतुज्जोवे (आवश्यकचूर्णि पृ० १९८)।

११. वलियं (अ, क, ख, त्रि, ब); विलियं (प, शावृ); चलियं (स, पुवृ; हीवृ) अयं पाठ आवश्यकचूर्ण्यधारेण स्वीकृतः। शान्तिचन्द्रीय वृत्तौ अस्य समर्थनपरं उद्धरणं दृश्यते—इयमेव गाथा श्री वर्धमानसूरिकृतऋषभचरित्रे तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२२. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—केस णं भो[1]! अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे[2] •हीणपुण्णचाउद्दसे हिरिसिरि° परिवज्जिए जे णं ममं इमाए एयारूवाए[3] •दिव्वाए देवड्ढीए दिव्वाए देवजुईए दिव्वेणं देवाणुभावेणं लद्धाए पत्ताए° अभिसमण्णागयाए उप्पि विजयखंधावारस्स जुगमुसलमुट्ठि[4]•प्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं° वासं वासइ ।।

१२३. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो इमेयारूवं अज्झत्थियं चिंतियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं समुप्पण्णं जाणित्ता सोलस देवसहस्सा सण्णज्झिउं पवत्ता यावि होत्था ।।

१२४. तए णं ते देवा सण्णद्धबद्धवम्मियकवया[5] उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्ध-गेवेज्ज-बद्धआविद्धविमलवरचिंधपट्टा° गहियाउहप्पहरणा जेणेव ते मेहमुहा णागकुमारा देवा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मेहमुहे णागकुमारे देवे एवं वयासी—हं भो! मेहमुहा णागकुमारा देवा! अपत्थियपत्थगा[6] •दुरंतपंतलक्खणा हीणपुण्णचाउद्दसा हिरिसिरि° परिवज्जिया किण्णं तुब्भे ण याणह भरहं रायं चाउरंतचक्कवट्टिं महिड्ढीयं[7] •महज्जुईयं महाबलं महायसं महासोक्खं महाणुभागं णो खलु एस सक्को केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा सत्थप्पओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा° उद्दवित्तए वा पडिसेहित्तए वा, तहावि णं तुब्भे भरहस्स रण्णो विजय-खंधावारस्स उप्पि जुगमुसलमुट्ठिप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं ओघमेघं सत्तरत्तं वासं वासह, तं एवमवि गते[8], इत्तो खिप्पामेव अवक्कमह अहव णं अज्ज पासह[9] चित्तं जीवलोगं ।।

१२५. तए णं ते मेहमुहा णागकुमारा देवा तेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा भीया तत्था वहिया उव्विग्गा संजायभया मेहाणीकं[10] पडिसाहरंति, पडिसाहरित्ता जेणेव आवाडचिलाया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता आवाडचिलाए एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! भरहे राया महिड्ढीए[11] •महज्जुईए महाबले महायसे महासोक्खे महाणुभागे° णो खलु एस सक्को केणइ देवेण वा[12] •दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा सत्थप्प-ओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा° उद्दवित्तए वा पडिसेहित्तए वा, तहावि य णं[13]

एवं 'णत्थि से खुहा, णवि तिसा णेव भयं' शेष प्राग्वत् ।

१२. ण विलितं (आवश्यकचूर्णि पृ० १९८) ।

१. एस (क, ख) ।

२. सं० पा०—दुरंतपंतलक्खणे जाव परिवज्जिए ।

३. सं० पा०—एयारूवाए जाव अभिसमण्णागयाए । एयाणुरूवाए (प) ।

४. सं० पा०—जुगमुसलमुट्ठि जाव वासं ।

५. सं० पा०—सणद्धबद्धवमियकवया जाव गहियाउह° ।

६. सं० पा०—अपत्थियपत्थगा जाव परिवज्जिया । अप्पत्थिय° (क, ख, त्रि, प, स) ।

७. सं० पा०—महिड्ढीय जाव उद्दवित्तए ।

८. किं बहु अधिक्षिपामः ? (शावृ) ।

९. पासध (अ, त्रि, ब) ।

१०. मेहाणीतं (आवश्यकचूर्णि पृ० १९८) ।

११. सं० पा०—महिड्ढीए जाव णो ।

१२. सं० पा०—देवेण वा जाव अग्गिप्पओगेण वा जाव उद्दवित्तए ।

१३. तहवि पुणं (अ, क, ख, ब, स); तहवि य णं (त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अम्हेहिं देवाणुप्पिया! तुब्भं पियट्ठयाए भरहस्स रण्णो उवसग्गे कए, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता उल्लपडसाडगा ओचूलगणियत्था[1] अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय पंजलिउडा पायवडिया भरहं रायाणं सरणं उवेह, पणिवइयवच्छला खलु उत्तमपुरिसा 'णत्थि भे'[2] भरहस्स रण्णो अंतियाओ भयमिति-कट्टु, एवं वदित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

१२६. तए णं ते आवाडचिलाया मेहमुहेहिं णागकुमारेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता उल्लपडसाडगा ओचूलग-णियत्था अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं[3] •सिरसावत्तं° मत्थए अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं उवणेंति उवणेत्ता एवं वयासी—

गाहा—

वसुहर! गुणहर! जयहर! हिरिसिरिधीकित्तिधारकणरिंद!
लक्खणसहस्सधारक! रायमिणं णे चिरं धारे ॥१॥
हयवति! गयवति! णरवति! णवणिहिवति! भरहवासपढमवति!
बत्तीसजणवयसहस्सराय[4]! सामी चिरं जीव ॥२॥
पढमणरीसर! ईसर! हियईसर! महिलियासहस्साणं।
देवसयसहस्सीसर[5]! चोद्दसरयणीसर! जसंसी! ॥३॥
सागरगिरिपेरंतं[6], उत्तरपाईणमभिजियं[7] तुमए।
ता अम्हे देवाणुप्पियस्स विसए परिवसामो ॥४॥

अहो णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे[8] दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभागे[9] लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तं दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी[10] •जुई जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए, तं खामेमु णं देवाणुप्पिया! खमंतु णं देवाणुप्पिया! खंतुमरुहंतु णं देवाणुप्पिया! णाइ भुज्जो-भुज्जो एवं करणयाएत्तिकट्टु पंजलिउडा पायवडिया भरहं रायं सरणं उवेंति ॥

१२७. तए णं से भरहे राया तेसिं आवाडचिलायाणं अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छंति, पडिच्छित्ता ते आवाडचिलाए एवं वयासी—गच्छह णं भो! तुब्भे ममं बाहुच्छायापरिग्गहिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसह, णत्थि भे कत्तोवि भय-

---

१. °नियच्छा (प, स)।
२. ण भे (अ, ब); णत्थि (ख, त्रि)।
३. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव मत्थए।
४. बत्तीसं जणवयसहस्स (अ, ब)।
५. °साहसीसर (त्रि),
६. °मेरागं (प, शावृ)।
७. उत्तरपातीण° (अ, ब); उत्तरवातीण° (क, स); उत्तरवाणीण° (ख, त्रि); उत्तरवाईण° (प)।
८. परक्कमे दिव्वा देविड्ढी, इदं पदं क्वचिन्न दृश्यते (पुवृ)।
९. °भावे (अ, प)।
१०. सं० पा०—इड्ढी एवं चेव जाव अभिसमण्णा-गए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मितिकट्टु[1] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१२८. तए णं से भरहे राया सुसेणं सेणावइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छाहि णं भो देवाणुप्पिया! दोच्चं पि सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमं णिक्खुडं ससिन्धुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि य ओयवेहि, ओयवेत्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छाहि, पडिच्छित्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणाहि ॥

१२९. तए णं से सेणावई बलस्स णेया भरहे वासंमि विस्सुयजसे महाबलपरक्कमे जहा दाहिणिल्लस्स ओयवणं तहा सव्वं भाणियव्वं जाव[2] पच्चणुभवमाणे विहरति ॥

१३०. तए णं दिव्वे चक्करयणे अण्णया कयाइ आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे[3] •जक्खसहस्ससंपरिवुडे दिव्वतुडियसद्दसण्णिणादेणं पूरेंते चेव अंबरतलं° उत्तरपुरत्थिमं दिसिं चुल्लहिमवंतपव्वयाभिमुहे पयाते यावि होत्था ॥

१३१. तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं उत्तरपुरत्थिमं दिसिं चुल्लहिमवंत-पव्वयाभिमुहं पयातं पासइ जाव[4] जेणेव चुल्लहिमवंतपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चुल्लहिमवंतवासहरपव्वयस्स अदूरसामन्ते दुवालसजोयणायामं णवजोयणविच्छिण्णं वरणगरसरिच्छं विजयखंधावारनिवेसं करेइ जाव[5] चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, 'तहेव जहा[6] मागहकुमारस्स णवरं'[7]—उत्तरदिसाभिमुहे जेणेव चुल्लहिम-वंतवासहरपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चुल्लहिमवंतवासहरपव्वयं तिक्खुत्तो रहसिरेणं फुसइ, फुसित्ता तुरए णिगिण्हइ, णिगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता धणुं परामुसइ तहेव जाव[8] आयतकण्णायतं च काऊण उसुमुदारं इमाणि वयणाणि तत्थ भाणीय से णरवई[9]—

गाहा—

हंदि ! सुणंतु भवंतो, बाहिरओ खलु सरस्स जे देवा,
णागासुरा सुवण्णा, तेसिं खु णमो पणिवयामि ॥१॥
हंदि ! सुणंतु भवंतो, अब्भिंतरओ सरस्स जे देवा ।
णागासुरा सुवण्णा° सव्वे मे ते विसयवासी ॥२॥

इतिकट्टु उड्ढं वेहासं उसुं णिसिरइ—

परिगरणिगरियमज्झो[10] •वाउद्धुयसोभमाणकोसेज्जो ।
चित्तेण सोभते धणुवरेण इंदोव्व पच्चक्खं ॥३॥

---

१. भयमत्थित्तिकट्टु (क, ख, त्रि, प, स, हीवृ, आवश्यकचूर्णि पृ० १६६) ।

२. जं० ३।७७-८२ ।

३. सं० पा०—अंतलिक्खपडिवण्णे जाव उत्तर-पुरत्थिमं ।

४. जं० ३।१५-१८ ।

५. जं० ३।१८-२० ।

६. जं० ३।२०-२२ ।

७. तहेव जाव जहा मागहत्थिस्स जाव समुद्दरव-भूयंपि करेमाणे २ (अ, क, ख, त्रि, प, ब, स, पुवृ, शावृ, हीवृ); चिन्हाङ्कितपाठः आवश्यक-चूर्णावुद्धृतजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिपाठानुसारी विद्यते, आदर्शेषु 'तहेव' इति पदानन्तरं 'जाव' पदस्य कापि सार्थकता नानुभूयते ।

८. जं० ३।२४ ।

९. सं० पा०—णरवई जाव सव्वे ।

१०. सं० पा०—परिगरणिगरियमज्झो जाव तए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं चंचलायमाणं, पंचमिचंदोवमं महाचावं ।
छज्जइ वामे हत्थे, णरवइणो तंमि विजयंमि° ॥४॥

१३२. तए णं से सरे भरहेणं रण्णा उड्ढं वेहासं णिसट्ठे समाणे खिप्पामेव बावत्तरिं जोयणाइं गंता चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स मेराए णिवइए ॥

१३३. तए णं से चुल्लहिमवंतगिरिकुमारे देवे मेराए सरं णिवइयं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे[1] •चंडिक्किए कुविए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं णिलाडे साहरइ, साहरित्ता एवं वयासी—केस णं भो! एस अपत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्ण-चाउद्दसे हिरिसिरिपरिवज्जिए, जे णं मम इमाए एयारूवाए दिव्वाए देवड्ढीए दिव्वाए देवजुईए दिव्वेणं देवाणुभावेणं लद्धाए पत्ताए अभिसमण्णागयाए उप्पिं अप्पुस्सुए मेराए सरं णिसिरइत्तिकट्टु सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव से णामाहयके सरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं णामाहयकं सरं गेण्हइ, गेण्हित्ता णामकं अणुप्पवाएइ, णामकं अणुप्पवाएमाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—उप्पन्ने खलु भो! जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं चुल्लहिमवंतगिरिकुमाराणं देवाणं राईणमुवत्थाणियं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भरहस्स रण्णो उवत्थाणियं करेमित्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सव्वोसहिं च मालं गोसीसचंदणं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभर-णाणि य सरं च णामाहयं° दहोदगं च गेण्हइ, गेण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए[2] •तुरियाए चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे सखिंखिणीयाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे° उत्तरेणं चुल्लहिमवंतगिरिमेराए अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी,[3] •अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्ती-किंकरे° अहण्णं देवाणुप्पियाणं उत्तरिल्ले अंतवाले[4] •तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! ममं इमेयारूवं पीईदाणंत्तिकट्टु सव्वोसहिं च मालं गोसीसचंदणं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहयं दहोदगं च उवणेइ ॥

१३४. तए णं से भरहे राया चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स इमेयारूवं पीईदाणं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता चुल्लहिमवंतगिरिकुमारं देवं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता° पडिविसज्जेइ ॥

१३५. तए णं से भरहे राया तुरए णिगिण्हइ, णिगिण्हित्ता रहं परावत्तेइ, परावत्तेत्ता जेणेव उसहकूडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उसहकूडं पव्वयं तिक्खुत्तो रहसिरेणं फुसइ, फुसित्ता तुरए णिगिण्हइ, णिगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता छत्तलं दुवालसंसियं अट्ठकण्णियं अहिगरणिसंठियं सोवण्णियं कागणिरयणं परामुसइ, परामुसित्ता उसभकूडस्स

---

१. सं० पा० रुट्ठे जाव पीइदाणं सव्वोसहिं च मालं गोसीसचंदणं कडगाणि जाव दहोदगं ।
२. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव उत्तरेणं ।
३. सं० पा० विसयवासी जाव अहण्णं ।
४. सं० पा०—अंतवाले जाव पडिविसज्जेइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लंसि कडगंसि णामगं आउडेइ—

गाहा—

ओसप्पिणी[1] इमीसे, तइयाए समाइ पच्छिमे भाए।
अहमंसि[2] चक्कवट्टी, 'भरहो इति'[3] नामधेज्जेणं ।।१।।
अहमंसि[4] पढमराया, इहइं[5] भरहाहिवो णरवरिंदो।
णत्थि महं पडिसत्तू, जियं मए 'भारहं वासं'[6] ।।२।।

इतिकट्टु णामगं आउडेइ, आउडेत्ता रहं परावत्तेइ, परावत्तेत्ता जेणेव विजयखंधावार-णिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[7]—

१३६. तए णं से दिव्वे चक्करयणे चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता[8] •अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहस्ससंपरिवुडे दिव्वतुडियसद्दसण्णिणादेणं पूरेंते चेव अंबरतलं° दाहिणं दिसिं वेयड्ढपव्वयाभिमुहे पयाते यावि होत्था ।।

१३७. तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं दाहिणं दिसिं वेयड्ढपव्वयाभिमुह पयातं चावि पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[9] जेणेव वेयड्ढपव्वए जेणेव वेयड्ढस्स पव्वयस्स उत्तरिल्ले णितंबे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेयड्ढस्स पव्वयस्स उत्तरिल्ले णितंबे दुवालसजोयणायामं णवजोयणविच्छिण्णं वरणगरसरिच्छं विजयखंधावारनिवेसं करेइ जाव[10] पोसहसालं अणुपविसइ[11], •अणुपविसित्ता पोसह-सालं पमज्जइ, पमज्जित्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता° णमिविणमीणं विज्जाहरराईणं अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए[12] •पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले दब्भसंथारो-वगए अट्ठमभत्तिए° णमि-विणमिविज्जाहररायाणो मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ।।

१३८. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि णमि-विणमी विज्जा-हररायाणो दिव्वाए मईए[13] चोइयमई[14] अण्णमण्णस्स अंतियं पाउब्भवंति, पाउब्भवित्ता एवं वयासी—उप्पन्ने खलु भो देवाणुप्पिया! जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे राया चाउरंतचक्क-वट्टी, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं विज्जाहरराईणं चक्कवट्टीणं उवत्थाणियं करेत्तए, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! अम्हेवि भरहस्स रण्णो उवत्थाणियं करेमोत्तिकट्टु विणमी णाऊणं चक्कवट्टिं दिव्वाए मईए चोइयमई माणुम्माणप्पमाणजुत्तं तेयस्सिं रूवलक्खणजुत्तं

---

१. ओसप्पिणीए (त्रि); अत्र षष्ठीलोपः प्राकृतत्वात् (शावृ)।
२. अहतंसि (अ, क, त्रि, ब, स); अहयंमि (आवश्यकचूर्णि पृ० २००); स्वार्थे कप्रत्यये सति अहयं यकारस्य तकारे सति 'अहतं' इति रूपं जातमस्ति।
३. भरहो त्ती (अ, ब); भरहो इय (प)।
४. अहतंसि (अ, क, ख, त्रि, ब, स)।
५. अहयं (प, शावृ, पुवृपा); इहयं (पुवृ)।
६. भरहवासं (अ, ख, ब, स)।
७. जं० ३।२८, २९।
८. सं० पा०—पडिणिक्खमित्ता जाव दाहिणं।
९. जं० ३।१५-१८।
१०. जं० ३।१८-२०।
११. सं० पा०—अणुपविसइ जाव णमि।
१२. सं० पा०—पोसहसालाए जाव णमि।
१३. मदीए (अ, ब)।
१४. चोतितमती (अ, त्रि, ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठियजुव्वणकेसवट्ठियणहं सव्वामयणासणिं[1] बलकरिं इच्छियसीउण्हफासजुत्तं[2]—

गाहा—

'तिसु तणुयं'[3] 'तिसु तंबं'[4] तिवलीणं तिउण्णयं तिगंभीरं।
तिसु कालं तिसु सेयं तियायतं 'तिसु य'[5] विच्छिण्णं ॥१॥

समसरीरं भरहे वासंमि सव्वमहिलप्पहाणं सुंदरथण-जघण[6]-वरकर[7]-चरण[8]-णयण-सिरसिज-दसण-जणहिदयरमण[9]-मणहरिं सिंगारागार[10]•चारुवेसं संगयगय-हसिय-भणिय-चिट्ठिय-विलास- संलाव- णिउण°जुत्तोवयारकुसलं अमरबहूणं, 'सुरूवं रूवेणं अणुहरंति'[11] सुभद्दं भद्दंमि जोव्वणे वट्टमाणिं इत्थीरयणं,[12] णमी य रयणाणि य कडगाणि य तुडियाणिय गेण्हइ, गेण्हित्ता ताए[13] उक्किट्ठाए तुरियाए[14] •चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाए° उद्धुयाए विज्जाहरगईए जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णा सखिंखिणीयाइं[15] •पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिया करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु भरहं रायं°जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं[16] •केवलकप्पे भरहे वासे उत्तरेणं चुल्लहिमवंतगिरिमेराए तं अम्हे णं देवाणुप्पियाणं विसयवासिणो° अम्हे णं देवाणुप्पियाणं आणत्ति-किंकरा तं[17] पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! अम्हं इमं[18] •एयारूवं पीइदाणंतिकट्टु° विणमी इत्थीरयणं, णमी रयणाइं समप्पेइ ॥

१३६. तए णं से भरहे राया[19] •णमि-विणमिविज्जाहरराएहिं इमेयारूवं पीइदाणं पडिच्छइ, पडिच्छत्ता णमि-विणमिविज्जाहररायाणो सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता° पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जाव[20] ससिव्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

---

१. सव्वारोयणासणिं (अ, ब); सव्वरोयणासणिं (ख, त्रि, प, शावृ, हीवृ)।
२. °सीउण्हपएसजुत्तं (अ, ख, ब)।
३. तिण्णि तणुकिं (क) तिण्णि तणु (ख); तिण्णि तणुकं (त्रि); ति तणुकं (स, पुवृ)।
४. ति तंबं (अ, क, ख, त्रि, ब, स, पुवृ)।
५. ति (अ, ब, स, पुवृ); तिण्णि (क, ख, त्रि)।
६. जहणं (अ, क, ख, त्रि, ब, स)।
७. वदणकर (क, ख, स, पुवृ)।
८. चलण (अ, त्रि, ब)।
९. °हियय°(अ, त्रि, प, ब); °हितय °(क, स)' °हृदय° (ख)।
१०. सं० पा०—सिंगारागार जाव जुत्तोवयारकुसलं।
११. सुरूवरूवेणं अणुहरंती (अ, क, ख, त्रि, ब, स, पुवृ. हीवृ)।
१२. विणमी इत्थियरयणं (अ, क, ख, त्रि, ब, स, पुवृ, हीवृ, आवश्यक चूर्णि पृ० २००)।
१३. जाव ताए (अ, क, ख, त्रि, ब, स, पुवृ, हीवृ) एतत्पदं लिपिदोषादागतं सम्भाव्यते।
१४. सं० पा०—तुरियाए जाव उद्धुयाए।
१५. सं० पा०—सखिंखिणीयाइं जाव जएणं।
१६. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव अम्हे।
१७. इतिकट्टु तं (अ, क, ख, त्रि, प, ब, स)।
१८. सं० पा०—इमं जाव विणमी।
१९. सं० पा०—राया जाव पडिविसज्जेइ।
२०. जं० ३।९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ जाव[1] णमि-विणमीणं विज्जाहरराईणं अट्ठाहियमहामहिमं करेंति ।।

१४०. तए णं से दिव्वे चक्करयणे आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता[2] •अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहस्ससंपरिवुडे दिव्वतुडियसद्दसण्णिणादेणं पूरेंते चेव अंबरतल° उत्तरपुरत्थिमं दिसिं गंगादेवी भवणाभिमुहे पयाए यावि होत्था ।।

१४१. [3]•तए णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं उत्तरपुरत्थिमं दिसिं गंगादेवी-भवणाभिमुहं पयातं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए तहेव जाव[4] जेणेव गंगाए देवीए भवणं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गंगाए देवीए भवणस्स अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णवजोयणविच्छिण्णं वरणगरसरिच्छं विजयखंधावारणिवेसं करेइ, करेत्ता वड्ढइरयणं सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मम आवासं पोसहसालं च करेहि, करेत्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।।

१४२. तए णं से वड्ढइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता भरहस्स रण्णो आवसहं पोसहसालं च करेइ, करेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणति ।।

१४३. तए णं से भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव पोसहसालं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविसइ अणुपविसित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता गंगाए देवीए अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले दब्भसंथारोवगए अट्ठमभत्तिए गंगादेविं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ।।

१४४. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि गंगाए देवीए आसणं चलइ ।।

१४५. तए णं सा गंगा देवी आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता भरहं रायं ओहिणा आभोएइ. आभोएत्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—उप्पन्ने खलु भो ! जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासे भरहे णामं राया चाउरंतचक्कवट्टी, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं गंगाणं देवीणं भरहाणं राईणं उवत्थाणियं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भरहस्स रण्णो उवत्थाणियं करेमित्तिकट्टु कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगसीहासणाणि य कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य

१. जं० ३।२८, २६ ।

२. सं० पा०—पडिणिक्खमित्ता जाव उत्तरपुरत्थिमं ।

३. सा चेव (क, ख, त्रि, स); सं० पा०—सच्चेव सव्वा सिंधुवत्तव्वया जाव णवरं कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगसीहासणाइं सेसं तं चेव जाव महिमत्ति ।

४. जं° ३।१५-१८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गेण्हइ, गेण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणी-वीईवयमाणी जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवण्णा सखिंखिणीयाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिया करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासिणी अहण्णं देवाणुप्पियाणं आणत्ति-किंकरी, तं पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! मम इमं एयारूवं पीइदाणंतिकट्टु कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगसीहासणाणि य कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य उवणेइ ।।

१४६. तए णं से भरहे राया गंगाए देवीए इमेयारूवं पीइदाणं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता गंगं देविं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

१४७. तए णं से भरहे राया पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जाव[1] जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ, पारेत्ता भोयणमंडवाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसीइत्ता अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धयमुइंगं अमिलायमल्ल-दामं पमुइयपक्कीलिय-सपुरजणजाणवयं विजयवेजइयं गंगाए देवीए अट्ठाहियं महामहिमं करेह, करेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

१४८. तए णं ताओ अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठतुट्ठाओ जाव अट्ठाहियं महामहिमं करेंति, करेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति° ।।

१४९. तए णं से दिव्वे चक्करयणे गंगाए देवीए अट्ठाहियाए महामहिमाए निव्वत्ताए समाणीए आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता[2] °अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहस्ससंपरिवुडे दिव्वतुडियसद्दसण्णिणादेणं पूरेंते चेव अंबरतलं° गंगाए महाणईए पच्चत्थिमिल्लेणं कूलेणं दाहिणदिसिं खंडप्पवायगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था ।।

१५०. तते णं से भरहे राया तं दिव्वं चक्करयणं गंगाए महाणईए पच्चत्थिमिल्लेणं कूलेणं दाहिणदिसिं खंडप्पवायगुहाभिमुहं पयातं चावि पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणं-दिए जाव[3] जेणेव खंडप्पवायगुहा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सव्वा कयमालक-वत्तव्वया णेयव्वा, णवरि—णट्टमालगे देवे, पीतिदाणं से आलंकारियभंडं कडगाणि य, सेसं सव्वं तहेव जाव[4] अट्ठाहिया महामहिमा ।।

१५१. तए णं से भरहे राया णट्टमालगस्स देवस्स अट्ठाहियाए महामहिमाए

१. जं० ३।२८ ।
२. सं० पा०—पडिणिक्खमित्ता जाव गंगाए ।
३. जं० ३।१५-१८ ।
४. जं० ३।६९-७५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिव्वत्ताए समाणीए सुसेणं सेणावइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छाहि णं भो देवाणुप्पिया ! गंगाए महाणईए पुरत्थिमिल्लं णिक्खुडं सगंगासागरगिरिमेरागं समविसम-णिक्खुडाणि य ओयवेहि, ओयवेत्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छाहि, पडिच्छित्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि जाव सिंधुगमो णेयव्वो जाव[1] तओ महाणइमुत्तरित्तु गंगं अप्पडिहयसासणे य सेणावई गंगाए महाणईए पुरत्थिमिल्लं णिक्खुडं सगंगासागरगिरि-मेरागं समविसमणिक्खुडाणि य ओयवेइ, ओयवेत्ता अग्गाणि वराणि रयणाणि पडिच्छइ, पडिच्छित्ता जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोच्चं पि सखंधावारबले गंगामहाणइं विमलजलतुंगवीइं णावाभूएणं चम्मरयणेणं उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव भरहस्स रण्णो विजयखंधावारणिवेसे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं[2] °सिरसावत्तं मत्थए° अंजलिं कट्टु भरहं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता अग्गाइं वराइं रयणाइं उवणेइ ।।

१५२. तए णं से भरहे राया सुसेणस्स सेणावइस्स अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुसेणं सेणावइं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

१५३. तए णं से सुसेणे सेणावई भरहस्स रण्णो 'अंतियाओ पडिणिक्खमति, पडि-णिक्खमित्ता जेणेव सए आवासे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरमणुपविसति अणुपविसित्ता ण्हाए[4], सेसंपि तहेव जाव[5] विहरइ ।।

१५४. तए णं से भरहे राया अण्णया कयाइ सुसेणं सेणावइरयणं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छण्णं भो देवाणुप्पिया ! खंडगप्पवायगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि, विहाडेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।।

१५५. तए णं से सुसेणे सेणावई जहा तिमिसगुहाए तहा भाणियव्वं जाव[1] दंडरयणं गहाय सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता खंडप्पवायगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडे दंडरयणेणं महया-महया सद्देणं तिखुत्तो आउडेइ ।।

१५६. तए णं खंडप्पवायगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सुसेणसेणावइणा दंड-रयणेणं महया-महया सद्देणं तिक्खुत्तो आउडिया समाणा महया-महया सद्देणं कोंचारवं करेमाणा सरसरस्स सगाइं-सगाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था ।।

१५७. तए णं से सुसेणे सेणावई खंडप्पवाहगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेइ, विहाडेत्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भरहं रायं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—विहाडिया णं देवाणुप्पिया ! खंडप्पवायगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडा,

---

१. जं० ३।७७-८१ ।
२. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव अंजलिं ।
३. चिन्हाङ्कितः पाठो हीरविजयवृत्तिमनुसृत्यादृतोस्ति ।
४. जं० ३।८२; हीवृ पत्र २७२ ।
५. जं० ३।८४-८८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एयण्णं देवाणुप्पियाणं पियं णिवेदेमो, पियं भे भवउ, सेसं तहेव जाव[1] भरहो उत्तरिल्लेणं दुवारेणं अईइ ससिव्व मेहंधकारनिवहं ॥

१५८. [2]•तए णं से भरहे राया छत्तलं दुवालसंसियं अट्ठकण्णियं अहिगरणिसंठियं अट्ठसोवण्णियं कागणिरयणं परामुसइ ॥

१५६. तए णं तं चउरंगुलप्पमाणमित्तं अट्ठसुवण्णं च विसहरणं अउलं चउरंससंठाण-संठियं समतलं, माणुम्माणजोगा जतो लोगे चरंति सव्वजणपण्णवगा, णवि चंदो णवि तत्थ सूरो णवि अग्गी णवि तत्थ मणिणो तिमिरं णासेंति अंधकारे, जत्थ तकं दिव्वप्पभावजुत्तं दुवालसजोयणाइं तस्स लेसाओ विवड्ढंति तिमिरणिगरपडिसेहियाओ, रत्तिं च सव्वकालं खंधावारे करेइ आलोयं दिवसभूयं जस्स पभावेण चक्कवट्टी, खंडप्पवायगुहमतीति सेण्ण-सहिए रायपवरे कागणिं गहाय खंडप्पवायगुहाए पच्चत्थिमिल्ल-पुरत्थिमिल्लेसु कडएसु जोयणंतरियाइं पंचधणुसयायामविक्खंभाइं जोयणुज्जोयकराइं चक्कणेमीसंठियाइं चंदमंडल-पडिणिकासाइं एगूणपण्णं मंडलाइं आलिहमाणे-आलिहमाणे अणुप्पविसइ ॥

१६०. तए णं सा खंडप्पवायगुहा भरहेणं रण्णा तेहिं जोयणंतरिएहिं पंचधणुसया-यामविक्खंभेहिं जोयणुज्जोयकरेहिं एगूणपण्णाए मंडलेहिं आलिहिज्जमाणेहिं-आलिहिज्ज-माणेहिं खिप्पामेव आलोगभूया उज्जोयभूया दिवसभूया जाया यावि होत्था° ॥

१६१. तीसे णं खंडगप्पवायगुहाए[3] बहुमज्झदेसभाए[4] •एत्थ णं° उम्मुग्ग-णिमुग्ग-जलाओ णामं दुवे महाणईओ[5] •पण्णत्ताओ, जाओ णं खंडप्पवायगुहाए° पच्चत्थिमिल्लाओ कडगाओ पवूढाओ समाणीओ पुरत्थिमेणं गंगं महाणइं समप्पेंति, सेसं तहेव णवरि— पच्चत्थिमिल्लेणं कूलेणं गंगाए संकमवत्तव्वया तहेव[6] ॥

१६२. तए णं तीसे खंडगप्पवायगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सयमेव महया-महया° कोंचारवं करेमाणा-करेमाणा सरसरस्स सगाइं-सगाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था ॥

१६३. तए णं से भरहे राया चक्करयणदेसियमग्गे[7] •अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे महयाउक्किट्ठिसीहणायबोलकलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयंपिव करेमाणे-करेमाणे° खंडगप्पवायगुहाओ दक्खिणिल्लेणं दारेणं णीणेइ ससिव्व मेहंधकारनिवहाओ ॥

१६४. तए णं से भरहे राया गंगाए महाणईए पच्चत्थिमिल्ले कूले दुवालसजोयणायामं णवजोयणविच्छिण्णं[8] •वरणगरसरिच्छं° विजयखंधावारणिवेसं करेइ[9], •करेत्ता वड्ढइरयणं, सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! मम आवासं पोसहसालं च

१. जं० ३।६१-६३ ।
२. सं० पा०—तहेव पविसंतो मंडलाइं आलिहइ ।
३. खंडप्पवाय° (क,ख) ।
४. सं० पा०—बहुउज्झदेसभाए जाव उमुग्ग° । यावत्करणात् 'एत्थ णं' इति पदमात्रमेव (हीवृ) ।
५. सं० पा०—महाणइओ तहेव णवरं पच्चत्थि-मिल्लाओ ।
६. जं० ३।६८-१०१ ।
७. सं० पा०—चक्करयणदेसियमग्गे जाव खंड-गप्पवायगुहाओ ।
८. सं० पा०—णवजोयणविच्छिण्णं जाव विजय-खंधावारणिवेसं ।
९. सं० पा०—करेइ अवसिट्ठं तं चेव जाव निहिरयणाणं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करेहि, करेत्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥

१६५. तए णं से वड्ढइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता भरहस्स रण्णो आवसहं पोसहसालं च करेइ, करेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणति ॥

१६६. तए णं से भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता° निहिरयणाणं अट्ठमभत्तं पगिण्हइ ॥

१६७. तए णं से भरहे राया पोसहसालाए[1] °पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले दब्भसंथारोवगए अट्ठमभत्तिए° णिहिरयणे मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ, तस्स य अपरिमियरत्तरयणा धुवमक्खयमव्वया[2] सदेवा[3] लोकोपचयंकरा[4] उवगया णव णिहिओ लोगविस्सुयजसा, तं जहा—

गाहा—

नेसप्पे पंडुयए, पिंगलए सव्वरयण[5] महापउमे[6] ।
काले य महाकाले, माणवग महानिही संखे ॥१॥
णेसप्पंमि णिवेसा, गामागरणगरपट्टणाणं च ।
दोणमुहमडंवाणं, खंधावारावणगिहाणं[7] ॥२॥
गणियस्स य[8] उप्पत्ती[9], माणुम्माणस्स जं पमाणं च ।
धण्णस्स य बीयाण य, उप्पत्ती पंडुए भणिया ॥३॥
सव्वा आभरणविही, पुरिसाणं जा य होइ महिलाणं ।
आसाण य हत्थीण य, पिंगलगणिहिंमि सा भणिया ॥४॥
रयणाइं सव्वरयणे, 'चोद्दस पवराइं'[10] चक्कवट्टिस्स ।
'उप्पज्जंतेगिंदियाइं पंचिंदियाइं च'[11] ॥५॥

---

१. सं० पा०—पोसहसालाए जाव णिहिरयणे ।
२. धुयमक्ख° (क,प) ।
३. सद्देवा (अ,ब); सदिव्वा (क,ख,त्रि,स, पुवृ, हीवृ); सदेवा (हीवृपा) ।
४. लोगपव्वयंकरा (पुवृपा) ।
५. सव्वरयणे (अ,क,ख,त्रि,ब) ।
६. महपउमे (अ,ब,स) ।
७. खंधाराणं गिहाणं च (ठाणं ६।२२।२) ।
८. उ (अ,ब) ।
९. क्वचित् गणियस्स य बीयाणं ति पाठः क्वचित् गीयाणं ति पाठः (पुवृ); बीयाणं (ठाणं ६।२२।३) ।
१०. चोद्दसवि वराइं (अ,क,ख,प,ब,स,शावृ) ।
११. उप्पज्जंते पंचिंदियाइं एगिंदियाइं च (क,ख, स, आवश्यकचूर्णि पृ० २०२); उप्पज्जंत एगिंदियाइं° (प); उप्पज्जंति एगिंदियाइं° (ठाणं ६।२२।५) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वत्थाण य उप्पत्ती, णिप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं ।
रंगाण य धोव्वाण[1] य, सव्वाएसा महापउमे ॥६॥
काले कालण्णाणं, भव्वपुराणं च तिसुवि वासेसु[2] ।
सिप्पसयं कम्माणि य, तिण्णि पयाए हियकराणि ॥७॥
लोहस्स य उप्पत्ती, होइ महाकाले[3] आगराणं च ।
रुप्पस्स सुवण्णस्स य, मणि-मोत्ति[4]-सिल-प्पवालाणं ॥८॥
जोहाण य उप्पत्ती, आवरणाणं च पहरणाणं च ।
सव्वा य[5] जुद्धणीई, माणवगे दंडणीई य ॥९॥
णट्टविही णाडगविही, कव्वस्स[6] चउव्विहस्स उप्पत्ती ।
संखे महाणिहिंमी, तुडियंगाणं च सव्वेसिं ॥१०॥
चक्कट्ठपइट्ठाणा, अट्ठुस्सेहा य णव य विक्खंभे[7] ।
बारसदीहा मंजूससंठिया जण्हवीइमुहे ॥११॥
वेरुलियमणिकवाडा, कणगमया विविहरयणपडिपुण्णा ।
ससिसूरचक्कलक्खण[8], अणुसमवयणोववत्तीया[9] ॥१२॥
पलिओवमट्ठिईया, णिहिसरिणामा य तेसु[10] खलु देवा ।
जेसिं ते आवासा, अक्किज्जा[11] आहिवच्चा य ॥१३॥
'एए णव णिहिरयणा'[12], पभूयधणरयणसंचयसमिद्धा ।
जे वसमुपगच्छंति[13], भरहाहिवचक्कवट्टीणं ॥१४॥

१६८. तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, एवं मज्जणघरपवेसो जाव[14] [15]•अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कोलिय-सपुरजणजाणवयं विजयवेजइयं निहिरयणाणं अट्ठाहियं महामहिमं करेह, करेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

---

१. धाऊण (पुवृपा); धोयाण (ठाणं ९।२२।६)।
२. वंसेसु (क,ख,त्रि,प,स,पुवृ,शावृ); वासेसु (पुवृपा)।
३. महाकालि (त्रि,प, स, आवश्यकचूर्णि पृ० २०२)।
४. मुत्त (प,स)।
५. उ (क,ख,स)।
६. कव्वस्स य (अ,त्रि,प,ब, आवश्यकचूर्णि पृ० २०२)।
७. विक्खंभा (त्रि,ब)।
८. प्रथमा बहुवचनलोपः प्राकृतत्वात् (शावृ)।
९. अणुवमवयणोववत्तीया (हीवृपा); अणुसमजुगबाहुवयणा य (ठाणं ९।२२।११)।
१०. तत्थ (प); तत्र (शावृ)।
११. अक्खेज्जा (अ, त्रि, ब, हीवृ); अक्केज्जा (हीवृपा, आवश्यकचूर्णि पृ० २०३)।
१२. एए ते णवणिहिणो (ठाणं ९।२२।१४)।
१३. वसमणुगच्छंति (अ,क,ख,त्रि,ब,स,हीवृ, आवश्यकचूर्णि पृ० २०३)।
१४. जं० ३।५८।
१५. सं० पा०—सेणिपसेणिसद्दावणया जाव णिहिरयणाणं अट्ठाहियं महामहिमं करेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६९. तए णं ताओ अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ भरहेणं रण्णा एवं वुत्ताओ समाणीओ हट्ठतुट्ठाओ जाव अट्ठाहियं महामहिमं करेंति, करेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति° ।।

१७०. तए णं से भरहे राया णिहिरयणाणं अट्ठाहियाए महामहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए सुसेणं सेणावइरयणं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छण्णं भो देवाणुप्पिया ! गंगामहाणईए पुरत्थिमिल्लं णिक्खुडं दोच्चंपि सगंगासागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि य ओयवेहि, ओयवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।।

१७१. तए णं से सुसेणे तं चेव पुव्ववण्णियं भाणियव्वं जाव ओयवित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणइ, पडिविसज्जिए[1] जाव[2] भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।।

१७२. तए णं से दिव्वे चक्करयणे अण्णया कयाइ आउहघरसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसहस्ससंपडिवुडे दिव्वतुडिय[3]•सद्दसण्णिणाएणं° आपूरेंते चेव अंबरतलं विजयखंधावारणिवेसं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं विणीयं रायहाणिं अभिमुहे पयाए यावि होत्था ।।

१७३. तए णं से भरहे राया[4] •तं दिव्वं चक्करयणं दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं विणीयाए रायहाणीए अभिमुहं पयातं चावि° पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[5]-•चित्तमाणंदिए नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए° कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं[6] •हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेण्णं सण्णाहेह, एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

१७४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा° जाव[7] पच्चप्पिणंति ।।

१७५. तए णं से भरहे राया अज्जियरज्जो णिज्जियसत्तू 'उप्पन्नसमत्तरयणे चक्करयणप्पहाणे'[8] 'णवणिहिवई समिद्धकोसे'[9] बत्तीसरायवरसहस्साणुयायमग्गे सट्ठीए वरिससहस्सेहिं केवलकप्पं भरहं वासं ओयवेइ, ओयवेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हय-गय-रह[10]-•पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेण्णं सण्णाहेह, एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

१७६. तए णं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ।

१७७. तए णं से भरहे राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे तहेव जाव धवलमहामेह णिग्गए इव गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससिव्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता हय-गय-रह-पवरवाहण-भड-चडगर-पहकरसंकुलाए सेणाए पहियकित्ती जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव

---

१. पडिविसज्जेइ (प) ।

२. जं० ३।१५१-१५३ ।

३. सं० पा०—दिव्वतुडिय जाव आपूरेंते ।

४ सं० पा०—राया जाव पासइ ।

५. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबिय° ।

६. सं० पा०—आभिसेक्कं जाव पच्चप्पिणंति ।

७. जं० ३।८,१७३ ।

८. °समत्तरयणचक्करयण° (अ,क,ख,ब,स,पुवृ,हीवृ आवश्यकचूर्णि पृ० २०३) ।

९. णवणिहिसमिद्धकोसे (आवश्यकचूर्णि पृ० २०३) ।

१०. सं० पा०—हयगयरह तहेव अंजणगिरि° ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवइं णरवई दुरुढे ॥

१७८. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरुढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया[1] तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ[2]-•णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-मच्छ-कलस°-दप्पणे[3]। तयणंतरं[4] च णं पुण्णकलसभिंगारं 'दिव्वा य छत्तपडागा'[5] •सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा वाउद्धय-विजयवेजयंती य ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए° संपट्ठिया[6]। तयणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमलदंडं[7] •पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभियं चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं वरमणिरयणपादपीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं बहुकिंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्तपरिक्खित्तं पुरओ° अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं। तयणंतरं च णं सत्त एगिंदियरयणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं जहा—चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे दंडरयणे असिरयणे मणिरयणे कागणिरयणे[8]। तयणंतरं च णं णव महाणिहिओ[9] पुरओ अहाणु-पुव्वीए संपट्ठिया, तं जहा—णेसप्पे पंडुयए[10] •पिंगलए सव्वरयणे महापउमे काले महाकाले माणवगे° संखे। तयणंतरं च णं सोलस देवसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयणंतरं च णं बत्तीसं रायवरसहस्सा[11] अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयणंतरं च णं सेणावइरयणे पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिए। एवं गाहावइरयणे वड्ढइरयणे पुरोहियरयणे[12]। तयणंतरं च णं इत्थिरयणे पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिए। तयणंतरं च णं बत्तीसं उडुकल्लाणियासहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयणंतरं च णं बत्तीसं जणवयकल्लाणियासहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयणंतरं च णं बत्तीसं[13] बत्तीसइबद्धा णाडगसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयणंतरं च णं तिण्णि सट्ठा सूयसया पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयणंतरं च णं अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियाओ। तयणंतरं च णं चउरासीइं आससयसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयणंतरं च णं चउरासीइं हत्थिसयसहस्सा[14] पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। 'तयणंतरं च णं चउरासीइं रहसयसहस्सा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया'[15]। तयणंतरं च णं छण्णउई मणुस्सकोडीओ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियाओ। तयणंतरं च णं बहवे राईसर[16]-तलवर[17]-•माडंबिय-कोडुंबिय-

१. संपडिया (अ,ख)।
२. सं० पा०—सिरिवच्छ जाव दप्पणे।
३. दप्पण (क,ख,स)।
४. तदाणंतरं (अ,ख,त्रि,ब) प्रायः सर्वत्र।
५. दिव्वायवत्तपडागा (राय० सू० ५०); सं० सं० पा०—°छत्तपडागा जाव संपट्ठिया।
६. संपत्थिया (क,ख,त्रि,स, आवश्यकचूर्णि पृ० २०४) प्रायः सर्वत्र।
७. सं० पा०—विमलदंडं जाव अहाणुपुव्वीए।
८. काकिणि° (अ,ब)।
९. °निहितो (अ,त्रि,ब); °निहओ (ख,स)।
१०. सं० पा०—पंडुयए जाव संखे।
११. रायसहस्सा (अ, क, ख, ब, स)।
१२. पुरोहितरत्नं—शांतिकर्मकृत्, रणे प्रहाराद्दितानां मणिरत्नजलच्छटया वेदनोपशामकम् (शावृ)।
१३. × (अ, त्रि, ब)।
१४. दंतिसयसहस्सा (क, आवश्यकचूर्णि पृ० २०४)।
१५. × (प, शावृ)।
१६. रादीसर (आवश्यक चूर्णि पृ० २०४)।
१७. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह°।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितओ[1] पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयणंतरं च णं बहवे असि-लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा[2] चावग्गाहा चामरग्गाहा पीढग्गाहा[3] पासग्गाहा[4] फलगग्गाहा[5] पोत्थगग्गाहा वीणग्गाहा[6] कूवग्गाहा[7] हडप्पग्गाहा दीवियग्गाहा – सएहिं-सएहिं रूवेहिं, एवं वेसेहिं चिंधेहिं[8] निओएहिं सएहिं-सएहिं नेवत्थेहिं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया[9]। तयणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो 'सिहंडिणो जडिणो पिच्छिणो'[10] हासकारगा खेड्डकारगा दवकारगा[11] चाडुकारगा कंदप्पिया कोकुइया मोहरिया गायंता य वायंता य नच्चंता य हसंता य रमंता य कीलंता य 'सासेंता य'[12] सावेंता[13] य जावेंता य रावेंता य सोभेंता य सोभावेंता य 'आलोयंता य'[14] जयजयसद्दं च पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया[15]। [16]•तयणंतरं च णं जच्चाणं[17] तरमल्लिहायणाणं[18] हरिमेलामउल-मल्लिअच्छीणं चंचुच्चिय-ललिय-पुलिय-चल-चवल-चंचलगईणं लंघण-वग्गण-धावण-धोरण-तिवइ-जइण-सिक्खियगईणं ललंत-लाम-गललाय-वरभूसणाणं मुहभंडग-ओचूलग-थासग-अहिलाण[19]-चमरीगंडपरिमंडियकडीणं किंकरवरतरुणपरिग्गहियाणं अट्ठसयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं। तयणंतरं च णं ईसिदंताणं ईसिमत्ताणं ईसितुंगाणं[20] ईसिउच्छंगविसाल[21]-धवलदंताणं कंचणकोसी-पविट्ठदंताणं कंचणमणिरयणभूसियाणं वरपुरि-सारोहगसंपउत्ताणं अट्ठसयं गयाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं। तयणंतरं च णं सच्छत्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं[22] सनंदिघोसाणं सखिंखिणीजालपरिक्खित्ताणं[23]

---

१. °प्पभिइओ (क,ख,त्रि,स)।

२. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ); कुंतग्गाहा (पुवृपा)।

३. × (अ,क,ख,चि,प,ब,स,पुवृ); पीढगग्गाहा (पुवृपा)।

४. × (अ,क,ख,ब,पुवृ); पासग्गाहा (पुवृपा)।

५. फलगग्गाहा परसुग्गाहा (ख)।

६. × (अ,ब)।

७. कूयग्गाहा (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स)।

८. विविहेहिं (अ,ब,पुवृ); चिंधेहिं (पुवृपा)।

९. अबद्धसूत्रे च पदानि न्यूनाधिकान्यपि लिपि-प्रमादात् सम्भवेयुरिति तन्नियमार्थं सङ्ग्रह-गाथा सूत्रबद्धा क्वचिदादर्शे दृश्यते, यथा—
असिलट्ठिकुंतचावे, चामरपासे य फलगपोत्थे य।
वीणाकूवग्गाहे, तत्तो य हडप्पगाहे य ॥१॥ (शावृ)।

१०. पिच्छिणो जडिणो सिखंडिणो (अ,क,ख,त्रि, ब, पुवृ)।

११. क्वचित् 'डमरकरा' इति दृश्यते (पुवृ)।

१२. × (अ,क,ख,त्रि,ब)।

१३. भावेंता (क,त्रि)।

१४. ओलोयं च केइ (अ,ब, पुवृ); आलोयंता य (पुवृपा)।

१५. इहागमे क्वचिदादर्शे न्यूनाधिकान्यपि पदानि दृश्यन्ते (शावृ)।

१६. सं० पा० —एवं ओववाइयगमेणं जाव तस्स। अस्य संक्षिप्तपाठस्य पूर्तिः हीरविजयशान्ति-चन्द्रकृतवृत्त्योस्तथा औपपातिकसूत्रपाठ (सू ६४) मनुसृत्य कृतास्ति।

१७. × (शावृ)।

१८. वरमल्लिभासणाणं (शावृपा)।

१९. अभिलाण (हीवृ, ओ० सू० ६४ वाचनान्तरम्)।

२०. × (हीवृ)।

२१. ईसिउच्छंगउन्नयविसाल (शावृ)।

२२. सतोरणाणं (हीवृ)।

२३. सखिंखिणीहेमजाल° (हीवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेमवयचित्ततिणिसकणगणिजुत्तदारुगाणं कालायससुकयणेमिजंतकम्माणं सुसिलिट्ठवत्त-मंडलधुराणं[1] आइण्णवरतुरगसुसंपउत्ताणं कुसलणरच्छेयसारहिसुसंपग्गहियाणं बत्तीसतोण-परिमंडियाणं सकंकडवडेंसगाणं सचावसरपहरणावरणभरियजुद्धसज्जाणं अट्ठसयं रहाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं। तयणंतरं च णं असि-सत्ति-कुंत-तोमर-सूल-लउल-भिंडिमाल-धणु-पाणिसज्जं पायत्ताणीयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ॥

१७९. तए णं° तस्स भरहस्स रण्णो पुरओ महआसा आसधरा[2], उभओ पासिं णागा णागधरा[3], पिट्ठओ रहा[4] रहसंगेल्ली अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ॥

१८०. त णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थयसुकयरइयवच्छे[5] •कुंडलउज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसभे मरुयरायवसभकप्पे अब्भहियरायतेय-लच्छीए दिप्पमाणे पसत्थमंगलसएहिं संथुव्वमाणे जयसद्दकयालोए हत्थिखंधवरगए सकोरंट-मल्लदामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं जक्खसहस्ससंपरिवुडे वेसमणे चेव धणवई° अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती चक्करयणदेसियमग्गे अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे[6] •महयाउक्किट्ठिसीहणायबोलकल-कलरवेणं पक्खुभियमहा° समुद्दरवभूयं पिव करेमाणे-करेमाणे सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए[7] सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वायरेणं सव्वविभूसाए सव्वविभूईए सव्ववत्थ-पुप्फ-गंध-मल्लालंकारविभूसाए सव्वतुरियसद्दसण्णिणाएणं महया इड्ढीए जाव महया वरतुरिय-जमगसमगपवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-मुरव-मुइंग-दुंदुहि°णिग्घोस-णाइयरवेणं गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब[8]-•दोणमुह-पट्टणासम-संबाहसहस्समंडियं थिमियमेइणीयं वसुहं अभिजिणमाणे-अभिजिणमाणे अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे तं दिव्वं चक्करयणं अणुगच्छमाणे-अणुगच्छमाणे° जोयणंतरियाहिं वसहीहिं वसमाणे-वसमाणे जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विणीयाए राय-हाणीए अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णवजोयणविच्छिण्णं[9] °वरणगरसरिच्छं विजय°-खंधावारणिवेसं करेइ, करेत्ता वड्ढइरयणं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता[10] °एवं वयासी —खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! मम आवासं पोसहसालं च करेहि, करेत्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥

१८१. तए णं से वड्ढइरयणे भरहेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता

---

१. सुसिलिट्ठचक्कमंडल° (हीवृ)।
२. आसवरा (पुवृ, हीवृपा); आसधरा (पुवृपा)।
३. णागवरा (पुवृ, हीवृपा); णागधरा (पुवृपा)।
४. × (ओ० सू० ६६)।
५. सं० पा०—हारोत्थयसुकयरइयवच्छे जाव अमरवइ°।
६. सं० पा०—अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे जाव समुद्दरव°।
७. सं० पा०—सव्वज्जुईए जाव णिग्घोसणाइयर-वेणं।
८. सं० पा०—मडंब जाव जोयणंतरियाहिं।
९. सं० पा०—णवजोयणविच्छिण्णं जाव खंधावारणिवेसं।
१०. सं० पा०—सद्दावेत्ता जाव पोसहसालं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भरहस्स रण्णो आवसहं पोसहसालं च करेइ, करेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणति ॥

१८२. तए णं से भरहे राया आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता विणीयाए रायहाणीए अट्ठमभत्तं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता[1] •पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी उम्मुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले दब्भसंथारोवगए एगे अबीए° अट्ठमभत्तं पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥

१८३. तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह जाव[2] तहेव अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवइं णरवई दुरुढे, तं चेव सव्वं जहा हेट्ठा णवरि णव महाणिहिओ चत्तारि सेणाओ ण पविसंति, सेसो सो चेव गमो जाव[3] णिग्घोसणाइयरवेणं विणीयाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव भवणवरवडेंसगपडिदुवारे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

१८४. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो विणीयं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसमाणस्स अप्पेगइया देवा विणीयं रायहाणिं सब्भंतरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं करेंति, अप्पेगइया मंचाइमंचकलियं[4] करेंति[5], अप्पेगइया णाणाविहरागवसणुस्सियधयपडागाइपडागामंडितं करेंति, अप्पेगइया लाउल्लोइयमहियं करेंति, अप्पेगइया गोसीससरसरत्तदद्दरदिण्णपंचंगुलितलं जाव[6] गंधवट्टिभूयं करेंति, अप्पेगइया हिरण्णवासं वासंति, अप्पेगइया सुवण्ण-रयण-वइर[7]-आभरणवासं वासंति ॥

१८५. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो विणीयं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसमाणस्स सिंघाडग[8]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह°-महापह-पहेसु बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया इड्ढिसिया[9] किब्बिसिया[10] कारोडिया कारभारिया[11] संखिया चक्किया णंगलिया मुहमंगलिया पूसमाणया वद्धमाणया लंखमंखमाइया ताहिं ओरालाहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं वग्गूहिं अणवरयं[12] 'अभिणंदंता य अभिथुणंता य'[13] एवं वयासी—जय-जय नंदा! जय-जय भद्दा! 'जय-जय नंदा!'[14] भद्दं ते, अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि, इंदो विव देवाणं, चंदो विव ताराणं, चमरो

१. सं० पा० —पगिण्हित्ता जाव अट्ठमभत्तं ।
२. जं० ३।१७५-१७७ ।
३. जं० ३।१७८-१८० ।
४. आदर्शेषु अत्र बहूनि विशेषणानि संक्षेपेण लिखितानि सन्ति ।
५. करेंति एवं सेसेसुवि पएसु (क,ख,स,हीवृ,पुवृ) ।
६. जं० ३।७ ।
७. वतिर (अ,त्रि,ब) ।
८. सं० पा० —सिंघाडग जाव महापह° ।
९. रिड्ढिसिया (ख) ।
१०. × (अ,ब); किट्टिसिया (क,ख,हीवृपा) ।
११. कारतारिया (अ); कारवाहिया (प, शावृ, पुवृपा, हीवृपा, ओ० सू० ६८) ।
१२. अणुवरतं (अ,क,ख,प,ब) ।
१३. क्वचिदनयोः पादयोर्व्यत्ययो दृश्यते (पुवृ) ।
१४. × (प, शावृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विव असुराणं, धरणो विव नागाणं, बहूइं पुव्वसयसहस्साइं बहूईओ पुव्वकोडीओ बहूईओ पुव्वकोडाकोडीओ विणीयाए रायहाणीए चुल्लहिमवंतगिरिसागरमेरागस्स य केवलकप्पस्स भरहस्स वासस्स गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-सण्णिवेसेसु सम्मं पयापालणोवज्जियलद्धजसे महया[1] •हयणट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे° विहराहित्तिकट्टु जयजयसद्दं पउंजंति ॥

१८६. तए णं से भरहे राया णयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे-पेच्छिज्जमाणे वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे-अभिथुव्वमाणे हिययमालासहस्सेहिं उण्णंदिज्जमाणे[2]-उण्णंदिज्जमाणे मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे कंतिरूवसोहग्गगुणेहिं[3] पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे अंगुलिमालासहस्सेहिं दाइज्जमाणे-दाइज्जमाणे दाहिणहत्थेणं बहूणं णरणारीसहस्साणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे भवणपंतिसहस्साइं समइच्छमाणे[4]-समइच्छमाणे तंती-तल-ताल-तुडिय-गीय-वाइयरवेणं मधुरेणं मणहरेणं मंजुमंजुणा घोसेणं अपडिबुज्झमाणे[5]-अपडिबुज्झमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव सए भवणवर-वडेंसयदुवारे तेणेव उवागच्छइ[6], भवणवरवडेंसयदुवारे आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ, ठवेत्ता आभिसेक्काओ[7] हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता सोलस देवसहस्से[8] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता बत्तीसं रायसहस्से सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता सेणावइरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं गाहावइरयणं वड्ढइरयणं पुरोहियरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तिण्णि सट्ठे सूयसए सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता अण्णे वि बहवे राईसर[9]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितओ[10] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ, इत्थीरयणेणं, बत्तीसाए उडुकल्लाणियासहस्सेहिं, बत्तीसाए जणवयकल्लाणियासहस्सेहिं, बत्तीसाए बत्तीसइबद्धेहिं णाडयसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे भवणवरवडेंसगं अईइ जहा कुबेरो व्व

१. सं० पा०—महया जाव आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहराहित्ति कट्टु। अस्य पाठस्य पूर्तिः शान्तिचन्द्रीयवृत्तेराधारेण कृतास्ति। औपपातिके (सू ६८) पाठस्य भिन्नः क्रमोऽस्ति, तस्य सूचना हीरविजयसूरिणापि कृता—यद्यप्यौपातिकादिषु 'महताहयणट्टगीयवाइयतंती' त्यादिसूत्ररचना 'आहेवच्च' मित्यादि सूत्ररचनातः पश्चादेव दृश्यते, अत्र तु प्रथमतया तथापि सूत्रकाराणां विचित्रागतिरतो न सम्मोहो न वान्यथाकरणम्।

२. अभिणंदिज्जमाणे (जं० २।६४)।

३. कंतिसोहग्गगुणेहिं (जं० २।६४)।

४. समईमाणे (अ,ब); समइक्कममाणे (त्रि)।

५. अपरिबुज्झमाणे (अ,क,ख,ब); क्वचित् आपुच्छमाणे, क्वचित् पडिबुज्झमाणे (हीवृ)।

६. उवागच्छित्ता (पुवृ)।

७. अभिसेक्काओ (त्रि)।

८. देवसहस्सा (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

९. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह°।

१०. °प्पभिइयो (क,ख,स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवराया केलाससिहरिसिंगभूतं[1] ।।

१८७. तए णं से भरहे राया मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधिपरियणं पच्चुवेक्खइ, पच्चुवेक्खित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[2] मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव भोयणमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ, पारेत्ता उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धेहिं णाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं[3] उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे उवणच्चिज्जमाणे-उवणच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे महया[4] °हयणट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंगपडुप्पवाइयरवेणं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे° भुंजमाणे विहरइ ।।

१८८. तए[5] णं तस्स भरहस्स रण्णो अण्णया कयाइ रज्जधुरं चिंतेमाणस्स इमेयारूवे[6] °अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अभिजिए णं मए णियगबल-वीरिय-पुरिसक्कार[7]-परक्कमेणं चुल्लहिमवंतगिरिसागरमेराए केवलकप्पे भरहे वासे, तं सेयं खलु मे अप्पाणं महयारायाभिसेएणं[8] अभिसिंचावित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति, संपेहेत्ता

---

१. °सिहर° (अ,ब,पुवृ); °सिहरि° (पुवृपा) ।

२. जं० ३।६ ।

३. × (अ,क,ख,प,ब,स) ।

४. सं० पा०—महया जाव भुंजमाणे ।

५. आवश्यकचूर्णौ (पृ० २०५) महाराजाभिषेकस्य प्रस्तावो देवादिभिः कृतः इत्युल्लेखो दृश्यते—तए णं तस्स अन्नया कयादी ते देवादीया महारायाभिसेयं विब्भवंति, सेवि य णं तहेव अट्ठमभत्तं गेण्हति । हीरविजयसूरिणा स्ववृत्तौ ऋषभचरित्रान्तर्गतस्य अस्य विषयस्य सूचना कृतास्ति- श्रीऋषभचरित्रे तु 'तए णं तस्स भरहस्स रण्णो अण्णयाइं ते देवाइया महारायाभिसेयं काउंकामा भरहं रायाणं विण्णवेंति—जिएणं देवाणुप्पिएहिं भारहे वासे, वसमुवागया विज्जाहराइरायाणो तमणुजाणह महारायाभिसेयं करेमो । भरहोवि तं देवाइयाणं वयणमणुमण्णति । तेवि हट्ठतुट्ठकयंजलिणो आभियोगिया देवा विणीयाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एगं महं आभिसेयमंडवं विउव्वंति' न चास्य प्रकृतसूत्रेण सह विरोधः शङ्कनीयः तीर्थकृतां निष्क्रमणकाले लोकान्तिकदेवानामिव पुण्योत्कर्षात् भरताभिप्रायकाल एव तथाभिप्रायमवगम्य आभियोजिकदेवैर्विज्ञप्तो भरतस्तथैवं प्रतिपन्नवान् इत्यदोषात् युक्तिक्षमत्वाच्च । उपाध्यायशान्तिचन्द्रस्यापि अस्मिन् विषये एका टिप्पणी विद्यते—आवश्यकचूर्ण्यादौ तु भक्त्या सुरनरास्तं महाराजाभिषेकाय विज्ञपयामासुर्भरतश्च तदनुमेने, अस्ति हि अयं विधेयजनव्यवहारो यत्प्रभूणां समयसेवाविधौ ते स्वयमेवोपतिष्ठन्ते, सत्यप्येवंविधे कल्पे यद् भरतस्यात्रानुचरसुरादीनामभिषेकज्ञापनमुक्तं तद् गम्भीरार्थकत्वादस्मादृशां मन्दमेधसामनाकलनीयमिति । महाराजाभिषेकाय अन्येषां प्रस्तावोधिकं स्पृशति मनोभावं, किन्तु आदर्शेषु सर्वत्र भरतकृतप्रस्तावस्योल्लेखो लभ्यते, यद्यपि आवश्यकचूर्णौ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेरेव पाठ उद्धृतोस्ति, किन्तु तादृशः पाठो नादर्शेषु क्वापि लभ्यते । एष वाचनाभेदोस्ति अथवा उत्तरकालीनं परिवर्तनमिति अनुसन्धानस्य विषयोस्ति ।

६. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

७. पुरिसगार (क,ख,स) ।

८. महारायाभिसेयं (अ,ब); महारायाभिसेएणं (क,ख,प,स); महयाभिसेएणं (त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्लं पाउप्पभाए[1] •रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियंमि अहपंडुरे पहाए रत्तासोग-प्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा° जलंते जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[2] मज्जण-घराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयति, णिसीइत्ता सोलसदेवसहस्से, बत्तीसं रायवरसहस्से, सेणावइरयणे[3] •गाहावइरयणं वड्ढइरयणं° पुरोहियरयणे, तिण्णि सट्ठे सूयसए, अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर[4]-•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिइयो सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—अभिजिए णं देवाणुप्पिया ! मए णियगबल-वीरिय[5]-•पुरिसक्कार-परक्कमेणं चुल्लहिमवंतगिरिसागरमेराए° केवलकप्पे भरहे वासे, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं महयारायाभिसेयं वियरह ।।

१८९. तए णं ते सोलस देवसहस्सा जाव[6] सत्थवाहप्पभिइयो भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया नंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण-हियया करयलपरिग्गहियं दसण्णहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु भरहस्स रण्णो एयमट्ठं सम्मं विणएणं पडिसुणेंति ।।

१९०. तए णं से भरहे राया जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[7] अट्ठमभत्तिए [अट्ठमभत्तं ?[8]] पडिजागरमाणे विहरइ ।।

१९१. तए णं से भरहे राया अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि आभिओग्गे[9] देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासि—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विणीयाए रायहाणीए उत्तर-पुरत्थिमे दिसीभाए एगं महं अभिसेयमंडवं विउव्वेह, विउव्वेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

१९२. तए णं ते आभिओग्गा देवा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव[10] एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता विणीयाए रायहाणीए उत्तर-पुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति[11], समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दंडं णिसिरंति, तं जहा—रयणाणं जाव[12] रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेंति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियादियंति, परियादित्ता

---

१. सं० पा०—पाउप्पभाए जाव जलंते ।
२. जं० ३।६ ।
३. सं० पा०—सेणावइरयणे जाव पुरोहियरयणे ।
४. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह° ।
५. सं० पा०—वीरिय जाव केवलकप्पे ।
६. जं० ३।१८८ ।
७. जं० ३।२० १८२ ।
८. पाठस्य पूर्वपद्धतिं यदि विचारयामः तदा 'अट्ठमभत्तं' इति पाठो युक्तः स्यात् । द्रष्टव्यं जं० ३।२०,१८२ । 'पडिजागरमाणे' इत्यर्ध-क्रियापदस्य कर्मापेक्षयापि 'अट्ठमभत्तं' इति पाठो युक्तः स्यात् ।
९. आभियोगिए (प, हीवृ) ।
१०. जं० ३।११ ।
११. समोहणंति (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स); समवघ्नन्ति (शावृ) ।
१२. जी० ३।७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोच्चंपि वेउव्विय[1]•समुग्घाएणं° समोहण्णंति[2], समोहणित्ता बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वंति, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[3] णाणाविधपंचवण्णेहिं तणेहि य मणीहि य उवसोभिए[4] ।।

१९३. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगं अभिसेयमंडवं विउव्वंति—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव[5] गंधवट्टिभूयं पेच्छाघरमंडव-वण्णगो ।।

१९४. तस्स णं अभिसेयमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगं अभिसेयपीढं[6] विउव्वंति—अच्छं सण्हं ।।

१९५. तस्स णं अभिसेयपीढस्स तिदिसिं तओ तिसोवाणपडिरूवए विउव्वंति। तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते जाव[7] तोरणा ।।

१९६. तस्स णं अभिसेयपीढस्स बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते ।।

१९७. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगं सीहासणं विउव्वंति, तस्स णं सीहासणस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते जाव[8] दामवण्णगं समत्तं ।।

१९८. 'तए णं'[9] ते देवा अभिसेयमंडवं विउव्वंति, विउव्वित्ता जेणेव भरहे राया[10] •तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ।।

१९९. तए णं से भरहे राया आभिओग्गाणं[11] देवाणं अंतिए[12] एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ[13]-•चित्तमाणंदिए नंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण-हियए° पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, पडिकप्पेत्ता हय-गय[14]-•रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेण्णं सण्णाहेह°, सण्णाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह[15] ।।

२००. •तए णं ते कोडुंबियपुरिसा° जाव पच्चप्पिणंति ।।

२०१. तए णं से भरहे राया मज्जणघरं अणुपविसइ जाव[16] अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवइं णरवई दुरुढे ।।

२०२. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरुढस्स समाणस्स इमे

---

१. सं० पा०—वेउव्विय जाव समोहण्णंति ।
२. समोहणंति (क,ख,त्रि,प,स) ।
३. जी० ३।२७७ ।
४. पूर्णपाठावलोकनार्थंद्रष्टव्यं जं० २।७ ।
५. राय० सू० ३२ ।
६. अभिसेयपेढं (अ,ब) ; अभिसेयपीढं (ख) प्रायः सर्वत्र ।
७. जी० ३।२८७-२९१ ।
८. जी० ३।३११-३१३ ।
९. एएणं (अ,त्रि,ब,हीवृ) ; एवं णं (हीवृपा) ।
१०. सं० पा०—राया जाव पच्चप्पिणंति ।
११. अभिओग्गाणं (अ,ब) ।
१२. अंतियं (क,ख) ।
१३. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव पोसहसालाओ ।
१४. सं० पा०--हयगय जाव सण्णाहेत्ता ।
१५. सं० पा०—पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति ।
१६. जं० ३।१७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।।

२०३ जो चेव गमो विणीयं पविसमाणस्स सो चेव णिक्खममाणस्सवि[1] जाव[2] ।।

२०४. •तए णं से भरहे राया णयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे-पेच्छिज्जमाणे वयण-मालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे-अभिथुव्वमाणे हिययमालासहस्सेहिं उण्णंदिज्जमाणे-उण्णं-दिज्जमाणे मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे कंतिरूवसोहग्गगुणेहिं पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे अंगुलिमालासहस्सेहिं दाइज्जमाणे-दाइज्जमाणे दाहिणहत्थेणं बहूणं णरणारीसहस्साणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे भवणपंतिसह-स्साइं समइच्छमाणे-समइच्छमाणे तंती-तल-ताल-तुडिय-गीय-वाइयरवेणं मधुरेणं मणह-रेणं मंजुमंजुणा घोसेणं° अप्पडिवुज्झमाणे-अप्पडिवुज्झमाणे विणीयं रायहाणिं मज्झं-मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव विणीयाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए जेणेव अभिसेयमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभिसेयमंडवदुवारे आभिसेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ[3], ठवेत्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता इत्थीरय-णेणं[4], बत्तीसाए उडुकल्लाणियासहस्सेहिं, बत्तीसाए जणवयकल्लाणियासहस्सेहिं, बत्तीसाए बत्तीसइबद्धेहिं णाडगसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे अभिसेयमंडवं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव अभिसेयपीढे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अभिसेयपीढं अणुप्पदाहिणीकरे-माणे-अणुप्पदाहिणीकरेमाणे पुरित्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

२०५. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बत्तीसं रायसहस्सा जेणेव अभिसेयमंडवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता[5] अभिसेयमंडवं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता अभिसेयपीढं अणुप्पदाहिणीकरेमाणा-अणुप्पदाहिणीकरेमाणा उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[6]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए° अंजलिं कट्टु भरहं रायाणं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता भरहस्स रण्णो णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा[7] •णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलियडा° पज्जुवासंति ।।

२०६. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सेणावइरयणे[8] •गाहावइरयणे वड्ढइरयणे पुरो-हियरयणे, तिण्णि सट्ठे सूयसए, अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिइओ[9] •जेणेव अभिसेयमंडवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अभिसेयमंडवं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता अभिसेयपीढं अणुप्पदाहिणीकरेमाणा-अणुप्पदाहिणीकरेमाणा° दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं[10]

---

१. सं० पा०—णिक्खममाणस्सवि जाव अप्पडि-वुज्झमाणे ।
२. जं० ३।१८३-१८५ ।
३ ठावेइ (त्रि,प) ।
४. थीरयणं (अ,ब) ।
५. उवागच्छित्ता जाव (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
६. सं० पा०—करयल जाव अंजलिं ।
७. सं० पा०—सुस्सूसमाणा जाव पज्जुवासंति ।
८. सं० पा०—सेणावइरयणे जाव सत्थवाह° ।
९. सं० पा०—°प्पभिइओ तेवि तह चेव णवरं दाहिणिल्लेणं ।
१०. सं० पा०—तिसोवाणपडिरूवएणं जाव पज्जु-वासंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु भरहं रायाणं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता भरहस्स रण्णो णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलियडा° पज्जुवासंति ।।

२०७. तए णं से भरहे राया आभिओग्गे देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तं महत्थं महग्घं महरिहं महारायाभिसेयं उवट्ठवेह ।।

२०८. तए णं ते आभिओग्गा देवा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्ता जाव[1] उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति[2], एवं जहा विजयस्स तहा इत्थंपि जाव[3] पंडगवणे एगओ मिलायंति, मिलाइत्ता जेणेव दाहिणड्ढभरहे वासे जेणेव विणीया रायहाणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विणीयं रायहाणिं अणुप्पयाहिणीकरेमाणा-अणुप्पयाहिणीकरेमाणा जेणेव अभिसेयमंडवे जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं महारायाभिसेयं उवट्ठवेंति ।।

२०९. तए णं तं भरहं रायाणं बत्तीसं रायसहस्सा सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-णक्खत्त-मुहुत्तंसि उत्तरपोट्ठवया-विजयंसि तेहिं साभाविएहिं य उत्तरवेउव्विएहिं य वर-कमलपइट्ठाणेहिं सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं[4] °चंदणकयचच्चाएहिं आविद्धकंठेगुणेहिं पउमुप्पलपिधाणेहिं सुकुमालकरतलपरिग्गहिएहिं अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं रुप्पामयाणं मणिमयाणं जाव अट्ठसहस्सेणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्व-मट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फेहिं सव्वगंधेहिं सव्वमल्लेहिं सव्वोसहिसिद्धत्थएहिं य सव्विड्ढीए सव्वजुतीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वायरेणं सव्वविभूतीए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वदिव्वतुडियसद्दसण्णिणाएणं महया इड्ढीए महया जुतीए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुरियजमगसमगपडुप्पवादितरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडक्क- मुरव - मुइंग- दुंदुहि- णिग्घोसनादितरवेणं° महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति, अभिसेओ जहा[5] विजयस्स, अभिसिंचित्ता पत्तेयं-पत्तेयं[6] °करतलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए° अंजलिं कट्टु ताहिं इट्ठाहिं[7] °कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं हियय-गमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं वग्गूहिं अणवरयं अभिणंदंता य अभिथुणंता य एवं वयासी—जय जय नंदा ! जय जय भद्दा ! जय जय नंदा ! भद्दं ते, अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि, इंदो विव देवाणं, चंदो विव ताराणं चमरो विव असुराणं, धरणो विव नागाणं, बहूइं पुव्वसयसहस्साइं बहूईओ पुव्वकोडीओ बहूईओ

---

१. जं० ३।१६२।
२. समोहणंति (अ,क,ख,प,ब,स)।
३. जी० ३।४४५)।
४. सं० पा०—सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं जाव महया। असौ पाठः जीवाजीवाभिगमात् (३।४४६) वृत्तिद्वयाच्च पूरितः। वृत्तिद्वयेपि कानि-कानिचिद् विशेषणानि भिन्नानि वर्तन्ते।
५. जी० ३।४४७, ४४८।
६. सं पा०—पत्तेयं जाव अंजलिं।
७. सं० पा०— इट्ठाहिं जहा पविसंतस्स भणिया जाव विहराहित्तिकट्टु।

पुव्वकोडाकोडीओ विणीयाए रायहाणीए चुल्लहिमवंतगिरिसागरमेरागस्स य केवल-कप्पस्स भरहस्स वासस्स गामागर-णगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-सण्णिवेसेसु सम्मं पयापालणोवज्जियलद्धजसे महयाहयणट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंगपडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे° विहराहित्तिकट्टु जयजयसद्दं पउंजंति ॥

२१०. तए णं तं भरहं रायाणं सेणावइरयणे[1] •गाहावइरयणे वड्ढइरयणे° पुरोहियरयणे, तिण्णि य सट्ठा सूयसया, अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ, अण्णे य बहवे[2] •राईसर-तलवर-मांडबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिइओ एवं चेव अभिसिचंति तेहिं वरकमलपइट्ठाणेहिं तहेव जाव अभिथुणंति य। सोलस देवसहस्सा एवं चेव णवरं[3]---

२११. •तए णं तस्स भरहस्स रण्णो तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए दिव्वाए सुरभीए गंधकासाईए गाताइं लूहेंति, लुहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गाताइं अणुलिंपंति, अणुलिंपित्ता नासानीसासवायवोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्तं हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणगखचियंतकम्मं आगासफलिहसमप्पभं अहतं दिव्वं देवदूसजुयलं णियंसावेंति, णियंसावेत्ता हारं पिणिद्धेंति, पिणिद्धेत्ता अद्धहारं पिणिद्धेंति, पिणिद्धेत्ता एकावलिं पिणिद्धेंति, पिणिद्धेत्ता एवं एतेणं अभिलावेणं मुत्तावलिं कणगावलिं रयणावलिं कडगाइं तुडियाइं अंगयाइं केयूराइं दसमुद्दियाणंतकं कुंडलाइं चूडामणिं चित्तरयणसंकडं° मउडं पिणद्धेंति। तयणंतरं च णं दद्दरमलयसुगंधगंधिएहिं गंधेहिं गायाइं भुकंडेंति[4] दिव्वं च सुमणदामं[5] पिणद्धेंति, किं बहुणा? गंथिम[6]-वेढिम[7]-•पूरिम-संघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खयं पिव अलंकिय°-विभूसियं करेंति॥

२१२. तए णं से भरहे राया महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हत्थिखंधवरगया विणीयाए रायहाणीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर[8]-•चउम्मुह°-महापह-पहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिमं[9] •अधरिमं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धुय-मुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलिय°-सपुरजणजाणवयं दुवालससंवच्छरियं पमोयं घोसेह, घोसेत्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणह॥

२१३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा भरहेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया नंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया विणएणं वयणं

१. सं० पा०—सेणावइरयणे जाव पुरोहियरयणे।
२. सं० पा०—बहवे जाव सत्थवाह°।
३. सं० पा०—णवरं पम्हलसूमालाए जाव मउडं।
४. अभुक्खंति (क, ख, त्रि, प, शावृ,हीवृपा); भुकुंडेंति (शावृपा)।
५. सुमणोदामं (प)।
६. गंठिम (त्रि, प)।
७. सं० पा०—वेढिम जाव विभूसियं।
८. सं० पा०—चच्चर जाव महापह।
९. सं० पा०—अदंडकोदंडिमं जाव सपुरजणजाणवयं। सपुरजणुज्जाणवयं (अ, त्रि, ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव हत्थिखंधवरगया[1] •विणीयाए रायहाणीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं-अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अंदडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलियसपुरजणजाणवयं दुवालससंवच्छरियं पमोयं° घोसंति, घोसित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

२१४. तए णं से भरहे राया महया-'महया रायभिसेएणं'[2] अभिसित्ते समाणे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता इत्थिरयणेणं,[3] •बत्तीसाए उडुकल्लाणियासहस्सेहिं, बत्तीसाए जणवयकल्लाणियासहस्सेहिं,बत्तीसाए बत्तीसइबद्धेहिं° णाडगसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे अभिसेयपीढाओ पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं[4] पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अभिसेयमंडवाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवइं[5] •णरवई° दुरुढे ।।

२१५. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो बत्तीसं रायसहस्सा अभिसेयपीढाओ उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति ।।

२१६. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सेणावइरयणे[6] •गाहावइरयणे वड्ढइरयणे पुरोहियरयणे, तिण्णि सट्ठे सूयसए, अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिइओ अभिसेयपीढाओ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति ।।

२१७. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरुढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ[7] •अहाणुपुव्वीए° संपट्ठिया, जच्चिय[8] अइगच्छमाणस्स गमो पढमो कुबेरावसाणो सो चेव इहंपि कमो सक्कारजढो णेयव्वो जाव[9] कुबेरोव्व देवराया केलासं सिहरिसिंगभूयं[10] ।।

२१८. तए णं से भरहे राया मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जाव[11] भोयण-मंडवंसि सुहासणवरगए अट्ठमभत्तं पारेइ, पारेत्ता भोयणमंडवाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं[12] •बत्तीसइबद्धेहिं णाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे उवणच्चिज्जमाणे-उवणच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे महयाहयणट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-

---

१. सं० पा०—हत्थिखंधवरगया जाव घोसंति ।

२. महयाभिसेकेणं (अ, क, त्रि, ब) ।

३. सं० पा०—इत्थिरयणेणं जाव णाडगसहस्सेहिं ।

४. तिसोमाण° (अ,ब) ।

५. सं० पा०—गयवइं जाव दुरुढे ।

६. सं० पा०—सेणावइरयणे जाव सत्थवाह° ।

७. सं० पा०—पुरओ जाव संपट्ठिया ।

८. जेच्चिय (अ, ब); जोच्चिय (क, स, पुवृ); जेच्चिय (ख); जोविय (प, शावृ) ।

९. जं० ३।१८३-१८६ ।

१०. सिहर° (अ, क, त्रि, ब) ।

११. जं० ३।१८७ ।

१२. सं० पा०—मुइंगमत्थएहिं जाव भुंजमाणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुइंगपडुप्पवाइयरवेणं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे° भुंजमाणे विहरइ ॥

२१९. तए णं से भरहे राया दुवालससंवच्छरियंसि पमोयंसि णिव्वत्तंसि समाणंसि जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[1] मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला[2] •जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता° सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसीइत्ता सोलस देवसहस्से सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता बत्तीसं राय-वरसहस्सा सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता सेणावइरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता[3] •एवं गाहावइरयणं वड्ढइरयणं° पुरोहियरयणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं तिण्णि सट्ठे सूयसए[4] अट्ठारस सेणि-प्पसेणीओ सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता अण्णे य बहवे राईसर-तलवर[5]-•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिइओ सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेति, पडिविसज्जेत्ता उप्पिं पासायवरगए जाव[6] विहरइ ॥

२२०. भरहस्स रण्णो चक्करयणे 'छत्तरयणे दंडरयणे असिरयणे'[7]—एते णं चत्तारि एगिंदियरयणा आउहघरसालाए समुप्पण्णा। चम्मरयणे मणिरयणे कागणिरयणे[8], णव य महाणिहओ—एए णं सिरिघरंसि समुप्पण्णा। सेणावइरयणे गाहावइरयणे वड्ढइरयणे पुरोहियरयणे—'एए णं'[9] चत्तारि मणुयरयणा विणीयाए रायहाणीए समुप्पण्णा। आस-रयणे हत्थिरयणे—'एए णं'[10] दुवे पंचिंदियरयणा वेयड्ढगिरिपायमूले समुप्पण्णा। इत्थी-रयणे[11] उत्तरिल्लाए विज्जाहरसेढीए समुप्पण्णे ॥

२२१. तए णं से भरहे राया चउदसण्हं रयणाणं णवण्हं महाणिहीणं सोलसण्हं देवसाहस्सीणं बत्तीसाए रायसहस्साणं बत्तीसाए उडुकल्लाणियासहस्साणं बत्तीसाए जण-वयकल्लाणियासहस्साणं बत्तीसाए बत्तीसइबद्धाणं णाडगसहस्साणं तिण्हं सट्ठीणं सूयसयाणं[12] अट्ठारसण्हं सेणि-प्पसेणीणं चउरासीए आससयसहस्साणं चउरासीए दंतिसयसहस्साणं चउरासीए रहसयसहस्साणं छण्णउइए मणुस्सकोडीणं बावत्तरीए पुरवरसहस्साणं बत्तीसाए जणवयसहस्साणं छण्णउइए गामकोडीणं णवणउइए दोणमुहसहस्साणं अडयाली-साए पट्टणसहस्साणं चउव्वीसाए कब्बडसहस्साणं चउव्वीसाए मडंबसहस्साणं वीसाए आगरसहस्साणं सोलसण्हं खेडसहस्साणं[13] चउदसण्हं संवाहसहस्साणं छप्पण्णाए अंतरोद-

---

१. जं० ३।९।

२. सं० पा०—उवट्ठाणसाला जाव सीहासणवरगए।

३. सं० पा०—सम्माणेत्ता जाव पुरोहियरयणं।

४. सूआरसए (प)

५. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह°।

६. जं० ३।१८७

७. दंडरयणे असिरयणे छत्तरयणे (ख, त्रि, प)।

८. काकिणि° (अ); कागणी° (ब); काकणि° (स)।

९. एवं (अ, त्रि, ब)।

१०. एवं (अ,ब)।

११. सुभद्दा इत्थीरयणे (क, ख, त्रि)।

१२. सूआरसयाणं (प)।

१३. खेडगसयाणं (अ, ब, आवश्यकचूर्णि पृ० २०८)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाणं एगूणपण्णाए कुरज्जाणं विणीयाए रायहाणीए चुल्लहिमवंतगिरिसागरमेरागस्स केवलकप्पस्स भरहस्स वासस्स अण्णेसिं च बहूणं राईसर[1]-तलवर[2]-•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे[3] पालेमाणे ओहय-णिहएसु कंटएसु उद्धियमलिएसु सव्वसत्तुसु णिज्जिएसु भरहाहिवे णरिंदे वरचंदणचच्चियंगे वरहाररइयवच्छे वरमउडविसिट्ठए[4] वरवत्थभूसणधरे सव्वोउयसुरहिकुसुमवरमल्लसोभियसिरे वरणाडग[5]-नाडइज्ज-वरइत्थिगुम्म[6] सद्धिं संपरिवुडे सव्वोसहि-सव्वरयण-सव्वसमिइसमग्गे संपुण्णमणोरहे हयामित्तमाणमहणे[7] पुव्वकयतवप्पभाव[8]-निविट्ठसंचियफले भुंजइ माणुस्सए सुहे भरहे णामधेज्जे ।।

२२२. तए णं से भरहे राया अण्णया कयाइ जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] •मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे विचित्त-मणिरयणकुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि णाणामणि-रयण-भत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहणिसण्णे सुहोदएहिं गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुद्धोदएहि य पुण्णे कल्लाणगपवरमज्जण-विहीए मज्जिए तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे पम्हलसुकुमाल-गंधकासाइयलूहियंगे सरससुरहिगोसीसचंदणाणुलित्तगत्ते अहयसुमहग्घदूसरयणसुसंवुए सुइमाला-वण्णग-विलेवणे आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियहारद्धहार-तिसरय-पालंबपलंबमाण-कडिसुत्तसुकयसोहे पिणद्धगेविज्जगअंगुलिज्जग-ललितंगयललियकयाभरणे णाणामणिकड-गतुडियथंभियभुए अहियरूवसस्सिरीए कुंडलउज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए हारोत्थय-सुकयरइयवच्छे पालंबपलंबमाणसुकयपडउत्तरिज्जे मुद्दियापिंगलंगुलीए णाणामणिकणग-विमल-महरिह-णिउणोवियमिसिमिसेंत-विरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठिय-पसत्थआविद्धवीर-वलए, किं बहुणा? कप्परुक्खए चेव अलंकियविभूसिए णरिंदे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीइयंगे मंगलजयसद्दकयालोए अणेगगणणायग-दंडणायग-राईसर-तलवर-माडंबिय - कोडुंबिय-मंति-महामंति - गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवालसद्धिं संपरिवुडे धवल-महामेहणिग्गए इव गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे° ससिव्व पियदंसणे णरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव आदंसघरे जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसीइत्ता आदंसघरंसि अत्ताणं देह-माणे-देहमाणे चिट्ठइ ।।

२२३. तए णं तस्स भरहस्स रण्णो सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं

---

१. रादीसर (आवश्यकचूर्णि पृ० २०८)
२. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह° ।
३. करेमाणे (अ, क, ब) ।
४. °विसट्ठाए (अ, ब); °विकट्टए (क); °विगड्डए (ख, पुवृपा) ।
५. चूर्णौ तु 'वरमउडाविद्धाए' (शावृ) ।
६. तृतीया लोपः आर्षत्वात् (शावृ) ।
७. हतामित्तसत्तुपक्खे (आवश्यकचूर्णि पृ०२०९)।
८. पुव्वकड°(क,स) ।
९. सं० पा०— उवागच्छित्ता जाव ससिव्व ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं-विसुज्झमाणीहिं ईहापोह[1]-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स तयावरिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे निव्वाघाए निरावरणे केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे ।।

२२४. तए णं से भरहे केवली सयमेवाभरणालंकारं ओमुयइ[2], ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता आदंसघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अंतेउरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता दसहिं रायवरसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे विणीयं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता मज्झदेसे सुहंसुहेणं विहरइ, विहरित्ता जेणेव अट्ठावए पव्वते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्ठावयं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेघघणसण्णिकासं देवसण्णिवायं पुढविसिलापट्टगं[3] पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता संलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे-अणवकंखमाणे विहरइ ।।

२२५. तए णं से भरहे[4] केवली सत्तत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झावसित्ता[5], एगं वाससहस्सं मंडलियरायमज्झावसित्ता, छ पुव्वसयसहस्साइं वाससहस्सूणगाइं महारायमज्झावसित्ता, तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झावसित्ता, एगं पुव्वसयसहस्सं देसूणगं केवलिपरियायं पाउणित्ता, तमेव बहुपडिपुण्णं सामण्णपरियायं पाउणित्ता, चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता[6], मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं सवणेणं[7] णक्खत्तेणं जोगमुवागएणं खीणे वेयणिज्जे आउए णामे गोए कालगए वीइक्कंते समुज्जाए छिण्णजाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुडे अंतगडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

२२६. भरहे य एत्थ देवे महिड्ढीए महज्जुईए[8] °महाबले महायसे महासोक्खे महाणुभागे° । पलिओवमट्ठिईए परिवसइ । से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—भरहे वासे भरहे वासे ।।

अदुत्तरं च णं गोयमा ! भरहस्स वासस्स सासए णामधेज्जे पण्णत्ते—जं ण कयाइ ण आसि ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च भवइ य भविस्सइ य धुवे णियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे भरहे वासे ।।

१. ईहापूह (अ.क,ख.स); ईहावूह (पुवृ) ।
२. मुयई (ब) ।
३. सिलावट्टयं (प) ।
४. भरहे राया (क,ख,स) ।
५. °मज्झे वसित्ता (ख,त्रि,प,शावृ,हीवृ) सर्वत्र ।
६. पाउणित्ता (क,प) ।
७. समणेणं (अ,ब) ।
८. सं० पा०—महज्जुईए जाव पलिओवमट्ठिईए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थो वक्खारो

१. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे चुल्लहिमवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! हेमवयस्स वासस्स दाहिणेणं, भरहस्स वासस्स उत्तरेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे चुल्लहिमवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते—पाईणपडीणायए[1] उदीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे- पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे, एगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, पणवीसं जोयणाइं उव्वेहेणं, एगं जोयणसहस्सं बावण्णं च जोयणाइं दुवालस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंभेणं। तस्स बाहा[2] पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य पण्णासे जोयणसए पण्णरस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं। तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया[3] •दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा—पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा, चउव्वीसं जोयणसहस्साइं णव य बत्तीसे जोयणसए अद्धभागं च किंचिविसेसूणा आयामेणं पण्णत्ता। तीसे धणुपट्ठे दाहिणेणं पणवीसं[4] जोयणसहस्साइं दोण्णि य तीसे जोयणसए चत्तारि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं, रुयगसंठाणसंठिए सव्वकणगामए[5] अच्छे सण्हे लण्हे जाव[6] पडिरूवे, उभओ पासिं[7] दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खित्ते दुण्ह वि पमाणं वण्णगो[8] य ॥

२. चुल्लहिमवंतस्स णं वासहरपव्वयस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते -से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[9] बहवे वाणमंतरा देवा य देवीओ य आसयंति[10] •सयंति चिट्ठंति णिसीयंति तुयट्टंति रमंति ललंति कीलंति मोहंति, पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फल-

---

१. °पडियायते (अ,ब) प्रायः सर्वत्र।

२. पासा (अ,ब)।

३. सं० पा०—पाईणपडीणायया जाव पच्चत्थिमिल्लाए।

४. पणुवीसं (अ,क,ब,स)।

५. सव्वकणकमए (अ,ब)।

६. जं० १।८।

७. परिसिं (अ,ख,त्रि,ब,स)।

८. जं० १।१०—१४।

९. जं० १।१३।

१०. सं० पा०—आसयंति जाव विहरंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा° विहरंति ॥

३. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं एक्के महं पउमद्दहे णामं दहे पण्णत्ते—पाईणपडीणायए[१] उदीणदाहिणविच्छिण्णे एक्कं जोयण-सहस्सं आयामेणं, पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छे सण्हे रययामयकूले[२] °वइरामयपासाणे सुहोतारे सुउत्तारे णाणामणितित्थ-बद्धे वइरतले सुवण्ण-सुज्झ-रययवालुयाए वेरुलियमणिफालियपडल-पच्चोयडे वट्टे समतीरे अणुपुव्वसुजायवप्प-गंभीरसीयलजले संछण्णपत्तभिसमुणाले बहुउप्पल-कुमुय-णलिण-सुभग-सोगंधिय-पोंडरीय-महापोंडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्तपप्फुल्लकेसरोवचिए अच्छविमलपत्थसलिलपुण्णे परिहत्थ-भमंतमच्छकच्छभ-अणेगसउणगणमिहुणपविचरिय- सद्दुण्णइयमहुरसरणाइए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे । से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, वेइया-वणसंड-वण्णओ भाणियव्वो[३] ॥

४. तस्स णं पउमद्दहस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता, वण्णावासो भाणियव्वो[४] ॥

५. तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं तोरणे पण्णत्ते। ते णं तोरणा णाणमणिमया[५] ॥

६. तस्स णं पउमद्दहस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे पउमे पण्णत्ते—जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ 'साइरेगाइं दसजोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते'[६]। से णं एगाए जगईए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, जंबुद्दीवजगइप्पमाणा गवक्खकडएवि तह चेव पमाणेणं[७] ॥

७. तस्स णं पउमस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया मूला रिट्ठामए कंदे वेरुलियामए णाले वेरुलियामया बाहिरपत्ता जंबूणयामया अब्भितरपत्ता तवणिज्जमया केसरा णाणामणिमया पोक्खरत्थिभया[८] कणगामई कण्णिगा, सा णं अद्ध-जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, कोसं बाहल्लेणं, सव्वकणगामई अच्छा[९] ॥

८. तीसे णं कण्णियाए उप्पिं बहुसरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा[१०] ॥

९. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे भवणे पण्णत्ते—कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, देसूणगं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं,

---

१. °पडियायए (अ,ब) °पडिणायए (क,ख,त्रि,स)।

२. सं० पा०—रययामयकूले जाव पासाईए जाव पडिरूवे।

३. जं० १।१०-१३।

४. जं० ४।२६।

५. नवरं 'णाणामणिमये' ति वर्णकैकदेशेन पूर्ण स्तोरणवर्णको ग्राह्यः (शावृ); जं० ४।२७-३०।

६. × (अ,ब)।

७. पमाणेणं सातिरेगाइं दसजोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते (अ,क,ख,त्रि,ब); जं० १।८,९।

८. पुष्करास्थिभागाः (शावृ); पुक्खरत्थिभुया (जी० ३।६४३)।

९. 'अच्छा' इत्येकदेशेन 'सण्हा' इत्यादिपदान्यपि विज्ञेयानि (शावृ)।

१०. जं० १।१३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।।

१०. तस्स णं भवणस्स तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता । ते णं दारा पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं विक्खंभेणं, तावतियं चेव पवेसेणं, सेया वरकण-गथूभियागा जाव[1] वणमालाओ णेयव्वाओ ।।

११. तस्स णं भवणस्स अंतो[2] बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहाणामए आलिंगपुक्खरेइ वा ।।

१२. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स, बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं[3] एगा मणिपेढिया पण्णत्ता । सा णं मणिपेढिया पंचधणुसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा ।।

१३. तीसे णं मणिपेढियाए उप्पिं, एत्थ णं महं एगे सयणिज्जे पण्णत्ते[4], •तं जहा—नाणामणिमया पडिपादा, सोवण्णिया पादा, नाणामणिमया पायसीसा, जंबूणयमयाइं गत्ताइं, वइरामया संधी, णाणामणिमए वेच्चे, रइयामई तूली, लोहियक्खमया बिब्बोयणा, तवणिज्जमई गंडोवहाणिया । से णं देवसयणिज्जे सालिंगणवट्टीए उभओ बिब्बोयणे दुहओ उण्णए मज्झे णय-गंभीरे गंगापुलिणवालुया-उद्दालसालिसए ओयविय-खोमदुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे आइणग-रूत-बूर-णवणीय-तूलफासे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुय-संवुते सुरम्मे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे• ।।

१४. से णं पउमे अण्णेणं अट्ठसएणं पउमाणं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्ताणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते । ते णं पउमा अद्धजोयणं आयाम-विक्खंभेणं, कोसं बाहल्लेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, कोसं ऊसिया जलंताओ, साइरेगाइं दसजोयणाइं 'सव्वग्गेणं पण्णत्ते'[5] ।।

१५. तेसि णं पउमाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया मूला जाव[6] कणगामई कण्णिया । सा णं कण्णिया कोसं आयामेणं, अद्धकोसं बाहल्लेणं सव्व-कणगामई अच्छा ।।

१६. तीसे णं कण्णियाए[7] उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[8] मणीहिं उवसोभिए ।।

१७. तस्स णं पउमस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं सिरीए देवीए चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि पउमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।।

१८. तस्स णं पउमस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं सिरीए देवीए चउण्हं महत्तरियाणं

१. जी० ३।२६६-३०६ ।
२. अंते (ख,त्रि) ।
३. महइ (प) ।
४. सं० पा०—पण्णत्ते सयणिज्जवण्णओ भाणियव्वो ।
५. उच्चत्तेणं (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स); पूर्वप्रकरणे ४।६ 'सव्वग्गेणं पण्णत्ते' इति पाठोस्ति । जीवाजीवाभिगमे (३।६५३) पि नीलवद्द्रह-प्रकरणे 'सव्वग्गेणं' इति पाठो लभ्यते । वृत्तावपि (पत्र २७९) तथैव व्याख्यातोस्ति । अत्रापि 'सव्वग्गेणं' इति पाठो युक्तः प्रतिभाति ।
६. जं० ४।७ ।
७. × (अ, क, ख, त्रि, ब, स) ।
८. जं० १।१३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चत्तारि पउमा पण्णत्ता ।।

१९. तस्स णं पउमस्स दाहिणपुरत्थिमेणं, एत्थ णं सिरीए देवीए अब्भितरियाए परिसाए अट्ठण्हं देवसाहस्सीणं अट्ठ पउमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ । दाहिणेणं मज्झिम-परिसाए दसण्हं देवसाहस्सीणं दस पउमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरियाए परिसाए बारहसण्हं देवसाहस्सीणं बारस पउमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। पच्चत्थिमेणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सत्त 'पउमा पण्णत्ता'[1] ।

२०. तस्स णं पउमस्स चउद्दिसिं सव्वओ समंता, एत्थ णं सिरीए देवीए सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं सोलस पउमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।।

२१. से णं पउमे तिहिं पउमपरिक्खेवेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, तं जहा—अब्भितरएणं[2] मज्झिमएणं बाहिरएणं । अब्भितरए पउमपरिक्खेवे बत्तीसं पउमसय-साहस्सीओ पण्णत्ताओ। मज्झिमए[3] पउमपरिक्खेवे चत्तालीसं पउमसयसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। बाहिरए[4] पउमपरिक्खेवे अडयालीसं पउमसयसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। एवामेव सपुव्वावरेणं तिहिं पउमपरिक्खेवेहिं एगा पउमकोडी वीसं च पउमसयसाहस्सीओ भवंतीति अक्खायं ।।

२२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पउमद्दहे-पउमद्दहे ? गोयमा ! पउमद्दहे णं तत्थ-तत्थ देसे[5] तहिं-तहिं बहवे उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं[6] पउमद्दहप्पभाइं 'पउमद्दहा-गाराइं पउमद्दहवण्णाइं'[7] पउमद्दहवण्णाभाइं, सिरी यत्थ[8] देवी महिड्ढीया जाव[9] पलि-ओवमट्ठिईया परिवसइ । से एएणट्ठेणं ।

अदुत्तरं च णं गोयमा ! पउमद्दहस्स सासए णामधेज्जे पण्णत्ते—जं ण कयाइ णासि ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च भवइ य भविस्सइ य धुवे णियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ।।

२३. तस्स णं पउमद्दहस्स पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं गंगा महाणई पवूढा समाणी पुरत्थाभिमुही पंच जोयणसयाइं पव्वएणं गंता गंगावत्तणकूडे आवत्ता समाणी पंच तेवीसे जोयणसए तिण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएणं गंता[10] महया घडमुहपवत्तिएणं[11] मुत्तावलिहारसंठिएणं साइरेगजोयणसइएणं[12] पवाएणं[13] पवडइ ।

२४. गंगा महाणई जओ पवडइ, एत्थ णं महं एगा जिब्भिया पण्णत्ता । सा णं जिब्भिया अद्धजोयणं आयामेणं, छस्सकोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं, अद्धकोसं बाहल्लेणं,

---

१. पउमसाहस्सीओ पण्णत्ताओ (अ, ख, त्रि) ।

२. अब्भंतरए (अ, ब) ।

३. मज्झिमाए (अ, क, ख, त्रि, ब) ।

४. बाहिरियाए (अ, क, ख, त्रि, ब) ।

५. देसे-देसे (अ, क, ख, ब, स) ।

६. सयसहस्सपत्ताइं (अ, क, ख, ब,स) ।

७. × (अ, क, ख, त्रि, प, ब, स); जीवाजीवा-भिगमे (३।६५९) नीलवद् द्रहवर्णने विशेषण-चतुष्टयी विद्यते । शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ 'पद्मद्रहा-काराणि' इति विशेषणमपि व्याख्यातमस्ति ।

८. इत्थ (प) ।

९. जं० १।२४ ।

१०. गंगा (अ, ख, ब) लिपिप्रमादोऽत्र सम्भाव्यते ।

११. °पवितएणं (ख, स); °पवित्तिएणं (त्रि) ।

१२. °सदिएणं (ब) ।

१३. पवाहेणं (त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मगरमुहविउट्टसंठाणसंठिया सव्ववइरामई अच्छा सण्हा ।।

२५. गंगा महाणई जत्थ पवडइ, एत्थ णं महं एगे गंगप्पवायकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते— सट्ठिं जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, णउयं जोयणसयं किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं दस जोयणाइं उव्वेहेणं अच्छे सण्हे रययामयकूले[1] वइरामयपासाणे[2] 'सुहोतारे सुउत्तारे णाणामणितित्थ-बद्धे वइरतले सुवण्ण-सुज्झ-रययमणिवालुयाए वेरुलियरमणिफालियपडल-पच्चोयडे'[3] वट्टे समतीरे[4] अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजले संछण्णपत्तभिसमुणाले बहुउप्पल-कुमुय-णलिण-सुभग-सोगंधिय-पोंडरीय-महापोंडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्त-पप्फुल्ल-केसरोवचिए[5] अच्छविमलपत्थसलिलपुण्णे पडिहत्थभमंतमच्छकच्छभ- अणेगसउणगण-मिहुणपवियरिय-सद्दुन्नइयमहुरसरणाइए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे । से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, वेइया-वणसंड-पमाणं[6] वण्णओ भाणियव्वो[7] ।।

२६. तस्स णं गंगप्पवायकुंडस्स तिदिसिं तओ तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता,तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं । तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया णेम्मा[8] रिट्ठामया पइट्ठाणा वेरुलियामया खंभा सुवण्णरुप्पमया फलया लोहियक्खमईओ सूईओ वइरामया संधी णाणामणिमया आलंबणा आलंबणबाहाओ ।।

२७. तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं 'तोरणे पण्णत्ते'[9] । ते णं तोरणा णाणामणिमया णाणामणिमएसु खंभेसु उवणिविट्ठसंनिविट्ठा 'विविहतारा-रूवोवचिया विविहमुत्तंतरोवइया'[10] ईहामिय-उसह-तुरग - णर-मगर- विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गयवइरवेइयापरिगया-भिरामा[11] विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्ताविव[12] अच्चीसहस्समालणीया रूवगसहस्सकलिया

---

१. रययामयकुंडे (अ, ब); रययमयकूले समतीरे (प, शावृ) ।
२. क्षेत्रसमासवृत्तौ तु वज्रमयपार्श्वमित्युक्तम्, तदनुसारेण सूत्रपाठस्तु 'वयरमयपासे' त्ति द्रष्टव्यम् (हीवृ) ।
३. चिन्हाङ्कितपाठस्य स्थाने 'प' प्रतौ शान्ति-चन्द्रीयवृत्तौ च भिन्नः क्रमः क्वचिद् भिन्न-पदश्च पाठो विद्यते—वइरतले सुवण्णसुब्भरय-यामयबालुयाए वेरुलिअमणिफालिअपडल-पच्चोअडे सुहोतारे सुउत्तारे णाणामणितित्थ-सुबद्धे (प, शावृ) ।
४. × (प, शावृ) ।
५. °केसरोवचिए छप्पयमहुयरपरिभुज्जमाण-कमले (प, शावृ) ।
६. वणसंडगाणं पमाणं (त्रि, प) ।
७. जं० १।१०-१३ ।
८. णिम्मा (अ, क, त्रि, ब) ।
९. तोरणा पण्णत्ता (क, ख, त्रि, प) ।
१०. विविहमुत्तंतरोवइया विविहताराख्वोवचिया (प, शावृ); जीवाजीवाभिगमे (३।२८८) पि एवमेव विद्यते, 'प' संकेतितादर्शः जीवाजीवाभिगमपरम्परानुसारी विद्यते, उपाध्यायशान्तिचन्द्रेणापि तस्य सूत्रस्य पाठपरम्परा अनुसृतास्ति बहुशः ।
११. खंभुतरवइर° (अ, ब) ।
१२. विज्जाहरजमलजंत° (अ, क, त्रि, ब,स) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'भिसमाणा भिब्भिसमाणा'[1] चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा[2] पासादीया[3] दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

२८. तेसि णं तोरणाणं उवरिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ[4]-°णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणा सव्वरयणामया अच्छा° जाव पडिरूवा ॥

२९. तेसि णं तोरणाणं उवरिं बहवे किण्हचामरज्झया[5] °नीलचामरज्झया लोहिय-चामरज्झया हालिद्दचामरज्झया° सुक्किलचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पपट्टा वइरामयदंडा[6] जलयामलगंधिया सुरूवा[7] पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

३०. 'तेसि णं तोरणाणं उप्पिं बहवे छत्ताइच्छत्ता पडागाइपडागा घंटाजुयला चामर-जुयला'[8] उप्पलहत्थगा पउमहत्थगा जाव[9] सहस्सपत्तहत्थगा सव्वरयणामया अच्छा जाव[10] पडिरूवा ।

३१. तस्स णं गंगप्पवायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे गंगादीवे णामं दीवे पण्णत्ते—अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, साइरेगाइं पणवीसं[11] जोयणाइं परिक्खेवेणं, दो कोसे ऊसिए जलंताओ, सव्ववइरामए अच्छे । से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, वण्णओ भाणियव्वो[12] ॥

३२. गंगादीवस्स णं दीवस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते ॥

३३. तस्स णं बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं गंगाए देवीए एगे भवणे पण्णत्ते—कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, देसूणगं च कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे जाव[13] बहुमज्झदेसभाए मणिपेढिया सयणिज्जे ॥

३४. से केणट्ठेणं[14] °भंते ! एवं वुच्चइ—गंगादीवे णामं दीवे ? गोयमा! गंगादीवे तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहूइं उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं गंगादीवप्पभाइं गंगादीवा-गाराइं गंगादीववण्णाइं, गंगादीववण्णाभाइं गंगा यत्थ देवी महिड्ढीया जाव पलिओवम-ट्ठिईया परिवसइ । से तेणट्ठेणं ।
अदुत्तरं च णं° जाव[15] सासए णामधेज्जे पण्णत्ते ॥

३५. तस्स णं गंगप्पवायकुंडस्स दक्खिणिल्लेणं तोरणेणं गंगा महाणई पवूढा समाणी

---

१. भिब्भिसमीणा भिसमीणा (अ, ख, ब) ।
२. °रूवा घंटावलिचलिअमहुरमणहरसरा (प, शावृ, राय० सू० २०) ।
३. पासादीता (अ, ब) ।
४. सं० पा०—सिरिवच्छ जाव पडिरूवा ।
५. सं० पा०—किण्हचामरज्झया जाव सुक्किल° ।
६. °मयतुंडा (अ, ब) ।
७. सुरम्मा (प; शावृ) ।
८. चिन्हाङ्कितपाठस्य स्थाने 'अ, क, ख, त्रि, ब, स, हीवृ' आदर्शेषु केवलं 'बहवे' इति पाठो विद्यते ।
९. जं० ३।१० ।
१०. जं० १।८ ।
११. पणुवीसं (अ, क, ख, ब) ।
१२. जं० १।१०-१३ ।
१३. जं० ४।९-१३ ।
१४. सं पा० —केणट्ठेणं जाव सासए ।
१५. जं० ४।२२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तरड्ढभरहवासं एज्जेमाणी-एज्जेमाणी सत्तहिं सलिलासहस्सेहिं आपूरेमाणी[1]-आपूरेमाणी अहे खंडप्पवायगुहाए वेयड्ढपव्वयं दालइत्ता दाहिणड्ढभरहवासं एज्जेमाणी-एज्जेमाणी दाहिणड्ढभरहवासस्स बहुमज्झदेसभागं गंता पुरत्थाभिमुही आवत्ता समाणी चोद्दसहिं सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगइं दालइत्ता पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ ।।

३६. गंगा णं महाणई पवहे 'छ स्सकोसाइं'[2] जोयणाइं विक्खंभेणं, अद्धकोसं उव्वेहेणं, तयणंतरं च णं मायाए-मायाए परिवड्ढमाणी[3]-परिवड्ढमाणी मुहे बावट्ठिं[4] जोयणाइं अद्धजोयणं च विक्खंभेणं, सकोसं जोयणं उव्वेहेणं, उभओ पासिं दोहि य पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खित्ता, वेइयावणसंडवण्णओ भाणियव्वो[5] ।।

३७. एवं सिंधूएवि णेयव्वं जाव[6] तस्स णं पउमद्दहस्स पच्चत्थिमिल्लेणं तोरणेणं सिंधुआवत्तणकूडे दाहिणभिमुही, सिंधुप्पवायकुंडं, सिंधुद्दीवो, अट्ठो सो चेव जाव[7] अहे तिमिसगुहाए वेयड्ढपव्वयं दालइत्ता पच्चत्थिमाभिमुही आवत्ता समाणी चोद्दसेहिं सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगइं दालइत्ता पच्चत्थिमेणं लवण[8] °समुद्दं° समप्पेइ, सेसं तं चेव[9] ।।

३८. तस्स णं पउमद्दहस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं रोहियंसा महाणई पवूढा समाणी दोण्णि छावत्तरे जोयणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्स उत्तराभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं साइरेगजोयणसइएणं पवाएणं पवडइ ।।

३९. रोहियंसा[10] महाणई जओ पवडइ, एत्थ णं महं एगा जिब्भिया पण्णत्ता । सा णं जिब्भिया जोयणं आयामेणं, अद्धतेरसजोयणाइं विक्खंभेणं, कोसं बाहल्लेणं, मगरमुहविउट्ट-संठाणसंठिया सव्ववइरामई अच्छा ।।

४०. रोहियंसा[11] महाणई जहिं पवडइ, एत्थ णं महं एगे रोहियंसप्पवायकुंडे णाम

---

१. आभरमाणी (अ); आऊरेमाणी (प) ।

२. गंगामहानदीप्रवहे मकरमुखजिह्विकाप्रदेशे षट्सक्रोशानि योजनानि विष्कम्भेण यत्तु छजोयणसक्कोसमिति क्षेत्रसमासगाथां व्याख्यानयता मलयगिरिणा प्रवहे पद्मद्रहा-दिनिर्गमे षट्योजनानि सक्रोशानि गंगानद्या विस्तार इति भणितं तन्मकरमुखजिह्विकाया निर्गमं यावदऽविशेषेण विवक्षणात् अन्यथा—गंगासिंधूओ णं महाणदीओ पणवीसं गाउयाणि पुहुत्तेणं दुहओ घडमुहपवित्तिएणं मुत्तावलि-हार—संठिएणं पवातेणं पवडंति (सं० २५।७) । तथा -गंगासिंधूओ णं महाणईओ पवहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं पण्णत्ताओ (स० २४।५) त्ति समावायाङ्गेन सह विरोधः स्यात् (हीवृ) ।

३. पवड्ढमाणी (क, त्रि) ।

४. बावट्ठि (प) ।

५. जं० १।१०-१३ ।

६. जं० ४।२३-३३। अत्र 'णवरं' इति पदमपेक्षित-मासीत्, किन्तु न जाने केन कारणेन तस्य स्थाने 'जाव' पदस्य प्रयोगो जातः ।

७. जं० ४।३४,३५ ।

८. सं० पा० —लवण जाव समप्पेइ ।

९. जं० ४।३६ ।

१०. रोहियंसा णं (अ,क,ख,ब,स); रोहियंसा णाम (त्रि) ।

११. रोहियंसा णं (अ,क,ख,ब,स); रोहियंसा णाम (त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुंडे पण्णत्ते--सवीसं जोयणसयं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि असीए जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, दसजोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छे कुंडवण्णओ जाव[1] तोरणा ।।

४१. तस्स णं रोहियंसप्पवायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे रोहियंसदीवे णामं दीवे पण्णत्ते सोलस जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, साइरेगाइं पण्णासं जोयणाइं परिक्खेवेणं, दो कोसे ऊसिए जलंताओ, सव्वरयणामए अच्छे, सेसं तं चेव जाव[2] भवणं अट्ठो य भाणियव्वो ।।

४२. तस्स णं रोहियंसप्पवायकुंडस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं रोहियंसा महाणई पवूढा समाणी हेमवयं वासं एज्जेमाणी-एज्जेमाणी चउद्दसहिं सलिलासहस्सेहिं आपूरेमाणी-आपूरेमाणी सद्दावइ वट्टवेयड्ढपव्वयं अद्धजोयणेणं असंपत्ता समाणी पच्चत्थाभिमुही आवत्ता समाणी हेमवयं वासं दुहा विभयमाणी-विभयमाणी अट्ठावीसाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगइं दालइत्ता पच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ ।।

४३. रोहियंसा णं पवहे अद्धतेरसजोयणाइं विक्खंभेणं, कोसं उव्वेहेणं तयणंतरं च णं मायाए-मायाए परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी मुहमूले पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणाइं उव्वेहेणं, उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खित्ता ।।

४४. चुल्लहिमवंते णं भंते! वासहरपव्वए कइ कूडा पण्णत्ता? गोयमा! एक्कारस कूडा पण्णत्ता, तं जहा सिद्धायतणकूडे चुल्लहिमवंतकूडे भरहकूडे इलादेवीकूडे गंगाकूडे सिरिकूडे रोहियंसकूडे सिन्धुकूडे[3] सूरादेवीकूडे हेमवयकूडे वेसमणकूडे ।।

४५. कहि णं भंते! चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए सिद्धायतणकूडे[4] णामं कूडे पण्णत्ते? गोयमा! पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, चुल्लहिमवंतकूडस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं सिद्धायतणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते- पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले पंचजोयणसयाइं विक्खंभेणं, मज्झे तिण्णि य पण्णत्तरे जोयणसए विक्खंभेणं, उप्पि अड्ढाइज्जे जोयणसए विक्खंभेणं, मूले एगं जोयणसहस्सं पंच य एगासीए जोयणसए किंचि-विसेसाहिए परिक्खेवेणं, मज्झे एगं जोयणसहस्सं एगं च छलसीयं जोयणसयं किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, उप्पि सत्तएक्काणउए जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, मूले विच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते, उप्पि तणुए, गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ।।

४६. सिद्धायतणस्स कूडस्स णं उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे जाव[5]--

४७. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे सिद्धायतणे पण्णत्ते--पण्णासं जोयणाइं आयामेणं, पणवीसं जोयणाइं विक्खंभेणं, छत्तीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं जाव[6] जिणपडिमावण्णओ णेयव्वो[7] ।।

---

१. जं० ४।२५-३० ।
२. जं० ४।३१-३४
३. सिंधुदेवीकूडे (त्रि,प) ।
४. सिद्धायणकूडे (ब) ।
५. जं० १।३६ ।
६. जं० १।३७-४० ।
७. भाणियव्वो (त्रि,प) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८. कहि णं भंते ! चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए चुल्लहिमवंतकूडे णामं कूडे पण्णत्ते ? गोयमा ! भरहस्स कूडस्स पुरत्थिमेणं, सिद्धायतणकूडस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए चुल्लहिमवंतकूडे णामं कूडे पण्णत्ते। एवं जो चेव सिद्धायतणकूडस्स उच्चत्त-विक्खंभ-परिक्खेवो जाव[1]—

४९. बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते 'बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उच्चत्तेणं, एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं'[2] अब्भुग्गयमूसिय-पहसिए विव विविहमणिरयणभत्तिचित्ते वाउद्धुयविजय-वेजयंतीपडाग-च्छत्ताइच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमभिलंघमाणसिहरे[3] जालंतररयण[4] पंजरुम्मिलिएव्व मणिरयणथूभियाए वियसियसयवत्तपुंडरीयतिलयरयणद्धचंदचित्ते[5] णाणामणिमयदामालंकिए अंतो बाहिं[6] च सण्हे[7] वइर[8]-तवणिज्जरुइलवालुगापत्थडे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासाईए[9] •दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे। ।।

५०. तस्स णं पासायवडेंसगस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे[10] जाव सीहासणं सपरिवारं ।।

५१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चुल्लहिमवंतकूडे ? चुल्लहिमवंतकूडे ? गोयमा ! चुल्लहिमवंते णामं देवे महिड्ढीए जाव[11] परिवसइ[12] ।।

५२. कहि णं भंते ! चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स चुल्लहिमवंता णामं रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! चुल्लहिमवंतकूडस्स दक्खिणेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता अण्णं जंबुद्दीवं दीवं दक्खिणेणं बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स[13] देवस्स चुल्लहिमवंता णामं रायहाणी पण्णत्ता—बारस जोयणसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, एवं विजयरायहाणीसरिसा भाणियव्वा[14] ।।

५३. एवं अवसेसाणवि कूडाणं 'वत्तव्वया णेयव्वा'[15], आयाम-विक्खंभ-परिक्खेव-

---

१. जं० ४।४५-४६।

२. बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विक्खंभेणं एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च उड्ढं उच्चत्तेणं (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ, हीवृ); एष पाठः सम्यग् न प्रतीयते, सर्वत्रापि उच्चत्वापेक्षया विष्कम्भस्य अर्धत्वं दृश्यते। इदं समुचितमपि, यथा जीवाजीवाभिगमे (३।३५९) स्वीकृतपाठस्य संवादी पाठः उपलभ्यते—तेणं पासायवडेंसगा बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च आयाम-विक्खंभेणं।

३. गयणयल° (क)।

४. सूत्रे चात्र विभक्तिलोपः प्राकृतत्वात् (शावृ)।

५. शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ 'तिलयरयणद्धचंद' इति पाठांशो व्याख्यातो नास्ति।

६. बहिं (क,ख,प,स)।

७. संड (अ,ख,ब); सण्ह (क,त्रि,प)।

८. × (शावृ, जी० ३।३०७)।

९. सं० पा०—पासाईए जाव पडिरूवे।

१०. जी० ३।३०८-३१३ जं० १।४३,४४।

११. जं० १।२४।

१२. अत्र परिवसति तेन 'क्षुद्रहिमवन्तकूट' मिति क्षुद्रहिमवत्कूटं, अत्र च सूत्रेऽदृष्टमपि 'से तेणट्ठेणं चुल्लहिमवंतकूडे' (शावृ)।

१३. चुल्लहिमवंतकूडस्स (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

१४. जी० ३।३५१-५६५।

१५. णेयव्वा वत्तव्वया (अ,त्रि,ब,स); णेयव्वा (क,ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासायदेवयाओ सीहासण-परिवारो[1] अट्ठो य देवाण य देवीण य रायहाणीओ णेयव्वाओ[2], चउसु देवा—चुल्लहिमवंत-भरह-हेमवय-वेसमणकूडेसु, सेसेसु देवयाओ ।।

५४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए ? चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए ? गोयमा ! महाहिमवंतवासहरपव्वयं पणिहाय[3] 'आयामुच्चत्त-उव्वेह'[4]-विक्खंभ-परिक्खेवं पडुच्च ईसिं खुड्डतराए चेव ह्रस्सतराए[5] चेव णीयतराए चेव । चुल्ल-हिमवंते यत्थ[6] देवे महिड्ढीए जाव[7] पलिओवमट्ठिईए परिवसइ । से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए-चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए ।
अदुत्तरं च णं गोयमा ! चुल्लहिमवंतस्स सासए णामधेज्जे पण्णत्ते—जं ण कयाइ णासि ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च भवइ य भविस्सइ य धुवे णियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ।।

५५. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे हेमवए णामं वासे पण्णत्ते ? गोयमा ! महा-हिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दक्खिणेणं,[8] चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे हेमवए णामं वासे पण्णत्ते—पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पलियंकसंठाण-संठिए दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे—पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे, दोण्णि य[9] जोयणसहस्साइं एगं च पंचुत्तरं जोयणसयं पंच य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंभेणं । तस्स बाहा पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं छज्जोयणसहस्साइं सत्त य पणवण्णे जोयणसए तिण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं । तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहओ लवणसमुद्दं पुट्ठा—पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा, पच्चत्थिमिल्लाए[10] °कोडीए पच्च-त्थिमिल्लं लवणसमुद्दं° पुट्ठा, सत्ततीसं जोयणसहस्साइं 'छच्च चउवत्तरे'[11] जोयणसए सोलस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणे आयामेणं । तस्स धणुं [धणुपट्ठं ?] दाहिणेणं अट्ठतीसं जोयणसहस्साइं सत्त य चत्ताले जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं ।।

५६. हेमवयस्स णं भंते ! वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, 'एवं तइयसमाणुभावो'[12] णेयव्वो ।।

---

१. सपरिवारो (अ); परियारो (क,ब) ।
२. जं० ४।४७-५१ ।
३. पणिभाए (अ,ब) ।
४. आयामुच्चत्तोवेह (क,ख,स); आयामुच्चत्तुव्वेह (प) ।
५. ह्स्सतराए (प) ।
६. इत्थ (क,ख,त्रि,स); य इत्थ (प) ।
७. जं० १।२४ ।
८. दाहिणेणं (त्रि) ।
९. × (प) ।
१०. सं० पा०—पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठा ।
११. छच्च चउदुत्तरे (अ); छच्च चोवत्तरे (क); छच्च चुउत्तरे (ख); छच्च चोवुत्तरे (त्रि); छच्चेयत्तरे (ब); छच्चोयत्तरे (स) ।
१२. एरवयतइयसमयभावो (अ, ब); एरवततइय-मणुस्सभावो (ख); एरवततइयसमाणुभावो (स); एरवयतइयसमाणुभावो णेयव्वोत्ति-ऐरवतक्षेत्रसत्कसुषमदुष्षमालक्षणतृतीयारकानु-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५७. कहि णं भंते ! हेमवए वासे सद्दावई[1] णामं वट्टवेयड्ढपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! रोहियाए महाणईए पच्चत्थिमेणं, रोहियंसाए महाणईए पुरत्थिमेणं हेमवयवासस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं सद्दावई णामं वट्टवेयड्ढपव्वए पण्णत्ते--एगं जोयणसहस्सं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उव्वेहेणं, सव्वत्थसमे पल्लगसंठाणसंठिए एगं जोयणसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसहस्साइं एगं च बावट्ठं जोयणसयं किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं सव्वरयणामए अच्छे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, वेइयावणसंडवण्णओ भाणियव्वो[2] ॥

५८. सद्दावइस्स णं वट्टवेयड्ढपव्वयस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते ॥

५९. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते -बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च आयाम-विक्खंभेणं जाव[3] सीहासणं सपरिवारं ॥

६०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ--सद्दावई वट्टवेयड्ढपव्वए ? सद्दावई वट्टवेयड्ढ-

---

भाववदत्रत्यमनुष्याणामप्यनुभावो नेतव्य ज्ञेया इत्यर्थः (पुवृ); एवं तद्दयसमाणुभावो
इत्यर्थः। ऐरावतग्रहणं भरतस्योपलक्षणार्थं (पुवृपा)।
यथा हि भरतैरावतयोस्तृतीयारकमनुष्या १३. जं० २।५६।
एकगव्यूतोच्चत्वादिभावास्तथा अत्रत्या अपि

१. प्रस्तुतसूत्रे हेमवत-हरिवर्ष-रम्यक-हैरण्यवतसूत्रेषु वृत्तवैताढ्यपर्वतानां देवानां च स्थानाङ्गतः भिन्ना परम्परा विद्यते, द्रष्टव्यं निम्नवर्तियन्त्रम्—

	हैमवत	
वृत्तवैताढ्य देव	जं० ४।५७ सद्दावई सद्दावई	ठाणं ४।३०७ सद्दावाती साती
	हरिवर्ष	
वृत्तवैताढ्य देव	जं० ४।८४ वियडावई अरुणे	ठाणं ४।३०७ गंधावाती अरुणे
	रम्यक	
वृत्तवैताढ्य देव	जं ४।२६४ गंधावई पउमे	ठाणं ४।३०७ मालवंतपरिताते पउमे
	हैरण्यवत	
वृत्तवैताढ्य देव	जं० ४।२७० मालवंतपरियाए पभासे	ठाणं ४।३०७ वियडावाती पभासे

२. जं २।१०-१३। ३. जं० ४।४८,४९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पव्वए ? गोयमा ! सद्दावइवट्टवेयड्ढपव्वए णं खुड्डा खुड्डियासु वावीसु जाव[1] बिलपंतियासु बहवे उप्पलाइं पउमाइं सद्दावइप्पभाइं सद्दावइआगाराइं सद्दावइवण्णाइं सद्दावइण्णाभाइं। 'सद्दावई यत्थ'[2] देवे महिड्ढीए जाव महाणुभागे[3] 'पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से तेणट्ठेणं जाव सद्दावई वट्टवेयड्ढपव्वए-सद्दावई वट्टवेयड्ढपव्वए। रायहाणीवि णेयव्वा'[4]।।

६१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ--हेमवए वासे ? हेमवए वासे ? गोयमा ! चुल्लहिमवंतमहाहिमवंतेहिं वासहरपव्वएहिं दुहओ समुवगूढे[5] णिच्चं हेमं दलयइ[6], णिच्चं हेमं पगासइ। हेमवए य एत्थ देवे महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ--हेमवए वासे-हेमवए वासे।।

६२. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाहिमवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते? गोयमा! हरिवासस्स दाहिणेणं, हेमवयस्स वासस्स उत्तरेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाहिमवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे पलियंकसंठाणसंठिए दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे-- पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे, दो जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पण्णासं जोयणाइं उव्वेहेणं

---

१. जी० ३।२८६।

२. सद्दावइत्थ (अ, ब); सद्दावई इत्थ (क,त्रि); सद्दावतित्थ (ख, स)।

३. महाणुभावे (प, शावृ)।

४. से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं पलिओवमट्ठितीए जाव परिवसइ रायहाणी वि णेयव्वा (अ,क,ख,त्रि,ब,स, हीवृ); पलिओवमट्ठितीए परिवसइ से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव रायहाणी (प, शावृ)। पुण्यसागरीयवृत्तौ स्वीकृतपाठ एव व्याख्यातोस्ति। हीरविजयवृत्तौ 'साहस्सीणं' इति पदानन्तरं 'पलिओवट्ठिईए' इत्यादि व्याख्यातमस्ति, किन्तु पूर्वपाठानुसन्धानेन नैतत् सङ्गच्छते। बहुसु आदर्शेष्वपि एषा पाठ विसङ्गतिरस्ति। अस्या विसङ्गतेर्निवारणार्थं उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण प्रयत्नः कृतः। तस्यानुसारी 'प' प्रतिगतः पाठो व्याख्या चापि सङ्गच्छते। स च प्रयत्नः एवमस्ति—शब्दापाती चात्र देवो महर्द्धिको यावन्महानुभावः पल्योपमस्थितिकः —परिवसति, अथ शब्दापातिदेवमेव विशिनष्टि 'से णं तत्थ' इत्यादि, स—शब्दापाती देवस्तत्र---प्रस्तुतगिरौ चतुर्णां सामानिकसहस्राणां यावत्पदात् विजयदेववर्णकसूत्रं सर्वमपि ज्ञेयं व्याख्येयं च, कियत्पर्यन्तमित्याह— राजधानी मन्दरस्य दक्षिणस्यामन्यस्मिन् जम्बूद्वीपे द्वीपे इति, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यादर्शेषु एतत्सूत्रदृष्टोऽपि 'पलिओवमट्ठिई परिवसती' त्ययं सूत्रादेशः पूर्वसूत्रे यद्योजितस्तद्बहुसु विजयदेवप्रकरणादिसूत्रेष्वित्थमेव दृष्टत्वात् बहुग्रन्थसाम्मत्येन क्वचिदादर्शवैगुण्यमुद्भाव्यान्यथायोजनं बहुश्रुतसम्मतमेवास्ति इत्यलं विस्तरेण। जी० ३।३५१-५६५।

५. समवगूढे (क, ख, प, स, पुवृ, शावृ, हीवृ); समुवगूढे (पुवृपा)।

६. 'त्रि' प्रतौ 'दलयइ' इति पदस्य स्थाने 'मुंचति' इति पदं विद्यते। 'क, ख, ब, स' प्रतिषु हीरविजयवृत्तौ पुण्यसागरवृत्तौ च 'दलयइ' इति पदस्याग्रे 'णिच्चं हेमं मुंचइ' इति पाठो विद्यते; एतत्पदं क्वचिन्न दृश्यते (पुवृ); 'प' प्रतौ 'दलयइ' स्थाने 'दलति' इति पदं विद्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चत्तारि जोयणसहस्साइं दोण्णि य दसुत्तरे जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंभेणं। तस्स बाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं णव जोयणसहस्साइं दोण्णि य छावत्तरे जोयणसए णव य एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं। तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा—पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा, तेवण्णं जोयणसहस्साइं नव य एगतीसे जोयणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसाहिए आयामेणं। तस्स धणु [धणुपट्ठं ?] दाहिणेणं सत्तावण्णं जोयणसहस्साइं दोण्णि य तेणउए जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं, रुयगसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खित्ते॥

६३. महाहिमवंतस्स णं वासहरपव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते—णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहि य तणेहि य उवसोभिए जाव[1] आसयंति॥

६४. तस्स णं बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं एगे[2] महापउमद्दहे णामं दहे पण्णत्ते - दो जोयणसहस्साइं आयामेणं, एगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छे रययामयकूले[3] एवं आयाम-विक्खंभविहूणा जा चेव पउमद्दहस्स वत्तव्वया सा चेव णेयव्वा[4]। पउमप्पमाणं दो जोयणाइं अट्ठो जाव महापउमद्दहवण्णाभाइं। हिरी य एत्थ देवी महिड्ढीया जाव पलिओवमट्ठिईया परिवसइ। से एएणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—महापउमद्दहे-महापउमद्दहे[4]।

अदुत्तरं च णं गोयमा! महापउमद्दहस्स सासए णामधेज्जे पण्णत्ते—जं ण कयाइ णासी ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च भवइ य भविस्सइ य धुवे णियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे॥

६५. तस्स णं महापउमद्दहस्स दक्खिणिल्लेणं तोरणेणं रोहिया महाणई पवूढा समाणी सोलस पंचुत्तरे जोयणसए पंच य एगूणवीसइभाए जोयणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं साइरेगदोजोयणसइएणं[5] पवाएणं पवडइ॥

६६. रोहिया णं महाणई जओ पवडइ, एत्थ णं महं एगा जिब्भिया पण्णत्ता। सा णं जिब्भिया जोयणं आयामेणं, अद्धतेरसजोयणाइं विक्खंभेणं, कोसं बाहल्लेणं, मगरमुहविउट्ट-संठाणसंठिया सव्ववइरामई अच्छा॥

६७. रोहिया णं महाणई जहिं पवडइ, एत्थ णं महं एगे रोहियप्पवायकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते—सवीसं जोयणसयं आयाम-विक्खंभेणं[6], तिण्णि असीए जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छे सण्हे सो चेव वण्णओ, वइरतले वट्टे समतीरे जाव[7] तोरणा॥

६८. तस्स णं रोहियप्पवायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे रोहियदीवे

१. जी० ३।२७७-२९७।
२. महं एगे (क, ख, त्रि, स)।
३. रयणामयकूले (अ, ख, त्रि, ब)।
४. जं० ४।३-२२।
५. साइरेगजोयणदुसइएणं (अ, ब)।
६. °विक्खंभेणं पण्णत्ते (अ, क, ख, त्रि, प, ब, स)।
७. जं० ४।२५-३०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णामं दीवे पण्णत्ते--सोलस जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, साइरेगाइं पण्णासं जोयणाइं परिक्खेवेणं, दो कोसे ऊसिए जलंताओ, सव्ववइरामए अच्छे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ॥

६९. रोहियदीवस्स णं दीवस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते ॥

७०. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे भवणे पण्णत्ते--कोसं आयामेणं, सेसं तं चेव पमाणं च अट्ठो य भाणियव्वो[1] ॥

७१. तस्स णं रोहियप्पवायकुंडस्स दक्खिणिल्लेणं तोरणेणं रोहिया महाणई पवूढा समाणी हेमवयं वासं एज्जेमाणी-एज्जेमाणी सद्दावइं वट्टवेयड्ढपव्वयं अद्धजोयणेणं असंपत्ता पुरत्थाभिमुही आवत्ता समाणी हेमवयं वासं दुहा विभयमाणी-विभयमाणी अट्ठावीसाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगइं दालइत्ता पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ[2] ॥

७२. रोहिया णं[3] °पवहे अद्धतेरसजोयणाइं विक्खंभेणं, कोसं उव्वेहेणं, तयणंतरं च णं मायाए-मायाए परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी मुहमूले पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणाइं उव्वेहेणं, उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं° संपरिक्खित्ता ॥

७३. तस्स णं महापउमद्दहस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं हरिकंता महाणई पवूढा समाणी सोलस पंचुत्तरे जोयणसए पंच य एगूणवीसइभाए जोयणस्स उत्तराभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं साइरेगदुजोयणसइएणं पवाएणं पवडइ ॥

७४. हरिकंता महाणई जओ पवडइ, एत्थ णं महं एगा जिब्भिया पण्णत्ता--दो जोयणाइं आयामेणं, पणवीसं जोयणाइं विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं, मगरमुहविउट्ट-संठाणसंठिया 'सव्वरयणामई [सव्ववइरामई ?'[4]] अच्छा ॥

७५. हरिकंता णं महाणई जहिं पवडइ, एत्थ णं महं एगे हरिकंतप्पवायकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते--दोण्णि य चत्ताले जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, सत्तअउणट्ठे जोयणसए परिक्खेवेणं, अच्छे, एवं कुंडवत्तव्वया सव्वा नेयव्वा जाव[5] तोरणा ॥

७६. तस्स णं हरिकंतप्पवायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे हरिकंतदीवे णामं दीवे पण्णत्ते--बत्तीसं जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं एगुत्तरं जोयणसयं परिक्खेवेणं, दो कोसे ऊसिए जलंताओ, सव्वरयणामए अच्छे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण

---

१. जं० ४।३३,३४।

२. समुप्पेइ (ख, त्रि)।

३. सं० पा०--रोहिया णं जहा रोहियंसा तहा पवहे य मुहे (तहा वट्टवेयड्ढमुहे--अ, ब) य भाणियव्वं जाव संपरिक्खित्ता।

४. अत्र 'सव्वरयणामई' ति पाठो बह्वादर्शदृष्टोऽपि लिपिप्रमादादापतित एव सम्भाव्यते, बृहत्क्षेत्र-विचारादिषु सर्वासां जिह्विकानां वज्रमयत्वेनैव भणनात् जलाशयानां प्रायो वज्रमयत्वेनैवोपपत्तेश्च (शावृ)।

५. जं० ४।२५-३०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य वणसंडेणं[1] •सव्वओ समंता° संपरिक्खित्ते, वण्णओ भाणियव्वो[2], पमाणं च सयणिज्जं च अट्ठो य भाणियव्वो[3] ॥

७७. तस्स णं हरिकंतप्पवायकुंडस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं[4] •हरिकंता महाणई° पवूढा समाणी हरिवासं[5] वासं एज्जेमाणी-एज्जेमाणी वियडावइं वट्टवेयड्ढं जोयणेणं असंपत्ता पच्चत्थाभिमुही आवत्ता समाणी हरिवासं दुहा विभयमाणी-विभयमाणी छप्पण्णाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जगइं दालइत्ता पच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ ॥

७८. हरिकंता णं महाणई पवहे पणवीसं जोयणाइं विक्खंभेणं, अद्धजोयणं उव्वेहेणं, तयणंतरं च णं मायाए-मायाए परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी मुहमूले अड्ढाइज्जाइं जोयण-सयाइं विक्खंभेणं, पंच जोयणाइं उव्वेहेणं उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खित्ता ॥

७९. महाहिमवंते णं भंते ! वासहरपव्वए कइ कूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तं जहा--सिद्धायतणकूडे[6] महाहिमवंतकूडे हेमवयकूडे रोहियकूडे हिरिकूडे हरिकंताकूडे हरिवासकूडे वेरुलियकूडे, एवं चुल्लहिमवंतकूडाणं जा वत्तव्वया सच्चेव णेयव्वा[7] ॥

८०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ---महाहिमवंते वासहरपव्वए ? महाहिमवंते वासहरपव्वए ? गोयमा ! महाहिमवंते णं वासहरपव्वए चुल्लहिमवंतं वासहरपव्वयं पणिहाय आयामुच्चत्तुव्वेह[8]-विक्खंभ-परिक्खेवेणं महंततराए[9] चेव दीहतराए चेव। महाहिमवंते यत्थ देवे महिड्ढीए जाव[10] पलिओवमट्ठिईए परिवसइ ॥

८१. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे हरिवासे णामं वासे पण्णत्ते ? गोयमा ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स दक्खिणेणं, महाहिमवंतस्स[11] वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे हरिवासे णामं वासे पण्णत्ते। एवं जाव[12] पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे, अट्ठ जोयणसहस्साइं चत्तारि य एगवीसे जोयणसए एगं च एगूणवीसइभागं जोयणस्स विक्खंभेणं। तस्स बाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं तेरस जोयणसहस्साइं तिण्णि य एगसट्ठे जोयणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं। तस्स जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा--पुरत्थि-मिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं जाव लवणसमुद्दं पुट्ठा, तेवत्तरिं जोयणसहस्साइं णव य एगुत्तरे जोयणसए सत्तरस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं। तस्स

---

१. सं० पा०---वणसंडेणं जाव संपरिक्खित्ते।
२. जं० १।१०-१३।
३. जं० ४।३२-३४।
४. सं० पा०---तोरणेणं जाव पवूढा।
५. हरिवस्सं (अ, प, ब)।
६. सिद्धायणकूडे (अ, ब)।
७. जं० ४।४५-५४।
८. आयामुच्चत्तोव्वेह (अ, ख त्रि, ब, स)।
९. महंतराए (अ, क, ख, त्रि, ब)।
१०. जं० १।२४।
११. महयाहिमवंतस्स (अ, त्रि, ब)।
१२. जं० ४।१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धणुं [धणुपट्ठं ?] दाहिणेणं चउरासीइं जोयणसहस्साइं सोलसजोयणाइं चत्तारि एगूण-वीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं ।।

८२. हरिवासस्स णं भंते ! वासस्स केरिसए आगारभावपडोआरे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीहिं तणेहिं य उवसोभिए, एवं मणीणं तणाण य वण्णो गंधो फासो सद्दो य भाणियव्वो[1] ।।

८३. हरिवासे णं वासे तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे खुड्डा खुड्डियाओ, एवं जो सुसमाए अणुभावो सो चेव अपरिसेसो वत्तव्वो[2] ।।

८४. कहि णं भंते ! हरिवासे वासे वियडावई[3] णामं वट्टवेयड्ढपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! हरीए महाणईए पच्चत्थिमेणं, हरिकंताए महाणईए पुरत्थिमेणं, हरिवासस्स वासस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं वियडावई णामं वट्टवेयड्ढपव्वए पण्णत्ते। एवं जो चेव सद्दावइस्स विक्खंभुच्चत्तुव्वेह-परिक्खेव-संठाण-वण्णावासो य सो चेव वियडावइस्सवि भाणियव्वो[4], णवरं—अरुणो देवो, पउमाइं जाव वियडावइवण्णाभाइं। अरुणे यत्थ देवे महिड्ढीए एवं जाव दाहिणेणं रायहाणी णेयव्वा ।।

८५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—हरिवासे वासे ? हरिवासे वासे ?, गोयमा ! हरिवासे णं वासे मणुया अरुणा अरुणोभासा सेया णं संखतलसण्णिकासा[5], हरिवासे देवे महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—हरि-वासे वासे-हरिवासे वासे ।।

८६. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे णिसहे णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! महाविदेहस्स वासस्स दक्खिणेणं, हरिवासस्स उत्तरेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे णिसहे णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते—पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे—पुरत्थि-मिल्लाए जाव पुट्ठे, चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं, सोलस जोयणसहस्साइं अट्ठ य बायाले[6] जोयणसए दोण्णि य एगुणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंभेणं। तस्स बाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं वीसं जोयणसहस्साइं एगं च पण्णट्ठं जोयणसयं दुण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं। तस्स जीवा उत्तरेणं[7] •पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा—पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा°, चउणवइं जोयणसहस्साइं एगं च छप्पण्णं जोयणसयं दुण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं। तस्स[8] धणुं [धणुपट्ठं ?] दाहिणेणं एगं जोयणसयसहस्सं चउवीसं च जोयणसहस्साइं तिण्णि य छायाले जोयणसए णव य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं, रुयगसंठाण-

१. जी ३।२७७-२८५।
२. जं २।५२, ५३।
३. द्रष्टव्यम्—४।५७ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
४. जं० ४।५७-६०।
५. संखदल° (प, शावृ, पुवृपा)।
६. पायाले (अ, ब); बायालीसे (त्रि)।
७. सं० पा०—उत्तरेणं जाव चउणवइं।
८. तस्स य (त्रि, हीवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संठिए सव्वतवणिज्जमए अच्छे, उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं[1] •सव्वओ समंता° संपरिक्खित्ते ।।

८७. णिसहस्स[2] णं वासहरपव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे जाव आसयंति सयंति ।।

८८. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे तिगिंछिद्दहे[3] णामं दहे पण्णत्ते—पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं, दो जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छे सण्हे रययामयकूले[4] ।।

८९. तस्स णं तिगिंछिद्दहस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता। एवं जाव[5] आयाम-विक्खंभविहूणा जच्चेव महापउमद्दहस्स वत्तव्वया सच्चेव तिगिंछिद्दहस्सवि वत्तव्वया तं चेव पउमद्दहप्पमाणं अट्ठो जाव तिगिंछिवण्णाइं। धिई यत्थ देवी पलिओवमट्ठिईया परिवसइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—तिगिंछिद्दहे-तिगिंछिद्दहे ।।

९०. तस्स णं तिगिंछिद्दहस्स दक्खिणिल्लेणं[6] तोरणेणं हरिमहाणई पवूढा समाणी सत्त जोयणसहस्साइं चत्तारि य एकवीसे जोयणसए एगं च एगूणवीसइभागं जोयणस्स दाहिणाभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुहपवत्तिएणं[7] •मुत्तावलिहारसंठिएणं° साइरेग-चउजोयणसइएणं पवाएणं पवडइ। एवं जा चेव हरिकंताए वत्तव्वया सा चेव हरीएवि णेयव्वा[8]—जिब्भियाए कुंडस्स दीवस्स भवणस्स तं चेव पमाणं, अट्ठोवि भाणियव्वो जाव अहे जगइं दालइत्ता छप्पण्णाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमं लवणसमुद्दं समप्पेइ। तं चेव पवहे य मुहमूले य पमाणं उव्वेहो य जो हरिकंताए जाव वणसंड-संपरिक्खित्ता ।।

९१. तस्स णं तिगिंछिद्दहस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं सीतोदा[9] महाणई पवूढा समाणी सत्त जोयणसहस्साइं चत्तारि य एगवीसे जोयणसए एगं च एगूणवीसइभागं जोयणस्स उत्तराभिमुही पव्वएणं गंता महया घडमुहपवत्तिएणं[10] •मुत्तावलिहारसंठिएणं° साइरेग-चउजोयणसइएणं पवाएणं पवडइ। सीतोदा णं महाणई जओ पवडइ, एत्थ णं महं एगा जिब्भिया पण्णत्ता—चत्तारि जोयणाइं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं जोयणं बाहल्लेणं, मगरमुहविउट्टसंठाणसंठिया सव्ववइरामई अच्छा ।।

९२. सीतोदा णं महाणई जहिं पवडइ, एत्थ णं महं एगे सीओदप्पवायकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते—चत्तारि असीए जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, पण्णरसअट्ठारे[11] जोयणसए

१. सं० पा०—वणसंडेहिं जाव संपरिक्खित्ते।
२. णिसभस्स (अ, ब)।
३. तिगिच्छिद्दहे (अ, ब)।
४. रततामयकूले (अ,ब)।
५. जं० ४।६४।
६. दक्खिणेणं (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
७. सं० पा०—घडमुहपवत्तिएणं जाव साइरेग°।
८. जं० ४।७४-७८।
९. सीओता (अ,ब); सीओदा (त्रि); सीओआ (प)।
१०. सं० पा०—घडमुहपवत्तिएणं जाव साइरेग°।
११. °अट्ठार (त्रि,ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, अच्छे, एवं कुंडवत्तव्वया णेयव्वा जाव[1] तोरणा ।।

९३. तस्स णं सीओदप्पवायकुंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे सीओदा दीवे[2] णामं दीवे पण्णत्ते— चउसट्ठिं जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं दोण्णि बिउत्तरे[3] जोयणसए परिक्खेवेणं, दो कोसे ऊसिए जलंताओ, सव्ववइरामए अच्छे, सेसं तमेव वेइया-वणसंड-भूमिभाग-भवण-सयणिज्ज-अट्ठो य भाणियव्वो[4] ।।

९४. तस्स णं सीओदप्पवायकुंडस्स उत्तरिल्लेणं तोरणेणं सीओदा महाणई पवूढा समाणी देवकुरं[5] एज्जेमाणी-एज्जेमाणी चित्तविचित्तकूडे पव्वए निसढ-देवकुर-सूर-सुलस-विज्जुप्पभद्दहे य दुहा विभयमाणी-विभयमाणी चउरासीए सलिलासहस्सेहिं आपूरेमाणी-आपूरेमाणी भद्दसालवणं एज्जेमाणी-एज्जेमाणी मंदरं पव्वयं दोहिं जोयणेहिं असंपत्ता पच्चत्थिमाभिमुही 'आवत्ता समाणी'[6] अहे विज्जुप्पभं वक्खारपव्वयं दालइत्ता मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं अवरविदेहं वासं दुहा विभयमाणी-विभयमाणी एगमेगाओ चक्कवट्टिविजयाओ अट्ठावीसाए-अट्ठावीसाए सलिलासहस्सेहिं आपूरेमाणी-आपूरेमाणी पंचहिं सलिलासयसहस्सेहिं[7] दुतीसाए[8] य सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे जयंतस्स दारस्स जगइं दालइत्ता पच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेति ।।

९५. सीतोदा णं महाणई पवहे पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, जोयणं उव्वेहेणं, तयणंतरं च णं मायाए-मायाए परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी मुहमूले पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहिं य वणसंडेहिं संपरिक्खित्ता ।।

९६. णिसढे णं भंते ! वासहरपव्वए कति कूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धायतणकूडे[9] णिसढकूडे[10] हरिवासकूडे पुव्वविदेहकूडे हरिकूडे धिइ-कूडे सीओदाकूडे अवरविदेहकूडे रुयगकूडे । जो चेव चुल्लहिमवंतकूडाणं उच्चत्त-विक्खंभ-परिक्खेवो य पुव्ववण्णिओ रायहाणी य सच्चेव इहंपि णेयव्वा[11] ।।

९७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णिसहे वासहरपव्वए ? णिसहे वासहर-पव्वए ? गोयमा ! णिसहे णं वासहरपव्वए बहवे कूडा णिसहसंठाणसंठिया उसभसंठाण-संठिया । णिसहे यत्थ देवे महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठिईए परिवसइ । से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ— णिसहे वासहरपव्वए-णिसहे वासहरपव्वए ।।

९८. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे णामं वासे पण्णत्ते ? गोयमा ! णील-वंतस्स वासहरपव्वयस्स दक्खिणेणं, णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, पुरत्थिमलवण-

१. जं० ४।२५-३० ।
२. सीओदद्दीवे (अ,ब); सीतोददीवे (क,ख,प,स)।
३. पिउत्तरे (ब) ।
४. जं० ४।३१-३४ ।
५. देवकुरुं (क, ख); अत्र सूत्रे एकवचनं आकारान्तत्वं च प्राकृतत्वात् (शावृ) ।
६. पाठान्तरे आवर्त्तमाना (पुवृ) ।
७. सलिलासहस्सेहिं (क,त्रि,प); 'सय' इति पदं लिपिप्रमादात्त्रुटितं सम्भाव्यते ।
८. दुवत्तीसाए (अ,); दुबत्तीसाए (क, त्रि); बत्तीसाए (स) ।
९. सिद्धायण° (अ, ब, स) ।
१०. णिसभ° (अ, ब); णिसह° (क, ख, स) ।
११. जं० ४।४५-५३) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे णामं वासे पण्णत्ते—पाईणपडीणायए[1] उदीणदाहिणविच्छिण्णे पलियंकसंठाणसंठिए दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठे—पुरत्थिमिल्लाए[2] •कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं° पुट्ठे, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठे, तित्तीसं जोयणसहस्साइं छच्च चुलसीए जोयणसए चत्तारि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंभेणं। तस्स बाहा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं तेत्तीसं जोयणसहस्साइं सत्त य सत्तसट्ठे जोयणसए सत्त य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं। तस्स जीवा बहुमज्झदेसभाए पाईणपडीणायया दुहा लवणसमुद्दं पुट्ठा—पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं लवणसमुद्दं पुट्ठा, एवं पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठा, एगं जोयणसयसहस्सं आयामेणं। तस्स धणुं [धणुपट्ठं ?] उभओ पासिं उत्तरदाहिणेणं एगं जोयणसयसहस्सं अट्ठावण्णं जोयणसहस्साइं एगं च तेरसुत्तरं जोयणसयं सोलस य एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं ॥

९९. महाविदेहे णं वासे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—पुव्वविदेहे अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा ॥

१००. महाविदेहस्स णं भंते! वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते? गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[3] कत्तिमेहिं[4] चेव अकत्तिमेहिं चेव ॥

१०१. महाविदेहे णं भंते! वासे मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते? गोयमा! तेसि णं मणुयाणं छव्विहे संघयणे छव्विहे संठाणे पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी आउयं पालेंति, पालेत्ता अप्पेगइया णिरयगामी,[5] •अप्पेगइया तिरियगामी, अप्पेगइया मणुयगामी, अप्पेगइया देवगामी,° अप्पेगइया सिज्झंति[6] •बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वंति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेंति ॥

१०२. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—महाविदेहे वासे? महाविदेह वासे? गोयमा! महाविदेहे णं वासे भरहेरवय-'हेमवय-हेरण्णवय'[7]-हरिवास-रम्मगवासेहिंतो आयाम-विक्खंभ-संठाण-परिणाहेणं विच्छिण्णतराए चेव विपुलतराए चेव महंततराए चेव सुप्पमाणतराए चेव। महाविदेहा यत्थ मणूसा परिवसंति। महाविदेहे यत्थ देवे महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—महाविदेहे वासे-महाविदेहे वासे।

अदुत्तरं च णं गोयमा! महाविदेहस्स वासस्स सासए णामधेज्जे पण्णत्ते—जं ण कयाइ णासि ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सइ, भुविं च भवइ य भविस्सइ य धुवे णियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ॥

१०३. कहि णं भंते! महाविदेहे वासे गंधमायणे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते?

---

१. पदीण पडियायए (अ, ब)।
२. सं० पा०—पुरत्थिम जाव पुट्ठे।
३. जं० १।२१।
४. कित्तिमेहिं (क, ख, प, स)।
५. सं० पा०—णिरयगामी जाव अप्पेगइया।
६. सं० पा०—सिज्झंति जाव अंतं।
७. हेमवएरण्णवय (क, ख, ब, स); हेमवय एरण्णवय (त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोयमा ! णीलवंतस्स[1] वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं, मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपच्चत्थिमेणं, गंधिलावइस्स विजयस्स पुरत्थिमेणं, उत्तरकुराए पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं महाविदेहे वासे गंधमायणे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते-- उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे तीसं जोयणसहस्साइं दुण्णि य णउत्तरे जोयणसए छच्च य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं, णीलवंतवासहरपव्वयंतेणं चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं, पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं, तयणंतरं च णं मायाए-मायाए उस्सेहुव्वेहपरिवुड्ढीए परिवड्ढमाणे-परिवड्ढमाणे विक्खंभपरिहाणीए परिहायमाणे-परिहायमाणे मंदरपव्वयंतेणं पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं, अंगुलस्स असंखेज्जइभागं विक्खंभेणं पण्णत्ते --गयदंतसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे, उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ।।

१०४. गंधमायणस्स णं वक्खारपव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे जाव[2] आसयंति ।।

१०५. गंधमायणे णं वक्खारपव्वए कति कूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त कूडा पण्णत्ता, तं जहा --सिद्धायतणकूडे गंधमायणकूडे गंधिलावइकूडे उत्तरकुरुकूडे फलिहकूडे लोहियक्खकूडे आणंदकूडे[3] ।।

१०६. कहि णं भंते ! गंधमायणे वक्खारपव्वए सिद्धायतणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपच्चत्थिमेणं, गंधमायणकूडस्स दाहिणपुरत्थिमेणं, एत्थ णं गंधमायणे वक्खारपव्वए सिद्धायतणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते । जं चेव चुल्लहिमवंते सिद्धायतणकूडस्स पमाणं तं चेव एएसिं सव्वेसिं भाणियव्वं[4], एवं चेव विदिसाहिं तिण्णि कूडा भाणियव्वा, चउत्थे ततियस्स उत्तरपच्चत्थिमेणं, पंचमस्स दाहिणेणं, सेसा उत्तरदाहिणेणं । फलिह-लोहियक्खेसु भोगंकर-भोगवईओ दो[5] देवयाओ, सेसेसु सरिसणामया देवा । छसुवि पासायवडेंसगा, रायहाणीओ विदिसासु ।।

१०७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ --गंधमायणे वक्खारपव्वए ? गंधमायणे वक्खारपव्वए ? गोयमा ! गंधमायणस्स णं वक्खारपव्वयस्स गंधे, से जहाणामए -कोट्ठपुडाण वा[6] •पत्तपुडाण वा चोयपुडाण वा तगरपुडाण वा एलापुडाण वा चंपापुडाण वा दमणापुडाण वा कुंकुमपुडाण वा चंदणपुडाण वा उसीरपुडाण वा मरुयापुडाण वा जातिपुडाण वा जूहियापुडाण वा मल्लियापुडाण वा ण्हाणमल्लियापुडाण वा केतकिपुडाण वा पाडलिपुडाण वा णोमालियापुडाण वा वासपुडाण वा कप्पूरपुडाण वा अणुवायंसि उब्भिज्जमाणाण वा णिब्भिज्जमाणाण वा कोटेज्जमाणाण वा° पीसिज्जमाणाण वा उक्किरिज्जमाणाण वा विकिरिज्जमाणाण वा परिभुज्जमाणाण वा[7] •भंडाओ भंडं

---

१. णेलवंउस्स (अ, क ख, ब, स) ।
२. जं० १।१३ ।
३. आणंदनकूडे (ख) ।
४. जं० १।३५-४६ ।
५. × (अ, प, ब) ।
६. सं० पा०—कोट्ठपुडाण वा जाव पीसिज्जमाणाण ।
७. सं० पा०—परिभुज्जमाणाण वा जाव ओराला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहरिज्जमाणाणं° ओराला मणुण्णा[1] •मणहरा घाणमणणिव्वुतिकरा सव्वतो समंता° गंधा अभिणिस्सवंति, भवे एयारूवे ? णो इणट्ठे समट्ठे, गंधमायणस्स णं एत्तो[2] इट्ठतराए चेव[3] •कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव° गंधे पण्णत्ते। से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—गंधमायणे वक्खारपव्वए-गंधमायणे वक्खारपव्वए। 'गंधमायणे य इत्थ'[4] देवे महिड्ढीए परिवसइ।
अदुत्तरं च णं सासए णामधेज्जे ॥

१०८. कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णत्ता ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं, णीलवंतस्स[5] वासहरपव्वयस्स दक्खिणेणं, गंधमायणस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, मालवंतस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णत्ता पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिण्णा अद्धचंदसंठाणसंठिया एक्कारस[6] जोयणसहस्साइं अट्ठ य बायाले जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंभेणं। तीसे जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहा वक्खारपव्वयं पुट्ठा, तं जहा—पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्लं वक्खारपव्वयं पुट्ठा, 'पच्चत्थिमिल्लाए[7] •कोडीए° पच्चत्थिमिल्लं वक्खारपव्वयं पुट्ठा'[8], तेवण्णं जोयणसहस्साइं आयामेणं। तीसे णं धणुं [धणुपट्ठं ?] दाहिणेणं सट्ठिं जोयणसहस्साइं चत्तारि य अट्ठारसे[9] जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं ॥

१०९. उत्तरकुराए णं भंते ! कुराए केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते? गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते। एवं पुव्ववण्णिया जच्चेव सुसमसुसमावत्तव्वया सच्चेव णेयव्वा जाव[10] पम्हगंधा मियगंधा अममा सहा तेतली सणिच्चारी[11] ॥

११०. कहि णं भंते ! उत्तरकुराए जमगा णामं दुवे पव्वया पण्णत्ता ? गोयमा ! णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरिमंताओ अट्ठजोयणसए चोत्तीसे चत्तारि य सत्तभाए जोयणस्स अबाहाए, सीयाए महाणईए [पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं[12] ?] उभओ कूले, एत्थ णं जमगा णामं दुवे पव्वया पण्णत्ता—जोयणसहस्सं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उव्वेहेणं मूले एगं जोयणसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, मज्झे अद्धट्ठमाणि जोयण-सयाइं आयाम-विक्खंभेणं, उवरिं पंच जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, मूले तिण्णि जोयण-सहस्साइं एगं च बावट्ठं जोयणसयं किंचिविसेसाहियं[13] परिक्खेवेणं, मज्झे दो जोयणसहस्साइं, तिण्णि य बावत्तरे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं, उवरिं एगं जोयणसहस्सं पंच य एकासीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं, मूले विच्छिण्णा

१. सं० पा०—मणुण्णा जाव गंधा।
२. इत्तो (क, प, स)।
३. सं० पा०—चेव जाव गंधे।
४. गंधमायणे त्थ (अ, ब)।
५. णेलवंतस्स (अ, क, ख, ब, स)।
६. इक्कारस (क, ख, प, स)।
७. सं० पा०—एवं पच्चत्थिमिल्लाए जाव पच्चत्थिमिल्लं।
८. एवं पच्चत्थिमेणं पुट्ठा (अ, क, ख, त्रि, ब, स)।
९. अट्ठारे (अ, ब); अट्ठारस (त्रि)।
१०. जं० २।७-५०।
११. सणिचारी (प)।
१२. द्रष्टव्यम्—जं ४।२०६; जी० ३।६३२।
१३. °विसेसाहिए (अ, क, ख, त्रि, ब, स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया[1] सव्वकणगामया अच्छा सण्हा, पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेइयापरिक्खित्ता पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ता। ताओ णं पउमवर-वेइयाओ दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं, वेइयावणसंडवण्णओ भाणियव्वो[2] ।।

१११. तेसि णं जमगपव्वयाणं उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[3]···

११२. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं दुवे पासायवडेंसगा पण्णत्ता। ते णं पासायवडेंसगा बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं, एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च आयाम-विक्खंभेणं, पासायवण्णओ भाणियव्वो[4], सीहासणा सपरिवारा जाव एत्थ णं जमगाणं देवाणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं सोलस भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।।

११३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जमगा पव्वया ? जमगा पव्वया ? गोयमा! जमगपव्वएसु णं तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं 'खुड्डाखुड्डियासु वावीसु जाव बिलपंतियासु'[5] बहवे उप्पलाइं जाव[6] जमगवण्णाभाइं। जमगा य एत्थ दुवे देवा महिड्ढीया। ते णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव[7] भुंजमाणा विहरंति। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जमगपव्वया-जमगपव्वया।
अदुत्तरं च णं सासए णामधेज्जे जाव[8] जमगपव्वया[9]-जमगपव्वया ।।

११४. कहि णं भंते! जमगाणं देवाणं जमगाओ[10] रायहाणीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे बारस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं जमगाणं देवाणं जमगाओ रायहाणीओ पण्णत्ताओ बारस जोयण-सहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, सत्तत्तीसं जोयणसहस्साइं णव य अडयाले जोयणसए किंचि-विसेसाहिए परिक्खेवेणं, पत्तेयं-पत्तेयं पागारपरिक्खित्ता। ते णं पागारा सत्तत्तीसं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले अद्धतेरस जोयणाइं विक्खंभेणं, मज्झे छस्सकोसाइं[11] जोयणाइं विक्खंभेणं, उवरिं तिण्णि सअद्धकोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं, मूले विच्छिण्णा, मज्झे संखित्ता, उप्पिं तणुया, बाहिं वट्टा, अंतो चउरंसा, सव्वरयणामया अच्छा। ते णं

---

१. जमगसंठाण° (अ,क,प,ब,स,पुवृ,शावृ,हीवृ); जीवाभिगमे (३।६३२) तु गोपुच्छसंस्थान-संस्थितः (पुवृ); यमकौ यमल जातौ भ्रातरौ तयोर्यत्संस्थानं तेन संस्थितौ, परस्परं सदृश-संस्थानावित्यर्थः; अथवा यमका नाम शकुनि-विशेषास्तत्संस्थानसंस्थितौ संस्थानं चानयो-र्मूलतः प्रारभ्य संक्षिप्त-संक्षिप्तप्रमाणत्वेन गोपुच्छस्येव बोध्यम् (शावृ)।

२. जं० १।१०-१३।

३. जी० ३।६३३।

४. जी० ३।६३४,६३५)।

५. बहवे खुड्डाखुड्डियाओ जाव बिलपंतियाओ (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स)।

६. जी० ३।६३७।

७. जी० ३।६३७।

८. जं० ३।२२५।

९. जमगा पव्वया (अ,क,ख,ब,स)।

१०. जमिगाओ (क,ख प स,पुवृ,शावृ)। प्रायः सर्वत्र। जीवाजीवाभिगमे (३।६३८)। पि 'जमगाओ' इति पाठो विद्यते।

११. छच्च सकोसाइं (क,ख,स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पागारा णाणामणिपंचवण्णेहिं कविसीसएहिं उवसोहिया, तं जहा—किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं। ते णं कविसीसगा अद्धकोसं आयामेणं, देसूणं अद्धकोसं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच धणुसयाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमया अच्छा ॥

११५. जमगाणं रायहाणीणं एगमेगाए बाहाए पणवीसं-पणवीसं दारसयं पण्णत्तं। ते णं दारा बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं, एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं, तावइयं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा एवं रायप्पसेणइज्जविमाणवत्तव्वयाए[1] दारवण्णओ जाव[2] अट्ठट्ठमंगलगाइं ॥

११६. जमयाणं[3] रायहाणीणं 'चउद्दिसिं पंच-पंच जोयणसए अबाहाए'[4] चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता, तं जहा—असोगवणे सत्तिवण्णवणे[5] चंपगवणे चूयवणे। ते णं वणसंडा साइरेगाइं बारसजोयणसहस्साइं आयामेणं, पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं, पत्तेयं-पत्तेयं पागारपरिक्खित्ता किण्हा वणसंडवण्णओ[6], भूमीओ पासायवडेंसगा य भाणियव्वा[7] ॥

११७. जमगाणं रायहाणीणं अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, वण्णगो[8] ॥

११८. 'तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं दुवे उवयारियालयणा पण्णत्ता—बारस जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं'[9], तिण्णि जोयण-

---

१. वत्तव्वया (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ)।

२. राय० सू० १२६-१६८।

३. जवियाणं (अ,ख,व)।

४. पंच-पंच जोयणसए अबाहाए चउद्दिसिं (अ, क,ख,त्रि,ब,स, पुवृ, हीवृ); रायपसेणइयसूत्रे (१७०) जीवाजीवाभिगमे (३।३५८) च स्वीकृतपाठसंवादी पाठो विद्यते।

५. सत्तवण्णवणे (त्रि)।

६. जी० ३।३५८।

७. जी० ३।३५९।

८. वण्णओ (अ,ब); वण्णतो (ख); जी० ३।३६०।

९. चिन्हाङ्कितः पाठः 'अ,क,ख,त्रि,ब' आदर्शेषु नास्ति। हीरविजयसूरिणा अस्य पाठस्य अपेक्षा प्रत्यपादि—अत्र तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगे महं उवयारियालयणे पण्णत्ते बारसजोयणसयाइं आयामविक्खंभेणमित्यादिसूत्रं श्रीजीवाभिगमतोऽध्याहृत्याऽध्येतव्यं तत्र उपकारिकालयनं उपकरोत्युपष्टभ्नातीति उपकारिकाराजधानीस्वामीसत्कप्रासादावतंसकादीनां पीठिका उपकारिकालयनमिवोपकारिकालयनं यत् अन्यथा तिजोयणसहस्साइमित्यादि परिक्षेपप्रतिपादकस्य तत्रानुपपत्तेः विष्कम्भाद्युपेतपदार्थपरिज्ञानाभावे कस्य परिक्षेप उपवर्ण्यते ग्रामो नास्ति कुतः सीमेति वचनात् अध्याहृतसूत्रस्याभिधेयं यदुपकारिकालयनं तस्य परिधिमाह। उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण एष पाठः साक्षाल्लिखितः, अप्राप्तिश्च लेखकप्रमादात् प्रतिपादिता—अत्र च उपकारिकालयनसूत्रमादर्शेष्वदृश्यमानमपि राजप्रश्नीयसूर्याभविमानवर्णके जीवाभिगमे विजयाराजधानीवर्णके च दृश्यमानत्वात् 'तिण्णि जोयणसहस्साइं सत्त य पंचाणउए जोयणसए परिक्खेवेणं' मित्यादिसूत्रस्यान्यथानुपपत्तेश्च जीवाभिगमतो लिख्यते, आदर्शेष्वदृश्यमानत्वं च लेखकवैगुण्यादेवेति, तद्यथा—'तेसि णं' मित्यादि। प्रस्तुतपाठस्य सम्बन्धावलोकनार्थं द्रष्टव्यं—राय० सू० १८८; जीवाजीवाभिगमे ३।३६१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहस्साइं सत्त य पंचणउए जोयणसए परिक्खेवेणं, अद्धकोसं[1] च बाहल्लेणं, सव्वजंबूणयामया अच्छा, पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेइयापरिक्खित्ता, पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडवण्णओ भाणियव्वो, तिसोवाणपडिरूवगा तोरणा चउद्दिसिं भूमिभागो य भाणियव्वो[2] ।।

११६. तस्स णं बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं 'एगे[3] पासायवडेंसए पण्णत्ते'[4] [दुवे पासायवडेंसया पण्णत्ता ?]—बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं, एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च आयाम-विक्खंभेणं, वण्णओ[5], उल्लोया भूमिभागा सीहासणा सपरिवारा। एवं पासायपंतीओ[6]—एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च उड्ढं उच्चत्तेणं, साइरेगाइं अद्धसोलसजोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं। बिइयपासायपंती[7]—ते णं पासायवडेंसया साइरेगाइं[8] अद्धसोलसजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, साइरेगाइं अद्धट्ठमाइं जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं। तइयपासायपंती[9]—ते णं पासायवडेंसया साइरेगाइं[10] अद्धट्ठमाइं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, साइरेगाइं अद्धट्ठजोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, वण्णओ[11], सीहासणा सपरिवारा[12] ।।

१२०. तेसि णं मूलपासायवडेंसयाणं उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं जमगाणं देवाणं सभाओ सुहम्माओ पण्णत्ताओ—अद्धतेरस जोयणाइं आयामेणं, छस्सकोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं, णव जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसयसण्णिविट्ठा, सभावण्णओ[13] ।।

१२१. तासि णं सभाणं सुहम्माणं तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता। ते णं दारा दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, जोयणं विक्खंभेणं, तावइयं चेव पवेसेणं, सेया, वण्णओ जाव[14]

---

१. अद्धजोयणं (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ); अत्र 'जोयणं' इति पदं लिपिप्रमादादागतमिति सम्भाव्यते, हरिविजयसूरिणा उपाध्यायपुण्यसागरेण च आदर्शेषु यथा पाठो लब्धस्तथैव टीकितः। जीवाजीवाभिगमे (३।३६१) 'अद्धकोसं' इत्येव पाठो दृश्यते।

२. जी० ३।३६२-३६४।

३. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ)।

४. चिन्हाङ्कितपाठस्य स्थाने 'दुवे मूलपासायवडेंसया पण्णत्ता' इति पाठो युज्यते, एषा सम्भावना १२० सूत्रस्य 'तेसि णं मूलपासायवडेंसयाणं' इति पाठेन संपुष्टा भवति। किन्तु सर्वादर्शेष्वपि 'पासायवडेंसए पण्णत्ते' इति पाठो लभ्यते। महोपाध्यायपुण्यसागरेण प्रस्तुतप्रश्नस्य समाधानार्थं कश्चित् प्रयत्नः कृतः—एकवचननिर्देशस्तु एकैकस्मिन् भूमिभागे एकैकस्य प्रासादस्य सद्भावात्।

५. जी० ३।३६४-३६७।

६. प्रस्तुतप्रकरणे संक्षिप्तः पाठः उपलभ्यते, अस्य सम्यगवबोधार्थं जीवाजीवाभिगमस्य ३।३६८ सूत्रमवलोकनीयमस्ति। तत्र एवं पाठो विद्यते—'से णं पासायवडेंसए अण्णेहिं चउहिं' तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते। ते णं पासायवडेंसगा एगतीसं जोयणाइं' इत्यादि।

७ बीतित° (अ,स); द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।३६९ सूत्रम्।

८. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

९. द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।३७० सूत्रम्।

१०. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

११. जी० ३।३७०।

१२. यद्यपि जीवाभिगमे विजयदेवप्रकरणे तथा श्रीभगवत्यङ्गवृत्तौ चमरप्रकरणे प्रासादपंक्तिचतुष्कं तथाप्यत्र यमकाधिकारे पंक्तित्रयं बोध्यम् (शावृ)।

१३. जी० ३।३७२।

१४. जी० ३।३७३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वणमाला ॥

१२२. तेसि णं दाराणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं तओ मुहमंडवा पण्णत्ता। ते णं मुहमंडवा अद्धतेरसजोयणाइं आयामेणं, छस्सकोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं जाव[1] दारा भूमिभागा[2] य ॥

१२३. पेच्छाघरमंडवाणं तं चेव पमाणं[3] भूमिभागो मणिपेढियाओ। ताओ णं मणिपेढियाओ जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ सीहासणा भाणियव्वा[4] ॥

१२४. तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ 'दो जोयणाइं'[5] आयाम-विक्खंभेणं, जोयणं[6] बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ ॥

१२५. तासि णं उप्पिं पत्तेयं-पत्तेयं 'थूभा पण्णत्ता'[7]। ते णं थूभा 'दो जोयणाइं'[8] उड्ढं उच्चत्तेणं, 'दो जोयणाइं'[9] आयाम-विक्खंभेणं, सेया संखतलविमल[10]-णिम्मल-दधिघण-गोखीर-फेण-रययणिगरप्पगासा जाव[11] अट्ठट्ठमंगलया ॥

१२६. तेसि णं थूभाणं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं, जिणपडिमाओ[12] वत्तव्वाओ[13]। चेइयरुक्खाणं मणिपेढियाओ दो[14] जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, जोयणं बाहल्लेणं, चेइयरुक्खवण्णओ[15] ॥

१२७. तेसि णं चेइयरुक्खाणं पुरओ तओ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, अद्धजोयणं बाहल्लेणं ॥

१२८. तासि णं उप्पिं पत्तेयं-पत्तेयं महिंदज्झया पण्णत्ता। ते णं अद्धट्ठमाइं जोयणाइं

---

१. जी० ३।३७४,३७५।

२. भूमिभागो (क,ख,त्रि,स)।

३. जी० ३।३७६।

४. जी० ३।३७७-३७६।

५,६. जोयणं, अद्धजोयणं (अ,क,ख,त्रि,ब,स); स्वीकृतपाठः 'प' सङ्केतितादर्शे शान्तिचन्द्रीयवृत्तेः परम्परानुसारी वर्तते। अस्य पाठस्य विषये उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण एका टिप्पणी चापि कृतास्ति—यद्यप्येतत्सूत्रादर्शेषु 'जोयणं आयामविक्खंभेणं अद्धजोयणं बाहल्लेणं' इति पाठो दृश्यते तथापि जीवाभिगमपाठदृष्टत्वेन राजप्रश्नीयादिषु प्रेक्षामण्डपमणिपीठिकातः स्तूपमणिपीठिकायाः द्विगुणमानत्वेन दृष्टत्वाच्चायं सम्यक् पाठः सम्भाव्यते, आदर्शेषु लिपिप्रमादस्तु सुप्रसिद्ध एव।

७. तओ थूभा (अ,क,ख,त्रि,ब,स); चेइयथूभे पण्णत्ते (जी० ३।३८१)।

८. सातिरेगाइं दो जोयणाइं (जी० ३।३८१)।

९. जोयणं (अ,क,ख,त्रि,ब,स); अयमपि पाठः 'प' सङ्केतितादर्शं शान्तिचन्द्रीयवृत्तिं चानुसृत्य स्वीकृतः। वृत्तिकर्त्तुः टिप्पणी एवमस्ति—द्वे योजने ऊर्ध्वोच्चत्वेन द्वे योजने आयामविष्कम्भाभ्यां व्याख्यातो विशेषप्रतिपत्ति' रिति देशोने द्वे योजने आयामविष्कम्भाभ्यां ग्राह्ये, अन्यथा मणिपीठिकास्तूपयोरभेद एव स्यात्।

१०. संखदल° (प,शावृ)।

११. जी० ३।३८१,३८२।

१२. जिणपडिमाओ चेव (अ,ब)।

१३. जी० ३।३८३,३८४।

१४. × (अ,ब)।

१५. जी० ३।३८५-३९१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धकोसं उव्वेहेणं, अद्धकोसं बाहल्लेणं, वइरामय-वट्टलट्ठसंठिय-सुसिलिट्ठ-परिघट्ठमट्ठसुपतिट्ठा वण्णओ[1] । वेइगा-वणसंड-तिसोवाण-तोरणा[2] य भाणियव्वा[3] ।।

१२९. तासि णं सभाणं सुहम्माणं छच्च मणोगुलियासाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुरत्थिमेणं दो साहस्सीओ पण्णत्ताओ, पच्चत्थिमेणं 'दो साहस्सीओ'[4] दाहिणेणं एगा साहस्सी, उत्तरेणं एगा जाव[5] दामा चिट्ठंति ।।

१३०. एवं[6] गोमाणसियाओ, णवरं—धवघडियाओ[7] ।।

१३१. तासि णं सुधम्माणं सभाणं अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते[8] ।।

१३२. मणिपेढिया दो जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, जोयणं बाहल्लेणं ।।

१३३. तासि णं मणिपेढियाणं उप्पिं माणवए चेइयखंभे महिंदज्झयप्पमाणे[9] ।।

१३४. उवरिं[10] छक्कोसे[11] ओगाहित्ता हेट्ठा छक्कोसे[12] वज्जित्ता 'जिणसकहाओ पण्णत्ताओ'[13] ।।

१३५. माणवगस्स पुव्वेणं सीहासणा सपरिवारा[14], पच्चत्थिमेणं सयणिज्जा, वण्णओ[15] ।।

१३६. सयणिज्जाणं उत्तरपुरत्थिमे[16] दिसिभाए खुड्डगमहिंदज्झया[17] मणिपेढियाविहूणा महिंदज्झयप्पमाणा[18] ।।

१३७. तेसिं अवरेणं चोप्पाला पहरणकोसा । तत्थ णं बहवे फलिहरयणपामोक्खा[19] जाव[20] चिट्ठंति ।।

१३८. सुहम्माणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा[21] ।।

१३९. तासि णं उत्तरपुरत्थिमेणं सिद्धायतणा[22] । एसेव जिणघराणवि गमो, णवरं[23]—इमं णाणत्तं—एतेसि णं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढियाओ दो जोयणाइं आयाम-

---

१. जी० ३।३९३,३९४ ।
२. उक्ता महेन्द्रध्वजा, अथ पुष्करिण्यः ताश्च 'वेइयावणसंड' इत्यादिपर्यन्तसूत्रेण संगृह्यते (शावृ) ।
३. जी० ३।३९५,३९६ ।
४. दोण्णि (अ,ब); दुण्णि (क,ख,त्रि,स) ।
५ जी० ३।३९७ ।
६. जी० ३।३९८ ।
७. धूवघडिया (अ,ब); धूवघडिओ (क,ख, त्रि,स) ।
८. अत्र मणिवर्णादयो वाच्याः उल्लोकाः पद्मलतादयोपि च चित्ररूपाः (शावृ); जी० ३।३९९, ४०० ।
९. जं० ४।१३२ ।
१०. पूर्णपाठाववोधार्थं द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।४०२,४०३ सूत्रम् ।
११,१२. छस्सकोसे (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
१३. जिणसकहा वण्णओ (क,ग) ।
१४. जी० ३।४०४,४०५ ।
१५. जी० ३।४०६,४०७ ।
१६. उत्तरओ (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
१७. खुड्डाग° (क,ख,स) ।
१८. जी० ३।४०८.४०९ ।
१९. °पामुक्खा (क,ख,त्रि,प,स) ।
२०. जी० ३।४१०
२१. सुधर्मयोरुपर्यष्टाष्टमङ्गलकानि इत्यादि तावद् वक्तव्यं यावद् बहवः सहस्रपत्रहस्तकाः सर्वरत्नमया इत्यादि (शावृ) ।
२२. सिद्धायणाओ (अ,ब) ।
२३. णवरि (अ,क,ब,स) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विक्खंभेणं, जोयणं बाहल्लेणं। तासिं उप्पिं पत्तेयं-पत्तेयं देवच्छंदया पण्णत्ता—दो जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सव्वरयणामया। जिणपडिमा, वण्णओ जाव[1] धूवकडुच्छुगा॥

१४०. एवं चेव[2] अवसेसाणवि सभाणं जाव उववायसभाए[3] सयणिज्जं 'हरओ य'[4] अभिसेयसभाए बहू आभिसेक्के भंडे[5], अलंकारियसभाए[6] बहू अलंकारियभंडे[7] चिट्ठइ, ववसायसभासु पोत्थयरयणा, णंदा पुक्खरिणीओ, बलिपेढा 'दो जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं जोयणं बाहल्लेणं'[8] जाव[9]—

संगह-गाहा—

उववाओ संकप्पो, अभिसेय विहूसणा य ववसाओ।
अच्चणियसुधम्मगमो, जहा य परिवारणाइड्ढी[10] ॥१॥
जावइयंमि पमाणंमि, हुंति जमगाओ[11] णीलवंताओ[12]।
तावइयमंतरं खलु, जमगदहाणं[13] दहाणं च ॥२॥

१४१. कहि णं भंते! उत्तरकुराए कुराए णीलवंतद्दहे[14] णामं दहे पण्णत्ते? गोयमा! जमगाणं[15] दक्खिणिल्लाओ चरिमंताओ अट्ठसए चोत्तीसे चत्तारि य सत्तभाए 'जोयणस्स अबाहाए'[16] सीयाए महाणईए बहुमज्झदेसभाए, 'एत्थ णं णीलवंतद्दहे णामं दहे पण्णत्ते'[17]—दाहिणउत्तरायए पाईणपडीणविच्छिण्णे[18] जहेव पउमद्दहे तहेव वण्णओ णेयव्वो, णाणत्तं—दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहि संपरिक्खित्ते, 'णीलवंते णामं'[19] णागकुमारे देवे, सेसं तं चेव णेयव्वं[20]॥

१४२. णीलवंतद्दहस्स पुव्वावरे पासे 'दस दस'[21] जोयणाइं अबाहाए, एत्थ णं वीसं

---

१. जी० ३.४१२-४२०।
२. × (प,शावृ)।
३. ओवावसभाए (क)।
४. 'अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ' एतेषु सर्वेष्वपि 'हरओ य' इति पाठः 'आभिसेक्के भंडे' इति पाठानन्तरं विद्यते, किन्तु जीवाजीवाभिगमस्य ३।४२५ सूत्रस्यावलोकनेन एतज्ज्ञायते—उपपातसभायाः उत्तरपौरस्त्ये ह्रदो विद्यते, तस्य उत्तरपौरस्त्ये अभिषेकसभा विद्यते, अतः 'हरओ य' इति पाठः अभिषेकसभातः पूर्वमेव युज्यते।
५. भंडे हरओ य (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
६. आलंकारियसभाए (अ,ब)।
७. आलंकरिय° (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
८. सव्वरयणामया' सकोसं जोयणं बाहल्लेणं (अ,क,ख,त्रि,ब,स पुवृ,हीवृ)।
९. यावत्पदात् 'सव्वरयणामया अच्छा पासाईया ४'। (शावृ); जी० ३।४२१-४३८।
१०. परियारणाइड्ढी (अ,ख,त्रि,ब); परिआरणाइड्ढो (क,स)।
११. जवगाओ (अ,ब)।
१२. णेलवंताओ (अ,क,ख,ब)।
१३. जवग° (अ,ब)।
१४. णेलमंतद्दहे (अ,ब)।
१५. जवगाणं (अ,ब); जमिगाणं (ख)।
१६. अबाहाए जोयणस्स (अ,त्रि,ब,स); आबाहाए जोयणस्स (क,ख)।
१७. × (अ,क,ख,ब,स)।
१८. पादीणपडिण° (अ,ब)।
१९. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
२०. जं० ४।३-२२।
२१. दह २ (अ,क,ख,ब,स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंचणगपव्वया पण्णत्ता— एगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं—

गाहा—

मूलंमि जोयणसयं, पण्णत्तरि जोयणाइं मज्झंमि ।
उवरितले कंचणगा, पण्णासं जोयणा हुंति ॥१॥
मूलंमि तिण्णि सोले, सत्तत्तीसाइं दुण्णि मज्झंमि ।
अट्ठावण्णं च सयं, उवरितले परिरओ होइ ॥२॥
पढमोत्थ[1] नीलवंतो[2], बितिओ[3] उत्तरकुरू मुणेयव्वो ।
चंदद्दहोत्थ तइओ, एरावण[4] मालवंतो य ॥३॥

एवं वण्णओ, अट्ठो पमाणं पलिओवमट्ठिइया देवा ॥

१४३. कहि णं भंते । उत्तरकुराए कुराए जंबूपेढे णामं पेढे पण्णत्ते ? गोयमा ! णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दक्खिणेणं, मंदरस्स उत्तरेणं [उत्तरपुत्थिमेणं ?[5]], मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं [गंधमादणस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं ?[6]], सीयाए महाणईए पुरत्थिमिल्ले कूले, एत्थ णं उत्तरकुराए कुराए जंबूपेढे णामं पेढे पण्णत्ते—पंच जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, 'पण्णरस एक्कासीयाइं'[7] जोयणसयाइं[8] किंचिविसेसाहियाइं[9] परिक्खेवेणं, बहुमज्झदेसभाए बारस जोयणाइं बाहल्लेणं, तयणंतरं च णं 'मायाए-मायाए'[10] पदेसपरिहाणीए परिहायमाणे-परिहायमाणे सव्वेसु णं चरिमपेरंतेसु दो-दो गाउयाइं बाहल्लेणं, सव्वजंबूणयामए अच्छे । से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते । दुण्हंपि वण्णओ[11] ॥

१४४. तस्स णं जंबूपेढस्स चउद्दिसिं एए चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता, वण्णओ जाव[12] तोरणाइं ॥

१४५. तस्स णं जंबूपेढस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं मणिपेढिया पण्णत्ता—अट्ठजोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं ॥

१४६. तीसे णं मणिपेढियाए उप्पिं, एत्थ णं जंबू सुदंसणा पण्णत्ता—अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धजोयणं उव्वेहेणं । तीसे णं खंधो दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्ध-

---

१. पढमित्थ (क,ख,त्रि,प,स) ।
२. णेलमंतो (अ,ब) ।
३. पितिओ (अ,ब) ।
४. एरावय (प,शावृ) ।
५. यथा देवकुरुप्रकरणे (४।२०७) 'मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं इति पाठोस्ति तथात्रापि' 'मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं' इति पाठो युज्यते । जीवाजीवाभिगमे (३।६६८) पि एवंविधः पाठो लभ्यते ।
६. यथा देवकुरुप्रकरणे (४।२०७) 'विज्जुप्पभस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं' इति पाठोस्ति तथात्रापि 'गंधमादणस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं इति' पाठो युज्यते । जीवाजीवाभिगमे (३।६६८) पि एवंविधः पाठो लभ्यते ।
७. पण्णरसे एक्कतीसाइं (अ,ब); पण्णरसेक्कासीयाइं (क,ख,त्रि,स) ।
८. × (अ,ब) ।
९. विसेसाहिए (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
१०. माताए २ (अ,त्रि,ब) ।
११. जं० १।१०-१३ ।
१२. जी० ३।२८७-२९१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोयणं बाहल्लेणं। तीसे णं साला छ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं। तीसे णं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते- 'वइरामयमूल-रययसुपइट्ठियविडिमा'[1] जाव[2] अहियमणणिव्वुइकरी पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।।

१४७. जंबूए णं सुदंसणाए चउद्दिसिं चत्तारि साला पण्णत्ता। 'तेसि णं'[3] सालाणं बहुमज्झदेसभाए[4], एत्थ णं सिद्धाययणे पण्णत्ते-- कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, देसूणगं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे जाव दारा पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं जाव वणमालाओ, मणिपेढिया पंचधणुसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, अड्ढाइज्जाइं धणसयाइं बाहल्लेणं। तीसे णं मणिपेढियाए उप्पि देवच्छंदए पंचधणुसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, साइरेगाइं पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, जिणपडिमा, वण्णओ सव्वो णेयव्वो[5]। तत्थ णं जेसे पुरत्थिमिल्ले साले, एत्थ णं भवणे पण्णत्ते --'कोसं आयामेणं'[6] एमेव,[7] णवरमित्थ सयणिज्जं, सेसेसु[8] पासायवडेंसया सीहासणा 'य सपरिवारा'[9]।।

१४८. जंबू णं बारसहिं पउमवरवेइयाहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, वेइयाणं वण्णओ[10]।।

१४९. जंबू णं अण्णेणं अट्ठसएणं जंबूणं तदद्धुच्चत्ताणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, तासि णं वण्णओ[11]। ताओ णं जंबू छहिं पउमवरवेइयाहिं संपरिक्खित्ता।।

१५० जंबूए णं सुदंसणाए 'उत्तरपुरत्थिमेणं उत्तरेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं'[12] एत्थ णं अणाढियस्स देवस्स चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं[13] चत्तारि जंबूसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।।

---

१. वइरामया मूला रतयामया विडिमा सुविदिसि (अ,ब); वइरामया मूला रजतमया विडिमा सुविदिसि (क ख); वइरामया मूला रजतमया विडिमा सुदिसि (त्रि,हीवृ) वइरामया मूला रयतामया विडिमा (स,पुवृ); जीवाभिगमे तु वज्रमयमूला रजतमयसुप्रतिष्ठितविडिमा इत्यादिरूपो वर्णको दृश्यते (पुवृ)।

२. जी० ३।६७२।

३. तेसिं (अ,ब)।

४. उपरितनविडिमशालायामित्यध्याहार्यं जीवाभिगमे तथा दर्शनात् (शावृ)।

५. जी० ३।६७४-६७७।

६. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

७. जी० ३।६७३।

८. जी० ३।६७३।

९. अपरिवारा (क,स); सीहासणा अपरिवारत्ति अत्र प्रासादेषु सिंहासनानि अपरिवाराणि किमुक्तं भवति एकैकस्य प्रासादावतंसकस्य मध्ये पञ्चधनुः शतायामविष्कम्भा अर्धतृतीयधनुःशतबाहल्या मणिमयी पीठिका। तासां च मणिपीठिकानामुपरि प्रत्येकमनादृतदेवयोग्यं सर्वरत्नमयं भद्रासनरूपपरिवाररहितं वाच्यमिति (पुवृ); सिंहासनानि चापरिवाराणि परिवाररहितानि वाच्यानि, क्वचिद् सपरिवारा इत्यपि पाठः (हीवृ)।

१०. जं० ११०,११।

११. जी० ३।६७९।

१२. उत्तरेणं पुरत्थिमेणं दक्खिणेणं (क); उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं (जी० ३।६७०)।

१३. सामाणियदेवसाहस्सीणं (क,ख,त्रि,स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५१. तीसे णं पुरत्थिमेणं चउण्हं अग्गमहिसीणं[1] चत्तारि जंबूओ पण्णत्ताओ—

गाहा—

दक्खिणपुरत्थिमे, दक्खिणेण तह अवरदक्खिणेणं च ।
अट्ठ दस बारसेव य, भवंति जंबूसहस्साइं ।।१।।
अणियाहिवाण पच्चत्थिमेण सत्तेव होंति जंबूओ ।
सोलस साहस्सीओ, चउद्दिसिं आयरक्खाणं ।।२।।

१५२. जंबूए णं तिहिं सइएहिं वणसंडेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता [तं जहा—अब्भंतरएणं मज्झिमेणं बाहिरेणं ?[2]] ।।

१५३. जंबूए णं पुरत्थिमेणं पण्णासं जोयणाइं पढमं वणसंडं ओगाहित्ता, एत्थ णं भवणे पण्णत्ते—कोसं आयामेणं, सो चेव वण्णओ[3] सयणिज्जं च । एवं सेसासुवि दिसासु भवणा ।।

१५४. जंबूए णं उत्तरपुरत्थिमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं जोयणाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं चत्तारि पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा पउमप्पभा कुमुदा कुमुदप्पभा । ताओ णं कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, पंचधणुसयाइं उव्वेहेणं, वण्णओ[4] ।।

१५५. तासि णं मज्झे पासायवडेंसगा—कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, देसूणगं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं, वण्णओ,[5] सीहासणा सपरिवारा, एवं सेसासु विदिसासु—

गाहा—

पउमा पउमप्पभा चेव, कुमुदा कुमुदप्पहा ।
उप्पलगुम्मा णलिणा, उप्पला उप्पलुज्जला ।।१।।
भिंगा भिंगप्पभा[6] चेव, अंजणा[7] कज्जलप्पभा ।
सिरिकंता सिरिमहिया, सिरिचंदा[8] चेव सिरिनिलया ।।२।।

१५६. जंबूए णं पुरत्थिमिल्लस्स भवणस्स उत्तरेणं, उत्तरपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स दक्खिणेणं, एत्थ णं 'महं एगे'[9] कूडे पण्णत्ते—अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दो जोयणाइं उव्वेहेणं, मूले अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, बहुमज्झदेसभाए छ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, उवरिं चत्तारि जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं—

गाहा—

पणवीसट्ठारस बारसेव मूले य मज्झमुवरिं[10] च ।
सविसेसाइं परिरओ, कूडस्स इमस्स बोद्धव्वो ।।१।।

---

१. अग्गवरमहिसीणं (अ,ख,ब) ।

२. शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ 'तद्यथा—अभ्यंतरेण मध्यमेन बाह्येनेति' इति व्याख्यातमस्ति । जीवाजीवाभिगमेपि (३।६८१) एष पाठः उपलभ्यते तं जहा—अब्भंतरएणं मज्झिमेणं बाहिरेणं । तेन आदर्शेषु अनुपलब्धोपि एष पाठो युज्यते ।

३. जी० ३।६७३ ।

४. जी० ३।२८६ ।

५. जी० ३।६८३,६८४ ।

६. भिंगणिभा (क,ख,जी० ३।६८७) ।

७. कज्जला (स) ।

८. सिरियंदा (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।

९. × (अ,क,ख,प,ब,स); एगे महं (त्रि,हीवृ) ।

१०. मज्झ उवरिं (क,ख,स); मज्झे उवरिं (त्रि); मज्झि उवरिं (प) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूले विच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते, उवरिं तणुए, सव्वकणगामए[1] अच्छे वेइया-वणसंड-वण्णओ[2]। एवं[3] सेसावि कूडा ॥

१५७. जंबूए णं सुदंसणाए दुवालस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

गाहा—

सुदंसणा अमोहा य, सुप्पबुद्धा जसोहरा।
विदेहजंबू सोमणसा, णियया[4] णिच्चमंडिया ॥१॥
सुभद्दा[5] य विसाला य, सुजाया सुमणा वि या।
सुदंसणाए जंबूए, णामधेज्जा दुवालस ॥२॥

१५८. जंबूए णं[6] अट्ठट्ठमंगलगा[7] ॥

१५९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जंबू सुदंसणा ? जंबू सुदंसणा ? गोयमा ! जंबूए णं सुदंसणाए अणाढिए णामं देवे[8] जंबुद्दीवाहिवई परिवसइ—महिड्ढीए। से णं तत्थ चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव[9] आयरक्खदेवसाहस्सीणं, जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स, जंबूए सुदंसणाए, अणाढियाए रायहाणीए, अण्णेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य जाव[10] विहरइ[11]। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जंबू सुदंसणा-जंबू सुदंसणा।
अदुत्तरं च णं गोयमा ! जंबू सुदंसणा जाव[12] भुविं च भवइ य भविस्सइ य धुवा णियया सासया अक्खया अवट्ठिया ॥

१६०. कहि णं भंते ! अणाढियस्स देवस्स अणाढिया णामं रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं, जं चेव पुव्ववण्णियं जमिगापमाणं तं

१. कणगमए (अ,त्रि,ब)।
२. जं० १।१०-१३।
३. जी० ३।६८९-६९८।
४. णितिया (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
५. भद्दा (अ,क,ख,ब,स)।
६. णं उप्पिं (अ,ब)।
७. मंगला (क,ख,स)। उपलक्षणाद् ध्वजच्छत्रादिसूत्राणि वाच्यानि (शावृ)।
८. × (प)।
९. जं० ४।१५१।
१०. जी० ३।३५०।
११. अतः परं प्रस्तुतसूत्रस्य समग्रोपि पाठः 'प' सङ्केतितां प्रतिं शान्तिचन्द्रीयवृत्तिं च मुक्त्वा सर्वेष्वपि आदर्शेषु वृत्तिद्वयेपि च परवर्तितसूत्रे 'निरवसेसो' इति पदानन्तरं विद्यते। उपाध्यायशान्तिचन्द्रेण प्रस्तुतपाठस्य विषये एका महत्त्वपूर्णा टिप्पणी कृतास्ति—यद्यप्यनादृता राजधानीप्रश्नोत्तरसूत्रे सुदर्शनाशब्दप्रवृत्तिनिमित्तप्रश्नोत्तरसूत्रनिगमनसूत्रान्तर्गते बहुष्वादर्शेषु दृष्टे तथापि 'से तेणट्ठेण' मित्यादि निगमनसूत्रमुत्तरसूत्रान्तरमेव वाचयितृणामव्यामोहाय सूत्रपाठेस्माभिर्लिखितं व्याख्यातं च, उत्तरसूत्रानन्तरं निगमनसूत्रस्यैव यौक्तिकत्वादिति, अथापरं गौतम ! यावच्छब्दाज्जम्ब्वाः सुदर्शनाया एतच्छाश्वतं नामधेयं प्रज्ञप्तं यन्न कदाचिन्नासीदित्यादिकं ग्राह्यं नाम्नः शाश्वतत्वं दर्शितम्, अथ प्रस्तुतवस्तुनः शाश्वतत्वमस्ति नवेत्याशङ्कां परिहरन्नाह—'जंबुसुदंसणा' इत्यादि, व्याख्याऽस्य प्राग्वत्।
१२. जं० १।४७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेव णेयव्वं जाव[1] उववाओ अभिसेयो य निरवसेसो[2] ॥

१६१. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ— उत्तरकुरा उत्तरकुरा ? गोयमा ! उत्तरकुराए उत्तरकुरू णामं देवे परिवसइ— महिड्ढीए जाव[3] पलिओवमट्ठिईए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ— उत्तरकुरा-उत्तरकुरा।
अदुत्तरं च णं जाव[4] सासए ॥

१६२. कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे मालवंते णामं वक्खारपव्वए पण्णते ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, नीलवंतस्स[5] वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं, उत्तरकुराए पुरत्थिमेणं, कच्छस्स चक्कवट्टिविजयस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं महाविदेहे वासे मालवंते णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते— उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे[6], जं चेव गंधमायणस्स पमाणं[7] विक्खंभो य, णवरमिमं णाणत्तं—सव्ववेरुलियामए अवसिट्ठं तं चेव जाव[8] गोयमा ! नव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धाययणकूडे[9] ॥

गाहा—

सिद्धे य मालवंते, उत्तरकुरु कच्छ सागरे रयए[10]।
सीया य पण्णभद्दे[11], हरिस्सहे[12] चेव बोद्धव्वे ॥१॥

१६३. कहि णं भंते ! मालवंते वक्खारपव्वए सिद्धाययणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, मालवंतकूडस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं, एत्थ णं सिद्धाययणे कूडे[13]— पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अवसिट्ठं तं चेव जाव[14] रायहाणी। एवं मालवंतकूडस्स उत्तरकुरुकूडस्स कच्छकूडस्स एए चत्तारि कूडा दिसाहिं पमाणेहि य णेयव्वा[15], कूडसरिसणामया[16] देवा ॥

१६४. कहि णं भंते ! मालवंते सागरकूडे नामं कूडे पण्णत्ते ? गोयमा! कच्छकूडस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, रययकूडस्स[17] दक्खिणेणं, एत्थ णं सागरकूडे णामं कूडे पण्णत्ते—पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, 'अवसिट्ठं तं चेव'[18] सुभोगा देवी, रायहाणी

---

१. जं० ४।११४-१४०।
२. निरवसेसो से तेणट्ठेणं गो एवं वुच्चइ जंबू सुदंसणा जाव भुविं च ३ धुवा णितिया सासया अक्खया अवट्ठिया। अदुत्तरं च णं गोयमा जाव पडुच्च (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ)।
३. जं० २।२४।
४. जं० १।४७
५. णेलमंतस्स (अ,ब) प्रायः सर्वत्र।
६. पादीण° (अ,ख,त्रि,ब,स)।
७. पमाणं च (अ,ब)।
८. जं० ४।१०३-१०५।
९. सिद्धायण° (अ, ब) प्रायः सर्वत्र।
१०. रुचककूटं पाठान्तरे रजतकूटं (पुवृ); इदं चान्यत्र रुचकमिति प्रसिद्धम् (शावृ)।
११. पुण्णगामे (अ,क,ख,ब,स); क्वचित् पूर्णनामेति पाठः (हीवृ)।
१२. हरिकूडे (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
१३. प्रज्ञप्तमिति गम्यम् (शावृ)।
१४. जं० ४।४५-४७।
१५. जं० ४।४८-५२।
१६. °सरिणामया (अ,क,ख,स)।
१७. रयणकूडस्स (अ,ख,ब); रजतकूडस्स (क)।
१८. × (अ,ख,त्रि,बस)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तरपुरत्थिमेणं। रययकूडे भोगमालिणी देवी, रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं[1]। अवसिट्ठा कूडा उत्तरदाहिणेणं णेयव्वा एक्केणं पमाणेणं ॥

१६५. कहि णं भंते ! मालवंते हरिस्सहकूडे णामं कूडे पण्णत्ते ? गोयमा ! पुण्णभद्दस्स उत्तरेणं, णीलवंतस्स कूडस्स दक्खिणेणं[2], एत्थ णं हरिस्सहकूडे णामं कूडे पण्णत्ते– एगं जोयणसहस्सं उड्ढं उच्चत्तेणं, जमगपमाणेणं णेयव्वं[3]। रायहाणी उत्तरेणं असंखेज्जदीवे[4] अण्णंमि जंबुद्दीवे दीवे उत्तरेणं बारस जोयणसहस्साइं[5] ओगाहित्ता, एत्थ णं हरिस्सहस्स देवस्स हरिस्सहा[6] णामं रायहाणी पण्णत्ता--चउरासीइं जोयणसहस्साइं आयाम--विक्खंभेणं, बे जोयणसयसहस्साइं पण्णट्ठिं च सहस्साइं छच्च बत्तीसे[7] जोयणसए परिक्खेवेणं, सेसं जहा चमरचंचाए रायहाणीए तहा पमाणं भाणियव्वं[8], महिड्ढीए महज्जुईए[9] ॥

१६६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ– मालवंते वक्खारपव्वए ? मालवंते वक्खारपव्वए ? गोयमा! मालवंते णं वक्खारपव्वए तत्थ-तत्थ देसे तहिं-तहिं बहवे सेरियागुम्मा[10] णोमालियागुम्मा जाव[11] मगदंतियागुम्मा[12]। ते णं गुम्मा दसद्धवण्णं 'कुसुमं कुसुमेंति'[13], जे णं तं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं वायविधुयग्गसालामुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेंति। मालवंते य इत्थ देवे महिड्ढीए जाव[14] पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ।
अदुत्तरं च णं जाव[15] णिच्चे ॥

१६७. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे कच्छे णामं विजए पण्णत्ते ? गोयमा ! सीयाए महाणईए उत्तरेणं, णीलवंतस्स[16] वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं[17], चित्तकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे कच्छे णामं विजए पण्णत्ते– उत्तरदाहिणायए पाईणपडीण-

---

१. पुरत्थिमेणं (अ,त्रि,ब,स, पुवृ, हीवृ)।
२. दाहिणेणं (ख)।
३. जं० ४।११०।
४. 'असंखेज्जदीवे' त्ति पदं स्मारकं तेन 'मन्दरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं तिरिअमसंखेज्जाइं दीवसमुद्दाइं वीईवइत्ता' इति ग्राह्यम् (शावृ)।
५. °सहस्सं (अ); °सहस्सा (ख,त्रि,ब,स)।
६. हरिकंता (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ)।
७. छत्तीसे (त्रि,प) अशुद्धं प्रतिभाति 'बकार' स्थाने 'छकारो' जातः लिपिप्रमादात्।
८. भ० २।१२१; १३।९६।
९. 'महिड्ढीए महज्जुईए' इति सूत्रेणास्य नामनिमित्तविषयके प्रश्ननिर्वचने सूचिते, ते चैवम् – 'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ हरिस्सहकूडे २ ? गोयमा ! हरिस्सहकूडे बहवे उप्पलाइं पउमाइं हरिस्सहकूडसमवण्णाइं जाव हरिस्सहे णामं देवे अ इत्थ महिड्ढीए जाव परिवसइ, से तेणट्ठेणं जाव अदुत्तरं च णं गोयमा ! जाव सासए णामधेज्जे' इति (शावृ)।
१०. सिरियागुम्मा (अ,ब); सेडियागुम्मा (क); सरियागुम्मा (ख,त्रि,प,शावृ)।
११. जं० २।१०।
१२. अगदंतिया (अ,ख,त्रि,ब)।
१३. कुसुमेंति (ख,त्रि,हीवृ)।
१४. जं० १।२४।
१५. जं० १।४७।
१६. णेलवन्तस्स (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
१७. दक्खिणेणं (प)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विच्छिण्णे पलियंकसंठाणसंठिए 'गंगासिंधूहिं महाणईहिं'[1] वेयड्ढेण य पव्वएणं छब्भाग-पविभत्ते सोलस जोयणसहस्साइं पंच य बाणउए जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसइभाए[2] जोयणस्स आयामेणं, दो जोयणसहस्साइं दोण्णि य तेरसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे विक्खंभेणं ।।

१६८. कच्छस्स णं विजयस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं वेयड्ढे णामं पव्वए पण्णत्ते, जे णं-'कच्छं विजयं'[3] दुहा विभयमाणे-विभयमाणे चिट्ठइ, तं जहा— दाहिणड्ढकच्छं च उत्तरड्ढकच्छं च ।।

१६९. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे दाहिणड्ढकच्छे णामं विजए पण्णत्ते ? गोयमा ! वेयड्ढस्स पव्वयस्स दाहिणेणं, सीयाए महाणईए उत्तरेणं, चित्तकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे दाहिणड्ढकच्छे णामं विजए पण्णत्ते उत्तरदाहिणायए पाईणपडीण-विच्छिण्णे अट्ठ जोयणसहस्साइं दोण्णि य एगसत्तरे[4] जोयणसए एक्कं च एगूणवीसइभागं जोयणस्स आयामेणं, दो जोयणसहस्साइं दोण्णि य तेरसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे विक्खंभेणं, पलियंकसंठिए[5] ।।

१७०. दाहिणड्ढकच्छस्स णं भंते ! विजयस्स केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[6] कत्तिमेहिं[7] चेव अकत्तिमेहिं[8] चेव ।।

१७१. दाहिणड्ढकच्छे णं भंते ! विजए मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! तेसि णं मणुयाणं छव्विहे संघयणे जाव[9] सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ।।

१७२. कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे कच्छे विजए वेयड्ढे णामं पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! दाहिणड्ढकच्छविजयस्स उत्तरेणं, उत्तरड्ढकच्छस्स दाहिणेणं, चित्तकूडस्स पच्चत्थिमेणं, मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं कच्छे विजए वेयड्ढे णामं पव्वए पण्णत्ते, तं जहा—पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे दुहा वक्खारपव्वए पुट्ठे—पुरत्थिमिल्लाए कोडीए[10] °पुरत्थिमिल्लं वक्खारपव्वयं पुट्ठे, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्लं वक्खारपव्वयं° पुट्ठे भरहवेयड्ढसरिसए[11], णवरं—दो बाहाओ जीवा धणुपट्ठं च ण कायव्वं, विजयविक्खंभसरिसे आयामेणं, विक्खंभो उच्चत्तं उव्वेहो तह चेव विज्जाहरसेढीओ तहेव, णवरं[12] 'पणपण्णं-पणपण्णं'[13] विज्जा-

---

१. गंगासिंधूमहाणदीहीं (अ,ब) ।

२. एकूण° (अ,त्रि,ब) ।

३. कच्छविजयं (अ,त्रि,ब) ।

४. एक्कहत्तरे (अ,ब); एगुत्तरे (क) ।

५. पलियंकसंठाणसंठिए (ख,त्रि,स, पुवृ,हीवृ) ।

६ जं० २।१२२ ।

७. कित्तिमेहिं (अ,क,ब) ।

८. अकित्तिमेहिं (अ,क,ब) ।

९. जं० २।१२३ ।

१०. सं० पा०—कोडीए जाव दोहिवि पुट्ठे । तत्र पौरस्त्यं चित्रकूटनामानं वक्षस्कारपर्वतं स्पृष्टः, पाश्चात्यया कोट्या पाश्चात्यं माल्यवन्तं वक्षस्कारपर्वतं स्पृष्टः (हीवृ) ।

११. जं० १।२३-४७ ।

१२. णवरिं (क,ख,त्रि) ।

१३. पण्णवण्णं २ (अ,ब,स) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरणगरावासा पण्णत्ता । आभिओगसेढीए उत्तरिल्लाओ सेढीओ सीयाए ईसाणस्स, सेसाओ सक्कस्स, कूडा—

गाहा

सिद्धे कच्छे खंडग, माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
कच्छे वेसमणे वा, वेयड्ढे होंति कूडाइं ॥१॥

१७३. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उत्तरड्ढकच्छे णामं विजए पण्णत्ते ? गोयमा ! वेयड्ढस्स पव्वयस्स उत्तरेणं, णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं, मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, चित्तकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे दाहिणड्ढकच्छे णामं विजए पण्णत्ते जाव[1] सिज्झंति, तहेव णेयव्वं सव्वं[2] ॥

१७४. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उत्तरड्ढकच्छे विजए सिंधुकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते ? गोयमा ! मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, उसभकूडस्स पच्चत्थिमेणं, णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उत्तरड्ढकच्छविजए सिंधुकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते सट्ठिं जोयणाणि आयाम-विक्खंभेणं जाव[3] भवणं अट्ठो रायहाणी य णेयव्वा, भरहसिंधुकुंडसरिसं सव्वं णेयव्वं जाव तस्स णं सिंधुकुंडस्स दाहिणिल्लेणं तोरणेणं सिंधू महाणई पवूढा समाणी उत्तरड्ढकच्छ-विजयं[4] 'एज्जेमाणी-एज्जेमाणी'[5] सत्तहिं सलिलासहस्सेहिं आपूरेमाणी-आपूरेमाणी अहे तिमिसगुहाए वेयड्ढपव्वयं दालयित्ता दाहिणड्ढकच्छविजयं एज्जेमाणी-एज्जेमाणी चोद्दसहिं सलिलासहस्सेहिं समग्गा दाहिणेणं सीयं महाणइं समप्पेइ । सिंधू[6] महाणई पवहे य मूले य भरहसिंधुसरिसा पमाणेणं जाव[7] दोहिं वणसंडेहिं संपरिक्खित्ता ॥

१७५. कहि णं भंते ! उत्तरड्ढकच्छविजए[8] उसभकूडे णामं पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! सिंधुकुंडस्स पुरत्थिमेणं, गंगाकुंडस्स पच्चत्थिमेणं, णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे, एत्थ णं उत्तरड्ढकच्छविजए उसहकूडे णामं पव्वए पण्णत्ते अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, तं चेव पमाणं जाव[9] रायहाणी से, णवरं—उत्तरेणं भाणियव्वा ॥

१७६. कहि णं भंते ! उत्तरड्ढकच्छविजए गंगाकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते ? गोयमा ! चित्तकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, उसहकूडस्स पुरत्थिमेणं, णीलवंतस्स वासहर-पव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे, एत्थ णं उत्तरड्ढकच्छविजए गंगाकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते—सट्ठिं जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं तहेव जहा सिंधू जाव[10] वणसंडेण य संपरिक्खित्ते ॥

---

१. जं० ४।१६९-१७१ ।
२. × (ख,प, शावृ, हीवृ) ।
३. जं० ४।३७ ।
४. कच्छं विजयं (अ,क,ख,ब) ।
५. पज्जेमाणी (अ,क,ख,त्रि,ब); पाययन्ती (हीवृ) ।
६. सिंधूणं (अ,क,ख,ब,स) ।
७. जं० ४।३७ ।
८. उत्तरड्ढकच्छे (अ,क,ख,त्रि,ब,स) अग्रेपि प्राय: सर्वत्र ।
९. जं० १।५१ ।
१०. जं० ४।१७४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७७. 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ--कच्छे विजए ? कच्छे विजए ?'[1] गोयमा ! 'कच्छे विजए'[2] वेयड्ढस्स पव्वयस्स दाहिणेणं, सीयाए महाणईए उत्तरेणं, गंगाए महाणईए पच्चत्थिमेणं, सिंधूए महाणईए पुरत्थिमेणं दाहिणड्ढकच्छविजयस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं खेमा णामं रायहाणी पण्णत्ता, विणीयरायहाणीसरिसा भाणियव्वा। तत्थ णं खेमाए रायहाणीए कच्छे णामं राया समुप्पज्जइ—महयाहिमवंत जाव सव्वं भरहोयवणं भाणियव्वं निक्खमणवज्जं, सेसं सव्वं भाणियव्वं जाव[3] भुंजए माणुस्सए सुहे कच्छे णामधेज्जे। कच्छे यत्थ देवे महड्ढीए जाव पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से एएणट्ठेणं[4] गोयमा ! एवं वुच्चइ—कच्छे विजए-कच्छे विजए जाव णिच्चे ॥

१७८. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे चित्तकूडे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! सीयाए महाणईए उत्तरेणं, णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं 'कच्छस्स विजयस्स'[5] पुरत्थिमेणं 'सुकच्छस्स विजयस्स'[6] पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे चित्तकूडे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते—उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे सोलसजोयणसहस्साइं पंच य बाणउए जोयणसए दुण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं, पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं, नीलवंतवासहरपव्वयंतेणं चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं, तयणंतरं[7] च णं मायाए-मायाए उस्सेहोव्वेहपरिवुड्ढीए[8] परिवड्ढमाणे-परिवड्ढमाणे सीयमहाणईयंतेणं पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं, आसखंधसंठाणसंठिए[9] सव्वरयणामए अच्छे सण्हे[10] जाव[11] पडिरूवे। उभओ पासिं[12] दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खित्ते, वण्णओ[13] दोण्हवि ॥

१७९. चित्तकूडस्स णं वक्खारपव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[14] आसयंति ॥

१८०. चित्तकूडे णं भंते ! वक्खारपव्वए कति[15] कूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कूडा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धाययणकूडे चित्तकूडे कच्छकूडे सुकच्छकूडे, समा[16] उत्तरदाहिणेणं परुप्परंति[17], पढमए सीयाए उत्तरेणं, चउत्थए नीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स

---

१. कहि णं भंते ! खेमा णामं रायहाणी पण्णत्ता (अ,ब)।
२. कच्छे णं विजए णं (अ,क,ख,ब,स); कच्छे विजए णं (त्रि)।
३. जं० ३।१-२२१,२२६।
४. तेणट्ठेणं (अ,त्रि,ब); एगट्ठेणं (क,ख,स)।
५. कच्छविजयस्स (प)।
६. सुकच्छविजयस्स (क,ख,त्रि,प)।
७. तयाणंतरं (अ,ख,ब); तदाणंतरं (त्रि)।
८. °परिवड्ढीए (अ,ख,स)।
९. आसखंधगसंठाण° (अ,ख,त्रि,ब)।
१०. सिण्हे (ख)।
११. जं० १।८।
१२. पसिंस (अ,त्रि,ब)।
१३. जं० १।१०-१३।
१४. जं० ४।२।
१५. कइ (ख,स)।
१६. समं (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
१७. परोप्परंति (अ,त्रि,ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दाहिणेणं, अट्ठो[1], एत्थ[2] णं चित्तकूडे णामं देवे महिड्ढीए जाव[3] रायहाणी। से तेणट्ठेणं॥

१८१. कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सुकच्छे णामं विजए पण्णत्ते? गोयमा! सीयाए महाणईए उत्तरेणं, णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं, गाहावईए महाणईए पच्चत्थिमेणं, चित्तकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सुकच्छे णामं विजए पण्णत्ते—उत्तरदाहिणायए जहेव[4] कच्छे विजए तहेव सुकच्छे विजए, णवरं[5]- खेमपुरा रायहाणी, सुकच्छे राया समुप्पज्जइ, तहेव सव्वं॥

१८२. कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे गाहावइकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते? गोयमा! सुकच्छस्स विजयस्स पुरत्थिमेणं, महाकच्छस्स विजयस्स पच्चत्थिमेणं, णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणिल्ले णितंबे, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे गाहावइकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते, जहेव रोहियंसा कुंडे तहेव जाव[6] 'गाहावइदीवे भवणे'[7]॥

१८३. तस्स णं गाहावइस्स कुंडस्स दाहिणिल्लेणं तोरणेणं गाहावई महाणई पवूढा समाणी सुकच्छ-महाकच्छविजए दुहा विभयमाणी-विभयमाणी अट्ठावीसाए सलिला-सहस्सेहिं समग्गा दाहिणेणं सीयं महाणइं समप्पेइ। गाहावई णं महाणई पवहे य मुहे य सव्वत्थ समा पणवीसं[8] जोयणसयं विक्खंभेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणाइं उव्वेहेणं, उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं दोहि य वणसंडेहिं संपरिक्खित्ता, दुण्हवि वण्णओ[9]॥

१८४. कहि णं भंते! महाविदेहे वासे महाकच्छे णामं विजए पण्णत्ते? गोयमा! णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं, सीयाए महाणईए उत्तरेणं, पम्हकूडस्स[10] वक्खार-पव्वयस्स[11] पच्चत्थिमेणं, गाहावईए महाणईए पुरत्थिमेणं, एत्थ णं महाविदेहे वासे महा-कच्छे णामं विजए पण्णत्ते, सेसं जहा कच्छस्स विजयस्स जाव महाकच्छे इत्थ देवे महिड्ढीए, अट्ठो य भाणियव्वो[12]॥

१८५. कहि णं भंते! महाविदेहे वासे पम्हकूडे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते? गोयमा! णीलवंतस्स दक्खिणेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं महाकच्छस्स पुरत्थिमेणं, कच्छगावईए[13] पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं महाविदेहे वासे पम्हकूडे णामं वक्खारपव्वए

---

१. × (अ,क,ख,त्रि,प,स)।

२. × (अ,ब)।

३. जं० ४।५१,५२।

४ जं० ४।१६७-१७७।

५. णवरि (क); णवरि (ख,त्रि)।

६. जं० ४।४०,४१।

७. गाहावइदेवी भवणे (अ,ब,स, पुवृ); असौ सङ्क्षिप्तपाठः रोहितांशकुण्डाय समर्पितोस्ति, तत्र 'तस्स णं रोहियंसप्पवायकुंडस्स बहुमज्झ-देसभाए एत्थ णं महं एगे रोहियंसदीवे णामं दीवे पण्णत्ते' इति पाठोस्ति तेनात्र 'गाहावइदीवे' इति पाठ एव युक्तोस्ति। एका भिन्नापि पाठपरम्परा दृश्यते, तस्यां ग्राहा-वतीद्वीपस्योल्लेखो नास्ति. किन्तु 'गाहावइ-देवीभवणे' एष पाठः सम्मतोस्ति, स च पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः।

८. पणुवीसं (अ,क,त्रि,ब,स)।

९. जं० १।१०-१३।

१०. बम्हकूडस्स (क, ख, त्रि, प, स); ब्रह्मकूट (पुवृ) प्रायः सर्वत्र।

११. × (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स); अत्र लिपिसङ्क्षे-पात् केवलं 'पव्वयस्स' इति पाठो दृश्यते।

१२. जं० ४।१६७-१७७।

१३. कच्छावइस्स (क,प); कच्छावयस्स (स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ते—उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे, सेसं जहा चित्तकूडस्स जाव[1] आसयंति ॥

१८६. पम्हकूडे चत्तारि कूडा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धाययणकूडे पम्हकूडे महाकच्छकूडे कच्छगावईकूडे एवं जाव[2] अट्ठो। पम्हकूडे इत्थ देवे महिड्ढीए पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से तेणट्ठेणं ॥

१८७. कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे कच्छगावती णामं विजए पण्णत्ते ? गोयमा ! णीलवंतस्स दाहिणेणं, सीयाए महाणईए उत्तरेणं, दहावतीए[3] महाणईए पच्चत्थिमेणं, पम्हकूडस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं महाविदेहे वासे कच्छगावती णामं विजए पण्णत्ते—उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे, सेसं जहा कच्छस्स विजयस्स जाव[4] कच्छगावई य इत्थ देवे ॥

१८८. कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे दहावई कुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते ? गोयमा ! आवत्तस्स विजयस्स पच्चत्थिमेणं कच्छगावईए विजयस्स पुरत्थिमेणं, णीलवंतस्स दाहिणिल्ले णितंबे, एत्थ णं महाविदेहे वासे दहावईकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते, सेसं जहा गाहावईकुंडस्स जाव[5] अट्ठो ॥

१८९. तस्स णं दहावईकुंडस्स दाहिणेणं तोरणेणं दहावई महाणई पवूढा समाणी कच्छगावई-आवत्ते विजए दुहा विभयमाणी-विभयमाणी दाहिणेणं सीयं महाणइं समप्पेइ, सेसं जहा[6] गाहावईए ॥

१९०. कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे आवत्ते णामं विजए पण्णत्ते ? गोयमा ! णीलवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणेणं, सीयाए महाणईए उत्तरेणं, णलिणकूडस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, दहावतीए महाणईए पुरत्थिमेणं, एत्थ णं महाविदेहे वासे आवत्ते णामं विजए पण्णत्ते, सेसं जहा[7] कच्छस्स विजयस्स ॥

१९१. कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे णलिणकूडे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! णीलवंतस्स दाहिणेणं, सीयाए उत्तरेणं, मंगलावइस्स[8] विजयस्स पच्चत्थिमेणं, आवत्तस्स विजयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं महाविदेहे वासे णलिणकूडे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते—उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे, सेसं जहा चित्तकूडस्स जाव[9] आसयंति ॥

१९२. णलिणकूडे णं भंते ! कति कूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कूडा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धायतणकूडे णलिणकूडे[10] आवत्तकूडे मंगलावत्तकूडे। एए कूडा पंचसइया, रायहाणीओ उत्तरेणं ॥

---

१. जं० ४।१७८,१७९।
२. जं० ४ १८०,५१,५२।
३. दहवतीए (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ) प्रायः सर्वत्र।
४. जं० ४।१६७-१७७
५. जं० ४।१८२। प्रायः सर्वत्र।
६. जं० ४।१८३।
७. जं० ४।१६७-१७७।
८. मंगलावइस्स (अ,ब)।
९. जं० ४।१७८-१७९।
१०. णलिणिकूडे (अ,क,ख,ब,स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६३. कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे मंगलावत्ते[1] णामं विजए पण्णत्ते ? गोयमा ! णीलवंतस्स दक्खिणेणं, सीयाए उत्तरेणं, णलिणकूडस्स पुरत्थिमेणं, पंकावईए पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं मंगलावत्ते णामं विजए पण्णत्ते। जहा कच्छविजए तहा एसो वि भाणियव्वो जाव[2] मंगलावत्ते य इत्थ देवे परिवसइ। से एएणट्ठेणं ॥

१६४. कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे पंकावईकुंडे[3] णामं कुंडे पण्णत्ते ? गोयमा ! मंगलावत्तस्स पुरत्थिमेणं, पुक्खलविजयस्स[4] पच्चत्थिमेणं, णीलवंतस्स दाहिणे नितंबे, एत्थ णं 'पंकावइकुंडे णामं कुंडे पण्णत्ते'[5], तं चेव[6] गाहावइकुंडप्पमाणं[7] ॥

१६५. •तस्स णं पंकावइकुंडस्स दाहिणिल्लेणं तोरणेणं पंकावती[8] महाणदी पवूढा समाणी[9] मंगलावत्त-पुक्खलविजए[9] दुहा विभयमाणी-विभयमाणी अवसेसं तं चेव[10] गाहावईए ॥

१६६. कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे पुक्खले[11] णामं विजए पण्णत्ते ? गोयमा ! णीलवंतस्स दाहिणेणं, सीयाए उत्तरेणं, पंकावईए पुरत्थिमेणं, एगसेलस्स[12] वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं पुक्खले णामं विजए पण्णत्ते। जहा कच्छविजए तहा भाणियव्वं जाव[13] पुक्खले य इत्थ देवे महिड्ढीए पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से एएणट्ठेणं ॥

१६७. कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे एगसेले णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! पुक्खलचक्कवट्टिविजयस्स[14] पुरत्थिमेणं, पोक्खलावतीचक्कवट्टिविजयस्स पच्चत्थिमेणं, णीलवंतस्स दक्खिणेणं, सीयाए उत्तरेणं, एत्थ णं एगसेले णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते, चित्तकूडगमेणं णेयव्वो जाव[15] देवा आसयंति ॥

१६८. चत्तारि कूडा, तं जहा—सिद्धाययणकूडे एगसेलकूडे पुक्खलकूडे[16] पुक्खलावईकूडे। कूडाणं तं चेव पंचसइयं परिमाणं जाव[17] एगसेले य देवे महिड्ढीए ॥

१६९. कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे पुक्खलावई णामं चक्कवट्टिविजए पण्णत्ते ? गोयमा ! णीलवंतस्स दक्खिणेणं, सीयाए उत्तरेणं, उत्तरिल्लस्स सीयामुहवणस्स पच्चत्थिमेणं, एगसेलस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं महाविदेहे वासे पुक्खलावई णामं विजए पण्णत्ते—उत्तरदाहिणायए, एवं जहा कच्छविजयस्स जाव[18] पुक्खलावई य

---

१. णंगलावत्ते (अ,क,ब)।
२. जं० ४।१६७-१७७।
३. पंकवई° (अ,क,ब) प्रायः सर्वत्र।
४. पोक्खलावइस्स (अ,ब); पुक्खलावइस्स (क,ख,स)। स्थानाङ्गे (२।३४०) पि 'पुक्खला' इति पाठो दृश्यते।
५. पंकावइ (अ,क,ख,त्रि,ब,स); पंकावइ जाव कुंडे पण्णत्ते (प)।
६. जं० ४।१८२।
७. सं० पा०—गाहावइकुंडप्पमाणं जाव मंगलावत्त।
८. ग्रन्थान्तरे वेगवतीत्यस्या नाम पठ्यते (पुवृ)।
९. पुक्खलावत्तविजए (स)।
१०. जं० ४।१८३।
११. पोक्खले (अ,त्रि,ब)।
१२. एगसेलगस्स (अ,ब)।
१३. जं० ४।१६७-१७७।
१४. पोक्खलाव° (अ,ब); पुक्खलावइ° (क,ख)।
१५. जं० ४।१७८,१७९।
१६. पुक्खलावत्तकूडे (प)।
१७. जं० ४।१८०।
१८. जं० ४।१६७-१७७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इत्थ देवे परिवसइ। से एएणट्ठेणं॥

२००. कहि णं भंते! महाविदेहे वासे सीयाए महाणईए उत्तरिल्ले सीयामुहवणे णामं वणे पण्णत्ते? गोयमा! णीलवंतस्स दक्खिणेणं, सीयाए उत्तरेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पुक्खलावइचक्कवट्टिविजयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं सीयामुहवणे णामं वणे पण्णत्ते—उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे सोलसजोयणसहस्साइं पंच य बाणउए जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं, सीयामहाणइंतेणं[1] दो जोयणसहस्साइं नव य बावीसे[2] जोयणसए विक्खंभेणं, तयणंतरं[3] च णं मायाए-मायाए परिहायमाणे-परिहायमाणे णीलवंतवासहरपव्वयंतेणं एगं एगूणवीसइभागं जोयणस्स विक्खंभेणं, से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं संपरिक्खित्तं, वण्णओ सीयामुहवणस्स जाव[4] देवा आसयंति। एवं उत्तरिल्लं पासं समत्तं। विजया भणिया। रायहाणीओ इमाओ—

गाहा—

खेमा खेमपुरा चेव, रिट्ठा रिट्ठपुरा तहा।
खग्गी मंजूसा अवि य, ओसही पुंडरीगिणी॥१॥

[सोलस विज्जाहरसेढीओ[5]?] तावइयाओ आभिओगसेढीओ, सव्वाओ इमाओ ईसाणस्स। सव्वेसु विजएसु कच्छवत्तव्वया जाव अट्ठो, रायाणो सरिसणामगा[6] विजएसु, 'सोलसण्हं वक्खारपव्वयाणं'[7] चित्तकूडवत्तव्वया जाव कूडा चत्तारि-चत्तारि बारसण्हं णईणं गाहावइवत्तव्वया जाव उभओ पासिं दोहिं पउमवरवेइयाहिं वणसंडेहि य वण्णओ॥

२०१. कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सीयाए महाणईए दाहिणिल्ले सीयामुहवणे णामं वणे पण्णत्ते? एवं जह चेव उत्तरिल्ले सीयामुहवणं तह[8] चेव दाहिणंपि भाणियव्वं[9], णवरं—णिसहस्स[10] वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, सीयाए महाणईए दाहिणेणं, पुरत्थिलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, वच्छस्स विजयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सीयाए महाणईए दाहिणिल्ले सीयामुहवणे णामं वणे पण्णत्ते—

---

१. सीयं महा° (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

२. तेवीसे (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ); विजयवक्षस्काराद्यन्तरनदीमेरुपूर्वापरभद्रशालवनायाममीलने जातानि ६४१५६, अस्य राशेर्जम्बूद्वीपपरिणामात् शोधने शेषं ५८४४, अस्य शीताशीतोदयोरेकस्मिन् दक्षिणे उत्तरे वा भागे द्वे मुखवने इति द्वाभ्यां भागे हृते आगतानि द्वाविंशत्यधिकान्येकोनत्रिंशद्योजनशतानि २९२२, अत्र च 'तेवीसे' इति पाठोऽशुद्धः (शावृ)।

३. तदाणंतरं (अ,त्रि,ब); तयाणंतरं (क,खस)।

४. जं० १।१३।

५. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ); अत्र च विद्याधरश्रेणिसूत्रं आदर्शान्तरेष्वदृष्टमपि प्रस्तावादाभियोग्यश्रेणिसङ्गत्यनुपपत्तेश्च प्राकृतशैल्या संस्कृत्य मया लिखितमस्तीति बहुश्रुतैर्मयि सूत्राशातना न चिन्तनीयेति, उत्तरत्रापि सूत्रकारेण सङ्ग्रहगाथायामाभियोग्यश्रेणिसङ्ग्रहोविद्याधरश्रेणिसंग्रहपूर्वकमेव वक्ष्यते (शावृ)।

६. सरिणामगा (क,ख)।

७. सोलस वक्खारपव्वया (पुवृ); सोलसण्हं वक्खारपव्वयाणं (पुवृपा)।

८. तहा (अ,ब)।

९. जं० ४।२००।

१०. निसभस्स (अ,ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तरदाहिणायए, तहेव सव्वं, णवरं—णिसहवासहरपव्वयंतेणं एगमेगूणवीसइभागं जोयणस्स विक्खंभेणं, किण्हे किण्होभासे[1] जाव[2] आसयंति, उभओ पासिं दोहिं पउमवर-वेइयाहिं वणवण्णओ ॥

२०२. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे वच्छे णामं विजए पण्णत्ते ? गोयमा ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, सीयाए महाणईए दाहिणेणं, दाहिणिल्लस्स सीयामुहवणस्स पच्चत्थिमेणं, तिउडस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे वच्छे णामं विजए पण्णत्ते, तं चेव[3] पमाणं सुसीमा रायहाणी, तिउडे वक्खारपव्वए। सुवच्छे विजए, कुंडला रायहाणी, तत्तजला णई। महावच्छे विजए, अपराजिया रायहाणी, वेसमणकूडे वक्खारपव्वए। वच्छावई विजए, पभंकरा रायहाणी, मत्तजला णई। रम्मे विजए, अंकावई रायहाणी, अंजणे वक्खारपव्वए। रम्मगे विजए, पम्हावई रायहाणी, उम्मत्तजला महाणई। रमणिज्जे विजए, सुभा रायहाणी, मायंजणे[4] वक्खारपव्वए। मंगलावई विजए, रयणसंचया रायहाणी। एवं जह चेव सीयाए महाणईए उत्तरं पासं तह चेव दक्खिणिल्लं[5] भाणियव्वं, दाहिणिल्लसीयामुहवणाइ। इमे वक्खारकूडा, तं जहा—तिउडे[6] वेसमणकूडे अंजणे मायंजणे, विजया—

गाहा—

वच्छे सुवच्छे महावच्छे, चउत्थे[7] वच्छगावई।
रम्मे रम्मए चेव, रमणिज्जे मंगलावई ॥१॥

रायहाणीओ, तं जहा—

सुसीमा कुंडला चेव, अवराइय पहंकरा।
अंकावई पम्हावई[8], सुभा रयणसंचया ॥२॥

वच्छस्स विजयस्स—णिसहे दाहिणेणं, सीया उत्तरेणं, दाहिणिल्लसीयामुहवणे[9] पुरत्थिमेणं, तिउडे पच्चत्थिमेणं—सुसीमा रायहाणी, पमाणं तं चेव। वच्छाणंतरं तिउडे, तओ सुवच्छे विजए। एएणं कमेणं—तत्तजला णई, महावच्छे विजए। वेसमणकूडे वक्खारपव्वए, वच्छावई विजए। मत्तजला णई, रम्मे विजए। अंजणे वक्खारपव्वए, रम्मए विजए। उम्मत्तजला णई, रमणिज्जे विजए। मायंजणे वक्खारपव्वए, मंगलावई विजए ॥

२०३. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे सोमणसे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणपुरत्थिमेणं, मंगलावईविजयस्स[10] पच्चत्थिमेणं, देवकुराए[11] पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे

---

१. किण्होभासे जाव महया गंधद्धाणिं मुयंते (क,ख,त्रि,प,स)।
२. जं० १।१३।
३. जं० ४।१६७-१७७।
४. अंजणे (अ,ब)।
५. दक्खिणं (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
६. तिउडकूडे (अ,ब) तिउडे कूडे (क,ख,त्रि)।
७. × (अ,ख,त्रि,ब,स)।
८. वह्मावई (अ,त्रि)।
९. °सीयावणमुहे (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
१०. मंगलावइस्स विजयस्स (अ,क,ख,त्रि,ब)।
११. देवकुराणं (स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वासे सोमणसे णामं वक्खारपव्वए पण्णत्ते—उत्तरदाहिणायए पाईणपडीणविच्छिण्णे[1] जहा[2] मालवंते वक्खारपव्वए तहा, णवरं[3]— सव्वरययामए[4] अच्छे जाव[5] पडिरूवे णिसहवासहर-पव्वयंतेणं चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं, सेसं तहेव सव्वं, णवरं— अट्ठो से[6] गोयमा ! सोमणसे णं वक्खारपव्वए बहवे देवा य देवीओ य सोमा सुमणा सोमणसिया[7], सोमणसे य इत्थ देवे महिड्ढीए जाव परिवसइ। से एएणट्ठेणं गोयमा ! जाव[8] णिच्चे ॥

२०४. सोमणसे वक्खारपव्वए कइ कूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

गाहा—

सिद्धे सोमणसे विय[9], बोद्धव्वे मंगलावईकूडे ।
देवकुरु विमल कंचण वसिट्ठकूडे य बोद्धव्वे ॥१॥

एवं सव्वे पंचसइया कूडा, एएसिं पुच्छा दिसिविदिसाए भाणियव्वा जहा[10] गंधमायणस्स, विमल-कंचणकूडेसु, णवरि— देवयाओ सुवच्छा वच्छमित्ता य, अवसिट्ठेसु कूडेसु सरिस-णामया[11] देवा, रायहाणीओ दक्खिणेणं ॥

२०५. कहि णं भंते ! महाविदेहे वासे देवकुरा णामं कुरा पण्णत्ता ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं, णिसहस्स[12] वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, विज्जुप्पहवक्खार-पव्वयस्स[13] पुरत्थिमेणं, सोमणसवक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं देवकुरा णामं कुरा पण्णत्ता—पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिण्णा[14] एक्कारस जोयणसहस्साइं अट्ठ य बायाले जोयणसए दुण्णि य एगूणवीसइभाए जोयणस्स विक्खंभेणं, जहा उत्तरकुराए वत्तव्वया जाव[15] अणुसज्जमाणा पम्हगंधा मियगंधा अममा सहा[16] तेतली[17] सणिच्चारी[18] ॥

२०६. कहि णं भंते ! देवकुराए चित्त-विचित्तकूडा णामं दुवे पव्वया पण्णत्ता ? गोयमा ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ अट्ठचोत्तीसे जोयणसए

---

१. उदीणदाहिणविच्छिण्णे (अ,ब) अशुद्धं प्रति-भाति।
२. जं० ४।१६२ ।
३. णवरि (अ,क,त्रि,ब,स) प्रायः सर्वत्र ।
४. सव्वरयणामए (अ,त्रि,ब,स,हीवृ) ।
५. जं० १।८ ।
६. 'से' इति पदं 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सोमणसे वक्खारपव्वए सोमणसे वक्खारपव्वए' इत्यस्य सूचकमस्ति ।
७. × (प,शावृ); क्वचित् 'सोमणस्सिया' (पुवृ) ।
८. जं० ४।१०३,१०४,१०७ ।
९. या (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
१०. जं० ४।१०६ ।
११. सरिणामया (अ,ख,ब,स)।
१२. णिसभस्स (अ,ख,ब); णिसढस्स (त्रि) ।
१३. विज्जुप्पहस्स वक्खार० (प) ।
१४. अतः परं उत्तरकुरुप्रकरणे (४।१०८) 'अद्ध-चंदसंठाणसंठिया' इति पाठोपि विद्यते ।
१५. जं० ४।१०८,१०९ ।
१६. सहि (अ,ब); सुसहा (ख) ।
१७. एताली (अ,ब); तिताली (क,ख) ।
१८. साणिचारी (अ,ब); सण्णिच्चारी (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चत्तारि य सत्तभाए जोयणस्स अबाहाए सीयोयाए[1] महाणईए पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं उभओ कूले, एत्थ णं चित्त-विचित्तकूडा णामं दुवे पव्वया पण्णत्ता। एवं जच्चेव जमग-पव्वयाणं सच्चेव[2]। एएसिं रायहाणीओ दक्खिणेणं ॥

२०७. कहि णं भंते! देवकुराए कुराए णिसहद्दहे णामं दहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तेसिं चित्त-विचित्तकूडाणं पव्वयाणं उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ अट्ठ चोत्तीसे जोयणसए चत्तारि य सत्तभाए जोयणस्स अबाहाए सीओयाए महाणईए बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं णिसहद्दहे णामं दहे पण्णत्ते। एवं जच्चेव नीलवंत-उत्तरकुरु - चंदेरावण[3]-मालवंताणं वत्तव्वया सच्चेव[4] णिसह-देवकुरु-सूर- सुलस-विज्जुप्पभाणं णेयव्वा। रायहाणीओ दक्खिणेणं ॥

२०८. कहि णं भंते ! देवकुराए कुराए कूडसामलिपेढे[5] णामं पेढे पण्णत्ते ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं, णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, विज्जुप्पभस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, सोमणसस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, सीयोयाए महाणईए पच्चत्थिमेणं, देवकुरुपच्चत्थिमद्धस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं देवकुराए कुराए कूडसामलीए कूडसामलिपेढे णामं पेढे पण्णत्ते। एवं जच्चेव जंबूए सुदंसणाए वत्तव्वया सच्चेव सामलीएवि भाणियव्वा णामविहूणा गरुलवेणुदेवे[6], रायहाणी दक्खिणेणं, अवसिट्ठं तं चेव जाव[7] देवकुरू य इत्थ देवे पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—देवकुरा-देवकुरा। अदुत्तरं च णं देवकुराए ॥

२०९. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे विज्जुप्पभे णामं वक्खार-पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! णिसहस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं, देवकुराए पच्चत्थिमेणं, पम्हस्स विजयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे विज्जुप्पभे वक्खारपव्वए पण्णत्ते—उत्तरदाहिणायए, एवं जहा[8] मालवंते, णवरि—सव्वतवणिज्जमए अच्छे जाव देवा आसयंति ॥

२१०. विज्जुप्पभे णं भंते ! वक्खारपव्वए कइ कूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! नव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धाययणकूडे विज्जुप्पभकूडे देवकुरुकूडे पम्हकूडे कणगकूडे सोवत्थिय-कूडे सीतोदाकूडे[9] सयज्जलकूडे[10] हरिकूडे।

गाहा —

सिद्धे य विज्जुणामे, देवकुरु पम्ह कणग सोवत्थी।
सीतोदा य सयज्जल, हरिकूडे चेव बोद्धव्वे ॥१॥

---

१. सीयाए (अ,त्रि,प,ब) अशुद्धं प्रतिभाति।
२. जं० ४।११०-१४०।
३. चंदेराख्य (क,त्रि,प,स,पुवृ, शावृ, हीवृ); द्रष्टव्यं—४।१४२ सूत्रम्। जीवाजीवाभिगमे (३।६६७) पि 'एरावणद्दहे' इति पाठो दृश्यते।
४. जं० ४।१४१,१४२।
५. °वेढे (क)।
६. गरुलदेवे (अ,ख,त्रि,प,ब हीवृ); गरुडदेवोत्र, गरुडो—गरुडजातीयो वेणुदेवनामा मतान्तरेण, गरुडवेगनामा वा देवः (शावृ)।
७. जं० ४।१४३-१६१।
८. जं० ४।१६२।
९. सोओआकूडे (ख,स)।
१०. सयंजूलकूडे (त्रि); सूर्यजलकूटम् (हीवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एए हरिकूडवज्जा पंचसइया णेयव्वा। एएसि णं कूडाणं पुच्छाए[1] दिसिविदिसाओ[2] णेयव्वाओ[3], जहा मालवंतस्स हरिस्सहकूडे तह चेव हरिकूडे, 'रायहाणी जह चेव दाहिणेणं चमरचंचा रायहाणी तह णेयव्वा'[4]। कणग-सोवत्थियकूडेसु वारिसेण-बलाहयाओ[5] दो देवयाओ, अवसिट्ठेसु कूडेसु कूडसरिसणामया[6] देवा, रायहाणीओ दाहिणेणं[7] ॥

२११. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ– विज्जुप्पभे वक्खारपव्वए ? विज्जुप्पभे वक्खारपव्वए ? गोयमा ! विज्जुप्पभे णं वक्खारपव्वए विज्जुमिव सव्वओ समंता ओभासइ[8] उज्जोवेइ पभासइ। विज्जुप्पभे य इत्थ देवे महिड्ढीए जाव[9] परिवसइ। से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ– विज्जुप्पभे-विज्जुप्पभे।
अदुत्तरं च णं जाव[10] णिच्चे ॥

२१२. एवं पम्हे[11] विजए, अस्सपुरा रायहाणी, अंकावई वक्खारपव्वए। सुपम्हे विजए, सीहपुरा रायहाणी, खीरोदा महाणई। महापम्हे विजए, महापुरा रायहाणी, पम्हावई[12] वक्खारपव्वए। पम्हगावई विजए, विजयपुरा रायहाणी, सीहसोया[13] महाणई। संखे विजए, अवराइया रायहाणी, आसीविसे वक्खारपव्वए। कुमुदे विजए, अरजा[14] रायहाणी, अंतोवाहिणी महाणई। णलिणे विजए, असोगा रायहाणी, सुहावहे वक्खारपव्वए। सलिलावई[15] विजए, वीयसोगा रायहाणी, दाहिणिल्ले सीतोदामुहवणसंडे।

१. पुच्छादे (अ,ब); पुच्छा (प)।
२. दिसविदिसाओ (अ,ख,ब)।
३. जं० ४।१६३-१६५।
४. रायहाणीत्यादि राजधानी चास्य देवस्य दक्षिणतो यथैव चमरचंचा राजधानी तथैव ज्ञेया। क्वचित् रायहाणी तह चेव दाहिणेणं चमरचंचा रायहाणिप्पमाणेणं णेयव्वा इति पाठः (पुवृ)।
५. पलाहयाओ (ब)।
६. °सरिणामया (अ,क,ख,ब,स)।
७. यद्यप्युत्तरकुरुवक्षस्कारयोर्यथायोगं सिद्धहरिस्सहकूटवर्जकूटाधिपराजधान्यो यथाक्रमं वायव्यामैशान्यां (४।१०६,१६४) च प्रागभिहितास्तथा देवकुरुवक्षस्कारयोर्यथायोगं सिद्धहरिकूटवर्जकूटाधिपराजधान्यो यथाक्रममाग्नेय्यां नैर्ऋत्यां च वक्तुमुचितास्तथापि प्रस्तुतसूत्रसम्बन्धियावदादर्शेषु पूज्यश्रीमलयगिरिकृतक्षेत्रसमासवृत्तौ च तथादर्शनाभावात् अस्माभिरपि राजधान्यो दक्षिणेनेत्यलेखि (शावृ)।
८. ओभासेइ (प)।
९. जं० १।२४।
१०. जं० १।४७।
११. वम्हे (अ,ब)।
१२. वम्हावती (अ,ब)।
१३. सीहसोगा (अ,क,ब); सीयसोगा (त्रि,प, शावृ, हीवृ); शीघ्रस्रोताः सिंहस्रोता वा ग्रन्थान्तरे शीतस्रोताः (पुवृ); द्रष्टव्यम्— ठाणं ३।४६१।
१४. अवरा (स); अपरा (पुवृ); स्थानाङ्गे (२।३४१) पि 'अवरा' इति पाठो विद्यते, किन्तु अस्मिन्नेव सूत्रे किञ्चिदग्रे 'अरया' इति पाठो सर्वेष्वप्यादर्शेषु विद्यते तेनात्रापि 'अरजा' इति पाठः स्वीकृतः।
१५. णलिणावई (प); सलिलावती ग्रन्थान्तरे नलिनावती (पुवृ); नलिनावती विजयः सलिलावतीतिपर्यायः (शावृ); सलिलावती (ठाणं २।३४०)।

Jain Education International 	For Private & Personal Use Only 	www.jainelibrary.org

उत्तरिल्लेवि एमेव भाणियव्वे जहा सीयाए, वप्पे विजए, विजया रायहाणी, चंदे वक्खारपव्वए। सुवप्पे विजए, वेजयंती रायहाणी, ओम्मिमालिणी णई। महावप्पे विजए, जयंती रायहाणी, सूरे वक्खारपव्वए। वप्पावई विजए, अपराइया रायहाणी, फेणमालिणी णई। वग्गू विजए, चक्कपुरा रायहाणी, णागे वक्खारपव्वए। सुवग्गू विजए, खग्गपुरा रायहाणी, गंभीरमालिणी अंतरणई। गंधिले विजए, अवज्झा रायहाणी, देवे वक्खारपव्वए। गंधिलावई विजए, अओज्झा[1] रायहाणी, एवं मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लं पासं भाणियव्वं तत्थ ताव सीतोदाए णईए दक्खिणिल्ले णं कूले इमे विजया, तं जहा—

गाहा—

पम्हे सुपम्हे महापम्हे, चउत्थे पम्हगावई।
संखे कुमुए णलिणे, अट्ठमे[2] णलिणावई ॥१॥

इमाओ रायहाणीओ, तं जहा—

गाहा—

आसपुरा सीहपुरा, महापुरा चेव हवइ विजयपुरा।
अवराइया य अरया, असोग तह वीयसोगा य ॥२॥

इमे वक्खारा, तं जहा—अंके पम्हे[3] आसीविसे सुहावहे, एवं इत्थ परिवाडीए दो-दो विजया कूडसरिसणामया[4] भाणियव्वा, दिसा विदिसाओ य भाणियव्वाओ, सीयोयामुहवणं च भाणियव्वं, सीतोदाए दाहिणिल्लं[5] उत्तरिल्लं च। सीतोदाए उत्तरिल्ले पासे इमे विजया, तं जहा—

गाहा—

वप्पे सुवप्पे महावप्पे, चउत्थे वप्पगावई[6]।
वग्गू य सुवग्गू या, गंधिले[7] गंधिलावई ॥३॥

रायहाणीओ इमाओ, तं जहा—

गाहा—

विजया य वेजयंती[8], जयंती अपराजिया।
चक्कपुरा खग्गपुरा, हवइ अवज्झा अओज्झा य ॥४॥

इमे वक्खारा, तं जहा—चंदपव्वए सूरपव्वए नागपव्वए देवपव्वए। सीयोयाए महाणईए दाहिणिल्ले कूले—खीरोया सीहसोया[9] अंतोवाहिणीओ[10] णईओ, उम्मिमालिणी फेणमालिणी गंभीरमालिणी उत्तरिल्लविजयाणंतराओ[11]। इत्थ परिवाडीए दो-

१. अयोज्झा (अ,त्रि,ब)।
२. चउत्थे (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
३. पउमे (अ,क,ख,ब,स)।
४. °सरिणामया (अ,क,ख,ब,स) प्रायः सर्वत्र।
५. दक्खिणिल्लं (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
६. वप्पावई (अ,त्रि,ब)।
७. गंधिला (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
८. वेजयंती य (अ,ब)।
९. सीयसोया (प)।
१०. अंतोवाहिणी (अ,ख,त्रि,ब)।
११. यत्तु पूर्वविभागे विजयादिसङ्ग्रहः प्राच्यविभागद्वयेन्तरनदीसंग्रहश्च नोक्तस्तत्र सूत्रकाराणां प्रवृत्तिवैचित्र्यं हेतुर्व्यवच्छिन्नसूत्रता वेति (शावृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दो कूडा विजयसरिसणामया भाणियव्वा। इमे दो-दो कूडा अवट्ठिया तं जहा--सिद्धाययणकूडे पव्वयसरिसणामकूडे ॥

२१३. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे मंदरे[1] णामं पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! उत्तरकुराए दक्खिणेणं, देवकुराए उत्तरेणं, पुव्वविदेहस्स वासस्स पच्चत्थिमेणं, अवरविदेहस्स वासस्स पुरत्थिमेणं, जंबुद्दीवस्स दीवस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरे णामं पव्वए पण्णत्ते--णवणउतिजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, मूले दसजोयणसहस्साइं णवइं च जोयणाइं दस य एगारसभाए जोयणस्स विक्खंभेणं, धरणितले[2] दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, तयणंतरं[3] च णं मायाए-मायाए परिहायमाणे-परिहायमाणे उवरितले एगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं, मूले एकत्तीसं[4] जोयणसहस्साइं णव य दसुत्तरे जोयणसए तिण्णि य एगारसभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं, धरणितले एकत्तीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं, उवरितले तिण्णि जोयणसहस्साइं एगं च बावट्ठं जोयणसयं किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं, मूले विच्छिण्णे मज्झे संखित्ते उवरिं[5] तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे सण्हे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, वण्णओ[6] ॥

२१४. मंदरे णं भंते ! पव्वए कइ वणा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि वणा पण्णत्ता, तं जहा--भद्दसालवणे णंदणवणे सोमणसवणे पंडगवणे ॥

२१५. कहि णं भंते ! मंदरे पव्वए भद्दसालवणे णामं वणे पण्णत्ते ? गोयमा ! धरणितले, एत्थ णं मंदरे पव्वए भद्दसालवणे णामं वणे पण्णत्ते--पाईणपडीणायए[7] उदीण-दाहिणविच्छिण्णे सोमणस-विज्जुप्पह-गंधमायण-मालवंतेहिं वक्खारपव्वएहिं सीया-सीतोदाहि य महाणईहिं अट्ठभागपविभत्ते, मंदरस्स पव्वयस्स 'पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं बावीसं-बावीसं'[8] जोयणसहस्साइं आयामेणं, उत्तरदाहिणेणं[9] अड्ढाइज्जाइं-अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं, से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, दुण्हवि वण्णओ[10] भाणियव्वो- किण्हे किण्होभासे जाव देवा आसयंति सयंति ॥

२१६. मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमेणं भद्दसालवणं पण्णासं जोयणाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं महं एगे सिद्धाययणे पण्णत्ते--पण्णासं जोयणाइं आयामेणं, पणवीसं जोयणाइं विक्खंभेणं, छत्तीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे वण्णओ[11] ॥

---

१. मंदिरे (अ,ब) अग्रेपि प्राय एवमेव।

२. धरणियले (अ,प,स)।

३. तदाणंतरं (अ, ब); तयाणंतरं (क, ख, त्रि, स)।

४. एक्कतीसं (अ,ब); एगत्तीसं (क,ख,त्रि,स)।

५. उप्पि (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

६. जं० १।१०-१३।

७. पादीणपडियायते (अ,ब); °पडियायए (क त्रि,स)।

८. पच्चत्थिमेणं बावीसं (अ,ब); पच्चत्थिम-पुरत्थिमेणं बावीसं (क,ख,स); पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं बावीसं २ (त्रि); पश्चिम-पूर्वाभ्यां° (हीवृ)।

९. उत्तरेण दाहिणेणं (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

१०. जं० १।१०-१३।

११. जं १।३७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१७. तस्स णं सिद्धायदणस्स तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता। ते णं दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, तावइयं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा जाव[1] वणमालाओ[2] भूमिभागो य भाणियव्वो ।।

२१८. तस्स णं बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगा मणिपेढिया पण्णत्ता—अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वरयणामई अच्छा ।।

२१९. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं देवच्छंदए- अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं जाव जिणपडिमावण्णओ देवच्छंदगस्स जाव[3] धूवकडुच्छुयाणं ।।

२२०. मंदरस्स णं पव्वयस्स दाहिणेणं भद्दसालवणं पण्णासं[4], एवं चउद्दिसिंपि मंदरस्स भद्दसालवणे चत्तारि सिद्धाययणा भाणियव्वा ।।

२२१. मंदरस्स णं पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं भद्दसालवणं पण्णासं जोयणाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ[5] पण्णत्ताओ, तं जहा—

पउमा पउमप्पभा चेव, कुमुदा कुमुदप्पभा।

ताओ णं पुक्खरिणीओ पण्णासं जोयणाइं आयामेणं, पणवीसं[6] जोयणाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, वण्णओ[7] वेइयावणसंडाणं भाणियव्वो। चउद्दिसिं तोरणा जाव[8] तासि णं पुक्खरिणीणं बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो पासायवडेंसए पण्णत्ते- पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं[9], अब्भुग्गयमूसियपहसिय विव एवं सपरिवारो पासायवडेंसओ भाणियव्वो[10] ।।

२२२. मंदरस्स णं एवं[11] दाहिणपुरत्थिमेणं पुक्खरिणीओ—

उप्पलगुम्मा णलिणा, उप्पला उप्पलुज्जला।

तं चेव पमाणं मज्झे पासायवडेंसओ सक्कस्स सपरिवारो तेणं चेव पमाणेणं ।।

२२३. दाहिणपच्चत्थिमेण वि पुक्खरिणीओ—

भिंगा भिंगनिभा चेव, अंजणा कज्जलप्पभा[12] ।।

पासायवडेंसओ सक्कस्स सीहासणं सपरिवारं ।।

२२४. उत्तरपच्चत्थिमेणं पुक्खरिणीओ—

सिरिकंता सिरिचंदा,[13] सिरिमहिया चेव[14] सिरिणिलया।

पासायवडेंसओ ईसाणस्स सीहासणं सपरिवारं ।।

---

१. जी० ६।३००-३०६।
२. वणलयामालाओ (क,स); वणलयाओ (ख)।
३. जी० ३।४१४-४१६।
४. पञ्चाशद्योजनान्यवगाह्येत्याद्यालापकोग्राह्यः (शावृ)।
५. णंदाओ (अ,क,ख,त्रि,ब)।
६. पणुवीसं (अ,ख,ब)।
७. जी० ३।२८६।
८. जं० ४।२६-३०।
९. आयाम-विक्खंभेणं (क,ख,स)।
१०. जी० ३।३३८-३४५; पण्ण०२।५१।
११. एवमितिपदमुक्तातिदेशार्थं तेन 'भद्दसालवणं पण्णासं जोअणाइं ओगाहित्ता' इत्यादि ग्राह्यम् (शावृ)।
१२. अंजणप्पभा (प)।
१३. सिरियंदा (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
१४. तेव (ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२५. मंदरे णं भंते ! पव्वए भद्दसालवणे कइ दिसाहत्थिकूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ दिसाहत्थिकूडा पण्णत्ता, तं जहा—

गाहा—

पउमुत्तरे णीलवंते, सुहत्थी अंजणागिरी[1]।
कुमुदे य पलासे य, वडेंसे[2] रोयणागिरी[3] ॥

२२६. कहि णं भंते ! मंदरे पव्वए भद्दसालवणे पउमुत्तरे णामं दिसाहत्थिकूडे पण्णत्ते ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, पुरत्थिमिल्लाए सीयाए उत्तरेणं, एत्थ णं पउमुत्तरे णामं दिसाहत्थिकूडे पण्णत्ते—पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच-गाउयसयाइं उव्वेहेणं, एवं विक्खंभे[4] परिक्खेवो य भाणियव्वो[5] चुल्लहिमवंतकूडसरिसो, पासायाण य 'तं चेव'[6], पउमुत्तरो देवो, रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं ॥

२२७. एवं णीलवंतदिसाहत्थिकूडे मंदरस्स दाहिणपुरत्थिमेणं, पुरत्थिमिल्लाए सीयाए दक्खिणेणं। एयस्सवि णीलवंतो देवो, रायहाणी दाहिणपुरत्थिमेणं[7] ॥

२२८. एवं सुहत्थिदिसाहत्थिकूडे मंदरस्स दाहिणपुरत्थिमेणं, दक्खिणिल्लाए सीयोयाए पुरत्थिमेणं। एयस्सवि सुहत्थी देवो, रायहाणी दाहिणपुरत्थिमेणं ॥

२२९. एवं चेव अंजणागिरिदिसाहत्थिकूडे मंदरस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं, दक्खिणिल्लाए सीतोदाए पच्चत्थिमेणं। एयस्सवि अंजणागिरी देवो, रायहाणी दाहिणपच्चत्थिमेणं ॥

२३०. एवं कुमुदेवि दिसाहत्थिकूडे मंदरस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमिल्लाए सीतोदाए दक्खिणेणं। एयस्सवि कुमुदो देवो, रायहाणी दाहिणपच्चत्थिमेणं ॥

२३१. एवं पलासेवि दिसाहत्थिकूडे मंदरस्स उत्तरपच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमिल्लाए सीतोदाए उत्तरेणं। एयस्सवि पलासो[8] देवो, रायहाणी उत्तरपच्चत्थिमेणं ॥

२३२. एवं वडेंसेवि दिसाहत्थिकूडे मंदरस्स उत्तरपच्चत्थिमेणं, उत्तरिल्लाए सीयाए महाणईए पच्चत्थिमेणं। एयस्सवि वडेंसो देवो, रायहाणी उत्तरपच्चत्थिमेणं ॥

२३३. एवं रोयणागिरी दिसाहत्थिकूडे मंदरस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, उत्तरिल्लाए सीयाए पुरत्थिमेणं। एयस्सवि रोयणागिरी देवो, रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं ॥

२३४. कहि णं भंते ! मंदरे पव्वए णंदणवणे णामं वणे पण्णत्ते ? गोयमा ! भद्दसालवणस्स बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ पंच जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं मंदरे पव्वए णंदणवणे णामं वणे पण्णत्ते—पंच जोयणसयाइं चक्कवालविक्खंभेणं वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए, जे णं मंदरं पव्वयं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ—

---

१. अंजणगिरी (अ,प,ब,स)।
२. वडेंसए (अ,ब); वतंसे (ख)।
३. रोहणागिरि (शावृपा)।
४. विक्खंभ (क,ख,त्रि,प,स,); अत्र विभक्तिलोपः प्राकृतत्वात् (शावृ); ताडपत्रीयादर्शे 'विक्खंभे' इति पाठो लभ्यते, किन्तु अर्वाचीनादर्शेषु वृत्तिकृता नैष पाठो लब्धस्तेन विभक्तिलोपस्य सम्भावना कृता।
५. जं० ४।४८-५२।
६. तदेव प्रमाणमिति गम्यम् (शावृ)।
७. दाहिणपुरत्थिमिल्लेणं (ब)।
८. वलास (ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णव जोयणसहस्साइं णव य चउप्पण्णे जोयणसए छच्चेगारसभाए जोयणस्स बाहिं गिरिविक्खंभो, एगत्तीसं जोयणसहस्साइं चत्तारि य अउणासीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए बाहिं गिरिपरिरएणं, अट्ठ जोयणसहस्साइं णव य चउप्पण्णे जोयणसए छच्चेगारसभाए जोयणस्स अंतो गिरिविक्खंभो, अट्ठावीसं जोयणसहस्साइं तिण्णि य सोलसुत्तरे जोयणसए अट्ठ य इक्कारसभाए जोयणस्स अंतो गिरिपरिरएणं। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, वण्णओ जाव[1] देवा आसयंति ॥

२३५. मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं महं एगे सिद्धाययणे पण्णत्ते। एवं चउद्दिसिं चत्तारि सिद्धाययणा, विदिसासु पुक्खरिणीओ तं चेव[2] पमाणं सिद्धाययणाणं, पुक्खरिणीणं च, पासायवडेंसगा तह चेव सक्केसाणाणं[3] तेणं चेव पमाणेणं[4] ॥

२३६. णंदणवणे णं भंते ! वणे कइ कूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! णव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—णंदणवणकूडे मंदरकूडे णिसहकूडे हिमवयकूडे रययकूडे रुयगकूडे सागरचित्तकूडे वइरकूडे बलकूडे ॥

२३७. कहिं णं भंते ! णंदणवणे णंदणवणकूडे णामं कूडे पण्णत्ते ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लसिद्धाययणस्स[5] उत्तरेणं, उत्तरपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसयस्स दक्खिणेणं, एत्थ णं णंदणवणे णामं कूडे पण्णत्ते। पंच सइया कूडा पुव्ववण्णिया भाणियव्वा[6] देवी मेहंकरा, रायहाणी विदिसाए ॥

२३८. एयाहिं चेव पुव्वाभिलावेणं णेयव्वा इमे कूडा इमाहिं दिसाहिं—पुरत्थिमिल्लस्स भवणस्स दाहिणेणं, दाहिणपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेणं मंदरे कूडे, मेहवई देवी, रायहाणी पुव्वेणं। दक्खिणिल्लस्स भवणस्स पुरत्थिमेणं, दाहिणपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेणं 'णिसहे कूडे'[7] सुमेहा देवी, रायहाणी दक्खिणेणं। दक्खिणिल्लस्स भवणस्स पच्चत्थिमेणं, दक्खिणपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पुरत्थिमेणं 'हेमवए कूडे'[8] मेघमालिनी[9] देवी, रायहाणी दक्खिणेणं। पच्चत्थिमिल्लस्स भवणस्स दक्खिणेणं, दाहिणपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेणं 'रयए कूडे'[10] सुवच्छा देवी, रायहाणी पच्चत्थिमेणं। पच्चत्थिमिल्लस्स भवणस्स उत्तरेणं,

---

१. जं० १।१०-१३।

२. जं० ४।२१६-२२४।

३. सक्कीसाणाणं (अ,क,ब)।

४. अत्र च पुष्करिणीनां नामानि सूत्रकारालिखितत्वाल्लिपिप्रमादाद् वा आदर्शेषु न दृश्यन्ते इति तत्रैशान्यादिप्रासादक्रमादिमानि नामानि द्रष्टव्यानि पूज्यप्रणीतक्षेत्रविचारतः—नन्दोत्तरा, नन्दा, सुनन्दा, नन्दिवर्द्धना तथा नन्दिषेणा अमोघा गोस्तूपा सुदर्शना तथा भद्रा विशाला कुमुदा पुण्डरीकिणी तथा विजया वैजयन्ती अपराजिता जयन्ती (शावृ)।

५. पुरत्थिमिल्लस्स (क,ख,त्रि,स)।

६. अथ लाघवार्थमुक्तस्य वक्ष्यमाणानां च कूटानां साधारणमतिदिशति—पञ्चशतिकानि कूटानि पूर्वं विदिग्हस्तिकूटप्रकरणे वर्णितानि उच्चत्वव्यासपरिधिवर्णसंस्थानराजधानीदिगादिभिः तान्यत्र भणितव्यानीति शेषः (शावृ)।

७. णिसहकूडे (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

८. हेमवयकूडे (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

९. हेममालिनी (क)।

१०. रययकूडे (अ,ब) रजतकूडे (क,ख,स); रयतकूडे (त्रि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तरपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स दक्खिणेणं 'रुयगे कूडे'[1], वच्छमित्ता देवी, रायहाणी पच्चत्थिमेणं। उत्तरिल्लस्स भवणस्स पच्चत्थिमेणं, उत्तरपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पुरत्थिमेणं 'सागरचित्ते कूडे'[2], वइरसेणा देवी, रायहाणी उत्तरेणं। उत्तरिल्लस्स भवणस्स पुरत्थिमेणं, उत्तरपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेणं 'वइरे कूडे'[3], बलाहया[4] देवी, रायहाणी उत्तरेणं ॥

२३९. कहि णं भंते ! णंदणवणे[5] बलकूडे णामं कूडे पण्णत्ते ? गोयमा ! मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं णंदणवणे बलकूडे णामं कूडे पण्णत्ते। एवं जं चेव[6] हरिस्सहकूडस्स पमाणं रायहाणी य, तं चेव बलकूडस्सवि, णवरं—बलो देवो, रायहाणी उत्तरपुरत्थिमेणं ॥

२४०. कहि णं भंते ! मंदरए पव्वए सोमणसवणे णामं वणे पण्णत्ते ? गोयमा ! णंदणवणस्स बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अद्धतेवट्ठि जोयणसहस्साइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं मंदरे पव्वए सोमणसवणे णामं वणे पण्णत्ते—पंचजोयणसयाइं चक्कवालविक्खंभेणं, वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए, जे णं मंदरं पव्वयं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ—चत्तारि जोयणसहस्साइं दुण्णि य बावत्तरे जोयणसए अट्ठ य इक्कारसभाए जोयणस्स 'बाहिं गिरिविक्खंभेणं'[7], तेरस जोयणसहस्साइं पंच य एक्कारे[8] जोयणसए छच्च[9] इक्कारसभाए जोयणस्स बाहिं गिरिपरिरएणं, तिण्णि जोयणसहस्साइं दुण्णि य बावत्तरे जोयणसए अट्ठ य एक्कारसभाए जोयणस्स अंतो गिरिविक्खंभेणं, दस जोयणसहस्साइं तिण्णि य अउणापण्णे[10] जोयणसए तिण्णि य इक्कारसभाए जोयणस्स अंतो गिरिपरिरएणं। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, वण्णओ[11] किण्हे किण्होभासे जाव आसयंति। एवं कूडवज्जा सच्चेव णंदणवणवत्तव्वया भाणियव्वा, तं चेव ओगाहिऊणं[12] जाव[13] पासायवडेंसगा सक्कीसाणाणं ॥

२४१. कहि णं भंते ! मंदरे पव्वए पंडगवणे णामं वणे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोमणसवणस्स बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ छत्तीसं जोयणसहस्साइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं मंदरे पव्वए सिहरतले पंडगवणे णामं वणे पण्णत्ते—चत्तारि चउणउए जोयणसए चक्कवालविक्खंभेणं, वट्टे वलयाकारसंठाणसंठिए, जे णं मंदरचूलियं[14] सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ—तिण्णि जोयणसहस्साइं एगं च बावट्ठं जोयणसयं किंचिविसे-

---

१. रुयगकूडे (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
२. सागरचित्तकूडे (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
३. वइरकूडे (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
४. बलाहिका (त्रि,हीवृ)।
५. नंदणवणे २ (अ,क,ख,ब,स)।
६. जं० ४।१६५।
७. बाहिरविक्खंभेणं (अ,ख,ब,स); बाहिर गिरिविक्खंभेणं (त्रि)।
८. एक्कारस (त्रि); एक्कार (स)।
९. छ (ख)।
१०. अउणवण्णे (अ,ब)।
११ जं० १।१०-१३।
१२. ओगाहिऊण (त्रि)।
१३. जं० ४।२३५।
१४. मंदिरस्स चूलियं (अ,ब); मंदरस्स चूलियं (क,ख,त्रि,स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहियं[1] परिक्खेवेणं । से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं[2] जाव किण्हे देवा आसयंति ॥

२४२. पंडगवणस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं मंदरचूलिया णामं चूलिया पण्णत्ता— चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले बारस जोयणाइं विक्खंभेणं, मज्झे अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, उप्पिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, मूले साइरेगाइं सत्ततीसं जोयणाइं परिक्खेवेणं, मज्झे साइरेगाइं पणवीसं[3] जोयणाइं परिक्खेवेणं, उप्पिं[4] साइरेगाइं बारस[5] जोयणाइं परिक्खेवेणं, मूले विच्छिण्णा मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया सव्ववेरुलियामई अच्छा । सा णं एगाए पउमवरवेइयाए[6] •एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता[7] संपरिक्खित्ता, उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे जाव[8] सिद्धाययणं[9] बहुमज्झ-देसभाए— कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं, देसूणगं[9] कोसं उड्ढ उच्चत्तेणं, अणेगखंभ-सयसण्णिविट्ठे जाव[10] धूवकडुच्छुगा ॥

२४३. मंदरचूलियाए[11] णं पुरत्थिमेणं पंडगवणं पण्णासं जोयणाइं ओगाहित्ता, एत्थ णं महं एगे भवणे पण्णत्ते । एवं जच्चेव[12] सोमणसवणे[13] पुव्ववण्णिओ गमो[14] भवणाणं[15] पुक्खरिणीणं पासायवडेंसगाण य, सो चेव णेयव्वो जाव[16] सक्कीसाणवडेंसगा तेणं चेव परिमाणेणं ॥

२४४. पंडकवणे णं भंते ! वणे कइ अभिसेयसिलाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि अभिसेयसिलाओ पण्णत्ताओ, तं जहा— पंडुसिला पंडुकंबलसिला रत्तसिला रत्तकंबलसिला[17] ॥

२४५. कहि णं भंते ! पंडगवणे वणे पंडुसिला णामं सिला पण्णत्ता ? गोयमा ! मंदरचूलियाए पुरत्थिमेणं, पंडगवणपुरत्थिमपेरंते, एत्थ णं पंडगवणे वणे पंडुसिला णामं सिला पण्णत्ता—उत्तरदाहिणायया पाईणपडीणविच्छिण्णा अद्धचंदसंठाणसंठिया पंचजोयण-सयाइं आयामेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्व-कणगामई अच्छा । वेइयावणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, वण्णओ[18] ॥

---

१. किंचिविसेसाहिए (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
२. जं० १।१०-१३ । 'जाव' इति पदं किण्हे पदानंतरं युज्यते, अत्र कश्चिद्लिपिप्रमादः सम्भाव्यते ।
३. पणुवीसाइं (अ,ब); पणुवीसं (क,ख) ।
४. उवरिं (त्रि) ।
५. दुवालस (अ,त्रि,ब) ।
६. सं०पा०—पउमवरवेइयाए जाव संपरिक्खित्ता ।
७. जं० १।३६,३७ ।
८. सिद्धायणं (अ,ब); सिद्धाययणे (क,ख,स) ।
९. देसूणं (क,त्रि) ।
१०. जं० १।३७-४० ।
११. मंदरचूलगाए (अ,ब) ।
१२. जो चेव (क,ख,स) ।
१३. सोमणसवण (अ,ख,त्रि,ब,स); सोमणस (क); सोमणसे (प) ।
१४. × (अ,त्रि,ब) ।
१५. भवणं (अ,ख,ब); भवणस्स (क,त्रि) ।
१६. जं० ४।२४० ।
१७. अन्यत्र तु पाण्डुकम्बला अतिपाण्डुकम्बला रक्तकम्बला अतिरक्तकम्बला नामान्तराणि (शावृ) ।
१८. जं० १।१०-१३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४६. तीसे णं पंडुसिलाए चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता जाव[1] तोरणा, वण्णओ ॥

२४७. तीसे णं पंडुसिलाए उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[2] देवा आसयंति सयंति ॥

२४८. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए उत्तरदाहिणेणं, एत्थ णं दुवे अभिसेयसीहासणा[3] पण्णत्ता पंच धणुसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं बाहल्लेणं, सीहासणवण्णओ भाणियव्वो[4] विजयदूसवज्जो। तत्थ णं जेसे उत्तरिल्ले सीहासणे तत्थ णं बहूहिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य कच्छाइया तित्थयरा अभिसिच्चंति[5]। तत्थ णं जेसे दाहिणिल्ले सीहासणे तत्थ णं बहूहिं भवण[6] •वइ-वाणमंतर-जोइसिय° वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य वच्छाईया तित्थयरा अभिसिच्चंति ॥

२४९. कहि णं भंते! पंडगवणे वणे पंडुकंबलसिला णामं सिला पण्णत्ता? गोयमा! मंदरचूलियाए दक्खिणेणं, पंडगवणदाहिणपेरंते, एत्थ णं पंडगवणे वणे पंडु-कंबलसिला णामं सिला पण्णत्ता पाईणपडीणायया[7] उत्तरदाहिणविच्छिण्णा, एवं तं चेव पमाणं वत्तव्वया य भाणियव्वा जाव[8]—

२५०. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे सीहासणे पण्णत्ते, तं चेव सीहासणप्पमाणं[9], तत्थ णं बहूहिं भवणवइ[10]-•वाणमंतर-जोइ-सिय-वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य° भारहगा तित्थयरा अभिसिच्चंति ॥

२५१. कहि णं भंते! पंडगवणे वणे रत्तसिला णामं सिला पण्णत्ता? गोयमा! मंदरचूलियाए पच्चत्थिमेणं, पंडगवणपच्चत्थिमपेरंते, एत्थ णं पंडगवणे वणे रत्तसिला णामं सिला पण्णत्ता उत्तरदाहिणायया पाईणपडीणविच्छिण्णा जाव[11] तं चेव पमाणं सव्वतवणिज्जामई अच्छा। तत्थ णं जेसे दाहिणिल्ले सीहासणे तत्थ णं बहूहिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य पम्हाइया तित्थयरा अभिसिच्चंति। तत्थ णं जेसे उत्तरिल्ले सीहासणे तत्थ णं बहूहिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य वप्पाइया[12] तित्थयरा अभिसिच्चंति ॥

२५२. कहि णं भंते! पंडगवणे वणे रत्तकंबलसिला णामं सिला पण्णत्ता? गोयमा! मंदरचूलियाए उत्तरेणं, पंडगवणउत्तरचरिमंते, एत्थ णं पंडगवणे वणे रत्तकंबलसिला णामं सिला पण्णत्ता—पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिण्णा सव्वतवणिज्जामई

---

१. जं० ४।२६-३० ।
२. जं० १।१३ ।
३. अभिसेया सीहासणा (अ,ब) ।
४. जी० ३।३११ ।
५. अभिसिंचंति (अ,ब) ।
६. सं०पा० —भवण जाव वेमाणिएहिं ।
७. °पडियायता (अ,क,ब,म) ।
८. जं० ४।२४५-२४७ ।
९. जं० ४।२४८ ।
१०. सं०पा०—भवणवइ जाव भारहगा ।
११. जं० ४।२४५-२४८ ।
१२. वप्पातिया (अ,ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अच्छा जाव[1] बहुमज्झदेसभाए सीहासणं, तत्थ णं बहूहिं भवणवइ[2]-•वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएहिं° देवेहिं देवीहि य एरावयगा तित्थयरा अभिसिच्चंति ।।

२५३. मंदरस्स णं भंते ! पव्वयस्स कइ कंडा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ कंडा पण्णत्ता, तं जहा 'हेट्ठिल्ले कंडे, मज्झिमिल्ले कंडे, उवरिल्ले कंडे'[3] ।।

२५४. मंदरस्स णं भंते ! पव्वयस्स हेट्ठिल्ले कंडे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा —पुढवी उवले वइरे[4] सक्करा ।।

२५५. मज्झिमिल्ले णं भंते ! कंडे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा- अंके फलिहे जायरूवे[5] रयए ।।

२५६. उवरिल्ले कंडे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे[6] पण्णत्ते सव्वजंबूणयामए[7] ।।

२५७. मंदरस्स णं भंते ! पव्वयस्स हेट्ठिल्ले कंडे केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! एगं जोयणसहस्सं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

२५८. मज्झिमिल्ले[8] कंडे पुच्छा । गोयमा तेवट्ठिं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

२५९. उवरिल्ले पुच्छा । गोयमा ! छत्तीसं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते । एवामेव सपुव्वावरेणं मंदरे पव्वए एगं जोयणसयसहस्सं[9] सव्वग्गेणं पण्णत्ते ।।

२६०. मंदरस्स णं भंते ! पव्वयस्स कति णामधेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! सोलस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा —

गाहा —

मंदर[10] मेरु मणोरम सुदंसण सयंपभे य गिरिराया ।
रयणोच्चए सिलोच्चए[11] मज्झे लोगस्स णाभी य ।।१।।
अच्छे य सूरियावत्ते सूरियावरणे ति या ।
उत्तमे य दिसादी य, वडेंसेति य सोलस ।।२।।

२६१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ मंदरे पव्वए ? मंदरे पव्वए ? गोयमा ! मंदरे पव्वए मंदरे णामं देवे परिवसइ महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठिईए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ मंदरे पव्वए-मंदरे पव्वए।

---

१. जं० ४।२४५-२४८ ।
२. सं०पा०—भवणवइ जाव देवेहिं ।
३. हेट्ठिल्लकंडे मज्झिमकंडे उवरिल्लकंडे (अ,त्रि, ब, पुवृ, हीवृ); °मज्झिल्ले कंडे° (स) ।
४. वतिरे (ख) ।
५. जावरूवे (अ,ब) ।
६. एक्कागकारे (अ,त्रि,ब) ।
७. सव्वजंबूणतामए (अ,ब) ।
८. मज्झिल्ले (अ,त्रि,ब) ।
९. जोयणसहस्स (प,ब,स) अशुद्धं प्रतिभाति ।
१०. समवायाङ्गे (१६।३) त्रयाणां नाम्नां भेदो दृश्यते —
मंदर-मेरु-मणोरम-सुदंसण सयंपभे य गिरिराया।
रयणुच्चय पियदंसण, मज्झे लोगस्स नाभी य ।।१।।
अत्थे य सूरियावत्ते, सूरियावरणेत्ति य ।
उत्तरे य दिसाई य, वडेंसे इय सोलसे ।।२।।
११. रयणुच्चए सिलुच्चए (क,ख,त्रि,स) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अदुत्तरं तं चेव[1] ॥

२६२. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे णीलवंते[2] णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! महाविदेहस्स वासस्स उत्तरेणं, रम्मगवासस्स दक्खिणेणं, पुरत्थिमिल्ललवण-समुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे णीलवंते णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते—पाईणपडीणायए[3] उदीणदाहिणविच्छिण्णे, णिसहवत्तव्वया णीलवंतस्स भाणियव्वा[4], णवरं—जीवा दाहिणेणं, धणु [धणुपट्ठं ?] उत्तरेणं, एत्थ[5] णं केसरिद्दहो, सीया महाणई पवूढा समाणी उत्तरकुरं एज्जेमाणी-एज्जेमाणी[6] जमगपव्वए[7] णीलवंत-उत्तरकुरु-चंदेरावण-मालवंतद्दहे य दुहा विभयमाणी-विभयमाणी चउरासीए सलिलासहस्सेहिं आपूरेमाणी[8]-आपूरेमाणी भद्दसालवणं एज्जेमाणी[9]-एज्जेमाणी मंदरं पव्वयं दोहिं जोयणेहिं असंपत्ता पुरत्थाभिमुही आवत्ता समाणी अहे मालवंतवक्खारपव्वयं दालयित्ता मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पुव्वविदेहं वासं दुहा विभयमाणी-विभयमाणी एगमेगाओ चक्कवट्टिविजयाओ अट्ठावीसाए-अट्ठावीसाए सलिलासहस्सेहिं आपूरेमाणी-आपूरेमाणी पंचहिं सलिलासयसहस्सेहिं बत्तीसाए[10] य सलिलासहस्सेहिं समग्गा अहे विजयस्स दारस्स जगइं दालइत्ता पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ, अवसिट्ठं तं चेव[11]। एवं णारिकंतावि उत्तराभिमुही णेयव्वा, णवरमिमं[12] णाणत्तं—गंधावइवट्टवेयड्ढपव्वयं[13] जोयणेणं असंपत्ता पच्चत्थाभिमुही आवत्ता समाणी, अवसिट्ठं तं चेव पवहे य मुहे य जहा[14] हरिकंतासलिला ॥

२६३. णीलवंते णं भंते ! वासहरपव्वए कइ कूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! नव कूडा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धायथणकूडे।

गाहा—

सिद्धे णीले[15] पुव्वविदेहे, सीया य कित्ति णारी य ।
अवरविदेहे रम्मगकूडे उवदंसणे चेव ॥१॥

सव्वे एए कूडा पंचसइया, रायहाणीओ उत्तरेणं ॥

२६४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—णीलवंते वासहरपव्वए ? णीलवंते वासहर-पव्वए ? गोयमा ! णीले णीलोभासे, णीलवंते य इत्थ देवे महिड्ढीए जाव[16] परिवसइ । सव्ववेरुलियामए णीलवंते जाव[17] णिच्चे ॥

---

१. जं० १।४७ ।
२. णेलवंते (अ,क,त्रि,ब) प्रायः सर्वत्र ।
३. ०पडियायते (अ,क,ख,ब) ।
४. जं० ४।८६-८६ ।
५. तत्थ (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
६. पज्जेमाणी (अ,क,ख,त्रि,ब,पुवृ,हीवृ) ।
७. जवगपव्वतो (अ,ब) ।
८. आपूरयमाणी (अ,ब) ; आपूरमाणी (ख,स) ।
९. पज्जेमाणी (अ,क,ख,त्रि,ब,पुवृ,हीवृ) ।
१०. दुपत्तीसाए (अ,ब) ; दुबत्तीसाए (त्रि) ।
११. जं० ४।६१-६५ ।
१२. नवरं इमं (अ,ब) ; नवरिं इमं (त्रि) ।
१३. मालवंतपरियागं वट्टवेयड्ढपव्वयं (अ,ब) ।
१४. जं० ४।६० ; यच्चात्र हरिसलिलां विहाय प्रवह-मुखयोर्हरिकान्तातिदेश उक्तस्तत् हरिसलिला-प्रकरणेपि हरिकान्तातिदेशस्योक्तत्वात् (शावृ) ।
१५. णेलवंत (अ,ब) ।
१६. जं० १।२४ ।
१७. जं० १।४७ ।

२६५. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे रम्मए णामं वासे पण्णत्ते ? गोयमा ! णीलवंतस्स उत्तरेणं, रुप्पिस्स दक्खिणेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एवं जह चेव हरिवासं तह चेव रम्मयं वासं[1] भाणियव्वं[2], णवरं—दक्खिणेणं जीवा उत्तरेणं धणुं [धणुपट्ठं ?] अवसेसं तं चेव ॥

२६६. कहि णं भंते ! रम्मए वासे गंधावई[3] णामं वट्टवेयड्ढपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! णरकंताए पच्चत्थिमेणं, णारीकंताए[4] पुरत्थिमेणं, रम्मगवासस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं गंधावई णामं वट्टवेयड्ढे पव्वए पण्णत्ते, जं चेव वियडावइस्स तं चेव गंधावइस्सवि वत्तव्वं । अट्ठो, बहवे उप्पलाइं जाव[5] गंधावइवण्णाइं गंधावइवण्णाभाइं[6] गंधावइप्पभाइं । 'पउमे य इत्थ'[7] देवे महिड्ढीए जाव[8] पलिओवमट्ठिईए परिवसइ । रायहाणी उत्तरेणं ॥

२६७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—रम्मए वासे ? रम्मए वासे ? गोयमा ! रम्मगवासे णं रम्मे रम्मए रमणिज्जे । 'रम्मए य इत्थ'[9] देवे जाव परिवसइ । से तेणट्ठेणं ॥

२६८. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे रुप्पी णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! रम्मगवासस्स उत्तरेणं, हेरण्णवयवासस्स[10] दक्खिणेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे रुप्पी णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते—पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे, एवं 'जा चेव'[11] महाहिमवंतवत्तव्वया 'सा चेव'[12] रुप्पिस्सवि, णवरं—दाहिणेणं जीवा उत्तरेणं धणुं [धणुपट्ठं ?] अवसेसं तं चेव, महापुंडरीए दहे, णरकंता[13] महाणदी[14] दक्खिणेणं णेयव्वा, जहा[15] रोहिया पुरत्थिमेणं गच्छइ, रुप्पकूला उत्तरेणं णेयव्वा, जहा[16] हरिकंता पच्चत्थिमेणं गच्छइ, अवसेसं तं चेव ॥

२६९. रुप्पिम्मि णं भंते ! वासहरपव्वए कइ कूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ कूडा पण्णत्ता, तं जहा—

गाहा—

सिद्धे रुप्पी रम्मग, णरकंता बुद्धि रुप्पकूला य ।
हेरण्णवए मणिकंचणे य रुप्पिम्मि कूडाइं ॥१॥

सव्वेवि एए पंचसइया, रायहाणीओ उत्तरेणं ॥

---

१. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ) ।
२. जं० ४।८१-८३ ।
३. द्रष्टव्यम्—४।५७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
४. नारिकंताए (अ,क,ख,ब,स) ।
५. जं० ४।८४ ।
६. × (अ,प,ब,शावृ) ।
७. पउमेत्थ (अ,ब) ; पउमे इत्थ (क,ख,त्रि,स) ।
८. जं० १।२४ ।
९. रमएत्थ (अ,ब); रम्मए इत्थ (ख,त्रि,स) ।
१०. हेरण्णवासस्स (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
११. जच्चेव (अ,त्रि,ब); जं० ४।६२,६३ ।
१२. सच्चेव (अ,त्रि,ब) ।
१३. णारिकंता (अ,ब); स्थानाङ्गेपि (२।२९३), 'णरकंता' इत्येव पाठो लभ्यते ।
१४. नदी (प) ।
१५. जं० ४।६४-७२ ।
१६. जं० ४।७३-७८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—रुप्पी वासहरपव्वए ? रुप्पी वासहरपव्वए ? गोयमा ! रुप्पी णं[1] वासहरपव्वए रुप्पी रुप्पपट्टे[2] रुप्पिओभासे[3] सव्वरुप्पामए। रुप्पी य इत्थ देवे पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से तेणट्ठेणं ॥

२७१. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे हेरण्णवए वासे पण्णत्ते ? गोयमा ! रुप्पिस्स उत्तरेणं, सिहरिस्स दक्खिणेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे हेरण्णवए वासे पण्णत्ते। एवं जह चेव हेमवयं तह चेव हेरण्णवयंपि भाणियव्वं[4], णवरं—जीवा दाहिणेणं उत्तरेणं धणुं [धणुपट्ठं ?] अवसिट्ठं तं चेव ॥

२७२. कहि णं भंते ! हेरण्णवए वासे मालवंतपरियाए[5] णामं वट्टवेयड्ढपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! सुवण्णकूलाए पच्चत्थिमेणं, रुप्पकूलाए पुरत्थिमेणं, एत्थ णं 'हेरण्णवयस्स वासस्स बहुमज्झदेसभाए'[6] मालवंतपरियाए णामं वट्टवेयड्ढे पण्णत्ते। जह[7] चेव सद्दावई तह चेव मालवंतपरियाए। अट्ठो, उप्पलाइं पउमाइं मालवंतप्पभाइं[8] मालवंतवण्णाइं मालवंतवण्णाभाइं। पभासे य इत्थ देवे महिड्ढीए पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से एएणट्ठेणं। रायहाणी उत्तरेणं ॥

२७३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—हेरण्णवए वासे ? हेरण्णवए वासे ? गोयमा ! हेरण्णवए णं वासे रुप्पि-सिहरीहिं 'वासहरपव्वएहिं दुहओ'[9] समुवगूढे[10] णिच्चं हिरण्णं दलयइ[11] णिच्चं हिरण्णं पगासइ। हेरण्णवए य इत्थ देवे परिवसइ। से एएणट्ठेणं ॥

२७४. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे सिहरी णामं वासहरपव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! हेरण्णवयस्स उत्तरेणं, एरावयस्स दाहिणेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं। एवं जह[12] चेव चुल्लहिमवंतो तह चेव सिहरीवि, णवरं—जीवा दाहिणेणं, धणुं [धणुपट्ठं ?] उत्तरेणं, अवसिट्ठं तं चेव। पुंडरीए दहे, सुवण्णकूला महाणई दाहिणेणं णेयव्वा जहा[13] रोहियंसा पुरत्थिमेणं गच्छइ। एवं जह चेव गंगा-सिंधूओ तह चेव रत्ता-रत्तवईओ णेयव्वाओ—पुरत्थिमेणं रत्ता, पच्चत्थिमेणं रत्तवई, अवसिट्ठं तं चेव, 'अपरिसेसं णेयव्वं'[14] ॥

२७५. सिहरिम्मि णं भंते ! वासहरपव्वए कइ कूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! इक्कारस कूडा पण्णत्ता, तं जहा—सिद्धाययणकूडे सिहरिकूडे हेरण्णवयकूडे सुवण्णकूलाकूडे सुरादेवी-

---

१. णामं (प); × (स)।
२. × (प, शावृ)।
३. रुप्पोभासे (प)।
४. जं० ४।५५,५६।
५. द्रष्टव्यम्—४।५७ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
६. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ)।
७. जं० ४।५७-६०।
८. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
९. वासहरपव्वएहिमुभओ (त्रि,हीवृ)।
१०. समवगूढे (त्रि,पुवृ,हीवृ)।
११. दलयइ णिच्चं हिरण्णं मुंचति (अ,क,ख,ब,स, पुवृ,हीवृ); द्रष्टव्यं ४।६१ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
१२. जं० ४।१,२।
१३. जं० ४।३-४३।
१४. अवसेसं भाणियव्वं (प)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कूडे रत्ताकूडे लच्छीकूडे रत्तवईकूडे इलादेवीकूडे एरवयकूडे तिगिच्छिकूडे[1]। एवं सव्वेवि एते[2] कूडा पंचसइया, रायहाणीओ उत्तरेणं ॥

२७६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सिहरिवासहरपव्वए ? सिहरिवासहर-पव्वए ? गोयमा ! सिहरिम्मि[3] वासहरपव्वए बहवे कूडा सिहरिसंठाणसंठिया सव्वरयणा-मया सिहरी य इत्थ देवे जाव[4] परिवसइ। से तेणट्ठेणं ॥

२७७. कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे एरावए णामं वासे पण्णत्ते ? गोयमा ! सिह-रिस्स उत्तरेणं, उत्तरलवणसमुद्दस्स दक्खिणेणं, पुरत्थिमलवणसमुद्दस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं जंबुद्दीवे दीवे एरावए णामं वासे पण्णत्ते--खाणुबहुले, कंटकबहुले, एवं जच्चेव भरहस्स वत्तव्वया सच्चेव सव्वा निरवसेसा णेयव्वा[5] सओयवणा सणिक्खमणा सपरिनिव्वाणा, णवरं—एरावओ चक्कवट्टी, एरावओ देवो। से तेणट्ठेणं एरावए वासे-एरावए वासे ॥

१. तिगिच्छकूडे (अ); तिगिछिकूडे (क,त्रि, प); तिगिच्छे कूडे (ख); तेगिच्छिकूडे (ब)।
२. × (प)।
३. सिहरिम्हि (अ,त्रि,ब)।
४. जं० १।२४।
५. जं० ३।१-२२६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमो वक्खारो

१. जया णं एक्कमेक्के[1] चक्कवट्टिविजए भगवंतो[2] तित्थयरा समुप्पज्जंति, तेणं कालेणं तेणं समएणं अहेलोगवत्थव्वाओ[3] अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ सएहिं-सएहिं कूडेहिं सएहिं-सएहिं भवणेहिं सएहिं-सएहिं पासायवडेंसएहिं पत्तेयं-पत्तेयं चउहिं सामाणिय-साहस्सीहिं चउहिं य[4] महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसएहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं, अण्णेहि य बहूहिं[5] देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडाओ महयाहयणट्ट-गीय-वाइय[6]-°तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं° भोगभोगाइं भुंजमाणीओ विहरंति, तं जहा---

वृत्तं---

भोगंकरा[7] भोगवई, सुभोगा भोगमालिणी।
तोयधारा[8] विचित्ता य, पुप्फमाला अणिंदिया ॥१॥

---

१. एगमेगे (क,ख,स)।

२. भगवं (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

३. अधो° (अ,ब); अहो° (ख,त्रि,प); अह° (स)।

४. × (प,स)।

५. बहूहिं वाणमंतरेहिं (अ,क,ख,त्रि,ब,स); ननु कासांचिद्दिक्कुमारीणां व्यवस्था स्थानाङ्गे पल्योपमस्थितेर्भणनात् समानजातीयत्वेना-सामपि तथाभूताऽपः सम्भाव्यमानत्वात् भवन-पतिजातीयत्वं सिद्धं। तेन भवनपतिजातीयानां वानमंतरजातीयपरिकरः कथं सङ्गच्छते? उच्यते---एतासां महर्द्धिकत्वेन ये आज्ञाकारिणो व्यन्तरास्ते ग्राह्या इति अथवा वानमन्तर-शब्देनात्र वनानामन्तरेषु चरन्तीति यौगिकार्थ-संश्रयणात्। भवनपतयोऽपि वानमन्तरा इत्युच्यंते। उभयेषामपि प्रायो वनकूटादिषु विहरणशीलत्वादिति संभाव्यते। तत्त्वं तु बहु-श्रुतगम्यमिति (शावृ)। पञ्चमे सूत्रे कस्मि-श्चिदादर्शे 'वाणमंतरेहिं' इति पदं नास्ति।

६. सं० पा०---वाइय जाव भोगभोगाइं।

७. पुण्यसागरीयवृत्तौ दिशाकुमारीनाम्नां भेदो दृश्यते---
भोगंकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिनी।
सुवत्सा वत्समित्रा, पुप्फमाला अनिंदिता ॥१॥
एषु नामसु स्थानाङ्गप्रतिपादिताम्नायानुसारेण 'पुप्फमाला अनिंदिता' एते द्वे नाम्नी ऊर्ध्वलोक-वास्तव्ययोर्दिशाकुमार्योर्विद्येते।
स्थानाङ्गे (८।९९,१००) अधोलोकवास्त-व्यानां ऊर्द्ध्वलोकवास्तव्यानां च दिशाकुमारीणां नामानि अनेन क्रमेण प्रतिपादितानि सन्ति---
अट्ठ अहेलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरि-याओ पण्णत्ताओ, तं जहा---

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. तए णं तासिं अहेलोगवत्थव्वाणं अट्ठण्हं दिसाकुमारीमहत्तरियाणं[1] पत्तेयं-पत्तेयं आसणाइं चलंति ।।

३. तए णं ताओ अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ पत्तेयं-पत्तेयं आसणाइं चलियाइं पासंति, पासित्ता ओहिं पउंजंति, पउंजित्ता भगवं तित्थयरं ओहिणा आभोएंति, आभोएत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—उप्पण्णे खलु भो ! जंबुद्दीवे दीवे भयवं तित्थयरे, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पण्णमणागयाणं अहेलोगवत्थव्वाणं अट्ठण्हं दिसाकुमारीमहत्तरियाणं जम्मणमहिमं करेत्तए, तं गच्छामो णं अम्हेवि भगवओ जम्मणमहिमं करेमोत्तिकट्टु एवं वयंति, वइत्ता पत्तेयं-पत्तेयं आभिओगिए[2] देवे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे लीलट्ठिय-सालभंजियागे, एवं विमाणवण्णओ भाणियव्वो जाव[3] जोयणविच्छिण्णे दिव्वे जाणविमाणे विउव्वह, विउव्वित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

४. तए[4] णं ते आभिओगिया[5] देवा अणेगखंभसयसन्निविट्ठे जाव पच्चप्पिणंति ।।

५. तए णं ताओ अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरियाओ हट्ठतुट्ठचित्तमाणं-दियाओ[6] पत्तेयं-पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं जाव अण्णेहि य बहूहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडाओ ते दिव्वे जाणविमाणे दुरुहंति, दुरुहित्ता सव्वि-ड्ढीए सव्वजुईए घणमुइंगपणवपवाइयरवेणं ताए उक्किट्ठाए[7] °तुरियाए चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए° देवगईए जेणेव भगवओ तित्थगरस्स जम्मणणगरे जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणं तेहिं दिव्वेहिं जाणविमाणेहिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए ईसिं चउरंगुलमसंपत्ते धरणियले ते दिव्वे जाण-विमाणे ठवेंति, ठवेत्ता पत्तेयं-पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव सद्धिं संपरिवुडाओ दिव्वेहिंतो जाणविमाणेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता सव्विड्ढीए जाव[8] दुंदुहिणिग्घोस-णाइएणं जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता पत्तेयं-पत्तेयं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—णमोत्थु[9] ते रयणकुच्छि-

---

भोगंकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिनी ।
सुवच्छा वच्छमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा ।।
अट्ठ उड्ढलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरि-याओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
मेघंकरा मेघवती, सुमेघा मेघमालिनी ।
तोयधारा विचित्ता य, पुप्फमाला अणिंदिता ।।

८. तोयहारा (अ,ब) ।

१. दिसाकुमारीणं मयहरियाणं (क,प); दिसी-कुमारीणं महायरिआणं (ख); दिसाकुमारीणं महयरियाणं (स) ।

२. आभिओगे (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।

३. जं० ५।२८ ।

४. एतत्सूत्रं 'अ,ब' प्रत्योर्नैव दृश्यते ।

५. आभिओगा (क,ख,त्रि,स) ।

६. 'हट्ठतुट्ठ' त्याद्येकदेशदर्शनेन सम्पूर्णालापको ग्राह्यः (शावृ) ।

७. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए ।

८. जं० ३।१२ ।

९. णमुत्थु (प,स) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धारिए जगप्पईवदाईए[1] सव्वजगमंगलस्स चक्खुणो 'य मुत्तस्स'[2] सव्वजगजीववच्छलस्स हियकारग[3]-मग्गदेसिय-पागड्ढि[4]-विभुपभुस्स जिणस्स णाणिस्स णायगस्स बुद्धस्स बोहगस्स सव्वलोगणाहस्स[5] णिम्ममस्स[6] पवरकुलसमुब्भवस्स जाईए खत्तियस्स जंसि लोगुत्तमस्स[7] जणणी धण्णासि पुण्णासि[8] तं कयत्थासि[9], अम्हे णं देवाणुप्पिए ! अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरियाओ भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामो[10], तण्णं तुब्भाहिं ण भाइयव्वंतिकट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति,[11] समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दंडं णिसिरंति, तं जहा--रयणाणं[12] ●वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेंति, परिसाडेत्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता° संवट्टगवाए विउव्वंति, विउव्वित्ता तेणं सिवेणं मउएणं मारुएणं अणुद्धुएणं भूमितलविमलकरणेणं मणहरेणं सव्वोउयसुरभिकुसुमगंधाणुवासिएणं[13] पिंडिमणीहारिमेणं गंधद्धुरेणं[14] तिरियं पवाइएणं भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं, से जहाणामए—कम्मगरदारए सिया[15] ●तरुणे बलवं जुगवं जुवाणे अप्पायंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पिट्ठंतरोरु-परिणए घण-णिचिय-वट्ट-वलियखंधे चम्मेट्ठग-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचियगत्ते उरस्सबलसमण्णागए तलजमल-जुयलबाहू लंघण-पवण-जइण-पमद्दणसमत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेधावी णिउणसिप्पोवगए एगं महं दंडसंपुच्छणिं वा सलागाहत्थगं वा वेणुसलाइयं वा गहाय रायंगणं वा रायंतेउरं वा आरामं वा उज्जाणं वा देवउलं वा सभं वा पवं वा अतुरियमचवलमसंभंतं निरंतरं सुनिउणं सव्वतो समंता संपमज्जेज्जा। एवामेव ताओ दिसाकुमारीमहत्तरियाओ° जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइमचोक्खं पूइयं दुब्भिगंधं तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय एगंते एडेंति, एडेत्ता जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमायाए य अदूरसामंते 'आगाय-

---

१. जगप्पतीवदाइए (आवश्यकचूर्णि पृ० १३७)। अतः परं तत्र 'सव्वलोयणाहस्स सव्वजगमंगलस्स सव्वजगजीववच्छलस्स' इत्यादि विशेषणानि सन्ति 'बोहगस्स' अनन्तरं °चक्खुणो य मुत्तस्स' इति पाठो विद्यते।

२. अमुत्तस्स (ख); असुत्तस्स (त्रि); 'मुत्तस्स' त्ति सूत्रमिव सूत्रं ज्ञानादिरत्नावलिनिबन्धहेतुत्वात् तस्य यथा 'असुत्तस्स' त्ति अखण्डमिव विशेषणं तत्र न सुप्तोऽसुप्तः सर्वत्रापि सदनुष्ठानेषु निद्रारहितो जागरूकोऽप्रमत्त इत्यर्थः (हीवृ)।

३. हियकरग (अ,क,ख,त्र,स,पुवृ,हीवृ)।

४. वागिड्ढि (प,शावृ)।

५. सकललोगणाहस्स (अ,ब)।

६. सव्वजगमंगलस्स णिम्ममस्स (अ,क,ख,त्रि,ब, स,पुवृ,हीवृ)।

७. लोउत्तमस्स (अ,ख,ब); लोए उत्तमस्स (क)।

८. संपुण्णासि (अ,ब)।

९. कयत्थे (अ,ब, आवश्यकचूर्णि पृष्ठ १३७)।

१०. करेस्सामो (ब)।

११. समोहणंति (प)।

१२. सं० पा०—रयणाणं जाव संवट्टगवाए।

१३. सव्वत्तुय° (ख)।

१४. गंधुद्धुएणं (प)।

१५. सं० पा०—सिया जाव तहेव जं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणीओ परिगायमाणीओ"[1] चिट्ठंति ॥

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं उड्ढलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरियाओ सएहिं-सएहिं कूडेहिं सएहिं-सएहिं भवणेहिं सएहिं-सएहिं पासायवडेंसएहिं पत्तेयं-पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं एवं तं चेव पुव्ववण्णियं जाव[2] विहरंति, तं जहा—

वृत्तं –

मेहंकरा[3] मेहवई, सुमेहा मेहमालिणी ।
सुवच्छा वच्छमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा ॥१॥

७. तए णं तासिं उड्ढलोगवत्थव्वाणं अट्ठण्हं दिसाकुमारीमहत्तरियाणं पत्तेयं-पत्तेयं आसणाइं चलंति, 'एवं तं चेव पुव्ववण्णियं भाणियव्वं'[4] जाव[5] अम्हे णं देवाणुप्पिए! उड्ढलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरियाओ भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामो, तुब्भाहिं ण भाइयव्वंतिकट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता[6] °वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति, तं जहा—रयणाणं जाव रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेंति, परिसाडेत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता अब्भवद्दलए विउव्वंति, से जहाणामए—कम्मगरदारए सिया तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए एगं महं दगवारगं वा दगथालगं वा दगकलसगं वा दगकुंभगं वा गहाय आरामं वा उज्जाणं वा देवउलं वा सभं वा पवं वा अतुरियमचवलमसंभंतं निरंतरं सुनिउणं सव्वतो समंता आवरिसेज्जा, एवामेव ताओ दिसाकुमारीमहत्तरियाओ अब्भवद्दलए विउव्वंति, विउव्वित्ता खिप्पामेव पतणतणायंति, पतणतणाइत्ता खिप्पामेव विज्जुयायंति, विज्जुयाइत्ता भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-भवणस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं णच्चोदगं णातिमट्टियं तं पविरलफुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदगं वासं वासंति, वासित्ता° तं णिहयरयं णट्ठरयं[7] भट्ठरयं[8] पसंतरयं उवसंतरयं करेंति, करेत्ता 'खिप्पामेव पच्चुवसमंति,'[9] °पच्चुवसमित्ता तच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता पुप्फवद्दलए विउव्वंति, से जहाणामए—मालागारदारए सिया तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए एगं महं पुप्फछज्जियं वा पुप्फपडलगं वा पुप्फचंगेरियं वा गहाय रायंगणं वा रायंतेउरं वा आरामं वा उज्जाणं वा देवउलं वा सभं वा पवं वा अतुरियमचवलमसंभंतं निरंतरं सुनिउणं सव्वतो समंता कयग्गहगहियकर-यलपब्भट्ठ-विप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेज्जा, एवामेव ताओ दिसाकुमारीमहत्तरियाओ पुप्फवद्दलए विउव्वंति, विउव्वित्ता खिप्पामेव पतणतणा-

१. आगयमाणीओ परियायमाणीओ (अ); आगय-माणीओ (ब)।
२. जं० ५।१।
३. द्रष्टव्यं—प्रथमसूत्रस्य पादटिप्पणम्।
४. तं एवं चेव भाणियव्वं पुव्ववण्णियं (अ, ख, ब)।
५. जं० ५।२-५।
६. सं० पा०—अवक्कमित्ता जाव अब्भवद्दलए विउव्वंति २ जाव तं णिहयरयं।
७. पणट्ठरयं (क,ख,स)।
८. × (अ,क,ख,ब,स)।
९. × (ख,स); सं० पा०—पच्चुवसमंति एवं पुप्फवद्दलगंसि पुप्फवासं वासंति, वासित्ता जाव कालागुरुपवर जाव सुरवराभिगमणजोग्गं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यंति, पतणतणाइत्ता खिप्पामेव विज्जुयायंति, विज्जुयाइत्ता भगवओ तित्थयरस्स जम्मण-भवणस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं जलयथलयभासुरप्पभूयस्स बेंटट्ठाइस्स दसद्ध-वण्णकुसुमस्स जण्णुस्सेहपमाणमेत्तिं ओहिं वासं वासंति, वासित्ता कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूतं दिव्वं° सुरवराभि-गमणजोग्गं करेंति, करेत्ता जेणेव भयवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता[1] •भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमायाए य अदूरसामंते° आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ॥

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरत्थिमरुयगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरियाओ सएहिं-सएहिं कूडेहिं तहेव जाव[2] विहरंति, तं जहा—

वृत्तं—

णंदुत्तरा य णंदा, आणंदा णंदिवद्धणा ।
विजया य वेजयंती, जयंती अपराजिया ॥१॥

सेसं 'तं चेव'[3] जाव[4] तुब्भाहिं[5] ण भाइयव्वंतिकट्टु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमायाए य पुरत्थिमेणं आदंसहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ॥

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं दाहिणरुयगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरियाओ तहेव जाव विहरंति, तं जहा—

वृत्तं—

समाहारा सुप्पइण्णा[6], सुप्पबुद्धा जसोहरा ।
लच्छिमई सेसवई, चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥१॥

तहेव जाव तुब्भाहिं ण भाइयव्वंतिकट्टु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य दाहिणेणं भिंगारहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ॥

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं पच्चत्थिमरुयगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरि-याओ सएहिं-सएहिं जाव विहरंति, तं जहा—

वृत्तं—

इलादेवी सुरादेवी, पुहवी पउमावई ।
एगणासा णवमिया 'भद्दा सीया'[7] य अट्ठमा ॥१॥

तहेव जाव तुब्भाहिं ण भाइयव्वंतिकट्टु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य पच्च-त्थिमेणं तालियंटहत्थगयाओ[8] आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ॥

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरिल्लरुयगवत्थव्वाओ जाव विहरंति, तं जहा—

---

१. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव आगायमाणीओ ।
२. जं० ५।१ ।
३. तहेव (अ,क,त्रि,ब,पुवृ) ।
४. जं० ५।२-५ ।
५. तुम्हेहिं (अ,ब); तुब्भेहिं (क,ख,स, आवश्यकचूर्णि पृष्ठ १३८) ।
६. सुप्पदिण्णा (ब) ।
७. सीता भद्दा (ठाणं ८।९७) ।
८. तालयंत° (अ,ब); तालवंत° (त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वृत्तं --

अलंबुसा मिस्सकेसी, पुंडरीका[1] य वारुणी ।
हासा सव्वप्पभा चेव, 'सिरि हिरि'[2] चेव उत्तरओ ॥१॥

तहेव जाव वंदित्ता भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य उत्तरेणं चामरहत्थगयाओ[3] आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ॥

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं विदिसिरुयगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ जाव विहरंति, तं जहा---

वृत्तं ---

चित्ता य चित्तकणगा, सतेरा[4] य सोदामिणी ॥

तहेव जाव ण भाइयव्वंतिकट्टु भगवओ तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए य चउसु विदिसासु दीवियाहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ॥

१३. तेणं कालेणं तेणं समएणं मज्झिमरुयगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ सएहिं-सएहिं कूडेहिं तहेव जाव विहरंति, तं जहा रूया रूयंसा[5] सुरूया रूयगावई । तहेव जाव तुब्भाहिं[6] ण भाइयव्वंतिकट्टु भगवओ तित्थयरस्स चउरंगुलवज्जं णाभिणालं[7] कप्पेंति, कप्पेत्ता वियरगं[8] खणंति, खणित्ता वियरगे णाभि णिहणंति, णिहणित्ता[9] 'रयणाण य वइराण'[10] य पूरेंति, पूरेत्ता हरियालियाए पेढं[11] बंधंति, बंधित्ता तिदिसिं तओ कयलीहरगे विउव्वंति । 'तए णं'[12] तेसिं कयलीहरगाणं बहुमज्झदेसभाए तओ चाउस्सालए विउव्वंति । तए णं तेसिं चाउस्सालगाणं बहुमज्झदेसभाए तओ सीहासणे विउव्वंति । तेसि णं सीहासणाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, सव्वो वण्णगो भाणियव्वो[13] ॥

१४. तए णं ताओ रुयगमज्झवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ जेणेव भयवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता 'भगवं तित्थयरं करयलपुडेणं[14] गिण्हंति तित्थयरमायरं च बाहाहिं'[15] गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव दाहिणिल्ले कयलीहरगे जेणेव चाउस्सालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयावेंति, णिसीयवेत्ता सयपाग-सहस्स-

---

१. पुंडरीगा (त्रि); पुंडरीया (प); पौंडरिगी (ठाणं ८।९८) ।
२. हिरि सिरी (अ,क,ख,ब,स) ।
३. चामरा° (ब) ।
४. सओरा (अ,ब); साओरा (ख); सुतेआ (त्रि) ।
५. रुआसिया (प); रूपासिका (शावृ) ।
६. तुब्भेहिं (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स) ।
७. नाभि (अ,ब, आवश्यकचूर्णि पृ० १३९) ।
८. विवरगं (त्रि) ।
९. णिहित्ता (ब) ।
१०. 'रत्नैश्च वज्रैः' प्राकृतत्वाद् विभक्तिव्यत्ययः... (शावृ) ।
११. पीढं (क,ख,स) ।
१२. तयणंतरं (ब) ।
१३. राय० सू० ३७-४० ।
१४. °संपुडेणं (प, शावृ) ।
१५. भगवं तित्थगरं तित्थयरमायरं च बाहाहिं (त्रि, हीवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेंति[1], अब्भंगेत्ता सुरभिणा गंधट्टएणं[2] उवट्टेंति, उवट्टेत्ता भगवं तित्थयरं करयलपुडेणं[3] तित्थयरमायरं च बाहासु गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पुरत्थिमिल्ले कयलीहरए जेणेव चाउस्सालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयावेंति, णिसीयावेत्ता तिहिं उदएहिं मज्जावेंति, [तं जहा—गंधोदएणं पुप्फोदएणं सुद्धोदएणं[4]] मज्जावेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करेत्ता भगवं तित्थयरं करयलपुडेणं तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव उत्तरिल्ले कयलीहरए जेणेव चाउस्सालए जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च सीहासणे णिसीयावेंति, णिसीयावेत्ता आभिओगे देवे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चुल्लहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ सरसाइं[5] गोसीसचंदणकट्ठाइं साहरह ।।

१५. तए णं ते आभिओगा देवा ताहिं रुयगमज्झवत्थव्वाहिं चउहिं दिसाकुमारी-महत्तरियाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव[6] विणएणं वयणं पडिच्छंति, पडिच्छित्ता खिप्पामेव चुल्लहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ सरसाइं गोसीसचंदणकट्ठाइं साहरंति ।।

१६. तए णं ताओ मज्झिमरुयगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ सरगं करेंति, करेत्ता अरणिं घडेंति, घडेत्ता सरएणं अरणिं महिंति[7] महित्ता अग्गिं पाडेंति, पाडेत्ता अग्गिं संधुक्खंति, संधुक्खित्ता गोसीसचंदणकट्ठे पक्खिवंति, पक्खिवित्ता अग्गिं उज्जालंति, उज्जालित्ता 'समिहाकट्ठाइं पक्खिवंति, पक्खिवित्ता'[8] अग्गिहोमं करेंति, करेत्ता भूतिकम्मं करेंति, करेत्ता रक्खापोट्टलियं[9] बंधंति, बंधेत्ता णाणा-मणिरयणभत्तिचित्ते दुविहे पाहाणवट्टगे[10] गहाय भगवओ तित्थयरस्स कण्णमूलंसि टिट्टिया-वेंति—भवउ भयवं पव्वयाउए ।।

१७. तए णं ताओ रुयगमज्झवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ भयवं तित्थयरं करयलपुडेणं तित्थयरमायरं च बाहाहिं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तित्थयरमायरं सयणिज्जंसि णिसीयावेंति, णिसीयावेत्ता भयवं तित्थयरं माऊए[11] पासे ठवेंति, ठवेत्ता आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ।।

१८. तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के णामं देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे

---

१. अब्भिंगेंति (क,ख,त्रि); अब्भंगेंति (स) ।
२. गंधवट्टएणं (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स, पुवृ,शावृ, हीवृ); द्रष्टव्यम्—ठाणं ३।८७ ।
३. °पुडेहिं (अ,क,ख,त्रि,ब,स) अग्रेपि ।
४. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
५. × (अ,क,ख,प,ब,स,पुवृ,शावृ) ।
६. जं० ३।८ ।
७. मथिंति (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
८. × (आवश्यकचूर्णि पृ० १३८) ।
९. °पुट्टलियं (क,ख,स) ।
१०. °पट्टगे (अ,ब); पाहाणवट्टगोलए (त्रि,शावृ, हीवृ) ।
११. माताए (अ,ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयक्कऊ सहस्सक्खे मघवं पागसासणे[1] दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमाणावाससय-सहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे[2] आलइयमालमउडे णवहेमचारुचित्त-चंचलकुंडलविलिहिज्जमाणगल्ले[3] भासुरबोंदी पलंबवणमाले महिड्ढीए महज्जुईए महाबले महायसे महाणुभागे महासोक्खे सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि [णिसण्णे ?[4]] ॥

१९. से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसाहस्सीणं, चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए[5] तावत्तीसगाणं[6], चउण्हं लोगपालाणं, अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउण्हं चउरासीणं[7] आयरक्ख-देवसाहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य[8] आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर[9]- सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहयणट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं[10] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥

२०. तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणं चलइ ॥

२१. तए णं से सक्के[11] °देविंदे देवराया° आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता भगवं तित्थयरं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता हट्ठतुट्ठचित्ते[12] आणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम[13]-चंचुमालइय[14]-ऊसविय-रोमकूवे 'वियसियवरकमल-णयणवयणे'[15] पयलियवरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हारविरायंतवच्छे पालंबपलंबमाणघोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं

---

१. आवश्यकचूर्णौ अत्रैव पाठसङ्क्षेपोस्ति—पागसासणे जाव अट्ठहिं अच्छराकोडीहिं सद्धिं जाव विहरइ ।

२. अयरंबर° (क,ख,प,स) लिपिप्रमादाद् वर्णव्यत्ययो जात इति सम्भाव्यते ।

३. °गंडे (त्रि,प) ।

४. सर्वेष्वप्यादर्शेषु 'सीहासणंसि' एतत्पर्यवसान एव पाठो लभ्यते, अर्थविचारणया नैव पर्याप्तोस्ति, क्रियापदं चापि नैव विद्यते । पज्जोसवणाकप्पे (८) अस्मिन्नेव प्रकरणे 'सीहासणंसि निसण्णे' इति पाठो विद्यते अत्रापि तथैव युज्यते ।

५. तावत्तीसाए (अ,ब) ।

६. तायत्तीसगाणं (क,ख,त्रि,प,स) ।

७. चउरासीतीणं (ख); चउरासीए (त्रि,हीवृ) ।

८. अतः परं 'अ,क,ख,त्रि,ब' आदर्शेषु 'अण्णे पढंति' इत्युल्लेखपूर्वकं पाठान्तरं लिखितं दृश्यते—'अण्णे पढंति अण्णेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य आभिओगउववण्णगाणं' । 'पुवृ हीवृ' इति वृत्तिद्वयेपि इदं व्याख्यातमस्ति ।

९. ईसर (ब) ।

१०. °पडुपडहवाइयरवेणं (प) ।

११. सं० पा०—सक्के जाव आसणं ।

१२. आवश्यकचूर्णौ (पृष्ठ १४०) अतः परं एवं पाठसंक्षेपोस्ति—एवं जहा वद्धमाणसामिस्स अवहारद्दारे जाव सन्निसन्ने जीयकप्पं सरति, सरित्ता तं गच्छामि ।

१३. धाराहयकयंबकुसुम (प) ।

१४. चंचुमालइयतणुए (भ० ११।१३४); चुंचुमालइयतणू (नाया० १।२०) ।

१५. °कमलाणणवयणे (अ,क,ख,ब); °कमलावयणणयणे (त्रि); °कमलाणणणयणे (हीवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता 'पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता[1] वेरुलिय-वरिट्ठ-रिट्ठ-अंजण-णिउणोविय-मिसिमिसिंतमणिरयणमंडियाओ पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता अंजलि-मउलियग्गहत्थे तित्थयराभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणीतलंसि साहट्टु[2] तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि णिवेसेइ[3], णिवेसेत्ता ईसिं[4] पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—णमोत्थु[5] णं अरहंताणं[6] भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसोत्तमाणं[7] पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं,'लोगुत्तमाणं लोगणाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं'[8], अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं[9], धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं वियट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं, सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति[10] सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं[11]।

णमोत्थु णं भगवओ तित्थगरस्स आइगरस्स जाव संपाविउकामस्स। वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ[12] मे भयवं! तत्थगए इहगयंतिकट्टु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे॥

२२. तए णं तस्स एक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अयमेयारूवे[13] 'अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—उप्पण्णे खलु भो! जंबुद्दीवे दीवे भगवं तित्थयरे, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पण्णमणागयाणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं तित्थयराणं जम्मणमहिमं करेत्तए, तं गच्छामि णं अहंपि भगवओ[14] तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करेमित्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता हरि-णेगमेसिं पायत्ताणीयाहिवइं देवं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए मेघोघरसियगंभीरमहुरयरसद्दं[15] जोयण-

---

१. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स, पुवृ, हीवृ)।

२. णिहट्टु (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ)।

३. निवाडेइ (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ)।

४. × (अ,क,ब,स)।

५. णमुत्थु (क,प,स)।

६. अरिहंताणं (अ,त्रि)।

७. पुरिसुत्तमाणं (क,ख,त्रि,प,स)।

८. × (अ,ब)।

९. × (अ,ब)।

१०. °वत्ति (अ,क,ख,त्रि) °वत्तयं (ब)।

११. संपत्ताणं णमो जिणाणं (क,ख,त्रि,हीवृ); संपत्ताणं णमो जिणाणं जियभयाणं (प,स, पुवृ); प्राचीनादर्शेषु 'ठाणं संपत्ताणं' इति पर्यवसितः पाठो लभ्यते, भगवत्या(१।७) मपि 'ठाणं संपाविउकामे' इत्येव पाठो विद्यते।

१२. रायपसेणिइ (८) सुत्ते 'पासइ' इति पदं स्वीकृतमस्ति। अर्थदृष्ट्या तत् समीचीनमस्ति, किन्तु प्रयुक्तादर्शेषु 'पासइ' इति पदं क्वापि नैव दृश्यते।

१३. सं॰ पा॰—अयमेयारूवे जाव संकप्पे।

१४. भगवं (अ,ब)।

१५. °गंभीरतरमहुरतरसद्दं (अ,क,ख,त्रि,प,स,पुवृ,) हीवृ); गंभीरतरमहुरसद्दं (आवश्यकचूर्णि पृ० १४०)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिमंडलं सुघोसं सूसरं घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेमाणे-उल्लालेमाणे-महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणे-उग्घोसेमाणे एवं वयाहि -आणवेइ णं भो ! सक्के देविंदे देवराया, गच्छइ जंबुद्दीवे दीवे भगवओ तित्थयरस्स जम्मणमहिमं करित्तए, तं तुब्भेवि णं देवाणुप्पिया ! णं भो ! सक्के देविंदे देवराया सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वायरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वणाडएहिं सव्वोरोहेहिं[1] सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारविभूसाए सव्वदिव्व तुडियसद्दसण्णिणाएणं महया इड्ढीए जाव[2] दुंदुहिणिग्घोसनाइयरवेणं णिययपरियालसंपरिवुडा सयाइं-सयाइं जाणविमाणवाहणाइं[3] दुरुढा[4] समाणा अकालपरिहीणं चेव सक्कस्स[5] •देविंदस्स देवरण्णो° अंतियं पाउब्भवह ।।

२३. तए णं हरि-णेगमेसी देवे पायत्ताणीयाहिवई सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[6] एवं देवोत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए मेघोघरसियगंभीरमहुरयरसद्दा[7] जोयणपरिमंडला सुघोसा घंटा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं मेघोघरसियगंभीरमहुरयरसद्दं जोयणपरिमंडलं सुघोसं घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेइ ।।

२४. तए णं तीसे मेघोघरसियगंभीरमहुरयरसद्दाए जोयणपरिमंडलाए सुघोसाए घंटाए तिक्खुत्तो उल्लालियाए समाणीए सोहम्मे कप्पे अण्णेहिं एगूणेहिं बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेहिं अण्णाइं एगूणाइं बत्तीसं घंटासयसहस्साइं जमगसमगं कणकणरवं[8] काउं पयत्ताइं चावि हुत्था ।।

२५. तए णं सोहम्मे कप्पे पासायविमाणणिक्खुडावडियसद्द[9]-घंटापडेंसुयासयसहस्ससंकुले[10] जाए यावि होत्था ।।

२६. तए णं तेसिं सोहम्मकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगंतरइपसत्त-णिच्चप्पमत्त-विसयसुहमुच्छियाणं सूसरघंटारसियविउलबोलतुरियचवलपडिबोहणे[11] कए समाणे घोसणकोऊहलदिण्णकण्ण-एगग्गचित्तउवउत्तमाणसाणं से पायत्ताणीयाहिवई देवे तंसि घंटारवंसि णिसंत-पसंतंसि[12] समाणंसि तत्थ-तत्थ

१. सव्वरोहेहिं (अ,क); सव्वावरोहेहि (त्रि); सव्वारोहेहिं (ब); सव्वोवरोहेहिं (आवश्यकचूर्णि पृ० १४०)।
२. जं० ३।१२।
३. जाणाइं वाहणविमाणाइं (अ,ब); जाणवाहणविमाणइं (क ख,त्रि,स,पुवृ,हीवृ, आवश्यकचूर्णि पृ० १४०)।
४. दुरुढा (अ,ब)।
५. सं० पा० – सक्कस्स जाव अंतियं।
६. जं० ३।८।
७. °गंभीरमहुरसद्दा (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ) अग्रेपि एवमेव।
८. कणकणगरवं (त्रि); कणकणारावं (प)।
९. °निक्खुडपडियसद्द (अ,ब)।
१०. °पडेंसुका° (अ,ब आवश्यकचूर्णि पृ० १४१); °पडिसुका° (क,ख); °दडिस्सुया° (त्रि); °पडंसुया° (स)।
११. °बोलतरितु° (अ,ब); °बोलतरिय° (क,ख,स)।
१२. पडिनिसंतंसि (अ,ब,पुवृ); पडिसंतंसि (क,त्रि,स, हीवृ, आवश्यकचूर्णि पृष्ठ १४१); रायपसेणइयसुत्ते(१५)पि 'निसंत-पसंतंसि' इति पाठो लभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहिं-तहिं देसे महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणे-उग्घोसेमाणे एवं वयासी— हंदि[1] ! सुणंतु भवंतो बहवे सोहम्मकप्पवासी वेमाणिया देवा य देवीओ य सोहम्मकप्पवइणो इणमो वयणं हियसुहत्थं— आणवेइ णं भो ! सक्के[2] •देविंदे देवराया, गच्छइ णं भो ! सक्के देविंदे देवराया जंबुद्दीवे दीवे भगवओ तित्थयरस्स जम्मणमहिमं करित्तए, तं तुब्भेवि णं देवाणुप्पिया ! सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वायरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वणाडएहिं सव्वोरोहेहिं सव्व-पुप्फगंधमल्लालंकारविभूसाए सव्वदिव्वतुडियसद्दसण्णिणाएणं महया इड्ढीए जाव दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं णिययपरियालसंपरिवुडा सयाइं-सयाइं जाणविमाणवाहणाइं दुरुढा समाणा अकालपरिहीणं चेव सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो° अंतियं पाउब्भवह ॥

२७. तए णं ते देवा य देवीओ य एयमट्ठं सोच्चा[3] हट्ठतुट्ठ[4]-•चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण° हियया अप्पेगइया वंदणवत्तियं एवं पूयणवत्तियं सक्कारवत्तियं सम्माणवत्तियं दंसणवत्तियं कोऊहलवत्तियं[5] अप्पेगइया सक्कस्स वयणमणुवत्तमाणा[6] अप्पेगइया अण्णमण्णमणुवत्तमाणा अप्पेगइया जीयमेयं एवमाइत्तिकट्टु सव्विड्ढीए जाव[7] अकालपरिहीणं चेव सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवंति ॥

२८. तए णं से सक्के देविंदे देवराया ते वेमाणिए देवे य देवीओ य[8] अकालपरिहीणं चेव अंतियं पाउब्भवमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए[9] पालयं णामं आभिओगियं[10] देवं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभ-सयसण्णिविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियाकलियं ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्तं खंभुग्गयवइरवेइयापरिगयाभि-रामं[11] विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तंपिव अच्चीसहस्समालणीयं[12] रूवगसहस्सकलियं[13]

---

१. हंद (क,त्रि,हीवृ); हंत (ख,प,पुवृ,शावृ)।

२. सं० पा०—सक्के तं चेव जाव अंतियं।

३. सुच्चा (क,ख,स)।

४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।

५. कोउहल्ल° (अ,ख,त्रि,ब, आवश्यकचूर्णि पृ० १४१); कोऊहल्ल° (क,स); रायपसेणिय-सूत्रे (१६) अन्यान्यपि कारणानि निर्दिष्टानि सन्ति। तत्प्रतिपादकः पाठः एवमस्ति— 'कोऊहलवत्तियाए अप्पेगइया असुयाइं सुणिस्सामो, अप्पेगइया सुयाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो, अप्पेगइया सूरियाभस्स देवस्स वयणमणुयत्तेमाणा अप्पेगइया अण्णमण्णमणुवत्तेमाणा, अप्पेगइया जिणभत्तिरागेणं अप्पेगइया धम्मो त्ति अप्पेगइया जीयमेयं'। औपपातिके (५२) पि एवमेव दृश्यते।

६. °मणुयत्तमाणा (अ,ब) अग्रपि एवमेव।

७. जं० ५।२२।

८. रायपसेणइयसुत्ते (१७) अतः परं 'सव्विड्ढीए जाव अकालपरिहीणं' इति पाठो दृश्यते।

९. पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्— जं० ५।२७।

१०. आभिओगियं (अ,ख,ब)।

११. अब्भुग्गय° (अ,क,ख,ब,स)।

१२. °मालिणीयं (अ,क,ख,त्रि,स); रायपसेणइय-सुत्ते (१७) तथा नायाधम्मकहाओ (१।८६) 'मालणीयं' इति पाठो स्वीकृतोस्ति।

१३. रूअग° (क); रूपग° (क,त्रि, आवश्यक-चूर्णि पृष्ठ १४१)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं घंटावलिचलिय[1]-महुर-मणहरसरं 'सुहं कंतं दरिसणिज्जं'[2] णिउणोविय-मिसिमिसेंत-मणिरयणघंटियाजाल-परिक्खित्तं जोयणसयसहस्सविच्छिण्णं पंचजोयणसयमुव्विद्धं सिग्घ-तुरिय-जइण-णिव्वाहिं[3] दिव्वं जाणविमाणं विउव्वाहि, विउव्वित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥

२९. तए णं से पालए देवे सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्त-माणंदिए जाव[4] वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणित्ता तहेव करेइ ॥

३०. तस्स णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिसिं तओ तिसोवाणपडिरूवगा वण्णओ[5] ॥

३१. तेसि णं पडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं तोरणे[6], वण्णओ[7] जाव पडिरूवा ॥

३२. तस्स णं जाणविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे, से जहाणामए—आलिंगपुक्खरेइ वा जाव[8] दीवियचम्मेइ वा अणेगसंकुकीलगसहस्सवितते आवड-पच्चावड-सेढि-प्पसेढि[9]-सोत्थिय-सोवत्थिय-'पूसमाणव- वद्धमाणग'[10]- 'मच्छंडग- मगरंडग- जार-मार'[11]-फुल्लावलि-पउमपत्त[12]-सागरतरंग-वसंतलय[13]-पउमलयभत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समरीइएहिं[14] सउज्जोएहिं णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए। तेसि णं मणीणं वण्णे गंधे फासे य भाणियव्वे जहा[15] रायप्पसेणइज्जे ॥

३३. तस्स णं भूमिभागस्स मज्झदेसभाए[16] पेच्छाघरमंडवे—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे, वण्णओ जाव[17] पडिरूवे ॥

३४. तस्स[18] उल्लोए पउमलयभत्तिचित्ते जाव[19] सव्वतवणिज्जमए जाव पडिरूवे ॥

---

१. °वलिय (क,ख,त्रि); लिपिसादृश्यात् चकारस्थाने वकारो दृश्यते ।

२. सुभकंतदरिसणिज्जं (अ,ख,त्रि,ब,आवश्यकचूर्णि पृष्ठ १४१) ।

३. णेव्वाहिं (क,त्रि,व,स) ।

४. राय० सू० १८ ।

५. राय० सू० १९ ।

६. तोरणा (प) ।

७. राय० सू० २०-२३ ।

८. राय० सू० २४ ।

९. पडिसेढि (अ,क,ख,ब आवश्यकचूर्णि पृष्ठ १४२); × (प) ।

१०. वद्धमाणा पूसमाणा (अ,क,ख,ब); पूसमाणग वद्धमाणग (त्रि); वद्धमाण पूसमाणव (प); वद्धमाण पूसमाण (स, आवश्यकचूर्णि पृ० १४२); द्रष्टव्यम् राय० सू० २४ ।

११. अच्छदामा मोराकुंडा जारा मंडा (अ,ब); अच्छदाम माराअंडा जारा मंडा (क); अच्छंदाम मोरा अंडा जारामारा (ख); मच्छंडग मकरंडा जारामारा (त्रि); मच्छंडा मकरंडा जारामारा (स); मच्छग सुसुमार अंडग जरामंडा (आवश्यकचूर्णि पृ० १४२) ।

१२. पउमपत्तवर (त्रि,स) ।

१३. वसंतलता (अ,ख,ब); वासंतलता (त्रि) ।

१४. समिरीएहिं (अ,ब,स,पुवृ, आवश्यकचूर्णि पृ० १४२); सस्सिरीएहिं (क,ख) ।

१५. राय० सू० २४-३१ ।

१६. बहुमज्झ° (त्रि,पुवृ) ।

१७. राय० सू० ३२ ।

१८. अतःपूर्वं 'रायपसेणिज्जे (३३) प्रेक्षागृहमण्डपस्य भूमिभागसूत्रं विद्यते ।

१९. जी ३।२०६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५. तस्स[1] णं मंडवस्स बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स मज्झदेसभागंसि[2] महेगा[3] मणिपेढिया—अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई, वण्णओ[4] ।।

३६. तीए उवरिं महेगे[5] सीहासणे, वण्णओ[6] ।।

३७. तस्सुवरिं महेगे[7] विजयदूसे सव्वरयणामए, वण्णओ[8] ।।

३८. तस्स मज्झदेसभाए एगे वइरामए अंकुसे, एत्थ णं महेगे कुंभिक्के मुत्तादामे । से णं अण्णेहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमित्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिक्केहिं मुत्तादामेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते । ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवण्णपयरगमंडिया णाणामणिरयण-विविहहारद्धहारउवसोभियसमुदया ईसिं[9] अण्णमण्णमसंपत्ता पुव्वाइएहिं वाएहिं मंदं-मंदं एज्जमाणा[10]-एज्जमाणा[11] •पलंबमाणा-पलंबमाणा पझंझमाणा-पझंझमाणा उरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं कण्ण-मण° निव्वुइकरेणं सद्देणं ते पएसे 'सव्वओ समंता'[12] आपूरेमाणा-आपूरेमाणा[13] •सिरीए° अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।।

३९. तस्स णं सीहासणस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं, चउरासीइं भद्दासणसाहस्सीओ, पुरत्थिमेणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं, एवं दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भिंतरपरिसाए दुवालसण्हं देवसाहस्सीणं, दाहिणेणं मज्झिमपरिसाए[14] चउदसण्हं देवसाहस्सीणं, दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरपरिसाए सोलसण्हं देवसाहस्सीणं, पच्चत्थिमेणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं ।।

४०. तए णं तस्स सीहासणस्स चउद्दिसिं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, एवमाइ विभासियव्वं सूरियाभगमेणं जाव[15] पच्चप्पिणंति[16] ।।

४१. तए णं से सक्के 'देविंदे देवराया हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव हरिसवसविसप्प-माणहियए'[17] दिव्वं जिणिंदाभिगमणजोग्गं सव्वालंकारविभूसियं उत्तरवेउव्वियं रूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं णट्टाणीएणं गंधव्वाणीएण य

---

१. अतः पूर्वं रायपसेणिज्जे (३५) अक्षपाटक-सूत्रं विद्यते। शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ एतद्विषये एका टिप्पणी कृतास्ति—अत्र च राजप्रश्नीये सूर्याभयानविमानवर्णकेऽक्षपाटकसूत्रं दृश्यते, परं बहुष्वेतत्सूत्रादर्शेषु अदृष्टत्वान्न लिखितम् ।

२. बहुमज्झ° (त्रि,पुवृ) ।

३. महं एगा (प) ।

४. राय० सू० ३६ ।

५. महं एगे (प) ।

६. राय० सू० ३७ ।

७. महं एगे (प) अग्रेपि एवमेव ।

८. राय० सू० ३८ ।

९. ईसि णं (अ,ब)

१०. एइज्जमाणा (अ,त्रि,प,स); एइज्जमाणे (क,ख); इज्जमाणा (ब) ।

११. सं० पा०—एज्जमाणा जाव निव्वुइकरेणं ।

१२. × (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स); रायपसेणिज्जे (४०) पि 'सव्वओ समता' इति पाठो दृश्यते ।

१३. सं० पा०—आपूरेमाणा जाव अतीव ।

१४. मज्झिमाए (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स) ।

१५. राय० सू० ४४-४६ ।

१६. पच्चप्पिणंति (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स) ।

१७. जाव हट्ठहितए (अ,ब,); जाव हट्ठहियए (क,ख त्रि,प,स आवश्यकचूर्णि पृ० १४३) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्धिं तं विमाणं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे---अणुप्पयाहिणीकरेमाणे पुव्विल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं[1] दुरुहइ[2], दुरुहित्ता[3] •जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे[4] ॥

४२. एवं[5] चेव सामाणियावि उत्तरेणं तिसोमाणपडिरूवएणं दुरुहित्ता[6] पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु णिसीयंति। अवसेसा[7] देवा य देवीओ य दाहिणिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं दुरुहित्ता[8] •पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु° णिसीयंति ॥

४३. तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो तंसि [दिव्वंसि जाणविमाणंसि ?[9]] दुरुढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया[10]। तयणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा य दंसणरइयआलोयदरिसणिज्जा वाउद्धुयविजयवेजयंती य समूसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयणंतरं छत्तभिंगारं। तयणंतरं च णं वइरामयवट्टलट्ठसंठियसुसिलिट्ठपरिघट्ठमट्ठसुपइट्ठिए[11] विसिट्ठे अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामे वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागाछत्ताइच्छत्तकलिए तुंगे गयणतलमणुलिहंतसिहरे[12] जोयणसहस्समूसिए महइमहालए महिंदज्झए पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिए। तयणंतरं च णं सरूवणेवत्थपरियच्छिया[13] सुसज्जा सव्वालंकारविभूसिया[14] पंच अणिया पंच अणियाहिवइणो पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयणंतरं च णं बहवे आभिओगिया देवा य देवीओ य सएहिं-सएहिं रूवेहिं[15] •सएहिं-सएहिं विहवेहिं सएहिं-सएहिं णेवत्थेहिं सएहिं-सएहिं° णिओगेहिं सक्कं देविंदं देवरायं पुरओ य मग्गओ य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया। तयणंतरं च णं बहवे सोहम्मकप्पवासी देवा य देवीओ य सव्विड्ढीए जाव दुरुढा समाणा पुरओ य मग्गओ य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ॥

४४. तए णं से सक्के देविंदे देवराया तेणं पंचाणियपरिक्खित्तेणं जाव[16] महिंदज्झएणं

---

१. तिसोमाणेणं (अ,क,ख,ब,स); तिसोवाणेणं (त्रि,प,); रायपसेणिज्जे (४७) पि 'तिसोमानपडिरूवएणं' इति पाठो दृश्यते। अग्रेपि।
२. द्रुहइ (अ,ब)।
३. सं०पा०—दुरुहित्ता जाव सीहासणंसि।
४. णिसण्णे (अ,ब)।
५. तए णं एवं (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ हीवृ)।
६. द्रुहिता (अ,ब) अग्रेपि।
७. अवसेसा य (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
८. सं० पा०—दुरुहित्ता तहेव जाव णिसीयंति।
९. इदं सूत्रं सङ्क्षिप्तमतो राजप्रश्नीयानुसारेण (४९) किञ्चित्सविस्तरं व्याख्यायते (पुवृ)।
१०. अस्मिन् प्रकरणे पाठसंक्षेपो विद्यते। पूर्णपाठावलोकनार्थं द्रष्टव्यं–औपपातिकस्य ६४सूत्रम्।
११. वइरामयवट्टलट्ठियसंठिय° (अ,क,ख,त्रि,ब,स, पुवृपा)।
१२. गगणतलमभिकंखमाणसिहरे (अ,क,ख,त्रि,ब, स,पुवृपा)।
१३. सरुवणेवत्थहत्थपरि° (अ,ब); सरूवणेवत्थहत्थपरि° (क,ख,स); सुरूवणेवत्थहत्थपरि° (त्रि,पुवृ); सुरूवणेवत्थपरि° (पुवृपा)।
१४. सव्वालंकारभूसिया (अ,ब); क्वचित् महया भडचडगरपहकरेणं (पुवृ)।
१५. सं० पा०—रूवेहिं जाव णिओगेहिं।
१६. राय० सू० ५६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरओ पकड्ढिज्जमाणेणं चउरासीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव[1] परिवुडे सव्विड्ढीए जाव[2] णाइयरवेणं सोहम्मस्स कप्पस्स मज्झंमज्झेणं तं दिव्वं देविड्ढिं[3] •दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं° उवदंसेमाणे-उवदंसेमाणे जेणेव सोहम्मस्स कप्पस्स उत्तरिल्ले निज्जाणमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जोयणसयसाहस्सिएहिं विग्गहेहिं[4] ओवयमाणे वीतिवयमाणे ताए उक्किट्ठाए[5] •तुरियाए चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए° देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं जेणेव णंदीसरवरे दीवे जेणेव दाहिणपुरत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[6] तं दिव्वं देविड्ढिं[7] •दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं° दिव्वं जाणविमाणं पडिसाहरेमाणे[8]-पडिसाहरेमाणे[9] •पडिसंखेवेमाणे-पडिसंखेवेमाणे° जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणणगरे, जेणेव भगवओ तित्थगरस्स जम्मणभवणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवओ तित्थगरस्स जम्मणभवणं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे चउरंगुलमसंपत्तं धरणियले[10] तं दिव्वं जाणविमाणं ठवेइ, ठवेत्ता अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं दोहिं अणीएहिं—गंधव्वाणीएण य णट्टाणीएण य सद्धिं ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ पुरत्थिमिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ[11] ।।

४५. तए णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउरासीइं[12] सामाणियसाहस्सीओ ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति । अवसेसा देवा य देवीओ य ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ दाहिणिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति ।।

४६. तए णं से सक्के देविंदे देवराया चउरासीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव[13] सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[14] दुंदुहिणिग्घोसणाइयरवेणं जेणेव भगवं तित्थयरे तित्थयरमाया य तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आलोए चेव पणामं करेइ, करेत्ता भगवं तित्थयरं तित्थयरमायरं च तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता करयल[15] •परिग्गहियं

---

१. राय° सू० ५६ ।

२. जं० ३।२२ ।

३. सं० पा० – देविड्ढि जाव उवदंसेमाणे ।

४. विग्गहेहिं उयग्गहेहिं (ख,ब) ।

५. सं० पा० —उक्किट्ठाए जाव देवगईए ।

६. उवागच्छित्ता एवं जच्चेव सूरियाभस्स वत्तव्वया णवरं सक्काहिगारो वत्तव्वो जाव (अ,क,ख, त्रि,प,ब,स,पुवृ,शावृ,हीवृ); एष पाठान्तररूपेण निर्दिष्ठः पाठः आवश्यकचूर्णौ नास्ति, रायपसेणिज्जे (५६)पि 'उवागच्छित्ता' इति पदानन्तरं 'तं दिव्वं देविड्ढिं' इति पाठो विद्यते । एष अन्तरवर्तिपाठो नास्ति कस्यापि पाठस्य अर्थस्य च सूचकः । केनापि कारणेन पाठविपर्यासो जातः इति सम्भाव्यते ।

७. सं० पा०—देविड्ढि जाव दिव्वं ।

८. परिसाहरमाणे (अ,ब); पडिसाहरमाणे (क,स)।

९. सं० पा०—पडिसाहरेमाणे जाव जेणेव ।

१०. धरणितलं (अ,ब); धरणिअलं (क,ख,स) ।

११. पच्चोरुभइ (अ,ब) अग्रेपि ।

१२. चउरासिं (अ,ब); चउरासीइ (क,प); चउरासीए (ख); चउरासी (स) ।

१३. जं० २।९० ।

१४. जं० ३।१२ ।

१५. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—णमोत्थु ते रयणकुच्छिधारिए[1] •जगप्पईवदाइए सव्वजगमंगलस्स चक्खुणो य मुत्तस्स सव्वजगजीववच्छलस्स हियकारग-मग्गदेसिय-वागड्ढि-विभुपभुस्स जिणस्स णाणिस्स णायगस्स बुद्धस्स बोहगस्स सव्वलोगणाहस्स णिम्ममस्स पवरकुलसमुब्भवस्स जाईए खत्तियस्स जंसि लोगुत्तमस्स, जणणी° धण्णासि पुण्णासि तं कयत्थासि, अहण्णं देवाणुप्पिए! सक्के णामं देविंदे देवराया भगवओ तित्थयरस्स जम्मणमहिमं करिस्सामि, तण्णं[2] तुब्भाहिं ण भाइयव्वंतिकट्टु ओसोवणिं दलयइ, दलइत्ता तित्थयरपडिरूवगं विउव्वइ, विउव्वित्ता तित्थयरमाउयाए पासे ठवेइ, ठवेत्ता पंच सक्के विउव्वइ, विउव्वित्ता एगे सक्के भगवं तित्थयरं करयलपुडेणं गिण्हइ, एगे सक्के पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, दुवे सक्का उभओ[3] पासिं चामरुक्खेवं करेंति, एगे सक्के पुरओ वज्जपाणी पगड्ढइ[4] ।।

४७. तए णं से सक्के देविंदे देवराया अण्णेहिं बहूहिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइस[5]-वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[6] दुंदुहिणिग्घोसणाइयरवेणं ताए उक्किट्ठाए[7] •तुरियाए चवलाए जइणाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए देवगईए° वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव मंदरे पव्वए जेणेव पंडगवणे जेणेव अभिसेय-सिला जेणेव अभिसेयसीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

४८. तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया सूलपाणी वसभवाहणे सुरिंदे उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई[8] अरयंबरवत्थधरे, एवं जहा[9] सक्के, इमं णाणत्तं—महाघोसा घंटा, लहुपरक्कमो पायत्ताणियाहिवई[10], पुप्फओ विमाणकारी, दक्खिणा निज्जाणभूमी, उत्तरपुरत्थिमिल्लो रइकरगपव्वओ, मंदरे समो-सरिओ जाव[11] पज्जुवासइ ।।

४९. एवं अवसिट्ठावि इंदा भाणियव्वा जाव[12] अच्चुओ, इमं णाणत्तं—

---

१. सं० पा०—रयणकुच्छिधारिए एवं जहा दिसाकुमारीओ जाव धण्णासि।

२. तेण (त्रि, हीवृ)।

३. अवहो (अ,ब)।

४. पवट्टति (त्रि,हीवृ,पुवृपा)।

५. जोइसिय (त्रि)।

६. जं० ३।१२।

७. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव वीईवयमाणे।

८. °विमाणवास° (क,ख,त्रि,प,ब)।

९. जं० ५।१८-४६।

१०. पादत्ताणीया° (ब)।

११. अस्य 'जाव' पदस्य पूर्तिवृत्तित्रयेपि भिन्न-भिन्न प्रकारेण कृतास्ति—यावत्करणात् जेणेव भगवं तित्थयरे तेणेव उवागच्छइ, भगवं तित्थयरं आयाहिण-पयाहिणं करेत्ति २ त्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता २ तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ (पुवृ); यावत्पदात् भगवंतं तित्थयरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे इति पर्युपास्ते (शावृ); यावत्करणात् जेणेव भगवं तित्थगरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता भगवं तित्थगरं आयाहिण-पयाहिणं करेइ इत्यादि द्रष्टव्यम् (हीवृ); जं०५।५८।

१२. ठाणं १०।१४६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाहा— चउरासीइ असीई, बावत्तरि सत्तरी य सट्ठी य।
पण्णा चत्तालीसा, तीसा वीसा दस सहस्सा ॥१॥

एए सामाणिया णं[1]

बत्तीसट्ठावीसा बारस अट्ठ चउरो सयसहस्सा।
पण्णा चत्तालीसा छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥२॥
आणयपाणयकप्पे, चत्तारि सयारणच्चुए तिण्णि ॥

एए विमाणा णं[2]। इमे जाणविमाणकारी देवा, तं जहा—

पालय पुप्फय सोमणसे सिरिवच्छे य[3] णंदियावत्ते।
कामगमे[4] पीइगमे[5], मणोरमे विमल सव्वओभद्दे ॥३॥

सोहम्मगाणं सणंकुमारगाणं बंभलोयगाणं महासुक्कगाणं पाणयगाणं[6] इंदाणं सुघोसा घंटा, हरि-णेगमेसी पायत्ताणीयाहिवई, उत्तरिल्ला णिज्जाणभूमी, दाहिणपुरत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए। ईसाणगाणं माहिंद-लंतग-सहस्सार-अच्चुयगाण य इंदाणं महाघोसा घंटा, लहुपरक्कमो पायत्ताणीयाहिवई, दक्खिणिल्ले णिज्जाणमग्गे, 'उत्तरपुरत्थिमिल्ले रइकरग-पव्वए'[7], परिमाओ णं जहा[8] जीवाभिगमे, आयरक्खा सामाणियचउग्गुणा सव्वेसिं, जाणविमाणा सव्वेसिं जोयणसयसहस्सविच्छिण्णा, उच्चत्तेणं सविमाणप्पमाणा, महिंदज्झया सव्वेसिं जोयणसाहस्सिया, सक्कवज्जा मंदरे समोसरंति[9] जाव[10] पज्जुवासंति ॥

५०. तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं[11] तायत्तीसाए तावत्तीसेहिं, चउहिं लोगपालेहिं, पंचहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, चउहिं चउसट्ठीहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं, अण्णेहि य जहा[12] सक्के, णवरं— इमं णाणत्तं—दुमो पायत्तणीयाहिवई, ओघस्सरा घंटा, विमाणं पण्णासं जोयणसहस्साइं, महिंदज्झओ पंचजोयणसयाइं, विमाणकारी आभिओगिओ देवो, अवसिट्ठं तं चेव जाव मंदरे समोसरइ पज्जुवासइ ॥

५१. तेणं कालेणं तेणं समएणं बली असुरिंदे असुरराया एवमेव णवरं—सट्ठी सामाणियसाहस्सीओ, चउगुणा आयरक्खा, महादुमो पायत्ताणीयाहिवई, महाओहस्सरा

---

१. णं इति वाक्यालंकारे (हीवृ)।
२. 'णं' इति प्राग्वत् (हीवृ)।
३. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
४. कामकमे (अ,ब)।
५. स्थानाङ्गे (८।१०३,१०।१५०) 'पीतिमणे' इति पाठो दृश्यते।
६. आणयगाणं (अ,ब)।
७. पुरत्थिमिल्लो रइकरपव्वओ (अ,क,त्रि,ब)।
८. जी० ३।१०४०-१०५५।
९. समोयरंति (क); समोअरंति (ख,प); समोतरंति (आवश्यकचूर्णि पृ० १४५)।
१०. जं० ५।५८।
११. 'सामाणियसाहस्सीहिं' इत्यादिपदेसु षष्ठी-विभक्तेर्बहुवचनमपेक्षितमस्ति, यथा शक्र-प्रकरणे (५।१६) 'सामाणियसाहस्सीणं' इत्यादि पदानि दृश्यन्ते, अन्यथा 'जहा सक्के' इति समर्पणस्य सार्थकता न स्यात्। तृतीयान्त पदानि घण्टावादनानन्तरं प्रयाणसमये निर्दिष्टानि सन्ति, द्रष्टव्यं ५।४६ सूत्रम्।
१२. जं० ५।१६-४६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घंटा, सेसं तं चेव[1], परिसाओ जहा[2] जीवाभिगमे ।।

५२. तेणं कालेणं तेण समएणं धरणे तहेव, णाणत्तं—छ सामाणियसाहस्सीओ, छ अग्गमहिसीओ, चउग्गुणा आयरक्खा, मेघस्सरा घंटा, भद्दसेणो पायत्ताणीयाहिवई, विमाणं पणवीसं जोयणसहस्साइं, महिंदज्झओ अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं, एवमसुरिंदवज्जियाणं भवणवासिइंदाणं, णवरं- असुराणं ओघस्सरा घंटा, णागाणं मेघस्सरा, सुवण्णाणं हंसस्सरा, विज्जूणं कोंचस्सरा, अग्गीणं मंजुस्सरा, दिसाणं मंजुघोसा, उदहीणं सुस्सरा, दीवाणं महुरस्सरा, वाऊणं णंदिस्सरा, थणियाणं णंदिघोसा ।

गाहा— चउसट्ठी सट्ठी खलु, छच्च सहस्सा उ असुरवज्जाणं ।
सामाणिया उ एए,चउग्गुणा आयरक्खा उ ॥१॥

दाहिणिल्लाणं पायत्ताणीयाहिवई भद्दसेणो, उत्तरिल्लाणं दक्खो ।।

५३. वाणमंतरजोइसिया णेयव्वा, एवं चेव णवरं—चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ, चत्तारि अग्गमहिसीओ, सोलस आयरक्खसहस्सा, विमाणा सहस्सं, महिंदज्झया पणवीसं जोयणसयं, घंटा दाहिणाणं मंजुस्सरा, उत्तराणं मंजुघोसा, पायत्ताणीयाहिवई विमाणकारी य आभिओगा देवा, जोइसियाणं सुस्सरा सुस्सरणिग्घोसा[3] घंटाओ, मंदरे समोसरणं जाव पज्जुवासंति ।।

५४. तए णं से अच्चुए देविंदे देवराया महं[4] देवाहिवे आभिओग्गे[5] देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! महत्थं महग्घं महरिहं विउलं तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह ।।

५५. तए णं ते आभिओग्गा देवा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[6] पडिसुणित्ता[7] उत्तर-पुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं जाव[8] समोहणित्ता अट्ठ-सहस्सं सोवण्णियकलसाणं, एवं रुप्पमयाणं मणिमयाणं सुवण्णरुप्पमयाणं सुवण्णमणिमयाणं रुप्पमणिमयाणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं अट्ठसहस्सं भोमेज्जाणं, अट्ठसहस्सं वंदणकलसाणं, एवं भिंगाराणं आयंसाणं थालाणं पातीणं[9] सुपइट्ठाणं[10] चित्ताणं[11] रयणकरंडगाणं वाय-करगाणं[12] पुप्फचंगेरीणं जहा[13] सूरियाभस्स सव्वचंगेरीओ सव्वपडलगाइं विसेसियतराइं भाणियव्वाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता सीहासण-छत्त-चामर-तेल्लसमुग्गा जाव सरिसवसमुग्गा तालियंटा जाव अट्ठसहस्सं कडुच्छुयाणं विउव्वंति, विउव्वित्ता साहाविए वेउव्विए य कलसे जाव कडुच्छुए य गिण्हित्ता जेणेव खीरोदए समुद्दे तेणेव आगम्म खीरोदगं गिण्हंति, जाइं तत्थ उप्पलाइं पउमाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति, एवं पुक्खरोदाओ जाव

१. जं० ५।५० ।
२. जी० ३।२३५-२५० ।
३. °णिग्घोसाओ (प) ।
४. महिंदे (क,ख,स,पुवृ); महं (पुवृपा) ।
५. आभिओगे (क,ख,प,स); आभिओगिए (त्रि) ।
६. जं० ३।८ ।
७. पडसुणेत्ता (अ,ब) ।
८. जं० ५।५ ।
९. पादीणं (अ, ब); पाईणं (क, ख, प, स) ।
१०. सुपइट्ठगाणं (प) ।
११. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स आवश्यकचूर्णि पृ० १४७)
१२. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स, आवश्यकचूर्णि पृ० १४७)।
१३. राय० सू० २७९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भरहेरवयाणं मागहाइतित्थाणं उदगं मट्टियं च गिण्हंति, एवं गंगाईणं महाणईणं जाव चुल्लहिमवंताओ सव्वतुवरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले जाव सव्वोसहीओ सिद्धत्थए य गिण्हंति, गिण्हित्ता, पउमद्दहाओ दहोदगं उप्पलाईणि य, एवं सव्वकुलपव्वएसु वट्टवेयड्ढेसु सव्वमहद्दहेसु सव्ववासेसु सव्वचक्कवट्टिविजएसु वक्खारपव्वएसु अंतरणईसु विभासिज्जा जाव उत्तरकुरुसु जाव सुदंसणभद्दसालवणे सव्वतुवरे जाव सिद्धत्थए य गिण्हंति, एवं णंदणवणाओ सव्वतुवरे जाव सिद्धत्थए य सरसं च गोसीसचंदणं दिव्वं च सुमणदामं गेण्हंति, एवं सोमणसपंडगवणाओ य सव्वतुवरे जाव सुमणदामं दद्दरमलयसुगंधे य गिण्हंति, गिण्हित्ता एगओ मिलायंति[1] मिलाइत्ता जेणेव सामी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेंति ।

५६. तए णं से अच्चुए देविंदे देवराया दसहिं सामाणियसाहस्सीहिं, तायत्तीसाए तावत्तीसएहिं चउहिं लोगपालेहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणिया-हिवईहिं, चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे[2] तेहिं साभाविएहिं वेउव्विएहि य वरकमलपइट्ठाणेहिं सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं चंदणकयचच्चाएहिं आविद्ध-कंठेगुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं करयलसूमालपरिग्गहिएहिं[3] अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव अट्ठसहस्सेणं भोमेज्जाणं जाव सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं जाव सव्वोसहिसिद्धत्थएहिं सव्विड्ढीए जाव दुंदुहिणिग्घोसनाइयरवेणं महया-महया तित्थयरा-भिसेएणं अभिसिंचइ[4] ।।

५७. तए णं सामिस्स महया-महया अभिसेयंसि वट्टमाणंसि इंदाइया देवा छत्तचामर-कलसधूवकडुच्छुयपुप्फगंध जाव[5] हत्थगया हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[6] वज्जसूलपाणी पुरओ चिट्ठंति पंजलिउडा, एवं विजयाणुसारेण जाव[7] अप्पेगइया देवा आसिय-संमज्जिओवलित्तं सित्तसुइसम्मट्ठरत्थंतरावणवीहियं करेंति जाव गंधवट्टिभूयं, अप्पेगइया हिरण्णवासं वासंति, एवं सुवण्ण-रयण-वइर-आभरण-पत्त-पुप्फ-फल-बीय-मल्ल-गंध-वण्ण जाव चुण्णवासं वासंति, अप्पेगइया हिरण्णविहिं भाएंति, एवं जाव चुण्णविहिं भाएंति, अप्पेगइया चउव्विहं वज्जं वाएंति, तं जहा—ततं विततं घणं झुसिरं,[8] अप्पेगइया चउव्विहं गेयं गायंति, तं जहा—उक्खित्तं पयत्तं[9] मंदं[10] रोइंदगं[11], अप्पेगइया चउव्विहं णट्टं णच्चंति, तं जहा—अंचियं दुयं

१. मिलंति (प) ।
२. संपरिवुडे जाव (अ,क,ख,त्रि,ब,स, आवश्यक चूर्णि पृ० १४८) ।
३. °सुकुमाल° (क, ख, त्रि, प, स) ।
४. अभिसिंचंति (अ, क,ख,त्रि,प,ब,स,हीवृ); एक-वचनकर्तृकत्वेन एकवचनान्तमेव क्रियापदं युज्यते तथापि लिपिप्रमादात् आदर्शेषु तद् बहुवचनान्तं जातम् ।
५. जं० ५।५५; ३।१०,११ ।
६. जं० ५।२७ ।
७. जी० ३।४४७ ।
८. सुसिरं (अ,ब) ।
९. पायत्तं (प); पत्तए (ठा० ४।६३४); पायंतं (राय० सू० ११५); पायंतायं (राय० सू० २८१) ।
१०. मंदायं (प, पुवृपा, राय० सू० ११५,२८१, जी० ३।४४७) ।
११. रोइयगं (क,स,शावृपा); रोइदअंगं (ख); रोइयावसानं (त्रि,प,पुवृ,राय० सू० ११५,२८१ जी० ३।४४७) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरभडं भसोलं, अप्पेगइया चउव्विहं अभिणयं अभिणेंति, तं जहा—दिट्ठंतियं पाडियंतियं[1] सामण्णओविणिवाइयं[2] लोगमज्झावसाणियं[3], अप्पेगइया बत्तीसइविहं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पेगइया उप्पयनिवयं[4] निवयउप्पयं[5] संकुचियपसारियं जाव भंतसंभंतं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति, 'अप्पेगइया पीणेंति, एवं बुक्कारेंति[6] तंडवेंति लासेंति[7] अप्फोडेंति वग्गंति सीहणायं णदंति, अप्पेगइया सव्वाइं करेंति, अप्पेगइया हयहेसियं[8], एवं हत्थिगुलगुलाइयं[9] रहघणघणाइयं, अप्पेगइया तिण्णिवि, अप्पेगइया उच्छोलेंति[10], अप्पेगइया पच्छोलेंति,[11], अप्पेगइया तिवइं छिंदंति, 'अप्पेगइया तिण्णिवि'[12], अप्पेगइया पायदद्दरयं[13] करेंति, अप्पेगइया भूमिचवेडं दलयंति, अप्पेगइया महया-महया सद्देणं रावेंति, एवं संजोगा विभासियव्वा, अप्पेगइया हक्कारेंति, एवं पुक्कारेंति[14] थक्कारेंति[15] ओवयंति उप्पयंति परिवयंति, जलंति तवंति पतवंति[16] गज्जंति विज्जुयायंति[17] वासंति, अप्पेगइया देवुक्कलियं करेंति, एवं देवकहकहगं[18] करेंति, अप्पेगइया दुहदुहगं[19] करेंति, अप्पेगइया विकियभूयाइं रूवाइं विउव्वित्ता पणच्चंति, एवमाइ विभासेज्जा जहा[20] विजयस्स जाव सव्वओ समंता आधावेंति परिधावेंति ॥

५८. तए णं से अच्चुइंदे सपरिवारे सामिं तेणं महया-महया[21] अभिसेएणं अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता करयलपरिग्गहियं[22] •सिरसावत्तं° मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता ताहिं इट्ठाहिं[23] •कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं सिव्वाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं वग्गूहिं° जयजयसद्दं

१. पडियंतियं (क); प्रातिश्रुतिकं (पुवृ,शावृ); प्रतिश्रुतिकं (हीवृ); द्रष्टव्यं ठाणं ४।६३७ सूत्रं तत्पादटिप्पणं च ।
२. सामंतोकतियं (अ,त्रि,ब); सामंतोवाइयं (क,प,स); सामंतोकंतियं (ख); सामण्णओविणिवाइयं (ठाणं ४।६३७ राय० सू० ११७,२८१. जी० ३।४४७।
३. लोगमज्झावसियं (अ,क,ख,प,ब,स); लोगमज्झावसाणियं (राय० सू० ११७,२८१. जी० ३।४४७)।
४. उप्पयणिवयप्पवत्तं (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ।
५. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ)। रायपसेणइयसुत्ते (१११); जीवाजीवाभिगमे (३।४४७) च 'निवाय-उप्पाय' इति पाठो विद्यते।
६. बक्कारेंति (अ,क,ख,ब)।
७. अप्पेगइया तंडवेंति अप्पेगइया लासेंति अप्पेगइया पीणेंति एवं बुक्कारेंति (प,शावृ)।
८. हर्ताहिंसियं (अ,ब)।
९. °गुलगुलाइयं (अ,क,ख,प,ब,स)।
१०. उच्छोलंति (क,ख); उच्छलेंति (त्रि); उच्छलंति (हीवृ,पुवृपा)।
११. पच्छोलंति (क,ख); प्रोच्छलंति (हीवृ,पुवृपा)।
१२. × (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स,शावृ,हीवृ)।
१३. °दद्दरं (अ,क,ख,त्रि,ब,स, आवश्यकचूर्णि पृ० १४८)।
१४. बुक्कारेंति (स,पुवृ)।
१५. बक्कारेंति (आवश्यकचूर्णि पृ १४८)।
१६. × (अ,क,ख,त्रि,ब)।
१७. विज्जुतायंती (अ,ख,ब); विज्जुयंति (आवश्यकचूर्णि पृ० १४८)।
१८. देवकुहुकुहगं (अ,ब)।
१९. देवदुदुचुंग (अ); देवदुदुतुंग (ब)।
२०. जी० ३।४४७।
२१. महया जाव (अ,त्रि,ब)।
२२. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव मत्थए।
२३. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव जयजयसद्दं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउंजइ, पउंजित्ता[1] •तप्पढमयाए° पम्हलसूमालाए[2] सुरभीए गंधकासाईए गायाइं[3] लूहेइ, लूहेत्ता[4] •सरसेणं गोसीसचंदणेणं गाताइं अणुलिंपति, अणुलिंपित्ता नासानीसासवायवोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्तं हयलालापेलवातिरेगं धवलकणगखचियंतकम्मं आगासफलिह-समप्पभं अहतं दिव्वं देवदूसजुयलं णियंसावेति, णियंसावेत्ता° जाव[5] कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेइ, करेत्ता[6] •दिव्वं च सुमणदामं पिणद्धावेइ, पिणद्धावित्ता° णट्टविहिं उवदंसेइ, उवदंसेत्ता अच्छेहिं सण्हेहिं[7] रययामएहिं अच्छरसातंडुलेहिं भगवओ सामिस्स पुरओ अट्ठट्ठमंगलगे आलिहइ, [तं जहा—

दप्पण भद्दासण वद्धमाण वरकलस मच्छ सिरिवच्छा ।
सोत्थिय णंदावत्ता लिहित्ता अट्ठट्ठ मंगलगा ॥१॥]

काऊण[9] करेइ उवयारं, किं ते? पाडल-मल्लिय-चंपग-असोग-पुण्णाग-चूयमंजरि-णव-मालिय-बकुल - तिलग-कणवीर-कुंद-कोज्जय - कोरंट-पत्त-दमणग-वरसुरभिगंधगंधियस्स[10] कयग्गहिय[11]-करयलपब्भट्ठविप्पमुक्कस्स दसद्धवण्णस्स कुसुमणिगरस्स[12] तत्थ चित्तं जण्णु-स्सेहप्पमाणमेत्तं[13] ओहिनिगरं[14] करेत्ता चंदप्पभ-रयण-वइर-वेरुलियविमलदंडं कंचणमणि-रयणभत्तिचित्तं[15] कालागरु[16]-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवगंधुत्तमाणुविद्धं च धूमवट्टिं विणिम्मुयंतं वेरुलियमयं कडुच्छुयं[17] पग्गहेत्तु पयते धूवं दाऊण जिणवरिंदस्स सत्तट्ठपयाइं ओसरित्ता दसंगुलियं अंजलिं करिय मत्थयंसि[18] पयओ[19] अट्ठसयविसुद्धगंथजुत्तेहिं महावित्तेहिं अपुणरुत्तेहिं अत्थजुत्तेहिं संथुणइ, संथुणित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता[20] •दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि णिवेसेइ, णिवेसेत्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता° करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—णमोत्थु ते सिद्ध ! बुद्ध ! णीरय ! समण ! समाहिय ! समत्त ! समजोगि ! सल्लगत्तण ! णिब्भय ! णीरागदोस[21] ! णिम्मम ! णिस्संग ! णीसल्ल ! माणमूरण ! गुणरयण ! सीलसागरमणंतमप्पमेय ! भविय ! धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी ! णमोत्थु ते अरहओत्तिकट्टु[22] वंदइ णमंसइ, वंदित्ता

१. सं० पा०—पउंजित्ता जाव पम्हलसूमालाए ।
२. °सुकुमालाए (अ,त्रि,ब) ।
३. गत्ताइं (क,ख); गत्ताइं (ब) ।
४. सं पा०—लूहेत्ता एवं जाव कप्परुक्खगं ।
५. जी० ३।४५१ ।
६. सं० पा०—करेत्ता जाव णट्टविहिं ।
७. सण्हेहिं सेतेहिं (जं० ३।१२) ।
८. कोष्ठकवर्त्तिपाठः व्याख्यांशो दृश्यते ।
९. लिहिऊण (प,शावृ); आलिहित्ता काऊणं (जं० ३।१२) । द्रष्टव्यम्—३।१२ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
१०. °सुरभिसुगंधगंधियस्स (क,ख,पुवृ); °सुरभिसु-गंधिकस्स (त्रि,हीवृ) ।
११. कयग्गाह° (त्रि,ब) ।
१२. कुसुमसंचतस्स (आवश्यकचूर्णि पृ० १४६) ।
१३. जाणु° (त्रि) ।
१४. ओह° (क,ख,प,स,पुवृ) ।
१५. णाणामणि° (त्रि,हीवृ) ।
१६. कालागुरु (त्रि) ।
१७. कडेच्छुयं (क,ख); कडच्छुयं (ब) ।
१८. मत्थगंमि (अ,ब); मत्थयंमि (क,ख,स) ।
१९. पयत्तो (अ,त्रि,ब) ।
२०. सं० पा०—अंचेत्ता जाव करयलपरिग्गहियं ।
२१ णिरागदोस (अ,ब) ।
२२. अरहओ णमोत्थु ते भगवओत्तिकट्टु (अ,ब, पुवृ); अरहओ णमोत्थु ते अरहओत्तिकट्टु(क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे[1] •णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे° पज्जुवासइ ॥

५९. एवं जहा अच्चुयस्स तहा जाव ईसाणस्स भाणियव्वं, एवं[2] भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिया य सूरपज्जवसाणा सएणं-सएणं परिवारेणं पत्तेयं-पत्तेयं अभिसिंचंति ॥

६०. तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया पंच ईसाणे विउव्वइ, विउव्वित्ता एगे ईसाणे भगवं तित्थयरं करयलपुडेणं[3] गिण्हइ, गिण्हित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे, एगे ईसाणे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, दुवे ईसाणा उभओ[4] पासिं चामरुक्खेवं करेंति, एगे ईसाणे पुरओ सूलपाणी चिट्ठइ ॥

६१. तए[5] णं से सक्के देविंदे देवराया आभिओगे[6] देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एसोवि तह[7] चेव अभिसेयाणत्तिं देइ, तेवि तह चेव उवणेंति ॥

६२. तए णं से सक्के देविंदे देवराया भगवओ तित्थयरस्स चउद्दिसिं चत्तारि धवल-वसभे विउव्वेइ—सेए 'संखतल[8]-विमल-णिम्मल-दधिघण-गोखीर-फेण-रयय-णिगरप्पगासे'[9] पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

६३. तए णं तेसिं चउण्हं धवलवसभाणं अट्ठहिं[10] सिंगेहिंतो अट्ठ तोयधाराओ णिग्गच्छंति ॥

६४. तए णं ताओ अट्ठ तोयधाराओ उड्ढं वेहासं उप्पयंति, उप्पइत्ता एगओ मिला-यंति, मिलाइत्ता भगवओ तित्थयरस्स मुद्धाणंसि णिवयंति[11] ॥

६५. तए णं से सक्के देविंदे देवराया चउरासीईए सामाणियसाहस्सीहिं, एयस्सवि तहेव अभिसेओ भाणियव्वो जाव[12] णमोत्थु ते अरहओत्तिकट्टु वंदइ णमंसइ जाव पज्जुवासइ ॥

६६. तए णं से सक्के देविंदे देवराया पंच सक्के विउव्वइ, विउव्वित्ता एगे सक्के भयवं तित्थयरं करयलपुडेणं गिण्हइ, एगे सक्के पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, दुवे सक्का उभओ[13] पासिं चामरुक्खेवं करेंति, एगे सक्के वज्जपाणी पुरओ पकड्ढइ[14] ॥

६७. तए णं से सक्के देविंदे देवराया चउरासीईए सामाणियसाहस्सीहिं जाव[15] अण्णेहि य बहूहिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइस[16]-वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्वि-ड्ढीए जाव[17] दुंदुहिणिग्घोसणाइयरवेणं ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए जइणाए सीहाए

१. सं० पा०—सुस्सूसमाणे जाव पज्जुवासइ ।
२. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ) ।
३. करयलसंपुडेणं (क,ख,प,स) ।
४. अवहो (अ,ब) ।
५. एतत्सूत्रं 'अ,ब' प्रत्योः नास्ति ।
६. आभिओग्गे (क,स)
७. जं० ५।५४,५५ ।
८. संखदल (प,शावृ) ।
९. संखदलसन्निगासे (आवश्यकचूर्णि पृ० १५०) ।
१०. अट्ठसु (अ,क,ख,त्रि,ब,स); 'अट्ठसु' त्तिप्राकृतत्वात् सप्तमी पञ्चम्यर्थे (हीवृ) ।
११. निपयंति (अ,ब); निपतंति (क,ख,त्रि) ।
१२. जं० ५।५६-५८ ।
१३. अवहो (अ,ब) ।
१४. पगच्छति (त्रि) ।
१५. जं० २।६० ।
१६. जोइसिय (त्रि) ।
१७. जं० ३।१२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणणयरे जेणेव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणे जेणेव तित्थयरमाया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवं तित्थयरं माऊए पासे ठवेइ, ठवेत्ता तित्थयरपडिरूवगं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता ओसोवणिं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता एगं महं खोमजुयलं कुंडलजुयलं च भगवओ तित्थयरस्स उस्सीसगमूले[1] ठवेइ, ठवेत्ता एगं महं सिरिदामगंडं तवणिज्जलंबूसगं सुवण्णपयरगमंडियं णाणामणिरयणविविहहारद्धहारउवसोहियसमुदयं भगवओ तित्थयरस्स उल्लोयंसि णिक्खिवइ, तण्णं भगवं तित्थयरे अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणे-देहमाणे सुहंसुहेणं अभिरममाणे-अभिरममाणे चिट्ठइ ॥

६८. तए णं से सक्के देविंदे देवराया वेसमणं देवं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! बत्तीसं हिरण्णकोडीओ बत्तीसं सुवण्णकोडीओ[2] बत्तीसं णंदाइं बत्तीसं भद्दाइं सुभगे सोभग्ग[3]-रूव-जोव्वण-गुण[4]-लावण्णे य भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणंसि साहराहि, साहरित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥

६९. तए णं से वेसमणे देवे सक्केणं जाव[5] विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जंभए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! बत्तीसं हिरण्णकोडीओ जाव भगवओ तित्थयरस्स जम्मणभवणंसि साहरह, साहरित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

७०. तए णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[6] खिप्पामेव बत्तीसं हिरण्णकोडीओ जाव सोभग्ग-रूव-जोव्वण-गुण-लावण्णे य भगवओ तित्थगरस्स जम्मणभवणंसि साहरंति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव[7] •उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

७१. तए णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया[8] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणइ ॥

७२. तए णं से सक्के देविंदे देवराया आभिओगे देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! भगवओ तित्थयरस्स जम्मणणयरंसि सिंघाडग[9]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह°-महापह-पहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वदह—हंदि[10] ! सुणंतु भवंतो बहवे भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा ! य देवीओ ! य जे णं देवाणुप्पिया ! तित्थयरस्स तित्थयरमाऊए वा असुभं मणं पधारेइ, तस्स णं अज्जगमंजरिका इव सतहा[11] मुद्धाणं फुट्टउत्ति [फुट्टिहीति?]-कट्टु घोसणं घोसेह, घोसेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

---

१. ऊसीसगमूले (अ,ब); उस्सीसमूले (त्रि)।
२. °कोडीओ बत्तीसं रयणकोडीओ (त्रि,हीवृ)।
३. सुभग्ग (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
४. × (क,ख)।
५. जं० ५।२३।
६. जं० ३।८।
७. सं० पा०—तेणेव जाव पच्चप्पिणंति।
८. सं० पा०—देवराया जाव पच्चप्पिणइ।
९. सं० पा०—सिंघाडग जाव महापह।
१०. हुंद (क,ख,त्रि,प,स)।
११. सत्तहा (अ,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७३. तए णं ते आभिओगा देवा जाव[1] एवं देवोत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता खिप्पामेव भगवओ तित्थगरस्स जम्मणणगरंसि सिंघाडग[2]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा° एवं वयासी —हंदि सुणंतु भवंतो बहवे भवणवइ[3]-•वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा ! यदेवीओ ! य° जे णं देवाणुप्पिया ! तित्थयरस्स[4] •तित्थयरमाऊए वा असुभं मणं पधारेइ, तस्स णं अज्जगमंजरिका इव सतहा मुद्धाणं° फुट्टिहीतिकट्टु[5] घोसणं घोसेंति, घोसेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

७४. तए णं ते बहवे भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा भगवओ तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करेंति, करेत्ता जेणेव णंदिस्सरे दीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अट्ठाहियाओ महामहिमाओ करेंति, करेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

---

१. जं० ५।२३ ।

२. सं० पा०—सिंघाडग जाव एवं ।

३. सं० पा०—भवणवइ जाव जे ।

४. सं० पा०—तित्थयरस्स जाव फुट्टिहीतिकट्ट ।

५. फुट्टितित्तिकट्टु (क); फुट्टिहित्तिकट्टु (ख); फुट्टतुत्तिकट्टु (त्रि); फुट्टिहित्तिकट्टु (स) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठो वक्खारो

१. जंबुद्दीवस्स णं भंते ! दीवस्स पएसा लवणं समुद्दं पुट्ठा ? हंता ! पुट्ठा ॥

२. ते णं भंते ! किं जंबुद्दीवे दीवे ? लवणे समुद्दे ? गोयमा ! ते णं जंबुद्दीवे दीवे, णो खलु लवणे समुद्दे ॥

३. एवं लवणसमुद्दस्सवि पएसा जंबुद्दीवे दीवे पुट्ठा भाणियव्वा[1] ॥

४. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता लवणे समुद्दे पच्चायंति ? गोयमा ! अत्थेगइया पच्चायंति, अत्थेगइया नो पच्चायंति ॥

५. एवं लवणसमुद्दस्सवि जंबुद्दीवे दीवे णेयव्वं[2] ।

गाहा— खंडा जोयण वासा, पव्वय कूडा य तित्थ सेढीओ ।
विजय द्दह सलिलाओ य, पिंडए होइ संगहणी ॥१॥

७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भरहप्पमाणमेत्तेहिं खंडेहिं केवइयं खंडगणिएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! णउयं खंडसयं खंडगणिएणं पण्णत्ते ॥

८. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइयं जोयणगणिएणं[3] पण्णत्ते ? गोयमा !

गाहा— सत्तेव य कोडिसया, णउया छप्पण्ण सयसहस्साइं ।
चउणवइं[4] च सहस्सा, सयं दिवड्ढं च गणियपयं ॥१॥

९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे कइ वासा पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त वासा पण्णत्ता, तं जहा 'भरहे एरवए[5] हेमवए हेरण्णवए[6] हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे ॥

१०. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया वासहरा पण्णत्ता ? केवइया मंदरा पव्वया ? केवइया चित्तकूडा ? केवइया विचित्तकूडा ? केवइया जमगपव्वया[7] ? केवइया कंचणगपव्वया ? केवइया वक्खारा ? केवइया दीहवेयड्ढा ? केवइया वट्टवेयड्ढा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे छ वासहरपव्वया, एगे मंदरे पव्वए, एगे चित्तकूडे, एगे विचित्तकूडे, दो जमगपव्वया, दो कंचणगपव्वयसया, वीसं वक्खारपव्वया, चोत्तीसं दीहवेयड्ढा, चत्तारि वट्टवेयड्ढा - एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे दुण्णि अउणत्तरा पव्वयसया भवंतीतिमक्खायं ॥

---

१. जी० ३।५७३,५७४ ।
२. जी० ३।५७६ ।
३. जोयणभाइएणं (अ,व) ।
४. चउणउतिं (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
५. भरहेरवए (अ,क,त्रि,ब) ।
६. एरण्णवए (अ,क,ख,त्रि,ब) ।
७. जवगपव्वया (अ,ब) अग्रेपि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया वासहरकूडा ? केवइया वक्खारकूडा ? केवइया वेयड्ढकूडा ? केवइया मंदरकूडा पण्णत्ता ? गोयमा ! छप्पण्णं वासहरकूडा, छण्णउइं वक्खारकूडा, तिण्णि छलुत्तरा वेयड्ढकूडसया, णव मंदरकूडा पण्णत्ता—एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे चत्तारि सत्तट्ठा[1] कूडसया भवंतीतिमक्खायं ।।

१२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भरहे वासे कइ तित्था पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ तित्था पण्णत्ता, तं जहा—मागहे वरदामे पभासे ।।

१३. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे एरवए वासे कइ तित्था पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ तित्था पण्णत्ता, तं जहा—मागहे वरदामे पभासे ।।

१४. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे महाविदेहे वासे एगमेगे चक्कवट्टिविजए कइ तित्था पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ तित्था पण्णत्ता, तं जहा—मागहे वरदामे पभासे एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे एगे विउत्तरे[2] तित्थसए भवतीतिमक्खायं ।।

१५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइयाओ विज्जाहरसेढीओ ? केवइयाओ आभिओगसेढीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे अट्ठसट्ठी विज्जाहरसेढीओ, अट्ठसट्ठी[3] आभिओगसेढीओ पण्णत्ताओ एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे छत्तीसे सेढीसए भवतीतिमक्खायं[4] ।।

१६. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया चक्कवट्टिविजया ? केवइयाओ रायहाणीओ ? केवइयाओ तिमिसगुहाओ ? केवइयाओ खंडप्पवायगुहाओ ? केवइया कयमालया देवा ? केवइया णट्टमालया देवा ? केवइया उसभकूडा पव्वया पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे चोत्तीसं चक्कवट्टिविजया, चोत्तीसं रायहाणीओ, चोत्तीसं तिमिसगुहाओ, चोत्तीसं खंडप्पवायगुहाओ, चोत्तीसं कयमालया देवा, चोत्तीसं णट्टमालया देवा, चोत्तीसं उसभकूडा पव्वया पण्णत्ता ।।

१७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया महद्दहा पण्णत्ता ? गोयमा ! सोलस महद्दहा[5] पण्णत्ता ।।

१८. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइयाओ महाणईओ वासहरपवहाओ ? केवइयाओ महाणईओ कुंडप्पवहाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे चोद्दस महाणईओ वासहरपवहाओ, छावत्तरिं महाणईओ कुंडप्पवहाओ एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे णउइं महाणईओ भवंतीतिमक्खायं ।।

१९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भरहेरवएसु वासेसु कइ महाणईओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि महाणईओ पण्णत्ताओ, तं जहा—गंगा सिंधू रत्ता रत्तवई । तत्थ णं एगमेगा[6] महाणई चउद्दसहिं सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं[7] लवणसमुद्दं समप्पेइ—एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु छप्पण्णं सलिलासहस्सा

---

१. सत्तसट्ठ (त्रि) ।
२. पिउत्तरे (अ,ब) ।
३. अट्ठसट्ठिं (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
४. °मक्खाए (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
५. महादहा (त्रि) ।
६. एगमेका (अ,ब) ।
७. पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेणं (त्रि) अग्रेपि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवंतीतिमक्खायं[1] ।।

२०. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे 'हेमवय-हेरण्णवएसु'[2] वासेसु कइ महाणईओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि महाणईओ पण्णत्ताओ, तं जहा--रोहिया रोहियंसा सुवण्णकूला रुप्पकूला[3]। तत्थ णं एगमेगा महाणई अट्ठावीसाए-अट्ठावीसाए सलिला-सहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे हेमवय-हेरण्णवएसु वासेसु बारसुत्तरे सलिलासयसहस्से भवतीतिमक्खायं ।।

२१. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे हरिवास-रम्मगवासेसु कइ महाणईओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि महाणईओ पण्णत्ताओ, तं जहा---हरी हरिकंता णारकंता णरिकंता । तत्थ णं एगमेगा महाणई छप्पण्णाए-छप्पण्णाए सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिम-पच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ---एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे हरिवास-रम्मग-वासेसु दो चउवीसा सलिलासयसहस्सा भवंतीतिमक्खायं ।।

२२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे महाविदेहे वासे कइ महाणईओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दो महाणईओ पण्णत्ताओ, तं जहा---सीया य[4] सीतोदा य। तत्थ णं एगमेगा महाणई पंचहिं-पंचहिं सलिलासयसहस्सेहिं बत्तीसाए य सलिलासहस्सेहिं समग्गा पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं समप्पेइ—एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे दस सलिलासयसहस्सा चउसट्ठिं च सलिलासहस्सा भवंतीति-मक्खायं ।।

२३. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स[5] पव्वयस्स दक्खिणेणं केवइया सलिला-सयसहस्सा पुरत्थिमपच्चत्थिमाभिमुहा लवणसमुद्दं समप्पेंति ? गोयमा ! एगे छण्णउए सलिलासयसहस्से पुरत्थिमपच्चत्थिमाभिमुहे लवणसमुद्दं समप्पेइ ।।

२४. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं केवइया सलिलासयसहस्सा पुरत्थिमपच्चत्थिमाभिमुहा लवणसमुद्दं समप्पेंति ? गोयमा ! एगे छण्णउए सलिला-सयसहस्से पुरत्थिमपच्चत्थिमाभिमुहे[6] •लवणसमुद्दं° समप्पेइ ।।

२५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया सलिलासयसहस्सा पुरत्थिमाभिमुहा[7] लवण-समुद्दं समप्पेंति ? गोयमा ! सत्त सलिलासयसहस्सा अट्ठावीसं च सहस्सा पुरत्थिमाभिमुहा लवणसमुद्दं समप्पेंति ।।

२६. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया सलिलासयसहस्सा पच्चत्थिमाभिमुहा लवण-समुद्दं समप्पेंति ? गोयमा! सत्त सलिलासयसहस्सा अट्ठावीसं च सहस्सा[8] •पच्चत्थिमाभि-मुहा लवणसमुद्दं° समप्पेंति--एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिलासयसहस्सा छप्पण्णं च सहस्सा भवंतीतिमक्खायं ।।

---

१. °मक्खाया (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
२. हेमवएरण्णवएसु (अ,क,ख,त्रि,ब,स) अग्रेपि ।
३. रुप्पीकूला (त्रि); रुक्मीकूला (हीवृ) ।
४. × (अ,त्रि,ब) ।
५. मंदिरस्स (अ,ब) अग्रेपि ।
६. सं०पा० —°पच्चत्थिमाभिमुहे जाव समप्पेइ।
७. पुरत्थाभिमुहा (त्रि,प) ।
८. सं० पा०—सहस्सा जाव समप्पेंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तमो वक्खारो

१. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे कइ चंदा पभासिंसु पभासंति पभासिस्संति ? कइ सूरिया[1] तवइंसु तवेंति तविस्संति ? केवइया णक्खत्ता जोगं जोएंसु जोएंति जोएस्संति ? केवइया महग्गहा चारं चरिंसु चरंति चरिस्संति ? केवइयाओ तारागणकोडाकोडीओ सोभं[2] सोभिंसु सोभंति सोभिस्संति ? गोयमा ! दो चंदा पभासिंसु पभासंति पभासिस्संति, दो सूरिया तवइंसु तवेंति तविस्संति, छप्पण्णं णक्खत्ता जोगं जोइंसु जोएंति जोएस्संति, छावत्तरं महग्गहसयं चारं चरिंसु चरंति चरिस्संति,

गाहा— एगं च सयसहस्सं, तेत्तीसं खलु भवे सहस्साइं ।
णव य सया पण्णासा, तारागणकोडिकोडिणं ।।१।।

२. कइ णं भंते ! सूरमंडला पण्णत्ता ? गोयमा ! एगे चउरासीए मंडलसए पण्णत्ते ।।

३. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइयं ओगाहित्ता केवइया सूरमंडला पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे असीयं जोयणसयं ओगाहित्ता, एत्थ णं पण्णट्ठी सूरमंडला पण्णत्ता ।।

४. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवइयं ओगाहित्ता केवइया सूरमंडला पण्णत्ता ? गोयमा ! लवणे णं समुद्दे तिण्णि तीसे जोयणसए ओगाहित्ता, एत्थ णं एगूणवीसे सूरमंडलसए पण्णत्ते एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे 'लवणे य समुद्दे'[3] एगे चुलसीए सूरमंडलसए भवतीतिमक्खायं ।।

५. सव्वब्भंतराओ णं भंते ! सूरमंडलाओ केवइयं[4] अबाहाए सव्वबाहिरए सूरमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचदसुत्तरे जोयणसए अबाहाए सव्वबाहिरए सूरमंडले पण्णत्ते ।।

६. सूरमंडलस्स णं भंते ! सूरमंडलस्स य केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! 'दो-दो'[5] जोयणाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

७. सूरमंडले णं भंते ! केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं, केवइयं

---

१. सूरा (त्रि) ।
२. × (क,ख,त्रि,प,स) ।
३. लवणसमुद्दे (अ,ब) ।
४. केवइयाए (क,ख,प,स); केवइए (त्रि) ।
५. दो (प,शावृ) सर्वत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अडयालीसं एगसट्ठिभाए जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, चउवीसं एगसट्ठियाए जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

८. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं[1] अबाहाए[2] सव्वब्भंतरे सूरमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! चोयालीसं जोयणसहस्साइं अट्ठ य वीसे जोयणसए अबाहाए सव्वब्भंतरे सूरमंडले पण्णत्ते ।।

९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए अब्भंतराणंतरे[3] सूरमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! चोयालीसं जोयणसहस्साइं अट्ठ य बावीसे जोयणसए अडयालीसं च एगसट्ठिभागे[4] जोयणस्स अबाहाए अब्भंतराणंतरे[5] सूरमंडले पण्णत्ते ।।

१०. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए अब्भंतरतच्चे सूरमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! चोयालीसं जोयणसहस्साइं अट्ठ य पणवीसे जोयणसए पणतीसं च एगसट्ठिभागे जोयणस्स अबाहाए अब्भंतरतच्चे सूरमंडले पण्णत्ते। एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए 'तयणंतराओ[6] मंडलाओ तयणंतरं मंडलं'[7] संकममाणे-संकममाणे दो-दो जोयणाइं अडयालीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगे मंडले अबाहावुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे[8]-अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।।

११. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए सव्वबाहिरे[9] सूरमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीसं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तीसे जोयणसए अबाहाए सव्वबाहिरे सूरमंडले पण्णत्ते ।।

१२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए बाहिराणंतरे[10] सूरमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीसं जोयणसहस्साइं तिण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तेरस य एगसट्ठिभाए[11] जोयणस्स अबाहाए बाहिराणंतरे सूरमंडले पण्णत्ते ।।

१३. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए बाहिरतच्चे सूरमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीसं जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउवीसे जोयणसए छव्वीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स अबाहाए बाहिरतच्चे सूरमंडले पण्णत्ते। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए 'तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं'[12] संकममाणे-संकममाणे दो-दो जोयणाइं अडयालीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगे मंडले अबाहा-वुड्ढिं णिवड्ढेमाणे[13]-णिवड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।।

---

१. केवइयाए (प) ।
२. आबाधाए (क,त्र); आबाहाए (ब) ।
३. सव्वब्भंतराणंतरे (त्रि,प) ।
४. एगट्ठिभाए (अ,क,ख,ब,स) अग्रेपि ।
५. अब्भितराणंतरे (अ,ब) ।
६. तयाणंतराओ (त्रि) ।
७. तदणंतराओ तदणंतरं मंडलाओ मंडलं (अ,ख, त्रि,ब,स) ।
८. अभिवुड्ढेमाणे (त्रि) अग्रेपि ।
९. °बाहिरए (अ,ख,त्रि,ब,स) ।
१०. बाह्यानन्तरं सर्वबाह्यमंडलात् अनन्तरं जम्बूद्वीपप्रवेशाभिमुखस्य चारक्षेत्रस्यादिभूतं द्वितीयं मंडलं प्रज्ञप्तम् (हीवृ) ।
११. एगट्ठिभाए (अ,ब,स) ।
१२. तदणंतराओ तदणंतरं मंडलाओ मंडलं (अ,क, ख,त्रि,ब,स) अग्रेप्येवमेव ।
१३. णिवुड्ढेमाणे (अ,क,ख,प,ब,स) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. जंबुद्दीवे दीवे सव्वब्भंतरे णं भंते! सूरमंडले केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते? गोयमा! णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य जोयणसहस्साइं एगूणणउइं च जोयणाइं किंचिविसेसाहियाइं[1] परिक्खेवेणं ॥

१५. अब्भंतराणंतरे णं भंते! सूरमंडले केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते? गोयमा! णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसए पणतीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य जोयणसहस्साइं एगं च सत्तुत्तरं जोयणसयं[2] परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥

१६. अब्भंतरतच्चे णं भंते! सूरमंडले केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेणं पण्णत्ते? गोयमा! णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्च एक्कावण्णे जोयणसए णव य एगसट्ठिभाए जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसयसहस्साइं पण्णरस जोयणसहस्साइं एगं च पणवीसं जोयणसयं परिक्खेवेणं। एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं संकममाणे[3]-संकममाणे पंच-पंच जोयणाइं पणतीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढि अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे अट्ठारस-अट्ठारस जोयणाइं परिरयवुड्ढि अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ॥

१७. सव्वबाहिरए णं भंते! सूरमंडले केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते? गोयमा! एगं जोयणसयसहस्सं छच्च सट्ठे जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस य सहस्साइं तिण्णि य पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं ॥

१८. बाहिराणंतरे णं भंते! सूरमंडले केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते? गोयमा! एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छव्वीसं च एगसट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस य सहस्साइं दोण्णि य सत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेणं ॥

१९. बाहिरतच्चे णं भंते! सूरमंडले केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते? गोयमा! एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावण्णं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस य सहस्साइं दोण्णि य अउणासीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए[4] परिक्खेवेणं। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं संकममाणे-संकममाणे पंच-पंच जोयणाइं पणतीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढि णिवड्ढेमाणे[5]-

---

१. °विसेसाहिए (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।

२. जोयणसयं परिक्षेपे सप्तोत्तरं योजनशतं किञ्चिदूनं वक्तव्यम्। यदागमः—'एगं सत्तुत्तरं जोयणसयं किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं पण्णत्ते' त्ति सूर्यप्रज्ञप्तौ यद्वात्र सूत्रे व्यवहारनयमवलम्ब्य किञ्चिन्न्यूनत्वस्याविवक्षणम् (हीवृ)।

३. उवसंकममाणे (प)।

४. × (प,शावृ)।

५. णिवुड्ढेसमाणे (अ); णिवुढेसमाणे (ब)।

णिवड्ढेमाणे अट्ठारस-अट्ठारस जोयणाइं परिरयवुड्ढिं णिवड्ढेमाणे-णिवड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ॥

२०. जदा णं भंते ! सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तदा णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइयं खेत्तं गच्छइ ? गोयमा ! पंच-पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य एगावण्णे जोयणसए एगूणतीसं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ। तदा णं इहगयस्स मणूसस्स[1] सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एगवीसाए य जोयणस्स[2] सट्ठिभाएहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ। से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भंतराणंतरं[3] मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ॥

२१. जया णं भंते ! सूरिए अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइयं खेत्तं गच्छइ ? गोयमा ! पंच-पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य एगावण्णे[4] जोयणसए सीयालीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ। तया णं इहगयस्स[5] मणूसस्स[6] सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणासीए जोयणसए सत्तावण्णाए[7] य सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगसट्ठिहा[8] छेत्ता एगूणवीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ॥

२२. जया णं भंते ! सूरिए अब्भंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता[9] चारं चरइ, तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइयं खेत्तं गच्छइ ? गोयमा ! पंच-पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य बावण्णे जोयणसए पंच य सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ। तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउईए जोयणेहिं तेत्तीसाए सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगसट्ठिहा छेत्ता दोहिं चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ। एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं संकममाणे-संकममाणे अट्ठारस-अट्ठारस सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे चुलसीइं-चुलसीइं सीयाइं[10] जोयणाइं पुरिसच्छायं णिवड्ढेमाणे-णिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ॥

२३. जया णं भंते ! सूरिए सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइयं खेत्तं गच्छइ ? गोयमा ! पंच-पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य पंचुत्तरे जोयणसए पण्णरस य सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ। तया णं इहगयस्स मणूसस्स एगतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहि य एगत्तीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए

---

१. मणुयस्स (ख); मणुअस्स (त्रि)।
२. × (अ,ख,ब)।
३. अब्भंतराणंतरं (त्रि); सव्वब्भंतराणंतरं (प)।
४. एगापण्णे (अ,ब)।
५. इहगतस्स (ब)।
६. मणुयस्स (ख); मणुअस्स (त्रि)।
७. सत्तावण्णं (अ,ख,त्रि,ब स)।
८. एगट्ठिआ (अ,क,ख,ब,स) अग्रेपि।
९. उवसंपज्जित्ता (अ,ख,ब,स)।
१०. सताइं (अ); सताइं (ब); सूर्यप्रज्ञप्त्या-(२।३) मपि 'सीताइं' इति पाठो विद्यते।

य सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। से पविसमाणे सूरिए दोच्चे छम्मासे अयमाणे[1] पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ॥

२४. जया णं भंते। सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइयं खेत्तं गच्छइ ? गोयमा ! पंच-पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउरुत्तरे जोयणसए सत्तावण्णं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ। तया णं इहगयस्स मणूसस्स एगत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं णवहि य सोलसुत्तरेहिं जोयणसएहिं इगुणालीसाए[2] य सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगसट्ठिहा[3] छेत्ता सट्ठीए चुण्णिया-भागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ॥

२५. जया णं भंते ! सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइयं खेत्तं गच्छइ ? गोयमा ! पंच-पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउरुत्तरे जोयणसए इगुणालीसं[4] च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ। तया णं इहगयस्स मणूसस्स एगाहिएहिं[5] बत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणपण्णाए य सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगसट्ठिहा छेत्ता तेवीसाए चुण्णियाभाएहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्व-मागच्छइ। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं संकममाणे-संकममाणे अट्ठारस-अट्ठारस सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं निवड्ढेमाणे-निवड्ढेमाणे साइरेगाइं पंचासीइं-पंचासीइं जोयणाइं पुरिसच्छायं अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे पण्णत्ते ॥

२६. जया णं भंते ! सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं केमहालए दिवसे, केमहालया[6] राई भवइ ? गोयमा ! तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ। से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ॥

२७. जया णं भंते ! सूरिए अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं केमहालए दिवसे, केमहालया[7] राई भवइ ? गोयमा ! तया णं अट्ठारसमुहुत्ते[8] दिवसे भवइ दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहि य एगसट्ठि-

१. अयमीणे (अ,क,ब) अग्रेपि सर्वत्र।
२. ऊणालीसाए (अ,ब); ऊगुणालीसाए (क,ख); उगुणतालीसाए (त्रि,स)।
३. एगट्ठिधा (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
४. ऊतालीसं (अ,ब); ऊगुतालीसं (क,ख); उगुणतालीसं (त्रि); ऊणतालीसं (स)।
५. एगाहिएहिं (अ,क,ख,ब)।
६. केमहल्लिया (अ,ख,त्रि,ब,स)।
७. केमहालिया (ब)।
८. मुहुत्तेणं (ख,स)।

भागमुहुत्तेहिं अहिया। से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि[1] •अब्भंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता° चारं चरइ, तया णं केमहालए दिवसे, केमहालया[2] राई भवइ ? गोयमा ! तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं संकममाणे-संकममाणे दो-दो एगसट्ठिभागमुहुत्ते मंडले दिवसखेत्तस्य निवड्ढेमाणे-निवड्ढेमाणे रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ। जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं सव्वब्भंतरमंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं तिण्णि छावट्ठे एगसट्ठिभागमुहुत्तसए दिवसखेत्तस्स निवड्ढेत्ता[3] रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता[4] चारं चरइ॥

२८. जया णं भंते ! सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं केमहालए दिवसे[5], केमहालया राई भवई ? गोयमा ! तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवई, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ॥

२९. जया णं भंते ! सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं केमहालए दिवसे[6], केमहालया राई भवइ ? गोयमा ! अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ॥

३०. जया णं भंते ! सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं केमहालए दिवसे, केमहालया राई भवइ ? गोयमा ! तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालस मुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगसट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं संकममाणे-संकममाणे दो-दो एगसट्ठिभागमुहुत्ते एगमेगे मंडले रयणिखेत्तस्स निवड्ढेमाणे-निवड्ढेमाणे दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ। जया णं[7] सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं सव्वबाहिरं[8] मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसएणं तिण्णि छावट्ठे[9] एगसट्ठिभागमुहुत्तसए रयणिखेत्तस्स णिवड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स

---

१. सं० पा०—अहोरत्तंसि जाव चारं।
२. केमहालिया (अ,ब)।
३. अभिणिवड्ढेत्ता (अ,ब); अभिणिवुड्ढेत्ता (क,स); णिवुड्ढेत्ता (त्रि)।
४. अभिवुड्ढेत्ता (ख,प)।
५. दिवसे भवति (अ,त्रि,ब)।
६. दिवसे भवइ (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स)।
७. णं भंते (अ,ख,त्रि,प,ब,स)।
८. सब्वब्भंतरं (अ,क,ब,स); सव्वब्भंतरं बाहिरं (ख)।
९. छावट्ठि (अ,ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आइच्चे[1] संवच्छरे, एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे पण्णत्ते ॥

३१. जया णं भंते ! सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं किंसंठिया तावखेत्तसंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठाणसंठिया[2] तावखेत्तसंठिई पण्णत्ता--अंतो संकुया[3] बाहिं वित्थडा, अंतो वट्टा बाहिं पिहुला, अंतो अंकमुहसंठिया बाहिं सगडुद्धीमुहसंठिया[4], उभओ[5] पासेणं तीसे दो बाहाओ अवट्ठियाओ हवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठियाओ हवंति, तं जहा--'सव्वब्भंतरिया चेव'[6] बाहा 'सव्वबाहिरिया चेव'[7] बाहा।

तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं णव जोयणसहस्साइं चत्तारि छलसीए जोयणसए णव य दसभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं।

एस णं भंते ! परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ? गोयमा ! जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं, तिहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्जा।

तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं[8] चउणउइं[9] जोयणसहस्साइं अट्ठ य अट्ठसट्ठे[10] जोयणसए चत्तारि य दसभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं।

से णं भंते ! परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ? गोयमा ! जे णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं तिहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता 'दसहिं भागे'[11] हीरमाणे, एस परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्जा ॥

३२. तया णं भंते ! तावखेत्ते केवइयं आयामेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठहत्तरिं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागं[12] च आयामेणं पण्णत्ते।

---

१. आदिच्चे (अ,क,ख,व,स)।

२. उड्ढंमुह° (अ,ब); उद्धीमुह° (क,ख,प)।

३. संकुडा (क)।

४. सत्थीमुह° (अ,ब,स); आदर्शान्तरे तु 'बाहिं सोत्थियमुहसंठिया' पाठः (शावृ); बाहिं सत्थीमुहसंठिया ति बहिर्लवणदिशि स्वस्तिकमुखसंस्थिता स्वस्तिकः प्रतीतस्तस्यमुखमग्रभागः तस्यैवातिविस्तीर्णतया संस्थितं संस्थानं यस्याः सा तथा (पुवृ); बाहिं सगडुद्धित्ति बहिः शकटोद्धिमुखसंस्थिता जीर्णादर्शेषु तु क्वचित् सत्थीमुहसंठअत्ति पाठस्तत्र स्वस्तिकः प्रतीतस्तस्य मुखमग्रभागस्तस्यैवातिविस्तीर्णतया संस्थितं संस्थानं यस्याः सा तथा अयं च पाठः सूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रसंवादी व्याख्याप्युक्तरूपैवेत्यवसेयम् (हीवृ)। सूर्यप्रज्ञप्तौ चन्द्रप्रज्ञप्तौ (४।४) च 'सत्थीमुहं°' इति पाठो विद्यते। तद्वृत्त्योश्च 'स्वस्तिकः' इति पदं व्याख्यातमस्ति। किन्तु प्रस्तुतसूत्रस्य ३२ सूत्रेपि 'सगडुद्धी' इत्येव पाठो दृश्यते तेनात्र एतदेवपदं स्वीकृतम्। असौ वाचनाभेदः स्यादथवा केनापि कारणेन लिपिभेदोपि जातः स्यात् ?

५. अवहो (अ,ख,ब); अवधो (क)।

६. सव्वब्भंतरिअच्चेव (अ,व)।

७. सव्वबाहिरयच्चेव (अ ब)।

८. °समुद्देणं (अ,ब)।

९. चउणउइ (अ,ब); चउणउतिं (क,ख,स)।

१०. अट्ठट्ठे (अ,क,ख,त्रि,ब)।

११. दसभागे (अ,क,ख,प,ब,स)।

१२. जोयणस्स तिभागं (क,ख,त्रि,प,स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाहा — मेरुस्स[1] मज्झयारे, जाव य लवणस्स रुंदछब्भागे।
तावायामो एसो, सगडुद्धीसंठिओ णियमा ॥१॥

३३. तया णं भंते ! किंसंठिया अंधयारसंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! उड्डीमुहकलंबुया-पुप्फसंठाणसंठिया[2] अंधयारसंठिई पण्णत्ता—अंतो संकुया बाहिं वित्थडा[3], •अंतो वट्टा बाहिं पिहुला, अंतो अंकमुहसंठिया बाहिं सगडुद्धीमुहसंठिया, उभओ पासे णं तीसे दो बाहाओ अवट्ठियाओ हवंति— पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठियाओ हवंति, तं जहा—सव्वब्भंतरिया चेव बाहा, सव्वबाहिरिया चेव बाहा° ।

तीसे णं सव्वब्भंतरीया बाहा मंदरपव्वयंतेणं छज्जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउवीसे जोयणसए छच्च दसभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं ।

से णं भंते ! परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ? गोयमा ! जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्जा ।

तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं तेसट्ठी[4] जोयणसहस्साइं दोण्णि य पणयाले[5] जोयणसए छच्च दसभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं ।

से णं भंते ! परिक्खेवविसेसे कओ आहिएति वएज्जा ? गोयमा ! जे णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता[6] •दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहिएति वएज्जा° ॥

३४. तया णं भंते ! अंधयारे केवइए आयामेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठहत्तरिं[7] जोयणसहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागं च आयामेणं पण्णत्ते ॥

३५. जया णं भंते ! सूरिए सव्वबाहिरमंडलं[8] उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं किंसंठिया तावक्खेत्तसंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! उड्डीमुहकलंबुयापुप्फसंठाणसंठिया पण्णत्ता, तं चेव सव्वं णेयव्वं, णवरं[9] णाणत्तं—जं अंधयारसंठिईए पुव्ववण्णियं पमाणं तं तावखेत्तसंठिईए णेयव्वं[10], जं तावखेत्तसंठिईए पुव्ववण्णियं पमाणं तं अंधयारसंठिईए[11] णेयव्वं[12] ॥

३६. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति ? अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? हंता गोयमा ! तं चेव जाव दीसंति ॥

१. 'अ,त्र' सङ्केतितयोः ताडपत्रीयादर्शयोः नेयं गाथा उपलभ्यते ।
२. उद्धीमुह° (अ,ख,त्रि,ब) ।
३. सं० पा०—वित्थडा तं चेव जाव तीसे ।
४. तेवट्ठी (अ,क,ख,त्र,स); तेवट्ठिं (त्रि) ।
५. पणताले (क,ख,स); पणयालीसे (त्रि) ।
६. सं० पा०—गुणेत्ता जाव तं चेव ।
७. अट्ठत्तरिं (अ,ब,स) ।
८. °बाहिरगं (अ,ब.) ।
९. णवरि (अ,क,ब,स); णवरिं (ख,त्रि) ।
१०. जं० ७।३३,३४ ।
११. अंधकारस्स (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
१२. जं० ७।३१,३२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि या मज्झंतियमुहुत्तंसि या अत्थमणमुहुत्तंसि या सव्वत्थ समा उच्चत्तेणं ? हंता तं चेव जाव उच्चत्तेणं ।।

३८. जइ णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि या मज्झंतियमुहुत्तंसि या अत्थमणमुहुत्तंसि या सव्वत्थ समा उच्चत्तेणं, कम्हा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? गोयमा ! लेसापडिघाएणं उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, लेसाहितावेणं[1] मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, लेसापडिघाएणं अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, एवं खलु गोयमा ! तं चेव जाव दीसंति ।।

३९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया किं तीतं खेत्तं गच्छंति ? पडुप्पण्णं खेत्तं गच्छंति ? अणागयं खेत्तं गच्छंति ? गोयमा ! णो तीतं खेत्तं गच्छंति, पडुप्पण्णं खेत्तं गच्छंति, णो अणागयं खेत्तं गच्छंति ।।

४०. तं भंते ! किं पुट्ठं गच्छंति[2] ? °अपुट्ठं गच्छंति ? गोयमा ! पुट्ठं गच्छंति, णो अपुट्ठं गच्छंति ।।

४१. तं भंते ! किं ओगाढं गच्छंति ? अणोगाढं गच्छंति ? गोयमा ! ओगाढं गच्छंति, णो अणोगाढं गच्छंति ।।

४२. तं भंते ! किं अणंतरोगाढं गच्छंति ? परंपरोगाढं गच्छंति ? गोयमा ! अणंतरोगाढं गच्छंति, णो परंपरोगाढं गच्छंति ।।

४३. तं भंते ! किं अणुं गच्छंति ? बायरं गच्छंति ? गोयमा ! अणुंपि गच्छंति, बायरंपि गच्छंति ।।

४४. तं भंते ! किं उड्ढं गच्छंति ? अहे गच्छंति ? तिरियं गच्छंति ? गोयमा ! उड्ढंपि गच्छंति, अहेपि गच्छंति, तिरियंपि गच्छंति ।।

४५. तं भंते ! किं आइं गच्छंति ? मज्झे गच्छंति ? पज्जवसाणे गच्छंति ? गोयमा ! आइंपि गच्छंति, मज्झेवि गच्छंति, पज्जवसाणेवि गच्छंति ।।

४६. तं भंते ! किं सविसयं गच्छंति ? अविसयं गच्छंति ? गोयमा ! सविसयं गच्छंति, णो अविसयं गच्छंति ।।

४७. तं भंते ! किं आणुपुव्विं गच्छंति ? अणाणुपुव्विं गच्छंति ? गोयमा ! आणुपुव्विं गच्छंति, णो अणाणुपुव्विं गच्छंति ।।

४८. तं भंते ! किं एगदिसिं गच्छंति ? छद्दिसिं गच्छंति ? गोयमा !° नियमा छद्दिसिं ।।

४९. एवं ओभासेंति ।।

५०. तं भंते ! किं पुट्ठं ओभासेंति ? एवं आहारपयाइं णेयव्वाइं पुट्ठोगाढमणंतर-अणु-मह-आइ-विसयाणुपुव्वी य जाव णियमा छद्दिसिं ।।

५१. एवं उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ।।

५२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरियाणं किं तीए खेत्ते किरिया कज्जइ ? पडुप्पण्णे

१. लेसाहियावेणं (अ,ब); लेसाभितावेणं (क); लेसाभियावेणं (ख)।

२. सं० पा०—गच्छंति जाव नियमा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खेत्ते किरिया कज्जइ ? अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ? गोयमा ! णो तीए खेत्ते किरिया कज्जइ, पडुप्पण्णे खेत्ते किरिया कज्जइ, णो अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ।।

५३. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ? गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, णो अपुट्ठा कज्जइ जाव णियमा छद्दिसिं ।।

५४. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया केवइयं खेत्तं उड्ढं तवयंति अहे तिरियं च ? गोयमा ! एगं जोयणसयं उड्ढं तवयंति, अट्ठारस जोयणसयाइं अहे तवयंति, सीयालीसं जोयणसहस्साइं दोण्णि य तेवट्ठे जोयणसए एगवीसं च सट्ठिभाए जोयणस्स तिरियं तवयंति[1] ।।

५५. अंतो णं भंते ! माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स जे चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवा ते णं भंते ! देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा, चारट्ठिइया गइरइया गइसमावण्णगा ? गोयमा ! अंतो णं माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स जे चंदिम-सूरिय[2] •गहगण-णक्खत्त° तारारूवा ते णं देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा, णो चारट्ठिइया, गइरइया गइसमावण्णगा उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठाणसंठिएहिं जोयणसाहस्सिएहिं तावखेत्तेहिं, साहस्सियाहिं 'वेउव्वियाहिं, बाहिराहिं'[3] परिसाहिं महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा महया उक्किट्ठसीहणायबोलकल-कलरवेणं[4] अच्छं पव्वयरायं पयाहिणावत्तमंडलचारं मेरुं अणुपरियट्टंति ।।

५६. तेसि णं भंते ! देवाणं जाहे[5] इंदे चुए भवइ से कहमियाणिं पकरेंति ? गोयमा ! ताहे[6] चत्तारि पंच वा[7] सामाणिया देवा[8] तं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव 'तत्थण्णे इंदे'[9] उववण्णे भवइ ।।

५७. इंदट्ठाणे णं भंते ! केवइयं[10] कालं उववाएणं विरहिए ? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं छम्मासे 'उववाएणं विरहिए'[11] ।।

५८. बहिया णं भंते ! माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स जे चंदिम[12]-•सूरिय-गहगण-णक्खत्त°-तारारूवा, तं चेव णेयव्वं, णाणत्तं— विमाणोववण्णगा, णो चारोववण्णगा, चारट्ठिइया, णो गइरइया णो गइसमावण्णगा पक्किट्टगसंठाणसंठिएहिं[13] जोयणसयसाहस्सिएहिं तावखेत्तेहिं, सयसाहस्सियाहिं वेउव्वियाहिं, बाहिराहिं परिसाहिं महयाहयणट्ट-गीय-वाइय[14]- •तंती-तल-

---

१. तवंति (अ,ब) ।
२. सं० पा०—सूरिय जाव तारारूवा ।
३. बाहिरियाहिं वेउव्वियाहिं (जी० ३।८४२; सू० १६।२३) ।
४. उक्किट्ठी° (अ,ब); उक्किट्ठि° (ख); उक्कट्ठि (स) ।
५. जाधे (अ,ब) ।
६. जाव (अ,क,ख,त्रि,ब,स पुवृ) ।
७. × (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स) ।
८. देवाःसमुदितीभूय (पुवृ,हीवृ); देवाः सम्भूय (शावृ) ।
९. तत्थ णं इंदे (त्रि,हीवृ) ।
१०. केवइ (अ,ब); केवति (क,ख,त्रि,स) ।
११. विरहिए उववाएणं (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
१२. सं० पा०—चंदिम जाव तारारूवा ।
१३. पंकिट्टग° (अ,क,ख,त्रि,ब,स,हीवृ) ।
१४. सं० पा०—वाइय जाव भुंजमाणा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं° भुंजमाणा सुहलेसा मंदलेसा मंदायवलेसा चित्तंतरलेसा अण्णोण्णसमोगाढाहिं लेसाहिं कूडाविव ठाणठिया सव्वओ समंता ते पएसे ओभासेंति उज्जोवेंति पभासेंति ।।

५९. तेसि णं भंते ! देवाणं जाहे इंदे चुए भवइ से कहमियाणिं पकरेंति[१] ? •गोयमा ! ताहे चत्तारि पंच वा सामाणिया देवा तं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव तत्थण्णे इंदे उववण्णे भवइ ।।

६०. इंदट्ठाणे णं भंते ! केवइयं कालं उववाएणं विरहिए ? गोयमा ! ° जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ।।

६१. कइ णं भंते ! चंदमंडला पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरस चंदमंडला पण्णत्ता ।।

६२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइयं ओगाहित्ता केवइया चंदमंडला पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे असीयं जोयणसयं ओगाहित्ता पंच चंदमंडला पण्णत्ता ।।

६३. लवणे णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! लवणे णं समुद्दे तिण्णि तीसे जोयणसए ओगाहित्ता, एत्थ णं दस चंदमंडला पण्णत्ता । एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे लवणे य समुद्दे पण्णरस चंदमंडला भवंतीतिमक्खायं ।।

६४. सव्वब्भंतराओ णं भंते ! चंदमंडलाओ केवइयं अबाहाए सव्वबाहिरए चंदमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचदसुत्तरे जोयणसए अबाहाए सव्वबाहिरए चंदमंडले पण्णत्ते ।।

६५. चंदमंडलस्स णं भंते ! चंदमंडलस्स य एस णं केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! पणतीसं-पणतीसं जोयणाइं तीसं च एगसट्ठिभाए[२] जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता चत्तारि चुण्णियाभाए चंदमंडलस्स-चंदमंडलस्स अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

६६. चंदमंडले णं भंते ! केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं, केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा! छप्पण्णं एगसट्ठिभाए[३] जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, अट्ठावीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स बाहल्लेणं ।।

६७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए सव्वब्भंतरए चंदमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! चोयालीसं जोयणसहस्साइं अट्ठ य वीसे जोयणसए अबाहाए सव्वब्भंतरे चंदमंडले पण्णत्ते ।।

६८. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए अब्भंतराणंतरे चंदमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! चोयालीसं जोयणसहस्साइं अट्ठ य छप्पण्णे जोयणसए पण-वीसं[४] च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता चत्तारि[५] चुण्णियाभाए अबाहाए अब्भंतराणंतरे चंदमंडले पण्णत्ते ।।

६९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए अब्भंतरतच्चे चंद-मंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! चोयालीसं जोयणसहस्साइं अट्ठ य बाणउए जोयणसए एगावण्णं[६]

---

१. सं० पा०---पकरेंति जाव जहण्णेणं ।
२. एगट्ठिभाए (अ,क,ख,त्रि,ब,स) प्रायः सर्वत्र ।
३. एगट्ठिभाए (प) ।
४. पणुवीसं (अ,क,ब) अग्रेपि ।
५. चत्तारि य (ख,त्रि,स) ।
६. एक्कापण्णं (अ,ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता एगं चुण्णियाभागं अबाहाए अब्भंतरतच्चे चंदमंडले पण्णत्ते । एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे चंदे 'तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं'[1] संकममाणे-संकममाणे छत्तीसं-छत्तीसं जोयणाइं पणवीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता चत्तारि चुण्णियाभाए एगमेगे मंडले अबाहाए वुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे[2]-अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।।

७०. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए सव्वबाहिरे चंदमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीसं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तीसे जोयणसए अबाहाए सव्वबाहिरए चंदमंडले पण्णत्ते ।।

७१. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए बाहिराणंतरे[3] चंदमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीसं जोयणसहस्साइं दोण्णि य तेणउए जोयणसए पणतीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता तिण्णि चुण्णियाभाए अबाहाए बाहिराणंतरे चंदमंडले पण्णत्ते ।।

७२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए बाहिरतच्चे चंदमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीसं जोयणसहस्साइं दोण्णि य सत्तावण्णे जोयणसए णव य एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता छ चुण्णियाभाए अबाहाए बाहिरतच्चे चंदमंडले पण्णत्ते । एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे चंदे 'तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं'[4] संकममाणे-संकममाणे छत्तीसं-छत्तीसं जोयणाइं पणवीसं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता चत्तारि चुण्णियाए एगमेगे मंडले अबाहाए वुड्ढिं णिवड्ढेमाणे[5]-णिवड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ।।

७३. सव्वब्भंतरे णं भंते ! चंदमंडले केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्चचत्ताले जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसहस्साइं पण्णरस जोयणसयसहस्साइं अउणाणउइं च जोयणाइं किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।।

७४. अब्भंतराणंतरे सा चेव पुच्छा । गोयमा ! णवणउइं जोयणसहस्साइं सत्त य बारसुत्तरे जोयणसए एगावण्णं च एगसट्ठिभागे जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता एगं चुण्णियाभागं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसयसहस्साइं पण्णरस सहस्साइं तिण्णि य एगूणवीसे[6] जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं ।।

७५. अब्भंतरतच्चे णं जाव[7] पण्णत्ते ? गोयमा ! णवणउइं जोयणसहस्साइं सत्त य पंचासीए जोयणसए इगतालीसं[8] च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता

---

१. तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं (अ,क,ख,त्रि,ब,स) अग्रेपि ।
२. अभिवुड्ढेमाणे (ख,त्रि) ।
३. सव्वबाहिराणंतरे (ख,स,शावृ) ।
४. तयणंतराओ तयणंतरं चंदमंडलाओ चंदमंडलं (त्रि,हीवृ) ।
५. णिवुड्ढेमाणे (अ,क,ख,त्रि,प,ब,स) ।
६. अउणवीसे (अ,ब); अउणावीसे (क,ख,त्रिस) ।
७. जं० ७।७३ ।
८. इतालीसं (अ,ब); इयालीसं (क); एगतालीसं (त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोण्णि य चुण्णियाभाए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसयसहस्साइं पण्णरस जोयण-सहस्साइं पंच य इगुणापण्णे[1] जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं। एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे चंदे[2] °तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं° संकममाणे-संकममाणे बावत्तरिं-बावत्तरिं जोयणाइं एगावण्णं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता एगं च चुण्णियाभागं एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे, दो-दो तीसाइं जोयणसयाइं परिरयवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ॥

७६. सव्वबाहिरए णं भंते! चंदमंडले केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते? गोयमा! एगं जोयणसयसहस्सं छच्चसट्ठे जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं तिण्णि य पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं॥

७७. बाहिराणंतरे णं पुच्छा। गोयमा! एगं जोयणसयसहस्सं पंच सत्तासीए[3] जोयण-सए णव य एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता छ चुण्णियाभाए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं पंचासीइं च जोयणाइं परिक्खेवेणं॥

७८. बाहिरतच्चे णं भंते! चंदमंडले जाव[4] पण्णत्ते? गोयमा! एगं जोयणसय-सहस्सं पंच य चउदसुत्तरे जोयणसए एगूणवीसं[5] च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा[6] छेत्ता पंच चुण्णियाभाए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसयसहस्साइं सत्तरस सहस्साइं अट्ठ[1] य पणपण्णे जोयणसए परिक्खेवेणं। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे चंदे[7] °तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं° संकममाणे-संकममाणे बावत्तरिं-बावत्तरिं जोयणाइं एगावण्णं च एगसट्ठिभाए जोयणस्स एगसट्ठिभागं च सत्तहा छेत्ता एगं चुण्णियाभागं एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढिं णिवड्ढेमाणे-णिवड्ढेमाणे दो-दो तीसाइं[8] जोयणसयाइं परिरयवुड्ढिं णिवड्ढेमाणे-णिवड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ॥

७९. जया[9] णं भंते! चंदे सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइयं खेत्तं गच्छइ? गोयमा! पंच जोयणसहस्साइं तेवत्तरिं च जोयणाइं सत्तत्तरिं च चोयाले भागसए गच्छइ मंडलं तेरसहिं सहस्सेहिं सत्तहिं य पण-वीसेहिं[10] सएहिं छेत्ता। तया णं इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एगवीसाए य सट्ठिभाएहिं जोयणस्स चंदे चक्खुप्फासं हव्वमा-गच्छइ॥

---

१. अउणपण्णे (अ,त्रि,ब); अउणापण्णे (क,स); अगुणापण्णे (ख)।
२. सं० पा०—चंदे जाव संकममाणे।
३. सत्तावीसे (अ,ख,ब)।
४. जं० ७।७३।
५. अउणावीसं (अ,क,ख,त्रि,स)।
६. सत्त (अ,क,ख,ब)।
७. सं० पा०—चंदे जाव संकममाणे।
८. असीयाइं (अ,ब)।
९. जदा (अ,क,ख,ब)।
१०. पणुवीसेहिं (अ,क,ख,त्रि,ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८०. जया णं भंते ! चंदे अब्भंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ[1], •तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं° केवइयं खेत्तं गच्छइ ? गोयमा ! पंच जोयणसहस्साइं सत्तत्तरिं च जोयणाइं छत्तीसं च चोवत्तरे[2] भागसए गच्छइ मंडलं तेरसहिं[3] •सहस्सेहिं सत्तहि य पणवीसेहिं सएहिं° छेत्ता[4] ॥

८१. जया णं भंते ! चंदे अब्भंतरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइयं खेत्तं गच्छइ ? गोयमा ! पंच जोयणसहस्साइं असीइं च जोयणाइं तेरस य भागसहस्साइं तिण्णि य एगूणतीसे[5] भागसए गच्छइ मंडलं तेरसहिं[6] •सहस्सेहिं सत्तहि य पणवीसेहिं सएहिं° छेत्ता। एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे चंदे तयणंतराओ[7] •मंडलाओ तयणंतरं मंडलं° संकममाणे-संकममाणे तिण्णि-तिण्णि जोयणाइं छण्णउइं च पंचावण्णे भागसए एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ॥

८२. जया णं भंते ! चंदे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइयं खेत्तं गच्छइ ? गोयमा ! पंच जोयणसहस्साइं एगं च पणवीसं जोयणसयं अउणत्तरिं च णउए भागसए गच्छइ मंडलं तेरसहिं भागसहस्सेहिं सत्तहि य[8] •पणवीसेहिं सएहिं° छेत्ता। तया णं इहगयस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयण-सहस्सेहिं अट्ठहि य एगत्तीसेहिं जोयणसएहिं चंदे चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ ॥

८३. जया णं भंते ! बाहिराणंतरं पुच्छा। गोयमा ! पंचजोयणसहस्साइं एक्कं च एक्कवीसुत्तरं[9] जोयणसयं एक्कारस य सट्ठे भागसहस्से गच्छइ मंडलं तेरसहिं[10] •सहस्सेहिं सत्तहि य पणवीसेहिं सएहिं° छेत्ता ॥

८४. जया णं भंते ! बाहिरतच्चं पुच्छा। गोयमा ! पंचजोयणसहस्साइं एगं च अट्ठारसुत्तरं जोयणसयं चोद्दस य पंचुत्तरे भागसए गच्छइ मंडलं तेरसहिं सहस्सेहिं सत्तहिं पणवीसेहिं सएहिं छेत्ता। एवं खलु एएणं उवाएणं[11] •पविसमाणे चंदे तयणंतराओ मंडलाओ तयणंतरं मंडलं° संकममाणे-संकममाणे तिण्णि-तिण्णि जोयणाइं छण्णउइं च पंचावण्णे भागसए एगमेगे मंडले मुहुत्तगइं णिवड्ढेमाणे-णिवड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ ॥

८५. कइ णं भंते ! णक्खत्तमंडला पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ णक्खत्तमंडला पण्णत्ता ॥

८६. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइयं ओगाहित्ता केवइया णक्खत्तमंडला पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे असीयं जोयणसयं ओगाहेत्ता, एत्थ णं दो णक्खत्तमंडला पण्णत्ता ॥

---

१. सं० पा०—चरइ जाव केवइयं।
२. चोयत्तरे (अ,ब)।
३. सं० पा०—तेरसहिं जाव छेत्ता।
४. केषुचित् सूत्रेषु चन्द्रस्य चक्षुःस्पर्शस्य प्रतिपत्तिर्नैव दृश्यते।
५. अउणतीसे (अ,त्रि,ब); अउणातीसे (ख)।
६. सं० पा०—तेरसहिं जाव छेत्ता।
७. सं० पा०—तयणंतराओ जाव संकममाणे।
८. सं०पा०—य जाव छेत्ता।
९. एक्कवीसं (प)।
१०. सं० पा० -तेरसहिं जाव छेत्ता
११. सं० पा०—उवाएणं जाव संकममाणे।

८७. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवइयं ओगाहेत्ता केवइयं णक्खत्तमंडला पण्णत्ता ? गोयमा ! लवणे णं समुद्दे तिण्णि तीसे जोयणसए ओगाहित्ता, एत्थ णं छ णक्खत्तमंडला पण्णत्ता। एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे लवणसमुद्दे अट्ठ णक्खत्तमंडला भवंतीतिमक्खायं[1] ॥

८८. सव्वब्भंतराओ णं भंते ! णक्खत्तमंडलाओ केवइयं[2] अबाहाए सव्वबाहिरए णक्खत्तमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचदसुत्तरे जोयणसए अबाहाए सव्वबाहिरए णक्खत्तमंडले पण्णत्ते ॥

८९. णक्खत्तमंडलस्स णं भंते ! णक्खत्तमंडलस्स य एस णं केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दो जोयणाइं णक्खत्तमंडलस्स[3] णक्खत्तमंडलस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

९०. णक्खत्तमंडले णं भंते ! केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं, केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! गाउयं आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, अद्धगाउयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

९१. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए सव्वब्भंतरे णक्खत्तमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! चोयालीसं जोयणसहस्साइं अट्ठ य वीसे जोयणसए अबाहाए सव्वब्भंतरे णक्खत्तमंडले पण्णत्ते ॥

९२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे मंदरस्स पव्वयस्स केवइयं अबाहाए सव्वबाहिरए णक्खत्तमंडले पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीसं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तीसे जोयणसए अबाहाए सव्वबाहिरए णक्खत्तमंडले पण्णत्ते ॥

९३. सव्वब्भंतरे णं भंते ! णक्खत्तमंडले केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! णवणउइं जोयणसहस्साइं छच्चचत्ताले जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि य जोयणसयसहस्साइं पण्णरस जोयणसहस्साइं एगूणणवइं च जोयणाइं किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥

९४. सव्वबाहिरए णं भंते ! णक्खत्तमंडले केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! एगं जोयणसयसहस्सं छच्च सट्ठे जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस य जोयणसहस्साइं तिण्णि य पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥

९५. जया णं भंते ! णक्खत्ते सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइयं खेत्तं गच्छइ ? गोयमा ! पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य पण्णट्ठे जोयणसए अट्ठारस य भागसहस्से दोण्णि य तेवट्ठे भागसए गच्छइ मंडलं एक्कवीसाए भागसहस्सेहिं णवहि य सट्ठेहिं सएहिं छेत्ता ॥

९६. जया णं भंते ! णक्खत्ते सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं एगमेगेणं मुहुत्तेणं केवइयं खेत्तं गच्छइ ? गोयमा ! पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य एगूण-

१. °मक्खाया (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
२. केवइयाए (प) सर्वत्र।
३. °मंडलस्स य (त्रि,प)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीसे[1] जोयणसए सोलस य भागसहस्सेहिं तिण्णि य पण्णट्ठे[2] भागसए गच्छइ मंडलं एग-वीसाए भागसहस्सेहिं णवहि य सट्ठेहिं सएहिं छेत्ता ॥

९७. एए णं भंते ! अट्ठ णक्खत्तमंडला कइहिं चंदमंडलेहिं समोयरंति ? गोयमा ! अट्ठहिं चंदमंडलेहिं समोयरंति, तं जहा—पढमे चंदमंडले तइए छट्ठे सत्तमे अट्ठमे दसमे एक्कारसमे पण्णरसमे चंदमंडले ॥

९८. एगमेगेणं भंते ! मुहुत्तेणं चंदे केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ? गोयमा ! जं-जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तस्स-तस्स मंडलपरिक्खेवस्स 'सत्तरस अट्ठट्ठे'[3] भागसए गच्छइ मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउईए य सएहिं छेत्ता ॥

९९. एगमेगेणं भंते ! मुहुत्तेणं सूरिए केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ? गोयमा ! जं-जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तस्स-तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारसतीसे भागसए गच्छइ मंडलं सयसहस्सेहिं अट्ठाणउईए य सएहिं छेत्ता ॥

१००. एगमेगेणं भंते ! मुहुत्तेणं णक्खत्ते केवइयाइं भागसयाइं गच्छइ ? गोयमा ! जं-जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तस्स-तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसे भागसए गच्छइ मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउईए य सएहिं छेत्ता ॥

१०१. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया 'उदीण-पाईणमुग्गच्छ'[4] पाईण-दाहिण-मागच्छंति, पाईण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पडीणमागच्छंति, दाहिणपडीणमुग्गच्छ पडीण-उदीणमागच्छंति, पडीणउदीणमुग्गच्छ उदीण-पाईणमागच्छंति ? हंता गोयमा ! जहा पंचमसए पढमे उद्देसे जाव[5] णेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ! इच्चेसा जंबुद्दीवपण्णत्ती सूरपण्णत्ती वत्थुसमासेणं समत्ता[6] भवइ ॥

१०२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे चंदिमा[7] उदीण-पाईणमुग्गच्छइ पाईण-दाहिणमा-गच्छंति, जहा सूरवत्तव्वया जहा पंचमसयस्स दसमे उद्देसे जाव[8] अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ! इच्चेसा जंबुद्दीवपण्णत्ती चंदपण्णत्ती वत्थुसमासेणं समत्ता भवइ ॥

१०३. कइ णं भंते ! संवच्छरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तं जहा—णक्खत्तसंवच्छरे जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे सणिच्छर-संवच्छरे[9] ॥

१०४. णक्खत्तसंवच्छरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा—सावणे भद्दवए आसोए[10] °कत्तिए मग्गसिरे पोसे माहे फग्गुणे चेत्ते वइसाहे

१. अउणापण्णे (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ)।
२. पणट्ठे (ब)।
३. सत्तरसट्ठट्ठे (अ,ब); सत्तरट्ठसट्ठे (स); सप्तदशशतानि अष्टषष्ठिभागैरधिकानि गच्छति (शावृ)।
४. उदीयिपादीण° (अ,ब) अग्रेपि।
५. भ० ५।३-२०।
६. पण्णत्ता (त्रि, हीवृ)।
७. चंदमा (त्रि)।
८. भ० ५।२३०।
९. सनिच्छर° (ब)।
१०. सं० पा०— आसोए जाव आसाढे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेट्ठामूले[2] आसाढे, जं वा विहप्फइ[1] महग्गहे दुवालसेहिं संवच्छरेहिं सव्वणक्खत्तमंडलं समाणेइ। सेत्तं णक्खत्तसंवच्छरे॥

१०५. जुगसंवच्छरे णं भंते! कइविहे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—चंदे चंदे अभिवड्ढिए[2] चंदे अभिवड्ढिए चेव॥

१०६. पढमस्स णं भंते! चंदसंवच्छरस्स कइ पव्वा पण्णत्ता? गोयमा! चउव्वीसं पव्वा पण्णत्ता॥

१०७. बिइयस्स णं भंते! चंदसंवच्छरस्स कइ पव्वा पण्णत्ता? गोयमा! चउव्वीसं पव्वा पण्णत्ता॥

१०८. एवं पुच्छा तइयस्स। गोयमा! छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता॥

१०९. चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स चोव्वीसं पव्वा पण्णत्ता॥

११० पंचमस्स णं अभिवड्ढियस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता। एवामेव सपुव्वावरेणं पंच-संवच्छरिए जुए एगे चउव्वीसे पव्वसए पण्णत्ते। सेत्तं जुगसंवच्छरे॥

१११. पमाणसंवच्छरे णं भंते! कइविहे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—णक्खत्ते चंदे उऊ[3] आइच्चे अभिवड्ढिए। सेत्तं पमाणसंवच्छरे॥

११२. लक्खणसंवच्छरे णं भंते! कइविहे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—

गाहा—
समयं णक्खत्ता जोगं जोयंति[4] समयं उदू परिणमंति।
णच्चुण्ह णाइसीओ, बहूदओ होइ णक्खत्ते॥१॥
ससि[5] समगं[6] पुण्णमासिं, जोएंति विसमचारिणक्खत्ता।
कडुओ बहूदओ वा[7], तमाहु संवच्छरं चंदं॥२॥
विसमं पवालिणो परिणमंति, अणुदूसु[8] देंति पुप्फफलं।
वासं न सम्म वासइ, तमाहु संवच्छरं कम्मं॥३॥
पुढविदगाणं तु[9] रसं, पुप्फफलाणं च देइ आइच्चो।
अप्पेणवि वासेणं, सम्मं निप्फज्जए सासं[10]॥४॥
आइच्चतेयतविया, खणलवदिवसा उऊ परिणमंति।
'पूरेइ य णिण्णथले'[11], तमाहु अभिवड्ढियं जाण॥५॥

---

१. वहस्सई (अ,क,ख,ब,स)।
२. अहिवड्ढिए (अ,ब) अग्रेपि।
३. उडू (अ); उद्दू (क,ख,त्रि,ब)।
४. जोएंति (अ,क,ब)।
५. 'ससि' त्ति विभक्तिलोपात् शशिना (हीवृ)।
६. समयं (अ,ब); समय (क,स); समग (ख,त्रि,प); सगल (ठाणं ५।२१३।२)।
७. या (अ,ख,ब); आ (प)।
८. अणुऊसु (प)।
९. च (प)।
१०. सस्सं (क,ख,त्रि,प)।
११. पूरिति य णिण्णतले (अ,ब); स्थानाङ्गे (५।२१३।५) 'पूरेति रेणु थलयाइं' इति पाठो लभ्यते, किन्तु सूर्यप्रज्ञप्ति-चन्द्रप्रज्ञप्त्योः (१०।१२६) 'पूरेति णिण्णथलए' इति पाठो दृश्यते। वृत्तिकृता मलयगिरिणापि 'निम्नस्थानानि स्थलानि च जलेन पूरयति' इति व्याख्यातमस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११३. सणिच्छरसंवच्छरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते, तं जहा --

गाहा -- अभिई सवणे धणिट्ठा, सयभिसया दो य होंति भद्दवया ।
रेवइ अस्सिणि भरणी, कत्तिय तह रोहिणी चेव ॥१॥

जाव[1] उत्तराओ आसाढाओ जं वा सणिच्चरे महग्गए तीसाए संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्त-मंडलं समाणेइ । सेत्तं सणिच्चरसंवच्छरे ॥

११४. एगमेगस्स णं भंते ! संवच्छरस्स कइ मासा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुवालस मासा पण्णत्ता । तेसि णं दुविहा णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—लोइया लोउत्तरिया य । तत्थ लोइया णामा इमे[2], तं जहा --सावणे भद्दवए जाव[3] आसाढे । लोउत्तरिया णामा[4] इमे, तं जहा--

वृत्तं— अभिणंदिए[5] पइट्ठे य, विजए पीइवद्धणे ।
सेयंसे य[6] सिवे चेव, सिसिरे य सहेमवं ॥१॥
णवमे वसंतमासे, दसमे कुसुमसंभवे ।
एक्कारसे 'निदाहे य'[7], वणविरोहे[8] य बारसे ॥२॥

११५. एगमेगस्स णं भंते ! मासस्स कइ पक्खा पण्णत्ता ? गोयमा ! दो पक्खा पण्णत्ता, तं जहा—बहुलपक्खे य सुक्कपक्खे[9] य ॥

११६. एगमेगस्स णं भंते ! पक्खस्स कइ दिवसा पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरस दिवसा पण्णत्ता, तं जहा —पडिवादिवसे बिइयादिवसे जाव पण्णरसीदिवसे ॥

११७. एएसि णं भंते ! पण्णरसण्हं दिवसाणं कइ णामधेज्जा[10] पण्णत्ता? गोयमा ! पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

गाहा— 'पुव्वंगे सिद्धमणोरमे य, तत्तो'[11] मणोहरे[12] चेव ।
जसभद्दे य जसधरे, छट्ठे सव्वकामसमिद्धे य ॥१॥
इंदमुद्धाभिसित्ते य, सोमणस[13] धणंजए य बोद्धव्वे ।
अत्थसिद्धे अभिजाए, अच्चसणे सयंजए चेव ॥२॥
अग्गिवेसे उवसमे, दिवसाणं होंति णामधेज्जाइं ।

---

१. जं० ७।१२८ ।
२. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
३. जं० ७।१०४ ।
४. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
५. अभिणादिए (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ); क्वचिदभिनंदन इति पठ्यते (पुवृ); सूर्य-प्रज्ञप्तिवृत्तौ तु अभिनन्दितस्थाने अभिनन्दः (शावृ); चन्द्रप्रज्ञप्त्यादौ तु 'अहिणंदिए' त्ति पाठस्तत्राभिनंदित इति (हीवृ) ।
६. × (अ,क,ख,त्रि,ब) ।
७. य णिदाहे (ब) ।
८. वणवरोधे (क,ख); वणविरोहि (त्रि,हीवृ); वणविरोधे (स); सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ तु········ वणविरोहस्थाने तु वणविरोधि (शावृ) ।
९. सुक्किलपक्खे (ख,स) ।
१०. णामधेया (त्रि) ।
११. पुव्वंगे चेव मणोरमे य तत्तो य (त्रि) ।
१२. मणोरहे (अ,क,ख,ब) ।
१३. सोमणसे (क,त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११८. एएसि णं भंते ! पण्णरसण्हं दिवसाणं कइ तिही पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरस तिही पण्णत्ता, तं जहा—

णंदे भद्दे जए तुच्छे, पुण्णे पक्खस्स पंचमी ।
पुणरवि— णंदे भद्दे जए तुच्छे, पुण्णे पक्खस्स दसमी ।
पुणरवि— णंदे भद्दे जए तुच्छे, पुण्णे पक्खस्स पण्णरसी ।

एवं एते तिगुणा तिहीओ सव्वेसिं दिवसाणं ।

११९. एगमेगस्स णं भंते ! पक्खस्स कई राईओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पण्णरस राईओ पण्त्ताओ, तं जहा—पडिवाराई जाव पण्णरसीराई ॥

१२०. एयासि णं भंते ! पण्णरसण्हं राईणं कइ णामधेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

गाहा— उत्तमा[1] य सुणक्खत्ता, एलावच्चा जसोहरा ।
सोमणसा चेव तहा, सिरिसंभूया य बोद्धव्वा ॥१॥
विजया य वेजयंति, जयंति अपराजिया य इच्छा य ।
समाहारा[2] चेव तहा, तेया य तहेव[3] अइतेया[4] ॥१॥
देवाणंदा णिरई,[5] रयणीणं णामधेज्जाइं ।

१२१. एयासि णं भंते! पण्णरसण्हं राईणं कइ तिही पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरस तिही पण्णत्ता, तं जहा—उग्गवई, भोगवई, जसवई, सव्वसिद्धा[6] सुहाणामा ।
पुणरवि— उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा ।
पुणरवि— उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा ।
एवं एए तिगुणा तिहीओ सव्वेसिं राईणं ॥

१२२. एगमेगस्स णं भंते ! अहोरत्तस्स कइ मुहुत्ता पण्णत्ता ? गोयमा ! तीसं मुहुत्ता[7] पण्णत्ता, तं जहा—

गाहा— रोद्दे[8] सेए मित्ते, वाउ सुपीए[9] तहेव अभिचंदे[10] ।
माहिंद[11] बलव[12] बंभे,[13] बहुसच्चे चेव[14] ईसाणे[15] ॥१॥

---

१. उत्तरमा (अ,ब) ।
२. महाहारा (अ,ब) ।
३. तहा (प) ।
४. अभितेया (अ,ब) ।
५. निरतीति पंचदश्या एव द्वितीयं नाम (हीवृ) ।
६. सव्वट्ठसिद्धा (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ) सर्वत्र । सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ तु सर्वार्थसिद्धास्थाने सर्वसिद्धेति दृश्यते (पुवृ) ।
७. मुहुत्ता मुहुत्तग्गेणं (सम ३०।३) ।
८. रुद्दे (त्रि,प) ।
९. सुवीए (क,ख,त्रि,प,स) ।
१०. अभिणंदे (अ,क,ख,ब) ।
११. महिंदे (अ,क,ख,ब) ।
१२. बलवं (अ,क,त्रि,ब,स); पलंबे (सम० ३०।३) ।
१३. पम्ह (अ,ब); पक्ष्मः क्वचिद् ब्रह्मेति दृश्यते (पुवृ); पक्ष्मः (चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्ति १०।८४) । अतः परं समवायाङ्गे (३०।३) नाम्नां व्यत्ययो भेदश्च दृश्यते—सच्चे आणंदे विजए वीससेणे वायावच्चे उवसमे ईसाणे तिट्ठे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तट्ठे[1] य भावियप्पा[2], वेसमणे वारुणे[3] य आणंदे ।
विजए य वीससेणे[4], पायावच्चे[5] उवसमे य ॥२॥
गंधव्व[6] अग्गिवेसे, सयवसहे आयवं य अममे य ।
अणवं भोमे च[7] रिसहे[8], सव्वट्ठे[9] रक्खसे चेव[10] ॥१॥

१२३. कइ णं भंते ! करणा पण्णत्ता ? गोयमा ! एक्कारस करणा पण्णत्ता, तं जहा—बवं बालवं कोलवं थीविलोयणं[11] गराइ[12] वणिजं[13] विट्ठी सउणी चउप्पयं णागं किंथुग्घं ॥

१२४. एएसि णं भंते ! एक्कारसण्हं करणाणं कइ करणा चरा, कइ करणा थिरा पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्त करणा चरा, चत्तारि करणा थिरा पण्णत्ता, तं जहा—बवं बालवं कोलवं थीविलोयणं गराइ वणिजं विट्ठी—एए णं सत्त करणा चरा। चत्तारि करणा थिरा पण्णत्ता, तं जहा—सउणी चउप्पयं णागं किंथुग्घं—एए णं चत्तारि करणा थिरा ॥

१२५. एए णं भंते ! चरा थिरा वा कया[14] भवंति ? गोयमा ! सुक्कपक्खस्स पडिवाए[15] राओ बवे करणे भवइ। बिइयाए दिवा बालवे[16] करणे भवइ, राओ[17] कोलवे[18] करणे भवइ। तइयाए दिवा थीविलोयणं करणं भवइ, राओ गराइ करणं भवइ। चउत्थीए दिवा वणिजं राओ विट्ठी। पंचमीए दिवा बवं, राओ बालवं। छट्ठीए दिवा कोलवं, राओ थीविलोयणं। सत्तमीए दिवा गराइ, राओ वणिजं। अट्ठमीए दिवा विट्ठी, राओ बवं। णवमीए दिवा बालवं, राओ कोलवं। दसमीए दिवा थीविलोयणं, राओ गराइ। एक्कारसीए दिवा वणिजं, राओ विट्ठी। बारसीए दिवा बवं, राओ बालवं। तेरसीए दिवा कोलवं, राओ थीविलोयणं चउद्दसीए दिवा गराइ करणं, राओ वणिजं। पुण्णिमाए दिवा विट्ठी करणं, राओ बवं करणं भवइ।

भावियप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवं अवधं तट्ठवे भूमहे रिसभे सव्वट्ठसिद्धे रक्खसे ।
१४. च्चेव (अ) ।
१५. तीसाणे (अ,ब) ।
१. तत्थे (क,ख); सट्ठे (त्रि); त्वष्टा (हीवृ, चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्ति १०।१३) ।
२. भावियाया (ख) ।
३. अरर: (चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्ति (१०।८४) ।
४. विजयसेन: (चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्ति १०।८४) ।
५. पादावच्चे (अ,ब) ।
६. गंधव्वे (अ,ब); गंधव्वे य (क,ख,स) ।
७. × (ख,त्रि,प,स) ।
८. वसहे (ख,त्रि,प) ।
९. सत्यवान् (चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्ति १०।८४) ।
१०. तिय (अ,ब); ईय (क); इय (ख,स); इया (त्रि) ।
११. थीविलोवणं (अ); थीवलोवणं (ब); थीलोयणं (स); अन्यत्रास्य स्थाने तैतिलं (शावृ) ।
१२. गराइं (त्रि); अन्यत्र गरं (शावृ); ज्योतिःशास्त्रेषु गरादि स्थाने गरं स्त्रीविलोचनस्थाने तैतलमिति (हीवृ) ।
१३ वाणिज्जं (त्रि); वाणिज्यं (पुवृ) ।
१४. कता (अ,ब); कदा (त्रि) ।
१५. पडिपदे (अ,ब); पडिवए (क,ख,स) ।
१६. पालवे (अ,ब) ।
१७. रातो (ब) ।
१८. कोलते (स) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुलपक्खस्स पडिवाए[1] दिवा[2] बालवं, राओ कोलवं। बिइयाए दिवा थीविलोयणं, राओ गराइ। तइयाए दिवा वणिजं, राओ विट्ठी। चउत्थीए दिवा बवं, राओ बालवं। पंचमीए दिवा कोलवं, राओ थीविलोयणं। छट्ठीए दिवा गराइ, राओ वणिजं। सत्तमीए दिवा विट्ठी, राओ बवं। अट्ठमीए दिवा बालवं, राओ कोलवं। णवमीए दिवा थीविलोयणं, राओ गराइ। दसमीए दिवा वणिजं, राओ विट्ठी। एक्कारसीए दिवा बवं राओ बालवं। बारसीए दिवा कोलवं, राओ थीविलोयणं। तेरसीए दिवा गराइ, राओ वणिजं। चउद्दसीए दिवा विट्ठी, राओ सउणी। अमावसाए[3] दिवा चउप्पयं, राओ णागं। सुक्कपक्खस्स पडिवाए[4] दिवा किंथुग्घं करणं भवइ॥

१२६. किमाइया णं भंते! संवच्छरा, किमाइया अयणा, किमाइया उऊ[5], किमाइया मासा, किमाइया पक्खा, किमाइया अहोरत्ता, किमाइया मुहुत्ता, किमाइया करणा, किमाइया णक्खत्ता पण्णत्ता? गोयमा! चंदाइया संवच्छरा, दक्खिणाइया अयणा, पाउसाइया[6] उऊ, सावणाइया मासा, बहुलाइया पक्खा, दिवसाइया अहोरत्ता, रोद्दाइया मुहुत्ता बालवाइया[7] करणा, अभिजियाइया[8] णक्खत्ता पण्णत्ता समणाउसो[9]!॥

१२७. पंचसंवच्छरिए णं भंते! जुगे केवइया अयणा, केवइया उऊ, एवं मासा पक्खा अहोरत्ता, केवइया मुहुत्ता पण्णत्ता? गोयमा! पंचसंवच्छरिए णं जुगे दस अयणा, तीसं उऊ, सट्ठी मासा, एगे वीसुत्तरे पक्खसए, अट्ठारसतीसा अहोरत्तसया, चउप्पण्णं मुहुत्तसहस्सा णव य सया पण्णत्ता।

गाहा— जोगो देवय तारग्ग, गोत्त संठाण चंदरविजोगो।
कुल पुण्णिम अवमंसा य, सण्णिवाए य णेया य॥१॥

१२८. कइ णं भंते! णक्खत्ता पण्णत्ता? गोयमा! अट्ठावीसं णक्खत्ता पण्णत्ता, तं जहा- अभिई सवणो[10] धणिट्ठा सयभिसया पुव्वभद्दवया उत्तरभद्दवया रेवई अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी मियसिरं[11] अद्दा पुणव्वसू पूसो[12] अस्सेसा मघा पुव्वफग्गुणी उत्तरफग्गुणी हत्थो चित्ता साइ विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलं पुव्वासाढा उत्तरासाढा॥

१२९. एएसि णं भंते! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता, जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति[12]? कयरे णक्खत्ता, जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोयं जोएंति? कयरे णक्खत्ता, जे णं चंदस्स दाहिणेणवि[13] उत्तरेणवि पमद्दंपि जोगं जोएंति? कयरे

---

१. पडिवए (अ,ख,ब,स); पाडिवए (क,त्रि)।
२. दिया (अ,ब)।
३. अवामंसाए (अ,ब)।
४. पाडिवाए (अ,क,ब); पडिवए (ख)।
५ उदू (अ,त्रि,ब)।
६. पाउसातिया (अ,ब)।
७. ववातिया (अ,ब); बवादिया (क,ख,स); बवादीनि (पुवृ); बालवादिकानि करणानि बहुलप्रतिपद्दिवसे तस्यैव सम्भवात् (शावृ)।
८. अभिजिदादिया (अ,ब); अभिजादिया (क,स); अभिजादीया (ख)।
९. समणे (अ,ब)।
० मगसिरं (ब)।
१. पुस्सो (अ,क,ख,त्रि,ब,स)।
१२. जोयंति (अ); जोगंति (ब)।
१३. दाहिणेणंपि (प)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णक्खत्ता, जे णं चंदस्स दाहिणेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति ? कयरे णक्खत्ता, जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोयं जोएंति ? गोयमा ! एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं, तत्थ णं[1], जेते णक्खत्ता 'जे णं'[2] सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति, ते णं 'छ, तं'[3] जहा----

गाहा— संठाण[4] अद्द पुसो, सिलेस हत्थो तहेव मूलो य ।
बाहिरओ बाहिरमंडलस्स छप्पेते णक्खत्ता ॥१॥

तत्थ[5] णं जेते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, ते णं बारस, तं जहा--- अभिई[6] सवणो[7] धणिट्ठा सयभिसया पुव्वभद्दवया उत्तरभद्दवया[8] रेवई अस्सिणी भरणी पुव्वफग्गुणी[9] उत्तरफग्गुणी[10] साई । तत्थ णं जेते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणवि[11] च उत्तरेणवि[12] पमद्दंपि जोगं जोएंति, ते णं सत्त, तं जहा- कत्तिया[13] रोहिणी पुणव्वसू मघा चित्ता विसाहा अणुराहा । तत्थ णं जेते णक्खत्ता, जे णं सया चंदस्स दाहिणओवि पमद्दंपि जोगं जोएंति, ताओ णं दुवे आसाढाओ । सव्वबाहिरए मंडले जोगं जोइंसु वा जोइंति वा जोइस्संति वा । तत्थ णं जेसे णक्खत्ते, जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोगं जोएइ सा णं एगा जेट्ठा ॥

१३०. एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? गोयमा ! बम्हदेवयाए पण्णत्ते । सवणे[14] णक्खत्ते विण्हुदेवयाए पण्णत्ते । धणिट्ठा णक्खत्ते वसुदेवयाए पण्णत्ते । एएणं कमेणं णेयव्वा अणुपरिवाडीए[15] इमाओ देवयाओ -- बम्हा विण्हू वसू वरुणे अए अभिवड्ढी[16] पूसे आसे जमे अग्गी पयावई सोमे रुद्दे अदिती वहस्सई[17] सप्पे पिऊ भगे अज्जम सविया तट्ठा वाऊ इंदग्गी मित्तो इंदे णिरई आऊ विस्सा य, एवं णक्खत्ताणं 'एताए परिवाडीए'[18] णेयव्वा जाव उत्तरासाढा किंदेवया पण्णत्ता ? गोयमा ! विस्सदेवया[19] पण्णत्ता ॥

---

१. × (अ,ब) ।
२. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
३. छत्तं (अ,ब) ।
४. मृगशिरः (सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्ति, पत्र १३८) ।
५. समवायांगे (९।६) अस्मिन् प्रकरणे नव नक्षत्राणामुल्लेखो विद्यते—अभीजियाइया नव नक्खत्ता चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, तं जहा—अभीजि सवणो धणिट्ठा सयभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तरापोट्ठवया रेवई अस्सिणी भरणी ।
६. अभिती (अ,ब,स); अभिवी (क,ख) ।
७. समणो (अ,ब) ।
८. उत्तराभद्दवया (त्रि); उत्तराभद्दवता (ब) ।
९. पुव्वा° (क,ख,ब,स) ।
१०. उत्तरा° (स) ।
११. दाहिणओवि (प) ।
१२. उत्तरओवि (प) ।
१३. कित्तिया (क,ख,स) ।
१४. समणे (अ,ब) ।
१५. अणुपरिवाडीय (अ,क,ख,ब,स); अणुपरिवाडी (प) ।
१६. विविड्ढी (अ,क,ख,ब); अभिवुड्ढी (त्रि); अहिविड्ढी (स); अभिवृद्धिः क्वचिद् विवृद्धि- ग्रन्थान्तरे अहिर्बुध्नः (पुवृ); अभिवृद्धिः अन्य- त्राहिर्बुध्नः (शावृ); अभिवृद्धिः ज्योतिःशास्त्रे तु अस्याहिर्बुध्ननामेति (हीवृ) ।
१७. पहस्सती (अ,ब); बहप्फई (त्रि) ।
१८. एया परिवाडी (प) ।
१९. वीसु° (अ,ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३१. एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिईणक्खत्ते कइतारे पण्णत्ते ? गोयमा ! तितारे पण्णत्ते । एवं णेयव्वा जस्स जइयाओ[1] ताराओ, इमं च तं तारग्गं---

गाहा— तिग-तिग पंचेगसयं[2], दुग-दुग 'बत्तीसगं तिग-तिगं च'[3] ।
छप्पंचग-तिग-एक्कग-पंचग[4]-तिग-छक्कगं चेव ॥१॥
सत्तग-दुग-दुग-पंचग, एक्केक्कग-पंच-चउ-तिगं चेव ।
एक्कारसग-चउक्कं, चउक्कगं चेव तारग्गं ॥२॥

१३२. एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई[5] णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? गोयमा ! मोग्गलायणसगोत्ते ।

गाहा— मोग्गलायण[6] संखायणे य, तह अग्गभाव[7] कण्णिल्ले[8] ।
तत्तो य जाउकण्णे[9], धणंजए[10] चेव बोद्धव्वे ॥१॥
पुस्सायणे[11] य अस्सायणे[12] य, भग्गवेसे[13] य अग्गिवेसे[14] य ।
गोयम[15] भारद्दाए, लोहिच्चे चेव वासिट्ठे ॥२॥
ओमज्जायण मंडव्वायणे[16] य, पिंगायणे य गोवल्ले[17] ।
कासव कोसिय दब्भा य, चामरच्छाय सुंगा य ॥३॥
गोलव्वायण[18] तेगिच्छायणे य कच्चायणे हवइ मूले ।
तत्तो य वज्झियायण, वग्घावच्चे य गोत्ताइं ॥४॥

१३३. एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिईणक्खत्ते किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! गोसीसावलिसंठिए पण्णत्ते,

गाहा— गोसीसावलि काहार[19], सउणि पुप्फोवयार[20] वावी य ।
णावा आसक्खंधग, भग छुरघरए[21] य सगडुद्धी ॥१॥

---

१. जत्तियाओ (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
२. पंचगसय (प) ।
३. बत्तीसगतिगं तह तिगं च (प) ।
४. पंच (अ,क,ख,त्रि,ब) ।
५. अभीयाइ (अ,ब); अभीई आदी (क,ख) ।
६. मोग्गल्याण (प) ।
७. अत्तभाव (अ,ख,ब,स); अत्त (क); अग्गताव (त्रि, हीवृ) । सूर्यप्रज्ञप्तेश्चन्द्रप्रज्ञप्तेश्च हस्तलिखितादर्शेषु उद्धृतासु जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिगाथासु 'अग्गभाव' इति पदं दृश्यते ।
८. कण्णेल्ले (अ,ब); कण्णेले (क); कालण्णे (ख) कण्णेले (स) ।
९. जातुकण्णी (अ,ब); जानुकण्णं (क); गजाउकण्णी (ख) ।
१०. धणंजया (अ,ख,ब); धणंधया (क) ।
११. पुस्सायणि (अ,ख,ब,स); दुस्सायणि (क) ।
१२. अस्सासयणी (अ,ख,ब); अस्सायणी (स) ।
१३. भग्गवेसी (अ,क,ब); भग्गविसी (ख) ।
१४. अग्गिवेसी (अ,क,ख,ब) ।
१५. गोदम (अ,ब) ।
१६. मणुव्वायणे (अ,क,ख,ब) ।
१७. गोवल्ला (अ,क,ख,ब,स) ।
१८. गोलव्वाय (क,ख,स); गोलव्वाण (त्रि); गोवल्लायण (प) ।
१९. काहार (त्रि) ।
२०. पुप्फोवकार (अ,क,ख,ब) ।
२१. छुरधारा (त्रि) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिगसीसावलि रुहिरबिंदु[1] तुल वद्धमाणग पडागा[2] ।
पागारे पलियंके[3], हत्थे मुहफुल्लए चेव ।।२।।
खीलग दामणि एगावली य गयदंत विच्छुयअले[4] य[5] ।
गयविक्कमे य तत्तो, सीहणिसाई[6] य संठाणा ।।३।।

१३४. एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिईणक्खत्ते कइमुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ ? गोयमा ! णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ । एवं इमाहिं गाहाहिं अणुगंतव्वं —

अभिइस्स चंदजोगो, सत्तट्ठिखंडिओ अहोरत्तो ।
ते हुंति णव मुहुत्ता, सत्तावीसं कलाओ य ।।१।।
सयभिसया भरणीओ, अद्दा अस्सेस साइ जेट्ठा य ।
एए छण्णक्खत्ता पण्णरसमुहुत्तसंजोगा ।।२।।
तिण्णेव उत्तराइं, पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य ।
एए छण्णक्खत्ता, पणयालमुहुत्तसंजोगा ।।३।।
अवसेसा णक्खत्ता, पण्णरसवि हुंति तीसइमुहुत्ता ।
चंदंमि एस जोगो, णक्खत्ताणं मुणेयव्वो ।।४।।

१३५. एएसि णं भंते ! अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिईणक्खत्ते कइ अहोरत्ते सूरेण सद्धिं जोगं जोएइ ? गोयमा ! चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेणं सद्धिं जोगं जोएइ । एवं इमाहिं गाहाहिं णेयव्वं—

अभिई छच्च मुहुत्ते, चत्तारि य केवले अहोरत्ते ।
सूरेण समं गच्छइ, एत्तो सेसाण वोच्छामि ।।१।।
सयभिसया भरणीओ, अद्दा असेस साइ जेट्ठा य ।
वच्चंति मुहुत्ते 'इक्कवीस छच्चेवहोरत्ते'[7] ।।२।।
तिण्णेव उत्तराइं, पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य ।
वच्चंति मुहुत्ते, तिण्णि चेव वीसं अहोरत्ते ।।३।।
अवसेसा णक्खत्ता, पण्णरसवि सूरसहगया जंति[8] ।
बारस चेव मुहुत्ते, तेरस य समे अहोरत्ते ।।४।।

१३६. कइ णं भंते ! कुला, कइ उवकुला[9], कइ कुलोवकुला पण्णत्ता ? गोयमा !

---

१. रुहिरवंदु (अ,ब) ।
२. पडाला (अ,ब) ।
३. पल्लंके (त्रि) ।
४. विच्छुलंगूल (त्रि); चन्द्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्त्योरादर्शेषु 'विच्छुयनंगोलसंठिते, विच्छुयलंगोल०' इति पाठद्वयं लभ्यते, प्रस्तुतसूत्रस्य एकस्मिन्नादर्शेषु 'विच्छुलंगुल' इति पाठो दृश्यते किन्तु ताडपत्रीयादिप्राचीनादर्शेषु 'विच्छुअयले' इति पाठो विद्यते, तेनासौ मूले स्वीकृतः 'अल' शब्दस्यार्थावबोधाय द्रष्टव्यः पाइयसद्दमहण्णवो ।
५. या (अ,क,ख,त्रि,स); वा (ब) ।
६. सीहणिसीई (अ); सीहासणिसाई (क) ।
७. इक्कवीसाइं छच्च अहोरत्ते (अ,ब); एक्कवीसंति छच्च अहोरत्ते (क,ख) ।
८. यंति (क); इंति (ख,स) ।
९. अवकुला (अ,ख,ब) सर्वत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारस कुला, बारस उवकुला, चत्तारि कुलोवकुला, पण्णत्ता। बारस कुला, तं जहा—धणिट्ठा कुलं उत्तरभद्दवया कुलं अस्सिणी कुलं कत्तिया कुलं मिगसिर कुलं 'पुस्सो कुलं'[1] मघा[2] कुलं उत्तरफग्गुणी कुलं[3] चित्ता कुलं विसाहा कुलं मूलो कुलं उत्तरासाढा कुलं।

गाहा— मासाणं परिणामा, होंति कुला उवकुला उ हेट्ठिमगा।
होंति पुण कुलोवकुला, अभीइसय अद्द अणुराहा ॥१॥

बारस उवकुला, तं जहा—सवणो उवकुलं पुव्वभद्दवया[4] उवकुलं 'रेवई उवकुलं भरणी उवकुलं रोहिणी उवकुलं पुणव्वसू उवकुलं अस्सेसा उवकुलं पुव्वफग्गुणी उवकुलं हत्थो उवकुलं साई उवकुलं जेट्ठा उवकुलं'[5] पुव्वासाढा[6] उवकुलं। चत्तारि कुलोवकुला, तं जहा—अभिई कुलोवकुला सयभिसया कुलोवकुला अद्दा कुलोवकुला अणुराहा कुलोवकुला॥

१३७. कइ णं भंते! पुण्णिमाओ, कइ अमावसाओ[7] पण्णत्ताओ? गोयमा! बारस पुण्णिमाओ, बारस अमावसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—साविट्ठी पोट्ठवई[8] आसोई कत्तिगी मग्गसिरी पोसी माही फग्गुणी चेत्ती वइसाही जेट्ठामूली आसाढी॥

१३८. साविट्ठिण्णं भंते! पुण्णिमासिं कइ णक्खत्ता जोगं जोएंति? गोयमा! तिण्णि णक्खत्ता जोगं जोएंति, तं जहा—अभिई सवणो धणिट्ठा॥

१३९. पोट्ठवइण्णं भंते! पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोगं जोएंति? गोयमा! तिण्णि णक्खत्ता जोगं जोएंति, तं जहा—सयभिसया पुव्वभद्दवया[9] उत्तरभद्दवया[10]॥

१४०. अस्सोइण्णं भंते! पुण्णिमं कइ णक्खत्ता जोगं जोएंति? गोयमा! दो णक्खत्ता जोगं जोएंति, तं जहा—रेवई अस्सिणी य। कत्तिइण्णं दो—भरणी कत्तिया। मग्गसिरिण्णं दो—रोहिणी मग्गसिरं च। पोसिण्णं तिण्णि—अद्दा पुणव्वसू पुस्सो। माघिण्णं दो—अस्सेसा मघा य। फग्गुणिण्णं दो—पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी य। चेत्तिण्णं दो—हत्थो चित्ता य। विसाहिण्णं दो—साई विसाहा य। जेट्ठामूलिण्णं तिण्णि—अणुराहा जेट्ठा मूलो। आसाढिण्णं दो—पुव्वासाढा उत्तरासाढा॥

१४१. साविट्ठिण्णं भंते! पुण्णिमं किं कुलं जोएइ? उवकुलं जोएइ? कुलोवकुलं जोएइ? गोयमा! कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, कुलोवकुलं वा जोएइ। कुलं जोएमाणे धणिट्ठा णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे सवणे[11] णक्खत्ते जोएइ, कुलोकुलं जोएमाणे अभिई णक्खत्ते जोएइ। साविट्ठिण्णं पुण्णिमासिं कुलं वा जोएइ[12] •उवकुलं वा जोएइ°, कुलोवकुलं वा जोएइ। कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी पुण्णिमा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया॥

---

१. पूसो कुलं (अ,ब); पुस्सकुलं (क,ख,त्रि,स)।
२. महा (प)।
३. उत्तरा° (अ,ब)।
४. पुव्वा° (अ,ब)।
५. रेवती भरणी य रोहिणी य, पुणव्वसू य असेसा। पुव्वाफग्गुणी य हत्थो य, साती य जेट्ठा य। (अ,ख,ब,स)।
६. पुव्वआसाढा (अ,ब)।
७. अवामंसाओ (ब)।
८. पोट्ठवदा (अ,ब); पोट्ठवया (क,ख,स)।
९. पुव्वा° (अ,क,ख,ब)।
१०. उत्तरा° (अ,ब)।
११. समाणे (अ,ब)।
१२. सं० पा०—जोएइ जाव कुलोवकुलं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४२. पोट्ठवइण्णं भंते ! पुण्णिमं किं कुलं जोएइ पुच्छा। गोयमा ! कुलं वा उवकुलं वा कुलोवकुलं वा जोएइ। कुलं जोएमाणे उत्तरभद्दवया णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे पुव्वभद्दवया णक्खत्ते जोएइ, कुलोवकुलं जोएमाणे सयभिसया णक्खत्ते जोएइ। पोट्ठवइण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएइ जाव कुलोवकुलं वा जोएइ। कुलेण वा जुत्ता जाव कुलोवकुलेण वा जुत्ता पोट्ठवई पुण्णमासी जुत्तति वत्तव्वं सिया ॥

१४३. अस्सोइण्णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, णो लब्भइ कुलोवकुलं। कुलं जोएमाणे अस्सिणी णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे रेवई णक्खत्ते जोएइ। अस्सोइण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ। कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता अस्सोई पुण्णिमा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया ॥

१४४. कत्तिइण्णं भंते ! पुण्णियं किं कुलं पुच्छा। गोयमा ! कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, णो कुलोवकुलं जोएइ। कुलं जोएमाणे कत्तिया णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे भरणी णक्खत्ते जोएइ। कत्तिइण्णं[1] •पुण्णिमं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ। कुलेणं वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कत्तिई पुण्णिमा जुत्तत्ति° वत्तव्वं सिया ॥

१४५. मग्गसिरिण्णं भंते ! पुण्णिमं किं कुलं तं चेव दो जोएइ, णो भवइ कुलोवकुलं। कुलं जोएमाणे मग्गसिर णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे रोहिणी णक्खत्ते जोएइ। मग्गसिरिण्णं पुण्णिमं जाव वत्तव्वं सिया ॥

१४६. एवं सेसियाओवि जाव आसाढिं पोसिं जेट्ठामूलिं च कुलं वा उवकुलं वा कुलोवकुलं वा। सेसियाणं कुलं वा उवकुलं वा, कुलोवकुलं ण भण्णइ ॥

१४७. साविट्ठिण्णं भंते ! अमावसं[2] कइ णक्खत्ता जोएंति ? गोयमा ! दो णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अस्सेसा य महा य ॥

१४८. पोट्ठवइण्णं भंते ! अमावसं[3] कइ णक्खत्ता जोएंति ? गोयमा ! दो णक्खत्ता जोएंति, तं जहा— पुव्वाफग्गुणी, उत्तराफग्गुणी[4] य ॥

१४९. अस्सोइण्णं भंते ! दो– हत्थे चित्ता य। कत्तिइण्णं दो – साई विसाहा य। मग्गसिरिण्णं तिण्णि-- अणुराहा जेट्ठा मूलो य। पोसिण्णं दो- -पुव्वासाढा उत्तरासाढा। माहिण्णं तिण्णि-अभिई सवणो धणिट्ठा। फग्गुणिण्णं तिण्णि—सयभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवया। चेत्तिण्णं दो–रेवई अस्सिणी य। वइसाहिण्णं दो–भरणी कत्तिया य। जेट्ठामूलिण्णं दो–रोहिणी मग्गसिरं च। आसाढिण्णं तिण्णि- -अद्दा पुणव्वसू पुस्सो ॥

१५०. साविट्ठिण्णं भंते ! अमावसं[5] किं कुलं जोएइ ? उवकुलं जोएइ ? कुलोवकुलं जोएइ ? गोयमा ! कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ, णो लब्भइ कुलोवकुलं। कुलं जोए-

---

१. सं० पा०—कत्तिइण्णं जाव वत्तव्वं।

२. अमावासं (अ,क,ख,त्रि,ब)।

३. अवामंसं (अ,ब)।

४. उत्तरभद्दवया (अ); उत्तराफग्गुणी उत्तराभद्दवया (ब); वृत्तिश्रयेपि परमार्थतः पुनस्त्रीणि नक्षत्राणि मघादीनि इति तात्पर्यं स्वीकृतमस्ति, किन्तु 'उत्तराभद्दवया' इति पाठो नास्ति तत्रोल्लिखितः। एष वाचनाभेद एव सम्भाव्यते लिपिदोषो वा।

५. अवामस (अ); अमावासं (क,त्रि,प); अवामासं (ख); अवमास (ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणे महा णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे अस्सेसा णक्खत्ते जोएइ। साविट्ठिण्णं अमावसं कुलं वा जोएइ, उवकुलं वा जोएइ। कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी अमावसा जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया ।।

१५१. पोट्ठवइण्णं भंते ! अमावसं तं चेव दो 'जोएइ, णो लब्भइ कुलोवकुलं'[1]। कुलं जोएमाणे उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जोएमाणे पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते जोएइ। पोट्ठवइण्णं अमावसं जाव जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया ।।

१५२. मग्गसिरिण्णं तं चेव कुलं मूले णक्खत्ते जोएइ, उवकुलं जेट्ठा णक्खत्ते जोएइ, कुलोवकुलं अणुराहा जाव जुत्तत्ति वत्तव्वं सिया ।।

१५३. एवं माहीए फग्गुणीए आसाढीए कुलं वा उवकुलं वा कुलोवकुलं वा। अवसेसियाणं कुलं वा उवकुलं वा जोएइ ।।

१५४. जया णं भंते ! साविट्ठी पुण्णिमा भवइ, तया णं माही अमावसा[2] भवइ ? जया णं माही पुण्णिमा भवइ, तया णं साविट्ठी अमावसा भवइ ? हंता गोयमा ! जया णं साविट्ठी तं चेव वत्तव्वं ।।

१५५. जया णं भंते ! पोट्ठवई पुण्णिमा भवइ, तया णं फग्गुणी अमावसा भवइ ? जया णं फग्गुणी पुण्णिमा भवइ, तया णं पोट्ठवई अमावसा भवइ ? हंता गोयमा ! तं चेव। एवं एएणं अभिलावेणं इमाओ पुण्णिमाओ अमावसाओ णेयव्वाओ—अस्सिणी पुण्णिमा चेत्ती अमावसा, कत्तिगी[3] पुण्णिमा वइसाही अमावसा, मग्गसिरी पुण्णिमा जेट्ठामूली अमावसा, पोसी पुण्णिमा आसाढी अमावसा ।।

१५६. वासाणं भंते ! पढमं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—उत्तरासाढा अभिई सवणो धणिट्ठा। उत्तरासाढा चउद्दस अहोरत्ते णेइ। अभिई सत्त अहोरत्ते णेई। सवणो अट्ठ अहोरत्ते णेई। धणिट्ठा एगं अहोरत्तं णेइ। तंसि च णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ। तस्स णं मासस्स 'चरिमे दिवसे'[4] दो पया चत्तारि य अंगुला पोरिसी भवइ ।।

१५७. वासाणं भंते ! दोच्चं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! चत्तारि, तं जहा—धणिट्ठा सयभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवया। धणिट्ठा णं चउद्दस अहोरत्ते णेइ। सयभिसया सत्त। पुव्वाभद्दवया अट्ठ। उत्तराभद्दवया एगं। तंसि च णं मासंसि अट्ठंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ। तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पया अट्ठ य अंगुला पोरिसी भवइ ।।

१५८. वासाणं भंते ! तइयं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—उत्तराभद्दवया रेवई अस्सिणी। उत्तराभद्दवया चउद्दस राइंदिए णेइ। रेवई पण्णरस। अस्सिणी एगं। तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ। तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं तिण्णि पयाइं पोरिसी भवइ ।।

---

१. णो जोएइ कुलोवकुलं (प)।

२. अवमंसा (अ,क,ख,त्रि,ब)।

३. कत्तिकी (अ); कित्तिकी (ख,ब); कित्तिगी (स)।

४. चरिमदिवसे (अ,त्रि,प); चरमदिवसे (ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५९. वासाणं भंते ! चउत्थं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि, तं जहा—अस्सिणी[1] भरणी कत्तिया। अस्सिणी चउद्दस। भरणी पण्णरस। कत्तिया[2] एगं। तंसि च णं मासंसि सोलसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ। तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पयाइं चत्तारि य अंगुलाइं पोरिसी भवइ ॥

१६०. हेमंताणं भंते ! पढमं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि, तं जहा—कत्तिया रोहिणी मिगसिरं[3]। कत्तिया चउद्दस। रोहिणी पण्णरस। मिगसिरं एगं अहोरत्तं णेइ। तंसि च णं मासंसि वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरिवट्टइ। तस्स णं मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि तिण्णि पयाइं अट्ठ य अंगुलाइं पोरिसी भवइ ॥

१६१. हेमंताणं भंते ! दोच्चं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—मिगसिरं अद्दा पुणव्वसू पुस्सो। मिगसिरं चउद्दस राइंदियाइं णेइ। अद्दा अट्ठ णेइ। पुणव्वसू सत्त राइंदियाइं। पुस्सो एगं राइंदियं णेइ। तया[4] णं चउव्वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ। तस्स णं मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि लेहट्ठाइं चत्तारि पयाइं पोरिसी भवइ ॥

१६२. हेमंताणं भंते ! तच्चं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि, तं जहा—पुस्सो असिलेसा महा। पुस्सो चोद्दस राइंदियाइं णेइ। असिलेसा पण्णरस। महा एक्कं। तया णं वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ। तस्स णं मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि तिण्णि पयाइं अट्ठंगुलाइं पोरिसी भवइ ॥

१६३. हेमंताणं भंते ! चउत्थं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि णक्खत्ता, तं जहा—महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी। महा चउद्दस राइंदियाइं णेइ। पुव्वाफग्गुणी पण्णरस राइंदियाइं णेइ। उत्तराफग्गुणी एगं राइंदियं णेइ। तया णं सोलसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ। तस्स णं मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि तिण्णि पयाइं चत्तारि य अंगुलाइं पोरिसी भवइ ॥

१६४. गिम्हाणं भंते ! पढमं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता। उत्तराफग्गुणी चउद्दस राइंदियाइं णेइ। हत्थो पण्णरस राइंदियाइं णेइ। चित्ता एगं राइंदियं णेइ। तया णं दुवालसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ। तस्स णं मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि लेहट्ठाइं तिण्णि पयाइं पोरिसी भवइ ॥

१६५. गिम्हाणं भंते ! दोच्चं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—चित्ता साई विसाहा। चित्ता चउद्दस राइंदियाइं णेइ। साई पण्णरस राइंदियाइं णेइ। विसाहा एगं राइंदियं णेइ। तया णं अट्ठंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ। तस्स णं मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि दो पयाइं अट्ठंगुलाइं पोरिसी भवइ ॥

---

१. आसिणी (ब)।
२. कित्तिया (क,ख,स)।
३. मगसिरं (ब)।
४. तता (अ,ब); तदा (क,ख,स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६६. गिम्हाणं भंते ! तच्चं मासं कइ णक्खत्ता णेंति ? गोयमा ! चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा–विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो। विसाहा चउद्दस राइंदियाइं णेइ। अणुराहा अट्ठ राइंदियाइं णेइ। जेट्ठा सत्त राइंदियाइं णेइ। मूलो एक्कं राइंदियं णेइ। तया णं चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ। तस्स णं मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि दो पयाइं चत्तारि य अंगुलाइं पोरिसी भवइ ॥

१६७. गिम्हाणं भंते ! चउत्थं मासं कइ णक्खत्ता णेंति? गोयमा ! तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा– मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा। मूलो चउद्दस राइंदियाइं णेइ। पुव्वासाढा पण्णरस राइंदियाइं णेइ। उत्तरासाढा एगं राइंदियं णेइ। तया णं वट्टाए समचउरंस-संठाणसंठिए णग्गोहपरिमंडलाए सकायमणुरंगियाए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ। तस्स णं मासस्स जेसे चरिमे दिवसे तंसि च णं दिवसंसि लेहट्ठाइं दो पयाइं पोरिसी भवइ। एएसि णं पुव्ववण्णियाणं पयाणं इमा संगहणी, तं जहा –

गाहा— जोगो[1] देवय तारग्ग, गोत्त संठाण चंदरविजोगो।
कुल पुण्णिम अवमंसा, णेया छाया य बोद्धव्वा ॥१॥

१६८. **गाहा**—हिट्ठि ससिपरिवारो[2], मंदरवाहा तहेव लोगंते।
धरणितलाउ अबाहा, अंतो बाहिं च उड्ढमहे ॥१॥
संठाणं च पमाणं, वहंति सीहगई[3] इड्ढिमंता य।
तारंतरग्गमहिसी, तुडिय पहु ठिई य अप्पबहू ॥२॥

अत्थि णं भंते ! चंदिमसूरियाणं हिट्ठिंपि ताराख्वा अणुंपि तुल्लावि ? समंपि[4] ताराख्वा अणुंपि तुल्लावि ? उप्पिपि ताराख्वा अणुंपि तुल्लावि ? हंता गोयमा ! तं चेव उच्चारेयव्वं ॥

१६९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ– अत्थि णं जहा[5]-जहा णं तेसिं देवाणं तव-णियम-बंभचेराइं ऊसियाइं भवंति, तहा[6]-तहा णं तेसि णं देवाणं एवं पण्णायए, तं जहा— अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा। जहा-जहा णं तेसिं देवाणं तव-णियम-बंभचेराइं णो ऊसियाइं भवंति तहा-तहा णं तेसिं देवाणं एवं णो पण्णायए, तं जहा— अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा ॥

१७०. एगमेगस्स णं भंते ! चंदस्स केवइया महग्गहा परिवारो, केवइया णक्खत्ता परिवारो, केवइया तारागणकोडाकोडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठासीइमहग्गहा परिवारो, अट्ठवीसं णक्खत्ता परिवारो, छावट्ठिसहस्साइं णव सया पण्णत्तरा तारागण-कोडाकोडीणं पण्णत्ता ॥

१७१. मंदरस्स णं भंते ! पव्वयस्स केवइयाए अबाहाए जोइसं चारं चरइ ? गोयमा! एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसं चारं चरइ ॥

---

१. जोगो देवय तारग्ग इत्यादि प्राग्व्याख्यात-स्वरूपा: अस्या निगमनार्थं पुनरुपन्यासस्तेन न पुनरुक्तिर्भावनीया (शावृ)।
२. परियारो (अ,क,ख,ब)।
३. सिग्घगई (ख,स)।
४. समेवि (अ,क,ख,त्रि,प,व); जीवाजीवाभिगमे (३।१०००) सूर्यप्रज्ञप्ता (१८।२) वपि च 'समंपि' इति पाठो लभ्यते।
५. जह (अ,ब) अग्रेपि।
६. तह (अ,ब) अग्रेपि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७२. लोगंताओ णं भंते ! केवइयाए अबाहाए जोइसे पण्णत्ते ? गोयमा ! एक्कारस एक्कारसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसे पण्णत्ते ॥

१७३. धरणितलाओ[1] णं भंते ! [केवतियं अबाहाए हेट्ठिल्ले ताराख्वे चारं चरति ? केवतियं अबाहाए सूरविमाणे चारं चरति ? केवतियं अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति ? केवतियं अबाहाए उवरिल्ले ताराख्वे चारं चरति ? गोयमा !][2] सत्तहिं णउएहिं जोयणसएहिं जोइसे चारं चरइ। एवं सूरविमाणे अट्ठहिं सएहिं, चंदविमाणे अट्ठहिं असीएहिं, उवरिल्ले ताराख्वे णवहिं जोयणसएहिं चारं चरइ ॥

१७४. जोइसस्स णं भंते ! हेट्ठिल्लाओ तलाओ केवइयं अबाहाए सूरविमाणे चारं चरइ ? गोयमा ! दसहिं जोयणेहिं अबाहाए चारं चरइ। एवं चंदविमाणे णउईए जोयणेहिं चारं चरइ, उवरिल्ले ताराख्वे दसुत्तरे जोयणसए चारं चरइ, सूरविमाणाओ चंदविमाणे असीईए जोयणेहिं चारं चरइ, सूरविमाणाओ जोयणसए उवरिल्ले ताराख्वे चारं चरइ, चंदविमाणाओ वीसाए[3] जोयणेहिं उवरिल्ले ताराख्वे चारं चरइ ॥

१७५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ते सव्वब्भंतरिल्लं[4] चारं चरइ ? कयरे णक्खत्ते सव्वबाहिरं चारं चरइ ? कयरे णक्खत्ते सव्वहिट्ठिल्लं चारं चरइ ? कयरे णक्खत्ते सव्वउवरिल्लं चारं चरइ ? गोयमा ! अभिई णक्खत्ते सव्वब्भंतरं चारं चरइ, मूलो सव्वबाहिरं[5] चारं चरइ, भरणी सव्वहिट्ठिल्लगं चारं चरइ, साई सव्वुवरिल्लं[6] चारं चरइ ॥

१७६. चंदविमाणे णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! अद्धकविट्ठसंठाणसंठिए[7] सव्वफालियामए अब्भुग्गयमूसियपहसिए एवं सव्वाइं णेयव्वाइं[8] ॥

१७७. चंदविमाणे[9] णं भंते ! केवइयं आयाम-विक्खंभेणं ? केवइयं बाहल्लेणं[10] ? गोयमा !

गाहा —

छप्पण्णं खलु भाए, विच्छिण्णं चंदमंडलं होइ।
अट्ठावीसं भाए, बाहल्लं तस्स बोद्धव्वं ॥१॥
अडयालीसं भाए, विच्छिण्णं सूरमंडलं होइ।
चउवीसं खलु भाए, बाहल्लं तस्स बोद्धव्वं ॥२॥

---

१. धरणियलाओ (अ,प,ब)।
२. आदर्शेषु कोष्ठकवर्त्ती पाठो नोपलभ्यते। शांतिचन्द्रीयवृत्तौ 'धरणितलाओ णं भंते ! उड्ढं उप्पइत्ता केवइयाए अबाहाए हेट्ठिल्ले जोइसे चारं चरइ' एष प्रश्नांशः समुल्लिखितोस्ति, शेषप्रश्ना नैव निर्दिष्टाः सन्ति। अस्माभिरत्नौ पाठः जीवाजीवाभिगम (३।१००३) सूत्रादुद्धृतोस्ति।
३. वीसं (अ,ब)।
४. सव्वब्भंतरिल्ले (अ,ब)।
५. सव्वबाहिरओ (अ,ख,प,ब); सव्वबाहिल्लो (क)।
६. सव्वुप्परिल्लं (क,ख,ब,स)।
७. °कविट्ठग° (अ,क,ख,ब,स)।
८. जी० ३।१००८,१००९।
९. उपलक्षणात् सूर्यादिविमानं च (पुवृ)।
१०. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स); उपलक्षणात् कियद्-बाहल्येन प्रज्ञप्तं (पुवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दो कोसे य गहाणं, णक्खत्ताणं तु हवइ तस्सद्धं ।
तस्सद्धं ताराणं, तस्सद्धं चेव बाहल्लं ॥३॥

१७८. चंदविमाणं[1] भंते ! कइ देवसाहस्सीओ परिवहंति ? गोयमा ! सोलस देवसाहस्सीओ परिवहंति—चंदविमाणस्स णं पुरत्थिमेणं सेयाणं सुभगाणं[2] सुप्पभाणं[3] संखतल-विमलणिम्मलदहिघण-गोखीर-फेण-रययणिगरप्पगासाणं[4] थिरलट्ठपउट्ठ[5]-वट्ट-पीवरसुसिलिट्ठविसिट्ठतिक्खदाढाविडंबियमुहाणं रत्तुप्पलपत्तमउयसूमालतालुजीहाणं महुगुलियपिंगलक्खाणं पीवरवरोरुपडिपुण्णविउलखंधाणं मिउविसयसुहुमलक्खणपसत्थवरवण्ण-केसरसडोवसोहियाणं[6] ऊसिय-सुणमिय[7]-सुजाय-अप्फोडिय-णंगूलाणं[8] वइरामयणक्खाणं वइरामयदाढाणं[9] वइरामयदंताणं[10] तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुयाणं तवणिज्जजोत्तगसुजोइयाणं कामगमाणं पीइगमाणं[11] मणोगमाणं मणोरमाणं[12] अमियगईणं[13] अमियबल-वीरियपुरिसक्कारपरक्कमाणं महया अप्फोडियसीहणायबोलकलकलरवेणं[14] महुरेणं मणहरेणं पूरंता अंबरं दिसाओ य सोभयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ सीहरूवधारीणं पुरत्थिमिल्लं बाहं परिवहंति ॥

चंदविमाणस्स णं दाहिणेणं सेयाणं सुभगाणं[15] सुप्पभाणं संखतल-विमलणिम्मलदहिघण-गोखीर-फेण-रययणिगरप्पगासाणं वइरामयकुंभजुयल[16]-सुट्ठियपीवरवरवइरसोंडवट्टियदित्त-सुरत्तपउमपगासाणं[17] अब्भुण्णयमुहाणं तवणिज्जविसालकण्णचंचलचलंतविमलुज्जलाणं महुवण्णभिसंतणिद्धपत्तलनिम्मलतिवण्णमणिरयणलोयणाणं[18] अब्भुग्गयमउलमल्लियाधवल-सरिससंठिय-णिव्वण्ण-दढ-कसिणफालियामय-सुजाय-दंतमुसलोवसोभियाणं कंचणकोसी-पविट्ठदंतग्ग-विमलमणिरयणरुइलपेरंतचित्तरूवगविराइयाणं[19] तवणिज्जविसालतिलगप्प-मुहपरिमंडियाणं नाणामणिरयणमुद्ध[20]-गेवेज्जबद्धगलयवरभूसणाणं वेरुलियविचित्तदंड-

१. 'चंदविमाणे णमित्यादि' चन्द्रविमानं लिंग-विभक्त्योश्चात्र व्यत्ययः प्राकृतत्वात् (हीवृ) ।
२. सुभाणं (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ) ।
३. सप्पभाणं (ख,त्रि,पुवृ,हीवृ) ।
४. रयणिगर° (अ,ब) अग्रेपि । क्वचित् संखतलेत्यादि यावत् रजनिकरप्रकाशानाम् (पुवृ) ।
५. °पयओट्ठ (अ,ब) ।
६. 'अ,ब' प्रत्योः 'विसय' स्थाने 'विसद' इति पदं विद्यते 'पसत्थ' इति पदं च नास्ति ।
७. सुणिमित्त (अ,ब); सुणिम्मित (ख,त्रि,स) ।
८. लांगूलाणं (प) ।
९. × (ब) ।
१०. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ) ।
११. पीयगमाणं णभोगमाणं (ख) ।
१२. × (पुवृ) ।
१३. °गतीणं अमियबलाणं (अ,क,ख,ब,स,पुवृ) ।
१४. °बोलकलरवेणं (अ,त्रि,ब) ।
१५. सुभाण (अ,ख); सुभाणं (क); सुहाणं (त्रि); सुहाण (ब,स) ।
१६. °कुंभिजुअय (अ,ब) ।
१७. सुहितपीवर° (ब) ।
१८. °निम्मललसत्तमणिरयणनिम्मलाणं (अ); °निम्मलभिसत्तमणि° (ख) °निम्मलभिसत्त-मणिरयणनिम्मलाणं (ब); °निम्मलमणि° (पुवृ) ।
१९. °मणिरयणभरियपेरंत° (अ,ब); °मणिरयण-भरियफेरंत (ख) ।
२०. °सुद्ध (अ,ब,पुवृ,हीवृ); पाठान्तरे वा मुग्धं (पुवृ); क्वचित् 'मुद्ध' त्ति पाठः स चाशुद्धः सम्भाव्यते (हीवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिम्मलवइरामयतिक्खलट्ठअंकुसकुंभजुयलयंतरोडियाणं[1] तवणिज्जसुबद्धकच्छदप्पियबलुद्धुराणं विमलघणमंडलवइरामयलालाललियतालण[2]-णाणामणिरयणघंटपासगरययामयबद्धरज्जुलंबियघंटाजुयलमहुरसरमणहराणं अल्लीणपमाणजुत्तवट्टियसुजायलक्खणपसत्थरमणिज्जबालगत्तपरिपुंछणाणं उवचियपडिपुण्णकुम्मचलणलहुविक्कमाणं[3] अंकमयणक्खाणं[4] 'तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुयाणं'[5] तवणिज्जजोत्तगसुजोइयाणं कामगमाणं पीइगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं अमियगईणं अमियबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमाणं महया गंभीरगुलुगुलाइयरवेणं महुरेणं मणहरेणं पूरेंता अंबरं दिसाओ य सोभयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ गयरूवधारीणं देवाणं दक्खिणिल्लं बाहं परिवहंति ।

चंदविमाणस्स णं पच्चत्थिमेणं सेयाणं सुभगाणं[6] सुप्पभाणं[7] चलचवलककुहसालीणं[8] घणणिचियसुबद्धलक्खणुण्णयईसिआणयवसभोट्ठाणं[9] चंकमियललियपुलियचलचवलगव्वियगईणं सण्णयपासाणं संगयपासाणं सुजायपासाणं पीवरवट्टियसुसंठियकडीणं ओलंबपलंबलक्खणपमाणजुत्तरमणिज्जवालगंडाणं 'समखुरवालिधाणाणं समलिहियसिंगतिक्खग्गसंगयाणं'[10] तणुसुहुमसुजायणिद्धलोमच्छविधराणं उवचियमंसलविसालपडिपुण्णखंधपएससुंदराणं वेरुलियभिसंतकडक्खसुणिरिक्खणाणं[11] जुत्तपमाणपहाणलक्खणपसत्थरमणिज्जगग्गरगलसोभियाणं[12] घरघरगसुसद्दबद्धकंठपरिमंडियाणं[13] णाणामणिकणगरयणघंटियावेगच्छिगसुकयमालियाणं[14] वरघंटागलयमालुज्जलसिरिधराणं पउमुप्पलसगलसुरभिमालाविभूसियाणं 'वइरखुराणं विविहविक्खुराणं'[15] फालियामयदंताणं तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुयाणं तवणिज्जजोत्तगसुजोइयाणं कामगमाणं पीइगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं अमियगईणं अमियबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमाणं महया गज्जियगंभीररवेणं महुरेणं मणहरेणं पूरेंता

---

१. कुंभयुगलस्यान्तरे उत्थितं ऊर्ध्वतया स्थितं येषां (पुवृ) ।

२. °वइरामततललल्लियतालेण (अ,ब) °वइरामयलाललल्लियतालेण (क,ख,त्रि); °वइरामतलाल° (स) ।

३. उप्पतिय° (अ,त्रि,ब,हीवृ); उपचिता (हीवृपा) ।

४. अंकामय° (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।

५. तवणिज्जतालुयाणं तवणिज्जजीहाणं (ख,त्रि, स,पुवृ,हीवृ) ।

६. सुभाण (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।

७. सप्पभाणं (अ,ख,त्रि,ब,स) ।

८. वरवलय° (अ,ब) ।

९. °ईसि° (अ,क,ख,त्रि,ब) ।

१०. समधुरवालियहाणसमलियसंगमाणं (अ,ब); समखुरवालिहीणं° (त्रि); समखुरवालिहाणसमलिहितसिंगतिक्खग्गसंगयाणं (पुवृपा); समधुरवालिहीणं (हीवृपा) ।

११. °भिसंतकक्खदक्खसुतिक्खनिरिक्खणाणं (अ,त्रि, ब,पुवृ); °भिसंतकक्खडसुनिरिक्खणाणं (क, हीवृ); °भिसंतकक्खदक्खसुनिरिक्खणाणं (ख,स); °भिसंतकडक्खसुनिरिक्खणाणं (पुवृपा) ।

१२. °रमणिज्जलंबभंगगंधाउडगलगसोभियाणं (अ, ख, त्रि,ब,स,पुवृ) ।

१३. °कण्णपरिमंडियाणं (अ,ख,त्रि,ब,स); घुग्घरगसुसद्दबद्धकण्णपरिमंडियाणं (पुवृ); पाठान्तरे वा ईदृग् य कण्ठः (पुवृ) ।

१४. °वेगच्छग° (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ) ।

१५. वेरक्खुरविविहविक्खुराणं (अ,क,ब); वेरविविहविक्खुराणं (ख); वेरखुरविविहक्खुराणं (स,पुवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंबरं दिसाओ य सोभयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ वसहरूवधारीणं[1] देवाणं पच्चत्थिमिल्लं बाहं परिवहंति ।

चंदविमाणस्स णं उत्तरेणं सेयाणं सुभगाणं सुप्पभाणं तरमल्लिहायणाणं[2] हरिमेलामउल-मल्लियच्छाणं चंचुच्चियललियपुलियचलचवलचंचलगईणं लंघणवग्गणधावणधोरणतिवइ-जइणसिक्खियगईणं ललंत-'लाम-गललाय'[3]-वरभूसणाणं सण्णयपासाणं संगयपासाणं सुजाय-पासाणं पीवरवट्टियसुसंठियकडीणं ओलंबपलंबलक्खणपमाणजुत्तरमणिज्जवालपुच्छाणं तणु-सुहुमसुजायणिद्धलोमच्छविहराणं मिउविसयसुहुमलक्खणपसत्थविकिण्णकेसरवालिहराणं[4] ललंतथासगललाडवरभूसणाणं[5] मुहमंडग[6]-ओचूलग[7]-चामर-थासग-परिमंडियकडीणं तवणिज्जखुराणं तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुयाणं तवणिज्जजोत्तगसुजोइयाणं काम-गमाणं[8] •पीइगमाणं मणोगमाणं[0] मणोरमाणं अमियगईणं अमियबलवीरियपुरिसक्कार-परक्कमाणं महया हयहेसियकिलकिलाइयरवेणं मणहरेणं पूरेंता अंबरं दिसाओ य सोभयंता चत्तारि देवसाहस्सीओ हयरूवधारीणं देवाणं उत्तरिल्लं बाहं परिवहंति[9] ।

गाहा — सोलसदेवसहस्सा, हवंति[9] चंदेसु चेव सूरेसु ।
अट्ठेव सहस्साइं, एक्केक्कंमी[10] गहविमाणे ॥१॥
चत्तारि सहस्साइं, णक्खत्तंमि य हवंति इक्किक्के ।
दो चेव सहस्साइं, ताराख्वेक्कमेक्कंमि ॥२॥

१७९. एवं सूरविमाणाणं जाव ताराख्वविमाणाणं, णवरं —एस देवसंघाए ॥

१८०. एएसि णं भंते ! चंदिम-सूरियगहगण-णक्खत्त-ताराख्वाणं कयरे सव्व-सिग्घगई ? कयरे सव्वसिग्घगईतराए चेव ? गोयमा ! चंदेहिंतो सूरा सव्वसिग्घगई, सूरेहिंतो गहा सिग्घगई, गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगई, णक्खत्तेहिंतो ताराख्वा सिग्घगई, सव्वप्पगई, चंदा, सव्वसिग्घगई ताराख्वा ॥

१८१. एएसि णं भंते ! चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-ताराख्वाणं कयरे सव्व-महिड्ढिया ? कयरे सव्वप्पिड्ढिया[11] ? गोयमा ! ताराख्वेहिंतो णक्खत्ता महिड्ढिया, णक्खत्तेहिंतो गहा महिड्ढिया, गहेहिंतो सूरिया महिड्ढिया, सूरेहिंतो चंदा महिड्ढिया, सव्वप्पिड्ढिया ताराख्वा, सव्वमहिड्ढिया चंदा ॥

१८२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे ताराए[12] य ताराए य केवइए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—'वाघाइए य निव्वाघाइए'[13] य । निव्वा-

---

१. उसभ° (त्रि) ।
२. वर° (अ,क,त्रि,ब,स,हीवृ) ।
३. लासगललाम (अ,क,ख,त्रि,ब,पुवृ,हीवृ); °ललाम (स) ।
४. °विच्छिण्णकेसरवालिहराणं (प,शावृ) ।
५. ललंतलामग° (अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ,हीवृ) ।
६. मुहभंडग (पुवृ) ।
७. णेऊर (अ,त्रि,ब); उवचूला (ख) ।
८. सं० पा०—कामगमाणं जाव मणोरमाणं ।
९. वहंति (अ,ख,त्रि,ब,हीवृ) ।
१०. इक्किक्कस्स (त्रि) ।
११. सव्वप्पड्ढिया (त्रि) ।
१२. ताराख्वस्स (क) ।
१३. वाघाइमे निव्वाघाइमे (पुवृ); वाघाइए निव्वाघाइए (पुवृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घाइए जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणं दो गाउयाइं। वाघाइए जहण्णेणं दोण्णि छावट्ठे जोयणसए, उक्कोसेणं बारस जोयणसहस्साइं दोण्णि य बायाले जोयणसए तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

१८३. चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा— चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली[1] पभंकरा। तओ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि-चत्तारि देवीसहस्साइं परिवारो पण्णत्तो। पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णं देवीसहस्सं परिवारो विउव्वित्तए। एवामेव सपुव्वावरेणं सोलस देवी सहस्सा। सेत्तं तुडिए ॥

१८४. पभू णं भंते ! चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडेंसए विमाणे चंदाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए तुडिएणं सद्धिं महयाहयणट्ट-गीय-वाइय[2]-*तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंगपडुप्पवाइयरवेणं° दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? गोयमा ! णो 'इणट्ठे समट्ठे'[3] ॥

१८५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णो पभू जाव[4] विहरित्तए ? गोयमा ! चंदस्स जोइसिंदस्स जोइसरण्णो चंदवडेंसए विमाणे चंदाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए माणवए चेइयखंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहुईओ जिण-सकहाओ सण्णिक्खित्ताओ चिट्ठंति, ताओ णं चंदस्स जोइसिंदस्स जोइसरण्णो अण्णेसिं च बहूणं जोइसियाणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ जाव[5] पज्जुवासणिज्जाओ[6]। से तेणट्ठेणं गोयमा ! णो पभू। पभू णं चंदे सभाए सुहम्माए चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं एवं जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए केवलं परियारिड्ढीए, णो चेव णं मेहुणवत्तियं[7] ॥

१८६. विजया वेजयंती जयंती अपराजिया— सव्वेसिं गहाईणं[8] एयाओ अग्गमहिसीओ[9] वत्तव्वाओ इमाहि गाहाहिं—

---

१. अच्चिमाला (क,ख,त्रि)।

२. सं० पा०— वाइय जाव दिव्वाइं।

३. तिणत्थे समत्थे (ब)।

४. जं० ७।१८४।

५. जी० ३।४०२।

६. द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।१०२५ सूत्रम्।

७. मेहुणपत्तियं (अ,क,ख,त्रि,ब)। शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ सूर्यस्य अग्रमहिषीविषये जीवाजीवाभिगमस्य पाठ उद्धृतोस्ति— अथ प्रस्तुतोपाङ्गादर्शेष्वदृष्टमपि जीवाभिगमाद्युपाङ्गादर्शदृष्टसूर्याग्रमहिषीवक्तव्यमुपदर्श्यते। सूरस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ गो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं सूरप्पभा आयवाभा अच्चिमाली पभंकरा। एवं अवसेसं जहा चंदस्स। णवरं सूरवडेंसए विमाणे सूरंसि सीहासणंसीति व्यक्तम्। हीरविजयवृत्तौ अस्योल्लेखोपि नास्ति। पुण्यसागरीयवृत्तौ एष पाठः मूले व्याख्यातोस्ति। द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।१०२६ सूत्रम्।

८. गहाणं (अ,क,ख,ब,स)।

९. अग्गमहिसीओ छावत्तरस्स वि गहसयस्स एयाओ अग्गमहिसीओ (अ,क,ख,प,ब,स,पुवृ, शावृ); हीरविजयवृत्तौ अस्मिन् विषये एका टिप्पणी चापि विद्यते— यद्यप्यत्र बहुष्वादर्शेषु अन्यथापि पाठो दृश्यते। परं व्याख्यातपाठस्यैवोपादेयत्वं द्रष्टव्यं जीर्णादर्शेषु तथैव दृष्टत्वाज्जीवाभिगमसङ्गतत्वाच्च।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इंगालए[1] वियालए लोहितक्खे[2] सणिच्छरे चेव ।
आहुणिए पाहुणिए, कणगसणामा य पंचेव ॥१॥
सोमे सहिए आसासणे[3] य कज्जोवए य कव्वडए[4] ।
अयकरए[5] दुंदुभए, संखसणामेवि तिण्णेव ॥२॥

एवं भाणियव्वं जाव[6] भावकेउस्स अग्गमहिसीओ ।

गाहा— बम्हा[7] विण्हू य वसू, वरुणे अय विद्धी[8] पूस आस जमे ।
अग्गि पयावइ सोमे, रुद्दे अदिई बहस्सई सप्पे ॥१॥
पिउ भग अज्जम सविया, तट्ठा वाऊ तहेव इंदग्गी ।
मित्ते इंदे णिरई, आऊ विस्सा य बोद्धव्वे ॥२॥

१८७. चंदविमाणे णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ॥

१८८. चंदविमाणे णं देवीणं जहण्णेणं चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिमब्भहियं ॥

१८९. सूरविमाणे देवाणं जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं ॥

१९०. सूरविमाणे देवीणं जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं ॥

१९१. गहविमाणे देवाणं जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं ॥

१९२. गहविमाणे देवीणं जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ॥

१९३. णक्खत्तविमाणे देवाणं जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ॥

१९४. णक्खत्तविमाणे देवीणं जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं[9], उक्कोसेणं साहियं[10] चउब्भागपलिओवमं ॥

१९५. ताराविमाणे देवाणं जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं चउब्भाग-

---

१. नक्षत्रसम्बन्धिगाथाद्वयं 'अ,क,ख,त्रि,ब,स,पुवृ, हीवृ'—एतेषु आदर्शेषु ग्रहसम्बन्धिगाथाभ्यां पूर्वं विद्यते ।

२. लोहियंके (अ,क,ख,प,ब,शावृ); स्थानाङ्गे (२।३२५) 'लोहितक्खा' इति पाठो विद्यते ।

३. आसासेणे (अ,ब); आससणे (क,ख); अस्सासणे (त्रि) ।

४. कव्वरता (अ,ब); कव्वरए (त्रि); कव्वुरए (प,स,पुवृ,शावृ,हीवृ); स्थानाङ्गे (२।३२५) 'कब्बडगा' इति पाठो विद्यते ।

५. आतरए (अ,ख,ब) ।

६. ठाणं २।३२५ ।

७. बम्हे (अ,त्रि,ब); पम्हे (क,ख) । पुण्यसागरीयवृत्तौ एतद् गाथाद्वयं नास्ति व्याख्यातम् । 'स' प्रतावपि नैतद् उपलभ्यते ।

८. वुड्ढी (प) ।

९. अट्ठभाग (क,ख,त्रि,हीवृ); एतदशुद्धं प्रतिभाति । बहुष्वादर्शेषु प्रज्ञापनायां (४।१९८) जीवाजीवाभिगमे (३।१०२४) पि च तथादर्शनात् ।

१०. × (क,ख,त्रि,हीवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलिओवमं ॥

१९६. ताराविमाणे देवीणं जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं साइरेगं अट्ठभाग-पलिओवमं ॥

१९७. एएसि णं भंते ! चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवाणं कयरे-कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? गोयमा ! चंदिम-सूरिया दुवे[1] तुल्ला सव्वत्थोवा, णक्खत्ता संखेज्जगुणा, गहा संखेज्जगुणा, तारारूवा संखेज्जगुणा ॥

१९८. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे जहण्णपए वा उक्कोसपए वा केवइया तित्थयरा सव्वग्गेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णपए चत्तारि, उक्कोसपए चोत्तीसं तित्थयरा सव्वग्गेणं पण्णत्ता ॥

१९९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे जहण्णपए वा उक्कोसपए वा केवइया चक्कवट्टी सव्वग्गेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णपए चत्तारि, उक्कोसपए तीसं चक्कवट्टी सव्वग्गेणं पण्णत्ता ॥

२००. बलदेवा तत्तिया चेव जत्तिया चक्कवट्टी, वासुदेवावि तत्तिया चेव ॥

२०१. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया णिहिरयणा सव्वग्गेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि छलुत्तरा णिहिरयणसया सव्वग्गेणं पण्णत्ता ॥

२०२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया णिहिरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमा-गच्छंति ? गोयमा ! जहण्णपए छत्तीसं, उक्कोसपए दोण्णि सत्तरा णिहिरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

२०३. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया पंचिंदियरयणसया सव्वग्गेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! दो दसुत्तरा पंचिंदियरयणसया सव्वग्गेणं पण्णत्ता ॥

२०४. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे जहण्णपए वा उक्कोसपए वा केवइया पंचिंदियरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जहण्णपए अट्ठावीसं, उक्कोसपए दोण्णि दसुत्तरा पंचिंदियरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

२०५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया एगिंदियरयणसया सव्वग्गेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! दो दसुत्तरा एगिंदियरयणसया सव्वग्गेणं पण्णत्ता ॥

२०६. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया एगिंदियरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमा-गच्छंति ? गोयमा ! जहण्णपए अट्ठावीसं, उक्कोसेणं दोण्णि दसुत्तरा एगिंदियरयणसया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

२०७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइयं आयाम-विक्खंभेणं, केवइयं परिक्खेवेणं, केवइयं उव्वेहेणं, केवइयं उड्ढं उच्चत्तेणं, केवइयं सव्वग्गेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस य सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, णवणउइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं[2] उड्ढं उच्चत्तेणं, साइरेगं जोयणसयसहस्सं सव्वग्गेणं पण्णत्ते ॥

१. दोवि (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।
२. × (अ,क,ख,त्रि,ब,स) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०८. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे किं सासए ? असासए ? गोयमा ! सिय सासए, सिय असासए ।।

२०९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय सासए ? सिय असासए ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए, वण्णपज्जवेहिं गंध-रस-फास-पज्जवेहिं असासए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सिय सासए, सिय असासए ।।

२१०. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! ण कयावि णासि ण कयावि णत्थि ण कयावि ण भविस्सइ, भुविं च भवइ य भविस्सइ य धुवे णिइए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे जंबुद्दीवे दीवे पण्णत्ते ।।

२११. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे किं पुढविपरिणामे ? आउपरिणामे[1] ? जीवपरिणामे ? पोग्गलपरिणामे ? गोयमा ! पुढविपरिणामेवि आउपरिणामेवि जीवपरिणामेवि पोग्गलपरिणामेवि ।।

२१२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सव्वपाणा 'सव्वभूया सव्वजीवा'[2] सव्वसत्ता पुढविकाइयत्ताए आउकाइयत्ताए तेउकाइयत्ताए वाउकाइयत्ताए वणस्सइकाइयत्ताए उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ।।

२१३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जंबुद्दीवे दीवे जंबुद्दीवे दीवे ? गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे तत्थ-तत्थ देसे[3] तहिं-तहिं बहवे जंबूरुक्खा जंबूवणा जंबूवणसंडा णिच्चं कुसुमिया जाव[4] पडिमंजरिवडेंसगधरा[5] सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति। जंबूए सुदंसणाए अणाढिए णामं देवे महिड्ढिए जाव[6] पलिओवमट्ठिईए परिवसइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जंबुद्दीवे दीवे जंबुद्दीवे दीवे ।।

२१४. 'तए णं'[7] समणे भगवं महावीरे मिहिलाए णयरीए माणिभद्दे[8] चेइए[9] बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं बहूणं देवाणं बहूणं देवीणं मज्झगए एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ जंबूदीवपण्णत्ती णाम अज्जो ! अज्झयणे[10] अट्ठं च हेउं च 'पसिणं च कारणं च वागरणं च'[11] भुज्जो-भुज्जो उवदंसेइ—त्ति बेमि ।।

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर—१,६७,६६८

अनुष्टुप् श्लोक ५,२४० अक्षर १८

१. आउय° (अ,त्रि,ब) अग्रेपि।
२. सव्वजीवा सव्वभूया (अ,क,ब,स,शावृ)।
३. देसे-देसे (क,ख,स)।
४. ओ० सू० ५।
५. पिंडि° (अ); पोंडि° (ब); पुंडि° (स)।
६. जं० १।२४।
७. तेणं कालेणं तेणं समएणं (पुवृ); तए णं (पुवृपा)।
८. माववदे (अ,ब)।
९. चितिए (अ,ब)।
१०. अज्झयणं (पुवृ); अज्झयणे (पुवृपा)।
११. करणं च (अ,ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदपण्णत्ती
सूरपण्णत्ती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदपण्णत्ती

मंगल-पदं

१. जयति णवणलिणकुवलय-वियसियसयवत्तपत्तलदलच्छो ।
वीरो गयंदमयगल[1]-सललियगयविक्कमो भयवं ॥१॥
नमिऊण[2] असुरसुर-गरुलभुयगपरिवंदिए गयकिलेसे[3] ।
अरिहे सिद्धायरिए[4], उवज्झाए[5] सव्वसाहू य ॥२॥
फुडवियडपागडत्थं, वोच्छं पुव्वसुयसारणीसंदं ।
सुहुमगणि [ण ?] णोवदिट्ठं[6], जोइसगणरायपण्णत्तिं[7] ॥३॥
णामेण इंदभूतित्ति, गोतमो वंदिऊण तिविहेणं ।
पुच्छइ जिणवरवसहं, जोइसगणरायपण्णत्तिं[8] ॥४॥

पाहुडसंखा-पदं

२. कइ मंडलाइ वच्चइ ? तिरिच्छा किं व गच्छइ ?
ओभासइ केवइयं ? सेयाइ किं ते संठिई ? ॥१॥
कहिं पडिहया लेसा ? कहं ते ओयसंठिई ?
के सूरियं वरयंती ? कहं ते उदयसंठिती ? ॥२॥
कतिकट्ठा पोरिसिच्छाया ? जोगे किं ते आहिए ?
किं ते संवच्छराणादी ? कइ संवच्छराइ य ? ॥३॥
कहं चंदमसो वुड्ढी ? कया ते दोसिणा बहू ?
केई सिग्घगई वुत्ते ? कहं दोसिणलक्खणं ? ॥४॥
चयणोववाते ? उच्चत्ते ? सूरिया कति आहिया ?
अणुभावे के व से वुत्ते ? एवमेयाइं वीसई ॥५॥

---

१. गइंदमयगल (व) ।
२. नमिउण (ट,व) ।
३. गत्तकिलेसे (व) ।
४. सिद्धायरि (म,व) ।
५. मुवज्झाए (ट) ।
६. सुहुमणिगवोइट्ठं (म,व) ।
७. जोइसगणरायसंबद्धं (म,व) ।
८. जोइसगणरायपण्णत्ती (ट) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमे पाहुडे पाहुडपाहुड-पडिवत्तिसंखा-पदं

३. वड्ढोवुड्ढी मुहुत्ताणमद्धमंडलसंठिई ।
के ते चिण्णं परियरइ ? अंतरं किं चरंति य ? ॥१॥
ओगाहइ केवइयं ? केवइयं च विकंपइ ?
मंडलाण य संठाणे, विक्खंभो अट्ठ पाहुडा ॥२॥
छप्पंच य सत्तेव य, अट्ठ य तिण्णि य हवंति पडिवत्ती ।
पढमस्स पाहुडस्स उ, हवंति एयाओ पडिवत्ती ॥३॥

दोच्चेपाहुडे पाहुडपाहुड-पडिवत्तिसंखा-पदं

४. पडिवत्तीओ उदए, तह अत्थमणेसु य ।
भेयघाए कण्णकला, मुहुत्ताण गईइ य ॥१॥
णिक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगईइ य ।
चूलसीइसयं पुरिसाणं, तेसिं च पडिवत्तीओ ॥२॥
उदयम्मि अट्ठ भणिया, भेयघाए दुवे य पडिवत्ती ।
चत्तारिमुहुत्तगईए, हुंति तइयम्मि पडिवत्ती ॥३॥

दसमे पाहुडे पाहुडपाहुडसंखा-पदं

५. आवलिय मुहुत्तग्गे, एवंभागा य जोगसा ।
कुलाइं पुण्णमासी य, सण्णिवाए य संठिई ॥१॥
तारग्गं च णेया य, चंदमग्गत्ति यावरे ।
देवताण य अज्झयणे, मुहुत्ताण य नामयाइं[1] य ॥२॥
दिवसा राइ वुत्ता य तिहि गोत्ता भोयणाणि य ।
आइच्च-चार[2] मासा य, पंचसंवच्छराइ य ॥३॥
जोइसस्स य दाराइं, णक्खत्तविजएवि य ।
दसमे पाहुडे एए, बावीसं पाहुडपाहुडा ॥४॥

उक्खेव-पदं

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला नामं नयरी होत्था रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धा, वण्णओ[3] ॥

७. तीसे णं मिहिलाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं माणिभद्दे नामं चेइए होत्था---चिराईए, वण्णओ[4] ॥

८. तीसे णं मिहिलाए नयरीए जियसत्तू नामं राया, धारिणी नामं देवी, वण्णओ[5] ॥

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं तम्मि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ॥

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती

---

१. नामधेज्जाइं (ट,म,व) ।
२. अष्टादशे आदित्यानामुपलक्षणमेतच्चन्द्रमसां च चारा वक्तव्याः (सूवृ) ।
३. ओ० सू० १ ।
४. ओ० सू० २-१३ ।
५. ओ० सू० १४,१५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव[1] पज्जुवासमाणे एवं वयासी[2]—

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर—८९५

अनुष्टुप् श्लोक २७ अक्षर ३०

१. ओ० सू० ८२,८३।

२. चन्द्रप्रज्ञप्तेः सूर्यप्रज्ञप्तेश्च उपलब्धः पाठः विषयश्च तुल्योस्ति। चन्द्रप्रज्ञप्तौ चतस्रो मंगलगाथा अतिरिक्ता वर्तन्ते। चन्द्रप्रज्ञप्त्यादर्शेषु प्रारम्भिकपाठस्य क्रमः किञ्चिद् भिन्नोस्ति, तेन आद्यवर्ती किञ्चिद् अंशः अत्र साक्षात् लिखितः। शेषपाठः सूर्यप्रज्ञप्तिवद् ज्ञातव्यः। अनयोर्द्वयोरपि हस्तलिखिता आदर्शा उपलभ्यन्ते, द्वयोरपि च स्वतन्त्रा टीका वर्तते। तेषु उपलब्धः पाठभेदः परिशिष्टे प्रदत्तोस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरपण्णत्ती

पढमं पाहुडं

पढमं पाहुडपाहुडं

उक्खेव-पदं

१. तेणं[1] कालेणं तेणं समएणं मिहिला नामं नयरी होत्था—रिद्ध[2]-त्थिमिय-समिद्धा पमुइयजणजाणवया जाव[3] पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

२. तीसे णं मिहिलाए नयरीए बहिया 'उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए'[4], एत्थ णं माणिभद्दे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[5] ॥

३. तीसे णं मिहिलाए नयरीए जियसत्तू नामं राया, धारिणी नामं देवी, वण्णओ[6] ॥

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं तम्मि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे[7], परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ जाव[8] राया जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं[9] अणगारे गोयमे गोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे जाव[10] एवं वयासी—

पाहुडसंखा-पदं

६ 'कइ मंडलाइ वच्चइ'[11] ? तिरिच्छा किं व[12] गच्छइ ?
ओभासइ केवइयं ? सेयाइ[13] किं ते संठिई ? ॥१॥

---

१. अतः पूर्वं आदर्शेषु 'णमो अरिहंताणं' इत्येकपदमेव लिखितं दृश्यते। वृत्तौ तद् नास्ति व्याख्यातम्। अतो नास्माभिस्तन्मूले स्वीकृतम्।

२. रिद्धि (ग,घ)।

३. ओ० सू० १।

४. एकारो मागधभाषानुरोधतः प्रथमैकवचनप्रभवः, यथा 'कयरे आगच्छइ दित्तरूवे' (उत्त० १२।६) इत्यादौ [सूवृ]।

५. ओ० सू० २-१३।

६. ओ० सू० १४,१५।

७. समोसढो (ख)।

८. ओ० सू० ७९,८०।

९. नामंति प्राकृतत्वात् विभक्तिपरिणामेन नाम्नेति द्रष्टव्यम् (सूवृ)।

१०. ओ० सू० ८२,८३।

११. किति मंडलाइं चरति (ग,घ)।

१२. वा (ग,घ)।

१३. सेयाए (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहिं पडिहया लेसा ? कहं ते ओयसंठिती ?
के सूरियं वरयंती ? कहं ते उदयसंठिती ? ।।२।।
कतिकट्ठा पोरिसिच्छाया ? जोगे किं ते आहिए ?
के ते संवच्छराणादी ? कइ संवच्छराइ य ।।३।।
कहं चंदमसो वुड्ढी ? कया ते दोसिणा बहू ?
के सिग्घगई वुत्ते ? कहं[1] दोसिणलक्खणं ? ।।४।।
चयणोववाते ? उच्चत्ते ? सूरिया कति आहिया ?
अणुभावे के व से वुत्ते ? एवमेयाइं वीसई ।।५।।

पढमे पाहुडे पाहुडपाहुड-पडिवत्तिसंखा-पदं

७. वड्ढोवुड्ढी मुहुत्ताणमद्धमंडलसंठिई ।
के ते चिण्णं परियरइ ? अंतरं किं चरंति य ? ।।१।।
ओगाहइ केवइयं ? केवइयं[2] च विकंपइ ?
मंडलाण य संठाणे, विक्खंभो अट्ठ पाहुडा ।।२।।
छप्पंच य सत्तेव य, अट्ठ य तिण्णि य हवंति पडिवत्ती ।
पढमस्स पाहुडस्स उ, हवंति एयाओ पडिवत्ती ।।३।।

बीच्चे पाहुडे पाहुडपाहुड-पडिवत्तिसंखा-पदं

८. पडिवत्तीओ उदए, तह[3] अत्थमणेसु य ।
भेयघाए कण्णकला, मुहुत्ताण गईइ य ।।१।।
निक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगईइ य ।
चूलसीइसयं पुरिसाणं 'तेसिं च'[4] पडिवत्तीओ ।।२।।
उदयम्मि अट्ठ भणिया, भेयघाए[5] दुवे य पडिवत्ती ।
चत्तारि मुहुत्तगईए[6], हुंति तइयम्मि[7] पडिवत्ती ।।३।।

दसमे पाहुडे पाहुडपाहुड संखा-पदं

९. आवलिय मुहुत्तग्गे, एवंभागा य जोगसा ।
कुलाइं पुण्णमासी य, सण्णिवाए य संठिई ।।१।।
तारग्गं[8] च णेया य, चंदमग्गत्ति यावरे ।
देवताण[9] य अज्झयणे[10] मुहुत्ताण नामयाइ[11] य ।।२।।

---

१. कधं (ग,घ) ।
२. कतियं (ख) ।
३. तधा (ख); तहा (ग,घ) ।
४. तेसि व णं (ग,घ) ।
५. भेदग्घाए (सूवृ) ।
६. मुहुत्तारिमुहुत्तगतीए (ग,घ) ।
७. वितिआइ (ख); वित्तायाए (ग,घ) ।
८. तारग्गं (ख); तारसं (ग,घ) ।
९. देवाण (ख) ।
१०. अज्झयणा (ख,ग,घ) ।
११. नामधेज्जाइं (ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिवसा राइ वुत्ता य, तिहि गोत्ता भोयणाणि[1] य।
आइच्च-चार[2] मासा य, पंच संवच्छराइ य ॥३॥
जोइसस्स दाराइं, णक्खत्तविजएवि य।
दसमे पाहुडे एए, बावीसं पाहुडपाहुडा ॥४॥

१०. ता कहं ते वड्ढोवुड्ढी मुहुत्ताणं आहितेति वएज्जा ? ता अट्ठ एगूणवीसे मुहुत्तसए सत्तावीसं च सट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वएज्जा ॥

११. ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, सव्वबाहिराओ वा[3] मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, एस णं अद्धा केवइयं राइंदियग्गेणं आहितेति वएज्जा ? ता तिण्णि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गेणं आहितेति वएज्जा ॥

१२. ता एयाए णं अद्धाए सूरिए 'कइ मंडलाइं दुक्खुत्तो चरइ[4] ? ता चुलसीयं[5] मंडलसयं चरइ—बासीतं[6] मंडलसयं दुक्खुत्तो चरइ, तं जहा—निक्खममाणे चेव पविसमाणे चेव, दुवे य खलु मंडलाइं सइं चरइ, तं जहा—सव्वब्भंतरं चेव मंडलं सव्वबाहिरं चेव मंडलं ॥

१३. जइ खलु तस्सेव आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइं[7] अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ता राती भवति। पढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राती, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि दुवालसमुहुत्ता राती[8]। दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राती, अत्थि दुवालसमुहुत्ता राती, णत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे[9]। पढमे वा[10] छम्मासे दोच्चे वा[11] छम्मासे णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे[12], णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राती[13] ॥

१४. तत्थ णं को हेतूति वएज्जा[14] ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं

---

१. आयणाणि (ख); तोयणाणि (घ)।
२. अष्टादशे आदित्यानामुपलक्षणमेतच्चन्द्रमसां च चारा वक्तव्याः (सूवृ)।
३. × (घ,ट,व, चंवृ)।
४. चिन्हाङ्कितः पाठः द्वयोरपि वृत्योराधारेण स्वीकृतः। आदर्शेषु केचिद् भेदा लभ्यन्ते—कति मंडलाइं चरति (क,ग,घ,व); कइ मंडलाइं चरति कइ मंडलाइं दुक्खुत्तो चरइ (ट)। कति वा मंडलान्येकवारमिति शेषः (सूवृ, चंवृ)।
५. चूलसिति (ट); चूलसीती (व)।
६. बयासीयं (ट)।
७. सयं (ग,घ)।
८. राती भवति (क,ग,घ,ट,व); वृत्योरेतत्पदं नास्ति व्याख्यातम्, अस्ति क्रियापदस्य विद्यमानतायां नावश्यकमपि विद्यते।
९. दिवसे भवइ (क,ग,घ,ट,व)।
१०,११. × (क,ग,घ); प्रथमे षण्मासे द्वितीये वा षण्मासे (सूवृ, चवृ)।
१२. दिवसे भवति (क,ग,घ,ट,व,सूवृ); चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ एतत् क्रियापदं नास्ति।
१३. राती भवति (क,ग,घ,ट,वृ)।
१४. को हेतू वदेज्जा (क); के हेतुं वदेज्जा (ग,घ,व); को हेउ (ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वब्भंतराए[1] *सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूयसंठाणसंठिए, वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिए, वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए, वट्टे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिए एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहियं° परिक्खेवेणं पण्णत्ते। ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति।

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे[2] पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, 'ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ'[3], तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया[4]। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया[5] णं सूरिए अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ[6] तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे दो-दो 'एगट्ठिभागे मुहुत्तस्स'[7] एगमेगे मंडले दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे-अभिवुड्ढेमाणे सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरमंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं[8] राइंदियसएणं तिण्णिछावट्ठे एगट्ठिभागमुहुत्ते सए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढित्ता रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं 'पढमस्स छम्मासस्स'[9] पज्जवसाणे।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे[10] पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालस-

---

१. सं० पा०—सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं।
२. अयमीणे (क,ग,घ)।
३. × (क,घ)।
४. अधिया (क)।
५. जदा (क,घ)।
६. द्रष्टव्यम्—जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः ७।६९ सूत्रस्य पाठः पाठान्तरं च।
७. एगट्ठिभागमुहुत्ते (क,ट,व)।
८. तेसीतेणं (क,ट)।
९. पढमछम्मासस्स (क,ग,घ)।
१०. अयमीणे (क,व); अजमीणे (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। एवं खलु एएणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे दो-दो एगट्ठिभाग-मुहुत्ते एगमेगे मंडले रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे दिवसखेत्तस्स अभिवुड्ढे-माणे[1]-अभिवुड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीएणं[2] राइंदियसएणं तिण्णिछावट्ठे एगट्ठिभागमुहुत्ते सए रयणिखेत्तस्स निवुड्ढित्ता दिवसखेत्तस्स अभिवुड्ढित्ता[3] चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे।

इति खलु तस्सेवं आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं अट्ठारस-मुहुत्ता राती भवति, सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइं दुवालसमुहुत्ता राती भवति। पढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राती, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, अत्थि दुवालस-मुहुत्ते दिवसे, णत्थि दुवालसमुहुत्ता राती। दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राती, अत्थि दुवालसमुहुत्ता राती, णत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे। पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे, णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राती। णण्णत्थ राइंदियाणं वड्ढोवुड्ढीए[4] मुहुत्ताण वा चयोवचएणं, णण्णत्थ अणुवायईए, 'गाहाओ भाणियव्वाओ'[5]॥

बीयं पाहुडपाहुडं

१५. ता कहं ते अद्धमंडलसंठिती आहितेति[6] वएज्जा? तत्थ खलु 'इमे दुवे'[7] अद्धमंडलसंठिती पण्णत्ता, तं जहा — दाहिणा चेव अद्धमंडलसंठिती उत्तरा चेव अद्धमंडल-संठिती॥

१६. ता कहं ते दाहिणा अद्धमंडलसंठिती आहितेति[8] वएज्जा? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[9] परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए

---

१. अभिवड्ढेमाणे (क,ग,घ,ट,व)।
२. तीयसीएणं (ट))।
३. अभिवड्ढित्ता (क,ग,घ,ट,व)।
४. वड्ढोवड्ढीए (क,ग,घ,ट,व)।
५. 'गाहाओ भणितव्वाओ' त्ति अत्र अनन्त-रोक्तार्थसंग्राहिका अस्या एव सूर्यप्रज्ञप्तेर्भद्र-बाहुस्वामिना या निर्युक्तिः कृता तत्प्रतिबद्धा अन्या वा काश्चन ग्रन्थान्तरसुप्रसिद्धा गाथा वर्त्तन्ते ता 'भणितव्याः' पठनीयाः, ताश्च सम्प्रति क्वापि पुस्तके न दृश्यन्ते इति व्यव-च्छिन्नाः सम्भाव्यन्ते ततो न कथयितुं व्याख्यातुं वा शक्यन्ते, यो वा यथा सम्प्रदाया-दवगच्छति तेन तथा शिष्येभ्यः कथनीयाः व्याख्यानीयाश्चेति (सूवृ)।
६. आहितातिं (क,ग,घ,व)।
७. इमा दुविहा (ट,व)।
८. आहिताति (क,ग,घ)।
९. सू० १।१४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति।
से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं आयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए अब्भितराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए अब्भितरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता रातो भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं तंसि-तंसि देसंसि तं-तं अद्धमंडलसंठिति संकममाणे-संकममाणे दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।
से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए बाहिरंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं तंसि-तंसि देसंसि तं-तं अद्धमंडलसंठिति संकममाणे-संकममाणे उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे॥

१७. ता कहं ते उत्तरा अद्धमंडलसंठिती आहितेति वएज्जा? ता अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[1] परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिति उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारस-

१. सू० १।१४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। जहा दाहिणा तहा[1] चेव, णवरं—उत्तरट्ठिओ अब्भितराणंतरं दाहिणं उवसंकमति, दाहिणाओ अब्भितरं तच्चं उत्तरं उवसंकमति। एवं खलु एएणं उवाएणं जाव[2] सव्वबाहिरं दाहिणं उवसंकमति, सव्वबाहिरं दाहिणं उवसंकमित्ता दाहिणाओ बाहिराणंतरं उत्तरं उवसंकमति, उत्तराओ बाहिरं तच्चं दाहिणं, तच्चाओ दाहिणाओ संकममाणे-संकममाणे जाव सव्वब्भंतरं उवसंकमति तहेव। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे, गाहाओ॥

१,२. तहा उत्तरा (क)। वृत्तौ (पत्र २०) अस्य विषयस्य पूर्णालापको लिखितो दृश्यते। कोष्ठकवर्ती पाठो वृत्तौ नोपलब्धः, किन्तु पूर्णपाठानुसारेण युज्यते, इत्यस्माभिर्लिखितः। सूत्रालापको यथावस्थितः परिभावनीयः, सच्चैवं—से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरमयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए अब्भितराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति, जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए अब्भितरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खलु एएणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं तंसि-तंसि देसंसि तं-तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे-संकममाणे उत्तराए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए सव्वबाहिरं दाहिणमद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं दाहिणं अद्धमंडलसंठिइमुवसंकमित्ता चारं चरति तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासमयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाए तस्साइपएसाए बाहिराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइमुवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइमुवसंकमित्ता चारं चरति तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ दोहि य एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। [से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्तराए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए बाहिरंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए]। एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयणंतराओ तयाणंतरं तंसि-तंसि देसंसि तं-तं अद्धमंडलसंठिइं संकममाणे-संकममाणे दाहिणाए अंतराए भागाए तस्सादिपदेसाए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइमुवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठिइं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति (सूवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तच्चं पाहुडपाहुडं

१८. ता के ते चिण्णं पडिचरइ आहितेति वएज्जा? तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पण्णत्ता, तं जहा—भारहे चेव सूरिए, एरवए चेव सूरिए। ता एते णं दुवे सूरिया तीसाए तीसाए मुहुत्तेहिं एगमेगं अद्धमंडलं चरंति, सट्ठीए-सट्ठीए मुहुत्तेहिं एगमेगं मंडलं संघातेंति। ता निक्खममाणा खलु एते दुवे सूरिया नो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, तं सतमेगं चोयालं॥

१९. तत्थ णं[1] को हेतुति[2] वएज्जा? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं, तत्थ णं अयं भारहए चेव सूरिए जंबुद्दीवस्स दीवस्स 'पाईणपडिणायताए उदीणदाहिणायताए'[3] जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउतिं सूरियगताइं[4] जाइं अप्पणा चेव[5] चिण्णाइं पडिचरइ, उत्तरपच्चत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं[6] पडिचरइ। तत्थ अयं भारहे सूरिए एरवयस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सएणं छेत्ता उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चिण्णाइं पडिचरइ, दाहिणपच्चत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काउणतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरइ।

तत्थ[7] अयं एरवए सूरिए जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सतेणं छेत्ता उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि बाणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ, दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभाग-मंडलंसि एक्काणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरइ। तत्थ अयं एरावतिए सूरिए भारहस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीण-दाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सतेणं छेत्ता दाहिणपच्चत्थिमिल्लंसि चउभाग-मंडलंसि बाणउतिं सूरियगताइं सूरिए परस्स चिण्णाइं पडिचरइ, उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरइ। ता निक्खममाणा खलु एते दुवे सूरिया नो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति। पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति। सतमेगं चोयालं, गाहाओ॥

---

१. × (क,ग,घ)।
२. हेऊ (क,ग,घ,ट,व)।
३. पाईणपडिणाययउदीणदाहिणायताए (क,ग,घ,व)।
४. सूरियमताइं (ग,घ,ट,व)।
५. × (क,घ,व)।
६. चिण्णं (ग,घ,ट,व) प्रायः सर्वत्र।
७. तत्थ णं (ग,ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं पाहुडपाहुडं

२०. ता केवतियं एते[1] दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति[2] वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ छ पडिवत्तीओ। तत्थ एगे एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसतं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति वएज्जा—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च चउतीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति[3] वएज्जा—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ३ [4]•एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं दीवं एगं समुद्दं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति वएज्जा—एगे एवमाहंसु° ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता दो दीवे दो समुद्दे अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहिताति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ६

वयं पुण एवं वयामो—ता 'पंच पंच'[5] जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा वा निवड्ढेमाणा वा सूरिया चारं चरंति आहिताति वएज्जा ॥

२१. तत्थ णं को हेतूति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ते, ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं 'नवणउतिं जोयणसहस्साइं'[6] छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वएज्जा, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति।

ते निक्खममाणा सूरिया नवं संवच्छरं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं नवणवतिं जोयणसहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसए पणवीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वएज्जा, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। ते निक्खममाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं नवणवतिं जोयणसहस्साइं छच्च

---

१. ते (क,ग,घ,व)।
२. आहितेति (ट,व); अत्र कर्तृपदे द्विवचनमस्ति तेन 'आहिताति' (आख्याताविति) इति पाठो मूले स्वीकृतः।
३. आहियति (ग,घ,व)।
४. सं० पा०—एवं एगं दीवं एगं समुद्दं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु।
५. पंच (क,ग,घ,ट,व)।
६. णवणवइजोयणसहस्साइं (ग,घ,ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इक्कावण्णे[1] जोयणसए नव य एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वएज्जा, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। एवं खलु एतेणुवाएणं निक्खममाणा एते दुवे सूरिया तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणा-संकममाणा पंच-पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्ण-मण्णस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा-अभिवड्ढेमाणा सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च सट्ठे जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

ते पविसमाणा सूरिया दोच्चं छम्मासं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया बाहिराणंतरं मंडलं उव-संकमित्ता चारं चरंति, तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छव्वीसं[2] च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहिताति वएज्जा, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। ते पविसमाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावण्णं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठि-भागमुहुत्तेहिं अहिए। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणा एते दुवे सूरिया तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणा-संकममाणा पंच-पंच जोयणाइं पणतीसे एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले 'अण्णमण्णस्स अंतरं'[3] निवुड्ढेमाणा-निवुड्ढेमाणा सव्वब्भंतरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, तया णं नवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे॥

पंचमं पाहुडपाहुडं

२२. ता केवतियं ते दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति[4] वएज्जा?

---

१. इक्कावणे (ग,घ,ट,व)।

२. छत्तीसं (ग,घ); वृत्तिद्वयेपि 'षड्विंशतिं चैकषष्टिभागान् योजनस्य' इति लभ्यते। तेन 'छत्तीसं' इति पदं नास्ति सम्मतम्।

३. अण्णमण्णस्संतरं (क,ग,घ)।

४. आहिताति (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ[1]। तत्थ एगे एवमाहंसु—ता एगं जोयण-सहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं दीवं[2] समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ 'आहितेति वएज्जा'[3]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च चउत्तीसं जोयणसयं दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एव-माहंसु—ता अवड्ढं दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता किंचि दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ५ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता एगं जोयण-सहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, ते एवमा-हंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं जंबुद्दीवं दीवं एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं लवण-समुद्दं एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तम-कट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ १ एवं चोत्तीसं जोयणसयं २ एवं पणतीसं जोयणसयं ३ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता अवड्ढं दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, ते एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं अवड्ढं जंबुद्दीवं दीवं ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, एवं सव्वबाहिरएवि, नवरं—अवड्ढं लवणसमुद्दं, तया णं राइंदियं तहेव ४ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता नो किंचि दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, ते एव-माहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं नो किंचि दीवं समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, तहेव। एवं सव्वबाहिरए मंडले, नवरं—नो किंचि लवणसमुद्दं ओगाहित्ता चारं चरइ, राइंदियं तहेव, एगे एवमाहंसु ५

वयं पुण एवं वयामो—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं जंबुद्दीवं दीवं असीतं जोयणसतं ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एवं सव्वबाहिरेवि,[4] णवरं—लवणसमुद्दं तिण्णि तीसे जोयणसए ओगाहित्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठ-

१. प्रज्ञप्तस्तद्यथा (सूवृ, चंवृ)।
२. दीवं वा (क,ग,घ,ट,व)।
३. 'क,ग,घ' आदर्शेषु अयं पाठो नैव दृश्यते, वृत्योरपि नास्ति व्याख्यातः 'ट' प्रतौ क्वचित्-क्वचित् लिखितोस्ति शेषप्राभृतानां प्रतिपत्तिष्वपि एवमेव दृश्यते।
४. क्वचित्तु 'सव्वबाहिरेवी' व्यतिदेशमन्तरेण सकलमपि सूत्रं साक्षाल्लिखितं दृश्यते (सूवृ, चंवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, गाहाओ भाणियव्वाओ ॥

छट्ठं पाहुडपाहुडं

२३. ता केवतियं[1] ते एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ सत्त पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। 'तत्थ एगे'[2] एवमाहंसु--ता दो जोयणाइं अद्धबायालीसं तेसीतितसतभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु--ता अड्ढाइज्जाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु--ता तिभागूणाइं तिण्णि जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु--ता तिण्णि जोयणाइं अद्धसीतालीसं[3] च तेसीतिसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु--ता अद्धुट्ठाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु--ता चउब्भागूणाइं चत्तारि जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु--ता चत्तारि जोयणाइं अद्धबावण्णं च तेसीतिसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ आहितेति वएज्जा--एगे एवमाहंसु ७

वयं पुण एवं वयामो--ता दो जोयणाइं अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता-विकंपइत्ता सूरिए चारं चरइ ॥

२४. तत्थ णं को हेतूति वएज्जा? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[4] परिक्खेवेणं पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति।

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच जोयणाइं पणतीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता चारं चरइ, तया णं

१. कत्तियं (ग,घ)।
२. तत्थेगे (ग,घ)।
३. अद्धसीतालं (क,ब)।
४. सू० १।१४।

अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया । एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे दो-दो जोयणाइं अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपमाणे-विकंपमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं पंचदसुत्तरजोयणसए विकंपइत्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ । एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दो-दो जोयणाइं अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता चारं चरइ, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरतच्चंसि मंडलंसि उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता चारं चरइ, [1]°तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए° । एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे दो-दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपमाणे-विकंपमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं पंचदसुत्तरे जोयणसते विकंपइत्ता चारं चरइ, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति । एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ॥

सत्तमं पाहुडपाहुडं

२५. ता कहं ते मंडलसंठिती आहितेति[2] वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ । तत्थ एगे एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता[3] समचउरंससंठाणसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता विसमचउरंससंठाणसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता समचउक्कोणसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता

१. सं० पा०—राइंदिए तहेव ।
२. आहितांति (क,ग,घ,व) ।
३. मंडलवत्ता (ग) ।

सव्वावि मंडलवता विसमचउक्कोणसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता समचक्कवालसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता विसमचक्कवालसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु—तासव्वावि मंडलवता चक्कद्धचक्कवालसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता छत्तागारसंठिता पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ८ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता छत्तागारसंठिता पण्णत्ता, एतेणं नएणं नायव्वं, नो चेव णं इतरेहिं, पाहुडगाहाओ भाणियव्वाओ ॥

अट्ठमं पाहुडपाहुडं

२६. ता सव्वावि णं मंडलवता केवतियं बाहल्लेणं, केवतियं आयाम-विक्खंभेणं, केवतियं परिक्खेवेणं अहितातिं वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थ एगे एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलवता जोयणं बाहल्लेणं, एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसहस्साइं तिण्णि य नवणउए जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता[1]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलवता जोयणं बाहल्लेणं, एगं जोयणसहस्सं एगं च चउतीसं जोयणसयं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसहस्साइं चत्तारि बिउत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता[2]—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि णं मंडलवता जोयणं बाहल्लेणं, एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसहस्साइं चत्तारि य पंचुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ३
वयं पुण एवं वयामो—ता सव्वावि णं मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, अणियता आयाम-विक्खंभ-परिक्खेवेणं आहितातिं वएज्जा ॥

२७. तत्थ णं को हेतूति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, नवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य जोयणसहस्साइं एगूणणउतिं जोयणाइं किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति।
से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, नवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च पणयाले जोयणसए पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य सहस्साइं एगं च सत्तुत्तरं जोयणसयं किंचिविसेसूणं

१. आहितेति वएज्जा (ट); आहियाति वएज्जा (व)।
२. आहितेति वएज्जा (ट); आहियाति वएज्जा (व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिक्खेवेणं, तया णं दिवसराइप्पमाणं तहेव[1]। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, नवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च एक्कावण्णे[2] जोयणसए नव य एगट्ठिभागा जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य सहस्साइं एगं पणवीसं जोयणसयं परिक्खेवेणं, तया णं दिवसराई तहेव[3]। एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं 'संकममाणे-संकममाणे'[4] पंच-पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे 'अट्ठारस-अट्ठारस'[5] जोयणाइं परिरयवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे सव्वबाहिरं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागा जोयणस्स बाहल्लेणं, एगं जोयणसयसहस्सं छच्च सट्ठे जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं तिण्णि य पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेणं, तया णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छव्वीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं दोण्णि य सत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेणं, तया णं राइंदियं तहेव[6]। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं सा

---

१. तच्चेवम्—तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया (सूवृ)।

२. एक्काप्पणे (ट,व)।

३. तच्चैवं—तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणे, दुवालस-मुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभाग-मुहुत्तेहि अहिया (सूवृ)।

४. उवसंकममाणे-उवसंकममाणे (ट,व)।

५. अट्ठारस-अट्ठारस किंचूणाइं (क); वृत्तौ निश्चयव्यवहारनययोश्चर्चा कृतास्ति—'अष्टादश अष्टादश' योजनानि परिरयवृद्धिमभिवर्द्धयन्नभिवर्द्धयन् इहाष्टादशेति व्यवहारत उक्तम्, निश्चयनयेन तु सप्तदश सप्तदश योजनानि अष्टात्रिंशतं चैकषष्टिभागा योजनस्येति द्रष्टव्यं, एतच्च प्रागेव भावितं, न चैतत् स्वमनीषिकाविजृम्भितं, यत उक्तं तद्विचारप्रक्रमे एव करणविभावनायां—"सत्तरस जोयणाइं अट्ठतीसं च एगट्ठिभागा १७$\frac{38}{61}$ एयं निच्छएणं, संववहारेणं पुण अट्ठारस जोयणाइं (सूवृ)।

६. तौ चवम्—"तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे हवइ दोहि एगट्ठिभाग-मुहुत्तेहि अहिए (सूवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावण्णं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं दोण्णि य अउणासीते जोयणसए परिक्खेवेणं, दिवसराई तहेव[1]। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे पंच-पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढि निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे अट्ठारस[2] जोयणाइं परिरयवुड्ढि निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, नवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसए आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसय-सहस्साइं पण्णरस य सहस्साइं अउणाउतिं[3] च जोयणाइं किंचिविसेसाहियाइं परिक्खेवेणं, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे। ता सव्वावि णं मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, सव्वावि णं मंडलंतरिया दो जोयणाइं विक्खंभेणं, एस णं अद्धा तेसीयसयपडुप्पण्णो पंचदसुत्तरे जोयणसए आहिताति वएज्जा॥

२८. ता[4] अब्भिंतराओ मंडलवताओ बाहिरा मंडलवता, बाहिराओ वा मंडलवताओ अब्भिंतरा मंडलवता, एस णं अद्धा केवतियं आहितेति वएज्जा? ता पंचदसुत्तरे जोयणसए आहितेति वएज्जा॥

२९. अब्भिंतराए मंडलवताए बाहिरा मंडलवता, बाहिराए वा मंडलवताए अब्भिं-तरा मंडलवता, एस णं अद्धा केवतियं आहितेति वएज्जा? ता पंचदसुत्तरे जोयणसए अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितेति वएज्जा॥

३०. ता अब्भंतराओ मंडलवताओ बाहिरा मंडलवता, बाहिराओ वा मंडलवताओ अब्भंतरा मंडलवता, एस णं अद्धा केवतियं आहितेति वएज्जा? ता पंचणवुत्तरे जोयणसए तेरस य एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितेति वएज्जा॥

३१. ता अब्भिंतराए मंडलवताए बाहिरा मंडलवता, बाहिराए वा मंडलवताए अब्भिंतरा मंडलवता, एस णं अद्धा केवतियं आहितेति वएज्जा? ता पंचदसुत्तरे जोयणसए आहितेति वएज्जा॥

---

१. ते चैवम्—तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ चउहि एगट्ठिभागमुहु-त्तेहि अहिए (सूवृ)।

२. अट्ठारस किंचूणाइं (क)।

३. अउणाणउतिं (क,ट,व)।

४. चन्द्रप्रज्ञप्त्यादर्शयोः सूत्रचतुष्कस्य (१।२६-३२) पाठो भिन्नोस्ति। द्रष्टव्यं परिशिष्टम्।

बीयं पाहुडं

पढमं पाहुडपाहुडं

१. ता कहं[1] ते तिरिच्छगती[2] आहितातित वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थ एगे एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ[3] लोयंताओ[4] पादो मिरीची[5] आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं[6] लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता पच्चत्थिमंसि[7] लोयंतंसि सायं मिरीयं[8] आगासंसि विद्धंसइ—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पादो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासंसि विद्धंसइ—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पादो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता, 'पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता'[9] अहे पडियागच्छइ, पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयंताओ पादो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता पच्चत्थिमिल्लंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढविकायंसि विद्धंसइ—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढविकायंसि अणुपविसइ, अणुपविसित्ता अहे पडियागच्छइ, पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढविकायंसि उत्तिट्ठइ—एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमिल्लाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि पाओ सूरिए आउकायंसि विद्धंसइ—एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोगंताओ पाओ सूरिए

---

१. कधं (क)।
२. तिरच्छगती (ट)।
३. पुरत्थमिल्लातो (ट)।
४. लोगंतातो (ट)।
५. सूरिए (ट); मिरी (व)।
६. × (ग,घ,ट,व)।
७. पच्चत्थिमिल्लंसि (ट,व)।
८. सूरिए (क,ट,व)।
९. चिन्हाङ्कितः पाठः 'क,ग,घ' आदर्शेषु नोपलभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आउकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायंसि अणुपविसइ[1], अणुपविसित्ता अहे पडियागच्छइ, पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उत्तिट्ठइ—एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु—ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं पाओ सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं दाहिणड्ढं लोयं तिरियं करेइ, करेत्ता उत्तरड्ढलोयं तमेव राओ, से णं इमं उत्तरड्ढलोयं तिरियं करेइ, करेत्ता दाहिणड्ढलोयं तमेव राओ, से णं इमाइं दाहिणुत्तरड्ढलोयाइं तिरियं करेइ, करेत्ता पुरत्थिमाओ लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं उड्ढं दूरं उप्पइत्ता, एत्थ णं पाओ[2] सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठइ—एगे एवमाहंसु ८।

वयं पुण एवं वयामो—ता जंबुद्दीवस्स दीवस्स 'पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए'[3] जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमंसि उत्तरपच्चत्थिमंसि य चउब्भागमंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं पाओ दुवे सूरिया[4] उत्तिट्ठंति। ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति, करेत्ता पुरत्थिमपच्चत्थिमाइं जंबुद्दीवभागाइं तामेव राओ, ते णं इमाइं पुरत्थिमपच्चत्थिमाइं जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति, करेत्ता दाहिणुत्तराइं जंबुद्दीवभागाइं तामेव राओ, ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं पुरत्थिमपच्चत्थिमाणि य जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति, करेत्ता जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि उत्तरपच्चत्थिमिल्लंसि य चउभागमंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता, एत्थ णं पाओ दुवे सूरिया आगासंसि उत्तिट्ठंति ॥

बीयं पाहुडपाहुडं

२. ता कहं ते मंडलाओ मंडलं संकममाणे[5] सूरिए चारं चरति आहिताति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता मंडलओ मंडलं संकममाणे सूरिए भेयघाएणं संकमति—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेति २ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए भेयघाएणं संकमति, तेसि णं अयं दोसे, ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए भेयघाएणं संकमति एवतियं च णं अद्धं पुरतो न गच्छति, पुरतो अगच्छमाणे[6]

१. पविसइ (ग,घ)।
२. पातो (क,ग,घ,ट,व)।
३. पाईणपाडिणायतउदीणदाहिणायताए (क,ग,घ,ट,व)।
४. सूरिया आगासातो (ट,व)।
५. संकममाणे २ (क,ग,घ,व)।
६. निगच्छमाणे (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंडलकालं परिहवेति[1], तेसि णं अयं दोसे। तत्थ जेते एवमाहंसु--ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेति, 'तेसि णं अयं विसेसे'[2], ता जेणंतरेणं मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं निव्वेढेति एवतियं च णं अद्धं पुरतो गच्छति, पुरतो गच्छमाणे मंडलकालं न परिहवेति, तेसि णं अयं विसेसे। तत्थ जेते एवमाहंसु--ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं णिव्वेढेइ, एतेणं नएणं नेयव्वं, नो चेव णं इतरेणं ॥

तच्चं पाहुडपाहुडं

३. ता केयतियं ते खेत्तं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति आहिताति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ चत्तारि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थ एगे एवमाहंसु--ता छ छ जोयण-सहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति[3]--एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु--ता पंच-पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति--एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु--ता चत्तारि-चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति--एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु--ता छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति--एगे एवमाहंसु ४

तत्थ जेते एवमाहंसु--ता छ-छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ते एवमाहंसु--ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, तंसि च णं दिवसंसि एगं जोयणसयसहस्सं अट्ठ य जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते[4] पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, 'तया णं'[5] छ-छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति १

तत्थ जेते एवमाहंसु--ता पंच-पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, ते एवमाहंसु--ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, तहेव दिवसराइप्पमाणं[6], तंसि च णं दिवसंसि नवतिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, ता जया

१. परिहावति (ध); 'परिभ्रमति' यावता कालेन मण्डलं परिपूर्णं भ्रम्यते तस्य हानिरुपजायते (सूवृ,चंवृ)। हस्तलिखितवृत्त्योः 'परिभ्रमति' इति लिखितं दृश्यते। किन्तु अग्रेतने 'परिहवेति' क्रियापदस्य 'परिभवति' इति लिखितं विद्यते, तेन 'परिभवति' इति पदमेव शुद्धं सम्भाव्यते 'परिहावति' इति पदमपि 'परिहाणि' अर्थं द्योतयति।

२. तेणं एवमाहंसु (ट,व)।

३. गच्छति आहितेति वदेज्जा (ट,व) सर्वत्र।

४. तावक्खित्ते (क)।

५. तेसिणं (क); तेसिणमित्यादि, तेषां हि तीर्थान्तरीयाणाम् (सूवृ,चंवृ)। वृत्तिकृता अग्रेतन प्रतिपत्तिषु 'ता जया णं' इति व्याख्यातमस्ति।

६. अत्र प्रस्तावे दिवसरात्रिप्रमाणं तथैव प्रागिव द्रष्टव्यम्, 'तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे हवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवती' ति (सूवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं तं चेव राइंदियप्पमाणं[1] तंसि च णं दिवसंसि सट्ठि जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति २

तत्थ जेते एवमाहंसु—ता चत्तारि-चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ, ते एवमाहंसु—ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं दिवसराई तहेव,[2] तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं राइंदियं तहेव,[3] तंसि च णं दिवसंसि अडतालीसं जोयसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तया णं चत्तारि-चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ३

तत्थ जेते एवमाहंसु—ता छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, ते एवमाहंसु—ता सूरिए णं उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य सिग्घगती[4] भवति तया णं छ-छ जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, मज्झिमतावक्खेत्तं समासादेमाणे-समासादेमाणे सूरिए मज्झिमगती भवति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, मज्झिमं तावक्खेत्तं संपत्ते सूरिए मंदगती भवति तया णं चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति। तत्थ को हेतूति वएज्जा? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं दिवसराई तहेव,[5] तंसि च णं दिवसंसि एक्काणउतिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पण्णत्ते, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं राइंदियं तहेव,[6] तंसि च णं दिवसंसि एगट्ठिजोयणसहस्साइं तावक्खेते पण्णत्ते, तया णं छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति—एगे एवमाहंसु ४

वयं पुण एवं वयामो—ता सातिरेगाइं पंच-पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति। तत्थ को हेतूति वएज्जा? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए एगूणतीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तया णं इहगतस्स[7] मणुस्सस्स सीतालीसाए

---

१. तदेव प्रागुक्तं रात्रिदिवसप्रमाणं—रात्रि दिवसप्रमाणं वक्तव्यम्, तद्यथा 'उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई हवई, जहन्निए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवती' ति (सूवृ)।

२. ते चैवम् 'तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे हवइ, जहन्निया दुवालस-मुहुत्ता राई भवइ' इति (सूवृ)।

३. तच्चैवम्—'तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवई, जहन्नए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवति' (सूवृ)।

४. सिग्घागति (ग,घ)।

५. ते चैवम्—'तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालस-मुहुत्ता राई भवई' (सूवृ)।

६. तच्चैवम्—'तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवई, जहन्नए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ' (सूवृ)।

७. इदगतस्स (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एगवीसाए[1] य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ, तया णं दिवसे राई तहेव[2]।

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे[3] पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे[4] जोयणसए सीतालीसं च सट्ठिभागे[5] जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तया णं इहगतस्स मणूसस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं अउणासीते[6] य जोयणसए सत्तावण्णाए सट्ठिभागेहिं[7] जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता अउणावीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिएचक्खुप्फासं हव्वमागच्छति तया णं दिवसराई तहेव[8]। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरतच्चं[9] मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भितरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य बावण्णे जोयणसए पंच य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तया णं इहगतस्स मणूसस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउतीए य जोयणेहिं तेत्तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता दोहिं चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति तया णं दिवसराई तहेव[10]। एवं खलु एतेणं उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे अट्ठारस-अट्ठारस सट्ठिभागे[11] जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगतिं अभिवुड्ढेमाणे-अभिवुड्ढेमाणे चुलसीतिं सीताइं[12] जोयणाइं पुरिसच्छायं निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य पंचुत्तरे जोयणसते पण्णरस य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तया णं इहगतस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहिं एक्कतीसेहिं जोयणसतेहिं तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

---

१. एक्कवीसाए (क)।

२. ते चैवम्—'तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ' (सूवृ)।

३. अयमीणे (क,ग,घ)।

४. एकापणे (ट)।

५. एगट्ठिभागे (ग,घ)।

६. एगुणासीते (ट)।

७. एगसट्ठिभागेहिं (ग,घ); एयसट्ठिभागे (ट,व)।

८. ते चैवम्—'तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे हवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया' (सूवृ)।

९. अब्भंतरं तच्चं (ट)।

१०. ते चैवम्—'तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे हवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया' (सूवृ)।

११. सट्ठिरस- सट्ठिरस सट्ठिभागे (ग,घ)।

१२. शीतानि किञ्चिन्न्यूनानीत्यर्थः (सूवृ); सीया इति किञ्चिन्न्यूनानि (चंवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से पविसमाण सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउरुत्तरे[1] जोयणसते सत्तावण्णं च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छइ तया णं इहगतस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं नवहि य सोलेहिं जोयणसतेहिं एगूणतालीसाए[2] सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा[3] छेत्ता सट्ठिए चुण्णियाभागे सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, तया णं राइंदियं तहेव[4]। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिरतच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउत्तरे जोययणसए ऊतालीसं[5] च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तया णं इहगतस्स मणूसस्स एगाहिगेहिं बत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणपण्णाए[6] य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता तेवीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, राइंदियं तहेव[7]। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे अट्ठारस-अट्ठारस सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगतिं निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे सातिरेगाइं पंचासीतिं-पंचासीतिं जोयणाइं पुरिसच्छायं अभिवुड्ढेमाणे-अभिवुड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच-पंच जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए अउणतीसं[8] च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तया णं इहगतस्स मणूसस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसतेहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ॥

१. चउत्तरे (ट)।

२. इगुणतालीसाए (क); अगुणतालीसाए (घ); एगुणचत्तालिसाए (ट); चउआलीसाए (व)।

३. एगट्ठिधा (क,ग,ध)।

४. तच्चैवम्—'तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे हवइ दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि अहिए' (सूवृ)।

५. उणयालिसं (ट)।

६. चक्कावण्णाए (क,ख,घ,व); वृत्तौ 'एकोनपञ्चाशता' इति व्याख्यातमस्ति, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तावपि (७।२५) 'एगूणपण्णाए' इति पाठो लभ्यते। गणनयापि एतदेव लभ्यते।

७. तधेव (क,ग,घ); तच्चैवम्—'तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे हवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, (सूवृ)।

८. एगुणतीसं (ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तच्चं पाहुडं

१. ता केवतियं खेत्तं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति आहिताति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ बारस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु--ता एगं दीवं एगं समुद्दं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति[1] १ एगे पुण एवमाहंसु--ता तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु ता अद्धट्ठे[2] दीवे अद्धट्ठे समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु ता सत्त दीवे सत्त समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति- एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु -ता दस दीवे दस समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु --ता बारस दीवे बारस समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु--ता बायालीसं दीवे बायालीसं समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति---एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु—ता बावत्तरिं दीवे बावत्तरिं समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ८ एगे पुण एवमाहंसु --ता बायालीसं दीवसतं बायालं[3] समुद्दसतं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति---एगे एवमाहंसु ९ एगे पुण एवमाहंसु ता बावत्तरिं दीवसतं बावत्तरिं समुद्दसतं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति-- एगे एवमाहंसु १० एगे पुण एवमाहंसु---ता बायालीसं दीवसहस्सं बायालं समुद्दसहस्सं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु ११ एगे पुण एवमाहंसु --ता बावत्तरिं दीवसहस्सं बावत्तरिं समुद्दसहस्सं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति--एगे एवमाहंसु १२

वयं पुण एवं वयामो--ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[4] परिक्खेवेणं पण्णत्ते, से णं एगाए जगतीए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, सा णं जगती तहेव

---

१. पगासेंति आहितेति वदेज्जा (ट,व) सर्वत्र।

२. आउट्ठे (ग,घ); 'ट,व' प्रत्योः पाठस्त्रुटितोस्ति। सूर्यप्रज्ञप्तेर्हस्तलिखितवृत्तौ 'अद्धट्ठे' इति अर्द्धं चतुर्थं येषां से अर्द्धचतुर्थाः, तत्र परिपूर्णाश्चतुर्थस्य चार्द्धमित्यर्थः। चन्द्रप्रज्ञप्तेर्वृत्तावपि इत्थमेव व्याख्यातमस्ति।

३. बातालं (क)।

४. सू० १।१४।

जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए जाव[1] एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे चोद्दससलिलासयसहस्सा छप्पण्णं च सलिलासहस्सा भवंतीति मक्खाता ।।

२. जंबुद्दीवे णं दीवे पंचचक्कभागसंठिते[2] आहितेति वएज्जा, ता कहं जंबुद्दीवे दीवे पंचचक्कभागसंठिते आहितेति वएज्जा ? ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स तिण्णि पंचचक्कभागे ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति, 'तं जहा'[3] --एगेवि एगं दिवड्ढं पंचचक्कभागं ओभासति उज्जोवेति तवेति पगासेति, एगेवि[4] एगं दिवड्ढं पंचचक्कभागं ओभासति उज्जोवेति तवेति पगासेति, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति । ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तया णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स दोण्णि चक्कभागे[5] ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासेंति, तं जहा एगेवि सूरिए एगं पंचचक्कवालभागं ओभासति उज्जोवेति तवेति पगासेति, एगेवि एगं पंचचक्कवालभागं ओभासति उज्जोवेति तवेति पगासेति, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।।

---

१. जं० १।७से ६।२६ ।
२. °संठिता (ग,घ) ।
३. वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।
४. एकोपि अपरोपि द्वितीयोपीत्यर्थः (सूवृ) ।
५. द्वौ चक्रवालपञ्चमभागौ (सूवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं पाहुडं

१. ता कहं ते सेयताए[1] संठिती आहितातिं वएज्जा ? तत्थ खलु इमा दुविधा संठिती पण्णत्ता, तं जहा –चंदिमसूरियसंठिती य तावक्खेत्तसंठिती य ।।

२. ता कहं[2] ते चंदिमसूरियसंठिती आहितातिं वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु –ता समचउरंससंठिता चंदिमसूरियसंठिती पण्णत्ता[3]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु –ता विसमचउरंससंठिता चंदिमसूरियसंठिती पण्णत्ता –एगे एवमाहंसु २ एवं[4] समचउक्कोणसंठिता ३ विसमचउक्कोणसंठिता ४ समचक्कवालसंठिता ५ विसमचक्कवालसंठिता ६ चक्कद्धचक्कवालसंठिता चंदिमसूरियसंठिती पण्णत्ता –एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु– ता छत्तागारसंठिता चंदिमसूरियसंठिती पण्णत्ता– एगे एवमाहंसु ८ एवं[5] गेहसंठिता[6] ९ गेहावणसंठिता १० पासादसंठिता ११ गोपुरसंठिता १२ पेच्छाघरसंठिता १३ वलभीसंठिता १४ हम्मियतलसंठिता[7] १५ एगे पुण एवमाहंसु– ता वालग्गपोतियासंठिता चंदिमसूरियसंठिती पण्णत्ता —एगे एवमाहंसु १६ तत्थ जेते एवमाहंसु– ता समचउरंससंठिता चंदिमसूरियसंठिती पण्णत्ता, एतेणं नएणं नेयव्वं नो चेव णं इतरेहिं ।।

३. ता कहं ते तावक्खेत्तसंठिती आहितातिं वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु– ता गेहसंठिता तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता[8] 'एवं जाव वालग्गपोतियासंठिता'[10] तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ८ एगे पुण एवमाहंसु—ता जस्संठिते[11] जंबुद्दीवे दीवे तस्संठिता तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता— एगे एवमाहंसु ९ 'एगे पुण एवमाहंसु'[12]—ता जस्संठिते भारहे वासे तस्संठिता

१. सेयाए (ग); सेयाते (ट,व)।
२. कधं (क,ग)।
३. आहितातिं वदेज्जा (ट,व); आहियत्ति वएज्जा (चंवृ) सर्वत्र।
४. एवं एतेणं अभिलावेणं (ट,व)।
५. द्वयोरपि वृत्त्योः पूर्णः पाठो लभ्यते।
६. गेहागारसंठिता (ट,व)।
७. हम्मियनवसंठिता (ग,घ)।
८. गेहागारसंठिया (ट,व)।
९. आहियाति वएज्जा (ट,व,चंवृ) सर्वत्र।
१०. एवं ताओ चेव अट्ठपडिवत्तीओ णेयव्वाओ जाव ता वालग्गपोतियासंठिया (ट,व,चंवृ)।
११. जस्संठिए णं (ट,व); 'णं' इति वाक्यालङ्कारे (चंवृ)।
१२. एवं एएणं अभिलावेणं (ट,व,चंवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु १० 'एवं उज्जाणसंठिता'[1] ११ निज्जाणसंठिता १२ एगतो निसहसंठिता १३ दुहतो निसहसंठिता १४ सेयणगसंठिता—एगे एवमाहंसु १५ एगे पुण एवमाहंसु—ता सेणगपट्ठसंठिता तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु १६

वयं पुण एवं वदामो ता उद्धीमुहकलंबुयापुप्फसंठिता तावक्खेत्तसंठिती पण्णत्ता—अंतो संकुया[2] बाहिं वित्थडा, अंतो वट्टा बाहिं पिहुला[3], अंतो अंकमुहसंठिता बाहिं सत्थीमुहसंठिता[4], उभओ पासेणं[5] तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ भवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, 'दुवे य णं तीसे'[6] बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा सव्वब्भंतरिया चेव बाहा सव्वबाहिरिया चेव बाहा ॥

४. तत्थ को[7] हेतूति वएज्जा? ता[8] अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं. ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उद्धीमुहकलंबुयापुप्फसंठिता तावक्खेत्तसंठिती आहिताति वएज्जा, अंतो संकुया[9] बाहिं वित्थडा, अंतो वट्टा बाहिं पिहुला[10], अंतो अंकमुहसंठिया बाहिं सत्थीमुहसंठिता, उभओ[11] पासेणं तीसे[12] °दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ भवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा—सव्वब्भंतरिया चेव बाहा° सव्वबाहिरिया चेव बाहा।

तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं नव जोयणसहस्साइं चत्तारि य छलसीए[13] जोयणसए नव य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिताति वएज्जा। 'ता से'[14] णं परिक्खेवविसेसे कतो आहितेति वएज्जा? ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स 'परिक्खेवे, तं'[15] परिक्खेवं तिहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहितेति वएज्जा। तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं चउणउतिं जोयणसहस्साइं अट्ठ य अट्ठसट्ठे जोयणसए चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिताति

---

१. 'ट,व' प्रत्योः किञ्चिद् विस्तृतः पाठो विद्यते—ता उज्जाणसंठिया णं तावखेत्ता। एवं सर्वत्रापि। द्वयोरपि वृत्त्योः पूर्णः पाठो विद्यते। सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ 'पण्णत्ता' इति पदमस्ति, चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ तस्य स्थाने 'आहियत्ति वएज्जा' इति पाठो विद्यते।

२. संकुडा (क,ग,घ,ट,व); जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (७।३१) 'संकुया' इति पाठः स्वीकृतोस्ति। द्वयोरपि वृत्त्योः 'संकुचा संकुचिता' इति व्याख्यातमस्ति, तेन 'संकुया' इति पाठो मूले स्वीकृतः।

३. पिधुला (क), पुहुलो (ट)।

४. सत्थिमुहसंठिया (ट); चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ 'बाहिं सत्थियमुहसंठियत्ति' पाठो लभ्यते। सगडुद्धीमुह° (जंबुद्दीवपण्णत्ती ७.३१)।

५. पासिं (ट,व)।

६. तीसे णं दुवे (ट,व)।

७. के (क)।

८. ताव (क); तो (व)।

९. संकुडा (क,ग,घ,ट,व)।

१०. पिधुला (ग,घ)।

११. दुहतो (ग)।

१२. सं० पा०—तीसे तहेव जाव सव्वबाहिरिया।

१३. चुलसीए (ट)।

१४. तीसे (ग,घ,ट,व)।

१५. परिक्खेवे णं (ग,ध)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वएज्जा । ता से[1] णं परिक्खेवविसेसे कतो आहितेति वएज्जा ? ता जे णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं तिहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहितेति वएज्जा ॥

५. ता से णं तावक्खेत्ते केवतियं[2] आयामेणं आहितेति वएज्जा ? ता अट्ठत्तरिं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागे य आयामेणं आहितेति वएज्जा ॥

६. तया णं किंसंठिया अंधयारसंठिती आहिताति वएज्जा ? ता उड्ढीमुहकलंबुया-पुप्फसंठिता[3] •अंधयारसंठिती पण्णत्ता -अंतो संकुया बाहिं वित्थडा, अंतो वट्टा बाहिं पिहुला, अंतो अंकमुहसंठिता बाहिं सत्थीमुहसंठिता, उभओ पासेणं तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ भवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा -सव्वब्भंतरिया चेव बाहा सव्वबाहिरिया चेव बाहा ॥

७. तत्थ को हेतूति वएज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भं-तराए जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठिता अंधयारसंठिती आहिताति वएज्जा अंतो संकुया बाहिं वित्थडा, अंतो वट्टा बाहिं पिहुला, अंतो अंकमुहसंठिता बाहिं सत्थीमुहसंठिता, उभओ पासेणं तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ भवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा--सव्वब्भंतरिया चेव बाहा सव्व°बाहिरिया चेव बाहा। तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं छज्जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउवीसे जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिताति वएज्जा । तीसे णं परिक्खेवविसेसे कतो आहितेति वएज्जा ? ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता[4], [5]•दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहितेति वएज्जा° । तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं तेवट्ठिं जोयणसहस्साइं दोण्णि य पणयाले[6] जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खे-वेणं आहितेति वएज्जा । ता से णं परिक्खेवविसेसे कतो आहितेति वएज्जा ? ता जे णं जंबुद्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहितेति वएज्जा ॥

---

१. एस (ग,घ) ।

२. केतियं (ग,घ) ।

३. सं० पा० —उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठिता तहेव जाव बाहिरिया । उद्धीमुहकलंबुयापुप्फसंठिया आहितेति वदेज्जा अंतो संकुता बाहिं वित्थडा तं चेव जाव तीसे णं दुवे बाहातो अणवट्ठिता भवंति तं सव्वब्भंरिता चेव बाहा सव्वबाहि-रिया (ट,व) ।

४. गुणिया (ट) ।

५. सं० पा०—सेसं तहेव । चन्द्रप्रज्ञप्तौ एष पाठः पूर्ण एव विद्यते, तद्वृत्तावपि पाठसंक्षेपः सूचितो नास्ति । सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ 'सेसं तं चेव' त्ति शेषं तदेव प्रागुक्तं वक्तव्यं तच्चेदं दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेव-विसेसे आहियत्ति वइज्जा' इति सूचितमस्ति ।

६. वाताले (ग); वाणाले (घ); बायाले (व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. ता से णं अंधयारे केवतियं आयामेणं आहितेति वएज्जा ? ता अट्ठत्तरिं जोयण-सहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागं च आयामेणं आहितेति वएज्जा, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ॥

९. ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं किंसंठिता तावक्खेत्तसंठिती आहिताति वएज्जा ? ता उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठिता तावक्खेत्तसंठिती आहिताति वएज्जा। एवं जं अब्भितरमंडले अंधयारसंठितीए पमाणं तं बाहिरमंडले तावक्खेत्तसंठितीए, जं तहिं तावक्खेत्तसंठितीए तं बाहिरमंडले अंधयार-संठितीए भाणियव्वं जाव[1] तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥

१०. ता जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया केवतियं खेत्तं उड्ढं तवयंति[2] ? केवतियं खेत्तं अहे

---

१. सू० ४।४-८। सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ पूर्णपाठो लिखितोस्ति—तच्चेवं सूत्रतो भणनीयं अंतो संकुडा बाहिं वित्थडा अंतो वट्टा बाहिं पिहुला अंतो अंकमुहसंठिया बाहिं सत्थिमुहसंठिया, उभओ पासेणं तीसे दुवे बाहाओ अवट्ठियाओ भवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा—अब्भितरिया चेव बाहा सव्वबाहिरिया चेव बाहा। तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं छ जोयणसहस्साइं तिन्नि य चउवीसे जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहियत्ति वएज्जा। ता से णं परिक्खेवविसेसे कओ आहियत्ति वएज्जा ? ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे ते णं दोहिं गुणित्ता दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहियत्ति वएज्जा। ता से णं तावक्खेत्ते केवइयं आयामेणं आहियत्ति वएज्जा ? ता तेसीइं जोयणसहस्साइं तिन्नि तेतीसे जोयणसए जोयणतिभागं आहियाति वएज्जा। तया णं किंसंठिया अंधकारसंठिई आहियत्ति वएज्जा ? ता उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फसंठाण-संठिया आहियत्ति वएज्जा अंतो संकुडा बाहिं वित्थडा अंतो वट्टा बाहिं पिहुला अंतो अंकमुह-संठिया बाहिं सत्थिमुहसंठिया, उभओ पासेणं तीसे दुवे बाहाओ भवंति पणयालीसं-पणयालीसं जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठियाओ भवंति, तं जहा—सव्वब्भंतरिया चेव बाहा सव्वबाहिरिया चेव बाहा। तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं नवजोयणसह-स्साइं चत्तारि य छलसीए जोयणसए नव य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहियत्ति वएज्जा। ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं तिहिं गुणित्ता दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीर-माणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहियत्ति वएज्जा। तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं चउणउइं जोयणसहस्साइं अट्ठ य अट्ठसट्ठे जोयणसए चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिए इति वएज्जा। ता एस णं परिक्खेवविसेसे कओ आहिए इति वएज्जा ? ता जे णं जंबु-द्दीवस्स दीवस्स परिक्खेवे, तं परिक्खेवं तिहिं गुणित्ता दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एस णं परिक्खेवविसेसे आहिए इति वएज्जा। ता से णं अंधकारे केवइए आयामेणं आहिए इति वएज्जा ? ता तेसीइं जोयणसहस्साइं तिन्नि य तित्तीसे जोयणसए जोयणतिभागं आहिए इति वएज्जा।

२. तवंति (क,ट,व); तावंति (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तवयंति[1] ? केवतियं खेत्तं तिरियं तवयंति[2] ? ता जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया एगं जोयणसयं उड्ढं तवयंति[3] अट्ठारस जोयणसयाइं अहे तवयंति[4], सीयालीसं[5] जोयणसहस्साइं दुण्णि य तेवट्ठे जोयणसए एगवीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स तिरियं तवयंति ।।

पंचमं पाहुडं

१. ता कस्सिं[6] णं सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिताति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ । तत्थेगे एवमाहंसु—ता मंदरंसि णं पव्वतंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिताति वएज्जा—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता मेरुंसि णं पव्वतंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिताति वएज्जा—एगे एवमाहंसु २ एवं एएणं अभिलावेणं भाणियव्वं—ता मणोरमंसि णं पव्वतंसि ३ ता सुदंसणंसि णं पव्वतंसि ४ ता सयंपभंसि णं पव्वतंसि ५ ता गिरिरायंसि णं पव्वतंसि ६ ता रयणुच्चयंसि णं पव्वतंसि ७ ता सिलुच्चयंसि णं पव्वतंसि ८ लोयमज्झंसि णं पव्वतंसि ९ ता लोयणाभिंसि णं पव्वतंसि १० ता अच्छंसि णं पव्वतंसि ११ ता सूरियावत्तंसि णं पव्वतंसि १२ ता सूरियावरणंसि णं पव्वतंसि १३ ता उत्तमंसि णं पव्वतंसि १४ ता दिसादिसि णं पव्वतंसि १५ ता अवतंसंसि णं पव्वतंसि १६ ता धरणिखीलंसि णं पव्वतंसि १७ ता धरणिसिंगंसि णं पव्वतंसि १८ ता पव्वतिदंसि णं पव्वतंसि १९ ता पव्वयरायंसि णं पव्वतंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिताति वएज्जा—एगे एवमाहंसु २०

वयं पुण एवं वदामो—ता मंदरेवि पवुच्चइ जाव पव्वयरायावि पवुच्चइ, ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं फुसंति, ते णं पोग्गला[7] सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति, अदिट्ठावि णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति, चरिमलेस्संतरगतावि[8] णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति[9] ।।

---

१. तविंति (क); तवंति (ग,घ,ट,व) ।
२. तवंति (क,ग,घ,ट,व) ।
३. तवंति (क,ग,घ,ट) प्रायः सर्वत्र ।
४. अधे य (क,ग,घ) ।
५. सीताले (व) ।
६. संकि (ग,घ); किस (ट); कीस (व) ।
७. पुग्गला (क,ग,घ) ।
८. चरम° (ट,व) ।
९. पडिहणंति आहितेति वदेज्जा (ट); पडिहणंति आहिआति वदेज्जा (व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठं पाहुडं

१. ता कहं ते ओयसंठिती[1] आहिताति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं[2] पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता अणुसमयमेव[3] सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा वेअति[4]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुमुहुत्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा वेअति[5]—एगे एवमाहंसु २ एवं एतेणं अभिलावेणं णेतव्वा—ता अणुराइंदियमेव ३ ता अणुपक्खमेव ४ ता अणुमासमेव ५ ता अणुउडुमेव ६ ता अणुअयणमेव ७ ता अणुसंवच्छरमेव ८ ता अणुजुगमेव ९ ता अणुवाससयमेव १० ता अणुवाससहस्समेव ११ ता अणुवाससयसहस्समेव १२ ता अणुपुव्वमेव १३ अणुपुव्वसयमेव १४ ता अणुपुव्वसहस्समेव १५ ता अणुपुव्वसयसहस्समेव १६ ता अणुपलिओवममेव[6] १७ ता अणुपलिओवमसयमेव १८ ता अणुपलिओवमसहस्समेव १९ ता अणुपलिओवमसयसहस्समेव २० ता अणुसागरोवममेव २१ ता अणुसागरोवमसयमेव २२ ता अणुसागरोवमसहस्समेव २३ ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव २४ एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुओसप्पिणिउस्सप्पिणिमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा वेअति[7]—एगे एवमाहंसु २५

वयं पुण एवं वदामो—ता तीसं-तीसं मुहुत्ते सूरियस्स ओया अवट्ठिता भवइ, तेण परं सूरियस्स ओया अणवट्ठिता भवइ, छम्मासे सूरिए ओयं निवुड्ढे, छम्मासे सूरिए ओयं अभिवुड्ढेइ, निक्खममाणे सूरिए देसं निवुड्ढेइ, पविसमाणे सूरिए देसं अभिवुड्ढेइ। तत्थ को[8] हेतूति वदेज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति।

---

१. तोतसंठिती (ट,व)।
२. पणुवीसं (ग,घ,व)।
३. अणुसमतमेव (ट,व)।
४. अवेति (क); वेती (ट,व); अपैति (सूवृ); उवैति (चंवृ)।
५. अवेति (क); वेति (ट,व); अपैति (सूवृ); उपैति (चंवृ)।
६. अणुपलितोवममेव (ग,घ,व)।
७. वेति आहिताति वदेज्जा (ट,व)।
८. के (क,ग,घ); णं के (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे[1] पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं[2] मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढित्ता रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरइ 'मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं'[3] छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभाग-मुहुत्तेहिं अहिया। से निक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं[4] तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं दोहिं राइंदिएहिं दो भागे ओयाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढित्ता रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ 'मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं'[5] छेत्ता तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे, दुवालसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभाग-मुहुत्तेहिं अहिया। एवं खलु एतेणुवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे 'एगमेगे मंडले एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं भागं ओयाए'[6] दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढे-माणे सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतराओ मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिधाय[7] एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं एगं तेसीतं भागसतं ओयाए[8] दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स[9] अभिवड्ढेता चारं चरइ 'मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं'[10] छेत्ता, तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एस णं पढमे छम्मासे, एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे[11] पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं 'एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए रयणिक्खेत्तस्स'[12] निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ 'मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं'[13] छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभाग-मुहुत्तेहिं अहिए। से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि 'बाहिरं तच्चं'[14] मंडलं उवसंक-मित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं

---

१. अयमीणे (क)।
२. अब्भंतराणंतरं (ट,व)।
३. अट्ठारसहिं तीसेहिं सतेहिं मंडलं (ट,व)।
४. अब्भंतरं (ग,घ,ट,व)।
५. अट्ठारसहिं तीसेहिं सतेहिं मंडलं (ट,व)।
६. एगमेगं भागं ओयाए एगमेगे मंडले एगमेगेणं रातिदिएणं (ट,व)।
७. पणिहाए (ट,व)।
८. ओताए (ट)।
९. रतणिखेत्तस्स (क,ग,घ); रातिखेत्तस्स (ट)।
१०. अट्ठारसहिं तीसेहिं मंडलं (ट,व)।
११. अयमीणे (क,ग,घ,व)।
१२. एगं भागं ओयाए एगेणं राइंदिएणं राति-खेत्तस्स (ट,व)।
१३. अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं मंडलं (ट,व)।
१४. बाहिरतच्चं (क,ग,घ,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'दोहिं राइंदिएहिं दो भाए ओयाए रयणिखेत्तस्स'[1] निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ 'मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं'[2] छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा, दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए। एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे-संकममाणे 'एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं भागं ओयाए रयणिखेत्तस्स'[3] निवुड्ढेमाणे-निवुड्ढेमाणे दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे-अभिवड्ढेमाणे सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिधाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं एगं तेसीतं भागसतं ओयाए रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरइ 'मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं'[4] छेत्ता, तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, एस णं दोच्चे छम्मासे, एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे। एस णं आदिच्चे संवच्छरे, एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे॥

सत्तमं पाहुडं

१. ता के ते सूरियं वरयति[5] आहिताति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता मंदरे णं पव्वए सूरियं वरयति आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु— ता मेरु णं पव्वए सूरियं वरयति आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु २ एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं जाव[6] पव्वयराए णं पव्वए सूरियं वरयति आहितेति वएज्जा—एगे एवमाहंसु २०

वयं पुण एवं वदामो—ता मंदिरेवि पवुच्चइ तहेव जाव पव्वयराएवि पवुच्चइ ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला सूरियं वरयंति, अदिट्ठावि णं पोग्गला सूरियं वरयंति, चरमलेसंतरगतावि णं पोग्गला सूरियं वरयंति॥

१. दो भाए ओयाए दोहिं राइंदिएहिं रातिखेत्तस्स (ट,व)।
२. अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं मंडलं (ट,व)।
३. एगमेगं भागं ओयाए एगमेगेणं राइंदिएणं रातिखेत्तस्स (ट,व)।
४. अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं मंडलं (ट,व)।
५. वरति (ट,व)।
६. सू ५।१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमं पाहुडं

१. ता कहं ते उदयसंठिती आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, ता जया णं उतरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एवं परिहावेतव्वं सोलसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे चउद्दसमुहुत्ते दिवसे तेरसमुहुत्ते दिवसे जाव ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, ता जया णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं सदा[1] पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सदा पण्णरसमुहुत्ता राती भवति, अवट्ठिया णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता समणाउसो ! एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, एवं परिहावेतव्वं—सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढेवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं णो सदा पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णो सदा पण्णरसमुहुत्ता राती भवति, अणवट्ठिता णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता समणाउसो ! एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राती भवति, ता जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे दुवालसमुहुत्ता[2] राती

१. सता (ग,घ,ट,व)।
२. बारसमुहुत्ता (ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवति, ता जया णं दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता[1] राती भवति, ता जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे दुवालसमुहुत्ता[2] राती भवति। 'एवं णेतव्वं सगलेहि य अणंतरेहि य एक्केक्के दो दो आलावगा[3] सव्वेहिं दुवालसमुहुत्ता राती भवति जाव'[4] ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ता राती भवति, ता जया णं उत्तरड्ढे दुवालसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणड्ढे दुवालसमुहुत्ता राती भवति, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ता राती भवति, वोच्छिण्णा णं तत्थ राइंदिया पण्णत्ता समणाउसो! एगे एवमाहंसु ३।

वयं पुण एवं वदामो ता जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ[5] पाईण-दाहिणमागच्छंति पाईण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पडीणमागच्छंति दाहिण-पडीणमुग्गच्छ पडीण-उदीणमागच्छंति पडीण-उदीणमुग्गच्छ उदीण-पाईणमागच्छंति, ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि[6] दिवसे भवइ। जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं राती भवति। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं दिवसे भवइ तया णं पच्चत्थिमे णवि दिवसे भवइ। ता जया णं पच्चत्थिमे णं दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं राती भवति। ता जया णं दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ। ता जया णं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे णवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ। ता जया णं पच्चत्थिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, एवं एएणं गमेणं णेतव्वं अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगदुवालसमुहुत्ता राती भवति, सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तेरसमुहुत्ता राती भवति, सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगतेरसमुहुत्ता राती भवति, सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चोद्दसमुहुत्ता राती भवति, सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगचोद्दसमुहुत्ता राती भवति, पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, पण्णरसमुहुत्ता राती भवति, पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगपण्णरसमुहुत्ता राती

१,२. बारसमुहुत्ता (ग,घ)।

३. आलावका (क,ग,घ)।

४. एवं सत्तरसमुहुत्ते दिवसे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे सोलसमुहुत्ते सोलसमुहुत्ताणंतरे पणरसमुहुत्ते पणरसमुहुत्ताणंतरे चउदसमुहुत्ते चउदसमुहुत्ताणंतरे तेरसमुहुत्ते तेरसमुहुत्ताणंतरे बारसमुहुत्ते बारसमुहुत्ताणंतरे (ट,व)।

५. °मुग्गच्छंति (क,ग,घ,ट,व) सर्वत्र।

६. उत्तरड्ढे (क,ग,घ,ट,व) द्वयोरपि वृत्त्योः 'उत्तरार्धेपि' इति व्याख्यातमस्ति। भगवत्या (५।४) मपि 'उत्तरड्ढे वि' इति पाठो लभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवति, चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सोलसमुहुत्ता राती भवति, चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगसोलसमुहुत्ता राती भवति, तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सत्तरसमुहुत्ता राती भवति, तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, साइरेगसत्तरसमुहुत्ता राती भवति, 'जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति। एवं भणितव्वं'[1] । ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तया णं उत्तरड्ढेवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जति, जया णं उत्तरड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जति, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं अणंतरपुरक्खडे कालसमयंसि[2] वासाणं पढमे समए पडिवज्जति, ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तया णं पच्चत्थिमे णवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जति जया णं पच्चत्थिमे णं वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वतस्स उत्तरदाहिणे णं अणंतरपच्छाकडकालसमयंसि[3] वासाणं पढमे समए पडिवण्णे भवइ। जहा समओ एवं आवलिया आणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते पक्खे मासे उडू[4] । एते[5] दस आलावगा[6] जहा[7] वासाणं,[8] एवं हेमंताणं गिम्हाणं च भाणियव्वा । ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जति तया णं उत्तरड्ढेवि पढमे अयणे पडिवज्जति, ता जया णं उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जति तया णं दाहिणड्ढेवि पढमे अयणे पडिवज्जति, ता जया णं उत्तरड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जति तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं अणंतरपुरक्खडे कालसमयंसि पढमे अयणे पडिवज्जति, ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं पढमे अयणे पडिवज्जति तया णं पच्चत्थिमे णवि पढमे अयणे पडिवज्जति, ता जया णं पच्चत्थिमे णं पढमे अयणे पडिवज्जति तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे णं अणंतरपच्छाकडकालसमयंसि पढमे अयणे 'पडिवण्णे भवइ'[9] । 'जहा अयणे तहा संवच्छरे जुगे वाससए'[10] वाससहस्से वाससयसहस्से पुव्वंगे पुव्वे एवं जाव[11] सीसपहेलिया पलिओवमे

---

१. ता जया णं जंबूद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे जहण्णए दुवालसमुहुत्ता रातीभवति तता णं उत्तरड्ढे जहण्णं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति। जया णं उत्तरड्ढे जहण्णए दुवालस दिवसे तता णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं पच्चत्थिमे णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राति भवति। ता जया णं जंबूद्दीवमंदरपुरत्थिमे णं जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति तता णं पच्चत्थिमे णं वि जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति। जया णं पच्चत्थिमे णं जहण्णं दुवालसमुहुत्ते दिवसे तता णं जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स उत्तरे णं दाहिणे णं उक्कोस अट्ठारसमुहुत्ता राति भवति ; (ट,व)।

२. समयंसि (भ० ५।१३)।

३. अणंतरपच्छाकयकालसमयंसि (ग,घ); अणंतरपच्छाकडसमयंसि (ट)।

४. उडुए (ट,व)।

५. एवं (ग,घ); ए (ट,व)।

६. आलावका (क,ग,घ)।

७. जधा (क,ग,घ)।

८. तासा णं (ग,घ)।

९. पडिवज्जति (क,ग,घ)।

१०. जहा अयणे तधा संवच्छरे जुगे वाससते एवं (क,ग,घ); एवं संवच्छरे जुगे वाससए (ट,व)।

११. भ० ५।१८ 'ट, व' आदर्शयोः एष पाठः साक्षात्लिखितो दृश्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सागरोवमे। ता जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पढमा[1] ओसप्पिणी पडिवज्जति तया णं उत्तरड्ढेवि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जति, ता जया णं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जति तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं णेवत्थि ओसप्पिणी णेव अत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिते णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो! एवं उस्सप्पिणीवि। ता[2] लवणे णं समुद्दे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ तहेव[3]। ता जया णं लवणे समुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तया णं लवणसमुद्दे उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ तया णं लवणसमुद्दे पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं राती भवति। जहा[4] जंबुद्दीवे दीवे तहेव जाव उस्सप्पिणी। तहा धायइसंडे णं दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ तहेव। ता जया णं धायइसंडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं राती भवति। एवं जंबुद्दीवे दीवे जहा तहेव जाव उस्सप्पिणी। कालोए णं जहा लवणे समुद्दे तहेव। ता अब्भंतरपुक्खरद्धे णं सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ तहेव। ता जया णं अब्भंतरपुक्खरद्धे णं दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तया णं उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ, ता जया णं उत्तरड्ढे दिवसे भवइ तया णं अब्भिंतरपुक्खरद्धे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिमपच्चत्थिमे णं राती भवति, सेसं जहा जंबुद्दीवे दीवे तहेव जाव ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ॥

१. सूर्यप्रज्ञप्तेः 'क,ग,घ' संकेतितादर्शेषु एतत् पदं नैव लभ्यते। द्वयोरपि वृत्त्योरेतत्पदं नास्ति व्याख्यातम्। किन्तु तयोरुद्धृते आलापकपाठे एतत्पदं दृश्यते, भगवत्या (५।१९) मपि एतत्पदं विद्यते, 'पढमे समए' इति प्रस्तुते क्रमेऽपि अपेक्षितमस्ति, तेनात्र एतन्मूले स्वीकृतम्।

२. अतः परं 'ट,व' आदर्शयोः संक्षिप्तपाठो विद्यते—एवं लवणसमुद्दे धातीसंडे कालोए ता अब्भंतरपुक्खरद्धे णं सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छंति पातीणदाहिणमागच्छंति एवं जंबुद्दीवं वत्तव्वता।

३. 'तहेव' त्ति यथा जम्बूद्वीपे उद्गमविषये आलापक उक्तः तथा लवणसमुद्रेपि वक्तव्यः, स चैवम्—'लवणे णं सूरिया उईणपाईणमुग्गच्छ पाईणदाहिणमागच्छंति पाईणदाहिणमुग्गच्छ दाहिणपाईणमागच्छंति, दाहिणपाईणमुग्गच्छ पाईणउईणमागच्छंति पाईणउईणमुग्गच्छ उईणपाईणमागच्छंति,' इदं च सूत्रं जम्बूद्वीपगतोद्गमसूत्रवत् स्वयं परिभावनीयं, नवरमत्र सूर्याश्चत्वारो वेदितव्याः (सूवृ)।

४. यथा जम्बूद्वीपे द्वीपे 'पुरच्छिमपच्चच्छिमे णं राई भवइ' इत्यादिकं सूत्रमुक्तं यावदुत्सर्प्पिण्यवसर्प्पिण्यालापकस्तथा लवणसमुद्रेप्यन्यूनातिरिक्तं समस्तं भणितव्यं, नवरं जम्बूद्वीपे द्वीपे इत्यस्य स्थाने लवणसमुद्रे इति वक्तव्यमिति शेषः (सूवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवमं पाहुडं

१. ता कतिकट्ठं ते सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला संतप्पंति, ते णं पोग्गला संतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंतीति, एस णं से समिते तावक्खेत्ते—एगे एवामहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला णो संतप्पंति, ते णं पोग्गला असंतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं णो संतावेंतीति, एस णं से समिते तावक्खेत्ते—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला अत्थेगतिया संतप्पंति अत्थेगतिया णो संतप्पंति, तत्थ अत्थेगतिया संतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं अत्थेगतियाइं संतावेंति अत्थेगतियाइं णो संतावेंति, एस णं से समिते तावक्खेत्ते—एगे एवमाहंसु ३।
वयं पुण एवं वदामो—ता जाओ इमाओ चंदिमसूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेसाओ बहिया[1] अभिणिस्सढाओ पतावेंति, एतासि णं लेसाणं अंतरेसु अण्णतरीओ छिण्णलेसाओ संमुच्छंति, तए णं ताओ छिण्णलेसाओ संमुच्छियाओ समाणीओ तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंतीति एस णं से समिते तावक्खेत्ते॥

२. ता कतिकट्ठे ते सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता अणुसमयमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहितेति वदेज्जा—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुमुहुत्तमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहितेति वएज्जा २ एवं एएणं अभिलावेणं णेयव्वं, ता जाओ चेव ओयसंठितीए पणवीसं पडिवत्तीओ ताओ चेव णेयव्वाओ जाव[2] अणुओसप्पिणिउस्सप्पिणिमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहिताति वदेज्जा—एगे एवमाहंसु २५।
वयं पुण एवं वयामो—ता सूरियस्स णं उच्चत्तं च लेसं च पडुच्च छाउद्देसे, उच्चत्तं च छायं च पडुच्च लेसुद्देसे, लेसं च छयं च पडुच्च उच्चत्तुद्देसे, तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं[3] दिवसंसि सूरिए

---

१. बहिता (क,ग,घ,व)।
२. सू० ६।१
३. च णं (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउपोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति २ तत्थ जेते एवमाहंसु ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसिच्छायं[1] णिव्वत्तेति, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसिच्छायं[2] णिव्वत्तेति ते एवमाहंसु, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, तंसि णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति,तं जहा—उग्गमणमुहुत्तंसि य[3] अत्थमणमुहुत्तंसि य लेसं अभिवड्ढेमाणे णो चेव णं णिवुड्ढेमाणे, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, तं जहा उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य लेसं अभिवुड्ढेमाणे णो चेव णं णिवुड्ढेमाणे १ तत्थ णं जेते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, ते एवमाहंसु, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, तंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, तं जहा—उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य लेसं अभिवड्ढेमाणे णो चेव णं णिवुड्ढेमाणे, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तंसि णं दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ, तं जहा—उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य, णो चेव णं लेसं अभिवड्डेमाणे वा णिवुड्ढेमाणे वा २ ॥

३. ता कतिकट्ठं ते सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहिताति वएज्जा? तत्थ खलु इमाओ छण्णउतिं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि च णं देसंसि सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति[4]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ २ एवं एएणं अभिलावेणं णेतव्वं जाव छण्णउतिं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति। तत्थ जेते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, ते एवमाहंसु—ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमाओ सूरियप्पडिहीओ[5] बहिया अभिणिस्सढाहिं[6] लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावतियं सूरिए

१. चउपोरिसियं छायं (क,ग,घ)।
२. दो पोरिसियं छायं (क,ग,घ)।
३. या (क,ग,घ) अग्रेऽपि।
४. निव्वत्तति आहितेति वएज्जा (ट,व)।
५. सूरिपडिहाओ (ट)।
६. अभिणिसडाहिं (क,घ,ट,)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उड्ढं उच्चत्तेणं एवतियाए एगाए अद्धाए एगेणं छायाणुमाणप्पमाणेणं ओमाए[1], 'एत्थ णं'[2] से सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति १ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, ते एवमाहंसु—ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमाओ सूरियप्पडिहीओ बहिया अभिणिस्सिताहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावतियं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवतियाहिं दोहिं अद्धाहिं दोहिं छायाणुमाणप्पमाणेहिं ओमाए, एत्थ णं से सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति २ एवं[3] एक्केक्काए पडिवत्तीए णेयव्वं[4] जाव छण्णउतिमा पडिवत्ती—एगे एवमाहंसु ९६।

वयं[5] पुण एवं वदामो[6]—ता सातिरेगअउणट्ठिपोरिसीणं[7] सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति, ता अवड्ढपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता तिभागे गते वा सेसे वा, ता पोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता चउब्भागे गते वा सेसे वा, ता दिवड्ढपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता पंचमभागे गते वा सेसे वा, एवं अद्धपोरिसिं छोढुं-छोढुं पुच्छा दिवसस्स भागं छोढुं-छोढुं वागरणं जाव[8] ता अद्धअउणट्ठिपोरिसीणं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता एगूणवीससतभागे गते वा सेसे वा, ता अउणट्ठिपोरिसीणं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता बावीस-सहस्सभागे गते वा सेसे वा, ता सातिरेगअउणट्ठिपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ? ता णत्थि किंचि गते वा सेसे वा ।।

४. तत्थ खलु इमा पणवीसतिविधा छाया पण्णत्ता, तं जहा खंभच्छाया रज्जुच्छाया पागारच्छाया पासादच्छाया उवग्गच्छाया उच्चत्तच्छाया अणुलोमच्छाया पडिलोमच्छाया आरुभिता उवहिता समा पडिहता खीलच्छाया पक्खच्छाया[9] पुरओउदग्गा[9] पिट्ठओउदग्गा[10]

---

१. इमाए (ट,व) ।

२. तत्थ (क,ग,घ) ।

३. असौ स्वीकृतः पाठः द्वयोरपि वृत्त्योर्व्याख्यातोस्ति तथा चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितादर्शयोरपि लभ्यते, सूर्यप्रज्ञप्तेरादर्शेषु किञ्चिद् विस्तृतः पाठो दृश्यते—एवं णेयव्वं जाव तत्थ जेते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए छण्णउतिपोरिसियछायं णिव्वत्तेति, ते एवमाहंसु—ता सूरियस्स णं सव्वहिट्ठिमाओ सूरप्पडिहीओ बहिया अभिणिस्सडाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो जावतियं सूरिए उड्ढं उच्चत्तेणं एवतियाहिं छण्णवतीए अद्धाहिं छायाणुमाणप्पमाणाहिं ओमाए, एत्थ णं से सूरिए छण्णउतिं पोरिसियं छायं णिव्वत्तेति—एगे एवमाहंसु ।

४. भाणियव्वं (ट,व) ।

५. वतं (व) ।

६. वतामो (व) ।

७. °अणुणट्ठि° (ट) ।

८. 'दिवसभागं' ति पूर्वपूर्वसूत्रापेक्षया एकैकमधिकं दिवसभागं क्षिप्त्वा-क्षिप्त्वा व्याकरणं—उत्तरसूत्रं ज्ञातव्यं, तच्चैवम्—'तिपोरिसी णं छाया किं गए वा सेसे वा ? ता छब्भागगए वा सेसे वा, ता अड्ढाईपोरिसी णं छाया किं गए वा सेसे वा ? ता सत्तभागगए वा सेसे वा' इत्यादि, एतच्च एतावत् तावत् यावत् 'ता अगुणट्ठी' इत्यादि सुगमम् (सूवृ) ।

९. पंथच्छाया (ट); पंकच्छाया (व) ।

१०. पिडिउग्गा (ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिमकंठभाओवगता पच्छिमकंठभाओवगता छायाणुवादिणी कंठाणुवादिणी छाया छायच्छाया छायाविकंपे[1] वेहासकडच्छाया गोलच्छाया ।।

५. तत्थ खलु इमा अट्ठविहा गोलच्छाया पण्णत्ता, तं जहा—गोलच्छाया अवड्ढ-गोलच्छाया गोलगोलच्छाया अवड्ढगोलगोलच्छाया गोलावलिच्छाया अवड्ढगोलावलिच्छाया गोलपुंजच्छाया अवड्ढगोलपुंजच्छाया ।।

१. × (ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसमं पाहुडं

पढमं पाहुडपाहुडं

१. ता जोगेति वत्थुस्स आवलियाणिवाते आहितेति वदेज्जा, ता कहं ते जोगेति वत्थुस्स आवलियाणिवाते आहितेति वदेज्जा? तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता कत्तियादिया भरणिपज्जवसाणा[1] पण्णत्ता[2]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु ता सव्वेवि णं णक्खत्ता महादिया अस्सेसपज्जवसाणा[3] पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु ता सव्वेवि णं णक्खत्ता धणिट्ठादिया सवणपज्जवसाणा पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता अस्सिणीआदिया रेवइपज्जवसाणा पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता भरणीआदिया अस्सिणीपज्जवसाणा पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ५।

वयं पुण एवं वदामो—ता सव्वेवि णं णक्खत्ता अभिईआदिया उत्तरासाढापज्जवसाणा पण्णत्ता, तं जहा—अभिई सवणो जाव[4] उत्तरासाढा॥

बीयं पाहुडपाहुडं

२. ता कहं ते मुहुत्तग्गे आहितेति वदेज्जा? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएति। अत्थि णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं पणयालीसे मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ते जे णं णव-मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएति? कयरे णक्खत्ता

---

१. °पज्जवसिया (ट,व) सर्वत्र।

२. × (क,ग,घ); आहितेति वदेज्जा (ट,व) सर्वत्र।

३. असिलेस° (ट)।

४. चन्द्रप्रज्ञप्तेरादर्शयोः 'ट,व संकेतितयोः पूर्णः पाठोपि लभ्यते—अभीयी समणो धणिट्ठा सतविसता पुव्वभद्दवता उत्तराभद्दवता रेवति अस्सिणि भरणि कित्तिया रोहिणि मिगसिरं अद्दा पुणव्वसो पुसो असिलेस मघा पुव्वफग्गुणि उत्तराफग्गुणि हत्थो चित्ता साति विसाहा अणुराधा जिट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ? कयरे णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ? कयरे णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जेसे णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धि जोयं जोएति से णं एगे अभीई। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा—सतभिसया[1] भरणी अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्तं चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ते णं पण्णरस, तं जहा—सवणे[2] धणिट्ठा पुव्वाभद्दवया रेवती अस्सिणी कत्तिया मिगसिरं[3] पुस्सो महा पुव्वाफग्गुणी हत्थो चित्ता अणुराहा मूलो पुव्वासाढा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धि जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा-- उत्तराभद्दपदा[4] रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा ॥

३. ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण[5] सद्धि जोयं जोएति। अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते दुवालस[6] य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति। ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएति ? कयरे णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति ? कयरे णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति ? कयरे णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जेसे णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएति से णं एगे[7] अभीई। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा—सतभिसया भरणो अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते दुवालस य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति ते णं पण्णरस, तं जहा—सवणो धणिट्ठा पुव्वाभद्दवया रेवती अस्सिणी कत्तिया मिगसिरं पूसो महा पुव्वाफग्गुणी हत्थो चित्ता अणुराहा मूलो पुव्वासाढा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा—उत्तराभद्दवया[8] रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा ॥

तच्चं पाहुडपाहुडं

४. ता कहं ते एवंभागा आहितातिं वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[9] पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता। अत्थि

१. सतभिसता (ट,व)।
२. समणो (ग,घ)।
३. महरिर (ग,घ)।
४. उत्तराभद्दपादा (ग); उत्तरभद्दवया (ट); उत्तराभद्दपता (व)।
५. सूरिएण (ट,व) सर्वत्र।
६. बारस (क,ग,घ)।
७. × (क,ग,घ)।
८. उत्तराभद्दवता (क,ग,घ,ट,व)।
९. × (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[१] पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता । अत्थि णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[२] णत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता । अत्थि णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[३] उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसइमुहुत्ता पण्णत्ता । ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[४] पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमहुत्ता पण्णत्ता ? कयरे णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[५] पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता ? कयरे णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[६] णत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता ? कयरे णक्खत्ता 'जे णं णक्खत्ता'[७] उभयंभागा दिवड्ढक्खेत्ता पणयालीसइमुहुत्ता पण्णत्ता । ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जेते णक्खत्ता पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता ते णं छ, तं जहा—पुव्वापोट्ठवया कत्तिया महा पुव्वाफग्गुणी मूलो पुव्वासाढा । तत्थ जेते णक्खत्ता पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता ते णं दस, तं जहा—अभिई सवणो[८] धणिट्ठा रेवती अस्सिणी मिगसिर[९] पूसो हत्थो चित्ता अणुराहा । तत्थ जेते णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता ते णं छ, तं जहा—सतभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा । तत्थ जेते णक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढक्खेत्ता पणयालीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ते णं छ, तं जहा—उत्तराभद्दवया[१०] रोहिणी पुणव्वसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा ॥

चउत्थं पाहुडपाहुडं

५. ता कहं ते जोगस्स आदी आहितेति[११] वदेज्जा ? ता अभीई-सवणा खलु दुवे णक्खत्ता पच्छंभागा समक्खेत्ता सातिरेगऊतालीसइमुहुत्ता[१२] तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, ततो पच्छा अवरं सातिरेगं दिवसं—एवं खलु अभिई-सवणा दुवे णक्खत्ता एगं रातिं एगं च सातिरेगं दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टंति, अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं धणिट्ठाणं समप्पेंति । ता धणिट्ठा खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता ततो पच्छा रातिं अवरं च दिवसं—एवं खलु धणिट्ठा णक्खत्ते एगं रातिं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं सतभिसयाणं[१३] समप्पेति । ता सतभिसया खलु णक्खत्ते णत्तंभागे अवड्ढक्खेत्ते पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं[१४] चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, णो लभति अवरं दिवसं—एवं खलु सतभिसया णक्खत्ते एगं रातिं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता पातो चंदं पुव्वाणं पोट्ठवयाणं समप्पेति । ता पुव्वापोट्ठवया खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए पातो चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, तओ पच्छा अवरं रातिं—एवं खलु पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते एगं दिवसं एगं च रातिं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता पातो

१-७. × (क,ग,घ) ।
८. समणो (ग,घ,व); सवणे (ट) ।
९. मिगसिरासिरं (ग,घ); मगसिरं (ट) ।
१०. उत्तरापोट्ठवता (क,ग,घ) ।
११. आहिताति (क,ग,घ) ।
१२. °उणतालीसइ° (ट,व) ।
१३. सततिसयाणं (घ); सतभिसताणं (ट); सतविसताणं (व) ।
१४. सागं (व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदं उत्तराणं पोट्ठवयाणं समप्पेति। ता उत्तरापोट्ठवया खलु णक्खत्ते उभयंभागे दिवड्ढक्खेत्ते पणयालीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए पातो चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, अवरं च राति ततो पच्छा अवरं दिवसं- एवं खलु उत्तरापोट्ठवया णवखत्ते दो दिवसे एगं च राति चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं रेवतीणं समप्पेति। ता[1] रेवती खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, ततो पच्छा अवरं दिवसं- एवं खलु रेवती णवखत्ते एगं राति एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टिता सायं चंदं अस्सिणीणं समप्पेति। ता अस्सिणी खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति ततो पच्छा अवरं दिवसं—एवं खलु अस्सिणी णक्खत्ते एगं राति एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता सायं चंदं भरणीणं समप्पेति। ता भरणी खलु णक्खत्ते णत्तंभागे अवड्ढक्खेत्ते पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, णो लभति अवरं दिवसं- एवं खलु भरणी णक्खत्ते एगं राति चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता पातो चंदं कत्तियाणं समप्पेति। ता कत्तिया खलु णक्खत्ते पुव्वंभागे समक्खेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पढमयाए पातो[2] चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, ततो पच्छा राति- एवं खलु कत्तिया णक्खत्ते एगं दिवसं एगं च राति चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता पातो चंदं रोहिणीणं समप्पेति। रोहिणी जहा उत्तरभद्दवया। मिगसिरं जहा धणिट्ठा। अद्दा[3] जहा सतभिसया। पुणव्वसू जहा उत्तरभद्दवया। पुस्सो जहा धणिट्ठा। अस्सेसा जहा सतभिसया। मघा जहा पुव्वाफग्गुणी। पुव्वाफग्गुणी जहा पुव्वाभद्दवया। उत्तराफग्गुणी जहा उत्तरभद्दवया। हत्थो चित्ता य जहा धणिट्ठा। साती जहा सतभिसया। विसाहा जहा उत्तरभद्दवया। अणुराहा जहा धणिट्ठा। जेट्ठा जहा सतभिसया। मूलो पुव्वासाढा य जहा पुव्वभद्दवया। उत्तरासाढा जहा उत्तरभद्दवया॥

पंचमं पाहुडपाहुडं

६. ता कहं ते कुला आहितातिं वदेज्जा? तत्थ खलु इमे बारस कुला बारस उवकुला चत्तारि कुलोवकुला पण्णत्ता। बारस कुला तं जहा—धणिट्ठा कुलं उत्तराभद्दवया[4] कुलं

---

१. अतः 'व' प्रतौ भिन्नावाचना लभ्यते—तथा देवा रेवति खलु णवखत्ते पच्छंभागे सम जहा धणिट्ठा जाव भागं चंदं अस्सिणी णं समप्पेति, भरणी खलु णक्खत्ते णंतरं भागे अवड्ढ जहा सतविसता जाव पादो चंदं कतिताणो समप्पेति, एवं जहा पुव्वाभद्दवता तहा पुव्वंभागा छप्पि णेयव्वा, जहा धणिट्ठा तहा 'पच्छंभागा' अट्ठ णेयव्वा जाव एवं खलु उत्तरासाढा दो दिवसे एगं च राति ग चंदेण सद्धिं जोगं जोएति जोगं २ अणुपरियट्टंति जोगं २ अतिति समणं समप्पेति।

२. सायं (क); सागं (च,व)।

३. अतः 'ट' प्रतौ भिन्न वाचना लभ्यते—एवं जहा सतभिसया तहा नत्तंभागा णेयव्वा, जहा पुव्वाभद्दवया तहा पुव्वंभागा छप्पि नेयव्वा, जहा धणिट्ठा तहा पच्छाभागा नेयव्वा, अभिति समणं समप्पिति।

४. उत्तरापोट्ठवता (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अस्सिणी कुलं कत्तिया कुलं संठाणा[1] कुलं पुस्सो कुलं महा कुलं उत्तराफग्गुणी कुलं चित्ता कुलं विसाहा कुलं मूलो कुलं उत्तरासाढा कुलं। बारस उवकुला, तं जहा – सवणो उवकुलं पुव्वभद्दवया[2] उवकुलं रेवती उवकुलं भरणी उवकुलं रोहिणी उवकुलं पुण्णवसू उवकुलं अस्सेसा उवकुलं पुव्वाफग्गुणी उवकुलं हत्थो उवकुलं साती उवकुलं जेट्ठा उवकुलं पुव्वासाढा उवकुलं। चत्तारि कुलोवकुला, तं जहा—अभीई कुलोवकुलं सतभिसया कुलोवकुलं अद्दा कुलोवकुलं अणुराहा कुलोवकुलं॥

छट्ठं पाहुडपाहुडं

७. ता कहं ते पुण्णिमासिणी[3] आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ 'बारस पुण्णिमासिणीओ बारस अमावासाओ'[4] पण्णत्ताओ, तं जहा— साविट्ठी पोट्ठवली आसोई[5] कत्तिया मग्गसिरी पोसी माही फग्गुणी चेत्ती वइसाही[6] जेट्ठामूली आसाढी॥

८. ता साविट्ठिणं पुण्णिमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा— अभिई सवणो धणिट्ठा॥

९. ता पोट्ठवतिण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—सतभिसया[7] पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया॥

१०. ता आसोइण्णं[8] पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा— रेवती अस्सिणी य॥

११. ता कत्तियण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—भरणी कत्तिया य॥

१२. ता 'मग्गसिरण्णं पुण्णिमं'[9] कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा —रोहिणी मिगसिरो[10] य।

१३. ता पोसिण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अद्दा पुण्णवसू पुस्सो॥

१४. ता माहिण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अस्सेसा महा य॥

१५. ता फग्गुणिण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी य॥

१६. ता चेत्तिण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा —हत्थो चित्ता य॥

१७. ता वइसाहिण्णं[11] पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति,

---

१. मिगसिरं (ट,व)।
२. पुव्वपुट्ठवता (क,ग,घ)।
३. पुणमासी (ट,व)।
४. दुवालस अमावसातो दुवालस पुण्णिमातो (व)।
५. अस्सोती (घ)।
६. विसाही (क,ग,घ,ट,व)।
७. सततिसया (ग,घ); सतत्तिसया (व)।
८. अस्सोदिण्णं (ग,घ)।
९. मग्गसिरी पुण्णिमं (क,ग,घ)।
१०. मग्गसिरो (ग,घ)।
११. विसाहिण्णं (ग,घ); विसाहि (ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं जहा—साती विसाहा य ॥

१८. ता जेट्ठामलिण्णं पुण्णिमासिणिं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अणुराहा जेट्ठा मूलो ॥

१९. ता आसाढिण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता दो णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—पुव्वासाढा उत्तरासाढा ॥

२०. ता साविट्ठिण्णं पुण्णिमासिणिं किं कुलं जोएति ? उवकुलं वा जोएति ? कुलोवकुलं वा[1] जोएति ? ता कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति, कुलोवकुलं वा जोएति । कुलं जोएमाणे धणिट्ठा णक्खत्ते जोएति, उवकुलं जोएमाणे सवणे[2] णक्खत्ते जोएति, कुलोवकुलं जोएमाणे अभिई णक्खत्ते जोएति । साविट्ठिण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति, कुलोवकुलं वा जोएति । कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया ॥

२१. ता पोट्ठवतिण्णं पुण्णिमं किं कुलं जोएति ? उवकुलं जोएति ? कुलोवकुलं वा जोएति ? ता कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति, कुलोवकुलं वा जोएति । कुलं जोएमाणे उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते जोएति, उवकुलं जोएमाणे पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते जोएति, कुलोवकुलं जोएमाणे सतभिसया णक्खत्ते जोएति । पोट्ठवतिण्णं पुण्णमासिणिं कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति, कुलोवकुलं वा जोएति, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कुलोवकुलेण वा जुत्ता पोट्ठवती पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया ॥

२२. ता आसोइण्णं[3] पुण्णिमासिणिं किं कुलं जोएति ? 'उवकुलं वा जोएति ? कुलोवकुलं वा जोएति ?'[4] ता कुलंपि जोएति, उवकुलंपि जोएति, णो लभंति कुलोवकुलं । कुलं जोएमाणे अस्सिणी णक्खत्ते जोएति, उवकुलं जोएमाणे रेवती णक्खत्ते जोएति । आसोइण्णं पुण्णिमं कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति । कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता आसोई णं पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया । 'एवं णेयव्वाओ—पोसिं पुण्णिमं जेट्ठामूलिं पुण्णिमं च कुलोवकुलंपि जोएति, अवसेसासु णत्थि कुलोवकुलं'[5] 'जाव आसाढी पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया'[6] ॥

२३. ता[7] सविट्ठिण्णं अमावासं[8] कति णक्खत्ता जोएति ? ता दुण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा—अस्सेसा[9] महा य । एवं एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं पोट्ठवतिं[10] दो णक्खत्ता जोएंति,

---

१. × (क,ग,घ) ।

२. समणे (ट,व) ।

३. आसोदिण्णं (क,ग,घ.ट) ; अस्सोहण्णं (व) ।

४. पुच्छा (व) ।

५. एवं एएणं अभिलावेणं पोसपुण्णिमाए जेट्ठमूलपुण्णिमाए य कुलोवकुलं भाणियव्वा सेसा कुलोवकुला णत्थि (ट,व) ।

६. × (क,ग,घ) ।

७. अतः पूर्वं 'टव' प्रत्योः एतावान् अतिरिक्तः पाठो विद्यते—दुवालस अमावसाओ (अवामंसातो—व) पं तं सावट्ठि पोट्ठवति जाव आसाढी । वृत्तिद्वयेपि एष पाठो व्याख्यातोस्ति, किन्तु प्रस्तुतप्राभृतप्राभृतस्य प्रारम्भसूत्रे 'बारस अमावासाओ' इति पाठो विद्यते, तेनात्र नासौ मूले स्वीकृतः ।

८. अमावसं (ग,घ); अवामंसं (ट) सर्वत्र ।

९. अस्सिलेसा (ट) ।

१०. पोट्ठवतं (ग,घ,व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं जहा—पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी। अस्सोइं[1] हत्थो चित्ता य। कत्तियं साती विसाहा य। मग्गसिरिं अणुराधा जेट्ठा मूलो। पोसिं पुव्वासाढा उत्तरासाढा। माहिं अभीई सवणो[2] धणिट्ठा। 'फग्गुणिं सतभिसया पुव्वापोट्ठवया। चेत्तिं उत्तरापोट्ठवया रेवती अस्सिणी य'[3]।

१. अतः 'ट,व' प्रत्योः किञ्चिद्विस्तृतः पाठो लभ्यते।

२. समणो (व)।

३. फग्गुणिं सतभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया। चेत्तिं रेवती अस्सिणी य (क,ग,घ); फगुणी दोण्णि तं जहा सतभिसता पुव्वाभद्दवया य। चेत्ति तिण्णि तं जहा उत्तरभद्दवया रेवती असणि य (ट,सूवृ.चंवृ); चन्द्रप्रज्ञप्तेः सूर्यप्रज्ञप्तेश्च वृत्त्योराधारेण पाठः स्वीकृतोस्ति। सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्ति (पत्र १२५, १२६) —'ता फग्गुणीं णं अमावासं कइ नक्खत्ता जोएंति? ता दोण्णि नक्खत्ता जोएंति, तंजहा—सयभिसया पुव्वभद्दवया य। एतदपि व्यवहारतो, निश्चयतः पुनरमूनि त्रीणि नक्षत्राणि फाल्गुनीममावास्यां परिसमापयन्ति, तद्यथा—धनिष्ठा शतभिषक् पूर्वभद्रपदा च, तत्र प्रथमां फाल्गुनीममावास्यां पूर्वभद्रपदानक्षत्रं षट्सु मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्यैकत्रिंशति द्वाषष्टिभागेषु एकस्य च द्वाषष्टिभागस्य नवसु सप्तषष्टिभागेषु गतेषु। ६।३१।६, द्वितीयां फाल्गुनीममावस्यां धनिष्ठानक्षत्रं विंशतौ मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्य चतुर्षु द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य द्वाविंशतौ सप्तषष्टिभागेषु व्यतिक्रान्तेषु २०।४,२२, तृतीया फाल्गुनीममावास्यां पूर्वाषाढानक्षत्रं चतुर्दशसु मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्य चतुश्चत्वारिंशति द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य षट्त्रिंशति सप्तषष्टिभागेषु गतेषु १४।४४।३६, चतुर्थी फाल्गुनीममावास्यां शतभिषक् नक्षत्रं त्रिषु मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्य सप्तदशसु द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य एकोनपञ्चाशति सप्तषष्टिभागेषु गतेषु ३।१७।४६, पञ्चमीं फाल्गुनीममावास्यां धनिष्ठानक्षत्रं षट्सु मुहूर्त्तेषु एकस्य च मुहूर्त्तस्य द्विपञ्चाशति द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य सत्केषु द्वाषष्टौ सप्तषष्टिभागेषु गतेषु ६।५२।६२। परिणमयति।

'ता चित्तिन्नं अमावासं कइ नक्खत्ता जोएंति? ता तिण्णि नक्खत्ता जोएंति, तंजहा—उत्तरभद्दवया रेवई अस्सिणी य' एतदपि व्यवहारतो, निश्चयतः पुनरमूनि त्रीणि नक्षत्राणि चैत्रीममावस्यां परिसमापयन्ति, तद्यथा—पूर्वभद्रपदा उत्तरभद्रपदा रेवती च, तत्र प्रथमां चैत्रीममावास्यामुत्तरभद्रपदानक्षत्रं सप्तविंशतौ मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्य षट्त्रिंशति द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य दशसु सप्तषष्टिभागेषु गतेषु २३।३६।१०, द्वितीयां चैत्रीममावास्यामुत्तरभद्रपदानक्षत्रमेकादशसु मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्य नवसु द्वाषष्टिभागेषु एकस्य च द्वाषष्टिभागस्य त्रयोविंशतौ सप्तषष्टिभागेषु गतेषु ११।६।२३, तृतीयां चैत्रीममावास्यां रेवतीनक्षत्रं पञ्चसु मुहूर्त्तेषु एकस्य च मुहूर्त्तस्यैकोनपञ्चाशति द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य सप्तत्रिंशति सप्तषष्ठिभागेष्वतिक्रान्तेषु ५।४६।३७, चतुर्थी चैत्रीममावास्यामुत्तरभद्रपदानक्षत्रं त्रयोविंशतौ मुहूर्त्तेषु एकस्य च मुहूर्त्तस्य द्वाविंशतौ द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य पञ्चाशति सप्तषष्टिभागेषु गतेषु २३।२२।५०, पञ्चमी चैत्रीममावास्यां पूर्वभद्रपदानक्षत्रं सप्तविंशतौ मुहूर्त्तेष्वेकस्य च मुहूर्त्तस्य सप्तपञ्चाशति द्वाषष्टिभागेष्वेकस्य च द्वाषष्टिभागस्य त्रिषष्टौ सप्तषष्टिभागेष्वतिक्रान्तेषु २७।५७।६३ परिसमापयति।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तावपि (७।१४६) स्वीकृतपाठाद्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वइसाहिं[1] भरणी कत्तिया य। जेट्ठामूलिं रोहिणी मिगसिरं च ॥

२४. ता आसाढिण्णं अमावासिं कति णक्खत्ता जोएंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं जहा— अद्दा पुणव्वसू पुस्सो ॥

२५. ता सावट्ठिण्णं अमावासं किं कुलं जोएति ? 'उवकुलं वा जोएति ? कुलोवकुलं वा जोएति'[2] ? ता कुलं वा जोएति, उवकुलं वा जोएति, णो लभति कुलोवकुलं। कुलं जोएमाणे महा णक्खत्ते जोएति, उवकुलं जोएमाणे 'अस्सेसा णक्खत्ते'[3] जोएति, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता साविट्ठी अमावासा जुत्ताति वत्तव्वं सिया। एवं णेतव्वं, णवरं— मग्गसिरीए माहीए फग्गुणीए आसाढीए य 'अमावासाए कुलोवकुलंपि जोएति, सेसेसु णत्थि'[4] ॥

सत्तमं पाहुडपाहुडं

२६. ता कहं ते सण्णिवाते आहितेति वदेज्जा ? ता जया[5] णं साविट्ठी पुण्णिमा भवति तया[6] णं माही अमावासा[7] भवति, जया णं माही पुण्णिमा भवइ तया णं साविट्ठी अमावासा भवइ, जया णं पोट्ठवती पुण्णिमा भवति तया णं फग्गुणी अमावासा भवति, जया णं फग्गुणी पुण्णिमा भवति तया णं पोट्ठवती अमावासा भवति, जया[8] णं आसोई पुण्णिमा भवति तया णं चेत्ती अमावासा भवति, जया णं चेत्ती पुण्णिमा भवति तया णं आसोई[9] अमावासा भवति, जया[10] णं कत्तिई पुण्णिमा भवति तया णं वइसाही अमावासा भवति, जया णं वइसाही पुण्णिमा भवति तया णं कत्तिई अमावासा भवति, जया णं मग्गसिरी पुण्णिमा भवति तया णं जेट्ठामूली अमावासा भवति, जया णं जेट्ठामूली पुण्णिमा भवति तया णं मग्गसिरी अमावासा भवति, जया णं पोसी पुण्णिमा भवति तया णं आसाढी अमावासा भवति, जया णं आसाढी पुण्णिमा भवति तया णं पोसी अमावासा भवति ॥

अट्ठमं पाहुडपाहुडं

२७. ता कहं ते णक्खत्तसंठिती आहितेति वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीई णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता गोसीसावलिसंठिते पण्णत्ते ॥

भिन्ना वाचना दृश्यते—फग्गुणिण्णं तिण्णि— सयभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवया। चेतिण्णं दो—रेवई अस्सिणी य।

१. वेसाहिं (क); विसाहिं (ग,घ)।

२. पुच्छा (व)।

३. अस्सिलेसाणक्खत्ते (व)।

४. अमावसाए कुलोवकुलं भाणियव्वं, सेसाणं कुलोवकुलं णत्थि जाव कुलोवकुलेण वा जुत्ता आसाढी अमावसं(अवामंसा—व) जुत्ताति वत्तव्वं सिया (ट,व); कुलोपकुलं भणितव्यं, शेषाणां स्वमावस्यानां कुलोपकुलं नास्ति, तेन न वक्तव्यम् (चंवृ)।

५. जता (क,ग,घ,व)।

६. तता (क,ग,घ,ट,व)।

७. अवमंसा (ग,घ,व) सर्वत्र।

८. अतः 'व' प्रतौ सङ्क्षिप्तः पाठो विद्यते—एवं एएणं अभिलावेणं आसोईए चेतीए य कत्तिइए वतिसाहीए य, मग्गसिरीए जेट्ठामूले य।

९. अस्सोइ (ट)।

१०. अतः 'ट' प्रतौ संक्षिप्तः पाठो विद्यते—एवं कत्तिय वतिसाहियाए य मगसिरीए जेट्ठामूलीए य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८. ता सवणे[1] णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता काहारसंठिते पण्णत्ते ।।
२९. ता[2] धणिट्ठा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता सउणिपलीणगसंठिते पण्णत्ते ।।
३० ता सतभिसया णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता पुप्फोवयारसंठिते पण्णत्ते ।।
३१. ता पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता अवड्ढवाविसंठिते पण्णत्ते ।।
३२. एवं उत्तरावि ।।
३३. ता रेवती णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता णावासंठिते पण्णत्ते ।।
३४. ता अस्सिणी णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता आसक्खंधसंठिते पण्णत्ते ।।
३५. ता भरणी णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता भगसंठिते पण्णत्ते ।।
३६. ता कत्तिया णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता छुरघरगसंठिते पण्णत्ते ।।
३७. ता रोहिणी णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता सगडुद्धिसंठिते पण्णत्ते ।।
३८. ता मिगसिरा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता मगसीसावलिसंठिते पण्णत्ते ।।
३९. ता अद्दा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता रुहिरबिंदुसंठिते पण्णत्ते ।।
४०. ता पुणव्वसू णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता तुलासंठिते पण्णत्ते ।।
४१. ता पुस्से णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता वद्धमाणगसंठिते पण्णत्ते ।।
४२. ता अस्सेसा[3] णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता पडागसंठिते पण्णत्ते ।।
४३. ता महा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता पागारसंठिते पण्णत्ते ।
४४. ता पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता अद्धपलियंकसंठिते पण्णत्ते ।।
४५. एवं उत्तरावि ।।
४६. ता हत्थे णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता हत्थसंठिते पण्णत्ते ।।
४७. ता चित्ता णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता मुहफुल्लसंठिते पण्णत्ते ।।
४८. ता साती णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता खीलगसंठिते पण्णत्ते ।।
४९. विसाहा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता दामणिसंठिते पण्णत्ते ।।
५०. ता अणुराधा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता एगावलिसंठिते पण्णत्ते ।।
५१. ता जेट्ठा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता गयदंतसंठिते पण्णत्ते ।।
५२. ता मूले णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता विच्छुयनंगोलसंठिते[4] पण्णत्ते ।।
५३. ता पुव्वासाढा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता गयविक्कमसंठिते पण्णत्ते ।।
५४. ता उत्तरासाढा णक्खत्ते किंसंठिते पण्णत्ते ? ता सीहणीसाइसंठिते पण्णत्ते ।।

नवमं पाहुडपाहुडं

५५. ता कहं ते तारग्गे आहितेति वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीई[5] णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता तितारे पण्णत्ते ।।

---

१. समणे (व)।
२. 'ट,व' प्रत्योः अतः परं संक्षिप्तः पाठो विद्यते यथा—'धणिट्ठाणक्खत्ते सउणिपलीणगसंठिते, सयभिसयाणक्खत्ते पुप्फोवयारसंठिते' एवं सर्वत्र।
३. असिलेसा (व)।
४. विच्छुयलंगोल° (ग,घ,ट,व)।
५. 'ट,व' प्रत्योः अतः परं संक्षिप्तपाठो विद्यते, यथा—'अभीयीणक्खत्ते तितारे प सवणे णक्खत्ते तितारे प धणिट्ठा पंचतारे प सयभि-

५६. ता सवणे णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता तितारे पण्णत्ते ॥

५७. ता धणिट्ठा णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता पणतारे पण्णत्ते ॥

५८. ता सतभिसया णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता सततारे[1] पण्णत्ते ॥

५९. ता पुव्वापोट्ठवता णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता दुतारे पण्णत्ते ॥

६०. एवं उत्तरावि ॥

६१. ता रेवती णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता बत्तीसतितारे पण्णत्ते ॥

६२. ता अस्सिणी णक्खत्ते कतितारे पण्णत्ते ? ता तितारे पण्णत्ते। एवं सव्वे पुच्छिज्जंति -भरणी तितारे पण्णत्ते, कत्तिया छत्तारे पण्णत्ते, रोहिणी पंचतारे पण्णत्ते, संठाणा[2] तितारे पण्णत्ते, अद्दा एगतारे पण्णत्ते, पुणव्वसू पंचतारे पण्णत्ते, पुस्से तितारे पण्णत्ते, अस्सेसा छतारे पण्णत्ते, मघा सत्ततारे पण्णत्ते, पुव्वाफग्गुणी दुतारे पण्णत्ते, एवं उत्तरावि, हत्थे पंचतारे पण्णत्ते, चित्ता एगतारे पण्णत्ते, साती एगतारे पण्णत्ते, विसाहा पंचतारे पण्णत्ते, अणुराहा चउतारे[3] पण्णत्ते, जेट्ठा तितारे पण्णत्ते, मूले एगतारे पण्णत्ते, पुव्वासाढा चउतारे पण्णत्ते, उत्तरासाढा चउतारे पण्णत्ते ॥

दसम पाहुडपाहुडं

६३. ता कहं ते णेता आहितेति वदेज्जा ? ता वासाणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा--उत्तरासाढा अभिई सवणो धणिट्ठा। उत्तरासाढा चोद्दस अहोरत्ते णेति, अभिई सत्त अहोरत्ते णेति, सवणे अट्ठ अहोरत्ते णेति, धणिट्ठा एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पदाइं[4] चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवति ॥

६४. ता वासाणं दोच्चं[5] मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—धणिट्ठा सतभिसता पुव्वपोट्ठवया[6] उत्तरपोट्ठवया[7]। धणिट्ठा चोद्दस अहोरत्ते

सया दसतारे प पुव्वभद्दवया दुतारे प उत्तर-भद्दवया दुतारे प रेवती बत्तीसतारे प' एवं सर्वत्र ।

१. चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट' प्रतौ 'दसतारे' इति पाठो विद्यते 'व' प्रतौ एष पाठः त्रुटितोस्ति । चन्द्रप्रज्ञप्ते-र्वृत्तौ उद्धृतायां जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिगाथायामपि 'दस' इति पदस्य उल्लेखोस्ति । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (७।१३१) 'पंचेक्कसय' इति पाठो लभ्यते, समवायाङ्गे (१००।२) पि शतसंवादी पाठो लभ्यते—'सयभिसयाणक्खत्ते एक्कसयतारे पण्णत्ते' ।

२. मिगसिरे (ट,व) ।

३. पंचतारे (ग,घ) ।

४ पादाइं (ग,घ) ; पयाणि (ट) ।

५. बितियं (ट) ।

६. पुव्वभद्दवया (ट) ।

७. उत्तरभद्दवया (ट); अतः परं 'ट' प्रतौ संक्षिप्तपाठो लभ्यते—एवं एएण अभिलावेणं जहेव जंबुदीवपण्णत्तीए तहेव एत्थपि भाणियव्वं जाव तेंसि च णं मासंसि वट्टीए समचउरंस-संठियाए । णगोहपरिमंडलाए सकायमणुरंगि-णीयाए च्छायाए सूरिय अणुपरियट्टति । तस्स णं मासस्स चरिमदिवसे लेहट्ठाति दोपयाति पोरसी भवति । चंद्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव संक्षिप्तपाठो व्याख्यातोस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेति, सतभिसता सत्त अहोरत्ते णेति, पुव्वपोट्ठवया[1] अट्ठ अहोरत्ते णेति, उत्तरपोट्ठवया एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि अट्ठंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पदाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवति ।।

६५. ता वासाणं ततियं मासं कति णक्खत्ता णेंति, ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा— उत्तरापोट्ठवया रेवती अस्सिणी। उत्तरापोट्ठवया चोद्दस अहोरत्ते णेति, रेवती पण्णरस अहोरत्ते णेति, अस्सिणी एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुल-पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं तिण्णि पदाइं पोरिसी भवति ।।

६६. ता वासाणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा अस्सिणी भरणी कत्तिया। अस्सिणी चउद्दस अहोरत्ते णेति, भरणी पण्णरस अहोरत्ते णेति, कत्तिया एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि सोलसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पदाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवति ।।

६७. ता हेमंताणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—कत्तिया रोहिणी संठाणा। कत्तिया चोद्दस अहोरत्ते णेति, रोहिणी पण्णरस अहोरत्ते णेति, संठाणा एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पदाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवइ ।।

६८. ता हेमंताणं दोच्चं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो। संठाणा चोद्दस अहोरत्ते णेति, अद्दा सत्त[2] अहोरत्ते णेति, पुणव्वसू अट्ठ[3] अहोरत्ते णेति, पुस्से एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि चउवीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं[4] चत्तारि पदाइं पोरिसी भवति ।।

६९. ता हेमंताणं ततियं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा पुस्से अस्सेसा महा। पुस्से चोद्दस अहोरत्ते णेति, अस्सेसा पंचदस अहोरत्ते णेति, महा एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि वीसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पदाइं अट्ठंगुलाइं पोरिसी भवति ।।

७०. ता हेमंताणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति ? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी। महा चोद्दस अहोरत्ते णेति, पुव्वाफग्गुणी पण्णरस अहोरत्ते णेति, उत्तराफग्गुणी एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि सोलसं-गुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे तिण्णि पदाइं चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवति ।।

---

१. पुव्वाभद्दवया (क,ग,घ)।
२. अट्ठ (जं० ७।१६१)।
३. सत्त (जं० ७।१६१)
४. लेहट्ठाणि (क,ग,ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७१. ता गिम्हाणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता। उत्तराफग्गुणी चोद्दस अहोरत्ते णेति, हत्थो पण्णरस अहोरत्ते णेति, चित्ता एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि दुवालसंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं तिण्णि पदाइं पोरिसी भवति ॥

७२. ता गिम्हाणं बितियं मासं कति णक्खत्ता णेंति? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—चित्ता साती विसाहा। चित्ता चोद्दस अहोरत्ते णेति, साती पण्णरस अहोरत्ते णेति, विसाहा एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि अट्ठंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पदाइं अट्ठ अंगुलाइं पोरिसी भवति ॥

७३. ता गिम्हाणं ततियं मासं कति णक्खत्ता णेंति? ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो। विसाहा चोद्दस अहोरत्ते णेति, अणुराहा सत्त[1] अहोरत्ते णेति, जेट्ठा अट्ठ[2] अहोरत्ते णेति, मूलो एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पदाणि चत्तारि अंगुलाइं पोरिसी भवति ॥

७४. ता गिम्हाणं चउत्थं मासं कति णक्खत्ता णेंति? ता तिण्णि णक्खत्ता णेंति, तं जहा—मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा। मूलो चोद्दस अहोरत्ते णेति, पुव्वासाढा पण्णरस अहोरत्ते णेति, उत्तरासाढा एगं अहोरत्तं णेति। तंसि च णं मासंसि वट्टाए समचउरंससंठिताए णग्गोहपरिमंडलाए सकायमणुरंगिणीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं दो पदाइं पोरिसी भवति ॥

एक्कारसमं पाहुडपाहुडं

७५. ता कहं ते चंदमग्गा आहितेति वदेज्जा? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ते जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोयं जोएति। ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति? तहेव जाव कयरे णक्खत्ते जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोयं जोएति? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं जे णं णक्खत्ता सया चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति ते णं छ, तं जहा—संठाणा अद्दा पुस्सो अस्सेसा हत्थो मूलो। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं सया चंदस्स उत्तरेणं जोयं जोएंति ते णं बारस, तं जहा—अभिई सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तरापोट्ठवया रेवती अस्सिणी भरणी पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी साती। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति ते णं सत्त, तं जहा—कत्तिया रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराहा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि पमद्दंपि जोयं जोएंति ताओ णं दो आसाढाओ सव्वबाहिरे मंडले जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोएस्संति वा। तत्थ जेसे णक्खत्ते

१. अट्ठ (जं० ७।१६६)। २. सत्त (जं० ७।१६६)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे णं सया चंदस्स पमद्दं जोयं जोएति सा णं एगा जेट्ठा ॥

७६. ता कति ते चंदमंडला पण्णत्ता[1] ? ता पण्णरस चंदमंडला पण्णत्ता[2] ॥

७७. ता एतेसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया । अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया । अत्थि चंदमंडला जे णं रविससिणक्खत्ताणं सामण्णा भवंति । अत्थि चंदमंडला जे णं सया आदिच्चेहिं विरहिया । ता एतेसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं कयरे चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया जाव कयरे चंदमंडला जे णं सया आदिच्चेहिं विरहिया ? ता एतेसि णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं तत्थ जेते चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया ते णं अट्ठ, तं जहा— पढमे चंदमंडले ततिए चंदमंडले छट्ठे चंदमंडले सत्तमे चंदमंडले अट्ठमे चंदमंडले दसमे चंदमंडले एक्कारसमे चंदमंडले पण्णरसमे चंदमंडले । तत्थ जेते चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया ते णं सत्त, तं जहा— बितिए चंदमंडले चउत्थे चंदमंडले पंचमे चंदमंडले णवमे चंदमंडले बारसमे चंदमंडले तेरसमे चंदमंडले चउद्दसमे चंदमंडले । तत्थ जेते चंदमंडला जे णं रविससिणक्खत्ताणं सामण्णा भवंति ते णं चत्तारि, तं जहा—पढमे चंदमंडले बीए चंदमंडले इक्कारसमे[3] चंदमंडले पण्णरसमे चंदमंडले । तत्थ जेते चंदमंडला जे णं सया 'आदिच्चेहिं विरहिया'[4] ते णं पंच, तं जहा—छट्ठे चंदमंडले सत्तमे चंदमंडले अट्ठमे चंदमंडले णवमे चंदमंडले दसमे चंदमंडले ॥

बारसमं पाहुडपाहुडं

७८. ता कहं ते देवयाणं अज्झयणा आहितातिं[5] वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता बम्हदेवयाए[6] पण्णत्ते ॥

७९. ता[7] सवणे णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता विण्हुदेवयाए पण्णत्ते ॥

८०. ता धणिट्ठा णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता वसुदेवयाए पण्णत्ते ॥

८१. ता सतभिसया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता वरुणदेवयाए पण्णत्ते ॥

८२. ता पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता अयदेवयाए पण्णत्ते ॥

८३. ता उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किंदेवयाए पण्णत्ते ? ता अभिवड्ढिदेवयाए पण्णत्ते । एवं सव्वेवि पुच्छिज्जंति—रेवती पुस्सदेवयाए[8], अस्सिणी अस्सदेवयाए, भरणी जमदेवयाए, कत्तिया अग्गिदेवयाए, रोहिणी पयावइदेवयाए, संठाणा सोमदेवयाए, अद्दा रुद्ददेवयाए, पुणव्वसू अदितिदेवयाए, पुस्सो बहस्सइदेवयाए, अस्सेसा सप्पदेवयाए, महा पिइदेवयाए[9], पुव्वाफग्गुणी भगदेवयाए, उत्तराफग्गुणी अज्जमदेवयाए, हत्थे सवियादेवयाए[10], चित्ता

१,२. आहिताति वदेज्जा (ट,व) ।
३. इग्यारसमे (ट) ।
४. आदिच्चविरहिया (ग,घ,ट); आतिच्चेहिं विरहिया (व) ।
५. अभिहिताति (व) ।
६. बंभ° (क,ग,घ) ।
७. अतः 'ट,व' प्रत्योः संङ्क्षिप्तपाठो लभ्यते, यथा—समणे ण विण्हदेवताए पण्णत्ते एवं जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए जाव उत्तरासाढा णक्खत्ते विस्सदेवताए पण्णत्ते ।
८. पूसदेवयाए (क) ।
९. पिऊ (जं० ७।१२९) ।
१०. सवितिदेवयाए (क,ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तट्ठदेवयाए, साती वायुदेवयाए, विसाहा इंदग्गिदेवयाए, अणुराहा मित्तदेवयाए, जेट्ठा इंददेवयाए, मूले णिरइदेवयाए, पुव्वासाढा आउदेवयाए, उत्तरासाढा विस्सदेवयाए पण्णत्ते ॥

तेरसमं पाहुडपाहुडं

८४. ता कहं ते मुहुत्ताणं नामधेज्जा आहिताति वदेज्जा ? ता एगमेगस्स णं अहोरत्तस्स तीसं मुहुत्ता पण्णत्ता, तं जहा –

गाहा– रोद्दे सेते मित्ते, वाउ सुपीए[1] तहेव अभिचंदे ।
माहिंद[2] बलव[3] बंभे[4], बहुसच्चे चेव ईसाणे ॥१॥
तट्ठे[5] य भावियप्पा, वेसमणे वारुणे[6] य आणंदे ।
विजए य वीससेणे[7], पायावच्चे चेव उवसमे[8] ॥२॥
गंधव्व अग्गिवेसे, सयरिसहे आयवं च अममे य ।
अणवं च भोमे रिसहे, सव्वट्ठे[9] रक्खसे चेव ॥३॥

चउद्दसमं पाहुडपाहुडं

८५. ता कहं ते दिवसा[10] आहिताति वदेज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस दिवसा पण्णत्ता, तं जहा– पडिवादिवसे बितियादिवसे जाव पण्णरसीदिवसे ॥

८६. ता एतेसि णं पण्णरसण्हं दिवसाणं पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता तं जहा—

गाहा— पुव्वंगे सिद्धमणोरमे य तत्तो मणोहरे[11] चेव ।
जसभद्दे य जसोधरे सव्वकामसमिद्धे[12] ॥१॥
इंदमुद्धाभिसित्ते य, सोमणस धणंजए य बोद्धव्वे ।
अत्थसिद्धे अभिजाते, अच्चसणे[13] य सयंजए[14] ॥२॥
अग्गिवेसे उवसमे, दिवसाणं णामधेज्जाइं ॥३॥

८७. ता कहं ते रातीओ आहिताति वदेज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस रातीओ पण्णत्ताओ, तं जहा— पडिवाराती बितियाराती[15] जाव पण्णरसीराती ॥

---

१. सुठिए (ट); सुट्ठीजे (द); स्थपीति (चवृ) ।
२. माहिंदे (ट,व) ।
३. वलवं (ट,व); पलंवे (सम० ३०।३) ।
४. पम्हे (ट); नवमः पक्ष्मः (चवृ); अतः परं समवायांगे (३०।३) नाम्नां व्यत्ययो भेदश्च दृश्यते—सच्चे आणंदे विजए वीससेणे वायावच्चे उवसमे ईसाणे तिट्ठे भावियप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवं आवधं तट्ठवे भूमहे रिसभे सव्वट्ठसिद्धे रक्खसे ।
५. त्वष्टा (चवृ) ।
६. वावरे (ट); अपरः (चवृ) ।
७. विजयसेणे (ट); विजयसेनः (चवृ) ।
८. ववसमे (क) ।
९. सत्यवान् (चवृ) ।
१०. दिवसाणं णामधेज्जा (ट); दिवसानां नामधेयानि व्याख्यातानीति वदेत् (चवृ) ।
११. मणरहः (चवृ) ।
१२. सव्वकामसमिद्धेति (ग,घ,ट,व); छट्ठे सव्वकामसमिद्धे (जं० ७।११७) ।
१३. अच्चासणे (ग,घ,ट,व) ।
१४. सयंजए चेव (जं० ७।११७) ।
१५. बिदियाराई (क,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८८. ता एतासि णं पण्णरसण्हं रातीणं पण्णरस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

गाहा— उत्तमा य सुणक्खत्ता, एलावच्चा जसोधरा ।
सोमणसा चेव तहा, सिरिसंभूया य बोद्धव्वा ॥१॥
विजया य वेजयंति, जयंति अपराजिया य इच्छा य ।
समाहारा चेव तहा, तेया य तहा य अतितेया[1] ॥२॥
देवाणंदा राती[2], रयणीणं णामधेज्जाइं ॥३॥

पण्णरसमं पाहुडपाहुडं

८९. ता कहं ते तिही आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमा 'दुविहा तिही'[3] पण्णत्ता, तं जहा दिवसतिही य रातीतिही य ॥

९०. ता कहं ते दिवसतिही आहितेति वदेज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस-पण्णरस दिवसतिही पण्णत्ता, तं जहा णंदे भद्दे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स पंचमी, पुणरवि—णंदे भद्दे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स दसमी, पुणरवि णंदे भद्दे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स पण्णरसी । एवं एते[4] तिगुणा तिहीओ सव्वेसिं दिवसाणं ॥

९१. ता कहं ते रातीतिही आहितेति वदेज्जा ? ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस-पण्णरस रातीतिही पण्णत्ता, तं जहा उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा, पुणरवि—उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा, पुणरवि—उग्गवई भोगवई जसवई सव्वसिद्धा सुहणामा । एवं[5] एते तिगुणा तिहीओ सव्वासिं रातीणं ॥

सोलसमं पाहुडपाहुडं

९२. ता कहं ते गोत्ता आहिताति वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीई णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता मोग्गलायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

९३. ता सवणे[6] णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता संखायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

९४. ता धणिट्ठा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता अग्गभावसगोत्ते[7] पण्णत्ते ॥

९५. ता सतभिसया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता कण्णिलायणसगोत्ते[8] पण्णत्ते ॥

९६. ता पुव्वापोट्ठवया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता जाउकण्णियसगोत्ते पण्णत्ते ॥

९७. ता उत्तरापोट्ठवया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता धणंजयसगोत्ते पण्णत्ते ॥

९८. ता रेवती णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता पुस्सायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

९९. ता अस्सिणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता अस्सायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

१००. ता भरणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता भग्गवेससगोत्ते पण्णत्ते ॥

---

१. अभितेया (ग,ध,व) ।
२. णिरती (ग,घ,ट); णिरिती (व); निरतीति पंचदश्या एव द्वितीयं नाम (जं० हीवृ) ।
३. दुविधा तिधी (क) ।
४. 'एते' इति स्त्रीत्वेपि प्राप्ते पुंस्त्वनिर्देशः प्राकृतत्वात् (सूवृ) ।
५. × (क,ग,घ,ट,व) ।
६. समणे (ग,घ,व); अतः 'ट,व' प्रत्योः संक्षिप्त-पाठो लभ्यते-यथा—'सवणे णक्खत्ते संखायण-गोत्ते घणिट्ठा अग्गिवेसायणगोत्ते पण्णत्ते' एवं सर्वत्र ।
७. अग्गताव° (ग,ध); अग्गिवेसायण° (ट) ।
८. कत्तेलायण° (ग,घ); कंडिल्लायण° (ट,व); कण्णिल्ले (जं० ७।१३२) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०१. ता कत्तिया णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता अग्गिवेससगोत्ते[1] पण्णत्ते ॥

१०२. ता रोहिणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता गोयमसगोत्ते पण्णत्ते ॥

१०३. ता संठाणा[2] णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता भारद्दायसगोत्ते पण्णत्ते ॥

१०४. ता अद्दा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता लोहिच्चायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

१०५. ता पुणव्वसू णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता वासिट्ठसगोत्ते पण्णत्ते ॥

१०६. ता पुस्से णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता ओमज्जायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

१०७. ता अस्सेसा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता मंडव्वायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

१०८. ता महा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता पिंगायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

१०९. ता पुव्वाफग्गुणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता गोवल्लायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

११०. ता उत्तराफग्गुणी णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता कासवसगोत्ते पण्णत्ते ॥

१११. ता हत्थे णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता कोसियसगोत्ते पण्णत्ते ॥

११२. ता चित्ता णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता दब्भियायणसगोत्ते[3] पण्णत्ते ॥

११३. ता साती णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता चामरच्छायणसगोत्ते[4] पण्णत्ते ॥

११४. ता विसाहा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता सुंगायणसगोत्ते[5] पण्णत्ते ॥

११५. ता अणुराहा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता गोलव्वायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

११६. ता जेट्ठा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता तिगिच्छायणसगोत्ते[6] पण्णत्ते ॥

११७. ता मूले णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता कच्चायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

११८. ता पुव्वासाढा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता वज्झियायणसगोत्ते पण्णत्ते ॥

११९. ता उत्तरासाढा णक्खत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ? ता वग्घावच्चसगोत्ते पण्णत्ते ॥

सत्तरसमं पाहुडपाहुडं

१२०. ता कहं ते भोयणा आहिताहि वदेज्जा ? ता एतेसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कत्तियाहिं दधिणा भोच्चा कज्जं साधेति । रोहिणीहिं वसभमंसं[7] भोच्चा कज्जं साधेति । संठाणाहिं[8] मिगमंसं[9] भोच्चा कज्जं साधेति । अद्दाहिं णवणीतेण भोच्चा कज्जं साधेति । पुणव्वसुणा घतेण भोच्चा कज्जं साधेति । पुस्सेण खीरेण भोच्चा कज्जं साधेति । अस्सेसाहिं[10] दीवगमंसं[11] भोच्चा कज्जं साधेति । महाहिं कसरिं[12] भोच्चा कज्जं साधेति । पुव्वाहिं फग्गुणीहिं मेंढकमंसं[13] भोच्चा कज्जं साधेति । उत्तराहिं फग्गुणीहिं णखीमंसं[14] भोच्चा कज्जं साधेति । हत्थेणं वच्छाणीएण[15] भोच्चा कज्जं साधेति । चित्ताहिं मुग्गसूवेणं

---

१. अग्गिवेसायण° (ट,व) ।
२. मगसिरं (ग,ट,व) ।
३. दभियाण° (ग,व); दभियण° (ट); दब्भिय° (व); दब्भा (जं० ७।१३२) ।
४. चामरच्छगोत्ते (क,ग,घ) ।
५. अंगायण° (ट,व) ।
६. तिगिच्छायण° (क,ग,घ) ।
७ वसभमंसेणं (ट,व) ।
८. मिगसिरेणं (ट,व) ।
९. मिगमंसेणं (ट,व) ।
१०. असिलेसाहिं (ट,व) ।
११. दीवगमंसेणं (ट,व) ।
१२. कसोरि (ट); कासारी (व) ।
१३. मेंढगमंसेणं (ट) ।
१४. नभीमसं (क); णखीमंसेणं (ट,व) ।
१५. वच्छाणी (पण्ण० १।४०) एका वल्ली ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोच्चा कज्जं साधेति । सादिणा[1] फलाइं भोच्चा कज्जं साधेंति । विसाहाहिं आसित्तियाओ[2] [अगत्थियाओ ?] भोच्चा कज्जं साधेति । अणुराहाहिं मिस्साकूरं भोच्चा कज्जं साधेति । जेट्ठाहिं कोलट्ठिएणं भोच्चा कज्जं साधेति । मूलेणं मूलापण्णेणं[3] भोच्चा कज्जं साधेति । पुव्वाहिं आसाढाहिं आमलगसारिएणं[4] भोच्चा कज्जं साधेति । उत्तराहिं आसाढाहिं बिल्लेहिं[5] भोच्चा कज्जं साधेति । अभीइणा पुप्फेहिं[6] भोच्चा कज्जं साधेति । सवणेणं[7] खीरेणं भोच्चा कज्जं साधेति । धणिट्ठाहिं जूसेणं भोच्चा कज्जं साधेति । सतभिसयाए तुवरीओ[8] भोच्चा कज्जं साधेति । पुव्वाहिं पोट्ठवयाहिं कारिल्लएहिं भोच्चा कज्जं साधेति । उत्तराहिं पोट्ठवयाहिं वराहमंसं भोच्चा कज्जं साधेति । रेवतीहिं जलयरमंसं भोच्चा कज्जं साधेति । अस्सिणीहिं तित्तिरमंसं भोच्चा कज्जं साधेति 'अहवा वट्टगमंसं'[9] । भरणीहिं तिलतंदुलगं भोच्चा कज्जं साधेति ॥

अट्ठारसमं पाहुडपाहुडं

१२१. ता कहं ते चारा आहिताति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमे[10] दुविहा चारा पण्णत्ता, तं जहा आदिच्चचारा य चंदचारा य ॥

१२२. ता कहं ते चंदचारा आहिताति वदेज्जा ? ता पंच संवच्छरिए णं जुगे अभीई णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, सवणे[11] णं णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएति । एवं जाव उत्तरासाढा णक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएति ॥

१२३. ता कहं ते आदिच्चचारा आहिताति वदेज्जा ? ता पंच संवच्छरिए णं जुगे अभीई णक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोयं जोएति । एवं जाव उत्तरासाढा णक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोयं जोएति ॥

एगूणवीसइमं पाहुडपाहुडं

१२४. ता कहं ते मासा आहिताति वदेज्जा ? ता एगमेगस्स णं संवच्छरस्स बारस मासा पण्णत्ता । तेसिं च दुविहा णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा लोइया लोउत्तरिया य । तत्थ लोइया णामा 'इमे, तं जहा'[12]-- सावणे भद्दवते अस्सोए[13] कत्तिए मग्गसिरे पोसे माहे फग्गुणे चित्ते वइसाहे जेट्ठामूले आसाढे । लोउत्तरिया णामा 'इमे, तं जहा'[14]---

१. सातिणा (ट); सातीहिं (व) ।
२. आत्तसियाओ (क); आतिसियाओ (ट); आसत्तिय (व) ।
३. मूलागसाएणं (ट) ।
४. आमलगसरीणेणं (ग,घ) ।
५. विलेवीओ (क); विलेवी (ग,घ) ।
६. पुप्फति (ट,व) ।
७. समणेणं (व) ।
८. तुवरातो (ट) ।
९. × (ग,घ) ।
१०. इमा (क,ग,घ) ।
११. समणे (ग,घ,व) ।
१२. × (क,ग,घ,ट,व) ।
१३. चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'व' संकेतितायां प्रतौ पूर्णः पाठो विद्यते, स मूले स्वीकृतः अन्यादर्शेषु 'अस्सोए जाव आसाढे' इति संक्षिप्त पाठोऽस्ति ।
१४. × (क,ग,घ,ट,व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाहा— अभिणंदे[1] सुपइट्ठे[2] य, विजए पीतिवद्धण ।
सेज्जंसे य सिवे यावि, 'सिसिरेवि य हेमवं'[3] ॥१॥
णवमे वसंतमासे, दसमे कुसुमसंभवे ।
एकादसमे णिदाहे, वणविरोही य बारसे ॥२॥

वीसइमं पाहुडपाहुडं

१२५. ता कति णं संवच्छरा आहितातिवदेज्जा ? ता पंच संवच्छरा आहितातिवदेज्जा, तं जहा—णक्खत्तसंवच्छरे जुगसंवच्छरे पमाणसंवच्छरे लक्खणसंवच्छरे सणिच्छर-संवच्छरे ॥

१२६. ता णक्खत्तसंवच्छरे णं कतिविहे पण्णत्ते ? ता णक्खत्तसंवच्छरे णं दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा—सावणे भद्दवए जाव[4] आसाढे । जं वा बहस्सतीमहग्गहे दुवालसहिं संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेति ॥

१२७. ता जुगसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—चंदे चंदे अभिवड्ढिए चंदे अभिवड्ढिए चेव । ता पढमस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउव्वीसं पव्वा पण्णत्ता । दोच्चस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउव्वीसं पव्वा पण्णत्ता, तच्चस्स णं अभिवड्ढियसंवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता । चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउव्वीसं पव्वा पण्णत्ता । पंचमस्स णं अभिवड्ढिय-संवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पण्णत्ता । एवामेव सपुव्वावरेणं पंचसंवच्छरिए जुगे एगे चउवीसे पव्वसते भवतीति मक्खायं[5] ॥

१२८. ता पमाणसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—णक्खत्ते चंदे उडू[6] आइच्चे अभिवड्ढिते ॥

१२९. ता लक्खणसंवच्छरे णं पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—'णक्खत्ते चंदे उडू आइच्चे अभिवड्ढिते । ता णक्खत्तसंवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा'[7]—

गाहा— समगं णक्खत्ता जोयं, जोएंति समगं उडू[8] परिणमंति ।
णच्चुण्हं णातिसीते, बहूदओ होति णक्खत्ते ॥१॥

---

१. आभिणादिते (क); अभिणदे (ग,घ); आभिणंदे (ट); आभिणादिता (ब); द्रष्टव्यं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः ७।११४ सूत्रस्य पाद-टिप्पणम् ।

२. सुपइट्ठिते (क); सुपइट्ठिय (ग,घ); पतिट्ठो (ब) ।

३. सिसिरे य सहेमवं (क,ब, जं० ७।११४) ।

४. सू० १०।१२४ ।

५. समक्खातं (ग,घ) ।

६. उऊ (ट,ब) ।

७. ता णक्खत्ते णं संवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते तं जहा (क); णक्खत्ते चंदे उडू आइच्चे अभि-वड्ढिते । ता णक्खत्ते णं संवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते (ग,घ); नक्खत्ते चंदे उदू आइच्चे अभिवड्ढिते । ता नक्खत्तसंवच्छरस्स पंचविहं लक्खणं पण्णत्तं तं (ट); × (ब); स्थानाङ्गे (५।२१३) जंबूद्वीपप्रज्ञप्तौ (७।११२) च चिह्नाङ्कितः पाठो नोपलभ्यते ।

८. उऊ (ट,ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ससि[1] समग[2] पुण्णिमासिं, जोएंति[3] विसमचारिणक्खत्ता[4]।
कडुओ बहूदओ य, तमाहु संवच्छरं चंदं ॥२॥
विसमं पवालिणो परिणमंति अणुऊसु दिंति पुप्फफलं।
वासं न सम्म वासति, तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥३॥
पुढविदगाणं च रसं, पुप्फफलाणं च देइ आइच्चे।
अप्पेणवि वासेणं, सम्मं निप्फज्जए सस्सं[5] ॥४॥
आइच्चतेयतविया, खणलवदिवसा उडू परिणमंति।
'पूरेति णिण्णथलए'[6] तमाहु अभिवड्ढियं जाण ॥५॥

१३०. ता सणिच्छरसंवच्छरे णं अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते, तं जहा—अभीई सवणे[7] जाव उत्तरासाढा। जं वा सणिच्छरे महग्गहे तीसाए संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेइ॥

एक्कवीसइमं पाहुडपाहुडं

१३१. ता कहं ते 'जोतिसस्स दारा'[8] आहितात्ति वदेज्जा? तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता कत्तियादिया[9] णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता महादिया[10] णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता धणिट्ठादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता अस्सिणीयादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता भरणीयादिया

---

१. 'ससि' त्ति विभक्तिलोपात् शशिना।
२. समल (ठा० ५।२१३)।
३. जोएइ (ट,व, ठा० ५।२१३)।
४. ०णक्खत्तं (ठा० ५।२१३)।
५. सासं (ट)।
६. पूरेति य थलियाई (ग,घ); पूरेइ य थलाति (ट,व); पूरेति रेणुथलयाई (ठा० ५।२१३)।
७. समणो (ग,घ,व)।
८. जोतिसिदार (ट)।
९. कत्तियादी (क,ग,घ)।
१०. द्वयोरपिवृत्त्योः 'एके पुनरेवमाहुः—अनुराधादीनि सप्तनक्षत्राणि पूर्वद्वारकाणि प्रज्ञप्तानि' इति व्याख्यातमस्ति, अनेन ज्ञायते वृत्तिकारस्य सम्मुखे अनुराधादिनक्षत्रविषयकपाठ एव आसीत्। इदानीन्तनेषु आदर्शेषु मघादिनक्षत्रविषयकः पाठः उपलभ्यते। स्थानाङ्गवृत्ता (पत्र ३६३) वपि अभयदेवसूरिणा एष एव पाठः उल्लिखितः—इह चार्थे पञ्च मतानि सन्ति, यत आह चन्द्रप्रज्ञप्त्याम्—'तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पन्नत्ताओ, तत्थेगे एवमाहंसु—कत्तियाइया सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पन्नत्ता एवमन्ये मघादीन्यपरे धनिष्ठादीनि इतरेऽश्विन्यादीनि अपरे भरण्यादीनि, दक्षिणापरोत्तरद्वाराणि च सप्तसप्त यथामतं क्रमेणैव समवसेयानीति, वयं पुण एवं वयामो—अभियाइया णं सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पन्नत्ता', एवं दक्षिणद्वारिकादीन्यपि क्रमेणैवेति, तदिह षष्ठं मतमाश्रित्य सूत्राणि प्रवृत्तानि। 'क' सङ्केतितादर्शे 'मघादिविषयकपाठानन्तरं अनुराधा विषयकः पाठोऽपि लिखितोऽस्ति। एतेन ज्ञायते अस्मिन् विषये वाचनाद्वयमासीत्। प्रस्तुतप्रतौ द्वयोरपि वाचनयोः सम्मिश्रणं कृतं लिपिकारेण। वृत्त्योः 'तत्थ जेते एवमाहंसु' इत्यालापकेषु अनुराधादिनक्षत्राणां स्पष्टीकरणपाठो नोपलभ्यते, तेन आदर्शानुसारी पाठ एव स्वीकृतः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता– एगे एवमाहंसु ५।

तत्थ जेते एवमाहंसु– ता कत्तियादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तं जहा—कत्तिया रोहिणी 'संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा'[1]। महादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा– महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साती विसाहा। अणुराधादिया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया[2] पण्णत्ता, तं जहा– अणुराधा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई सवणो। धणिट्ठादिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा– धणिट्ठा सतभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवती अस्सिणी भरणी।

तत्थ जेते एवमाहंसु– ता महादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तं जहा– महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साती विसाहा। अणुराधादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा—अणुराधा जेट्ठा मूले पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई सवणे। धणिट्ठादिया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तं जहा—धणिट्ठा सतभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवती अस्सिणी भरणी। कत्तियादिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा– कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा।

तत्थ जेते एवमाहंसु– ता धणिट्ठादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तं जहा—धणिट्ठा सतभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवया रेवती अस्सिणी भरणी। कत्तियादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा—कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो अस्सेसा। महादिया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तं जहा—महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साती विसाहा। अणुराधादिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा— अणुराधा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभीई सवणो।

तत्थ जेते एवमाहंसु– ता अस्सिणीयादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तं जहा—अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू। पुस्सादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा— पुस्सो अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता। सातियादिया[3] णं सत्त णक्खत्ता, पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तं जहा—साती विसाहा अणुराधा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा। अभीईयादिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा– अभिई सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वाभद्दवया उत्तराभद्दवया रेवती।

तत्थ जेते एवमाहंसु– ता भरणीयादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहंसु, तं जहा—भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू पुस्सो। अस्सेसादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा—अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता साती। विसाहादिया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तं

१. जाव अस्सिलेसा (ट,व)।
२. अवरदारिया (ट,व) सर्वत्र।
३. सादीयादीया (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा---विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा अभिई। सवणादिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा--सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवती अस्सिणी--एगे एवमाहंसु।

वयं पुण एवं वदामो ता अभिईयादिया णं सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, तं जहा---अभिई सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वापोट्ठवया उत्तरापोट्ठवया रेवती। अस्सि-णीयादिया णं सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तं जहा---अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी संठाणा अद्दा पुणव्वसू। पुस्सादिया णं सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तं जहा--पुस्सो अस्सेसा महा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता। सातिया-दिया णं सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा---साती विसाहा अणुराहा जेट्ठा मूले पुव्वासाढा उत्तरासाढा॥

बावीसइमं पाहुडपाहुडं

१३२. ता कहं ते णक्खत्तविजए आहितेति वदेज्जा ? ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[1] परिक्खेवेणं। ता जंबुद्दीवे णं दीवे दो चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, दो सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा, छप्पण्णं णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, तं जहा--दो अभीई दो सवणा[2] दो धणिट्ठा दो सतभिसया दो पुव्वापोट्ठवया दो उत्तरापोट्ठवया दो रेवती दो अस्सिणी दो भरणी दो कत्तिया दो रोहिणी दो संठाणा दो अद्दा दो पुणव्वसू दो पुस्सा दो अस्सेसाओ दो महा दो पुव्वाफग्गुणी दो उत्तराफग्गुणी दो हत्था दो चित्ता दो साती दो विसाहा दो अणुराधा दो जेट्ठा दो मूला दो पुव्वासाढा दो उत्तरासाढा॥

१३३. ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं---अत्थि णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्ता-वीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। अत्थि णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति। ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति? 'कयरे णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति? कयरे णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति'[3]? कयरे णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति? ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं दो अभीई। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तं जहा--दो सतभिसया दो भरणी दो अद्दा दो अस्सेसा दो साती दो जेट्ठा। तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं तीसं, तं जहा--दो सवणा दो धणिट्ठा दो पुव्वाभद्दवया दो रेवती दो अस्सिणी दो कत्तिया दो संठाणा दो पुस्सा दो महा दो पुव्वाफग्गुणी दो हत्था दो चित्ता दो अणुराहा दो मूला दो

---

१. सू० १।१४।

२. दो समणा जाव दो उत्तरासाढा (ब)।

३. जाव (ट,ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्वासाढा । तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तं जहा— दो उत्तरापोट्ठवया दो रोहिणी दो पुणव्वसू दो उत्तराफग्गुणी दो विसाहा दो उत्तरासाढा ॥

१३४. ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएणं सद्धिं जोयं जोएंति । अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति । अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति । अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति । ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं तं चेव उच्चारेयव्वं । ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं दो अभीई । तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तं जहा - दो सतभिसया दो भरणी दो अद्दा दो अस्सेसा दो साती दो जेट्ठा । तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं तीसं, तं जहा - दो सवणा जाव दो पुव्वासाढा । तत्थ जेते णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं बारस, तं जहा -दो उत्तरापोट्ठवया जाव दो उत्तरासाढा ॥

१३५. ता कहं ते सीमाविक्खंभे आहितेति वदेज्जा ? ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं— अत्थि णक्खत्ता जेसि णं छ सता तीसा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो । अत्थि णक्खत्ता जेसि णं सहस्सं पंचोत्तरं सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं[1] सीमाविक्खंभो । अत्थि णक्खत्ता जेसि णं दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो । अत्थि णक्खत्ता जेसि णं तिण्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो । ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जेसि णं छ सत्ता तीसा तं चेव उच्चारेतव्वं[2] । कयरे णक्खत्ता जेसि णं तिण्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ? ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं तत्थ जेते णक्खत्ता जेसि णं छ सता तीसा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं दो अभीई । तत्थ जेते णक्खत्ता जेसि णं सहस्सं पंचुत्तरं सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं बारस, तं जहा -दो सतभिसया जाव[3] दो जेट्ठा । तत्थ जेते णक्खत्ता जेसि णं दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं तीसं, तं जहा— दो सवणा जाव[4] दो पुव्वासाढा । तत्थ जेते णक्खत्ता जेसि णं तिण्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं बारस, तं जहा दो उत्तरापोट्ठवया जाव[5] दो उत्तरासाढा ॥

---

१. सत्तसट्ठिभागा° (ट) ।
२. उच्चारेतव्वं जाव (ट) ।
३. सू० १०।१३३ ।
४. सू० १०।१३३ ।
५. सू० १०।१३३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३६. ता एतेसि णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं—किं सया[1] पातो[2] चंदेण सद्धिं जोयं जोएति[3] ? किं सया सायं[4] चंदेण सद्धिं जोयं जोएति ? किं सया दुहओ पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चंदेण सद्धिं जोयं जोएति ? ता एतेसि णं छप्पण्णाए 'णक्खत्ताणं किमपि तं जं'[5] सया पातो चंदेण सद्धिं जोयं जोएति। णो सया सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति। णो सया दुहओ पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चंदेण सद्धिं जोयं जोएति। 'णण्णत्थ दोहिं अभीईहिं'[6]। 'ता एतेणं'[7] दो अभीई 'पायंचिय-पायंचिय'[8] 'चोत्तालीसं-चोत्तालीसं'[9] अमावासं[10] जोएंति, णो चेव णं पुण्णिमासिणिं ॥

१३७. तत्थ खलु इमाओ बावट्ठिं पुण्णिमासिणीओ बावट्ठिं अमावासाओ[11] पण्णत्ताओ ॥

१३८. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ[12] पुण्णि-मासिणिट्ठाणाओ[13] मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएति ॥

१३९. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि चंदे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ[14] पुण्णिमासिणि-ट्ठाणाओ[15] मंडलं चउवीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ॥

१४०. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि चंदे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमासिणि-ट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ॥

१४१. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि चंदे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दोण्णि अट्ठासीए भागसए उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे

---

१. सता (क,ग,घ)।
२. पादो (ग,घ,व)।
३. जोएंति (क)।
४. साग (ग,घ)।
५. णक्खत्ता णो (क,ग,घ,ट,व)।
६. ण णत्थि रातिंदियाणं वुड्ढोवुड्ढीए मुहुत्ताणं च चयोवचयेणं णण्णत्थ वा दोहिं अभिया (ट)।
७. 'ता एतेसि ण' मित्यादि ता इति तत्र—तेषां षट्पञ्चाशतो नक्षत्राणां मध्ये एते (सूवृ, चंवृ)।
८. पायं पायं (क), आअं चित्ता आअं चित्ता (व)।
९. चोतालीसतिमं चोतालीसतिमं (व)।
१०. अमावसं (क,ट); अवामंसं (ग,घ,व)।
११. अमावसाओ (क,ट); अवामंसातो (ग,घ,व)।
१२. ता एते णं (क); ता तेणं (ग,घ); ताढो (व)।
१३. °ट्ठाणाते (ग,घ)।
१४. ता तेणं (क); ता एते णं (ट); ता एते (व) प्रायः सर्वत्र।
१५. °ट्ठाणाते (क,ग,घ) सर्वत्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुवालसमं पुण्णिमासिणिं जोएति। एवं खलु एतेणुवाएणं ताओ-ताओ पुण्णिमासिणि-ट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं-दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता तंसि-तंसि देसंसि तं-तं पुण्णिमासिणिं चंदे जोएति ॥

१४२. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दाहिणिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि सत्तावीसं भागे[1] उवाइणावेत्ता अट्ठावीसइभागे वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहिं पच्चत्थिमिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते, एत्थ णं से चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णि-मासिणिं जोएति ॥

१४३. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमा-सिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणवतिं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएति ॥

१४४. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं[2] सूरे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि सूरे पढमं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमासिणि-ट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दो चउणवतिं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ॥

१४५. ता[3] एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि सूरे दोच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमासिणि-ट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउतिं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ॥

१४६. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि सूरे तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमासिणि-ट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता अट्ठछत्ताले भागसए उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे दुवालसमं पुण्णिमासिणिं जोएति। एवं खलु एतेणुवाएणं ताओ-ताओ पुण्णिमासिणि-ट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउतिं-चउणउतिं भागे उवाइणावेत्ता तंसि-तंसि देसंसि तं-तं पुण्णिमासिणिं सूरे जोएति ॥

१४७. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता पुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणावेत्ता अट्ठावीसइभागे[4] वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता[5] तिहिं भागेहिं

१. चउभागे (क,ग,घ,ट,व); असौ पाठः 'सप्तविंशतिभागानुपादाय' इति वृत्त्यनुसारेण स्वीकृतः।

२. पुणपुच्छा (ट) सर्वत्र।

३. अस्य सूत्रस्य स्थाने 'ट,व' प्रत्योः पाठसंक्षेपो विद्यते एवं तच्चपि णवरं दोच्चाती।

४. अट्ठावीसइमं भागं (ग,घ,ट,व)।

५. उवादिणावेत्ता (क,ग,घ); उवातिणावेत्ता (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोहि य कलाहिं दाहिणिल्लं चउभागमंडलं असंपत्ते, एत्थ णं से सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति ।

१४८. ता[1] एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं[2] चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमबावट्ठिं अमावासं जोएति ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से चंदे पढमं अमावासं जोएति । एवं जेणेव अभिलावेणं चंदस्स पुण्णिमासिणीओ भणिताओ तेणेव[3] अभिलावेणं अमावासाओवि भणितव्वाओ, तं जहा[4]- बिइया तइया दुवालसमी । एवं खलु एतेणुवाएणं ताओ-ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं-दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता तंसि-तंसि देसंसि तं-तं अमावासं चंदे जोएति ।।

१४९. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ-ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता सोलसभागे ओसक्कइत्ता[5], एत्थ णं से चंदे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति ।।

१५०. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं सूरे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउतिं भागे उवाइणावेत्ता, एत्थ णं से सूरे पढमं अमावासं जोएति । एवं जेणेव अभिलावेणं सूरस्स पुण्णिमासिणीओ भणियाओ तेणेव अभिलावेण अमावासाओवि भणितव्वाओ, तं जहा--बिइया[6] तइया दुवालसमी । एवं खलु एतेणुवाएणं ताओ अमावासट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता चउणउतिं-चउणउतिं भागे उवाइणावेत्ता तंसि-तंसि देसंसि तं-तं अमावासं सूरे जोएति ।।

१५१. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं पुच्छा । ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं जोएति ताओ पुण्णिमासिणिट्ठाणाओ मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता सत्तालीसं भागे ओसक्कइत्ता, एत्थ णं से सूरे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति ।।

१५२. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता धणिट्ठाहिं, धणिट्ठाणं तिण्णि मुहुत्ता एगूणवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा । तं समयं च णं सूरे केणं

---

१. 'ट' प्रतौ अत्र एव संक्षिप्तपाठो विद्यते—एवं जेणेव अभिलावेणं चंदस्स पुण्णमासिणीया भणिया तेणं चेव अभिलावेणं अमावसातोवि भाणियव्वाओ तं पढमा बितिया दुवालसमा । चंद्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि संक्षिप्तपाठो व्याख्यातोऽस्ति —चन्द्रविषयमतिदेशमाह—एवमित्यादि एवं येनाभिलापेन चन्द्रस्य पौर्णमास्य उक्तास्तेनैवाभिलापेनामावस्या अपि वक्तव्यास्तद्यथा—प्रथमा द्वितीया द्वादशी ।

२. अमावसं (क); अवामसं (ग,घ,व) प्रायः सर्वत्र ।

३. तेणं चेव (व) ।

४. तं जहा—पढमा (क,व); अनयोरादर्शयोः प्रथमं सूत्रं पूर्वं लिखितमस्ति, ते न 'पढमा' इति पदं अतिरिक्तं विद्यते ।

५. ओसक्कावइत्ता (क,ग,घ) ।

६. बिदिया (?,ग,घ); बितिया (ट,व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुव्वाफग्गुणीहिं, पुव्वाफग्गुणीणं अट्ठावीसं मुहुत्ता अट्ठत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुबत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ।।

१५३. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?ता उत्तराहिं पोट्ठवयाहिं, उत्तराणं पोट्ठवयाणं सत्तावीसं मुहुत्ता चोद्दस य बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं सत्त मुहुत्ता तेत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता एक्कतीसं चुण्णिया भागा सेसा ।।

१५४. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता अस्सिणीहिं, अस्सिणीणं एक्कवीसं मुहुत्ता णव य एगट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेवट्ठि चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता चित्ताहिं, चित्ताणं एक्को मुहुत्तो अट्ठावीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तीसं चुण्णिया भागा सेसा ।।

१५५. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं छव्वीसं[1] मुहुत्ता छव्वीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउप्पण्णं चुण्णियाभागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ठ[2] य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा ।।

१५६. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुण्णिमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरमसमए। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुस्सेणं, पुस्सस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेयालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ।।

१५७. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता अस्सेसाहिं, अस्सेसाणं एक्के मुहुत्ते चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता अस्सेसाहिं[3] चेव, अस्सेसाणं[4] एक्को मुहुत्तो चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठि चुण्णिया भागा सेसा ।।

१५८. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं चत्तालीसं मुहुत्ता पणतीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च

१. छदुवीसं (ग,घ)।
२. अट्ठा (व)।
३. असिलेसाहिं (ट)।
४. असिलेसाणं (ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं चेव फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं जहेव[1] चंदस्स ॥

१५९. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता हत्थेणं, हत्थस्स चत्तारि मुहुत्ता तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता हत्थेणं चेव, हत्थस्स जहा[2] चंदस्स ॥

१६०. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेण जोएति ? ता अद्दाहिं, अद्दाणं चत्तारि मुहुत्ता दस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउप्पण्णं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता अद्दाहिं चेव, अद्दाणं जहा[3] चंदस्स ॥

१६१. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स बावीसं मुहुत्ता बायालीसं च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा चेव, पुणव्वसुस्स णं जहा[4] चंदस्स ॥

१६२. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमाइं अट्ठ एगूणवीसाइं मुहुत्तसयाइं चउव्वीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिं चुण्णिया भागे उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे अण्णेणं सरिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति अण्णंसि देसंसि ॥

१६३. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमाइं सोलस अट्ठतीसे मुहुत्तसयाइं अउणापण्णं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठिं चुण्णिया भागे उवाइणावेत्ता पुणर वि से चंदे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति अण्णंसि देसंसि ॥

१६४. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमाइं 'चउप्पण्णं मुहुत्तासहस्साइं'[5] णव य मुहुत्तसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ॥

१६५. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमं एगं मुहुत्तासयसहस्सं अट्ठाणउतिं च मुहुत्तसताइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से चंदे तेणं चेव णक्खत्तेणं

---

१. यथा चंद्रस्य विषये उक्तं तथैवात्रापि विषये वक्तव्यं तद्यथा—चत्तालीसं मुहुत्ता पणतीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ते पण्णट्ठि चुण्णिया भागा सेसा (सूवृ)।

२. स चैवम्—हत्थस्स चत्तारि मुहुत्ता तीसं चेव बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छित्ता बावट्ठी चुण्णिया भागा सेसा (सूवृ)।

३. सचैवम्—अद्दाए चत्तारि मुहुत्ता दस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता चउपण्णं चुण्णिया भागा सेसा (सूवृ)।

४. स चैवम्—'पुणव्वसुस्स बावीसं मुहुत्ता छायालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स सेसा (सूवृ)।

५. चउप्पण्णमुहुत्तसहस्साइं (क,ग,घ,ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोयं जोएंति तंसि देसंसि ॥

१६६. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमाइं तिण्णि छावट्ठाइं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे[1] अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ॥

१६७. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति तंसि देसंसि, से णं इमाइं सत्तदुवतीसं[2] राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ॥

१६८. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमाइं अट्ठारस वीसाइं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से[3] सूरे अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ॥

१६९. ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति जंसि देसंसि, से णं इमाइं छत्तीसं सट्ठाइं राइंदियसयाइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ॥

१७०. ता जया[4] णं इमे चंदे गतिसमावण्णए भवइ तया[5] णं इयरेवि चंदे गतिसमावण्णए भवइ, जया णं इयरे चंदे गतिसमावण्णए भवइ तया णं इमेवि चंदे गतिसमावण्णए भवइ ॥

१७१. ता जया णं इमे सूरिए गतिसमावण्णे भवइ तया णं इयरेवि सूरिए गतिसमावण्णे भवइ, जया णं इयरे सूरिए गतिसमावण्णे भवइ तया णं इमेवि सूरिए गतिसमावण्णे भवइ। एवं गहेवि णक्खत्तेवि ॥

१७२. ता जया णं इमे चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ तया णं इयरेवि चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ, जया णं इयरे चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ तया णं इमेवि चंदे जुत्ते जोगेणं भवइ। 'एवं सूरेवि गहेवि णक्खत्तेवि'[6] ॥

१७३. सयावि[7] णं चंदा जुत्ता जोगेहिं सयावि णं सूरा जुत्ता जोगेहिं, सयावि णं गहा जुत्ता जोगेहिं, सयावि णं णक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं। दुहतोवि णं चंदा जुत्ता जोगेहिं, दुहतोवि णं सूरा जुत्ता जोगेहिं, दुहतोवि णं गहा जुत्ता जोगेहिं, दुहतोवि णं णक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं। मंडलं सयसहस्सेणं अट्ठाणउयाए सएहिं छेत्ता। इच्चेस णक्खत्ते खेत्तापरिभागे णक्खत्ताविजए पाहुडे[8] आहितेत्ति बेमि ॥

१. सूरिए (क,ग,घ,ट)।

२. सत्तदुबत्तीसं (क); सत्तदुवत्तीसं (ग,घ); सत्तदूवत्तीसं (ट); सत्तदुपतीसा (व)।

३. × (ग,घ)।

४. जता (ग,घ)।

५. तता (ग,घ)।

६. जहा चंदे एवं सूरेवि गहे णक्खत्ते भाणितव्वे (व)।

७. सतावि (क,ग,घ,व); सदावि (ट)।

८. पाहुडेति (ग,घ,ट)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कारसमं पाहुडं

१. ता कहं ते संवच्छराणादी[1] आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तं जहा—चंदे चंदे अभिवड्ढिते चंदे अभिवड्ढिते ॥

२. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए ॥

ता से णं किं पज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आदी से णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ॥

तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं छदुवीसं मुहुत्ता छदुवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउप्पण्णं चुण्णिया भागा सेसा ।

तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ठ य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा ॥

३. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए ॥

ता से णं किं पज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स आदी, से णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए ।

तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुव्वाहिं आसाढाहिं, पुव्वाणं आसाढाणं सत्त मुहुत्ता तेवण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता इगतालीसं चुण्णिया भागा सेसा ।

तं समयं च णं सूरे केणं[2] णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स णं बायालीसं मुहुत्ता पणतीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्त चुण्णिया भागा सेसा ॥

४. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स के आदी आहि-

१. संवच्छराणाई (क); संवच्छराणाती (व)। २. के पुच्छा (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेति वदेज्जा ? ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं तच्चस्स अभिवड्ढित-संवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए।
ता से णं किं पज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, से णं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए।
तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं तेरस मुहुत्ता तेरस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्तावीसं चुण्णिया भागा सेसा।
तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स दो मुहुत्ता छप्पण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठी चुण्णिया भागा सेसा॥

५. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं चउत्थस्स चंद-संवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए।
ता से णं किं पज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं चरिमस्स[1] अभिवड्ढितसंवच्छरस्स आदी, से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए।
तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं ऊतालीसं मुहुत्ता चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउ-दस[2] चुण्णिया भागा सेसा।
तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स अउणतीसं मुहुत्ता एक्कवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सीतालीसं चुण्णिया भागा सेसा॥

६. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स के आदी आहि-तेति वदेज्जा ? ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे, से णं पंचमस्स अभिवड्ढित-संवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए।
ता से णं किं पज्जवसिते आहितेति वदेज्जा ? ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स आदी, से णं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए।
तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए।
तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुस्सेणं, पुस्सस्स णं एक्कवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा॥

१. पंचमस्स (ट)। २. सीयालीसं (ट); सीतालसं (व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारसमं पाहुडं

१. ता कति णं संवच्छरा आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तं जहा णक्खत्ते चंदे उडू आदिच्चे अभिवड्ढिते ॥

२. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स णक्खत्तसंवच्छरस्स णक्खत्तमासे तीसइमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं मिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वएज्जा ? ता सत्तावीसं राइंदियाइं एक्कवीसं च सत्तट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठसए एगूणवीसे मुहुत्ताणं[1] सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा । ता एस[2] णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा णक्खत्ते संवच्छरे ।
ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तिण्णि सत्तावीसे राइंदियसतं एक्कावण्णं च सत्तट्ठिभागे राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता णव मुहुत्तसहस्साइं अट्ठ य बत्तीसे मुहुत्तसए छप्पण्णं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥

३. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स चंदे मासे तीसतिमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता एगूणतीसं राइंदियाइं बत्तीसं बावट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वएज्जा ? ता अट्ठपंचासते मुहुत्ते तेत्तीसं च छावट्ठिभागे मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा । ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा चंदे संवच्छरे ।
ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसते दुवालस य बावट्ठिभागा राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता दस मुहुत्तसहस्साइं छच्च पणवीसे[3] मुहुत्तसते पण्णासं च बावट्ठिभागे मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥

४. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स उडुसंवच्छरस्स उडुमासे तीसतिमुहुत्तेणं

---

१. × (क,ट,व) ।
२. एतेसि (ग,घ,ट,व) ।
३. पणुवीसं (ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तीसं राइंदियाणं राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता णव मुहुत्तसताइं मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा । ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा उडू संवच्छरे ।
ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तिण्णि सट्ठे राइंदियसते राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता दस मुहुत्तसहस्साइं अट्ठ मुहुत्तसताइं मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।।

५. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स आदिच्चसंवच्छरस्स आदिच्चे मासे तीसतिमुहुत्तेणं[1] अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तीसं राइंदियाइं अवड्ढभागं च राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता णव पण्णरस मुहुत्तसए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा । ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा आदिच्चे संवच्छरे ।
ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तिण्णि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता दस मुहुत्तस्स सहस्साइं णव असीते मुहुत्तसते मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।।

६. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स अभिवड्ढिते मासे तीसतिमुहुत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता एक्कतीसं राइंदियाइं एगूणतीसं च मुहुत्ता सत्तरस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता णव एगूणसट्ठे मुहुत्तसते सत्तरस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा । ता एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा अभिवड्ढितसंवच्छरे ।
ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तिण्णि तेसीते राइंदियसते एक्कवीसं च मुहुत्ता अट्ठारस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता एक्कारस मुहुत्तसहस्साइं पंच य एक्कारस मुहुत्तसते अट्ठारस बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।।

७. ता केवतियं ते नोजुगे राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता सत्तरस एक्काणउते राइंदियसते एगूणवीसं च मुहुत्ते सत्तावण्णे बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पणपण्णं चुण्णिया भागा राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।
ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता तेपण्णमुहुत्तसहस्साइं सत्त य अउणापण्णे[2] मुहुत्तसते सत्तावण्णं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता

१. तीसतिमुहुत्ते पुच्छा तहेव (ट,व) ।
२. अगुणपण्णा (ट,व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणपण्णं चुण्णिया भागा मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥

८. ता केवतिए णं ते जुगप्पत्ते राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठतीसं राइंदियाइं दस य मुहुत्ता चत्तारि य बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागा राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।

ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता एक्कारस पण्णासे मुहुत्तसते चत्तारि य बावट्ठिभागे बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागा मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥

९. ता केवतियं जुगे राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठारसतीसे राइंदियसते राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।

ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता चउप्पण्णं मुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसताइं मुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ।

ता से णं केवतिए बावट्ठिभागमुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ? ता चउत्तीसं सयसहस्साइं अट्ठतीसं च बावट्ठिभागमुहुत्तसते बावट्ठिभागमुहुत्तग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥

१०. ता कया[1] णं एते 'आदिच्चचंदा संवच्छरा'[2] समादीया[3] समपज्जवसिया आहितेति वदेज्जा ? ता सट्ठिं एते आदिच्चमासा, बावट्ठिं एते चंदमासा । एस णं अद्धा छक्खुत्तकडा दुवालसभइता तीसं एते आदिच्चसंवच्छरा, एक्कतीसं एते चंदसंवच्छरा । तया णं एते आदिच्चचंदसंवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहिताति वदेज्जा ॥

११. ता कया णं एते आदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहिताति वदेज्जा ? ता सट्ठिं एते आदिच्चा मासा, एगट्ठिं एते उडू मासा, बावट्ठिं एते चंदा मासा, सत्तट्ठिं एते णक्खत्ता मासा । एस णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा दुवालसभइता सट्ठिं एते आदिच्चा संवच्छरा, एगट्ठिं एते उडू संवच्छरा, बावट्ठिं एते चंदा संवच्छरा, सत्तट्ठिं एते णक्खत्ता संवच्छरा । तया णं एते आदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहिताति वदेज्जा ॥

१२. ता कया णं एते अभिवड्ढितआदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहिताति वदेज्जा ? ता सत्तावण्णं[4] मासा सत्त य अहोरत्ता एक्कारस य मुहुत्ता तेवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स एते अभिवड्ढिता मासा, सट्ठिं एते आदिच्चा मासा, एगट्ठिं एते उडू मासा, बावट्ठिं एते चंदमासा, सत्तट्ठिं एते णक्खत्तमासा । एस णं अद्धा छप्पण्णसतक्खुत्तकडा दुवालसभइता सत्त सता चोताला[5] एते णं अभिवड्ढिता संवच्छरा, सत्त सता असीता एते णं आदिच्चा संवच्छरा, सत्त सता तेणउता एते णं उडू संवच्छरा, अट्ठ सता छलुत्तरा एते णं चंदा संवच्छरा, अट्ठ सता एगसत्तरा एते णं णक्खत्ता

१. कता (क,ग,घ,ब) ।

२. आदिच्चचंदसंवच्छरा (क,ग,घ,ट); प्रस्तुत-सूत्रस्य निगमने 'क,ब,घ' प्रतिष्ठापि 'आदिच्चचंदसंवच्छरा' इति पाठो दृश्यते । आदर्शेषु च क्वचित् समस्तपदान्यपि लिखितानि सन्ति, अस्माभिरुभयथापि पाठः स्वीकृतः । वृत्त्योस्तु सर्वत्रापि समस्तपदं व्याख्यातमस्ति ।

३. समातीता (ब) ।

४. सत्तापण्णं (ग,घ) ।

५. चोयाला (ट) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवच्छरा। तया णं एते अभिवड्ढिता आदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा सभादीया समपज्जवसिया आहितातिं वदेज्जा ॥

१३. ता णयट्ठयाए णं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसते दुवालस य बावट्ठिभागे राइंदियस्स आहितेति वदेज्जा। ता अधातच्चेणं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे रायंदियसते पंच य मुहुत्ते पण्णासं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ॥

१४. तत्थ खलु इमे छ उडू पण्णत्ता, तं जहा- -पाउसे वरिसारत्ते सरदे[1] हेमंते वसंते गिम्हे ॥

१५. ता सव्वेवि णं एते चंदउडू दुवे-दुवे मासाति चउप्पण्णेणं-चउप्पण्णेणं आदाणेणं गणिज्जमाणा सातिरेगाइं एगूणसट्ठि-एगूणसट्ठिं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा ॥

१६. तत्थ खलु इमे छ ओमरत्ता पण्णत्ता, तं जहा—ततिए पव्वे सत्तमे पव्वे एक्कारसमे पव्वे पण्णरसमे पव्वे एकूणवीसतिमे पव्वे तेवीसतिमे पव्वे ॥

१७. तत्थ खलु इमे छ अइरत्ता, तं जहा- -चउत्थे पव्वे अट्ठमे पव्वे बारसमे पव्वे सोलसमे पव्वे वीसतिमे पव्वे चउवीसतिमे पव्वे।

गाहा— छच्चेव य अइरत्ता, आदिच्चाओ हवंति माणाहिं ॥
छच्चेव ओमरत्ता, चंदाओ हवंति माणाहिं ॥१॥

१८. तत्थ खलु इमाओ पंच वासिकीओ पंच हेमंतीओ[2] आउट्टीओ पण्णत्ताओ ॥

१९. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता अभीइणा, अभीइस्स पढमसमए। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति[3] ? ता पूसेणं, पूसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ॥

२०. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता संठाणाहिं, संठाणाणं 'एक्कारस मुहुत्ता ऊतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेपण्णं चुण्णिया भागा सेसा'[4]। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पूसेणं, पूसस्स णं तं चेव जं पढमाए ॥

२१. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता विसाहाहिं, विसाहाणं तेरस मुहुत्ता चउप्पण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चत्तालीसं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव ॥

२२. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थिं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता रेवतीहिं, रेवतीणं पणवीसं मुहुत्ता दुबत्तीसं च बावट्ठिभागा सेसा मुहुत्तस्स

---

१. सरते (क,ग,घ)।
२. हेमंताओ (ट)।
३. जोगं जोएति (ट,व)।
४. सो चेव अभिलावो एकारस ऊणलाभे तेपण्णं चेव चुण्णिया (ट); सो चेव अभिलावो एक्कारस ऊताली तेपण्णं चेव चुण्णिता (व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छव्वीसं[1] चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव ॥

२३. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमं वासिकिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पुव्वाहिं फग्गुणीहिं, पुव्वाणं फग्गुणीणं बारस मुहुत्ता सत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेरस चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव ॥

२४. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता हत्थेणं, हत्थस्स णं पंच मुहुत्ता पण्णासं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठि चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ॥

२५. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता सतभिसयाहिं, सतभिसयाणं दुण्णि मुहुत्ता अट्ठावीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छत्तालीसं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ॥

२६. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता पूसेणं, पूसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ॥

२७. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थिं[2] हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता मूलेणं, मूलस्स छ मुहुत्ता अट्ठावण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ॥

२८. ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमिं[3] हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता कत्तियाहिं, कत्तियाणं अट्ठारस मुहुत्ता छत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छ चुण्णिया भागा सेसा। तं समयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ॥

२९. तत्थ खलु इमे दसविधे जोए पण्णत्ते, तं जहा—वसभाणुजाते वेणुयाणुजाते[4] मंचे मंचातिमंचे छत्ते छत्तातिछत्ते जुयणद्धे घणसंमद्दे पीणिते मंडूकप्पुत्ते णामं दसमे ॥

३० ता एतेसि णं पंचण्हं संवच्छराणं छत्तातिच्छत्तं जोयं चंदे कंसि देसंसि जोएति ? ता जंबुद्दीवस्स दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवाइणावेत्ता

१. बत्तीसं (ग,ब); वृत्तौ—'षड्विंशतिश्चूर्णिका भागाः शेषाः' इति व्याख्यातमस्ति।
२. चउत्थं (ट)।
३. पंचमं (ब)।
४. वेणुताणुजाते (ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठावीसतिभागं वीसधा छेत्ता अट्ठारसभागे उवाइणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहिं कलाहिं दाहिणपुरत्थिमिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते, एत्थ णं से चंदे छत्तातिच्छत्तं जोयं जोएति, तं जहा—उप्पिं चंदे, मज्झे णक्खत्ते, हेट्ठा आदिच्चे। तं समयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता चित्ताहिं, चित्ताणं चरिमसमए॥

तेरसमं पाहुडं

१. ता कहं ते चंदमसो[1] वड्ढोवड्ढी आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठ पंचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स, ता दोसिणापक्खाओ अंधकारपक्खमयमाणे[2] चंदे चत्तारि बातालसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जति, तं जहा पढमाए पढमं भागं बितियाए बितियं[3] भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं। चरिमसमए चंदे रत्ते भवति, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवति, इयण्णं[4] अमावासा[5], एत्थ णं पढमे पव्वे अमावासा, ता अंधकारपक्खो, तो णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारे बाताले मुहुत्तेत्तस छतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जति, तं जहा—पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं। चरिमे समए चंदे विरत्ते भवति, अवसेसमए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवति, इयण्णं पुण्णिमासिणी, एत्थ णं दोच्चे पव्वे पुण्णिमासिणी॥

२. तत्थ खलु इमाओ बावट्ठिं पुण्णिमासिणीओ बावट्ठिं अमावासाओ पण्णत्ताओ। बावट्ठिं एते कसिणा रागा, बावट्ठिं एते कसिणा विरागा। एते चउव्वीसे पव्वसते एते चउव्वीसे कसिणरागविरागसते, जावतिया णं पंचण्हं संवच्छराणं समया एगेणं चउव्वीसेणं समयसतेणूणका एवतिया परित्ता असंखेज्जा देसरागविरागसता भवंतीति मक्खाता॥

३. ता अमावासाओ णं पुण्णिमासिणी चत्तारि बाताले मुहुत्तसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा। ता पुण्णिमासिणीओ णं अमावासा चत्तारि बाताले मुहुत्तसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा। ता अमावासाओ णं अमावासा अट्ठपंचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा। ता पुण्णिमासिणीओ णं पुण्णिमासिणी अट्ठपंचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा। एस णं एवतिए चंदे मासे, एस णं एवतिए सगले जुगे॥

४. ता चंदेणं अद्धमासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता चोद्दस चउब्भागमंडलाइं चरति, एगं च चउव्वीससयभागं मंडलस्स॥

१. चंदिमसा (क); चंदेमसो (ट,व)।
२. °पक्खं अयमीणे (क,ग,घ,व)।
३. बिदियाए बिदियं (क,ग,घ)।
४. अयण्णं (ग,घ,ट)।
५. अमावसा (क); अवामंसा (ग,घ); अवामंसं (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. ता आदिच्चेणं अद्धमासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति? ता सोलस मंडलाइं चरति, सोलसमंडलचारी तदा अवराइं खलु दुवे अट्ठकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति ।।

६. कतराइं खलु ताइं दुवे अट्ठकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति ? ता इमाइं खलु ते बे अट्ठकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति, तं जहा णिक्खममाणे चेव अमावासंतेणं, पविसमाणे चेव पुण्णिमासितेणं । एताइं खलु दुवे अट्ठकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति ।।

७. ता पढमायणगते चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे चारं चरति ।।

८. कतराइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे चारं चरति ? इमाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे चारं चरति, तं जहा—बितिए[1] अद्धमंडले चउत्थे अद्धमंडले छट्ठे अद्धमंडले अट्ठमे अद्धमंडले दसमे अद्धमंडले बारसमे अद्धमंडले चउदसमे अद्धमंडले । एताइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे चारं चरति ।।

९. ता पढमायणगते चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे चारं चरति ।।

१०. कतराइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे चारं चरति ? इमाइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे चारं चरति, तं जहा—ततिए अद्धमंडले पंचमे अद्धमंडले सत्तमे अद्धमंडले णवमे अद्धमंडले एक्कारसमे अद्धमंडले तेरसमे अद्धमंडले पण्णरसमस्स[2] अद्धमंडलस्स तेरस सत्तट्ठिभागाइं । एताइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे चारं चरति । एतावता च[3] पढमे चंदायणे समत्ते भवति ।।

११. ता णक्खत्ते अद्धमासे नो चंदे अद्धमासे, चंदे अद्धमासे नो णक्खत्ते अद्धमासे । ता णक्खत्ताओ अद्धमासाओ ते चंदे चंदेणं अद्धमासेणं किमधियं[4] चरति ? ता एगं अद्धमंडलं चरति चत्तारि य सट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स सत्तट्ठिभागं एगतीसाए छेत्ता णव भागाइं ।।

१२. ता दोच्चायणगते चंदे पुरत्थिमाते भागाते णिक्खममाणे सत्त चउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति, सत्त तेरसकाइं जाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरति । ता दोच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाते भागाते णिक्खममाणे छ चउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति, छ तेरसकाइं जाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरति, अवरकाइं खलु दुवे तेरसकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति ।।

---

१. बिदिए (क,ग,घ) ।
२. पण्णरसस्स (क); पण्णरसमे (ग,घ) ।
३. × (क,ग,ट) ।
४. किमहियं (ट,व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. कतराइं खलु ताइं दुवे तेरसकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति। इमाइं खलु ताइं दुवे तेरसकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति, तं जहा—सव्वब्भंतरे चेव मंडले सव्वबाहिरे चेव मंडले। एताणि खलु ताणि दुवे तेरसकाइं जाइं चंदे केणइ 'असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता'[१] चारं चरति। एतावता च दोच्चे चंदायणे समत्ते भवति॥

१४. ता णक्खत्ते मासे णो चंदे मासे, चंदे मासे णो णक्खत्ते मासे। ता णक्खत्ताओ मासाओ चंदे चंदेणं मासेणं किमधियं चरति? ता दो अद्धमंडलाइं चरति अट्ठ य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइं। ता तच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाते भागाते पविसमाणे बाहिराणंतरस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स ईतालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति। एतावता व बाहिराणंतरे पच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवति॥

१५. ता तच्चायणगते चंदे पुरत्थिमाते भागाते पविसमाणे बाहिरतच्चस्स पुरत्थि-मिल्लस्स अद्धमंडलस्स ईतालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति, तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति। एतावता च बाहिरतच्चे पुरत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवति॥

१६. ता तच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाते भागाते पविसमाणे बाहिरचउत्थस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स अट्ठ सत्तट्ठिभागाइं सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति। एतावता च बाहिरचउत्थे पच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवति॥

१७. एवं खलु चंदेणं मासेणं चंदे तेरस चउप्पण्णगाइं दुवे तेरसकाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णं पडिचरति, तेरस तेरसकाइं जाइं चंदे अप्पणो चिण्णं पडिचरति, दुवे ईतालीसकाइं 'दुवे तेरसकाइं'[२] अट्ठ सत्तट्ठिभागाइं सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारसभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णं पडिचरति। 'अवराइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णगाइं सयमेव पविट्ठित्ता-पविट्ठित्ता चारं चरति'[३] इच्चेसा चंदमसोऽभिगमण-णिक्खमण-वुड्ढि-णिवुड्ढि-अणवट्ठितसंठाणसंठिती विउव्वणगिड्ढिपत्ते रूवी चंदे देवे आहितेति वदेज्जा॥

---

१. जाव (क,ग,घ)।

२. × (ग,घ,ट,व)।

३. चिन्हाङ्कितः पाठो वृत्त्योर्व्याख्यातो नास्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउद्दसमं पाहुडं

१. ता कया[1] ते दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा? ता दोसिणापक्खे णं दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा॥

२. ता कहं[2] ते दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा? ता अंधकारपक्खातो णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितातिं वदेज्जा॥

३. ता कहं ते अंधकारपक्खातो दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा? ता अंधकारपक्खाओ णं दोसिणापक्खं अयमाणे[3] चंदे चत्तारि बाताले मुहुत्तसए छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जति, तं जहा— पढमाए पढमं भागं, 'बितियाए बितियं'[4] भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं। एवं खलु अंधकारपक्खातो दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा॥

४. ता केवतिया णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा? ता परित्ता असंखेज्जा भागा॥

५. ता कया[5] ते अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा? ता अंधकारपक्खे णं अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा॥

६. ता कहं ते अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा? ता दोसिणापक्खातो णं अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा॥

७. ता कहं ते दोसिणापक्खातो अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा? ता दोसिणापक्खातो णं अंधकारपक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बाताले मुहुत्तसते छायालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जति, तं जहा—पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं। एवं खलु दोसिणापक्खातो अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा॥

८. ता केवतिए णं अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहितेति वदेज्जा? ता परित्ता असंखेज्जा भागा॥

---

१. कता (क,ग,घ,ट,व)।
२. कधं (क,ग,घ)।
३. अयमीणे (क,ग,घ,व)।
४. बिदियाए बिदियं (क,ग,घ)।
५. कता (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णरसमं पाहुडं

१. ता कहं ते सिग्घगती वत्थू आहितेति वदेज्जा ? ता एतेसि णं चंदिम-सूरिय-गह-[1] णक्खत्त-तारारूवाणं चंदेहिंतो सूरा सिग्घगती, सूरेहिंतो गहा सिग्घगती, गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगती, णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगती। सव्वप्पगती चंदा, सव्वसिग्घगती तारा ॥

२. ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं चंदे केवतियाइं भागसताइं गच्छति ? ता जं-जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तस्स-तस्स मंडलपरिक्खेवस्स सत्तरस 'अडसट्ठि भागसते'[2] गच्छति, मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीए सतेहिं छेत्ता ॥

३. ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं सूरिए केवतियाइं भागसताइं गच्छति ? ता जं-जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तस्स-तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस तीसे भागसते गच्छति, मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीए सतेहिं छेत्ता ॥

४. ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं णक्खत्ते केवतियाइं भागसताइं गच्छति ? ता जं-जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तस्स-तस्स मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसे भागसते गच्छति, मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीए सतेहिं छेत्ता ॥

५. ता जया[3] णं चंदं गतिसमावण्णं सूरे गतिसमावण्णे भवति, से णं गतिमाताए केव-तियं विसेसेति ? ता बावट्ठिभागे विसेसेति ॥

६. ता जया णं चंदं गतिसमावण्णं णक्खत्ते गतिसमावण्णे भवति, से णं गतिमाताए केवतियं विसेसेति ? ता सत्तट्ठिभागे विसेसेति ॥

७. ता जया णं सूरं गतिसमावण्णं णक्खत्ते गतिसमावण्णे भवति, से णं गतिमाताए केवतियं विसेसेति ? ता पंच भागे विसेसेति ॥

८. ता जया णं चंदं गतिसमावण्णं अभीई[4] णक्खत्ते गतिसमावण्णे पुरत्थिमाते भागाते समासादेति, समासादेत्ता णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता विजहति विप्पजहति विगतजोई यावि भवति ॥

---

१. गहगण (ट)।

२. अट्ठट्ठे भागसते (क,ग,घ); अट्ठभागसयाति (ट,व)।

३. जता (क,ग,घ,व)।

४. अभीयी (क,ग,घ); अभिति (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. ता जया णं चंदं गतिसमावण्णं सवणे[1] णक्खत्ते गतिसमावण्णे पुरित्थमाते भागाते समासादेति, समासादेत्ता तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता विजहति विप्पजहति विगतजोई यावि भवति। एवं एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं—पण्णरसमुहुत्ताइं, तीसइमुहुत्ताइं, पणयालीसमुहुत्ताइं भणितव्वाइं जाव उत्तरासाढा ॥

१०. ता जया णं चंदं गतिसमावण्णं गहे गतिसमावण्णे पुरत्थिमाते भागाते समासादेति, समासादेत्ता चंदेणं सद्धिं अधाजोगं जुंजति, जुंजित्ता अधाजोगं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता विजहति विप्पजहति विगतजोई यावि भवति ॥

११. ता जया णं सूरं गसिसमावण्णं अभीई णक्खत्ते गतिसमावण्णे पुरित्थिमात्ते भागाते समासादेति, समासादेत्ता चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति,अणुपरियट्टित्ता विजहति विप्पजहति विगतजोई यावि भवति। एवं छ अहोरत्ता एक्कवीसं मुहुत्ता य, तेरस अहोरत्ता बारस मुहुत्ता य, वीसं अहोरत्ता तिण्णि मुहुत्ता य सव्वे भाणितव्वा जाव--

१२. जया णं सूरं गतिसमावण्णं उत्तरासाढा णक्खत्ते गतिसमावण्णे पुरत्थिमाते भागाते समासादेति, समासादेत्ता वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएति, जोएत्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता विजहति विप्पजहति विगतजोई यावि भवति ॥

१३. ता जया णं सूरं गतिसमावण्णं गहे गतिसमावण्णे पुरत्थिमाते भागाते समासादेति, समासादेत्ता सूरेण सद्धिं अधाजोयं जुंजति, जुंजित्ता जोयं अणुपरियट्टति, अणुपरियट्टित्ता[2] •विजहति विप्पजहति° विगतजोई यावि भवति ॥

१४. ता णक्खत्तेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति? ता तेरस मंडलाइं चरति तेरस य सत्तट्ठिभागे मंडलस्स ॥

१५. ता णक्खत्तेणं मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति? ता तेरस मंडलाइं चरति चोत्तालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स ॥

१६. ता णक्खत्तेणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति? ता तेरस मंडलाइं चरति अद्धसीतालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स ॥

१७. ता चंदेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति? ता चोद्दस सचउभागाइं मंडलाइं चरति एगं च चउव्वीससतभागं मंडलस्स ॥

१८. ता चंदेणं मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति? ता पण्णरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरति एगं च चउवीससतभागं मंडलस्स ॥

१९. ता चंदेणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति? ता पण्णरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरति छच्च चउवीससतभागे मंडलस्स ॥

२०. ता 'उडुणा मासेणं'[3] चंदे कति मंडलाइं चरति? ता चोद्दस मंडलाइं चरति

---

१. समणे (ट,व)।

२. सं० पा०—अणुपरियट्टित्ता जाव विगतजोई।

३. उडुमासेणं (क,सूवृ,चंवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीसं च एगट्ठिभागं मंडलस्स ।।

२१. ता उडुणा मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ? ता पण्णरस मंडलाइं चरति ।।

२२. ता उडुणा मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ? ता पण्णरस मंडलाइं चरति पंच य बावीससतभागे मंडलस्स ।।

२३. ता आदिच्चेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता चोद्दस मंडलाइं चरति एक्कारस य पण्णरसभागे मंडलस्स ।।

२४. ता आदिच्चेणं मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ? ता पण्णरस चउभागाहियाइं मंडलाइं चरति ।।

२५. ता आदिच्चेणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ? ता पण्णरस चउभागाहियाइं मंडलाइं चरति 'पंचतीसं च'[1] वीससतभागे मंडलस्स चरति ।।

२६. ता अभिवड्ढितेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता पण्णरस मंडलाइं चरति तेसीति य छलसीयसतभागे मंडलस्स ।।

२७. ता अभिवड्ढितेणं मासेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ? ता सोलस मंडलाइं चरति तिहिं भागेहिं ऊणगाइं दोहिं अडयालेहिं सतेहि मंडलं छेत्ता ।।

२८. ता अभिवड्ढितेणं मासेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ? ता सोलस मंडलाइं चरति सीतालीसएहिं भागेहिं आहियाइं चोद्दसहिं अट्ठासीएहिं सतेहिं मंडलं छेत्ता ।।

२९. ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता एगं अद्धमंडलं चरति एक्कतीसाए भागेहिं ऊणं णवहिं पण्णरसेहिं सतेहिं अद्धमंडलं छेत्ता ।।

३०. ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ? ता एगं अद्धमंडलं चरति ।।

३१. ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ? ता एगं अद्धमंडलं चरति दोहिं भागेहिं अहियं[2] सत्तहिं दुवत्तीसेहिं सतेहिं अद्धमंडलं छेत्ता ।।

३२. ता एगमेगं मंडलं चंदे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरति ? ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति एक्कतीसाए भागेहिं अहिएहिं चउहिं बातालेहिं सतेहिं राइंदियं छेत्ता ।।

३३. ता एगमेगं मंडलं सूरे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरति ? ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति ।।

३४. ता एगमेगं मंडलं णक्खत्ते कतिहिं अहोरत्तेहिं चरति ? ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति दोहिं भागेहिं ऊणेहिं तिहिं सत्तसट्ठेहिं[3] सतेहिं राइंदियं छेत्ता ।।

३५. ता जुगेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ? ता अट्ठ चुलसीते मंडलसते चरति ।।

३६. ता जुगेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ? ता णव पण्णरसमंडलसते चरति ।।

३७. ता जुगेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ? ता अट्ठारस पणतीसे दुभागमंडलसते चरति । इच्चेसा मुहुत्तगती रिक्खातिमास[4]-राइंदिय-जुग-मंडलपविभत्ती सिग्घगती वत्थू आहितेति बेमि[5] ।।

---

१. पंच य (क,ट,ब) ।

२. अधियं (क,ग,घ); अहितं (ट) ।

३. सत्तट्ठेहिं (क,ग,घ); सतट्ठे (ट); सत्तट्ठे (ब) ।

४. रिक्खेगणमास (ट,ब) ।

५. वदेज्जा (ट,ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोलसमं पाहुडं

१. ता कहं ते दोसिणालक्खणे आहितेति वदेज्जा ? ता 'चंदलेस्सा 'इ य'[1] दोसिणा इ य ॥

२. दोसिणा इ य चंदलेस्सा इ य'[2] के अट्ठे किं लक्खणे ? ता एगट्ठे एगलक्खणे ॥

३. ता[3] सूरलेस्सा इ य आतवे इ य ॥

४. आतवे इ य सूरलेस्सा इ य के अट्ठे किं लक्खणे ? ता एगट्ठे एगलक्खणे ॥

५. ता[4] अंधकारे इ य छाया इ य ॥

६. छाया इ य अंधकारे इ य के अट्ठे किं लक्खणे ? ता एगट्ठे एगलक्खणे ॥

---

१. दीय (ग,घ)।

२. दोसिणा ति या चंदलेस्सा ति आ चंदलेस्सा ति आ दोसिणा ति आ (ट,व)।

३,४. 'एतेषु पदेषु विषये प्रश्ननिर्वचनसूत्राणि भावनीयानि' इति द्वयोरपि वृत्त्योर्व्याख्यातमस्ति। तेन सूरलेश्या अन्धकारसम्बन्धिसङ्क्षिप्तसूत्रद्वयस्य पूर्णपाठ एवं सम्भाव्यते— ता कहं ते आतवलक्खणे आहितेति वदेज्जा ? ता सूरलेस्सा इ य आतवे इ य। ता कहं ते छायालक्खणे आहितेति वदेज्जा ? ता अंधकारे इ य छाया इ य।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तरसमं पाहुडं

१. ता कहं ते चयणोववाता[1] आहिताति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थ एगे एवमाहंसु—ता अणुसमयमेव चंदिमसूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति[2]—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुमुहुत्तमेव चंदिमसूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति २ एवं जहेव हेट्ठा तहेव जाव[3] ता एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुओसप्पिणिउस्सप्पिणिमेव चंदिमसूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति एगे एवमाहंसु २५

वयं पुण एवं वदामो—ता चंदिमसूरिया णं देवा महिड्ढिया महाजुतीया महाबला महाजसा 'महाणुभावा महासोक्खा'[4] वरवत्थधरा वरमल्लधरा वरगंधधरा वराभरणधरा अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए काले अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति आहिताति वदेज्जा ॥

---

१. °वाते (क,ग,घ,ट,व); सूत्रे च द्वित्वेपि बहुवचनं प्राकृतत्वात् (सूवृ)।

२. उववज्जंति आहिताति वदेज्जा (ट,व,सूवृ, चंवृ) सर्वत्र।

३. सू० ६।१। 'एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुराइंदियमेव चंदिमसूरिया अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति आहिताति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता एव अणुपक्खमेव चंदिमसूरिया अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति आहियत्ति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुमासमेव चंदिमसूरिया अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति आहियत्ति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता अणुउउमेव चंदिमसूरिया अन्ने चयंति अन्ने उववज्जंति आहियत्ति वएज्जा—एगे एवमाहंसु ६ एवं ता अणुअयणमेव ७ ता अणुसंवच्छरमेव ८ ता अणुजुगमेव ९ ता अणुवाससयमेव १० ता अणुवाससहस्समेव ११ ता अणुवाससयसहस्समेव १२ ता अणुपुव्वमेव १३ ता अणुपुव्वसयमेव १४ ता अणुपुव्वसहस्समेव १५ ता अणुपुव्वसयसहस्समेव १६ ता अणुपलिओवममेव १७ ता अणुपलिओवमसयमेव १८ ता अणुपलिओवमसहस्समेव १९ ता अणुपलिओवमसयसहस्समेव २० ता अणुसागरोवममेव २१ ता अणुसागरोवमसयमेव २२ ता अणुसागरोवमसहस्समेव २३ ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव २४' (सूवृ)।

४. महासोक्खा महाणुभावा (ग,घ); महाणुभागा महासक्खा (व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठारसमं पाहुडं

१. ता कहं ते उच्चत्ते आहितेति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमाओ पणवीसं[1] पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता एगं जोयणसहस्सं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, दिवड्ढं चंदे—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता दो जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं चंदे—एगे एवमाहंसु २ एगे[2] पुण एवमाहंसु—ता तिण्णि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धुट्ठाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धपंचमाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता पंच जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धछट्ठाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता छ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धसत्तमाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु—ता सत्त जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धट्ठमाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु—ता अट्ठ जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धणवमाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ८ एगे पुण एवमाहंसु—ता णव जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धदसमाइं चंदे—एगे एवमाहंसु ९ एगे पुण एवमाहंसु—ता दस जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धएक्कारस चंदे—एगे एवमाहंसु १० एगे पुण एवमाहंसु—ता एक्कारस जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धबारस चंदे ११ एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं—बारस सूरे अद्धतेरस चंदे १२ तेरस सूरे, अद्धचोद्दस चंदे १३ चोद्दस सूरे, अद्धपण्णरस चंदे १४ पण्णरस सूरे, अद्धसोलस चंदे १५ सोलस सूरे, अद्धसत्तारस चंदे १६ सत्तरस सूरे, अद्धअट्ठारस चंदे १७ अट्ठारस सूरे, अद्धएकोणवीसं[3] चंदे १८ एकोणवीसं सूरे, अद्धवीसं चंदे १९ वीसं सूरे, अद्धएक्कवीसं चंदे २० एक्कवीसं सूरे, अद्धबावीसं चंदे २१ बावीसं सूरे, अद्धतेवीसं चंदे २२ तेवीसं सूरे, अद्धचउवीसं चंदे २३ चउवीसं सूरे, अद्धपणवीसं चंदे—एगे एवमाहंसु २४ एगे पुण एवमाहंसु—ता पणवीसं जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धछव्वीसं चंदे—एगे एवमाहंसु २५

---

१. पणुवीसं (ग,घ,व); पंचवीसं (ट)।

२. अतः 'ट,व' प्रत्योर्वृत्त्योश्च संक्षिप्तपाठो विद्यते—'एवं एएणं अभिलावेणं तिण्णि जोयणसहस्साति सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धुट्ठाइं चंदे, तावता जोयणसहस्साति सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अद्ध एवमाइं चंदे' इत्यादि।

३. एक्कूणवीसं (ग,घ); एकूणवीसतिमाति (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वयं पुण एवं वदामो—ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ[1] सत्तणउतिजोयणसते उड्ढं उप्पइत्ता हेट्ठिल्ले ताराविमाणे चारं चरंति, अट्ठजोयणसते उड्ढं उप्पइत्ता सूरविमाणे चारं चरंति, अट्ठअसीए जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता चंदविमाणे चारं चरंति, णव जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता उवरिल्ले ताराविमाणे चारं चरंति, हेट्ठिल्लाओ ताराविमाणाओ दसजोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता सूरविमाणे चारं चरंति, णउतिं जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता चंदविमाणे चारं चरंति, दसोत्तरं जोयणसयं उड्ढं उप्पइत्ता उवरिल्ले तारारूवे चारं चरंति, ता सूरविमाणाओ असीतिं जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता चंदविमाणे चारं चरंति, जोयणसयं उड्ढं उप्पइत्ता उवरिल्ले तारारूवे चारं चरंति, ता चंदविमाणाओ णं वीसं जोयणाइं उड्ढं उप्पइत्ता उवरिल्ले तारारूवे चारं चरंति। एवामेव सपुव्वावरेणं दसुत्तरजोयणसयं बाहल्ले तिरियमसंखेज्जे जोतिसविसए जोतिसं चारं चरति आहितेति वदेज्जा ॥

२. ता अत्थि णं चंदिमसूरियाणं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? समंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? ता अत्थि ॥

३. ता कहं ते चंदिमसूरियाणं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? समंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? ता जहा-जहा णं तेसि णं देवाणं तव-णियम-बंभचेराइं उस्सियाइं भवंति तहा-तहा[2] णं तेसिं देवाणं एवं भवति[3], तं जहा - अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा[4]। ता एवं खलु चंदिमसूरियाणं देवाणं हिट्ठंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि तहेव[5] ॥

४. ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स केवतिया गहा परिवारो पण्णत्तो ? केवतिया णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो ? केवतिया तारा परिवारो पण्णत्तो ? ता एगमेगस्स णं चंदस्स देवस्स अट्ठासीतिं गहा[6] परिवारो पण्णत्तो, अट्ठावीसं णक्खत्ता परिवारो पण्णत्तो,

१. अतः परं चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितयोः प्रत्योश्चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ च संक्षिप्तपाठः किञ्चित्पाठभेदश्चापि लभ्यते--सत्तणउते जोयणसते अबाहाए हिट्ठिल्ले तारारूवे चारं चरति, अट्ठजोयणसए अबाहाए सूरविमाणे चारं चरति, अट्ठअसीते जोयणसते अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति, णवजोयणसए अबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति, ता हेट्ठिलातो णं तारारूवाओ दस जोयणे अबाहाए सूरविमाणे चारं चरति, तता णं असीते जोयणे अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति, एवं जहेव जीवाभिगमे तहेव णेयव्वं—सव्वब्भंतरिल्लं चारं संठाणं पमाणं वहति सिहगति इड्ढि तारंतरं अग्गमहिसी ठिति अप्पाबहुयं जाव तारातो संखेज्जगुणातो।

२. तधा (क,म,घ)।

३. पण्णायति (जी० ३।९९९); पण्णायए (जं० ७।१६९)।

४. वा। जहा जहा णं तेसिं देवाणं तव-णियम-बंभचेराइं णो ऊसियाइं भवंति, तहा तहा णं तेसिं देवाणं एवं णो पण्णायए तं जहा—अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा (ग)।

५. तहेव जाव उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि (ग,घ)।

६. महग्गहा (जी० ३।१०००, जं० ७।१७०)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छावट्ठि सहस्साइं णव चेव सताइं पंचसत्तराइं[1] तारागणकोडिकोडीणं परिवारो पण्णत्तो ।।

५. ता मंदरस्स णं पव्वयस्स केवतियं अबाहाए जोतिसे चारं चरति ? ता एक्कारस एक्कवीसे जोयणसते अबाहाए जोतिसे चारं चरति ।।

६. ता लोयंताओ णं केवतियं अबाहाए जोतिसे पण्णत्ते ? ता एक्कारस एक्कारे जोयणसते अबाहाए जोतिसे पण्णत्ते ।।

७. ता जंबुद्दीवे णं दीवे कतरे णक्खत्ते सव्वब्भंतरिल्लं चारं चरति ? कतरे णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरति ? कतरे णक्खत्ते सव्वुपरिल्लं[2] चारं चरति ? कतरे णक्खत्ते सव्वहिट्ठिल्लं चारं चरति ? ता अभीई णक्खत्ते सव्वब्भंतरिल्लं चारं चरति, मूले णक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं चारं चरइ, साती णक्खत्ते सव्वुपरिल्लं चारं चरति, भरणी णक्खत्ते सव्व-हेट्ठिल्लं चारं चरति ।।

८. ता चंदविमाणे णं किंसंठिते पण्णत्ते ? ता अद्धकविट्ठगसंठाणसंठिते सव्वफलिहा-मए[3] अब्भुग्गयमूसियपहसिए विविहमणिरयणभत्तिचित्ते जाव[4] पडिरूवे । एवं सूरविमाणे गहविमाणे णक्खत्तविमाणे ताराविमाणे ।।

९. ता चंदविमाणे णं केवतियं आयाम-विक्खंभेणं, केवतियं परिक्खेवेणं, केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? ता छप्पण्णं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं, अट्ठावीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

१०. ता सूरविमाणे णं केवतियं आयाम-विक्खंभेणं पुच्छा । ता अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं, चउव्वीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

११. ता गहविमाणेणं पुच्छा । ता अद्धजोयणं आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं कोसं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

१२. ता णक्खत्तविमाणे णं केवतियं पुच्छा । ता कोसं आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं, अद्धकोसं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

१३. ता ताराविमाणे णं केवतियं पुच्छा । ता अद्धकोसं आयाम-विक्खंभेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिरएणं, पंच धणुसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ते ।।

१४. ता चंदविमाणं[5] कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता सोलस देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं जहा— पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, दाहि-णेणं गयरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, पच्चत्थिमेणं वसहरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं चत्तारि देवसाहस्सीओ परि-वहंति । एवं सूरविमाणंपि ।।

१५. ता गहविमाणं कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता अट्ठ देवसाहस्सीओ परि-वहंति, तं जहा— पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, एवं जाव

१. पंचुत्तराइं (ग,घ) ।
२. सव्वुवरिल्ले (ग घ) ।
३. °फलियामए (ग,घ); फालियामए (जी० ३।१००८, जं० ७।१७६) ।
४. जी० ३।१००८ ।
५. °विमाणे णं (ग,घ) सर्वत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं ॥

१६. ता णक्खत्तविमाणं कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं जहा- पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं एक्का देवसाहस्सी परिवहति, एवं जाव उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं देवाणं ॥

१७. ता ताराविमाणं कति देवसाहस्सीओ परिवहंति ? ता दो देवसाहस्सीओ परिवहंति, तं जहा- पुरत्थिमेणं सीहरूवधारीणं देवाणं पंच देवसता परिवहंति, एवं जाव उत्तरेणं तुरगरूवधारीणं[1] ॥

१८. ता[2] एतेसि णं चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवाणं कयरे कयरेहिंतो सिग्घगती वा मंदगती वा ? ता चंदेहिंतो सूरा सिग्घगती, सूरहिंतो गहा सिग्घगती, गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगती, णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगती । सव्वप्पगती चंदा, सव्वसिग्घगती तारा ॥

१९. ता एतेसि णं चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्ता-तारारूवाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पिड्ढिया वा महिड्ढिया वा? ता ताराहिंतो णक्खत्ता महिड्ढिया, णक्खत्तेहिंतो गहा महिड्ढिया, गहेहिंतो सूरा महिड्ढिया, सूरेहिंतो चंदा महिड्ढिया । सव्वप्पिड्ढिया तारा, सव्वमहिड्ढिया चंदा ॥

२०. ता जंबुद्दीवे णं दीवे तारारूवस्स य तारारूवस्स य एस णं केवतिए अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? ता दुविहे अंतरे पण्णत्ते, तं जहा - वाघातिमे य निव्वाघातिमे य । तत्थ णं जेसे वाघातिमे, से णं जहण्णेणं दोण्णि छावट्ठे जोयणसते, उक्कोसेणं बारस जोयणसहस्साइं दोण्णि बाताले जोयणसते तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाधाए अंतरे पण्णत्ते । तत्थ णं जेसे निव्वाघातिमे, से णं जहण्णेणं पंच धणुसताइं, उक्कोसेणं अद्धजोयणं तारारूवस्स य तारारूवस्स य अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ॥

२१. ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा -चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि-चत्तारि देवीसाहस्सी परिवारो पण्णत्तो । पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं चत्तारि-चत्तारि देवीसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए । एवामेव सपुव्वावरेणं सोलस देवीसहस्सा । सेत्तं तुडिए ॥

२२. ता पभू णं चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥

२३. ता कहं ते णो पभू चंदे जोतिसिंदे जोतिसिया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए माणवए चेतियखंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहवे जिणसकधा सण्णिक्खित्ता चिट्ठंति, ताओ णं चंदस्स जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो अण्णेसिं च बहूणं जोतिसियाणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ

---

१. तुरगा (क,ग,घ) ।

२. 'ता एएसि णं' मित्यादि, शीघ्रगतिविषयं प्रश्नसूत्रं निर्वचनसूत्रं च सुगमं, एतच्च पश्चादप्युक्तं (१५।१) परं भूयो विमानवहनप्रस्तावादुक्तमित्यदोषः, अन्यद्वा कारणं बहुश्रुतेभ्योऽवगन्तव्यम् (सूवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जाओ। एवं खलु णो पभू चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ।।
पभू णं चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं जोतिसिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं महयाहयणट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, केवलं परियारणिड्ढीए, णो चेव णं मेहुणवत्तियं ।।

२४. ता सूरस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सूरप्पभा आतवा अच्चिमाली पभंकरा, सेसं जहा चंदस्स, णवरं सूरवडेंसए विमाणे जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं[1] ।।

२५. ता जोतिसिया णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं अट्ठभाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं[2] वाससतसहस्समब्भहियं ।।

२६. ता जोतिसिणीणं देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं अट्ठभाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं ।।

२७. ता चंदविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससतसहस्समब्भहियं ।।

२८. ता चंदविमाणे णं देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं ।।

२९. ता सूरविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं ।।

३०. ता सूरविमाणे णं देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं ।।

३१. ता गहविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं ।।

३२. ता गहविमाणे णं देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भाग-पलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ।।

३३. ता णक्खत्तविमाणे णं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं ।।

३४. ता णक्खत्तविमाणे णं देवीणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? ता जहण्णेणं 'अट्ठ-भागपलिओवमं, उक्कोसेणं चउब्भागपलिओवमं'[3] ।।

३५. ता ताराविमाणे णं देवाणं पुच्छा। ता जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं

१. मेधुणवत्तियं (क,ग,घ)।
२. पलितोवमं (क,ग,घ) सर्वत्र।
३. चउभागपलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगं चउ-भागपलिओवमं (पण्ण० ४।१९८, जी० ३।१०३४)।

चउब्भागपलिओवमं ।।

३६. ता ताराविमाणे णं देवीणं पुच्छा । ता जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं साइरेगअट्ठभागपलिओवमं ।।

३७. ता एएसि णं चंदिम-सूरिय-गह-णक्खत्त-तारारूवाणं कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? ता चंदा य सूरा य—एते णं दोवि तुल्ला सव्व-त्थोवा, णक्खत्ता संखेज्जगुणा, गहा संखेज्जगुणा, तारा संखेज्जगुणा ।।

एगूणवीसइमं पाहुडं

१. ता कति णं चंदिमसूरिया सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति पभासेंति आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ दुवालस पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ । तत्थेगे एव-माहंसु—ता एगे चंदे एगे सूरे सव्वलोयं ओभासति उज्जोएति तवेति पभासेति[1] एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता तिण्णि चंदा तिण्णि सूरा सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति पभासेंति—एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता आहुट्टिं[2] चंदा आहुट्टिं सूरा सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति पभासेंति—एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—एतेणं अभिलावेणं[3] णेतव्वं—सत्त चंदा सत्त सूरा ४ दस चंदा दस सूरा ५ बारस चंदा बारस सूरा ६ बातालीसं चंदा बातालीसं सूरा ७ बावत्तरिं चंदा बावत्तरिं सूरा ८ बातालीसं चंदसतं बातालीसं सूरसतं ९ बावत्तरं चंदसतं बावत्तरं सूरसतं १० बातालीसं चंदसहस्सं बातालीसं सूरसहस्सं ११ बावत्तरं चंदसहस्सं बावत्तरं सूरसहस्सं सव्वलोयं ओभासंति उज्जोएंति तवेंति पभासेंति—एगे एवमाहंसु १२
वयं पुण एवं वदामो—ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[4] परिक्खेवेणं पण्णत्ते[5] । ता जंबुद्दीवे दीवे दो चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा

१. पभासेति आहितेति वदेज्जा (ट,व); आख्यात इति वदेत् वृत्त्योरपि सर्वत्र ।
२. आउट्ठिं (ग,घ); आउट्टिं (ट) ।
३. अतः परं चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितयोः प्रत्योः चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ च भिन्ना पाठपद्धतिर्दृश्यते, ट,व :—जातो चेव ततिए पाहुडे दुवालस-पडिवत्तीओ ताओ चेव इहंपि णेयव्वा । ता णवरं सत्त य दस जाव ता बावत्तरिचंद-सहस्सं बावत्तरिसुरियसहस्सं सव्वलोयं ओभा-संति जाव आहितेति वदेज्जा एगे एवं । चंद्—या एव तृतीये प्राभृते द्वादशप्रतिपत्तयः उक्तास्ता एव इहापि ज्ञातव्याः, नवरमनेन क्रमेण ज्ञातव्याश्चतुर्थ्यां प्रतिपत्तौ प्रत्येकं सप्त चन्द्राः सूर्याश्च वक्तव्याः । पंचम्यां दश एव यावद् द्वादशभ्यां प्रतिपत्तौ द्वासप्ततं चन्द्रसहस्रं द्वासप्ततं सूर्यसहस्रमिति ।
४. सू० १।१४ ।
५. अतः परं सूर्यप्रज्ञप्तेः 'क,ग,घ' संकेतितेषु आदर्शेषु अतिरिक्तः पाठो लभ्यते—ता जम्बुद्दीवे २ केवतिया चंदा पभासिंसु वा पभासिंति वा पभासिस्संति वा ? केवतिया सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा ? केवतिया णक्खत्ता जोयं जोइंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा ? केवतिया गहा चारं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दो सूरिया तवइंसु वा तवइंति वा तवइस्संति वा, छप्पण्णं णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, छावत्तरिं गहसतं चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा, एगं सयसहस्सं तेत्तीसं च सहस्सा णव य सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ।

संगहणी गाहा—
दो चंदा दो सूरा, णक्खत्ता खलु हवंति छप्पण्णा ।
छावत्तरं गहसतं, जंबुद्दीवे विचारी णं[1] ॥१॥
एगं च सयसहस्सं, तेत्तीसं खलु भवे सहस्साइं ।
णव य सया पण्णासा, तारागणकोडिकोडीणं ॥२॥

२. ता जंबुद्दीवं णं दीवं लवणे णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति ॥

३. ता लवणे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते ? विसमचक्कवालसंठिते ? ता लवणसमुद्दे समचक्कवालसंठिते, णो विसमचक्कवालसंठिते ॥

४. ता लवणसमुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता दो जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, पण्णरस जोयणसयसहस्साइं एक्कासीइं च सहस्साइं सतं च ऊतालं[2] किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ॥

५. ता लवणसमुद्दे केवतिया चंदा पभासेंसु वा एवं पुच्छा जाव केवतियाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभिंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ? ता लवणे णं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, चत्तारि सूरिया तवइंसु वा तवइंति वा तवइस्संति वा, बारस णक्खत्तासतं जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, तिण्णि बावण्णा महग्गहसता चारं चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा, दो सतसहस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा णव य सता तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभिंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ।

संगहणी गाहा—
पण्णरस सतसहस्सा, एक्कासीतं सतं च ऊतालं ।
किंचिविसेसेणूणो, लवणसमुद्दस्स परिक्खेवो ॥१॥
चत्तारि चेव चंदा, चत्तारि य सूरिया लवणतोए ।
बारस णक्खत्तसयं, गहाण तिण्णेव बावण्णा ॥२॥
दो चेव सतसहस्सा, सत्तट्ठिं खलु भवे सहस्साइं ।
णव य सता लवणजले, तारागणकोडिकोडीणं ॥३॥

चरिंसु वा चरंति वा चरिस्संति वा ? केवतिया तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ? सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ नैष व्याख्यातोस्ति । प्रस्तुतसूत्रस्य रचनाक्रमेणापि नैष उपयुक्तोस्ति । 'वयं पुण एवं वदामो' इति पाठान्तरं स्वाभिमतप्रतिपादनं भवति, न तु प्रश्नोत्तरशैली पूर्वं क्वापि प्रयुक्ता दृश्यते । चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितयोः प्रत्योः एवं संक्षिप्तपाठो लभ्यते ता जंबुद्दीवे णं दीवे दो चंदा पभासिंसु पभासंति जहा जीवाभिगमे जाव तारातो । चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव पाठो व्याख्यातोस्ति ।

१. 'णं' इति वाक्यालङ्कारे (वृ) ।
२. उगुतालं (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. ता[1] लवणसमुद्दं धायईसंडे[2] णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते तहेव जाव[3] णो विसमचक्कवालसंठिते ।।

७. धायईसंडे णं दीवे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता चत्तारि जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं ईतालीसं जोयणसतसहस्साइं दस य सहस्साइं णव य एगट्ठे जोयणसते किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ।।

८. धायईसंडे दीवे केवतिया चंदा पभासेंसु वा पुच्छा तहेव । ता धायईसंडे णं दीवे बारस चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, बारस सूरिया तवेंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा, तिण्णि छत्तीसा णक्खत्तसया जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, एगं छप्पण्णं महग्गहसहस्सं चारं चरिंसु वा चरिंति वा चरिस्संति वा, अट्ठेव सयसहस्सा तिण्णि सहस्साइं सत्त य सयाइं तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ।।

संगहणी गाहा — धायईसंडपरिरओ, ईताल दसुत्तारा सतसहस्सा ।
णव सया य एगट्ठा, किंचिविसेसेण परिहीणा ।।१।।
चउवीसं ससिरविणो, णक्खत्तसया य तिण्णि छत्तीसा ।
एगं च गहसहस्सं, छप्पण्णं धायईसंडे ।।२।।
अट्ठेव सतसहस्सा, तिण्णि सहस्साइं सत्त य सताइं ।
धायईसंडे दीवे, तारागणकोडिकोडीणं ।।३।।

९. ता[4] धायईसंडं णं दीवे कालोए णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते जाव[5] णो विसमचक्कवालसंठाणसंठिते ।।

१०. ता कालोए णं समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता कालोए णं समुद्दे अट्ठ जोयणसतसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते, एक्काणउतिं जोयणसतसहस्साइं सत्तरिं च सहस्साइं छच्च पंचुत्तरे जोयणसते किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ।।

११. ता कालोए णं समुद्दे केवतिया चंदा पभासेंसु वा पुच्छा । ता कालोए समुद्दे बातालीसं चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, बातालीसं सूरिया तवेंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा, एक्कारस बावत्तरा णक्खत्तसया जोयं जोइंसु वा जोएंति वा

१. अतः चंद्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते-- ता लवणसमुद्दं ता धायतिसंडे णामं दीवे वट्टे वलयाकारसंठिते जाव चिट्ठंति । ता धायतिसंडे णं दीवे किं समचक्कसंठिते एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं जहा जीवाभिगमे जाव तारातो । चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव व्याख्यातोस्ति ।

२. धातकीसंडे (क) ।

३. सू० १९।२,३ ।

४. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तेः ट,व संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते—धायतिसंडेणं दीवे कालोए णं समुद्दे वट्टे वलया जाव चिट्ठति । ता कालोए णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते विसम एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं च भाणि यव्वं जाव तारातो । चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव व्याख्यातोस्ति ।

५. सू० १९।२,३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोइस्संति वा, तिण्णि सहस्सा छच्च छण्णउया महग्गहसया चारं चरिंसु वा चरेंति वा चरिस्संति वा, अट्ठावीसं सयसहस्साइं बारस य सहस्साइं णव य सताइं पण्णासा तारागण-कोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति वा।

संगहणी गाहा—एक्काणउतिं सतराइं, सहस्साइं परिरओ[1] तस्स।
अहियाइं छच्च पंचुत्तराइं कालोदधिवरस्स ॥१॥
बातालीसं चंदा, बातालीसं च दिणकरा दित्ता।
कालोदहिंमि एते, चरंति संबद्धलेसागा ॥२॥
णक्खत्तसहस्सं एगमेव छावत्तारं च सयमण्णं।
छच्च सया छण्णउया, महग्गहा तिण्णि य सहस्सा ॥३॥
अट्ठावीसं कालोदहिंमि बारस य सहस्साइं[2]।
णव य सता पण्णासा, तारागणकोडिकोडीणं ॥४॥

१२. ता[3] कालोयं णं समुद्दं पुक्खरवरे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति॥

१३. पुक्खरवरे णं दीवे किं समचक्कवालसंठिते? विसमचक्कवालसंठिते? ता सम-चक्कवालसंठिते, णो विसमचक्कवालसंठिते॥

१४. ता पुक्खरवरे णं दीवे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं? ता सोलस जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बाणउतिं च सतसहस्साइं अउणाणउतिं[4] च सहस्साइं अट्ठचउणउते जोयणसते परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा॥

१५. ता पुक्खरवरे णं दीवे केवतिया चंदा पभासेंसु वा पुच्छा तहेव[5]। ता चोतालं चंदसतं पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, चोतालं सूरियाणं सतं तवइंसु वा तवइंति वा तवइस्संति वा, चत्तारि सहस्साइं बत्तीसं च णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, बारस सहस्साइं छच्च बावत्तरा महग्गहसया चारं चरिंसु वा चरेंति वा चरिस्संति वा, छण्णउतिं सयसहस्साइं चोयालीसं सहस्साइं चत्तारि य सयाइं तारागण-कोडिकोडीणं सोभं सोभिंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा॥

संगहणी गाहा—कोडी बाणउती खलु, अउणाणउतिं भवे सहस्साइं।
अट्ठसता चउणउता, य परिरओ पोक्खरवरस्स ॥१॥

---

१. परिरतो (क,ग,घ)।

२. सयसहस्साइं (क); मूलपाठे 'अट्ठावीसं सयसहस्साइं बारस य सहस्साइं' इत्युपलभ्यते, किन्तु प्रस्तुतगाथायां 'बारस य सयसहस्साइं' मूलपाठपद्धत्या नास्ति समीचीनम् अथवा छन्दोदृष्ट्या एवं संक्षेपीकरणं स्यात्।

३. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते—ता कालोयं णं समुद्दे पुक्खरवरे णं दीवे वट्टे वलया जाव चिट्ठति। ता पुक्खरवरे णं दीवे किं समचक्कवाल विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं जाव तारातो। चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव पाठो व्याख्या-तोस्ति।

४. अउणावण्णं (ग,घ)।

५. तधेव (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोतालं चंदसतं, चोतालं चेव सूरियाण सतं ।
पोक्खरवरदीवम्मि, चरंति एते पभासंता ॥२॥
चत्तारि सहस्साइं, बत्तीसं चेव हुंति णक्खत्ता ।
छच्च सता बावत्तर, महग्गहा बारह सहस्सा ॥३॥
छण्णउति सयसहस्सा, चोत्तालीसं खलु भवे सहस्साइं ।
चत्तारि य सता खलु, तारागणकोडिकोडीणं ॥४॥

१६. ता पुक्खरवरस्स णं दीवस्स बहुमज्झदेसभाए[1] माणुसुत्तरे णामं पव्वते पण्णत्ते—वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते जे णं पुक्खरवरं दीवं दुधा विभयमाणे-विभयमाणे चिट्ठति, तं जहा—अब्भितरपुक्खरद्धं च बाहिरपुक्खरद्धं च ॥

१७. ता[2] अब्भितरपुक्खरद्धे णं किं समचक्कवालसंठिते ? विसमचक्कवालसंठिते ? ता समचक्कवालसंठिते, णो विसमचक्कवालसंठिते ॥

१८. ता अब्भितरपुक्खरद्धे णं केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, एक्का जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दो अउणापण्णे जोयणसते परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ॥

१९. ता अब्भितरपुक्खरद्धे णं केवतिया चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा ? केवतिया सूरा तविंसु वा पुच्छा । ता बावत्तरि चंदा पभासिसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, बावत्तरि सूरिया तवइंसु वा तवइंति वा तवइस्संति वा, दोण्णि सोला णक्खत्तसहस्सा जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, छ महग्गहसहस्सा तिण्णि य [सया ?[3]]छत्तीसा चारं चरेंसु वा चरेंति वा चरिस्संति वा, अडतालीससतसहस्सा बावीसं च सहस्सा दोण्णि य सता तारागणकोडिकोडीणं सोभं सोभिंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा ॥

२०. ता[4] समयक्खेत्ते णं केवतियं आयाम-विक्खंभेणं, केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता पणतालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सतसहस्साइं [तीसं च सहस्साइं ?[5]] दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसते परिक्खेवेणं

---

१. चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं (ट,व) ।

२. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते—अब्भितरपुक्खरद्धे णं किं समचक्कवालसंठिते, एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं जाव तारातो। चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव पाठो व्याख्यातोस्ति ।

३. अस्य अपेक्षायै द्रष्टव्यम्—जीवाजीवाभिगमे ३।८३४ ।

४. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते—ता मणुस्सखेत्तं केवतियं आयाम-विक्खंभेणं केवतियं एवं विक्खंभो परिक्खेवो । चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव

५. कोष्ठकवर्तिपाठः आदर्शेषु त्रुटितो वर्तते । पाठो व्याख्यातोस्ति ।
वृत्तौ एष व्याख्यातोस्ति—एका योजनकोटी द्वाचत्वारिंशत्—द्विचत्वारिंशच्छतसहस्राधिका त्रिंशत्सहस्राणि द्वे शते, एकोनपञ्चाशदधिके एतावत्प्रमाणो मानुषक्षेत्रस्य परिरयः । जीवाजीवाभिगमे (३।८३५) पि वृत्तिसंवादिपाठो लभ्यते—एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य एऊणपण्णा जोयणसते किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहितेति वदेज्जा ॥

२१. ता समयक्खेत्ते णं केवतिया चंदा पभासंसु वा पुच्छा तहेव। ता बत्तीसं चंदसतं पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा, बत्तीसं सूरियाणं सतं तवइंसु वा तवइंति वा तवइस्संति वा, तिण्णि सहस्सा छच्च छण्णउता णक्खत्तसता जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा, एक्कारस सहस्सा छच्च सोलस महग्गहसता चारं चरिंसु वा चरेंति वा चरिस्संति वा, अट्ठासीति सतसहस्साइं चत्तालीसं च सहस्सा सत्त य सया तारागणकोडि-कोडीणं सोभं सोभिंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा।

संगहणी गाहा— अट्ठेव सतसहस्सा, अब्भितरपुक्खरस्स विक्खंभो।
पणयालसयसहस्सा, माणुसखेत्तस्स विक्खंभो ॥१॥
कोडी बातालीसं[1], 'सहस्सा दो सता'[2] अउणपण्णासा।
माणुसखेत्तपरिरओ, एमेव य पुक्खरद्धस्स ॥२॥
बावत्तरिं च चंदा, बावत्तरिमेव दिणकरा दित्ता।
पुक्खरवरदीवड्ढे, चरंति एते पभासेंता ॥३॥
तिण्णि सता छत्तीसा, छच्च सहस्सा महग्गहाणं तु।
णक्खत्ताणं तु भवे, सोलाइं दुवे सहस्साइं ॥४॥
अडयालसयसहस्सा, बावीसं खलु भवे सहस्साइं।
दो य सय पुक्खरद्धे, तारागणकोडिकोडीणं ॥५॥
बत्तीसं चंदसतं, बत्तीसं चेव सूरियाण सतं।
सयलं माणुसलोयं, चरंति एते पभासेंता ॥६॥
एक्कारस य सहस्सा, छप्पि य सोला महग्गहाणं तु।
छच्च सता छण्णउया, णक्खत्ता तिण्णि य सहस्सा ॥७॥
'अट्ठासीतिं चत्ताइं, सयसहस्साइं मणुयलोगंमि'[3]।
सत्त य सया अणूणा, तारागणकोडीकोडीणं ॥८॥

२२. एसो[4] तारापिंडो, सव्वसमासेण मणुयलोयंमि।
बहिया पुण ताराओ, जिणेहिं भणिया असंखेज्जा ॥१॥
एवतियं तारग्गं, जं भणियं माणुसंमि लोगंमि।
चारं कलंबुयापुप्फसंठितं जोइसं चरति ॥२॥

---

१. बादालीसा (क); एषा गाथा संक्षिप्ता वर्तते 'बातालीसं सहस्सा' एते द्वे अपि पदे केवलं संकेतं कुर्वतः। वस्तुतः 'बातालीसं सयसहस्साइं तीसं सहस्साइं' इति पाठो युज्यते।

२. सहस्स दुसया (ग,घ)।

३. अडसीइ सय सहस्सा, चत्तालीससहस्स मणुयलोगंमि (जी० ३।८३७ पादटिप्पणम्)।

४. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते—जोतिसं गाहातो य जाव एगससिपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं। चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव पाठो व्याख्यातोस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रविससिगहणक्खत्ता, एवतिया आहिता मणुयलोए ।
जेसिं णामागोत्तं, ण पागता पण्णवेहिंति ।।३।।
छावट्ठि पिडगाइं, चंदादिच्चाण मणुयलोयम्मि ।
दो चंदा दो सूरा[1], हुंति एक्केक्कए पिडए ।।४।।
छावट्ठि पिडगाइं, णक्खत्ताणं तु मणुयलोयम्मि ।
छप्पण्णं णक्खत्ता, हुंति एक्केक्कए पिडए ।।५।।
छावट्ठि पिडगाइं, महग्गहाणं तु मणुयलोयंमि ।
छावत्तरं गहसयं, होइ एक्केक्कए पिडए ।।६।।
चत्तारि य पंतीओ, चंदादिच्चाण मणुयलोयम्मि ।
छावट्ठि छावट्ठि, च होंति एक्किक्किया पंती ।।७।।
छप्पण्णं पंतीओ, णक्खत्ताणं तु मणुयलोयम्मि ।
छावट्ठि छावट्ठि, हवंति एक्केक्किया पंती ।।८।।
छावत्तरं गहाणं पंतिसयं हवइ मणुयलोयंमि ।
छावट्ठि छावट्ठि, हवंति य एक्केक्किया पंती ।।९।।
ते मेरुमणुचरंता, पदाहिणावत्तमंडला सव्वे ।
अणवट्ठितेहिं जोगेहिं, चंदा सूरा गहगणा य ।।१०।।
णक्खत्ततारगाणं, अवट्ठिता मंडला मुणेयव्वा ।
तेवि य पदाहिणावत्तमेव मेरुं अणुचरंति ।।११।।
रयणिकरदिणकराणं, उड्ढं च अहे य संकमो णत्थि ।
मंडलसंकमणं पुण, सब्भंतरबाहिरं तिरिए ।।१२।।
रयणिकरदिणकराणं, णक्खत्ताणं महग्गहाणं च ।
चारविसेसेण भवे, सुहदुक्खविही मणुस्साणं ।।१३।।
तेसिं पविसंताणं, तावक्खेत्तं तु वड्ढते णिययं ।
तेणेव कमेण पुणो, परिहायति णिक्खमंताणं ।।१४।।
तेसिं कलंबुयापुप्फसंठिता हुंति तावखेत्तपहा ।
अंतो य संकुडा बाहिं, वित्थडा चंदसूराणं ।।१५।।
केणं वड्ढति चंदो, परिहाणी केण होति[2] चंदस्स ।
कालो वा जोण्हो[3] वा, केणणुभावेण चंदस्स ।।१६।।
किण्हं राहुविमाणं, णिच्चं चंदेण होइ अविरहियं ।
चउरंगुलमप्पत्तं, हिट्ठा चंदस्स तं चरति ।।१७।।
बावट्ठि-बावट्ठि, दिवसे-दिवसे तु सुक्कपक्खस्स ।
जं परिवड्ढति चंदो, खवेइ तं चेव कालेणं ।।१८।।

---

१. सूरा य (ग,घ) ।
२. हुंति (ग,घ) ।
३. जुण्हो (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णरसइभागेण य, चंदं पण्णरसमेव तं वरति ।
पण्णरसइभागेण य, पुणोवि तं चेव वक्कमति ॥१६॥
एवं वड्ढति चंदो, परिहाणी एव[1] होइ चंदस्स ।
कालो वा जोण्हो वा, एयणुभावेण[2] चंदस्स ॥२०॥
अंतो मणुस्सखेत्ते, हवंति चारोवगा तु उववण्णा ।
पंचविहा जोतिसिया, चंदा सूरा गहगणा य ॥२१॥
तेण परं जे सेसा, चंदादिच्चगहतारणक्खत्ता ।
णत्थि गई णवि चारो, अवट्ठिता ते मुणेयव्वा ॥२२॥
एवं जंबुद्दीवे, दुगुणा लवणे चउग्गुणा हुंति ।
लावणगा य तिगुणिता, ससिसूरा धायईसंडे ॥२३॥
दो चंदा इह दीवे, चत्तारि य सायरे लवणतोए ।
धायइसंडे दीवे, बारस चंदा य सूरा य ॥२४॥
धायइसंडप्पभिति, उद्दिट्ठा तिगुणिता भवे चंदा ।
आदिल्लचंदसहिता, अणंतराणंतरे खेत्ते ॥२५॥
रिक्खग्गहतारग्गं, दीवसमुद्दे जतिच्छसी णाउं ।
तस्स ससीहिं गुणितं[3], रिक्खग्गहतारगग्गं तु ॥२६॥
बहिता[4] तु माणुसणगस्स, चंदसूराणवट्ठिता जोआ[5] ।
चंदा अभीइजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥२७॥
चंदातो सूरस्स य, सूरा चंदस्स अंतरं होइ ।
पण्णाससहस्साइं, तु जोयणाणं अणूणाइं ॥२८॥
सूरस्स य सूरस्स य, ससिणो ससिणो य अंतरं होइ ।
बाहिं तु माणुसणगस्स, जोयणाणं सतसहस्सं ॥२९॥
सूरंतरिया चंदा, चंदंतरिया य दिणयरा दित्ता ।
चित्तंतरलेसागा, सुहलेसा मंदलेसा य ॥३०॥
अट्ठासीतिं च गहा, अट्ठावीसं च हुंति णक्खत्ता ।
एगससीपरिवारो, एत्तो ताराण वोच्छामि ॥३१॥
छावट्ठिसहस्साइं, णव चेव सताइं पंचसतराइं ।
एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीणं ॥३२॥

---

१. अत्र छन्दोदृष्टया अनुस्वारलोपो दृश्यते ।
२. एवणुभावेण (ग,घ) ।
३. तिगुणियं (ग,घ) ।
४. जीवाजीवाभिगमे (३।८३८) एषा गाथा अंतिमा विद्यते ।
५. द्वयोरपि वृत्त्योः 'तेया' इति पाठो व्याख्यातो दृश्यते— बहिश्चन्द्रसूर्याणां तेजांसि अवस्थितानि भवन्ति, किमुक्तं भवति ? सूर्याः सदैवानत्युष्णतेजसो न तु जातुचिदपि मनुष्यलोके ग्रीष्मकाल इवात्युष्णतेजसः, चन्द्रमसोपि सर्वदैवानतिशीतलेश्याका न तु कदाचनाप्यन्तर्मनुष्यक्षेत्रस्य शिशिरकाल इवातिशीततेजसः ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

२३. ता[1] अंतो मणुस्सखेत्ते जे चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवा ते णं देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चारट्ठितिया गतिरतिया गतिसमावण्णगा ? ता ते णं देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा, णो चारट्ठितिया गतिरतिया गतिसमावण्णगा उड्ढीमुहकलंबुयापुप्फ-संठाणसंठितेहिं जोयणसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सियाहिं 'बाहिराहिं वेउव्वियाहिं'[2] परिसाहिं महताहतणट्ट-गीय - वाइय-तंती- तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं महता उक्कुट्ठिसीहणाद[3]-बोलकलकलरवेणं अच्छं पव्वतरायं पदाहिणावत्तमंडलचारं मेरुं अणुपरियट्टंति ॥

२४. ता तेसि णं देवाणं जाधे इंदे चयति से कधमियाणिं पकरेंति ? ता चत्तारि पंच सामाणियदेवा तं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जावण्णे तत्थ इंदे उववण्णे भवति ॥

२५. ता इंदट्ठाणे णं केवतिएणं कालेणं विरहिते पण्णत्ते ? ता जहण्णेणं इक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासे ॥

२६. ता बहिता णं माणुस्सक्खेत्तस्स जे चंदिम-सूरिय-गह[4] •गण-णक्खत्त-°तारारूवा ते णं देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारट्ठितिया गतिरतिया गति-समावण्णगा ? ता ते णं देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा णो चारोववण्णगा, चारट्ठितिया, णो गतिरतिया णो गतिसमावण्णगा पक्किट्टगसंठाणसंठितेहिं जोयणसयसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं सयसाहस्सियाहिं बाहिराहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं महताहतणट्ट-गीय-वाइय[5]-•तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइ°रवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति, सुहलेसा मंदलेसा मंदायवलेसा चित्तंतरलेसा अण्णोण्ण-समोगाढाहिं लेसाहिं कूडा इव ठाणठिता ते पदेसे सव्वतो समंता ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति ॥

२७. ता तेसि णं देवाणं जाहे इंदे चयति से कहमियाणिं पकरेंति ? ता[6] चत्तारि पंच सामाणियदेवा तं ठाणं तहेव जाव छम्मासे ॥

२८. ता[7] पुक्खरवरं णं दीवं पुक्खरोदे णामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो[8]

---

१. अतः प्रारभ्य 'जाव छम्मासे' इति पर्यन्तः (सूत्र २३-२७) आलापकः चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितयोर्द्वयोरपि प्रत्योर्नास्ति । चन्द्रप्रज्ञप्ति-वृत्तावपि अस्य आलापकस्य उपलब्धेर्विरलता प्रतिपादितास्ति—इहान्यान्यपि सूत्राणि प्रविरलपुस्तकेषु दृश्यन्ते न सर्वेषु पुस्तकेषु, ततस्तान्यपि विनेयजनानुग्रहाय दर्श्यन्ते ।

२. वेउव्वियाहिं बाहिराहिं (जं० ७।५५) ।

३. उक्कट्ठि° (ग,घ) ।

४. सं० पा०---गह जाव तारारूवा ।

५. सं० पा०---वाइय जाव रवेणं ।

६. ता जाव (क,ग,घ) ।

७. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितप्रत्योः भिन्ना वाचना विद्यते-- ता पुक्खर णं दीवं पुक्खरोदे वा णामं समुद्दे वट्टे वलया जाव चिट्ठति । एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं च भाणियव्वं जहा जीवाभिगमे जाव सयंभुरमणे । चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एष एव पाठो व्याख्यातोस्ति ।

८. सं० पा०—सव्व जाव चिट्ठति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•समंता संपरिक्खित्ताणं° चिट्ठति ।।

२६. ता पुक्खरोदे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते[1] ? •विसमचक्कवालसंठिते ? ता पुक्खरोदसमुद्दे समचक्कवालसंठिते,° णो विसमचक्कवालसंठिते ।।

३०. ता पुक्खरोदे णं समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ।।

३१. ता पुक्खरवरोदे णं समुद्दे केवतिया चंदा पभासेंसु वा पुच्छा तहेव । ता पुक्खरोदे णं समुद्दे संखेज्जा चंदा पभासेंसु वा जाव संखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा । एतेणं आभिलावेणं—वरुणवरे दीवे वरुणोदे समुद्दे । खीरवरे दीवे खीरवरे समुद्दे । घतवरे दीवे घतोदे समुद्दे । खोदवरे[2] दीवे खोदोदे[3] समुद्दे । णंदिस्सरवरे दीवे णंदिस्सरवरे समुद्दे । अरुणोदे दीवे अरुणोदे समुद्दे । अरुणवरे दीवे अरुणवरे समुद्दे । अरुणवरोभासे दीवे अरुणवरोभासे समुद्दे । कुंडले दीवे कुंडलोदे समुद्दे । कुंडलवरे दीवे कुंडलवरोदे समुद्दे । कुंडलवरोभासे दीवे कुंडलवरोभासे समुद्दे । सव्वेसिं विक्खंभ-परिक्खेवो जोतिसाइं पुक्खरोदसागरसरिसाइं ।।

३२. ता कुंडलवरोभासण्णं समुद्दं रुयए दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो[4] •समंता संपरिक्खित्ताणं° चिट्ठति ।।

३३. ता रुयए णं दीवे किं समचक्कवाल[5] •संठिते ? विसमचक्कवालसंठिते ? ता रुयए दीवे समचक्कवालसंठिते,° णो विसमचक्कवालसंठिते ।।

३४. ता रुयए णं दीवे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयण-सहस्साइं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ।।

३५. ता रुयगे णं दीवे केवतिया चंदा पभासेंसु वा पुच्छा । ता रुयगे णं दीवे असंखेज्जा चंदा पभासेंसु वा जाव असंखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभिस्संति वा । एवं रुयगे समुद्दे । रुयगवरे दीवे रुयगवरोदे समुद्दे । रुयग-वरोभासे दीवे रुयगवरोभासे समुद्दे । एवं तिपडोयारा णेतव्वा जाव सूरे दीवे सूरोदे समुद्दे । सूरवरे दीवे सूरवरे समुद्दे । सूरवरोभासे दीवे सूरवरोभासे समुद्दे । सव्वेसिं विक्खंभपरिक्खेव-जोतिसाइं रुयगवरदीवसरिसाइं ।।

३६. ता सूरवरोभासोदण्णं समुद्दं देवे णामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिते सव्वतो समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति जाव[6] णो विसमचक्कवालसंठिते ।।

३७. ता देवे णं दीवे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ? ता असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयण-सहस्साइं परिक्खेवेणं आहितेति वदेज्जा ।।

---

१. सं० पा०—समचक्कवालसंठिते जाव णो ।
२. खोतवरे (क) ।
३. खोतोदे (क,ग,घ) ।
४. सं० पा०—सव्वतो जाव चिट्ठति ।
५. सं० पा०—समचक्कवाल जाव णो ।
६. सू० १९।३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. ता देवे णं दीवे केवतिया चंदा पभासेंसु वा पुच्छा तहेव। ता देवे णं दीवे असंखेज्जा चंदा पभासेंसु वा जाव असंखेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभं सोभेंसु वा सोभेंति वा सोभेस्संति वा। एवं देवोदे समुद्दे। णागे दीवे णागोदे समुद्दे। जक्खे दीवे जक्खोदे समुद्दे। भूते दीवे भूतोदे समुद्दे। सयंभुरमणे दीवे सयंभुरमणे समुद्दे। सव्वे देवदीवसरिसा॥

वीसइमं पाहुडं

१. ता कहं ते अणुभावे आहितेति वदेज्जा? तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता चंदिमसूरिया णं णो जीवा अजीवा, णो घणा झुसिरा[1], णो वरबोंदिधरा[2] कलेवरा, णत्थि णं तेसिं उट्ठाणेति वा कम्मेति वा बलेति वा वीरिएति वा पुरिसक्कारपरक्कमेति वा, ते णो विज्जुं लवंति णो असणिं लवंति णो थणितं लवंति। अहे[3] णं बादरे वाउकाए संमुच्छति, संमुच्छित्ता विज्जुंपि लवंति असणिंपि लवंति थणितंपि लवंति—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता चंदिमसूरिया णं जीवा णो अजीवा, घणा णो झुसिरा, वरबोंदिधरा[4] णो कलेवरा, अत्थि णं तेसिं उट्ठाणेति वा कम्मेति वा बलेति वा वीरिएति वा पुरिसक्कारपरक्कमेति वा, ते विज्जुंपि लवंति असणिंपि लवंति थणितंपि लवंति—एगे एवमाहंसु २।
वयं पुण एवं वदामो—ता चंदिमसूरिया णं देवा महिड्डिया[5] •महाजुतीया महाबला महाजसा महासोक्खा° महाणुभावा वरवत्थधरा वरमल्लधरा वराभरणधारी अवोच्छित्तिणयट्ठयाए अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति[6]॥

२. ता कहं ते राहुकम्मे आहितेति वदेज्जा? तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ। तत्थेगे एवमाहंसु—ता अत्थि णं से राहू देवे, जे णं चंदं वा सूरं वा गेण्हति—एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता णत्थि णं से राहू देवे, जे णं चंदं वा सूरं वा गेण्हति—एगे एवमाहंसु २ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता अत्थि णं से राहू देवे, जे णं चंदं वा सूरं वा गेण्हति, ते एवमाहंसु—ता राहू णं देवे चंदं वा सूरं वा गेण्हमाणे बुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयति, बुद्धंतेणं गिण्हित्ता मुद्धंतेणं मुयति, मुद्धंतेणं गिण्हित्ता

---

१. झूसियारा (ट)।
२. बादरबोंदिधरा (क); बादरबुंदधरा (ग,घ); बायरवोदिधरा (ट); बादरवोदिधरा (व)।
३. अधो (क)।
४. बादरबुंदिधरा (क,ग,घ); बादरबोंदेधरा (ट); बादरवोंदियरा (व)।
५. सं० पा०—महिड्ढिया जाव महाणुभावा। महासुक्खा (ट); महेसक्खा (व) यावत्कर-णात् 'महज्जुइया महबला महाजसा महेसक्खा' इति द्रष्टव्यं······तथा महेश इति महान् ईशः—ईश्वर इत्याख्या येषां ते महेशाख्याः, क्वचित् महासोक्खा इति पाठः, तत्र महत् सौख्यं येषां ते महासौख्याः (सूवृ)।
६. उववज्जंति आहितेति वदेज्जा (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बुद्धंतेणं मुयति, मुद्धंतेणं गिण्हित्ता मुद्धंतेणं मुयति, वामभुयंतेणं गिण्हित्ता वामभुयंतेणं मुयति, वामभुयंतेणं गिण्हित्ता दाहिणभुयंतेणं मुयति, दाहिणभुयंतेणं गिण्हित्ता वामभुयंतेणं मुयति, दाहिणभुयंतेणं गिण्हित्ता दाहिणभुयंतेणं मुयति। तत्थ जेते एवमाहंसु—ता णत्थि णं से राहू देवे, जे णं चंदं वा सूरं वा गेण्हति, ते एवमाहंसु—तत्थ णं इमे पण्णरस कसिणपोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—सिंघाडए जडिलए खरए खतए अंजणे खंजणे सीतले हिमसीतले केलासे अरुणाभे परिज्जए णभसूरए कविलए पिंगलए राहू।

ता जया णं एते पण्णरस कसिणा पोग्गला सया[1] चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति तया णं माणुसलोयंसि माणुसा एवं वदंति—एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा गेण्हति। ता जया णं एते पण्णरस कसिणा पोग्गला णो सया चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति, णो खलु तया णं माणुसलोयम्मि मणुस्सा एवं वदंति—एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा गेण्हति—एगे एवमाहंसु।

वयं पुण एवं वदामो—ता राहू णं देवे महिड्ढिए महाजुतीए महाबले महाजसे महाणुभावे वरवत्थधरे[2] •वरमल्लधरे[2] वराभणधारी। राहुस्स णं देवस्स णव णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—सिंघाडए जडिलए खतए खरए दद्दरे मगरे मच्छे कच्छभे कण्हसप्पे।

ता राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा पण्णत्ता, तं जहा—किण्हा णीला लोहिता हालिद्दा सुक्किला। अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि णीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठावण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि पीतए[3] राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किलए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते।

ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेस्सं पुरत्थिमेणं आवरित्ता पच्चत्थिमेणं वीतीवयति तया णं पुरत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेति, पच्चत्थिमेणं राहू। जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणेणं आवरित्ता उत्तरेणं वीतीवयति तया णं दाहिणेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेति, उत्तरेणं राहू। एतेणं अभिलावेणं पच्चत्थिमेणं आवरित्ता पुरत्थिमेणं वीतीवयति, उत्तरेणं आवरित्ता दाहिणेणं वीतीवयति। जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणपुरत्थिमेणं आवरित्ता उत्तरपच्चत्थिमेणं वीतीवयति तया णं दाहिणपुरत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेति, उत्तरपच्चत्थिमेणं राहू। जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं दाहिणपच्चत्थिमेणं आवरित्ता उत्तरपुरत्थिमेणं वीतीवयति तया णं दाहिणपच्चत्थिमेणं चंदे वा सूरे वा उवदंसेति, उत्तरपुरत्थिमेणं राहू। एतेणं अभिलावेणं उत्तरपच्चत्थिमेणं आवरेत्ता दाहिणपुरत्थिमेणं वीतीवयति, उत्तरपुरत्थिमेणं आवरेता दाहिणपच्चत्थिमेणं वीतीवयति। ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे

१. सता (क,ग,घ,ट,व)।
२. सं० पा०—वरवत्थधरे जाव वराभरणधारी।
३. हालिद्दए (क,ग,घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं 'आवरेत्ता वीतीवयति'[1] तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति— 'एवं खलु'[2] राहुणा चंदे वा सूरे वा गहिते—एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा गहिते। ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता पासेणं वीतीवयति तया णं मणुस्सलोयंमि मणुस्सा वदंति— 'एवं खलु'[3] चंदेण वा सूरेण वा राहुस्स कुच्छी भिण्णा—एवं खलु चंदेण वा सूरेण वा राहुस्स कुच्छी भिण्णा।

ता जया णं राहुदेवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता पच्चोसक्कति तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति— एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा वंते—एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा वंते। ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ता मज्झंमज्झेणं वीतीवयति तया णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा वइयरिए[4]—एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा वइयरिए। ता जया णं राहू देवे आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं आवरेत्ताणं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं चिट्ठति तया णं मणुस्सलोयंसि मणुस्सा वदंति—एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा घत्थे—एवं खलु राहुणा चंदे वा सूरे वा घत्थे॥

३. ता कतिविहे णं राहू पण्णत्ते? ता दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—धुवराहू य पव्वराहू य। तत्थ णं जेसे धुवराहू, से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए[5] पण्णरसतिभागेणं पण्णरसतिभागं चंदस्स लेसं आवरेमाणे-आवरेमाणे चिट्ठति, तं जहा—पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरमे समए चंदे रत्ते भवइ, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवति। तमेव सुक्कपक्खे उवदंसेमाणे-उवदंसेमाणे चिट्ठति, तं जहा—पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरिमे समए चंदे विरत्ते भवति, अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ। तत्थ णं जेसे पव्वराहू, से जहण्णेणं छण्हं मासाणं, उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडतालीसाए संवच्छराणं सूरस्स॥

४. ता 'कहं ते'[6] चंदे ससी-चंदे ससी आहितेति वदेज्जा? ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो मियंके विमाणे कंता देवा कंताओ देवीओ कंताइं आसण-सयण-खंभ-भंडमत्तोवगरणाइं, अप्पणावि य णं चंदे देवे जोतिसिंदे जोतिसराया सोमे कंते सुभगे पियदंसणे सुरूवे ता 'एवं खलु'[7] चंदे ससी-चंदे ससी आहितेति वदेज्जा॥

५. ता 'कहं ते'[8] सूरे आदिच्चे-सूरे आदिच्चे आहितेति वदेज्जा? ता सूरादिया

---

१. आवरेत्ति (ट,व)।
२. × (क,ग,ध)।
३. × (क,ग,घ)।
४. वतिचरिए (ट); वेतिचरिए (व)।
५. पडिवए (ग,घ,ट,व)।
६. से णं केणट्ठेणं एवं वुच्चइ (ट); से केणट्ठेणं एवं वुच्चति (व); भगवत्या- (१२।१२५) मपि एवं विद्यते।
७. से तेणट्ठेणं एवं वुच्चइ (ट,व)।
८. से केणट्ठेणं एवं वुच्चति (ट,व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं समयाति वा आवलियाति वा आणापाणूति वा थोवेति वा जाव[2] ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीति वा, 'एवं खलु'[3] सूरे आदिच्चे-सूरे आदिच्चे आहितेति वदेज्जा ।।

६. ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? ता चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, 'जहा हेट्ठा तं चेव जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं'[3] । एवं सूरस्सवि भाणितव्वं[4] ।।

७. ता चंदिमसूरिया णं जोतिसिंदा जोतिसरायाणो केरिसे कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति? ता से जहाणामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलसमत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबल-समत्थाए भारियाए सद्धिं 'अचिरवत्तविवाहे अत्थत्थी'[5] अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पव-सिते, से णं ततो लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि णियमघरं हव्वमागए ण्हाते कत-बलिकम्मे कतकोतुक-मंगल-पायच्छिते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवर परिहिते अप्प-महग्घाभरणालंकितसरीरे मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अंतो[6] सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे विचित्तउल्लोय-चिल्लियतले[7] 'बहुसमसुविभत्तभूमिभाए मणिरयणपणासितंधयारे'[8] कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिते गंधवट्टिभूते तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि दुहओ उण्णए मज्झे णत-गंभीरे सालिंगणवट्टिए 'उभओ विब्बोयणे'[9] सुरम्मे गंगापुलिणवालुयाउद्दालसालिसए 'सुविरइयरयत्ताणे ओयवियखोमियखोमदुगूलपट्ट-पडिच्छायणे'[10] रत्तंसुयसंवुडे सुरम्मे आईणगरूतबूरणवणीततूलफासे सुगंधवरकुसुमचुण्ण-सयणोवयारकलिए ताए तारिसाए भारियाए सद्धिं सिंगारागारचारुवेसाए संगतगतहसित-भणितचिट्ठितसंलावविलासणिउणजुत्तोवयारकुसलाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणोणुकूलाए एगंतरतिपसत्ते अण्णत्थ कत्थइ मणं अकुव्वमाणे इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविधे माणु-स्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरेज्जा । ता से णं पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सातासोक्खं पच्चणुभवमाणे विहरति ? ओरालं समणाउसो ! ता तस्स णं पुरिसस्स कामभोगेहिंतो एतो अणंतगुणविसिट्ठतरा[11] चेव वाणमंतराणं देवाणं कामभोगा, वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं कामभोगा, असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरकुमाराणं इंदभूयाणं देवाणं कामभोगा, असुरकुमाराणं इंदभूयाणं देवाणं काम-भोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव गहगणणक्खत्ततारारूवाणं कामभोगा, गहगणणक्खत्त-तारारूवाणं कामभोगेहिंतो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव चंदिमसूरियाणं देवाणं कामभोगा,

१. भ० १२।१२६; ठाण २।३८८,३८९ ।
२. से एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चति (ट,व) ।
३. एवं तं चेव पुव्वभणियं अट्ठारसमे पाहुडे तहा णेयव्वं जाव मेहुणवत्तियं (ट,व) ।
४. × (ट,व) ।
५. अचिरवत्तविवाहकज्जे (भ० १२।१२८) ।
६. अब्भितरओ (ट,व) ।
७. आइण्णतले (चंवृ) ; चिल्लगतले (चंवृपा) ।
८. मणिरयणपणासियंधयारे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पंचवण्णरस २ सुरभिमुक्कपुप्फ-पुंजोवयारे कलिते (ट,व) ।
९. पण्णत्तगंडविब्बोयणे (ग,घ,सूवृपा, चंवृपा) ।
१०. उवचितदुगुल्लपट्टपडिच्छयणे सुविरइयत्ताणे (ट,व) ।
११. °विसिट्ठतराए (ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता एरिसए णं चंदिमसूरिया जोतिसिंदा जोतिसरायाणो कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥

८. तत्थ खलु इमे अट्ठासीतिं महग्गहा पण्णत्ता, तं जहा —इंगालए वियालए लोहितक्खे[1] सणिच्छरे आहुणिए पाहुणिए कणे कणए कणकणए कणविताए कणसंताणए सोमे सहिते आसासणे कज्जोवए कब्बडए अयकरए दुंदुभए संखे संखणाभे संखवण्णाभे कंसे कंसणाभे कंसवण्णाभे णीले णीलोभासे रुप्पे रुप्पोभासे भासे भासरासी तिले तिलपुप्फवण्णे दगे दगवण्णे काए काकंधे[2] इंदग्गी धुमकेतू हरी पिंगलए बुधे सुक्के बहस्सई राहू अगत्थी माणवगे 'कासे फासे'[3] धुरे पमुहे वियडे विसंधीकप्पे [णियल्ले ?] पयल्ले जडियायलए अरुणे अग्गिल्लए काले महाकाले सोत्थिए सोवत्थिए वद्धमाणगे पलंबे णिच्चालोए णिच्चुज्जोते सयंपभे ओभासे सेयंकरे खेमंकरे आभंकरे पभंकरे अरए विरए असोगे वीतसोगे विमले[4] वितत्ते विवत्थे विसाले साले सुव्वते अणियट्टी एगजडी दुजडी करकरिए रायग्गले पुप्फकेतू भावकेतू ।

संगहणी गाहा— इंगालए[5] वियालए, लोहियक्खे सणिच्छरे चेव ।
आहुणिए पाहुणिए, कणगसणामा उ पंचेव ॥१॥

---

१. लोहितंके (क); लोहिएके (ग,घ); लोहित्यकः (सूवृ); चंद्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ 'लोहिताक्षः' इति व्याख्यातमस्ति, तथा स्थानाङ्गे (२।३२५) 'लोहितक्खा' जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (७।१८६) च 'लोहितक्खे' इति पाठो लभ्यते ।

२. बंघे (क,ग,घ) वृत्तिद्वयेपि 'बन्ध्यः' इति व्याख्यातमस्ति । 'बन्ध्यः' इति पदस्य 'बंभ' इति रूपं स्यात्, कथं 'बंघे' इति प्रश्नोस्ति । तथा स्थानाङ्गे 'कक्कंधा' इति पाठो लभ्यते ।

३. सूर्यप्रज्ञप्तेः 'क' प्रतौ 'कासफासे' इति पाठो विद्यते तथा चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' सङ्केतितप्रतिद्वये 'कासे फासे' इति पाठोस्ति, सङ्ख्यादृष्ट्यापि 'कासे फासे' इति नामद्वय युक्तमस्ति । वृत्तिद्वयेपि 'कामस्पर्श इति व्याख्यातमस्ति । सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तावुद्धृतासु गाथास्वपि 'कामफासे' इति पाठो विद्यते, किंतु स्थानाङ्गे (२।३२५) 'दो कासा दो फासा' इति पाठो लभ्यते ।

४. × (ट); एतत् पदं वृत्तिद्वयेपि व्याख्यातं नास्ति ।

५. स्थानाङ्गवृत्तौ 'इदं तत्रैव संग्रहणीगाथाभिर्नियन्त्रितम्' इत्युल्लेखपूर्वकं नव गाथा उद्धृताः सन्ति, तासु विद्यमानानां नाम्नां गद्यभागवर्तिभिर्नामभिः सह संवादित्वमस्ति, तेन एता गाथाः मूले स्वीकृताः । चन्द्रप्रज्ञप्तेः 'ट,व' संकेतितयोरादर्शयोस्तद्वृत्तौ च संग्रहणीगाथा नोपलभ्यते । सूर्यप्रज्ञप्त्यादर्शेषु एता निम्ननिर्दिष्टा गाथा लिखिताः सन्ति, सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ च एतेषामेव नाम्नां सुखप्रतिपत्त्यर्थं सङ्ग्रहणिगाथाषट्कमाह' इत्युल्लेखपूर्वकं नव गाथा उद्धृताः सन्ति । एतासु गाथासु यानि नामानि सन्ति, तेषां नाम्नां गद्यभागवर्तिभिर्नामभिः सर्वथा संवादित्वं नास्ति, तेन नैताः मूले स्वीकृताः—

इंगालए वियालए, लोहितंके[1] सणिच्छरे चेव ।
आहुणिए पाहुणिए कणकसणामावि पंचेव ॥१॥

---

१. लोहिकते (ग,घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमे सहिते अस्सासणे य कज्जोवए य कब्बरए ।
अयकरए दुंदुभए, संखसणामावि तिण्णेव ॥२॥
तिण्णेव कंसणामा, णीले रुप्पी य हुंति चत्तारि ।
भास तिल पुप्फवण्णे, दगवण्णे[1] काय बंधे य ॥३॥
इंदग्गि धूमकेतू य, हरि पिंगलए बुधे य सुक्के य ।
वहसति राहु अगत्थी, माणवए कामफासे य ॥४॥
धुरए पमुहे वियडे, 'विसंधिकप्पे पयल्ले'[2] ।
जडियाइल्लए[3] अरुणे, अग्गिल काले महाकाले ॥५॥
सोत्थिय सोवत्थिय वद्धमाणग तथा पलंबे य ।
णिच्चालोए णिच्चुज्जोए सयंपभे चेव ओभासे ॥६॥
सोयंकरे खेमंकर, आभंकर पभंकरे य बोधव्वे ।
अरए विरए य तधा, असोगे तह वीतसोगे य ॥७॥
विमल वितत्त वितत्थे, विसाल तह साल सुव्वते चेव ।
अणियट्टि एगजडि य, होई बिजडी य बोधव्वे ॥८॥
कर करिए रायग्गल, बोधव्वे पुप्फ भावकेतू य ।
अट्ठासीति खलु गहा, णेतव्वा आणुपुव्वीए ॥९॥

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तावपि एता गाथा लभ्यन्ते—

इंगालए वियालए, लोहिअक्खे[4] सणिच्चरे चेव ।
आहुणिए पाहुणिए, कणगसणामावि पंचेव ॥१॥
सोमे सहिए अस्सासणे य कज्जोवए कब्बरए ।
अयकर दुंदुभए वि य, संखसणामावि तिन्नेव ॥२॥
तिन्नेव कंसणामा, नीले रुप्पी हवंति चत्तारि ।
भास तिल पुप्फवन्ने,[5] दगवन्ने काय बंधे य ॥३॥
इंदग्गि धूमकेऊ, हरि पिंगलए बुधे य सुक्के य ।
वहसइ राहु अगत्थी, माणवगे कामफासे य ॥४॥
धुरए पमुहे वियडे, विसंधिकप्पे तहा पयल्ले[6] य ।
जडियालए[7] य अरुणे, अग्गिल[8] काले महाकाले ॥५॥
सोत्थिय सोवत्थिय, वद्धमाणग तहा पलंबे य ।
निच्चालोए निच्चुज्जोए सयंपभे चेव ओभासे ॥६॥
सेयंकर खेमंकर, आभंकर पभंकरे य बोधव्वे ।
अरए विरए य तहा, असोक तह वीयसोगे य ॥७॥
'विमल वितत्त'[9] वितत्थे, विसाल तह साल सुव्वए चेव ।
अनियट्टी एगजडी, य होइ वियडी य बोधव्वे ॥८॥

१. दगपंचवण्णे (ग,घ) ।
२. विसंधीकप्पे तहा णियल्ले या (ग,घ) ।
३. जडियालए (ग,घ) ।
४. 'लोहियंके' क्वचिल्लोहिताक्षः (पुवृ) ।
५. पुप्फवण्ण दग (हीवृ) ।
६. पगप्पे (हीवृ) ।
७. जाडालए (हीवृ) ।
८. अग्गि य (हीवृ) ।
९. होइ वितत्थ (हीवृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमे सहिए आसासणे य कज्जोवए य कब्बडए।
अयकरए दुंदुहए, संखसनामाओ तिन्नेव ॥२॥
तिन्नेव कंसणामा, णीला रुप्पी य होंति चत्तारि।
भास तिलपुप्फवन्ने, दगे य दगपणवण्णे य काय काकंधे ॥३॥
इंदग्गि धूमकेऊ, हरि पिंगलए बुहे य सुक्के य।
बहस्सइ राहु अगत्थी, माणवए कास फासे य ॥४॥
धुरए पमुहे वियडे, विसंधि णियले तहा पयल्ले य।
जडियाइलए अरुणे, अग्गिल काले कहाकाले ॥५॥
सोत्थिय सोवत्थिय, वद्धमाणगे तधा पलंबे य।
निच्चालोए णिच्चुज्जोए सयंपभे चेव ओभासे ॥६॥
सेयंकर खेमंकर, आभंकर पभंकरे य बोधव्वे।
अरए विरए य तहा, असोग तह वीयसोगे य ॥७॥
विमल वितत वितत्थे, विसाल तह साल सुव्वए चेव।
अनियट्टी एगजडी, य होइ विजडी य बोद्धव्वे ॥८॥
करकरए रायग्गल, बोद्धव्वे पुप्फ भावकेऊ य।
अट्ठासीई गहा खलु, णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥९॥

९. इइ एस पाहुडत्था, अभव्वजणहिययदुल्लहा इणमो।
उक्कित्तिता भगवती, जोतिसरायस्स पण्णत्ती ॥१॥
एस गहितावि संती थद्धे गारविय-माणि-पडिणीए।
अबहुस्सुए ण देया, तव्विवरीते भवे देया ॥२॥
सद्धा-धिति-उट्ठाणुच्छाह-कम्म-बल वीरिय-पुरिसकारेहिं।
जो सिक्खिओवि संतो, अभायणे पक्खिवेज्जाहि ॥३॥
सो पयवण-कुल-गण-संघबाहिरो णाणविणयपरिहीणो।
अरहंतथेरगणहरमेरं किर होंति वोलीणो ॥४॥
तम्हा धिति-उट्ठाणुच्छाह-कम्म-बल-वीरियसिक्खियं णाणं।
धारेयव्वं णियमा, ण य अविणीएसु दायव्वं ॥५॥
वीरवरस्स भगवतो, जरमरणकिलेसदोसरहियस्स।
वंदामि विणयपणतो, सोक्खुप्पाए सदा पाए ॥६॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर ७५,८७५

अनुष्टुप् श्लोक २,३७१ अक्षर ३

कर करिए[1] रायग्गल, बोधव्वे पुप्फ भाव केऊ य।
अठासीइ गहा खलु, नायव्वा आणुपुव्वीए ॥९॥

चन्द्रप्रज्ञप्तिसूर्यप्रज्ञप्त्योरादर्शेषु, स्थानाङ्गे, तद्वृत्तावुद्धृते सूर्यप्रज्ञप्तिपाठे, जंबूद्वीपप्रज्ञप्तेः संक्षिप्त-पाठे तद्वृत्तौ तथा त्रिलोकप्रज्ञप्तौ च उपलब्धानि महाग्रहनामानि अत्र कोष्ठकेषु प्रदर्शितानि सन्ति—

---

१. करए (हीवृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र०	मूल	'ट'	'ख'	'क'	'ग, घ'	ठाणं २।३२५	ठाणं वृत्ति[1]
१	इंगालए	,,	,,	,,	,,	इंगालगा	,,
२	वियालए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
३	लोहितक्खे	,,	,,	लोहितके	लोहिएके	,,	,,
४	सणिच्छरे	सणच्छंदे	सणिच्चरे	,,	,,	सणिच्चरा	,,
५	आहुणिए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
६	पाहुणिए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
७	कणे	,,	X	,,	,,	,,	,,
८	कणए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
९	कणकणए	,,	,	,,	,,	,,	,,
१०	कणविताणए	कणगवियाणए	X	,,	,,	कणगवितागणा	,,
११	कणसंताणए	,,	,,	कणगसंताणए	कणगसंताणए	कणगसंताणगा	,,
१२	सोमे	,,	ओसो	,,	,,	,,	,,
१३	सहिते	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१४	आसासणे	आसासणे	,,	अस्सासणे	अस्सासणे	,,	अस्सासणे
		रुकं १५					
१५	कज्जोवए	,,	,,	कज्जावए	X	,,	कज्जोयए
१६	कब्बडए	,,	,,	कब्बरए	कब्बरणे	,,	,,
१७	अयकरए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१८	दुंदुभए	,,	,,	,,	,,	,,	,,
१९	संखे	,,	,,	,,	,,	,,	,,
२०	संखणाभे	संखवणे	संखण्णोभे	,,	संखणाते	संखवण्णा	संखवण्णे
२१	संखवण्णाभे	,,	X	,,	,,	,,	,,
२२	कंसे	,,	X	,,	,,	,,	,,
२३	कंसणाभे	कंसवणे	X	,,	X	कंसवण्णा	कंसवण्णे
२४	कंसवण्णाभे	,,	X	,,	,,	,,	,,
२५	णीले	,,	,,	,,	,,	रुप्पी	,,
२६	णीलोभासे	नीलाभासे	,,	,,	णीलोतासी	रुप्पाभासा	,,
२७	रुप्पे	रुवी	रुप्पी	,,	,,	णीला	रुप्पी
२८	रुप्पोभासे	रुवीभास	,,	,,	,,	णीलोभासा	,,
२९	भासे	,,	,,	,,	,,	,,	,,
३०	भासरासी	,,	,,	,,	,,	,,	,,

१. अङ्गारकादयोऽष्टाशीतिर्ग्रहाः सूत्रसिद्धा. केवलमस्मद् दृष्टपुस्तकेषु केषुचिदेव यथोक्तसंख्यां संवदतीति सूर्यप्रज्ञप्त्य-नुसारेणासाविह संवदनीया, तथाहि तत्सूत्रम् —तत्थ······(वृ.) ।

जं० ७।१८६	सूत्र	चंद्र	जं० पुव	जं० हीव	तिलोयपण्णत्ति
इमाहिं गाहाहिं—इंगालए वियालए, लोहितक्खे सणिच्छरे चेव । आहुणिए पाहुणिए, कणगसणामा य पंचेव ॥१॥ सोमे सहिए आसासणे य कज्जोवए य कव्वडए अयकरए दुंदुभए संखसणामेवि तिण्णेव ॥२॥ एवं भाणियव्वं जाव भावकेउस्स………	अङ्गरकः	,,	,,	,,	बुध
	विकालकः	,,	विकालगः	विकालः	शुक्र
	लोहित्यकः	लोहिताक्षः	लोहितांक[२]	लोहिताक्षः	बृहस्पति
	शनैश्चरः	,,	,,	,,	मंगल
	आधुनिकः	,,	,,	,,	शनि
	प्राधुनिकः	,,	,,	,,	काल
	कणः	,,	,,	,,	लोहित
	कणकः	,,	,,	,,	कनक
	कणकणकः	,,	,,	,,	नील
	कणवितानकः	,,	,,	कणकवितानकः	विकाल
	कणसन्तानकः	,,	,,	कणकसंतानकः	केश
	सोमः	,,	,,	,,	कवयव
	सहितः	,,	,,	,,	कनक-संस्थान
	आश्वासनः	,,	आश्वासनः	आश्वासनः	दुन्दुभक
		रूतः १५			
	कार्योपगः	,,	,,	,,	रक्तनिभ
	कर्बटकः	कर्बुर	कर्बुरकः	कर्ब्बुरः	नीलाभास
	अजकरकः	,,	,,	,,	अशोकसंस्थान
	दुन्दुभकः	,,	,,	,,	कंस
	शङ्खः	,,	,,	,,	रूपनिभ
	शङ्खनाभः	,,	,,	,,	कंसकवर्ण
	शङ्खवर्णाभः	,,	,,	,,	शंखपरिणाम
	कंसः	,,	,,	,,	तिलपुच्छ
	कंसनाभः	,,	,,	,,	शंखवर्ण
	कंसवर्णाभः	,,	,,	,,	उदकवर्ण
	नीलः	,,	,,	,,	पंचवर्ण
	नीलावभासः	नीलोवभासः	,,	,,	उत्पात
	रूप्पी	,,	,,	,,	धूमकेतु
	रूप्यावभासः	,,	,,	,,	तिल
	भस्म	,,	,,	,,	नभ
	भस्मराशिः	,,	,,	,,	क्षारराशि

२. क्वचिल्लोहिताक्षः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क०	मूल	'ट'	'व'	'क'	'ग,घ'	ठाणं २।३२५
३१	तिले	,,	,,	,,	,,	,,
३२	तिलपुप्फवण्णे	,,	,,	,,	,,	,,
३३	दगे	,,	,,	,,	,,	,,
३४	दगवण्णे	,,	दगयवण्णे	,,	,,	दगपंचवण्णा
३५	काए	,,	,,	,,	,,	,,
३६	काकंधे	,,	,,	वंधे	वंडे	,
३७	इंदग्गी	,,	,,	,,	,,	,,
३८	धूमकेतू	,,	,,	,,	,,	,,
३९	हरी	,,	हेरी	,,	हेरी	,,
४०	पिंगलए	,,	,,	,,	पिगए	पिंगला
४१	बुधे	,,	,,	,,	,,	,,
४२	सुक्के	,,	,,	,,	वुक्के	,,
४३	बहस्सई	,,	,,	,,	,,	,,
४४	राहू	,,	,,	,,	,	,,
४५	अगत्थी	,,	,,	,,	आगत्था	,,
४६	माणवगे	,,	,,	,,	,,	,,
४७	कासे	,,	,,	कासफासे	कामफासे	,,
४८	फासे	,,	,,	×	×	,,
४९	धुरे	,,	,,	,,	,,	,,
५०	पमुहे	,,	,,	,,	,,	,,
५१	वियडे	,,	,,	,,	×	,,
५२	विसंधीकप्पे	विसंधी	विसंधी	,,	विसंधीकप्पेल	विसंधी
५३	[णियल्ले ?]	×	नेतले	×	×	णियल्ला
५४	पयल्ले	,,	पत्तल्ले	,,	,,	पइल्ला]
५५	जडियायलए	जयले	जडियातिलते	,,	जडिएबलए	जडियाइलगा
५६	अरुणे	,,	,,	,,	,,	,,
५७	अग्गिलए	,,	अगिलए	,,	अग्गन्नए	,,
५८	काले	,,	,,	,,	,,	,,
५९	महाकाले	,,	,	,,	,,	महाकालगा
६०	सोत्थिए	,,	,,	,,	×	,,
६१	सोवत्थिए	,,	,,	,,	,,	,,
६२	वद्धमाणगे	,,	,,	,	,,	,,
६३	पलंबे	,,	,,	,	,,	,,
६४	णिच्चालोए	,,	,,	,,	,,	,,
६५	णिच्चुज्जोते	,,	,,	,,	,,	,,
६६	सयंपभे	,,	,,	,,	,,	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठाणं वृत्ति	सूर्य०	चंद्र	जं० पुव्	जं० हीव्	तिलोयपण्णत्ति
,,	तिल:	,,	,,	,,	विजिष्णु
,,	तिलपुष्पवर्णक:	,,	,,	पुष्पवर्ण:	सदृश
,,	दक:	दकवर्ण:	,,	,,	संधि
दगपंचवण्णे	दकवर्ण:	,,	,,	,,	कलेवर
,,	काय:	,,	,,	,,	अभिन्न
,,	वन्ध्य:	,,	,,	,,	ग्रन्थि
,,	इन्द्राग्नि:	,,	,,	,,	मानवक
,,	धूमकेतु:	सूनकेतु:	,,	,,	कालक
,	हरि:	,,	,,	,,	कालकेतु
पिंगले	पिङ्गल:	,,	,,	,,	निलय
,,	बुध:	,,	,,	,,	अनय
,,	शुक्र:	,,	,,	,,	विद्युज्जिह्व
,,	बृहस्पति:	,,	,,	,,	सिंह
,,	राहु:	,,	,,	,,	अलक
,,	अगस्ति:	,,	,,	,,	निर्दु:ख
,,	माणवक:	,,	,,	,,	काल
,,	कामस्पर्श:	,,	,,	,,	महाकाल
,,	धुर:	,,	,,	,,	रुद्र
,,	प्रमुख:	,,	,,	,,	महारुद्र
,,	विकट:	,,	,,	,,	सन्तान
,,	विसंधिकल्प:	,,	,,	,,	विपुल
विसंधी	प्रकल्प:	,,	,,	,,	संभव
नियल्ले	जटाल:	,,	,,	,,	स्वार्थी
,,	अरुण:	,,	,,	,,	क्षेम
जडियाइल्लए	अग्नि:	,,	,,	,,	चन्द्र
,,	काल:	,,	,,	,,	निर्मन्त्र
,,	महाकाल:	,,	,,	,,	ज्योतिष्माण
,,	स्वस्तिक:	,,	,,	,,	दिशासंस्थित
,,	सौवस्तिक:	,,	,,	,,	विरत
,,	वर्द्धमानक:	,,	,,	,,	वीतशोक
,,	प्रलम्ब:	,,	,,	,,	निश्चल
,,	नित्यालोक:	,,	,,	,,	प्रलम्ब
,,	नित्योद्योत:	,,	,,	,,	भासुर
,,	स्वयंप्रभ:	,,	,,	,,	स्वयंप्रभ
,,	अवभास:	,,	,,	,,	विजय
,,	श्रेयस्कर:	,,	,,	,,	वैजयन्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क०	मूल	'ट'	'ब'	'क'	'ग,घ'	ठाणं २।३७५
६७	ओभासे	,,	,,	,,	,,	,,
६८	सेयंकरे	,,	,,	,,	,,	,,
६९	खेमंकरे	,,	,,	,,	,,	,,
७०	आभंकरे	,,	,,	,,	,,	,,
७१	पभंकरे	,,	खेमंकरे पभंकरे	,,	×	,,
७२	अरए	,,	अपरातिए	,,	,,	अपराजिता
७३	विरए	×	अपरते	,,	,,	अरया
७४	असोगे	,,	,,	,,	,,	,,
७५	वीतसोगे	विगयसोगे	विगतसोगे	,,	,,	विगतसोगा
७६	विमले	×	,,	,,	,,	,,
७७	वितत्ते	,,	,,	,,	वितते	वितता
७८	वित्तत्थे	वितये	वितत्थे	,,	,,	वितत्था
७९	विसाले	,,	,,	,,	,,	,,
८०	साले	,,	×	,,	,,	,,
८१	सुव्वते	,,	सव्वतो	,,	,,	,,
८२	अणियट्टी	,,	अणियट्टिए	,,	अणिट्ठी अट्ठी	,,
८३	एगजडी	,,	,,	,,	,,	,,
८४	दुजडी	,,	,,	,,	,,	,,
८५	करकरिए	कर करिए	कर करिए	कर ८३ करिए ८४	कर करिए	,,
८६	रायग्गले	राय ग्गले	राय ग्गले	राय ८५ ग्गले ८६	राय ग्गले	,,
८७	पुप्फकेतू	,,	पुप्फकेता	,,	,,	,,
८८	भावकेतू	,,	×	,,	,,	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठाणं वृत्ति	सूत्र०	चंद्र	जं० पुव्	जं० हीव्	तिलोयपण्णत्ति
,,	क्षेमंकरः	,,	,,	,,	सीमंकर
,,	आभंकरः	,,	,,	,,	अपराजित
,,	प्रभङ्करः	,,	,,	,,	जयन्त
,,	अरजा	अरजाः	,,	अरजाः	विमल
,,	विरजा	,,	,,	विरजाः	अभयंकर
अपराजिए	अशोकः	,,	,,	,,	विकस
अरए	वीतशोकः	अशोकावीति	,,	,,	काष्ठी
,,	वितप्तः	वितप्तग्रहः	विमलः ७४ वितप्तः ७५	विततः	विकट
,,	विवस्त्रः	थिवअः	,,	,,	कज्जली
,,	विशालः	,,	,	,,	अग्निज्वाल
वियत्ते	शालः	,,	,,	,,	अशोक
वितत्थे	सुव्रतः	,,	,,	,,	केतु
,,	अनिवृत्तिः	अतवृत्तिः	,,	,,	क्षीररस
,,	एकजटी	,,	,,	,,	अघ
,,	द्विजटी	,,	,	,,	श्रवण
,,	करः	,,	,,	,,	जलकेतु
,,	करिकः	,,	,	,,	केतु
,,	राजः	राजा	राजा	राजा	अंतरद
,,	अर्गलः	,,	,,	,,	एकसंस्थान
,,	पुष्पः	भावकेतुः	पुष्पकेतुः ८७	,,	अश्व
,,	भावः	धूम्रकेतुः	भावकेतुः ८८	,,	भावग्रह
,,	केतुः	पुष्यकेतुः[१]	,,	,,	महाग्रह

१. अतः चन्द्रप्रज्ञप्तिवृत्तौ एतावान् अतिरिक्तः पाठो व्याख्यातोस्ति --एते अंगारकादयो ग्रहाः सर्वेपि प्रत्येकं चतुर्णां सामानिकसहस्राणां चतसृणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च स्वविमानवास्तव्यानां देवानां चाधिपत्यमनुभवंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिसिट्ठं

चन्द्रप्रज्ञप्ति व सूर्यप्रज्ञप्ति का पाठभेद

चन्द्रप्रज्ञप्ति	सूर्यप्रज्ञप्ति
सूत्र १०	सूत्र ९
,, १	×
,, २-५	सूत्र ६-९
,, ६-१०	,, १-५

१।१ से ६ पाहुडपाहुडों में कहीं-कहीं शब्दभेद है।

१।७ पाहुडपाहुड में पाठभेद है। वह इस प्रकार है—

चन्द्रप्र०

ता समचउरंससंठाणसंठिता णं[1] मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता विसमसंठाणसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता समचउक्कोणसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता विसमचउक्कोणसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता समचक्कवालसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता विसमचक्कवालसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु—ता चक्कद्धचक्कवालसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु—ता छत्तागारसंठिता णं मंडलसंठिती आहितेति वएज्जा एगे एवमाहंसु ८ 'तत्थ

सूर्यप्र०

ता सव्वावि मंडलवाता समचउरंससंठाणसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु १ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता विसमचउरंससंठाणसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु २ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता समचउक्कोणसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ३ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता विसमचउक्कोणसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ४ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता समचक्कवालसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ५ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता विसमचक्कवालसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु ६ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता चक्कद्धचक्कवालसंठिता पण्णत्ता एगे एवाहंसु ७ एगे पुण एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता छत्तागारसंठिता पण्णत्ता एगे एवमाहंसु—८ तत्थ जेते एवमाहंसु—ता सव्वावि मंडलवता छत्तागारसंठिता पण्णत्ता, एतेणं नएणं नायव्वं, नो चेव णं

---

१. 'णं' इति वाक्यालंकारे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेते एवमाहंसु ता छत्तागारसंठिता णं मंडल-संठिती आहितेति वएज्जा,"[1] एतेणं नएणं नायव्वं, नो चेव णं इतेरेहिं ।

इतरेहिं, पाहुडगाहाओ भाणियव्वाओ ।

चं० १।२९-३२

सू० १।२८-३१

२९. 'ता अब्भंतराए मंडलवयाए बाहिरा मंडल-बाहा बाहिराए मंडलवयाए अब्भितरा मंडलबाहा एस णं अद्धा पंचदसुत्तरे जोयणसते आहितेति वएज्जा ।

२८. ता अब्भितराओ····

३०. ता अब्भंतराए मंडलवयाए अब्भंतरा मंडल-बाहा बाहिराए मंडलवयाए एस णं अद्धा पंचदसुत्तरे जोयणसए अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितेति वएज्जा"[2] ।

२९. अब्भितराए मंडलवताए····

३१. 'ता अब्भंतराए मंडलवयाए अब्भितरा मंडलबाहा बाहिराए मंडलवयाए बाहिरा मंडल-बाहा एस णं अद्धा पंचनवुत्तरे जोयणसते तेरस एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितेति वएज्जा"[3] ।

३०. ता अब्भंतराओ···

३२. 'अब्भंतराए मंडलवयाए अब्भंतरा मंडलबाहा बाहिराए मंडलवयाए एस णं अद्धा पंचदसुत्तरे जोयणसते आहितेति वएज्जा"[4] ।

३१. ता अब्भितराए····

चं, चंवृ

सू०, सूवृ०

४।२. आहियत्ति वएज्जा

पण्णत्ता (सर्वत्र)

---

१. × (ट) ।

२. ता अब्भंतरातो मंडलवतातो बाहिरा मंडलवता बाहिरा मंडलवतातो अब्भंतरा मंडलवया । बाहिरा मंडलवयाते एस णं अद्धा पंचदसुत्तरे जोयणसते अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिया (ट); ता अब्भंतराए मंडलवयाए अब्भंतरा मंडलबाहा बाहिराए मंडलवयाए अब्भंतरा मंडलबाहा एस णं अद्धा पंचदसुत्तरे जोयणसते आहियाति वदेज्जा । ता अब्भंतराए मंडलवयाए अब्भंतरा मंडला बाहिरा एस णं अद्धा पंचनवुत्तरे जोयणसते अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिए (व) ।

३. ता अब्भंतराए मंडलवयाते अब्भंतरमंडलबाहा बाहिराए मंडलवताए बाहिरा मंडलबाहा एस णं अद्धा पंचनवुत्तरे जोयणसते तेरस एगट्ठिभागे जोयणस्स आहितेति वदेज्जा (ट); अब्भंतराए मंडलवयाए बाहिरा मंडलबाहा बाहिराए मंडलवयाए अब्भंतरा मंडलबाहा एस णं अद्धा पंच-नवुत्तरे जोयणसते तेरस एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिता (व) ।

४. अब्भंतराते मंडलवताते अब्भंतरा मंडलवता बाहिराए मंडलवयाते एस णं अद्धा केवतियं आहितेति वदेज्जा ? ता पंचदसुत्तरे जोयणसते आहियति वदेज्जा (ट); अब्भंतराए मंडलवयाए बाहिरा मंडलबाहा एस णं अद्धा पंचदसुत्तरे जोयणसते आहिताति वएज्जा (व) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४।३. एवं ताओ इत्यादि। एवमुक्तेन प्रकारेण चन्द्रसूर्यसंस्थितिगतेन प्रकारेणेत्यर्थः ८ एवानन्तरोदितचन्द्रसूर्यसंस्थितिगता गेहसंस्थितया सहाऽष्टौ प्रतिपत्तयो नेतव्याः यावदियमष्टमा वालग्गपोत्तिया संठिया तावखित्तसंठिए आहियत्ति वएज्जा।

४।३ एवमुक्तेन प्रकारेण एतेनान्तरोदितेनाभिलापेन।

एवं जाव वालग्गपोत्तिया संठिता तावखेत्तसंठिई पण्णत्ता। इति एवमनन्तरोक्तेन प्रकारेण चन्द्रसूर्यसंस्थितिगतेन प्रकारेणेत्यर्थः गृहसंस्थिताया ऊर्ध्वं तावद् वक्तव्यं यावद् वालाग्रपोत्तिकासंस्थिता प्रज्ञप्ता इति तच्चैवम्।

एके पुनरेवमाहुः

१०।६।२५ चंवृ हस्त० पत्र ७८

एवं नेयव्वमिति एवमुक्तेन प्रकारेण शेषमप्यमावास्याजातं नेतव्यम्। नवरं मार्गशीर्ष्यां माघ्यां फाल्गुन्यामाषाढ्यां च कुलोपकुलं भणितव्यम्, शेषाणां त्वामावास्यानां कुलोपकुलं नास्ति ततो न वक्तव्यम्।

सूवृ पत्र १२७

'एवं नेयव्व' मिति एवमुक्तप्रकारेण शेषमप्यमावास्याजातं नेतव्यम्, नवरं मार्गशीर्षीं माघीं फाल्गुनीमाषाढीममावास्यां कुलोपकुलमपि युनक्तीति वक्तव्यम्, शेषासु त्वमावास्यासु कुलोपकुलं नास्ति।

१०।६।५८ : चंवृ पत्र ८०

तिग तिग पंचग दस

जं० ७।१३० तिग तिग पंचेगसयं

सूवृ पत्र १३१

तिग तिग पंचग सय

दोनों वृत्तियों (चंवृ व सूवृ) में गाथाएं उद्धृत हैं।

१०।१०।६४ : चंवृ पत्र ८०,८१

एवमित्यादि एवमुक्तेन प्रकारेण एतेनाऽनंतरोदितेनाभिलापेन यथैव जंबूद्वीपप्रज्ञप्तौ भणितं तथैव इहापि भणितव्यम्। यावदाषाढमासचिंतायां। तंसि च णमित्यादि। तच्चैवं धणिट्ठा चउद्दस अहोरत्ते नेइ, सयभिसया सत्तअहोरत्ते नेइ, पुव्वभद्दवया अट्ठअहोरत्ते नेति।····पश्चात्यं तु सूत्रं सकलमपि सुगमम्।

सूवृ पत्र १३३

तत्र धनिष्ठा तस्मिन् भाद्रपदे मासे प्रथमान् चतुर्दश अहोरात्रान् स्वयं अस्तङ्गमनेनाहोरात्रपरिसमापकतया नयति, तदनन्तरं शतभिषक्नक्षत्रं सप्ताहोरात्रान् ततः··········एवं शेषमासगतान्यपि सूत्राणि भावनीयानि।

१०।१३।८४ सुपीए—'ट' सुठिए 'व' सुट्ठीजे 'चंवृ' पंचमः स्थपीतिः। 'सूवृ' पञ्चमः सुपीतः।

बंभे—'ट' पम्हे 'चंवृ' नवमः पक्ष्मः। 'सूवृ' नवमः ब्रह्मा।

तट्ठे—'चंवृ' द्वादशं स्रष्टा। 'सूवृ' द्वादश त्वष्टा।

वारुणे—'ट' वावरे 'चंवृ' अपरः पञ्चदशः। 'सूवृ' पंचदशः वारुणः।

वीससेणे—'ट' विजयसेणे 'चंवृ' अष्टादशो विजयसेनः। 'सूवृ' अष्टादशो विश्वसेनः।

सव्वट्ठे—'चंवृ' एकोनत्रिंशतितमः सत्यवान्। 'सूवृ' एकोनत्रिंशत्तमः सर्वार्थः।

१०।१४।८६ चंवृ

तृतीयो मणरहः

दिवसाणं णामधेज्जा (ट)।

दिवसानां नामधेयानि व्याख्यातानीति वदेत्।

सूवृ

तृतीयो मणोहर :

दिवसा।

दिवसा आख्याता इति वदेत्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०।२२।१४८ चंवृ पत्र ११०

चन्द्रविषयमतिदेशमाह—एवमित्यादि एवं येनाभिलापेन चन्द्रस्य पौर्णमास्य उक्तास्तेनैवभिलापेनाऽमावास्याऽपि वक्तव्यास्तद्यथा प्रथमा द्वितीया तृतीया द्वादशी ।

१८।१ चंवृ पत्र १५५

वयं पुण मित्यादि। वयं पुनरुत्पन्नकेवलज्ञाना एवं वक्ष्यमाणेन वदामस्तमेव प्रकारमाह। ता इमीसे इत्यादि। ता इति पूर्ववत् अस्या रत्नप्रभायाः पृथ्व्याः बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूद्र्ध्वं सप्तयोजनशतानि नवत्यधिकानि अबाधया कृत्वा इति गम्यते। अन्तरीकृत्येति भावः अत्रान्तरेऽधस्तनोरूपं ज्योतिश्चक्रं चारं चरति। मंडलगत्या परिभ्रमणं प्रतिपद्यते। तस्या अस्या एव रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयात् भूमिभागात् ऊद्र्ध्वमष्टौ योजनशतान्यबाधया कृत्वा अत्रान्तरे सूर्यविमानं चारं चरति। तथा अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद् भूमिभागाद् उद्र्ध्वमष्टौ योजनशतान्यबाधया कृत्वा अत्रान्तरे सूर्यविमानं चारं चरति। तस्मादेवाधस्तया अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयात् भूमिभागादूद्र्ध्वं अष्टौ योजनशतानि अशीत्यधिकानि अबाधया कृत्वा अत्रान्तरे सूर्यविमानं चारं चरति। तस्मादेवाधस्तनात् तारारूपाज्जोतिश्चक्रादूद्र्ध्वं नवति योजनान्यूर्ध्वमबाधया कृत्वा अत्रान्तरे चन्द्रविमानं चारं चरति। दशोत्तरयोजनशतमबाधया कृत्वा अत्रान्तरे चंद्रविमानं चारं चरति।

सूवृ पत्र १८४

चन्द्रविषयं प्रश्नसूत्रमाह—'ता एएसि ण' मित्यादि, तत्र युगे एतेषामनन्तरोदितानां पञ्चानां संवत्सराणां मध्ये प्रथमाममावस्यां चन्द्रः कस्मिन्देशे स्थितः परिसमापयति ? भगवानाह—'ता जंसिण' मित्यादि, तत्र यस्मिन् देशे स्थितः सन् चन्द्रश्चरमां द्वाषष्टि—द्वाषष्टितमाममावस्यां परिसमापयति, ततोऽमावास्यास्थानाद्—अमावास्यापरिसमाप्ति स्थानात् परतो मण्डलं चतुर्विंशत्याधिकेन शतेन छित्त्वा तद्‌गतान् द्वात्रिंशतं भागान् उपादायात्र प्रदेशे स चन्द्रः प्रथमाममावास्यां परिसमापयति 'एव' मित्यादि, एवमुक्तेन प्रकारेण येनैवाभिलापेन चन्द्रस्य पौर्णमास्यो भणितास्तेनैवाभिलापेनामावास्या अपि भणितव्याः। तद्यथा—द्वितीया तृतीया द्वादशी च।

सूवृ पत्र २६१

'वयं पुण एवं वदामो' इत्यादि, वय पुनरुत्पन्नकेवलवेदसः एवं—वक्ष्यमाणेन प्रकारेण वदामस्तमेव प्रकारमाह—'ता इमीसे' इत्यादि, ता इति पूर्ववत्, अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयात् भूमिभागादूर्ध्वं सप्तयोजनशतानि नवतानि नवत्यधिकानि उत्प्लुत्य गत्वा अत्रान्तरे अधस्तनं ताराविमानं चारं चरति—मण्डलगत्या परिभ्रमणं प्रतिपद्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशोत्तरं योजनशतमबाधया कृत्वा अत्रान्तरे सर्वोपरितनं तारारूपं ज्योतिश्चक्रं चारं चरति। तथा सूरविमाणातो इत्यादि । ता इति तस्मात्सूर्य-विमानादूर्द्ध्वमशीतियोजनान्यबाधया कृत्वा अत्रान्तरे चन्द्रविमानं चारं चरति। एवं जहेव जीवाभिगमे तहेव नेयव्वमिति एवमुक्तेन प्रकारेण यथैव जीवाभिगमेऽभिहितं तथैव ज्ञातव्यम्।

१६।१ चंवृ पत्र १६१

एवमुक्तेन प्रकारेण एतेनानन्तरोदितेनाभिलापेन या एव तृतीये प्राभृते द्वादशप्रतिपत्तयः उक्तास्ता एव इहापि ज्ञातव्याः नवरमनेन क्रमेण ज्ञातव्या-श्चतुर्थ्यां प्रतिपत्तौ प्रत्येकं सप्त चन्द्राः सूर्याश्च वक्तव्याः। पंचम्यां दश एवं यावद् द्वादश्यां प्रति-पत्तौ द्वाशप्ततं चन्द्रसहस्रं द्वासप्तसूर्यसहस्रमिति। तत्र चैवमभिलापः एगे पुण एवमाहंसु। ता सत्त······

सूवृ पत्र २७१

एवं··–उक्तेन प्रकारेण एतेनानन्तरोदितेनाभिलापेन तृतीयप्राभृतप्राभृतोक्तप्रकारेण द्वादशप्रतिपत्ति-विषयं सकलमपि सूत्रं नेतव्यं, तच्चैवम्—'सत्तचंदा सत्त सूरा' इति, एगे पुण एवमाहंसु ता सत्त···

चंवृ पत्र १६१

ता जंबूद्दीवे णं दीवे दो चंदा इत्यादि अत्र जहा जीवाभिगमे जाव ताराओ त्ति वचनं सूत्रं पाठो द्रष्टव्यः। दो चंदा पभासिसु वा पभासिंति वा। दो सूरिया तवयंसु वा तवयंति वा तवइस्संति वा। छप्पन्नं णक्खत्ता जोगं जोएंसु वा जोयंति वा जोइस्संति वा। छावत्तरं गहसयं चारिं चरिंसु वा चरिस्संति वा। एगं सयसहस्सं बत्तीसं च सहस्सा नव सया पन्नासा तारागणकोडिकोडीणं सोभंसु वा सोभिस्संति वा

दो चंदा दो सूरा नक्खत्ता खलु हवंति छप्पन्ना।
बावत्तरं गहसयं, जंबूदीवे वियारी णं॥
एगं च सयसहस्सं तेत्तीसं खलु भवे सहस्साइं।
नवसयसया पन्नासा, तारागणकोडिकोडीणं॥

इति। अस्य व्याख्या द्वौ चंद्रौ········

१६।१ सूवृ पत्र २७२

'ता जंबुद्दीवे णं दीवे दो चंदा इत्यादि, जम्बूद्वीपे द्वौ चन्द्रौ·······

चंवृ पत्र १६२।१

ता लवणे समुद्दे चत्तारि चंदा पभासिसु वा जाव ताराउत्तिवचनं········। इदं सकलमपि सूत्रं सुगमं

सूवृ पत्र २७३

ता लवणेणं समुद्दे इत्यादि सुगमं, लवणसमुद्दे चत्वारः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवरम् लवणसमुद्दे चत्वारः ।

चंवृ १६२।१

ता लवणन्नं समुद्दमित्यादि सुगमं । ता धायइ-संडेणमित्यादि । अत्र जहा जीवाभिगमे जाव ताराउत्ति..........तारागणकोडिकोडीणमिति । इदमपि सुगमं नवरं

सूवृ पत्र २७३

'ता लवणं णं समुद्द' मित्यादि सकलमपि सुगमम्, नवरम्

चंवृ पत्र १६२।२

धायइसंडेणमित्यादि सुगमं । ता कालोए णं समुद्दे इत्यादि । अत्र एवं विष्कंभो.......तारागणकोडि-कोडीणमिति एतदपि सुगमं । नवरं

सूवृ पत्र २७३

ता धायइसंडण्ण' मित्यादि, एतदपि सकलं सुगमं, 'ता कालोए णं समुद्दे' इत्यादि, एतदपि सुगमं, नवरं

चंवृ १६३।१

ता कालोय णं समुद्दपुक्खरवरेणमित्यादि सुगमं, ता पुक्खरवरेणमित्यादि । अत्र एवं विष्कंभो परिक्खेवो इमं जाव ताराउत्ति...तारागणकोडि-कोडीणमिति सुगमं । गणितभावना त्वियं पुष्क-रवरद्वीपस्यैकतोपि चक्रवालविष्कंभः षोडशलक्षा परतोपि षोडशेति । द्वात्रिंशतिकालोदधिसमुद्रे एकतोप्यष्टौ लक्षा अपरतोप्यष्टाविति षोडश-धातकीषंडेत्वेकतोपि चतस्रो लक्षाः अपरतोपि चतस्रो ।

सूवृ २७३

ता कालोयं णं समुद्दं पुक्खरवरेण मित्यादि सुगमं, गणितभावना त्वियं पुष्करवरद्वीपस्य पूर्वतः षोडश लक्षा अपरतोपीति द्वात्रिंशल्लक्षाः कालोदधेः पूर्वतोष्टौ अपरतोऽप्यष्टाविति षोडश धातकीखण्ड एकतोपि चतस्रो लक्षा अपरतोपि चतस्र इत्यष्टौ ।

चंवृ पत्र १६३

ता अभ्यंतरपुक्खरद्धेणमित्यादि सुगमं ।....तारा-गणकोडिकोडीणं । सोभेंसु वा इति सुगमं । नवरं परिधिगणितभावना

सूवृ पत्र २७४

ता अब्भितरपुक्खरद्धे वा' मित्यादि सर्वमपि सुगमं, नवरं परिधिगणितभावना

चंवृ पत्र १६४।१ से १६५।१

ता मणुसखेत्तेणं केवइयं आयामविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं आहियत्ति वएज्जा । एवं विष्कंभो परिक्खेवो जोइसं जोइसगाओ य जाव एकससी-परिवारो.......एतस्य समस्तस्यापि सूत्रस्य क्रमेण व्याख्या तत्र मनुष्यक्षेत्रस्यायामविष्कंभविषये पंचचत्वारिंशल्लक्षाः

सूवृ पत्र २७४

ता मणुसखेत्ते णं केवइयमित्यादि सुगमं । नवरं मानुषक्षेत्रस्यायामविष्कंभपरिमाणं पञ्चचत्वारिं-शल्लक्षाः

चंवृ पत्र १७६

तथा विचित्रैर्नानारूपैरुल्लोचैश्चन्द्रोदयैराकीर्णं क्वचित् । चिल्लगाति पाठसूत्रचिल्लगं देदीप्यमानं

सूवृ पत्र २९३

विचित्रेण—विविधचित्रयुक्तेनोल्लोचेन — चन्द्रो-दयेन 'चिल्लियं' त्ति दीप्यमानं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंवृ पत्र १७७
तत्थ खलु इत्यादि। तत्र तेषु चंद्रसूर्यग्रहनक्षत्रताराख्पेषु मध्ये इमेऽष्टाशीति संख्या ग्रहाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा इंगालए इत्यादि अंगारकः १ विकालकः २ लोहिताक्षः ३ शनैश्चरः ४.........अतवृत्तिः ८० एकजटी ८१ द्विजटी ८२ करः ८३ करिकः ८४ राजा ८५ अर्गलः ८६ भावकेतु ८७ धूम्रकेतुः पुष्पकेतुः ८८ एते अंगारकादयो ग्रहाः सर्वेपि प्रत्येकं चतुर्णां सामानिकसहस्राणां चतसृणां अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सामानीकाधिपतीनां षोडशानां आत्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च स्वविमानवास्तव्यानि देवानां चाधिपत्यमनुभवन्ति। सम्प्रति सकलशास्त्रोपसंहारमाह—

सूवृ पत्र २९५
तत्थ खलु' इत्यादि, तत्र—तेषु चन्द्रसूर्यनक्षत्रताराख्पेषु मध्ये ये पूर्वमष्टाशीतिसङ्ख्या ग्रहाः प्रज्ञप्ताः ते इमे, तद्यथा 'इंगालए' इत्यादि सुगमं एतेषामेव नाम्नां सुखप्रतिपत्त्यर्थं संग्रहणीगाथाषट्कमाह इंगालए वियालए लोहियंके सणिच्छरे चेव।.... अनिवृत्ति ७९ एकजटी ८० द्विजटी ८१ करः ८२ करिकः ८३ राजः ८४ अर्गलः ८५ पुष्पः ८६ भावः ८७ केतुः ८८। सम्प्रति सकलशास्त्रोपसंहारमाह—

चंवृ पत्र १७८
एसगहियावसंतीधद्धेगार वियमाणि पडिणीए। अबहुस्सुए न देयातविचरीए भवेदेया एषा चन्द्रप्रज्ञप्तिः सूर्यसम्यक्करणेन.........
सद्धाधिउट्ठाणुच्छाहकम्मबलविरियपुरिसकारेहिं। जो सिक्खाओविसंतो अभायणे पक्खिविज्जाहिं। सो पवयणकुल-गण-संघबाहिरो नाणविणयपरिहीणो अरहंत-थेर-गणहर-मेरं किर होइ वोलीणे श्रद्धा श्रवणं.........
स्वयं शिष्यतोपि चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्रार्थोभयोपि सन् यो दाक्षिण्यादिना अन्तेवासिन्यभाजनेऽयोग्ये प्रक्षिपेत्.........
यत् चन्द्रप्रज्ञप्तिलक्षणं ज्ञानं मुमुक्षुणा सता शिक्षितं। तन्नियमादात्मन्येव धर्त्तव्यम्। ननु जातुचिदप्यविनीतेषु दातव्यं तदानोक्तप्रकारेण आत्म पर.........

सूवृ पत्र २९६
'एषा गहियावि' इत्यादि गाथाद्वयं, एषा.... सूर्यप्रज्ञप्तिः स्वयं सम्यक्करणेन ....
'सद्धे' त्यादि, श्रद्धा श्रवणम्.........
स्वयं शिक्षितोपि गृहीतसूर्यप्रज्ञप्तिसूत्रार्थोभयोपि सन् यो दाक्षिण्यादिना अन्तेवासिनि अभाजने—अयोग्ये प्रक्षिपेत् ....
यत् ज्ञानं—सूर्यप्रज्ञप्त्यादि स्वयं मुमुक्षुणा सता शिक्षित तन्नियमादात्मन्येव धर्त्तव्यं, न तु जातुचिदप्यविनीतेषु दातव्यं, उक्तप्रकारेण तद्दाने आत्म-पर.............

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवंगा--

निरयावलियाओ
कप्पवडिंसियाओ
पुप्फियाओ
पुप्फचूलियाओ
वण्हिदसाओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमो वग्गो

निरयावलियाओ

पढमं अज्झयणं

काले

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था—रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धे[1]। 'गुणसिलए चेइए'[2]—वण्णओ[3]। असोगवरपायवे[4]। पुढविसिलापट्टए[5]॥

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं अणगारे जाइसंपण्णे जहा केसी जाव[6] पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[7] °गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, रायगिह-नयरस्स बहिया गुणसिलए चेइए° अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं[8] °तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया॥

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी जंबू नामं अणगारे 'कासवगोत्तेणं सत्तुस्सेहे'[9] समचउरंससंठाणसंठिए जाव[10] संखित्तविउलतेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू[11] °अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ॥

४. तए णं से भगवं जंबू जायसड्ढे जाव[12] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—उवंगाणं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[13] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते॥

५. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[14] संपत्तेणं उवंगाणं पंच वग्गा

---

१. पू०—ओ० सू० १।

२. उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए गुणसिलए नामं चेइए होत्था (वृ)।

३. ओ० सू० २-७।

४. पू०—ओ० सू० ८-१२।

५. पू०—ओ० सू० १३।

६. राय० सू० ६८६।

७. सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव रायगिहे नयरे जाव अहापडिरूवं।

८. सं० पा०—संजमेणं जाव विहरइ।

९. × (क,ख,ग)।

१०. ओ० सू० ८२।

११. सं० पा०—उड्ढंजाणू जाव विहरइ।

१२. ओ० सू० ८३।

१३,१४. ना० १।१।७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णत्ता, तं जहा--निरयावलियाओ कप्पवडिंसियाओ पुप्फियाओ पुप्फचूलियाओ[1] वण्हिदसाओ ॥

६. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं उवंगाणं पंच वग्गा पण्णत्ता, तं जहा--निरयावलियाओ[3] जाव[4] वण्हिदसाओ। पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं निरयावलियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[5] संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

७. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं[7] दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-

काले सुकाले महाकाले, कण्हे सुकण्हे तहा[8] महाकण्हे ।
वीरकण्हे य बोद्धव्वे, रामकण्हे तहेव य ॥
पिउसेणकण्हे नवमे, दसमे महासेणकण्हे उ[9] ॥

८. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[10] संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[11] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

९. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपा नामं नयरी होत्था--रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धे। पुण्णभद्दे चेइए ॥

१०. तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रण्णो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कूणिए नामं राया होत्था--महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे[12] ॥

११. तस्स णं कूणियस्स रण्णो पउमावई नामं देवी होत्था--सूमालपाणिपाया जाव[13] माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

कालीए चिंता-पदं

१२. तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा कूणियस्स रण्णो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था--सूमालपाणिपाया जाव[14] सुरूवा ॥

१३. तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था--सूमालपाणिपाए जाव[15] सुरूवे ॥

१४. तए णं से काले कुमारे अण्णया कयाइ तिहिं दंतिसहस्सेहिं तिहिं आससहस्सेहिं तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं मणुयकोडीहिं गरुलव्वूहे[16] एक्कारसमेणं खंडेणं[17] कूणिएणं रण्णा

---

१. पुप्फचूलाओ (क,ग) ।
२. ना० १।१।७ ।
३. निरियावलिताओ (क) ।
४. उ० १।४ ।
५,६. ना० १।१।७ ।
७. णेरयियावलिताणं (क); निरावलियाणं (ग) ।
८. × (क,ख) ।
९. य (क); × (ग) ।
१०,११. ना० १।१।७ ।
१२. पू०--ओ० सू० १४ ।
१३. ओ० सू० १५ ।
१४. ओ० सू० १५ ।
१५. ओ० सू० १४३ ।
१६. गरुलवूहे (ग) ।
१७. खंधेणं (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्धिं रहमुसलं संगामं ओयाए ।।

१५. तए णं तीसे कालीए देवीए अण्णया कयाइ कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था— एवं खलु ममं पुत्ते काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं[2] •तिहिं आससहस्सेहिं तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं मणुय-कोडीहिं गरुलव्वूहे एक्कारसमेणं खंडेणं कूणिएणं रण्णा सद्धिं रहमुसलं संगामं° ओयाए— से मण्णे किं जइस्सइ ? नो जइस्सइ ? जीविस्सइ ? नो जीविस्सइ ? पराजिणिस्सइ ? नो पराजिणिस्सइ ? कालं णं कुमारं अहं जीवमाणं पासिज्जा[3] ? ओहयमण[4] •संकप्पा करयलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया ओमंथियवयणनयणकमला दीणविवण्णवयणा° झियाइ ।।

भगवओ महावीरस्स समवसरण-पदं

१६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए। परिसा निग्गया ।।

१७. तए णं तीसे कालीए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्ठाए[5] समाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव[6] समुप्पज्जित्था— एवं खलु समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागते जाव[7] विहरइ, तं महाफलं खलु तहारूवाणं[8] •अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण° विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं समणं भगवं[9] •महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामि। इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सामित्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तमेव उवट्ठवेह, उवट्ठ-वेत्ता[10] •एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

१८. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ।।

१९. तए णं सा काली देवी ण्हाया कयबलिकम्मा[11] •कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवर परिहिया° अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव[12] महत्तरगवंदपरिक्खित्ता[13] अंतेउराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बाहि-रिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता नियगपरियालसंपरिवुडा चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ,

---

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

२. सं० पा०— दंतिसहस्सेहिं जाव ओयाए।

३. न वेत्येवम्— वृत्तौ इति सम्बन्धयोजना कृतास्ति।

४. सं० पा०—ओहयमण जाव झियाइ।

५. लद्धट्ठे (क,ग)।

६. उ० १।१५।

७. ओ० सू० ५२।

८. सं० पा०— तहारूवाणं जाव विउलस्स।

९. सं० पा०— भगवं जाव पज्जुवासामि।

१०. सं० पा०— उवट्ठवेत्ता जाव पच्चप्पिणंति।

११. सं० पा०— कयबलिकम्मा जाव अप्प०।

१२. ओ० सू० ७०।

१३. °विंद° (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए[1] •तित्थयरातिसए पासइ, पासित्ता° धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता बहूहिं खुज्जाहिं जाव महत्तरगवंदपरिक्खित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ठिया[2] चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासइ ।।

२०. तए णं समणे भगवं महावीरे[3] कालीए देवीए तीसे य महइमहालियाए इसिपरिसाए[4] 'धम्मं परिकहेइ'[5] जाव एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ ।।

कालीए पुच्छा-पदं

२१. तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म[6] •हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°-हियया समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[7] •आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता° एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मम पुत्ते काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं[8] •तिहिं आससहस्सेहिं तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं मणुयकोडीहिं गरुलव्वूहे एक्कारसमेणं खंडेणं कूणिएणं रण्णा सद्धिं° रहमुसलं संगामं ओयाए—से णं भंते ! किं जइस्सइ ? नो जइस्सइ[9] ? •जीविस्सइ ? नो जीविस्सइ ? पराजिणिस्सइ ? नो पराजिणिस्सइ° ? कालं णं कुमारं अहं जीवमाणं पासेज्जा[10] ?

भगवओ उत्तर-पदं

२२. कालीइ ! समणे भगवं महावीरे कालिं देविं एवं वयासी—एवं खलु काली ! तव पुत्ते काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव[11] कूणिएणं रण्णा सद्धिं रहमुसलं संगामं संगामेमाणे हयमहिय-पवरवीरघाइय-निवडियचिंधज्झयपडागे[12] निरालोयाओ दिसाओ करेमाणे चेडगस्स रण्णो सपक्खं सपडिदिसिं रहेणं पडिरहं हव्वमागए। तए णं से चेडए राया कालं कुमारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते[13]• रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निलाडे साहट्टु° धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता वइसाहं ठाणं ठाइ, ठिच्चा आयय-कण्णाययं उसुं करेइ, करेत्ता कालं कुमारं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ । तं कालगए[14] णं काली ! काले कुमारे, नो चेव

---

१. सं० पा०—छत्तादीए जाव धम्मियं ।
२. ठितिया (क,ख) ।
३. जाव (क,ख,ग) ।
४. पू०—ओ० सू० ७१-७७ ।
५. धम्मकहा भाणियव्वा (क,ख,ग) ।
६. सं० पा०—निसम्म जाव हियया ।
७. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव एवं ।
८. सं० पा०—दंतिसहस्सेहिं जाव रहमुसलं ।
९. सं० पा०—जइस्सइ जाव कालं ।
१०. पासेमित्ती (क); पासित्ता (ग) ।
११. उ० १।१४ ।
१२. विपडितचिंधधया० (क) ।
१३. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणुं ।
१४. कालं गए (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं तुमं कालं कुमारं जीवमाणं पासिहिसि'[1] ।।

कालीए मुच्छा-पदं

२३. तए णं सा काली देवी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म महया पुत्तसोएण[2] अप्फुण्णा समाणी परसुनियत्ता[3] विव चंपगलया धसत्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिया ।।

कालीए पडिगमण-पदं

२४. तए णं सा काली देवी मुहुत्तंतरेणं आसत्था समाणी उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! सच्चे णं ! एसमट्ठे से जहेयं तुब्भे वदहत्ति कट्टु समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

कालकुमारस्स निरय-उववत्ति-पदं

२५. भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदिता नमंसित्ता एवं वयासी—काले णं भंते ! कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव[4] रहमुसलं संगामं संगामेमाणे चेडएणं रण्णा एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववण्णे ? ।।

२६. गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव[5] रहमुसलं संगामं संगामेमाणे चेडएणं रण्णा एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोविए समाणे कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरगे दससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ।।

२७. काले णं भंते ! कुमारे केरिसएहिं आरंभेहिं केरिसएहिं आरंभ-समारंभेहिं केरिसएहिं भोगेहिं केरिसएहिं भोग-संभोगेहिं केरिसेण वा असुभकडकम्मपब्भारेणं कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए जाव[6] नेरइयत्ताए उववण्णे ?

चेल्लणाए दोहद-पदं

२८. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था—रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धे ।।

२९. तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे ।।

३०. तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवी होत्था—सूमालपाणिपाया जाव[7] विहरइ ।।

३१. तस्स णं सेणियस्स रण्णो पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था—

१. पासिहसि (क) ।
२. °सोएणं (ग) ।
३. परिसु० (क) ।
४. उ० १।१४ ।
५. उ० १।१४ ।
६. उ० १।२६ ।
७. ओ० सू० १५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूमालपाणिपाए जाव[1] सुरूवे, साम-दंड-भेय-उवप्पयाण-अत्थसत्थ-ईहामइ-विसारए जहा चित्तो जाव[2] रज्जधुराए चिंतए यावि होत्था ।।

३२. तस्स णं सेणियस्स रण्णो चेल्लणा नामं देवी होत्था—सूमालपाणिपाया जाव[3] विहरइ ।।

३३. तए णं सा चेल्लणा देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव[4] सीहं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा जहा पभावई जाव[5] सुमिणपाढगा पडिविसज्जिया जाव[6] चेल्लणा[7] से वयणं पडिच्छित्ता जेणेव सए भवणे तेणेव अणुपविट्ठा ।।

३४. तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अण्णया कयाइ तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ[8], °संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासि अम्मयाणं माणुस्सए° जम्मजीवियफले[9], जाओ णं सेणियस्स रण्णो उयरवलिमंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च[10] °महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च° पसण्णं च आसाएमाणीओ[11] °विसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ° दोहलं विणेंति[12] ।।

३५. तए णं सा चेल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पंडुलइयमुही[13] ओमंथियनयण-वयणकमला जहोचियं पुप्फ-वत्थ-गंधमल्लालंकारं अपरिभुंजमाणी करयलमलियव्व कमल-माला ओहयमणसंकप्पा जाव[14] झियाइ ।।

३६. तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अंगपडियारियाओ चेल्लणं देविं सुक्कं भुक्खं जाव[15] झियायमाणिं[16] पासंति, पासित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवाग-च्छित्ता करयल[17] °परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु सेणियं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! चेल्लणा देवी न याणामो केणइ कारणेणं सुक्का भुक्खा जाव झियाइ ।।

३७. तए णं से सेणिए राया तासिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाणे जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणं देविं

---

१. ओ० सू० १४३ ।
२. राय० सू० ६७५ ।
३. ओ० सू० १५ ।
४. भग० ११।१३३ ।
५. भग० ११।१३४-१४३ ।
६. भग० ११।१४३,१४४ ।
७. चिल्लणा (ग) ।
८. सं० पा०— अम्मयाओ जाव जम्म० ।
९. °फलं (क) ।
१०. सं० पा०—सुरं च जाव पसण्णं ।
११. सं० पा०—आसाएमाणीओ जाव परिभाए-माणीओ ।
१२. पविणेंति (ख) ; विणंजंति (ग) ।
१३. पाण्डुकियमुखी (वृ) ।
१४. उ० १।१५ ।
१५. उ० १।३५ ।
१६. भियायमाणं (क) ।
१७. सं० पा०—करयल० ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सुक्कं भुक्खं जाव[1] झियायमाणिं पासित्ता एवं वयासी—किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! सुक्का भुक्खा जाव झियासि ?॥

३८. तए णं सा चेल्लणा देवी सेणियस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ तुसिणीया संचिट्ठइ ॥

३९. तए णं से सेणिए राया चेल्लणं देविं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासि—किं णं अहं देवाणुप्पिए ! एयमट्ठस्स नो अरिहे सवणयाए, जं णं तुमं एयमट्ठं रहस्सीकरेसि[2] ?॥

४०. तए णं सा चेल्लणा देवी सेणिएणं रण्णा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ता समाणी सेणियं रायं एवं वयासी—नत्थि णं सामी ! से केइ अट्ठे जस्स णं तुब्भे अणरिहा सवणयाए, नो चेव णं इमस्स अट्ठस्स सवणयाए। एवं खलु सामी ! ममं तस्स ओरालस्स जाव[3] महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव[4] जाओ णं तुब्भं उयरवलिमंसेहिं सोल्लएहि य जाव[5] दोहलं विणेंति। तए णं अहं सामी ! तंसि दोहलंसि[6] अविणिज्जमाणंसि[7] सुक्का भुक्खा जाव[8] झियामि ॥

४१. तए णं से सेणिए राया चेल्लणं देविं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा जाव[9] झियाहि[10]। अहं णं तहा घत्तिहामि[11] जहा णं तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सइत्तिकट्टु चेल्लणं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं मितमहुरसस्सिरीयाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासेत्ता चेल्लणाए देवीए अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीयित्ता तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं 'आएहि य'[12] उवाएहि य उप्पत्तियाए य वेणइयाए य 'कम्मियाए य पारिणामियाए'[13] य परिणामेमाणे-परिणामेमाणे तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा ठिइं वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ ॥

दोहद-संपन्नता-पदं

४२. इमं च णं अभए कुमारे ण्हाए जाव[14] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं ओहयमणसंकप्पं जाव[15] झियायमाणं

१. उ० १।३५।
२. °करेंहि (क)।
३. उ० १।३३।
४. उ० १।३४।
५. उ० १।३४।
६. दोहलयंसि (क)।
७. अणवणिज्जमाणंसि (क,ख)।
८. उ० १।३५।
९. उ० १।१५।
१०. झियासि (ख,ग)।
११. वत्तिहामि (क्व); जत्तिहामि (क्व)।
१२. आएहिं (क,ख,ग)।
१३. कम्मियाहि य पारिणामियाहि (क)।
१४. उ० १।१९।
१५. उ० १।१५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासइ, पासित्ता एवं वयासी—अण्णया[1] णं ताओ ! तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ[2] •तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°हियया भवह, किं णं ताओ ! अज्ज तुब्भे ओहयमणसंकप्पा जाव झियाह[3] ? तं जइ णं अहं ताओ ! एयमट्ठस्स अरिहे सवणयाए तो णं तुब्भे मम एयमट्ठं जहाभूयमवितहं असंदिद्धं परिकहेह, जहा[4] णं अहं तस्स अट्ठस्स अंतगमणं करेमि ॥

४३. तए णं से सेणिए राया अभयं कुमारं एवं वयासी—नत्थि णं पुत्ता ! से केइ अट्ठे जस्स णं तुमं अणरिहे सवणयाए। एवं खलु पुत्ता ! तव चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स ओरालस्स जाव[5] महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव[6] जाओ णं मम उदरवलिमंसेहिं सोल्लेहि य जाव[7] दोहलं विणेंति। तए णं सा चेल्लणा देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का जाव[8] झियाइ। तए णं अहं पुत्ता ! तस्स दोहलस्स संपत्तिनिमित्तं बहूहिं आएहिं[9] •य उवाएहि य उप्पत्तियाए य वेणइयाए य कम्मियाए य पारिणामियाए य परिणामेमाणे-परिणामेमाणे तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा °ठिइं वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव[10] झियामि ॥

४४. तए णं से अभए कुमारे सेणियं रायं एवं वयासी—मा णं ताओ ! तुब्भे ओहयमणसंकप्पा जाव[11] झियाह[12]। अहं णं तहा घत्तिहामि[13] जहा णं मम चुल्लमाउयाए चेल्लणाए देवीए तस्स दोहलस्स संपत्ती भविस्सइत्ति कट्टु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं[14] •कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं मितमहुरसस्सिरीयाहिं° वग्गूहिं समासासेइ, समासासेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अब्भिंतरए रहस्सियए ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सूणाओ अल्लं मंसं सरुहिरं वत्थिपुडगं च गिण्हह, ममं उवणेह ॥

४५. तए णं ते ठाणिज्जा पुरिसा अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल[15] •परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति°, पडिसुणेत्ता अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सूणा तेणेव उवागच्छंति, अल्लं मंसं सरुहिरं वत्थिपुडगं च गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव अभए कुमारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[16]• परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए

१. अण्णदा (क); अण्णता (ख)।
२. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया।
३. झियायह (ख)।
४. जा (क)।
५. उ० १।३३।
६. उ० १।३४।
७. उ० १।३४।
८. उ० १।३५।
९. सं० पा०—आएहिं जाव ठिइं।
१०. उ० १।१५।
११. उ० १।१५।
१२. झियाअह (ख)।
१३. वत्तिहामि (ख); वत्तिसामि (ग)।
१४. सं० पा०— इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं।
१५. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेत्ता।
१६. सं० पा०—करयल०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंजलिं कट्टु° तं अल्लं मंसं सरुहिरं वत्थिपुडगं च उवणेंति ।।

४६. तए णं से अभए कुमारे तं अल्लं मंसं सरुहिरं अप्पकप्पियं[1] करेइ, करेत्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं रहस्सियगंसि[2] सयणिज्जंसि उत्ताणयं निवज्जावेइ, निवज्जावेत्ता सेणियस्स उयरवलीसु तं अल्लं मंसं सरुहिरं विरवेइ[3], विरवेत्ता वत्थिपुडएणं[4] वेढेइ, वेढेत्ता सवंतीकरणेणं[5] करेइ, करेत्ता चेल्लणं देविं उप्पिं पासाए उल्लोयणवरगयं ठवावेइ, ठवावेत्ता चेल्लणाए देवीए अहे सपक्खिं सपडिदिसिं सेणियं रायं सयणिज्जंसि उत्ताणगं निवज्जावेइ, सेणियस्स रण्णो उयरवलिमंसाइं कप्पणि-कप्पियाइं करेइ, करेत्ता सेयभायणंसि पक्खिवइ ।।

४७. तए णं से सेणिए राया अलियमुच्छियं करेइ, करेत्ता मुहुत्तंतरेणं अण्णमण्णेण सद्धिं संलवमाणे चिट्ठइ ।।

४८. तए णं से अभए कुमारे सेणियस्स रण्णो उयरवलिमंसाइं गिण्हेइ, गिण्हेत्ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणाए देवीए उवणेइ ।।

४९. तए णं सा चेल्लणा देवी सेणियस्स रण्णो तेहिं उयरवलिमंसेहिं सोल्लेहि य[6] •तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी° दोहलं विणेइ ।।

गब्भसाडण-चिंतणा-पदं

५०. तए णं सा चेल्लणा देवी संपुण्णदोहला सम्माणियदोहला[7] वोच्छिण्णदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ।।

५१. तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे[8] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो 'उयरवलिमंसाइं खाइयाइं'[9], तं सेयं खलु मे[10] एयं गब्भं 'साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए'[11] वा विद्धंसित्तए वा—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तं गब्भं बहूहिं गब्भसाडणेहि य गब्भपाडणेहि य गब्भगालणेहि य गब्भविद्धंसणेहि य इच्छइ तं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा, नो चेव णं से गब्भे सडइ वा पडइ वा गलइ वा विद्धंसइ वा ।।

पुत्तपसव-पदं

५२. तए णं सा चेल्लणा देवी तं गब्भं जाहे नो संचाएइ बहूहिं गब्भसाडणेहि य जाव[12] गब्भविद्धंसणेहि य साडित्तए वा जाव[13] विद्धंसित्तए वा ताहे संता तंता परितंता

---

१. कप्पणिकप्पियं (क,ख,ग) ।
२. रहस्सिगयं (क) ।
३. विरवेइ (ख) ।
४. वत्थपुडागेण (क) ।
५. सवण्णीकरणं (क); सवंनीकरेण (ख) ।
६. सं० पा०—सोल्लेहि य जाव दोहलं ।
७. एवं संमाणियदोहला (क,ख,ग) ।
८. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
९. °मंसाणि खाइयाणि (ख,ग) ।
१०. ममं (ख,ग) ।
११. साडेत्तए वा पाडेत्तए वा गालेत्तए (क) ।
१२. उ० १।५१ ।
१३. उ० १।५१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निव्विण्णा समाणी अकामिया अवसवसा अट्टदुहट्टवसट्टा[1] तं गब्भं परिवहइ ॥

५३. तए णं सा चेल्लणा देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं[2] •अद्धट्ठमाण राइंदियाणं वीइक्कंताणं° सूमालं सुरूवं दारगं पयाया ॥

पुत्तस्स उक्कुरुडियाए उज्झणा-पदं

५४. तए णं तीसे चेल्लणाए देवीए इमे एयारूवे[3] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उयरवलिमंसाइं खाइयाइं, तं न नज्जइ णं एस दारए संवड्ढमाणे अम्हं कुलस्स अंतकरे भविस्सइ, तं सेयं खलु अम्हं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छ[4] णं तुमं देवाणुप्पिए ! एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए[5] उज्झाहि ॥

५५. तए णं सा दासचेडी चेल्लणाए देवीए एवं वुत्ता समाणी करयल[6]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु चेल्लणाए देवीए एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झइ[7] ॥

५६. तए णं तेणं दारएणं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झितेणं समाणेणं सा असोगवणिया उज्जोविया यावि होत्था ॥

सेणिएण पुत्तस्स पुणराणयण-पदं

५७. तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झियं पासेइ, पासेत्ता आसुरुत्ते जाव[8] मिसिमिसेमाणे तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेल्लणं देविं उच्चावयाहिं आओसणाहिं[9] आओसइ, उच्चावयाहिं 'निब्भंछणाहिं निब्भंछेइ'[10], उच्चावयाहिं[11] उद्धंसणाहिं उद्धंसेइ, उद्धंसेत्ता एवं वयासी - कीस णं तुमं मम पुत्तं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेसि ? त्ति कट्टु चेल्लणं देविं उच्चावयसवहसावितं[12] करेइ, करेत्ता एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिए ! एयं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी[13] संगोवेमाणी[14] संवड्ढेहि ॥

५८. तए णं सा चेल्लणा देवी सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी लज्जिया विलिया विड्डा करयल[15] •परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° सेणियस्स रण्णो

---

१. अट्टवसट्टदुहट्टा (ख,ग,वृ) ।
२. सं० पा०—बहुपडिपुण्णाणं जाव सूमालं ।
३. सं० पा०—एयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
४. गच्छह (क) ।
५. उक्करुडियाए (ख) ।
६. सं० पा०—करयल जाव कट्टु ।
७. उज्झाति (ख,ग) ।
८. उ० १।२२ ।
९. आउसरणाइं (क) ।
१०. निब्भच्छणाहि निब्भच्छेइ (ख,ग) ।
११. एवं (क,ख,ग) ।
१२. उच्चावयाहिं० (ग) ।
१३. संरक्खमाणी (ख) ।
१४. संगोयभाणी (क) ।
१५. सं० पा०—करयल० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'एयमट्ठं विणएणं'[1] पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेइ ॥

सेणिएण पुत्तस्स परिचरिया-पदं

५९. तए णं तस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्जमाणस्स अग्गंगुलिया[2] कुक्कुडिपिच्छएणं[3] दूमिया वि होत्था, अभिक्खणं-अभिक्खणं पूयं च सोणियं च अभिनिस्सवेइ ॥

६०. तए णं से दारए वेयणाभिभूए समाणे महया-महया सद्देणं आरसइ ॥

६१. तए णं से सेणिए राया तस्स दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता तं अग्गंगुलियं आसयंसि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता पूयं च सोणियं च आसएणं आमुसइ। तए णं से दारए निव्वुए निव्वेयणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

६२. जाहे वि य णं से दारए वेयणाए अभिभूए समाणे महया-महया सद्देणं आरसइ, ताहे वि य णं सेणिए राया जेणेव से दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दारगं करयलपुडेणं गिण्हइ, [4]•गिण्हित्ता तं अग्गंगुलियं आसयंसि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता पूयं च सोणियं च आसएणं आमुसइ। तए णं से दारए निव्वुए° निव्वेयणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

पुत्तस्स कूणिएत्ति नाम-पदं

६३. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो 'पढमे दिवसे ठितिपडियं करेंति, बितिए दिवसे जागरियं करेंति, ततिए दिवसे चंदसूरदंसणियं[5] करेंति, एवामेव निवत्ते असुइजाय-कम्मकरणे संपत्ते बारसाहे'[6] जाव[7] अयमेयारूवं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं इमस्स दारगस्स एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्जमाणस्स अग्गंगुलिया कुक्कुडि-पिच्छएणं[8] दूमिया, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं कूणिए-कूणिए। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति कूणिए त्ति ॥

६४. 'तए णं से कूणिए कुमारे पंचधाईपरिग्गहिए जाव[9] उप्पिं पासायवरगए[10] विहरइ'[11] ॥

---

१. विणएणं एयमट्ठं (क,ख,ग)।

२. अग्गंगुलियाए (क)।

३. °पिच्छिएणं (ख); कुक्कुडपिच्छएणं (ग)।

४. सं० पा० तं चेव जाव निव्वेयणे।

५. °दंसणं (ग)।

६. तइए दिवसे चंदसूरदंसणियं करेंति जाव संपत्ते बारसाहदिवसे (क,ख); °बारसमे दिवसे (ग); एतदर्थं द्रष्टव्यम् -ओवाइय (१४४) सूत्रस्य तथा नाया० (१।१।८१) 'बारसाहे' पदस्य पादटिप्पणम्।

७. ना० १।१।८१।

८. °पिछएणं (ख,ग)।

९. ना० १।१।८२-९३।

१०. पू० ना० १।१।९३।

११. तए णं तस्स कूणियस्स अणुपुव्वेणं ठिइवडियं च जहा महस्स जाव उप्पिं पासायवरगए विहरइ, अट्ठओ दाओ (क,ख,ग)। ६३ सूत्रे प्रतिपादितविषयस्य उपर्युल्लिखितपाठे पुनरावर्तनमस्ति तथा नामकरणानंतरं 'ठिइवडियं' इत्यादिपाठस्य नोपयोगित्वम्। तेनासौ पाठः पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कूणिएण सेणियस्स निग्गह-पदं

६५. तए णं तस्स कूणियस्स कुमारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्ता[1] •वरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सेणियस्स रण्णो वाघाएणं नो संचाएमि सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरित्तए, तं सेयं खलु मम सेणियं रायं नियलबंधणं करेत्ता अप्पाणं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सेणियस्स रण्णो अंतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥

६६. तए णं से कूणिए कुमारे सेणियस्स रण्णो अंतरं वा[2] •छिद्दं वा विरहं वा° मम्मं वा अलभमाणे अण्णया कयाइ कालाईए दस कुमारे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे सेणियस्स रण्णो वाघाएणं नो संचाएमो सयमेव रज्जसिरिं करेमाणा पालेमाणा विहरित्तए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं सेणियं रायं नियलबंधणं करेत्ता रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च जणवदं[3] च एक्कारसभाए विरिंचित्ता सयमेव रज्जसिरिं करेमाणाणं पालेमाणाणं विहरित्तए ॥

६७. तए णं ते कालाईया दस कुमारा कूणियस्स कुमारस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥

६८. तए णं से कूणिए कुमारे अण्णया कयाइ सेणियस्स रण्णो अंतरं जाणइ, जाणित्ता सेणियं रायं नियलबंधणं करेइ, करेत्ता अप्पाणं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचावेइ ॥

६९. तए णं से कूणिए कुमारे राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे ॥

चेल्लणाए पडिबोह-पदं

७०. तए णं से कूणिए राया अण्णया कयाइ ण्हाए[4] •कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते° सव्वालंकारविभूसिए[5] चेल्लणाए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ ॥

७१. तए णं से कूणिए राया चेल्लणं देविं ओहयमणसंकप्पं जाव[6] झियायमाणिं पासइ, पासित्ता चेल्लणाए देवीए पायग्गहणं करेइ, करेत्ता चेल्लणं देविं एवं वयासी—किं णं अम्मो! तुम्हं न तुट्ठी वा न ऊसए वा न हरिसे वा न आणंदे वा, जं णं अहं सयमेव रज्जसिरिं[7] •करेमाणे पालेमाणे° विहरामि?॥

७२. तए णं सा चेल्लणा देवी कूणियं रायं एवं वयासी—कहं णं पुत्ता! ममं तुट्ठी वा ऊसए[8] वा हरिसे वा आणंदे वा भविस्सइ? जं णं तुमं सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करेत्ता अप्पाणं महया-महया रायाभिसेणं अभिसिंचावेसि[9]?॥

---

१. सं० पा०—पुव्वरत्ता जाव समुप्पज्जित्था ।
२. सं० पा०—अंतरं वा जाव मम्मं ।
३. जणवयं (ख) ।
४. सं० पा०—ण्हाए जाव सव्वालंकार° ।
५. सव्वालंकारभूसिए (क) ।
६. उ० १।१५ ।
७. सं० पा०—रज्जसिरिं जाव विहरामि ।
८. ऊसवे (ख) ।
९. अभिसिंचावेहि (क,ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७३. तए णं से कूणिए राया चेल्लणं देविं एवं वयासी--घाएउकामे णं अम्मो ! ममं सेणिए राया, [1]•मारेउकामे णं अम्मो ! ममं सेणिए राया, बंधेउकामे णं अम्मो ! ममं सेणिए राया,° निच्छुभिउकामे णं अम्मो ! ममं सेणिए राया, तं कहं णं अम्मो ! ममं सेणिए राया अच्चंतनेहाणुरागरत्ते ?।।

७४. तए णं सा चेल्लणा देवी कूणियं रायं[2] एवं वयासी एवं खलु पुत्ता ! तुमंसि ममं गब्भे आभूए समाणे तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं ममं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूए--धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ [3]•जाव[4] जाओ णं सेणियस्स रण्णो उयरवलिमंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाए-माणीओ विसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति जाव[5] अहं सेणियस्स रण्णो तेहिं उयरवलिमंसेहिं सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च जाइं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी दोहलं विणेमि ।।

७५. तए णं अहं संपुण्णदोहला सम्माणियदोहला वोच्छिण्णदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहामि ।।

७६. तए णं ममं अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उयरवलिमंसाइं खाइयाइं, तं सेयं खलु मे एयं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा--एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता तं गब्भं बहूहिं गब्भसाडणेहि य गब्भपाडणेहि य गब्भगालणेहि य गब्भविद्धंसणेहि य इच्छामि तं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा विद्धंसित्तए वा, नो चेव णं से गब्भे सडइ वा पडइ वा गलइ वा विद्धंसइ वा ।।

७७. तए णं अहं तं गब्भं जाहे नो संचाएमि बहूहिं गब्भसाडणेहि य जाव[6] गब्भ-विद्धंसणेहि य साडित्तए वा जाव[7] विद्धंसित्तए वा ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणी अकामिया अवसवसा अट्टदुहट्टवसट्टा तं गब्भं परिवहामि ।।

७८- तए णं अहं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं वीइक्कंताणं सूमालं सुरूवं दारगं पयामि ।।

७९. तए णं ममं इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्प-ज्जित्था--जइ ताव इमेणं दारएणं गब्भगएणं चेव पिउणो उयरवलिमंसाइं खाइयाइं, तं न नज्जइ णं एस दारए संवड्ढमाणे अम्हं कुलस्स अंतकरे भविस्सइ, तं सेयं खलु अम्हं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावित्तए--एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता दासचेडिं सद्दावेमि,

---

१. सं० पा०--एवं मारेउ बंधेउ ।
२. कुमारं (ख,ग) ।
३. सं० पा०--अम्मयाओ जाव अंगपडिचारियाओ निरवसेसं भाणियव्वं जाव जाहे वि य णं तुमं वेयणाए अभिभूए महया जाव तुसिणीए ।
४. उ० १।३४ ।
५. उ० १।३५-४८ ।
६. उ० १।५१ ।
७. उ० १।५१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दावेत्ता एवं वयामि—गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिए ! एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि ।।

८० तए णं सा दासचेडी ममं एवं वुत्ता समाणी करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु ममं एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तुमं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झइ ।।

८१. तए णं तुमे एगंते उक्कुरुडियाए उज्झितेणं समाणेणं सा असोगवणिया उज्जोविया यावि होत्था ।।

८२. तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झियं पासेइ, पासेत्ता आसुरुत्ते जाव[1] मिसिमिसेमाणे तुमं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव अहं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ, उच्चावयाहिं निब्भंछणाहिं निब्भंछेइ, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेइ, उद्धंसेत्ता एवं वयासी कीस णं तुमं ममं पुत्तं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेसि ? त्ति कट्टु ममं उच्चावयसवहसावितं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिए ! एयं दारगं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेहि ।।

८३. तए णं अहं सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी लज्जिया विलिया विड्डा करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सेणियस्स रण्णो एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेमि, पडिसुणेत्ता तुमं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेमि ।।

८४. तए णं तुम्हं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिज्जमाणस्स अग्गंगुलिया कुक्कुडिपिच्छएणं दूमिया वि होत्था, अभिक्खणं-अभिक्खणं पूयं च सोणियं च अभिनिस्सवेइ ।।

८५. तए णं तुमं वेयणाभिभूए समाणे महया-महया सद्देणं आरससि ।।

८६. तए णं सेणिए राया तुम्हं आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव तुमं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता तं अग्गंगुलियं आसयंसि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता पूयं च सोणियं च आसएणं आमुसइ । तए णं तुमं निव्वुए निव्वेयणे तुसिणीए संचिट्ठसि ।।

८७. जाहे वि य णं तुमं वेयणाए अभिभूए समाणे महया-महया सद्देणं आरससि, ताहे वि य णं सेणिए राया जेणेव तुमं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं करयलपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता तं अग्गंगुलियं आसयंसि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता पूयं च सोणियं च आसएणं आमुसइ । तए णं तुमं निव्वुए निव्वेयणे° तुसिणीए संचिट्ठसि—एवं खलु तव पुत्ता ! सेणिए राया अच्चंतनेहाणुरागरत्ते ।।

कूणियस्स निवेद-पदं

८८. तए णं से कूणिए राया चेल्लणाए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म[2] चेल्लणं देविं एवं वयासी—दुट्ठु णं अम्मो ! मए कयं सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणगं अच्चंत-

१. उ० ११२२ । २. उसम्मा (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करंतेणं, तं गच्छामि णं सेणियस्स रण्णो सयमेव नियलाणि छिंदामित्तिकट्टु परसुहत्थगए जेणेव चारगसाला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

सेणियस्स अप्पघाय-पदं

८९. तए णं सेणिए राया कूणियं रायं[1] परसुहत्थगयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी एस णं कूणिए राया[2] अपत्थियपत्थए[3] •दुरंत-पंत-लक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसिए सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति°-परिवज्जिए परसुहत्थगए इह[4] हव्वमागच्छइ, तं न नज्जइ णं ममं केणइ कु-मारेणं मारिस्सइत्तिकट्टु भीए[5] •तत्थे तसिए उव्विग्गे° संजायभए तालपुडगं विसं आसगंसि पक्खिवइ ।।

९०. तए णं से सेणिए राया 'तालपुडगविसंसि आसगंसि'[6] पक्खित्ते समाणे मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि[7] निप्पाणे निच्चिट्ठे जीवविप्पजढे ओइण्णे ।।

९१. तए णं से कूणिए राया[8] जेणेव चारगसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं निप्पाणं निच्चिट्ठं जीवविप्पजढं ओइण्णं पासइ, पासित्ता 'महया पिइसोएणं'[9] अप्फुण्णे समाणे परसुनियत्ते विव चंपगवरपायवे धसत्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं संनिवडिए ।।

कूणियस्स विलावकरण-पदं

९२. तए णं से कूणिए राया[10] मुहुत्तंतरेण आसत्थे समाणे रोयमाणे कंदमाणे सोयमाणे विलवमाणे एवं वयासी —अहो णं मए अधण्णेणं अपुण्णेणं अकयपुण्णेणं दुट्ठु कयं सेणियं रायं पियं देवयं गुरुजणगं अच्चंतनेहाणुरागरत्तं नियलबंधणं करंतेणं, मम मूलागं चेव णं सेणिए राया कालगएत्तिकट्टु ईसर-तलवर[11]-•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय°-संधिवालसद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे सोयमाणे विलवमाणे महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं सेणियस्स रण्णो नीहरणं करेइ, बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ ।।

कूणिएण रायहाणीपरिवत्तण-पदं

९३. तए णं से कूणिए राया एएणं[12] महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अण्णया कयाइ अंतेउरपरियालसंपरिवुडे[13] सभंडमत्तोवगरणमायाए रायगिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, 'तत्थ वि य'[14] णं विउलभोग-समिइसमण्णागए कालेणं अप्पसोए जाए यावि होत्था ।।

---

१. कुमारं (ख,ग) ।
२. कुमारे (ख,ग) ।
३. सं० पा०—अपत्थियपत्थए जाव परिवज्जिए; °पत्थिए (क) ।
४. इहं (ख) ।
५. सं० पा०—भीए जाव संजायभए ।
६. °विसं आसगं (क) ।
७. °माणं (क) ।
८. कुमारे (ख,ग) ।
९. महया-महया पितसोएणं (ख) ।
१०. कुमारे (ख,ग) ।
११. सं० पा०—तलवर जाव संधिवाल° ।
१२. तेणं (क) ।
१३. °परिवुडे (क,ख,ग) ।
१४. तत्थ वि णं (क); तत्थ (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेहल्लस्स गंधहत्थिकीला-पदं

९४. तए णं से कूणिए राया अण्णया कयाइ कालाईए दस कुमारे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता रज्जं च[1] °रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च° जणवयं च एक्कारसभाए विरिंचइ, विरिंचित्ता सयमेव रज्जसिरिं करेमाणे पालेमाणे विहरइ ॥

९५. तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रण्णो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए कूणियस्स रण्णो सहोयरे कणीयसे भाया वेहल्ले[2] नामं कुमारे होत्था सूमाले जाव[3] सुरूवे ॥

९६. तए णं तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स सेणिएणं रण्णा जीवंतएणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके हारे य पुव्वदिण्णे ॥

९७. तए णं से वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा अंतेउरपरियालसंपरिवुडे चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता अभिक्खणं-अभिक्खणं गंगं महाणइं मज्जणयं ओयरइ । तए णं सेयणए[4] गंधहत्थी देवीओ सोंडाए[5] गिण्हइ, गिण्हित्ता अप्पेगयाओ पट्ठे[6] ठवेइ, अप्पेगइयाओ खंधे ठवेइ, अप्पेगइयाओ कुंभे ठवेइ, अप्पेगइयाओ सीसे ठवेइ, अप्पेगइयाओ दंतमूसले ठवेइ, अप्पेगइयाओ सोंडाए गहाय उड्ढं वेहासं उव्विहइ, अप्पेगइयाओ सोंडागयाओ अंदोलावेइ[7], अप्पेगइयाओ दंतंतरेसु नीणेइ, अप्पेगइयाओ 'सीभरेणं ण्हाणेइ'[8], अप्पेगइयाओ अणेगेहिं कीलावणेहिं कीलावेइ ॥

हार-गंधहत्थि-विवाद-पदं

९८. तए णं चंपाए नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-[चउम्मुह[9]?] महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[10] °एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं° परूवेइ--एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा अंतेउरपरियालसंपरिवुडे 'जाव'[11]

१. सं० पा०---रज्जं च जाव जणवयं ।

२. हल्लविहल्ले (क); महाराजश्रेणिकेन गन्धहस्ती हारश्च वेहल्लकुमाराय समर्पितौ । आगमस्य मूलपाठे एषैव परम्परा दृश्यते । वृत्तौ भिन्ना परम्परा उल्लिखितास्ति ताहे अभएण रज्जं दिज्जमाणं न इच्छियं ति पच्छा सेणियो चिंतेई 'कोणियस्स दिज्जिहि' त्ति हल्लस्स हत्थी दिन्नो सेयणगो, विहल्लस्स देवदिन्नो हारो । अभएण वि पव्वयंतेण सुनंदाए खोमजुयलं कुंडलजुयलं च हल्लविहल्लाणं दिण्णाणि । महया विहवेण अभओ नियजणणीसमेओ पव्वइओ । सेणियस्य चेलणादेवी अंगसमुब्भूया तिन्नि पुत्ता--कूणिओ हल्लविहल्ला य ।
आगमस्य परम्परायां केवलं वेहल्लस्यैव नामोल्लेखो दृश्यते । आगममर्मज्ञेन आचार्यभिक्षुणापि केवलं वेहल्लकुमारस्यैव नामोल्लेखः कृतः--
छोटो भाइ कोणक नें सहोदर, नामें वेहल्लकुमार ।
तिणनें श्रेणक जीवतां दीया,
एक हाथी ने वंकसर हार ॥१॥
(भिक्षु ग्रन्थ रत्नाकर, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ ७२) ।

३. ओ० सू० १४३ ।

४. सेतणए (क,ख) ।

५. सोंडाओ (क) ।

६. प्पिट्ठे (क); पुट्ठे (ग) ।

७. अंदोडावेइ (क) ।

८. सीकरेणं ण्हाएइ (ख); सीतरेणं° (ग) ।

९. एतत् पदं प्रायः सूत्रेषु लभ्यते ।

१०. सं० पा०--एवमाइक्खइ जाव परूवेइ ।

११. उ० १।६७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणेगेहिं[1] कीलावणएहिं कीलावेइ, तं एस णं वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफलं पच्चणुभवमाणे विहरइ, नो कूणिए राया ॥

९९. तए णं तीसे पउमावईए देवीए इमीसे कहाए लद्धट्ठाए समाणीए अयमेयारूवे[2] °अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था एवं खलु वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा जाव[3] अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ, तं एस णं वेहल्ले कुमारे रज्जसिरिफलं पच्चणुभवमाणे विहरइ, नो कूणिए राया, तं किण्णं[4] अम्हं रज्जेण वा[5] °रट्ठेण वा बलेण वा वाहणेण वा कोसेण वा कोट्ठागारेण वा° जणवएण वा, जइ णं अम्हं सेयणगे गंधहत्थी नत्थि ? तं सेयं खलु ममं कूणियं रायं एयमट्ठं विण्णवित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[6] °परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु कूणियं रायं° एवं वयासी एवं खलु सामी ! वेहल्ले कुमारे सेयणएणं गंधहत्थिणा जाव अणेगेहिं कीलावणएहिं कीलावेइ, तं किण्णं सामी अम्हं रज्जेण वा जाव जणवएण वा, जइ णं अम्हं सेयणए गंधहत्थी नत्थि ?॥

१००. तए णं से कूणिए राया पउमावईए देवीए एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

१०१. तए णं सा पउमावई देवी अभिक्खणं-अभिक्खणं कूणियं रायं एयमट्ठं विण्णवेइ ॥

१०२. तए णं से कूणिए राया पउमावईए देवीए अभिक्खणं-अभिक्खणं एयमट्ठं विण्णविज्जमाणे अण्णया कयाइ वेहल्लं कुमारं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं जायइ ॥

१०३. तए णं से वेहल्ले कुमारे कूणियं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! सेणिएणं रण्णा जीवंतएणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे दिण्णे, तं जइ णं सामी ! तुब्भे ममं रज्जस्स य जाव[7] जणवयस्स य अद्धं दलयह तो णं अहं तुब्भं सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं दलयामि ॥

१०४. तए णं से कूणिए राया वेहल्लस्स कुमारस्स एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ अभिक्खणं-अभिक्खणं सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं जायइ ॥

वेहल्लस्स चेडग-सरण-पदं

१०५. तए णं तस्स वेहल्लस्स कुमारस्स कूणिएणं रण्णा अभिक्खणं-अभिक्खणं सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं [जाइज्जमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे सम्मुप्पज्जित्था[8]—?] एवं अक्खिविउकामे णं गिण्हिउकामे णं उद्दालेउकामे णं ममं कूणिए राया सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं 'तं जाव न अक्खिवइ

---

१. तं चेव जाव णेगेहिं (क) ।
२. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
३. उ० १।९७ ।
४. किण्हं (क,ख,ग) ।
५. सं० पा०—रज्जेण वा जाव जणवएण ।
६. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
७. उ० १।६६ ।
८. अत्र आदर्शेषु किंचित् त्रुटितः पाठोस्ति, तत्संबंधयोजनाय कोष्ठकान्तर्वर्ती पाठः उल्लिखितः । प्रकरणवशादसौ संगतः प्रतीयते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न गिण्हइ न उद्दालेइ ममं कूणिए राया ताव[1] सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडस्स सभंडमत्तोवगरणमायाए चंपाओ नयरीओ पडिनिक्खमित्ता वेसालीए नयरीए अज्जगं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए- एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कूणियस्स रण्णो अंतराणि[2] •य छिद्दाणि य विरहाणि य° पडिजागरमाणे-पडिजागरमाणे विहरइ ॥

१०६. तए णं से वेहल्ले कुमारे अण्णया कयाइ कूणियस्स रण्णो अंतरं जाणइ, सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए[3] चंपाओ नयरीओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वेसाली नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेसालीए नयरीए अज्जगं चेडयं रायं उवसंपिज्जित्ता णं विहरइ ॥

कूणिएण दूय-पेसण-पदं

१०७. तए णं से कूणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं खलु वेहल्ले कुमारे ममं 'असंविदिते णं'[4] सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियाल-संपरिवुडे जाव[5] अज्जगं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं सेयं खलु ममं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं आणेउं दूयं पेसित्तए[6]—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छ[7] णं तुमं देवाणुप्पिया! वेसालिं नयरिं। तत्थ णं तुमं ममं अज्जगं चेडगं रायं करयल[8]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि,° वद्धावेत्ता एवं वयाहि[9]—एवं खलु सामी! कूणिए राया विण्णवेइ—एस णं वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रण्णो असंविदितेणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय इहं हव्वमागए, तं णं तुब्भे सामी! कूणियं रायं अणुगिण्हमाणा सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारस-वंकं च हारं कूणियस्स रण्णो पच्चप्पिणह, वेहल्लं कुमारं च पेसेह ॥

१०८. 'तए णं'[10] से दूए कूणिएणं[11] •रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे करयलपरिग्ग-हियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसु-णेइ,° पडिसुणेत्ता जेणेव सए[12] गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जहा चित्तो जाव[13] वद्धावेत्ता एवं वयासी एवं खलु सामी! कूणिए राया विण्णवेइ—एस णं वेहल्ले कुमारे [14]•कूणियस्स रण्णो असंविदिते णं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय इहं हव्व-मागए, तं णं तुब्भे सामी! कूणियं रायं अणुगिण्हमाणा सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च

---

१. तं जाव ताव मम कूणिए राया (क,ख)।
२. सं० पा०—अंतराणि जाव पडिजागरमाणे।
३. °गहाय (ख)।
४. असंविदे णं (क); असंप्रति (वृ)।
५. उ० १।१०६।
६. विसज्जए (क)।
७. गच्छह (क,ग)।
८. सं० पा०—करयल°।
९. वदासी (क)।
१०. ततो (क,ख)।
११. सं० पा०—कूणिएणं करयल जाव पडिसुणेत्ता।
१२. स (ख)।
१३. राय० सू० ६८१-६८३।
१४. सं० पा०—तहेव भाणियव्वं जाव वेहल्लं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हारं कूणियस्स रण्णो पच्चप्पिणह, °वेहल्लं कुमारं च पेसेह ।।

१०९. तए णं से चेडए राया तं दूयं एवं वयासी– जह चेव णं देवाणुप्पिया ! कूणिए राया सेणियस्स रण्णो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए, तहेव णं वेहल्लेवि कुमारे सेणियस्स रण्णो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए, सेणिएणं रण्णा जीवंतेणं चेव वेहल्लस्स कुमारस्स सेयणगे गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे पुव्वदिण्णे तं जइ णं कूणिए राया वेहल्लस्स रज्जस्स य[1] जणवयस्स य अद्धं दलयइ तो णं अहं सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रण्णो पच्चप्पिणामि, वेहल्लं च कुमारं पेसेमि, न अण्णहा[2] - तं दूयं सक्कारेइ[3] सम्माणेइ पडिविसज्जेइ ।।

११०. तए णं से दूए चेडएणं रण्णा पडिविसज्जिए समाणे जेणेव चाउघंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता वेसालिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुहेहिं[4] वसही[5]–•पायरासेहिं नाइविकिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे-वसमाणे जेणेव चंपा नगरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[6] कूणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेइ°, वद्धावेत्ता एवं वयासी—'एवं खलु सामी'[7] ! चेडए राया आणवेइ जह चेव णं कूणिए राया सेणियस्स रण्णो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए •[8]तहेव णं वेहल्लेवि कुमारे सेणियस्स रण्णो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए, सेणिएणं रण्णा जीवंतेणं चेव वेहल्लस्स कुमारस्स सेयणगे गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे पुव्वदिण्णे, तं जइ णं कूणिए राया वेहल्लस्स रज्जस्स य[9] जणवयस्स य अद्धं दलयइ तो णं अहं सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रण्णो पच्चप्पिणामि, वेहल्लं च कुमारं पेसेमि । तं न देइ णं सामी ! चेडए राया सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं च नो पेसेइ ।।

१११. तए णं से कूणिए राया दोच्चंपि दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी– गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! वेसालिं नयरिं । तत्थ णं तुमं मम अज्जगं चेडगं रायं जाव[10] एवं वयाहि – एवं खलु सामी! कूणिए राया विण्णवेइ –जाणि काणि वि[11] रयणाणि समुप्पज्जंति सव्वाणि ताणि रायकुलगामीणि । सेणियस्स रण्णो रज्जसिरिं करेमाणस्स पालेमाणस्स दुवे रयणा समुप्पण्णा, तं जहा सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके हारे । तं णं तुब्भे सामी ! रायकुलपरंपरागयं पीतिं[12] अलोवेमाणा[13] सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रण्णो पच्चप्पिणह, वेहल्लं कुमारं च पेसेह ।।

---

१. पू०—उ० १।६६ ।
२. × (क,ख,ग); असौ पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृतः ।
३. × (क,ख,ग) ।
४. सुभेहिं (क,ख,ग) ।
५. सं० पा० —वसही जाव वद्धावेत्ता । वासेहिं (राय० सू० ६८३) ।
६. राय० सू० ६८३ ।
७. × (ख) ।
८. सं० पा० —तं चेव भाणियव्वं जाव वेहल्लं ।
९. पू०—उ० १।६६ ।
१०. उ० १।१०७ ।
११. य (ख) ।
१२. पीईयं (ग); ठिइयं (क्व०) ।
१३. अलोवेमाणे (क,ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११२. तए णं से दूए तहेव जाव[1] वद्धावेत्ता एवं वयासी— एवं खलु सामी ! कूणिए राया विण्णवेइ—जाणि काणि[2]•वि रयणाणि समुप्पज्जंति सव्वाणि ताणि रायकुलगामीणि । सेणियस्स रण्णो रज्जसिरिं करेमाणस्स पालेमाणस्स दुवे रयणा समुप्पण्णा, तं जहा—सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके हारे । तं णं तुब्भे सामी ! रायकुलपरंपरागयं पीतिं अलोवेमाणा सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रण्णो पच्चप्पिणह°, वेहल्लं कुमारं च पेसेह ॥

११३. तए णं से चेडए राया तं दूयं एवं वयासी—जह चेव णं देवाणुप्पिया ! कूणिए राया सेणियस्स रण्णो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए[3]• ममं नत्तुए, तहेव णं वेहल्लेवि कुमारे सेणियस्स रण्णो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए, सेणिएणं रण्णा जीवंतएणं चेव वेहल्लस्स कुमारस्स सेयणगे गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे पुव्वदिण्णे, तं जइ णं कूणिए राया वेहल्लस्स रज्जस्स य[4] जणवयस्स य अद्धं दलयइ तो णं अहं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रण्णो पच्चप्पिणामि°, वेहल्लं च कुमारं पेसेमि, न अण्णहा[5]—तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ ॥

११४. तए णं से दूए जाव[6] कूणियस्स रण्णो वद्धावेत्ता एवं वयासी—'चेडए राया आणवेइ'[7]—जह चेव णं देवाणुप्पिया ! कूणिए राया सेणियस्स रण्णो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए[8] •ममं नत्तुए, तहेव णं वेहल्लेवि कुमारे सेणियस्स रण्णो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए ममं नत्तुए, सेणिएणं रण्णा जीवंतेणं चेव वेहल्लस्स कुमारस्स सेयणगे गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे पुव्वदिण्णे, तं जइ णं कूणिए राया वेहल्लस्स रज्जस्स य[9] जणवयस्स य अद्धं दलयइ तो णं अहं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंक च हारं कूणियस्स रण्णो पच्चप्पिणामि,° वेहल्लं च कुमारं पेसेमि । तं न देइ णं सामी ! चेडए राया सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं च कुमारं नो पेसेइ ॥

कूणियस्स जुद्धसज्जा-पदं

११५. तए णं से कूणिए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव[10] मिसिमिसेमाणे तच्चं दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— गच्छ[11] णं तुमं देवाणुप्पिया ! वेसालीए नयरीए चेडगस्स रण्णो वामेणं पाएणं पादपीठं अक्कमाहि, अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणावेहि[12], पणावेत्ता आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निलाडे साहट्टु चेडगं रायं एवं वयाहि- -हंभो चेडगराया अपत्थियपत्थगा[13]! दुरंत[14]-•पंत-लक्खणा!

१. कूणियस्स रण्णो तहेव जाव (क,ख,ग); उ० १।१०८।
२. सं० पा०—काणि जाव वेहल्लं ।
३. सं० पा०—जहा पढमं जाव वेहल्लं ।
४. पू०—उ० १।६६ ।
५. × (क,ख,ग); असौ पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृतः ।
६. उ० १।११० ।
७. × (क,ख) ।
८. सं० पा०—अत्तए जाव वेहल्लं ।
९. पू०—उ० १।६६ ।
१०. उ० १।२२ ।
११. गंतूणं (क); गच्छह (ख,ग) ।
१२. पणामेहि (क) ।
१३. °पत्थिया (क) ।
१४. सं० पा०—दुरंत जाव परिवज्जिया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हीणपुण्णचाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति°-परिवज्जिया ! एस णं कूणिए राया आणवेइ— पच्चप्पिणाहि णं कूणियस्स रण्णो सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं च कुमारं पेसेहि अहवा जुद्धसज्जे चिट्ठाहि । एस णं कूणिए राया सबले सवाहणे सखंधावारे णं जुद्धसज्जे इह हव्वमागच्छइ ।।

११६. तए णं से दूए करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु तहेव जाव[1] जेणेव चेडए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[2]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ°, वद्धावेत्ता एवं वयासी— एस णं सामी ! ममं विणयपडिवत्ती, इमा[3] कूणियस्स रण्णो आणत्ती चेडगस्स रण्णो वामेणं पाएणं पायपीढं अक्कमइ, अक्कमित्ता आसुरुत्ते[4] कुंतग्गेण लेहं पणावेइ[5], '•पणावेत्ता चेडगं रायं एवं वयासी— हंभो चेडगराया ! अपत्थियपत्थगा ! दुरंत-पंत-लक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसिया ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! एस णं कूणिए राया आणवेइ— पच्चप्पिणाहि णं कूणियस्स रण्णो सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं च कुमारं पेसेहि अहवा जुद्धसज्जे चिट्ठाहि । एस णं कूणिए राया सबले सवाहणे° सखंधावारे णं इह हव्वमागच्छइ ।।

११७. तए णं से चेडए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव[7] तिवलियं भिउडिं निलाडे साहट्टु एवं वयासी— न अप्पिणामि णं कूणियस्स रण्णो सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं च कुमारं नो पेसेमि । एस णं जुद्धसज्जे चिट्ठामि । तं दूयं 'असक्कारिय असम्माणिय'[8] अवद्दारेणं निच्छुहावेइ[9] ।।

११८. [तए णं से दूए चेडएणं रण्णा असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं निच्छूढे समाणे जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता कूणियं रायं एवं वयासी—चेडए राया न अप्पिणइ सेयणगं गंधहत्थि जाव[10] अवद्दारेणं निच्छुहावेइ[11] ?] ।।

११९. तए णं से कूणिए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[12] कालादीए[13] दस कुमारे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे ममं असंविदिते णं सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं हारं अंतेउरं सभंडं च

---

१. उ० १।१०८; राय० सू० ६८१-६८३ ।
२. सं० पा०— करयल जाव वद्धावेत्ता ।
३. इयाणि (ग) ।
४. पू०—उ० १।२२ ।
५. पणामेइ (क) ।
६. सं० पा०— तं चेव सखंधावारे ।
७. उ० १।२२ ।
८. असक्कारितं असम्माणितं (क,ख,ग) ।
९. निच्छुभावेइ (क) ।
१०. उ० १।११७ ।
११. ११९ सूत्रे 'तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा इति पाठोस्ति, किन्तु दूतस्य पुनरागमनस्य चेटकस्याज्ञप्तेर्निवेदनस्य अभिधायकं सूत्रं केनापि कारणेन विलुप्तमस्ति । तत् 'नायाधम्मकहाओ' १।१६।२४६ सूत्रस्य तथा प्रस्तुतागमस्य १।११७ सूत्रस्याधारेण प्रकल्पितमस्ति । 'नायाधम्मकहाओ' १।८।१६० सूत्रेणापि अस्य समर्थनं जायते ।
१२. पू०—उ० १।२२ ।
१३. कालातीए (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गहाय चंपाओ निक्खमइ, निक्खमित्ता वेसालिं अज्जगं[1] •चेडयं रायं° उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। तए णं मए सेयणगस्स गंधहत्थिस्स अट्ठारसवंकस्स हारस्स अट्ठाए दूया पेसिया। ते य चेडएण रण्णा इमेणं कारणेणं पडिसेहित्ता अदुत्तरं च णं ममं तच्चे दूए असक्कारिए असम्माणिए अवद्दारेणं निच्छुहाविए[2], तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं चेडगस्स रण्णो जुत्तं गिण्हित्तए॥

१२०. तए णं ते कालादीया दस कुमारा कूणियस्स रण्णो एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति॥

१२१. तए णं से कूणिए राया ते कालादीए दस कुमारे एवं वयासी- गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सएसु-सएसु रज्जेसु, पत्तेयं-पत्तेयं ण्हाया[3] •कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ता हत्थिखंधवरगया पत्तेयं-पत्तेयं तिहिं दंतिसहस्सेहिं[4] 'तिहिं आससहस्सेहिं तिहिं रहसहस्सेहिं'[5] तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव[6] दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं सएहिंतो-सएहिंतो नयरेहिंतो पडिनिक्खमह, पडिनिक्खमित्ता ममं अंतियं पाउब्भवह॥

१२२. तए णं ते कालादीया दस कुमारा कूणियस्स रण्णो एयमट्ठं सोच्चा सएसु-सएसु रज्जेसु पत्तेयं-पत्तेयं ण्हाया जाव[7] तिहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव[8] दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं सएहिंतो-सएहिंतो नयरेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव अंगा[9]-जणवए जेणेव चंपा नयरी जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागया करयल[10]-•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं° वद्धावेंति॥

१२३. तए णं से कूणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह[11], हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति॥

१२४. तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ जाव[12] पडिनिग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव[13] गयवइं नरवई दुरूढे॥

१२५. तए णं से कूणिए राया तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव[14] दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कालादीया दस कुमारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कालादीएहिं दसहिं कुमारेहिं सद्धिं 'एगतओ मिलायइ'[15]॥

१२६. तए णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं तेत्तीसाए आससहस्सेहिं तेत्तीसाए

---

१. सं० पा०—अज्जगं जाव उवसंपज्जित्ता।
२. निच्छुहावेइ (क,ग)।
३. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता।
४. दंतिसहस्सेहिं एवं (क,ख,ग)।
५. तिहिं हयसहस्सेहिं (क); तिहिं रहसहस्सेहिं तिहिं आससहस्सेहिं (ग)।
६. ओ० सू० ६७।
७. उ० १।१२१।
८. ओ० सू० ६७।
९. अंग (ग)।
१०. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेंति।
११. उवट्ठवेह (वृ); पडिकप्पेह (वृपा)।
१२,१३. ओ० सू० ६३।
१४. उ० १।१२१।
१५. एगओ मिलायंति (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहसहस्सेहिं तेत्तीसाए मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[1] दुंदुहि-णिग्घोस-णाइयरवेणं सुहेहिं[2] वसही-पायरासेहिं नाइविगिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे-वसमाणे अंगाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव विदेहे जणवए जेणेव वेसाली नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

चेडगस्स जुद्धसज्जा-पदं

१२७. तए णं से चेडए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे नवमल्लई नव लेच्छई[3] कासीकोसलगा अट्ठारसवि गणरायाणो सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी - एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रण्णो असंविदिए णं सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं गहाय इहं हव्वमागए। तए णं कूणिएणं सेयणगस्स गंधहत्थिस्स अट्ठारसवंकस्स य हारस्स अट्ठाए तओ दूया पेसिया। ते य मए इमेणं कारणेणं पडिसेहिया। तए णं से कूणिए ममं एयमट्ठं अपडिसुणमाणे चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुज्झसज्जे इहं हव्वमागच्छइ, तं किं णं देवाणुप्पिया ! सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रण्णो पच्चप्पिणामो ? वेहल्लं कुमारं पेसेमो ? उदाहु जुज्झित्था[4] ?॥

१२८. तए णं नव मल्लई नव लेच्छई[5] कासीकोसलगा अट्ठारसवि गणरायाणो चेडगं रायं एवं वयासी - नो एयं सामी ! जुत्तं वा पत्तं वा रायसरिसं[6] वा, जं णं सेयणगं गंधहत्थि अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रण्णो पच्चप्पिणिज्जइ, वेहल्ले य कुमारे सरणागए पेसिज्जइ। तं जइ णं कूणिए राया चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुज्झसज्जे इहं हव्वमागच्छइ तए णं अम्हे कूणिएणं रण्णा सद्धिं जुज्झामो ॥

१२९. तए णं से चेडए राया ते नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारसवि गणरायाणो एवं वयासी - जइ णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे कूणिएणं रण्णा सद्धिं जुज्झह, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! सएसु-सएसु रज्जेसु, पत्तेयं-पत्तेयं ण्हाया[7] •जाव[8] मम अंतियं पाउब्भवह ॥

१३०. तए णं ते नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारसवि गणरायाणो जाव[9] जेणेव वेसाली नयरी जेणेव चेडए राया तेणेव उवागया जाव[10] जएणं विजएणं वद्धावेंति ॥

१३१. तए णं से चेडए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह जहा कूणिए जाव[11] गयवइं नरवई दुरूढे ॥

१३२. तए णं से चेडए राया तिहिं दंतिसहस्सेहिं जहा कूणिए जाव[12] वेसालिं नयरिं

---

१. ओ० सू० ६७।
२. सुभेहिं (क,ख,ग)।
३. लेच्छती (क)।
४. हुब्भित्था (क)।
५. लेच्छी (क); लच्छई (ग)।
६. °सिरीसं (क,ग)।
७. सं०पा०— ण्हाया जहा कालादीया जाव जएणं।
८. उ० १।१२१।
९. उ० १।१२२।
१०. उ० १।१२२।
११. उ० १।१२३,१२४।
१२. उ० १।१२५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारसवि गणरायाणो तेणेव उवागच्छइ ॥

१३३. तए णं से चेडए राया सत्तावण्णाए दंतिसहस्सेहिं सत्तावण्णाए आससहस्सेहिं सत्तावण्णाए रहसहस्सेहिं सत्तावण्णाए मणुस्सकोडीएहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[1] दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं सुहेहिं[2] वसही-पायरासेहिं नाइविगिट्ठेहिं अंतरावासेहिं[3] वसमाणे-वसमाणे विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसपंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंधावारनिवेसं करेइ, करेत्ता कूणियं रायं पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे चिट्ठइ ॥

रहमुसल-संगाम-पदं

१३४. तए णं से कूणिए राया सव्विड्ढीए जाव[4] दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं जेणेव देसपंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेडयस्स रण्णो जोयणंतरियं खंधावारनिवेसं करेइ ॥

१३५. तए णं ते दोण्णिवि रायाणो रणभूमिं सज्जावेंति, सज्जावेत्ता रणभूमिं जयंति ॥

१३६. तए णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं[5] •तेत्तीसाए आससहस्सेहिं तेत्तीसाए रहसहस्सेहिं तेत्तीसाए° मणुस्सकोडीहिं गरुलव्वूहं[6] रएइ, रएत्ता गरुलव्वूहेणं रहमुसलं संगामं ओयाए[7] ॥

१३७. तए णं से चेडगे राया सत्तावण्णाए दंतिसहस्सेहिं[8] •सत्तावण्णाए आससहस्सेहिं सत्तावण्णाए रहसहस्सेहिं° सत्तावण्णाए मणुस्सकोडीहिं सगडवूहं रएइ, रएत्ता सगडवूहेणं रहमुसलं संगामं ओयाए[9] ॥

१३८. तए णं ते दोण्हवि राईणं अणीया[10] सण्णद्ध[11]-•बद्ध-वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिंध-पट्टा° गहियाउह[12]-पहरणा मगइतेहिं[13] फलएहिं निक्कट्ठाहिं असीहिं अंसागएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं[14] डावाहिं ओसारियाहिं ऊरुघंटाहिं[15] छिप्पतूरेणं[16] वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठसीहनाय[17]-बोलकलकलरवेणं समुद्दरवभूयं[18] पिव करेमाणा सव्विड्ढीए जाव[19] दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं हयगया हयगएहिं गयगया गयगएहिं रहगया रहगएहिं 'पायत्तिया

---

१. ओ० सू० ६७ ।
२. सुभेहिं (क,ख,ग) ।
३. अंतरेहिं च (क); अंतरेहिं (ख,ग) ।
४. ओ० सू० ६७ ।
५. सं० पा०—दंतिसहस्सेहिं जाव मणुस्सकोडीहिं ।
६. गरुलवूहं (ख,ग) ।
७. उवायाए (क,ख,ग) ।
८. सं० पा०—दंतिसहस्सेहिं जाव सत्तावण्णाए ।
९. उवायाते (ख) ।
१०. अणिया (क) ।
११. सं० पा०—सण्णद्ध जाव गहियाउह ।
१२. गहियाउय (क) ।
१३. मग्गंतितेहिं (क); मगहितेहिं (ग); मगइएहिं (वि० १।३।४२) ।
१४. समुल्लासिताहिं (ख) ।
१५. ओरुघंटाहि (क) ।
१६. क्पिप्पतूरेहिं (क); छिप्पत्तूरेणं (ख); छिप्पत्तरेणं (ग) ।
१७. उक्किट्ठी० (क) ।
१८. °भूतं (क,ख) ।
१९. ओ० सू० ६७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पायत्तिएहिं[१] अण्णमण्णेहि सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ।।

१३९. तए णं ते दोण्हवि राईणं[२] अणीया[३] नियगसामीसासणाणुरत्ता महया जणक्खयं जणवहं जणप्पमद्दं जणसंवट्टकप्पं[४] नच्चंतकबंधकरभीमं[५] रुहिरकद्दमं करेमाणा अण्णमण्णेणं सद्धिं जुज्झंति ।।

कालकुमारस्स मरण-पदं

१४०. तए णं से काले कुमारे तिहिं दंतिसहस्सेहिं जाव[६] तिहिं मणुस्सकोडीहिं गरुल-व्वूहेणं एक्कारसमेणं खंधेणं कूणिएणं रण्णा सद्धिं रहमुसलं संगामं संगामेमाणे हयमहिय-पवरवीरघाइय-निवडियचिंधज्झयपडागे [७]•निरालोयाओ दिसाओ करेमाणे चेडगस्स रण्णो सपक्खं सपडिदिसिं रहेणं पडिरहं हव्वमागए । तए णं से चेडए राया कालं कुमारं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निलाडे साहट्टु धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता वइसाहं ठाणं ठाइ, ठिच्चा आययकण्णाययं उसुं करेइ, करेत्ता कालं कुमारं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ वव-रोवेइ° । तं एयं खलु गोयमा ! काले कुमारे एरिसएहिं आरंभेहिं[८] •एरिसएहिं आरंभ-समारंभेहिं एरिसएहिं भोगेहिं एरिसएहिं भोग-संभोगेहिं° एरिसएणं असुभकडकम्मपब्भारेणं कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए हेमाभे नरए[९] •दससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु° नेरइयत्ताए उववण्णे ।।

१४१. काले णं भंते ! कुमारे चउत्थीओ पुढवीओ अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छि-हिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं जहा दढपइण्णो जाव[१०] सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ[११] •मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण°मंतं काहिइ ।।

निक्खेव-पदं

१४२. तं एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[१२] संपत्तेणं निरयावलि-याणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते

—त्ति बेमि ।।

---

१. पयाइय पयाइहिएहिं (क) ।
२. रायीणं (क) ।
३. अणिया (क,ख) ।
४. °संघट्टकप्पं (क) ।
५. °कारभीमं (क,ग) ।
६. उ० १।१४ ।
७. सं० पा०—जहा भगवया कालीए देवीए परिकहियं जाव जीवियाओ ववरोविए ।
८. सं० पा० आरंभेहिं जाव एरिसएणं ।
९. सं० पा० नरए जाव नेरइयत्ताए ।
१०. ओ० सू० १४१-१५४ ।
११. सं० पा०—बुज्झिहिइ जाव अंतं ।
१२. ना० १।१।७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२-१० अज्झयणाणि

१४३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं निरयावलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स निरयावलियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

१४४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। कूणिए राया। पउमावई देवी॥

१४५. तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा कूणियस्स रण्णो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था—सूमाला॥

१४६. तीसे णं सुकालीए देवीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे होत्था—सुकुमाले॥

१४७. तए णं से सुकाले कुमारे अण्णया कयाइ तिहिं दंतिसहस्सेहिं जहा कालो कुमारो निरवसेसं तं चेव भाणियव्वं जाव[3] महाविदेहे वासे अंतं काहिइ॥

१४८. एवं सेसावि अट्ठ अज्झयणा नेयव्वा पढमसरिसा, नवरं मायाओ सरिसनामाओ निरयावलियाओ समत्ताओ। निक्खेवो 'सव्वासिं भाणियव्वो'[4]॥

१,२. ना० १।१।७।

३. उ० १।१४-१४१।

४. सव्वेसिं भाणियव्वो तहा (ग)।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

बीओ वग्गो

कप्पवडिंसियाओ

पढमं अज्झयणं

पउमे

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स कप्पवडिंसियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

पउमे महापउमे, भद्दे सुभद्दे पउमभद्दे ।
पउमसेणे पउमगुम्मे, नलिणिगुम्मे आणंदे नंदणे ॥१॥

३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[4] संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स कप्पवडिंसियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[5] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था । पुण्णभद्दे चेइए । कूणिए राया । पउमावई देवी ॥

५. तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा कूणियस्स रण्णो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था - सूमाला ॥

६. तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था—सूमाले ॥

७. तस्स णं कालस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था—सूमालपाणिपाया जाव[6] विहरइ ॥

८. तए णं सा पउमावई देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे जाव[7] सीहं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा ॥

९. एवं जम्मणं जहा महाबलस्स[8] जाव[9] नामधेज्जं—जम्हा णं अम्हं इमे दारए

१,२,३,४,५. ना० १।१।७ ।
६. ओ० सू० १५ ।
७. भग० ११।१३३ ।
८. महब्बलस्स (क) ।
९. भग० ११।१३३-१५३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालस्स कुमारस्स पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं पउमे-पउमे। सेसं जहा महाबलस्स, अट्ठओ दाओ जाव उप्पिं पासायवरगए विहरइ। सामी समोसरिए। परिसा निग्गया। कूणिए निग्गए। पउमेवि जहा महाबले निग्गए तहेव। अम्मापिइआपुच्छणा जाव[1] पव्वइए, अणगारे जाए इरियासमिए जाव[2] गुत्तबंभयारी॥

१०. तए णं से पउमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[3]-°दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ॥

११. तए णं से पउमे अणगारे तेणं ओरालेणं जहा मेहो तहेव धम्मजागरिया चिंता एवं जहेव मेहो तहेव समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता विउले जाव[4] पाओवगए [कालं अणवकंखमाणे विहरइ?]॥

१२. तए णं से पउमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं पंच वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आणुपुव्वीए कालगए। थेरा ओइण्णा। भगवं गोयमे पुच्छइ, सामी कहेइ जाव[5] सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंते उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे। दो सागराइं ठिई॥

१३ से णं भंते! पउमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं पुच्छा? गोयमा! महाविदेहे वासे जहा दढपइण्णो जाव[6] अंतं काहिइ॥

१४. तं एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[7] संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते —त्ति बेमि॥

---

१. भग० ११।१५४-१६८।
२. ओ० सू० २७।
३. सं० पा०—छट्ठट्ठम जाव विहरइ।
४. ना० १।१।२०२-२०६।
५. ना० १।१।२११।
६. ओ० सू० १४१-१५४।
७. ना० १।१।७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीअं अज्झयणं

महापउमे

१५. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स कप्पवडिंसियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

१६. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। कूणिए राया। पउमावई देवी ॥

१७. तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा कूणियस्स रण्णो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था ॥

१८. तीसे णं सुकालीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे ॥

१९. तस्स णं सुकालस्स कुमारस्स महापउमा नामं देवी होत्था—सूमाला ॥

२०. तए णं सा महापउमा देवी अण्णया कयाइं तंसि तारिसगंसि एवं तहेव महापउमे नामं दारए जाव[3] सिज्झिहिइ, नवरं—ईसाणे कप्पे उववाओ उक्कोसट्ठिइओ ॥

२१. तं एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[4] संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते —त्ति बेमि ॥

३-१० अज्झयणाणि

२२. एवं सेसावि अट्ठ नेयव्वा[5]। मायाओ सरिसनामाओ। कालाईणं दसण्हं पुत्ताणं[6] आणुपुव्वीए[7]—

दोण्हं च पंच चत्तारि, तिण्हं तिण्हं च होंति तिण्णेव।
दोण्हं च दोण्णि वासा, सेणियनत्तूण परियाओ ॥१॥

उववाओ आणुपुव्वीए—पढमो सोहम्मे बिइओ ईसाणे तइओ सणंकुमारे चउत्थो माहिंदे पंचमो बंभलोए छट्ठो लंतए सत्तमो महासुक्के अट्ठमो सहस्सारे नवमो पाणए दसमो अच्चुए। सव्वत्थ उक्कोसट्ठिई भाणियव्वा। महाविदेहे सिज्झिहिंति ॥

१,२. ना० १।१।७।
३. उ० २।८-१३।
४. ना० १।१।७।
५. उ० २।१-१४।
६. पुत्ता (क,ख)।
७. अणुपुव्वीए (ख,ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइओ वग्गो

पुप्फियाओ

पढमं अज्झयणं

चंदे

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं उवंगाणं दोच्चस्स वग्गस्स कप्पवडिंसियाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं पुप्फियाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं उवंगाणं तच्चस्स वग्गस्स पुप्फियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

चंदे सूरे सुक्के, बहुपुत्तिय पुण्ण[3]-माणिभद्दे य ।
दत्ते सिवे बले या, अणाढिए चेव बोद्धव्वे ।।१।।

३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[4] संपत्तेणं पुप्फियाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[5] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया ।।

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे । परिसा निग्गया ।।

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदे जोइसिंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव[6] विहरइ ।।

७. इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे-आभोएमाणे पासइ, पच्छा समणं भगवं महावीरं जहा सूरियाभे आभियोगं देवं सद्दावेत्ता जाव[7] सुरिंदाभिगमणजोग्गं करेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति । सूसरा घंटा जाव विउव्वणा, नवरं—जाणविमाणं जोयणसहस्सविच्छिण्णं अद्धतेवट्ठिजोयणमूसियं महिंदज्झओ पणुवीसं

---

१. ना० १।१।७ ।
२. ना० १।१।७ ।
३. पुण्णभद्दे (ख,ग) ।
४,५. ना० १।१।७ ।
६. राय० सू० ७ ।
७. राय० सू० ८-१२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोयणमूसिओ सेसं जहा सूरियाभस्स जाव[1] आगओ नट्टविही तहेव पडिगओ ॥

८. भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं पुच्छा। कूडागारसाला दिट्ठंतो सरीरं अणुपविट्ठा[2] ॥

९. पुव्वभवो --एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्था। कोट्ठए चेइए ॥

१०. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए अंगई नामं गाहावई होत्था--अड्ढे जाव[3] अपरिभूए ॥

११. तए णं से अंगई गाहावई सावत्थीए नयरीए बहूणं[4] •राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहाणं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था° ॥

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे णं[5] अरहा पुरिसादाणीए आइगरे[6] जहा[7] महावीरो नवुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठतीसाए अज्जियासहस्सेहिं जाव[8] कोट्ठए समोसढे। परिसा निग्गया ॥

१३. तए णं से अंगई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे जहा कत्तिओ सेट्ठी निग्गच्छइ जाव[9] पज्जुवासइ धम्मं सोच्चा निसम्म[10] जं, नवरं--देवाणुप्पिया! जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि, जहा गंगदत्ते तहा पव्वइए[11]। अणगारे जाए--इरियासमिए जाव[12] गुत्तबंभयारी ॥

१४. तए णं से अंगई अणगारे पासस्स अरहओ तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ[13] •-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं° भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा चंदवडिंसए विमाणे उववातसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए चंदजोइसिदत्ताए उववण्णे ॥

---

१. राय० सू० १३-१२०।

२. पू० राय० सू० १२१-१२३।

३. ओ० सू० १४१।

४. सं० पा० --बहूणं नगर-निगम जहा आणंदो। वृत्तौ अस्य पूर्तिरेवं दृश्यते 'जहा आणंदो' त्ति उपासकदशांगोक्तः श्रावकआनन्दनामा, स च बहूणं ईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियनगरनिगमसेट्ठिसत्थवाहाणं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य मंतेसु य कुडुंबेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे सव्वकज्जवड्ढावए सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढीभूए होत्था।

५. × (क,ख)।

६. आदिगरे (क,ख)।

७. पू०- ओ० सू० १६; वाचनान्तरम्।

८. ओ० सू० १९-२२।

९. भग० १८।४२।

१०. पू०--भग० १६।७०, १८।४४।

११. पू० --भग० १६।७१।

१२. ओ० सू० २७।

१३. सं० पा० --चउत्थ जाव भावेमाणे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. तए णं से चंदे जोइसिंदे जोइसराया अहुणोववण्णे समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए—आहारपज्जत्तीए[1] °सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आण-पाणपज्जत्तीए° भासमणपज्जत्तीए पज्जत्तभावं गए ॥

१६. चंदस्स णं भंते! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ॥

१७. एवं खलु गोयमा! चंदस्स जोइसिंदस्स जोइसरण्णो सा दिव्वा देविड्ढी ॥

१८. चंदे णं भंते! जोइसिंदे जोइसराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

१९. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं पुप्फियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते —त्ति बेमि ॥

बीअं अज्झयणं

सूरे

२०. जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं पुप्फियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

२१. एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। समोसरणं। जहा चंदो तहा सूरोवि आगओ जाव[4] नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगओ। पुव्वभवपुच्छा। सावत्थी नयरी। सुपइट्ठे नामं गाहावई होत्था—अड्ढे जहेव अंगई जाव विहरइ। पासो समोसढो, जहा अंगई तहेव पव्वइए, तहेव विराहियसामण्णे जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव[5] अंतं करेहिइ ॥

२२. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं पुप्फियाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते —त्ति बेमि ॥

---

१. सं० पा०—आहारपज्जत्तीए जाव भासमण-पज्जत्तीए।

२,३. ना० १।१।७।

४. उ० ३।६-८।

५. उ० ३।९-१८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइयं अज्झयणं

सुक्के

उक्खेव-पदं

२३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं[2] •पुप्फियाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं° रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसढे। परिसा निग्गया॥

२५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुक्के महग्गहे सुक्कवडिंसए विमाणे सुक्कंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहेव चंदो तहेव[4] आगओ, नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगओ॥

२६. भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं पुच्छा। कूडागारसाला दिट्ठंतो[5]। पुव्वभवपुच्छा॥

सोमिलस्स अरहया पासेण संवाद-पदं

२७. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी होत्था॥

२८. तत्थ णं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे परिवसइ, अड्ढे जाव[6] अपरिभूए, रिउव्वेय[7] जाव[8] बहूसु बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिनिट्ठिए। पासे समोसढे। परिसा पज्जुवासइ॥

२९. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए[9] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था°—एवं खलु पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्विं[10] •चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इहसंपत्ते इहसमोसढे इहेव वाणारसीए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ, तं गच्छामि णं पासस्स अरहओ अंतिए पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं[11] •पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामि, तं जइ मे से इमाइं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं वागरेहिंति ततो णं वंदीहामि नमंसीहामि जाव पज्जुवासीहामि, अह मे से इमाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं नो वागरेहिंती तो णं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं य जाव वागरणेहिं य निप्पट्ठपसिणवागरणं

---

१. ना० १।१।७।
२. सं० पा०—उक्खेवओ भाणियव्वो।
३. ना० १।१।७।
४. उ० ३।६,७।
५. राय० सू० १२१-१२३।
६. ओ० सू० १४१।
७. रिव्वेय (क)।
८. ओ० सू० ९७।
९. सं० पा०—अज्झत्थिए°।
१०. सं० पा०—पुव्वाणुपुव्विं जाव अंबसालवणे विहरइ।
११. सं० पा०—जहा पण्णत्तीए। सोमिलो निग्गओ खंडियविहूणो जाव एवं वयासी—जत्ता ते भंते ! जवणिज्जं च ते ? पुच्छा। सरिसवया मासा कुलत्था एगे भवं जाव संबुद्धे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करेस्सामोतिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए जाव[1] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं वाणारसिं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणियस्स अदूरसामंते ठिच्चा पासं अरहं पुरिसादाणियं एवं वयासी—

३०. जत्ता ते भंते ? जवणिज्जं [ते भंते ?] ? अव्वाबाहं [ते भंते ?] ? फासुयविहारं [ते भंते ?] ? सोमिला ! जत्ता वि मे, जवणिज्जं पि मे, अव्वाबाहं पि मे, फासुयविहारं पि मे ।।

३१. किं ते भंते ! जत्ता ? सोमिला ! जं मे तव-नियम-संजम-सज्झाय--झाणा-वस्सगमादीएसु जोगेसु जयणा । सेत्तं जत्ता ।।

३२. किं ते भंते ! जवणिज्जं ? सोमिला ! जवणिज्जे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-- इंदियजवणिज्जे य नोइंदियजवणिज्जे य ।।

३३. से किं तं इंदियजवणिज्जे ? इंदियजवणिज्जे—जं मे सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति । सेत्तं इंदियजवणिज्जे ।।

३४. से किं तं नोइंदियजवणिज्जे ? नोइंदियजवणिज्जे --जं मे कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा नो उदीरेंति । सेत्तं नोइंदियजवणिज्जे । सेत्तं जवणिज्जे ।।

३५. किं ते भंते ! अव्वाबाहं ? सोमिला ! जं मे वातिय-पित्तिय-संभिय-सन्निवाइया विविहा रोगायंका सरीरगया दोसा उवसंता नो उदीरेंति । से तं अव्वाबाहं ।।

३६. किं ते भंते ! फासुयविहारं ? सोमिला ! जण्णं आरामेसु उज्जाणेसु देव-कुलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडगविवज्जियासु वसहीसु फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । सेत्तं फासुयविहारं ।।

३७. सरिसवया ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ? सोमिला ! सरिसवया [मे ?] भक्खेया वि अभक्खेया वि ।।

३८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ--सरिसवया मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ? से नूणं भे सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा सरिसवया पण्णत्ता, तं जहा--मित्तसरि-सवया य, धन्नसरिसवया य । तत्थ णं जेते मित्तसरिसवया ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा— सहजायया, सहवड्ढियया, सहपंसुकीलियया, ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जेते धन्नसरिसवया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य । तत्थ णं जेते असत्थपरिणया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जेते सत्थ-परिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा--एसणिज्जा य, अणेसणिज्जा य । तत्थ णं जेते अणेसणिज्जा ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता तं जहा--जाइया य, अजाइया य । तत्थ णं जेते अजाइया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—लद्धा य, अलद्धा य । तत्थ णं जेते अलद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जेते लद्धा

१. भग० २।६७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया। से तेणट्ठेणं सोमिला! एवं वुच्चइ—सरिसवया मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

३९. मासा ते भंते! किं भक्खेया? अभक्खेया? सोमिला! मासा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

४०. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—मासा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि? से नूणं भे सोमिला! बंभण्णएसु नएसु दुविहा मासा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वमासा य, कालमासा य। तत्थ णं जेते कालमासा ते णं सावणादीया आसाढपज्जवसाणा दुवालस पण्णत्ता, तं जहा—सावणे, भद्दवए, आसोए, कत्तिए, मग्गसिरे, पोसे, माहे, फग्गुणे, चेत्ते, वइसाहे, जेट्ठामूले, आसाढे। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते दव्वमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थमासा य धण्णमासा य। तत्थ णं जेते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुवण्णमासा य रुप्पमासा य। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते धण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य, असत्थपरिणया य। एवं जहा धण्णसरिसवया जाव से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ॥

४१. कुलत्था ते भंते! किं भक्खेया? अभक्खेया? सोमिला! कुलत्था मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

४२. से केणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि? से नूणं भे सोमिला! बंभण्णएसु नएसु दुविहा कुलत्था पण्णत्ता, तं जहा—इत्थिकुलत्था य, धण्णकुलत्था य। तत्थ णं जेते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कुलवधुया इ वा, कुलमाउया इ वा, कुलधुया इ वा। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते धण्णकुलत्था एवं जहा धण्णसरिसवया। से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ॥

४३. एगे भवं? दुवे भवं? अक्खए भवं? अव्वए भवं? अवट्ठिए भवं? अणेगभूय-भाव-भविए भवं? सोमिला! एगे वि अहं जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं ॥

४४. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—एगे वि अहं जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं? सोमिला! दव्वट्ठयाए एगे अहं, नाणदंसणट्ठयाए दुविहे अहं, पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, उवयोगट्ठयाए अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं। से तेणट्ठेणं जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं ॥

सोमिलस्स सावगधम्मगहण-पदं

४५. एत्थ णं से सोमिले माहणे° संबुद्धे सावगधम्मं पडिवज्जित्ता पडिगए ॥

४६. तए णं पासे अरहा अण्णया कयाइ वाणारसीओ नयरीओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

सोमिलस्स मिच्छत्त-पदं

४७. तए णं से सोमिले माहणे अण्णया कयाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणयाए य मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं[1], सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं[2] मिच्छत्तं विप्पडिवण्णे[3] ॥

१. परिवड्ढमाणेहिं २ (ग)।
२. परिहायमाणेहिं २ (ग)।
३. पडिवण्णे (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] 'चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे अच्चंतमाहण-कुलप्पसूए, तए णं मए वयाइं चिण्णाइं, 'वेदा य'[2] अधीया', दारा आहूया, पुत्ता जणिया, इड्ढीओ समाणीताओ, पसुवधा कया, जण्णा जट्ठा, दक्खिणा दिण्णा, अतिही पूजिता[4], अग्गी हुता, जूवा[5] निक्खित्ता, तं सेयं खलु मम इयाणिं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[6] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अंबारामे य 'माउलिंगारामे य बिल्लारामे य कविट्ठारामे य चिंचारामे य पुप्फारामे य'[7] रोवावित्तए[8]—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते वाणारसीए नयरीए बहिया अंबारामे य जाव पुप्फा-रामे य रोवावेइ ।।

४९. तए णं बहवे अंबारामा य जाव[9] पुप्फारामा य अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा आरामा जाया—किण्हा किण्होभासा जाव[10] रम्मा महा-मेहनिकुरंबभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणसिरीया अईव-अईव उव-सोभेमाणा चिट्ठंति ।।

सोमिलस्स तावसपव्वज्जा-पदं

५०. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[11] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणे अच्चंतमाहण-कुलप्पसूए, तए णं मए वयाइं चिण्णाइं,[12] •वेदा य अधीया, दारा आहूया, पुत्ता जणिया, इड्ढीओ समाणीताओ, पसुवधा कया, जण्णा जट्ठा, दक्खिणा दिण्णा, अतिही पूजिता, अग्गी हुता°, जूवा निक्खित्ता, तए णं मए वाणारसीए नयरीए बहिया बहवे अंबारामा जाव[13] पुप्फारामा य रोवाविया, तं सेयं खलु ममं इयाणिं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[14] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं[15] तावसभंडं घडावेत्ता, विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं

---

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
२. वेदाइं (ग) ।
३. अहिया (ग) ।
४. पूरिता (क) ।
५. जूय (ग) ।
६. ओ० सू० २२ ।
७. एवं माउलिंगा बिल्ला कविट्ठा चिंचा पुप्फा-रामा (क,ख,ग) ।
८. रोवियावित्तए (क); रोवेत्तए (ख) ।
९. उ० ३।४८ ।
१०. ओ० सू० ४ ।
११. सं० पा० – अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
१२. सं० पा०—चिण्णाइं जाव जूवा ।
१३. उ० ३।४८ ।
१४. ओ० सू० २२ ।
१५. संतियं (ख) ।

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

विउलेणं असण[1]-•पाण-खाइम-साइमेणं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता° सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं [जेट्ठपुत्तं च ?] आपुच्छित्ता, सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं[2] तंबियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूला वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा होत्तिया 'पोत्तिया कोत्तिया'[3] जण्णई सड्ढई[4] थालई हुंबउट्टा[5] दंतुक्खलिया[6] उम्मज्जगा संमज्जगा निमज्जगा संपक्खालगा दक्खिणकूला उत्तरकूला संखधमा कूलधमा मियलुद्धा हत्थितावसा उद्दंडगा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो[7] बिलवासिणो[8] जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फलाहारा जलाभिसेयकढिणगायभूया[9] आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं[10] कट्ठसोल्लियं[11] पिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति। तत्थ णं जेते दिसापोक्खिया तावसा, तेसिं अंतिए दिसापोक्खिय[तावस ?]त्ताए पव्वइत्तए, पव्वइए वि य णं समाणे[12] इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि[13]—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तएत्तिकट्टु 'एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुबहुं लोह[14] •कडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडं घडावेत्ता, विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं [जेट्ठपुत्तं च ?] आपुच्छित्ता, सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय तत्थ णं जेते दिसापोक्खिया तावसा, तेसिं अंतिए° दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे'[15] इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ॥

सोमिलस्स साधना-पदं

५१. तए णं सोमिले माहणरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चो-

१. सं० पा—असण जाव सम्माणेत्ता।
२. °कडेच्छुयं (क,ख)।
३. गोत्तिया बोहिया (क)।
४. वड्ढइ (क)।
५. हुंपउट्टा (क); हुंपउट्टा (ख); हुंपउद्वा (ग); हुंबउट्टा (ओ० सू० ९४)।
६. दंतुज्जलिया (क)।
७. वाकवासिणो (ओ० सू० ९४)।
८. वेलवासिणो (वृपा)।
९. °किढिण° (ख), जलाभिसेयकढिणगाया (वृ); जलाभिसेयकढिणगायभूया (वृपा)।
१०. × (क,ख); कंडुसोल्लियं (ग)।
११. कट्ठयसोल्लियं (क); × (ग)।
१२. समाणे उड्ढं बाहाओ (क,ख)।
१३. अभिगिण्हित्ता (क,ख)।
१४. सं० पा०—लोह जाव दिसापोक्खिय°।
१५. × (क,ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव 'सए उडए'[1] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयं गेण्हइ, गेण्हित्ता पुरत्थिमं दिसिं[2] पोक्खेइ, पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसि-अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउत्तिकट्टु पुरत्थिमं दिसं पसरइ, पसरित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं गेण्हइ, गेण्हित्ता किढिण[3]-संकाइयं भरेइ, भरेत्ता दब्भे य कुसे य पत्तामोडं[4] च समिहाकट्ठाणि य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सए उडए[5] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ, वड्ढेत्ता उवलेवण-संमज्जणं करेइ, करेत्ता दब्भकलसहत्थगए[6] जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गंगं महाणइं ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता 'जलाभिसेयं करेइ, करेत्ता जलकिड्डं'[7] करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवपिउकयकज्जे दब्भकलसहत्थगए गंगाओ महाणईओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भे य कुसे य वालुयाए य वेदिं रएइ, रएत्ता सरयं करेइ, करेत्ता अरणिं[8] करेइ, करेत्ता सरएणं अरणिं महेइ, महेत्ता अग्गिं पाडेइ, पाडेत्ता अग्गिं संधुक्केइ, संधुक्केत्ता समिहाकट्ठाणि पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गिं[9] उज्जालेइ, उज्जालेत्ता अग्गिस्स[10] दाहिणे पासे, सत्तंगाइं समादहे, [तं जहा—

सकथं[11] वक्कलं[12] ठाणं, सेज्जभंडं कमंडलुं ।
दंडदारुं[13] तहप्पाणं, अहे ताइं[14] समादहे[15] ॥१॥]

महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, 'चरुं साहेइ'[16], साहेत्ता बलिं वइस्सदेवं करेइ, करेत्ता अतिहिपूयं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा अप्पणा आहारं आहारेइ ॥

५२. तए णं से सोमिले माहणरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

५३. तए णं से सोमिले माहणरिसी दोच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि [17]•आयावणभूमीओ

---

१. साए उडव (क) ।
२. दिसं (क) ।
३. कढिण (क) ।
४. पत्तमोडं (क) ।
५. उडवए (क) ।
६. दब्भकलसाहत्थगए (वृपा) ।
७. जलकिड्डं करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं (वृ) ।
८. अगणि (क) ।
९. अग्गी (क) ।
१०. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ भगवतीवृत्तावपि (पत्र ५२०) च सार्धश्लोकस्य उल्लेखो लभ्यते—'अग्गिस्स दाहिणे' इत्यादि सार्धश्लोकः तद्यथा शब्दवर्जम् (A. S. Gopani, V. J. Chokshi द्वारा सम्पादितवृत्तिपत्र ३२) ।
११. भगवं (क); सगधं (ख) ।
१२. मकलं (क) ।
१३. डंडदारुं (क); दंडदारं (ख) ।
१४. ताइं समिते (क,ख ग); भगवत्यामपि (११।६४) च नैतत् पदं लभ्यते ।
१५. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
१६. वेतंसावेइ (क) ।
१७. सं० पा० - तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव आहारं आहारेइ, नवरं इमं नाणत्तं- दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलं माहणरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव अणुजाणउ त्ति कट्टु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयं गेण्हइ, गेण्हित्ता दाहिणं दिसिं पोक्खेइ, दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसिं-अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउत्तिकट्टु दाहिणं दिसिं पसरइ जाव[1] तओ पच्छा अप्पणा आहारं आहारेइ ॥

५४. एवं तच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि पच्चत्थिमेणं वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसिं जाव[2] तओ पच्छा अप्पणा आहारं आहारेइ। एवं चउत्थछट्ठक्खमणपारणगंसि उत्तरेणं वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलमाहणरिसिं जाव[3] तओ पच्छा अप्पणा° आहारं आहारेइ ॥

५५. तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स[4] अयमेयारूवे अज्झत्थिए[5] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए सोमिले नामं माहणरिसी अच्चंतमाहणकुलप्पसूए, तए णं मए वयाइं चिण्णाइं जाव[6] जूवा निक्खित्ता, तए णं मए वाणारसीए[7] •नयरीए बहिया बहवे अंबारामा य माउलिंगारामा य बिल्लारामा य कविट्ठारामा य चिंचारामा य° पुप्फारामा य रोवाविया, तए णं मए सुबहुं लोह[8] •कडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडं घडावेत्ता, विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं° उवक्खडावेत्ता जाव[9] जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता जाव[10] जेट्ठपुत्तं आपुच्छित्ता, सुबहुं लोह[11] •कडाहकडुच्छुयं तंबियं तावसभंडं गहाय तत्थ णं जेते दिसापोक्खिया तावसा तेसिं दिसापोक्खियतावसत्ताए° पव्वइए, पव्वइए वि य णं समाणे छट्ठंछट्ठेणं जाव[12] विहरिए[13], तं सेयं खलु ममं इयाणिं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[14] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते बहवे तावसे दिट्ठाभट्ठे य पुव्वसंगइए य परियायसंगइए[15] य आपुच्छित्ता आसमसंसियाणि य

दाहिणं दिसिं पसरइ। एवं पच्चत्थिमेणं वरुणे महाराया जाव पच्चत्थिमं दिसिं पसरइ। उत्तरेणं वेसमणे महाराया जाव उत्तरं दिसिं पसरइ। पुव्वदिसागमेणं चत्तारि दिसाओ भाणियव्वाओ जाव आहारं आहारेइ।

१. उ० ३।५१।

२. उ० ३।५२,५३।

३. उ० ३।५२,५३।

४. जागरेमाणे (क)।

५. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

६. उ० ३।४८।

७. सं० पा०—वाणारसीए जाव पुप्फारामा य जाव रोविया (क,ख,ग)।

८. सं० पा०—लोह जाव घडावेत्ता जाव उवक्खडावेत्ता।

९. उ० ३।५०।

१०. उ० ३।५०।

११. सं० पा०—लोह जाव गहाय मुंडे जाव पव्वइए।

१२. उ० ३।५०-५४।

१३. विहरइ (क,ग)।

१४. ओ० सू० २२।

१५. परिसासंगइए (क); × (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहूइं सत्तसयाइं अणुमाणइत्ता वागलवत्थनियत्थस्स किढिण[1]-संकाइय-[2]गहितग्गिहोत्त-सभंडोवगरणस्स[2] कट्ठमुद्दाए[3] मुहं बंधित्ता उत्तरदिसाए उत्तराभिमुहस्स महप्पत्थाणं पत्थाइत्तए —एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते बहवे तावसे य दिट्ठाभट्ठे य पुव्वसंगइए य [4]°परियायसंगइए य आपुच्छित्ता आसमसंसियाणि य बहूइं सत्तसयाइं अणुमाणइत्ता वागलवत्थनियत्थे किढिण-संकाइय-गहितग्गिहोत्त-सभंडोवगरणे° कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—जत्थेव णं अहं जलंसि वा[5] थलंसि वा दुग्गंसि वा निन्नंसि वा पव्वयंसि वा विसमंसि वा गड्डाए वा दरीए वा पक्खलेज्ज वा पवडेज्ज वा, नो खलु मे कप्पइ पच्चुट्ठित्तएत्तिकट्टु अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहे महप्पत्थाणं पत्थिए ।।

५६. तए णं से सोमिले माहणरिसी पच्चावरण्हकालसमयंसि[6] जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागए, असोगवरपायवस्स अहे किढिण-संकाइयं[7] ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ, वड्ढेत्ता उवलेवण-संमज्जणं करेइ, करेत्ता दब्भकलसहत्थगए जेणेव गंगा महाणई [8]°तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गंगं महाणइं ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं करेइ, करेत्ता जलकिड्डं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवपिउकय-कज्जे दब्भकलसहत्थगए° गंगाओ महाणईओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव असोगवरपायवे तेणेव [9]उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाए य वेदिं रएइ, रएत्ता सरगं करेइ, करेत्ता जाव[10] बलिं वइस्सदेवं करेइ, करेत्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

५७. तए णं तस्स सोमिलमाहणरिसिस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए ।।

५८. तए णं से देवे सोमिलं माहणं एवं वयासी—हंभो सोमिलमाहणा ! पव्वइया ! दुप्पव्वइयं ते ।।

५९. [11]तए णं से सोमिले तस्स देवस्स एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ[11] ।।

६०. [12]ततेणं से देवे सोमिलं माहणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—हंभो सोमिल-माहणा ! पव्वइया ! दुप्पव्वइयं ते[12] ।।

६१. तए णं से सोमिले तस्स देवस्स दोच्चंपि तच्चंपि एयमट्ठं नो आढाइ नो परि-

---

१. कढिण (क,ख) ।
२. गिहितग्गिहोत्तस्सभं° (क) ; गहितग्गिहोत्त-स्सभं° (ख) ; गिहितसभंडोवगरणस्स (वृ) ।
३. कट्ठमुंडाते (क) ।
४. सं० पा०— तं चेव जाव कट्ठमुद्दाए ।
५. वा एवं (क,ख,ग) ।
६. पुव्वावरण्ह° (क,ख,ग) ।
७. संकाइयगं (क,ख,ग) ।
८. सं० पा०— जहा सिवो जाव गंगाओ ।
९. उवागए (क,ख) ।
१०. उ० ३।५१ ।
११. × (क) ।
१२. × (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाणइ[1], •अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे° तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

६२. तए णं से देवे सोमिलेणं माहणरिसिणा अणाढाइज्जमाणे[2] जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।।

६३. तए णं से सोमिले कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिण-संकाइय-गहिय-ग्गिहोत्त-भंडोवगरणे[4] कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता [उत्तराए दिसाए ?] उत्तराभिमुहे संपत्थिए ।।

६४. तए णं से सोमिले बिइयदिवसम्मि पच्चावरण्हकालसमयंसि जेणेव सत्तिवण्णे तेणेव उवागए, सत्तिवण्णस्स अहे किढिण-संकाइयं ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ जहा असोगवरपायवे जाव[5] अग्गिं हुणइ, 'चरुं साहेइ, बलिं वइस्सदेवं करेइ'[6], कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

६५. तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भूए ।।

६६. तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवण्णे जहा असोगवरपायवे जाव[7] पडिगए ।।

६७. तए णं से सोमिले कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[8] उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिण-संकाइयं गेण्हइ, गेण्हित्ता कट्ठ-मुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए ।।

६८. तए णं से सोमिले तइयदिवसम्मि पच्चावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवर-पायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे किढिण-संकाइयं ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ जाव[9] 'गंगाओ महाणईओ'[10] पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव असोगवर-पायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[11] वेदिं रएइ, रएत्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

६९. तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भूए[12], तं चेव भणइ जाव[13] पडिगए ।।

७०. तए णं से सोमिले कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[14] उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिण-संकाइय-'गहियग्गिहोत्त-भंडोवगरणे'[15] कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए ।।

७१. तए णं से सोमिले चउत्थदिवसम्मि पच्चावरण्हकालसमयंसि जेणेव वडपायवे

---

१. सं० पा०—परिजाणइ जाव तुसिणीए ।
२. अतोग्रे 'अपरिजाणिज्जमाणे' इति पाठः प्रासङ्गिकोस्ति, किन्तु आदर्शेषु नोपलभ्यते ।
३. ओ० सू० २२ ।
४. समंडो° (उ० ३।५५) ।
५. उ० ३।५६ ।
६. × (क,ख,ग,) ।
७. उ० ३।५८-६२ ।
८. ओ० सू० २२ ।
९. उ० ३।५६ ।
१०. गंगं महानइं (क,ख,)
११. पू०— उ० ३।५६ ।
१२. पाउब्भवित्था (क,ग,) ।
१३. उ० ६।५८-३२ ।
१४. ओ० सू० २२ ।
१५. जाव अग्गिहोत्तं (क,ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेणेव उवागए, वडपायवस्स अहे किढिण-संकाइयं ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ, उवलेवण-संमज्जणं करेइ जाव[1] कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

७२. तए णं तस्स सोमिलस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भूए[2], तं चेव भणइ जाव[3] पडिगए ।।

७३. तए णं से सोमिले कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते वागलवत्थनियत्थे किढिण-संकाइयं[5]- •गहियग्गिहोत्त-भंडोवगरणे° कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता उत्तराए दिसाए उत्तराभिमुहे संपत्थिए ।।

७४. तए णं से सोमिले पंचमदिवसम्मि पच्चावरण्हकालसमयंसि जेणेव उंबरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उंबरपायवस्स अहे किढिण-संकाइयं ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ जाव[6] कट्ठमुद्दाए मुहं बंधइ, बंधित्ता तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

७५. तए णं तस्स सोमिलमाहणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे[7] •अंतियं पाउब्भूए ।।

७६. तए णं से देवे सोमिलं माहणं° एवं वयासी—हंभो[8] सोमिला ! पव्वइया ! दुप्पव्वइयं ते ।।

७७. •[9]तए णं से सोमिले तस्स देवस्स एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढाय-माणे अपरिजाणमाणे° तुसिणीए संचिट्ठइ । देवो दोच्चंपि तच्चंपि वदइ—सोमिला ! पव्व-इया ! दुप्पव्वइयं ते ।।

सोमिलस्स देवेण पसिणोत्तर-पदं

७८. तए णं से सोमिले तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे तं देवं एवं वयासी—कहं णं देवाणुप्पिया ! मम दुप्पव्वइयं ?

७९. तए णं से देवे सोमिलं माहणं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुमं पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियं[10] पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए दुवालसविहे सावगधम्मे पडिवण्णे[11], तए णं तव अण्णया कयाइ असाहुदंसणेण[12] पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स जाव पुव्वचिंतियं देवो उच्चारेइ जाव जेणेव

१. उ० ३।५६ ।
२. × (क) ।
३. उ० ३।५८-६२ ।
४. ओ० सू० २२ ।
५. सं० पा०—संकाइय जाव कट्ठमुद्दाए ।
६. उ० ३।५६ ।
७. सं० पा०—देवे जाव एवं ।
८. हंहो (क) ।
९. सं० पा०—पढमं भणइ तहेव ।
१०. अंतिए (ख) ।
११. ४५ सूत्रे 'सावगधम्मं पडिवज्जित्ता' इति पाठोस्ति, अत्र 'पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए दुवालसविहे सावगधम्मे पडिवण्णे' इति पाठोस्ति । ८१,८२ सूत्रयो : 'पुव्वपडिवण्णाइं पंच अणुव्वयाइं' इति पाठोस्ति । अनयो : सप्त-शिक्षाव्रतानां उल्लेखो नास्ति । एतत् परिवर्तन भगवतो महावीरस्य परम्परानुसारि कृतं स्थ-विरै : । द्रष्टव्यम्—ना० १।५।४५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
१२. पू०- उ० ३।४७; × (क,ख) ।

असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छसि[1], उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयं जाव[2] तुसिणीए संचिट्ठसि। तए णं अहं पुव्वरत्तावरत्तकाले तव अंतियं पाउब्भवामि, हंभो सोमिला! पव्वइया! दुप्पव्वइयं ते। तह च्चेव देवो निरवयवं[3] भणइ जाव[4] पंचमदिवसम्मि पच्चावरण्हकालसमयंसि जेणेव उंबरपायवे तेणेव उवागए किढिण-संकाइयं ठवेसि[5] वेदिं वड्ढेसि उवलेवण-संमज्जणं करेसि[6], करेत्ता कट्ठमुद्दाए मुहं बंधेसि, बंधेत्ता तुसिणीए संचिट्ठसि, तं एवं खलु देवाणुप्पिया! तव दुप्पव्वइयं॥

८०. 'तए णं से सोमिले तं देवं एवं वयासी कहं णं देवाणुप्पिया! मम सुपव्वइयं?'[7]

८१. तए णं से देवे सोमिलं एवं वयासी जइ णं तुमं देवाणुप्पिया! इयाणिं पुव्व-पडिवण्णाइं पंच अणुव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ता णं विहरसि[8] तो णं तुब्भं इयाणिं सुपव्वइयं भवेज्जा[9]। तए णं से देवे सोमिलं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए॥

सोमिलस्स पुणो सावगधम्मगहण-पदं

८२. तए णं से[10] सोमिले माहणरिसी तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे पुव्वपडिवण्णाइं पंच अणुव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ता णं विहरइ॥

सोमिलस्स सुक्कमहग्गहत्ताए उववत्ति-पदं

८३. तए णं से सोमिले बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[11]-•दसम-दुवालसेहिं° मासद्धमास-खमणेहिं विचित्तेहिं तवोवहाणेहिं[12] अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता तीसं भत्ताइं अण-सणाए छेदेइ, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते विराहियसम्मत्ते कालमासे कालं किच्चा सुक्कवडिंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि[13] •देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्ताए° ओगाहणाए सुक्कमहग्गहत्ताए उववण्णे॥

८४. तए णं से सुक्के महग्गहे अहुणोववण्णे समाणे[14] •पंचविहाए पज्जत्तीए--आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाणपज्जत्तीए° भासमणपज्जत्तीए पज्जत्तभावं गए॥

८५. एवं खलु गोयमा! सुक्केणं महग्गहेणं सा दिव्वा[15] •देविड्ढी दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए। एगं पलिओवमं ठिई॥

---

१. उवागए (क); उवा (ख)।
२. ३।४८-५६।
३. निययं (ग)।
४. उ० ३।५६-७७।
५. ठवेहि (क); ठवेइ (ख,ग)।
६. × (क,ख); करेइ (ग)।
७. × (क,ग); तए णं से सोमिले तं देवं एवं वयासी (ख)।
८. विहरइ (क)।
९. हवेज्जा (क)।
१०. × (ख)।
११. सं० पा०--छट्ठट्ठम जाव मासद्ध०।
१२. तवविहाणेहिं (क)।
१३. सं० पा० देवसयणिज्जंसि जाव ओगाहणाए।
१४. सं० पा०--समाणे जाव भासमणपज्जत्तीए।
१५. सं० पा० दिव्वा जाव अभिसमण्णागया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८६. सुक्के णं भंते ! महग्गहे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[1] कहिं गच्छिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिणिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण-मंतं काहिइ ।।

निक्खेव-पदं

८७. [2]•एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं पुप्फियाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते —त्ति बेमि° ।।

चउत्थं अज्झयणं

बहुपुत्तिया

उक्खेव-पदं

८८. [3]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[4] संपत्तेणं[5] पुप्फियाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते° ?

८९. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । सामी समोसढे । परिसा निग्गया ।।

बहुपुत्तिया-पदं

९०. तेणं कालेणं तेणं समएणं बहुपुत्तिया देवी सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तिए विमाणे सभाए सुहम्माए बहुपुत्तियंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं जहा सूरियाभे जाव[7] भुंजमाणी विहरइ ।।

९१. इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी-आभोए-माणी पासइ पच्छा[8] समणं भगवं महावीरं जहा सूरियाभो जाव[9] नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा[10] संनिसण्णा । आभिओगा जहा सूरियाभस्स, सूसरा घंटा, आभिओगं[11] देवं सद्दावेइ, जाणविमाणं जोयणसहस्सवित्थिण्णं, जाणविमाणवण्णओ जाव उत्तरिल्लेणं निज्जाणमग्गेणं जोयणसाहस्सिएहिं[12] विग्गहेहिं तहा आगया जहा सूरियाभो, धम्मकहा समत्ता[13] ।।

९२. तए णं सा बहुपुत्तिया देवी दाहिणं भुयं पसारेइ—देवकुमाराणं अट्ठसयं, देव-कुमारियाण य वामाओ भुयाओ । तयाणंतरं च णं बहवे दारगा य दारियाओ य डिंभए य डिंभियाओ य विउव्वइ, नट्टविहिं जहा[14] सूरियाभो उवदंसित्ता पडिगया ।।

---

१. पू०—उ० ३।१८ ।
२. सं० पा—निक्खेवो ।
३. सं० पा०—उक्खेवओ ।
४. ना० १।१।७ ।
५. संपाविउकामेणं (वृ) ।
६. ना० १।१।७ ।
७. राय० सू० ७ ।
८. आ (क); × (ग) ।
९. राय० सू० ८ ।
१०. °मुही (ख) ।
११. आभिओगियं (क्व) ।
१२. °सहस्सिएहिं (क) ।
१३. पू० —राय० सू० ९-६१ ।
१४. राय० सू० ६९-१२० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६३. भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ । कूडागारसाला दिट्ठंतो[1] ॥

६४. बहुपुत्तियाए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी पुच्छा जाव[2] अभिसमण्णागया ?

सुभद्दाए संताणपिवासा-पदं

६५. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी, अंबसालवणे चेइए ॥

६६. तत्थ णं वाणारसीए नयरीए भद्दे नामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव[3] अपरिभूए ॥

६७. तस्स णं भद्दस्स[4] सुभद्दा नामं भारिया--सूमाला वंझा अवियाउरी जाणुकोप्पर-माया यावि होत्था ॥

६८. तए णं तीसे सुभद्दाए सत्थवाहीए अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए इमेयारूवे[5] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए° संकप्पे समुप्पज्जित्था --एवं खलु अहं भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव[6] सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं 'मणुए जम्मजीवियफले'[7], जासिं मण्णे नियगकुच्छि-संभूयगाइं थणदुद्धलुद्धगाइं महुरसमुल्लावगाणि मम्मणपजंपियाणि[8] 'थणमूला कक्खदेसभागं'[9] अभिसरमाणाणि[10] 'पण्हयं पियंति'[11], पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंग-निवेसियाणि देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए[12], अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा एत्तो एगमवि न पत्ता, ओहय[13]•मणसंकप्पा करयलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोव-गया ओमंथियवयणनयणकमला दीणविवण्णवयणा° झियाइ ॥

सुभद्दागिहे अज्जागमण-पदं

६९. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ णं अज्जाओ इरियासमियाओ भासासमि-याओ एसणासमियाओ आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमियाओ उच्चारपासवणखेलसिंघाण-जल्लपारिट्ठावणियासमियाओ मणगुत्तीओ वयगुत्तीओ कायगुत्तीओ गुत्तिंदियाओ गुत्त-बंभचारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरियाराओ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ गामाणुगामं दूइज्जमाणीओ जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागयाओ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा[14] •अप्पाणं भावेमाणीओ° विहरंति ॥

---

१. पू०—राय० सू० १२१-१२३ ।
२. राय० सू० ६६७ ।
३. ओ० सू० १४१ ।
४. भद्दस्स य (क,ख,ग) ।
५. सं० पा०--इमेयारूवे जाव संकप्पे ।
६. उ० १।३४ ।
७. मणुयजम्म० (वृ) ।
८. मंजुलपजंपियाणि (क,ख,ग) ।
९. थणमूलकक्ख० (क,ख,ग) ।
१०. अतिसरमाणगाणि (क,ग) ।
११. पण्हयंति (वृ) ।
१२. मम्मणप्प० (क,ख,ग) ।
१३. सं० पा०—ओहय जाव झियाइ ।
१४. सं० पा०—तवसा जाव विहरंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१००. तए णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए वाणारसीए नयरीए उच्च-नीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे भद्दस्स सत्थवाहस्स गिहं अणुपविट्ठे ।।

सुभद्दाए संताणलाभोवायपुच्छा-पदं

१०१. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता एवं वयासी एवं खलु अहं अज्जाओ ! भद्देणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि[1], तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ[2] •जाव[3] सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं मणुए जम्मजीवियफले[4], अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा° एत्तो एगमवि न पत्ता, तं तुब्भे णं अज्जाओ ! बहुणायाओ बहुपढियाओ[5] बहूणि गामागर[6]-•णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसाइं आहिंडह, बहूणं राईसर-तलवर[7]-•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईणं गिहाइं अणुपविसह, अत्थि से केइ कहिंचि विज्जापओए वा मंतप्पओए वा वमणं वा विरेयणं वा वत्थिकम्मे वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धे, जेणं अहं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जा ?

अज्जाए धम्मकहा-पदं

१०२. तए णं ताओ अज्जाओ सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव[8] गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्हं एयमट्ठं कण्णेहिं वि निसामेत्तए, किमंग पुण उवदंसित्तए[9] वा समायरित्तए वा ? अम्हे णं देवाणुप्पिए ! पुणं[10] तव विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेमो ।।

सुभद्दाए धम्मपडिवत्ति-पदं

१०३. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए[11] धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा ताओ अज्जाओ तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी सद्दहामि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं तहमेयं अवितहमेयं जाव[12] से जहेयं तुब्भे वयह । इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए सावगधम्मं पडिवज्जित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं करेहि ।।

१०४. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही तासिं अज्जाणं अंतिए[13] •सावगधम्मं° पडिवज्जइ,

---

१. पयायामि (क्व०) ।
२. सं० पा०—अम्मयाओ जाव एत्तो ।
३. उ० १।३४ ।
४. पू०—उ० ३।९८ ।
५. बहुसिक्खिताओ बहुपढिताओ (क) ।
६. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसाइं ।
७. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह० ।
८. उ० ३।९९ ।
९. उवएसियत्तए (क) ।
१०. × (क); णं (ग); नवरं (क्व०) ।
११. अंतियं (क) ।
१२. ना० २।१४।४७ ।
१३. अंतियं (क); सं० पा०—अंतिए जाव पडिवज्जइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिवज्जित्ता ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जइ ।।

१०५. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही समणोवासिया जाया जाव[1] विहरइ ।।

सुभद्दाए पव्वज्जा-पदं

१०६. तए णं तीसे सुभद्दाए समणोवासियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे[2] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं भद्दणं सत्थवाहेणं सद्धिं विउलाइं[3] •भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं सेयं खलु ममं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते 'भद्दं सत्थवाहं'[5] आपुच्छित्ता सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए[6] मुंडा[7] भवित्ता अगाराओ[8] •अणगारियं° पव्वइत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्ले[9] जेणेव भद्दे सत्थवाहे तेणेव उवागया करयल[10] •परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासाइं विउलाइं भोगभोगाइं[11] •भुंजमाणी° विहरामि, नो चेव णं दारगं वा दारियं वा पयामि, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी सुव्वयाणं अज्जाणं[12] •अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ।।

१०७. तए णं से भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! इयाणिं[13] मुंडा[14] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयाहि भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए ! मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं, तओ पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए मुंडा[15] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयाहि[16] ।।

१०८. तए णं सुभद्दा सत्थवाही भद्दस्स एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणइ। दोच्चंपि तच्चंपि [सुभद्दा सत्थवाही ?] भद्दं सत्थवाहं एवं वयासी—इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी[17] •सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ।।

१०९. तए णं से भद्दे सत्थवाहे जाहे नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि[18] य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा[19] •पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा°

---

१. ना० १।१४।४६ ।
२. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
३. सं० पा०—विउलाइं जाव विहरामि ।
४. ओ० सू० २२ ।
५. भद्दस्स (ख,ग) ।
६. अंतियं (क) ।
७. अज्जा (ग) ।
८. सं० पा०—अगाराओ जाव पव्वइत्तए ।
९. कल्लं (ख) ।
१०. सं० पा०—करयल० ।
११. सं० पा०—भोगभोगाइं जाव विहरामि ।
१२. सं० पा०—अज्जाणं जाव पव्वइत्तए ।
१३. इदाणी (क,ख) ।
१४,१५. सं० पा०—मुंडा जाव पव्वयाहि ।
१६. पव्वइएहिसि (क); पव्वइहिसि (ख); पवहिसिति (ग) ।
१७. सं० पा०—समाणी जाव पव्वइत्तए ।
१८. एवं पण्ण° (क,ख,ग) ।
१९. सं० पा०—आघवित्तए वा जाव विण्णवित्तए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विण्णवित्तए वा ताहे अकामए चेव सुभद्दाए निक्खमणं अणुमण्णित्था ।।

११०. तए णं से भद्दे सत्थवाहे विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ, तओ पच्छा भोयणवेलाए जाव[1] मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सुभद्दं सत्थवाहिं ण्हायं[2] •कयबलिकम्मं कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहेइ ।।

१११. तए णं से भद्दे सत्थवाहे मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेण सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[3] दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं वाणारसीनयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, सुभद्दं सत्थवाहिं सीयाओ पच्चोरुहेइ ।।

११२. तए णं भद्दे सत्थवाहे सुभद्दं सत्थवाहिं पुरओ काउं जेणेव 'सुव्वया अज्जा'[4] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुभद्दा सत्थवाही मम भारिया इट्ठा कंता जाव[5] मा णं वाइया पित्तिया सिंभिया सण्णिवाइया विविहा रोगायंका फुसंतु । एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता[6] •अगाराओ अणगारियं° पव्वयाइ । तं एयं णं अहं देवाणुप्पियाणं सीसिणिभिक्खं दलयामि । पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सीसिणिभिक्खं । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।।

११३. तए णं सा सुभद्दा सत्थवाही सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा [उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता ?] सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं अज्जा[7] ! लोए जहा देवाणंदा तहा पव्वइया जाव[8] अज्जा जाया- इरियासमिया जाव[9] गुत्तबंभयारिणी ।।

सुभद्दाए अज्जाए संताणपिवासाणुभव-पदं

११४. तए णं सा सुभद्दा अज्जा अण्णया कयाइ बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया[10] •गिद्धा गढिया° अज्झोववण्णा अब्भंगणं च उव्वट्टणं च फासुयपाणं च अलत्तगं च कंकणाणि य अंजणं च वण्णगं च चुण्णगं च खेल्लणगाणि[11] य खज्जल्लगाणि य खीरं च पुप्फाणि य गवेसइ, गवेसित्ता बहुजणस्स दारए य दारियाओ य कुमारे य कुमारियाओ य

---

१. उवा० १।५७
२. सं० पा०—ण्हायं जाव पायच्छित्त ।
३. ओ० सू० ६७ ।
४. सुव्वयज्जा (ख) ।
५. उ० ३।१२८ ।
६. सं० पा० —भवित्ता जाव पव्वयाइ ।
७. भंते (क,ख,ग) ।
८. भग० ९।१५२-१५४ ।
९. उ० ३।९९ ।
१०. सं० पा०—मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा ।
११. खेल्लणाणि (क) ; खेल्लगाणि (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डिंभए य डिंभियाओ य अप्पेगइयाओ अब्भंगेइ, अप्पेगइयाओ उव्वट्टेइ अप्पेगइयाओ[1] फासुयपाणएणं ण्हावेइ, अप्पेगइयाणं पाए रयइ[2], अप्पेगइयाणं ओट्ठे रयइ, अप्पेगइयाणं अच्छीणि अंजेइ, अप्पेगइयाणं उसुए करेइ, अप्पेगइयाणं तिलए करेइ, अप्पेगइयाओ दिगिंदलए करेइ, अप्पेगइयाणं पंतियाओ करेइ, अप्पेगइयाइं छिज्जाइं करेइ, अप्पेगइया वण्णएणं समालभइ, अप्पेगइया चुण्णएणं समालभइ, अप्पेगइयाणं खेल्लणगाइं दलयइ, अप्पेगइयाणं खज्जलगाइं दलयइ, अप्पेगइयाओ खीरभोयणं भुंजावेइ, अप्पेगइयाणं पुप्फाइं ओमुयइ[3], अप्पेगइयाओ पाएसु ठवेइ, अप्पेगइयाओ जंघासु ठवेइ[4], एवं— ऊरुसु उच्छंगे कडीए पिट्ठीए[5] पिट्टे[6] उरसि खंधे सीसे य करयलपुडेणं गहाय 'हलउलेमाणी-हलउलेमाणी'[7] 'आगायमाणी-आगायमाणी परिगायमाणी-परिगायमाणी'[8] पुत्तपिवासं च धूयपिवासं च नत्तुयपिवासं च नत्तिपिवासं च पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

११५. तए णं ताओ सुव्वयाओ[9] अज्जाओ सुभद्दं अज्जं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव[10] गुत्तबंभयारिणीओ, नो खलु अम्हं कप्पइ धाइकम्मं करेत्तए। तुमं च णं देवाणुप्पिए! बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया[11] •गिद्धा गढिया° अज्झोववण्णा अब्भंगणं जाव[12] नत्तिपिवासं वा पच्चणुभवमाणी विहरसि। तं णं तुमं देवाणुप्पिए! एयस्स ठाणस्स आलोएहि[13] •पडिकम्मेहि णिंदेहि गरिहेहि विउट्टेहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठेहि अहारिहं° पायच्छित्तं[14] पडिवज्जाहि ॥

११६. तए णं सा सुभद्दा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ ॥

११७. तए णं ताओ समणीओ निग्गंथीओ सुभद्दं अज्जं हीलेंति[15] निंदंति खिंसंति गरहंति[16] अभिक्खणं-अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति ॥

११८. तए णं तीसे सुभद्दाए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए[17] •निंदिज्जमाणीए खिंसिज्जमाणीए गरहिज्जमाणीए° अभिक्खणं-अभिक्खणं एयमट्ठं निवारिज्जमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था— जया णं अहं अगारवासं आवसामि[18] तया णं अहं अप्पवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा, पुव्विं च मम

---

१. एवं अप्पे० (क,ख,ग)।
२. रएति (ख)।
३. आमुयइ (क,ख); असुयंति (ग)।
४. करेइ (ख,ग)।
५. पट्ठीए (क); पिट्ठे (ग)।
६. पेट्टे (क); × (ग)।
७. हलओलेमाणी २ (क)।
८. गायमाणी (ख)।
९. सुव्वदाओ (क)।
१०. उ० ३।६६।
११. सं० पा०—मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा
१२. उ० ३।११४।
१३. सं० पा०—आलोएहि जाव पायच्छित्तं।
१४. पच्छित्तं (ख)।
१५. हिलंति (क,ग)।
१६. गरिहंति (ख)।
१७. सं० पा०—हीलिज्जमाणीए जाव अभिक्खणं।
१८. वसामि (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणीओ निग्गंथीओ आढेंति[1] परिजाणेंति, इयाणिं नो आढेंति नो परिजाणंति, तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[2] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए– एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता[3] णं विहरइ ।।

११९. तए णं सा सुभद्दा अज्जा अज्जाहिं अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छंदमई बहुजणस्स चेडरूवेसु मुच्छिया[4] •गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा॰ अब्भंगणं च जाव[5] नत्तिपिवासं च पच्चणुभवमाणी विहरइ ।।

सुभद्दाए बहुपुत्तियदेवित्ताए उववत्ति-पदं

१२०. तए णं सा सुभद्दा अज्जा पासत्था पासत्थविहारी[6] 'ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी'[7] संसत्ता संसत्तविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता, तीसं भत्ताइं अणसाए छेदेत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता[8] कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे बहुपुत्तियाविमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्ताए[9] ओगाहणाए बहुपुत्तियदेवित्ताए उववण्णा ।।

१२१ तए णं सा बहुपुत्तिया देवी अहुणोववण्णमेत्ता समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जाव[10] भासमणपज्जत्तीए पज्जत्तभावं गया ।।

१२२. एवं खलु गोयमा ! बहुपुत्तियाए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी[11] • दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते॰ अभिसमण्णागए ।।

१२३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—बहुपुत्तिया देवी बहुपुत्तिया देवी ? गोयमा ! बहुपुत्तिया णं देवी जाहे-जाहे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उवत्थाणियं[12] करेइ ताहे-ताहे बहवे दारए य दारियाओ य डिंभए य डिंभियाओ य विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभावं उवदंसेइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ - बहुपुत्तिया देवी बहुपुत्तिया देवी ।।

१२४. बहुपुत्तियाए णं भंते ! देवीए केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

---

१. आढयंति (क); आढंति (ख,ग) ।
२. ओ० सू० २२ ।
३. जाइत्ता (ग) ।
४. सं पा०—मुच्छिया जाव अब्भंगणं ।
५. उ० ३।११४ ।
६. °विहारिणी (ख) ।
७. एवं ओसण्णा कुसीला (क,ख,ग) ।
८. °अपडिक्कंता (क,ख,ग) ।
९. °मित्ताए (क,ख) ।
१०. उ० ३।८४ ।
११. सं० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागया ।
१२. उवत्थाणियाणं (क,ख,ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमाए संताणुप्पत्ति-पदं

१२५. बहुपुत्तिया णं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं 'भवक्खएणं ठिइक्खएणं'[1] अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले विभेलसण्णिवेसे[2] माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिइ ।।

१२६. तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे 'वीइक्कंते णिवत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते बारसाहे'[3] अयमेयारूवं नामधेज्जं करेहिंति[4] होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जं सोमा ।।

१२७. तए णं सा सोमा उम्मुक्कबालभावा विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा वि[5] भविस्सइ ।।

१२८. तए णं तं सोमं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं 'विण्णय-परिणयमेत्तं जोव्वणगमणुप्पत्तं'[6] पडिरूविएणं[7] सुक्केणं 'पडिरूविएण य विणएणं'[8] नियगस्स भाइणेज्जस्स रट्ठकूडस्स भारियत्ताए दलइस्संति । सा णं तस्स भारिया भविस्सइ इट्ठा कंता[9] •पिया मणुण्णा मणामा थेज्जा वेसासिया सम्मया बहुमया अणुमया° भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविया[10] चेलपेला इव सुसंपरिहिया[11] रयणकरंडगो विव सुसारक्खिया सुसंगोविया, मा णं सीयं[12]• मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं चोरा मा णं वाला मा णं दंसा मा णं मसगा मा णं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सण्णिवाइया° विविहा रोयायंका फुसंतु ।।

१२९. तए णं सा सोमा माहणी रट्ठकूडेणं[13] सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी संवच्छरे-संवच्छरे जुयलगं पयायमाणी सोलसेहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे[14] पयाहिइ[15] ।।

सोमाए बहुसंताणजणियखेद-पदं

१३०. तए णं सा सोमा माहणी तेहिं बहूहिं दारगेहि य दारियाहि य कुमारेहि य कुमारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य—अप्पेगइएहिं उत्ताणसेज्जएहिं[16], 'अप्पेगइएहिं

---

१. ठितिक्खएणं भवक्खएणं (ख) ।
२. बेभेल° (क,ख); विभले नामं (ग) ।
३. वीइक्कंते जाव बारसहिं दिवसेहिं वीइक्कंतेहिं (क, ग); वीइक्कंते बारसहिं दिवसेहिं वीइक्कंतेहिं (ख); अयं पाठः प्रासङ्गिकार्थशून्योस्ति । लिपिदोषेण एवं जातमिति सम्भाव्यते । स्वीकृतः पाठः 'ओवाइय' (१४४) सूत्रानुसारी विद्यते ।
४. करेंति (क,ख) ।
५. या वि (क) ।
६. उदिण्णजोव्वणमणुप्पत्तं (क) ।
७. पडिकूविएणं (वृ) ।
८. पडिरूविएणं (ख); पडिरूवएणं (ग) ।
९. सं० पा०— कंता जाव भंड० ।
१०. सुसंगोफिता (क) ।
११. सुसंपरिग्गहिता (ग) ।
१२. सं० पा०—सीयं जाव विविहा ।
१३. रट्ठकूडेहिं (क) ।
१४. चेडगरूवे (ग) ।
१५. पयाइही (क,ग) ।
१६. °सेज्जाहिं (ख) ।

थणपाएहिं[१], अप्पेगइएहिं पीहगपाएहिं[२], अप्पेगइएहिं परंगणएहिं[३], अप्पेगइएहिं परक्कममाणेहिं[४], अप्पेगइएहिं पक्खोलणएहिं, अप्पेगइएहिं थणं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं खीरं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं तेल्लं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं खेल्लणयं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं खज्जगं[५] मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं कूरं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं पाणियं मग्गमाणेहिं, अप्पेगइएहिं हसमाणेहिं, अप्पेगइएहिं रूसमाणेहिं, अप्पेगइएहिं अक्कोसमाणेहिं[६], अप्पेगइएहिं अक्कुस्समाणेहिं, अप्पेगइएहिं हणमाणेहिं, अप्पेगइएहिं हम्ममाणेहिं, अप्पेगइएहिं विप्पलायमाणेहिं, अप्पेगइएहिं अणुगम्ममाणेहिं, अप्पेगइएहिं रोयमाणेहिं, अप्पेगइएहिं कंदमाणेहिं, अप्पेगइएहिं विलवमाणेहिं, अप्पेगइएहिं कूवमाणेहिं, अप्पेगइएहिं उक्कूवमाणेहिं[७], अप्पेगइएहिं निद्दायमाणेहिं, अप्पेगइएहिं पलवमाणेहिं[८], अप्पेगइएहिं हदमाणेहिं, अप्पेगइएहिं वममाणेहिं, अप्पेगइएहिं छेरमाणेहिं, अप्पेगइएहिं मुत्तमाणेहिं मुत्त-पुरीस-वमिय-सुलित्तोवलित्ता मइलवसणपोच्चडा[९] असुइबीभच्छा[१०] परमदुग्गंधा नो संचाएहिइ[११] रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए ॥

१३१. तए णं तीसे सोमाए माहणीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था[१२]—एवं खलु अहं इमेहिं बहूहिं दारगेहि य जाव[१३] डिंभियाहि य अप्पेगइएहिं

---

१. अप्पेगइएहि य थणपाएहिं (क); अप्पेगइएहिं थणियपाएहि (ख,ग)।
२. पीयगयाएहिं (क)।
३. परंगणेहि (वृ)।
४. पचंकमणेहिं (क)।
५. खज्जगे (ख)।
६. अकोस° (क,ग); आकोस० (ख)।
७. उक्कूवमाणेहिं निज्जायमाणेहिं (ख)।
८. पवलमाणेहिं (क)।
९. °पुच्चडा (ख,ग)।
१०. °बीसका (क)।
११. संचाएति (क)।
१२. अतः पूर्वं 'बहुपुत्तिया' भाविजन्मवर्णने सर्वत्र भविष्यत्क्रियापदप्रयोगो दृश्यते, किन्तु अत्र अतः परं च सर्वत्रापि वर्तमानक्रियापदप्रयोगो लभ्यते। एतत् परिवर्तनं निश्चितं कयाचित् विस्मृत्या जातमस्ति। अर्थप्रसङ्गानुसारेण उत्तरवर्त्तीनि क्रियापदानि यन्त्रे द्रष्टव्यानि—

सू० १३१ समुप्पज्जित्था	समुप्पज्जिहिइ
,, १३२ उवागच्छंति विहरंति	उवागच्छिहिंति विहरिस्संति
,, १३३ अणुपविट्ठे	अणुपविस्सिहिइ
,, १३४ पासइ अब्भुट्ठेइ अणुगच्छइ वंदइ नमंसइ पडिलाभेइ वयासी	पासिहिइ अब्भुट्ठेहिइ अणुगच्छिहिइ वंदिस्सइ नमंसिस्सइ पडिलाभेहिइ वइस्सइ
,, १३५ परिकहेंति	परिकहेहिंति
,, १३६ वंदइ नमंसइ वयासी पव्वयामि	वंदिस्सइ नमंसिस्सइ वइस्सइ पव्वइस्सामि
,, १३७ वंदइ नमंसइ पडिविसज्जेइ	वंदिस्सइ नमंसिस्सइ पडिविसज्जिहिइ
,, १३८ वयासी	वइस्सइ
,, १३९ वयासी	वइस्सइ
,, १४० पडिसुणेइ	पडिसुणिस्सइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्ताणसेज्जएहिं जाव[1] अप्पेगइएहिं मुत्तमाणेहिं दुज्जाएहिं दुज्जम्मएहिं हयविप्पहयभग्गेहिं एगप्पहारपडिएहिं जेणं मुत्त-पुरीस-वमिय-सुलित्तोवलित्ता जाव[2] परमदुग्गंधा[3] नो संचाएमि रट्ठकूडेणं सद्धिं[4] •विउलाइं भोगभोगाइं° भुंजमाणी विहरित्तए, तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव[5] सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं मणुए जम्मजीवियफले जाओ णं वंझाओ अवियाउरियाओ[6] जाणुकोप्परमायाओ सुरभिसुगंधगंधियाओ[7] विउलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीओ विहरंति, अहं णं अधण्णा अपुण्णा अकयपुण्णा नो संचाएमि रट्ठ-कूडेणं सद्धिं विउलाइं[8] •माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरित्तए ॥

सोमागिहे अज्जागमण-पदं

१३२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नाम अज्जाओ इरियासमियाओ जाव[9] बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ गामाणुगामं दूइज्जमाणीओ जेणेव विभेले[10] सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं[11] •ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ° विहरंति ॥

१३३. तए णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए विभेले सण्णिवेसे उच्च-नीय[12]-•मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे रट्ठकूडस्स गिहं अणुपविट्ठे ॥

सू० १४१	पडिनिक्खमइ उवागच्छइ वंदइ नमंसइ पज्जुवासइ	पडिनिक्खमिस्सइ उवागच्छिहिइ वंदिस्सइ नमंसिस्सइ पज्जुवासिहिइ
,, १४२	परिकहेंति	परिकहेहिंति
,, १४३	पडिवज्जइ वंदइ नमंसइ पाउब्भूया पडिगया	पडिवज्जिहिइ वंदिस्सइ नमंसिस्सइ पाउब्भविस्सइ पडिगमिस्सइ
,, १४४	जाया विहरइ	भविस्सइ विहरिस्सइ
,, १४५	पडिनिक्खमंति विहरंति	पडिनिक्खमिस्संति विहरिस्संति
,, १४६	विहरंति	विहरिस्संति
,, १४७	वंदइ नमंसइ पव्वयामि	वंदिस्सइ नमंसिस्सइ पव्वइस्सामि
,, १४८.	वंदइ नमंसइ पडिनिक्खमइ उवागच्छइ आपुच्छइ	वंदिस्सइ नमंसिस्सइ पडिनिक्खमिस्सइ उवागच्छिहिइ आपुच्छिस्सइ
,, १४९	जाया	भविस्सइ
,, १५०	अहिज्जइ	अहिज्जिस्सइ

१३. उ० ३।१३० ।

१. उ० ३।१३० ।

२. उ० ३।१३० ।

३. °दुब्भिगंधा (ख) ।

४. सं० पा०—सद्धिं जाव भुंजमाणी ।

५. उ० १।३४ ।

६. अवियाउरीओ (क) ।

७. °सुगंधसुगंधियाओ (ख) ।

८. सं० पा०—विउलाइं जाव विहरित्तए ।

९. उ० ३।९९ ।

१०. वेभेले (क,ख); वेभले (ग) ।

११. सं० पा०—ओग्गहं जाव विहरंति ।

१२. सं० पा०—नीय जाव अडमाणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३४. तए णं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठा खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ ! रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरामि, संवच्छरे-संवच्छरे जुयलं[1] पयामि, सोलसहिं संवच्छरेहिं बत्तीसं दारगरूवे पयाया। तए णं अहं तेहिं बहूहिं दारएहि य जाव[2] डिंभियाहि य अप्पेगइएहिं उत्ताण-सेज्जएहिं जाव[3] मुत्तमाणेहिं दुज्जाएहिं[4] •दुज्जम्मएहिं हयविप्पहयभग्गेहिं एगप्पहार-पडिएहिं जेणं मुत्त-पुरीस-वमिय-सुलित्तोवलित्ता जाव[5] परमदुग्गंधा नो संचाएमि रट्ठकूडेणं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरित्तए, तं इच्छामि णं अहं अज्जाओ ! तुम्हं अंतिए[6] धम्मं निसामेत्तए ॥

सोमाए धम्मपडिवत्ति-पदं

१३५. तए णं ताओ अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्तं[7] केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेंति ॥

१३६. तए णं सा सोमा माहणी तासिं अज्जाणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ[8]-•तुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°हियया ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं जाव[9] अब्भुट्ठेमि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं अज्जाओ ! जाव[10] से जहेयं तुब्भे वयह जं, नवरं—अज्जाओ ! रट्ठकूडं आपुच्छामि। तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा[11] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं ॥

१३७. तए णं सा सोमा माहणी ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ ॥

१३८. तए णं सा सोमा माहणी जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवागया करयल[12]-•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु मए देवाणुप्पिया ! अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते, से वि य णं धम्मे इच्छिए[13] •पडिच्छिए° अभिरुइए। तए णं अहं [इच्छामि ?] देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया सुव्वयाणं अज्जाणं[13] •अंतिए मुंडा

---

१. जुवलं (ख); जुगलं (ग)।
२. उ० ३।१३०।
३. उ० ३।१३०।
४. सं० पा०—दुज्जाएहिं जाव नो संचाएमि विहरित्तए।
५. उ० ३।१३०।
६. अंतियं (क)।
७. विचित्तं जाव (क,ख,ग); उ० ३।११२ सूत्रानुसारेण 'जाव' इति पदं नावश्यकं प्रतिभाति।
८. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया।
९. ना० १।१।१०१।
१०. ना० १।१।१०१।
११. सं० पा०—मुंडा जाव पव्वयामि।
१२. सं० पा०—करयल०।
१३. सं० पा०—इच्छिए जाव अभिरुइए।
१३. सं० पा०—अज्जाणं जाव पव्वइत्तए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ।।

१३९. तए णं से रट्ठकूडे सोमं माहणिं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! इयाणिं मुंडा भवित्ता[1] •अगाराओ अणगारियं° पव्वयाहि, भुंजाहि ताव देवाणुप्पिए ! मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं। तओ पच्छा भुत्तभोई सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए मुंडा[2] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयाहि ।।

१४०. तए णं सा सोमा माहणी रट्ठकूडस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ ।।

१४१. तए णं सा सोमा माहणी ण्हाया जाव[3] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता विभेलं सण्णिवेसं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं अज्जाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ पज्जुवासइ ।।

१४२. तए णं ताओ सुव्वयाओ[4] अज्जाओ सोमाए माहणीए विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेंति –जहा[5] जीवा बज्झंति, 'जहा जीवा मुच्चंति'[6] ।।

१४३. तए णं सा सोमा माहणी सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए[7] दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता सुव्वायाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

१४४. तए णं सा सोमा माहणी समणोवासिया जाया—अभिगयजीवाजीवा जाव[8] अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।।

सोमाए पव्वज्जा-पदं

१४५. तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अण्णया कयाइ विभेलाओ सण्णिवेसाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति ।।

१४६. तए णं ताओ सुव्वयाओ अज्जाओ अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ जाव[9] विहरंति ।।

१४७. तए णं सा सोमा माहणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठा ण्हाया तहेव निग्गया जाव[10] वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता धम्मं सोच्चा जाव[11] जं, नवरं—रट्ठकूडं आपुच्छामि, तए णं पव्वयामि । अहासुहं ।।

१४८. तए णं सा सोमा माहणी 'सुव्वयाओ अज्जाओ'[12] वंदइ नमसंइ, वंदित्ता नमंसित्ता सुव्वयाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव रट्ठकूडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिया तहेव आपुच्छइ जाव[13] पव्वइत्तए ।

१. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वयाहि ।
२. सं० पा०—मुंडा जाव पव्वयाहि ।
३. उ० १।१९ ।
४. × (ख,ग) ।
५. जाव जहा (ख) ।
६. × (क) ।
७. अंतिए जाव (ख) ।
८. ओ० सू० १२० ।
९. उ० ३।१३२ ।
१०. उ० ३।१४१ ।
११. ना० १।१।१०१ ।
१२. सुव्वयं अज्जं (क,ख,ग) ।
१३. उ० ३।१३८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं ॥

१४९. तए णं से रट्ठकूडे विउलं असणं तहेव जहा पुव्वभवे सुभद्दा जाव[1] अज्जा जाया—इरियासमिया जाव[2] गुत्तबंभयारिणी ॥

सोमाए सामाणियदेवत्ताए उववत्ति-पदं

१५०. तए णं सा सोमा अज्जा सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं जाव[3] भावेमाणी बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता, आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणियदेवत्ताए उववज्जिहिइ ॥

१५१. तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं सोमस्सवि देवस्स दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१५२. से णं भंते ! सोमे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ[4] ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाव[5] अंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

१५३. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं पुप्फियाणं चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते —त्ति बेमि ॥

पंचमं अज्झयणं

पुण्णभद्दे

१५४. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं[7] •पुप्फियाणं चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[8] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते° ?

१५५. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया। सामी समोसरिए। परिसा निग्गया ॥

१५६. तेणं कालेणं तेणं समएणं पुण्णभद्दे देवे सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे सभाए सुहम्माए पुण्णभद्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहा सूरियाभे जाव बत्तीसइविहं नट्टविहिं उवदंसित्ता जाव[9] जामेव दिसिं[10] पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। कूडागार-

१. उ० ३।११०-११३
२. उ० ३।९९।
३. उ० २।१०।
४. गमिहिति (ख)।
५. उ० १।१४१।
६. ना० १।१।७।
७. सं० पा०—उक्खेवओ।
८. ना० १।१।७।
९. राय० सू० ७-१२०।
१०. दिसं (ख)।

साला[1] । पुव्वभवपुच्छा ॥

१५७. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मणिवइया नामं नयरी होत्था—रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धा । चंदोतारायणे[2] चेइए ॥

१५८. तत्थ णं मणिवइयाए[3] नयरीए पुण्णभद्दे नामं गाहावई परिवसई—अड्ढे ॥

१५९. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा जाव[4] जीवियास-मरणभय-विप्पमुक्का बहुस्सुया बहुपरियारा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा जाव[5] समोसढा । परिसा निग्गया ॥

१६०. तए णं से पुण्णभद्दे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे जाव जहा पण्णत्तीए गंगदत्ते तहेव निग्गच्छइ जाव निक्खंतो जाव[6] गुत्तबंभयारी ॥

१६१. तए णं से पुण्णभद्दे अणगारे 'तहारूवाणं थेराणं'[7] भगवंताणं अंतिए सामाइय-माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं जाव[8] भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते काल-मासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे पुण्णभद्दे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि[9] °देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्ताए ओगाहणाए पुण्णभद्ददेवत्ताए उववण्णे ॥

१६२. तए णं से पुण्णभद्दे देवे अहुणोववण्णे समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए जाव[10] ° भासमणपज्जत्तीए पज्जत्तभावं गए ॥

१६३. एवं खलु गोयमा ! पुण्णभद्देणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव[11] अभिसमण्णा-गया ॥

१६४. पुण्णभद्दस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

१६५. पुण्णभद्दे णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ जाव[12] कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव[13] अंतं काहिइ ॥

१६६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[14] संपत्तेणं [15]°पुप्फियाणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते —त्ति बेमि° ॥

---

१. पू०—राय० सू० १२१-१२३ ।
२. °तारायण (ख) ; °ताराइण (ग) ।
३. मणिवयाए (क) ।
४. राय० सू० ६८६ ।
५. उ० १।२ ।
६. भग० १६।६८-७१ ।
७. × (क,ख) ।
८. उ० २।१० ।
९. सं० पा० – देवसयणिज्जंसि जाव भासमण-पज्जत्तीए ।
१०. उ० ३।८४ ।
११. उ० ३।८५ ।
१२. उ० ३।८६ ।
१३. उ० ३।८६ ।
१४. ना० १।१।७ ।
१५. सं० पा०—निक्खेवओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठं अज्झयणं
माणिभद्दे

१६७ जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं [2]•पुप्फियाणं पंचमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! अज्झयणस्स पुप्फियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते° ?

१६८. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिय राया । सामी समोसरिए[4] ।।

१६९. तेणं कालेणं तेणं समएणं माणिभद्दे देवे सभाए सुहम्माए माणिभद्दंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जहा पुण्णभद्दो[5] तहेव आगमणं नट्टविही पुव्वभवपुच्छा । मणिवई नयरी, माणिभद्दे गाहावई, थेराणं अंतिए पव्वज्जा, एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूइं वासाइं परियाओ, 'मासिया संलेहणा'[6], सट्ठिं भत्ताइं, माणिभद्दे विमाणे उववाओ, दो सागरोवमाइं ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ।।

१७०. एवं खलु जंबू ! [7]•समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[8] संपत्तेणं पुप्फियाणं छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते —त्ति बेमि° ।।

७-१० अज्झयणाणि

१७१. एवं दत्ते ७, सिवे ८, बले ९, अणाढिए १०, सव्वे जहा पुण्णभद्दे[9] देवे । दो सागरोवमाइं ठिई । विमाणा देवसरिनामा । पुव्वभवे दत्ते चंदणानामाए, सिवे मिहिलाए[10] बले हत्थिणपुरे नयरे, अणाढिए काकंदीए[11] । चेइयाइं—जहा संगहणीए ।।

---

१. ना० १।१।७ ।
२. स० पा०—उक्खेवओ ।
३. ना० १।१।७ ।
४. समोसढे (ख,ग) ।
५. उ० ३।१५६-१६५ ।
६. मासियाए संलेहणाए (क,ख,ग) ।
७. सं० पा०—निक्खेवओ ।
८. ना० १।१।७ ।
९. उ० ३।१५४-१६४ ।
१०. महिलाए (क,ख,ग) ।
११. कांकिदीए (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थो वग्गो

पुप्फचूलियाओ

पढमं अज्झयणं

सिरि

१. जइ णं भंते ! समणेणं[1] °भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं उवंगाणं तइयस्स वग्गस्स पुप्फियाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! वग्गस्स पुप्फचूलियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[4] संपत्तेणं पुप्फचूलियाणं° दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति, बुद्धि-लच्छी य होइ बोद्धव्वा ।
इलादेवी सुरादेवी, रसदेवी गंधदेवी य ॥१॥

३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[5] संपत्तेणं उवंगाणं चउत्थस्स वग्गस्स पुप्फचूलियाणं[6] दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! [7]°अज्झयणस्स पुप्फचूलियाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[8] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते° ?

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । सामी समोसढे । परिसा निग्गया ॥

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सिरिदेवी सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सिरिवडिंसयंसि[9] सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं जहा बहुपुत्तिया जाव[10] नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगया, नवरं—दारियाओ नत्थि । पुव्वभवपुच्छा ॥

६. एवं खलु गोयमा[11] ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । जियसत्तू राया ॥

७. तत्थ णं रायगिहे नयरे सुदंसणे नामं गाहावई परिवसई[12]—अड्ढे ॥

---

१. सं० पा०—उक्खेवओ जाव दस ।
२,३,४,५. ना० १।१।७ ।
६. पुप्फचूलाणं (क,ख,ग) ।
७. सं० पा०—उक्खेवओ ।
८. ना० १।१।७ ।
९. सिरिंमि (क); सिरिंसि (ग) ।
१०. उ० ३।९०-९४ ।
११. जंबू (क,ख,ग) ।
१२. वसइ (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स पिया नामं भारिया होत्था---सूमालपाणिपाया ।।

९. तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स धूया, पियाए गाहावइणीए अत्तया[1] भूया नामं दारिया होत्था---'वुड्ढा वुड्ढकुमारी'[2] जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुतत्थणी वरगपरिवज्जिया[3] यावि होत्था ।।

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए जाव[4] नवरयणिए[5] वण्णओ सो चेव समोसरणं । परिसा निग्गया ।।

११. तए णं सा भूया दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव अम्मा-पियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी-- एवं खलु अम्मताओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव[6] गणपरिवुडे[7] विहरइ, तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं ।।

१२. तए णं सा भूया दारिया ण्हाया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडीचक्कवाल-परिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा ।।

१३. तए णं सा भूया दारिया नियगपरिवारपरिवुडा रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताईए तित्थयराइसए पासइ, पासित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुभित्ता चेडीचक्कवाल-परिकिण्णा[8] जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो अयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ जाव[9] पज्जुवासइ ।।

१४. तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए भूयाए दारियाए तीसे य महइमहालियाए परिसाए 'धम्मं परिकहेइ'[10], धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी --सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जाव[11] अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, से जहेयं तुब्भे वयह, जं नवरं भंते[12] ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं[13] •देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि[14] । अहासुहं देवाणुप्पिए ! ।।

१५. तए णं सा भूया दारिया तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ[15], दुरूहित्ता जेणेव

१. अत्तिया (ख) ।
२. वड्ढा वड्ढकुमारी (क,ख) ।
३. परग० (क) ; वरगपक्खेज्जिया (वृ) ।
४. ओ० सू० १६, वाचनांतरम् ।
५. नवरयणीओ (ख) ।
६ ओ० सू० ५२ ।
७. समणगणपरिवुडे (ग) ।
८. °परिक्खित्ता (ख) ।
९. उ० १।१६ ।
१०. धम्मकहा (क,ख,ग) ।
११. ना० १।१।१०१ ।
१२. देवाणुप्पिया (क,ख,ग) ।
१३. सं० पा०---अहं जाव पव्वइत्तए ।
१४. अस्य पदस्य स्थाने आदर्शेषु 'पव्वइत्तए' इति पदमस्ति, किन्तु वाक्यरचनायां नैतत् सङ्गच्छते । ३।१३६ सूत्रस्य संदर्भे 'पव्वयामि' इति पदमेव युक्तमस्ति ।
१५. जाव (क,ख,ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रायगिहे नयरे तेणेव उवागया, रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया, रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागया, करयल[1]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° जहा[2] जमाली आपुच्छइ। अहासुहं देवाणुप्पिए!॥

१६. तए णं से सुदंसणे गाहावई विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ, आमंतेत्ता जाव[3] जिमियभुत्तुत्तरकाले सुईभूए निक्खमणमाणेत्ता[4] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! भूयाए दारियाए पुरिससहस्सवाहिणिं[5] सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता[6] •एयमाणत्तियं° पच्चप्पिणह॥

१७. तए णं ते[7] •कोडुंबियपुरिसा तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति॥

१८. तए णं से सुदंसणे गाहावई भूयं दारियं ण्हायं जाव[8] सव्वालंकारविभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहेइ, दुरूहेत्ता मित्त-नाइ[9]•-नियग-सयण-संबंधि-परियणेण सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[10] दुंदुहि-णिग्घोसणाइय°रवेणं रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागए छत्तातीए तित्थयरातिसए पासइ, पासित्ता सीयं ठवेइ, ठवेत्ता भूयं दारियं सीयाओ पच्चोरुहेइ[11]॥

१९. तए णं तं भूयं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागया[12] तिक्खुत्तो 'वंदंति नमंसंति'[13], वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! भूया दारिया अम्हं धूया[14] इट्ठा[15], एस णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा भीया[16] •जम्मणमरणाणं° देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा[17] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयाइ[18]। तं एयं णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणीभिक्खं दलयामो[19]। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं। अहासुहं देवाणुप्पिया!॥

२०. तए णं सा भूया दारिया पासेणं अरहा[20] एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कम्मइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, जहा देवाणंदा, पुप्फचूलाणं अंतिए जाव[21] गुत्तबंभयारिणी॥

२१. तए णं सा भूया अज्जा अण्णया कयाइ सरीरबाओसिया[22] जाया यावि होत्था—

१. सं० पा०—करयल०।
२. पू०—भग० ९।१६५-१६७।
३. ना० १।१।८१।
४. उक्खणमाणेत्ता (क,ख,ग)।
५. °वाहिणी (क); °वाहिणीयं (क्व०)।
६. सं० पा०—उवट्ठवेत्ता जाव पच्चप्पिणह।
७. सं० पा०—ते जाव पच्चप्पिणंति।
८. उ० १।७०।
९. सं० पा०—नाइ जाव रवेणं।
१०. ओ० सू० ६७।
११. पच्चोरुहइ (क ख)।
१२. उवागए (क,ख,ग)।
१३. वंदइ नमंसइ (क,ख,ग)।
१४. एगा धूया (ग)।
१५. तिट्ठा (क)।
१६. तसिया जाव (ख); सं० पा०—भीया जाव देवाणुप्पियाणं।
१७. सं० पा०—मुंडा जाव पव्वयाइ।
१८. पव्वयइ (ख)।
१९. दलयामि (ख); दलयति (ग)।
२०. अरहया (क)।
२१. भग० ९।१५२-१५४।
२२. °पाओसिया (क,ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवइ, पाए धोवइ, सीसं[1] धोवइ, मुहं धोवइ, थणगंतराइं[2] धोवइ, कक्खंतराइं धोवइ, गुज्झंतराइं धोवइ, जत्थ-जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं[3] वा निसीहियं[4] वा चेएइ, तत्थ-तत्थ वि य णं पुव्वामेव[5] पाणएणं[6] अब्भुक्खेइ, तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ ॥

२२. तए णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ भूयं अज्जं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव[7] गुत्तबंभयारिणीओ। नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरबाओसियाणं होत्तए। तुमं च णं देवाणुप्पिए ! सरीरबाओसिया अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवसि जाव[8] निसीहियं चेएसि[9]। 'तं णं'[10] तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स[11] ठाणस्स आलोएहि, सेसं जहा सुभद्दाए जाव[12] पाडिएक्कं[13] उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

२३. तए णं सा भूया अज्जा अणोहट्टिया अणिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवइ जाव[14] निसीहियं वा चेएइ[15] ॥

२४. तए णं सा भूया अज्जा बहूहिं चउत्थ-छट्ठ[16] °ट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्ध-मासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी° बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सिरिवडेंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि[17] °देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखेज्जइ-भागमेत्ताए° ओगाहणाए सिरिदेवित्ताए उववण्णा। पंचविहाए पज्जत्तीए जाव[18] भासमण-पज्जत्तीए पज्जत्तभावं गया ॥

२५. एवं खलु गोयमा ! सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता। ठिई एगं पलिओवमं ॥

२६. सिरी णं भंते ! देवी[19] °ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता° कहिं गच्छिहिइ[20] ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

२७. एवं खलु जंबू ! [21]°समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[22] संपत्तेणं पुप्फचूलियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते —त्ति बेमि° ॥

---

१. एवं सीसं (क,ख,ग)।
२. थणंतराइं (ख)।
३. सिज्जं (ख,ग)।
४. निसेज्जं (क)।
५. पुव्वमेव (ख)।
६. पाणिएणं (क)।
७. उ० ३।९९।
८. उ० ४।२१।
९. चेतेहि (क,ख); चेइए (ग)।
१०. से तं (क)।
११. तस्स (क)।
१२. उ० ३।११५.११८।
१३. पडियक्कं (ख)।
१४. उ० ४।२१।
१५. चेवेति (क); चेति (ग)।
१६. सं० पा०—छट्ठ····बहूइं।
१७. सं०पा०—देवसयणिज्जंसि जाव ओगाहणाए।
१८. उ० ३।८४।
१९. सं० पा०—देवी जाव कहिं।
२०. गमिहिति (ख,ग)।
२१. सं० पा०—निक्खेवओ।
२२. ना० १।१।७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२-१० अज्झयणाणि

२८. एवं सेसाणवि नवण्हं भाणियव्वं। सरिनामा[1] विमाणा। सोहम्मे कप्पे। पुव्व-भवे नयरचेइयपियमाईणं अप्पणो य नामाइं जहा संगहणीए। सव्वा पासस्स अंतिए निक्खंता[2]। पुप्फचूलाणं सिस्सिणीयाओ सरीरबाउसियाओ[3] सव्वाओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति ।।

१. सरिसनामा (ग)।
२. निक्कंता (क)।
३. °पाउसियाओ (क,ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमो वग्गो

वण्हिदसाओ

पढमं अज्झयणं

निसढे

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं उवंगाणं चउत्थस्स वग्गस्स पुप्फचूलियाणं[2] अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स उवंगाणं वण्हिदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[4] संपत्तेणं वण्हिदसाणं दुवालस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा---

'निसढे मायणि-वह-वहे, पगया[5] जुत्ती[6] दसरहे दढरहे य[7]।
महाधणू[8] सत्तधणू[9], दसधणू नामे सयधणू य[10] ॥१॥

३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[11] संपत्तेणं उवंगाणं पंचमस्स वग्गस्स वण्हिदसाणं दुवालस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! [12]•अज्झयणस्स वण्हिदसाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[13] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते° ?

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई नामं नयरी होत्था दुवालस-जोयणायामा नवजोयणवित्थिण्णा जाव[14] पच्चक्खं देवलोयभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

५. तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं रेवतए[15] नामं पव्वए होत्था---तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे नाणाविहरुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लया-वल्ली-परि-

१. ना० १।१।७ ।
२. पुप्फचूलाणं (क,ख,ग) ।
३,४. ना० १।१।७ ।
५. निरूढे रा अवि वाह वहे पगत्ती (क); निसढे अनि वह वेहे पगई (ख); निसढे अनि वह वेही पगती (ग) ।
६. जुती (ख) ।
७. × (क) ।
८. महधणू (ख) ।
९. सत्तधणू नवधणू (ग) ।
१०. × (क,ख) ।
११. ना० १।१।७ ।
१२. सं० पा०---उक्खेवओ ।
१३. ना० १।१।७ ।
१४. ना० १।५।२ ।
१५. रेववए (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गयाभिरामे हंस-मिय-मयूर-कोंच[1]-सारस-चक्कवाग[2]-मदणसाला[3]-कोइलकुलोववेए तड-कडग-'विवर-उज्झर'[4]-'पवात-पब्भारसिहरपउरे'[5] अच्छरगण - देवसंघ - विज्जाहरमिहुण-संनिचिते निच्चच्छणए दसारवर[6]-वीरपुरिस-तेल्लोक्कबलवगाणं[7] सोमे सुभए पियदंसणे सुरूवे पासादीए[8] •दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे ।।

६. तस्स णं रेवयगस्स पव्वयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था— सव्वोउय[9]-पुप्फ[10]-•फल-समिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासाईए° दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।।

७. तत्थ णं नंदणवणे उज्जाणे 'सुरप्पिए नामं'[11] जक्खस्स जक्खाययणे होत्था— चिराईए जाव[12] बहुजणो आगम्म अच्चेइ[13] सुरप्पियं जक्खाययणं ।।

८. से णं सुरप्पिए जक्खाययणे एगेणं महया वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते जहा पुण्णभद्दे जाव[14] पुढविसिल्लावट्टए ।।

९. तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया होत्था जाव[15] रज्जं पसासेमाणे विहरइ[16] ।।

१०. से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसाहस्सीणं[17], पज्जुण्णपामोक्खाणं अद्धट्ठाणं[18] कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं, रुप्पिणिपामोक्खाणं सोलसण्हं देवीसाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं[19], अण्णेसिं च बहूणं राईसर[20]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईणं वेयड्ढगिरिसागरमेरागस्स दाहिणड्ढभरहस्स[21] आहेवच्चं[22] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे° विहरइ ।।

११. तत्थ णं बारवईए नयरीए बलदेवे नामं राया होत्था— महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदिसारे जाव[23] रज्जं पसासेमाणे विहरइ ।।

---

१. कुंच (ख) ।
२. बग (ख); काग (ग) ।
३. मयण० (ग) ।
४. विउरमज्झर (क) ।
५. पवातसिहर० (क,ख,ग) ।
६. दसाणपर (क) ।
७. तेल्लोकवलवलगाणं (क) ।
८. सं० पा०— पासादीए जाव पडिरूवे ।
९. सव्वोदुय (क) ।
१०. सं० पा०— पुप्फ जाव दरिसणिज्जे ।
११. सुरप्पियस्स (ख,ग) ।
१२. ओ० सू० २ ।
१३. उच्चेइ (क,ग) ।
१४. ओ० सू० ४-१३ ।
१५. ओ० सू० १४ ।
१६. विभरइ (क) ।
१७. राईसहस्साणं (क, ख); रायसहस्साणं (ग) ।
१८. अद्धट्ठाणं (क); अट्ठुट्ठाणं (ख,ग) ।
१९. °सहस्साणं (क); °सहस्सीणं (ख) ।
२०. सं० पा०— राईसर जाव सत्थवाह० ।
२१. दाहिणद्ध० (ख) ।
२२. आधेवच्चं (ख); सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ ।
२३. ओ० सू० १४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. तस्स णं बलदेवस्स रण्णो रेवई नामं देवी होत्था—सूमालपाणिपाया जाव[1] विहरइ ॥

१३. तए णं सा रेवई देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि जाव सीहं सुमिणे पासित्ता णं पुडिबुद्धा। एवं सुमिणदंसणपरिकहणं, कलाओ जहा महाबलस्स, पण्णासओ दाओ, पण्णासं[2] रायवरकण्णगाणं एगदिवसेणं पाणिग्गहणं, नवरं -निसढे नामं जाव[3] उप्पि पासाए विहरइ ।।

१४. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी आइगरे दस धणूइं वण्णओ जाव[4] समोसरिए। परिसा निग्गया ॥

१५. तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाणियं[5] भेरिं[6] तालेहि ॥

१६. तए णं से कोडुंबियपुरिसे जाव[7] वयणं पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाणिया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाणियं[8] भेरिं महया-महया सद्देणं तालेइ ॥

१७. तए णं तीसे सामुदाणियाए भेरीए महया-महया सद्देणं तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा[9] दस दसारा देवीओ भाणियव्वाओ जाव[10] अणंगसेणापामोक्खा अणेगा गणियासहस्सा, अण्णे य बहवे राईसर जाव[11] सत्थवाहप्पभिइओ ण्हाया[12] •कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया जहाविभवइड्ढीसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया हयगया जाव[13] पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[14] •परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं वद्धावेंति ।।

१८. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कहत्थिं[15] कप्पेह, हय-गय-रह-पवर[16] •जोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह जाव° पच्चप्पिणंति ।।

१९. तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे[17] •तेणेव उवागच्छइ जाव[18] पडिनिग्ग-

---

१. ओ० सू० १५ ।
२. पण्णासाए (क) ।
३. भग० ११।१३३-१६१ ।
४. ना० १।५।१० ।
५. समुदाइयं (क); समुदाणियं (ख) ।
६. भेरियं (ख) ।
७. ना० १।५।१३ ।
८. सामुदाइयं (क); सामुद्दाणियं (ख,ग) ।
९. °पामोक्खाणं (क) ।
१०. उ० ५।१० ।
११. उ० ५।१० ।
१२. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।
१३. ना० १।५।१५ ।
१४. सं० पा०—करयल० ।
१५. अभिसेक्कं हत्थिरयणं (उ० १।१२३) ।
१६. सं० पा०—पवर जाव पच्चप्पिणंति ।
१७. सं० पा०—मज्जणघरे जाव दुरूढे ।
१८. ओ० सू० ६३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव[1] गयवइं नरवई[2] दुरूढे। अट्ठट्ठ[3] मंगलगा[4] जहा[5] कूणिए सेयवरचामरेहिं 'उद्धुव्वमाणेहिं-उद्धुव्वमाणेहिं'[6] समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव[7] सत्थवाहप्पभिईहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[8] दुंदुहि-णिग्घोस-णाइयरवेणं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ। सेसं जहा कूणिओ जाव[9] पज्जुवासइ ।।

२०. तए णं तस्स निसढस्स कुमारस्स उप्पिं पासायवरगयस्स तं महया जणसद्दं च जहा जमाली जाव[10] धम्मं सोच्चा निसम्म वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं जहा चित्तो जाव[11] सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता पडिगए ।।

२१. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी वरदत्ते नामं अणगारे उराले जाव[11] विहरइ ।।

२२. तए णं से वरदत्ते अणगारे निसढं कुमारं पासइ, पासित्ता जायसड्ढे[12] जाव[13] पज्जुवासमाणे एवं वयासी अहो[14] णं भंते! निसढे कुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे 'पिए पियरूवे मणुण्णे मणुण्णरूवे'[15] मणामे मणामरूवे सोमे सोमरूवे पियदंसणे सुरूवे ।।

२३. निसढेणं भंते! कुमारेणं अयमेयारूवा मणुयइड्ढी किण्णा लद्धा? किण्णा पत्ता? पुच्छा जहा[16] सूरियाभस्स ।।

२४. एवं खलु वरदत्ता! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रोहीडए[17] नामं नयरे होत्था—रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धे। मेहवण्णे[18] उज्जाणे मणिदत्तस्स **जक्खस्स जक्खाययणे**[19] ।।

२५. तत्थ णं रोहीडए नयरे महब्बले नामं राया, पउमावई नामं देवी, अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सीहे सुमिणे, एवं जम्मणं भाणियव्वं जहा महाबलस्स, नवरं—वीरंगओ नामं बत्तीसओ दाओ, बत्तीसाए रायवरकण्णगाणं पाणिं जाव[20] उवगिज्ज-माणे-उवगिज्जमाणे पाउस-वरिसारत्त-सरय[21]-हेमंत-वसंत-गिम्ह-पव्वंसे छप्पि उऊ जहाविभवेणं 'भुंजमाणे-भुंजमाणे'[22] कालं[23] गालेमाणे इट्ठे सद्द[24] •-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे

१. ओ० सू० ६३।
२. अट्ठ (क)।
३. मंगला (ख)।
४. ओ० सू० ६४,६५।
५. अद्धुव्वमाणेहिं २ (क)।
६. उ० ५।१०।
७. ओ० सू० ६७।
८. ओ० ६८,६९।
९. भग० ९।१५७-१६४।
१०. राय० सू० ६९५-६९७।
११. ओ० सू० ८२।
१२. जायसद्धे (क)।
१३. ओ० सू० ८३।
१४. अहं (क); अहे (ख,ग)।
१५. एवं पिए मणुण्णे (क,ख)।
१६. राय० सू० ६६७।
१७. रोहेडए (क,ख)।
१८. मेघवण्णे (क)।
१९. जक्खाययणे होत्था (क)।
२०. भग० ११।१३३-१६१।
२१. सरित (क); सरत (ख)।
२२. माणे माणे (क,ख,ग)।
२३. × (क,ख)।
२४. सं० पा०—सद्द जाव विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

२६. तेणं कालेणं तेणं समएणं सिद्धत्था नाम आयरिया जाइसंपण्णा जहा[1] केसी नवरं बहुस्सुया बहुपरियारा जेणेव रोहीडए नयरे जेणेव मेहवण्णे उज्जाणे जेणेव मणि-दत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागया अहापडिरूवं[2] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा° विहरंति । परिसा निग्गया ॥

२७. तए णं तस्स वीरंगयस्स कुमारस्स उप्पिं पासायवरगयस्स तं महया जणसद्दं जहा जमाली निग्गओ धम्मं सोच्चा जं, नवरं—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि जहा[3] जमाली तहेव निक्खंतो जाव अणगारे जाए जाव गुत्तबंभयारी ॥

२८. तए णं से वीरंगए अणगारे सिद्धत्थाणं आयरियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ[4] •छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासक्खमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं° अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं पणयालीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेइत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे मणोरमे विमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥

२९. तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं वीरंगयस्स देवस्स दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

३०. से णं वीरंगए देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं [5]भवक्खएणं ठिइक्खएणं[5] अणंतरं चयं चइत्ता इहेव बारवईए नयरीए बलदेवस्स रण्णो रेवईए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे ॥

३१. तए णं सा रेवई देवी तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सुमिणदंसणं जाव[6] उप्पिं पासायवरगए विहरइ । तं एवं खलु वरदत्ता ! निसढेणं कुमारेणं अयमेयारूवा उराला[7] मणुयइड्ढी[8] लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ॥

३२ पभू णं भंते ! निसढे कुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे[9] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ? हंता ! पभू । 'से एवं'[10] भंते ! से एवं भंते ! वरदत्ते अणगारे[11] •अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा° अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

३३. तए णं अरहा अरिट्ठनेमी अण्णया कयाइ बारवईओ नयरीओ जाव[12] बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

---

१. राय० सू० ६८६ ।
२. सं० पा० अहापडिरूवं जाव विहरंति ।
३. भग० ९।१५७-२१५ ।
४. सं० पा० चउत्थ जाव अप्पाणं ।
५. जाव (क,ख) ।
६. उ० ५।१३ ।
७. ओराला (क,ख) ।
८. मणुयड्ढी (क ग); मणुयिड्ढी (ख) ।
९. सं० पा० मुंडे जाव पव्वइत्तए ।
१०. से एवं भंते ! वरदत्ते त्ति भगवं (क); सेवं भंते सेवं भंते त्ति भगवं (ख); से एवं भंते ३ इह (ग) ।
११. सं० पा० अणगारे जाव अप्पाणं ।
१२. उ० ३।४६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४. तए णं से निसढे कुमारे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] विहरइ ॥

३५. तए णं से निसढे कुमारे अण्णया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[2] दब्भसंथारोवगए विहरइ ॥

३६. तए णं तस्स निसढस्स कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था— तं धण्णा णं ते गामागर जाव[4] सण्णिवेसा, जत्थ णं अरहा अरिट्ठनेमी विहरइ। धण्णा णं ते राईसर जाव[5] सत्थवाहप्पभिइओ, जे णं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदंति नमंसंति[6] •सक्कारेंति सम्माणेंति कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासंति, तं जइ णं अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे नंदणवणे विहरेज्जा तो णं अहं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदिज्जा जाव पज्जुवासिज्जा ॥

३७. तए णं अरहा अरिट्ठनेमी निसढस्स कुमारस्स अयमेयारूवं अज्झत्थियं[7] •चिंतियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं° वियाणित्ता अट्ठारसहिं समणसहस्सेहिं जाव[8] नंदणवणे उज्जाणे समोसढे। परिसा निग्गया ॥

३८. तए णं निसढे कुमारे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे चाउग्घंटेणं आसरहेणं निग्गए जहा जमाली जाव[9] अम्मापियरो आपुच्छित्ता पव्वइए अणगारे जाए— इरियासमिए जाव[10] गुत्तबंभयारी ॥

३९. तए णं से निसढे अणगारे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[11]-•दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासक्खमणेहिं° विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं नव वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए[12] कालगए[13] ॥

४०. तए णं से वरदत्ते अणगारे निसढं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[14] एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभद्दए जाव[15] विणीए, से णं भंते! निसढे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए? कहिं उववण्णे?

---

१. ओ० सू० १६२।
२. भग० १२।६।
३. सं० पा०— अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
४. उ० ३।१०१।
५. उ० ३।१०१।
६. सं० पा०—नमंसंति जाव पज्जुवासंति।
७. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता।
८. ना० १।५।१०।
९. भग० ९।१६०-२१५।
१०. उ० ३।६६।
११. सं० पा०—छट्ठट्ठम जाव विचित्तेहिं।
१२. अणुपुव्वीए (ख)।
१३. कालगए सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे (ग)।
१४. ओ० सू० ८३।
१५. ना० १।१।२०९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१. वरदत्ता दि[1] ! अरहा अरिट्ठनेमी वरदत्तं अणगारं एवं वयासी एवं खलु वरदत्ता ! ममं अंतेवासी निसढे नामं अणगारे पगइभद्दए[2] जाव[3] विणीए ममं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं नव वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, बायालीसं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवाणं सोहम्मीसाण[4] जाव[5] अच्चुए तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे ।।

४२. तत्थ णं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं निसढस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

४३. से णं भंते ! निसढे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? वरदत्ता ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे उण्णाए नयरे विसुद्धपिइमाइवंसे[6] रायकुले पुत्तत्ताए[7] पच्चायाहिइ । 'से णं'[8] उम्मुक्कबालभावे विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलबोहिं 'बुज्झिहिइ, बुज्झिहित्ता'[9] अगाराओ अणगारियं पव्वज्जिहिइ । से णं तत्थ अणगारे भविस्सइ— इरियासमिए[10] जाव[11] गुत्तबंभयारी । से णं तत्थ बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासक्खमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणिस्सइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेहिइ,[12] झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहिइ, जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए[13] अदंतवणए अच्छत्तए अणोवाहणए[14] फलहसेज्जा[15] कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे पिंडवाओ[16] लद्धावलद्धे[17] उच्चावया गामकंटगा अहियासिज्जंति[18] तमट्ठं आराहेहिति, आराहेत्ता चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ[19] °मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ° सव्वदुक्खाणं अंतं काहिइ ।।

४४. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[20] संपत्तेणं [21]°वण्हिदसाणं

१. वरदत्ता (क) ।
२. °भद्दगे (क) ।
३. ना० १।१।२०६ ।
४. सोहम्मीसाणाणं (ख) ।
५. ना० १।१।२११ ।
६. °पितवंसेमाइवंसे (क) ।
७. पुमत्ताए (ख,ग) ।
८. ततेणं (क) ।
९. उवबुज्झिहिइ २ (क) ।
१०. रियासमिते (ख) ।
११. उ० ३।६६ ।
१२. झोसेहिइ (ख) ।
१३. अण्हाणए जाव (क,ख,ग) ।
१४. अणोवाहणाए (क) ।
१५. भूमिसेज्जा फलहसेज्जा (ओ० सू० १५४, राय० सू० ८१६) ।
१६. × (क,ग, ओ० सू० १५४, राय० सू० ८१६); परपिंडवाओ (ख) ।
१७. लद्धालद्धे (क) ।
१८. अभिअसिज्जंसि (क) ।
१९. सं० पा०—बुज्झिहिइ जाव सव्व° ।
२०. ना० १।१।७ ।
२१. सं० पा०—निक्खेवओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते —त्ति बेमि ॥°

२-१२ अज्झयणाणि

४५. एवं[1] सेसावि एक्कारस अज्झयणा नेयव्वा संगहणीअणुसारेण। एवं अहीण-मइरित्तं एक्कारससुवि —त्ति बेमि ॥

परिसेसो

निरयावलियाइउवंगाणं एगो सुयक्खंधो, पंच वग्गा, पंचसु दिवसेसु उद्दिस्संति, तत्थ चउसु वग्गेसु दस दस उद्देसगा, पंचमवग्गे बारस उद्देसगा ॥

ग्रन्थ परिमाण :

कुल अक्षर ४७,६८६

अनुष्टुप् श्लोक १,४६६ अक्षर १८

१. उ० ५।२-४४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अणागारेहिं जाव पासति	३०।२७,२८	३०।२८
अणिट्ठतरिया चेव जाव अमणामतरिया	१७।१३०	१७।१२३
अणिट्ठतरिया जाव अमणामतरिया	१७।१२५	१७।१२३
अबाहा जाव णिसेगो	२३।६८,७४	२३।६०
आगारेहिं जाव जं	३०।२६	३०।२५
आभिणिबोहियणाण एवं जहेव कण्हलेस्साणं		
तहेव भाणियव्वं जाव चउहिं	१७।११३	१७।११२
इट्ठतरिया चेव जाव मणामतरिया	१७।१२६,१२७,१३४	१७।१३८
उट्टे जाव एलए	११।१७,१९,२०	११।१६
उदएणं जाव अट्ठविहे	२३।२१,२२	२३।१३
उववेया जाव फासेणं	१७।१३४	१७।१३३
एत्तो जाव अमणामतरिया	१७।१३१,१३२	१७।१२३
एवं जहा इंदियउद्देसए पढमे भणियं		
तहा भाणियव्वं जाव से तेणट्ठेणं	३४।१२	१५।४९
एवं जहा नेरइयाणं	२८।३९	२८।२२
एवं मणूसाण वि	३४।१९	३४।१८
कंता जाव मणामा	२८।१०५	२८।२४
कम्मभूमगपलिभागी वा जाव सुतोवउत्ता	२३।२००	२३।१९९
कम्मभूमगपलिभागी वा जाव सुतोवउत्ते	२३।२०१	२३।१९९
कालं जाव खेत्तओ	१८।११७	१८।२६
खेत्तं जाव पासति जाव इत्तरिय°	१७।१०७	१७।१०६
गोयमा जाव णण्णत्थ	११।१६,२०	११।११
गोयमा जाव रोएज्जा	२०।३४	२०।१७
जहा पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु जाव जे णं	२०।१८	२०।१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा भासुद्देसए जाव णियमा	२८।१२-१९	११।६२-६६
जहेव नेरइया तहेव	२८।३५	२८।३३
जाणंति जाव अत्थेगइया	१५।४६	१५।४७
जावतियं तं चेव	१५।५१	१५।५१
णेरइए जाव पासति	१७।१०७	१७।१०६
णेरइए तं चेव जाव इत्तरिय°	१७।१०७	१७।१०६
तं चेव	१७।१५४	१७।१५१
तं चेव जाव चिट्ठति	१५।५२	१५।५२
तं चेव जाव णो	३४।१६	३४।१५
तं चेव जाव मणपरियारणा	३४।१८	३४।१८
तहेव पुच्छा	२३।१९	२३।१३
तहेव पुच्छा उत्तरं च, णवरं—अमणुण्णा सद्दा जाव कामदुहता	२३।१६	२३।१५
तेणट्ठेणं जाव णो	३०।२६	३०।२६
पसत्थेणं जाव फासेणं जाव एत्तो	१७।१३३	१७।१३२
पासइ जाव विसुद्धतरागं	१७।११०	१७।१०८
पुच्छा	१८।१७,१८,२०-२३,२६-३६,३९, ४२-४४,४६,४९-५१,५७,६२,६३, ६५,६६,६८,७०-७५,७७,७८,८०, ८२,८४,८५,८७-९०,९३,९४,९७, ९८,१००-१११,११३,११४,११६, ११७,११९,१२०,१२२,१२३,१२५-१२७	१८।१
पुच्छा	२१।४०	२१।३८
पुच्छा	२३।१९,२१,२३	२३।१३
पुच्छा	२३।२८,३०,४०	२३।२५
पुच्छा	२४।११	२४।४
पुच्छा	२८।४१,४३,४८	२८।२४
पुच्छा। गोयमा ! एवं चेव, णवरं—अणिट्ठा सद्दा जाव हीणस्सरता दीणस्सरता अणिट्ठस्सरता अकंतस्सरता जं वेदेते सेसं तं चेव जाव कोहसविहे	२३।२०	२३।१९
पुच्छा। गोयमा ! एवं चेव, णवरं—जातिविहीणया जाव इस्सरियविहीणय	२३।२२	२३।२१
बद्धस्स जाव कतिविहे	२३।१७	२३।१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं	२३।१४,१५	२३।१३
मणुस्सा एवं चेव, णवरं—आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुपज्जति	२८।४६-७१	२८।४-१६,३२,२१, २२,४०,४३-४५
मणूसस्स अतीता वि पुरेक्खडा वि जहा णेरइयस्स पुरेक्खडा	३६।१०	३६।६
महिड्ढीए जाव महासोक्खे	३६।८०	२।३०
वाससताइं जाव णिसेगो	२३।६६	२३।६०
सपज्जवसिए जाव अवड्ढं	१८।६४	१८।५६
समट्ठे एत्तो जाव अमणामतरिया	१७।१२४	१७।१२३
सम्मुच्छिमसामण्णपुच्छाकायव्वा	४।१३४	४।११६
सिज्झति जाव अंतं	३६।६२	३६।८८
सीलं वा जाव पडिवज्जित्तए	२०।३४	२०।१७
सेसं जहा नेरइयाणं जाव आहच्च	२८।३२,३३	२८।२०,२१

जंबुद्दीवपण्णत्ती

अंचेइ जाव पणामं	३।१२	३।६
अंचेत्ता जाव करयलपरिग्गहियं	५।५८	५।२१
अंतलिक्खपडिवण्णे जाव उत्तरपुरत्थिमं	३।१३०	३।४३
अंतलिक्खपडिवण्णे जाव पूरेंते	३।४३	३।३०
अंतवाले जाव पडिच्छइ	३।१३३,१३४	३।२६,२७
अकोहे जाव अलोहे	२।६८	पज्जो० ७८
अच्छरगणसंघसंविकिण्णा जाव पडिरूवा	१।३१	पण्ण० २।३०
अणंते जाव समुप्पन्ने	२।८५	पज्जो० ८१
अणुपविसइ जाव णमि	३।१३७	३।२०
अणुसज्जिस्संति जाव सणिचारी	२।१६३	२।४६
अणेगखंभसयसण्णिविट्ठे जाव सुहसंकमे	३।१००	३।६६
अणेगखंभसयसण्णिविट्ठेहिं जाव सुहसंकमेहिं	३।१०१	३।६६
अणेगरायवरसहस्साणुयायमग्गे जाव समुद्दरव°	३।१८०	३।२२
अदंडकोदंडिमं जाव सपुरजणजाणवयं	३।२१२	३।१२
अपत्थियपत्थगा जाव परिवज्जिया	३।१२४	३।७७
अयमेयारूवे जाव संकप्पे	५।२२	५।२०
अवक्कमित्ता जाव अब्भवद्दलए विउव्वंति २ जाव तं णिहयरयं	५।७	राय० सू० १२
अहोरत्तंसि जाव चारं	७।२७	७।२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आउहघरसालाओ तहेव जाव उत्तरपुरत्थिमं	३।६०	३।४३
आपूरेमाणा जाव अतीव	५।३८	राय० सू० ४०
आभिसेक्कं जाव पच्चप्पिणंति	३।१७३,१७४	३।१५,१६
आयामेणं जाव वासं	२।१४४,१४५	२।१४१
आसत्तोसत्तविपुलवट्ट जाव करेइ	३।८८	३।७
आसयंति जाव भुंजमाणा	१।३३	१।१३
आसयंति जाव विहरंति	४।२	१।१३
आसोए जाव आसाढे	७।१०३	भ० १८।२१६
इट्ठत्तराए चेव जाव आसाए	२।१८	जी० ३।५९९
इट्ठत्तरिया चेव जाव मणामतरिया	२।१६	जी० ३।२७६
इट्ठाहिं जहा पविसंतस्स भणिया जाव विहराहित्तिकट्टु	३।२०९	३।१८५
इट्ठाहिं जाव जयजयसद्दं	५।५८	३।१८५; शाव्
इड्ढी एवं चेव जाव अभिसमण्णागए	३।१२६	३।१२६
इत्थिरयणेणं जाव णाडगसहस्सेहिं	३।२१४	३।२०४
इमं जाव विणमी	३।१३८	३।२६
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	३।१८८	३।२६
इव जाव ससिव्व	३।९,१७	ओ० सू० ६३
ईरियासमिए जाव पारिट्ठावणियासमिए	२।६८	पज्जो० ७८
ईसर जाव पभितयो	३।१०	ओ० सू० ५२
उक्करं जाव मागह	३।२८	३।१२
उक्किट्ठाए जाव अट्ठाहियं जाव पच्चप्पिणंति	३।६४-६७	३।५६-५९
उक्किट्ठाए जाव उत्तरेणं	३।१३३	३।२६
उक्किट्ठाए जाव एवं	३।५६	३।२६
उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं	२।६०	जी० ३।४४३
उक्किट्ठाए जाव देवगईए	५।५,४४	३।२६
उक्किट्ठाए जाव वीईवयमाणे	५।४७	३।२६
उक्किट्ठाए जाव सक्कारेइ सम्माणेइ, २ त्ता पडिविसज्जेइ जाव भोयणमंडवे, तहेव महामहिमा कयमालस्स पच्चप्पिणंति	३।७२-७५	३।५६-५९
उक्किट्ठिसीहणाय जाव करेमाणे	३।९९	३।२२
उत्तरेणं जाव चउणवइं	४।८६	१।२०
उप्पलहत्थगया जाव अप्पेगइया	३।१०	शाव्
उल्ला जाव पीइदाणं से, णवरं चूडामणिं च दिव्वं उरत्थगेविज्जगं सोणियसुत्तगं कडगाणि य तुडियाणि य जाव दाहिणिल्ले अंतवाले जाव अट्ठाहियं	३।३७-४२	३।२३-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उल्ला जाव पीइदाणं से, णवरं मालं मउडिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणि य तुडयाणि य आभरणाणि य सरं च णामाहयं पभासतित्थोदगं च गिण्हइ २ त्ता जाव पच्चत्थिमेणं पभासतित्थमेराए अहण्णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी जाव पच्चत्थिमिल्ले अंतवाले, सेसं तहेव जाव अट्ठाहिया निव्वत्ता	३।४५-५०	३।२३-२६
उवट्ठाणसाला जाव सीहासणवरगए	३।२१९	३।१८६
उवाएणं जाव संकममाणे	७।८४	७।७८
उवागच्छित्ता जाव आगायमाणीओ	५।७	५।५
उवागच्छित्ता जाव ससिव्व	३।२२२	३।९
एज्जमाणा जाव निव्वुइकरेणं	५।३८	राय० सू० ४०
एयारूवाए जाव अभिसमण्णागए	३।१२२	३।२६
एवं ओववाइयगमेणं जाव तस्स	३।१७८,१७९ शावृ, हीवृ, ओ० सू० ६४	
एवं पच्चत्थिमिल्लाए जाव पच्चत्थिमिल्लं	४।१०८	४।१
कट्टु जाव पडिसुणेइ	३।८४	३।१९
कडगाणि य जाव आभरणाणि	३।७२	३।२६
कडगाणि य जाव मागह°	३।२६	३।२६
कडगाणि य जाव सो चेव गमो जाव पडिविसज्जेइ	३।५६,५७	३।२६,२७
कत्तिइण्णं जाव वत्तव्वं	७।१४२	७।१४१
करयल जाव अंजलिं	३।६,२०४	३।५
करयल जाव एवं	५।४६	३।५
करयल जाव कट्टु	३।५	ओ० सू० २०
करयल जाव जएणं	३।५	ओ० सू० २०
करयल जाव मत्थए	३।८८	३।५
करयलपरिग्गहियं जाव अंजलिं	३।१५१	३।५
करयलपरिग्गहियं जाव मत्थए	३।११४,१२६; ५।५८	३।५
करेइ अवसिट्ठं तं चेव जाव निहिरयणाणं	३।१६४-१६६	३।१८-२०
करेत्ता जाव णट्टविहिं	५।५८	शावृ
करेत्ता जाव वेयड्ढगिरिकुमारस्स	३।६१-६३	३।१८-२०
करेत्ता जाव सिंधूए	३।५२-५४	३।१८-२०
कामगमाणं जाव मणोरमाणं	७।१७५	७।१७५
किण्हचामरज्झया जाव सुक्किल°	४।२९	जी० ३।२८८
केणट्ठेणं जाव सासए	४।३४	४।२२, पुवृ, हीवृ
कोट्ठपुडाण वा जाव पीसिज्जमाणाण	४।१०७	जी० ३।२८३
कोडीए जाव दोहिवि पुट्ठे	४।१७२	४।१०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोहे वा जाव लोहे	२।६६	पज्जो० ७६
गच्छंति जाव नियमा	७।४०-४८	भ० १।२५८-२६६, शावृ
गयवइं जाव दुरुढे	३।२१५	३।१७
गामाइ वा जाव सण्णिवेसाइ	२।२१	ठाणं २।३९०
गाहावइकुंडप्पमाणं जाव मंगलावत्त	४।१९५	४।१८३; हीवृ
गुणेत्ता जाव तं चेव	७।३३	७।३१
घडमुहपवत्तिएणं जाव साइरेग°	४।९०,९१	४।२३
°घाइय जाव दिसोदिसिं	३।११०	३।१०८
चंदिम जाव तारारूवा	७।५८	७।५५
चंदे जाव संकममाणे	७।७५,७८	७।६९
चक्करयणदेसियमग्गे जाव खंडगप्पवायगुहाओ	३।१६३	३।९३
चच्चर जाव महापह	३।२१२	३।१८५
चरइ जाव केवइयं	७।८०	७।७९
चेव जाव गंधे	४।१०७	जी० ३।२८१
छत्तपडागा जाव संपट्ठिया	३।१७८	ओ० सू० ६४
जा पढममज्झिमेसु वत्तव्वया ओसप्पिणीए सा भाणियव्वा	२।१५८	२।५५
जुगमुसलमुट्ठि जाव वासं	३।१२२	३।११५
जुगमुसलमुट्ठि जाव सत्तरत्त	२।१४२	२।१४१
जोएइ जाव कुलोवकुलं	७।१३९	७।१३९
जोयणंतरिएहिं जाव जोयणुज्जोयकरेहिं	३।९६	३।९५
णरवई जाव सव्वे	३।१३१	३।२४
णवजोयणविच्छिण्णं जाव कयमालस्स	३।६९-७१	३।१८-२०
णवजोयणविच्छिण्णं जाव खंधावारणिवेसं	३।१८०	३।१८
णवजोयणविच्छिण्णं जाव विजयखंधावारणिवेसं	३।१६४	३।१८
णवरं पम्हलसूमालाए जाव मउडं	३।२११	जी० ३।४४९
णाणामणिपंच जाव कित्तिमेहिं	२।१२७	२।५७
णिक्खममाणस्सवि जाव अप्पडिवुज्झमाणे	३।२०४	३।१८६
णिरयगामी जाव अंतं	१।५१	१।२२
णिरयगामी जाव अप्पेगइया	२।१४८; ४।१०१	१।२२
णिरयगामी जाव देवगामी	२।१२३	१।२२
णिरयगामी जाव सव्वदुक्खाणमंतं	२।१२८	१।२२
णेया वेढो भरहस्स	३।१०९	३।७७
णो चेव णं तेसिं मणुयाणं आबाहं वाबाहं वा जाव पगइभद्दया	२।४१	२।३६
तयणंतराओ जाव संकममाणे	७।८१	७।६९
तलवर जाव सत्थवाह°	३।१७८,१८८,२१६,२२१	३।१०
तहेव पविसंतो मंडलाइं आलिहइ	३।१५८-१६०	३।६४-६६
तहेव सेसं जाव विजयखंधावार°	३।३०	३।१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तित्थगरचियगं जाव अणगारचियगं	२।१११	२।६५
तित्थगरचियगं जाव णिव्वावेंति	२।११२	२।१११
तित्थगरचियगाए जाव अणगारचियगाए	२।१०५-१०७, १०६	२।६५
तित्थगरचियगाए जाव विउव्वंति	२।१०८	२।१०७
तित्थगरसरीरगं जाव अणगारसरीरगाणि	२।१०८	२।१०७
तित्थयरस्स जाव फुट्टिहीतिकट्टु	५।७३	५।७२
तिसोवाणपडिरूवएणं जाव पज्जुवासंति	३।२०६	३।२०५
तुरग जाव वणलयभत्तिचित्ताओ	२।१०१	१।३७
तुरियाए जाव उद्धुयाए	३।१३८	३।२६
तुरियाए जाव वीतिवयमाणा	३।११३	३।२६
तेणेव जाव पच्चप्पिणंति	५।७०	३।१३
तेरसहिं जाव छेत्ता	७।८०,८१,८३	७।७६
तोरणेणं जाव पवूढा	४।७७	४।३५
दंडणायग जाव दूय	३।६	शावृ
दंडणायग जाव संधि	३।७७	३।६
दिव्वतुडिय जाव आपूरेंते	३।१७२	३।१४
दिव्वा वा जाव पडिलोमा	२।६७	पज्जो० ७७
दुरंतपंतलक्खणे जाव परिवज्जिए	३।१२२	३।२६
दुरंतपंतलक्खणे जाव हिरिसिरि°	३।११४	३।५
दुरुहित्ता जाव सीहासणंसि	५।४१	राय० सू० ४७
दुरुहित्ता तहेव जाव णिसीयंति	५।४२	५।४२
दुस्समदुस्समाकाले जाव सुसमसुसमाकाले	२।३	२।२
देवराया जाव पच्चप्पिणइ	५।७१	३।१३
देवाणुप्पिया जाव अम्हे	३।१३८	३।२६
देवा य जाव विहरंति	१।३६	१।१३
देविड्ढि जाव उवदंसेमाणे	५।४४	राय० सू० ५६
देविड्ढि जाव दिव्वं	५।४४	राय० सू० ५६
देवेण वा जाव अग्गिपओगेण वा जाव उद्दवित्तए	३।१२५	३।११५
नाणेणं जाव चरित्तेणं	२।७१	पज्जो० ८१
पउंजित्ता जाव पम्हसूमालाए	५।५८	शावृ, जी० ३।४६६
पउमवरवेइयाए जाव संपरिक्खित्ता	४।२४२	४।३
पंडुयए जाव संखे	३।१७८	३।१६७
पकरेंति जाव जहण्णेणं	७।५६,६०	७।५६,५७
पगिण्हित्ता जाव अट्ठमभत्तं	३।१८२	३।२०
पच्चत्थिमाभिमुहे जाव समप्पेइ	६।२४	६।२४
पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठा	४।५५	४।१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चत्थिमिल्लाए जाव पुट्ठे	१।४८	१।२०
पच्चप्पिणइ सेसं तहेव जाव मज्जणघराओ	३।३३,३४	३।२०,२१
पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति	३।२००	३।१६
पच्चुवसमंति एवं पुप्फवद्दलगंसि पुप्फवासं वासंति, वासित्ता जाव कालागुरुपवर जाव सुरवराभिगमणजोग्गं	५।७	राय० सू० १२
पडिणिक्खमित्ता जाव उत्तरपुरत्थिमं	३।१४०	३।४३
पडिणिक्खमित्ता जाव गंगाए	३।१४६	३।४३
पडिणिक्खमित्ता जाव दाहिणं	३।१३६	३।४३
पडिणिक्खमित्ता जाव पूरेंते	३।५१	३।४३
पडिसाहरेमाणे जाव जेणेव	५।४४	राय० सू० ५६
पण्णत्ते सयणिज्जवण्णओ भाणियव्वो	४।१३	जी० ३।४०७; शावृ
पतणतणाइस्सइ जाव खिप्पामेव	२।१४२	२।४१
पतणतणाइस्सइ जाव वासं	२।१४३	२।१४१
पत्तेयं जाव अंजलिं	३।२०६	जी० ३।४४६
परामुसइ वेढो जाव छत्तरयणस्स	३।११६	३।६२
परिगरणिगरियमज्झो जाव तए	३।१३१	३।२४
परिभुज्जमाणाण वा जाव ओराला	४।१०७	जी० ३।२८१
पवरवाहण जाव सेणाए	३।२१	३।१७
°पवरवीर जाव दिसोदिसिं	३।१०६	३।१०५
पाईणपडीणायया जाव पच्चत्थिमिल्लाए	४।१	१।१२०
पाउप्पभाए जाव जलंते	३।१८८	ओ० सू० २२
पारेत्ता जाव सीहासणवरगए	३।५८	३।२८
पासाईयाओ जाव पडिरूवाओ	२।१५	१।८
पासादीया जाव पडिरूवा	२।१४	१।८
पिंडिम जाव पासादीयाओ	२।१२	ओ० सू० ७
पीइमणे जाव अंजलिं	३।१६	३।८
पुप्फारुहणं जाव वत्थारुहणं	३।८८	३।१२
पुरत्थिम जाव पुट्ठे	४।६८	४।१
पेच्छिज्जमाणे एवं जाव णिग्गच्छइ जहा ओववाइए जाव आउलबोलबहुलं	२।६५	ओ० सू० ६६ वाचनान्तर; वृत्तिश्च
पोसहसालाए जाव अट्ठमभत्तिए	३।६३	३।५४
पोसहसालाए जाव णमि	३।१३७	३।५४
पोसहसालाए जाव णिहिरयणे	३।१६६	३।५४
पुरत्थिभिइओ तेवि तह चेव णवरं दाहिणिल्लेणं	३।२०६	३।२०५
फासपज्जवेहिं जाव परिहायमाणे	२।१३०	२।५१
बंभयारी जाव अट्ठमभत्तिए	३।८४,८५	३।२०,२१

बंभयारी जाव कयमालगं	३।७१	३।६३
बंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए	३।५४	३।२०
बहवे जाव करेंति	२।११५	२।११४
बहवे जाव सत्थवाह°	३।१०	३।१७८
बहुमज्भदेसभाए जाव उम्मुग्ग	३।१६१	३।६७
बहुसंघयणा जाव अप्पेगइया	१।५०	१।२२
बहुसमरमणिज्जे जाव भविस्सइ, मणुयाणं जा चेव		
ओसप्पिणीए पच्छिमे तिभागे वत्तव्वया सा भाणियव्वा:		
कुलगरवज्जा उसभसामिवज्जा	२।१५६,१५७	२।५७,५८
भगिणी मे जाव संगंथसंथुया	२।६६	सू० २।१।५१; शावृ
भवण जाव वेमाणिएहिं	४।२४८	४।२४८
भवणवइ जाव अट्ठाहियाओ	२।१२०	२।११६
भवणवइ जाव जे	५।७३	५।७२
भवणवइ जाव तित्थगर जाव भारग्गसो	२।११०	२।१०६
भवणवइ जाव देवेहिं	४।२५२	४।२४८
भवणवइ जाव भारहगा	४।२५०	४।२४८
भवणवइ जाव वेमाणिए	२।१०१,१०६,११४	२।६५
भवणवइ जाव वेमाणिया	२।६६,१००,१०२,१०४,११३,११६	२।६५
मंसाहारा जाव कहिं	२।१३७	२।१३५
°मग्गे जाव समुद्दरवभूयं	३।१०६	३।२२
मडंब जाव जोयणंतरियाहिं	३।१८०	३।१८
मणगुत्ते जाव गुत्तबंभयारी	३।६८	पज्जो० ७८
मणुण्णा जाव गंधा	४।१०७	जी० ३।२८१
महज्जुईए जाव पलिओवमट्ठिईए	३।२५६	१।२४
महज्जुईए जाव महासोक्खे	३।११५	१।२४
महज्जुईया जाव महासोक्खा	१।३१	१।२४
महया जाव आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव		
विहराहित्तिकट्टु	३।१८५	शावृ
महया जाव भुंजमाणे	३।१८७	३।८२
महाणईओ तहेव णवरं पच्चत्थिमिल्लाओ	३।१६१	३।६७
महामेहणिग्गए जाव मज्जणघराओ	३।२१	३।६
महिड्ढीए जाव णो	३।१२५	३।११५
महिड्ढीयं जाव उद्दवित्तए	३।१२४	३।११५
माडंबिय जाव सत्थवाह०	३।८६	३।१०
य जाव छेत्ता	७।८२	७।७६
रयणकुच्छिधारिए एवं जहा दिसाकुमारीओ जाव धण्णासि	५।४६	५।५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयणाणं जाव संवट्टगवाए	५।५	रा० सू० १२
रयथामयकूले जाव पासाईए जाव पडिरूवे	४।३८	४।२५
राईसर जाव सत्थवाह°	३।१८६	३।१०
रायधम्मे जाव धम्मचरणे	२।१५७	२।१२८
राया जाव तमाणत्तियं	३।३२	३।१३
राया जाव पच्चप्पिणंति	३।१६८	३।१३
राया जाव पडिविसज्जेइ	३।१३६	३।२७
राया जाव पासइ	३।१७३	३।३१
रुट्ठे जाव पीइदाणं सव्वोसहिं च मालं गोसीसचंदणं कडगाणि जाव दहोदगं	३।१३३	३।२६
रूवेहिं जाव णिओगेहिं	५।४३	राय० सू० ५४, शावृ
रोहिया णं जहा रोहियंसा पवहे य मुहे य भाणियव्वा जाव संपरिक्खित्ता	४।७२	४।४३
लवणं जाव समप्पेइ	४।३७	४।३५
लूहेत्ता एवं जाव कप्परुक्खगं	५।५८	शावृ, जी० ३।४४६
लोगपालेहिं जाव चउहिं	२।९०	५।१६
वंदणघडसुकय जाव गंधुद्धुयाभिरामं	३।७	ओ० सू० ५५
वंदेज्ज वा जाव पज्जुवासेज्ज	२।६७	शावृ
वणसंडेणं जाव संपरिक्खित्ते	४।७६	४।३१
वणसंडेहिं जाव संपरिक्खित्ते	४।८६	४।३१
वण्णपज्जवेहिं जाव अणंतगुण°	२।५४,१३८,१४०,१५३	२।५१
वण्णपज्जवेहिं जाव परिवड्ढेमाणे	२।१४६	२।५१
वण्णपज्जवेहिं तहेव जाव अणंतेहिं उट्ठाणकम्म जाव परिहायमाणे	२।१२१	२।५१
वण्णपज्जवेहिं तहेव जाव परिहाणीए	२।१२६	२।५१
वण्णेणुववेए जाव फासेणुववेए	२।१८	जी० ३।५९६
वाइय जाव दिव्वाइं	७।१८२	५।१८
वाइय जाव भुंजमाणा	७।५८	५।१८
वाइय जाव भोगभोगाइं	५।१	५।१८
वालग्गे एवं हेमवयएरण्णवयाणं मणुस्साणं पुव्वविदेह अवरविदेहाणं मणुस्साणं	२।६	२।६
वित्थडा तं चेव जाव तीसे	७।३३	७।३१
विमलदंडं जाव अहाणुपुव्वीए	३।१७८	ओ० सू० ६४
विसयवासी जाव अहुण्णं	३।१३३	३।२६
विसुद्धरुक्खमूलाइं जाव चिट्ठंति	२।९	२।८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीइक्कंते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे	२।८८	२।८९
वीरिय जाव केवलकप्पे	३।१८८	३।१८८
वेउव्विय जाव समोहण्णंति	३।१९२	३।१९२
वेढिम जाव विभूसियं	३।२११	जी० ३।४४६
वेत्तेण वा जाव कसेण	२।६७	शावृ
वेरुलियविमलदंडं जाव धूवं	३।८८	३।१२
संथरइ जाव कयमालस्स	३।८४	३।२०
सकोरंट जाव चाउचामर°	३।६	ओ० सू० ६३
सक्कस्स जाव अंतियं	५।२२	५।२०
सक्करा वा जाव मणुस्से	३।६८	३।६८
सक्के जाव आसणं	५।२१	५।२०
सक्के तं चेव जाव अंतियं	५।२६	५।२२
सखिखिणीयाइं जाव जएणं	३।१३८	३।२६
सच्चेव सव्वा सिंधुवत्तव्वया जाव णवरं कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगसीहासणाइं सेसं तं चेव जाव महिमत्ति	३।१४१-१४८	३।५२-५९
सण्णद्धबद्धवम्मियकवया जाव गहियाउह°	३।१२४	३।७७
सद्दावेत्ता जाव अट्ठाहियाए महामहिमाए	३।५८,५९	३।२८,२९
सद्दावेत्ता जाव पोसहसालं	३।१८०-१८२	३।१८-२०
समचउरंसे जाव तिक्खुत्तो आदाहिणपयाहिणं करेइ वंदति वंदित्ता जाव एवं	१।५,६	भ० १।९,१०
समाणीए जाव पच्चत्थिमं	३।६८	३।४३
समाणे जाव सरसगोसीस°	३।८२	शावृ
समाणे सेसं तहेव	३।३६	३।२२
सम्माणेत्ता जाव पुरोहियरयणं	३।२१९	३।१८६
सयंति जाव फलवित्तिविसेसं	१।३०	१।१३
सव्वज्जुईए जाव णिग्घोसणाइयरवेणं	३।१८०	३।१२
सव्वबलेणं जाव निग्घोसनाइएणं	३।७८	३।१०
सहइ जाव अहियासेइ	२।६७	पज्जो० ७७
सहस्सा जाव समप्पेंति	६।२६	६।२६
सासया जाव णिच्चा	१।११	१।४७
सिंगारागार जाव जुत्तोवयारकुसलं	३।१३८	२।१५
सिंघाडग जाव एवं	५।७३	५।७२
सिंघाडग जाव महापह	३।१८५,५।७२	ओ० सू० ५२
सिज्झंति जाव अंतं	४।१०१	१।२२
सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणमंतं	१।५०,२।५८	१।२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिया जाव तहेव जं	५।५	राय० सू० १२
सिरिवच्छ जाव कयग्गह°	३।८८	३।१२
सिरिवच्छ जाव दप्पणे	३।१७८	३।१२
सिरिवच्छ जाव पडिरूवा	४।२८	जी० ३।२८७
सिरिवच्छसरिसरूवं वेढ़ो भणियव्वो जाव दुवालस	३।११६	३।७६
सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं जाव महया	२।२०६	जी० ३।४४४
सुवण्णं मे जाव उवगरणं	२।६६	सू० २।१५०
सुसमा तहेव	२।१५६-१६१	२।५०-५२
सुसमासुसमा तहेव	२।१६२,१६३	२।५०,७
सुस्सूसमाणा जाव पज्जुवासंति	३।२०५	१।६
सुस्सूसमाणे जाव पज्जुवासइ	२।६०,५।५८	१।६
सूरिय जाव ताराख्वा	७।५५	७।५५
सेणावइरयणे जाव पुरोहियरयणे	३।१८८,२१०	३।१७८
सेणावइरयणे जाव सत्थवाह०	३।२०६,२१५	३।१८८
सेणिपसेणिसद्दावणया जाव णिहिरयणाणं		
अट्ठाहियं महामहिमं करेइ	३।१६८,१६६	३।५८,५६
हट्ठ करयल जाव एवं	३।८	३।५;ओ० सू० ५६
हट्ठ जाव सोमणस्सिए	३।६	३।५
हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव करयल°	३।७७,८४	३।८
हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव विणएणं	३।१००	३।१६
हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव हियया	३।११४	३।५
हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबिय°	३।३१,१७३	३।५
हट्ठतुट्ठ जाव पोसहसालाओ	३।१६६	३।५
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	३।१५	३।५
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	५।२७	३।५
हत्थिखंधवरगया जाव घोसंति	३।२१३	३।२१२
हयगय जाव सण्णाहेत्ता	३।१६६	३।१५
हयगयरह तहेव अंजणगिरि	३।१७५-१७७	३।१५-१७
हयगयरहपवर जाव चाउरंगिणिं	३।७७	३।१५
हयमहिय जाव पडिसेहिया	३।१११	३।१०८
हरिय जाव सुहोवभोगे	२।१४६	२।१४५
हारोत्थयसुकयरइयवच्छे जाव अमरवइ°	६।६३,१८०	३।१८

सूरपण्णत्ती

सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं	१।१४	जं० १।७
एवं एगं दीवं एगं समुद्दं अण्णमण्णस्स अंतरंकट्टु	१।२०	१।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राइंदिए तहेव	१।२४	१।२४
तीसे तहेव जाव सव्वबाहिरिया	४।४	४।३
उड्डीमुहकलंबुयापुप्फसंठिता तहेव जाव वाहिरिया	४।६,७	४।३,४
सेसं तहेव	४।७	४।४
अणुपरियट्टित्ता जाव विगतजोई	१५।१४	१५।१०
गह जाव तारारूवा	१९।२६	१९।२३
वाहिय जाव रवेणं	१९।२६	१९।२३
सव्व जाव चिट्ठति	१९।२८	१९।२
समचक्कवालसंठिते जाव णो	१९।२९	१९।३
सव्वतो जाव चिट्ठति	१९।३२	१९।२
समचक्कवाल जाव णो	१९।३३	१९।३

उवंगा

अंतरं वा जाव मम्मं	१।६६	१।६५
अंतराणि जाव पडिजागरमाणे	१।१०५	१।६५
अंतिए जाव पडिवज्जइ	३।१०४	३।१०३
अगाराओ जाव पव्वइत्तए	३।१०६	३।११८
अज्जगं जाव उवसंपज्जित्ता	१।११९	१।१०६
अज्जाणं जाव पव्वइत्तए	३।१०६,१३८	३।१०६
अज्झत्थिए°	३।२९	१।१५
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	१।१५; ३।४८,५०,५५; ५।३५	राय० सू० ९
अज्झत्थियं जाव वियाणित्ता	५।३७	१।१५
अणगारे जाव अप्पाणं	५।३२	भ० १।५१
अत्तए जाव वेहल्लं	१।११४	१।११०
अपत्थियपत्थए जाव परिवज्जए	१।८९	उवा० २।२२
अम्मयाओ जाव अंगपडिचारियाओ निरवसेसं भाणियव्वं जाव जाहे वि य णं तुमं वेयणाए अभिभूए सहया जाव तुसिणीए	१।७४-८७	१।३४-६२
अम्मयाओ जाव एत्तो	३।१०१	३।९८
अम्मयाओ जाव जम्म°	१।३४	ना० १।१।३३
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।५१,९९; ३।१०६	१।१५
असण जाव सम्माणेत्ता	३।५०	ना० १।७।६
अहं जाव पव्वइत्तए	४।१४	३।१२८
अहापडिरूवं जाव विहरंति	५।२६	३।९९
आएहि जाव ठिइं	१।४३	१।४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आघवित्तए वा जाव विण्णवित्तए	३।१०६	३।१०६
आरंभेहिं जाव एरिसएणं	१।१४०	१।२७
आलोएहि जाव पायच्छित्तं	३।११५	ठाणं ३।३३८
आसाएमाणीओ जाव परिमाएभाणीओ	१।३४	वि० १।२।२६
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणुं	१।२२	वृत्ति
आहारपज्जत्तीए जाव भासमणपज्जत्तीए	३।१५	राय० सू० ७९७
आहेवच्चं जाव विहरइ	५।१०	ना० १।५।६
इच्छिए जाव अभिरुइए	३।१३	ना० १।१।१०२
इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं	१।४४	१।४१
इमेयारूवे जाव संकप्पे	३।६८	१।१५
उक्खेवओ	३।८८,१५४,१६७	३।२०
उक्खेवओ	४।३;५।३	२।३
उक्खेवओ जाव दस	४।१,२	२।१,२
उक्खेवओ भाणियव्वो	३।२३,२४	३।२०,२१
उड्ढंजाणू जाव विहरइ	१।३	ओ० सू० ८२
उवट्ठवेत्ता जाव पच्चप्पिणंति	१।१७,१८	राय० सू० ६९०,६९१
उवट्ठवेत्ता जाव पच्चप्पिणह	४।१६	१।१७
एयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।५४	१।१५
एवं मारेउ बंधेउ	१।७३	१।७३
एवमाइक्खइ जाव परूवेइ	१।६८	ओ० सू० ५२
ओग्गहं जाव विहरंति	३।१३२	३।९१
ओहय जाव झियाइ	३।६८	१।१५
ओहयमण जाव झियाइ	१।१५	वृत्ति
कंता जाव भंड०	३।१२८	ना० १।१।२०६
कयबलिकम्मा जाव अप्प०	१।१९	ओ० सू० २०
करयल०	१।३६,५८;३।१०६ १३८;५।१६	वृत्ति
करयल०	१।४५;४।१५	१।४५
करयल०	१।१०७	ओ० सू० २०
करयल जाव एवं	१।६६	१।३६
करयल जाव कट्टु	१।५५	१।३६
करयल जाव पडिसुणेत्ता	१।४५	ओ० सू० ५६
करयल जाव वद्धावेंति	१।१२२	१।१०७
करयल जाव वद्धावेत्ता	१।११६	१।१०७
काणि जाव वेहल्लं	१।११२	१।१११
कूणिएणं करयल जाव पडिसुणेत्ता	१।१०८	१।४५
गामागर जाव सण्णिवेसाइं	३।१०१	ओ० सू० ८९
चउत्थ जाव अप्पाणं	५।२८	२।१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थ जाव भावेमाणे	३।१४	२।१०
चरमाणे जेणेव रायगिहे नयरे जाव अहापडिरूवं	१।२	राय० सू० ६८६
चिण्णाइं जाव जूवा	३।५०	३।४८
छट्ठ	४।२४	२।१०
छट्ठट्ठम जाव मासद्ध०	३।८३	२।१०
छट्ठट्ठम जाव विचित्तेहिं	५।३६	२।१०
छट्ठट्ठम जाव विहरइ	२।१०	ना० १।१।२०१
छत्तादीए जाव धम्मियं	१।१६	४।१८
जइस्सइ जाव कालं	१।२१	१।१५
जहा पढमं जाव वेहल्लं	१।११३	१।१०६
जहा पण्णत्तीए। सामिलो निग्गओ खंडियविहूणो जाव एवं वयासी—जत्ता ते भंते! जवणिज्जं च ते भंते! पुच्छा। सरिसवया मासा कुलत्था एगे भवं जाव संबुद्धे	३।२६-४५	भग० १८।२०५-२२१
जहा भगवया कालीए देवीए परिकहियं जाव जीवियाओ ववरोविए	१।१४०	१।२२
जहा सिवो जाव गंगाओ	३।५६	३।५१; भग० ११।६४
ण्हाए जाव सव्वालंकार°	१।७०	ओ० सू० ७०
ण्हायं जाव पायच्छित्तं	३।११०	१।७०
ण्हाया जहा कालादीया जाव जएणं	१।१२६,१३०	१।१२१,१२२
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।१२१; ५।१६	१।७०
तं चेव जाव कट्ठमुद्दाए	३।५५	३।५५
तं चेव जाव निव्वेयणे	१।६२	१।६१
तं चेव भाणियव्वं जाव वेहल्लं	१।११०	१।१०६
तं चेव सखंधावारे	१।११६	१।११५
तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव आहारं अहारेइ, नवरं इमं नाणत्तं -दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सोमिलं महाणरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव अणुजाणउ त्ति कट्टु दाहिणं दिसिं पसरइ। एवं पच्चत्थिमेणं वरुणे महाराया जाव पच्चत्थिमं दिसिं पसरइ। उत्तरेणं वेसमणे महाराया जाव उत्तरं दिसिं पसरइ। पुव्वदिसागमेणं चत्तारि वि दिसाओ भाणियव्वाओ जाव आहार आहारेइ	३।५३, ५४	३।५१
तलवर जाव संधिवाल°	१।६२	ओ० सू० ६३
तलवर जाव सत्थवाह°	३।१०१	१।६२
तवसा जाव विहरंति	३।६६	१।[illegible]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहारूवाणं जाव विउलस्स	१।१७	ओ० सू० ५२
तहेव भाणियव्वं जाव वेहल्लं	१।१०८	१।१०७
तिक्खुत्तो जाव एवं	१।२१	ओ० सू० ८१
ते जाव पच्चप्पिणंति	४।१७	१।१८
दंतिसहस्सेहिं जाव ओयाए	१।१५	१।१४
दंतिसहस्सेहिं जाव मणुस्सकोडीहिं	१।१३६	१।१४
दंतिसहस्सेहिं जाव रहमुसलं	१।२१	१।१४
दंतिसहस्सेहिं जाव सत्तावण्णाए	१।१३७	१।१४
दिव्वा जाव अभिसमण्णगया	३।८५	राय० सू० ७६७
दुज्जाएहिं जाव नो संचाएमि विहरित्तए	३।१३४	३।१३१
दुरंत जाव परिवज्जिया	१।११५	१।८६
देवसयणिज्जंसि जाव ओगाहणाए	३।८३; ४।२४	३।१२०
देवसयणिज्जंसि जाव भासमणपज्जत्तीए	३।१६१; १६२	३।८३,८४
देविड्ढी जाव अभिसमण्णागया	३।१२२	३।८४
देवी जाव कहिं	४।२६	३।१२५
देवे जाव एवं	३।७५,७६	३।५७,५८
नमंसंति जाव पज्जुवासंति	५।३६	ओ० सू० ५२
नरए जाव नेरइयत्ताए	१।१४०	१।२६
नाइ जाव रवेणं	४।१८	३।१११
निक्खेवओ	३।८७,१६६ १७०; ४।२७; ५।४३	३।१६
निसम्म जाव हियया	१।२१	ओ० सू० ८१
नीय जाव अडमाणे	३।१३३	३।१००
पढमं भणइ तहेव	३।७७	३।५६
परिजाणइ जाव तुसिणीए	३।६१	३।५६
पवर जाव पच्चप्पिणंति	५।१८	१।१२३
पासादीए जाव पडिरूवे	५।५	५।३
पुप्फ जाव दरिसणिज्जे	५।६	ना०१।५।४
पुव्वरत्ता जाव समुप्पज्जित्था	१।६५	१।५१
पुव्वाणुपुव्विं जाव अंबसालवणे विहरइ	३।२६	ओ० सू० ५२
बहुपडिपुण्णाणं जाव सूमालं	१।५३	ओ० सू० १४३
बहूणं नगरनिगम जहा आणंदो	३।११	उवा० १।१३
बुज्झिहिइ जाव अंतं	१।१४१	ओ० सू० १५४
बुज्झिहिइ जाव सव्व°	५।४३	ओ० सू० १५४
भगवं जाव पज्जुवासामि	१।१७	ओ० सू० ५२
भवित्ता जाव पव्वयाइ	३।११२	३।१०६
भवित्ता जाव पव्वयाहि	३।१३६	३।१०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भीए जाव संजायभए	१।८६	ना० १।१।१६०
भीया जाव देवाणुप्पियाणं	४।१६	३।११२
भोगभोगाइं जाव विहरामि	३।१०६	३।९८
मज्जणघरे जाव दुरूढे	५।१६	१।१२४
मुंडा जाव पव्वयाइ	४।१९	३।१०६
मुंडा जाव पव्वयामि	३।१३६	३।१०६
मुंडा जाव पव्वयाहि	३।१०७,१३९	३।१०६
मुंडे जाव पव्वइत्तए	५।३२	३।१०६
मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा	३।११४,११५	ना० १।१६।२८
मुच्छिया जाव अब्भंगणं	३।११६	३।११४
रज्जं च जाव जणवयं	१।९४	१।६६
रज्जसिरिं जाव विहरामि	१।७१	१।६५
रज्जेण वा जाव जणवएण	१।९९	१।६६
राईसर जाव सत्थवाह°	५।२०	१।९२
लोह जाव गहाय मुंडे जाव पव्वइए	३।५५	३।५०
लोह जाव घडावेत्ता जाव उवक्खडावेत्ता	३।५५	३।५०
लोह जाव दिसापोक्खिय°	३।५०	३।५०
वसही जाव वड्ढावेता	१।११०	राय० सू० ६८३
वाणारसीए जाव पुप्फारामा य जाव रोविया	३।५५	३।४८
विउलाइं जाव विहरामि	३।१०६	३।९८
विउलाइं जाव विहरित्तए	३।१३१	३।१३१
संकाइय जाव कट्ठमुद्दाए	३।६३	३।७३
संजमेणं जाव विहरइ	१।२	राय० सू० ६८६
सण्णद्ध जाव गहियाउह०	१।१३८	राय० सू० ६६४
सद्द जाव विहरइ	५।२०	ओ० सू० १५
सद्धि जाव भुंजमाणी	३।१३१	३।१३०
समाणी जाव पव्वइत्तए	३।१०८	३।१०६
समाणे जाव भासमणपज्जत्तीए	३।८४	३।१५
सीयं जाव विविहा	३।१२८	ना० १।१।२०६
सुरं च जाव पसण्णं	१।३४	वि० १।२।२६
सोल्लेहि य जाव दोहलं	१।४९	१।३४
हट्ठ जाव हियया	१।४२ ; ३।१२८	ओ० सू० २०
हीलिज्जमाणीए जाव अभिक्खणं	३।११८	३।११७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट ३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रमाणविधि

- अव्यय, सर्वनाम का साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार दिया है ।
- रूट (√) अंकित शब्द धातुएं हैं । उनके रूप भी दिए गए हैं ।
- शब्द के बाद साक्ष्यस्थल –

पण्णवणा पहला प्रमाण पद का, दूसरा सूत्र का और तीसरा श्लोक का परिचायक है ।

जंबुद्दीवपण्णत्ती – पहला प्रमाण वक्खार का, दूसरा सूत्र का, तीसरा श्लोक का परिचायक है ।

चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती –पहला प्रमाण पाहुड का, दूसरा सूत्र का, तीसरा श्लोक का परिचायक है ।

उवंग अंक १ निरयावलियाओ, अंक २ कप्पवडिंसियाओ, अंक ३ पुप्फियाओ, अंक ४ पुप्फचूलियाओ, अंक ५ वण्हिदसाओ का परिचायक है । दूसरा सूत्र का प्रमाण, तीसरा श्लोक का है ।

अध्ययन (पद, वक्खार) आदि के परिवर्तन का संकेत (;) सेमिकोलन है ।

जहां एक सूत्र में अनेक श्लोक आ गए हैं वहां आगे के सूत्र की संख्या से पहले अध्ययन की संख्या भी दी गई है । जैसे उप्पल (उत्पल) प० १।४६, १।४८।४४, १।६२ ।

शब्द पहले सूत्र में आया फिर उसी सूत्र के श्लोकों में आया तो उसके दोनों प्रमाण दिए हैं, जैसे –अइकाय (अतिकाय) प० २।४५, २।४५।२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ

अ (अ) प ११।६७
अइ (अपि) प २।६४।७
अइ (अयि) उ १।२६; ५।४०
अइकंत (अतिकान्त) ज २।१५
अइकाय (अतिकाय) प २।४५,२।४५।२
अइगच्छमाण (अतिगच्छत्) ज ३।२१७
अइगय (अतिगत) ज ३।८१
अइछत्त (अतिछत्र) प २।४८
अइतेया (अतितेजा) ज ७।१२०।२
अइदूर (अतिदूर) ज २।९०; ३।२०५,२०६; ५।५८
अइपडागा (अतिपताका) ज ३।७
अइमुत्तग (अतिमुक्तक) प १५।४
अइमुत्तय (अतिमुक्तक) प १।४०।३
अइमुत्तय (लता) (अतिमुक्तकलता) प १।३९।१
अइरत्त (अतिरात्र) सू १२।१७।१
अइरित्त (अतिरिक्त) उ ५।४५
अइरेक (अतिरेक) ज २।१५
अइवइत्ताण (अतिव्रज्य) प ३४।१९
अइविकिट्ठ (अतिविकृष्ट) उ १।११०
अइविगिट्ठ (अतिविकृष्ट) उ १।१२६,१३३
अइसीय (अतिशीत) ज ७।११२।१
√अइ (अति+इ) अईइ ज ३।१५७,१८६
अईव (अतीव) ज २।८,९; ७।२१३ उ ३।४९
अउज्झ (अयोध्य) प २।३०,३१,४१
अउणतीस (एकोनत्रिंशत्) सू २।३
अउणत्तर (एकोनसप्तति) ज ६।१०
अउणत्तरि (एकोनसप्तति) ज ७।८२
अउणपण्णास (एकोनपञ्चाशत्) सू० १९।२१।२
अउणाउति (एकोननवति) सू १।२७
अउणाणउति (एकोननवति) सू १९।१४,१५।१
अउणाणवइ (एकोननवति) ज ७।७३
अउणापण्ण (एकोनपञ्चाशत्) ज ४।२४०
सू० १०।१६३
अउणावीस (एकोनविंशति) सू २।३
अउणासीइ (एकोनाशीति) ज १।७।१
अउणासीत (एकोनाशीति) सू १।२७
अउणासीति (एकोनाशीति) सू २।२।३
अउणासीय (एकोनाशीति) ज ४।२३४; ७।१९
अउण्णापण्ण (एकोनपञ्चाशत्) प २।६४
अउय (अयुत) ज २।४; ७।१७८
अउयंग (अयुतांग) ज २।४
अउल (अतुल) ज ३।९५,१५९
अओज्झ (अयोध्य) ज ३।११७; ४।२१२
अंक (अंक) प १।२०।३; २।३०,४८,४९; १७।१२८ ज २।१५; ४।२१२,२५५; ५।५
अंकमय (अंकमय) ज ७।१७८
अंकमुहसंठिल (अंकमुखसंस्थित) ज ७।३१, ३३ सू ४।३,४,६,७
अंकलिवि (अंकलिपि) प १।९८
अंकवडेंसय (अंकावतंसक) प २।५१,५९
अंकावई (अंकावती) ज ४।२०२।२,२११; ७।१७८
अंकिय (अंकित) प २।३०
अंकुर (अंकुर) प ३६।९४ ज २।१३१,१४४ से १४६
अंकुस (अंकुश) ज २।१५; ३।३; ५।३८; ७।१७८
अंकेल्लण (दे०) ज ३।१०९
अंकोल्ल (अंकोल, अंकोठ, अंकोट) प १।३५।१, १।३७।५
अंग (अंग) प १।९३।१,१।१०१।६,८ ज २।१४; ३।९,३५,१०९, २२१,२२२ उ १।१२२,१२६; २।१०; १२; ३।१४, १५०,१६१,१६९; ५।२८,३९,४१
अंगइ (अंगजित्) उ ३।१०,११,१३,१४,२१
अंगण (अंगन) प ११।२५ ज २।६९; ५।५,७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंगद (अंगद) प २।३०,४६
अंगपडियारिया (अंगपरिचारिका) उ १।३६,३७
अंगमंग (अंगांग) ज २।१६,११३
अंगय (अंगद) प २।३१,४१ ज ३।६,२११,
२२२
अंगलोय (अंगलोक) ज ३।८१
अंगा (अंग) उ १।१२२
अंगारग (अंगारक) प २।४८
अंगुट्ठ (अंगुष्ठ) ज ३।१०६
अंगुल (अंगुल) प १।७४,७५,८४; २।६४,
२।६४।८; १२।१२,१६,२७,३१,३२,३७,३८;
१५।७ से ६,२२,४० से ४२; १८।४१,४३,६५,
११७; २१।३८,४० से ४३, ४८,६३ से ७१,८४,
८६,६० से ६२; ३३।१२,१३,१६,१७;
३६।६६,७०,७२ से ७४,८१ ज १।७; २।६
सू १।१४; १०।६३ से ७३; १६।२२।१७.
उ ३।८३,१२०,१६१; ४।२४
अंगुलपुहत्तिय (अंगुलपृथक्त्विक) प १।७५
अंगुलि (अंगुलि) प २।३०,३१,४१ ज २।१५;
३।६,१८४,१८६,२०४,२२२
अंगुलिज्जग (अंगुलीयक) ज ३।६,२२२
अंगुलितल (अंगुलितल) ज ३।७,८८
अंगुलिय (अंगुलिक) ज ५।५८
√अंच (कृष्) अंचेइ ज ३।६
अंचिय (अञ्चित) ज ५।५७
अंचेत्ता (कृष्ट्वा) ज ३।६
√अंज (अञ्ज्) अंजेइ उ ३।११४
अंजण (अञ्जन) प १।२०।२; २।३१; १७।१२३
ज ४।२०२; ५।५,२१ सू २०।२ उ ३।११४
अंजणई (अञ्जनकी) प १।४०।५
अंजणकेसियाकुसुम (अञ्जनकेशिकाकुसुम)
प १७।१२४
अंजणग (अञ्जनक) ज २।११७,११६,१२०
अंजणगिरि (अञ्जनगिरि) ज ३।१७
अंजणगिरिकूड (अञ्जनगिरिकूट) ज ३।६१,१७७,
१८३,२०१,२१४
अंजणा (अञ्जना) ज ४।१५५।२,२२३।१
अंजणागिरि (अञ्जनगिरि) ज ४।२२५।१
अंजलि (अञ्जलि) ज २।६५; ३।५,६,८,१२,
१६,२६,३६,४७,५३,५६,६२,६४,७०,७२,
७७,८१,८४,८८,६०,१००,११४,१२६,१३३,
१३८,१४२,१४५,१५१,१५७,१६५,१८१,
१८६, १८६,२०४ से २०६,२०६; ५।५,
२१,४६,५८ उ १।३६,४५,५५,५८,८०,८३,
६६,१०७,१०८,११६,११८,१२२; ३।१०६,
१३८; ४।१५; ५।१७
अंजलिपुट (अञ्जलिपुट) ज ३।८१
अंडग (अण्डज) ज ५।३२
अंत (अन्त) प ६।११०; २०।१८; २१।६०;
३६।८८,६२ ज १।२२,२७,५०; २।५८,
८४,१२३,१२८,१५१,१५७; ४।१०१,१०३,
१७१,१७८,२०० सू ४।४,७; २०।२,७
उ १।४२,१४१,१४७; २।१३; ३।२१,
८६,१५२,१६५; ५।४३
अंतकड (अन्तकृत) ज २।८८,८६
अंतकम्म (अन्तकर्मन्) ज ५।५८
अंतकर (अन्तकर) उ १।५४,७६
अंतकिरिया (अन्तक्रिया) प १।१।५; २०।१।१,
२०।१ से ४,६ से १३,४०,४४,४६,४८
अंतक्खरिया (अन्त्याक्षरिका) प १।६८
अंतगड (अन्तकृत) ज ३।२२५
अंतगमण (अन्तगमन) उ १।४२
अंतर (अन्तर) प २।३०,३१,४१; ११।७०
ज १।१७; ३।३,३५,२२१; ४।२७,४६,
१४०।२; ७।६,६५,८६,१६८,१७८,१८२
चं ३।१ सू० १।७।१,१।१६,२०,२१,२४,२७;
२।२; ६।१; १८।२०; १६।२२।२८
उ १।२४,४७,६५,६६,६८,६०,६२,१०५,
१०६
अंतरकंद (अन्तरकन्द) प १।४८।४२
अंतरगत (अन्तर्गत) सू ५।१; ७।१

अंतरणई (अन्तर्नदी) ज ४।२१२; ५।५५
अंतरदीव (अन्तर्द्वीप) प २।२६; ६।६४
अंतरदीवग (अन्तर्द्वीपज, °द्वीपक) प १।८५,८६; ६।७२, ८१,९७,१०८; १७।१७२; २१।७२
अंतरदीवय (अन्तर्द्वीपज, °द्वीपक) प १।८४,८६; ६।७९; १७।१६२; २१।५४
अंतरवीहिय (अन्तर्वीथिक) ज ३।७
अंतराइय (आन्तरायिक) प २२।२८; २३।१, ८,१२,२३,२४,५६,१३३,१५४,१५६,१६३, १६६,१७५ १८६,१९०,२०२; २४।१; २५।१, ३; २६।१,७; २७।१,४
अंतरापह (अन्तरापथ) प १६।२२
अंतराय (अन्तराय) प २४।१५
अंतरावास (अन्तरावास) उ १।१००,१२६,१३३
अंतरिय (अन्तरित) ज ३।१८,३१ ६५,६६,१५६, १६०,१८० उ १।१३४; ३।१४,८३,१२०, १६१; ४।२४
अंतरिया (अन्तरिका) सू १९।२२।३०
अंतलिक्ख (अन्तरिक्ष) ज ३।१४,२६,३०,३६, ४३,४७,५१,५६,६०,६४,६८,७२,११३,१३६, १३८,१४०,१४५ १४६,१७२ उ ३।६६
अंतवाल (अन्तपाल) ज ३।२६,३६,४७,११३
अंतिय (अन्तिक) प ३४।१६,२१ ज ३।६,८,१३, ७७,८४,९१,१०७,११३ से ११५,१२५, १३८,१५३,१९९ ५।२२,२३,२६ से २८,७३ उ १।२१,२३,३७,४१,४५,८८,११५ ११७, ११९,१२१,१२६; २।१०,१२; ३।१३,१४, २६,५०,५५,५७,६५,६६,७२,७५,७६,१०३, १०४,१०६ से १०८,११२,११८,१३४,१३६, १३८,१३९,१४८,१५०,१६१,१६६; ४।१४, १६,२०,२८; ५।२८,३२,३६,४१,४३
अंतियाओ (अन्तिकतस्) उ ३।११०
अंतेउर (अन्तःपुर) ज २।६४; ३।२२४; ५।५, ७ उ १।१६,६३,६७,६८,१०५ से १०७,११९
अंतेवासि (अन्तेवासिन्) ज १।५; २।८२,८३ च १० सू १५ उ १।२,३; ५।२०,४०,४१
अंतो (अन्तर्) प १।७४,८४; २।७,२० से २७, २९ से ३५,४१,४८; २३।६१,१२६,१७७, १८२,१८६,१९०; ३३।२७ से २९ ज १।१३,१४,३१,३६; ३।९८; ४।११,४६, ५०,११४,११७,१३१,२३४,२४०; ५।३२; ७।३१,३३,५५,१६८।१ सू ४।३,४,६,७; १९।२२।१५,२१, १९।२३; २०।७
अंतोमुहुत्त (अन्तर्मुहूर्त्त) प ४।२,३,५,६,८,९,११, १२,१४,१५,१७,१८,२०,२१,२३,२४,२६, २७,२९,३०,३२,३३,३५,३६,३८,३९,४१,४२, ४४,४५,४७,४८,५०,५१,५३,५४,५६ से ६७, ६९ से १६४,१६६,१६७,१६९,१७०,१७२, १७३,१७५,१७६,१७८,१७९,१८१,१८२, १८४ १८५,१८७,१८८,१९०,१९१,१९३, १९४,१९६,१९७,१९९,२००,२०२,२०३, २०५,२०६,२०८,२०९,२११,२१२,२१४, २१५,२१७,२१८,२२०,२२१,२२३,२२४, २२६,२२७,२२९,२३०,२३२,२३३,२३५, २३६,२३८,२३९,२४१,२४२,२४४,२४५, २४७,२४८,२५०,२५१,२५३,२५४,२५६, २५७,२५९,२६०,२६२,२६३,२६५,२६६, २६८,२६९,२७१,२७२,२७४,२७५,२७७, २७८,२८०,२८१,२८३,२८४,२८६,२८७, २८९,२९०,२९२,२९३,२९५,२९६,२९८, २९९; ६।२०,२१; १८।३,४,८,९,१०,१२, १४ से १६,१८ से २४,२६ से २८,३० से ३९,४१ से ५४,५६,५७,५९,६१,६३ से ६७, ६९ से ७४,७६ से ७९,८३,८५,९०,९१,९३, ९६,१०३ से १०५,१०७,१०८,११०,११३, ११४,११६,११७,११९,१२०; २०।६३; २३।६०,६२,६५,६७,७२,७८,७९,१३३,१४७, १५८,१६२,१६५,१६६,१७०,१७६,१८४; २८।४७,५०; ३६।६१,७६ जं २।८४,१२३, १२८,१४८,१५१; ४।१०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतोमुहुत्तग (अन्तर्मुहूर्त्तक) प ११।७१
अंतोमुहुत्तद्धाउय (अन्तर्मुहूर्ताद्धायुष्क) प १।७४
अंतोमुहुत्ताउय (अन्तर्मुहूर्तायुष्क) प १।८४
अंतोमुहुत्तिय (आन्तर्मुहूर्तिक) प १५।६१; २८।४,३८; ३६।२,८४,९२
अंतोवाहिणी (अन्तर्वाहिनी) ज ४।२१२
√अंदोलाव (आन्दोलय्) अंदोलावेइ उ १।९७
अंधकार (अन्धकार) ज ३।९३,९५,१५७,१५९, १६३ सू १४।५ से ८; १६।५,६
अंधकारपक्ख (अन्धकारपक्ष) सू १३।१; १४।२, ३,५ से ८
अंधयार (अन्धकार) प २।२० से २७ ज १।२४; ३।३१,१०६
अंधयारसंठिति (अन्धकारसंस्थिति) ज ७।३३, से ३५ सू ४।६,७,९
अंधिया (अन्धिका) प १।५१।१
अंब (आम्र) प १।३५।१; १६।५५; १७।१३२, १३३ ज ३।११९
अंबट्ठ (अम्बष्ठ) प १।९४।१
अंबर (अम्बर) ज ७।१७८
अंबरतल (अम्बरतल) ज ३।१४,३०,४३,५१,६० ६८,१३०,१३६,१४०,१४९,१७२
अंबसालवण (आम्रशालवन) उ ३।२९,[illegible]६,९५
अंबाडग (आम्रातक) प १।३६।१; १६।५५; १७।१३२
अंबाराम (आम्राराम) उ ३।४८ से ५०,५५
अंबिल (अम्ल) प १।४ से ९; ५।५,७,२०५; २८।२६,३२,६६ ज २।१४५
अंबिलसाय (अम्लशाक) प १।४४।२
अंबिलिया (अम्लिका) ज ३।११९
अंबिलोदय (अम्लोदक) प १।२३
अंबुभक्खि (अम्बुभक्षिन्) उ ३।५०
अंस (अंस) उ १।१३८
अंसु (अश्रु) ज २।९०, १०३,१०६,१०८
अकंटय (अकण्टक) ज २।१२

अकंत (अकान्त) ज २।१३३
अकंततरिया (अकान्ततरका) प १७।१२३ से १२५, १३० से १३२
अकंतत्त (अकान्तत्व) प २८।२४
अकंतस्सर (अकान्तस्वर) ज २।१३३
अकंतस्सरता (अकान्तस्वरता) प २३।२०
अकंप (अकम्प) ज २।६८; ३।७९,९९ से १०१ ११६
अकज्ज (अकार्य) ज २।१३३
अकण्ण (अकर्ण) प १।८६
अकत्तिम (अकृत्रिम) ज २।१२२,१२७; ४।१००, १७०
अकम्मभूमग (अकर्मभूमज) प १।८५,८७; ६।७२ ८१ ८४,९५,९७,१०८; २१।५४,७२
अकम्मभूमय (अकर्मभूमज) प ६।७९; १७।१६२, से १६४,१७२
अकम्मभूमि (अकर्मभूमि) प १।८४; २।२९
अकयपुण्ण (अकृतपुण्य) उ १।९२; ३।९८,१०१ १२१
अकरंडुय (अकरण्डक) ज २।१५
अकरणया (अकरणता) उ ३।११५
अकविल (अकपिल) ज २।१५
अकसाइ (अकषायिन्) प ३।९८; १३।१९; १८।६७; २८।१३४
अकसायसमुग्घाय (अकषायसमुद्घात) प ३६।४८
अकसायि (अकषायिन्) प ३।९८
अकाइय (अकायिक) प ३।५०; १८।२९
अकामय (अकामक) उ ३।१०९
अकामिय (अकामित) उ १।५२,७७
अकाल (अकाल) ज ३।१०४,१०५
अकालतालु (अकालतालु) जं ३।१०९
अकालपरिहीण (अकालपरिहीन) जं ५।२२,२६ से २८
अकित्तिम (अकृत्रिम) जं १।२१,२६,४९; २।५७, १४७,१५०,१५६
अकिरिय (अक्रिय) प १७।२५; २२।७,८,२९,३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२ से ३४,३६,३७,४५

अकुडिल (अकुटिल) ज २।१५

अकुव्वमाण (अकुर्वत्) सू २०।७

अकेसर (अकेसर) प १।४८।४६

अकोह (अक्रोध) ज २।६८

अक्क (अर्क) प १।३७।३

अक्कबोंदी (दे०) प १।४०।५

√**अक्कम** (आ+क्रम्) अक्कमइ उ १।११६
अक्कमाहि उ १।११५

अक्कमित्ता (आक्रम्य) उ १।११५

अक्किज्ज (अक्रेय) ज ३।१६७।१३

अक्किट्ठ (अक्लिष्ट) ज २।४६

अक्कुस्समाण (आक्रोशत्) उ ३।१३०

अक्कोप्प (अकोप्य) ज २।१५

अक्कोसमाण (आक्रोशत्) उ ३।१३०

अक्ख (अक्ष) ज २।६,१३४

अक्खय (अक्षय) ज १।११,४७; ३।१६७,२२६;
४।२२,५४,६४,१०२,१५६; ५।२१
७।२१० उ ३।४३,४४

अक्खर (अक्षर) ज २।६,१३४

अक्खरपुट्ठिया (अक्षरपुष्टिका,[1] °पृष्टिका) प १।६८

अक्खाइया (आख्यायिका) प ११।३४।१

अक्खाइयाणिस्सिया (आख्यायिकानिश्रिता)
प ११।३४

अक्खात (आख्यात) प १।४६,६६,७५,८१;
२।२१ से २६,३०,३२ से ३६,४१,४३,४६,
४८ से ५२,५५ से ५७,६० से ६२ सू
३।१; १३।२

अक्खाय (आख्यात) प १।५०,५१,६०,७६;
२।२०,३१,५८,५६ ज ३।२६; ४।२१;
६।१०,११,१४,१५,१८ से २२,२६; ७।४,६३
८७ सू १०।१२७

√**अक्खिव** (आ+क्षिप्) अक्खिवइ उ १।१०५

अक्खिविउकाम (आक्षेप्तुकाम) उ १।१०५

अक्खीण (अक्षीण) प ३६।८२

अक्खोड (अक्षोट) प १६।५५

अक्खोडय (अक्षोटक) प १७।१३२

अक्खोभ (अक्षोभ) ज ३।३

अगंतूण (अगत्वा) प ३६।८३।२

अगंथ (अग्रन्थ) ज २।७०

अगच्छमाण (अगच्छत्) सू २।२

अगड (दे०) प २।४,१३,१६ से १६,२८; ११।७७
ज २।३१

अगणि (अग्नि) प १।४८।५६; २।२० से २५

अगणिकाय (अग्निकाय) ज २।१०५ से १०८

अगत्थि (अगस्ति) प १।३८।२ ज २।१० सू
२०।८,२०।८।४

अगरुलहुय (अगुरुलघुक) प १५।५७ ज २।५१,५४,
१२१,१२६,१३०,१३८,१४०,१४६,१५४,१६०,
१६३

अगरुयलहुयपज्जव (अगुरुलघुकपर्यव) ज २।१४६,
१५४,१६०,१६३

अगरुयलहुयपरिणाम (अगुरुलघुकपरिणाम)
प १३।२१,३०

अगार (अगार) प २०।१७,१८ ज २।६५,६७,८५,
८७ उ ३।१३,१०६ से १०८, ११२,११८,
१३६,१३८,१३६; ४।१४,१६; ५।३२,४३

अगारवास (अगारवास) ज २।८७; ३।२२५
उ ३।११८

अगुरु (अगुरु) ज २।१०६,११०

अगरुलघुअणाम (अगुरुलघुकनामन्) प २३।५१

अगुरुलहुणाम (अगुरुलघुनामन्) प २३।३८,११

अग्ग (अग्र) प २।३१ ज १।३७; २।१२०; ३।१२,
१८,२२,३१,७६,८८,१०७,१२५ से १२८,
१५१,१५२,१५६,१८०

अग्गंगुलिया (अग्रांगुलिका) उ १।५६,६१ से ६३
८४,८६,८७

अग्गभाव (अग्रभाव) ज ७।१३२।१. सू १०।६४

अग्गमहिसी (अग्रमहिषी) प २।३० से ३३,३५,

---

१. टीका में अक्षरस्पृष्टिका है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१, ४३,४८ से ५२ ज १।४५; २।६०, ४।१५१; ५।१६,३६,४१,४४,५०,५२,५३; ७।१६८।२,१८३,१८६ सू १८।२१,२३,२४, २०१६

अग्गर (दे०) प १।८६

अग्गल (अर्गल) सू २०।८

अग्गसाला अग्रशाला) ज २।१० ; ४।१६६

अग्गसिहर (अग्रशिखर) ज १।३७

अग्गहत्थ (अग्रहस्त) ज २।१५

अग्गाणीय (अग्राणीक) ज ३।१०७ से १०६

अग्गि (अग्नि) प २।३०।१,२।४०।२,६,११; ३६।६४ ज २।६; ३।३,६५,११५,१२४,१२५ १५६; ५।१६,५२; ७।१३०,१८६।३ उ ३।४८, ५०,५१,६४

अग्गिकुमार (अग्निकुमार) प १।१३१; ५।३ ६।१८ ज २।१०५,१०६

अग्गिदेवया (अग्निदेवता) सू १०।८३

अग्गिमाणव (अग्निमानव) प २।४०।७

अग्गिमेह (अग्निमेघ) ज २।१३१

अग्गिल (अग्निल) सू २०।८।५

अग्गिवेस (अग्निवेश्मन्) ज ७।११७,१२२।३, १३२।३ सू १०।८४।३,१०।८६।३

अग्गिसीह (अग्निसिंह) प २।४०।६

अग्गिहोत्त (अग्निहोत्र) उ ३।५५,६३,७०,७३

अग्गिहोम (अग्निहोम) ज ५।१६

√अग्घा (आ+घ्रा)—अग्घाति प १५।३८,४२

अग्घाडग (दे० अपामार्ग) प १।३७।४

अचंचल (अचञ्चल) ज ३।१०६

अचंडपाडिय (अचण्डपातित) ज ३।१०६

अचक्खुदंसण (अचक्षुर्दर्शन) प ५।५,७,१०,१२, १४,१६,१८,२०,२१,४५,५३,५६,५६,६३, ६८,७१,७४,७८,६३,६७;२६।३,७,१०, १३,१४,१७,१६ से २१

अचक्खुदंसणावरण (अचक्षुर्दर्शनावरण) प २३।१४

अचक्खुदंसणि (अचक्षुर्दर्शनिन्) प ३।१०४; ५।४७,६५,८०,६६,११७;१८।८६

अचरित्ति (अचरित्रिन्) प १३।१४,१८,१६

अचरिम (अचरम) प १।१०३,१०६,१०७ १०६ ११०,११३,११४,११६,११६,१२०,१२२, १२३;३।१२३;१०।२ से १३,२१,२६ से ५३; १८।१२७

अचरिमंत (अचरमान्त) प १०।२ से ५,२१,२६,से २६

अचल (अचल) ज ३।६६ से १०१;५।२१

अचवल (अचपल) ज ५।५,७

अचित्त (अचित्त) प ६।१३ से १७,१६ ज २।६६

अचित्तजोणीय (अचित्तयोनिक) प ६।१६

अचित्ताहार (अचित्ताहार) प २८।१,२

अचिरवत्तविवाह (अचिरवृत्तविवाह) सू २०।७

अचेलय (अचेलक) ज २।६६

अचोक्ख (दे०) ज ५।५

√अच्च (अर्च्) अच्चेइ उ ५।७अच्चेंति ज० २।१२०

अच्चंत (अत्यन्त) उ १।७२,७३,८७,८८,६२; ३।४८,५०,५५

अच्चणिज्ज (अर्चनीय) ज ७।१८५ सू० १८।२३

अच्चणिया (अर्चनिका) ज ४।१४०।१

अच्चसण (अत्यशन) ज ७।११७।२ सू १०।८६।२

अच्चासण्ण (अत्यासन्न) ज २।६०;३।२०५,२०६, ५।५८

अच्चासन्न (अत्यासन्न) ज १।६

अच्चि (अर्चिस्) प १।२६;२।३०,३१,४१,४६

अच्चिणेत्ता (अर्चयित्वा) ज ३।८८

अच्चिमालि (अर्चिमालिन्) प २।५०,५४,५८ से६० ज ७।१८३ सू १८।२१,२४;२०।६

अच्चिसहस्समालणीय (अर्चिस्सहस्रमालनीक) ज ४।२७;५।२८

अच्चुइंद (अच्युतेन्द्र) ज ५।५८

अच्चुण्ह (अत्युष्ण) ज ७।११२।१ सू १०।१२६।१

अच्चुत (अच्युत) प १।१३५;२।४६,५६,६०;३।१८३

अच्चुतवडेंसय (अच्युतावतंसक) प २।५६

अच्चुय (अच्युत) प २।४६,५६,५६।२,६३;४।२६४

से २६६;६।३८,५६,६६,८५,८६,६८,७।१६;
१५।८८,२०।६१,२१।६१,७०,६१,६२;२८।८६;
३०।२६;३३।१६,२४;३४।१६,१८ ज २।६४;
५।४६,५४,५६,५८,५६ उ २।२२;५।४१

अच्चुयग (अच्युतक) ज ५।४६

अच्चेत्ता (अर्चयित्वा) ज २।१२०

अच्छ (रुक्ष) प १।६६;११।२१ ज २।३६,१३६

अच्छ (अच्छ) प १।६३।४;२।३०,३१,४१,४६,५०
५२,५८,५६,६३,६४ ज १।८ से १०,२३,३१,
३५,५१;३।१२,८८,१०६,१६४;४।१,३,७,१२,
१५,२४,२५,२८ से ३१,३६ से ४१,४५,५७,
६२,६४,६६ से ६८,७४ से ७६,८६,८८,६१
से ६३,१०३,११०,११४,११८,१४३,१५६
१७८,२०३,२०६,२१३,२१८,२४२,२४५,
२५१,२५२,२६०।१;५।५८;७।५५ सू ५।१;
१६।२३

√**अच्छ** (आस्) अच्छेज्ज प २।६४।१६

अच्छत्तय (अछत्रक) उ ५।४३

अच्छरगण (अप्सरोगण) प २।३०,३१,४१ ज १।३१

अच्छरसातंडुल (अप्सरस्तण्डुल[1]) ज ३।१२,८८;
५।५८

अच्छरा (दे०) प ३६।८१

अच्छरा (अप्सरस्) प ३४।१६ से २४ उ ५।५

अच्छि (अक्षि) प १।४८।४७;११।२५ चं १।१ ज
२।४३;३।१७८;७।१७८ उ० ३।११४

अच्छिण्ण (अच्छिन्न) प १५।४० से ४२

अच्छिद्द (अछिद्र) ज २।१५

अच्छिरोड (अक्षिरोट) प १।५१

अच्छिवेह (अक्षिवेध) प १।५१

अच्छी (ऋक्षी) प ११।२३

अच्छेरग (आश्चर्य) ज २।१५

अजर (अजर) प २।६४।२१

---

१ अच्छो रसो येषां ते अच्छरसाः प्रत्यासन्नवस्तु प्रतिबिम्बाधारभूता इवातिनिर्मला इतिभावः टीका पत्र १६२

अजसोकित्तिणाम (अयशःकीर्तिनामन्) प २३।३८,
१२८

अजहण्ण (अजघन्य) प २३।१६१ से १६३ ज २।१५

अजहण्णमणुक्कोस (अजघन्यानुत्कर्ष) प ४।२६७,
२६६; ५।४२,४६,६४,७६,११२,११६,२४४;
७।३०;१८।१०२;२३।६३;२८।६७

अजहण्णमणुक्कोसगुण (अजघन्यानुत्कर्षगुण)
प ५।३८,६०,७५,६०,१०८,१६१,१६४,२०१,
२०४,२०८,२१२,२१५,२१६,२२२,२२५,२४३

अजहण्णमणुक्कोसट्ठितिय (अजघन्यानुत्कर्षस्थितिक)
प ५।३५,५७,७२,८७,१०५,१७५,१७८,१८२,
१८५,१८८,२४०

अजहण्णमणुक्कोसपदेसिय (अजघन्यानुत्कर्षप्रदेशिक)
प ५।२३१,२३२

अजहण्णमणुक्कोसमति (अजघन्यानुत्कर्षमति)
प ५।६४

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणग (अजघन्यानुत्कर्षावगाह-
नक) प ५।१७१,१७२,२३६,२३७

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणय (अजघन्यानुत्कर्षावगा-
हनक) प ५।५०,५४,६६,८४,१०२,१५५,१५८
१६०,१६४,१६७,१७२,२३७

अजहण्णुक्कोस (अजघन्योत्कर्ष) प ५।६४,६८

अजहण्णुक्कोसोगाहणग (अजघन्योत्कर्षावगाहनक)
प ५।३१,३२

अजहण्णुक्कोसोगाहणय (अजघन्योत्कर्षावगाहनक)
प ५।३२,१६१

अजाइय (अयाचित) उ० ३।३८

अजावणिज्ज (अयापनीय) ज २।१३१

अजिण (अजिन) ज २।७८

अजिम्ह (अजिह्म) ज २।१५

अजिय (अजित) ज० ३।१८५,२०६

अजीरग (अजीरक) ज २।४३

अजीव (अजीव) प १।१०१।२;१५।५७ ज २।७१
सू २०।१उ ३।१४४;५।३४

अजीवपज्जव (अजीवपर्यव) प ५।१,१२३से १२५,
२४४

अजीवपण्णवणा (अजीवप्रज्ञापना) प १।१ से ४,६

अजीवपरिणाम (अजीवपरिणाम) प १३।१,२१,३१

अजीवमिस्सिया (अजीवमिश्रिता) प ११।३६

अजोगया (अयोगता) प ३६।९२

अजोगि (अयोगिन्) प ३।९६;१३।१९;१८।५८;
२८।१३८

अजोगिकेवली (अयोगिकेवलिन्) प १।१०८,११०,
१२१,१२३

अजोगिभवत्थकेवलि (अयोगिभवस्थकेवलिन्)
प १८।१०१;१०३

अजोणि (अयोनि) प ९।१९

अजोणिय (अयोनिक) प ९।१२,१९,२५

अज्ज (अद्य) ज २।१४६ सू १०।१६२ से १६६
उ १।४२

अज्ज (आर्य) ज ३।१२४;७।२१४

अज्जग (अर्जक) ज ५।७२,७३

अज्जग (आर्यक) उ १।१०५ से १०७,११६

अज्जम (अर्यमन्) ज ७।१३०,१८६।४

अज्जमदेवता (अर्यमदेवता) सू १०।८३

अज्जय (अर्जक)प १।४४।३

अज्जल (आर्यल) प १।८९

अज्जव (आर्जव) ज २।७१

अज्जसुहुम्म (आर्यसुधर्मन्) उ १।२,३

अज्जा (आर्या) उ ३।९९ से १०४,१०६ से १०८,
१११ से १२०, १३२ से १३९,१४१,१४२
१४३,१४५,१४६,१४८ से १५०;४।२१ से२४

अज्जिय (अर्जित) ऊ ३।१७५

अज्जिया (आर्यिका) ज २।७५,८२ उ ३।१२

अज्जुण (अर्जुन) प १।३६।३,४२।१ ज ३।११७

अज्झत्थवयण (अध्यात्मवचन) प ११।८६

अज्झत्थिय (आध्यात्मिक) ज ३।२६,३९,४७,५६,
१२२,१२३,१३३,१४५,१८८;५।२२ उ १।१५
१७,५१,५४,६५,७६,७९,९९,१०५;३।२९
४८,५०,५५,९८,१०६,११८,१३१;५।३६,३७

अज्झयण (अध्ययन) प १।१।३ ज ७।११४ चं ५।२
सू १।९।२;१०।७८ उ १।६ से ८, १४२,१४३,
१४८; २।१ से ३,१४,१५,२१;३।२,३,१९,२०,
२२,२३,८७,८८,१५३,१५४,१६६,१६७,१७०,
४।१ से ३,२७;५।२,३,४४,४५

अज्झवसाण (अध्यवसान) प ३४।१।१,३४।१३ ज
३।२२३

√अज्झावस (अधि + आ + वस्)—अज्झावसइ
ज २।६४

अज्झावसमाण (अध्यावसत्) ज २।६४

अज्झावसित्ता (अध्युष्य) ज २।६४

अज्झोववण्ण (अध्युपपन्न) उ ३।११४,११५,११९

अझुसिर (अशुषिर) ज ३।३

अट्ट (आर्त) उ १।५२,७७

अट्टइ (दे०) प० १।३७।३

अट्टज्झाण (आर्तध्यान) ज ३।१०५ उ १।१५;३।९८

अट्टालग (अट्टालक) ज २।२०

अट्टालय (अट्टालक) प २।३०,३१,४१

अट्ठ (अष्टन्) प १।५० ज १।८चं ३।२

अट्ठ (अर्थ) प ५।३,५,७,१०,१२,१४,१६,१८,२०,
२४,२८,३०,३२,३४,३७,४१,४५,४९,५३,५६,
५९,६३,६८,७१,७४,७८,८३,८६,८९,९३,९७,
१०१,१०४,१०७,१११,११५,११९,१२७,१२९,
१३१,१३४,१३६,१३८,१४०,१४३,१४५,१४७,
१५०,१५४,१५७,१६३,१६६,१६९,१७२,१७४,
१७७,१८१,१८४,१८७,१९०,१९३,१९७,२००,
२०३,२०७,२११,२१४,२१८,२२१,२२४,
२२८,२३०, २३२,२३४,२३७,२३९,२४२;
११।३,११ से २०,३९,४१;१५।४४,४८,४९;
१७।१ से ६,८ से १७,२०,२२,२४,२५,२७,
१०७,१०९,१११,११६,११९,१२३ से १२८,
१३० से १३२,१३५,१५०,१५२,१५५;२०।२
३,१४ से १७, १९ से २५,२७ से ३०,३३,३४,
३९ से ४८,५० से ५२,५५,५९;२२।८,७९,
८०,८२,९२,९४,९५;२८।४,२५,२७,२९,३८,
४७,५०,७३ से ७५,९७;२९।१७,१९ से २१;
३०।१६,१९,२१,२३,२५,२६,२८;३४।१२,

१६,१८;३५।१८,२०,२३; ३६।८०,८१,८३,
८८ ६२,६४, ज १।११,४५,४७,५१;
२।१७,१८,२१ से २३,२५,२६,३० से ३३,
३८ से ४०,४२,४३,५२,५६,१५६.१६१;३।१
६,६१,६८,१०६.१०७,११३,११४,१८६,
१६६,२०६,२२६;४।१६,२२,३४,३७,४१,५१,
५३,५४,६०,६१,६४,७०,७६,७६,८१,८५,
८६,८६,६०,६३,६७,१०२,१०७,१०८,११०,
११३,१४१,१४२,१४६,१५१,१५६,१६१,१६६,
१७७,१८०,१८४,१८६,१८८,१६३,१६६,
१६६,२००,२०३,२०५,२०६,२०६ से
२११,२६१,२६४,२६६,२७०,२७२,२७३,
२७६,२७७;५।२७;७।१६६,१८४,१८५,२०६,
२१३,२१४ सू १६।२,४,६;१८।२२ उ १।४,
८,१७,२३,२४,३७ से ४०,४२,४३,५५,५७,
५८,६७,८०,८२,८३,८८,६६,१००,१०२,
१०४,१०७,११५,११७,११६,१२०,१२२,
१२७,१४२,१४३;२।१,३,१४,१५,२१;३।१,
३,१३;१६,२०,२२,२३,२६,३८,४०,४२,४४,
५६,६१,७७,८७,८८,१०२,१०७,११६ से
११८,१२३,१४०,१४७,१५३,१५४,१६०,
१६६,१६७,१७०;४।१,११,२७;५।१,३,१५,
३८,४३,४४

अट्ठअसीय (अष्टाशीति) सू १८।१

अट्ठक (अष्टक) सू १३।५,६

अट्ठकण्णिय (अष्टकर्णिक) ज ३।६४,१३५,१५८

अट्ठछत्ताल (अष्टचत्वारिंशत्) सू १०।१४६

अट्ठजोयणिय (अष्टयोजनिक) प २।६४

अट्ठतरि (अष्टसप्तति) सू ४।५

अट्ठतीस (अष्टत्रिंशत्) प २।३८ ज १।२०
सू. १०।१५२ उ ३।१२

अट्ठपंचासत (अष्टपञ्चाशीति) सू १२।३

अट्ठपदेसिय (अष्टप्रदेशिक) प १०।१३,१४

अट्ठपिट्ठणिट्ठिया (अष्टपिष्टनिष्ठिता)
प १७।१३४

अट्ठभाग (अष्टभाग) प ४।१७१,१७३,१७४,
१७६,२०१,२०३,२०४,२०६, ज २।५६;
४।२१५;७।१६५,१६६ सू १८।२५,२६,३४,३६

अट्ठम (अष्टम) प ३६।८५,८७ ज २।७१;४।२११
५।१०;७।१६७ सू १०।७७;१२।१७,१३।८ उ
२।१०,२२; ३।१४,८३,१५०,१६१;४।२४;
५।२८,३६,४३

अट्ठमंगलग (अष्टमंगलक) ज ३।१७८,२०२,
२१७;४।२८,११५,१३८,१५८;५।४३,५८

अट्ठमंगलय (अष्टमंगलक) ज ३।१२,८८;४।१२५

अट्ठमभत्त (अष्टमभक्त) प २८।५० ज ३।२०,
२१,२८,३३,३४,४१,४६,५४,५५,५८,६३,
६४,६६,७१,७२,७४,८४,८५,१११,११२,
११३,१३१, १३७ से १३६,१४३,१४४,
१४७,१६६,१६८,१८२,१८३,१८७,१६१,
२१८

अट्ठमभत्तिय (अष्टमभक्तिक) ज ३।५४,६३,७१,
१११,११३,१३७,१४३,१६७,१६०

अट्ठमी (अष्टमी) ज ७।१२५

अट्ठया (अर्थ) सू १७।१;२०।१ उ ३।४४

अट्ठविह (अष्टविध) प १।४,१३२;१३।२६;
२१।५५;२२।२१ से २३,२८,८३,८४,८६,८७
६०;२३।१५,१६,२१,२२,३०,३१,५०,५८;
२४।२ से ८,१० से १३;२५।४.५;२६।२ से ६,
८ से १०,२७।२,३; २६।२ सू ६।५

अट्ठवीस (अष्टविंशति) प २।५६।१

अट्ठसइय (अष्टशतिक) ज २।६४

अट्ठसट्ठ (अष्टषष्टि) ज ७।३१ सू ४।४

अट्ठसट्ठि (अष्टषष्टि) ज ६।१५

अट्ठसमइय (अष्टसामयिक) प ३६।३,८५

अट्ठसयमंगुलमायत (अष्टशताङ्गुलायत)
ज ३।१०६

अट्ठसुवण्ण (अष्टसुवर्ण) ज ३।६५,१५६

अट्ठसोवण्णिय (अष्टसौवर्णिक) ज ३।६४,१५८

अट्ठहत्तर (अष्टसप्तति) प २।२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठहत्तरि (अष्टसप्तति) ज ७।३२,३४

अट्ठा (अष्टा) ज २।६५

अट्ठाणउइ (अष्टनवति) ज ७।६८

अट्ठानउति (अष्टनवति) सू १०।१६५

अट्ठाणउय (अष्टनवति) सू १०।१७३

अट्ठार (अष्टादशन्) प १०।१४।४ से ६ ज ४।९२

अट्ठारस (अष्टादशन्) प २।२४ जं १।४८ सू १।१३ उ १।१०४

अट्ठारसवंक (अष्टादशवक्र) उ १।९६,१०२ से ११७,११९,१२७,१२८

अट्ठारसविह(अष्टादशविध) प १।९८

अट्ठावण्ण (अष्टपञ्चाशत) ज ४।१४२

अट्ठावय (अष्टापद) ज २।१५,८८,९०;३।२२४

अट्ठावीस (अष्टाविंशति) प २।२३ ज १।७ सू १।१४

अट्ठवीसइभाग (अष्टाविंशतिभाग) सू १०।१४२

अट्ठावीसइविह (अष्टविंशतिविध) ज ७।११३ सू १०।१३०

अट्ठावीसतिभाग (अष्टविंशतिभाग) प २३।१०२ से १०४,१५२ सू १२।३०

अट्ठावीसतिविह (अष्टाविंशतिविध) प १।८६; २।४८

अट्ठावीसविमाणसयसहस्साहिवइ (अष्टाविंशति-विमानशतसहस्राधिपति) ज २।९१

अट्ठासीइ (अष्टाशीति) सू २०।८।९

अट्ठासीति (अष्टाशीति) सू १८।४,२०।८

अट्ठासीय (अष्टाशीति) ज १।२३ सू १०।१४१

अट्ठाहिय (अष्टाहिक) ज २।११७ से १२०;३।१२ से १४,२८,३०,४१,४२,४३,४९ से ५१,५८ से ६०, ६६ से ६८,७४ से ७६,१३६,१३९,१४७ से १५१,१६८ से १७०; ५।७४

अट्ठि (अर्थिन्) प २८।१।१,२८।३,२५,२८,३७, ४९, ज ३।१०९

अट्ठिकच्छभ (अस्थिकच्छप) प १।५७

अट्ठिय (अस्थित) प ११।८० से ८३

अठिय (अस्थिन) प ११।४७

अड (दे०) प १।७९

अडड (अटट) ज २।४

अडडंग (अटटाङ्ग) ज २।४

अडतालीस (अष्टचत्वारिंशत्) सू १।२३

अडमाण (अटत्) उ ३।१००,१३३

अडयाल[1] (दे०) प २।३०

अडयाल (अष्टचत्वारिंशत्) ज १।२० सू १।२४

अडयालीस (अष्टचत्वारिंशत्) ज २।६ सू १।२४

अडवीबहुल (अटवीबहुल) ज १।१८

अडसट्ठि (अष्टषष्टि) सू १५।२

अडिल (अटिल) प १।७८

अड्ढ (आढ्य) ज ३।१०३ उ १।१४१;३।१०,२१ २८,९६,१५८;४।७

अड्ढाइज्ज (अर्धतृतीय) प १।७४,८४;२।७,२९; १८।४५;२१।६६,६७;३३।५,६ ज १।३८,४३; ४।१०,१२;४३,४५,५७,७२,७८,११०,१४७, १८३,२१५,२२१,२४५,२४८;५।५२ सू १।२३ १८।१

अणंगसेणा (अनङ्गसेना) उ ५।१०,१७

अणंत (अनन्त) प १।१३,४८;१।४८।७,८, १० से १९,३० से ३३,३८ से ४२,५०,५२,५७,५८, ६०,२।६४।१०,११,१३,१५,१६;५।२ से ७, ९ से २०,२३,२४,२७ से ३४,३६,३७,४०, ४१,४४,४५,४८,४९,५२,५३,५५,५६,५८,५९, ६२,६३,६७,६८,७०,७१,७३,७४,७७,८२,८३ ८५,८८,९२,९६,१००;१०१,१०३,१०६,११० ११४,११८,११९,१२६ से १३०,१३३,१३५, १३७,१३९,१४२,१४४,१४६,१४९ से १५४ १५६,१६२,१६५,१६८,१७१,१७३,१७६, १८०,१८३,१८६,१८९,१९२,१९६,१९९,२०२ २०६,२१०,२१३,२१७,२२०,२२३,२२७, २२९,२३१,२३३,२३८,२४१;६।६३;१०।१६, १८ से २०;१२।७ से ११,२०;१५।१४,१५, २७,३२,५७,८३,८४,८७,८९ से ९९, १०३, १०४,१०९,११२,११५,११८,११९,१२१,

1 अडयाल शब्दो देशीवचनत्वात् प्रशंसावाची ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२२,१२६,१२६,१३०,१३५ से १३७,
१३९ से १४२;१६।३७;१७।१४२;१८।३,१४,
२७,४५,५६,६४,७७,८३,६०,१०८;३६।८,
१२,१४,१६,१८ से २६ ३२ से ३४,४४ से
४७,८ ३।२ ज २।६,५१,५४,७१,८५,१२१
१२६,१३०,१३८,१४०,१४६,१५४,१६०,
१६३;३।२२३;५।२१,५८

अणंतक (अनन्तक) ज ३।२११

अणंतखुत्तो (अनन्तकृत्वस्) ज ७।२१२

अणंतगुण (अनन्तगुण) प २।६४।१५;३।३८ से ४२
४६ से ५२,६० से ६३, ७१ से ७४,८४ से
८७,६५ से १०२,१०५ से ११५,११८,१२२,
से १२४,१७५,१७७ से १७६,१८२,१८३;
५।५,१२६,१५१,१५२;६।१२,१६,२५;१०।४,
५,२६,३०;११।५४,५६,५८,६०,६१,७२,७६,
६०;१२।७,१०,२०,१५।१३,१६,२६,२८,३१,
३३,१७।५६,५६,६६,१४४,१४६;२१।१०४;
२८।७,१०,११,४१,४४,५३,५६,५७,७०;
३६।३५,४८ ज २।५१,५४,१४६,१५४,१६०,
१६३ सू २०।७

अणंतनाणि (अनन्तज्ञानिन्) ज २।४।३

अणंतपएसिय (अनन्तप्रदेशिक) प ५।१३७,१३८,
१६८,१६६,१७१,१७२,१८७,२०२,२०३,
२०६,२०७,२२४;१०।१४,१७,२०,२४,२६,
३०;११।४६;१५।११,२४;१६।४३

अणंतपदेसिय (अनन्तप्रदेशिक) प ३।१७६;
५।१२७,१७२,१८६,२०७,२२३,२२४;१०।१७,
२५;१६।३६;१७।१४०;२८।५,५१;३०।२६,
२८

अणंतभाग (अनन्तभाग) प ५।५,१२६;१२।७,१०,
२०;१५।५७;२८।२२,३४,३६,६८

अणंतमिस्सिया (अनन्तमिश्रिता) प ११।३६

अणंतय (अनन्तक) प १।४८।५२

अणंतर (अनन्तर) प २।६४।६।६६,१०१,१०३,
१०५,११०;११।६६।१;२०।१।१;२०।६ से १५
१७ से २५ २७,२६,३२,३४,३८ से ४०,४५
५२;३४।१।१;३४।१ से ३; ३६।६२ ज ३।१७८
२११;४।३६,७२,७८,६५,१०३,१४३,१७८,
२००,२०२,२१२;५।४३;७।६,१०,१२,१३,१५
१६,१८ से ३० ४२,५०,६८,६६,७१,७२,७४
७५,७७,७८,८०,८३,८४, सू १।१४,१६,१७,
२१,२४,२७;२।२,३;६।१;८।१;६।१;१३।१४;
१६।२२।२५ उ १।१४१;३।६२,१२५;४।२६,
२८,३०,४३

अणंतरपच्छाकड (अनन्तरपश्चात्कृत) सू ८।१;
११।२ से ६

अणंतरपुरक्खड (अनन्तरपुरस्कृत) सू ८।१; ११।२
से ६

अणंतरसिद्ध (अनन्तरसिद्ध) प १।११,१२;
१६।३५,३६

अणंतरोवगाढ (अनन्तरावगाढ) प ११।६३,६४;
२८।१३,१४,५६,६०

अणंतरोववण्णग (अनन्तरोपपन्नक) प १५।४६;
३४।१२

अणंतसमयसिद्ध (अनन्तसमयसिद्ध) प १।१३

अणंताणुबंधि (अनन्तानुबन्धिन्) प १४।७;
१८।१; २३।३५

अणंसुपाति (अनश्रुपातिन्) ज ३।१०६

अणगार (अनगार) प १५।१।१; १५।४३;
३६।७६ ज १।५; २।६५,६७,८३,८५,८७,
८८,६५,६६,१०० से १०२,१०४,११४,चं
१० सू १।५ उ १।२,३; २।६ से १२; ३।१३,
१४,१६१; ५।२१,२२,२७,२८,३२,३८ से ४१
४३

अणगारचियगा (अनगारचितका) जं २।१०५ से
११२

अणगारिया(अनगारिता) प २०।१७,१८
उ ३।१३,१०६ से १०८,११२,११८,१३६,
१३८,१३६; ४।१४,१६; ५।३२,४३

अणघ (दे०अक्षत) ज० ३।८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणग्घाइज्जमाण (अनाघ्रायमाण) प २८।४३, ४४,६६,७०

अणग्घिय (अनर्घित) ज ३।६२,११६

अणतिवर (अनतिवर) ज ३।११६

अणदब्भवाह (अदभ्रवाह) ज ३।१०६

अणभिग्गहिय (अनभिगृहीत) प ११।०१।११

अणभिग्गहिया (अनभिगृहीता) प ११।३७।२

अणरिह (अनर्ह)उ १।४०,४३

अणव (ऋणवत्) ज ७।१२२।३ सू १०।८४।३

अणवकंखमाण (अनवकाङ्क्षत्) ज ३।२२४ उ० २।११

अणवगल्ल (अनवकल्प) ज २।४।१

अणवट्ठित (अनवस्थित) सू ६।१०; ८।१०; १३।१७;१६।२२।१०,२७

अणवट्ठिय (अनवस्थित) प ३३।३५,३६ ज ७।३१,३२ सू ४।३ से ७

अणवण्णिंद (अणपन्निकेंद्र) प २।४६

अणवण्णिय (अणपन्निक) प २।४१,४६

अणवण्णियकुमारराय (अणपन्निककुमारराज) प २।४६

अणवन्निय (अणपन्निक) प २।४६,४७।१

अणवरय (अनवरत) ज २।६४; ३।१८५,२०६

अणसण (अनशन) उ २।१२; ३।१४,८३,१२०, १५०,१६१; ५।२८,३६,४१,४३

अणस्साइज्जमाण (अनास्वाद्यमान) प २८।४३,४४ ६६,७०

अणह (अनघ) सू २०।७

अणह (दे०अक्षत) ज ३।८१

अणाईय (अनादिक) प १८।१३,१०५

अणाएज्जणाम (अनादेयनामन्) प २३।१२६

अणागतद्धा (अनागताध्वन्) २।६४; ३६।६३

अणागय (अनागत) ज २।६०; ३।२६,३६,४७, ५६,१३३,१३८,१४५; ५।३,२२; ७।३६,५२

अणागयद्धा (अनागताध्वन्) प ३६।६४

अणागयवयण (अनागतवचन) प ११।८६

अणागार (अनाकार) प २।६४।१२; २६।११; ३०।२६ से २८

अणागारपस्सि (अनाकारदर्शिन्) प ३०।१५ से१८ २०,२२,२३

अणागारपासणता (अनाकारदर्शन, °पश्यत्ता) प ३०।१७

अणागारपासणया (अनाकारदर्शन, °पश्यत्ता) प ३०।१,३,५,७,१२,१३

अणागारोवउत्त (अनाकारोपयुक्त) प ३।१०६, १७४; १३।१४; १८।६३; २६।१६ से २१

अणागारोवओग (अनाकारोपयोग) प १३।८,२६।१ ३,५,७,८,१०,१३,१४

अणाघाइज्जमाण (अनाघ्रायमाण) प २८।४४,७०

अणाढाइज्जमाण (अनाद्रियमाण) उ ३।६२

अणाढायमाण (अनाद्रियमाण) उ ३।५६,६१,७७, ११६

अणाढिय (अनादृत) ज ४।१५०,१५६,१६०; ७।२१३ उ ३।२,१७१

अणाणत्त (अनानात्व) प २।३,६,६,१२,१५

अणाणुगामिय (अनानुगामिक) प ३३।३५

अणाणुपुव्व (अनानुपूर्व्य) ज ७।४७

अणाणुपुव्वी (अनानुपूर्वी) प ११।६८; २८।१८, ६४

अणादि (अनादि) सू १।६; ११।१

अणादीय (अनादिक) प १८।२५,५५,५६,६४,६८ ७७,८३,८६,६०,१११,१२२,१२३,१२६, १२७

अणादेज्ज (अनादेय) ज २।१३३

अणादेज्जणाम (अनादेयनामन्) प २३।३८

अणाभोगणिव्वत्तिय (अनाभोगनिर्वर्तित) प १४।६; २८।४,५०; ३४।५

अणारिय (अनार्य) ज २।४३

अणालोइय (अनालोचित) उ ३।८३'१२०; ४।२४

अणावुट्ठिबहुल (अनावृष्टिबहुल) ज १।१८

अणासाइज्जमाण (अनास्वाद्यमान) प २८।४०, ४१,४४,७०

अणाहारग (अनाहारक) प ३।१०७; २८।१०८

से ११०,११२,११४ से ११६,११८'११९,
१२१,१२३ से १२५,१३०,१३१,१३६
से १३६,१४१,१४२
अणाहारय (अनाहारक) प १८।९७ से १०३;
२८।१०६ से १०८,१११,११३,११७,११९,
१२०,१२२,१२५,१२७ से १२९,१३२,१४३
अणिंद (अनिन्द्र) प २।६०,६३
अणिंदिय (अनिन्द्रिय) प ३।४०; १३।१९; १८।१७
अणिंदिया (अनिन्दिता) ज ५।१।१
अणिक्खित्त (अनिक्षिप्त) उ० ३।५०
अणिगण (अनग्न) ज २।१३
अणिच्चजागरिया (अनित्यजागरिका) उ० ३।५५
अणिच्छियत्त (अनिप्टत्व) प २८।२४
अणिज्जिण्ण (अनिर्जीर्ण) प ३६।८२
अणिट्ठ (अनिप्ट) प २३।२० ज २।१३३
अणिट्ठतरिया (अनिष्टतरका) प १७।१२३ से
१२५,१३० से १३२
अणिट्ठत्त (अनिष्टत्व) प २८।२
अणिट्ठस्सर (अनिष्टस्वर) ज २।१३३
अणिट्ठस्सरता (अनिप्टस्वरता) प २३।२०
अणिड्ढि (अनर्द्धि) प ६।९८; २१।७२
अणिड्ढिपत्तारिय (अनर्द्धिप्राप्तार्य) प १।९०,९२,
१२९
अणित्थंत्थ (अनित्थंस्थ) प २।६४।९
अणिदा (दे०) प ३५।१।१; ३५।१६
अणिदाया (दे०) प ३५।१७ से २०,२२,२३
अणिमिस (अनिमेष) ज ५।६७
अणिय (अनीक)प २।३० से ३३,३५,४१,४३,४८
से ५१ ज १।४५; २।९०; ३।१२५; ५।१,१९,
४३,४४,५०,५६, सू १८।२३
अणियट्टि (अनिवृत्ति) सू २०।८,२०।८।८
अणियत (अनियत) सू १।२६
अणियय (अनियत) प १७।२०
अणियाधिवति (अनीकाधिपति) प २।३० से ३३
४१,४३,४८ से ५१
अणियाहिव (अनीकाधिप) ज ४।१५१।२
अणियाहिवइ (अनीकाधिपति) ज १।४५; २।९०
४।१९,१५१; ५।१,१९,३९,४३,४८,५०,५२,
५३,५६ सू १८।२३
अणियाहिवति (अनीकाधिपति) प २।३०
अणिल (अनिल) ज २।६८
अणिवारिय (अनिवारित) उ ३।११९; ४।२२
अणीय (अनीक) उ १।१४६; १४७
अणु (अणु) प ११।६४,६५,६९।१; २८।१४,१५,
६०,६१ ज ७।४३,५०,१६८ सू ९।१; ९।२;
१७।१; १८।२,३; १९।२१
अणुउ (अनृतु) सू १०।१२९।३
अणुकतनुक (दे०) ज ३।१०९
अणुगंतव्व (अनुगन्तव्य) प १।४८; २।४०; १५।५५
ज ७।१३४
√ **अणुगच्छ** (अनु+गम्)
अणुगच्छइ ज ३।६; ५।२१ उ ३।१०१
अणुगच्छंति ज ३।१०,११,५१,८६,८७
अणुगच्छति प १६।४८
अणुगच्छमाण (अनुगच्छत्) ज ३।१८,३१,१८०
अणुगच्छित्ता (अनुगम्य) ज ३।६ उ ३।१०१
अणुगम्ममाण (अनुगम्यमान) उ ३।१३०
अणुगिण्हमाण (अनुगृण्हान) उ १।१०७,१०८
√ **अणुचर** (अनु+चर्)
अणुचरंति सू १९।२२।११
अणुचरंत (अनुचरत्) सू १९।२२।११
अणुचरिय (अनुचरित) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८
६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३
√ **अणुजाण** (अनु+ज्ञा)
अणुजाणउ उ ३।५१
अणुजाय (अनुयात) ज ३।२२,३५,३६
अणुतडिया (अनुतटिका) प ११।७७
अणुतडियाभेद (अनुतटिकाभेद) प ११।७७,७९
अणुतडियाभेय (अनुतटिकाभेद) प ११।७३
अणुत्त (अणुत्व) ज ७।१६९ सू १८।३
अणुत्तर (अनुत्तर) प २।२७,२७।४; २।४९,६३;

२१।५५; ३४।२३,२४ ज २।७१,८५; ३।२२३

अणुत्तरविमाण (अनुत्तरविमान) प २।६२।१; १०।२; ३०।२६

अणुत्तरोववाइय (अनुत्तरोपपातिक) प १।१३६, १३८; २।४६,६३; ३।१८३; ६।४६,६६,६६, ६८,११३; २०।५७; २१।५५,७१,८३,९३, ९४; ३३।१८,२६; ३४।१६,१८ ज० २।८१

अणुत्तरोववातिय (अनुत्तरोपपातिक) प २०।५६; २१।६२

अणुदु (अनृतु) ज ७।११२।३

अणुद्धुय (अनुद्धूत) ज ३।१२,२८,४१,४६,५८ ६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३; ५।५

√अणुपरियट्ट (अनु+परि+वृत्)
अणुपरिट्टइ ज ७।१५६ से १६७ सू १०।६७
अणुपरियट्टंति ज ७।५५ सू १६।२३
अणुपरियट्टति सू १०।५

अणुपरियट्टित्ता (अनुपरिवृत्य) सू १०।५

अणुपरियट्टित्ताणं (अनुपरिवृत्य) प ३६।८१

अणुपरिवाडीय (अनुपरिपाटीक) ज ७।१३०

अणुपविट्ठ (अनुप्रविष्ट) ज ३।८१ उ १।३३, ३।८,१००,१३३

√अणुपविस (अनु+प्र+विश्)
अणुपविसइ ज ३।६,१७,२०,२१,२८,३१ से ३४,४१,४६,५४,६३,७१,७७,९५,१३७,१३९, १४३,१५६,१६६,१७७,१८२,२०१,२०४, २१८,२२२ सू २।१ अणुपविसंति ज ३।२०५, २०६ अणुपविसति ज ३।१८३,१८४
अणुपविसह उ ३।१०१

अणुपविसमाण (अनुप्रविशत्) ज ३।१८४,१८५

अणुपविसित्ता (अनुप्रविश्य) ज ३।९ सू २।१

अणुपुव्व (अनुपूर्व) ज २।१५; ४।३।२५,३५ सू ६।१ उ १।५७,५८,८२,८३; ३।४६

अणुप्पत्त (अनुप्राप्त) उ ३।१२७,१२८; ५।४३

अणुप्पयाहिणीकरेमाण (अनुप्रदक्षिणीकुर्वत्) ज ३।२०४ से २०६,२०८; ५।४१

अणुप्पवाएमाण (अनुप्रवाचयत्) ज ३।२६,३९, ४७,१४३

√अणुप्पवाय (अनु+प्र+वाचय्)
अणुप्पवाएइ ज ३।२६,३९,४७,१३३

अणुबंध (अनुबन्ध) ज २।४२

अणुबद्धचारि (अनुबद्धचारिन्) सू २०।२

अणुब्भड (अनुद्भट) ज २।१५

अणुभाव (अनुभाव) प २३।१।१,२३।१३ से २३ ज ४।८३ चं २।५ सू १।६।५; १६।२२।१६,२०

अणुभावणामणिहत्ताउय (अनुभावनामनिधत्तायुष्क) प ६।११८

अणुभावणामनिहत्ताउय (अनुभावनामनिधत्तायुष्क) प ६।११९,१२२

अणुभावनिहत्ताउय (अनुभावनिधत्तायुष्क) प६।१२३

√अणुमण्ण (अनु+मन्)
अणुमण्णित्था उ ३।१०९

अणुमय (अनुमत) प ११।३०।१,२ ज २।१५ उ ३।१२८

अणुमाण (अनुमान) सू ९।३

अणुमाणइत्ता (अनुमान्य) उ ३।५५

अणुयाय (अनुयात) ज ३।९३,९९,१०६,१६३, १७५,१८०

अणुरंगिणी (अनुरङ्गिनी) सू १०।७४

अणुरंजिएल्लिय (अनुरञ्जित) ज ३।११७

अणुरत्त (अनुरक्त) सू २०।७ उ १।१३९

अणुराग (अनुराग) प २।४०।११ उ १।७२,७३, ८७,८८,९२

अणुराधा (अनुराधा) सू १०।२ से ६, १८

अणुराहा (अनुराधा) ज ७।१२८,१२९,१३६।१, १४०,१४६,१५२,१६६, सू १०।२ से ६,१८, २३,५०,६२,७२,७५,८३,११५,१२०,१३१, १३३

√अणुलिंप (अनु+लिप्) अणुलिंपइ ज २।९९; ३।१२ अणुलिंपंति ज २।१००; ३।१२,२११; ५।५८

अणुलिंपित्ता (अनुलिप्य) ज २।९९

अणुलित्त (अनुलिप्त) प २।३१ ज ३।९,२२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√अणुलिह (अनु+लिह्)
अणुलिहंति ज ३।१७८; ५।४३
अणुलिहंत (अनुलिहत्) उ ५।५
अणुलिहमाण (अनुलिखत्) प २।४८
अणुलेवण (अनुलेपन) प २।२० से २७,३०,३१, ४१,४६ ज २।७०
अणुलोम (अनुलोम) ज २।१६,६७
अणुलोमच्छाया (अनुलोमछाया) सू ६।४
अणुवउत्त (अनुपयुक्त) प १५।४८,४६; ३४।१२
अणुवत्तमाण (अनुवर्तमान) ज ५।२७
अणुवम (अनुपम) प ३०।२७,२८
अणुवरयकाइया (अनुपरतकायिकी) प २२।२
अणुववेत (अनुपेत) प १७।१३२
अणुवसंत (अनुपशान्त) प १४।६
अणुवसंपज्जमाणगति (अनुपसंपद्यमानगति) प १६।३८,४२
अणुवसंपज्जित्ताणं (अनुपसंपद्य) प १६।४२
अणुवाय (अनुवाद) ज ४।१०७
अणुवायगइ (अनुपातगति) सू १।१४
अणुवासिय (अनुवासित) ज ५।५
अणुविद्ध (अनुविद्ध) ज ३।१२,८८; ५।५८
अणुव्वय (अणुव्रत) उ ३।८१,८२
अणुसज्जमाण (अनुसजत्) ज ४।२०५
√अणुसज्ज (अनु+षंज्) अणुसज्जित्था ज २।५० अणुसज्जिस्संति ज २।१६२,१६४
अणुसमयपणोववत्तीय (अनुसमवदनोपपत्तिक) ज ३।१६७।१२
अणुसमय (अनुसमय) प ६।१६,६२,६३; ११।७०; २८।४,२६,५०
अणुसार (अनुसार) प २१।८० ज० ५।५७ उ ५।४५
√अणुहर (अनु+हृ)
अणुहरंति ज ३।१३८
√अणुहो (अनु+भू) अणुहोति प २।६४।२२
अणूण (अनून) सू १६।२१।८; १६।२२।२८
अणेग (अनेक) प १।३८।३; १।४८।६,४७; १।१०१।७; २।४१,६४ ज १।३७; २।१२,११३,१४६; ३।३,६,१२,२२,२४,२८,३१,३६,४१,४६,५८, ६६,७४,७७,६३,६६से१०१,१०६,१११,११६, १२०,१४७,१६३,१६८,१६३,२१२, २१३, २२२; ४।३,६,२५,३३,१२०,१४७,२१६, २४२; ५।३,४,२८,३२,३३,४३ उ १।६७ से ६६; ३।४३,४४; ५।१०,१७
अणेगजीविय (अनेकजीवित°जीवक) प १।३५,३६
अणेगविह (अनेकविध) प १।१३,२०,२३,२६,२६, ३५ से ५१,५६,६३ से ६६,७०,७१,७५,७६, ७८,७६,८६,६६; १६।३०,३७
अणेगसिद्ध (अनेकसिद्ध) प १।१२; १६।३६
अणेगिंदिय (अनेकेन्द्रिय) प ११।३८
अणेरइय (अनैरयिक) प १७।६०,६१
अणेसणिज्ज (अनेषणीय) उ ३।३८
अणोगाढ (अनवगाढ) प ११।६२; २८।१२,५८
अणोवम (अनुपम) ज ३।६२,१०६,११६
अणोवमा (अनुपमा) प २।६४।१८; १७।१३५
अणोवमा (दे०) ज २।१७
अणोवाहणय (अनुपानत्क) उ ५।४३
अणोहट्टिय (दे०) उ ३।११६; ४।२३
अण्ण (अन्य) प १।२०,२३,२६,२६,३५ से ३७,३६ से ४७,४८।७,१० से २६; १।४८ से ५१,५६, ६०,७८,६६,६७; २।३० से ३३,४८ से ५५; ११।२१ से २५; ३६।६४ ज १।४५,४६; २।२०,७१,६०; ३।८१,१८६,१८८,२०६, २१०,२१६,२२१; ४।१३,१४,५२,११४,१४६, १५६,१६५,२०६,२१६,२१६,२२१; ५।१,५, १६,२४,३८,४७,५०,६७; ७।५६,५६,१८३, १८५ सू ६।१; १०।१६२ से १६४,१६६; १७।१; १८।२१,२३,१६।११,२४; २०।१ उ ५।१०,१७
अण्णतर (अन्यतर) सू ६।१
अण्णतरठितिय (अन्यतरस्थितिक) प २८।५०,५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अण्णत्थ (अन्यत्र) प ११।११ से २०,४६ सू १।१४, १७,१०।१३६; २०।७

अण्णमण्ण (अन्योन्य) प १६।३६,४२ ज २।३६, ४१,१४६; ३।१०५,१०७,११३ से १३८; ५।३,२७,३८ सू १।१८ से २१ उ १।४७,९८, १३८,१३९

अण्णयर (अन्यतर) प २२।६१ से ६५; २३।१९१ १९२ ज २।६९

अण्णया (अन्यदा) ज ३।४,८३,१०४,१३०,१५४, १७२,१८८,२२२ उ १।१४; २।८; ३।४६; ४।२१; ५।१३

अण्णलिंगसिद्ध (अन्यलिङ्गसिद्ध) प १।१२

अण्णहा (अन्यथा) प १।१०१।३,५ उ १।१०९

अण्णाण (अज्ञान) प ५।२४,२८,३०,३२,३४,३७, ४३,४५,४९,५३,५९,६८,७१,७४,८०,८३,८४ ८६,८७,८९,९७,९९,१०१,१०२,१०४,१०५, १०७,११७

अण्णाणपरिणाम (अज्ञानपरिणाम) प १३।१४,१६ १७,१९,

अण्णाणि (अज्ञानिन्) प १।७४,८४;५।६४,१८।८३ २३।२००,२८।१३७

अण्णाणुपुव्वी (अनानुपूर्वी) प २८।१८,६४ सू २६

अण्णोण्ण (अन्योन्य) प २।६४।१० ज ७।५८ सू १९।२६

अण्हाणय (अस्नानक) उ ५।४३

अतसी (अतसी) प १।३७।२

अतिक्कम (अतिक्रम) ज २।१३३

अतितेया (अतितेजा) सू १०।८८।२

अतित्थगरसिद्ध ((अतीर्थंकरसिद्ध) प १।१२

अतित्थसिद्ध (अतीर्थसिद्ध) प १।१२

अतिदूर (अतिदूर) ज १।६

अतिभाग (अतिभाग) सू ४।८

अतिमास (अतिमास) सू १५।३७

अतिराउल (दे०) प ११।१४,१९

अतिरेग (अतिरेक) ज ३।३५,२११; ५।५८

अतिवतित्ताणं (अतिव्रज्य) प २८।१०५; ३४।१९

अतिसीत (अतिशीत) सू १०।१२९।१

अतिहि (अतिथि) उ ३।४८,५०,५१

√अति (अति+इ) अतीति ज ३।९३,९५

अतीत (अतीत) प १५।८३,८४,८९ से ९७,९९ से १०१,१०३ से १०६,१०९,११०,११२ से ११७,११९,१२०,१२२,१२३,१२५ से १३२,१३५,१३९,१४०,१४१,१४३; ३६।८ से २६,३० से ३४,४४, से ४७

अतीय (अतीत) प १५।१०८,११८; ३६।३४

अतीव (अतीव) ज ५।३८

अतुरिय (अत्वरित) ज ५।५,७

अतुल (अतुल) प २।६४।२०

अत्त (आत्मन्) प १५।५० ज ३।२२२ उ ३।८३, १२०, १५०; ५।२८,४३

अत्तय (आत्मज) उ १।१०,३१,९५,१०९,११०, ११३,११४; २।९

अत्तया (आत्मजा) उ ४।९

अत्थ (अत्र) ज ४।१४२,३ सू ९।१ उ ३।१५१

अत्थ (अर्थ) ज ५।२६ चं १।३ सू २०।७ उ ३।४०

अत्थ (अस्त्र) ज ३।७७,१०९

अत्थओ (अर्थतस्) प १।१०१।८

अत्थजुत्त (अर्थयुक्त) ज ५।५८

अत्थणिउर (अर्थनिकुर) ज २।२४

अत्थणिउरंग (अर्थनिकुराङ्ग) ज २।४

अत्थत्थि (अर्थार्थिन्) सू २०।७

अत्थत्थिय (अर्थार्थिक) ज ३।१८५

अत्थमंत (अस्तवत्) ज ३।१९

अत्थमण (अस्तमयन) ज ७।३६ से ३८ चं ४।१ सू १।८।१; २।३; ९।२

अत्थसत्थ (अर्थशास्त्र) उ १।३१

अत्थसिद्ध (अर्थसिद्ध) ज ७।११७।२ सू १०।८६।२

अत्थाम (अस्थामन्) ज ३।१११

अत्थि (अस्ति) प १।७५; २।६४।१४; ५।८०, ९९; ६।११०; १२।९; १५।४५,४७ से ४९,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०,६२,६३,६५,६६,८७,६४ से १०१,१०३ से १०६,१०८,११२ से ११४,११६,१३८, १४१; १७।१३,३५; १८।१।२; २०।१,४,१७ १८,२२,२५,२८,२९,३४,३८,३९,४९,५०,५३, ५८; २१।९८ से १००,१०३; २२।९,११,१२, १४,१६,१८,५८,५९,७७,७९,८१,८२; २३।९; २८।१२३,१३६,१४१,१४५; ३४।७ से ९,११, १२,१५,१६,२०; ३६।८ से ११,१७ से २३, २५,२६,२९ से ३२,३४,४४ ज १।४७, सू १।३; ९।१ उ ३।१०१; ४।५; ५।२९

अत्थिकायधम्म (अस्तिकायधर्म) प १।१०१।१२

अत्थिय (अस्थिक) प १।३६।१; ३।१।२

अत्थोग्गह (अर्थावग्रह) प १५।६८,७० से ७२,७४, ७५

अथिरणाम (अस्थिरनामन्) प २३।३८,१२२

अद (अदस्) मू १।४

अदंड (अदण्ड) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८,६६,७४ १४७,१६८,२१२,२१३

अदंतवणय (दे० अदन्तधावनक) उ ५।४३

अदि (अयि) उ ५।४१

अदिइ (अदीति) ज ७।१८६।३

अदिज्ज (अदेय) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८,६६, ७४,१४७,१६८,२१२,२१३

अदिट्ठ (अदृष्ट) सू ५।१; ७।१

अदिट्ठंत (अदृष्टान्त) प ३०।२७,२८

अदिण्णादाण (अदत्तादान) प २२।१४,१५,८०

अदिति (अदिति) ज ७।१३०

अदितिदेवया (अदितिदेवता) सू १०।८३

अदुक्खमसुह (अदुःखासुख) प ३५।१।२; ३५।१० १२

अदुत्तर (दे०) ज २।४७,१३१; ३।२२६; ४।२२, ३४,५४,६४,१०२,१०५,११३,१५९,१६१, १६६,२०८,२१०,२६१ उ १।११९

अदुवा (दे०) ज ७।२१२

अदूरसामंत (अदूरसामन्त) प ३४।२२,२३ ज १।५; ३।१८,३१,५२,६९,१३१, १४१,१८०; ५।५,७ उ १।३; ३।२९; ५।६

अदेवीय (अदेवीक) प ३४।१५,१६

अद्द (आर्द्र) प २।३१

अद्दरूसग (अटरूपक,आटरूपक) प १।३७।४

अद्दा (आर्द्रा) ज ७।१२८,१२९।१,१३४ से १३६, १३६।१,१४०,१४९,१६१, सू १०।३ से ६, १३,२४,३९,६२,६८,७५,८३,१०४,१२०, १३१ से १३४।२,१३५।२,१६०

अद्दाय (दे०) प १५।१।१; १५।५०

अद्दारिट्ठय (आर्द्रारिष्टक) प १७।१२३

अद्ध (अर्ध) ज १।१६; ३।१०९; ४।२०८; ५।३८; ७।१७६,१७७।३ सू २।२; ९।३ उ १।१०३, १०९,११०,११३,११४

अद्धअउणट्ठि (अर्द्धैकोनषष्टि) सू ९।३

अद्धअट्ठारस (अर्धाष्टादश) सू १८।१

अद्धएकोणवीस (अर्धैकोनविंशति) सू १८।१

अद्धएकवीस (अर्धैकविंशति) सू १८।१

अद्धएकारस (अर्धैकादश) सू १८।१

अद्धंगुल (अर्धाङ्गुल) प ३६।८१ ज १।१७; ३।१०९; ७।२०७ सू १।५४

अद्धकविट्ठग (अर्द्धकपित्थक) प २।४८ सू १८।८

अद्धकुंभिक (अर्द्धकुम्भिक) ज ५।३८

अद्धकोस (अर्द्धकोश) ज १।३७,४२,५१; ४।९, १५,२४,३३,३६,११४,११८,१२८,१४७, १५४,१५५,२४२, सू १८।१२,१३

अद्धगाउय (अर्द्धगव्यूत) प ३३।२,९ ज ७।९०

अद्धचउवीस (अर्द्धचतुर्विंशति) सू १८।१

अद्धचंद (अर्द्धचन्द्र) प २।४८,५०,५९, ज १।२०; ३।२४,७९,११६; ४।४९,१०८,२४५

अद्धचंदसंठाणसंठित(अर्द्धचंद्रसंस्थानसंस्थित)प २।५८

अद्धचोद्दस (अर्धचतुर्दश) सू १८।१

अद्धछट्ठ (अर्द्धषष्ठ) सू १८।१

अद्धछव्वीस (अर्द्धषड्विंशति) सू १८।१

अद्धछव्वीसतिविह (अर्द्धषड्विंशतिविध) प १।९३

अद्धजोयण (अर्द्धयोजन) ज १।७।१, १।९,१०,१७, २३,२५; ४।६,७,१४,२४,३६,४२,४९,५९,७१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७४,७८,११२,११४,११५,११६,१२३,
१२६,१२७,१४६ सू १८।११,२०
अद्धट्ठम (अर्द्धाष्टम) ज २।७८;४।११०,११६,
१२८ सू १८।१ उ ११५३,७८
अद्धट्ठारस (अर्द्धाष्टादश) प २३।१०४
अद्धणवम (अर्द्धनवम) सू १८।१
अद्धणाराय (अर्द्धनाराच) प २३।४५,६७
अद्धतिवण्ण (अर्द्धत्रिपञ्चाशत्) प २।२७।३
अद्धतेरस (अर्द्धत्रयोदश) प १।६०,८१।१;
२३।१०२ ज ४।३६,४३,६६,७२,११४,१२०,
१२२ सू १८।१
अद्धतेवट्ठि (अर्द्धत्रिषष्टि) ज ४।२४० उ ३।७
अद्धतेवण्ण (अर्द्धत्रिपञ्चाशत्) प २।२७
अद्धतेवीस (अर्द्धत्रयोविंशति) प ६।३१ सू १८।१
अद्धदसम (अर्द्धदश) सू १८।१
अद्धद्धमिस्सिया (अर्द्धार्द्धमिश्रिता) प ११।३६
अद्धपंचम (अर्द्धपञ्चम) प ४।३४,३६,४०,४२
सू १८।१
अद्धपण्णवीस (अर्द्धपञ्चविंशति) सू १८।१
अद्धपण्णरस (अर्द्धपञ्चदशन्) सू १८।१
अद्धपलिओवम (अर्द्धपल्योपम) प ४।१६८,१७०,
१७४,१७६,१८०,१८२,१८६,१८८,१९२,
१९४,१९५,१९७ ज ७।१८८,१९०,१९२,
१९३ सू १८।२६,२८,३०,३२,३३
अद्धपलियंकसंठित (अर्द्धपर्यंक संस्थित) सू १०।४४
अद्धपोरिसी (अर्द्धपौरुषी) सू ६।३
अद्धबारस (अर्द्धद्वादश) सू १८।१
अद्धबयालीस अर्द्धद्वाचत्वारिंशत्) सू १।२३
अद्धबावण्ण (अर्द्धद्विपञ्चाशत्) सू १।२३
अद्धबावीस (अर्द्धद्वाविंशति) सू १८।१
अद्धभरह (अर्द्धभरत) ज ३।९५
अद्धभाग (अर्धभाग) ज १।२३,४८;४।१,६२,८१
८६
अद्धमंडल (अर्द्धमंडल) च ३।१ सू १।१८;१३।७
से ११,१४ से १६;१५।२६ से ३१
अद्धमंडलसंठिति (अर्द्धमण्डलसंस्थिति) सू १।७।१,
१।१५ से १७
अद्धमागहा (अर्द्धमागधी) प १।९८
अद्धमास (अर्द्धमास) प ६।१२;२३।७१,१८४
सू १३।४,५,११
अद्धमासिया (अर्द्धमासिकी) उ ३।१४,८३,१२०
अद्धवीस (अर्द्धविंशति) सू १८।१
अद्धसत्तम (अर्द्धसप्तम) सू १८।१
अद्धसत्तरस (अर्द्धसप्तदश) सू १८।१
अद्धसीतालीस (अर्द्धसप्तचत्वारिंश) सू १।२३
अद्धसोलस (अर्द्धषोडश) ज ४।११६ सू १८।१
अद्धहार (अर्धहार) ज ३।६,२११,२२२;५।३८
६७
अद्धा (अद्धा, अध्वन्) प २।६४।१५,१६;१५।
५८।१;१५।६३,६४;१८।१,१२५;३६।९२,
९४, सू १।११,१२,२७ से ३१;२।२;६।३;
१२।२ से ६,१० से १२
अद्धामिस्सिया (अर्द्धमिश्रिता) प ११।३६
अद्धासमय ('अद्धा'समय) प १।३;३।११४,११५,
१२१,१२२,१२४;५।१२४;१५।५३ से ५५,
५७;१८।१२५
अद्धुट्ठ (दे०) प ३३।३,४ ज ४।११९ सू १।२३,
३।१;१८।१ उ ५।१०
अधण्ण (अधन्य) उ १।९२;३।९८,१०१,१३१
अधम्मत्थिकाय (अधर्मास्तिकाय) प १।३;३।११४,
११५, ११७,१२२;५।१२४;१५।५३,५४
अधर (अधर) ज २।१५
अधरिम (अधरिम) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८,६६,
७४,१४७,१६८,२१२,२१३
अधाजोग (यथायोग) सू १५।१०
अधाजोय (यथायोग) सू १५।१३
अधातच्च (यथातथ्य) सू १२।१३
अधारणिज्ज (अधारणीय) ज ३।१११
अधिगय (अधिगत) प १।१०१।२
अधिपति (अधिपति) ज ३।२५,४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधिय (अधिक) सू १३।११,१४
अधिवति (अधिपति) प २।५०,५१
अधेसत्तमा (अधःसप्तमी) प ३।१८३
अनिल (अनिल) ज २।६८,१३१
अपइट्ठाण (अप्रतिष्ठान) प २।२७
अपच्चक्खाण (अप्रत्याख्यान) प १४।७; २३।३५
अपच्चक्खाणकिरिया (अप्रत्याख्यानक्रिया) प १७।११,२२,२३,२५; २२।६०,६४,६६,७२,७४,९८,९९
अपच्चक्खाणि (अप्रत्याख्यानिन्) प २२।६४
अपच्चक्खाय (अप्रत्याख्यात) प ११।८९
अपज्जत्त (अपर्याप्त) प १।१७,२२,३१,४९ से ५१,६०,६६,७५,७६,८१; २।१७,२० से ३९,४१ से ४३,४८ से ६३; ३।४३ से ४९,५३ से ६०,६४ से ७१,७५ से ८४,८८ से ९५,११०,१७४; ४।५५,८६,८९,९१,९३,९६,९९,२३८,२४१,२४४,२४७,२५०,२५३,२५६,२५९,२६२,२६५,२६८,२७४,२७७,२८०,२८३,२८६,२८९,२९२,२९५,२९८; २१।६,१६,१८,२३ से ३२,३६,४०,४१,४८,५०,५३,५५
अपज्जत्तग (अपर्याप्तक) प १।२०,२३,२५,२६,२८,२९,४८।६०; १।४८ से ५१,५३,८४, १३१ से १३३,१३५,१३७,,१३८; २।२,३,५,६,८,९,११,१२,१४ से १९; ३।४१,४३ से ४९,५१,५३ से ६०,६२,६४ से ७१,७३,७५ से ८४,८६,८८,९१,९३ से ९५,११०,१४२,१४८,१५१,१८३; ६।७१,७२,८३,१०२; ११।३९,४१; १५।४९; १८।४८; २१।५,१०,१३,२०,३३,३४,३६,४१,५२ से५५,७२; ३४।१२
अपज्जत्तगणाम (अपर्याप्तकनामन्) प २३।३८,१२०
अपज्जत्तय (अपर्याप्तक) प १।२९; ३।६२,६६ से ६८,८६,८९,९०,९२,९३,९५,१४५,१५४,१५७,१६०,१६३,१६६,१६९,१७२,१७४,१८३; ४।२,५,८,११,१४,१७,२०,२३,२६,२९,३२,३५,३८,४१,४४,४७,५०,५३,५७,६०,६३,६६,६८,७०,७३,७५,७७,८०,८३,१०२,१०५,१०८,१११,११४,११७,१२०,१२३,१२६,१२९,१३२,१३५,१३८,१४१,१४४,१४७,१५०,१५३,१५६,१५९,१६३,१६६,१६९,१७२,१७५,१७८,१८१,१८४,१८७,१९०,१९३,१९६,१९९,२०२,२०५,२०८,२११,२१४,२१७,२२०,२२३,२२६,२२९,२३२,२३५,२७१; ६।७१,७२,७९,८३,८४,९७,१०२; ११।३१,३५,३६; १८।८,१८,३०,३९,११४; २१।४०,४२; २३।१९३; २८।१४३ से १४५; ३६।५२
अपज्जत्ति (अपर्याप्ति) प २८।१४३
अपज्जवसित (अपर्यवसित) प २।६४
अपज्जवसिय (अपर्यवसित) प १८।७,१३,१७,२५,२९,५५,५८,५९,६३,६४,६७,६८,७५ से ७७,७९,८२,८३,८६,८८,९०,९२,१००,१०५,१११,११२,११५,११८,१२१,१२३,१२४,१२७
अपज्जुवासणया (अपर्युपासना) उ ३।४७
अपडिक्कंत (अप्रतिक्रान्त) उ ३।८३,१२०; ४।२४
अपडिबद्ध (अप्रतिबद्ध) ज २।७०
अपडिबद्धगामि (अप्रतिबद्धगामिन्) ज २।६८
अपडिबुज्झमाण (अप्रतिबुध्यमान) ज २।६५; ३।१८६,
अपडिवाइ (अप्रतिपातिन्) प ३३।१।१; ३३।३५
अपडिवाति (अप्रतिपातिन्) प १।११४
अपडिसुणमाण (अप्रतिशृण्वत्) उ १।१२७
अपडिहय (अप्रतिहत) प ११।८९
अपडोयार (अप्रत्यवतार) प ३०।२७,२८
अपढम (अप्रथम) प १।१३,१०३,१०६,१०७,१०९,११०,११३,११४,११६,११९,१२०,१२२,१२३; १६।३७
अपत्थियपत्थग (अप्रार्थितप्रार्थक) ज ३।१२४ उ १।११५,११६

अपत्थियपत्थय (अप्रार्थितप्रार्थक) ज ३।२६,३६, ४७,१०७,११४,१२२,१३३ उ १।८६

अपदेसट्ठया (अप्रदेशार्थ) प ३।१७६,१८१

अपमत्त (अप्रमत्त) प १७।३३; २१।७२

अपमत्तसंजत (अप्रमत्तसंयत) प ६।६८

अपमत्तसंजय (अप्रमत्तसंयत) प ६।६८; १७।२५, २२।६३

अपमाण (अप्रमाण) प ३०।२७,२८

अपराइय (अपराजित) ज ३।३

अपराइया (अपराजिता) ज ४।२१२

अपराजित (अपराजित) प १।१३८; २।६३; ६।५६; ७।२६ ज १।१५

अपराजिता (अपराजिता) ज ४।२०२; ७।१८६

अपराजिय (अपराजित) प ४।२६४ से २६६; ६।४२; १५।८६,६२,१००,१०५,१०८,१०६, ११४,११६,१२०,१२१,१२३,१२५,१२६, १३१,१३६; २८।६६

अपराजियत्त (अपराजितत्व) प १५।११३

अपराजिया (अपराजिता) ज ४।२१२।४; ५।८।१; ७।१२०।२ सू १०।८८।२

अपरिग्गहिय (अपरिगृहीत) प ४।२२२ से २२४, २३४, से २३६,

अपरिजाणमाण (अपरिजानत्) उ ३।५६,६१,७७, ११६

अपरिताविय (अपरितापित) ज २।४६

अपरित्त (अपरीत) प ३।१०६; १८।१०६

अपरिभुंजमाण (अपरिभुञ्जत्) उ १।३५

अपरिभूय (अपरिभूत) ज ३।१०३ उ ३।१०, २८ ६६

अपरिमिय (अपरिमित) ज ३।१६७

अपरियाग (अपरिपाक, अपर्याय) प १७।१३२

अपरियार (अपरिचार) प ३४।१५,१६

अपरियारग (अपरिचारक) प ३४।१८,२५

अपरिसेस (अपरिशेष) प २८।४०, ६६ ज ४।८३, २७४

अपरिसेसिय (अपरिशेषित) प २८।२३

अपविट्ठ (अप्रविष्ट) प १५।३६, ४१

अपसत्थ (अप्रशस्त) प १७।११४।१; २३।५६, १०६,११७,१२८

अपाणय (अपानक) ज २।६५,७१,८८; ३।२२५

अपि (अपि) ज १।२२ उ १।६७; ३।६०; ५।१७

अपिक्क (अपक्व) प १७।१३२

अपुट्ठ (अस्पृष्ट) प ११।६१; १५।३६ से ३८,४१; २२।५६; २८।११,५७ ज ७।४०,५३

अपुणरावित्ति (अपुनरावृत्ति) ज ५।२१

अपुणरुत्त (अपुनरुक्त) ज २।६४; ५।५८

अपुण्ण (अपुण्य) उ १।६२; ३।६८,१०१,१३१

अपुरिसक्कार (अपुरुषकार) ज ३।१११

अपुरोहिय (अपुरोहित) प २।६०,६३

अपुव्व (अपूर्व) प २८।२०,३२,६६

अपुव्वकरण (अपूर्वकरण) ज ३।२२३

अपोह (अपोह) ज ३।२२३

अप्प (आत्मन्) प० १४०।४; २२।४ से ६ ज १।५; २।७१, ८३; ३।१८८; ५।५७ सू १।१६; १३।१२,१४ से १७; १८।८; २०।४ उ १।२,३,४६,६५,६८,७२; २।१०,१२; ३।१४,२६,५०,५१,५३,५४,८३,६६,१३२, १४४,१६१; ४।२४,२८; ५।२६, २८,३२,३६, ४३

अप्प (अल्प) प ३।३८ से ११६, ११७।१,११८ से १२०,१२२ से १२४,१७४,१७६ से १८३; ६।१२३; ८।५,७,६,११; ६।१२,१६,२५; १०।३ से ५,२६ से २६; ११।७६,६०; १५।१३,१६,२६,२८,३१,३३,६४; १७।५६ से ६६,७१ से ७६,७८ से ८३,१४४ से १४६; २०।६४; २१।१०४,१०५; २२।१०१; २८।४१, ४४,७०; ३४।२५; ३६।३५ से ४१,४८,४६ ज १।५०; २।५८,८३,१२३,१२८,१४८,१५१, १५७; ३।१०,११,८५,८७,११७।१,१८४; ४।१०१; ५।५ २७,५७; ७।११२।४,१६८,१६७ सू १०।१२६।४; १५।१; १८।१८,३७; १६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३,२९; २०।७ उ १।१९,४२,९३; ३।२९, १४१; ४।१२

अप्प (अल्प) जवासा प १।४०।४

अप्पकप्पिय (आत्मकल्पित) उ १।४६

अप्पकम्मतराग (अल्पकर्मतरक) प १७।३,१९

अप्पच्चक्खाण (अप्रत्याख्यान) प १४।७

अप्पच्चक्खाणकिरिया (अप्रत्याख्यान क्रिया) प २२।६४,६६,७४,९७,१०१

अप्पच्चक्खाणवत्तिया (अप्रत्याख्यानप्रत्यया) प २२।६४

अप्पडिबुज्झमाण (अप्रतिबुध्यमान) ज ३।२०४

अप्पडिहय (अप्रतिहत) ज ३।८१,८८,१०६,१५१; ५।२१

अप्पणया (आत्मन्) प २८।२०,३२,६६

अप्पतराय (अल्पतरक) प १७।२,२५

अप्पतिट्ठिय (अप्रतिष्ठित) प १४।३

अप्पत्त (अप्राप्त) सू १६।२२।१७

अप्पत्थियपत्थय (अप्रार्थितप्रार्थक) ज ३।१०७

अप्पबहु (अल्पबहु) प १७।११४।१; २१।१।१; ३४।१।२ ज ७।१६८।२

अप्पमेय (अप्रमेय) ज ५।५८

अप्पवस (आत्मवश) उ ३।११८

अप्पवेदणतराग (अल्पवेदनतरक) प १७।९,२७

अप्पसत्थ (अप्रशस्त) प १७।१३८; २३।११६, १३२; ३४।१३

अप्पसरीर (अल्पशरीर) प १७।२,२५

अप्पसोय (अल्पशोक) उ १।९३

अप्पहयगति (अप्रहतगति) ज २।६८

अप्पाबहु (अल्पबहु) प ६।१२३; १५।१।१

अप्पाबहुग (अल्पबहुक) प १७।३९,७०

अप्पाबहुय (अल्पबहुक) प० १०।२८; ११।८०; १५।१८,१६, १५।५८।१; १७।७७

अप्पिच्छ (अल्पेच्छ) ज २।१६

अप्पिड्ढिय (अल्पर्द्धिक) प १७।८४ से ८७,८६ ज० ७।१८१ सू १८।१६

अप्पिण (अर्पय्) अप्पिणइ उ० १।११८

अप्पिणामि उ० १।११७

अप्पिणित्ता (अर्पयित्वा) ज ३।८१

अप्पिय (अप्रिय) ज २।१३३

अप्पियतरिया (अप्रियतरका) प १७।१२३ से १२५, १३० से १३२

अप्पियत्त (अप्रियत्व) प० २८।१४

अप्पियस्सर (अप्रियस्वर) ज २।१३३

अप्पुस्सुय (अल्पौत्सुक्य) ज ३।२६,३६,४७,१३३

अप्पेस्स (अप्रेष्य) प० २।६०,६३

अप्फुण्ण (दे) उ १।२३,६१

अप्फोड (आ+स्फोटय्)—अप्फोडेंति ज ५।७

अप्फोडिय (आस्फोटित) ज ३।३१; ७।१७८

अप्फोया (आस्फोता) मल्लिका, अपराजिता प १।४०।३

अफासाइज्जमाण (अस्पृश्यमान) प २८।४०,४१, ४३,४४,६६,७०

अफुण्ण (दे०) प ३६।५६,६०,६६ से ६८,७०,७१, ७३ से ७५

अफुसमाण (अस्पृशत्) प १३।२३

अफुसमाणगति (अस्पृशद्गति) प १६।३८,४०; ३६।९२

अफुसित्ता (अस्पृष्ट्वा) प १६।४०

अबंधग (अबन्धक) प ३।१७४; २२।८४; २६।६

अबंधय (अबन्धक) प २२।८३,८४,८६; २६।८ से १०

अबल (अबल) ज ३।१११

अबहुस्सुय (अबहुश्रुत) सू २०।६।२

अबाधा (अबाधा) सू २८।२०

अबाहा (अबाधा) प २।६४; २३।६० से ६४,६६, ६८,६९,७३ से ७७,८१,८३,८५ से ९०,९२, ९५ से ९९,१०१ से १०४,१११ से ११४, ११६ से ११८,१२७,१३०,१३१,१७६,१७७, १८२,१८३,१८७,१९० ज १।१७; ३।१; ४।११०,११६,१४१,१४२,२०६,२०७; ७।५,

६,८ से १३,६४,६५,६७ से ७२,८८,८९,९१,
९२,१६८।१,१७१ से १७४,१८२ सू १८।५,६
अबाहूणिया (अवाबोनिका) प २३।६० से ६४,६६
६८,६९,७३ से ७७,८१,८३,८५ से ९०,९२,
९५ से ९९,१०१ से १०४,१११ से ११४,
११६ से ११८,१२७,१३०,१३१,१३३,१७६,
१७७,१८२,१८३,१८७,१९०
अबीय (अद्वितीय) ज ३।२०,३३,८४,१८२
अब्भइय (अभ्यधिक) प १८।४
अब्भंग (अभि+अञ्ज्) अब्भंगेइ उ ३।११४
अब्भंगेति ज ५।१४
अब्भंगण (अभ्यञ्जन) उ ३।११४,११५,११९
अब्भंगेत्ता (अभ्यज्य) ज ५।१४
अब्भंतर (आभ्यन्तर) प ३६।८१ ज ३।१८४;
४।१५२; ७।५,८,९,१०,१३ से १६,१९ से
२२,२५ से २७,३०,३१,३३,६४,६७ से ६९,
७२ से ७५,७८ से ८१,८४,८८,९१,९३,९५,
१७५ सू १।११,१२,१४,१६,१७,२१,२४,
२७,३०; २।३; ३।१,२; ४।७; ६।१; ९।२;
१०।१३२; १३।१३; १९।१; १९।२२।१२
अब्भंतर पुरक्खरद्ध (आभ्यन्तर पुस्करार्द्ध) सू ८।१
१९।१६ से १९
अब्भंतरिय (आभ्यन्तरिक) सू ४।३,४,६,७
अब्भंतरिल्ल (आभ्यंतरिक) ज ७।१७५ सू १८।७
अब्भक्खाण (अभ्याख्यान) प २२।२०
अब्भणुण्णाय (अभ्यनुज्ञात) उ ३।१०६,१०८,१३८;
४।११
अब्भपडल (अभ्रपटल) प १।२०।२; ११।७५
अब्भवद्दलय (अभ्रवार्दलक) ज ५।७
अब्भवालुया (अभ्रवालुका) प १।२०।२
अब्भहिय (अभ्यधिक) प ४।१७१,१७३,१७४,१७६,
१७७,१७९,१८०,१८२,१८३,१८५,१८६,
१८८; ५।५,१०,२०,३०,३२,७२,८१,१०२,
१२९,१३१,१३२,१३४,१६०,१७७,१९३,
२१४,२२८; १७।९३; १८।२८,४७,६०,६९ से
७४,८४; २३।७८,७९,१६९; २९।२१
ज ३।१८,९३,१८०; ७।१८७ से १९०
सू १८।२५ से ३० उ ३।१६
अब्भितर (आभ्यन्तर) प १५।५५; ३३।१।१
ज १।७, २।१२; ४।८,२१; ५।३९ सू १।१४,
१६,२१,२४,२७ से २९,३१; २।३; ४।९;
६।१; ८।१, १९।२१।१
अब्भिंतरओ (अभ्यन्तरतस्) ज ३।२४।२,१३१।२
उ २।८
अब्भिंतरग (आभ्यन्तरक) प १।४८।४५
अब्भिंतरय (आभ्यंतरक) उ १।४४
अब्भिंतरिय (आभ्यंतरक) ज ४।१९
अब्भुक्ख (अभि+उक्ष्) अब्भुक्खेइ ज ३।१२,
८८ उ० ४।२१
अब्भुक्खेत्ता (अभ्युक्ष्य) ज ३।१२
अब्भुग्गय (अभ्युद्गत) प ४।४८ ज १।४२; २।१५;
४।४९, २२१, ७।१७६,१७८ सू १८।८
अब्भुट्ठ (अभि+उत्+स्था) अब्भुट्ठेइ
ज ३।६,२६,३९,४७,१३३, २१४; ५।२१
उ ३।१०१—अब्भुट्ठेमि उ ३।१३६; ४।१४
—अब्भुट्ठेहि उ ३।११५
अब्भुट्ठिय (अभ्युत्थित) ज २।७०
अब्भुट्ठेत्ता (अभ्युत्थाय) ज ३।६ उ ३।१०१,
१३४
अब्भुण्णय (अभ्युन्नत) ज २।१५; ७।१७८
अब्भुवगम (अभ्युपगम) प ३५।११
अब्भोरुह (अभ्यवरुह) प १।४४।१
अब्भोवगमिया (आभ्युपगमिकी) प ३५।१२,१३
अभंगय (अभङ्गक) प २६।९; २८।११९
अभक्खेय (अभक्ष्य) उ ३।३७ से ४०
अभड (अभट) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८,६६,७४,
१४७,१६८,२१२,२१३
अभय (अभय) उ १।३१,४२ से ४६,४८
अभयदय (अभयदय) ज ५।२१
अभवसिद्धिय (अभवसिद्धिक) प ३।११३,१८३;
१२।७,२०; १८।१२३; २८।११२

अभव्वजण (अभव्यजन) सू २०।६।१
अभायण (अभाजन) सू २०।६।३
अभाव (अभाव) प ३।१२१
अभासग (अभाषक) प ३।१०८; ११।३८ से ४१, ६०
अभासय (अभाषक) प० १८।१०५
अभिइ (अभिजित्) ज ७।११३।१, १२८ से १३१, १३३,१३४।१, १३५,१३६,१३८,१४१,१४६, १५६,१७५ सू १०।१ से ६,८,२०,२३,२७,५५, ६३,७५,७८,९२,१२०,१२२,१२३,१३० से १३६; १२।१६; १५।८,११; १८।७;
अभिओग (अभियोग) उ ३।६१
अभिक्ख (अभीक्ष्ण) ज २।१३१
अभिक्खण (अभीक्ष्ण) प १७।२,२५; २८।२१,२३, ६७ ज० १।१८; २।१३१,१३३; ३।१०४, १०५ उ १।५६,८४,६७; ३।११७; ४।२१
अभिगम (अभिगम) प ३४।१।२
अभिगमण (अभिगमन) ज ५।७,४१ सू० १३।१७ उ १।१७; ३।७
अभिगय (अभिगत) उ ३।१४४; ५।३४
√**अभिगिण्ह** (अभि+ग्रह्)अभिगिण्हइ उ ३।५५ अभिगिण्हिस्सामि उ ३।५०
अभिगिण्हेत्ता (अभिगृह्य) उ ३।५०
अभिग्गह (अभिग्रह) प ११।३७।२ उ० ३।५०
अभिचंद (अभिचन्द्र) ज २।५६, ६१; ७।१२२।१ सू १०।८४।१
अभिजात (अभिजात) सू १०।८६।२
अभिजाय (अभिजात) ज ३।३; ७।११७।२
अभिजिणमाण (अभिजयत्) ज ३।१८,३१,१८०
अभिजिय (अभिजित) ज ३।३६,३६,४७,५६,६४, ७२, १२६।४, १३३,१३८,१४५,१८८; ७।१२६
अभिजेतुं (अभिजेतुम्) ज ३।६५
अभिज्झियत्त (अभिध्यातत्व) प २८।२४,२६
अभिणंद (अभि+णद्) अभिणंदति ज २।६४
अभिणंद (अभिनन्द) सू १०।१२४।१
अभिणंदत (अभिनन्दत्) ज २।६४; ३।१८५, २०६
अभिणंदिज्जमाण (अभिनन्द्यमान) ज २।६५
अभिणंदिय (अभिनन्दित) ज ७।११४।१
अभिणय (अभिनय) ज ५।५७
अभिणिसढ (अभिनिसृत) सू ६।१,३
√**अभिणिस्सव** (अभि+नि+स्रु) अभिणिस्सवंति ज ४।१०७
अभिणिस्सित (अभिनिश्रित) सू ९।३
√**अभिणी** (अभि+णी) अभिणेति ज ५।५७
अभिण्ण (अभिन्न) प ११।७२
√**अभिथुण** (अभि+ष्टु) अभिथुणंति ज २।६४; ३।२१०
अभिथुणंत (अभिष्टुवत्) ज २।६४; ३।१८५,२०६
अभिथुव्वमाण (अभिष्टूयमान) ज २।६५; ३।१८६ २०४
अभिनिविट्ठ (अभिनिविष्ट) प २०।३६
√**अभिनिस्सव** (अभि+नि+स्रु) अभिनिस्सवेइ उ १।५६
अभिभूय (अभिभूत) ज २।१३३ उ १।६०,६२,८५, ८७,६३
अभिमुह ((अभिमुख) ज १।६; २।६०; ३।१४, १५,२२,३०,३१,३६,४३,४४,५१,५२,६० ६१,६८,६६,१३०,१३१,१३६,१३७,१४०, १४११४५,१४६,१५०,१७२,१७३,२०५,२०६, ४।१,३७,३८,६५,७१,७३,६०,६१,६४; ५।५८,६।२३ से २६ उ १।१६; ३।४३
√अभिरक्ख (अभि+रक्ष्) अभिरक्खउ उ ३।५१
अभिरममाण (अभिरममाण) ज २।१४६; ५।६७
अभिराम (अभिराम) प २।३०,३१,४१ ज ३।१, ७,६,१७,२१,३४,८८,१०६,१७७,२२२; ४।२७; ५।७,२८,४३ सू २०।७ उ ५।५
अभिरुइय (अभिरुचित) उ ३।१३८
अभिरूव (अभिरूप) प २।३०,३१,४१,४८,४६,

५९,६३,६४ ज १।८,२३,३१,४२ ; २।१२,१४, १५ ; ४।३,६,१३,२५,२७,२९,३३,४९,१४६ ; ५।६२ सू० १।१ उ० ५।४ से ६
अभिलंघमाण (अभिलङ्घमान) ज ४।४९
अभिलाव (अभिलाप) प ४।५५ ; ६।४६,५९,६९,७८ १११,१२३ ; ११।८३ ; १५।३८,५० ; १७।८८, ९१,९६,११७,१४५,१४६ ; २१।५५ ; २२।५८; २३।१९१ ; ३६।६५ ज ३।२११ ; ४।२३८ ; ७।१५५ सू ५।१ ; ६।१ ; ७।१ ; ९।२,३ ; १०।२३, १४८,१५० ; १५।९ ; १८।१ ; १९।१,३१ ; २०।२
अभिवंदिऊण (अभिवन्द्य) प १।१।१
अभिवड्ढि (अभिवृद्धि) ज ७।१३०
अभिवड्ढित (अभिवर्धित) सू १०।१२८,१२९; ११।१ ; १२।१,६,१२ ; १५।२६से२८
अभिवड्ढितसंवच्छर (अभिवर्धितसंवत्सर) सू ११।२ से ६ ; १२।६
अभिवड्ढित्ता (अभिवर्ध्य) सू ६।१
अभिवड्ढिदेवया (अभिवृद्धिदेवता) सू० १०।८३
अभिवड्ढिय (अभिवर्धित) ज ७।१०५,११० से ११२।५ सू १०।१२७,१२९।५
अभिवड्ढियसंवच्छर (अभिवर्धितसंवत्सर) सू १०।१२७
अभिवड्ढेत्ता (अभिवर्ध्य) ज ७।२७ सू ६।१
अभिवड्ढेमाण (अभिवर्धमान) ज ७।१०, १६,२२,२५,२७,३०, ६९,७५,८१, सू १।२०, २१,२७ ; ६।१ ; ९।२
अभिवुड्ढ (अभि + वृध्) अभिवुड्ढेइ सू ६।१
अभिवुड्ढित्ता (अभिवर्ध्य) सू १।१४
अभिवुड्ढेमाण (अभिवर्धमान) सू १।१४ ; २।३ ; ९।२
अभिसमण्णागय (अभिसमन्वागत) प २०।३९ सू ३।२६,३९,४७,१२२,१२६,१३३ उ ३।८५, ९४,१२२,१६३ ; ५।३१
अभिसरमाण (अभिसरत्) उ ३।९८
√अभिसिंच (अभि + सिंच्) अभिसिंचइ ज २।६४ अभिसिंचंति ज ३।२१० ; ४।२४८,२५० से २५२ ; ५।५९ अभिसिंचति ज ३।२०९ ; ५।६०
√अभिसिंचाव (अभि + सेचय्) अभिसिंचावेइ उ १।६८ अभिसिंचावेसि उ १।७२
अभिसिंचावित्तए (अभिषिञ्चयितुम्) ज ३।१८८ उ० १।६५
अभिसिंचित्ता (अभिषिच्य) ज २।६४
अभिसिंचिय (अभिषिञ्चित) ज ३।२१२
अभिसित्त (अभिषिक्त) ज ३।२१४
अभिसेक्क (अभिषेक) ज ३।२०४,२१४,२१७, ४।१४०
अभिसेक्क (अभिषेक्य) उ १।१२३,१३१
अभिसेय (अभिषेक) ज २।१५ ; ३।२०९ ; ४।१४०।१ १६०,२४४,२४८ ; ५।५७,५८,६१,६५
अभिसेयपीढ (अभिषेकपीठ) ज ३।१९४ से १९६, २०४ से २०६,२१४ से २१६
अभिसेयमंडव (अभिषेकमण्डप) ज ३।१९१,१९३, १९४,१९८,२०४ से २०६,२०८,२१४
अभिसेयसभा (अभिषेकसभा) ज ४।१४०
अभिसेयसिला (अभिषेकशिला) ज ४।२४४ ; ५।४७
अभिसेयसिहासण (अभिषेकसिंहासन) ज ४।२४८ ; ५।४७
√अभिहण (अभि + हन्) अभिहणंति प ३६।६२,७७
अभिहणमाण (अभिघ्नत्) ज ३।१०९
अभिहिय (अभिहित) प १।१०१।१२
अभीइ (अभिजित्) ज २।८५,८८,१३८ ; ७।१३६।१ सू १९।२२।२७
अभीय (अभीत) ज २।६४
अभेज्ज (अभेद्य) ज ३।७९,९९ से १०१,११६,
अभेल (अभेल) ज ३।१०९
अमच्च (अमात्य) ज ३।,९,७७,२२२
अमणाम (दे०) ज २।१३३
अमणामतरिया ('अमणाम' तरका) प १७।१२३ से १२५,१३० से १३२
अमणामत्त ('अमणाम' त्व) प २८।२४
अमणुण्ण (अमनोज्ञ) प २३।१६,३१ ज ७।१३१, १३३

अमणुण्णतरिया (अमनोज्ञतरका) प १७।१२३ से १२५,१३० से १३२

अमणुण्णत्त (अमनोज्ञत्व) प २८।२४

अमणूस (अमनुष्य) प २१।७२

अमम (अमम) ज २।५०,१६४; ४।१०६ २०५, ७।१२२।३ सू १०।८४।३

अमयमेह (अमृतमेघ) ज २।१४४,१४५

अमर (अमर) प २।३०,३१,४१; २।६४।२१; ज २।७१; ३।३५,१०६,१३८

अमरपति (अमरपति) ज ३।३१

अमरवइ (अमरपति) प २।४५।२ ज ३।३,१८, ६३,१८०

अमल (अमल) ज ४।२६

अमाइसम्मद्दिट्ठिउववण्णग (अमायिसम्यक् दृष्ट्युपपन्नक) प १७।२७,२६

अमाइसम्मद्दिट्ठी (अमायिसम्यक्दृष्टि) प १५।४६; ३४।१२; ३५।३

अमाइसम्मद्दिट्ठी उववण्णग (अमायि सम्यक्दृष्ट्युप पन्नक) प १७।२७

अमाण (अमान) ज २।६८

अमाय (अमाय) ज २।६८

अमावासा (अमावास्या) ज ७।१२५,१३७,१४७, १४८,१५०,१५१,१५४,१५५, सू १०।७,२३ से २६,१३६,१३७,१४८ से १५१,१५७ से १६१; १३।१ से ३,६,

अमिज्ज (अमेय) ज ३।१२,२८,४१,४६,५८,६६, ७४,१४७,१६८ २१२,२१३

अमित्त (अमित्र) ज ३।२२१

अमिय (अमृत) प २।६४।१६

अमिय (अमित) प २।४०।७ ज ७।१७८

अमियवाहण (अमितवाहन) प २।४०।७

अमिलाय (अम्लान) ज ३।१२,२८,४१,४६,५८, ६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३

अमिलाव (अभिलाप) ज ४।२३८

अमूढदिट्ठि (अमूढदृष्टि) प १।१०१।१४

अमोहा (अमोहा) ज ४।१५७।१

अम्मता (अम्बा) उ ४।११

अम्मया (अम्बा) उ १।३४,४०,४३,७४; ३।६८, १०१,१३१

अम्मा (अम्बा) प ११।१३,१८ उ १।७१,७३,८८

अम्मापिइ (अम्बापितृ) उ २।६

अम्मापियर (अम्बापितृ) उ १।६३; ३।१२६,१२८ ४।११,१४,१५,१६; ५।२७,३८

अम्ह (अस्मत्) प १।१।३ ज ५।३ सू १।२० उ १।१५

अय (अज) प १।६४; ११।१६ से २० ज २।३४, ३५; ७।१८६।३

अय (अयस्) प १।२०।१ ज १।७

अयकरय (अजकरक) ज ७।१८६।२ सू २०।८,८।२

अयखंड (अयस्खण्ड) प ११।७४

अयगर (अजगर) प १।६८,७२ ज २।४१

अयगोल (अयोगोल) १।४८।५६

अयण (अयन) ज २।४,६६; ७।१२६,१२७ सू ६।१; ८।१; १३।७,६,१२ से १४

अयदेवया (अजदेवता) सू १०।८२

अयमाण (अयमान) ज ७।२०,२३,२६,२८ सू १।१४,१६,२१,२४,२७; २।३; ६।१; १३।१; १४।३,७

अयल (अचल) ज ३।७६,११६

अयसिकुसुम (अतसीकुसुम) प १७।१२४

अयसी (अतसी) प१।४५।२; २।३१ ज २।३७

अयाणंत (अजानत्) प १।१०१।५

अयोज्झ (अयोध्य) ज ३।३५

अयोमुह (अयोमुख) प १।८६

अर (अर) ज ३।३५

अरइ (अरति) प २३।७७ ज २।७०

अरजा (अरजा) ज ४।२१२

अरणि (अरणि) ज ५।१६ उ०३।५१

अरण्ण (अरण्य) ज २।६६,१३१

अरति (अरति) प २३।३६,१४५

अरतिरति (अरतिरति) प २२।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरत्त (अरक्त) प २।७०
अरय (अरक) ज ३।३०
अरय (अरजस्) सू २०।८।७
अरयंबर (अरजोम्बर) प २।५० से ५३,५४
ज २।६१
अरयंबरवत्थधर (अरजोम्बरवस्त्रधर) ज ५।१८,
४८
अरया (अरजा) ज ४।२१२।२
अरबाक (अरबक) प १।८६
अरविंद (अरविन्द) प १।४६,१।४८।४४
ज ३।११७
अरसमेघ (अरसमेघ) ज २।१३१
अरह (अर्हत्) ज २।६३ से ६७,७३ से ९०;
५।५८,६५ उ ३।१२,१४,२९,४६,७९;४।१०,
११,१३,१४,१९,२०;५।१४,२०,३२,३३,३६,
३७,३९ से ४१
अरहंत (अर्हत्) प १।६१;६।२६ ज १।१;५।२१
सू० २०।९।४ उ १।१७
अरहंतवंस (अर्हद्वंश) ज २।१२४
अरि (अरि) ज २।२८
अरिट्ठ (अरिष्ट) प १।३५।२
अरिट्ठनेमि (अरिष्टनेमि) उ ५।१४,२०,३२,३३,
३६,३७,३९, से ४१
अरिस (अर्शस्) ज २।४३
अरिह (अर्ह) ज १।२ उ १।३९,४२
अरुण (अरुण) ज ४।८४,८५ सू २०।८,८।५
अरुणवर (अरुणवर) प १५।५५।१ सू १९।३१
अरुणवरोभास (अरुणवरावभास) सू १९।३१
अरुणोभास (अरुणावभास) ज ४।८५
अरुणाभ (अरुणाभ) सू २०।२
अरुणोद (अरुणोद) सू १९।३१
अरुय (अरुज) ज ५।२१
अरूवि (अरूपिन्) प १।२,३;५।१२,३,१२४
√अरुह (अर्ह्)
अरुहतु ज ३।१२६
अलंकार (अलङ्कार) ज २।६५,९९,१००;३।१२
६४,७२,७८,१५०,१८०,२०९,२२४;५।१४,
२२,३६,४१,४३ उ १।३५,७०;३।५०,११०,
११३;४।१८,२०;५।१७
अलंकारिय (अलंकारिक) ज ४।१४०
अलंकित (अलङ्कृत) सू २०।७
अलंकिय (अलङ्कृत) प २।४८ ज ३।९,८५,२११,
२२२;४।४९;५।५८ उ १।१९,४२;३।२६,
१४१;४।१२
अलंबुसा (अलम्बुसा) ज ५।११।१
अलकापुरी (अलकापुरी) ज ३।१
अलत्तग (अलक्तक) उ ३।११४,
अलद्ध (अलब्ध) उ ३।३८
अलभमाण (अलभमान) उ १।६६
अलसंडविसयवासी (अलसण्डविषयवासिन्)
ज ३।८१
अलाय (अलात) प १।२६
अलिय (अलीक) उ १।४७
अलेस्स (अलेश्य) प ३।९९;१३।१९;१७।५६,
५८;१८।७५;२८।१२४
अलोग (अलोक) प १०।२,४,५;१५।१।२
अलोय (अलोक) प २।६४।३;१५।५७;३३।१३
अलोवेमाण (अलोपयत्) उ १।१११,११२
अलोह (अलोभ) ज २।६८
अल्ल (आर्द्र) उ १।४४ से ४६
अल्लइकुसुम (आर्द्रकीकुसुम) प १७।१२७
अल्लग (आर्द्रक) ज ३।११९
अल्लीण (आलीन) ज २।१५,१६;७।१७८
अवक्कम (अव+क्रम्) अवक्कमइ उ ३।११३,
अवक्कमंति ज ३।१११,११५,१९२,२०८;
५।५,७,५५ अवक्कमह ज ३।१२४;४।२०
अवक्कमित्ता (अवक्रम्य) ज ३।१११; उ ३।११३;
४।२०
अवगाह (अवगाह) प १७।११४।१
√अवचिज्ज (अव+चि) अवचिज्जंति
प २१।६७
अवज्झा (अवध्या) ज ४।२१२,२१२।४

अवट्ठित (अवस्थित) मू ६।१; १६।२२।११

अवट्ठित्ता (अवस्थाय) मू १६।२२।२२

अवट्ठिय (अवस्थित) प ३३।२५ ज १।११,४७; ३।६२,११६,२२६; ४।२२,५४,६४,१०२,१५६, २१२; ७।३१,३३,१०१,१०२,२१० मू ४।३ ४,६,७,८।१ उ ३।४३,४४

अवड्ढ (अपार्ध) प १८।५६,६४,७७,८३,६०,१०८ मू १।२२; ६।३

अवड्ढखेत्त (अपार्धक्षेत्र) मू १०।४,५

अवड्ढगोलगोलच्छाया (अपार्धगोलगोलछाया) मू ६।५

अवड्ढगोलच्छाया (अपार्धगोलच्छाया) मू ६।५

अवड्ढगोलपुंजच्छाया (अपार्धगोल पुंजछाया) मू ६।५

अवड्ढगोलावलिच्छाया (अपार्धगोलावलिछाया) मू ६।५

अवड्ढभाग (अपार्धभाग) मू १२।५

अवड्ढवाविसंठिय (अपार्द्धवापीसंस्थित) मू १०।३१

अवणीयउवणीयवयण (अपनीततोपनीतवचन) प ११।८६

अवणीयवयण (अपनीतवचन) प ११।८६

अवण्ण (अवर्ण) प ३०।२७,२८

अवतंस (अवतंस) मू ५।१

अवत्तव्वय (अवक्तव्यक) प १०।६ से १३

√अवदाल (अव+दलय्) अवदालेति प ३६।८१

अवदालेत्ता (अवदल्य) प ३६।८१

अवद्दार (अपद्वार) उ १।११७ से ११६

अवमंस (दे० अमावास्या) ज ७।१२७।१,१६७।१

अवय (अवका) प १।४६,१।४८।१; १।६२ शैवाल

अवर (अपर) प १।१।६,१।४८।४,८; १।६१ ज ४।१७; १३७,१५१,५।३६ चं ५।२ मू १।६।२; २।१; ३।१; १०।५,१२७; १३।५,१७; १८।१, २१

अवरक (अपरक) मू १३।१२

अवरत्त (अपरात्र) उ १।५१,६५,७६; ३।४८,५०, ५५,५७,६५,६८,७२,७५,७६,६८,१०६,१३१; ५।३६

अवरविदेह (अपरविदेह) प १६।३०; १७।१६१ ज २।६; ४।६४,६६,२१३,२६३।१

अवरविदेहकूड (अपरविदेहकूट) ज ४।६६

अवरवेयालि (अपर'वेयाली') प १६।४५

अवराइया (अपराजिता) ज ४।२०२।२,२१२, २१२।२

अवलद्ध (अपलब्ध) ५।४३

अवव (अवव) ज २।४

अववंग (अववाङ्ग) ज २।४

अवस (अवश) उ १।५२,७७

अवसण (अवसन) ज ३।१११,११३

अवसाण (अवसान) प ८।३ ज ३।६,२१७,२२२

अवसिट्ठ (अवशिष्ट) प २३।१७५ ज ४।१६२ से १६४,२०४,२०८,२१०, २६२,२७१,२७४; ५।४६,५०

अवसेय (अवशेष) प २।५४; ३।१८२;५।३७,३६, ७४, ८६,१०७,१४६,१५६,१६०,१६३,१६७, २००,२०३,२०५,२०७,२२४,२४२; १७।१७; २०।२३; २२।२४; २४।११; २६।४,८; २७।२; २८।१२५,१३३,१३६,१३७,१४१ से १४३; ३०।२४; ३६।२० ज २।४६,५६,६२,६५,६६, १०१,१०२,११३,११४; ४।५३,१४०,१६५, २६५,२६८; ५।४२,४५;७।१३४।४,१३५।४, १५३ मू १०।२२; १३।१; २०।३

अवहाय (अपहाय) ज २।६

अवहार (अपहार) प १२।३२

अवहिय (अपहृत) प १२।२४,३३

√अवहीर (अप+हृ) अवहीरंति प १२।७,८,१०, १२,१६,२०,२४,२७,३२ अवहीरति प १२।२७,३२

अवहीरमाण (अपह्रियमाण) प १२।२४,३३

अवाउक्काइय (अवायुकायिक) प २१।५०

अवाय (अवाय) प १५।५८।२; १५।६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवि (अपि) प १।१।३ ज ४।२०० सू १।२५;५।१ उ १।३१ ; ३।११ ; ४।६ ; ५।४५

अविंदमाण (अविन्दान) उ १।४१,४३

अविग्गह (अविग्रह) प ३६।६२

अविग्घ (अविघ्न) ज २।६४

अविणिज्जमाण (अविनीयमान) उ १।३५,४०,४३

अविणीय (अविनीत) ज ३।१०६ सू २०।६।६

अवितह (अवितथ) ज २।७८ उ १।२४,४२ ३।१०३

अवियाउरिया (दे० अविजनयित्री) उ ३।१३१

अवियाउरी (दे० अविजनयित्री) उ ३।९७

अविरत (अविरत) प ३।१८३

अविरत्त (अविरक्त) सू २०।७

अविरय (अविरत) प ११।८६

अविरल (अविरल) ज २।१५

अविरहिय (अविरहित) प ६।१६,६२,६३ ; ११। ७०;२८।४,२६,५० सू १०।७७ ; १६।२२।१७

अविराहियसंजम (अविराधितसंयम) प २०।६१

अविराहियसंजमासंजम (अविराधितसंयमासंयम) प २०।६१

अविसय (अविषय) प ११।६७;२८।१७,६३ ज ७।४६

अविसारय (अविशारद) प० १।१०१।११

अविसुद्ध (अविशुद्ध) प १७।१३८

अविसुद्धलेस्सतराग (अविशुद्धलेश्यतरक) प १७।७

अविसुद्धवण्णतराग (अविशुद्धवर्णतरक) प १७।६, १७

अविसेस (अविशेष) प २।३,६,९,१२,१५

अविसेसिय (अविशेषित) ज १।५१

अविस्साम (अविश्राम) प २।४८

अवीरिय (अवीर्य) ज ३।१११

√अवे (अप+इ) अवेति प २८।१०५ ; ३४।१९

अवेद (अवेद) प २।६४।१

अवेदग (अवेदक) प ३।९७;१३।१६

अवेदणा (अवेदना) प २।६४।१

अवेदय (अवेदक) प १८।६३ ; २८।१४०

अवेदिय (अवेदित) प ३६।८२

अव्वय (अव्यय) ज १।११,४७;३।१६७,२२६; ४।२२,५४,६४,१०२ ; ७।२१० उ ३।४३,४४

अव्वहिय (अव्यथित) ज २।४९

अव्वाबाह (अव्याबाध) प २।६४।१४,२०,२२; ३६।९४।१ ज ५।२१ उ ३।३०,३५

अव्वोच्छिण्ण (अव्यवच्छिन्न) ज ३।३

अव्वोच्छित्तिणय (अव्यवच्छित्तिनय) सू १७।१ ; २०।१

अव्वोयड (अव्याकृत) प ११।३७।२

√अस (अस्) अत्थि प १।७५,८०;५।९९; १२।९;१५।६५,६६;१७।३३;२८।१२३,१३६, १४१,१४२,१४५ ज १।४७ आसि ज १।४७ आसी प २।६४।५ सिया सू १०।२५

असइ (असकृत्) ज ७।२१२

असंकिलिट्ठ (असंक्लिष्ट) प २।३१;१७।१३८

असंख (असंख्य) प १।४८।६०

असंखभाग (असंख्यभाग) प १।४८।६०

असंखिज्जइभाग (असंख्येयभाग) प २३।१०१, १५१,१५७

असंखिज्जगुण (असंख्येयगुण) प १८।६३;२८।१४०

असंखिज्जतिभाग (असंख्येयभाग) प २।४८

असंखिज्जसमइय (असंख्येयसामयिक) प १५।६१

असंखेज्ज (असंख्येय) प १।१३,२०,२३,२६,२९, ४८,१।४८।८,४०,५९;२।१०,११,४१ से ४३, ४६,४८ ५०,५९;३।१८०;५।२,३,५,१२६, १२७,१४४,१४५,१५१;६।४२,६० से ६४,६८, १०।१६,१८ से २०,२३,२५,२८,३०;११।५०, ७०,७२;१२।७,८,१२,१६,२०,२४,२७,३१, ३२;१५।१२,२५,५८।१;१५।८३,८४,८७,९१, ९२,९४ से ९९,१०३,१०४,११८,१२० से १२३,१२५ से १२८,१३५ से १३७,१४० से १४२ ; १७।१४१,१४३;१८।३,२६,२७,३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८,४१,४३,६५,१०७,११७;२८।५,५१;३३।१०,१२,१३,१६,१७;३४।१३;३६।८,१३ से १५,१७ से २०,२२,२३,२५,२६,३३,३४,४४,६६,६८,६२ ज १।४६;२।४,५८,८४,६०,१५७;३।३;४।५२,१६५;५।४४ सु १३।२;१४।४,८;१८।१;१६।२२।१;१६।३४,३५,३७,३८

असंखेज्जइभाग (असंख्येयभाग) प १।७४,८४;२।१,२,४,५,७,८,१३,१६ से ३२,३४ ३५,३७,३८,४१ से ४३,४६,४६,५०,५२,५८ से ६०;४।१४६,१५१,१५७;१५।२२;१८।२७,७० से ७२,६५,११७;२०।६३;२१।३८,४० से ४२,४८,६३ से ६७,७०,७१,८४,८६,६० से ६२;२३।६१,६४,६६,६८,७३,७५ से ७७,८३ से ८६,८८ से ६०,६२,६५ से ६६,१०२ से १०४,१११ से ११४,११७,११८,१३४,१३५,१३८,१४०,१४२,१४३,१५१ से १५३,१५५,१५६,१६०,१६१,१६४,१६६ से १६६,१७१ से १७३;२८।४०,६६ उ ३।८३,१२०,१६१;४।२४

असंखेज्जग (असंख्येयक) प १२।७

असंखेज्जगुण (असंख्येयगुण) प २।६४।११;३।१० से २३,२६,२६ से ३६,३८,३६,४५ से ५२,५६ से ६३,७१ से ६६,१०१,१०३ से १०५,१०७,१११,११६,११७,११६,१२०,१२२,१२५ से १२६,१३१ से १७३,१७५ से १७७,१८२,१८३;५।५,१०,२०,३२,१२६,१५१;६।१२,१६,२५;१०।३ से ५;११।६०;१५।१३;१७।५७,६०,६३,६४,६७,६८,७१,७३,७४,७६,७६ से ८३,१४४ से १४६;२०।६४;२१।१०४,१०५;२८।७,५३;३४।२५;३६।३५ से ४१,५२,६२

असंखेज्जजीविय (असंख्येयजीविक) प १।३५,३६

असंखेज्जतिभाग (असंख्येयभाग) प २।५१,६१,६३,६४;४।१५५;१२।८,१२,१६,२४,२७,३१;१५।७,८,४०,४२;१८।३,४१,४३;२३।८१;२८।२२,३४,३६,६८;३३।१२,१३,१६,१७;३६।६६,७०,७३,७४

असंखेज्जपएसिय (असंख्येयप्रदेशिक) प ५।१३५,१३६,१६५,१६६,१८३,१८४,१६६,२००,२२०,२२१;१०।१७,२२,२७;११।४६

असंखेज्जपदेसिय (असंख्येयप्रदेशिक) प ३।१७६;५।१२७,१८४;१०।१७,१६,२३,२८

असंखेज्जभाग (असंख्येयभाग) प ५।५,१०,२०,३०,३२,१०२,१२६

असंखेज्जवासाउय (असंख्येयवर्षायुष्क) प ६।७१,७२,७६,८१,६४,६५,६७,१०७,१०८,११६;२१।५३;५४,७२

असंखेज्जसमइय (असंख्येयसामयिक) प ११।७१;२८।४,३८;३६।२,८४,६२

असंखेज्जसमयट्ठितिय (असंख्येयसमयस्थितिक) प ५।१४८;११।५१

असंखेज्जसमयठितीय (असंख्येयसमयस्थितिक) प ३।१८१

असंखेप्पद्धपविट्ठ (असंक्षेप्याध्वप्रविष्ट) प २३।१६३

असंग (असङ्ग) प २।६४।१,२१

असंजत (असंयत) प ३।१०५; ६।६७,६८

असंजय (असंयत) प ३।१०५; १७।२३,२५,३०;१८।६०;२०।६०;२१।७२;३२।१ से ४,६

असंजयभवियदव्वदेव (असंयतभविकद्रव्यदेव) प २०।६१

असंठाण (असंस्थान) प ३०।२७,२८

असंत (असत्) प २।६४।१७

असंतप्पमाण (असंतप्यमान) सू ६।१

असंदिद्ध (असंदिग्ध) उ० १।२४,४२

असंपत्त (असंप्राप्त) प १।२०,२३,२६,२६,४८;२।३१;१६।२२ ज ४।४२,७१,७७,६४,२६२;५।५,३८,४४ सू १०।१४२,१४७;१२।३०

असंभंत (असम्भ्रान्त) ज ५।५,७

असंविदित (असंविदित) उ १।१०७,१०८,११६,१२७

असंसारसमावण्ण (असंसारसमापन्न) प १।१० से
१३
असंसारसमावण्णग (असंसारसमापन्नक)
प ११।३९; २२।८
असकण्णी (अश्वकर्णी) प १।४८।१
असक्कारिय (असत्कारित) उ १।११७ से ११९
असच्चामोसभासग (असत्यमृषाभाषक) प ११।९०
असच्चामोसमण (असत्यमृषामनस्) प १६।१,७
असच्चामोसमणजोग (असत्यमृषामनोयोग)
प ३६।८९
असच्चामोसवइ (असत्यमृषावाक्) प १६।३,६,१३
असच्चामोसवइजोग (असत्यमृषावाग्योग)
प ३६।९०
असच्चामोसा (असत्यमृषा) प ११।२,३,३५,३७,
४२ से ४६,८३ से ८५,८८,८९
असण (अशन) प १।३५।३ उ ३।५०,५५,१०१,
११०,१३४,१४९
असणि (अशनि) प १।२६ सू २०।१
असणिमेह (अशनिमेघ) ज २।१३१
असण्णि (असंज्ञिन्) प १।८४; ३।११२; १७।२०;
१८।१२०; २०।६१,६३, २३।१६७,१७१;
२८।११७ से ११९; ३१।१ से ३,५,६,६।१;
३५।२०
असण्णिआउय (असंज्ञ्यायुष्क) प २०।६२
असण्णिभूत (असंज्ञिभूत) प ३५।२०
असण्णिभूय (असंज्ञिभूत) प १५।४८; १७।९;
३५।१८
असण्णिहि (असन्निधि) ज २।१६
असण्णिभूय (असंज्ञिभूत) प १७।२०
असत्थ (अशस्त्र) ज ३।९२, ११९ उ ३।३८,४०
असमोहत (असमवहत) प ३।१७४
असमोहय (असमवहत) प ३।१७४; ३६।३५ से
४१,४८ से ५१
असम्माणिय (असम्मानित) उ० १।११७ से ११९
असरीर (अशरीर) प २।६४।१२; ३६।९३,९४
असरीरि (अशरीरिन्) प २८।१४१

असाढय (अषाढक) प १।४२।१
असात (असात) प ३५।१।२; ३५।८,९
असातवेदग (असातवेदक) प ३।१७४
असातावेयणिज्ज (असातवेदनीय) प २३।२९,१८०
असामण्णक (असामान्यक) सू १३।५,६,१२,१३,१७
असाय (असात) प २२।५
असायावेदणिज्ज (असातवेदनीय) प २३।१६
असायावेयणिज्ज (असातवेदनीय) प २३।१६,६४,
१३६
असासय (अशाश्वत) ज ७।२०८,२०९
असाहुदंसण (असाधुदर्शन) उ ३।४७,७९
असि (असि) प २।४१; १५।१।२; १५।५०
ज २।२३;३१,१७८; ३।१७८; उ १।१३८
असिय (असित) प २।३१
असिरयण (असिरत्न) ज ३।१०९;१७८, २२०
असिरयणत्त (असिरत्नत्व) प २०।६०
असिलेस (अश्लेष) ज ७।१२९।१,१६२
असीइ (अशीति) प २।५९।३
असीइमंगुलमूसिय (अशीत्यङ्गुलोच्छ्रित) ज ३।१०९
असीति (अशीति) प० २।५१ सू १।२२; १२।५,१२
असुइ (अशुचि) प २।२० से २७ ज २।१३३; ५।५
उ १।६३;३।१२६,१३०
असुइजायकम्मकरण (अशुचिजातकर्मकरण)
उ० १।६३; ३।१२६
असुइय (अशुचिक) प १।८४
असुभ (अशुभ) प २।२० से २७; २२।४
असुभणाम (अशुभनामन्) प २३।३८;१२३
असुभत्त (अशुभत्व) प २८।२४ उ १।२७,१४०
असुर (असुर) प० २।३०।१;२।४०।१,५,१०;
५।३; ३६।४६ ज २।६४; ३।२४।१,२,
१३१।१,२,३।१८५,२०९; ५।५२; चं १।२
असुरकुमार (असुरकुमार) प १।१३१; २।३१ से
३३,४०।८; ४।३७ से ३९; ५।६ से ८,४८ से
५०,१२१; ६।१७,५२,६१,८१,८५,९३,१०१,
१०९,१११,११२,११४; ७।२; ८।३; ९।३;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५,१८; ११।४४; १२।२,१५,१६,३१; १३।१५,२०; १५।१९,३५,७१,७८,८४,८७, १०२,१३६,१३८; १६।३,११,१६; १७।१४ से १७,२६,३०,३३,३४,९३,९८,९९,१०१, १०२,१०५; १९।१; २०।३,५,८,११,१२,१५, २० से २४,२७,३५,३७,४४,६०; २१।५५, ६१,७०,९०; २२।२३,३७,४५; २८।१,२५, ७४,१०६; ३१।२; ३३।१०,२०; ३४।२,४,५; ३५।३; ३६।५,८,१९,२०,२३,२४,२६,३७, ४१,५०,५५,६९,७२ उ २०।७

असुरकुमारत्त (असुरकुमारत्व) प १५।९५,९७, ११९,१४१; ३६।१८,२०, २२ से २४

असुरकुमारराय (असुरकुमारराज) प २।३१,३२ ज २।११३; ५।५०,५१

असुरकुमारिंद (असुरकुमारेन्द्र) प २।३१,३२

असुरकुमारी (असुरकुमारी) प ४।४० से ४२; २०।१२

असुरिंद (असुरेन्द्र) ज २।११३; ५।५० से ५२ सू २०।७

असुह (अशुभ) प २।२० से २७

असेलेसिपडिवण्णग (अशैलेशीप्रतिपन्नक) प ११।३९; २२।८

असेस (अशेष) ज ७।१३५।२

असोग (अशोक) प० १।३५।३ ज २।६५; ३।१२, ३५,८८,१८८; ४।२१२।२; ५।५८ सू २०।८, २०।८।७ उ १।१; ३।५६,६४,६६,६८,७९

असोग (**लता**) (अशोकलता) प १।३९।१

असोगवडेंसय (अशोकावतंस) प २।५०,५२

असोगवणिया (अशोकवनिका) उ १।५५ से ५७, ८० से ८२

असोगवण (अशोकवन) ज ४।११६

असोगा (अशोका) ज ४।२१२

अस्स (अश्व) प १।६३

अस्संजत (असंयत) प ३२।६।१

अस्संजय (असंयत) प ११।८९; २८।१२९; ३२।६।१

अस्संजयभवियदव्वदेव (असंयतभविकद्रव्यदेव) प २०।६१

अस्सण्णि (असंज्ञिन्) प १।७४; ६।८०।१

अस्सतर (अश्वतर) प १।६३

अस्सदेवया (अश्वदेवता) सू १०।८३

अस्सपुरा (अश्वपुरा) प ४।२११

अस्सरह (अश्वरथ) प ३।२१,२२,३४

अस्सातावेदग (असातवेदक) प ३।१७४

अस्सातावेदणिज्ज (असातवेदनीय) प २३।१६

अस्सातावेयणिज्ज (असातवेदनीय) प २३।१६

√अस्साय (आ+स्वादय्) अस्साएइ प १५।३८ अस्साएंति प २८।२२,३९,६८

अस्सायण (आश्वायन) ज ७।१३२ सू० १०।९९

अस्सायावेदणिज्ज (असातवेदनीय) प २३।३१

अस्सिणी (अश्विनी) ज ७।११३।१,१२८,१२९, १३६,१४३,१४९,१५५,१५८,१५९; सू १०।१ से ६,१०,२२,२३,३४,६२,६५,६६,७५,८३, ९९,१२०,१३१ से १३३,१५४

अस्सेसा (अश्लेषा) ज ७।१२८; १३४,१३६,१४०, १४७,१५० सू १०।१ से ६,१४,२३,२५,४२, ६२,६९,७५,८३,१०७,१२०,१३१ से १३४।२, १५७

अस्सोई (आश्वयुजी) ज ७।१४०,१४३,१४९ सू १०।२३

अस्सोय (आश्वयुज) सू १०।१२४

अह (अथ) प ५।५ उ० ३।२९

अह (अधस्) ज ३।१८८

अहक्खाय (यथाख्यात) प १।१२४,१२९

अहक्खायचरित्तपरिणाम (यथाख्यातचरित्रपरिणाम) प० १३।१२

अहत (अहत) ज २।१००; ३।३५,२११; ५।५८

अहत्ता (अधस्ता) प० २८।२४,२६

अहमिंद (अहमिन्द्र) प २।६०,६१,६२।१,६३

अहय (अहत) ज ३।९,११७।१२,२२

अहर (अधर) प २।३१

अहवणं (अथवा) प० १२।१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहवा (अथवा) प १।१०३ ज २।६६ सू १०।१२० उ १।११५

अहाछंद (यथाछन्द) उ ३।१२०

अहाछंदविहारि (यथाछंदविहारिन्) उ ३।१२०

अहापडिरूव (यथाप्रतिरूप) उ १।२; ३।२६,६६, १३२; ५।२६

अहाणुपुव्वी (यथानुपूर्वी) ज ३।१७८,१७६,२०२, २१७; ५।४३

अहाबायर (यथाबादर) ज ३।१६२; ५।५,७

अहामालिय (यथामालिक) ज ३।६

अहारिह (यथार्ह) उ ३।११५

अहासुह (यथासुख) उ ३।१०३,११२,१३६,१४७, १४८; ४।११,१४,१५,१६

अहासुहुम (यथासूक्ष्म) ज ३।१६२

अहि (अहि) प १।६८,६६,७१ ज० २।४१

अहिग (अधिक) सू १।२७; १५।२४,२५

अहिगम (रुइ) (अधिगमरुचि) प १।१०।११

अहिगमरुइ (अधिगमरुचि) प १।१०।८

अहिगरणिया (आधिकरणिकी) प २२।१,३,४८, ५३ से ५६,५८,५६

अहिगरणिसंठिय (अधिकरणीसंस्थित) ज ३।६४, १३५,१५८

अहिगरणी (अधिकरणी) प २२।४८

अहिछत्ता (अहिछत्रा) प १।६३।२

√**अहिज्ज** (अधि+इ) अहिज्जइ उ २।१०; ३।१४; ५।२८

अहिज्जंत (अधीयान) प १।१०।१६

अहिज्जित्ता (अधीत्य) उ २।१०; ३।१४; ५।३६

अहिय (अधिक) प २।२७।२; १३।२२।२; २३।१४७, १५८,१६२,१६५ ज २।१३१; ३।३६,७६,११७, २२२; ४।१४६; ७।२७,२६,३० सू १।१४,१६, २१,२४; ६।१; १५।२८,३१,३२; १६।११।१

√**अहियास** (अधि+सह्, आस्) अहियासिज्जंति उ ५।४३ अहियासेइ ज २।६७

अहिलाण (दे०) ज ३।१०६,१७८ घोड़े के मुंह पर बांधे जानेवाला

अहिवइ (अधिपति) ज ३।२६,३६,१५६; ५।१८,४६

अहिसलाग (दे०) प १।७१

अहीण (अहीन) उ ५।४५

अहीय (अधीत) उ ३।४८,५०

अहुणोववण्ण (अधुनोपपन्न) उ ३।१५,८४,१२१, १६२

अहे (अधस्) प २।२० से २७,२७।३; २।३०,३१, ४१; ११।६५,६६,६६।१; १६।५५; २१।८७, ६०,६१; २८।१५,१६,६१,६२; ३३।१६ ज २।६५,७१; ७।५४,१६८।१ सू २।१; ४।१०; १६।२२; २०।१,२ उ १।४६; ३।५६, ६४,६८,७१,७४

अहे (अथ) उ ३।५१।१

अहेतु (अहेतु) प ३०।२७,२८

अहेदिसा (अधोदिशा) प ३।१७६,१७८

अहेलोइय (अधोलौकिक) प २१।६२,६३

अहेलोय (अधोलोक) प० ३।१२५ से १७३,१७५, १७७

अहेसत्तमा (अधःसप्तमी) प ३।१७,१८; ४।२२ से २४; ६।१६,५१,६०,८०,८८,६१,६२,१००, १०६; १०।२,३,१६।२६; २०।७,४३,५७; २१।५२,५६,६७,८७; ३०।२६; ३३।६,१७

अहेसत्तमापुढवि (अधःसप्तमीपृथ्वी) प० २०।५२

अहो (अहो) ज ३।१२६ उ १।६२; ५।२२

अहोरत्त (अहोरात्र) ज २।४,६६; ७।२० से २४, २६ से २६,१२२,१२६,१२७,१३४।१, १३५।१ से ४,१५६,१५७,१६० सू १।१४, १६,२१,२४,२७; २।३; ६।१; ८।१; १०।३,६३ से ७४,८४,१३४; १२।२ से ५,१२; १५।११, १२,२६ से ३१,३४

अहोलोग (अधोलोक) ज ५।१ से ३,५

अहोलोय (अधोलोक) प २।१,४,१०,१६ से १६,२८

अहोवाय (अधोवात) प १।२६

अहोसिर (अधःशिरस्) ज १।५; २।८३ उ० १।३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ

आइ (आदि) प ५।४,१४३,२१८; २५।४
ज २।२१; ५।२७,४०,५५,५७; ७।४५,५०
उ २।२२; ५।४५

√**आइक्ख** (आ+ख्या) आइक्खइ ज ७।२१४
उ १।९८

आइक्खग (आख्यायक) ज २।६४

आइगर (आदिकर) ज ५।११ उ ३।१२; ५।१४

आइच्च (आदित्य) ज ३।३; ७।२५,३०,१११,
११२।४,५ सू १।९।३; १०।१२८,१२९।४,५

आइच्चचार (आदित्यचार) चं ५।३

आइणग (आजिनक) ज ४।१३

आइण्ण (आकीर्ण) ज २।१३४; ३।१०३,१७८

आइय (आदिक) प १।५०,५१,६०,७५,७६,८१;
२४।८ ज २।३५,६४,१४४; ३।१८५;
४।२४८,२५१; ५।३८,५७; ७।१२६ उ २।१०,
१२; ३।१४,१६१,२५०; ५।२८,३९,४१

आइय (आचित) प १७।११९

आइल्ल (आदिम) प ५।१०२; २२।३५,५१,५४

आइल्लिग (आदिम) प १७।३०

आइल्लिय (आदिम) प २२।७३,७४

आईणग (आजिनक) सू २०।७

आईय (आदिक) प १४।१८; २८।११६;
उ १।६६,६७,९४; ४।१३

आउ (दे० अप्) प ६।१०२,१०४,११५; ९।४;
११।२६ से २८; १३।१६; १७।३३; १८।२६,
३२; २०।८,२२,२८; २१।८५; २२।२४; २८।१२३

आउ (आयुष्) ज १।२२,२७,५०; २।४९,५१,५३,
५४,५८,१३३ से १३५,१६१; ३।३; ७।१३०,
१८६।४,२११

आउ (काइय) (दे० अप्कायिक) प १७।१४०

आउकाइय (अप्कायिक) प १।१५; ३।५० से ५२,
५५, ६० से ६३,६६,७१ से ७४, ७७,८४ से
८७,९०,९५,१५९ से १६१,१८३; ४।६५ से
७०; ५।३,११,१२; ६।१९,१०२; १५।१३७।

आउकाइयत्त (अप्कायिकत्व) ज ७।२१२

आउक्काइय (अप्कायिक) प १।२१; २।४ से ६;
३।३; ६।८६,१२।२२; १५।२९,८५; १७।६०,
९६,१०२; १८।३८,४०,४२,५०; २०।१३,२५,
२६,४४; २१।२४,४०; २२।३१

आउकाय (अप्काय) सू २।१

आउक्खय (आयुःक्षय) उ० २।१३; ३।१८,८६,
१२५,१५२; ४।२६; ५।३०,४३

आउज्जीकरण (आवर्जीकरण) प ३६।८४

√**आउट्ट** (आ+वृत्) आउट्टेज्जा ज २।६७

आउट्टि (आवृत्ति) सू १२।१८ से २८

√**आउड** (आ+कुट्) आउडेइ ज ३।८८,१३५,
१५५

आउडिय (आकुटित) ज ३।८९,१५६

आउत्त (आयुक्त) प ११।८९ ज ३।१७८

आउदेवया (अब्देवता) सू १०।८३

आउपज्जव (आयुष्पर्यव) ज २।५१,५४,१२१,
१२६,१३०,१३८,१४०,१४९,१५४,१६०,१६३

आउय (आयुष्क) प ३।१७४; २०।६१,६३;
२२।२८; २३।१,१२,१८,३७,१४६,१६९,१८५
१९१,१९३,१९७ से २०१; २४।१४; २६।११;
२७।५; ३६।८२,८३।१,९२ ज २।४९,५८,१२३,
१२८,१४८,१५१,१५७; ३।२२५; ४।१०१

आउयबंध (आयुष्कबन्ध) प ६।११८,११९

आउयबंधद्धा (आयुष्कबन्धाध्वन्) प २३।१९३

आउल (आकुल) प० २।४१ ज० २।६५ सू २०।७

आउस (आयुष्मत्) प २।३,६,९,१२,१५,२० से २७,
६० से ६३; ३।३६; १५।४३,४५; ३६।७९,
८१ ज २।१६,१९ से २१,२३,२५,२६,२८,
३० से ३६,३९ से ४३,४८,४९,५१,५४,१२१,
१२६,१३०,१३३,१३८,१४०,१४९,१५४,१५९,
१६०,१६३; ७।१०१,१०२,१२६, सू ८।१०;
२०।७

आउह (आयुध) ज ३।७७,१०७,१२४ उ १।१३८

आउहघरसाला (आयुधगृहशाला) ज ३।४,५,९,१२,

१४,३०,४३,५१,६०,६८,१३०,१३६,१४०,
१४६,१७२,२२०
आउहघरिय (आयुधगृहिक) ज ३।५,६
आएज्जणाम (आदेयनामन्) प २३।१२६
आएस (आदेश) ज ३।१६७।६
आओग (आयोग) ज ३।१०३
आओजित (आयोजित) प २२।५७
आओजिय (आयोजित) प २२।५८
√आओस (आ+क्रुश्) आओसइ उ १।५७
आओसणा (आक्रोशना) उ १।५७,८२
आकासिया (आकाशिका) ज २।१७
आकुल (आकुल) ज ३।६,२२२
आकोसायंत (आक्रोशायमान) ज २।१५
आगइ (आगति) ज २।७१
√आगच्छ (आ+गम्) आगच्छइ ज २।२४,
३।१०७,११४; ७।२० से २५,७६,८२ सू २।३
उ १।७० आगच्छंति प ११।७२; २८।४०,
४३,६६ ज २।३४,३५,३७,१०१; ७।१०१,
१०२,२०२,२०४,२०६ सू ८।१ आगच्छति
सू २।३ आगच्छेज्ज प ३६।६१ आगच्छेज्जा
प ३६।८१ ज २।६
आगच्छमाण (आगच्छत्) सू २०।२
आगत (आगत) प २०।६,१०
√आगम (आ+गम्) आगमेसि ज २।८१
आगमण (आगमन) उ ३।१६६
आगमेस्स (आगमिष्यत्) ज २।१३८,१६१
आगम्म (आगम्य) ज ५।५५ उ ५।७
आगय (आगत) प २०।६ से ६,११ से १३;
३४।१।१ ज ३।८२ सू २०।७ उ० १।१७,२२,
१०७,१०८,१२७,१२८,१३८,१४०; ३।७,२१,
२५,२६,६१
आगर (आकर) प १।७४ ज २।२२,१३१;
३।१८,३१,८१,१६७।२,८,३।१८०,१८५,२०६,
२२१ उ० ३।१०१; ५।३६
आगरपति (आकरपति) ज ३।८१
आगायमाण (आगायत्) ज ५।५,७ से १२,१७
उ० ३।११४
आगार (आकार) प १।३८।३; ३३।१६,२४
आगार (आगार) प ३०।२५,२६
आगारभाव (आकारभाव) ज १।७,२१,२६,२७,
२६,३३,४६,५०; २।७,१४,१५,२०,५२,५६ से
५८,६५,१२२,१२३,१२७,१२८,१३१ से १३३,
१३६,१४७,१४८,१५०,१५१,१५६,१५७,१५६
१६१,१६४; ४।५६,८२,१००,१०१,१०६,१७०,
१७१
आगारभावमाता (आकारभावमात्रा) प १७।१५०,
१५२,१५५
आगरिस (आकर्ष) प ६।१।१; ६।१२०,१२१,१२३
आगास (आकाश) प २।६४।१६; १५।५३,५४,
५७ ज ३।१०४,१०५,१०७,२११; ५।५८
सू २।६
आगासत्थिकाय (आकाशास्तिकाय) प १।३;
३।११४,११५,११८,१२२; ५।१२४; १५।५३,
५४,५७
आगासथिग्गल (आकाशथिग्गल) प १५।५३,५६;
१४।१२३
आगासफलोवम (आकाशफलोपम) ज २।१७
आगासफालिओवमा (दे०) प १७।१३५
आघवणा (आख्यान) उ ३।१०६
आघवित्तए (आख्यातुम्) उ ३।१०६
√आचिट्ठ (आ+स्था) आचिट्ठामो ज ३।११३
आजीविय (आजीविक) प २०।६१
आजोजित (आयोजित) प २२।५७
आडोव (आटोप) ज ७।१७८
आढई (आढकी) १।३७।१
आढत्त (आरब्ध) प १३।१४८
√आढा (आ+दृ) आढाइ उ १।३८; ३।५६
आढेंति उ ३।११८
आणंद (आनन्द) ज ७।१२२।२ सू १०।८४।२
उ १।७१,७२; २।२१
आणंदकूड (आनन्दकूट) ज ४।१०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आणंदा (आनन्दा) ज ५।८।१

आणंदिय (आनन्दित) ज ३।५,६,८,१५,१६,३१,५२,५३,६१,६२,६६,७०,७७,८४,६१,१००,१३४,१३७,१४१,१४२,१५०,१६५,१७३,१८१,१८६,१६६,२१३;५।५,१५,२१,२३,२७,२८,२६,४१,५५,५७,७० उ १।२१,४२;३।१३६

आणण (आनन) प २।४६ ज ३।६,१८,६३,१८०,२२२

आणत (आनत) प १।१३५

√आणत्त (अन्यत्व) प १५।४४,४५

आणत्ति (आज्ञप्ति) ज ३।२६,३६,४७,५६,६४,७२,१३३,१३८,१४५;५।६१ उ १।११६

आणत्तिया (आज्ञप्तिका) ज २।१०५;३।७,६,१२,१३,१५,१८,१६;२८,२६,३१,३२,४१,४२,४७,४६,५०,५२,५३,५८,५६,६१,६२,६४,६६,६७,६६,७०,७४ से ७६,८३,६६,१००,१२८,१४१,१४२,१४५,१४७,१४८,१५१,१५४,१६४,१६५,१६८ से १७१,१७३,१७५,१८०,१८१,१६१,१६८,१६६,२१२,२१३,५।३,२८,६८,६६ से ७३ उ १।१७,१८,१२३;३।७;४।१६,१७;५।१८

आणपाणपज्जत्ति (आनप्राणपर्याप्ति, आनापान-पर्याप्ति) उ ३।१५।८४

आणपाणु (आनप्राण, आनापान) प १०।५,३।१

√आणम (आ + नम्) आणमंति प ७।१ से ४,६ से १५

आणमणी (आज्ञापनी) प ११।६,६,२७,३७।१

आणय (आनत) प २।४६,५८,५६,५६।२,६३;३।१८३;४।२५५ से २५७;६।३५,५६,६६,८६,६६,११३;७।१६;१५।८८;२१।७०,६२;२८।८३;३३।१६;३४।१६,१८ ज ४।२४६;५।४६;७।१७८

√आणव (आ + ज्ञापय्)

आणवेइ ज ५।२२,२६ उ १।११०

आणा (आज्ञा) प १।१०१।५ ज १।४५;३।८,१६,५३,६२,७०,७७,८४,१००,१४२,१६५,१८१,१८५,१६२,२०६,२२१;५।१६,२३,७३ उ १।२०,४५,१०८

आणाईसर (आज्ञेश्वर) प २।३०,३१,४१,४६ उ ५।१०

आणापाणु (आनप्राण, आनापान) सू ८।१;२०।५

आणापाणुचरिम (आनप्राणचरम, आनापानचरम) प १०।४०,४१

आणापाणुपज्जत्ति (आनप्राणपर्याप्ति, आनापान-पर्याप्ति) प २८।१४२

आणामिय (आनमित) ज २।१५

आणारुइ (आज्ञारुचि) प १।१०१।१,५

आणु (आन) प १।४८।५३

आणुगामिय (आनुगामिक) प ३३।३५,३६

आणुपाण (आनप्राण, आनापान) प १।४८।५५

आणुपुव्विणाम (आनुपूर्वीनामन्) प २३।५४,१११,११३,११४,१४६

आणुपुव्वी (आनुपूर्वी) प २।४७।३;११।६८,६६,६६।१;२३।११२,११५,१७५,१६०;२८।१८,१६,६४,६५ ज ७।४७,५० सू २०।८ उ २।१२,२२;५।३६

आणुपुव्वीणाम (आनुपूर्वीनामन्) प २३।३८

आणेउं (आनेतुम्) उ १।१०७

आणेत्ता (आनीय) उ ४।१६

आणेयव्व (आनेतव्य) ज २।६४

आयपत्त (आतपत्र) ज ३।३

आतरक्ख (आत्मरक्ष) प २।३१,४३

आतव (आतप) ज २।१३४;३।११७ सू १६।३,४

आतवा (आतपा) सू १८।२४

आतीय (आदिक) उ ४।१८

आदंस (आदर्श) ज ३।११;५।८

आदंसघर (आदर्शगृह) ज ३।२२२,२२४

आदंसिया (दे०) प १७।१३५ ज २।१७

आदरिस (आदर्श) ज २।६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदाण (आदान) सू १२।१५
आदाय (आदाय) ज २।६५
आदि (आदि) प १।६४,७६,८६;५।२५,४६,१३१, १३४,१३६,१४०,१४७,१६३,१६६,१६६, १७२,१७४,१७७,१८१,१८४,१८७,१६३, १६७,२००,२०३,२०५,२२१,२२४,२३०,२३२, २३४,२३७,२३६; १०।२; ११।६६,६७,६६।१; २०।२५; २३।१०८; २४।८; २६।६; २८।१।२, २८।१६,१७,६२,६३,१२३,१३३,१३६,१३७, १४०; ३६।२०,४६ ज २।६।१,२।७१,१३१, १४५ चं २।३ सू १।६।३; ५।१; १०।५; ११।२ से ६
आदिच्च (आदित्य) सू १।१३,१४,१६,१७,२१, २४,२७; २।३; ६।१; १०।५,१०,११,७७, १२।१,५,१० से १२; १३।५; १५।२३ से २५; १६।२२।४,७,८,२२; २०।५
आदिच्चचार (आदित्यचार) सू १०।१२१,१२३
आदिपदेस (आदिप्रदेश) सू १।१६
आदिय (आदिक) प १।४६,६६; २८।१४५ सू १०।१,१३१; २०।५
आदिल्ल (आदिम) प ५।१०५; २२।५१ सू १६।२२।२५
आदिल्लिय (आदिम) प १७।६७
आदीय (आदिक) प ६।१२३;११।३०;२२।४५; २४।६ से ११;२६।८;२८।१२३,१२६,१३७, १४०,१४५; ३६।२० उ १।११६,११६ से १२२, १२५; ३।३१,४०
आदेज्ज (आदेय) ज २।१५
आदेज्जणाम (आदेयनामन्) प २३।३८
आदेस (आदेश) प १८।६०
√**आधाव** (आ+धाव्) आधावेंति ज ५।५७
आपडिपुच्छमाण (आप्रतिपृच्छत्) ज २।६५
√**आपुच्छ** (आ+प्रच्छ्) आपुच्छइ उ ३।१४८; ४।१५ आपुच्छामि उ ३।१३६; ४।४; ५।२७
आपुच्छणा (आप्रच्छना) उ २।६
आपुच्छणिज्ज (आप्रच्छनीय) उ ३।११
आपुच्छित्ता (आपृच्छ्य) उ २।११; ३।५०,५।३८
आपूरेंत (आपूरयत्) ज ३।१४,१७२
आपूरेमाण (आपूर्यमाण) ज ४।३५,४२,६४,१७४, २६२;५।३८
आबाहा (आबाधा) ज २।३०,३६,४१
आभंकर (आभङ्कर) सू २०।८,२०।८।७
आभरण (आभरण) प २।३०,३१,४१,४६; ११।२५; १५।५५।२ ज २।६५; ३।६,११,१२, २६,३६,४७,५६,६४,७२,७८,८१,८५,१३३, १४५,१८४,२२२,२२४; सू २०।७ उ १।१६; ४२;३।२६,११३,१४१; ४।१२,२०
आभरण (वासा) (आभरणवर्षा) ज ५।५७
आभरणविहि (आभरणविधि) ज ३।१६७।४
आभरणारुहण (आभरणारोहण आभरणारोपण) ज ३।१२
आभासिय (आभाषिक) प १।८६,८६
आभिओग (आभियोग) प २०।६१ ज २।२६,६७, ६८; ५।१४,१५,५३,६१,७२,७३ उ ३।३७,६१
आभिओगसेढी (आभियोगश्रेणी) ज ४।१७२
आभिओगिय (आभियोगिक) प २०।६१ ज ५।३, ४,२८,४३,५०
आभिओग्ग (आभियोग्य) ज १।१३; ३।१६१, १६२,१६६,२०७,२०८; ५।२८,५४,५५
आभिओग्गसेढी (आभियोग्यश्रेणी) ज १।२८ से ३२; ६।६५
आभिणिबोहिय (आभिनिबोधिक) प १७।११२, ११३
आभिणिबोहियणाण (आभिनिबोधिकज्ञान) प ५।५, ७,२०,२४,४१,४२,४६,७८,६३,६७,१११, ११२; १७।११२,११३;२०।१७,१८,३४; २६।२,१२,१७,१६,२१
आभिणिबोहियणाणारिय (आभिनिबोधिकज्ञानार्य) प १।६६
आभिणिबोहियणाणावरणिज्ज (आभिनिबोधिक-ज्ञानावरणीय) प २३।२५
आभिणिबोहियणाणि (आभिणिबोधिकज्ञानिन्) प ३।१०१,१०३;५।४० से ४२,७७ से ७६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९२ से ९४,९९,१०० से ११२,११७; १३।१४, १७,१९; १८।८०; २८।१३६

आभिणिबोहियनाणपरिणाम (आभिनिबोधिकज्ञान-परिणाम) प० १३।९

आभियोगसेढी (आभियोगश्रेणी) ज ४।२००

आभिसेक्क (आभिषेक्य) ज ३।१५,१७,२०,३१, ३३,५४;६३,६४,७१,७७,९१,१४३,१५१,१६६, १७३,१७५,१७७,१७८,१८२,१८३,१८५, १९९,२०२,२०४,२१४,२१७; ४।१४० उ ५।१८

आभिसेय (आभिषेक) ज ३।१०९

आभूय (आभूत) उ १।७४

आभोएत्ता (आभोग्य) ज २।९०

आभोएमाण (आभोगयत्) उ ३।७,९१

आभोग (आभोग) प १४।१८।१

आभोगणिव्वत्तिय (आभोगनिर्वर्तित) प १४।९; २८।४,२५,२७,३७,४७,५०,७३ से ७५; ३४।५

√**आभोय** (आ+भोगय्) आभोएइ ज २।९०,९३; ३।५६,१४५; ५।२१ आभोएंति ज ३।११३; ५।३

आभोवण (आभोगन) प ३४।१।१

√**आमंत** (आ+मंत्रय्) आमंतेइ उ ३।११०; ४।१६

आमंतणी (आमन्त्रणी) प ११।३७।१

आमंतेत्ता (आमन्त्र्य) उ ३।५०; ४।१६

आमलग (आमलक) प १।३६।१

आमलगसारिय (आमलकसारिक) सू १०।१२०

√**आमुस** (आ+मृश्) आमुसइ उ १।६१

आमुह (आमुख) सू १९।२३

आमेल (आपीड) प २।४१

आमेलग (आमेलक) ज २।१५;)३।१०९

आय (दे०) प १।४७

आय (आत्मन्) प १४।३; १४।१८।१

आय (आय) उ १।४१,४३

आयंक (आतङ्क) ज २।४३;५।५ उ ३।३५,११२, १२८

आयंत (आचान्त) ज ३।८२ उ ३।५१,५६

आयंस (आदर्श) ज २।१५;५।५५

आयंसमुह (आदर्शमुख) प १।८६

आयंसलिवि (आदर्शलिपि) प १।९८

आयत (आयत) प १।४ से ६;२।५० से ५२,५७, ५८,६१,६२;१०।१५ से २५,२७ से ३०; १५।५२ ज ३।२४,१०६,१३१,१३८।१

आयय (आतत) प १।७;२।३१,५३ से ५६,५६, ६०;१०।२६;१३।२४ ज १।१८,२०,२३,२५, २८,३२,४८;४।८१,९८,१०३,१०८,१७२, १९१,२०३,२०५,२१४,२४५,२५१,२५२, २६८ उ १।२२,१४०

आयर (आदर) ज ३।१२,७८,१८०,२०९;५।२२, २६

आयरक्ख (आत्मरक्ष) प २।३० से ३३,३५;४०।५; २।४१,४८ से ५९ ज १।४५;२।९०; ४।२०, ११२,१५१।२; २।१५९;५।१,१९,४०,४९ से ५१,५२।२,५३;५६ सू १८।२३

आयरिय (आचार्य) प १६।५१ ज ३।३५ चं १।२ उ ५।२६,२८

आयव (आतप) ज ७।१२२।३ सू १०।८४।३

आयवणाम (आतपनामन्) प २३।३८,११५

आयसरीर (आत्मशरीर) प २८।२०,३२,६६

आयाए (आदाय) उ १।९३

आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमित (आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमित) उ ३।९९

आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिय (आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमित) ज ३।६८

आयाम (आयाम) प २।५०,५९,६४; २१।८४,८६, ८७,९० से ९३; ३६।६६,६८,७०,७२ से ७४, ८१ ज १।७,२०,२३ से २५,२८,३२,३७,४०, ४३,४८,५१; २।६,१५,१४१ से १४५;३।१, १८;३१,५२,६१,६९,९५,९६,१३१,१३७, १३८,१४१,१५९,१६०,१६४,१८०; ४।१,३,

६,७,६,१२,१४,१५,१६,२४,२५,३१,३३,३६ से ४१,४७,५२ से ५५,५७,५६,६२,६४,६६ से ६८,७०,७४ से ७६,८०,८१,८६,८८,८६,६१ से ६३,६८,१०२,१०३,१०८,११०,११२,११४, ११६,११८ से १२०,१२२ से १२७,१३२, १३६,१४०,१४३,१४५ से १४७,१५३ से १५६, १६५,१६७,१६६,१७२,१७४,१७६,१७८, २००,२१५,२१६,२१८,२१६,२२१,२४२, २४५,२४८;५।३५;७।७,१४,१६,३१,३२।१, ३३,३४,६६,७३ से ७८,६०,६३,६४,१०७, २०७ सू १।१४,२६,२७; ४।३,५ से ८;१८।६ से १३; १६।२०,३० उ ५।४

आयारभाव (आकारभाव) ज १।२२

आयावण (आतापन) उ ३।५०

आयावणभूमी (आतापनभूमी) उ ३।५०,५१,५३

आयावेमाण (आतापयत्) उ ३।५०

आयाहिण (आदक्षिण) ज १।६ ; २।६ ; ३।५ ; ५।५,४४,४६ उ १।१६,२१ ; ३।११३;४।१३

आरंभ (आरम्भ) उ १।२७,१४०

आरंभिया (आरम्भिकी) प १७।११,२२,२३,२५; २२।६०,६१,६६ से ६६,७६,६१,६८,१०१

आरंभियाकिरिया (आरम्भिकीक्रिया) प २२।६७ से ६६

आरण (आरण) प १।१३५; २।४६,५६,५६।२, ६०,६३;३।१८३;४।२६१ से २६३;६।३७,५६, ६६;७।१८;१५।८८; २१।७०,६२;२८।८५; ३३।१६ ; ३४।१६,१८ ज ५।४६

आरद्ध (आरब्ध) प २०।६०

आरबक (आरब) ज ३।८१

आरबी (आरबी) ज ३।११।२

आरब्भ (आरब्ध) प १७।३२

आरभड (आरभट) ज ५।५७

√आरस (आ+रस्) आरसइ उ १।६० आरससि उ १।८५

आरसिय (आरसित) उ १।६१,८६

आराम (आराम) ज २।६५;५।५,७ उ ३।३६,३६

√आराह (आ+राध्) आराहेहिति उ ५।४३

आराहणविराहणी (आराधनविराधनी) प ११।३

आराहणी (आराधनी) प ११।३,८

आराहय (आराधक) प ११।८६ उ १।२०

आराहेत्ता (आराध्य) उ ५।४३

आरिय (आर्य) प १।८८,६०,६३।६,१।१२६ उ १।१७

आरूढ (आरूढ) ज ३।३५,१२१

आरुभित्ता (आरुह्य) सू ६।४

√आरुह (आ+रुह्) आरुहेति ज २।१०३,१०४

आरुहेत्ता (आरुह्य) ज २।१०३

आरोग्ग (आरोग्य) ज ३।६२,११६

आरोहग (आरोहक) ज ३।१७८

आलइय (आलगित) प २।५० ज ५।१८

आलंकारिय (आलंकारिक) ज ३।१५०

आलंबण (आलम्बन) ज ४।२६

आलंबणभूय (आलम्बनभूत) उ ३।११

आलय (आलय) ज २।७१

आलावग (आलापक) प १७।१६७ से १७२; २१।३१ सू ८।१

आलिंगणवट्टिय (आलिङ्गनवर्तिक) ज ४।१३ सू २०।७

आलिंगपुक्खर (आलिङ्गपुष्कर) ज १।१३,२१,२६, ३३,३६,३६,४६;२।७,३८,५२,५७,११२, १२७,१४७,१५०,१५६,१६१,१६४;३।१६२; ४।२,८,११;५।३२

आलित्त (आदीप्त) उ ३।११३

आलिसंद (दे०) प १।४५।१

आलिसंदग (दे०) ज २।३७

√आलिह (आ+लिख्) आलिहइ ज ३।१२,८८; ५।५८

आलिहमाण (आलिखत्) ज ३।६५,१५६

आलिहिज्जमाण (आलिख्यमान) ज ३।६६,१६०

आलिहित्ता (आलिख्य) ज ३।१२

आलुग (आलुक) प १।४८।२

आलोअंत (आलोकमान) ज ३।१७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आलोइय (आलोचित) उ २।१२;३।१५०,१६१; ५।२८,३६,४१

आलोगभूय (आलोकभूत) ज ३।६६,१६०

आलोय (आलोक) ज ३।९,१२,१८,७७,८८,९३, ९५,१५६,१७८,१८०,२२२; ५।४३,४६

√आलोय (आ+लोच्) आलोएहि उ ३।११५; ४।२२

आवकहिय (यावत्कथिक) प १।१२५

√आवज्ज (आ+पद्) आवज्जंति प ११।७२

आवड (आवर्त) ज ५।३२

आवडिय (आपतित) ज ५।२५

आवण (आपण) ज ३।३२

आवणगिह (आपणगृह) ज ३।१६७।२

आवत्त (आवर्त) प १।६३ ज ३।३;४।२३,३५, ३७,४२,७१,७७,९४,१८८ से १९१,२६२; ७।५५ सू १९।२२।१०,११; १९।२३

आवत्तकूड (आवर्तकूट) ज ४।१९२

आवत्तग (आवर्तक) ज ३।१०९

आवरण (आवरण) ज ३।३५,११९,१६७।९,१७८

आवरित्ता (आवृत्य) सू २०।२

√आवरिस (आ+वृष्) आवरिसेज्जा ज ५।७

आवरेत्ता (आवृत्य) सू २०।२

आवरेमाण (आवृन्वत्) सू २०।३

आवलि (आवलि) ज ५।२८

आवलिया (आवलिका) प १२।२७; १८।३,२७ ज २।४ चं ५।१ सू १।९।१; ८।१ २०।५

आवलियाणिवात (आवलिकानिपात) सू १०।१

√आवस (आ+वस्) आवसामि उ ३।११८

आवसह (आवसथ) ज ३।१९,३१,३२।२,५३,६२, ७०,१४२,१६५,१८१

आवसिसा (ओस्य) ज ३।२२५

आवस्सग (आवश्यक) उ ३।३१

आवाग (आपाक) प २३।१३ से २३

आवाड (आपात) ज ३।१०३ से १०५,१०७ से ११५,१२५ से १२७

आवास (आवास) प १५।५५।३ ज ३।१८,५२,६१, ६९,७७,८४,१४१,१५३,१६४,१६७।१३,१८० उ ५।४१

आविद्ध (आविद्ध) ज ३।९,७७,१०७,१०९,१२४, २२२; ५।५६ उ १।१३८

आविद्धकंठ (आविद्धकण्ठ) ज ३।२०९

आवीकम्म (आविष्कर्मन्) ज २।७१

आवेढिय (आवेष्टित) प १५।५१

आस (अश्व) प २।४०।१०; ११।२१ ज २।३५; ३।९८,१६७।४,१७८,१७९,२२१; ७।१३, १८६।३ उ १।१४,१५,२१,१२१,१२६,१३३, १३६,१३७

आस (आस्य) प २।४०।१०

√आस (आस्) आसि १।४७

आसकण्ण (अश्वकर्ण) प १।८६

आसक्खंधसंठिय (अश्वस्कन्धसंस्थित) सू १०।३४

आसखंध (अश्वस्कन्ध) ज ४।१७८

आसखंधग (अश्वस्कन्धक) ज ७।१३३।१

आसग (आस्यक) उ १।८९,९०

आसण (आसन) प ११।२५ ज २।८९,९०,९२, ९३; ३,५५,५६,६४,७२,१०३,११२,११३, १४४,१४५; ५।२,३,७,२०,२१ सू २०।४ उ ३।१०१,१३४

आसत्त (आसक्त) प २।३०,३१,४१ ज २।७,३०, ३५,८८

आसत्थ (आश्वस्त) उ १।२४,९२

आसधर (अश्वधर) ज० ३।१७९

आसपुरा (अश्वपुरा) ज ४।२१२।२

आसम (आश्रम) प १।७४ ज २।२२,१३१; ३।१८,३१,३२,१८०,१८५,२०९ उ ३।५५,१०१

आसमुह (अश्वमुख) प १।८६

आसय (आस्यक) उ १।६१,६२,८६,८७

√आसय (आस्) आसयंति ज १।१३,३०,३३,३६; २।७; ४।२,६४,८७,१०४,१७९,१८५,१९१, १९७,२००,२०१,२०९,२१४,२३४,२४०, २४१,२४७

आसरयण (अश्वरत्न) ज ३।१०९,२२०
आसरयणत्त (अश्वरत्नत्व) प २०।५९
आसरह (अश्वरथ) ज ३।३४ से ३६ उ १।११०; ५।३८
आसल (दे०) प १७।१३४
आसव (आश्रव) प १।१०।१२; १७।१३४
आसा (आशा) उ ३।१५९
आसाएमाण (आस्वादयत्) उ १।३४,४९,७४
आसाढ (आषाढ) ज २।६५; ७।१०४,११३,११४, १२९ सू १०।१२४,१२६ उ ३।४०
आसाढा (आषाढा) सू १०।७५,१२०,१५५,१५६; ११।२ से ६; १२।२४ से २८
आसाढी (आषाढी) ज ७।१३७,१४०,१४६,१४९, १५३,१५५ सू १०।७,१९,२४,२५,२६
आसाय (आस्वाद) प १७।१३० से १३५ ज २।१७,१८
√आसाय (आ+स्वाद्) आसाएंति प २८।२२, ३४,६८
आसायणिज्ज (आस्वादनीय) प १७।१३४ ज २।१८
आसालिय (आशालिक, आसालिग) प १।६८,७३, ७४
आसासग (अश्वास्यक) प २।४०।१०
आसासण (आश्वसन) ज ७।१८६।२ सू २०।८, २०।८।२
आसिय (आसिक्त) ज २।६५; ३।७,१८४; ५।७
आसीत (आशीत) प २।२७।१
आसीत्तिय (दे०) सू १०।१२०
आसीविस (आशीविष) प १।७० ज ४।२१२
आसुरुत्त (आशुरक्त) ज ३।२६,३९,४७,१०७, १०९,१३३ उ १।२२,५७,८२,११५ से ११७, ११९,१४०
आसोइ (आश्वयुजी) ज ७।१३७ सू १०।७,१०,२२, २३,२६
आसोत्थ (अश्वत्थ) प १।३६।१
आसोय (आश्वयुज) ज ७।१०४ उ ३।४०
√आह (ब्रू) आहंसु सू १।२० आहु ज ७।११२।२,५ सू १०।१२९।२,५
आहच्च (दे०) प १७।२,२५; २८।२१,३३,३८,६७
आहत (आहत) प २।३०,३१,४१,४९ सू १९।२३, २६
आहय (आहत) ज १।४५; ३।२६,८२,१३३; ५।१, १९; ७।५५,५८ सू १८।२३
√आहर (आ+हृ) आहरेइ उ ३।५१
√आहार (आ+हृ) आहारिस्सइ ज २।१४६ आहारिस्संति ज २।१३४,१४६ आहारेइ उ ३।५० आहारेंति प १५।४६ से ४९; १७।२, २५; २८।५ से ७,९ से २३,३० से ३५,३९, ४०,५१,५२,५३,५५ से ६९,६८ से १०१; ३४।६ से ९,११,१२ आहारेमि प ११।१२,१७
आहार (आहार) प १।१।७,१।४८।५५; ३।१।१; १०।५३।१; ११।१२; १५।१।१; १७।१।१; १७।१८; १८।१।१; २८।१।१; २८।३ से ५, २०,२७ से ३०,३२,३७,३८,४०,४७,४९ से ५१,६६,६९,७३ से ७५,९७,१०६।१; ३४।१।१,३४।१ से ३,५; ३६।१।१ ज २।१६, १९,५२,५६,१४६,१५९,१६१ उ ३।५१,५३,५४
आहार (आधार) उ ३।११
आहारग (आहारक) प ३।१०७; १२।१३,२८, ३६; २१।१०४,१०५; २३।४२,६१,६२,१४६, १७४; २८।१०८ से ११०,११२,११४ से ११६, ११८,११९,१२१,१२३,१२४,१३०,१३१,१३६, १३७,१४१,१४२
आहारगमीसगसरीर (आहारकमिश्रकशरीर) प १६।१५
आहारगमीससरीर (आहारकमिश्रशरीर) प १६।१, १०,१५; ३६।८७
आहारगमीसासरीर (आहारकमिश्रकशरीर) प १६।१०,१५; ३६।८७
आहारगसमुग्घात (आहारकसमुद्घात) प ३६।३३
आहारगसमुग्घाय (आहारकसमुद्घात) प ३६।१ २,७,९,१०,१३,१४,३०,३५,५३,५८,७४
आहारगसरीर (आहारकशरीर) प १२।१३,२१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४; १६।१,१०,१५; २१।७२ से ७४,९६,९९, १०१,१०२,१०४,१०५; २३।१८६; ३६।८७
आहारगसरीरय (आरारकशरीरक) प १२।९
आहारगसरीरि (आहारकशरीरिन्) प २८।१४१
आहारचरिम (आहारचरम) प १०।४२,४३
आहारत्त (आहारत्व) प २८।२२ से २४,३४ से ३६,३९,४०,४२,४५,४८,६८,६९,७१; ३४।६
आहारपज्जत्ति (आहारपर्याप्ति) प २८।१४२,१४३, उ ३।१५,८४
आहारपय (आहारपद) ज ७।५०
आहारभूय (आधारभूत) उ ३।११
आहारय (आहारक) प १२।१,५,२५; १८।९४ से ९७; २१।१; २८।१०६ से १०८,१११,११३, ११७,११९,१२०,१२२,१२५,१२७ से १२९, १३२,१४३
आहारयसरीर (आहारकशरीर) प १२।१७
आहारसण्णा (आहारसंज्ञा) प ८।१ से ११
आहारेत्ता (आहार्य) ज २।१९
आहारेमाण (आहारयत्) प ११।१२,१७
आहिंड (आ+हिण्ड्) आहिंडह उ ३।१०१
आहित (आख्यात) सू १।१०,११,१५ से १८,२०, २२,२३,२५; १९।२२।३
आहिय (आख्यात) प ३४।१।१ ज २।४।२; ७।३१,३३ चं २।३,५ सू १।६।३,५
आहिवच्च (आधिपत्य) ज ३।१६७।१३
आहुट्ठ (दे०,अर्धचतुर्थ) सू १९।१
आहुणिय (आधुनिक) ज ३।९८; ५।५; ७।१८६।१
आहूय (आहूत) उ ३।४८;५० सू २०।८,२०।८।१
आहेवच्च (आधिपत्य) प २।३० से ३३,३५,३६, ४१,४३, ४८ से ५१,५७,५९ ज १।४५; १८५, २०९,२२१; ५।१९ उ ५।१०

इ

इ (इति) प १।४८।२ ज १।२६ सू १।८
इ (चित्) उ १।३६; ३।११
इइ (इति) सू २०।९
इंगाल (अङ्गार) प १।२६ उ ३।५०
इंगालभूय (अंगारभूत) ज २।१३२,१४१
इंगालय (अंगारक) ज ७।१८६।१ सू २०।८,२०।८।१
इंगिय (इङ्गित) ज ३।८७
इंद (इन्द्र) प २।४०,४५,४७।१ ज २।९४; ३।२४।३, ३७।१,४५।१; १३१।३,१८५,२०९; ५।४९, ५२,५७; ७।५६,५७,५९,६०,१३०,१८६।४ सू १९।२४,२७
इंदगोवय (इन्द्रगोपक) प १।५०
इंदग्गह (इन्द्रग्रह) ज २।४३
इंदग्गि (इन्द्राग्नि) ज ७।१३०,१८६।२,४ सू २०।८,२०।८।४
इंदग्गिदेवया (इन्द्राग्निदेवता) सू १०।८३
इंदज्झय (इन्द्रध्वज) ज ३।३
इंदट्ठाण)इन्द्रस्थान) सू १९।२५
इंदणील (इन्द्रनील) ज ३।३५
इंददेवया (इन्द्रदेवता) सू १०।८३
इंदधणु (इन्द्रधनुष्) ज ३।२४
इंदनील (इन्द्रनील) प १।२०।३ ज ३।१०९
इंदभूइ (इन्द्रभूति) ज १।५
इंदभूति (इन्द्रभूति) चं १।४,१० सू १।५
इंदभूय (इन्द्रभूत) सू २०।७
इंदमह (इन्द्रमह) ज २।३१
इंदमुद्धाभिसित्त (इन्द्रमूर्धाभिषिक्त) ज ७।११७।२ सू १०।८६।२
इंदिओवउत्त (इन्द्रियोपयुक्त) प ३।१७४
इंदिकाइय (दे०) प १।५०
इंदिय (इन्द्रिय) प ११।५;३।१।१; १३।१७; १५।१,१७,१९,२०,३०,३४,५८।१,१५।५८ से ६०,६२,६३,६५,६६,६७,७५,७६,१३४,१४३; १७।१३४; १८।१।१; २८।१०१
इंदियउवउत्त (इन्द्रियोपयुक्त) प ३।१७४
इंदियजवणिज्ज (इन्द्रिययापनीय) उ ३।३२,३३
इंदियपज्जत्ति (इन्द्रियपर्याप्ति) प २८।१४२ उ ३।१५,८४
इंदियपरिणाम (इन्द्रियपरिणाम) प० १३।२,१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६,१७,१६
इंदीवर (इन्दीवर) प १।४४।३
इक्क (एक) ज १।२० सू १६।२५
इक्कड (इक्कड) सरकंडा, पानी का पौधा प १।४८।४६
इक्कवीस (एकविंशति) ज २।१३४
इक्कारस (एकादशन्) ज ४।२७५
इक्कारसम (एकादश) सू १०।७७
इक्कारसी (एकादशी) ज २।७१
इक्कावण्ण (एकपञ्चाशत्) सू १।२१
इक्किक्क (एकैक) ज ७।१७८।२
इक्खाग (इक्ष्वाकु) प १।६५
इक्खु (इक्षु) प १।४१।१,१।४८।४६
इक्खुवाडिया (इक्षुवाटिका) प १।४८।४६
इक्खुवाडी (इक्षुवाटी) प १।४१।१
इगतालीस (एकचत्वारिंशत्) ज ७।७५ सू ११।३
इगुणापण्ण (एकोनपञ्चाशत्) ज ७।७५
इगुणालीस (एकोनचत्वारिंशत्) ज ७।२४
√**इच्छ** (इष्) इच्छइ उ १।५१ इच्छंति प १६।४६ इच्छसि सू १६।२२।२६ इच्छामि उ १।७६;३।१०६;४।११ इच्छामो प २८।१०५;३४।१६,२१ से २४
इच्छा (इच्छा) ज ७।१२०।२ सू १०।८८।२
इच्छाणुलोम (इच्छानुलोम) प ११।३७।१
इच्छामण (इच्छामनस्) प २८।१०५;३४।१६,२१ से २४
इच्छिय (इष्ट, ईप्सित) ज ३।८८,१३८; उ ३।१३८
इच्छियत्त (इष्टत्व) प २८।२६
इच्छियव्व (एष्टव्य, एषितव्य) ज ३।८१
इट्ठ (इष्ट) प २३।१६;२८।१०५ ज २।६४; ३।२४,८२,१८५,१८७,२०६,२१८;५।५८ सू २०।७ उ १।४१,४४;३।११२,१२८;४।१६; ५।२२,२५
इट्ठतर (इष्टतर) ज २।१८;४।१०७
इट्ठतरिय (इष्टतरक) प १७।१२६ से १२८,१३३ से १४५ ज २।१७
इट्ठत्त (इष्टत्व) प ३४।२०
इट्ठस्सरता (इष्टस्वरता) प २३।१६
इड्ढि (ऋद्धि) प २।३०,३१,४१,४६;६।६८; १७।८६;२१।७२ ज २।२५;३।१२,१८,३१, ७८,८८,६३,१२६,१८०,१८६,२०६,२१६; ४।१४०;५।२२,२६,२७,४३,४४,४६,४७,५६, ६७ उ १।६२,१२१,१२२,१२६,१३३,१३४, १३८;३।४६,५०,१११,१२२;४।१८;५।१७, १६,२३,३१
इड्ढिपत्तारिय (ऋद्धिप्राप्तार्य) प १।६०,६१
इड्ढिमंत (ऋद्धिमत्) ज ७।१६८।२
इड्ढिसिय (दे०) ज ३।१८५
इणं (एतत्) प १।१।३ ज २।१७ सू १८।२२
इतर (इतर) सू १।२५;२।२;४।२
इति (इति) प १।७५ ज १।२६;३।३२।१ सू १०।१० उ १।१७
इत्तरिय (इत्वरिक) प १।१२५;१७।१०६,१०७
इत्तो (इतस्) प २।६४।१८ ज ३।१२४
इत्थ (अत्र) प २।३१ ज ४।१४७
इत्थं (अत्र) ज २।२०
इत्थि (स्त्री) प १।६०,६६,७५,७६,८१;६।७६, ८०;८०।२;११।५ से १०,२३,२६ से २८; १७।१६६ से १७२ ज ३।२२१
इत्थिरयण (स्त्रीरत्न) प ६।२६ ज ३।७२,१३८, १७८,१८६,२०४,२१४,२२०
इत्थिरयणत्त (स्त्रीरत्नत्व) प २०।५८
इत्थिवयण (स्त्रीवचन) प ११।२६,८६
इत्थिवेद (स्त्रीवेद) प १८।६०;२३।७३;२८।१४०
इत्थिवेदग (स्त्रीवेदक) प १३।१४,१६
इत्थिवेय (स्त्रीवेद) प २३।३६,१४१
इत्थिवेयपरिणाम (स्त्रीवेदपरिणाम) प १३।१३
इत्थिवेयग (स्त्रीवेदक) प १३।१५
इत्थी (स्त्री) उ ३।३६,४२

इत्थीलिंगसिद्ध (स्त्रीलिंगसिद्ध) प ११२
इत्थीवेदग (स्त्रीवेदक) प ३।६७;१३।१८
इब्भ (इभ्य) प १६।४१ ज २।२५;३।१०,८६, १७८,१८६,१८८,२०६,२१०,२१६,२१९, २२१ उ १।९२;३।११,१०१;५।१०
इब्भजाति (इभ्यजाति) प १।९४।१
इम (इदम्) प १।४८ सू १।१५ उ १।१५;२।९
इय (इति) प २।६४।१८ ज १।७ सू १।६
इयर (इतर) प २१।३५
इयाणि (इदानीम्) सू १९।२४ उ ३।५५
इरियावहियबंधग (ईर्यापथिकबन्धक) प २३।६३
इरियावहियबंधय (ईर्यापथिकबन्धक) प २३।१७९
इरियासमिय (ईर्यासमित) उ २।९;३।१३,९९, १०२,११३,११५,१३२,१४९;४।२२;५।३८,४३
इलादेवी (इलादेवी) ज ५।१०।१ उ ४।२।१
इलादेवीकूड (इलादेवीकूट) ४।४४,२७५
इव (इव) प २।४८ उ ३।१२८
इसि (ऋषि) प २।४७।२ ज ३।१०९ उ १।२०
इसिपाल (ऋषिपाल) प २।४७।२
इसिवाइय (ऋषिवादिक) प २।४१,२।४७।१
इसीपब्भारा (ईषत्प्राग्भारा) प २।१;२१।९०
इस्सरियविसिट्ठया (ऐश्वर्यविशिष्टता) प २३।२१, ५८
इस्सरियविहीणया (ऐश्वर्यविहीनता) प २३।२२, ५८
इह (इह) ज २।६६ उ १।९
इहं (इह) प १।७५ उ १।१७
इहगय (इहगत) ज ५।२१;७।२०,२२ से २५,७९, ८२

ई

ईतिबहुल (ईतिबहुल) ज १।१८
ईताल (एकचत्वारिंशत्) सू १९।८।१
ईतालीस (एकचत्वारिंशत्) सू १३।१४
ईतालीसक (एकचत्वारिंशत्क) सू १३।१७
ईरियासमिय (ईर्यासमित) ज २।६८
ईसर (ईश्वर) प २।४७।२;१६।४१ ज २।२५; ३।१२६।३;५।१९ उ १।९२;५।१०
ईसर (ऐश्वर्य) ज १।४५;३।१०,१८५,२०९,२२१
ईसाण (ईशान) प १।१३५;२।४९,५१,५३,६३; ३।३०,१८३;४।२२५ से २३६;६।२८,५६,६५, ८५,१११;१५।१३८;२०।६०;२८।७६;३४।१६, १८ ज २।९१ से ९३,११३,११९;४।१७२, २००,२२१;२२४।१,२३५,२४०,२४२,२४३; ५।४८,५९,६०;७।१२२।१ सू १०।८४।१ उ २।२०,२२;५।४१
ईसाणकप्पवासि (ईशानकल्पवासिन्) प २।५१
ईसाणग (ईशानज) प २।५१;६।६५;७।९;१५।८७; २१।७०,९०;३३।१६ ज ५।४९
ईसाणवडेंसग (ईशानावतंसक) प २।५५,५७
ईसाणवडेंसय (ईशानावतंसक) प २।५१
ईसि (ईषत्) प २।३१,६४;१७।१३४;२३।१९५ ज ३।१०९,१७८;४।५४;५।५,२१,३८,५८; ७।१७८
ईसिउच्छंग (ईषदुत्सङ्ग) ज ३।१७८
ईसिणिया (ईशानिका) ज ३।११।१
ईसितुंग (ईषत्तुङ्ग) ज ३।१७८
ईसिदंत (ईषद्दान्त) ज ३।१७८
ईसिमत्त (ईषन्मत्त) ज ३।१७८
ईसीपब्भारा (ईषत्प्राग्भारा) प २।६४;१०।१,२; २१।९०;३०।२६,२८
ईसीहस्सपंचक्खरुच्चारणद्धा (ईषद्ह्रस्वपञ्चाक्षरोच्चारणाध्वन्) प ३६।९२
ईहा (ईहा) प १५।५८।२;१५।६७ ज ३।२२३
ईहामइ (ईहामति) उ १।३१
ईहामिग (ईहामृग) ज २।३७,१०१;४।२७

उ

उ (तु) प १।४८।९ ज १।४७ सू १।७ उ १।७
उईर (उदीरण) प १४।१८।१
उउ (ऋतु) ज २।६९;३।११७।१;७।१११,११२।५, १२६, १२७ उ ५।२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उउय (ऋतुक) प २।४१

उंबर (उदुम्बर) प १।३६।१ उ ३।७४,७६

उंबेभरिया (दे०) प १।३५।२

उक्कड (उत्कट) प १।५० ज ३।३१

उक्कर (उत्कर) ज ३।१२, १३,२८,४१,४६,५८, ६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३

उक्करिया (उत्करिका) प ११।७८;१३।२५

उक्करियाभेद (उत्करिकाभेद) प ११।७८,७६

उक्करियाभेय (उत्करिकाभेद) प ११।७३

उक्कलिया (उत्कलिका) प १।५०

उक्कलियावाय (उत्कलिकावात) प १।२६

उक्का (उल्का) प १।२६

उक्कामुह (उल्कामुख) प १।८६

उक्कालिय (उत्कालिक) ज ५।७

उक्किट्ठ (उत्कृष्ट) ज २।६०;३।१२,२६,२८,३६, ४१,४७,४६,५६,५८,६४,६६,७२,७४,११३, १३८,१४५,१४७,१६८,२१२,२१३;५।५,४४, ४७,६७;७।५५ उ १।१३८;३।१२७

उक्किट्ठि (उत्कृष्टि) ज ३।२२,३६,७८,६३,६६, १०६,१३३,१६३,१८०

उक्किण्ण (उत्कीर्ण) प २।३०,३१,४१ ज ३।८२

उक्कित्तिता (उत्कीर्तिता) सू २०।६।१

उक्किरिज्जमाण (उत्कीर्यमाण) ज ४।१०७

उक्कुट्ठ (उत्कृष्ट) सू १६।२३

उक्कुडुयट्ठिय (उत्कुटुकस्थित[1]) ज २।१३३

उक्कुरुडिया (दे०) उ १।५४ से ५७,५६,६३,७६ से ८२,८४

उक्कुला (उत्कूला) सू १०।६

उक्कूवमाण (उत्कूजत्) उ ३।१३०

उक्कोस (उत्कर्ष) प १।७४; २।६४।६; ४।१ से ६७,६६ से २६६,२६८;५।४२,४६,७६,६४, ६८,११२,११६;६।१ से १८,२० से ४५,६०, ६१,६४,६६ से ६८,१२०,१२१,१२३;७।२,३, ६ से २६;११।७०,७१;१२।६;१५।४० से ४२; १७।१४५,१४६;१८।२ से ४,६,८ से १०,१२, १४ से १६,१८ से २४,२६ से २८,३० से ३६, ४१ से ५४,५६,५७,५६ से ६७,६६ से ७४, ७६ से ७६,८१,८३ से ८५,८७,८६ से ६१, ६३,६५,६६,६८,१०३ से १०५, १०७,१०८, ११०,११३,११४,११६,११७,११६,१२०; २०।६ से १३,६१,६३;२१।३८,४० से ४४, ४६ से ४८,६३ से ७१,७४,८४,८६,८७,६० से ६३;२३।६० से ७६,८१,८३ से ६२,६५ से ६६, १०१ से १०४,१११ से ११४,११६ से ११८,१२७,१२६ से १३१,१३३ से १३५, १३८,१४०,१४२,१४३,१४७,१५१ से १५५, १५७,१५८,१६० से १६२,१६४ से १६६, १७१ से १७३,१७६,१७७,१८२,१८३,१८६, १८७,१६०;२८।२५,२७,४७,५०,७३ से ६६; ३३।२ से १३,१५ से १७;३६।८ से १०,१७, १८,२०,३०,३४,४४,६१,६६,६८,७०,७२,७४, ७६ ज २।६,४४,४५,५८,१२३,१२८,१३३, १४८,१५१,१५७;४।१०१;७।५७,६०,१८२, १८७ से १६६,२०६ सू १८।२०,२५,३६; १६।२५ उ २।२०,२२;३।१३०

उक्कोसकालठिईय (उत्कर्षकालस्थितिक) प २३।२००

उक्कोसकालठितीय (उत्कर्षकालस्थितिक) प २३।१६४ से १६६,१६८ से २०१

उक्कोसग (उत्कर्षक) प १७।१४५,१४६; २३।१८४

उक्कोसगुण (उत्कर्षगुण) प ५।३८,६०,७५,६०, १०८,१६१,१६४,१६८,२०१,२०४,२०८, २१२,२१५,२१६,२२२,२२५,२४३

उक्कोसट्ठिईय (उत्कर्षस्थितिक) प ५।१८५

उक्कोसट्ठितीय (उत्कर्षस्थितिक) प ५।३५,५७, ७२,८३,१०५,१७५,१७८,१८२,१८८,२४०

उक्कोसपएसिय (उत्कर्षप्रदेशिक) प ५।२२६,२३०

उक्कोसपद (उत्कर्षपद) प १२।३२

उक्कोसपय (उत्कर्षपद) ज ७।१६८,१६६,२०२, २०४

1. अस्थिक इत्यपि भवति विकल्पेन ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोसमति (उत्कर्षमति) प ५।६४

उक्कोसमदपत्त (उत्कर्षमदप्राप्त) प १७।१३४

उक्कोसय (उत्कर्षक) प १५।६४; २१।१०५ ज ७।२६ सू १।१६,१७,२१,२२,२४,२७;२।३; ३।२;६।१; ८।१; ६।२; २०।३

उक्कोसा (उत्कर्षक) प १७।१४६

उक्कोसिया (उत्कर्षिका) ज २।७४ से ८०;७।२८ सू १।१४,२१; २।३; ४।६; ६।१

उक्कोसोगाहणग (उत्कर्षावगाहनक) प ५।२०

उक्कोसोगाहणय (उत्कर्षावगाहनक) प ५।२६, ३०,५०,५४,६६,८४,१०२,१५५,१५८,१६०, १६४,१६७,१७०,२३५

उक्खित्त (उत्क्षिप्त) ज ५।५७

उक्खेव (उत्क्षेप) ज ५।४६,६०,६६

उग्ग (उग्र) प १।६५ ज २,१६५

उग्गच्छ (उद्गत्य) ज ७।१०१,१०२ सू ८।१

उग्गतव (उग्रतपस्) ज १।५

उग्गमण (उद्गमन) ज ७।३६ से ३८ सू २।३; ६।२

उग्गममाण (उद्गच्छत्) प १।४८।५२

उग्गय (उद्गत) ज १।३७; ३।२४; ४।२७;५।२८

उग्गवई (उग्रवती) ज ७।१२१ सू १०।६१

उग्गविस (उग्रविष) प १।७०

उग्गसेण (उग्रसेन) उ ५।१०

उग्गह (अवग्रह) प १५।६८,७१,७२

उग्गा (दे०) ज २।१७

उग्घोस (उद्घोष) ज २।६५

उग्घोसेमाण (उद्घोषयत्) ज ३।२१२,२१३; ५।२२,२६

उच्च (उच्च) उ ३।१००,१३३

उच्चंतय (उच्चंतग) प १७।१२४

उच्चत्त (उच्चत्व) प २१।४७।२ ज १।८ से १०,१६,२२ से २४,२७,३५,३७,३८,४०, ४२,४६,५१;२।६,१५,४५,५१,५४,५६,५८, ८६,१२३,१२८,१३८,१४०,१४८,१५१,१५७, १५६;४।१,६,१०,१४,३३,४५,४७ से ४६,५४, ५७,५६,६२,८०,८४,८६,६६,१०१,१०३, ११०,११२,११४,११५,११६ से १२२,१२५, १२८,१३६,१४२,१४६,१४७,१४६,१५५, १५६,१६३ से १६५,१७२,१७५,१७८,२०३, २१२,२१६,२१७,२१६,२२१,२२६,२४२; ५।३८,४६,७२,७३;७।३७,३८,२०७ चं २।५ सू १।६।५;६।२,३;१८।१

उच्चत्तच्छाया (उच्चत्वछाया) सू ६।४

उच्चत्तपज्जव (उच्चत्वपर्यव) ज २।५१,५४,१२१, १२६,१३०,१३८,१४०,१४६,१५४,१६०, १६३

उच्चत्तुद्देस (उच्चत्वोद्देश) सू ६।२

उच्चागोय (उच्चगोत्र) प २३।२१,५७,५८, १३१,१५३,१८८

उच्चार (उच्चार) प १।८४

√उच्चार (उत्+चारय्) उच्चारेइ उ ३।७६

उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपरिट्ठवणियासमिय (उच्चारप्रस्रवणक्ष्वेल 'जल्ल' 'सिंघाण' परिष्ठापनिकासमित) ज २।६८

उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिट्ठावणियासमिय (उच्चारप्रस्रवणक्ष्वेल 'सिंघाण' 'जल्ल' परिष्ठापनिकासमित) उ ३।६६

उच्चारेतव्व (उच्चारयितव्य) सू १०।१३५

उच्चारेयव्व (उच्चारयितव्य) ज ७।१६८ सू १०।१३४

उच्चावय (उच्चावच) प ३४।२३,२४ उ १।५७, ८२;५।४३

उच्चाविय (उच्चैःकृत्वा) प १७।१११

उच्छंग (उत्सङ्ग) उ ३।६८,११४

उच्छण्ण (उत्सन्न) ज २।८,६

उच्छण्णणाणि (उत्सन्नज्ञानिन्) प २३।१३

उच्छण्णदंसणि (उत्सन्नदर्शनिन्) प २३।१४

उच्छाह (उत्साह) सू २०।६।३,५

उच्छूढसरीर (उत्क्षिप्तशरीर) ज १।५

√उच्छोल (दे० उत्+क्षालय्) उच्छोलेंति

ज ५।५७
उजुसेढि (ऋजुश्रेणि) प ३६।६२
उज्जय (उद्यत) ज २।१३३
उज्जल (उज्ज्वल) ज १।३७;७।१७८
उज्जाण (उद्यान) ज २।६५,७१;५।५,७ उ ३।३६; ५।६,७,२४,२६,३७
उज्जाणसंठित (उद्यानसंस्थित) सू ४।३
√उज्जाल (उत्+ज्वालय्) उज्जालंति ज ५।१६ उज्जालेइ उ ३।५१ उज्जालेंति ज २।१०८ उज्जालेह ज २।१०७
उज्जालित्ता (उज्ज्वाल्य) ज ५।१६
उज्जालेत्ता (उज्ज्वाल्य) उ ३।५१
उज्जु (ऋजु) प २।३१ ज २।१५
उज्जुय (ऋजुक) ज २।१५
उज्जुसुय (ऋजुसूत्र) प १६।४६
उज्जोइय (उद्द्योतित) प २।४६ ज ३।६,१८,६३, १८०,२२२
उज्जोत (उद्द्योत) प० २।४१,५६,६६
उज्जोय (उद्द्योत) प २।३०,३१,४६,५६,६३ ज १।८,३१;३।६३,१२१;५।३२
√उज्जोय (उद्+द्योतय्) उज्जोएंति सू १६।१ उज्जोएति सू १६।१
उज्जोयकर (उद्द्योतकर) ज ३।६५,६६,१५६,१६०
उज्जोयणाम (उद्द्योतनामन्) प २३।३८
उज्जोयभूय (उद्द्योतभूत) ज ३।१६,१६०
√उज्जोव (उत्+द्युत्) उज्जोवेइ ज ४।२११ उज्जोवेंति ज ७।५१,५८ सू ३।१ उज्जोवेति सू ३।२
उज्जोवणाम (उद्द्योतनामन्) प २३।११५
उज्जोविय (उद्द्योतित) ज २।१६ उ १।५६,८१
उज्जोवेमाण (उद्द्योतयत्) प २।३०,३१,४१,४६
√उज्झ (उज्झ्) उज्झइ उ १।५५ उज्झाहि उ १।५४
उज्झर (उज्झर) प २।४,१३,१६ से १६,२८ उ ५।५
उज्झरबहुल (निर्झरबहुल) ज १।१८
√उज्झाव (उज्झय्) उज्झावेसि उ १।५७
उज्झावित्तए (उज्झयितुम्) उ १।५४,५६
उज्झिज्जमाण (उज्झ्यमान) उ १।५६,६३,८४
उज्झित (उज्झित) उ १।५६,८१
उज्झिय (उज्झित) उ १।५७,८२
उट्ट (उष्ट्र) प १।६४; ११।१६ से २० ज २।३५
√उट्ठा (उत्+ष्ठा) उट्ठेइ उ १।२४ उट्ठेंति ज ३।११४,१२६ उट्ठेति ज १।६
उट्ठा (उत्था) उ १।२४
उट्ठाण (उत्थान) प २३।१६,२० ज २।५१,५४, १२१,१२६,१३०,१३५,१३८,१४०,१४६, १५४,१६०,१६३ सू २०।१,७; ६।३,५
उट्ठाय (उत्थाय) ज १।६
उट्ठिय (उत्थित) ज ३।१८८ उ ३।४८,५०,५५, ६३,६५,७०,७४,१०६,११८
उट्ठेंत (उत्तिष्ठत्) ज ३।३५
उट्ठेत्ता (उत्थाय) ज १।६ उ १।२४
उडय (उटज) उ ३।५१,५३
उडिय (दे०) ज ७।१७८
उडु (ऋतु) सू ६।१; ८।१; १०।१२८,१२६;१२।१, ४,११,१२,१४,१५; १५।२० से २२
उडु (उडु) सू १०।१२६।१,५
उडुकल्लाणिया (ऋतुकल्याणिका) ज ३।१७८, १८६,२०४,२१४,२२१
उडुपाण (उडुपान[1]) प १५।११२; १५।५०
उड्ड (उड्र) प १।८६
उड्ढ (ऊर्ध्व) प २।४,४८ से ५३,६०,६३,६४; ११।६५,६६;११।६६।१; १५।५२; २१।८७, ६० से ६३; २८।१५,१६,६१,६२;३३।१६, १७; ३६।६२ ज १।८ से १०,२५,२८,३२, ३५,३७,३८,४०,४२,५१; २।६,५६,८६,१२३, १२८,१४८;३।१३१,१३२;४।१,६,१०,२३, ४५,४७,५७,५६,६२,८६,१०१,१०३,११०, ११२,११४,११५,११६ से १२२,१२८,१३६,

---

१. उडु (जलम्) आप्टे पृ० ४०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४२,१४६,१४७,१५५,१५६,१६३ से १६५, १७५,१७८,२०३,२१२,२१६,२१७,२१९, २२१,२२६,२३४,२४० से २४२;५।६४; ७।४४,५४,१६८।१,२०७ सू २।१;४।१०; ९।३;१८।१;१९।२२।१२;१९।२३ उ १।९७; २।१२;३।५०;५।४१

उड्ढजाणु (ऊर्ध्वजानु) ज १।५;२।८३ उ १।३

उड्ढत्त (ऊर्ध्वत्व) प २८।२४,२६

उड्ढदिसा (ऊर्ध्वदिशा) प ३।१७६,१७८

उड्ढमुह (ऊर्ध्वमुख) ज ३।३;१७।१६८

उड्ढलोग (ऊर्ध्वलोक) ज ५।६,६७

उड्ढलोय (ऊर्ध्वलोक) प २।१,४,१०,१३,१६ से १९,२८;३।१२५,१२७ से १७३,१७५,१७७

उड्ढवाय (ऊर्ध्ववात) प १।२९

उड्ढामुहकलंबुयापुप्फसंठाणसंठित ('उद्धी'मुखकलम्बुकपुष्पसंस्थानसंस्थित) सू १९।२३

उड्ढीमुहकलबुंयापुप्फसंठित ('उद्धी'मुखकलम्बुक-पुष्पसंस्थित) ज ७।३१,३३,३५ सू ४।३,४,६, ७,९

उड्ढोववण्णग (ऊर्ध्वोपपन्नग) ज ७।५५ सू १९।२३, २६

उण्णंदिज्जमाण (उन्नन्द्यमान) ज ३।१८६,२०४

उण्णय (उन्नत) ज २।१५;३।१०९,१३८;४।१३; ७।१७८ सू २०।७

उण्णाय (उन्नाक) उ ५।४३

उण्ह (उष्ण) प १७।११४।१,१७।१३८;२८।२६ उ ३।१२८

उतालीस (एकोनचत्वारिंशत्) सू १२।२०

उत्तत्त (उत्तप्त) प २।४०।९

उत्तम (उत्तम) प २।४९ ज २।१५;३।३,१२, १२५;४।२६०।१;५।५८ सू ५।१

उत्तमकट्ठपत्त (उत्तमकाष्ठाप्राप्त) ज २।७,५२, १३१,१६१,१६४;७।२६,२८ सू १।१४,१६, १७,२१,२२,२४,२७;२।३;३।२;४।८,९; ६।१;९।२

उत्तमपुरिस (उत्तमपुरु) प ९।२६

उत्तमा (उत्तमा) ज ७।१२०।१ सू ५।१;१०।८८।१

उत्तर (उत्तर) प २।२१ से २७;२७।१,२;२।३० से ३६,४४,४८,५१,६०,६१,६२।१;२।६३; ३।१ से ३७,१७६,१७८;१५।८५;१८।६० ज १।१८,२०,२३,४८;३।१,८२,१२६।४,१३१, १३३,१३८,१५१;४।१,१७,३८,५५,६२,७३, ७६,८१,८६,९१,९३,९८,१०३,१०८,११४, १२९,१४१ से १४३,१५०,१५६,१६०,१६५, १६७,१६९,१७२,१७३,१७५,१७७,१७८, १८०,१८१,१८४,१८५,१८७,१९०,१९१, १९३,१९६,१९७,१९९ से २०३,२०५,२०८, २०९,२१३,२२६,२३१,२३४,२३७,२३८, २४९,२५२,२६२,२६५,२६८,२६९,२७१, २७२,२७४,२७५;५।११,३९,४२;६।११, १४,२४;७।५,१५,१७,२४,२५,६४,७४,७६, ७८,८३,८४,८८,९४,१२७,१२९,१३४।३, १३५।३,१७४,१७८,२०१,२०४ सू १।१५ से १७,२४,२६ से ३१;२।३;१०।७५,१३५; १२।१२;१३।९,१०;१८।१४ से १७;१९।८।१, ११।१;२०।२ उ ३।५४,५५,६३,६७,७०,७३; ४।१६;५।४१

√उत्तर (उत्+तॄ) उत्तरइ ज ३।१०१,१२६

उत्तरओ(उत्तरतस्) प २।४०।४ ज १।१८

उत्तरकुरा (उत्तरकुरु) ज ४।९९,१०३,१०८ से ११०,१४१,१४३,१६१,१६२,२०५,२१३

उत्तरकुरु (उत्तरकुरु) प १।८७;१६।३०;१७।१६४ ज २।६;४।१४२।३.१६१।२;१६२,२०७, २६२;५।५५

उत्तरकुरुकूड (उत्तरकुरुकूट) ज ४।१०५,१६३

उत्तरकूल (उत्तरकूल) उ ३।५०

उत्तरगुण (उत्तरगुण) प ११।४६

उत्तरड्ढ (उत्तरार्द्ध) प २।५१;८।१

उत्तरड्ढकच्छ (उत्तरार्द्धकच्छ) ज ४।१६८,१७२, १७३ से १७६

उत्तरड्ढभरह (उत्तरार्द्धभरत) ज १।१६,४७ से ५१;३।१०३,११३;४।३५
उत्तरड्ढभरहकूड (उत्तरार्द्धभरतकूट) ज १।३४
उत्तरलवणसमुद्द (उत्तरलवणसमुद्र) ज ४।२७७
उत्तरड्ढलोकाहिवइ (उत्तरार्द्धलोकाधिपति) ज ५।४८
उत्तरण (उत्तरण) ज ३।७६,११६
उत्तरदारिया (उत्तरद्वारिका) सू १०।३१
उत्तरदाहिण (उत्तरदक्षिण) ज १।२४;४।१०६, १६४,१६७,१६६,१७८,१८०,१८१,१८५, १८७,१६१,१६६ से २०१,२०३,२०६,२१५, २४५,२४८,२५१,२५२ सू ८।१
उत्तरदाहिणायया (उत्तरदक्षिणायता) ज १।२४; ४।१०३,१६२,१६७,१६६,१७८,१८५,१८७, १६१,२००,२०३,२४५,२५१
उत्तरद्ध (उत्तरार्द्ध) ज २।६१
उत्तरद्धभरह (उत्तरार्द्धभरत) ज १।२३
उत्तरपच्चत्थिम (उत्तरपाश्चात्य) प ३।१७६,१७८ ज ३।४३,४४;४।१०३,१०६,१५०,२२४,२३१, २३२ सू २।१;२०।२
उत्तरपच्चत्थिमिल्ल (उत्तरपाश्चात्य) ज ४।२३८ सू १।१६;२।१;२०।२
उत्तरपाईण (उत्तरप्राची) ज ३।१२६
उत्तरपुरत्थिम (उत्तरपौरस्त्य) प ३।१७६,१७८ ज १।३;२।६०,६१,१३०,१३१,१४०,१४१, १६१,१६२,२०४,२०८;४।१७,१२०,१३६, १३६,१५०,१५४,१६२ से १६४,२२१,२२६, २३३,२३६;५।५,७,३६,४४,५५ चं ७ सू १।२ २०।२ उ ३।११३;४।२०;५।५
उत्तरपुरत्थिमिल्ल (उत्तरपौरस्त्य) ज ४।१५६, २३७,२३८;५।४८,४६ सू १।१६
उत्तरपोट्ठवया (उत्तरप्रोष्ठपदा) ज ३।२०६ सू १०।६४
उत्तरफग्गुणी (उत्तरफल्गुनी) ज ७।१२८,१२६, १३६
उत्तरभद्दवया (उत्तरभद्रपदा) ज ७।१२८,१२६, १३६,१३६,१४२
उत्तरवेउव्विय (उत्तरवैक्रयिक) प १५।१८,१६; २१।५८,५६,६१,६५ से ६७,७०;३४।१६,२१ से २३ ज ३।२०६;५।४१
उत्तरवेयड्ढ (उत्तरवैताढ्य) ज ३।८१
उत्तरा (उत्तर) सू १०।३२,४५,६०,६२,१२०, १५३,१५५,१५६,१५८;११।२,४ से ६; १२।२४ से २८ ज ७।११३ उ ३।५५,६३,६५, ६७,७०,७४
उत्तरापोट्ठवया (उत्तरप्रोष्ठपदा) सू १०।५,६,२१, २३,६५,७५,८३,६७,१३१ से १३५
उत्तराफग्गुणी (उत्तरफल्गुनी) ज ७।१४०,१४८, १५१,१६३,१६४ सू १०।२ से ६,१५,२३,७०, ७१,७५,८३,११०,१३१ से १३३
उत्तराभद्दवया (उत्तरभद्रपदा) ज ७।१४६,१५७, १५८ सू १०।२ से ६,१३१
उत्ताराभिमुह (उत्तराभिमुख) उ ३।५५,६३,६७, ७०,७३
उत्तरासंग (उत्तरासङ्ग) ज ३।६;५।२१
उत्तरासाढा (उत्तराषाढा) ज २।७१,८५;७।१२८, १३०,१३६,१४०,१४६,१५६,१६७ सू १०।१ से ६,१६,२३,५४,६२,६३,७४,८३,११६, १२२,१२३,१३० से १३५;१५।६,१२
उत्तरिज्ज (उत्तरीय) ज ३।६,२२२
उत्तरित्तु (उत्तीर्य) ज १।१८१
उत्तरिय (औत्तरिक) प ३६।२१,२२,२४,२६,२७, ४६
उत्तरिल्ल (औदीच्य) प २।३३,३६,३६,४०,४४, ४७;१६।३४ ज १।२६;२।११६;३।१०२, १०६,१२३,१३७,१५४ से १५७,२०५,२१५, २२०;४।३८,४२,७३,७७,६१,६४,१७२, १६६ से २०२,२०६,२०७,२१२,२३२,२३३, २३८,२४८,२५१;५।११,१४,४४,४५,४६,५२, ७।१७८ उ ३।६१

उत्तरोट्ठ (उत्तरौष्ठ) ज २।१५
उत्ताण (उत्तान) उ ३।१३०
उत्ताणग (उत्तानक) ज ३।११,११३ उ १।४६
उत्ताणय (उत्तानक) प २।६४ उ १।४६
उत्ताणसेज्ज (उत्तानशय) उ ३।१३०,१३१,१३४
उत्तासणग (उत्त्रासनक) प २।२० से २६
उत्तासणय (उत्त्रासनक) प २।२७
उत्तिण्ण (उत्तीर्ण) ज ३।८१
उत्तिमंग (उत्तमाङ्ग) ज २।१५
उदग (उदक) ज २।१३१;३।२६,३९,४७,१०६, १३३,२२१;५।५५
उदगधारा (उदकधारा) ज ३।८८
उदय (उदय) प २३।३,१३ से २३ सू १।६।२; १।८।१
उदय (उदक) प १।४१।२,१।४६;१०।७; १६।५४ ज ३।६,२०६;५।१४,५६;७।११२।१, २ चं २।२;४।१,३ सू १०।२६।१,२
उदयसंठिति (उदयसंस्थिति) सू १।६।२;१।८।१,३
उदर (उदर) उ १।४३
उदहि (उदधि) प २।३०।१;२।४०।२,८,१०; १५।१।२ ज २।१५;५।५२
उदहिकुमार (उदधिकुमार) प १।१३१;५।३;६।१८
उदार (उदार) ज ३।२४,१३१
उदाहु (उताहो) प १०।६;१५।४६,४७;३४।६ उ १।१२७
उदिण्ण (उदीर्ण) प २०।३६;२३।३,१३ से २३
उदीण (उदीचीन) प २।१०,५० से ५२,५४,५६, ५८ से ६० ज १।१८,२०,२३,२५,२८,३२, ४८;३।१;४।१,३,५५ ६२,८६,८८,६८, १०८,१७२,२०५,२१४,२५२,२६२,२६८; ७।१०१,१०२ सू ८।१
उदीणदाहिणायता (उदीच्यदक्षिणायता) सू १।१९; २।१;१०।१४२,१४३;१२।३०
उदीणवाय (उदीचीनवात) प १।२६
√उदीर (उद्+ईर्) उदीरंति प १४।१८ उदीरिस्संति प १४।१८ उदीरेंति उ ३।३४ उदीरेंसु प १४।१८ उदीरेति प २२।५
उदीरण (उदीरण) ज २।१३१
उदीरिज्जमाण (उदीर्यमाण) प २३।१३ से २३
उदीरिय (उदीरित) प २३।१३ से २३
उदु (ऋतु) ज २।४;७।११२।१
उद्दंडग (उद्दण्डक) उ ३।५०
उद्दंडिय (उद्दण्डिक) अ ३।३२
√उद्दव (उद्+द्रु) उद्दवेंति प ३६।६२,७७
उद्दवित्तए (उद्द्रवयितुं) ज ३।११५
उद्दाइत्ता (उद्द्रुत्य) ज ६।४
उद्दाल (उद्दाल) ज २।८
उद्दाल (अवदाल) ज ४।१३ सू २०।७
√उद्दाल[1] (आ+छिद्) उद्दालेइ उ १।१०५
उद्दालिउकाम (आच्छेत्तुकाम) उ १।१०५
उद्दिट्ठ (दे०) सू १९।२२।२५
√उद्दिस (उत्+दिश्) उद्दिसंति उ ५।४५
उद्दिस्सिय (उद्दिश्य) प १६।५१
उद्दिस्सपविभत्तगति (उद्दिश्यप्रविभक्तगति) प १६।३८,५१
उद्देस (उद्देश) ज ७।१०१,१०२
उद्देसग (उद्देशक) उ ५।४५
उद्देसय (उद्देशक) प १७।१४८
उद्देहिया (दे०) प १।५०
उद्ध (ऊर्ध्व) प ३३।२४ ज १।१६,२३,२४;२।६, ५८,६५,१५७
√उद्धंस (उत्+धृष्) उद्धंसइ उ १।५७
उद्धंसणा (उद्धर्षणा) उ १।५७,८२
उद्धंसेत्ता (उद्धर्ष्य) उ १।५७
उद्धत (उद्धत) ज २।६५
उद्धिय (उद्धृत) ज ३।२२१
उद्धुत (उद्धूत) प २।४८
उद्धुय (उद्धूत) प २।३०,३१,४१ ज २।६०;३।७; २४।३,२६,३७।१,३६,४५।१,४७,५६,६४, ७२,८८,११३;१३१।३,१३८,१४५,१७८;

१. हेम० ४।१२५

४।४६ ; ५।५,७,४३,४४,४७,६७ सू २०।७

उद्धुर (उद्धुर) ज ५।५ ; ७।१७८

उद्धुव्वमाण (उद्धूयमान) ज ३।१८,३१,६३,१८०
उ ५।१६

√उवगच्छ (उप+गम्) उपगच्छंति ज ३।१६७।१४

उवचयंकर (उपचयङ्कर) ज ३।१६७

उपरिल्ल (उपरितन) सू १८।७

उवसंत (उपशान्त) प २०।३६

उप्पइत्ता (उत्पत्य) प २।४८ से ६३ ज १।२५
सू २।१;१८।१

√उप्पज्ज (उत्+पद्) उप्पज्जइ सू ६।१
उप्पज्जंति ज २।६७

उप्पज्जंत (उत्पद्यमान) ज ३।१६७।५

उप्पज्जय (उत्पद्यक) ज ३।३

उप्पड (उत्पट) प १।५०

उप्पण्णमिस्सिया (उत्पन्नमिश्रिता) प ११।३६

उप्पण्णविगयमिस्सिया (उत्पन्नविगतमिश्रिता)
प ११।३६

उप्पत्ति (उत्पत्ति) प १।६३।६;१४।५;३६।६४
ज ३।१६७।३,६,८,६,१०

उप्पत्तिया (औत्पत्तिकी) उ १।४१,४३

उप्पन्न (उत्पन्न) ज ३।२६,३६,४७,५६,१३३,
१३८,१४५,१७५;५।३,२२

उप्पन्नकोउहल्ल (उत्पन्नकुतूहल) ज १।६

उप्पन्नसंसय (उत्पन्नसंशय) ज १।६

उप्पन्नसड्ढ (उत्पन्नश्रद्धा) ज १।६

उप्पयनिवय (उत्पातनिपात) ज ५।५७

√उप्पय (उत्+पत्) उप्पयंति ज ५।५७,६४

उप्पल (उत्पल) प १।४६,१।४८।४४,१।६२;
१५।५५।२ ज १।५१ ; २।४,१६;३।३,८६,
१८८,२०६;४।३,२२,२५,३०,३४,६०,११३,
२६६,२७२;५।५५,५६;७।१७८

उप्पलंग (उत्पलाङ्ग) ज २।४

उप्पलहत्थगय (हस्तगतोत्पल) ज ३।१०

उप्पला (उत्पला) ज ४।११५।१,२२२

उप्पलिणीकंद (उत्पलिनीकन्द) प १।४८।४२

उप्पलगुम्मा (उत्पलगुल्मा) ज ४।११५।१,२२२

उप्पलुज्जला (उत्पलोज्वला) ज ४।११५।१,२२२

उप्पाइय (औत्पातिक) ज ३।१०४,१०५,१०६

उप्पाएत्ता (उत्पाद्य) प २८।२०,३२,६६

√उप्पाड (उत्+पादय्) उप्पाडेज्जा प २०।१७,
१८,३२ से ३४,४७

उप्पाय (उत्पाद) प १।५०

√उप्पाय (उत्+पादय्) उप्पाएंति ज २।३६,४१

उप्पि (उपरि) प २।५२ से ६२ ज १।१०,१२,
१४,१६ सू १२।३०;१८।२,३ उ १।४६;२।६;
५।१३,२०,२७,३१

उप्पीलिय (उत्पीडित) ज ३।७७,१०७,१२४
उ १।१३८

उप्फिडिय (उत्फिट्य) प १६।४४

उप्फेल (दे०) प २।३०

उब्बहिया (उद्वाह्य) प १६।५४

उब्भड (उद्भट) ज २।१३३

उब्भिज्जमाण (उद्भिद्यमान) ज ४।१०७

उभओ (उभयतस्) ज १।२३,२५,२८,३२;
३।१७६;४।१,१३,३६,४३,६२,७२,७८,८६,
६५,६८,१०३,११०,१८३,२००,२०१,२०६ ;
५।४६,६०,६६;७।३१,३३ सू ४।३,४,६ ; २०।७

उभय (उभय) ज ३।३

उभयभाग (उभयभाग) सू १०।४,५

उम्मज्जग (उन्मज्जक) उ ३।५०

उम्मत्तजला (उन्मत्तजला) ज ४।२०२

उम्माण (उन्मान) ज ३।६५,१३८,१५६,१६७।३

उम्मिमालिणी (ऊर्मिमालिनी) ज ४।२१२

उम्मिलिय (उन्मीलित) प २।४८ ज ३।१८८;
४।४६

उम्मुक्क (उन्मुक्त) प २।६४।२१ ज ३।२०,३३,
५४,६३,७१,८४,१३७,१४३,१६७,१८२

उम्मुग्गजला (उन्मुक्तजला) ज ३।६७ से १०१,
१६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उयर (उदर) उ १।३४,४०,४६,४८,४६,५१,५४,७४,७६,७६
उर (उरस्) ज ५।५ उ ३।११४
उरग (उरग) प ६।८०।१ ज ३।२४
उरत्थ (उरःस्थ) ज ३।३६
उरपरिसप्प (उरःपरिसर्प) प १।६७,६८,७५; ४।१३१ से १३६;६।७१;२१।१४ से १६,३५,४५,६०
उरब्भरुहिर (उरभ्ररुधिर) प १७।१२६
उराल (उदार) प १।४४।३ गुलू नामक वृक्ष
उराल (दे०) ज ५।३८
उरु (उरु) ज २।१५,१६;५।५;७।१७८
उरुलुंचग (दे०) प १।५०
√उलंघ (उत्+लङ्घ्) उलंघेज्ज प ३६।६१
उल्ल (आर्द्र) ज ३।२२,३६,४४,१२५,१२६
√उल्लाल (उत्+लालय्) उल्लालेइ ज ५।२३
उल्लालिय (उल्लाल्य) ज ५।२४
उल्लालेमाण (उल्ललायत्) ज ५।२२
उल्लोइय (उल्लोचित) प २।३०,३१,४१ ज १।३७; ३।७,१८४
उल्लोय (उल्लोच) ज ४।११६;५।३४,६७ सू २०।७
उल्लोयण (उल्लोचन) उ १।४६
उवइय (उपचित) ज ४।२७
उवउज्जिऊण (उपयुज्य) प १६।२०;२२।४५; ३६।३२
उवउत्त (उपयुक्त) प २।६४।१२,१३;८।४ से ११; १५।४८,४६;२६।१७,१६,२०;३४।१२ ज ५।२६
उवएसरुइ (उपदेशरुचि) प १।१०१।१,४
उवओग (उपयोग) ११।१७;३।१।१;१५।५८।१; १५।६३,६४;१८।१।१;२८।१०६।१;२६।१,५, ८,११,१५
उवओगपरिणाम (उपयोगपरिणाम) प १३।२,१४, १६
उवंग (उपाङ्ग) उ १।४ से ८;२।१;३।१,२; ४।१,३;५।१,३,४५
उवकुल (उपकुल) ज ७।१३६।१,१४१,१४३ से १४६,१५० से १५३ सू १०।६,२० से २२,२५
√उवक्खड (उपस्कारय्) उवक्खडावेइ उ ३।११०; ४।१६
उवक्खडावेत्ता (उपस्कार्य) उ ३।५०
√उवगच्छ (उप+गम्) उवगच्छइ ज ३।४१
उवगच्छित्ता (उपगम्य) ज ३।४१
उवगय (उपगत) प २।६४।१४,२० ज ३।२०,३३, ५४,५६,८४,१०५,१०८ से १११,११३,१३७; ५।५,७ उ १।१५,२५;३।६८,१०६;५।३५
उवगरण (उपकरण) ज २।६६ सू २०।४ उ १।६३, १०५,१०६;३।५५,६३,७०,७३
उवगिज्जमाण (उवगीयममान) ज ३।८२,१८७, १८८ उ ५।२५
उवग्गच्छाया (उपाग्रछाया) सू ६।४
उवघाइय (उपघातिक) प० ११।३४।१
उवग्गहिय (औपग्रहिक) प २३।६
उवघायणाम (उपघातनामन्) प २३।३८,५२,११०
उवघायणिस्सिया (उपघातनिश्रिता) प ११।३४
उवचय (उपचय) प १५।५८।१;१५।५८,५६
√उवचय (उप+चि) उवचयंति प ६।२६
√उवचिण (उप+चि) उवचिण प १४।१८।१ उवचिज्जंति प १४।१८।१;२१।६७ उवचिणंति प १४।१५ उवचिणिंसु प १४।१४ उवचिणिस्संति प १४।१६
उवचित (उपचित) प २।३१,४१
उवचिय (उपचित) प २।३०;२३।१३ से २३ ज २।१४५,१४६;३।७;४।३,२५,२७;७।१७८
उवज्जिय (उपार्जित) ज ३।१८५,२०६
उवज्झाय (उपाध्याय) प १६।५१ चं १।२
√उवट्ट (उद्+वृत्) उवट्टेंति ज ५।१४
उवट्टेत्ता (उद्वृत्य) ज ५।१४

√उवट्ठव (उप + स्थापय्) उवट्ठवेंति ज ३।२०८; ५।५५ उवट्ठवेंति ज ३।१२० उवट्ठवेह ज २।५४;३।२०७ उ १।१७

उवट्ठवेत्ता (उपस्थाप्य) उ १।१७

उवट्ठाइ (उपस्थायिन्) ज ३।३२।१

उवट्ठाणसाला (उपस्थानशाला) ज ३।५,१२,१७, २१,२८,३४,४१,४६,५८,६६,७४,७७,१३५, १४७,१५१,१७७,१८८,२१६ उ १।१६,४१, ४२,१२४;४।१२;५।१६

उवट्ठिय (उपस्थित) उ १।२०

√उवणी (उप + णी) उवणेइ ज ३।२६,३६,४०, ४७,५६,६४,७२,१३३,१४५,१५१ उवणेंति ज ३।८१,१२६;५।६१ उ १।४५ उवणेह उ १।४४

उवणीयअवणीयवयण (उपनीतापनीतवचन) प ११।८६

उवणीयवयण (उपनीतवचन) प ११।८६

उवणेत्ता (उपनीय) ज ३।१२६

उवत्थाणिया (उपस्थानिका) ज ३।२६,३६,४७, ५६,१३३,१३८,१४५ उ ३।१२३

√उवदंस (उप + दृश्) उवदंसइ ज ५।५७,५८; ७।२१४ उ ३।१२३ उवदंसेंति) ज ५।५७ उवदंसेति सू २०।२

उवदंसण (उपदर्शन) ज ४।२६३।१

उवदंसित्तए (उपदर्शयितुम्) उ ३।११२

उवदंसित्ता (उपदर्श्य) उ ३।२१;४।५

उवदंसिय (उपदर्शित) प १।१।२

उवदंसेत्ता (उपदर्श्य) प ५।५८

उवदंसेमाण (उपदर्शयत्) प ३४।२२ ज ५।४४ सू २०।३

उवदिट्ठ (उपदिष्ट) प १।१०१।४ चं १।३

√उवदिस (उप + दिश्) उवदिसइ प २।६४

उवदिसित्ता (उपदिश्य) प २।६४

उवद्दव (उपद्रव) ज २।४०;३।१०५

उवप्पयाण (उपप्रदान) उ १।३१

उवबूह (उपबृंहण) प १।१०१।१४

उवभोग (उपभोग) ज २।१४६

उवभोगंतराय (उपभोगान्तराय) प २३।२३

उवमा (उपमा) प २।६४।१७;३५।२५,२६ ज ३।२४।४;३७।२;४५।२;१३१।४ उ ३।६८

उवयार (उपचार) प २।३०,३१,४१ ज २।१०, १५,६५;३।७,१२,८८,१३८;४।१६६;५।७, ५८;७।१३३।१ सू २०।७

उवयारियालयण (उपकारिकालयन) ज ४।११८

उवरक्खिय (उपरक्षित) प २।३०,३१,४१

उवरि (उपरि) प २।२१ से २७,३० से ३६,४१ से ४३,४६;१२।३२ ज १।३५;४।१५६।१, २१३,२१६

उवरितल (उपरितल) ज ४।१४२।१,२,४।२१३

उवरिम (उपरितन) प २।२७।३,६२।१

उवरिमउवरिमगेवेज्जग (उपरितनोपरितनग्रैवेयक) प १।१३७;४।२६१ से २६३;७।२८;२८।६५

उवरिमगेवेज्जग (उपरितनग्रैवेयक) प २।६२; ३।१८३;६।४१,५६;२०।६१;३३।१७

उवरिमगेवेज्जय (उपरितनग्रैवेयक) प २०।६१

उवरिममज्झिम (उपरितनमध्यम) प २८।६४

उवरिममज्झिमगेवेज्जग (उपरितनमध्यमग्रैवेयक) प १।१३७;४।२८८ से २६०;७।२७

उवरिमहेट्ठिम (उपरितनाधस्तन) प २८।६३

उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जग (उपरितनाधस्तनग्रैवेयक) प १।१३७;४।२८५ से २८७;७।२६

उवरिल्ल (उपरितन) प २।६४;५।१३१,१३४, १३६,१४०,१४३,१६६,१६६,१८१,१८४, १६३,१६७,२००,२२८,२३४;१६।३४; २२।५१,७०,७१,७४ ज २।११३;४।२५३, २५६,२५६;७।१७३ से १७५ सू १८।१

उवरिल्लय (उपरितन) प २८।१४३

उवल (उपल) प १।२०१ ज ४।२५४

उवलद्ध (उपलब्ध) प १।१०१।६ उ ३।१०१

उवलालिज्जमाण (उपलाल्यमान) ज ३।८२,१८७, २१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवलित्त (उपलिप्त) ज ३।१८४;५।५७ उ ३।१३०, १३१,१३४

उवलेवण (उपलेपन) उ ३।५१,५६,७१,७९

√उववज्ज (उप+पद्) उववज्जइ प १७।९५ उववज्जंति प ६।४७ से ५६,६० से ६४,६६ ७० से ७२,७८ से ११०,११२,११३ ज २।४९ सू १७।१ उववज्जति प १६।५०;१७।९०,९२, ९४,९५,९९ से १०४ उववज्जिहिइ उ ३।१४१; ३।१८;४।२६ उववज्जिहिंति ज २।१३५ से १३७

उववज्जमाण (उपपद्यमान) प २०।६१

उववज्जावेयव्व (उपपादयितव्य) प ६।९२,९४

उववण्ण (उपपन्न) ज ७।५६,५९,२१२ सू १९। २२।२१,१९।२४ उ १।२५ से २७,१४०; २।१२;३।१४,८३,१२०,१६१;४।२४;५।२८, ३०,४०,४१

उववण्णग (उपपन्नक) प ३।३६;१५।४९;३४।१२; ३५।२३

उववण्णपुव्व (उपपन्नपूर्व) ज ७।२१२

उववन्नग (उपपन्नक) प १५।४९; ३४।१२

उववाइय (औपपातिक) प ६।७३

उववाएयव्व (उपपादयितव्य) प ६।७३,७४

उववात (उपपात) प २०।६०. चं २।५. सू १६।५; १७।१

उववातगति (उपपातगति) प १६।३७

उववातसभा (उपपातसभा) उ ३।१४

उववाय (उपपात) प २।१,२,४,५,७,८,१०,११, १३,१४,१६, से ३०,४६;६।१ से ४,१० से २३,२७,४३,५९;६३,६६,८०।२,३।८१,८३, ८६,९२,१००,१०३,१०७,१०८;२०।६१. ज २।७१;४।१४०।१,१६०;७।५७,६० उ २।२०,२२;३।१६६

उववायगति (उपपातगति) प १६।१७,२४ से ३८

उववायसभा (उपपातसभा) ज ४।१४० उ ३।८३; १२०,१६१;४।२४

उववास (उपवास) ज० २।१३५

उववेत (उपेत) प १७।१३३

उववेय (उपेत) प १७।१३४ ज २।१४,१८ उ ५।५

√उवसंकम (उप+सं+क्रम्) उवसंकमति सू १।१७

उवसंकमित्ता (उपसंक्रम्य) ज ७।१०,१३,१६; सू १।११;१४

उवसंत (उपशान्त) प १४।१; २०।३९ उ २।१६, ६८;५।७. उ ३।३५

उवसंतकसाय (उपशान्तकषाय) प १।१०२,१०३, ११५,११६

उवसंपज्जमाणगति (उपसंपद्यमानगति) प १६।३८,४१

उवसंपज्जित्ताणं (उपसंपद्य) प १६।४१,४३. ज ७।५६,५९. सू १६।२४. उ ३।६; ४।२२

उवसग्ग (उपसर्ग) ज २।६४,६७; ३।९२,११५, ११९,१२५

उवसम (उपशम) ज ७।११७,१२२।२. सू १०।८४।२,८६।२

उवसामय (उपशामक) प २३।१९१,१९२

उवसोभिय (उपशोभित) ज १।१३,२१,२६,२९, ३३,४९;२।७,५७,१२८,१३७,१४७,१५०, १५८,१६४;३।१७८,१९२;४।१६.६३ ८२; ५।३२,३८;७।१७८

उवसोभमाण (उपशोभमान) उ ३।४९

उवसोभेमाण (उपशोभमान) ज २।८,९;४।३८; ७।२१३

उवसोहिय (उपशोभित) ज ४।११४;५।६७

उवस्सय (उपाश्रय) उ ३।१११,११८,१४१;४।२२

उवहाण (उपधान) ज ४।१३

उवहि (उपधि) प १४।५

उवहित (उपहित) सू ९।४

उवाइणावेत्ता (उपातिक्रम्य) सू १०।१३८

√उवागच्छ (उप+आ+गम्) उवागच्छइ ज १।६;२।९०;३।५,९,१२,१७,१८,४१

उ १।२; ३।२६; ४।११; ५।१६ – उवागच्छंति प ३४।२२,२३. ज २।११६. उ १।४५; ५।१७ —उवागच्छति. ज २।१६५; ३।२८,३२,४१, ४६,२१६ उवागच्छसि. उ ३।७६

उवागच्छित्ता (उपागत्य उपागम्य) प ३४।२२; ज १।६. उ० १।१६; ३।२६; ४।११; ५।१६

उवागय (उपागत) उ १।१२२,१३०; ३।७१,७६, ६६;१०६,१३८;४।१५,१८,१६; ५।२६

उवाय (उपाय) प० ११।७१; ३६।६२ ज ७।१०, १३,१६,१६,२२ से २५,२७,३०,६६,७२,७५, ७८,८१,८४ सू १।१४,१६,१७;२१,२४;२७; २।३; ६।१; १०।१४१,१४६,१४८,१५० उ १।४१,४३

उवागय (उपागत) ज २।६५,७१,८८; ३।२२५

√उवे (उप+इ) उवेइ प १३।२२।२. उ ३।१११ उवेंति ज २।१६; ३।१२६ उवेह ज ३।१२५

√उव्वट्ट (उद्+वृत्) उव्वट्टंति प ६।५८,६८ उव्वट्टति प १७।६१,६२,६४,६५,१००,१०२ से १०४ उव्वट्टेइ उ० ३।११४

उव्वट्ट (उद्वर्त) प २०।१।१

उव्वट्टण (उद्वर्तन) प ६।१।१. उ० ३।११४

उव्वट्टणया (उद्वर्तन) प ६।६,७

उव्वट्टणा (उद्वर्तना) प ६।८,६,४५,४६,५६,६६, १००,१०२,१०३,१०७,१०८

उव्वट्टित्ता (उद्वर्त्य) प ६।६६ उ १।१४१

उव्विग्ग (उद्विग्न) प २।२० से २७ ज ३।१११, १२५ उ १।८६; ३।११२; ४।१६

उव्विद्ध (उद्विद्ध) ज २।६५; ३।३१; ५।२८

√उव्विह (उद्+व्यध्) उव्विहइ उ १।६१

उव्वेह (उद्वेध) ज० १।२३,५१; ४।१,३,६,१४, २५,३६,४०,४३,५४,५७,६२,६४,६७,७२, ७८,८०,८४,८६,८८,६०,६५,१०३,११०, १२८,१४६,१५४,१५६,१७२,१७८,१८३, २०३,२१३,२२१,२२६; ७।२०७

उव्वेहलिया (दे०) प १।४८।५०

उसभ (ऋषभ) प २।४६ ज० १।३७,५१; २।१५, ५६,६२,६४ से ६७,७३ से ८६,१०१; ४।६७; ५।२८

उसभकूड (ऋषभकूट) ज० १।५१; ३।१३५; ४।१७४,१७५; ६।१६

उसभणाराय (ऋषभनाराच) प २३।४५,६५

उसभसेण (ऋषभसेन) ज० २।७४

उसह (ऋषभ) ज २।६३,६०; ४।२७

उसहकूड (ऋषभकूट) ज० १।५१,१३५; ४।१७५, १७६

उसहच्छाया (ऋषभछाया) प १६।४७

उसहसंघयण (ऋषभसंहनन) ज ३।३

उसिण (उष्ण) प १।४ से ६; ५।५,७,१२६,१५४, २११,२१४,२१८,२२१,२२६; ६।१ से ११; ११।५६,६०; २८।३२,६६,१०५; ३४।१६; ३५।१ से ३

उसिणजोणिय (उष्णयोनिक) प ६।१२

उसिणोदय (उष्णोदक) प १२३

उसीरपुड (उशीरपुट) ज ४।१०७

उसु (इषु) ज ३।२४,३७,४५,१३१ उ १।२२, १४०

उसुय (इषुक) उ ३।११४

√उस्सक्क (उत्+ष्वष्क्) उस्सक्कति प १७।१५०,१५२

उस्सण्हसण्हिया (उत्श्लक्षणश्लक्ष्णिका) ज २।६

उस्सप्पिणी (उत्सर्पिणी) प १२।७,८,१०,१२, १६,२०,२७,३२; १८।३,२६,२७,३७,३८,४१, ४३,४५,५६,६४,७७,८३,६०,६५,१०७, १०८. ज २।१,३,६,१३८,१६१,१६४; ७।१०१ सू ६।१; ८।१; ६।२; १७।१; २०।५

उस्सास (उच्छ्वास) प १।१।४; १७।१।१ उ ५।४३

उस्सासणाम (उच्छ्वासनामन्) प २३।३८,५५, ११५

उस्सासद्धा (उच्छ्वास'अद्धा') ज २।४

उस्सासविस (उच्छ्वासविष) प १।७०

उस्सिय (उच्छ्रित) ज ३।१८४. सू १८।३

उस्सीसग (उच्छीर्षक) ज ५।६७

उस्सुक्क (उच्छुल्क) ज ३।१२,१३,२८,४१,४६,
५८,६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३

उस्सेह (उत्सेध) ज १।४०;३।१२,८८,१६७।११;
४।१०३,१७८;५।५७,५८ चं १० उ १।३;
३।१२

उस्सेहंगुल (उत्सेधाङ्गुल) ज २।६

ऊ

ऊण (ऊन) प २।२६,२७।४;२।६४।७;४।३,६,९,
१२,१५,१८,२१,२४,२७,३०,३३,३६,३९,
४२,४३,४५,४६,४८,४९,५१,५२,५४,५८,६४,
६७,७१,७४,७८,८१,८७,९०,९४,९७,१००,
१०३,१०६,१०९,११२,११५,११८,१२१,
१२४,१२७,१३०,१३३,१३९,१४२,१४५,
१४८,१५१,१५४,१५७,१६०,१६४,१६७,
१७०,१७३,१७६,१७९,१८२,१८५,१८८,
१९१,१९४,१९७,२००,२०३,२०६,२०९,
२१२,२१५,२१८,२२१,२२४,२२७,२३०,
२३३,२३६,२३९,२४२,२४५,२४८,२५१,
२५४,२५७,२६०,२६३,२६६,२६९,२७२,
२७५,२७८;२८१,२८४,२८७,२९०,२९३,
२९६,२९९;१२।१०;१५।५७;१८।९,१०,१२,
५९,६४,७७,८१,८३,८४,८९ से ९१,९५,
९६,१०८;२१।७४;२३।७६,१५६
ज १।१७।१;२।८८;४।५५,९२;७।२७,२९,
३० सू १।१४,१६,२१,२३,२४;६।१;१५।१८,
१९,२९,३४

ऊणक (ऊनक) सू १३।२

ऊणग (ऊनक) प २३।६६,८१,८३ से ८६,८९,
९५ से ९९,१०१ से १०३,१११ से ११४,
१५२ ज ३।२२५;१५।२७

ऊणय (ऊनक) प २३।६१,६४,६८,७३,७५,७७,
८८,९०,९२,१०४,११७,११८,१३४,१३५,
१३८,१४०,१४२,१४३,१५१,१५३,१५५,
१५७,१६०,१६१,१६४,१६६ से १६८,१७१
से १७३ ज २।६,१२६,१२४

ऊताल (एकोनचत्वारिंशत्) सू १९।४

ऊतालीस (एकोन चत्वारिंशत्) सू २।३

ऊरु (ऊरु) उ १।१३८;३।११४

ऊस (ऊष) प १।२०।१

ऊसय (उत्सव) उ १।७१,७२

ऊसविय (उच्छ्रित) ज ५।२१ सू १८।८

√ऊसस (उत्+श्वस्) ऊससंति प ७।१ से ३;
१७।२;२८।२१,३३,६७

ऊसास (उच्छ्वास) प १।४८।५३ ज० २।४।१

ऊसिय (उच्छ्रित) प २।४८;१५।५२ ज १।४२;
२।१५,१६,५२,१६१;३।७,३५,१०९,१७८;
४।६,१४,३१,४१,४९,६८,७६,९३,२२१;
५।४३;७।१६९,१७६,१७८ सू १८।८.
उ० ३।७

ए

एकादसम (एकादश) सू १०।१२४।२

एकावलि (एकावलि) ज ३।२११

एकासीइ (एकाशीति) ज ४।११०

एकूणवीसतिम (एकोनविंशतितम) सू० १२।१६

एक्क (एक) प १।४८।५४ ज १।३२ सू १०।१५७

एक्कग (एक) ज ७।१३१।१

एक्कड (इक्कट) प १।४१।१ एक तरह का
सरकंडा जिसकी चटाई बनाई जाती है।

एक्कतीस (एकत्रिंशत्) प ४।२९१ ज ४।११९
सू २।३

एक्कतीसधा (एकत्रिंशद्धा) सू १३।१४,१६,१७

एक्कमेक्क (एकैक) ज ५।१

एक्कवीस (एकविंशति) प ७।१९. ज २।६
सू २।३. उ ५।१०

एक्कवीस (एकविंशतितम) प १०।१४।४

एक्कहत्तर (एकसप्तति) ज १।४८

एक्काणउति (एकनवति) सू १।१६
एक्कार (एकादश) व १०।१४।३
एक्कार (एकादशन्) सू १८।६
एक्कारस (एकादशन्) प १।१०१।८ ज १।४८. सू १२।६. उ १।६६
एक्कारस (एकादश) प १०।१४।२
एक्कारसग (एकादश) ज ७।१३३।२
एक्कारसम (एकादश) प १०।१४।१ ज ७।६७ सू १०।७७;१३।१० उ १।१४,१७,२१,१४०; ३।१२६
एक्कारसविह (एकादशविध) प १६।३,२०
एक्कारसी (एकादशी) ज ७।१२५
एक्कावण्ण (एकपञ्चाशत्) प ७।१६ सू १।२७
एक्कासी (एकाशीति) सू १६।४
एक्कासीइ (एकाशीति) ज ४।१४३
एक्कासीत (एकाशीति) सू १६।५
एक्कासीतिविह (एकाशीतिविध) प० १७।१३६
एक्किक्किय (एकैकक) सू १६।२२।८
एक्कूणवीसइम (एकोनविंशतितम) प १।४८।६२
एक्केक्क (एकैक) प १।४८।५८ ज ७।१७८।१,२. सू ८।१;१६।२२।४ से ६
एग (एक) प १।२० ज १।७. सू १।१४ उ १।१७
एगइय (एकक) प १।७५;१५।४५,४७ से ४६; १७।१३;२०।१,४,१७,१८,२२,२५,२८,२६, ३४,३८,३६,४६,५०,५३,५८;२२।५६;२३।६; ३४।७ से ६,११,१२,१५,१६ ज १।२२,५०, २।५८,८३,१२३,१२८,१४८,१५१,१५७; ३।१०,११,८६,८७,१४४;४।१०१,१८४; ५।२७,५७;६।४ उ १।६७;३।११४,१३०, १३१,१३४,१५१;५।१७,२६
एगओवत्त (एकतोवृत्त) प १।४६
एगंत (एकान्त) ज ३।६८;५।५,२६. सू २०।७. उ १।५४ से ५७,५६,६३,७२ से ८२,८४
एगखुर (एकखुर) प १।६२,६३
एगगुण (एकगुण) प ३।१८२;५।१४६,१५०; ११।५४,५६,५८,६०;२८।७,१०,५३,५६
एगग्ग (एकाग्र) ज ५।२५
एगजडि (एकजटिन्) सू २०।८
एगजीव (एकजीव) प १।४७।१
एकजीविय (एकजीविका) प १।४७।१
एगट्ठ (एकार्थ) सू १६।२,४,६
एगट्ठिभाग (एकषष्टिभाग) सू १।१४,१६,२०, २१,२३
एगट्ठिय (एकास्थिक) प १।३४,३५
एगट्ठिहा (एकषष्टिधा) सू २।३
एगणासा (एकनासा) ज ५।१०।१
एगतओ (एकततस्) उ १।१२५
एगतारा (एकतारा) सू १०।६२
एगतिय (एकक) प ६।११० सू ६।१
एगतीस (एकत्रिंशत्) ज ४।६२ सू १३।११
एगतोनिसहसंठिय (एकतोनिषधसंस्थित) सू ४।३
एगत्त (एकत्व) प ११।८३,८५;२२।२५,२८; २३।८,१२;२४।६;२५।४;२७।२;२८।१२४; १३०,१३१,१३६,१४३,१४५
एगदिसि (एकदिश्) ज ७।४८
एगपएसिय (एकप्रदेशिक) प ११।४६
एगमेग (एकैक) प १०।५;१५।८३,८४,८६,६४ से ६७,१००,१०३ से १०६,१०६,११४,११५, ११७,१३५,१४१;३६।८ से ११,१८ से २२, ३०,३१,४४,४६ ज २।४;४।६४,११५,२६२; ६।१४,१६,२१,२२;७।१३,१६,१६ से २५, ६६,७२,७५,७८ से ८२,८४,६५,६६,६८ से १००,११४ से ११६,११६,१७० सू १।१८, २०,२१,२३,२४,२७;२।३;६।१;१०।८४,८५, ८७,६०,६१,१२४;१५।२ से ४,२६ से ३४; १८।४,२१
एगयओ (एकततस्) ज ३।१११
एगराइय (एकरात्रिक) प २।७०
एगलक्खण (एकलक्षण) सू १६।२,४,६
एगवउ (एकवचस्) प ११।२१

एगवयण (एकवचन) प ११।८६,८७
एगविह (एकविध) प २।३,६,९,१२,१५,२२।८३, ८४,८६;२४।१० से १२;२६।२,४,६,८ से १०
एगवीस (एकविंशति) प ४।२,६१ सू २।३
एगसट्ठि (एकषष्टि) ज ७।७
एगसट्ठिभाग (एकषष्टिभाग) ज ७।२७,२९,३०, ६९,७२,७५
एगसट्ठिभाय (एकषष्टिभाग) ज ७।६५,६९,७१, ७२,७५,७७
एगसट्ठिहा (एकषष्टिधा) ज० ७।२१,२२,२४,२५
एगसत्तर (एकसप्तति) ज ४।१६९ सू १२।१२
एगसमइय (एकसामायिक) प ३६।६०,६७,६८, ७१,७५
एगसमइयट्ठितीय (एकसमयस्थितिक) प ५।१४६, १४७;११।४१
एगसमयठितीय (एकसमयस्थितिक) प ३।२८१
एगसाडिय (एकशाटिक) ज ३।६;५।२१
एगसिद्ध (एगसिद्ध) प १।१२
एगसेल (एकशैल) ज ४।१९६,१९७
एगसेलकूड (एकशैलकूट) ज ४।१९८
एगागार (एकाकार) प १।६०,७२,७३,८०,८१, ८४;१३।२०;२१।७२;२३।५१ से ५३,५५,५६, ज ४।२५६
एगारस (एकादशन्) ज ३।१
एगावण्ण (एकपञ्चाशत्) ज ७।२०
एगावलि (एकावलि) ज ७।१३३
एगावलिसंठिय (एकावलिसंस्थित) सू १०।५०
एगासीति (एकाशीति) ज ३।३२
एगाहच्च (एगाहत्य) उ १।२२,२५,२६,१४०
एगाहिय (एकाहिक) ज २।६,४३;७।२५ सू २।३
एगिंदिय (एकेन्द्रिय)प १।१४,४८;३।४० से ४२,४४, ४९,१४१ से १४३,१८३;६।७१,८३,८९,९२, १००,१०२,१०७,११२; १०।३९;११।३९, ४१,८०,८४;१३।१६;१५।१०३;१६।२७; १७।३९,५९,६०,६२,८७;१८।१४,२०; २०।३५;२१।२ से ५,२२ से २५,३९,४०'४९, ५०;५७,६४,७५;७६,७९,८०,८५,९४; २२।२५,८२; २३।४०,८५,१३४,१३५,१३७ से १४०,१४२,१४३,१५०,१५६,१५९; २४।१३;२६।४,५,९;२८।१२;२८।९८,९९, १०२,१०९,११२,११५,११९,१२३,१२६, १२७,१२९,१३२,१३३,१३७ से १४१,१४३; ३४।५,१४;३५।७;३६।५६,६९ ज ३।१६७।५, १७८
एगिंदियरयण (एकेन्द्रियरत्न) ज ३।१७८,२२०; ७।२०५,२०६
एगूणणउइ (एकोननवति) ज ७।१४
एगूणणउति (एकोनवति) ज २।८८ सू १।२७
एगूणतालीस (एकोनचत्वारिंशत्) सू २।३
एगूणतीस (एकोनत्रिंशत्) प ४।२८५ सू २।३
एगूणपण्ण (एकोनपञ्चाशत्) ज २।४९ सू २।३
एगूणवण्ण (एकोनपञ्चाशत्) प ४।९८
एगूणवीस (एकोनविंशति) प ४।२५७ ज ७।४ सू १।१०
एगूणवीसइ (एकोनविंशति) ज १।१८
एगूणवीसइभाग (एकोनविंशतिभाग) ज १।२३; ४।८१,९०,९८,१६९
एगूणवीसइभाय (एकोनविंशतिभाग) ज १।१८,२०, ४८;४।९८,२००,२०१
एगूणवीसति (एकोनविंशति) ज २।८८
एगूणसट्ठि (एकोनषष्टि) सू १२।६
एगूणासीइ (एकोनाशीति) ज २।५६
एगेंदिय (एकेन्द्रिय) प १।१५; ३।४९
एगोरुय (एकोरुक) प १।८६
एज्जमाण (एजमान) ज ३।१०७
एज्जमाण (आयत्) उ १।२२,८९,१४०
एज्जेमाण (आयत्) ज ४।३५,४२,७१,७७,९४
√एड (एड्) एडेइ ज ३।९८ एडेंति ज ५।५
एडेत्ता (एलित्वा, एडित्वा) ज ५।५
एणी (एणी) ज ३।१०९
एत (एतद्) प १।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एतारूव (एतद्रूप) प १७।१२३ से १२५,१२७, १२८,१३० से १३२,१३४,१३५
एताव (एतावत्) ज २।४
एतावत्त (एतावत्) सू १३।१०,१३ से १६
एत्तो (इतस्) प १७।१३५ उ ३।१०१
एत्थ (अत्र) प १।७४ ज १।३ चं ७ सू १।२ उ ३।४५
एमेव (एवमेव) प १।१०१।३
एय (एतद्) प १।२६ ज ३।१०७ चं २।५ सू १।६ उ १।१७
एयारूव (एतद्रूप) प १७।१२६ ज १।११; २।१७,१८; ३।२६,२७,३६,४०,४७,४८,५६, ५७,६४,६५,७२,७३,११२,१२२,१२३,१३३, १३४,१३८,१३९,१४५,१४६,१८८,१९५, १९७; ४।७,१५,२६,१०७,१४६; ५।१३,२२ उ १।१५,१७,३४,४०,४३,५१,५४,६३,६५, ७४,७६,७९,९९,१०५; ३।२९,४८,५०,५५, ९८,१०६,११८,१२६,१३१; ५।२३,३१,३६, ३७
एरंड (एरण्ड) प १।४२।२; १।४८।४९
एरंडबीय (एरण्डबीज) प ११।७८
एरण्णवय (ऐरण्यवत) प १७।१६३ ज २।६
एरवत (ऐरवत) प १।८८
एरवय (ऐरवत) प १६।३०; १७।१६० ज ४।१०२; ५।५५; ६।६,१३,१६,२० सू ११८,१९
एरवयकूड (ऐरवतकूट) ज ४।२७५
एरावण (ऐरावण) ज ४।१४२।३,२०७,२६२; ५।१८
एरावणवाहण (ऐरावणवाहन) प २।५०
एरावतिय (ऐरावतिक) सू १।१६
एरावय (ऐरावत) ज ४।२७४,२८७
एरावयग (ऐरावतक) ज ४।२५२
एरिसय (ईदृशक) प २३।१९५,१९९,२०० सू २०।७ उ १।१४०
एरिसिय (ईदृशक) प २३।२०१
एलग (एलक) प १।६४ ज २।३४,३५
एलय (एलक) प ११।१६ से २०
एलवालु (दे०) प १।४८।४८
एलवालुंकी (दे०) प १।४०।१
एलापुड (एलापुट) ज ४।१०७
एलावच्चा (एलापत्या) ज ७।१२० सू १०।८८।१
एव (एव) ज १।१६ सू १९।११ उ १।२
एवइ (एतावत्) प ३६।६०
एवइय (एतावत्) प ३६।५९,६६,७४
एवं (एवं) प १।६० ज १।६ चं २।५ सू १।५ उ १।४
एवंकरणया (एवंकरण) ज ३।१२६
एवंभाग (एवंभाग) सू १।९;१०।४
एवंभूय (एवंभूत) प १६।४६
एवति (इयत्, एतावत्) प ३६।६७,७१,७५
एवतिय (एतावत्, इयत्) प ३६।६६,६८,७०,७३ सू २।२;१९।२२।२,३
एवमेव (एवमेव) प ३४।१९
एवामेव (एवमेव) प २८।१०५ ज १।२६ सू ३।१; १०।१२७ उ १।६३
एसणासमिय (एषणासमित) ज २।६८ उ ३।९९
एसणिज्ज (एषणीय) उ ३।३६,३८

ओ

ओअवण (दे० साधन, स्वायत्तीकरण) ज ४।२७७
ओइण्ण (अवतीर्ण) उ १।६०,६१
ओगाढ (अवगाढ) प ३।१८०,१८२; ५।१३९ से १४५; १०।१८ से ३०; ११।५०,६२ से ६४, ६६।१; १५।१।१; १५।१२,२५; १७।१४१; २८।५,१२,१३,२०,३२,५१,५८,५९,६६ ज ७।४१,४२,५०,५८
√ओगाह (अव+गाह्) ओगाहइ ज ३।२२,२६ चं ३।२ सू १।७।२ उ ३।५१ ओगाहई प ११।०१।६ ओगाहेइ ज ३।४४
ओगाहणट्ठया (अवगाहनार्थ) प ५।५,७,१०,१२, १४,१६,१८,२०,२४,२५,२८,३०,३२,३४, ३७,४१,४५,४९,५३,५६,५९,६३,६८,७१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७४,७८,८३,८४,८६,८९,९३,९७,१०१,१०२,
१०४,१०५,१०७,१११,११५,११६,११७,
११९,१२९,१३१,१३२,१३४,१३६,१३८,
१४०,१४३,१४५,१४७,१५०,१५४,१६०,
१६३,१६६,१६९,१७२,१७४,१७७,१७९,
१८१,१८४,१८७,१९०,१९३,१९७,२००,
२०३,२०७,२११,२१४,२१८,२२१,२२४,
२२८,२३०,२३२,२३४,२३७,२३९,२४३;
१५।१३,२६,३१

ओगाहणसंठाण (अवगाहनासंस्थान) प १।१।६

ओगाहणा (अवगाहना) प १।७४,८४; २।६४।४,
६ से ९; ५।६९,१३२,१९५; ११।७२;
१५।१३,२६,३०,३१,५८।२,६५; २१।१।१,
२१।३८,४० से ४२,४८,६३ से ६६,६८ से
७१,७४,८८ से ९४,१०५ उ ३।८३,१२०,
१६१; ४।२४

ओगाहणाणामणिहत्ताउय (अवगाहनानामनिधत्तायुष्क) प ६।११८

ओगाहणाणामनिहत्ताउय (अवगाहनानामनिधत्तायुष्क) प ६।११२

ओगाहणानामनिहत्ताउय (अवगाहनानामनिधत्तायुष्क) प ६।११९

ओगाहिऊण (अवगाह्य) ज ४।२४०

ओगाहित्ता (अवगाह्य) प २।२१,२२,२४ से २७,
३० से ३२,४१ से ४३; १५।४३,४५,५२
ज १।४६; ४।२२१; सू १।२२ उ ३।५१

ओगाहेत्ता (अवगाह्य) प २।२३,३३,३५,३६

ओगिण्हित्ता (अवगृह्य) उ १।२; ३।२९; ५।२६

ओगुंडिय (अवगुण्ठित) ज २।१३३

ओग्गह (अवग्रह) उ १।२; ३।२९,९९,१३२;
५।२६

ओघ (ओघ) ज ५।२२ से २४

ओघमेघ (ओघमेघ) ज २।१४१,१४२,१४५;
३।११५,११६,१२२,१२४

ओघसण्णा (ओघसंज्ञा) प ८।१,२,३

ओघस्सर (ओघस्वर) ज ५।५०,५२

ओचूलग (अवचूलक) ज ३।१२५,१२६,१७८;
७।१७८

ओच्छण्ण (अवच्छन्न) ज २।१२,१३; ३।१२१

ओट्ठ (ओष्ठ) प २।३१,३२ ज २।४३; ७।१७८
उ ३।११४

ओट्ठावलंबिणी (ओष्ठावलम्बिनी) प १७।१३४

ओणय (अवनत) ज २।६०

ओत्थय (अवस्तृत) ज ३।९,१८,९३,१८०,२२२

ओभंजलिया (दे०) प १।५१

ओभास (अव+भास्) ओभासइ ज ४।२१०
चं २।१ सू १।६।१ ओभासंति सू० ३।१
ओभासति सू ३।२ ओभासेंति ज ७।४९,५८

ओभास (अवभास) ज १।२३; २।१२; ४।२०१,
२१४,२४०,२६४,२७० सू २०।८,२०।८।६

ओम (अवम) सू ९।३

ओमंथिय (दे० अवमस्तिक) उ १।१५,३५; ३।९८

ओमज्जायण (अवमज्जायन) ज ७।१३२।१;
सू १०।१०६

ओमत्त (अवमत्व) प १५।४४,४५

ओमरत्त (अवमरात्र) सू १२।१६,१७।१

ओमुइत्ता (अवमुच्य) ज २।६५ उ ३।११३

√ओमुय (अव+मुच्) ओमुयइ ज २।६५,२२४;
५।२१ उ ३।११३; ४।२०

ओमोय (दे०) ज ३।६

ओम्मिमालिणी (ऊर्मिमालिनी) ज ४।२११

ओय (ओजस्) चं २।२ सू १।६।२; ६।१; ९।३

ओयंसि (ओजस्विन्) ज ३।७७,१०९

√ओयर (अव+तॄ) ओयरइ उ १।९७

√ओयव (दे०) ओयवेइ ज ३।१७५ ओयवेहि
ज ३।७६,१२८,१५१,१७०

ओयवण (दे०, साधन, स्वायत्तीकरण)
ज ३।१२९; ४।१७७

ओयवित्ता (दे० अधीनीकृत्य) ज ३।७१

ओयविय (दे० परिकर्मित) प २।३१ ज ४।१३
सू २०।७

ओयवेऊण (दे० स्वायत्तीकर्तुं) ज ३।८१
ओयवेत्ता (दे० अधीनीकृत्य) ज ३।७६
ओयसंठिति (ओजःसंस्थिति) सू १।६; ६।१; ६।२
ओयाय (उपयात) उ १।१४,१५,२१,१३६,१३७
ओयाहार (ओजआहार) प २८।१०४,१०५
ओराल (दे०, उदार) प ३४।१६,२१,२२ ज १।५; २।६४;३।१८५;४।१०७ सू २०।७ उ १।४०, ४१,४३,४४; २।११
ओरालिय (औदारिक) प १२।१,३ से ५,८,६, ११ से १३,१५ से १७,२१,२३,२७ से २६, ३२,३३,३५,३६;२१।१,३६,८०,८२,१०२, १०४,१०५;२३।४१ से ४४,८६,६२;३६।६२
ओरालियामीसगसरीर (औदारिकमिश्रकशरीर) प १६।१५;३६।८७
ओरालियमीससरीर (औदारिकमिश्रशरीर) प १६।१,४ से ७
ओरालियमीसासरीर (औदारिकमिश्रकशरीर) क १६।१२ से १५ ; ३६।८७
ओरालियसरीर (औदारिकशरीर) प १२।२३,२७, ३२;१६।१,४ से ७,१२ से १५;२१।२ से ५, १६ से २५,२८ से ३२,३६,३८,४० से ४२, ४८,७६,७७,६५,६८ से १००,१०४,१०५; २२।३७,४४,४५;२८।१०४,१४१;३६।८७
ओरालियसरीरग (औदारिकशरीरक) प १२।२०
ओरालियसरीरय (औदारिकशरीरक) प १२।७
ओरालियसरीरि (औदारिकशरीरिन्) प २८।२,१४१
ओरोह (अवरोध) ज ५।२२,२६
ओलंग (अवलम्ब) ज ७।१७८
ओलुग्ग (अवरुग्ण) उ १।३५
ओवइय (दे०) प १।५०
ओवक्कमिया (औपक्रमिकी] प ३५।१।१;३५।१२, १३
ओवमिय (औपमिक) ज २।४,५
ओवम्म (औपम्य) प २।६४।१८
ओवम्मसच्च (औपम्यसत्य) प ११।३३।१, ११।३३
√ओवय (अव+पत्) ओवयंति ज ५।५७
ओवयमाण (अवपतत्) ज ५।४४
ओववाइय (औपपातिक) ज २।८३ ; ५।५७
ओवाय (अवपात) ज २।३८
ओवासंतर (अवकाशान्तर) प १५।५१
ओविय (दे०) ज ३।६,२४ ; ५।२१,२८
√ओसक्क (अव+ष्वष्क्) ओसक्कति प १७।१५२,१५५
ओसक्कइत्ता (अवष्वष्क्य) सू १०।१४८
ओसण्ण (अवसन्न) प ८।४,६,८,१० ; २८।२०, २६,३२,६६ ज २।१३३,१३५ से १३७ उ ३।१२०
ओसण्णविहारि (अवसन्नविहारिन्) उ ३।१२०
ओसत्त (अवसक्त) प २।३०,३१,४१ ज ३।७,८८
ओसधि (ओषधि) प १।३३।१,१।४५ ज २।१३१, १४४ से १४६ ; ३।१३३,२०६,२११ ; ५।५५, ५६
ओसप्पिणी (अवसर्पिणी) प १२।७,८,१०,१२,१६, २०,२७,३२ ; १८।३,२६,२७,३७,३८,४१,४३, ४५,५६,६४,७७,८३,६०,६५,१०७,१०८ ज २।१,२,६,७,५२,५६,१३५।१ सू ८।१ ; ६।२ ; १७।१ ; २०।५
ओसरित्ता (अपसृत्य) ज ५।५८
ओसह (ओषध) उ ३।१०१
ओसही (ओषधी) ज ४।२००।१ नगरी का नाम
ओसा (दे०) प १।२३
ओसारिय (उत्सारित) उ १।१३८
ओसोवणी (अवस्वापिनी) ज ५।४६,६७
ओहय (उपहत,अवहत) ज ३।१०५,१०६,२२१ उ १।१५,३५,४१ से ४४,७१ ; ३।६८
ओहस्सर (ओघस्वर) ज २।१६ ; ५।५१
ओहडिय (अवघटित) ज १।२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओहारिणी (अवधारिणी) प ११।१ से ३

ओहि (अवधि)प १।१।७;१७।१०६ से १०८, ११०;३३।१।१;३३।१ से १३,१५ से १६, २६,२७,३५ ज २।६०,६३;३।१२,५६,८८, ११३,१४५;५।३;७।२१,५८ उ ३।७,६१

ओहिणाण (अवधिज्ञान) प ५।५,७;२४,४१,४६, ६७,११५;१७।११२,११३;२०।१७,१८,३४; २८।१३६;२६।२,६,१७,१६;३०।२,६

ओहिणाणारिय (अवधिज्ञानार्य) प १।६६

ओहिणाणि (अवधिज्ञानिन्) प ३।१०१,१०३; ५।४३,६६ मे ६६,११४ से ११७;१३।१४; १८।८०;२८।१३६;३०।१६ ज २।७६

ओहिदंसण (अवधिदर्शन) प ५।५,७,४५,६७; २६।३,७,१७,१६;३०।३,७

ओहिदंसणावरण (अवधिदर्शनावरण) प २३।१४

ओहिदंसणि (अवधिदर्शनिन्) प ३।१०४;५।४७, ६६,११७;१८।८७;३०।१६

ओहिनाणपरिणाम (अवधिज्ञानपरिणाम) प १३।६

ओहिनिगर (अवधिनिकर) ज ३।१२,८८

ओहिय (औघिक) प २।३४,३७,४२,४३,५०; ४।५५,६८,७५,६१;६।७३,७४;११।८२,८३; १२।२६,२८,२६,३२ से ३४,३६;१५।१८, १६,३०;१७।२८ से ३०,३२,३३,३५,५८, ६०,६२,६३;२१।३१,३६,४२,४४ से ४७, ६१,७०;२२।२४;२३।१७६,१८१,१८५,१६०; २६।१५

क

क (किम्) प १।१ ज १।४५ सू १।६ उ १।४

कइ (कति) प १५।५३;१८।१४१,२२।४०,४१, ६०;२५।४ ज १।३४;४।२१४ चं २।१,३ सू १।६।१,३ उ १।६;२।१;४।१

कइविह (कतिविध) प १६।१;२१।७,१३;३०।२ ज २।५;७।१०४,१०५,१११ से ११३

कइरसार (करीरसार) प १७।१२५

कओ (कुतस्) प ६।८२,६३;११।३०।१ ज ७।३१

कंक (कङ्क) प १।७६ ज २।१३७

कंकग्गहणी (कङ्कग्रहणी) ज २।१६

कंकडग (कंकटक) ज ३।३५,१७८

कंकण (कङ्कण) उ ३।११४

कंकावंस (दे०) प १।४१।२

कंगु (कङ्गु) प १।४५।२ ज २।३७;३।११६

कंगुया (कंगू) प १।४०।२

कंचण (काञ्चन) ज १।३७;२।१५,७०;३।१२, २४,३५,८८,१०६,११७;५।५८;७।१७८

कंचणकूट (काञ्चनकूट) ज ४।२०४।१

कंचणकोसी (काञ्चनकोशी) ज ३।१७८

कंचणग (काञ्चनक) ज ४।१४२।१

कंचणगपव्वय (काञ्चनकपर्वत) ज ४।१४२; ६।१०

कंचणपुर (काञ्चनपुर) प १।६३।१

कंटक (कण्टक) ज ४।२७७

कंटकबहुल (कण्टकबहुल) ज १।१८

कंटग (कण्टक) ज २।३६

कंटय (कण्टक) ज ३।२२१

कंठ (कण्ठ) ज ५।५६;७।१७८

कंठाणुवादिणी (कण्ठानुवादिनी) सू ६।४

कंड (काण्ड) प २।४१ से ४३,४६

कंडावेलु (कण्डावेणु) प १।४१।२

कंडुइय (कण्डूयित) ज १।१३३

कंडुक्क (कंडुक) प १।४८।५०,६२ भिलावा, तमाल

कंडुरिया (कंडुर) प १।४८।२ एक तरह का सरकंडा

कंत (कान्त) प २।४१;२८।१०५ ज २।१५,६४, ६५;३।६२,११६,१८५;२०६;५।२८,५८ सू २०।४ उ १।४१,४४;३।११२,१२८;५।२२

कंततर (कान्ततर) ज २।१८;४।१०७

कंततरिय (कान्ततरक) प १७।१२६,१२७,१३३ से १३५ ज २।१७

कंतत्त (कान्तत्व) प ३४।२०

कंतयरिय (कान्ततरक) प १७।१२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंतस्सरता (कान्तस्वरता) प २३।१६
कंति (कान्ति) ज २।६५;३।१८६,२०४
कंद (कन्द) प १।३५,३६,४८।७,११,२१,३१,३५, ६१,१।१०१,१२८ ज ४।७ उ ३।५०,५१,५३
कंदप्प (कन्दर्प) प २।४१
कंदप्पिय (कान्दर्पिक) प २०।६१ ज ३।१७८
कंदमाण (क्रन्दत्) उ १।६२;३।१३०
कंदमूल (कन्दमूल) प १।४८।८,६१
कंदर (कन्दर) ज २।६५;३।३५
कंदल (कन्दल) ज ३।३५
कंदलग (कन्दलक) प १।६३
कंदलि (कन्दली) प १।३७।२,१।४३।१
कंदली (कंद) (कन्दलीकन्द) प १।४८।४३
कंदलीथंभ (कन्दलीस्तम्भ) प ११।७५
कंदाहार (कन्दाहार) उ ३।५०
कंदित (क्रन्दित) प २।४१
कंदिय (क्रन्दित) प २।४७।१
कंदु (कन्दु) उ ३।५०
कंदुवक (कंदुक) ब १।४८।५०
कंपण (कम्पन) ज ३।३५
कंपिल्ल (काम्पिल्य) प १।६३।२
कंबल (कम्बल) प १५।११२,१५।५१
कंबु (कम्बु) प १।४८।३
कंस (कांस्य) प ११।२५ ज २।२४,६६ सू २०।८
कंसणाभ (कंसनाभ) सू २०।८;२०।८।३
कंसताल (कांस्यताल) ज ३।२१
कंसवण्णाभ (कांस्यवर्णाभ) सू २०।८
कंसीय (कंसीय) प ११।२५
ककुह (ककुद) ज ७।१७८
कक्कस (कर्कश) उ ३।६८
कक्केयण (कर्केतन) ज ३।३५,१०६
कक्कोडइ (कर्कोटकी) प १।४०।२
कक्ख (कक्ष) ज० २।१५ उ० ३।६८
कक्खंतर (कक्षान्तर) उ ४।२१
कक्खड (कर्कश) प १।४ से ६;२।२० से २७; ३।१८२;५।५,७,२०६ से २०८;१३।२६; १५।१४,१६,२७,२८,३२,३३;२३।५०;२८।६, १०,२०,३२,५५,५६,६६
कच्चायण (कात्यायन) ज ७।१३२।४ सू १०।११७
कच्छ (कक्ष) ज ४।२४८
कच्छ (कच्छ) ज ३।८१;४।१६२।१,१६७,१७२।१, १७७,१७८,१८१,१८४,१८७,१६०,२००; ७।१७८
कच्छकूड (कच्छकूट) ज ४।१६३,१६४,१८०
कच्छगावइ (कच्छकावती) ज ४।१८५ से १८६
कच्छगावइकूट (कच्छकावतीकूट) ज ४।१८७
कच्छगावती (कच्छकावती) ज ४।१८७
कच्छभ (कच्छप) प १।५५,५७ ज २।१३४; ४।३,२५ सू २०।२
कच्छभी (कच्छभी) ज ३।३१
कच्छविजय (कच्छविजय) ज ४।१६३,१६६,१६६
कच्छा (कक्षा) वराही नामक पौधा, झींगुर प १।४६;१।४८।६२
कच्छु (कच्छू) ज २।१३३
कच्छुल (कच्छुरा) प १।३८।२
कच्छुरी (कच्छुरा) प १।३७।१
कज्ज (कृ) कज्जइ प २२।१०,१५,१६,१८,४८, ५०,५२,६७ से ६६,७२,८२,६१ से ६३,६८, ६६ ज ७।५२,५३ कज्जंति प १७।११,२२, २३,२५;२२।५१,७१,७३,७४ कज्जति प १७।२५;२२।६,११ से १४,१७,१६,४८ से ५०,५२ से ५६,६१ से ६५,६७ से ६६,७१ से ७४,७६ से ७६,८१,६१,६४,६७ से ६६
कज्ज (कार्य) सू १०।१२० उ ३।११,५१,५६
कज्जल (कज्जल) प १७।१२३
कज्जलप्पभा (कज्जलप्रभा) ज ४।१५५।२, २२३।१
कज्जोवग (कार्योपग) ज ७।१८६।२ सू २०।८; २०।८।२
कट्टु (कृत्वा) प ११।७० ज २।६४ सू १।२०, २१ उ १।१७

कट्ठ (काष्ठ) प १।४८।३० से ३७ ज २।९५, ९६,९८,१३१;३।९८;५।५,१४ से १६ उ ३।५०,५१

कट्ठपाउयार (काष्ठपादुकाकार) प १।९७

कट्ठमुद्दा (काष्ठमुद्रा) उ ३।५५,५६,६३,६४,६७, ६८,७०,७१,७३,७४,७९

कट्ठसेज्जा (काष्ठशय्या) उ ५।४३

कट्ठा (काष्ठा) सू १।६।३;१।९।१ से ३

कट्ठाहार (काष्ठाहार) प १।५०

कड (कृत) प २०।३९;२३।१३ से २३ ज १।१३, ३०,३३,३६;२।७१;४।२ सू १२।२ से ६,१० से १२ उ १।२७,१४०

कडक्ख (कटाक्ष) ज ७।१७८

कडग (कटक) प २।३० ज ३।६,९,१७,२६,३९, ४७,५६,६४,७२,९७,१०९,१३३,१३५,१३८, १४५,१५०,१६१,२११,२२२;५।२१,५८ उ ५।५

कडय (कटक) प २।३१,४१,४९ ज १।९;३।९५, १५९;४।६

कडाह (कटाह) प १।४८।४९ कटाहवृक्ष

कडि (कटि) ज ३।१७८;७।१७८ उ ३।११४

कडिसुत्त (कटिसूत्र) ज ३।९,२२२

कडुगतुंबी (कटुकतुम्बी) प १७।१३०

कडुगतुंबीफल (कटुकतुम्बीफल) प १७।१३०

कडुच्छुग (दे०) ज १।४०;४।१३९,२४२

कडुच्छुय (दे०) ज ३।११,१२,८८;४।२१९; ५।५५,५७,५८ उ ३।५०,५५

कडुय (कटुक) प १।४ से ९;५।५,७,२०५; २८।२०,३२,६६, ज २।१४५;७।११२।२ सू १०।१२९।२

कढिण (कठिन) उ ३।५०

कण (कण) सू २०।८

कणइर (करवीर) प १।३८।१ ज २।१० कर्णिकार का पेड

कणकण (कणकण) ज ५।२४

कणकणय (कणकणक) सू २०।८

कणग (दे०) ज ३।३५ बाण

कणग (कनक) प १।५१; २।४०।८,९;२।४८ ज १।५,१६,३८; २।१५,६४,६८,६९; ३।९, २४,३५,५६,८१,१४५,१७८,२११,२२२; ४।१०,११५; ४।२१०।१,२१७; ५।५८; ७।१७८

कणगमय (कनकमय) ज ३।१६७।१२

कणगरयणदंड (कनकरत्नदण्ड) ज ३।१०९

कणगसणाम (कनकसनामन्) ज ७।१८६।१ सू २०।८।१

कणगामई (कनकामयी) ज ४।७,१५,२४५

कणगामय (कनकमय) ज १।४६;३।१०९,१६७; ४।१,११०,१५६

कणगावलि (कनकावलि) ज ३।२११

कणय (कनक) प १।४१।२ पलाश, धतूरा

कणय (दे०) ज ३।३१

कणय (दे०) सू २०।८ एक ग्रह का नाम

कणयदंडियार (कनकदण्डिकार) ज ३।३५

कणयमय (कनकमय) ज १।४६।१

कणवितामय (कनकवितानक) सू २०।८ ग्रह का नाम

कणसंताणय (कनकसंतानक) सू २०।८ ग्रह का नाम

कणवीर (करवीर[1])ज २।१५;३।१२,८८;५।५८

कणिक्कामच्छ (कणिकामत्स्य) प १।५६

कणीयस (कनीयस्) उ १।९५

कण्ण (कर्ण) ज २।४३,६४;५।२६,३८;७।१७८ उ ३।१०२

कण्णकला (कर्णकला) सू १।८।१;२।२

कण्णगा (कन्यका) उ ५।१३,२५

कण्णत्तिय (दे०) प १।७८

कण्णपाउरण (कर्णप्रावरण) प १।८६

---

१. हे० १।२५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्णपीढ (कर्णपीठ) प २।३०,३१,४१,४६
कण्णमूल (कर्णमूल) ज ५।१६
कण्णा (कन्या) ज ३।३२
कण्णायत (कर्णायित) ज ३।२४,१३१
कण्णायय (कर्णायित) उ १।२२,१४०
कण्णिगा (कर्णिका) ज ४।७
कण्णिया (कर्णिका) प १।४८।४५ ज ३।११७; ४।८,१५,१६
कण्णियारकुसुम (कर्णिकारकुसुम) प १७।१२७
कण्णिलायण (कर्णिलायन) सू १०।६५
कण्णिल्ल (कर्णिल) ज ७।१३२।१
कण्ह (कृष्ण) प १।४४।३;१।४८।७,१।६३।६; २।२०;१७।२६,५६ से ६६,७१ से ७६,८१ से ८७,६४,१०० से १०४,१०६,१०६,११२, १६६,१६७,१६६ से १७२ उ १।७; ५।६,१५, १७ से १६
कण्ह (वल्ली) (कृष्णवल्ली) प १।४०।३
कण्हकंदय (कृष्णकंदक) प १७।१३०
कण्हकडबु (दे०) प १।४८।३
कण्हलेस (कृष्णलेश्य) प १३।१५; १७।८३,६२, ६४,६५,१०३,१०४,१०७,१०८,१२१,१२६, १७०,१७२;१८।६६;२३।१६५,२००
कण्हलेसट्ठाण (कृष्णलेश्यास्थान) प १७।१४६
कण्हलेसा (कृष्णलेश्या) प १७।१२१;२८।१२३
कण्हलेस्स (कृष्णलेश्य) प १३।१४,१६
कण्हलेस्सट्ठाण (कृष्णलेश्यास्थान) प १७।१४६
कण्हलेस्सा (कृष्णलेश्या) प १३।१४,१६;१६।४६, ५०;१७।३६,३८,३६,४१,४३,४७,५०,८२, ११४ से ११६,११८,१२१,१२३,१३०,१३६ से १४५,१४७ से १५०,१५६ से १६४
कण्हलेस्सापरिणाम (कृष्णलेश्यापरिणाम) प १३।६
कण्हसप्प (कृष्णसर्प) प १।७० सू २०।२
कत (कृत) प २८।१०५;३४।१६ सू २०।७
कतर (कतर) प ३।३८ से ४८,५० से १२०,१२२ से १२४,१७४,१७६ से १८२;६।१२३;८।५, ७,६,११;६।१२,१६,२५;१०।३ से ५,२६, २८,२६;११।७६,६०;१५।१३,१६,२६,२८, ३१,३३,६४;१७।५६ से ६६,७१ से ७६,७८ से ८३,१४५,१४६;२०।६४;२१।१०४,१०५; २८।४१,४४,७०;३४।२५;३६।३५ से ३७,३६ से ४१,४८,४६ सू १३।६,८,१०,१३;१८।७, ३७
कति (कति) प ६।१२०,१२१;८।१ से ३,१०।१ ,१५;११।३०।१;११।४२,८८;१२।१ से ५; १४।१ से ३,५,११ से १४,१७; १५।१।१, १५।१,१२,१७,१६,२०,२५,३०,५४,५६, ५७,७७ से ८०,१३३,१३४;१७।३६ से ४०,११२ से ११४,१२६,१३६,१३७, १४७,१५६,१५७,१५६ से १६१,१६३; २१।१,६५,६६;२२।१,२१ से २३,२६,२७, २६,३०,३२ से ३६,४२ से ४७,५७,६६,८३, ८४,८६,८७,८६,६०;२३।१।१,२३।१,२,६,७, २४;२४।१ से ५,१० से १५;२५।१,२,५; २६।१ से ४,८,६;२७।१ से ३,५,६;२८।३१; ३६।१,४ से ७,४२,४३,५३,५४,५८,६२ से ६४,७७,७८ ज १।१५,४।२६० चं २।३,५ सू १।६।३,१।६।१ से ३;१०।८ से १६,६३ से ७४,७६;१२।१;१३।४,५,१५ से ३७;१८।१४ से १७;१६।१
कतिपएसिय (कतिप्रदेशिक) प १५।११,२४
कतिपदेसिय (कतिप्रदेशिक) प १७।१४०
कतिप्पगार (कतिप्रकार) प ११।३०।१
कतिभाग (कतिभाग) प २८।१।१,२८।२२,३४,३६ ६८
कतिभागावसेसाउय (कतिभागावशेषायुष्क) प ६।११४ से ११६
कतिविध (कतिविध) प ६।११८;१७।१३६
कतिविह (कतिविध) प ५।१,१२३ से १२५; ६।११६;६।१,१३,२०,२६;११।३१ से ३७, ७३,८६;१३।१ से १३,२१ से ३१;१४।७,६; १५।५८ से ६०,६२,६३,६५ से ७४,७६;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६।२,३,१७,१६,२०;२०।६२; २१।२ से ६; ८ से १२,१४,१५,१६,२०,४६,७२,७५ से ७७,६४;२२।२ से ६; २३।१।१,२३।१३ से २३,२५ से ४७,५७ से ५६;२६।१ से ३,५ से ७,६,१०,१२,१३;३०।१,३,५ से ११,१३; ३३।१;३४।१७;३५।१,४,६,८,१०,१२,१६ ज २।१ से ३;४।२५४,२५५ सू १०।१२६; २०।३

कतिसमइय (कतिसामयिक) प १५।६१; ३६।२, ३,८४,८५

कतो (कुतस्) प० ६।७० सू ४।४

कत्तिई (कार्तिकी) ज ७।१४०,१४४,१४६ सू १०।२६

कत्तिगी (कार्तिकी) ज ७।१३७,१५५

कत्तिम (कृत्रिम) ज २।१२२,१२७;४।१००,१७०

कत्तिय (कार्तिक) ज ७।१०४,११३।१,१३७ उ ३।१३,४०

कत्तिया (कृत्तिका) ज० ७।१२८,१२६,१३६, १४०,१४४,१४६,१५६,१६० सू १०।१ से ६, ११,२३,३६,६२,६६,६७,७५,८३,१०१;१२०, १२४,१३१ से १३३;१२।२८

कत्तिया (कार्तिकी) सू १०।७,११,२३,२६

कत्तो (कुतस्) प ६।१।१;६।७५,७८,८०,८१,८७, ६०,६४,६६ ज ३।१२७

कत्थ (कुत्र) प २।६४।२

कत्थइ (कुत्रचित्) ज २।६६ सू २०।७

कत्थुल (कस्तुल) ज २।१०

कदलीथंभ (कदलीस्तंभ) प ११।७५

कद्दम (कर्दम) ज० ३।१०६ उ १।१३६

कद्दुइया (दे०) प १।४०।२

कधं (कथं) सू १६।२४

कप्प (कल्प) प० २।१,४,१०,१३,५० से ५६, ५६।२;२।६०;६३;३।२६ से ३६;१८३;४।२१३ से २४०,२४३,२४६,२५८,२६४;६।२८,६५, ६८,१०६;२०।६१;२१।७०,६१,६२;३०।२६; ३४।१६,१८ ज ५।१८,२४ से २६,४४,४६ उ २।२०,२२;३।६०,१२०;१५६,१६१;४।५, २४,२८

√**कप्प** (कृप्)—कप्पइ उ ३।५०;४।२२— कप्पेंति ज ५।१३,१८,२४,२५

√**कप्प** (कल्पय्) कप्पेह उ ५।१८

कप्पकार (कल्पकार) ज ३।११७

कप्पणा (कल्पना) ज ३।३५

कप्पणी (कल्पनी) ज ३।३१

कप्पणिकप्पिय (कल्पनीकल्पित) उ १।४६

कप्परुक्ख (कल्पवृक्ष,कल्परूक्ष) ज ३।६,२११,२२२

कप्परुक्खग (कल्परूक्षक) ज ५।५८

कप्पवर्डिसिया (कल्पावतंसिका) उ १।५;२।१ से ३,१४,१५,२१; ३।१

कप्पाईय (कल्पातीत) प १।१३८

कप्पातीत (कल्पातीत) प १।१३४; २१।५५,७१

कप्पातीतग (कल्पातीतक) प ६।८५,६२

कप्पातीय (कल्पातीत) प १।१३६; २१।६२

कप्पासट्ठिसमिंजिया (कार्पासास्थिसमञ्जिका) प १।५०

कप्पासिय (कार्पासिक) प १।६६

कप्पिंद (कल्पेन्द्र) प १५।५५।२

कप्पिय (कल्पित) ज ३।६,२२२

कप्पूरपुड (कर्पूरपुट) ज ४।१०७

कप्पेत्ता (कल्पयित्वा) ज ५।१२

कप्पेमाण (कल्पमान) ज १।१३४

कप्पोवग (कल्पोपग) प १।१३४,१३५; ६।८५; ८६,६५; २१।५५

कप्पोववण्णग (कल्पोपपन्नक) ज ७।५५ सू १६।२३ २६

कबंध (कबन्ध) उ १।१३६

कब्बड (कर्बट) प १।७४ ज २।२२,१३१;३।१८, ३१, १८०,१८५,२०६,२२१ उ ३।१०१

कब्बडय (कर्बटक) ज ७।१८६।२ सू २०।८, २०।८।२

कम (क्रम) ज ३।३१,१०६,२१७;४।२०२;७।१३० सू १६।२२।१४

√कम (क्रम्) कमइ ज २।६;४।२०२;७।१३०

कमंडलु (कमण्डलु) ज २।१५ उ ३।५१।१

कमल (कमल) ज २।१५;३।३,६,१८८,२०६, २१०;५।२१,५६ उ १।१५,३५;३।९८

कमलमाला (कमलमाला) उ १।३५

कमलागर (कमलाकर) ज ३।१८८

कमलामेल (कमलामेल) ज ३।१०६

कम्म (कर्मन्) प १।१।६;२।६४।२१;३।१७४; ११।८६; १७।१।१;१७।१८;२०।३९; २१।१०२;२२।२६,२७;२३।३,६,७,९ से ११, १३ से २३,२५,२६,२९ से ४१,४७,४८,५७ से ६४,६६,६८,६९,७३ से ७७,८१,८३,८५ से ९०,९२,९३,९५ से ९९,१०१ से १०४, १११ से ११४,११६ से ११८,१२७,१३०, १३१,१३३ से १३५,१३७,१३८,१४२,१४३, १५५,१६१,१६५,१६७,१७१,१७६,१७७, १८२,१८३,१८७,१९१ से २०१;२४।२ से ५, ११,१२,१४;२५।२,४,५;२६।२ से ४,८,९; २७।२,३,६;३६।८२,८३।१,३६।९२ ज १।१३, २०,३३,३६;२।५१,५४,६४,७०,१२१,१२६, १३०,१३८,१४०,१४९,१५४,१६०,१६३; ३।२२।२,३५,१२५,१६७।७,१७८,२११,२२३; ४।२;७।११२।३ सू १०।१२९।३;२०।१,२; २०।९।३,५ उ १।२७,१४०

कम्मंस (कर्मांश) प ३६।८२,९२

कम्मकर (कर्मकर) ज ३।१७८

कम्मखंध (कर्मस्कन्ध) प ३६।९२

कम्मग (कर्मक) प १२।१४,२१,२६,२९; २१।९६, १०५;२३।४१,४३,४४;३६।९२

कम्मगर (कर्मकर) ज ५।५७

कम्मगसरीर (कर्मकशरीर) प १२।१०;१६।१५, १८,२१;२१।९४,१०० १०३ से १०५;३६।८७

कम्मगसरीरि (कर्मकशरीरिन्) प २८।१४१

कम्मपगडि (कर्मप्रकृति) प १४।११ से १४,१७; २२।२१ से २३,२८,८३,८४,८६,८७,८९, ९०;२३।१ से ५,२४;२४।१ से ५,१० से १५; २५।१,२,४,५;२६।१ से ४,८,९;२७।१ से ३, ५,६

कम्मबीय (कर्मबीज) प ३६।९४

कम्मभूमग (कर्मभूमिक) प १।८५,८८,१२९; ६।७२,८४ ९७,९८,११३;२१।५४,७२

कम्मभूमग (कर्मभूमिज) प २३।२००

कम्मभूमगपलिभागि (कर्मभूमिकपरिभागिन्) प २३।१९६,१९९ से २०१

कम्मभूमय (कर्मभूमज) प ६।७९;१७।१५९,१६१, १७१;२३।१९६,१९९

कम्मभूमि (कर्मभूमि) प १।७४,८४;२।७,२९

कम्मभूमिग (कर्मभूमिज) प २३।२०१

कम्मय (कर्मक) प १२।१ से ५,३५,३६;२१।१

कम्मवेदय (कर्मवेदक) प १।१।६

कम्मसरीर (कर्मशरीर) प १२।८

कम्मा (कर्मक) प १२।२५;२१।१०२

कम्मार (कर्मार) ज २।२६

कम्मारिय (कर्मार्य) प १।९२,९६

कम्मासरीर (कर्मकशरीर) प १६।१ से ८,१० से १५,१९

कम्मिया (कार्मिकी) उ १।४१,४३

कम्हा (कस्मात्) ज ७।३८

कय (कृत) प २।३०,३१,४१ ज ३।९,१८,५८, ६६,७२,७४,७७,८१,८२,८५,९२,९३, ११७।१,११९ १२१,१२५,१४७,१८० २२१, २२२,२२६; ५।२६,५६ उ १।१९,७०,८८, ९२,१२१;३।४८,५०,५१,५६,११०;५।१७

कयंब (कदम्ब) प १।३६।३

कयकज्ज (कृतकार्य) सू २०।७

कयग्गह (कचग्रह) ज ३।१२,८८;५।७,५८

कयत्थ (कृतार्थ) ज ५।५,४६ उ १।३४

कयपुण्ण (कृतपुण्य) उ १।३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कयमाल (कृतमाल) ज २।८; ३।७१ से ७४,७६, ८४
कयमालक (कृतमालक) ज ३।७१,१५०
कयमालय (कृतमालक) ज १।२४,४६; ६।१६
कयर (कतर) प ३।४६; १७।१४४; २२।१०१; ३६।३८ ज ७।१२६,१७५,१८०,१८१,१९७ सू १०।२ से ४,७५,७७,१३३ से १३५; १८।१८,१९
कयलक्खण (कृतलक्षण) उ १।३४
कयलीखंभ (कदलीस्तंभ) ज २।१५
कयलीहर (कदलीगृह) ज ५।१४
कयलीहरग (कदलीगृहक) ज ५।१३
कयवर (कचवर) ज २।३९; ५।५
कयविहव (कृतविभव) उ १।३४
कया (कदा) ज ७।१२५ चं २।४ सू १।६।४; १४।१
कयाइ (कदाचित्) ज १।४७; ३।४,८३,१०४, १५४,१७२,१८८,२२२,२२६; ४।२२,५४, १०२ उ १।१४; ३।४६; ४।२१; ५।१३
कयाइं (कदाचित्) उ २।८
कर (कृ) अकासी ज २।८४ करवाणि ज ३।३२।१ करिस्सामि ज २।६; ५।४६ करिस्सामो ज ५।५,७ करेइ प १।७४; ३६।८८ ज १।६; २।६५,९०; ३।५,६,१२,१८ १९,३१,३२।२, ४९.५२,५३ ६१,६२ ६९,७०,८८,९५,१००, १३१,१३७.१४१ १४२,१५९,१६४,१६५, १८०,१८१,२२४; ५।२१,२९,४४,४६ ४८ सू २।१ उ १।१९; २।५१; ४।१३ करेंति प १।८४; ६।११०.२०।६ से ८; ३४।१९,२१ से २४ ज १।२२,२७,५०; २।१०.५८,१००, ११५,११६,११८,१२०,१२३,१२८; ३।१३, २८.४२,४७,५० ५९,६७,७५,९२,११९,१३९, १४८.१६९,१८४,२११; ४।१०१,१६६,१७१; ५।५.७,१४,१६,४६,५७,६०,६६,७४ सू २।१ उ १।६३ करेज्जा प २०।१ से ४,१८, ४०,४४,४६,४८ ज ५।७, करेति प १।७१; १६।५०; ३६।८२।१ ३६।८५,९२ ज २।९९, ११७ करेमि ज २।९०; ३।२६,३९,४७,५६ ' १३३,१४५; ५।२२ उ १।४२ करेमो ज ३।११३,११५,१३८; ५।३ करेसि उ ३।७९ करेस्सामी उ ३।२९ करेह ज २।१४; ३।७, १२,२८,४१,४९,५८,६१,६६,७४,१४७,१६८ करेहि ज ३।१८,१९.३१,५२.६९,९९,१४१, १९४,१८० सू ३।१०३ करेहिइ उ ३।२१ करेहिंति ज २।१५१.१५७ उ ३।१२६ काहिइ उ १।४१; ३।८६ कीरइ उ ५।४३
कर (कर) ज २।१५,७१; ३।३,१३८ उ १।१३९
करंज (करञ्ज) प १।३५।१ कंजा जिसके फल आदि दवा के काम आते हैं
करंडग (करण्डक) उ ३।१२८
करंडुग (दे०) ज २।१६
करंत (कुर्वत्) उ १।८८,९२
करकर (करकर,अकरकरा) प १।४२।२; १।४८।४६ अकरकरा
करकरय (करकरक) सू २०।८।९
करकरिय (करकरिक) सू २०।८
करण (करण) ज १।१३८; ३।३२ १२६,२०९; ५।५; ७।१२३ से १२६
करतल (करतल) ज ३।२०९
करधाण (करध्मान) ज ३।३१
करमद्द (करमर्द) प १।३७।४ करौंदा,आंवला
करय (करक) प १।२३
करयल (करतल) ज ३।५,६,८,१२,१९,२६,३९, ४७,५३.५६,६२ ६४,७०,७२,७७,८४,८८, ९०,१००,१०५,११४,१२६,१३३,१३८ १४२, १४५,१५१,१५७ १६५,१८१.१८९,२०५, २०६; ५।५ ७,,२१.४६,५८ उ १।१५,३५, ३६,४५.५५.५७,५८,६१,६२,८०,८२,८३ ८६,८७,९९,१०७,१०८,११६,११८,१२२; ३।९८,१०६,११४,१३८,१४८; ४।१५; ५।१७
करयलपुड (करतलपुट) ज ५।१४,१७,६० ६६
करिय (कृत्वा) ज ५।५८

करित्तए (कर्तुम्) प २८।१०५ ज ५।२२
करीर (करीर) प १।३७।४ करील
करेंत (कुर्वत्) ज २।६५
करेत्तए (कर्तुम्) प ३४।१६,२१ से २४ ज २।६०
उ ३।११५
करेत्ता (कृत्वा) प ३६।६२ ज १।६ सू २।१
उ १।१६; ३।७; ४।१३
करेमाण (कुर्वत्) ज २।६५,७८; ३।२२,२८,३१,
३२,३४ से ३६,५४,७८,८६,६३,६६,१०२
१०६,१११,११३,१३७,१४३,१५६,१६२,
१६३,१८०,२०४ से २०६,२०८,२०६,२२३
उ १।२२,६५,६६,७१,६४,१११,११२,१३८,
१४०; ३।५०
कल (कल) प १।४५।१ ज २।३७ सालवृक्ष
कलंकलीभाव (कलंकलीभाव) प २।६४
कलंबुया (कदम्बक) प १।४६; १५।२,१८ सू ४।३,
४,६,७,६;१६।२२।२,१५; १६।२३
कलकल (कलकल) ज २।६५; ३।२२,३६,७८,६३,
६६,१०६,१६३,१८०; ७।५५,१७८ सू १६।२३
उ १।३८
कलकुसुम (कलकुसुम) प १७।१२५
कलताल (कलताल) ज ३।३१
कलस (कलश) प २।३०,३१ ४१ ज २।१५;
३।१७८,२०६; ४।२८; ५।५६ से ५८
उ ३।५१,५६
कलह (कलह) प २।४१; २२।२० ज २।४२,१३३
कलहंस (कलहंस) प १।७६ ज २।१२
कला (कला) ज २।६४; ७।१३४।१ सू १०।१४२,
१४७; १२।३० उ ५।१३
कलाव (कलाप) प २।३०,३१,४१; १५।२६;
२१।२५ ज ३।७,८८,११७
कलिंग (कलिङ्ग) प १।६३।१
कलिंद (कलिन्द) प १।६४।१
कलिय (कलित) प २।३०,३१ ४१,४८ ज ३।१०,
१५,६५; ३।७ १२,१५,२१,२२,२८,३१,
३२।२,,३४ से ३६,४१ ४६,५८,६६,७४,७७,
७८,८८,६१,१४७,१६८,१७३,१७५,१८४,
१६६,२१२,२१३; ४।२७,४६ १६६; ५।७
२८,४३ सू २०।७ उ १।१२३; ५।१८
कलुय (कलुक) प १।४६
कलुस (कलुष) ज २।१३१
कलेवर (कलेवर) प १।८४ सू २०।१
कल्ल (कल्य) ज ३।१८८ उ ३।४८,५०,५५,६३,
६७,७०,७३,१०६,११८
कल्लाण (कल्यानी) प १।४१।२ जंगली ३३८
कल्लाण (कल्याण) ज १।१३,३०,३३,३६;
२।१८,६४,६७; ४।२ सू १८।२३ उ १।१७,
४१,४४; ५।३६
कल्लाणग (कल्याणक) प २।३०,३१,४१,४६
ज ३।६,२२२
कल्हार (कल्हार) प १।४६ सफेद कोइ, एक पुष्प
कवड (कपट) ज २।१३३
कवय (कवच) प २।६४।२१ ज १।३७; ३।३१,
७७,७६,६६,१००,१०१,१०७,११६,१२४
उ १।१३८
कवाड (कपाट) प २।८,३०,३१,४१ ज १।२४;
३।८३,८५,८८ से ६०,१०२,१५४ से १५७,
१६२,१६७।१२
कविंजल (कपिञ्जल) प १।७६
कविट्ठ (कपित्थ) प १।३६।१; १६।५५; १७।१३२
ज ३।११६; ७।१७६ कैथ
कविट्ठाराम (कपित्थाराम) उ ३।४८,५५
कविल (कपिल) ज २।१२,६५,१३३
कविलय (कपिलक) सू २०।२ राहु का नाम
कविसीसग (कपिशीर्षक) ज ३।१; ४।११४
कविसीसय (कपिशीर्षक) ज ४।११४
कवोय (कपोत) प १।७६ ज २।१६
कवोल (कपोल) ज २।१५
कव्व (काव्य) ज ३।१६७।१०
कस (कष) ज २।६७; ३।१०६
कसरि (दे०) सू १०।१२०

कसाय (कषाय) प १।१।५,,१।४ से ६; ३।१।११; ५।५,७,२०५; १४।१,२; १८।१।१; २३।६८, १४०,१८३,१८४; २८।३२,६६,१०६।१; ३६।१।१ ज २।१४५
कसायपरिणाम (कषायपरिणाम) प १३।२,५,१४ १६
कसायवेयणिज्ज (कषायवेदनीय) व २३।१७,३४, ३५
कसायसमुग्घात (कषायसमुद्घात) प ३६।६५
कसायसमुग्घाय (कषायसमुद्घात) प ३६।१ ४,५, ६,७,२१,२२ २८,३५ से ४३,४६,५३ से ५८
कसाहिया (दे०) प १।७१
कसिण (कृष्ण) प २।३१ ज २।१५
कसिणपुग्गल (कृष्णपुद्गल) सू २०।२
कसेरुया (कशेरुक) प १।४६ एक तरह का घास
कह (कथं) प २३।१।१
√कह (कथय्) कहेइ उ २।१२
कहं (कथं) ज ७।५६ चं २।४ सू १।६ उ १।७२, ३।७८
कहग (कथक) ज २।३२
कहा (कथा) उ १।१७,५७,८२,६६,१०७,१२७; ३।१३,२६,१४७,१६०; ४।११; ५।१५,३८
कहि (क्व) प १।७४ ज १।७
कहिं (क्व) प ६।६६ ज २।१८ चं २।२ सू १।६।२ उ १।२५
कहिंचि (कुत्रचित्) उ ३।१०१
कहिय (कथित) ज १।४ चं ६ सू १।४ उ १।२
काइय (कायिक) ज २।७१
काइया (कायिकी) प २२।१ २;२२।४६ से ५०,५३ से ५६
काउ (कापोत) प १३।६;१७।१२२
काउं (कृत्वा) उ ३।१११; ४।१६
काउंबरी (काकोदुम्बरिका) प १।३६।२
काउलेस (कापोतलेश्य) प १७।६२,६४,६५,१०३, ११०,१११,१६८
काउलेसट्ठाण (कापोतलेश्यास्थान) प १६।१४६
काउलेसा (कापोतलेश्या) प १७।१२१;२८।१२३
काउलेस्स (कापोतलेश्य) प ३।६६;१३।१४; १६।४६;१७।३२,५६,५७,५६ से ६१,६३,६४, ६६ से ६४,७१ से ७४,७६,८१ से ८५,८७, ६४,१००,१०२,१०३,१११,१६७;१८।७१
काउलेस्सट्ठाण (कापोतलेश्यास्थान) प १७।१४६
काउलेस्सा (कापोतलेश्या) प १६।४६;१७।३६, ३७,११७,११८,१२१,१२२,१२५,१२६,१३२, १३६,१४४,१४५,१५१ से १५३
काउलेस्सापरिणाम (कापोतलेश्यापरिणाम) प १३।६
काऊ (कापोती) प २।२० से २५
काऊण (कृत्वा) ज ३।१२
काओदर (काकोदर) प १।७०
काओली (काकोली) प १।४८।५ एक वनौषधि जो अष्टवर्ग के अन्तर्गत है, जीवंती
काकंदी (काकन्दी) उ ३।१७१
काकंध (काकन्ध) सू २०।८;२०।८।३
काग (काक) प १।७६
कागणि (काकिणी) प १।४०।५ ज ३।६५;१५६;
कागणिरयण (काकिणीरत्न) ज ३।६४,१३५,१५८, १७८,२२०
कागणिरयणत्त (काकिणीरत्नत्व) प २०।६०
काणण (कानन) ज २।६५
कातव्व (कर्तव्य) प ५।१६१,१७६;६।५६,६६, ७४ से ७८,८०,१११
कामंजुग (कामयुग) प १।७६
कामकाम (कामकाम) प २।४१
कामकामि (कामकामिन्) ज २।१६
कामगम (कामगम) ज ५।४६।३;७।१७८
कामगामि (कामकामिन्) ज २।२२
कामगुणित (कामगुणित) प २।६४।१६
कामत्थिय (कामार्थिक) ज ३।१८५
कामभोग (कामभोग) ज ३।८२,१८७,२१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सू २०।७ उ १।११
कामभोय (कामभोग) उ ५।२५
कामरूव (कामरूप) प २।४१
काय (काक) प १।४७
काय (काय) प १।८६;३।१।१;१५।५३,५४,५६, ५७;१६।१ से ८,१० से १५,१८,१९,२१,५४; १८।१।१; २३।१५,१६,३०,३१;३४।१।२ ज २।६७;६।१६७ सू १०।७४;२०।८;२०।८।३
कायअपरित्त (कायअपरीत) प १८।१०९,११०
कायगुत्त (कायगुप्त) ज २।६८ उ ३।९९
कायजोग (काययोग) प ३६।८६ से ८८,९१,९२
कायजोगपरिणाम (काययोगपरिणाम) प १३।७
कायजोगि (काययोगिन्) प ३।९६;१३।१४,१६; १८।५७; २८।१३८
कायठिइ (कायस्थिति) प १।१।५;१८।१।२
कायपरित्त (कायपरीत) प १८।१०६,१०७
कायपरियार (कायपरिचार) प ३४।१९
कायपरियारग (कायपरिचारक) प ३४।१८,१९, २१,२५
कायपरियारणा (कायपरिचारणा) प ३४।१७ से १९
कायमाई (काकमाची) प १।३७।२ मकोय
काययोगि (काययोगिन्) प १३।१७
कायव्व (कर्तव्य) प ५।१३२,२२६;६।४६,११०; १३।१७;१५।३४,३८,७५;१७।९१; २८।१।२ ज ४।१७२
कायसमिय (कायसमित) ज २।६८
कारंडव (कारण्डक) ज २।१२
कारण (कारण) प ८।४,६,८,१०; २८।२०;२६, ३२,६६ ज ७।२१४ उ १।३६,११९,१२७; ३।११,२९
कारभारिय (कारभारिक) ज ३।१८५
√**कारव** (कारय्) कारवेंति ज ३।१३ कारवेह ज ३।७
कारवेत्ता (कारयित्वा) ज ३।७
कारियल्लइ (कारवल्ली) प १।४०।२ करेला
कारिया (दे०) प १।३७।५
कारिल्लय (दे०) सू १०।१२०
कारेमाण (कारयत्) प २।३०,३१,४१,४९,५७ ज १।४५;३।१८५,२०५,२०९,२११;५।१९ उ ५।१०
कारोडिय (कारोटिक) ज ३।१८५
काल (काल) प १।४ से ९,७४,८४;२।२० से २७, ३१ से ३३,४०।८;२।४२,४३,४५।१;२।४६,४७, ६४;४।१ से ४९,५६ से ५८,६५,७२,७९,८८, ९५,९८,१०१,१०४,११३,१३१,१४०,१४९, १५८,१६५,१६८,१७१,१७४,१८३,२०७, २१०,२१३,२९४,२९७,२९९;५।५,७,३७,३८, ७४,१०७,१२९,१५०,१५२,१५४,१९०,१९३, १९७,२००,२०३,२४२,२४४;६।१ से २३, २७,४२ से ४५;७।१ से ४,६ से ३०; ११।५३, ५४;१२।२४,३२,३३;१३।२६;१६।५०;१८।३, १४,१५,२६,२७,३७,३८,४१,४३,४५,५७, ५९,६२,६४,७७,८३,९०,९५,१०५,१०७, १०८,११०,११६,११७,१२०;२३।४७,६० से ६२,१०५,१९३ से १९६,१९८ से २०१; २८।४,६,७,२०,२९,३२,३८,५०,५२,५३, ६६;३६।६०,६१,६७,७१,७२,७५,७६,९३, ९४ ज १।२,४,५;२।१ से ३,६,४४,४९,५१, ५४,६९,७१,८८,८९,९१,१२१,१२६,१३०, १३१,१३३ से १४१,१४९,१५४,१६०,१६३; ३।३,२४,३१,३२,९२,९५,१०३,११९,१३८।१, १५९,१६७।१,७,१७८,२२४;५।१,६,८ से १३,१८,४८,५० से ५२;७।५७,६०,१०१, १०२,१८७,२१० चं ६,९,१० सू १।१,४,५; २।२;८।१;१७।१;१८।२५ से ३४;१९।२५; २०।७ उ १।१ से ३,७,९,१३ से १६,२१,२२, २५ से २८,५१,६५ से ६७,७६,९३,९४,११९ से १२२,१२५,१४०,१४१,१४४,१४७;२।४,६, ७,९,११,१६,२२;३।४ से ६,९,१२,१४,१६, २१,२४,२५,२७,४०,४८,५०,५५ से ५७,६४,

६५,६८,६६,७१,७२,७४,७५,७६,८३,८६, ६०,६५,६८,६६,१०६,१२०,१२४,१३१,१३२, १५०,१५५ से १५७,१५६,१६१,१६४,१६८, १६६;४।४ से ६,१०,१६,२४;५।४,१४,२१, २४,२५,२६ २८,३६,४०,४१

काल (काल) सू २०।७;२०।८।५

काल (दे० कृष्ण) सू १६।२२।१६,१८,२०

कालओ (कालतस्) प ११।४८,५१;१२।७,८,१०, १२,१६,२०,२७,३२;१८।१ से १०,१२ से १७, १६ से ३६,४१ से ४७,४६ से ५१, ५४ से ५६,६१ से ६०,६३ से १११,११३,११४, ११६,११७,११६,१२०,१२२,१२३,१२५ से १२७;३५।४ ज २।६६

कालग (कालक) प ३।१८२;५।३७,५६,८८,८६, १०७,१४६,१५०,१६०,१६३,१६७,२००

कालगय (कालगत) ज २।८८,८६;३।२२५ उ १।२२,६२; २।१२; ५।३६,४०

कालण्णाण (कालज्ञान) ज ३।१६७।७

कालनाण (कालज्ञान) ज ३।३२

कालतो (कालतस्) प १२।२०;१८।३,१८,४१, ४३,६०,६५;२८।५,५१

कालमास (कालमास) ज २।४६,१३५ से १३७ उ १।२५ से २७,१४०;३।१४,८३,१२०,१५०, १६१;४।२४;५।२८,४०,४१

कालमुह (कालमुख) ज ३।८१

कालय (कालक) प ३।१८२;५।३६ से ३८,५८ से ६०,७३ से ७५,८६,६०,१०६ से १०८,१५०, १५१,१८६ से १६४,१६६ से २०४,२४१ से २४३;१७।१२६ सू २०।२

काललोहिय (काललोहित) ३ १७।१२६

कालहेसि (कालहेषिन्)

काला (काला) ज २।१३३

कालागरु (कालागुरु) प २।३०,३१,४१ ज २।६५; ३।१२;५।७,५८

कालागुरु (कालागुरु) ज ३।७,८८ सू २०।७

कालायस (कालायस) ज ३।१०६,१७८

कालिंग (कालिङ्ग) प १।४८।४८ ज ३।११६

कालिंगी (कालिङ्गी) प १।४०।१

काली (काली) उ १।१२,१३,१५,१७,१६ से २४; २।५,६

कालोदधि (कालोदधि) सू १६।११।१

कालोदहि (कालोदधि) सू १६।११।२,४

कालोय (कालोद) प १५।५५,५५।१ सू ८।१

कालोयसमुद्द (कालोदसमुद्र) प १६।३०

काविसायण (कापिशायन) प १७।१३४

कास (काश, कास) प १।३७।४ सहिजन का पेड, एक घास

कास (कास) ज २।४३

कास (काश) सू २०।८;२०।८।४

कासपगास (काशप्रकाश) ज ३।३५

कासव (काश्यप) ज ७।१३२।३

कासवगोत्त (काश्यपगोत्र) उ १।३

कासित्ता (कासित्वा) ज २।४६

कासी (काशी) प १।६३।१ उ १।१२७ से १३०, १३२

√काह (कथय्) काहिइ उ २।१३;५।४३

काहार (दे०) ज ७।१३३।१

काहारसंठिय (काहारसंस्थित) सू १०।२७

किं (किम्) प १।१ ज १।७ चं २।१ सू १।६

किंकर (किङ्कर) प २।३०,३१,४१ ज ३।२६,३६, ४७,५६,६४,७२,१३३,१३८,१४५,१७८

किंचि (किञ्चित्) प २।६४।१८ ज १।७ सू १।१४,२८,२७

किंचिविसेसूण (किञ्चित्विशेषोन) ज १।४८; ४।१,४०,५५,६७,१६७,१६६ सू १।२७; १।१६।४,५।१,१।१६।७; ८।१

किंथुग्घ (किंस्तुघ्न) ज ७।१२३ से १२५

किंपज्जवसिय (किंपर्यवसित) प ११।३०

किंपहव (किंप्रभव) प ११।३०

किंपुरिस (किंपुरुष) प १।१३२; २।४१,४५, ४५।२ ज ३।११५,१२४,१२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किसंठिय (किंसंस्थित) प ११।३०
किसुय (किंशुक) ज ३।१८८
किसुयपुप्फ (किंशुकपुष्प) प १७।१२६
किच्च (कृत्य) उ १।६२
किच्चा (कृत्वा) ज २।४६ उ १।२५; ३।१४; ४।२४; ५।२८
किच्छ (कृच्छ्र) ज ३।१०८ से १११
किटिभ (किटिभ) ज २।१३३
किट्टि (किट्टी) प १।४८।४
किद्ठीय (किट्टिया) प १।४८।२
किढिण (किठिण) उ ३।५१,५३,५५,५६,६३,६४, ६७,६८,७०,७१,७३,७४,७६
किणा (कथं) प १५।५३
किण्णं (किंनं) ज ३।१२४ उ १।६६
किण्णर (किन्नर) प २।४५,४५।२ ज १।३७; २।१०१; ३।११५,१२४,१२५; ४।२७; ५।२८
किण्णा (कथं) उ ५।२३
किण्ह (कृष्ण) प १।४८।६ कालीमीर्च, करौंदा
किण्ह (कृष्ण) प २।२१ से २७ ज १।१३,१४; २।७,१२,२३,१६४; ४।२६,११४,११६,१२६, २०१,२१५,२४०,२४१ सू १६।२२।१७; २०।२ उ ३।४६
किण्हकणवीरय (कृष्णकरवीरक) प १७।१२३
किण्णकेसर (कृष्णकेशर) प १७।१२३
किण्हपत्त (कृष्णपत्र) प १।५१
किण्हबंधुजीवय (कृष्णबन्धुजीवक) प १७।१२३
किण्हब्भ (कृष्णाभ्र) ज २।१५
किण्हमत्तिया (कृष्णमृत्तिका) प १।१६
किण्हय (कृष्णक) प १।४८।६२
किण्हलेसा (कृष्णलेश्या) प १७।२१
किण्हलेस्स (कृष्णलेश्य) प ३।६६; १७।३१,८४; २३।१६६
किण्हलेस्सा (कृष्णलेश्या) प १७।३७,११६,१२०, १२२,१२३,१३६
किण्हसुत्तय (कृष्णसूत्रक) प १७।११६
किण्हा (कृष्णा) ज १।२३; २।१२
किण्हासोय (कृष्णाशोक) प १७।१२३
किण्होभास (कृष्णावभास) ज ४।२१५ उ ३।४६
कित्ति (कीर्ति) ज ३।१७,१८,२१,३१,६३,१७७, १८० उ ४।२।१
कित्ति (कूड) (कीर्तिकूट) ज ४।२६३।१
कित्तिम (कृत्रिम) ज १।२१,२६,४६; २।५७,१४७, १५०,१५६
कित्तिय (कीर्तित) प १।४८।६३
किन्नर (किन्नर) प १।१३२; २।४१
किन्नरछाया (किन्नरछाया) प १६।४७
किब्बिसिय (किल्विषिक) प २०।६१ ज ३।१८५
किमंग (किमङ्ग) उ १।१७; ३।१०२
किमिरागकंबल (कृमिरागकम्बल) प १७।१२६
किमिरासि (कृमिराशि) प १।४८।६
किर (किल) ज २।६ सू २०।६।४
किरण (किरण) ज २।१५; ३।२४
किरिया (क्रिया) प १।१।६; १७।११,२२,२३, २५,३०,३३; २२।१ से ५,८ से १६,२६,२७, २६,३०,३२ से ५०,५२ से ६३,६५ से ६६, ७१ से ७४,७६,६१ से ६४,६७ से ६६,१०१; २६।१०; ३६।६२ से ६४,६७,६८,७१,७७,७८ ज ७।५२
किरिया (रुइ) (क्रियारुचि) प १।१०१।१,१०
किरियारुइ (क्रियारुचि) प १।१०१।१०
किलकिलाइय (किलकिलायित) ज ७।१७८
√**किलाव** (क्लम्) किलावेंति प ३६।६२
किवणबहुल (कृपणबहुल) ज १।१८
किलेस (क्लेश) चं १।२ सू २०।६।६
किसलय (किसलय) प १।४८।५२
किसि (कृषि) ज २।३
कीड (कीट) प १।५१।१
√**कीड** (क्रीड्) कीडंति ज १।३०,३३
√**कील** (क्रीड्) कीलंति ज १।१३; ४।२
कीलंत (क्रीडत्) ज ३।१७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कीलग (कीलक) ज ५।३२
कीलण (क्रीडन) प २।४१
कीलावण (क्रीडन) उ १।६७ से ६९
कीस (कस्मात्) उ १।५७,८२
कीसत (कृशता) प २८।२४,३६,४२,४५,७१; ३४।२०
कुंकुम (कुंकुम) ज ३।३५
कुंकुमपुड (कुंकुमपुट) ज ४।१०७
कुंजर (कुञ्जर) ज १।३७;२।१०१; ३।३; ४।२७; ५।२८
कुंड (कुण्ड) प ११।२५ ज ४।२५,४०,६७,६८, ७१,७५,९०,९२,१३४ से १३६,१८२,१८३, १८८,१८९;१९४;६।१८
कुंडल (कुण्डल) प २।३०,३१,४१,४९,५०; १५।५४।१ ज ३।३,६,९,१८,२६,९३,१८०, २११,२२२;४।२०२;५।१८,२१,६७ सू १९।३१
कुंडलवर (कुंडलवर) सू १९।३१
कुंडलवरोद (कुंडलवरोद) सू १९।३१
कुंडलवरोभास (कुंडलवरावभास) सू १९।३१,३२
कुंडलोद (कुण्डलोद) सू १९।३१
कुंत (कुन्त) प २।४१ ज ३।१७८
कुंतग्ग (कुन्ताग्र) उ १।११५,११६
कुंतग्गाह (कुन्तग्राह) ज ३।१७८
कुंथु (कुन्थु) प १।५०
कुंद (कुन्द) प १।३८।३; २।३१; १७।१२८ ज २।१०,१५; ३।३,१२,३५,८८; ५।५८
कुंद(लता) (कुन्दलता) प १।३९।१
कुंदरुक्क (कुन्दरुक) ज २।६५; ३।८८ एक बेल और उसका फल जिसकी तरकारी बनती है
कुंदुरुक्क (कुन्दरुक) प २।३०,३१,४१ ज ३।७,१२,८८; ५।७,५८ सू २०।७
कुंभ (कुम्भ) ज ३।३,५६,१२०,१४५; ७।१७८ उ १।९७
कुंभग्गस (कुंभाग्रशस्) ज २।१०९,११०
कुंभिक्क (कौम्भिक, कुंभाग्र) ज ५।३८
कुंभी (कुम्भी) ज ३।९२
कुक्कुड (कुक्कुट) प १।५१।१;१।७९
कुक्कुडि (कुक्कुटी) उ १।५६,६३,८४
कुक्कुह (दे०) प १।५१।१
कुच्च (कूर्च) प १।३७।५
√कुच्छ (कुत्स्) कुच्छेज्जा ज २।६
कुच्छि (कुक्षि) प १।७५ ज २।६,६३ सू २०।२ उ ३।९८; ५।३०
कुच्छि (कुक्षि) ज २।४३ अड़तालीस आंगुल का मान
कुच्छिकिमिय (कुक्षिकृमिक) प १।४९
कुच्छिपुहत्तिय (कुक्षिपृथक्त्विक) प १।७५
कुज्जय (कुब्जक) प १।३८।१
कुज्जाय (कुब्ज) ज २।१०
कुट्टिमतल (कुट्टिमतल) ज ३।९,२२२
कुट्ठाणासण (कुस्थानासन) ज २।१३३
कुडगछल्ली (कुटजछल्ली) प १७।१३०
कुडगपुप्फरासि (कुटजपुष्पराशि) प १७।१२८
कुडगफल (कुटजफल) प १७।१३०
कुडगफाणिय (कुटजफाणित) प १७।१३०
कुडभी (कुडभी) ज ५।४३
कुडय (कुटज) प १।३६।३,१।४१।२; १७।१३० ज ३।३५
कुडुंब (कुटुम्ब) उ ३।११,१३,५०,५५
कुडुंबजागरिया (कुटुम्बजागरिका) उ १।१५; ३।४८,७०,७९,९८,१०६,१३१
कुडुयय (कंद) (कुस्तुम्बकन्द) प १।४८।४३
कुणक्क (कुणक) प १।४७
कुणाला (कुणाला) प १।९३।५
कुणिम (दे० कुणप) ज २।१४६
कुणिमआहार (कुणिम आहार) ज २।१२५ से १२७
कुत्थुंभरि (कुस्तुम्भरी) प १।३६।२,३७।२
कुदंसण (कुदर्शन) प १।१०१।१३
कुदिट्ठि (कुदृष्टि) प १।१०१।११
कुप्पमाण (कुप्रमाण) ज २।१३३
कुप्पर (कूर्पर) ज ३।२२,३५,३६,४४

कुबेर (कुबेर) ज ३।१८६,२१७

कुभोइ (कुभोजिन्) ज २।१३३

कुमार (कुमार) उ १।१३ से १५,२१,२२,२५ से २७,३१,४२ से ४६,४८,६४ से ६६,६४ से ९९,१०२ से ११७,११९ से १२२,१२५, १२७,१२८,१४०,१४१,१४६,१४७;२।६,७, ९,१८,१९; ३।११४,१२०;५।१०,२०,२२, २३,२७,३१,३२,३४ से ३८

कुमार (कुमार) उ १।८९

कुमारग्गह (कुमारग्रह) ज २।४३

कुमारावास (कुमारावास) ज २।६४,८७; ३।२२५

कुमारिया (कुमारिका) उ ३।११४,१३०

कुमुद (कुमुद) प १।४६ ज ३।११७;४।१५४, १५५,२१२,२२५।१,२३०

कुमुददल (कुमुददल) प १७।१२८

कुमुदप्पभा (कुमुदप्रभा) ज ४।२२१।१

कुमुदप्पहा (कुमुदप्रभा) ज ४।१५५।१

कुमुदा (कुमुद) ज ४।१५५।१,२२१

कुमुय (कुमुद) ज २।१५; ४।३,२५,२१२।१

कुमुयहत्थगय (हस्तगतकुमुद) ज ३।१०

कुम्म (कूर्म) ज २।१४,१५,६८; ३।३; ७।१७८

कुम्मुण्णया (कूर्मोन्नता) प ९।२६

कुरंग (कुरङ्ग) प १।६४ ज २।३५

कुरज्ज (कुराज्य) ज ३।२२१

कुरय (कुरब) प १।४७ लालफूलवाली कटसरैया

कुरल (कुरल) प १।७९

कुरा (कुरु) ज ४।१०८,१४१,१४३,२०५,२०७ २०८

कुरु (कुरु) प १।९३।२; १५।५५।३

कुरुविंद (कुरुविन्द) प १।४२।२

कुरूव (कुरूप) ज २।१३३

कुल (कुल) ज ३।३,९,१७,२१,२४,३४,१०९, १७७; ४।२१२;५।५,४६,५५; ७।१२७।१, १३६।१,१४१ से १४६,१५० से १५३, १६७।१ चं ५।१ सू १।९।१; १०।६,२०,२१, २२,२५; २०।९।४ उ १।५४,७९,१४१; ३।४८,५०,५५,१००,१३३; ५।५

कुलकोडि (कुलकोटि) प १।४९ से ५१,६०,६६, ७५,७६,८१,८२।१

कुलक्ख (कुलाक्ष) प १।८९

कुलक्खय (कुलक्षय) ज २।४३

कुलगर (कुलकर) ज २।५९ से ६३

कुलत्थ (कुलत्थ) प १।४५।१ ज २।३७; ३।११९ उ ३।४१,४२

कुलत्था (कुलस्था) उ ३।४२

कुलदेव (कुलदेव) ज ३।११३

कुलदेवया (कुलदेवता) ज ३।१११,११३

कुलधुया (कुलदुहितृ) उ ३।४२

कुलमाउया (कुलमातृका) ज ३।४२

कुलरोग (कुलरोग) ज २।४३

कुलवधुया (कुलवधु) उ ३।४२

कुलविसिट्ठया (कुलविशिष्टता) प २३।२१

कुलविहीणया (कुलविहीनता) प २३।२२

कुलारिय (कुलार्य) प १।९५

कुलोवकुल (कुलोपकुल) ज ७।१३६,१४१ से १४६,१५० से १५३ सू १०।६,२० से २२,२५

कुवधा (दे०) प १।४०।२

कुवलय (कुवलय) चं १।१

कुविंदवल्ली (कुविन्दवल्ली) प १।४०।३

कुविय (कुपित) ज ३।२६,३९,४७,१०७,१०९, १३३ उ १।२२,१४०

कुवुट्ठिबहुल (कुवृष्टिबहुल) ज १।१८

कुव्वमाण (कुर्वत्) प २।३३,५०,५१,५९

कुव्वर (कूबर) ज ३।३५

कुस (कुश) प १।४२।१ ज २।८९ उ ३।५१,५६

कुसंघयण (कुसंहनन) ज २।१३३

कुसंठिय (कुसंस्थित) ज २।१३३

कुसट्ट (कुशावर्त) प १।९३।२

कुसल (कुशल) ज २।१५; ३।३२,७७,८७,१०९, ११९,१३८,१७८; ५।५ सू २०।७

कुसील (कुशील) उ ३।१२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुसीलविहारी (कुशीलविहारिन्) उ ३।१२०
कुसुंभ (कुसुम्भ) प १।४५।२ ज २।३७
कुसुम (कुसुम) प २।३१,४१ ज २।१०,५३,६५, १६२; ३।१२,३०,३५,८८,२२१;४।१६६; ५।५,७,२१,५८ सू २०।७
कुसुम (कुसुम्) कुसुमेंति ज २।१०;४।१६६
कुसुमसंभव (कुसुमसंभव) ज ७।११४।२ सू १०।१२४।२
कुसुमासव (कुसुमासव) ज २।१२
कुसुमिय (कुसुमित) ज २।११;७।२१३
कुसेज्जा (कुशय्या) ज २।१३३
कुहंड (कुष्माण्ड) ज २।४१,४७।१
कुहंडियाकुसुम (कुष्माण्डिकाकुसुम) प १७।२७
कुहण (कुहण) प १।३३।१,१।४७
कुहर (कुहर) ज २।६५
कूड (कूट) प २।१;१५।५५।३ ज १।३४,३५,४१, ४६।१;२।१३३;४।४४ से ४६,४८,५३,७६, ९६,९७,१०५,१०६,१५६।१,१६२ से १६५, १६७,१६९,१७२।१,१८०,१८६,१९२,१९८, २०४,२१०,२१२,२३६ से २४०,२६३,२६९, २७५,२७६;५।१,६ से ८,१३;६।६।१,६।११, १६;७।५८ सू १९।२६
कूडसामली (कूटशाल्मली) ज ४।२०८
कूडसामलीपेढ (कूटशाल्मलीपीठ) ज ४।२०८
कूडागार (कूटागार) ज २।२०
कूडागारसाला (कूटागारशाला) उ ३।८,२६,९३, १५६
कूडाहच्च (कूटाहत्य) उ १।२२,२५,२६,१४०
कूणिय (कूणिक) उ १।१० से १२,१४,१५,२१, २२,६३ से ७४,८८,८९,९१ से ९५,९८ से १२९,१३१,१३४,१३६,१४०,१४४,१४५;२।४, ५,९,१६,१७;५।१९
कूर (कूर) उ ३।१३०
कूल (कूल) ज ३।१४,१५,१८,५१,५२,९९,१४९, १५०,१६१,१६४;४।३,२५,६४,८८,११०, १४३,२०६,२११
कूलधमा (कूलध्मायक) उ ३।५०
कूवग्गाह (कूपग्राह) ज ३।१७८
कूवमाण (कूप्यत्) उ ३।१३०
केइ (केचित्) प १।४८।४१ ज २।११३
केउबहुल (केतुबहुल) ज २।१२
केउभूय (केतुभूत) ज २।१२
केऊर (केयूर) ज ३।६;५।२१
केकय (केकय) प १।८९
केणइ (केनचित्) पू १३।५
केतकिपुड (केतकीपुट) ज ४।१०७
केतु (केतु) प २।४८
केमहालय (कियत्महत्) ज १।७;७।२६ से ३०
केमहालिय (कियत्महत्) प २१।३८,४० से ४२, ४८,६३ से ६६,६९ से ७१,७४,८४ से ९३
केयइ (केतकी) प १।३७।५,१।४३।१
केयइअद्ध (केकयार्द्ध) प १।९३।६
केयूर (केयूर) ज ३।२११
केरिस (कीदृश) सू २०।७
केरिसिय (कीदृशक) प २३।१९५,१९६,१९९ से २०१ ज १।२१,२२,२६,२७,२९,३३,४९,५०; २।७,१४,१५,१७,१८,२०,५२,५६ से ५८, १२२,१२३,१२७,१२८,१३१ से १३३,१३९, १४७,१४८,१५०,१५१,१५६,१५७,१५९, १६१,१६४;४।५६,१००,१०१,१०९,१७०, १७१ उ १।२७
केरिसिय (कीदृशक) प १७।१२३ से १२८,१३०, १३५
केलास (कैलाश) ज ३।१८६,२१७
केलास (कैलाश) सू २०।२ राहु का नाम
केलि (केलि) प २।४१
केवइ (कियत्) प ७।९; ३६।६०,६१,७५
केवइय (कियत्) प ५।८२; ६।३; १२।११,१२; १५।३२; २०।११; ३६।४४ ज १।१७;२।४, ४४,४५; ४।२५७; ६।७,८,१०,११,१५ से

१८,२३ से २५; ७।१,३ से २५,३२,५४,५७, ६०,६२ ६४ से ७३,७६,७९ से ८२,८६ से ९६,९८ से १००,१२७,१७० से १७२,१७४, १८२,१८७,१९८,१९९,२०१ से २०७ चं २।१; ३।२ गु १।६।१;१।७।२ उ ३।१६, १२४,१६४

केवच्चिर (कियच्चिरं) प १८।१ से १०,१२ से ३७, ४१ से ४७,४९ से५१,५४ से ८२,८४ से ९०. ९३ से १११,११३,११४,११६,११७,११९, १२०,१२२,१२३,१२५ से १२७ ज ७।२१०

केवत्ति (कियत्) प ७।१ से ४,६ से ८,१० से ३०; २८।१।१,२८।४,२९,३८,५०;३६।६७,७१,७२, ७६

केवतिय (कियत्) व ४।१ से ४९,५६ से ५८,६५, ७२,७९,८८,९२,९८,१०१,१०४,११२,१३१, १४०,१४९,१५८,१६५,१६८,१७१,१७४, १८३,२०७,२१०,२१३,२९४,२९७,२९९, ५।४,६,९,११,१७,२३,२७,२९,३१,३३,३६, ४०,४४,४८,५२,८५,९२,१००,१०३,१०६, ११०,११४,११८,१२८,२३१,२४१; ६।१,२, ४ से २३,२७,४३ से ४५,६० से ६४,६७,६८; १२।७ से १०,१३,१५,१६,२०,२१,२३,२७, ३१.३२; १५।७,८,१४,१५,२२,२३,२७,४०, ४१,८३ से ८५,८९,९१,९४ से ९८,१००, १०३ से १०६,१०८,१०९,११३ से १२०, १२३,१२६,१२७,१२९,१३१,१३२,१३५, १३९ से १४१,१४३; १७।१०६,१०८,११०, १४२,१४३; २०।९,१०,१२,१३; २३।६० से ६२; २३।२,३,१०,१२,१३ १५ से १८; ३४।१३; ३६।८ से २२,३० से ३४,४४ से ४७,५९,६६,७०,७३,७४ ज ७।१७३ सू १।२०,२२,२३,२६,२८ से ३१; २।३; ३।१; ४,५,८,१०; १२।२ से ९; १४।४,८, १५।२ से ७; १८।४ से ६,९,१०,१२,१३,२०, २५ से ३४; १९।४,५,७,८,१०,११,१४,१५, १८ से २१,२५,३०,३१,३४,३५,३७,३८

केवल (केवल) प २०।१७,१८,२९,३४ ज २।७१, ८५; ३।२२३; ७।१३५।१,१८५ सू १८।२३

केवलकप्प (केवलकल्प) प ३६।८१ ज ३।२६,३९, ४७,५६,६४,७२,१३३,१३८,१४५,१७५, १८५,१८८,२०९,२११ उ ३।७,९१

केवल (णाण) (केवलज्ञान) प २९।१७

केवलणाण (केवलज्ञान) प २।६४।१३; ५।२४, १०२,१०७,११९; १७।११३; २०।१८,३३; २९।२; ३०।२

केवलणाणारिय (केवलज्ञानार्य) प १।९९

केवलणाणावरणिज्ज (केवलज्ञानावरणीय) प २३।२५

केवलणाणि (केवलज्ञानिन्) प ३।१०१,१०३; ५।१,११८,११९; १३।१९; १८।८२; २८।१३६,१४०; ३०।१६,१७

केवलदंसण (केवलदर्शन) प ५।२४,१०२,१०५, १०७,११९; २९।३,१७; ३०।३,१७

केवलदंसणावरण (केवलदर्शनावरण) प २३।१४

केवलदंसणावरणिज्ज (केवलदर्शनावरणीय) प २३।२८

केवलदंसणि (केवलदर्शनिन्) प ३।१०४;५।१२०; १८।८८; ३०।१६

केवलदिट्ठि (केवलदृष्टि) प २।६४।१३

केवलनाण (केवलज्ञान) प ५।१०५

केवलनाणपरिणाम (केवलज्ञानपरिणाम) प १३।९

केवलनाणि (केवलज्ञानिन्) प ५।११९

केवलबोहि (केवलबोधि) उ ५।४३

केवलि (केवलिन्) प १।१०४,१०८,१२१,१२९; १८।९४,९६,९७,९९;२०।१७,१८,२२,२५,२८ २९,३४,४५; ३०।२५ से २८; ३६।८२,८३, ८३।२ ज २।६३,७१; ३।२२४,२२५ उ ३।१०२,१२५,१४२

केवलिपरियाय (केवलिपर्याय) ज २।८८; ३।२२५

केवलिय (कैवलिक) प ३६।१।१

केवलिसमुग्घाय (केवलीसमुद्घात) प ३६।१,३,७, ११,१५ से १७,३१,३४,३५,४१,७९,८५,

केस (केश) प २।३१ ज २।१३३;३।२६,३९,४७,
९२,११९

केसवट्ठिअणह (केशावस्थितनख) ज ३।१३८

केस (कीदृश) ज ३।१२२

केसर (केसर) प १।४८।४५,४९ ज ३।२४;४।३,
७,२५;७।१७८

केसरिद्दह (केसरिद्रह) ज ४।२६२

केसलोय (केशलोच) उ ५।४३

केसि (केशि) उ १।२;५।२६

केसुय (किंशुक) ज ३।३५

कोइल (कोकिल) ज २।१५;३।३५ उ ५।५

कोइलच्छदकुसुम (कोकिलच्छदकुसुम) प १७।१२५

कोइला (कोकिला) प १।७९

कोउय (कौतुक) ज ३।९,३३,८२,८५,१२५,१२६,
२२२ उ १।१९,७०,१२१;३।११०;५।१७

कोउहल्ल (कौतूहल) ज २।३२

कोऊहल्ल (कौतूहल) ज ५।२६

कोऊहल्लवत्तिय (कौतूहलप्रत्यय) ज ५।२७

कोंकणग (कोङ्कणक) प १।८९

कोंच (क्रौञ्च) प १।७९,८९ उ ५।५

कोंचारव (क्रौञ्चारव) ज ३।८९,१०२,१५६,१६२

कोंचस्सर (क्रौञ्चस्वर) ज २।१६;५।५२

कोंडलग (कुण्डलक) ज २।१२

कोंत (कुन्त) ज ३।३,३५

कोकंतिय (दे०) ज २।३६ लोमड़ी

कोकणद (कोकनद) प १।४६,१।४८।४४

कोकासिय (दे० विकसित) ज ३।१०९

कोकुइय (कौकुचिक) ज ३।१७८

कोक्कंतिय (दे०) प १।६६; ११।२१,२२

कोज्जय (कुब्जक) ज ३।१२,८८;५।५८

कोट्टेज्जमाण (कुट्टयत्) ज ४।१०७

कोट्टणी (दे०) ज ३।३२

कोट्ठ (कोष्ठ) ज ३।३२

कोट्ठग (कोष्ठक) प २।३०,३१,४१

कोट्ठपुड (कोष्ठपुट) ज ४।१०७

कोट्ठय (कोष्ठक) उ ३।९,१२

कोट्ठसमुग्ग (कोष्ठसमुद्ग) ज ३।११३

कोट्ठसमुग्गयहत्थगय (हस्तगतकोष्ठसमुद्गक)
ज ३।११

कोट्ठागार (कोष्ठागार) ज २।६४ उ १।६६,९४,
९९

कोडाकोडि (कोटिकोटि) प २।४९,५०,५२,५३,
५५,५९,६३; १२।२७,३२; १८।४२,४४,४६,
८३।६० से ६४,६६,६८,६९,७३ से ७७,
८१,८३,८५ से ९२,९५ से ९९,१०१
से १०४,१११ से ११४,११६ से ११८,
१२७,१२९ से १३१,१३३,१७६,१७७,
१८२,१८३,१८६,१८७,१९० ज २।६,
५१,५४,१२१,१२६,१५४,१६०,१६३;७।१,
१७०

कोडि (कोटि) प २।३०,४९,५०,५२,६२,६३,६४
ज १।२०,२३,४८;२।६; ३।२४,१७८,२२१;
४।१,२१,५५,६२,८१,८६,९८,१०८,१७२;
५।६८ से ७०; ६।८।१;७।१।१ उ १।१४,१५,
२१,१२१,१२२,१२६,१३३,१३६,१३७,१४०;
५।१०

कोडिकोडि (कोटिकोटि) सू १८।४; १९।१।१,५।३,
८।३,११।४,१५।४;१९।१९,२१।५,८,
१९।२२।३,१९।३१,३५,३८

कोडिगार (कोटिकार) प १।९७

कोडी (कोटि) सू १९।१४,१५।१,१८,२१।२

कोडीवरिस (कोटिवर्ष) प १।९३।५

कोडुंबिय (कौटुम्बिक) प १६।४१ उ १।१७,१८,
९२,१२३,१३१; ३।११,१०१;४।१६,१७;
५।१०,१५,१६,१८

कोतुक (कौतुक) सू २०।७

कोत्तिय (दे०) उ ३।५०

कोत्थुंभरि (कुस्तुम्बरी) ज ३।११९

कोत्थलवाहग (दे०) प १।५०

कोदंडिम (कुदण्डिम) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८,

१. हे० १।२६

६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३
कोदूसा (कोरदूष?) प १।४५।२
कोद्दव (कोद्रव) प १।४५।२ ज २।३७; ३।११९
कोद्दाल (दे०) ज २।८
कोमल (कोमल) ज २।१५; ३।१०९,२८८ उ ३।९८
कोमुई (कौमुदी) ज २।१५
कोरंट (कोरण्ट) ज ३।१७८; ५।५८
कोरंटय (कोरण्टक) प १।३८।१ ज २।१०; ३।१२,८८
कोरग (कोरक) ज २।१२
कोरव्व (कौरव्य) प १।९५
कोरेंटमल्लदाम (कोरण्टमाल्यदामन्) प १७।१२७
कोलट्ठिय (कौलास्थिक) सू १०।१२०
कोलव (कौलव) ज ७।१२३ से १२५
कोलसुणग (कोलशुनक) प १।६६ ज २।३६,१३६
कोलसुणय (कोलशुनक) प ११।२१
कोलसुणिया (कोलशुनिका) प ११।२३
कोलालिय (कौलालिक) प १।९६
कोलाह (कोलाभ) प १।७०
कोलाहल (कोलाहल) प २।४१; ज २।१३१
कोस (क्रोश) प ३६।८१ ज १।७,३५,३७,४२,५१; ४।७,९,१४,१५,२४,३१,३३,३६,३९,४१,४३, ४९,५९,६६,६८,७०,७२,७६,९३,११२,११४, ११५,११९,१२०,१२२,१३४,१३७,१४७, १५३ से १५५,२४२;७।१७७।३,२०७ सू १।१४;१८।११,१२
कोस (कोष) ज २।६४;३।३,१७५; ४।६;७।१७७ उ १।६६,९४,९८
कोसंब (कोशाम्र) प १।३५।१
कोसंबी (कौशाम्बी) प १।९३।३
कोसल (कौशल) प १।९३।२
कोसलग (कौशलक) उ १।१२७ से १३०,१३२
कोसलिय (कौशलिक) ज २।६३ से ६७,७३ से ८२,८६ से ९०
कोसागार (कोशागर) ज ३।८१
कोसिय (कौशिक) ज ७।१३२।३ सू १०।१११
कोसेज्ज (कौशेय) ज ३।२४।३,३७।१,४५।१ १३१।३
कोह (क्रोध) प ११।३४।१; १४।३,५,७,९,११ से १५,१७;२२।२०;२३।६,३५,७० से ७२,१८४ ज २।१६,६९,१३३ उ ३।३४
कोहकसाइ (क्रोधकषायिन्) प ३।९८;१३।१४, १९; १८।६५; २८।१३३
कोहकसाय (क्रोधकषाय) प १४।१,२
कोहकसायपरिणाम (क्रोधकषायपरिणाम) प १३।५
कोहकसायि (क्रोधकषायिन्) प ३।९८
कोहणिस्सिया (क्रोधनिश्रिता) प ११।३४
कोहसंजलना (क्रोधसंज्वलन) प २३।६९,१४०
कोहसण्णा (क्रोधसंज्ञा) प ८।१,२
कोहसमुग्घाय (क्रोधसमुद्घात) प ३६।४२,४४ से ५१

ख

खइरसार (खदिरसारक) प १७।१२५
खओवसमिय (क्षायोपशमिक) प ३३।१
खंजण (खञ्जन) प १७।१२३
खंजण (दे०) सू २०।२ राहु का नाम
खंजणवण्णाभ (खञ्जनवर्णाभ) सू २०।२
खंड (खण्ड) प १३।२५; १७।१३५; ३३।१३ ज २।१७; ६।६।१;६।७ उ १।१४,१५,२१
खंडग (खण्डक) ज ४।१७२।१; ६।७
खंडगप्पवायगुहा (खण्डप्रपातगुफा) ज ३।१५४,१६१ से १६३
खंडप्पवायकूड (खण्डप्रपातकूट) ज १।४१
खंडप्पवायगुहा (खण्डप्रपातगुफा) ज १।२४; ३।१४९,१५०,१५५ से १५७,१५९ से १६१; ४।३५; ६।१६
खंडप्पवायगुहाकूड (खण्डप्रपातगुहाकूट) ज १।३४
खंडय (खण्डक) प ११।७४
खंडाभेद (खण्डभेद) प ११।७९

खंडाभेय (खण्डभेद) प ११।७३,७४
खंडिय (खण्डित) ज ७।१३४।१
खंति (क्षान्ति) ज २।६४,७१ ; ३।१०६
खंतुं (क्षन्तुम्) ज ३।१२६
खंद (स्कन्द) ज २।३१
खंदग्गह (स्कन्दग्रह) ज २।४३
खंध (स्कन्ध) प १।४,३५,३६,४७।१,१।४८।१२,
२२,३२,३६ ; ३।१७६ ; ५।१२५,१२७,१३४,
१३६,१३८,१५४,१६६,१६६,१७२,१८१,२२७
से २३२ ; १०।७ से १४ ; १०।१४।५,६ ;
१३।२२।१ ; १६।३६,४३ ; ३०।२६,२८
ज ३।१८,७८,६३,२१२,२१३ ; ४।१४६ ; ५।५ ;
७।१७८ उ १।६७,१२१,१४० ; ३।११४
खंधावार (स्कन्धावार) प १।७४ ज ३।१८,२८,
३१,३२।२,४१,४६,५२,६१,६६,८१,८८,६५,
१०१,११५ से ११७,११६,१२१।१,१२२,
१२४,१३१,१३५,१३७,१४१,१५१,१५६,
१६४,१६७।२,१७२,१८० उ १।११५,११६,
१३३,१३४
खंभ (स्तम्भ) ज १।३७ ; ३।६६ से १०१,१६३ ;
४।६,२६,२७,३३,१२०,१४७,२१६,२४२ ;
५।३,४,२८,३२ सू २०।४
खंभच्छाया (स्तम्भछाया) सू ६।४
खग्ग (खड्ग) प १।६५ ; २।४६ ज ३।३१ ;
४।२००।१
खग्गपुरा (खड्गपुरा) ज ४।२१२,२१२।४
खग्गरयण (खड्गरत्न) ज ३।१०६
खचिय (खचित) ज १।३७ ; ३।२११ ; ५।५८
खज्जग (खाद्यक) उ ३।१३०
खज्जलग (दे०) उ ३।११४
खज्जूरसारय (खर्जूरसारक) प १७।१३४
खज्जूरी (खर्जूरी) प १।४३।३
खज्जूरीवण (खर्जूरीवन) ज २।६
खट्टोदय ('खट्ट' उदक) प १।२३
खड्डाबहुल ('खड्डा' बहुल) ज १।१८
खण (क्षण) ज ७।११२ सू १०।१२६।५
√खण (खन्) खणंति ज ५।१३
खणित्ता (खनित्वा) ज ५।१३
खतय (दे०) सू २०।२ राहु का नाम
खत्तमेघ ('खत्त'मेघ) उ २।१३१
खत्तिय (क्षत्रिय) ज २।६५ ; ५।५,४६
√खम (क्षम्) खमई ज २।६७ खमंतु ज ३।१२६
खामेमु ज ३।१२६
खम (क्षम) ज २।६४
खमा (क्षमा) ज ३।१०६
खय (क्षय) प ३३।१।१ ज ३।१२३ उ १।१३६
खयकर (क्षयकर) ज ३।११७
खर (खर) प १।१८,२० ; ११।१६ से २०
ज २।१३३
खरमुही (खरमुखी) ज ३।१२,३१,७८,१८०,२०६
खरय (दे०) सू २०।२ राहु का नाम
खरोट्ठी (खरोष्ट्रिका) प १।६८
खल (खल) ज २।६६
खलंत (स्खलत्) ज २।१३३
खलु (खलु) प १।४८।५२ ; ६।८०।१ ; १७।१५०,
१५२,१५५ ; २३।३,६ ; ३६।८२ ज १।४६
सू १।१२ उ १।५ ; २।२ ; ३।२ ; ४।२ ; ५।२
खल्लूड (खल्लूट) प १।४८।७
खव (क्षपय्) खवेइ सू १६।२२
खवइत्ता (क्षपयित्वा) प ३६।६२
√खवय (क्षपय्) खवयति प ३६।६२ खवेइ
सू १६।२२।१८ खवेति प ३६।६२
खवय (क्षपक) प २३।१६१,१६२
खवल्लमच्छ (दे०) प १।५६
खवेत्ता (क्षपयित्वा) प ३६।६२
खस (खस) प १।८६
खसर)खसर) ज २।१३३
खहचर (खेचर) प १।५४,७७,८१ ; ३।१८३ ;
४।१४६ से १५७ ; ६।७१,७६,७८,६४ ; २१।८,
१७,३५,४७,५३,६० ज २।१३१
खाइम (खाद्य) उ ३।५०,५५,१०१,११०,१३४ ;
४।१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खाइय (खादित) उ १।५१,५४,७६,७९
खाणु (स्थाणु) ज २।३९; ४।२७७
खाणुबहुल (स्थाणुबहुल) ज १।१८
खात (खात) प २।३०
खाय (खात) प २।३१,४१ ज ३।३२
खार (क्षार) प १।७६
खारतउसी (क्षारत्रपुषी) प १७।१३०
खारतउसीफल (क्षारत्रपुषीफल) प १७।१३०
खारमेघ (क्षारमेघ) ज २।४२,१३१
खारोदय (क्षारोदक) प १।२३
खासीय (खासिक) प १।८९
खिखिणी (किंकणी) ज ३।३५
√**खिज** (खिद्) खिसंति उ ३।११७
खिज्जिजमाण (खिस्यमान) उ ३।११८,१२३
खिप्पामेव (क्षिप्रमेव) प २८।१०५; ३४।१९,२१, २४ ज २।९५,९७,१०१,१०५,१०७,१०९, १११ ११४,११५,१४१ से १४५; ३।७,१२, १५,१८,१९,२१,२५,२८,३१,३२,३४,३८, ३९ ४६,४९,५२,५३,५८,६१,६२,६३,६६, ७०,७४, ७७,८०,८३,९१,९६,९९,१००, ११५,११८,१२१,१२४,१२८,१३२,१४१, १४२ १४७,१६० से १६५,१६८,१७३,१७५, १८०,१८१,१८३,१९१,१९९,२०७,२१२, २१३; ५।३,७,१४,१५ २२,२८,५४,६८ से ७०,७२,७३
खीण (क्षीण) ज २।६; ३।२२५
खीणकसाय (क्षीणकषाय) प ११।१०२,१०४ से ११०,११५,११७ से १२३
खीर (क्षीर) प १।४२।१ लौकी
खीर (क्षीर) प १५।५५।१; १७।११६,१२८ सू १०।१२० उ ३।११४,१३०
खीरकाओली (क्षीरकाकोली) प १।४८।५
खीरपूर (क्षीरपूर) प १७।१२८
खीरमेह (क्षीरमेघ) ज २।१४२,१४३
खीरवर (क्षीरवर) सू १९।३१
खीरिणी (क्षीरिणी) प १।३५।२
खीरोद (क्षीरोद) ज २।९७,९८
खीरोदग (क्षीरोदक) ज २।९७ से १००,१११, ११२; ५।५५
खीरोदय (क्षीरोदक) प १।२३ ज ५।५५
खीरोदा (क्षीरोदा) ज ४।२१२
खीरोया (क्षीरोदा) ज ४।२१२
खीलग (कीलक) ज ७।१३३।३
खीलगसंठिय (कीलकसंस्थित) सू १०।४८
खीलच्छाया (कीलछाया) सू९।४
खीलिया (कीलिका) प २३।४५,९८
खु (खलु) ज ३।२४
खुज्ज (कुब्ज) प १५।३५; २३।४६ ज ३।११।१,८७
खुज्जा (कुब्जा) उ १।१९
खुड्ड (क्षुद्र) प २६।८१ ज १।७; ४।६०,८३,११३
खुड्डग (क्षुद्रक) ज ४।१३६
खुड्डतर (क्षुद्रतर) ज ४।५४
खुड्डाग (क्षुद्रक) प १८।९५
खुड्डाय (क्षुद्रक) सू १।१४
खुड्डिया (क्षुद्रिका) ज ४।६०,८३,११३
खुभिय (क्षुभित) ज २।६५
खुर (क्षुर) ज ३।३०; ७।१७८
खुरप्प (क्षुरप्र) प २।२० से २७; १५।१५ ज ३।३०
खुल्ला (क्षुल्लक) प १।४९
खुहा (क्षुधा) ज ३।२२१।१ उ ३।११८
खेड (खेट) प १।७४ ज २।२२,१३१; ३।१८,३१, ८१,१८०,१८५,२०९,२२१ उ ३।१०१
खेडग (खेटक) ज ३।३५
खेडय (खेटक) ज ३।३१
खेड्डकारग (खेलकारक) ज ३।१७८
खेत्त (क्षेत्र) प २।६४; ३।१।२; १२।३२; १४।५, १४।१८।१; १५।५२; १७।१०६ से १११; २८।२०,३२,६६; ३३।२,३,१०,१२,१३,१५ से १८; ३६।५९,६०,६६ से ६८,७० से ७४ ज २।६९; ३।३; ७।२० से २५,२६,५२,५४, ७९ से ८२,९५,९६ सू १।१४; २।३; ३।१;

६।१ ; ६।१ ; १०।४,५,१७३ ; १६।२२।२५
खेत्तओ (क्षेत्रतस्) प ११।४८,५० ; १२।७,८,१०, १२,१६,२०,२७,३२ ; १८।३,२६,२७,३७,३८, ४१,४३,४५,५६,६४,७७,८३,१०८,११७ ; २८।५,५१ ; ३५।४ ज २।६६
खेत्ततो (क्षेत्रतस्) प १८।६०,६२,६५
खेत्ताणुवाय (क्षेत्रानुपात) प ३।१२५ से १७३, १७५,१७७
खेत्तारिय (क्षेत्रार्य) प १।९२,९३
खेत्तोववातगति (क्षेत्रोपपातगति) प १६।२५
खेत्तोववायगति (क्षेत्रोपपातगति) प १६।२४ से ३०।३२
खेम (क्षेम) प २।३०,३१,४१
खेमकर (क्षेमंकर) ज २।५९,६० सू २०।८,२०।८।७
खेमंधर (क्षेमंधर) ज २।५९,६१
खेमपुरा (क्षेमपुरा) ज ४।१८१,२००।१
खेमा (क्षेमा) ज ४।१७७,२००।१
खेल (क्ष्वेल) प १।८४
खेल्लणग (खेलनक) उ ३।११४
खेल्लणय (खेलनक) उ ३।१३०
खेवणी (क्षेपणी) ज ३।३१
खोत (क्षोद) प १५।५५।१
खोतोदय (क्षोदोदक) प १।२३
खोदवर (क्षोदवर) सू १९।३१
खोदोद (क्षोदोद) सू १९।३१
खोद्दाहार (क्षौद्राहार) ज २।१३५ से १३७
खोम (क्षौम) ज ४।१३ ; ५।६७ सू २०।७
खोमिय (क्षौमिक) सू २०।७

ग

गइ (गति) प २।४८ ज २।१५,७१,१३३ ; ३।३, १३८,१७८ ; ५।२१ ; ७।२१,२५,५५,५८,८१, १७५,१७८ च ४।१ सू १।६,१।८।१ ; १९।२२।२२
गइकल्लाण (गतिकल्याण) ज २।८१
गइनामणिहत्ताउय (गतिनामनिधत्तायुष्क) प ६।११८
गइपरिणाम (गतिपरिणाम) प १३।२३
गइप्पवाय (गतिप्रपात) प १६।१७,५५
गइरइय (गतिरतिक) ज ७।५५,५८
गंगदत्त (गङ्गदत्त) उ ३।१३,१६०
गंगप्पवायकुंड (गंगाप्रपातकुण्ड) ज ४।२५,२६,३१, ३५
गंगा (गंगा) ज १।१८,२०,४८ ; २।१३१,१३३, १३४ ; ३।१,१४,१५,१८,१४१,१४३ से १५१, १६१,१६४,१७० ; ४।१३,२३ से २६,३३ से ३६,१६७,१७७,२७४ ; ५।५५ ; ६।१६ सू २०।७ उ १।६७ ; ३।५१,५६,६८
गंगाकुंड (गंगाकुण्ड) ज १।५१ ; ४।१७५ १७६
गंगाकूड (गंगाकूट) ज ४।४४
गंगाकूल (गंगाकूल) उ ३।५०
गंगादीव (गंगाद्वीप) ज ४।३१,३२
गंगादेवी (गंगादेवी) ज ३।१४०,१४१,१४३,१४५, १४६
गंगावत्त (गंगावर्त्त) ज २।१५
गंगावत्तणकूड (गङ्गावर्तनकूट) ज ४।२३
गंज (गञ्जा) प १।३७।५
गंठि (ग्रन्थि) प १।४८।३८ ईख
गंड (गण्ड) प १।६५ ; २।५० ज ४।१३ ; ५।६७ ; ७।१७८
गंडतल (गण्डतल) प २।३०,४९
गंडयल (गण्डतल) प २।३१,४१
गंडलेहा (गण्डरेखा) ज २।१५
गंडीपद (गण्डीपद) प १।६२
गंडीपय (गण्डीपद) प १।६५
गंडूयलग (गण्डूपदक) प १।४९
गंता (गत्वा) प ११।७२ ; ३६।९२ ज ३।२५,३८, ४६,१३२
गंतूण (गत्वा) प २।६४।२,३
गंध (गन्ध) प १।४ से ९ ; २।३०,३१,४१,४९ ; ३।१८२ ; ५।१०,१२,१४,१६,१९,२०,२४,२८,

३०,३२,३४,३७,३६,४१,४५,५३,५६ ५६,
६१,६३,६८,७१,७४,७६,७८,८३,८६,८६,
६१ ६३,६७,१०१,१०४,१०७,१०६,१११,
११५,११६,१२६,१३८,१५०,१५२,१५४,
१६०,२०७,२११,२१४,२२८.२४२,२४४;
१०।५३।१;११।५५;१५।३८,४२,१५।५५।२;
१७।११४।१,१७।१३२ से १३४;२३।१५ १६,
१६,२०,१६०;२८।२०,३२,६६;३६।८०,८१
ज १।१३;२।७,१६,१८,१२०,१४२ १६४,
२११;३।३,७,६,११,१२,२१,३४,७८,८२,
८५,८८,१०६,१८०,१८७,२०६,२११,२१८,
२२२;४।८२,१०७,१०६;५।५,७,२२,२६,
३२,५५,५८;७।२०६ सू २०।७ उ १।३५;
३।५०,११०;५।२५
गंधओ (गन्धतस्) प १।५ से६;११।५६;२८।८,
२०,२६,३२,५४,५६
गंधकासाइय (गन्धकासायिक) ज ३।६,२११,२२२;
५।५८
गंधचरिम (गन्धचरम) प १०।४८।४६
गंधट्टय (गन्धाट्टक) ज ५।१४
गंधणाम (गन्धनामन्) प २३।३८,४८,१०६,१०७
गंधतो (गन्धतस्) प १।७ से ६
गंधदेवी (गन्धदेवी) उ ४।२।१
गंधद्धुणि (गन्धघ्राणि) ज २।१२
गंधपज्जव (गन्धपर्यव) ज २।५१.५४,१२१,१२६,
१३०,१३८,१४०,१४६,१५४,१६०,१६३
गंधपरिणाम (गन्धपरिणाम) प १३।२१,२७
गंधमंत (गन्धवत्) प ११।५२,५५;२८।५,५१
गंधमायण (गन्धमादन) ज ४।१०२,१०४ से १०८,
१६२,२०४,२१५
गंधमायणकूड (गन्धमादनकूट) ज ४।१०५
गंधवट्टिभूत (गन्धवर्तिभुत) प २।३०,३१,४१
ज ३।७,८८,१८४,१६३;५।५७ सू २०।७
गंधवट्टिभूय (गन्धवर्तिभूत) ज ५।७
गंध (वासा) (गन्धवर्षा) ज ५।५७
गंधव्व (गन्धर्व) प १।१३२;२।४१,४५;६।८५
ज ३।११५.१२४,१२५;७।१२२।३ सू १०।८४।३
गंधव्वछाया (गन्धर्वछाया) प १६।४७
गंधव्वलिवि (गन्धर्वलिपि) प १।६८
गंधव्वाणीय (गन्धर्वानीक) ज ५।४१,४४
गंधहत्थि (गन्धहस्तिन्) उ १।६६ से ६६,१०२ से
११६,१२७,१२८
गंधादेस (गन्धादेश) प १।२०,२३,२६ २६,४८
गंधावइ (गन्धापातिन्) ज ४।२६६
गंधावइवट्टवेयड्ढपव्वय (गन्धापातिवृत्तवैताढ्य-
पर्वत) ज ४।२६२
गंधावति (गन्धापातिन्) प १६।३०
गंधाहारग (गन्धारक) प १।८६
गंधिल (गन्धिल) ज ४।२१२,२१२।३
गंधिय (गन्धिक) प २।३०,३१,४१ ज ३।७,१२,
८८,२११,२२१;४।२६;५।७,५८ उ ३।१३१
गंधिलावई (गन्धिलावती) ज ४।१०३,२१२,
२१२।३
गंधिलावइकूड (गन्धिलावतीकूट) ज ४।१०५
गंधोदग (गन्धोदक) ज ५।७
गंधोदय (गन्धोदक) ज ३।६,२२२
गंभीर (गम्भीर) प १।५१;२।२० से २७,३०,३१,
४१. ज २।१५,६८;३।३५,१३८।१;४।३,१३,
२५;५।२२ से २४;७।१७८ सू २०।७
गंभीरमालिणी (गम्भीरमालिनी) ज ४।२१२
गगण (गगन) ज १।२६;२।६८;३।१७८;४।४६
गगनतल (गगनतल) प २।४८ ज ३।१७८;५।४३
उ ५।५
गग्गर (गद्गद) ज ७।१७८
√गच्छ (गम्) गच्छ ज ३।८३,१७० उ १।५४
गच्छइ ज ४।२६८ २७४;५।२२,२६;७।२० से
२५,७६ से ८४,६५ ६८ से १००,१३५;
७।१३५।१ चं २।१ सू १।६।१ गच्छं
ज ३।१५४,१७० गच्छंति प ६।६६.१०५,
११०;३६।८३ ज २।४६;७।३६ से ४८
गच्छति प १६।३४,४१,४२,४४,४५,४७,५१,
५४;३६।८२,८३।१ सू २।२

गच्छह ज ३।१२५,१२७ उ १।४४ गच्छामि ज २।९०;३।२६,३९,४७,५६,१३३,१४५; ५।२२ उ १।१७;३।२९ गच्छामो ज ३।१३८; ५।३ गच्छाहि ज ३।७६,१२७,१२८,१५१ गच्छिहिइ उ १।१४१;३।१८;४।२६;५।४३ गच्छिहिंति ज २।१३५ से १३७ गच्छेज्ज प ३६।९१

गच्छमाण (गच्छत्) सू २।२;२०।२

गच्छित्ता (गत्वा) ज ५।१४

√गज्ज (गर्ज्) गज्जंति ज ५।७

गज्जिय (गर्जित) ज ३।१०४,१०५;७।१७८

गड्ड (गर्त) ज २।३८,१३१;३।८८ उ ३।५५

गढिय (ग्रथित) उ ३।११४,११५,११९

गण (गण) प २।३०,३१,४१,४८,६० से ६३; २।६४।१५ ज १।३१; २।८,१२,१३,२०,३६, ४१,६४;४।३,२५ सू १९।२२।१०,२१; २०।९।४ उ ४।११;५।५

गणग (गणक) ज ३।९,७७,२२२

गणणा (गणना) चं १।३

गणधम्म (गणधर्म) ज २।१२९

गणनायग (गणनायक) ज ३।९,७७,२२२

गणराय (गणराज) उ १।१२७ से १३०,१३२

गणहर (गणधर) प १६।५१ ज २।७३,९५,९६, १०० से १०२,१०४ सू २०।९।४

गणहरचियगा (गणधरचितका) ज २।१०५ से ११२,११४

गणावच्छेइय (गणावच्छेदक) प १६।५१

गणि (गणिन्) प १६।५१ ज ३।३५, १६७ चं १।३

गणिज्जमाण (गण्यमान) सू १२।३ से ६,१५

गणितलिवि (गणितलिपि) प १।९८

गणिय (गणित) ज २।४,६४;३।१६७।३;६।७,८

गणियपय (गणितपद) ज ६।८।१

गणिया (गणिका) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८, ६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३ उ ५।१०, १७

गत (गत) प २।३०,३१,६३;१७।१०७,१५१, १५४;२१।५२,५५,७७;३४।२०;३६।८३।२, ३६।८६,८८ सू २।३,९।३;१३।७,९,१२,१४ से १६;२०।७

गति (गति) प ३।१।१,३।३८,३९;१०।५३।१; १६।३९,४०,४३,४६,५५;१७।११४।१; १८।१।१;२३।१३ से २३;३६।८३।२ सू २।३;१५।१,३७;१८।८

गतिचरिम (गतिचरम) प १०।३१ से ३३

गतिणाम (गतिनामन्) प २३।३८,३९,८१ से ८४,१४६,१४८,१४९,१७१,१७२

गतिणामनिहत्ताउय (गतिनामनिधात्तायुष्क) प ६।११९,१२२

गतिपरिणाम (गतिपरिणाम) प १३।२,३,१४,१६ से २१,२३

गतिमाता (गतिमात्रा) सू १५।५ से ७

गतिरतिय (गतिरतिक) सू १९।२३,२६

गतिसमावण्ण (गतिसमापन्न) सू १०।१७०;१५।५ से १३

गतिसमावण्णग (गतिसमापन्नक) सू १९।२३,२६

गत्त (गात्र) प २।३१ ज ३।९,२२२;४।१३; ५।५;७।१७८

गद्दभ (गर्दभ) प १।६३

गब्भ (गर्भ) प ९।२६;१७।१६६,१६७,१६९ से १७२ ज २।८५;३।३ उ १।५० से ५२, ५४,७४,७६,७७,७९

गब्भवक्कंतिय (गर्भावक्रान्तिक) प १।६०,६६, ७५,७६,८१,८२,८४,८५,१२९;३।१८३; ४।११० से ११२,११९ से १२१,१२८ से १३०,१३७ से १३९,१४६ से १४८,१५५ से १५७,१६२ से १६४;६।२२,२४,६५,६६, ७१,७२,८४,९७,९८,१०८,११३;९।७,१०, १७,२३;१६।२८;१७।४३,४७,६३,६४,६६, ६७,८९;२१।९,१०,१२,१३,१५ से २०,३१, ३४,३६,४३ से ४८,५३,५४,७२

गब्भवसहि (गर्भवसति) प २।६४
गब्भिणी (गर्भिणी) ज ३।३२
गम (गम) प १५।१४३; २३।१६७ ज २।५६, १५९;३।३,१८३,२०३,२१७;४।१३९, १४०।१,१६७,२४३;५।४० सू ८।१
गमण (गमन) ज ३।९,३५,८५,१८३ उ १।४२, ८८;१२६;३।१२७,१२८
गमणिज्ज (गमनीय) ज २।६४;३।१८५,२०९; ५।५८
गमय (गमक) प ५।१७९;१७।२८,३५
गमित्तए (गन्तुम्) उ ४।११
गय (गज) प २।३० ज २।१५,६५;३।१५,१७, २१,२२,३१,३४ से ३६,७७,७८,९१,१७३, १७५,१७७,१७८,१९९ उ १।१२३,१३८; ५।१८
गय (गत) प २।४१;१७।१०६,१११;२१।५५ ज २।१५;३।१८,१२८;७।१३३।३,१३५ चं १।१,२ उ १।२५,४६,५१,५४,६४,७६,७९, ८८,८९,९७,१११-११२,१२१,१३८;२।९; ३।१५,३५,५१,५६,८४,१२१,१६२;४।२४; ५।१७,२०,२७,३१,४०
गयंद (गजेन्द्र) चं १।१
गयकण्ण (गजकर्ण) प १।८६
गयकलभ (गजकलभ) प १७।१२३
गयछाया (गजछाया) प १६।४७
गयण (गगन) ज ३।३
गयणतल (गगनतल) ज ५।४३
गयतालुय (गजतालुक) प १७।१२६
गयदंत (गजदन्त) ज ३।३५;४।१०३;७।१३३।३
गजदंतसंठिय (गजदंतसंस्थित) सू १०।५१
गयपुर (गजपुर) प १।९३।२
गयमारिणी (गजमारिणी) प १।३७।५
गयरूवधारि (गजरूपधारिन्) ज ७।१७८ सू १८।१४
गयवइ (गजपति) प २।४९ ज ३।१७,१२६।२, १७७,१८३,२०१,२१४ उ १।१२४,१३१; ५।१९
गयवति (गजपति) ज ३।१२६।२
गयवर (गजवर) ज ३।९१
गयविक्कम (गजविक्रम) ज ७।१३३।३
गयविक्कमसंठिय (गजविक्रमसंस्थित) सू १०।५३
गरह (गर्ह्) गरहति उ ३।११७ गरहेहि उ ३।११५
गरहिज्जमाण (गर्ह्यमान) उ ३।११८
गराइ (गर) ज ७।१२३ से १२५
गरुय (गुरुक) प १।४ से ६;३।१८२;५।५,७, २०९;१५।१४,१६,२७,२८,३२,३३;२८।२०, ३२,६६
गरुयत्त (गुरुकत्व) प १५।४४,४५
गरुयलहुयपज्जव (गुरुकलघुकपर्यव) ज २।५१, ५४,१२१,१२६,१३०,१३८,१४०,१४६,१५४, १६०,१६३
गरुल (गरुड) प २।३०,३१ ज ३।१०९;४।२०८ चं १।२
गरुलव्वूह (गरुडव्यूह) उ १।१४,१५,२१,१३६, १४०
गल (गल) ज २।१५;७।१७८
गल (गलत्) चं १।१
√गल (गल्) गलइ उ १।५१
गलय (गलक) ज ७।१७८
गललाय (गललात) ज ३।१७८;७।१७८
गल्ल (गल्ल) ज ५।१८
गवक्ख (गवाक्ष) ज १।९;२।२०;४।६
गवय (गवय) प १।६४ ज २।३५
गवल (गवल) प २।३१,१७।१२३ ज ३।२४
गवलवलय (गवलवलय) प १७।१२३
गवेलग (गवेलक) ज ३।१०३
गवेलय (गवेलक) ज २।१३१
गवेस (गवेष्) गवेसइ उ ३।११४
गवेसग (गवेषक) ज ३।१०९
गवेसणा (गवेषणा) ज ३।२२३ सू २०।७
गवेसित्ता (गवेषयित्वा) उ ३।११४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गव्विय (गर्वित) ज ७।१७८

गह (ग्रह) प १।१३३; २।२० से २७,४८ से ५१, ६३ ज १।२४; ७।१७७।३,१८०,१८१,१८६, १९७ सू १०।१३१ से १७३; १५।१,१०,१३; १८।४,१८,१९,३७; १९।१,५।२,८।२, १९।२२।३,६,६,१०,२१,२०,२६,३१; २०।८

गहगण (ग्रहगण) ज ३।३,१७,२१,३४,१७७,२२२; ७।५५,५८,१८०,१८१,१९७, सू १८।१८; १९।२२,२३,२६; २०।७ उ ३।१२; ५।४१

गहण (गहन) प १।४८।५३ से ५५; ११।५३,५५, ५७,५९,७१; १८।९५; २२।१५,८० उ १।७१

गहणया (ग्रहण) उ १।१७

गहत्त (ग्रहत्व) उ ३।८३

गहर (दे०) प १।७६

गहविमाण (ग्रहविमान) प ४।१८६ से १९४ ज ७।१७८।१,१९१,१९२ सू १८।८,११,१५, ३१,३२

गहाय (गृहीत्वा) प ३६।८१ ज ३।८८ उ १।६७; ३।५०

गहिऊण (गृहीत्वा) ज ३।२४

गहित (गृहीत) सू २०।२,६।२ उ ३।५५

गहिय (गृहीत) प २।४१; ११।७१,७२ ज ३।१२, ७७,८८ १०७,१२४; ५।७,५८ उ १।१३८; ३।६३,७०,७३

गहिर (गंभीर) प २।४

गा (गै) गायंति ज ५।५७

गाउय (गव्यूत) प १।७५; २।३४; २१।४२,४४,४६; ४७।१,२; २।४८; ३३।२ से ६ ज २।३,४५; ४।८३,१०३,११०,१४३,१७८,२०३,२२६; ७।६०,१८२

गाउयपुहत्तिय (गव्यूतपृथक्त्विक) प १।७५

गागर (दे) प १।५६ ज ३।३

गात (गात्र) ज ३।२११; ५।५८

गाम (ग्राम) प १।७४; १६।२८; २१।६२,६३ ज २।२२,६६ ७०,१३१; ३।१८,२१,२२,८१, १६७।२,१८०,१८५,२०६,२२१ उ ३।१०१; ५।३६

गामकंटय (ग्रामकण्टक) उ ५।४३

गामणिद्धमण (ग्रामनिर्द्धमण) प १।८४

गाममारी (ग्राममारी) ज २।४३

गामरोग (ग्रामरोग) ज २।४३

गाय (गो) प ११।४

गामाणुगाम (ग्रामानुग्राम) उ १।२,१७।३।२६,६६, १३२; ५।३६

गामि (गामिन्) उ १।१११,११२

गाय (गो) प ११।४

गाय (गात्र) प १७।१३४ ज २।१५,१८; ३।८२, २११,५।५८ उ ३।५०

गायंत (गायन्) ज ३।१७८

गारव (गौरव) ज ३।३

गारविय (गौरवित) सू २०।६।२

गालण (गालन) उ १।५१,७६

गालित्तए (गालयितुम्) उ १।५१,७६,७७

गालेमाण (गालयत्) उ ५।२५

गावी (गो) ज २।३४

गाह (ग्राह) प १।५५,५८

गाह (गाह्) गाहेहिंति ज २।१३४

गाहा (गाथा) प १।४८; २।४०; १५।५५ सू १।१७, १६,२५

गाहावइ (गृहपति) ज ४।१८१,१८३,१८४,१८६, १९५ उ ३।१०,११,१३,२१,१५८,१६०,१६६; ४।७ से ९,१६,१८

गाहावइकुण्ड (गृहपतिकुण्ड) ज ४।१८२,१९४

गाहावइणी (गृहपत्नी) उ ४।१६

गाहावइदीव (गृहपतिद्वीप) ज ४।१८२

गाहावइरयण (गृहपतिरत्न) ज ३।११६,१२०, १७८,१८६,१८८,२०६,२१०,२१६,२१९, २२०

गाहावइरयणत्त (गृहपतिरत्नता) प २०।५८

गाहेत्ता (ग्राहयित्वा) ज २।१३४

गिण्ह (ग्रह्) गिण्हइ ज ५।६०,६६ उ १।५७ गिण्हंति ज ५।१४,१७,५५ उ १।४५ गिण्हह उ १।४४ गिण्हेइ उ १।४८
गिण्हउकाम (ग्रहीतुकाम) उ १।१०५
गिण्हमाण (गृह्णत्) प ११।७०
गिण्हित्तए (ग्रहीतुम्) उ १।११६
गिण्हित्ता (गृहीत्वा) ज ५।१४ सू २०।२ उ १।४५
गिण्हेऊणं (गृहीत्वा) उ ३।६८
गिण्हेत्ता (गृहीत्वा) उ १।४८
गिम्ह (ग्रीष्म) ज २।६४,७०;७।१६४,१६७ सू ८।१;१०।७१ से ७४;१२।१४ उ ५।२५
गिरिकुमार (गिरिकुमार) ज ३।१३३,१३६
गिरा (गिरा,गिर्) ज २।१५
गिरि (गिरि) ज २।१५,६५,१३१,१३३,१३४; ३।३२,७६,७७,१०६,१२६।४,१२८,१३८, १५१,१७०,१८५,२०६,२२१;४।२३४,२४०
गिरिकण्णइ (गिरिकर्णी) प १।४०।५ अपराजिता
गिरिदरी (गिरिदरी) ज ३।१०६
गिरिराय (गिरिराज) ज ४।२६०।१ सू ५।१
गिरिवर (गिरिवर) ज २।६५;३।३,८८
गिल्लि (दे०) ज २।३३
गिह (गृह) ज ३।३२,१८३,१८६ उ १।४२,४४, १०८;३।२६,१००,१०१,१३१,१४१,१४८; ४।१२,१२
गिहिलिंगसिद्ध (गृहलिङ्गसिद्ध) प १।१२
गीत (गीत) प २।३०,३१,४१ सू १८।२३; १६।२३,२६
गीतजस (गीतयशस्) प २।४५,४५।२
गीतरति (गीतरति) प २।४५
गीय (गीत) प २।४१,४६ ज १।४५,२।६५; ३।८२,१८५,१८७,२०४,२०६,२१८; ५।१, १६; ७।५५,५८,१८४
गीयरइ (गीतरति) प २।४५।२
गीवा (ग्रीवा) ज २।१५
गुंजंत (गुञ्जत्) ज २।१२
गुंजद्ध (गुञ्जार्ध) ज ३।३५,१८८
गुंजद्धराग (गुञ्जार्धराग) प १७।१२६
गुंजालिया (गुञ्जालिका) प २।४,१३,१६ से १६, २८;११।७७
गुंजावल्ली (गुञ्जावल्ली) प १।४०।४ घूंघची
गुंजावाय (गुञ्जावात) प १।२६
गुच्छ (गुच्छ) प १।३३।१,३७;१।४८।६,६१ ज २।१२,१३१,१४४,१४६ उ ५।५
गुच्छबहुल (गुच्छबहुल) ज १।१८
गुज्झ (गुह्य) उ ३।११
गुज्झंतर (गुह्यान्तर) ज ४।२१
गुण (गुण) प २।६४।१३,१७;५।३६ से ३८,५८ से ६०,७३ से ७५,८८ से ६०,१०६ से १०८, १४६,१५०; १५।१४ से १६,२७,२८,३२,३३, ५७; २०।१७,१८,३४; २८।२०,२६,३२,६६; ३४।२० ज २।१५,६५; ३।३,३२,११७।१, ११६,१८६,२०४,२०६; ५।५६,६८,७०
√**गुणड्ढ** (गुणाढ्य) ज ३।३२।१
गुणनिप्फण्ण (गुणनिष्पन्न) उ १।६३
गुणरयण (गुणरत्न) ज ५।५८
गुणसिलय (गुणशिलक) उ १।१,२; ३।४,२१,२४, ८६,१५५,१६८; ४।४,६,१३,१८
गुणसेढि (गुणश्रेणि) प ३६।६२
गुणसेढीय (गुणश्रेणिक) प ३६।६२
गुणहर (गुणधर) ज ३।१२६।१
गुणित (गुणित) सू १६।२२।२६
गुणिय (गुणित) ज २।६
गुणेत्ता (गुणयित्वा) ज ७।३१ सू ४।४,७
गुणोववेय (गुणोपेत) ज २।१४
गुत्त (गुप्त) प २।३०,३१,४१ ज २।६८; ३।३५
गुत्तबंभयारि (गुप्तब्रह्मचारिन्) ज २।६८ उ २।६; ३।१३,८६,१०२,११३,११५,१४६,१६०; ४।२०,२२; ५।२७,३८,४३
गुत्ति (गुप्ति) प १।१०१।१० ज २।७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुत्तिदिय (गुप्तेन्द्रिय) ज २।६८ उ ३।६६
गुमगुमंत (गुमगुमायमान) ज २।१२
गुम्म (गुल्म) प १।३३।१;१।३८।३,१।४८।६१
ज २।१०,१२,१३१,१४४ से १४६;३।२२१;
४।१६६ उ ५।५
गुम्मबहुल (गुल्मबहुल) ज १।१८
गुरु (गुरु) प १।१।१ ज २।१३३
गुरुजण (गुरुजन) उ १।७२
गुरुजणग (गुरुजनक) उ १।८८,९२
गुल (गुड) प १७।१३५ ज २।१७
गुलगुलाइय (गुलगुलायित) ज २।६५;३।३१;
५।५७
गुलिया (गुलिका) प २।३१ ज ७।१७८
गुलगुलाइय (गुलगुलायित) ज ७।१७८
गुहा (गुफा) ज १।२४;३।३२
गूढदंत (गूढदन्त) प १।८६
गूढछिराग (गूढशिराक) प १।४८।३६
√गेण्ह (ग्रह्) गेण्हइ प ११।७१ ज २।११३;
३।२६,३९,४७,५६,६४,७२,१३३,१३८,
१४५;५।५५ उ ३।५१ गेण्हंति प ११।८१;
२८।२२ से २४,३४ से ३६,३९,४०,४२,४५,
६८,६९,७१;३४।६ ज २।११३;५।५५
गेण्हति प ११।४७ से ७०,८०,८१,८३,८५
सू २०।२
गेण्हमाण (गृह्णत्) सू २०।२
गेण्हित्ता (गृहीत्वा) ज ३।२६,३९ उ ३।५१
गेय (गेय) ज ५।५७
गेरुय (गैरिक) प १।२०।४
गेविज्ज (ग्रैवेय) उ १।१३८
गेविज्जग (ग्रैवेयक) ज ३।६,३९,२२२
गेविज्जविमाण (ग्रैवेयकविमान) उ ५।४१
गेवज्ज (ग्रैवेय) प २।४९,६३;३४।१६,१८
ज ३।७७,१०७,१२४;७।१७८
गेवेज्जग (ग्रैवेयक) प १।१३६,१३७;२।४९,६० से
६२;६।६६,९८;१५।८८,९१,९९,१०४,१०८,
११२,११५,११९,१२२,१२५,१२७,१२९,
१३९;२१।५५,६२,७१,९३;३३।२५
गेवेज्जगविमाण (ग्रैवेयकविमान) प २।६०;
३०।२६
गेह (गेह) ज ६९ सू ४।२,३
गेहावण (गेहायतन[1]) ज २।२१
गेहावणसंठित (गेहापणसंस्थित) सू ४।२
गो (गो) ज ३।१०३
गोकण्ण (गोकर्ण) प १।६४,८६ ज २।३५
गोक्खीर (गोक्षीर) प २।६४
गोखीर (गोक्षीर) प २।३१ ज ४।१२५;५।६२;
७।१७८
गोजलोय (गोजलौका) प १।४९
गोड (गौड) प १।८९
गोण (गौण) प १।६४;११।१६ से २० ज २।३५
गोणस (गोनस) प १।७१
गोतम (गौतम) प ३६।१२,८१ चं १।४
गोत्त (गोत्र) प ३६।९२ ज १।१५;७।१२७।१,
१३२।४,१६७।१ चं ५।३,१० सू १।५;९।४;
१०।९२ से ११९; १९।२२।३
गोत्तफुसिया (गोत्रस्पर्शिका) प १।४०।५
गोध (गोध) प १।८९
गोधूम (गोधूम) प १।४५।१
गोपुच्छ (गोपुच्छ) ज १।१८,३५,५१;२।१५;
४।४५,११०,२१३, २४२
गोपुर (गोपुर) ज २।२० सू ४।२
गोमयकीडग (गोमयकीटक) प १।५१
गोमाणसिया (दे०) ज ४।१३०
गोमुह (गोमुख) प १।८६
गोमेज्जय (गोमेदक) प १।२०।३
गोम्ही (दे०) प १।५०
गोय (गोत्र) प २२।२८;२३।१,२,५७;२४।१५;
२६।११;२७।५;३६।८२ ज ३।२२५
उ १।१७
गोयम (गौतम) प १।७४,८४;२।१ से ३९,४१ से

१. गेहेषु आपतनानि वा उपभोगार्थमागमनानि ।

४४,४६,४८ से ६४,३।३८ से १२०,१२२ से १२४,१७४,१७९ से १८२;४।१ से ५४, ५६ से ६७,६९ से ७४,७६ से ९०,९२ से २९९;५।१ से ७,९ से २०,२३,२४,२७ से ३४,३६,३७,४०,४१,४४,४५,४८,४९,५२, ५३,५५,५६,५८,५९,६२,६३,६७,६८,७०, ७१,७३,७४,७७,७८,८२,८३,८५,८६,८८, ८९,९२,९३,९६,९७,१००,१०१,१०३,१०४, १०६,१०७,११०,१११,११४,११५,११८, ११९,१२३ से १३१,१३३ से १४०,१४२ से १४७,१४९,१५०,१५३,१५४,१५६,१५७, १५९,१६२,१६३,१६५,१६६,१६८,१६९, १७१ से १७४,१७६,१७७,१८०,१८१,१८३, १८४,१८६,१८७,१८९,१९०,१९२,१९३, १९६,१९७,१९९,२००,२०२,२०३,२०६, २०७,२१०,२११,२१३,२१४,२१७,२१८, २२०,२२१,२२३,२२४,२२७ से २३४, २३६ से २३९,२४१,२४५;६।१ से ४५, ४७ से ५५,५७,५८,६० से ६४,६७,६८,७० से ७२,७४ से ८५,८७ से ९१,९३,९४,९६ से १०३,१०५ से ११०,११२,११४ से ११६, ११८ से १२१,१२३;७।१ से ४,६ से ३०; ८।१ से ११;९।१ से ४,६ से १६,१९ से २२, २५,२६;१०।१ से ५,७ से १३,१५ से २४, २६ से २९,३१ से ५३;११।१ से ४४,४६, ७३,७९ से ९०;१२।१ से ५,७ से १३,१५, १६,२०,२१,२३,२४,२७,३१ से ३३;१३।१ से १३,२१ से ३१;१४।१ से ३,५,७,९ ११ से १५,१७;१५।१ से २८,३० से ३३,३६ से ५४, ५७ से ७४,७६ से ८४,८९,९१ से ९८,१००, १०३ से १०६,१०८,१०९,११३ से ११९, १२६,१२९,१३२ से १३५,१४०,१४१;१६।१ से ४,६ से ८,१० से १३,१५,१७,१९ से २१;१७।१ से ६,८ से १७,१९ से २२,२४, २५,२७,२६,३३,३६ से ६१,६३ से ६६,७१ से ७६,७८ से ८७,९० से ९२,९४,९५,१००, १०२ से १०४,१०६ से ११६,११८ से १२७, १२९ से १४७,१४९ से १५२,१५४ से १६४, १६६,१६७,१६९ से १७२;१८।१ से १०,१२ से ३७,३९,४१ से ४७,४९ से ९०,९२ से १२७;१९।१ से ३,५;२०।१ से ४,६,७,९ से २५,२७ से ३०,३२ से ३४,३८ से ५४,६१ से ६४;२१।१ से १५,१९ से २५,२८ से ३२, ३६ से ३८,४० से ४२,४८ से ८१,८३ से ९६,९८ से १०१,१०३ से १०५;२२।१ से ११,१३,१५,१७,१९,२१ से २३,२६,२७, २९,३०,३२ से ५०,५२,५३,५७,५९ से ६९, ७८,७९,८२ से ८४,८६,८७,८९ से ९५,९७ से ९९,१०१;२३।१ से ७,९ से ११,१३ से ५०,५७ से ६२,६५,६९ से ७९,८१,८३ से ८६,८९,९०,९५,९८,९९,१०१ से १०४, १०६,१११ से ११८,१२८,१२९,१३१ से १३५,१३७ से १४०,१५४,१५५,१५७,१६०, १६१,१६४,१६७,१७१,१७३,१७६,१७७, १९१ से १९६,१९८ से २०१;२४।१ से ६,८, १० से १५;२५।१,२,४,५;२६।१ से ४,६;८ से १०;२७।१ से ३,५,६;२८।१,३ से ७,१० से १९,२१ से २४,२९,३१,३३ से ३७,३९ से ४२,४४,४५,४९ से ५३,५६ से ६५,६७ से ७१,७६ से ९९,१०२,१०४,१०६ से १२०, १२२,१२३,१२५,१२७ से १२९,१३२;२९।१ से ३,५ से १३,१६ से २१;३०।१ से ३,५ से १३,१५ से २३,२५ से २८;३१।१ से ३,६;३२।१ से ४,६;३३।१ से ३,७ से १०, १२,१३,१५ से २९,३१ से ३३,३५,३६; ३४।१ से ३,५ से ९,११ से १८,२०,२५; ३५।१ से १३,१६ से २०,२२,२३;३६।१ से २२,३० से ५१,५३ से ६४,६६,६७,७०,७१, ७४ से ९०,९२,९४ जा १५ से ७,१५ से १८,२० से २३,२६,२७,२९,३३ से ३५,४१,

४५ से ५१;२।१ से ४,७,१४,१५,१७ से २३, २५,४२,४४ से ४८,५०,५२,५६ से ५८, १२२,१२३,१२७,१२८,१३१ से १३७,१३९, १४७,१५०,१५१,१५६,१५७,१५९,१६१, १६४;३।१,९८,२२६;४।१,२२,३४,४४,४५, ४८,५१,५२,५४ से ५७,६० से ६२,६४,७९, से ८२,८४ से ८६,८९,९६ से ९८,१०० से १०३,१०५ से ११०,११३,११४,१४१,१४३, १५९ से १६७.१६९ से १७८,१८० से १८२, १८४,१८५,१८७,१८८,१९० से १९४,१९६, १९७,१९९,२००,२०२ से २१०,२१२ से २१४,२२५,२२६.२३४,२३६,२३७,२३९, २४१,२४५,२४९,२५१ से २७७;६।२,४,७ से २६;७।१ से ३६,३८ से ४८,५२ से ५७, ५९ से १०८,१११ से १४४,१४७,१४८, १५०,१५४ से १६७,१७० से १७८,१८० से १८५,१८७,१९७ से १९९,२०१ से २१३; चं १० सू० ११५;१०।१०२ उ ११२५,२६,२८, १४०,१४१;२।१२.१३;३।८,९,१६ से १८; २६,२७,८५,८६,९३,९५,१२२ से १२५,१५२, १५७,१६३ से १६५;४।६,२५,२६

गोयम (गोतम) ज ७।१३२।२

गोयर (गोचर) ज २।१३२

गोर (गौर) प २।४०।८,२।४९ ज १।५

गोरक्खर (गौरखर) प १।६३ गदर्भ की एक जाति

गोलगोलच्छाया (गोलगोलच्छाया) सू ९।५

गोलच्छाया (गोलच्छाया) सू ९।४,५

गोलपुंजच्छाया (गोलपुञ्जच्छाया) सू ९।५

गोलवट्टसमुग्गय (गोलवृत्तसमुद्ग) २।१२०; ७।१८५

गोलव्वायण (गोलव्यायन) ज ७।१३२।४ सू १०।११५

गोलावलिच्छाया (गोलावलिच्छाया) सू ९।५

गोलोम (गोलोमन्) प १।४९

गोवग (गोपक) ज ३।३५

गोवल्ल (गोवल) ज ७।१३२।३

गोवल्लायण (गोवलायन) सू १०।१०९

गोवल्ली (दे०) प १।४०।४

गोसीस (गोशीर्ष) प २।३०,३१,४१ ज २।९५, ९६,९९,१००;३।७,९,१२,८२,८८,१३३, १८४,२११,२२२;५।१४ से १६,५५,५८

गोसीसावलि (गोशीर्षावलि) ज ७।१३३।१

गोसीसावलिसंठिय (गोशीर्षावलिसंस्थित) सू १०।२७

गोहा (गोधा) प १।७६

गोहूम (गोधूम) ज २।३७;३।११९

घ

घओदय (घृतोदक) प १।२३

घंटा (घण्टा) ज १।३७;३।३५,१७८;४।३०; ५।२२ से २६,२८,४८ से ५३;७।१७८ उ १।१३८;३।७,९१

घंटिया (घण्टिका) ज २।६४;७।१७८

घंटियाजाल (घण्टिकाजाल) ज ३।२४,३०,१०९; ५।२८

घट्टणया (घट्टनता) प १६।५३

घट्ठ (घृष्ट) प २।३०,३१,४१,४९,५९,६३,६४ ज १।८,२३,३१ सू २०।७

घड (घट) प २।३०,३१,४१ ज ३।७;४।२३,३८, ६५,७३,९०,९१

√**घड** (घटय्) घडेंति ज ५।१६

घडावेत्ता (घटयित्वा) उ ३।५०

घडिया (घटिका) ज ४।१२९

घडेत्ता (घटयित्वा) ज ५।१६

घण (घन) प १।४८।३८;२।३०,३१,४१,४९; १२।१२,३८; ज १।२४,४५,६५;३।३,२४, ८२,१६७,१८५,१८७,२०९,२१८,२२४; ४।१२५;५।१,५,१९,५७,६२;७।५५,५८, १७८,१८४ सू १८।२३;१९।२३,२६

घणघण (घनघन) ज २।६५

घणघणाइय (घनघनायित) ज० ५।५७

घणघणेंत (घनघनायमान) ज ३।३१
घणदंत (घनदन्त) प १।८६
घणवाय (घनवात) प १।२६;२।१०
घणवायवलय (घनवातवलय) प २।१०
घणसंमद्द (घनसंमर्द) सू १२।२६
घणोदधि (घनोदधि) प २।२४
घणोदधिवलय (घनोदधिवलय) प २।४
घणोदहि (घनोदधि) प २।१३
घणोदहिवलय (घनोदधिवलय) प २।१३
घत (घृत) प १५।५५।१ सू १०।१२०
घतवर (घृतवर) सू १६।३१
घतोद (घृतोद) सू १६।३१
√घत्त (ग्रह्) घत्तामो ज ३।१०७ घत्तिहामि उ १।४१ घत्तेह ज ३।११४
घत्थ (ग्रस्त) सू २०।२
घय (घृत) ज २।१०६;११० उ ३।५१
घयमेह (घृतमेघ) ज २।१४३,१४४
घर (गृह) सू २०।७ उ ३।१००
घरग (गृहक) ज १।१३
घरघरग (घरघरक) ज ७।१७८ अनुकरणशब्द
घरोइला (गृहकोकिला) प १।७६
घाइय (घातित) ज ३।१०८ से १११ उ १।२२; १४०
घाएउकाम (हन्तुकाम) उ १।७२
घाडिय (घाटिक) ज २।२६
घाण (घ्राण) प १५।७७,८१,८२; ३६।८१ ज ४।१०७
घाणविण्णाणवरण (घ्राणविज्ञानावरण) प २३।१३
घाणावरण (घ्राणावरण) प २३।१३
घाणिंदिय (घ्राणेन्द्रिय) प १३।४; १५।१,४,८, १३,१६,४२,५८,६४,६६,७०; २८।४५,४६, ७१ उ ३।३३
घाणिंदियत्त (घ्राणेन्द्रियत्व) प ३४।२०
घाणिंदियपरिणाम (घ्राणेन्द्रियपरिणाम) प १३।४
घाणेंदिय (घ्राणेन्द्रिय) प १५।३४
घायय (घातक) ज २।२८
घुल्ला (दे०) प १।४६
घेत्तूण (गृहीत्वा) ज ३।८१
घोडग (घोटक) प १।६३
घोडय (घोटक) प ११।१६ से २०
घोणा (घोणा) ज ३।१०६
घोर (घोर) ज १।५
घोरगुण (घोरगुण) ज १।५
घोरतवस्सि (घोरतपस्विन्) ज १।५
घोरबंभचेरवासि (घोरब्रह्मचर्यवासिन्) ज १।५
घोलंत (घोलत्) ज ३।६;५।२१
घोस (घोष) प० २।४०।६ ज २।६५;३।३५, १८६,२०४
√घोस (घोषय्) घोसंति ज ३।२१३ घोसेंति ज ५।७३ घोसेह ज ३।२१२;५।७२,७३
घोसणा (घोषणा) ज ५।२६,७२,७३
घोसाडइफल (कोशातकीफल) प १७।१३०
घोसाडई (कोशातकी) प १।४०।१
घोसडय (कोशातक) प १।४८।४८
घोसाडिय (कोशातकी) प १७।१३०
घोसेत्ता (घोषयित्वा) ज ३।२१२

च

च (च) प १।१ ज १।७ सू १।७ उ १।७; ३।७; ४।१०
चइत्ता (त्यक्त्वा) प २०।४६ ज २।६४ उ ३।१८, १२५,१५२;४।२६,२८;५।३०,४३
चइत्ता (च्युत्वा) ज २।८५
चउ (चतुर्) प १।१३ ज १।८ चं ४।३ सू १।८ उ २।२२
चउक्क (चतुष्क) प २१।१६;२३।२६,२८,६२, १३४,१७८ ज २।६५;३।१८५,२१२,२१३; ५।७२,७३;७।१३१।२ उ १।६८
चउक्कग (चतुष्क) ज ७।१३१।२
चउक्कय (चतुष्क) प ६।८३;२३।२८

चउगुण (चतुर्गुण) प २।५९ ज ५।५१

चउग्गुण (चतुर्गुण) प २।४०।५ ज ५।४९,५२।१ सू १९।२२।२३

चउजमलपय (चतुर्यमलपद) प १२।३२

चउट्ठाणवडित (चतुःस्थानपतित) प ५।१२,१४, १६,१८,२४,२८,३४,३५,३७,४१,४५,४९, ५०,५४,५६,५९,६३,६९,७१,७४,७८,८६, ८७,८९,९३,९४,९७,१०२,१०४,१०५,१०७, १११,११२,११६,११९,१३१,१३४,१३६, १३८,१४०,१४३,१४५,१४७,१४८,१५०, १५१,१५४,१६६;१६७,१६९,१७२,१७५, १७८,१८२,१८४,१८५,१८७,१८८,१९०,१९३, १९७,२००,२०३,२०७,२११,२१४,२१८, २२१,२२४,२२८,२३०,२३२,२३४,२३७, २३९,२४०,२४२

चउट्ठाणवडिय (चतुःस्थानपतित) प ५।७,२५, ८४,१६३

चउणउत (चतुर्नवति) सू १९।१४,१५।१

चउणउति (चतुर्नवति) सू ४।४

चउणउय (चतुर्नवति) ज ४।२४१

चउणवइ (चतुर्नवति) ज ४।८६

चउतीस (चतुस्त्रिंशत्) सू १।२०

चउत्तीस (चतुस्त्रिंशत्) सू १।२२

चउत्थ (चतुर्थ) प ३।२०,१८३;६।८०।१; १०।१४।४,५,६;११।३,४२,८८;१५।१४३; १७।१४८;३३।१६;३६।८५,८७ ज ४।१८०, २०२;७।१०९,१५९,१६३ सू १०।७०,७४, ७७,१२७;११।५,६;१२।५,१७,२७;१३।८, १६ उ २।१०,१२;३।१४,५४,७१,८३,८८, १५३,१५४,१६१;४।१,३,२८;५।१,२८;३९,४३

चउत्थभत्त (चतुर्थभक्त) प २८।२५ ज २।५६,१५९

चउत्था (चतुर्थी) सू १२।२२

चउत्थाहिय (चतुर्थाहिक) ज २।४३

चउत्थी (चतुर्थी) ज ७।१२५ उ १।२६,२७, १४०,१४१

चउद्दस (चतुर्दशन्) ज ३।२२१

चउदसपुव्वि (चतुर्दशपूर्विन्) ज २।७८

चउद्दस (चतुर्दशन्) ज ७।१५६ सू ८।१

चउद्दसपुव्वि (चतुर्दशपूर्विन्) ज २।७८

चउद्दसम (चतुर्दश) सू १०।७७;१३।८

चउद्दसी (चतुर्दशी) ज ७।१२५

चउद्दिसि (चतुर्दिश्) ज ४।४,२०,११८,१२६, १४४,१४७,१५१।२,२१९,२३५,२४६; ५।४०,६१

चउनाणोवगय (चतुर्ज्ञानोपगत) ज १।५

चउपएसिय (चतुःप्रदेशिक) प ५।१५९;१०।९

चउपण्ण (चतुःपञ्चाशत्) ज २।७७

चउपण्णग (चतुःपञ्चाशत्क) सू १३।१७

चउपुरिसपविभत्तगति (चतुःपुरुषप्रविभक्तगति) प १६।३८,५२

चउप्पएसिय (चतुःप्रदेशिक) प ५।१६०

चउप्पगार (चतुःप्रकार) प ११।३०।२

चउप्पण्ण (चतुःपञ्चाशत्) ज ४।२३४

चउप्पदेस (चतुःप्रदेशिक) प १०।१४।२

चउप्पय (चतुष्पद) प १।६१,६२,६६;४।१२२ से १३०;६।७१,७७;२१।११ से १३,३५,४४, ५३,६० ज २।१३१;७।१२३ से १२५

चउप्पाइया (चतुष्पादिका) प १।७६

चउब्भाग (चतुर्भाग) ज ७।१९० से १९५ सू १।१९;१०।१४२,१४७;१२।३०;१८।२७ से ३५

चउभंग (चतुर्भङ्ग) प १६।१०;२६।६,९

चउभंगि (चतुर्भङ्गिन्) प १०।६

चउभाग (चतुर्भाग) प ४।१७७,१७९,१८०,१८२, १८३,१८५,१८६,१८८,१८९,१९१,१९२, १९४,१९५,१९७,१९८,२००,२०१,२०३ ज ७।१८७,१८८ सू १।१९;२।१;९।३; १०।४७;१२।३०;१३।४;१५।१७ से १९,२४। २५

चउम्मुह (चतुर्मुख) ज ३।१८५,२१२,२१३; ५।७२,७३ उ १।१९८

चउरंगुल (चतुरङ्गुल) सू १०।६३;१९।२२

चउरंगुलकण्णाक (चतुरङ्गुलकर्णक) ज ३।१०९

चउरंगुलजण्णुक (चतुरङ्गुलजानुक) ज ३।१०९

चउरंगुलमूसियखुर (चतुरङ्गुलोच्छ्रितखुर) ज ३।१०९

चउरंस (चतुरस्र) प १।४ से ९;२।२० से २७, ३१ से ३५,४१;१०।१५,२६;२१।६२ ज १।३१;२।१५;३।९५,१५९;४।११४

चउरासोइ (चतुरशीति) प २।४९ ज २।४

चउरासीति (चतुरशीति) प २।२० ज २।७३

चउरिंदिय (चतुरिन्द्रिय) प १।१४,५१;२।१८; ३।९,४० से ४२,४७,४९,१५० से १५२, १८३;४।१०१ से १०३;५।३,८१;६।२०,६५, ७१,८३,१००,१०२,१०४,११५;९।४,१६, २२;११।४५;१२।३,३०;१३।१७;१५।३४,७५, ८२,८६,१३७;१६।६,१३;१७।२२,४०,६२, ८८,९६,१०३;१८।१५,२३;२०।८,१६,२३, २५,२८,३३,४७;२१।६,२८,४२,७६,८०,८६; २२।३१,७३;२३।८८,१५१,१६४;२८।४३, ४६,१०१,१२५,१३६;२९।१४,२१;३०।१२, १३,२२,२३;३१।३;३२।२;३४,३,७;३५।१३, २०;३६।६,३९

चउरिंदियत्त (चतुरिन्द्रियत्व) प १५।९७,१४२

चउरेंदिय (चतुरिन्द्रिय) प ६।८६;१९।३

चउवत्तर (चतु:सप्तति) ज ४।५५

चउवीस (चतुर्विशति) प ६।१।१ ज २।६ सू ४।७

चउवीसतिम (चतुर्विशतितम) सू १२।१७

चउवीसय (चतुर्विशति) सू १।१९

चउव्विह (चतुर्विध) प १।४,५२,६२,६८,७७, १०१।३;१३०;५।१२५;१३।२,५;१४।७,९; १५।६९,७५;१६।६,२९,३१,५३;१७।१३; २०।६२;२१।७७;२३।१८,२८,३७,३९,५४; २५।४,५;२९।३,१२;३०।६;३५।४ ज २।५३, ६९,१६२;३।१६७।१०,२११;४।९९,२५४, २५५;५।५७

चउव्वीस (चतुर्विशति) प ६।१० सू २।१

चउव्वीस (चतुर्विशतितम) प १०।१४।३

चउसट्ठि (चतु:षष्टि) प २।३२ ज २।५२

चउसमइय (चतु:सामयिक) प ३६।६७,६८

चउहा (चतुर्धा) प १६।१

चंकमिय (चंक्रम्य) ज ७।१७८

चंगेरी (चंगेरी) ज ३।११;५।७,५५

चंचल (चञ्चल) प २।४१,५० ज ३।१०९,१७८; ५।१८;७।१७८

चंचलायमाण (चंचलायमान) ज ३।२४।३,३७।१, ४५।१,१३१।३

चंचुच्चिय (दे०) ज ३।१७८;७।१७८ कुटिलगमन

चंचुमलइय (दे०) ज ५।२१

चंड (चण्ड) २।९०,१३१

चंडिक्किय (दे०) अत्यधिक कुपित ज ३।२६,३९, ४७,१०७,१०९,१३३ उ १।२२,१४०

चंडी (चण्डा) प १।४८।४

चंद (चन्द्र) प १।१३३;२।२० से २७,४८;१५।३, ४,२१,५५।३;१७।१२८;२१।२३,८० १।२४;२।१५,६८,१३१;३।३,२४।४,३२।१, ३५,३७।२,४२,४५।२,७९,८५,९५,१३१।४, १५९,१८५,२०९;४।१४२,२११;७।१,७२, ७५,७८ से ८२,८४,९८,१०५,१११, ११२।२,१२६,१२७।१,१२९,१३४।१,४, १६७।१,१७०,१७७।१,१७८।१,१८०,१८१, १८३ से १८५,२०७,२१२,२६२ सू १०।२, ५,७५,१२२,१२७ से १२९।२,१३२,१३३, १३६,१३८ से १४२,१४८,१४९,१५२ से १६५,१७०,१७२,१७३;११।१ से ६;१२।३, १५,१७।१,१९ से २८,३०;१३।१,३ से १७; १४।३,७;१५।१,२,५,६,८ से १०,१४,१७ से २०,२६,२९,३२,३५;१८।१४,१८,१९,२१ से २४,३७;१९।१।१,५।२,८,११।२,१५।२, १९,२१।३,६,१९।२२।४,७,१०,१५ से २५, २७,२८,३०;१९।३१,३५,३८;२०।२,३,४,६ ज १।६३;३।२।१,३।६,१४ से १८,२१,२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चंदचार (चंद्रचार) सू १०।१२१,१२२
चंदण (चन्दन) प १।२०।४;१।३६।३,१।४६; २।३०,३१,४१ ज २।७०,९५,९६,९९,१००; ३।९,१२,८२,८८,१३३,२०९,२११,२२१, २२२;५।१४ से १६,५५,५६,५८
चंदणकयचच्चाय (चन्दनकृतचर्चाक) ज ३।२०९
चंदणपुड (चन्दनपुट) ज ४।१०७
चंदणा (चन्दना) उ ३।१७१
चंदद्दह (चन्द्रद्रह) ज ४।१४२।३,२६२
चंदपण्णत्ति (चन्द्रप्रज्ञप्ति) ज ७।१०२
चंदपव्वय (चन्द्रपर्वत) ज ४।२२२
चंदप्पभ (चन्द्रप्रभ) प १।२०।४ ज २।१३; ३।१२,८८;५।५८
चंदप्पभा (चंद्रप्रभा) प १७।१३४ ज ७।१८३ सू १८।२१;२०६
चंदमंडल (चन्द्रमण्डल) ज ३।९५,११७,१५९, १७८;७।६१ से ७३,७६,७८,९७,१७७ सू १०।७६,७७
चंदमग्ग (चन्द्रमार्ग) चं ५।२ सू १।९।२; १०।७५
चंदमस (चन्द्रमस्) चं २।४; सू १।६।४; १३।१,१७
चंदसा (चन्द्रमस्) १।६;१३।१,१७
चंदमास (चन्द्रमास) सू १२।१० से १२
चंदलेस्सा (चन्द्रलेश्या) सू १६।१,२
चंदवडिंसय (चन्द्रावतंसक) सू १८।२२,२३ उ ३।६,१४
चंदविमाण (चन्द्रविमान) प ४।१७७ से १८२; ६।८५ ज ७।१७३,१७४,१७६ से १७८,१८८ सू १८।१,८,९,१४,२७,२८
चंदसंवच्छर (चन्द्रसंवत्सर) ज ७।१०६,१०७ सू १०।१२७;११।२ से ६;१२।१,३,१० से १३
चंदाभ (चन्द्राभ) ज २।५९,६२
चंदायण (चन्द्रायण) सू १३।१०,१३
चंदिम (चन्द्रमस्) प २।४८ से ५१,६३ ज ७।५५, ५८,१६८,१८०,१८१,१९७ सू ३।१;९।१; १५।१;१७।१;१८।२,३,१८,१९,३७;१९।१, २६;२०।१,७ उ २।१२;५।४१
चंदिमसूरियसंठिति (चन्द्रमरसूर्यसंस्थिति) सू ४।१,२
चंदिमा (चन्द्रिका) ज ७।१०२
चंदोतारायण (चन्द्रावतारायन) उ ३।१५७
चंप (चम्पक) प १७।२७
चंपकवण (चम्पकवन) ज ४।११६
चंपग (चम्पक) ज २।१०;३।१२,८८ उ १।२३, ९१
चंपगजाति (चम्पकजाति) प १।३८।३
चंपकवडेंसय (चम्पकावतंसक) प २।५०,५२
चंपछल्ली (चम्पकछल्ली) प १७।१२७
चंपभेद (चम्पकभेद) प १७।१२७
चंपयकुसुम (चम्पककुसुम) प १७।१२७
चंपयलता (चम्पकलता) प १।३९।१
चंपा (चम्पा) प १।९३।१;१७।१२७ उ १।६,१०, १२,१९,९३,९५,९७,९८,१०५,१०६,११०, ११९,१२२,१२५,१४४,१४५;२।४,५,१६,१७
चंपापुड (चम्पकपुट) ज ४।१०७
चक्क (चक्र) ज २।१५;३।३,३५,९५,१५९, १६७।११,१२ सू ३।२
चक्कद्धचक्कवालसंठित (चक्रार्धचक्रवालसंस्थित) सू १।२५;४।२
चक्कपुरा (चक्रपुरा) ज ४।२१२,२१२।४
चक्करयण (चक्ररत्न) ज ३।४ से ६,९,१२,१४, १५,१८,२२,३०,३१,३६,४३,४४,५१,५२, ६०,६१,६८,६९,९३,९९,१०६,१३०,१३१, १३६,१३७,१४०,१४१,१४९,१५०,१६३, १७२,१७३,१७५,१७८,१८०,२२०
चक्करयणत्त (चक्ररत्नत्व) प २०।६०
चक्कवट्टि (चक्रवर्तिन्) प १।७४,९१;९।२६ ज २।१८,६३,१२५;१५३;३।२,३,२६,३९,

४७,५६,७९,९५,११५,११६,१२४,१३३,
१३५।१,१३६,१३८,१४५,१५९,१६७।५,१४;
४।९४,१६२,२७७;५।२१,५८;७।१९९,२००

चक्कवट्टित्त (चक्रवर्तित्व) प २०।५०,५२

चक्कवट्टिवंस (चक्रवर्तिवंश) ज २।१२४,१५२

चक्कवट्टिविजय (चक्रवर्तिविजय) ज ४।१९९, २६२;५।१,५५;६।१४,१६

चक्कवाग (चक्रवाक) उ ५।५

चक्कवाय (चक्रवात) ज २।१२

चक्कवाल (चक्रवाल) ज १।६५;४।२३४,२४०, २४१ सू १९।४,७,१४,१८,३०,३४,३७ उ ३।१२,१४१;४।१२,१३

चक्काग (चक्रवाक) प १।४८।३८;१।७९

चक्कि (चक्रिन्) प १।९३।६;२०।१।१

चक्किय (चक्रिक) ज २।६४

चक्किया (शक्नुयात्) ज ३।१८५

चक्खिदिय (चक्षुरिन्द्रिय) प १५।१,३,८,१३,१६, ३४,४१,५८,६४,७०;२८।४६,७१ उ ३।३३

चक्खिदियत्त (चक्षुरिन्द्रियत्व) प ३४।२०

चक्खिदियपरिणाम (चक्षुरिन्द्रियपरिणाम) प १३।४

चक्खु (चक्षुष्) ज ५।५,४६

चक्खुदंसण (चक्षुर्दर्शन) प ५।५,७,२१,४५,८१, ९३,९७;२९।३,७,१४,१७,१९,२१;३०।३,७, १३

चक्खुदंसणावरण (चक्षुर्दर्शनावरण) प २३।१४

चक्खुदंसणावरणिज्ज (चक्षुर्दर्शनावरणीय) प २३।२८

चक्खुदंसणि (चक्षुर्दर्शिन्) प ३।१०४

चक्खुदय (चक्षुर्दय) ज ५।२१

चक्खुप्फास (चक्षुःस्पर्श) ज ७।२० से २५,७९,८१

चक्खुफास (चक्षुःस्पर्श) सू २।३

चक्खुभूय (चक्षुर्भूत) उ ३।११

चक्खुम (चक्षुष्मत्) ज २।५९,६१

चक्खुल्लोयणलेस (चक्षुर्लोकनलेश) ज ४।२७;५।२८

चक्खुहर (चक्षुर्हर) ज ३।२११;५।५८

चच्चपुड (चर्चपुट) ज ३।१०९

चच्चय (चर्चक) ज ३।८८

चच्चर (चत्वर) ज २।६५;३।१८५,२१२,२१३; ५।७२,७३ उ १।९८

चच्चा (दे०) ज ५।५६

चच्चिय (चर्चित) ज ३।२११

चडकर (दे०) ज २।६५

चडगर (दे०) ज ३।१७,२१,२२,३६,७८,१७७

चणग (चणक) ज ३।११९

चत्ताल (चत्वारिंशत्) ज ४।५५ सू १।२१

चत्तालीस (चत्वारिंशत्) प २।३६ ज ५।४९ सू १०।१५७

चमर (चमर) प १।६४;२।२१,३२,४०।६ ज १।३७;२।३५,१०१,११३,११९,३।१८५, २०९;४।२७;५।२८,५०

चमरचंचा (चमरचञ्चा) ज ४।१६५,२१०;५।५०

चमरीगंड (चमरगण्ड) ज ३।१७८

चम्म (चर्मन्) ज ५।३२

चम्मपक्खि (चर्मपक्षिन्) प १।७७,७८

चम्मरयण (चर्मरत्न) ज ३।७८ से ८१,११६, ११७,१२१,१५१,१७८;२२०

चम्मरयणत्त (चर्मरत्नत्व) प २०।६०

चम्मेट्ठग (चर्मेष्टक) ज ५।५

चय (चय, च्यव) प २०।४९ उ ३।१८,१२५,१५२; ४।२६,२८;५।३०,४३

चय (शक्) चएइ प २।६४।१७

चय (च्यव्) चयंति प ६।१११;९।२६;१७।९९ सू १७।१ चयति सू १९।२४

चयंत (त्यजत्) प २।६४।५

चयण (च्यवन) प ६।४६,५९,६९;१७।९१,१०५ चं २।५ सू १।६।५;१७।१

चयोवचय (चयोपचय) सू १।१४

चर (चर्) चरइ ज ७।१०,१३,१६,१९ से ३०, २५,६९,७२,७५,७८ से ८२,८४,९५,९६,९८ से १००,१७१,१७३,१७५ सू १।११ चरंति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प १।७५; २।४८ ज ३।९५,१२५;७।१ चं ३।१
सू १।७।१;१९।१,११।२,१५।२,२१।३,६
चरति सू १३।५, १९।२२।२,१७ चरिंति
सू १९।८ चरिंसु ज ३।९५;७।१ सू १९।१
चरिस्संति ज ३।९५;७।१ सू १९।१ चरेंति
सू १९।११
चर (चर) ज ७।१२४,१२५
चरग (चरक) प २०।६१ ज ३।१०९
चरण (चरण) ज ३।३,१३८
चरम (चरम) सू ७।१;१०।१५६; २०।३
चरमाण (चरत्) उ १।२,१७;३।२६,९९,१३२,
१४६,१५६;४।११;५।३६
चरित्त (चरित्र) प १।१०१।१० ज २।७१
चरित्तधम्म (चरित्रधर्म) प १।१०१।१२
चरित्तपरिणाम (चरित्रपरिणाम) प १३।२,१२,
१४,१८,१९
चरित्तमोहणिज्ज (चरित्रमोहनीय) प २३।३२,३४
चरित्ताचरित्ति (चरित्राचरित्रिन्) प १३।१४,१८,
१९
चरित्तारिय (चरित्रार्य) प १।९२,१११ से १२९
चरित्ति (चरित्रिन्) प १३।१४,१८,१९
चरिम (चरम) प १।१।४,१०३,१०६,१०७,१०९,
११०,११३,११४,११६,११९,१२०,१२२,१२३;
२।६४।५; ३।१।२,३।१२३; १०।२ से १३,
२१ से २४,२६ से २९, ३१ से ५३;
१५।४३;१८।१।२,१८।१२६; २३।१९३;
३६।७९ ज ४।१४३;७।१५६ से १६७ सू ५।१;
१०।६३ से ७४,१३८,१४२;१४३,१४७ से
१५१,१५६,१६१;११।५,६;१२।२४ से २८,
३०;१३।१ उ ५।४३
चरिमंत (चरमान्त) प २।६४;१०।२ से ५,२१,
२६,२७ से २९; १६।३४; २२।६०;३३।१६,
१७ ज ४।११०,१४१,२०६,२०७,२५२
चरिमभव (चरमभव) प २।६४।४
चरु (चरु) उ ३।५१,६४
चल (चल) ज ३।१७८; ७।१७८
√चल (चल्) चलइ ज २।९२;३।५५,६४,७२,
१४४;५।२० चलंति ज ३।२,१११,११२;५।२,७
चलंत (चलत्) ज ३।३१;७।१७८
चलचवल (चलचपल) प २।४१
चलण (चरण) ज २।१४,१५;३।३५,१०९;७।१७८
चलणीबहुल (चलनी[1] बहुल) ज २।१३२
चलिय (चलित) ज २।८९,९०,९३; ३।५६,११३,
१४५; ५।३,२१,२८
चवल (चपल) ज २।९०;३।६,२६,२५,३९,४७,
५६,६४,७२,१०९,११३,१३८,१४५,१७८;
५।५,२१,२६,४४,४७,६७;७।१७८
चवलायंत (चपलायमान) ज २।१५
चविया (चव्य) प १७।१३१
चाउग्घंट (चतुर्घण्ट) ज ३।२१,२२,३४ से ३६
उ ५।३८
चाउघंट (चतुर्घण्ट) उ १।११०
चाउरंगिणी (चतुरङ्गिणी) ज ३।१५,२१,३१,३४,
७८,९१,१७३,१७५,१९९ उ १।१२३ १२७,
१२८;५।१८
चाउरंत (चतुरन्त) ज २।१८; ३।२,२६,३९,४७,
५६,११५,१२४,१३३,१३८,१४५;५।२१,५८
चाउस्सालग (चतु:शालक) ज ५।१३
चाउस्सालय (चतु:शालक) ज ५।१३,१४
चाडुकारग (चाटुकारक) ज ३।७८
चामर (चामर) प ११।२५ ज २।१५; ३।९,१८,
२४,३१,३५,९३,१०९,१७८,१८०,२२२;
४।२९,३०;५।११,४३,४६,५५,५७,६०,६६;
७।१७८
चामरग्गाह (चामरग्राह) ज ३।१७८
चामरच्छाय (चामरच्छायन) ज ७।१३२।३
चामरच्छायण (चामरच्छायन) सू १०।११३
चामरहत्थगय (हस्तगतचामर) ज ३।११

१ चलनप्रमाण कर्दमः चलनीत्युच्यते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चामीकर (चामीकर) ज ३।१

चार (चार) प २।४८;१६।५५ ज ७।१,१०,१३, १६, १९ से ३१, ३५, ६९,७२,७५,७८ से ८२,८४,९५,९६,९८ से १००,१७१,१७३ से १७५ सू १।९,११,१४,१६,१७,१९ से २४, २७;२।२,३;३।२;४।४,७,९;६।१;९।२; १०।१२१,१२२,१३।५ से १०,१२,१३,१७; १५।२ से ४;१८।१,५,७;१९।१,५,८,११,१५, १९,२१,१९।२२।२,१३,२२;१९।२३

चारगसाला (चारकशाला) उ १।८८,९१

चारट्ठिइय (चारस्थितिक) ज ७।५५,५८

चारट्ठितिय (चारस्थितिक) सू १९।२३,२६

चारण (चारण) प १।९१

चारि (चारिन्) प २।४८

चारिय (चारिक) प १७।३१

चारियव्व (चारयितव्य) प १७।३१,९७

चारु (चारु) प २।४१,५० ज २।१४,१५;३।१०९, ११९,१३८;५।१८

चारुभासि (चारुभासिन्) ज ३।७७,१०९

चारेयव्व (चारयितव्य) प २१।१०२; २२।७०

चारोवग (चारोपग) सू १९।२२।२१

चारोववण्णग (चारोपपन्नक) ज ७।५५,५८ सू १९।२३,२६

चाव (चाप) ज २।१५; ३।३१,१७८

चावग्गाह (चापग्राह) ज ३।१७८

चाववंस (दे०) प १।४१।२

चास (चाष) प १।७९;१७।१२४

चासपिच्छ (चाषपिच्छ) प १७।१२४

चि (चि) चिज्जंति प २१।९५,९६

चिउर (चिकुर) प १७।१२७

चिउरराग (चिकुरराग) प १७।१२७

चिंचाराम (चिञ्चाराम) उ ३।४८,५५

चिंत (चित्) चिंतेमि प ११।१

चिंतय (चिन्तक) उ १।३१

चिंता (चिन्ता) ज ३।१०५ उ २।११

चिंतिय (चिन्तित) ज ३।२६,३९,४७,५६,८७, १२२,१३३,१४५,१८८;५।२७ उ १।१५,५१, ५४,६५,७६,७९,९९,१०५; ३।२९,४८,५०, ५५,९८,१०६,११८,१३१;५।३६,३७

चिंतेमाण (चिन्तयत्) ज ३।१८८

चिंध (चिह्न) प २।३०,३१,४१,४८,४९ ज ३।२४,३१,७७,१०७ से १११,११७,१२४, १७८ उ १।१२,१४०

चिक्खिल्ल (दे०) प २।२० से २७

√चिट्ठ (स्था) चिट्ठइ उ १।४७ चिट्ठई ज १।१९, ४०,४७;३।५४,६३,७२,१३७,१४३,१६७, २२२;४।१४०,१६८,२३४,२४०,२४१;५।६७, ६८ चिट्ठंति प० २।६४;२।६४।२०;१५।४३, ४५,२८।१०५;३४।१९,२२ से २४,३६,७९, ८१,९३,९४।१ ज १।१३,३०;२।७ से ९,१३, ६० से ६२; ३।१११,११३;४।२,१२९,१३७; ५।५,७ से १२,३८,५७,६०,६७;७।१८५,२१३ सू १८।२३ उ ३।४९ चिट्ठति प १५।५१,५२ सू १९।२ चिट्ठह ज ३।११३ चिट्ठामि उ १।११७ चिट्ठाहि उ १।११५ चिट्ठेज्ज प ३६।९१

चिट्ठत (स्थित) सू २०।७

चिट्ठिय (चेष्टित) ज २।१५; ३।१३८

चिडग (चटक) प १।७९

चिणण (चयन) प २११।१

√चिण (चि) चिण प १४।१८।१ चिणंति प १४।१२ चिणिसु प १४।११ चिणिस्संति प १४।१३

चिण्ण (चीर्ण) चं ३।१ सू १।७,१८,१९;१३।१२, १४ से १७ उ ३।४८,५०,५५

चित्त (चित्त) २।४१ ज ३।५,६,८,१५,१९,३१,५२, ५३,६१,६२,६९,७०,७७,८४,९१,१००,१०९, ११४,१३७,१४१,१४२,१५०,१६५,१७३, १८१,१९९,२०८,२१३; ५।५,१५,१८,२१, २६,२७,२९,४१,५५,५७,७० उ १।२१,३१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२,१०८; ३।१३६; ५।२०
चित्त (चित्र) प १।१।३;२।३०,३१,४१,४८,५० ज ३।२४।३,३७।१,४५।१,७६,११६,१२४, १३१।३,१४५,१७८;७।१७८
चित्त (चैत्र) सू १०।१२४
चित्तंतरलेस (चित्रान्तरलेश्य) ज ७।५८ सू १६।२६
चित्तंतरलेस्साग (चित्रान्तरलेश्याक) सू १६।२२।३०
चित्तकणगा (चित्रकनका) ज ५।१२
चित्तकूड (चित्रकूट) ज ४।१६६,१६६,१७२,१७३, १७६,१७८ से १८१,१८५,१६१,१६७,२००, २०६,२०७; ६।१०
चित्तग (चित्रक) प १।६६
चित्तगुत्ता (चित्रगुप्ता) ज ५।६।१
चित्तपक्ख (चित्रपक्ष) प १।५१
चित्तगहुल (चित्रकबहुल) ज २।६४
चित्तय (चित्रक) प ११।२१
चित्तलंगमंग (चित्रलाङ्गाङ्ग) ज २।१३३
चित्तलग (चित्रलक) प १।६६ ज २।१३६
चित्तलि (चित्रल,चित्रलिन्) प १।७१
चित्तविचित्तकूड (चित्रविचित्रकूट) ज ४।६४
चित्ता (चित्रा) ज ५।१२;७।१२८,१२६,१३६, १४०,१४६,१६४,१६५ सू १०।२ से ६,१६, २३,४७,६२,७१,७२,७५,८३,११२,१२०, १३१ से १३३,१५४; १२।३०
चित्तामूलय (चित्तामूलक) प १७।१३१
चित्तार (चित्रकार) प १।६७
चित्तिया (चित्रिका) प ११।२३
चिय (चित) प २३।१३ से २३ ज ३।२१७
चिय (एव) सू १०।१३६
चियगा (चितका) ज २।६५,६६,१०३,१०४,११४
चियत्तदेह (त्यक्तदेह) ज २।६७
चिरं (चिरम्) ज ३।१२६।१,२
चिरंजीव (चिरंजीव) ज ३।१२६
चिराईय (चिरातीत) चं ७ उ ५।७
चिलाइ (किराती) ज ३।१११।१
चिलाइया (किरातिका) ज ३।८७
चिलाय (किरात) ज ३।१०३ से १०५,१०७, ११५,१२५ से १२७
चिलायविसयवासि (किरातविषयवासिन्) प १।८६
चिल्लग (दे०) प २।४१
चिल्लल (दे०) प १।८६; २।४,१३,१६ से १६,२८
चिल्ललग (दे०) प ११।२२
चिल्ललय (दे०) प ११।२१,२४
चिल्ललिया (दे०) प ११।२३
चिल्लाय (किरात) प १।८६
चिल्लियतल (दे०) सू २०।७ देदीप्यमान तल
चीण (चीन) प १।८६
चीणपिट्ठरासि (चीनपिष्टराशि) प १७।१२६
चीवरधारि (चीवरधारिन्) ज २।६६
चुंचुण (चुञ्चुण) प १।६४।१
चुंचुय (चुञ्चुक) प १।८६
चुच्चु (दे०) प १।३७।२
चुण्ण (चूर्ण) प १।४८।३८ ज २।६५; ३।११,१२, ८८ सू २०।७
चुण्णग (चूर्णक) उ ३।११४
चुण्णवास (चूर्णवास) ज ५।५७
चुण्णविहि (चूर्णविधि) ज ५।५७
चुण्णिया (चूर्णिका) प ११।७६ ज ७।२१,२५,६५, ६८,६६,७१,७२,७४ सू २।३; १०।१५२ से १६०,१६२,१६३;११।२ से ६; १२।७,८,१६ से २८
चुण्णियाभाग (चूर्णिकाभाग) ज ७।२१,६६,७४,७५
चुण्णियाभाय (चूर्णिकाभाग) ज ७।२५,६५,६८, ७१,७२,७५,७७,७८
चुण्णियाभेद (चूर्णिकाभेद) प ११।७६,७६
चुण्णियाभेय (चूर्णिकाभेद) प ११।७३,७६
चुय (च्युत) ज २।८५; ७।५६,५६
चुलसीइ (चतुरशीति) प २।३४ ज २।७४ चं ४।२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुलसीति (चतुरशीति) प २।४०।१ सू २।३
चुलसीय (चतुरशीति) सू १।१२
चुल्लमाउया (क्षुल्लमातृका) उ १।१२,४३,४४, १४५;२।५,१७
चुल्लहिमवंत (क्षुल्लहिमवत्) प १६।३० ज १।४८; ४।४८
चुल्लहिमवंतकूड (चुल्लहिमवत्कूट) ज ४।४४,४५, ४८,५१,५२,७९,९६,२२६
चुल्लहिमवंतगिरिकुमार (क्षुल्लहिमवत्गिरिकुमार) ज ३।१३१ से १३४,१३६;४।५२
चूचुय (चूचुक(ज २।१५
चूडामणि (चूडामणि) प २।३० ३१ ज ३।३९, २११
चूतलता (चूतलता) प १।३९।१
चूयमंजरी (चूतमञ्जरी) ज ३।१२,८८;५।५८
चूयवण (चूतवन) ज ४।११६
चूयवडेंसय (चूतावतंसक) प २।५०,५२
चूलासीइ (चतुरशीति) सू १।८।२
चूलियंग (चूलिकाङ्ग) ज २।४
चूलिय (चूलिक) ज २।४;४।२४२
चेइय (चैत्य) ज १।३;२।३१,६७;७।२२४ चं ७,९ सू १।२,४;१८।२३ उ १।१,२,९,१७,१९, १४४;२।४,१६;३।४,९,२१,२४,२९,४६,८९, ९५,१५५,१५७,१६८,१७१;४।४,६,१३,१८, २८;५।३६
चेइयखंभ (चैत्यस्तम्भ) ज २।१२०;४।१३३; ७।१८५
चेइयथूभ (चैत्यस्तूप) ज २।११४,११५
चेइयरुक्ख (चैत्यरुक्ष,चैत्यवृक्ष) ज ४।१२६,१२७
चेट्ठा (चेष्टा) ज २।१३३
चेड (चेट) ज ३।९,७७,२२२
चेडग (चेटक) उ १।२२,१०७,१११,११५,११६, ११९,१२८,१३७,१४०
चेडय (चेटक) उ १।२२,२५,२६,१०५ से १०७, १०९,११०,११३,११४,११६ से ११९,१२७, १२९ से १३४,१४०
चेडरूव (चेटरूप) उ ३।११४
चेडिया (चेटिका) उ ३।१४१
चेडी (चेटी) उ १।५४,५५,७९,८०;४।१२,१३
चेतियखंभ (चैत्यस्तम्भ) सू १८।३
चेत्त (चैत्र) ज ७।१०४ उ ३।४०
चेत्ती (चैत्री) ज ७।१३७,१४०,१४९,१५५ सू १०।७,१६,२३,३६
चेदि (चेदि) प १।९३।४
√**चेय** (त्यज्) चेएइ उ० ४।२१ चेएसि उ ४।२२
चेलपेला (चेलपेटा) उ ३।१२८
चेल्लणा (चेलना) उ १।१०,३२ से ४१,४३,४४, ४६,४८ से ५५,५७,५८,७० से ७४,८८,९५, १०९,११०,११३,११४
चेव (चैव) प ११।७
चोइयमइ (चोदितमति) ज ३।१३८
चोक्ख (चोक्ष) ज ३।८२,१०९ उ ३।५१,५६
चोताल (चत्वारिंशत्) सू १२।१२;१९।१५।२
चोत्तालीस (चत्वारिंशत्) सू १०।१३६
चोत्तीस (चतुःत्रिंशत्) प २।३९ ज ४।११० सू १।२२
चोद्दस (चतुर्दशन्) प २।२६; ज १।४८ सू ३।१;१०।६३
चोद्दसपुव्वि (चतुर्दशपूर्विन्) ज १।५
चोद्दसम (चतुर्दश) ज २।८८
चोद्दसरयणीसर (चतुर्दशरत्नेश्वर) ज ३।१२६।३
चोद्दसविह (चतुर्दशविध) प २३।१९,२०
चोप्पाल (दे०) ज ४,१२७ आयुधशाला
चोप्पालग (दे०) ज २।२० बरण्डा
चोय (दे०) ज ३।१११।३
चोयपुड ('चोय'पुट) ज ४।१०७
चोयाल (चतुश्चत्वारिंशत्) प २।४०।३ ज ७।७९ सू १।१८
चोयालीस (चतुश्चत्वारिंशत्) प २।३५ ज ७।८
चोयासव (चोयासव) प १७।१३४
चोर (चोर) प १७।१३२ उ ३।१२८
चोरग (चोरक) प १।४४।३ असबरक, एक बढ़िया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घास जो रेशम रंगने के काम आता है
चोवट्ठि (चतुष्षष्टि) प २।३१
चोवत्तर (चतुस्सप्तति) ज ७।८०
चोव्वीस (चतुर्विंशति) ज ७।१०६
चोसट्ठि (चतुष्षष्टि) ज २।६४

छ

छ (षष्) प १।६४।१ ज १।१८ चं ३।३ सू १।७ उ ५।२५
छउमत्थ (छद्मस्थ) प १।१०१।४,१।१०४ से १०७, ११७ से १२०,१२६; ३।१८३; १५।४४,४५; १८।६४,६५,६७,६८; ३६।८०,८१
छउमत्थपरियाय (छद्मस्थपर्याय) ज २।८८
छक्कग (षट्क) ज ७।१३१।१
छक्खुत्तो (षट्कृत्वस्) सू १२।१०
छगल (छगल) प २।४६
छज्ज (राज्) छज्जइ ज ३।२४।४,३७।२,४५।२, १३१।४
छट्ठ (षष्ठ) प ३।१८,१८३; ६।८०।२; १०।१४।४ से ६; १२।३२; १७।६५; ३३।१६; ३६।८५,८७ ज २।६५,८५; ७।६७,११७।१ सू १०।७७; १३।८ उ २।१०,२२; ३।१४,५०,५५,८३,१५० १६१,१६७,१७०; ४।२४; ५।२८,३६,४३
छट्ठक्खमण (षष्ठक्षपण) उ ३।५० से ५४
छट्ठभत्त (षष्ठभक्त) प २८।४७ ज २।५२,१६१
छट्ठाणवडित (षट्स्थानपतित) प ५।५,७,१०,१२ १४,१६,१८,२०,२४,२५,२८,३०,३२,३४, ३७,३८,४१,४२,४५,४६,४६,५३,५६,५६, ६०,६३,६४,६८,७१,७४,७५,७८,७६,८३, ८४,८६,८६,६०,६३,६४,६७,१०१,१०२, १०४,१०५;१०७,१०८,१११,११२,११६,१२६, १३१,१३४,१३६,१३८,१४०,१४३,१४५,१४७, १५०,१५१,१५४,१६३,१६६,१६६,१७२, १७४,१७७,१८१,१८४,१८७,१६०,१६१, १६३,१६४,१६७,१६८,२००,२०१,२०३,२०४, २०७,२०८,२११,२१२,२१४,२१५,२१८, २१६,२२१,२२२,२२४,२२५,२२८,२३०, २३२,२३४,२३७,२३६,२४२ से २४४
छट्ठाणवडिय (षट्स्थानपतित) प ५।५,७।११५, ११६,१६६
छट्ठी (षष्ठी) प ३।२७।२ ज ७।१२५
छण्ण (छन्न) ज ३।३
छण्णउइ (षण्णवति) प २।४०।१;१२।३२ ज २।६; ३।१७८
छण्णउत (षण्णवति) सू १६।२१
छण्णउति (षण्णवति) सू २।३
छण्णउय (षण्णवति) सू १६।११।३;२१।७
छत्त (छत्र) प २।४८,६४;११।२५ ज २।१५,२०; ३।३,६,१८,३१,३५,७७,७८,६३,१७८,१८०, २२२;५।४३,५५,५७ सू १२।२६ उ १।१६; ४।१३,१८
छत्तहत्थगय (हस्तगतछत्र) ज ३।११
छत्तछाया (छत्रछाया) प १६।४७
छत्तरयण (छत्ररत्न) ज ३।११७।१,११८,११६, १२१,१७८,२२०
छत्तरयणत्त (छत्ररत्नत्व) प २०।६०
छत्तल (षट्तल) ज ३।६३,१३५,१५८
छत्ताइच्छत्त (छत्रातिच्छत्र) ज ४।३०,४६;५।४३
छत्तागारसंठित (छत्राकारसंस्थित) सू १।२५;४।२
छत्तातिच्छत्त (छत्रातिच्छत्र) सू १२।२६,३०
छत्ताय (छत्राक) प १।४७ कुकुरमुत्ता, धनिया, सोया, जाल बबूर का वृक्ष
छत्तार (छत्रकार) प १।६७
छत्तालीस (षट्चत्वारिंशत्) सू १२।२५
छत्तीस (षट्त्रिंशत्) प २।४०।४ ज ३।३ सू १०।१६६
छत्तोह (छत्रौघ) प १।३६।३
छप्पएसिय (षट्प्रदेशिक) प १०।११
छप्पण (षट्पञ्चाशत्) प १।८४ ज ४।८६ सू ३।१
छप्पण (दे० षट्प्राज्ञक) ज २।१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छप्पय (षट्पद) ज २।१२
छब्भंग (षट्भङ्ग) प २८।११६,१२३,१२५,१३३,
१३६,१४३ से १४५
छब्भाग (षट्भाग) प २।६४ ज १।१८;६।३२।१
छमास (षण्मास) सू १।१६
छम्मास (षण्मास) ज २।४६;७।२३,२५,२८,३०,
५७,६० सू १।१३,१४,१७,२१,२४,२७;२।३;
६।१;१६।२५,२७
छम्मासावसेसाउय (षण्मासावशेषायुष्क)
प ६।११४
छल (षष्) ज ७।२०१ सू १२।१२
छलंस (षडस्र) ज ३।६२,११६
छलसीय (षडशीति) ज ४।४५;७।३१ सू ४।४;
१५।२६
छल्ली (छल्ली) प १।४८।३० से ३७,६३
छवि (छवि) ज २।१६,३६,४१,१३३;३।१०६
छविच्छेय (छविच्छेद) ज २।३६,४१
छविधर (छविधर) ज ७।१७८
छविहर (छविधर) ज ७।१७८
छव्विध (षड्विध) प ६।११८
छव्विय (दे०) प १।६७ कट आदि बनाने वाला
छव्विह (षड्विध) प १।६१,६४,६५;६।११६;
१३।६;१५।३५,७०;२१।२६,३१,३२,३४,३६;
२२।८३,८४,८६;२३।४५,४६; २४।२,४,८,
१० से १२;२६।२,४,६,८ से १०;२८।६;
३०।२ ज २।२,३,५०,५८,१२३,१२८,१४८,
१५१,१५७,१६४;४।१०१,१७१
छव्वीस (षड्विंशति) प २।२३ ज ७।१०८
सू १।२१
छाउद्देस (छायोद्देश) सू ६।२
छाउमत्थिय (छाद्मस्थिक) प ३६।५३ से ५६,५८
छाणविच्छुय (छगणवृश्चिक) प १।५१
छायच्छाय (छायाछाया) सू ६।४
छाया (छाया) प २।३०,३१,४१,४६; १६।४८
ज १।८,२३,३१;२।१६,२०,१४६; ३।३,११७।१
१२७;५।३२;७।१५६ से १६७।१ सू ६।४;
१०।६३ से ७४;१६।५,६
छायागति (छायागति) प १६।३८,४७
छायाणुमाणप्पमाण (छायानुमानप्रमाण) सू ६।३
छायाणुवादिणी (छायानुवादिनी) सू ६।४
छायाणुवायगति (छायानुपातगति) प १६।३८,४८
छायाल (षट्चत्वारिंशत्) प २।४०।४ ज ४।८६
छायालीस (षट्चत्वारिंशत्) सू १४।७
छायाविकंप (छायाविकम्प) सू ६।४
छारियभूय (क्षारिकभूत) ज २।१३२,१४१
छावट्ठ (षट्षष्टि) ज ७।२७
छावट्ठि (षट्षष्टि) प १८।७६ ज १।२०
सू १।११;१२।३
छावत्तर (षट्सप्तति) ज ७।१ सू१६।१।१,११।३
छावत्तरि (षट्सप्तति) प २।४०।२
छिंद (छिद्) छिंदंति ज ५।५७ छिंदामि उ १।८८
छिज्ज (छेद्य) उ ३।११४
छिण्ण (छिन्न) ज २।८८,८६;३।२२५
छिण्णरुहा (छिन्नरुहा) प १।४८।३ गुडूची
छिद्द (छिद्र) प २।१० उ १।६५,६६,१०५
छिण्णलेसा (छिन्नलेश्या) सू ६।१
छिन्नसोय (छिन्नस्रोतस,छिन्नशोक) ज २।६८
छिप्पतूर (क्षिप्रतूर्य) उ १।१३८
छिया (दे०) ज २।६७
छीइत्ता (क्षुत्वा) ज २।४६
छीरविरालिया (क्षीरबिडालिका) प १।७६
छीरविराली (क्षीरविदारी) प १।४०।४;
१।४८।२ सफेद और अधिक दूध वाली
विदारी
छुरघरगसंठिय (क्षुरगृहकसंस्थित) सू १०।३६
छुरघरय (क्षुरगृहक) ज ७।१३३।१
छुहा (क्षुधा) प २।६४।१६
छेइत्ता (छित्त्वा) उ ३।१५०; ५।२८,४१
छेज्ज (छेद्य) ज ३।३२
छेत्ता (छित्त्वा) ज ७।२२ सू १।१६
छेत्तुं (छेतुम्) ज २।६।१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छेद (छिद्) छेदेइ उ ३।८३ छेदेहिइ उ ५।४३
छेदित्ता (छित्त्वा) उ २।१२; ३।१४
छेदेत्ता (छित्त्वा) उ ३।८३
छेदोवट्ठावणिय (छेदोपस्थापनीय) प १।१२४, १२६
छेदोवट्ठावणियचरित्तपरिणाम (छेदोपस्थानीय चरित्रपरिणाम) प १३।१२
छेय (छेद) ज २।३६,४१,६० ; ३।१७८;५।५
छेय (छिद्) छेएइ उ ४।३९
छेयणगदाइ (छेदनकदायिन्) प १२।३२
छेरमाण (छिद्यमान) उ ३।१३०
छेलिय (दे०) ज ३।३१
छेवट्ट (सेवार्त) प २३।४५,९९,१०५,१०७,१०९, ११०
छोढुं (क्षिप्त्वा[1]) सू ९।३

ज

ज (यत्) प १।४ ज १।६ सू १।४ उ १।२;३।३१; ५।३६
जइ (यदा) प २।२
जइ (यदि) प २।६४।१६ सू १।१३ उ १।६; २।१;३।१;४।१;५।१
जइ (यत्र) प २३।१६०
जइण (जविन्) ज २।६०;३।२६,३५,३६,४७,६४, ७२,१०९,११३,१३८,१४५;५।५,२८,४४,४७, ६७;७।१७८
जइया (यावत्) ज ७।१३१
जंगम (जङ्गम) ज ३।१०९
जंगल (जङ्गल) प १।९३।२
जंघा (जङ्घा) ज २।१५ उ ३।११४
जंत (यंत्र) प २।३०,३१,४१ ज ३।३२,७९,१०९, ११६,१७८,४।२७;५।२८
जंतु (जन्तु) ज २।४।१
जंपमाण (जल्पत्) ज ३।८१
जंबु (जन्बु, जम्बू) प १।३५।१।१३१ उ १।३ से ५,७,९,१४२,१४४,२।२,४,१४,१६,२१;३।२, ४,१९,२१,२२,२४,८७,८९,१५३,१५५,१६६, १६८,१७०;४।२,४,२७,५।२,४,४४
जंबुद्दीव (जम्बुद्वीप) प २।३२,३३,३५,३६,४३,५०, ५१;१५।५४,५५।१;१६।३०;३६।८१ ज १।७, १५,१६,१७।१,१८,२०,२३,३४,३५,४६,४८, ५१;२।१,७,१६,५२,५६,९०,१६१,१६४;३।२६, ३६,४७,५६,११३,१३३,१३८,१४५;४।१,६, ५२,५५,६२,८१,८६,६८,११४,१५६,१६०, १६५,१६७,१६९,१७२ से १७४,१७८,१८१, १८२,२०१ से २०३,२०९,२१३,२६२,२६५, २६८,२७१,२७४,२७७;५।३,२२,२६;६।१,५,७ से २६;७।१,४,८ से १४,३१,३३,३६ से ३९, ५२,५४,६२ ६३,६७ से ७२,८६,८७,९१,९२, १०१,१०२,१७५,१८२,१९८ से २०८,२१० से २१३ सू १।१४,१६,१७,१९,२१,२२,२४, २७;२।१,३;३।१,२;४।३,४,७,१०;६।१;८।१; १०।१३२,१४२,१४७;१२।३०;१८।७,२०; १९।१,२,१९।२२।२३ उ १।९;३।७,९१,१२५, १५७;५।२४,४३
जंबुद्दीवपण्णत्ति (जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति) ज ७।१०१,१०२, २१४ सू ३।१
जंबू (जम्बू) ज ४।१४६ से १५०; १५१।१,२,१५२ से १५४,१५६,१५७।२,१५८,१५९,२०८; ७।२१३
जंबूणय (जाम्बूनद) ज ३।३०,३५
जंबूणयामय (जाम्बूनदमय) ज १।५१; ४।७,१३, ११८,१४३,२५६
जंबूपेढ (जम्बूपीठ) ज ४।१४३ से १४५
जंबूफल (जम्बूफल) प १७।१२३
जंबूफलकालिया (जम्बूफलकालिका) प १७।१३४
जंबूरुक्ख (जंबूरूक्ष) ज ७।२१३
जंबूवण (जम्बूवन) ज ७।२१३
जंबूवणसंड (जम्बूवनषण्ड) ज ७।२१३
जंभग (जृम्भक) ज ५।६६

[1]. हे० ४।१४३ क्षिप्—छूह

जंभय (जृम्भक) ज ५।७०
जंभाइत्ता (जृम्भयित्वा) ज २।४६
जक्ख (यक्ष) प १।१३२; २।४१.४५; १५।५५।३
ज २।३१; ३।१४,१८,३०,३१,४३,५१,६०,६८,
६३,१३०,१३६,१४०,१४६,१७२,१८०
सू १६।३८ उ ५।७,२४,२६
जक्खग्गह (यक्षग्रह) ज २।४३
जक्खाययण (यक्षायतन) उ ५।७,८,२४,२६
जक्खोद (यक्षोद) सू १६।३८
जग (जगत्) ज ५।५,४६
जगई (जगती) ज १।७ से ९,१२,१४; ४।६,३५,
३७,४२,४५,७१,७७,९०,६४,२६२
जगईसमिया (जगतीसमिका) ज १।१०
जगती (जगती) सू ३।१
जगप्पईवदाइय (जगत्प्रदीपदायिका) ज ५।५,४६
जघण (जघन) ज ३।१३८
जच्च (जात्य) ज २।१५; ३।१०९,१७८
जच्चकणग (जात्यकनक) ज २।६८
जट्ठ (इष्ट) उ ३।४८,५०
जडि (जटिन्) ज ३।१७८
जडियाइलय (जटिकादिलक) सू २०।८।५
जडियायलय (दे० जटिकायिलक) सू २०।८।५
जढिलय (जटिलक) सू २०।२
जढ (त्यक्त) ज ३।१२७
√**जण** (जन्) जणइस्सइ ज २।१४२,१४३,१४५
जणेज्जा प १७।१६६,१६७,१६९ से १७२
जण (जन) प १।१।२ ज १।२६; २।६५; ३।१,९५,
१०९ ११९,१३८,१५९ सू १।१ उ १।६८,
१३९; ३।११४,११५,११९; ५।७,२०,२७
जणक्खय (जनक्षय) ज २।४३
जणणी (जननी) ज ५।५,४६
जणवद (जनपद) उ १।६६
जणवय (जनपद) प ११।३३।१ ज २।१३१; ३।८१,
१८६,२०४,२२१ उ १।९४,९९,१०३ १०९,
११०,११३,११४,१२२,१२६,१३३
जणवयकल्लाणिया (जनपदकल्याणिका) ज ३।१७८,
१८६,२०४,२१४,२२१
जणवयविहार (जनपदविहार) उ ३।४६,१४५; ५।३३
जणवयसच्च (जनपदसत्य) प ११।३३
जणिय (जनित) उ ३।४८,५०
जण्ण (यज्ञ) ज २।३० उ ३।४८,५०
जण्णइ (यज्ञकिन्) उ ३।५०
जण्णु (जानु) ज ३।१२.८८; ५।७,५८
जण्हवी (जाह्नवी) ज ३।१६७।११
जत (यत) प २।३०,४१
जति (यदा) प ५।२०; ; ५।१३४ सू १९।२२।२६
जति (यत्र) प २३।१६७
जतिविह (यतिविध) प १६।२०
जत्ता (यात्रा) उ ३।३०,३१
जत्तिय (यावत्) प १५।६६,१०३; २३।१७५
ज ७।२००
जत्थ (यत्र) ज ३।७९ उ ३।५५; ४।२१; ५।३६
जदा (यदा) ज ७।२०
जदि (यदि) प ५।५
जप्पभिइ (यत्प्रभृति) ज २।६७ उ ३।११८
जम (यम) ज ७।१३०,१८६।३ उ ३।५३
जम (काइय) (यमकायिक) ज १।३१
जमग (यमक) ज ४।११२ से ११५,११७,१२०,
१४०।२,१४१,१६५
जमगपव्वय (यमकपर्वत) ज ४।१११,११३,२०६,
२६२; ६।१०
जमगवण्णाभ (यमकवर्णाभ) ज ४।११३
जमगसंठाणसंठिय (यमकसंस्थानसंस्थित) ज ४।११०
जमगसगम (दे०) ज ३।१२,३१,७८,१०९,१८०
२०९; ५।२४
जमदेवया (यमदेवता) सू १०।८३
जमय (यमक) ज ४।११६
जमल (यमल) ज १।२४; २।१५; ४।२७; ५।५,२८
जमालि (जमालि) उ ४।१५; ५।२०,२७,३८
जमिगा (यमिका) ज ४।१६०
जम्म (जन्मन्) प ३६।९४ ज २।१०३; ,१०४
उ १।३४; ३।९८,१०१,१३१

जम्मण (जन्मन्) ज ५।३,५,८.१७,२२,२६,४४,
४६,६७ से ७०,७२ से ७४ उ २।६;३।११२;
४।१६;५।२५

जम्हा (यस्मात्) उ १।६३;२।६

जय (यत्) प २।३१

जय (जय) ज २।१५,६४,६५;३।५,६.१८.२६,३६,
४७,५६,६४,७२,७७.६०,६३ ११४,१३३,
१३८,१४५,१५१.१५७.१७८,१८०,१८५,
२०५,२०६.२२२;५।५८;७।११८ उ १।१०७,
११०,११६,११८,१२२.१३०;५।१७

√जय (जि) जइस्सइ उ १।१५ जयंति उ १।१३५

जयंत (जयन्त) प १।१३८;२।६३;४।२६४ से
२६६;६।४२,५६;७।२६;१५।८६,६२,१००,
१०२.१०५,१०८,१०६.११३,११४,११६,
१२०,१२१,१२३,१२५,१२६,१३१,१३६;
२८।६६ ज १।१५;४।६४

जयंती (जयन्ती) ज ४।२१२, २१२।४;५।८।१;
७।१२०।२,१८६ सू १०।८८।२

जयणा (यतना) उ ३।३१

जयहर (जयधर) ज ३।१२६।१

जया (यदा) ज ५।१ सू १।११ उ ३।११८

जया (जया) सू १०।६०,१७०,१७२

जर (जरा) प १।१।१;३६।८३।२ सू २०।६।६

जर (ज्वर) ज २।४३

जरा (जरा) प २।६४,२।६४।६,२२;३६।६४।१
ज २।८८,८६,१०३,१०४,१३३;३।२२५

जरुला (दे०) प १।५१

जल (जल) प १।७५ ज २।१३४;३।२२,८१.६८,
१५१;४।३,२५ उ ३।५५

√जल (ज्वल्) जलंति ज ५।५७

जलंत (ज्वलत्) ज ३।१८८;४।६,१४,३१,४१,६८,
७६,६३ उ ३।४८,५०,५५६३,.६७.७०,७३,
१०६,११८

जलकंत (जलकान्त) प १।२०।४;२।४०।६

जलकिड्डा (जलक्रीडा) उ ३।५१,५६

जलचारिया (जलचारिका) प १।५१

जलट्ठाण (जलस्थान) प २।४,१३,१६ से १६.२८

जलण (ज्वलन) ज ३।३५

जलपह (जलपथ) प १६।४५

जलप्पह (जलप्रभ) प २।४०।७

जलमज्जण (जलमज्जन) उ ३।५१,५६

जलय (जलज) प १।४८।४० ज ४।२६;५।७

जलय (जलग) ज ३।३२

जलयर (जलचर) प १।५४,५५,६०;३।१८३;
४।११३ से १२१;६।७१.७८,८३;२१।८ से
१०,३२ से ३४,४३,५३.६० सू १०।१२०

जलरुह (जलरुह) प १।३३।१,१।४६

जलवासि (जलवासिन्) उ ३।५०

जलविच्छुय (जलवृश्चिक) प १।५१

जलाभिसेय (जलाभिषेक) उ ३।५०,५१,५६

जलासय (जलाशय) प २।४,१३,१६ से १६. २८

जलिय (ज्वलित) ज ३।३५

जलोउय (जलोतुक) प १।४६

जलोया (जलौका) प १।४६,७८

जल्ल (दे०) ज २।३२

जल्लेस (यत्लेश्य) प १७।६२,१०२

जल्ललेस्स (यत्लेश्य) प १७।६२,१०२

जव (यव) प १।४५।१ ज २।१५,३७;३।११६

जवजव (यवयव) प १।४५।१ ज २।३७

जवण (यवन) प १।८६

जवणदीव (यवनद्वीप) ज ३।८१

जवणाणिया (यवनानिका) प १।६८

जवणालिया (यवनालिका) प ३३।२६

जवणिज्ज (यापनीय) ज ३।३०,३२,३४

जवमज्झ (यवमध्य) ज २।६

जवसय (यवासक) प १।३७।३ जवासा नामक
पौधा, एक तरह का खदिर

जवासाकुसुम (यवासककुसुम) प १७।१२५

जस (यशस्) ज ३।३५,७७,१०६,१२६,१२६,
१६७,१८५,२०६

जसंसि (यशस्विन्) ज ३।३,१२६।३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जसधर (यशोधर) ज ७।११७।१
जसभद्द (यशोभद्र) ज ७।११७।१ सू १०।८६।१
जसम (यशस्वत्) ज २।५६,६१
जसवई (यशस्वती) ज ७।१२१ सू १०।६१
जसोकित्ति (यशःकीर्ति) प २३।१६,२०,१५३
जसोकित्तिणाम (यशःकीर्तिनामन्) प २३।३८, १२७,१८८
जसोधर (यशोधर) सू १०।८६।१,८८।१
जशोहरा (यशोधरा) ज ४।१५७।१;५।६।१; ७।१२०।१
जस्संठित (यत्संस्थित) सू ४।३
जह (यथा) प ११।३ उ ११।०६
जहण (जघन) ज २।१५
जहण्ण (जघन्य) प १।७४;२।६४।८;४।१ से ५४, ५६ से ६७,६९ से ८६,६१ से १३३,१३५ से २६६,२६८;५।४०,४१,४४,४५,७७,७८,६२, ६३,६६,६७,११०,१११,११४,११५,१५३, १५४,१५६,१५७,१५६,१६२,१६३,१६५,१६६, १६८,१६६;६।१ से १८,२० से ४५,६०,६१, ६४,६६ से६८,१२०,१२१,१२३;७।२,३,६ से २६;११।७०,७१;१२।६,१३।२२।२;१५।४० से ४२;१७।१४६;१८।२ से ४,६,८ से१०,१२,१४ से १६,१८ से २४,२६ से २८,३० से ३६,४१ से ५४,५६,५७,५६ से ६७,६६ से ७४,७६ से ८१,८३ से ८५,८७,८६ से ६१,६३,६५,६६, ६८,१०३,१०४,१०५,१०७,१०८,११०,११३, ११४,११६,११७,११६,१२०;२०।६ से १३, ६१,६३;२१।३८,४० से ४२,४८,६३ से ७१, ७४,८४,८६,८७,६० से ६३;२३।६० से ७६, ८१,८३ से ६२,६५ से ६६,१०१ से १०४, १११ से ११४,११६ से ११८,१२७,१२६, १३१,१३३ से १३५,१३८,१४०,१४२,१४३; १४७,१५१ से १५३,१५५,१५७,१५८,१६० से १६२,१६४ से १७३,१७६,१७७,१८२,१८३ १८६ से १८८,१६० से १६३;२८।२५,४७,५०, ७३ से ६६;३३।२ से १३,१५ से १७;३६।८ से १०,१७,१८,२०,३०,३४,४४,६१,६६,६८, ७० ७२ से ७४,७६,६२ ज २।४४,४५,५८, १२३,१२८,१४८,१५१,१५७;४।१०१;७।२८, ५७,६०,१८२,१८७ से १६६,२०६ सू १।१४; १८।२०,२५ से ३४;१६।२;२०।३
जहण्णग (जघन्यक) प १७।१४४,१४६;२३।१५२, १८४
जहण्णगुण (जघन्यगुण) प ५।३६,३७,५८,५६,७३, ७४,८८,८९,१०६,१०७,१८६,१६०,१६२, १६३,१६६,१६७,१६६,२००,२०२,२०३, २०६,२०७,२१०,२११,२१३,२१४,२१७, २१८,२२०,२२१,२२३,२२४,२४१,२४२
जहण्णट्ठितीय (जघन्यस्थितिक) प ५।२३,३४,५५, ५६,७०,७१,८५,८६,१०३,१०४,१७३,१७४, १७६,१७७,१८०,१८१,१८३,१८४,१८६, १८७,२३८,२३६
जहण्णठितीय (जघन्यस्थितिक) प ५।५६
जहण्णपएसिय (जघन्यप्रदेशिक) प ५।२२८
जहण्णपदेशित (जघन्यप्रदेशिक) प ५।२२८
जहण्णपदेसिय (जघन्यप्रदेशिक) प ५।२२७
जहण्णपय (जघन्यपद) ज ७।१६८,१६६,२०२, २०४,२०६;१२।३२
जहण्णमति (जघन्यमति) प ५।६२,६३
जहण्णय (जघन्यक) प १५।६४;१७।१४४; २१।१०५;२३।१६३ ज ७।२६ सू १।१४,१६, १७,१६,२१,२२,२४,२७;२।३;३।२;४।७,६; ६।१;८।१;६।२
जहण्णुक्कोसग (जघन्योत्कर्षक) प १७।१४६
जहण्णुक्कोसय (जघन्योत्कर्षक) प १५।६४; २१।१०५
जहण्णोगाहणग (जघन्यावगाहनक) प ५।२७,२८, ४८,४६,५२,५३,६७,६८,८२,८३,१००,१०१, १५३,१५४,१६२ १६३,१६५,१६६,१६८. १६६,२३३,२३४

जहण्णोगाहणय (जघन्यावगाहनक) प ५।२८,४९,
५३,६८,६९,८३,१००,१५४,१५६,१५९,
१६३,१६६,१६९,२३४

जहन्न (जघन्य) प ४।९०,१३४

जहा (यथा) प १।१ ज १।११ सू १।१२ उ १।२;
२।२;३।२;४।२,५

जहाणाम (यथानामन्) सू २०।७

जहाणामय (यथानामक) प १६।५२,५४;
१७।१०७,१०९,१११,११६,११९,१२३ से
१२८,१३० से १३५;२८।१०५;३४।१९;
३६।९४ ज १।१३,२१,२६,३३,३८,४९;२।७,
१७,१८,३८,५२,५७,१२२,१२७,१४७,१५०,
१५६,१६१,१६४;३।१९२;४।२,८,११,१०७;
५।५,७,३२

जहाभूय (यथाभूत) उ १।४२

जहारिह (यथार्ह) ज २।११३;३।८१

जहाविभव (यथाविभव) उ ५।१७,२५

जहिच्छिय (यथेष्ट) ज २।१६,२२

जहेव (यथैव) सू १७।१ उ ३।२१

जहोचिय (यथोचित) उ १।३५

जा (या) जंति प ६।८०।१ ज ७।१३५।४

जाइ (जाति) प १।३८।२ छोटा आंवला. चमेली,
जायफल

जाइ (जाति) प १।४९,६०,६६,७५,७६;११।९
ज २।८८,८९,२२५;३।३,१०९;५।५,४६
सू १।१९;१२।१,५ से १०,१२ से १७;१४।३७
उ १।२,३४,४९,७४;३।१५९;५।२६

जाइज्जमाण (याच्यमान) उ १।१०५

जाइणाम (जातिनामन्) प २३।३८,४०,८५,८७
से ८९,१५०

जाइनामनिहत्ताउय (जातिनामनिधत्तायुष्क)
प ६।१२१

जाइय (याचित) उ ३।३८

जाइविसिट्ठया (जातिविशिष्टता) प २३।५८

जाइहिंगुलय (जातिहिङ्गुलक) प १७।१२६

जाउकण्ण (जातुकर्ण) ज ७।१३२।१

जाउकण्णिया (जातुकर्णिका) सू १०।९६

जाउलग (जातुलक) प १।३७।५

जागर (जागर) प ३।१७४;२३।१९५,१९९ से
२०१

जागरमाण (जाग्रत्) उ १।१५;३।४८,५०,५५,८७,
९८,१०६,१३१;५।३६

जागरिया (जागरिका) उ १।६३

√**जाण** (ज्ञा) जाण प १।४८।५६ ज ७।११२।५
जाणइ प ११।११;१७।१०८ से ११०;२३।१३;
३०।२७,२८ ज २।७१;७।११२ उ १।६८
जाणंति प २।६४।१३;१५।४६ से ४९;३३।२
से १३,१५ से १८;३४।११,३४।६ से ९,११,
१२ जाणति प ११।१२ से २०;१५।४४,४५;
१७।१०६ से १०८,११०;१११;३०।२५ से
२८;३६।८०,८१ जाणाहि सू १०।२२९

जाण (यान) ज २।१२,३३;३।१०३ उ १।१७,१९,
२४;४।१२,१३,१५

जाणमाण (जानत्) ज २।७१

जाणय (ज्ञ) ज ३।३२

जाणवय (जानपद) ज १।२६;३।१,१२,४१,४९,
५८,६६,७४,१४७,१६८,२१२ से २१४
सू १।१

जाणविमाण (यानविमान) ज ५।३,५,२२,२६,२८,
३०,३२,४४,४५ उ ३।७,९१

जाणविमाणकारि (यानविमानकारिन्) ज ५।४९

जाणिउकाम (ज्ञातुकाम) प २३।१३

जाणित्ता (ज्ञात्वा) प २३।१३ ज ३।१२३ उ १।६८;
५।४०

जाणियव्व (ज्ञातव्य) प १५।१४३;१६।१५;२३।१३

जाणु (जानु) ज ३।६,१२,८८;५।२१,५८

जाणुकोप्परमाया (जानुकूर्परमातृ, जानुकूर्परमात्र)
उ ३।९७,१३१;३।१०५,१३१

जात (यात) प १।७५

जात (जात) ज २।१४६;३।३

जातकम्म (जातकर्मन्) उ १।६३;३।१२६

जातरूववडेंसग (जातरूपावतंसक) प २।५१

जाति (जाति) प १।५०,५१,८१,८११;२।६४, २।६४।२२;११।८ से १०;३६।६४।१ ज २।१० ; ५।५

जातिआरिय (जात्यार्य) प १।६२,६४

जातिणाम (जातिनामन्) प २३।८६,१५०,१५१

जातिणामणिहृत्ताउय (जातिनामनिधत्तायुष्क) प ६।११८,१२०,१२३

जातिनामनिहत्ताउय (जातिनामनिधत्तायुष्क) प ६।११६,१२३

जातिपुड (जातिपुट) ज ४।१०७

जातिविसिट्ठया (जातिविशिष्टता) प २३।२१

जातिविहीणया (जातिविहीनता) प २३।२२,५८

जातीय (जातीय) ज ३।१०६

जाधे (यदा) सू १६।२४

जाय (जात) ज १।६;२।७१,८५,१२८,१४६; ३।८०,६५,६६,१०३ उ १।६६,६३;२।६; ३।१३,४६,१०५,११३,१४४,१४६;४।२१, २७,३४,३८

√जाय (जन्) जायइ ज ३।६२,११६ जायंति ज ३।६२,११६

√जाय (याच्) जायेइ उ १।१०२

जायकोउहल्ल (जातकौतूहल) ज १।६

जायणी (याचनी) प ११।३७।१

जायतेय (जाततेजस्) ज २।१२६,१५८

जायय (जातक) उ ३।३८

जायरूव (जातरूप) ज २।६८;४।२५५;५।५

जायरूवखंड (जातरूपखण्ड) प ११।७४

जायरूववडेंसय (जातरूपावतंसक) प २।५६

जायसंसय (जातसंशय) ज १।६

जायसड्ढ (जातश्रद्ध) ज १।६ उ १।४;५।२२

जार (जार) ज ५।३२

जारु (चारु) प १।४८।२

जाल (जाल) प ११।१५ ज ३।६,१७,२१,३४,३५, १७७,१२२,१७८;५।२८

जालंतर (जालान्तर) प २।४८

जालघरग (जालगृहक) ज २।१३

जाला (ज्वाला) प १।२६

जाव (यावत्) प १।१३ ; २।३२ से ४०,४२ से ४६,४८,५० से ६३;४।५५ ; ७।६ से ३०; ८।३,४,६ से ११;६।२२;१०।१६ से २५,२७ से ३०,३२ से ४३,४५ से ५३ ; २०।५२,५६, ६०,६३,६४ ज १।६ चं १० सू १।१ उ १।२; २।१;३।१;४।१;५।१

जावइ (यावी) प १।३७।५

जावइय (यावत्) ज २।६;४।१४०।२

जावज्जीव (यावज्जीव) उ ३।५०

जावति (यावी) प १।४३।१

जावतिय (यावत्) प १५।५१,५२ सू ६।३;१३।२

जावय (ज्ञापक) ज ५।२१

जावेंत (ज्ञापयत्) ज ३।१७८

जासुमण (जपासुमनस्) प १।३७।१ ज ३।३५

जासुमणकुसुम (जपासुमनस्कुसुम) प १७।१२६

जासुवण (जपासुमनस्) प १।४०।३

जाहा (जाहक) प १।७६

जाहिं (यत्र) प २४।६

जाहे (यदा) ज ७।५६ सू १६।२७ उ १।५२; ३।१०६

√जि (जि) जयति चं १।१

जिण (जिन) प १।६३।६;१।१०१।३,४,१२; ३६।८३।२ ज १।४० ; २।६३,७१,७८,८०, ५।५,२१,४६ ; सू १६।२२।१

√जिण (जि) जिणाहि ज ३।१८५

जिणसकधा (जिन 'सकधा') सू १८।२३

जिणसकहा (जिन 'सकहा') ज २।१२०;४।१३४; ७।१८५

जिणघर (जिनगृह) ज ४।१३६

जिणपडिमा (जिनप्रतिमा) ज १।४०;४।४७,१२६, १३६,१४७,२१६

जिणभत्ति (जिनभक्ति) ज २।११३

जिणवर (जिनवर) प १।१।२ चं १।४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिणवरिंद (जिणवरेन्द्र) प १।१।१ ज ५।५८

जिणिंद (जिनेन्द्र) प ५।४१

जिब्भगार (जिह्वाकार) प १।९७

जिब्भिदिय (जिह्वेन्द्रिय) प १५।१,२,६,१३,१६, ३० से ३३,४२,५८,६४,६६,७०,८०;२८।४२, ४५,४६,७१ उ ३।३३

जिब्भिदियपरिणाम (जिह्वेन्द्रियपरिणाम) प १३।४

जिब्भिया (जिह्विका) ज ४।२४,३६,६६,७४,९०, ९१

जिमिय (जिमित) ज ३।८२ उ ४।१६

जिय (जित) ज ३।१३५।२,१८५,२०९

जियंतय (जीवन्तक) प १।४४।२ जीवंत शाक

जियंति (जीवन्ती) प १।४०।४ अन्य वृक्षों पर रहकर फैलने वाली लता

जियनिद्द (जितनिद्र) ज ३।१०९

जियपरीसह (जितपरीषह) ज ३।१०९

जियसत्तु (जितशत्रु) ज १।३ चं ८ सू १।३ उ ४।६

जीमूय (जीमूत) प १७।१२३

जीय (जीत) ज २।९०,११३;३।२६,३९,४७,५६, १३३,१३८,१४५;५।३,२२,२७

जीव (जीव) प १।४७।१,१।४८।७ से ४३,४५, ४७,४९ से ५१,५५ से ५९,१।८४,१०।१२; २।६४;३।१।२,३।१,९६ से ११३,१२३ से १२५,१४१ से १४३,१५० से १५२,१७४, १८३;६।१२०,१२३;९।१२,१९,२५,२६; १०।३१;११।३०,३८,३९,४३,४६,४७,७० से ७२,८० से ८२,८४,८५,९०;१२।१०; १४।११ से १५,१७,१८;१६।२,१०,१९, २१,२३;१७।५६ ८४,८६,११२,११३; १८।१।१,१८।१;१९।१;२०।१,६३;२१।८४; २२।७ से १०,१२ से २२,२४ से २७,२९ से ४०;४२ से ४५,४८ से ५०,५२ से ५६,५८, ५९,६७ से ६९,७५ से ८६,८८ से ९४,९६, ९७,१००;२३।१।१,२३।३,५ से ७,९ से ११, १३ से २३,१३४,१३५,१३७ से १३९,१५५, १५७,१६०,१६१,१६४,१६७,१७१,१७६, १९३;२४।२ से ४,९ से ११,१३ से १५; २५।२,३,५;२६।२से ४,८,९;२७।२,३,६; २८।१०६,१०८,१०९,१११ से ११८,१२० से १२६,१२८ से १३३,१३६ से १४५;२९।४, १६,१७,२२;३०।४,१४ से १६,२४;३१।१,४; ३२।१,६।१;३५।९;३६।१।१,३६।३०,३२, ३५,४६ से ४८,५२,५९,६२ से ६६,६९,७०,७२, ७३,७४,७७,७८,९४ ज २।६८,७१;५।५,४६; ६।४;७।२११,२१२ उ १।९०,९१;३।१४२, १४४;५।३४

√जीव (जीव्) जीव ज ३।१२६।२ जीविस्सइ उ १।१५

जीवंजीव (जीवंजीव) प १।७८

जीवंजीवग (जीवंजीवक) ज २।१२

जीवंत (जीवत्) उ १।१०९,११०,११४

जीवंतय (जीवत्क) उ १।९६,१०३,१३३

जीवघण (जीवघन) प २।६४।१२;३६।९३,९४

जीवणिकाय (जीवनिकाय) प २२।१०,७८ ज २।७२

जीवत्थिकाय (जीवास्तिकाय) प ३।११४,११५, ११९,१२२

जीवदय (जीवदय) ज ५।२१

जीवपज्जव (जीवपर्यव) प ५।१ से ३,१२२

जीवपण्णवणा (जीवप्रज्ञापना) प १।१,१० से १५, ४९ से ५२,१३८

जीवपरिणाम (जीवपरिणाम) प १३।१,२,२०

जीवमाण (जीवत्) उ १।१५,२१,२२

जीवमिस्सिया (जीवमिश्रिता) प ११।३६

जीवलोक (जीवलोक) ज २।६५;३।३१,१२४

जीवा (जीवा) ज १।२०,२३,४८;३।२४;४।५५, ६२,८१,८६,९८,१०८,१७२,२६२,२६५,२७१, २७४ सू १।१९;२।१;१०।१४२,१४७;१२।३०; २०।१ उ १।१३८

जीवाजीवमिस्सिया (जीवाजीवमिश्रिता) प ११।३६

जीवाभिगम (जीवाभिगम) ज १।११;५।४९,५१

जीविय (जीवित) प १।४८।५,४१;२२।६ ज २।७० उ १।२२,२५,२६,३४,१४०;३।९८,१०१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३१,१५६
जीवियंतकरण (जीवितान्तकरण) ज ३।२४
जीवियारिह (जीवितार्ह) ज ३।६
जीहा (जिह्वा) प २।३१; १५।७७,८१,८२
ज २।१५;३।१०६;७।१७८
जुइ (द्युति) प २।३१ ज ३।१२,७८,८८,६२,११६,
१२६,१८०;५।२२,२६
√जुंज (युज्) जुंजइ प ३६।८६,८७,८६,६०
जुंजति प ३६।८६ से ६० सू १५।१०
जुंजमाण (युञ्जान) प ३६।८७,८६ से ६१
जुंजित्ता (युक्त्वा) सू १५।१०
जुग (युग) ज २।४,६,१४१ से १४५; ३।३,११५,
११६,१२२,१२४;७।१२७ सू ६।१;८।१;
१०।१२२,१२३,१२७;१२।६;१३।३;१५।३५
से ३७
जुगंतकरभूमि (युगान्तकरभूमि) ज २।८४
जुगप्पत्त (युगप्राप्त) सू १२।८
जुगमच्छ (युगमत्स्य) प १।५६
जुगव (युगपत्) प ३६।६२ ज ५।५
जुगसंवच्छर (युगसंवत्सर) ज ७।१०३,१०५,११०
सू १०।१२५,१२७
जुग्ग (युग्य) ज २।१२,३३
जुज्झसज्ज (युद्धसज्ज) उ १।१२७,१२८,१३३
√जुज्झ (युध्) जुज्झंति उ १।१३६ जुज्झह उ १।१२६
जुज्झामो उ १।१२८ जुज्झित्था उ १।१२७
जुण्णकुमारी (जीर्णकुमारी) उ ४।६
जुण्णा (जीर्णा) उ ४।६
जुति (द्युति) प २।३०,३१,४१,४६ ज ५।२०६
जुत्त (युक्त) ज २।१५;३।३,३५,७७,६५,१०६,
१३८,१५६,२११;४।२७; ५।२८,५८;७।१४१
से १४४,१५० से १५२,१७८ सू १०।२० से
२२,२५,१७२,१७३;१६।२२।२७; २०।७
उ १।१७,११६,१२८
जुत्ति (युक्ति) ज ३।२०६
जुत्ति (युक्ति,द्युति) उ ५।२।१
जुद्धणीइ (युद्धनीति) ज ३।१६७।६,१७८
जुद्धसज्ज (युद्धसज्ज) उ १।११५ से ११७
जुम्ह (युष्मत्) सू १।६ उ १।२२;३।२६;४।११
जुय (युग) ज ७।११०
जुयणद्ध (युगनद्ध) सू १२।१२६
जुयल (युगल) ज १।२४;२।१५,१००;३।२११;
४।२७,३०; ५।५,२८,५८,६७; ७।१७८
उ ३।१३४
जुयलग (युगलक) ज २।४६ उ ३।१२६
जुवराय (युवराज) प १६।४१ ज २।२५
जुवलय (युगलक) प २।४०।२
जुवाण (युवन्) ज ५।५
जुव्वण (यौवन) ज ३।१३८
जूय (यूप) ज २।१५
जूया (यूका) प १।५० ज २।६,४०
जूव (यूप) ज ३।३ उ ३।४८,५०,५५
जूस (यूष) सू १०।१२०
जूहिया (यूथिका) प १।३८।२ ज २।१०; ३।३
जूहियापुड (यूथिकापुट) ज ४।१०७
जेट्ठ (ज्येष्ठ) ज १।५;३।१०६ चं १० सू १।५
जेट्ठपुत्त (ज्येष्ठपुत्र) उ ३।१३,५०,५५
जेट्ठा (ज्येष्ठा) ज ७।१२८,१२६,१३४।२,
१३५।२,१३६,१४०,१४६,१५२,१६६ सू १०।२
से ६,१८,२३,५१,६२,७३,७५,८३,११६,१२०,
१३१ से १३५
जेट्ठामूल (ज्येष्ठामूल) ज ७।१०४,१४६,१४६,
१५५ सू १०।१२४ उ ३।४०
जेट्ठामूली (ज्येष्ठामूली) ज ७।१३७,१४०
सू १०।७,१८,२२,२३,२६
जेणामेव (यत्रैव) प ३४।२२ ज ३।५
जोअ (द्योत) सू १६।२२।२७
जोइ (ज्योतिष्) सू १४।८,६,११ से १३
जोइस (ज्योतिस्,ज्यौतिष) प २।४८;३४।१८
ज १।२४; २।६४ से ६६,१००,१०२,१०४,
१०६,११०,११३ से ११७;५।४७,६७,७२ से
७४;७।१७१ से १७४ चं ५।४ सू १।६।४;
१६।२२।२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोइसगणरायपण्णत्ति (ज्योतिर्गणराजप्रज्ञप्ति) चं १।३

जोइसपह (ज्योतिःपथ) प २।२०,२४,२५,२७ ज १।२४

जोइसप्पह (ज्योतिःपथ) प २।२२,२३,२६

जोइसराय (ज्योतीराज) ज ७।१८३ से १८५

जोइसरायपण्णत्ति (ज्योतीराजप्रज्ञप्ति) चं १।४

जोईसिंद (ज्योतिरिन्द्र) प २।४८ ज ७।१८३ से १८५ उ ३।६,१५ से १८

जोईसिंदत्त (ज्योतिरिन्द्रत्व) उ ३।१४

जोइसिणी (ज्यौतिषी) प ३।१३८,१८३;४।१७४ से १७६;१७।५३,७८,८२,८३;२०।१३

जोइसिय (ज्यौतिषिक) प १।१३०,१३३;२।४८;३।२८,१३७,१८३;४।१७१ से १७३;५।३,२६,१२२;६।२६,४६,५६,५९,६५,६९,८५,९४,१०९,१११,११७;७।६;९।११,१८,२४;१५।३५,४८,८७,९९,१२४;१६।१६;१७।२७,३०,५३,७८,८१,८३,९९,१०५;२०।१३,१९,२५,३०,४८,५४,६०;२१।५५,६१,७०,९०;२२।३१,३९,८८,१००;२८।७३,११७;२९।१५;३१।५;३३।१५,३०;३५।१५,२२,२३ ज २।९४ ४।२४८,२५० से २५२;५।५३,५९,७२ से ७४;७।१८५

जोइसियत्त (ज्यौतिषिकत्व) प १५।१२६

जोइसियराय (ज्योतीराज) प २।४८

जोईरस (ज्योतीरस) ज ५।५

जोएअव्व (योजयितव्य) प १०।२६

जोएत्ता (युक्त्वा) सू १०।५;१५।८९

जोएमाण (युञ्जत्) ज ७।१४१ से १४५,१५०,१५१

जोग (योग) प ३।१।१;११।३३।१;१८।१।१;२८।१०६।१;३६।९२ ज २।६५,७१,८८,९५;३।१५९,२२५;७।१,११२।२,१२७।१,१२९,१३०;१३४।१,४,१३५,१३८ से १४०,१६७।१ चं २।३;५।१ सू १।६।३,१।९।१;१०।१,५,१७२,१७३;१२।२९;१५।१०;१९।२२।१० उ ३।३१

जोगपरिणाम (योगपरिणाम) प १३।२,१४,१६,१७,१९

जोगसच्च (योगसत्य) प ११।३३

जोगि (योगिन्) प ३६।९२

जोग्ग (योग्य) ज ३।१०९;५।७,४१ उ ३।७

जोणय (जोनक) ज ३।८१ म्लेच्छ

जोणि (योनि) प १।१।४,१।४८।६३;२।६४;९।१ से ४,६ से ११,१३ से १७,१९ से २३,२६ ज २।१३५ से १३७;३।३

जोणिप्पमुह (योनिप्रमुख) प १।२०,२३,२६,२९,४८,५०,५१,६०,६६,७५,८१

जोणिब्भूय (योनिभूत) प १।४८।५१

जोणिय (योनिक) ज ३।११।१

जोणिसूल (योनिशूल) ज २।४३

जोणीपमुह (योनिप्रमुख) प १।४९,७६

जोण्ह (ज्योत्स्न) सू १०।१३१;१८।१,५,६;१९।२२।१६,२०;१९।३१

जोतिस (ज्योतिष्) प २।४८;३१।६।१;३४।१६ सू १०।१३१;१८।१,५,६;१९।३१

जोतिसराय (ज्योतीराज) सू १८।२१ से २४;२०।४,६,७,९।१

जोतिसिंद (ज्यौतिरिन्द्र,ज्यौतिषेन्द्र) सू १८।२१ से २४,२०।४,६,७

जोतिसिणी (ज्यौतिषी) सू १८।२६

जोतिसिय (ज्योतिषिक) प १२।६,३७;१३।२०;१५।१०४,१०७;१६।९;१७।३३,३४,९१;१९।४;२०।३५,३७;२२।७५;२९।२२;३२।५;३३।२३,३४,३७;३४।४,१०;३५।२३;३६।२६,४१,७२ सू १८।२३,२५;१९।२२

जोतिसियत्त (ज्योतिषिकत्व) प १५।१११;३६।२२

जोत्तग (योक्त्रक) ज ७।१७८

जोय (योग) ज ३।१७८;७।१२९ सू १०।२,३,५,७५,१२२,१२३,१२९।१,१३२ से १३४,१३६,१६२ से १६९;१२।२९,३०;१५।८,११,१२,१३;१९।१,५,८,१५,१९,२१,१९।२२।२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√**जोय** (युज्) जोइंति ज ७।१२९ जोइंसु ज ७।१२९ जोइस्संति ज ७।१२९ सू १९।१ जोएइ ज ७।१२९ जोएंति ज ७।१,११२।२ सू १०।५,१२९।१,२ जोएंसु ज ७।१ सू १०।७५ जोएति सू १०।२० जोएस्संति ज ७।१ सू १०।७५ जोयंति ज ७।११२।१

जोयण (योजन) प १।७४,७५,८४;२।२१ से २७, २९ से ३६,३८,४१ से ४३,४६,४८ से ५५, ५९,६३,६४;११।७२;१२।२७,३६;१५।४० से ४२;२१।३८,४१ से ४३,४५,४७।१,२;२१।६३, ६८ से ७०,८७;३३।१०,११;३६।६६,६८, ७०,७२,७४,८१ ज १।७,८,१२,१४,१६, १७।१,१८,२०,२३,२८,३२,३५,४६,४८,५१; २।६;३।१,१८,२५,३१,३८,४६,५२,६१,६९, ७९,८१,९५,९६,१११,११६,११८,१३१,१३२, १३७,१४१,१५९,१६०,१६४,१८०,१९२; ४।१,३,६,७,१४,२३ से २५,३१,३६,३८ से ४३,४५,४७,४९,५२,५५,५७,५९,६२,६४ से ६८,७२ से ७८,८१,८६,८८,९० से ९५,९८, १०३,१०८,११०,११२,११४ से ११६,११८ से १२८,१३२,१३९ से १४१ १४२।१,१४३, १४५,१४६,१५३,१५४,१५६,१६३ से १६५, १६६,१७४ से १७६,१७८,१८३,२००,२०१, २०३;२०५ से २०७,२१३,२१५ से २१९, २२१,२२६,२३४,२४० से २४३,२४५,२५७ से २५९,२६२;५।३,५,७,२२ से २४,२८,३५, ४३,४४,४९,५०,५३;६।६।१,६।८;७।३ से २५,३१ से ३४,५८,६२ से ८४,८६,८८,८९, ९१ से ९६,१७१ से १७४,१८२,२०७ सू १।१४,२० से २४,२६ से ३१;२।१,३; ४।३ से ५,७,८,१०;१८।१,५,६,९ से ११,२०; १९।४,७,१०,१४,१८,२०,२२।२८,२९, १९।२३,२६,३०,३४,३७, उ १।१३४;३।७, ९१;५।४

जोयणपुहत्तिय (योजनपृथक्त्विक) प १।७५

जोयणसत्तपुहत्तिय (योजनशतपृथक्त्विक) प १।७५

जोयणसहस्सपुहत्तिय (योजनसहस्रपृथक्त्विक) प १।७५

जोव्वण (यौवन) प २।३१;३४।२० ज २।१५; ३।९२,११९,१३८;५।६८,७० सू २०।७ उ ३।१२७

जोव्वणग (यौवनक) उ ३।१२७ १२८;५।४३

जोह (योध) ज ३।१५,२१,२२,३१,३४,३६,७७, ७८,९१,९८,१६७।९,१७३,१७५,१९९ उ १।१२३;५।१८

झ

झंझावाय (झञ्झावात) प १।२९

झय (ध्वज) ज १।३७;२।१५,२०;३।७,३१,३५, १७८,१७९

झया (ध्वजा) उ १।२२,१४०

झल्लरि (झल्लरी) प ३३।२३ ज ३।१२,७८, १८०,२०९

झस (झस) ज ३।३

√**झा** (ध्यै) झियाइ उ १।१५;३।९८ झियामि उ १।४० झियासि उ १।३७ झियाहि उ १।४२ झियाहि उ १।४१

झाण (ध्यान) उ ३।३१

झाणंतरिया (ध्यानान्तरिका) ज २।७१

झाणकोट्ठोवगय (ध्यानकोष्ठोपगत) ज १।५; २।८३ उ १।३

√**झाम** (दह्) झामेंति ज २।१०८ झामेह ज २।१०७

झिंगिर (दे०) प १।५०

झिंगिरिड (दे०) प १।५०

√**झिया** (ध्यै,ध्मा) झियायंति ज ३।१०५

झियायमाण (ध्यायत्) उ १।३६,३७,४२,७१

झिल्लिया (झिल्लिका) प १।५०

झिल्ली (झिल्ली) प १।४८।४२

झुसिर (शुषिर) ज ५।५७ सू २०।१

√**झूस** (शोषय्) झूसेइ उ ३।८२ झूसेहिइ उ ५।४३

झूसणा (जोषणा) ज ३।२२४

झूसित्ता (शोषयित्वा) उ ५।१८
झूसिय (जुष्ट) ज ३।२२४
झूसेत्ता (शोषयित्वा) उ ३।८३;५।४३
झोसेत्ता (शोषयित्वा) उ २।१२;३।१०

ट

टंक (टङ्क) प १।१
टिट्टिय (दे०) ज ५।१६
टोलकिति (दे०) ज २।१३३

ठ

√ठव (स्थापय्) ठवइ ज २।६५ ठविस्संति ज २।१४६ ठवेइ ज २।६५ उ १।१९;३।५१; ४।१८ ठवेंति ज २।१०४ ठवेसि उ ३।७९ ठवेहि प १।४८।५८,५९
ठवणा (स्थापना) प ११।३३।१
ठवणासच्च (स्थापनासत्य) प ११।३३
√ठवाव (स्थापय्) ठवावेइ उ १।४६
ठवावित्ता (स्थापयित्वा) उ १।४६
ठवेत्ता (स्थापयित्वा) उ १।१९
ठविय (स्थापित) ज ३।८१
ठवेत्ता (स्थापयित्वा) ज २।६५
ठा (ष्ठा) ठाइ उ १।२२
ठाईऊण (स्थित्वा) ज ३।२४
ठाण (स्थान) प १।१।४,८४;२।१ से ३९,४१ से ४३,४६,४८ से ५२,५४ से ६४;६।११०; १४।५,११ से १५,१७;१७।११४।१,१७।१४३ से १४५;२३।१।१;२३।६,७,१९० ज ३।२४, ८९,१०२,१५६,१६२;५।२१;७।५६ से ६० सू १०।१३८ से १४१,१४३ से १४६,१४८ से १५१;१९।२४,२७ उ १।२२,१४०;३।५१।१; ३।८३,११५,१२०;४।२१,२२,२४
ठाणठित (स्थानस्थित) सू १९।२६
ठाणमग्गण (स्थानमार्गण) प २८।६,५२
ठाणिज्ज (स्थानीय) उ १।४४,४५
√ठाव (स्थापय्) ठावेमि उ ३।१३
ठावेत्ता (स्थापयित्वा) उ ३।५०
ठिइ (स्थिति) प १।१।४;४।५;५।५,८४,११५, १४८,२१४;२३।१९३ ज २।५६,७१,१५९; ७।१६८।२,१८७ उ १।४१,४३;२।१२,२२; ३।१६,८५,१२४,१५०,१६४,१६९,१७१; ४।२५;५।२९,४२
ठिइकल्लाण (स्थितिकल्याण) ज २।८१
ठिइक्खय (स्थितिक्षय) उ ३।१८,१२५,१५२;४।२६; ५।३०
ठिइय (स्थितिक) उ १।२६,१४०;२।२०
ठिईय (स्थितिक) ज १।२४,३१,४६,४७;२।४४; ३।२२५;४।२२,३४,५४,६०,६१,६४,८०,८५, ८९,९७,१०२,१४१,१४२,१६१,१६७,१७७, १८६,१९६,२०८,२६१,२७०,२७२;७।५५, ५८,२१३
ठिच्चा (स्थित्वा) प १७।१०७;३४।२२,२३ उ १।२०;३।२९
ठितलेस्स (स्थितलेश्य) प २।४८
ठिति (स्थिति) प ४।१ से ४,६ से ४९,५६ से ५८, ६५,७१,७९,८८,९५,९८,१०१,१०४,११३, १३१,१४०,१४९,१५८,१६५,१६८,१७१, १७४,१८३,२०७,२१०,२१३,२९४,२९७, २९९;५।७,१०,१२,१४,१६,१८,२०,२४ से २६,२८,३०,३२,३४,३७,४१,४५,४९,५०,५३, ५६,५९,६३,६८,७१,७२,७४,७८,८३,८६,८९, ९३,९४,९७,१०१,१०२,१०४,१०५,१०७, १११,११२,११९,१२२,१२९,१३१,१३४, १३६,१३८,१४०,१४३,१४५,१४७,१४८, १५०,१५४,१६३,१६६,१६९,१७०,१७२, १७४,१७५,१७७,१७८,१८१,१८२,१८४, १८५,१८७,१८८,१९०,१९३,१९७,२००, २०३,२०७,२११,२१८,२२१,२२४,२२८, २३०,२३२,२३४,२३५,२३७,२३९,२४०, २४२;१०।५३।१;२३।१३ से २३,६० से ६४, ६६,६८,६९,७२ से ७७,८०,८१,८३,८५ से ९०,९२,९३,९५ से ९९,१०१ से १०४,१११ से ११४,११६ से ११८,१२७,१३०,१३१,१३३;

१७६,१७७,१७६,१८१,१८२,१८३,१८५,
१८७,१६० से १६३;२८।५;३६।८२।१,८३।१
गु १८।२५,२६ से ३४
ठितिणामनिहत्ताउय (स्थितिनामनिधत्तायुष्क)
प ६।१२२
ठितिनामणिहत्ताउय (स्थितिनामनिधत्तायुष्क)
प ६।११८
ठितिपडिया (स्थितिपतिता) उ १।६३
ठितीचरिम (स्थितिचरम) प १०।३४,३५
ठितीणामणिहत्ताउय (स्थितिनामनिधत्तायुष्क)
प ६।११६
ठिय (स्थित) प ११।४७,४८,८० से ८३
ज ३।६२,११६,१३८;५।३,२८;७।५८ सू ११७
उ १।१६

ड

डंस (दंश) ज २।४०
डब्भ (दर्भ) प १।४२।१
डमर (डमर) ज २।४२
डमरबहुल (डमरबहुल) ज १।१८
√डह (दह्) डहेज्जा ज २।६
डाव (दे०) उ १।१३८
डिंब (डिम्ब) ज २।४२
डिंबबहुल (डिम्बबहुल) ज १।१८
डिंभय (डिम्भक) उ ३।६२,११४,१२३,१३०
डिंभिया (डिम्भिका) उ ३।६२,११४,१२३,१३०,
१३१,१३४
डोंगरू (दे०) ज २।१३१
डोंब (दे०) प १।८६
डोंबिलग (दे०) प १।८६

ढ

ढंक (ध्वांक्ष) प १।७६ ज २।४०,१३७
ढिंकुण (दे०) प १।५१।१ ज २।४०

ण

ण (न) प १।१०१।३ ज १।६ सू ११४;१०।१२६
णई (नदी) ज ४।२००,२०२,२१२
णउति (नवति) गु १८।१
णउय (नवति) ज १।१८;४।२५;६।८;७।८२,
१७३
णउल (नकुल) प १।७६
णं (दे०) प १।२० ज १।३ सू १।२ उ १।५;२।१;
३।१;४।१;५।१
णंगल (लाङ्गल) ज ३।३
णंगलई (लाङ्गलिकी) प १।४८।६
णंगलिय (लाङ्गलिक) ज २।६४;३।१८५
णंगूल (लाङ्गूल) ज ७।१७८
णंगोलि (लाङ्गूलिन्) प १।८६
णंद (नन्द) ज ७।११८
णंदणवण (नन्दनवन) ज २।६५,६६;४।२१४,
२३४,२३६,२३७,२३६,२४०;५।५५
णंदणवणकूड (नन्दनवनकूट) ज ४।२,३६
णंदणवणविवरचारिणी (नन्दनवनविवरचारिणी)
ज २।१५
णंदा (नन्दा) ज ४।१४०;५।८।१,६८;७।११८,
सू १०।६०
णंदापुक्खरिणी (नन्दापुष्करिणी) ज ४।२२१
णंदावत्त (नन्दावर्त्त) प १।५१।१ ज ३।३,३२
णंदिघोष (नन्दिघोष) ज २।१६;३।३०;५।५२
णंदिपुर (नन्दिपुर) प १।६३।३
णंदिय (नन्दित) ज ५।२१
णंदियावत्त (नन्द्यावर्त) प १।४६ ज ३।१७८;
४।२८;५।४६।३
णंदिरुक्ख (नन्दिरूक्ष) प १।३६।२
णंदिवद्धणा (नन्दिवर्धना) ज ५।८।१
णंदिस्सर (नंदिस्वर)) ज २।१६;५।४४,५२,७४
सू १६।३१
णंदुत्तरा (नन्दोत्तरा) ज ५।८।१
णक्क (नक्र) प १।५६
णक्कु (नक्र) प १।८६
णक्ख (नख) ज २।१५,१३३;७।१७८

णक्खत्त (नक्षत्र) प २।२० से २२,४६,५१; १५।५५।३ ज १।२४; २।६५,७१,८८,१३८; ३।२०६,२२५; ७।१,५५,५८,६५,६६,१००, १०३,१०४,१११,११२।१,२,११३,१२६, १२८,१२६।१,१३० से १३३,१३४।२,३,४, १३५।४,१३८ से १४५,१४७,१४८,१५०, १५१,१५२,१५६ से १६७,१७०,१७५, १७७।३,१७८।२;१८०,१८१,१६७ चं ५।४ सू १०।१ से ५,८ से २५,२७ से ३१,३३ से ४२,४४,४६ से ५६,६१ से ७५,७७ से ८३, ६२ से १०७,१०६ से १२०,१२२,१२३,१२८, १२६।१,२,१३० से १३५,१५२ से १६६, १७१ से १७३; ११।२ से ६;१२।१६ से २८, ३०; १३।११,१४; १५।१,२,४,६ से ६,११, १२,१४ से १६,१६ २२,२५,२८,३४,३७; १८।४,७,१८,१६,३७; १६।१।१,५।२,८।२, ११।३,१५।३,१६,१६।२१।४,७,२२।३,२२,३१, १६।२३,२६; २०।७ उ ५।४१,

णक्खत्तमंडल (नक्षत्रमण्डल) ज ७।८५ से ६४,६७, ११३ सू १०।१२६,१३०

णक्खत्तमास (नक्षत्रमास) सू १२।२,१२

णक्खत्तविजय (नक्षत्रविजय) सू १।६।४; १०।१३२, १७३

णक्खत्तविमाण (नक्षत्रविमान) प ४।१६५ से २०० ज ७।१६३,१६४ सू १८।८,१२,१६,३३,३४

णक्खत्तसंठिति (नक्षत्रसंस्थिति) सू १०।२७

णक्खत्तसंवच्छर (नक्षत्रसंवत्सर) ज ७।१०३,१०४ सू १०।१२५,१२६,१२६;१२।२

णख (नख) सू २०।२

णखीमंस (नखीमांस) सू १०।१२० कंथारी की जड

णगर (नगर) प २।४१ से ४३,२।६४।१७; ज १।२६;२।२२,६६,७०,१३१;३।१८,३१,५२, ६१,६६,८१,१३१,१३७,१४१,१६४,१६७।२, १८०,१८५,२०६;५।५,४४

णगरणिद्धमण (नगर'णिद्धमण') प १।८४

णगरावास (नगरावास) प २।४१,४२,४६ ज १।२६;४।१७२

णग्गोह (न्यग्रोध) प १।३६।२ ज २।७१

णग्गोहपरिमंडल (न्यग्रोधपरिमण्डल) प १५।३५; २३।४६ ज ७।१६७ सू १०।७४

√णच्च (नृत्) णच्चंति ज ३।१०४,१०५;५।५७

णच्चण (नर्तन) प २।४१

√णज्ज (ज्ञा) णज्जइ ज ३।१०५

णट्ट (नाट्य) प २।३१,४१ ज २।३२;३।८२, १६७।१०,१८५,१८७,२०६,२१८;५।१,१६, ५७;७।५५,५८,१८४ सू १८।२३;१६।२३,२६

णट्टमालग (नाट्यमालक) ज ३।१५०,१५१

णट्टमालय (नाट्यमालक) ज १।२४,४६; ६।१६

णट्टमाल (नाट्यमाल) ज २।८

णट्टविहि (नाट्यविधि) ज ३।१६७।१०;५।५७,५८

णट्टाणीय (नाट्यानीक) ज ५।४१,४४

णट्ठरय (नष्टरजस्) ज ५।७

णडपेच्छा (नटप्रेक्षा) ज २।३२

णत (नत) सू २०।७,२०।६।६

णत्तंभाग (नक्तंभाग) सू १०।४,५

णत्तु (नप्तृ) ज २।१३३

णत्थि (नास्ति) प १।७५,८०;२।५२,६४।१८; ५।४३,६६,८०,६६,१८०;१२।६,११,२१,२८; १३।१६; १५।८७,६४ से १०१,१०३ से १०६, १०८ से ११०,११२ से ११७,११६ से १२३, १२५,१२६,१२८ से १३२,१३८ से १४१, १४३;१७।७०;२१।६२ से १०१; २२।४२; २३।१३७,१३६;२८।१४२,१४५;३०।१७; ३६।८ से ११,१५ से २३,२५,२६,२८,३०, ३१,३३,३४,४४ सू १।१३,१४;१०।२२,२५

√णद (नद्) णदंति ज ५।५७

णदी (नदी) प १।७७ ज २।३१

णदीबहुल (नदीबहुल) ज १।१८

णपुंसग (नपुंसक) प १।६६,७६;११।५ से १०,२५ से २८

णपुंसगवयण (नपुंसकवचन) प ११।२६,८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णपुंसगवेद (नपुंसकवेद) प १८।६२; २३।३६,८२, १४३,१४८,१५०
णपुंसगवेदग (नपुंसकवेदक) १३।१४,१५,१८
णपुंसगवेदय (नपुंसकवेदक) प २८।१४०
णपुंसगवेय (नपुंसकवेद) प २३।१४५
णपुंसगवेयपरिणाम (नपुंसकवेदपरिणाम) प १३।१३
णपुंसय (नपुंसक) प ३।१८३
णभ (नभ) ज २।६५ सू २०।२
णभसूरय (नभःशूक) सू २०।२
√णमंस (नमस्य्) नमंसइ ज २।६०;५।२१,५८,६८ णमंसति उ १।२१ णमंसामि उ १।१७
णमंसण (नमस्यन) उ १।१७
णमंसमाण (नमस्यत्) ज १।६;२।६०;३।२०५, २०६;५।५८
णमंसित्ता (नमस्यित्वा) ज २।६० उ १।२१
णमि (नमि) ज ३।१३७ से १३९
णमिय (नत) ज २।१५
णमो (नमस्) ज १।१;३।२४।१,१३१
णमोत्थु (नमोऽस्तु) ज ५।५,२१,४६,५८,६५
णय (नय) प १६।४६
णय (नत) ज ४।१३
णयगति (नयगति) प १६।३८,४६
णयट्ठया (नयार्थता) सू १२।१३
णयण (नयन) प २।३१ ज २।१५,६०,१०३,१०६, १०८,१३३;३।३,६,३५,१०९,१३८;५।२१
णयणमाला (नयनमाला) ज २।६५; ३।१८६,२०४
णयर (नगर) ज ५।७०,७२ उ ३।१०१
णयरी (नगरी) १।६३।६ ज १।२,३;७।२१४
णयविहि (नयविधि) प १।१०१।६
णर (नर) ज १।३७; २।१०१,१३३;३।६२,११६, १७८,१८६,२०४; ४।२७;५।२८
णरकंता (नरकान्ता) ज ४।२६६,२६८,२६९।२; ६।२१
णरग (नरक) प २।२० से २७ ज २।१३५ से १३७
णरयावास (नरकावास) प २।२६
णरदावणिय (नरदापनिक) प १।६६
णरवइ (नरपति) ज ३।६,१७,१८,२१,२४।४, ३।२८,३०,३४,३५,३७।२,४१,४५।२,४६,८८, ९१ से ९३,१०६,१३१।४,१३६,१४१,१७७, १८०,१८३,२०१,२१४,२२२
णरवति (नरपति) ज ३।१२६।२
णरवरिंद (नरवरेन्द्र) ३।१३५।२
णरवसभ (नरवृषभ) ज ३।१८,९३,१८०
णरसीह (नरसिंह) ज ३।१८,९३,१८०
णरिंद (नरेन्द्र) ज ३।६,९,१८,३२।१,२,९३,११७, १२६।१,१८०,२२१,२२२
णल (नल) प १।४१।१
णल (नड,नल) प १।४१।१,१।४८।४६; ११।७५
णलिण (नलिन) ज २।४;४।३,२५,२१२,२१२।१ चं १।१
णलिणंग (नलिनांग) ज २।४
णलिणकूड (नलिनकूट) ज ४।१९० से १९३
णलिणा (नलिना) ज ४।१५५।१,२२२।१
णव (नवन्) प १।५१ ज १।२० सू १०।२
णव (नव) प २।५० ज ५।१८ चं १।१
णवइ (नवति) ज ४।२१३
णवग (नवक) प १।८१
णवणउइअंगुलपरिणाह (नवनवत्यङ्गुलपरिणाह) ज ३।१०९
णवणवति (नवनवति) ज ४।२१३
णवणिहिवति (नवनिधिपति) ज ३।१२६।२,१७५
णवणीइया (नवनीतिका) प १।३८।३ ज २।१०
णवणीत (नवनीत) सू १०।१२०;२०।७
णवणीय (नवनीत) प ११।२५ ज ४।१३
णवम (नवम) प १७।६९ ज ७।११४।२ सू १०।७७, १२४।२; १३।१०
णवमालिया (नवमालिका) ज ३।१२,८८,१०९; ५।५८
णवमिपक्ख (नवमीपक्ष) ज २।६४
णवसिया (नवसिका) ज ५।१०।१
णवमी (नवमी) ज ७।१२५
णवय (नवक) प २२।४०,४३,४४

णवरं (दे०) प २।४५,५२ से ५९,६१ ;५।२१,२६, ३५,३८,४३,५७,६०,६९,७२,७५,८०,८१,८४, ९०,९४,१०२,११६,१५१,१६०,१६१,१६४, १९१,१९५,२०१ ; ६।६९,९५,९८,१०४,११३; १०।३० ; ११।८५ ; १२।२६,३१,३६ से ३८; १३।१६ से १८,२० ; १५।१८,१९,२९,३०,३४, ३५,३८,४९,५५,६३,६५,६७,७५,८५,८६,९१, ९७,९८,१०२,१०३,११५,१२१,१२२,१२५, १२६,१३६,१३७,१३८,१४०,१४१,१४२ ; १६।४,१२; १७।२३,२५,२७,२९,३०,३२,३३, ३५,५८,६०,६३,७०,९१,९३,९६,१०५,२४५, १७२ ; १८।८० ; २०।४ ३२,५४ ५५,५७,५८; २१।३५,६१,७०,७१.९२;२२।४१,४२,४४. ७९,८०.८२,९० ; २३।१०,१२,५६,५८,१५६, १६६,१६७,१७०,१७२,१७५,१८८,१९० ; २४।३,११;२६।९;२८।२७,३१,३८,४३,४७, ७३,७४,१०९,११५,१३३,१३८;२९।१४,२१; ३०।१७;३३।१६;३४।३,५,१४;३५।७ ; ३६।६, ७,११,१३,१५,२४,२६,२८ से ३४,३८,४६, ५२,५६,६५,६८,६९,७२,७३ ज २।५२ सू १।१७ ; १०।२५;१८।२४

णव्वरि (दे०) ज ३।५०

णवविह (नवविध) प १।९२,१३७;२१।५५; २३।१४ ३६

णह (नख) ज २।१५,४३,१३३ ; ३।९२,११९,१४५

णहिया (नखिका) प १।४७

णही (नखी) प १।४८।५

णाइ (न) ज ३।१२६

णाइ (ज्ञाति) ज ३।१८७

णाइय (नादित) उ १।१२१,१२२,१२५,१२६, १३३,१३४,१३८;३।१११;४।१८,५।१९

णाउं (ज्ञातुम्) सू १९।२२।२६

णाग (नाग) प २।४०।१,८ ; ५।३;१५।५५।३; ज २।३१ ; ३।२४।१,२,१३१।१,२,१७९ ; ४।२१२;५।५२ ; ७।१२३ से १२५ सू १९।३८

णागकुमार (नागकुमार) प २।३४ से ३६,३८,३९; ७।३,५;२८।७२;३३।११,१४:३६।२० ज ३।१११ से ३१५,१२४ से १२६ ; ४।१४१

णागकुमारत्त (नागकुमारत्व) प ३६।२०

णागकुमारराय (नागकुमारराज) प २।३४,३५

णागकुमारिंद (नागकुमारेन्द्र) प २।३४ से ३६

णागधर (नागधर) ज ३।१७९

णागफड (नागस्फटा) प २।३०

णागपुप्फ (नागपुष्प) ज ३।२

णागरुक्ख (नागरूक्ष) प १।३५।३

णागलया (नागलता) प १।४०।३

णागोद (नागोद) सू १९।३८

णाडइज्ज (नाटकीय) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८, ६६,१४७,१६८,२१२,२१३,२२१

णाडग (नाटक) ज ३।१७८,२०४,२१४,२२१

णाडगविहि (नाटकविधि) ज ३।१६७।१०

णाडय (नाटक) ज ३।८२,१८६.१८७,२१८; ५।२२,२६

णाण (ज्ञान) प १।१०१।१०;३।१।१,३।५,२८,३०, ३२,३४,३७,४३,४५,६८,६९,७२,७४,८०,८३, ८४,८७,८९,९४,९९,१०१,१०२,१०५,१०७, ११२,११७; १७।११२,११३;१८।१।१; २८।१०६।१;३०।२६,२८ सू २०।९।४,५

णाणत्त (नानात्व) प २।४५ ; ६।९८;१५।४४,४५; २३।१९० ; ३६।१४,१५ ज २।५२,५६,१५९, १६१;४।१३९,१४१,१६२,२६२ ; ५।४८ से ५० ; ७।३५,५८

णाणपरिणाम (ज्ञानपरिणाम) प १३।२,९,१४,१६, १७,१९

णाणा (नाना) प २।४८;१५।६,१९,२९;२१।२१, २२,२७,५६,६०,६१,७८,७९;३३।२१ ; ज १।३७;३।१९,३०,५६,१०९,१४५,२२२; ४।३,५,७,१३,२५ से २७,४९,६३,११४; ५।१६,३८,६७;७।१७८

णाणारिय (ज्ञानार्य) प १।९२,९९

णाणावरण (ज्ञानावरण) प २४।९,११

णाणावरणिज्ज (ज्ञानावरणीय) प २२।२६,२७; २३।१,३,६,७,६ से १३,२४,२५,६०,१३४, १३६,१५४,१५५,१६०,१६४,१६७,१७६, १७८,१८६,१६१,१६४ से १६६,२०२;२४।१ से ५,८,१५;२५।१,२;२६।१ से ४,७,१२; २७।१ से ३
णाणाविध (नानाविध) ज २।७;३।१८६ से १६२
णाणाविह (नानाविध) प १।४७।१;२।४१ ज १।१३,२१,२६,३३,३७,४६;२।१२,५७, १२२,१२७,१४७,१५०,१५६,१६४;३।७, १०६,१८४,१६२;४।६३;५।३२
णाणि (ज्ञानिन्) प १८।७६;२३।२००;२८।१३५ ज ५।१५,४६
णाणोवउत्त (ज्ञानोपयुक्त) प ३६।६३,६४
णात (ज्ञात) प १।६५
णाभ (नाभ) ज २।१५
णाभि (नाभि) ज २।५६,६२,६३;४।२६०।१;५।१३
णाभिणाल (नाभिनाल) ज ५।१३
णाम (नामन्) प १।१०१।१०;२।४८,५० से ५२ ५४ से ५७,५६,६०,६२ से ६४,६४।१७;११।३, ११।३३।१;२२।२८;२३।१,१२,३८;२४।१५; २६।११;२७।५;३६।८२,६२ ज १।२,३,५,१६, १८ से २०,२३,३५,४१,४५,४६,४८;५१;२।८, १३,५१,५४,६० से ६३,१२१,१२६,१३०, १४१ से १४५,१४६,१५४,१६०,१६३;३।१, २,२६,३०,३५,३६,४७,५६,६७,१०३,१०६, १११,११५;१३३,१४५,१६१,१६७।३,२२५; ४।१,३,२५,३१,३४,४०,४१,४५,४८,४६,५१, ५२,५५,५७,६२,६४,६७,६८,७५,७६,८१,८४, ८६,८८,६२,६८,१०३,१०६,१०८,११०,१४१, १४३,१५६ से १६५,१६७ से १६६,१७२ से १७८,१८० से १८२,१८४,१८५,१८७,१८८, १६०,१६१,१६३,१६४,१६६,१६७,१६६ से २०३,२०५ से २०६,२१०।१,२१२,२१३, २१८,२२६,२३४,२३७,२३६ से २४२,२४५, २४६,२५१,२५२,२६१,२६२,२६५,२६६, २६८,२७२,२७४,२७७;५।१८,२८,४६,५७; ७।११४,२१३,२१४ चं १।४ सू १०।१२४; १२।२६;१६।२,६,६,१२,१६;२२।३,२८,३६ उ १।१७
णामक (नामक) ज ३।२६,३६,४७,१३३,१३५
णामग (नामक) ज ४।२००
णामधेज्ज (नामधेय) ज १।४७;३।८१,२२१, २२६;४।२२,३४,५४,६४,१०२,१०७,११३, १५७।२,१७७,२६०;७।११४,११७,१२० सू १०।८६,८८,१२४;२०।२
णामधेय (नामधेय) ज ५।२१
णामय (नामक) ज १।४६;२।१७;४।१०६,१६३, २०४,२१०,२११
णामसच्च (नामसत्य) प ११।३३
णामसुरय (दे०) सु २०।२
णामाहयक (नामाहतक) ज ३।२६,३६,४७,१३३
णायग (ज्ञायक) ज ५।५,४६
णायय (ज्ञातक) ज २।२६
णायव्व (ज्ञातव्य) प १।१०१।३,६,७,६,११; १८।१।२;३५।१।१
णारग (नारक) प १२।६;२४।१०,११;२६।८,६
णाराय (नाराच) प २३।४५,४६ ज ३।३,३१
णारिकंता (नारीकान्ता) ज ४।२६२;६।२१
णारी (नारी) ज ३।१८६,२०४
णारीकंता (नारीकान्ता) ज ४।२।६६
णारीकूड (नारीकूट) ज ४।२६३।१
णाल (नाल) ज ४।७
णालबद्ध (नालबद्ध) प १।४८।४०
णालिएरीवण (नालिकेरीवन) ज २।६
णालिया (नालिका) ज २।६
णालिया (नालिका, नाडीका) पं १।४०।१
णावा (नौ) प १६।४५ ज ३।८०,८१,१५१; ७।१३३।१ सू १०।३३
णावागति (नौगति) प १६।३८,४५
णावासंठिय (नौसंस्थित) सू १०।३३
√**णास** (नाश्) णासेंति ज ३।२५ १५६

णासा (नासा) प २।३१ ज २।१५,१३३
णिइय (नित्य) ज ७।२१०
णिउण (निपुण) ज २।१५;३।९,२४,८७,१३८, २२२;५।५,२१,२८ सू २०।७
णिओग (नियोग) ज २।१३३;५।४३
णिओय (निगोद) प ३।६१,६३
√णिंद (निन्द्) णिंदेहिं उ ३।११५
णिंब (निम्ब) प १।३५।१;१७।१३०
णिंबछल्ली (निम्बछल्ली) प १७।१३०
णिंबफाणिय (निम्बफाणित) प १७।१३०
णिंबसार (निम्बसार) प १७।१३०
णिकुरंब (निकुरम्ब) ज २।१०
णिक्कंकड (निष्कंकट) ज १।८,२३,३१
निक्कंकडछाया (निष्कङ्कटछाया) प २।३१ ४१
णिक्खमंत (निष्क्रामत्) सू १९।२२।१४
णिक्खमण (निष्क्रमण) ज ४।२७७ सू १३।१७
णिक्खममाण (निष्क्रामत्) ज ३।२०३;७।१०,१६, २० से २२,२६,२७,६९,७५,८१ चं ४।२ सू १३।६,१२
णिक्खित्त (निक्षिप्त) ज ३।२०,२३,५४,६३,७१, ८४,१३७,१४३,१६७,१८२
√णिक्खिव (नि+क्षिप्) णिक्खिवइ ज ३।९२; ५।६७
णिक्कुड (दे०, निष्कुट) प २।१० ज ३।७६,७७, १०९,१२८,१५१,१७०;५।२५
√णिगच्छ (निर्+गम्) णिगच्छइ ज २।६५;३।१४, १७२,२०४,२२६ णिगच्छंति ज ५।६३
णिगच्छित्ता (निर्गत्य) ज २।६५
णिगम (निगम) ज २।२२ उ ३।१०१
णिगर (निकर) ज ३।१२,३५,८८,९५,१५९; ४।१२५;५।५८
णिगरिय (निकरित, निगडित) ज ३।२४।३, ३७।१,४५।१,१३१।३
√णिगिण्ह (नि+ग्रह्) णिगिण्हइ) ज ३।२८
णिगिण्हित्ता (निगृह्य) ज ३।२८
णिगोद (निगोद) प ३।६२,८६;१८।३८
णिगोय (निगोद) प १८।४५,५३ ज २।१३३
णिग्गंथी (निर्ग्रन्थी) ज २।७२
णिग्गय (निर्गत) ज १।४;३।९,१७,२१,३१,३४, १७७,२२२
णिग्गुंडी (निर्गुण्डी) प १।३७।३
णिग्गुण (निर्गुण) ज २।१३५
णिग्घाय (निर्घात) प १।२६
णिग्घायण (निर्घातन) ज २।७०
णिग्घोस (निर्घोष) ज ३।८८,१८०,१८३;५।५, २६,४६,४७,५६,६७ उ १।१२१,१२२ १२५, १२६,१३३,१३४,१३८;३।१११;४।१८; ५।१९
णिचिय (निचित) ज ३।३;५।५;७।१७८
णिच्च (नित्य) प २।२० से २७ ज १।११,२४, ४७;२।११,६७,१३३;३।२२६;४।२२,५४, ६१,६४,१०२,१६६,१६७,१७७,२०३,२१०, २६४,२७३;५।२६;७।२१०,२१३ सू १९।२२।१७
णिच्चमंडिया (नित्यमण्डिता) ज ४।१५७।१
णिच्चालोय नित्यालोक) सू २०।८
णिच्चुजोत (नित्योद्योत) सू २०।८
णिच्चुज्जोय (नित्योद्योत) सू २०।८।६
णिच्छिण्ण (निश्छिन्न) प २।६४।२२;३६।९४।१
णिच्छीर (निःक्षीर) प १।४८।३९
√णिच्छुभ (नि+क्षिप्) णिच्छुभइ प ३६।७३,७४ णिच्छुभति प ३६।५९,६१,६६,७०,७६
णिच्छूढ (निक्षिप्त) प ३६।६२,७७
णिजुत्त (नियुक्त) प २।४१
णिज्जरा (निर्जरा) प १५।४३ से ४७,४९;३६।७९ से ८१
णिज्जाणभूमि (निर्याणभूमि) ज ५।४९
णिज्जाणमग्ग (निर्याणमार्ग) ज ५।४९
णिज्जिय (निर्जित) ज ३।१७५,२२१
णिज्जुत्त (निर्युक्त) ज ३।१७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिज्झरबहुल (निर्झरबहुल) ज १।१८
णिद्दिठयद्ठ (निष्टितार्थ) प ३६।६३,६४
णिडाल (ललाट) ज २।१५;३।३६,३६.४७,१३३
णिण्णग (निम्नग) प १।८६
णिण्णथल (निम्नस्थल) ज ७।११२।५
णिण्णथलय (निम्नस्थलक) सू १०।१२६।५
णिण्णुण्णय (निम्नोन्नत) ज २।१३१
णिण्हइया (निह्नविका) प १।६८
णितंब (नितम्ब) ज १।५१; ३।६१.१३७; ४।१७४, १७५ १७६.१८२,१८८
णित्थारण (निस्तारण) ज ३।१०६
णिदा (दे०) प ३५।११,३५।१६
णिदाया (दे०) प ३५।१७,१८,२०,२२,२३
णिदाह (निदाघ) सू १०।१२४।२
निद्दा (निद्रा) प २३।१४.२६,२७,१३४ १५५, १७७,१८०
णिद्दाणिद्दा (निद्रानिद्रा) प २३।१४
णिद्ध (स्निग्ध) प १।६;२।३१;५।१५४,२११; ११।५६,६०; १३।२२।१,२; २८।२६,३२,६६ ज २।१५;३।३,२४,३५; ७।१७८
णिद्धंत (निर्ध्मात) प २।३१
णिद्धया (स्निग्धता) प १३।२२।१
णिद्धाइत्ता (निर्धाव्य) ज २।१३४
√णिद्धाव (निर्+धाव्) णिद्धाइस्संति ज २।१३४, १४६
णिप्पंक (निष्पंक) ज १।८,२३
णिप्पच्चक्खाणपोसहोववास (निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवास) ज २।१३५
√णिप्फज्ज (निर्+पद्) णिप्फज्जइ ज २।६
णिप्फत्ति (निष्पत्ति) ज ३।१६७।६
णिप्फाइय (निष्पादित) ज ३।१२०
णिप्फायय (निष्पादक) ज ३।११६
णिप्फावग (निष्पावक) ज २।३७
णिब्भय (निर्भय) ज ३।१२६; ५।५८
णिब्भिज्जमाण (निर्भिद्यमान) ज ४।१०७
णिभ (निभ) ज ३।३०,१७८

√णिमज्जाव (नि+मज्जय्) णिमज्जावेइ ज ३।६८
णिमुग्गजला (निमग्नजला) ज ३।६७ से १०१, १६१
णिम्मम (निर्मम) ज २।७०; ५।५,४६,५८
णिम्मल (निर्मल) प २।३०,३१ ज १।८,२३,३१; २।१५; ४।१२५; ५।६२; ७।१७८
णिम्माणणाम (निर्माणनामन्) प २३।३८,१२८
णिम्माय (निर्मात) ज ३।१
णिम्मिय (निर्मित) ज ३।३५
णिम्मेर (निर्मर्याद) ज २।१३५
√णियंस (नि+वस्) णियंसंति ज २।१०० णियंसेइ ज २।६६
णियंसण (निवसन) प २।४१
√णियंसाव (नि+वासय्) णियंसावेंति ज ३।२११
णियंसावेत्ता (निवास्य) ज ३।२११
णियंसेत्ता (न्युष्य) ज २।६६
णियग (निजक) ज २।६४; ३।३,१८७,१८८ सू २०।७
√णियच्छ (निर्+दा) णियच्छंति प २३।३
णियत (नियत) ज ३।८१
णियतिया (नैयतिकी) प १७।११,२२,२३
णियत्थ (दे०) ज ३।१२५,१२६
णियम (नियम) प १।२०,२३,२६,२६; ६।११४, ११६; १०।२;११।५३,५७,५६,६६,६६।१; २१।६६,६६,१००,१०३; २२।४८,५१,६८, ६६,७१ से ७४; २३।१०,१२;२४।१४;२५।२, ४;२७।६;२८।१६,३८,६५,६८ से १०१;३६।५६ ज ७।५०,५३,१६६ सू १८।३
णियमा (नियमा) ज ७।३२।१ सू २०।६
णियय (नियत) ज १।११,४७;३।२२६; ४।२२, ५४,६४,१०२,१५६;५।२२,२६
णियय (निजक) सू १६।२२।१४
णियया (नियता) ज ४।१५७।१
णियर (निकर) ज २।१५
णिरइ (निर्ऋति) ज ७।१२०,१३०,१८६।४ सू १०।८३

णिरइदेवता (निर्ऋतिदेवता) सू १०।८३
णिरइयार (निरतिचार) प १।१२६
णिरंतर (निरन्तर) प १०।३२ से ३४,४०;११।४१, ७१;२०।२७,३१,५६;२२।१३,१५,१७,१६ से २१;३६।८,६ ज २।१५
णिरय (निरय) प २।१,१०;२३।३६,८१,१११, १४६,१७१
णिरय (निरत) ज २।१३१
णिरयगतिपरिणाम (निरयगतिपरिणाम) प १३।३
णिरयगतिय (निरयगतिक) प १३।१४
णिरयगामि (निरयगामिन्) ज १।२२,५०;२।५८, १२३,१२८,१४८,१५१,१५७;४।१०१
णिरयावास (निरयावास) प २।२० से २४
णिरवसेस (निरवशेष) प ६।९२;१०।२८;१७।२८; २१।६४;३४।२४;३६।२८,४६,६५,६६,७२
णिरहंकार (निरहङ्कार) ज २।७०
णिराणंद (निरानन्द) ज २।६०;१०३,१०६,१०८
णिरातंक (निरातङ्क) ज २।१६
णिरालय (निरालय) ज २।६८
णिरालोय (निरालोक) ज २।१३१
णिरावरण (निरावरण) ज २।७१,८५
√**णिरुंभ** (नि + रुध्) णिरुंभइ प ३६।९२
णिरुंभति प ३६।९२
णिरुंभित्ता (निरुध्य) प ३६।९२
णिरुद्ध (निरुद्ध) प २३।१९३
णिरुवकिट्ठ (निरुपक्लिष्ट) ज २।४।?
णिरुच्छाह (निरुत्साह) ज २।१३३
णिरुवलेव (निरुपलेप) ज २।३
णिरुवहय (निरुपहत) ज २।१५
णिरुविग्ग (निरुद्विग्न) ज ३।११६
णिरुहा (नीरुहा) प १।४८।३
णिरेयण (निरेजन) प ३६।९३,९४
णिरोगय (नीरोगक) ज २।१२
णिरोह (निरोध) प ३६।९२
णिल्लज्ज (निर्लज्ज) ज २।३३

णिल्लेव (निर्लेप) ज २।६
णिवइय (निपतित) ज ३।२६,३६
णिवड्ढेत्ता (निवृध्य) ज ७।३०
णिवड्ढेमाण (निवर्धमान) ज ७।१३,१६,२२,७२, ७८,८४
णिवण्ण (निषण्ण) ज ७।१७८
णिवतित (निपतित) ज २।१४२ से १४५
णिवत्त (निवृत्त) ज ३।१२६
√**णिवय** (नि + पत्) णिवयंति ज ५।६४
णिवह (निवह) ज ३।१०६
णिवात (निपात) प ३६।८१ ज २।१३१
णिवाय (निपात) ज ३।३५,१०६
णिविट्ठ (निविष्ट) प २०।३६
णिवुड्ढि (निवृद्धि) सू १३।१७
णिवुड्ढेत्ता (निवर्ध्य) सू ६।१
णिवुड्ढेमाण (निवर्धमान) सू ६।२
णिवेइत्ता (निवेद्य) ज ३।८१
√**णिवेद** (नि + वेदय्) णिवेएइ ज ३।८१;५।५८
णिवेदम ज ३।५ णिवेदेमो ज ३।६०
णिवेस (निवेश) प १।७४ ज ३।२८,३१,४१,४६, ५२,११५,१३५,१४१,१५१,१६४,१६७।२,१८०
√**णिवेस** (नि + वेशय्) णिवेसेइ ज ५।२१,५८
णिवेसेत्ता (निवेश्य) ज ५।२१
णिव्वण (निर्व्रण) ज २।१५;३।१७७;७।१७८
√**णिव्वत्त** (निर् + वृत्) णिव्वत्तेइ सू ६।२
णिव्वत्तेति प २३।१९३ सू ६।१
णिव्वत्त (निर्वृत्त) ज ३।३०,४३,५१,६०,६८,७६, १३६,१५१,१७०,१७८,२१६
णिव्वत्तणया (निर्वर्तन) प ३४।२,३
णिव्वत्तणा (निर्वर्तना) प १५।५८।१,१५।६१
णिव्वत्तिय (निर्वर्तित) प २३।१३ से २३
णिव्वय (निर्व्रत) ज २।१३५
णिव्वाघाय (निर्व्याघात) प १६।५५;२१।९५; २८।३१ ज २।७१,८५
णिव्वाणमग्ग (निर्वाणमार्ग) ज २।७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√**णिव्वाण** (निर्+वापय्) णिव्वाविस्सति ज २।१४१ णिव्वाहि ज ५।२८ णिव्वावेंति ज २।११२ णिव्वावेह ज २।१११
णिव्वुइकर (निर्वृतिकर) ज २।६४;३।३;४।१४६
णिव्वुइकरण (निर्वृतिकरण) प १।१।२
णिव्वुतिकर (निर्वृतिकर) ज ४।१०७
णिसंत (निशान्त) ज ५।२६
णिसग्ग (निसर्ग) प १।१०१।२
णिसट्ठ (निःसृष्ट) ज ३।२५,३८,४६,४७,१३२
णिसढ (निषध) प १६।३० ज ४।६६
णिसढकूड (निषधकूट) ज ४।६६
णिसण्ण (निषण्ण) ज २।८८;३।६,८१,२२२
णिसम्म (निशम्य) ज ३।६
णिसह (निषध) ज ४।८१,८६,८७,६७,६८,२०१ से २०३,२०६,२०७,२०६,२३८,२६२
णिसहकूड (निषधकूट) ज ४।२३६
णिसहद्दह (निषधद्रह) ज ४।२०७
√**णिसिर** (नि+सृज्) णिसिरइ ज ३।२४,२६, ३७,३६,४५,४७,१३१,१३३ णिसिरंति ३।१६२;४।५,७;५।५,७ णिसिरति प ११।७१,७२,८४,८५
णिसिरण (निसृजन) प ११।७१
णिसिरमाण (निसृजत्) प ११।७१
णिसीइत्ता (निषद्य) ज ३।४६
√**णिसीय** (नि+षद्) णिसीएज्ज प ३६।६१ णिसीयइ ज ३।८,४१,४६,५८,६६,७४,१४७, २१५,२२२ णिसीयंति ज १।१३,३०,३३; २।७;४।२;५।४२ णिसीयति ज ३।१८८
√**णिसीयाव** (नि+षादय्) णिसीयावेंति ज ५।१४,१७
णिसीयवेत्ता (निषाद्य) ज ५।१४
णिसेग (निषेक) प २३।६० से ६४,६६,६८,६६, ७३,७५ से ७७,८१,८३,८५ से ६०,६२,६५, से ६६,१०१ से १०४,१११ से ११४,११६ से ११८,१२७,१३०,१३१,१३३,१७६,१७७, १८२,१८३,१८७
णिस्संग (निःसङ्ग) ज ५।५८
णिस्सग्गरुइ (निसर्गरुचि) प १।१०१।३
णिस्सा (निश्रा) प १।२०,२३,२६,२६,४८
णिस्साय (निश्राय) ज ३।१०६
णिस्सील (निःशील) ज २।१३५
णिस्सेस (निःश्रेयस्) ज २।७१
णिहट्टु (निहृत्य) ज ३।६
√**णिहण** (नि+हन्) णिहणंति ज ५।१३
णिहणित्ता (निहत्य) ज ५।१३
णिहयरय (निहतरजस्) ज ५।७
णिहि (निधि) प १५।५५।२ ज ३।१६७।१३,१४, १६८
णिहिय (निहित) ज ३।११६,२२१
णिहिरयण (निधिरत्न) ज ३।१६७,१७०;७।२०१, २०२
णिहुय (स्निहूक) प १।४८।४१
√**णी** (नी) णेइ ज ७।१५६,१५७,१६१,१६५, १६६;३।१६३ णेति ज ७।१५६ सू १०।६३ णेति सू १०।६३
√**णी** (गम्) णीति ज ३।१०६
णीइ (नीति) ज ३।१६७
णीणिया (नीनिका) प १।५१
णीम (नीप) प १।३६।३
णीय (नीत) प १५।१०२
णीयतर (नीचतर) ज ४।५४
णीयागोय (नीचगोत्र) प २३।२२,५७,५८,१३२
णीरय (नीरजस्) प २।३०,३१,६३;३६।६३,६४ ज १।१८,२३,३१;२।६;५।५८
णीरागदोस (नीरागदोष) ज ५।५८
णील (नील) प १।६ से ८;२।३१,२।४०।११; ५।५,७;१३।६;१७।६४;२३।१०४;२८।३२, ६६ ज ३।३१;४।२६४ सू २०।२,८,२०।८।३
णीलकणवीरय (नीलकरवीरक) प १७।१२४
णीलकूड (नीलकूट) ज ४।२६३।१
णीलबंधुजीवय (नीलबन्धुजीवक) प १७।१२४
णीलय (नीलक) प १७।१२६ सू २०।२

णीललेस (नीललेश्य) प १७।८३,९२,९४,९५, १०२,१०३,१०८,१६८; १८।७०
णीललेसट्ठाण (नीललेश्यास्थान) प १७।१४६
णीललेसा (नीललेश्या) प १७।१२१,१२४; २८।१२३
णीललेस्स (नीललेश्य) प ३।६६;१३।१४;१७।३१, ५६,५७,५९,६१,६४,६६ से ६८,७१ से ७४, ७६,८१ से ८५,८७,१००,१०३,१०९ से १११, १६७
णीललेस्सट्ठाण (नीललेश्यास्थान) प १७।१४६
णीललेस्सा (नीललेश्या) प १६।४९; १७।३६, ११५ से १२०,१२४,१२९,१३१,१३६,१४४, १४५,१४८ से १५२
णीललेस्सापरिणाम (नीललेश्यापरिणाम) प १३।६
णीलवंत (नीलवंत) प १६।३० ज ४।९८,१०३, १०८,११०,१४०।१८,१४१ से १४३,१६२,१६५, १६७,१७३ से १७६,१७८,१८० से १८२, १८४,१८५,१८७,१८८,१९०,१९१,१९३, १९४,१९६,१९७,१९९,२००,२२५।१,२२७, २६२ से २६५
णीलसुत्तय (नीलसूत्रक) प १७।११९
णीली (नीली) ज ३।२४
णीलुप्पल (नीलोत्पल) प १७।१२४
णीसंद (निष्यन्द) प १।१।३ चं १।१
णीसल्ल (निःशल्य) ज ५।५८
√णीसस (निर् + श्वस्) णीससंति प १७।२,२५; २८।२१,२३,२८,९७
णीसास (निःश्वास) ज २।१६
णीहम्ममाण (निर्हन्यमान) ज ३।३१
णीहारिम (निर्हारिम) ज २।१२
णीहु (स्निहु) प १।४८।१
णूणं (नूनं) प ११।१;१७।९४,९५,९९ से १०४, ११५,११८,१२०,१२८,१४८,१४९,१५१,१५४; ३६।८१
णेउर (दे०) प १।४९,५१
णेग (नैक) प २८।४०,४३,६९ ज ३।३,३२
णेगम (नैगम) प १६।४६
णेतव्व (नेतव्य) सू ६।१;८।१;९।३;१०।२३,२५; १५।६;१८।१;१९।१,३५;२०।८
णेतु (नेतृ) सू १०।६३
णेत्त (नेत्र) प १५।७७,८२
णेत्तविण्णाणावरण (नेत्रविज्ञानावरण) प २३।१३
णेत्तावरण (नेत्रावरण) प २३।१३
णेहुर (दे० नेहुर) प १।८९
णेम (नेम) ज १।११
णेमि (नेमि) ज ३।३०,९५,१५९,१७८
णेमिपास (नेमिपार्श्व) ज ३।२२
णेम्म (नेम) ज ४।२६
णेय (ज्ञेय) प २१।५३ ज ३।७७,१०९,१२९, ७।१२७।१,१६७।१ चं ५।२ सू १।९।२
णेयतिया (नैयतिकी) प १७।२५
णेयव्व (नेतव्य) प ४।५५;५।१६१;८।३;११।८१; १५।१०२,१०८,१४३;१७।८८;२१।५२; २२।७६;३६।२२,२६,३२,४६ ज १।१२ से १४,२५,४६;२।४,६,४६,५६,९४,१३९,१५६; ३।६४,१५०,१५१,२१७;४।१०,४७,५३,५६, ६०,६४,७९,८४,९०,९२,९६,१०९,१४१, १४७,१६०,१६३ से १६५,१७३,१७४,१९७, २०७,२१०,२३८,२४३,२६२,२६८,२७४, २७७;५।५३;६।५;७।३५,५०,५८,१३०, १३१,१३५,१५५,१७६ सू ७।१,९।२;१०।२२
णेयु (नेतृ) सू १।९
णेरइअत्त (नैरयिकत्व) प १५।९४
णेरइय (नैरयिक) प २।२०,२१;३।१९,२२;४।३; १०।३२ से ३८,४० से ४२,४४ से ५२; ११।४४,८०;१२।२,११ से १३,१५,३६; १३।१४,१६ से १९;१४।२,३,५,७,९,११ से १५,१८;१५।१७,१८,३५,४६,४८,५९,६२, ६३,६५,६६,७१,७५,७८,८२,८३,९१,९४ से ९७,१००,१०२,१०७,१०८,११८ से १२०;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२४,१३४,१३५,१३८,१४०,१४१; १६।३,६, ११,१४,२०,२५,२६,३१,३२; १७।१ से ६, ८ से १४,१७,१८,२३,२५,२८,२९,३२,३७, ४०,४२,४६,५७,८५,९० से ९२,१००,१०६ से १११;१८।२,५,८,९,११;१९।१;२०।१।१; २०।१ से ३,६,७,९,१०,१४,१५,१७ से २०, २३ से २५,२७,३२,३४,३५,३८ से ४२,४९, ५२;२१।५१,५२,५८,५९,६५,६६,७७,८१, ८७; २२।११,१३,१५,१७,१९ से २१,२३, २४,२६.२७,३०,३१,३३,३५,३७ से ४५,४७, ५३,५७,६६,७३,७५,७६,७९,८२,८७,८८, ९०,९८,१००;२३।२,४,६,७,१०,१८,३७,५४, ७८,८०.१४६,१९४ से १९६,१९८;२४।१,३, ५.८,१४,१५;२५।१,२,४;२६।१,३;२७।१,६; २८।१,३ से ५,२१ से २६,३० ३८,९८,१०१, १०२,१०४,१०९,११७,११९.१३३,१४३ से १४५; २९।५ से ७,१५.१८,१९,२२; ३०।५ से ७,१४,१७,२४;३१।२,४,६।१;३२।२,५; ३३।१ से ७,१९,२७,३०,३१,३४,३५,३७; ३४।१,३,५,६,१०,१३,१४;३५।२,५,७,९,११, १३,१५,१७,१८,२१;३६।४,८,९,११ से १३, १५,१८,२० से २२,२४,३० से ३४,३६,४३ से ४७,४९,५४,६५,६८,६९,७२ ज २।७१

णेरइयअसण्णिआउय (नैरयिकासंज्ञ्यायुष्) प २०।६२,६४

णेरइयत्त (नैरयिकत्व) प १५।१०३,१०४,१०९, १११,११५,११८,१२२,१२६,१२९,१४१, ३६।१८,१९,२१,२३,२५,२६,३० से ३४,४६, ४७

णेरइयाउय (नैरयिकायुष्) प २३।१८,३७,७८, ८०,१४६,१९९,१७०

णेरतिय (नैरयिक) प १०।३९

णेवच्छ (नेपथ्य) प २।४१

णेवत्थ (नेपथ्य) ज ५।४३;७।१०१

णेव्वाण (निर्वाण) प २।६४।२०

णेसप्प (नैसर्प) ज ३।१६७।२,१७८

णो (नो) प ११।६८ ज २।६ सु ८।१

णोअपरित्त (नोअपरीत) प १८।११२

णोअसंजय (नोअसंयत) प १८।९२

णोअसण्णि (नोअसंज्ञिन्) प ३१।५,६

णोइंदिय (नोइन्द्रिय) प १५।७०

णोकसायवेयणिज्ज (नोकषायवेदनीय) प २३।१७, ३४,३६

णोपज्जत्तयणोअपज्जत्तय (नोपर्याप्तकनोअपर्याप्तक) प १८।११५

णोपरित्त (नोपरीत) प १८।११२

णोभवसिद्धियणोअभवसिद्धिय (नोभवसिद्धिकनोअभवसिद्धिक) प १८।१२४; २८।११३,११४

णोभवोववातगति (नोभवोपपातगति) प १६।३७

णोभवोववायगति (नोभवोपपातगति) प १६।२४, ३३ से ३७

णोमालिया (नवमालिका) प १।३८।१ ज २।१०; ४।१६६

णोमालियापुड (नवमालिकापुट) ज ४।१०७

णोसंजतणोअसंजतणोसंजयासंजय (नोसंयतनोअसंयतनोसंयतासंयत) प ३२।१,२

णोसंजतणोअसंजयणोसंजतासंजय (नोसंयतनोअसंयतनोसंयतासंयत) प ३२।४

णोसंजय (नोसंयत) प १८।९२

णोसंजयणोअसंजयणोसंजयासंजय (नोसंयतनोअसंयतनोसंयतासंयत) प २८।१३१;३२।३,६

णोसंजयासंजय (नोसंयतासंयत) प १८।९२

णोसण्णिणोअसण्णि (नोसंज्ञिनोअसंज्ञिन्) प १८।१२१;२८।१२०,१२१,१३४,१३६; ३१।१ से ३,५,६

णोसुहुमणोबादर (नोसूक्ष्मनोबादर) प १८।११८

√ **ण्हाण** (स्ना) ण्हाणेइ उ १।९७ ण्हाणेंति ज २।१०० ण्हाणेति ज २।९९

ण्हाणपीढ (स्नानपीठ) ज ३।९,२२२

ण्हाणमंडव (स्नानमण्डप) ज ३।९,२२२

ण्हाणमल्लियापुड (स्नानमल्लिकापुट) ज ४।१०७

ण्हाणेत्ता (स्नात्वा) ज २।९९

ण्हात (स्नात) सू २०।७

ण्हाय (स्नात) ज ३।५८,६६,७४,७७,८२,८५, १२५,१२६,१४७,१५३ उ १।१९,४२,७७, १२१,१२२,१२६; ३।२९,११०,१४१;४।१२, १८;५।१७

ण्हारु (स्नायु) ज २।१३३; ३।२४

√ **ण्हाव** (स्नापय्,स्नपय्) ण्हावेइ उ ३।११४

ण्हावेत्ता (स्नपयित्वा, स्नापयित्वा) ज २।१००

त

त (तत्) प १।१ सू १।१ उ १।१

तइय (तृतीय) प ३।२१; १।८०।१; १५।१४३ ज ३।१३५।१; ४।५६,९७,१४२।३; ७।१०८, १५८ चं ४।३ सू १।८।३ उ २।२२; ३।६८; ४।१

तइया (तृतीया) ज ७।१२५ सू १०।१४८,१५०

तइविह (ततिविध) प १५।५९

तउखंड (त्रपुखण्ड) प ११।७४

तउय (त्रपुक) प १।२०।१

तउस (त्रपुस) प १।४८।४८ ज ३।११९ खीरा

तउसमिंजिया (त्रपुसमिञ्जिका) प १।५०

तउसी (त्रपुषी) प १।७०।१ खीरा की लता

तए (ततस्) प १।४; २।८;३।११;५।१३

तओ (ततस्) प ३४।२ से ३; ३६।७७,९२ उ ३।५१,५३,५४,८६,१०७,११०,१३६; ४।२१

तंजहा (तद्यथा) सू १।१९

तंडव (ताण्डव्य्) तंडवेंति ज ५।५७

तंडुल (तण्डुल) ज २।१२,८८;५।५८ उ ३।५१

तंत (तान्त) उ १।५८

तंतवा (तान्त्रवक) प १।५१

तंती (तन्त्री) प २।३०,३१,४१,४९ ज १।४५; २।६५;३।८२,१८५ से १८७,२०४,२०९, २१८;५।१,१९;७।५५,५८,१८४ सू १८।२३; १९।२३,२६

तंतु (तन्तु) ज ३।१०९

तंतुवाय (तन्तुवाय) प १।९७

तंदुल (तण्डुल) उ ३।५१

तंदुलमच्छ (तण्डुलमत्स्य) प १।५६

तंदुलेज्जग (तन्दुलीय) प १।४४।१ वायविडंग, चोलाई का साग

तंब (ताम्र) प १।२०।१;२।३१;१७।१२५ ज २।१५;३।१३८।१

तंबकरोडय (ताम्र'करोडय') प १७।१२५

तंबखंड (ताम्रखण्ड) प ११।७४

तंबच्छिकरण (ताम्राक्षिकरण) प १७।१३४

तंबछिवाडिया (ताम्र'छिवाडिया') प १७।१२५

तंबिय (ताम्रिक) उ ३।५०,५५

तंस (त्र्यस्र) प १।४ से ६;१०।१५,१६

तक (तकत्) ज ३।९५,१५९

तक्करबहुल (तस्करबहुल) ज १।१८

तक्कलि (तर्किल) प १।४३।१ चक्रमर्द वृक्ष, चकवड

तगरमेला (तगरमेला) ज ३।११।३

तगरपुड (तगरपुट) ज ४।१०७

तच्च (तृतीय) प ३।१८३;२१।९०;३३।१६;३६।९२ ज ७।१६२ सू १।१४,१६,१७,२१ उ १।३९, ४०,११५,११९; ३।१,२,२३,५४,६०,६१,७७, ७८,८७,८८,१०८

तच्चा (तृतीया) सू १२।२१

तच्छण (तक्षण) ज २।७०

तट्ट (दे०, स्थल) प २।८

तट्ठ (त्रस्त) ज ७।१२२।२ सू १०।८४।२

तट्ठदेवया (त्वष्टृदेवता) सू १०।८३

तट्ठु (त्वष्टृ) ज ७।१३०,१८६।४

तड (तट) ज ३।१०६ उ ५।५

तडाग (तटाक) प २।१३

तडित (तडित्) ज ३।२४

तण (तृण) प १।३३।१,१।४२,४४।१,१।४८।४६; ३८।६१ ज १।१३,२१,२६,२६,३३,४६;२।७, २६,५७,१२२,१२७,१४४ से १४७,१५०, १५६,१६४; ३।६८,१६२;४।६३,८२; ५।५

तणमूल (तृणमूल) प १।४८।८

तणय (तृणक) ज २।३६

तणवणस्सइकाइय (तृणवनस्पतिकायिक) ज २।१३१

तणविंटिय (तृणवृन्तक) प १।५०

तणविहूण (तृणविहीन) ज १।१४

तणसोल्लिया (दे०मल्लिका) ज ३।३५

तणाहार (तृणाहार) प १।५०

तणु (तनु) प २।६४ ज १।५१;२।१५,१३३; ४।४५,१५६;७।१७८

तणुक (तनुक) ज ३।१०६

तणुतणु (तनुतनु) प २।६४

तणुय (तनुक) ज १।८,३५,५१; २।१५; ३।१३८।१; ४।४५,११०,११४,१५६,२१३, २४२

तणुयतर (तनुकतर) प १।४८।३४ से ३७

तनुयरी (तनुतरी) प २।६४

तणुवाय (तनुवात) प १।२६; २।१०

तणुवायवलय (तनुवातवलय) प २।१०

तण्हा (तृष्णा) प २।६४।१६ ज ३।१२१।१

तत (तत) ज ५।५७

ततगति (ततगति) प १६।१७,२२

तति (तति) प १५।१३४

ततिय (तृतीय) प १०।१४।१ से ३; ११।४२,८८; १२।३२,३८;३६।८५,८७ सू १०।६५,६६,७३, ७७;१२।१६;१३।१० उ १।६३

ततिविह (ततिविध) प १६।२०

तते (ततस्) ज १।६

ततो (ततस्) प ३४।१,३;३६।८५ ज ३।३५

तत्त (तप्त) प १।४८।५६;२।३१,४८ ज ३।११७

तत्तकवेल्लुयभूय (तप्त'कवेल्लुय'भूत) ज २।१३२, १४१

तत्तजला (तप्तजला) ज ४।२०२

तत्ततव (तप्ततपस्) ज १।५

तत्तसमजोइभूय (तप्तसमज्योतिर्भूत) ज २।१३२, १४१

तत्तिय (तावत्) प १५।१०३ ज ७।२०० सू १०।६५,६६,७३,७७;१२।१६;१३।१०

तत्तो (ततस्) प ११।७,१।४८।१;२।६४।४; २१।४७।१,२; ३४।१,२

तत्थ (तत्र) प १।२० ज १।१३ सू १।१४ उ १।१०

तत्थ (त्रस्त) प २।२० से २७ ज ३।१११,१२५ उ १।८६

तत्थगय (तत्रगत) ज ५।२१

तदणुरूव (तदनुरूप) ज २।१४१ से १४५

तदुभय (तदुभय) प १४।३; २२।४ से ६; २३।१३ से २३

तप्प (तप्र) प ३३।१६

तप्पभिइ (तत्प्रभृति) ज २।६७ उ ३।११८

तप्पाउग्ग (तत्प्रायोग्य) प २३।२००,२०१

तम (तमस्) ज २।१३१

तमतमप्पभा (तमस्तमःप्रभा) प १।५३;२।१,२०; १०।१

तमतमा (तमस्तमा) प २।२७,२।२७।३

तमप्पभा (तमःप्रभा) प १।५३; २।१,२०,२६; ३।१६; ४।१६ से २१; १०।१

तमस (तमस्) प २।२० से २७

तमा (तमा) प ३।१८,१६,१८३; ६।१५,७८,६१; २०।४२;२१।६७;३३।८,१६

तमाल (तमाल) प १।४३।१

तय (त्वच्) उ ३।५०,५१,५३

तयणंतर (तदनन्तर) ज ४।२१३

तयणुरूव (तदनुरूप) प १।७४

तया (त्वच्) प १।३५,३६; १।४८।१३,२३,६३; १।४८ ज २।६७,१४५,१४६

तया (तदा) सू १।१४; १०।२६ उ ३।६२

तयाणंतर (तदनन्तर) सू १।१४,१६,२१,२४,२७; २।३

तयावरणिज्ज (तदावरणीय) ज ३।२२३

तयाविस (त्वग्विष) प १।७०

तयाहार (त्वगाहार) उ ३।५०

तरंग (तरङ्ग) २।१५,१३३; ५।३२

तरच्छ (तरक्ष) प १।६६; ११।२१ ज २।३६,१३६

तरच्छी (तरक्षी) प ११।२३

तरमल्लिहायण (तरोमल्लिहायन) ज ७।१७८

तरुण (तरुण) ज २।१५; ३।३,२४,३०,१७८; ५।५,७

तरुणी (तरुणी) ज ३।८२,१८७,२१८

तल (तल) प २।२० से २७,३०,३१,४१,४६ ज १।४५; २।६५; ३।७,८२,१७८,१८४,१८६, १८७,२०४,२०६,२१८; ४।३,२५,४६,६७,८२, ८५,१२५,१४२; ५।१,५,१६,६२; ७।५५,५८, १७४,१७८,१८४ सू १८।२३; १९।२३,२६

तलऊडा (त्रपुटी) प १।३७।३ छोटी इलायची

तलभंगय (तलभङ्गक) प २।३१

तलवर (तलवर) प १६।४१ ज २।२५; ३।९,१०, ७७,८६,१७८,१८६,१८८,२०६,२१०,२१६, २१९,२२१,२२२ उ १।६२; ३।११,१०१; ५।१०

तलाग (तडाग) प ११।७७ ज २।३१

तलाय (तडाग) प २।४,१६ से १९,२८

तलिण (तलिन) ज २।१५

तलिय (तलित) उ १।३४,४९,७४

तल्लेस (तल्लेश्य) प १७।६२,१०२ से १०४

तव (तपस्) प १।१०१।१० ज १।५; २।७१,८३; ३।२२१,११७,२२१; ७।१६६ उ १।२,३; ३।२९,३१,९९,१३२; ५।२६,३२

तव (तप्) तवइंति सू १९।१ तवइंसु ज ७।१ सू १९।१ तवइस्संति सू १९।१ तवंति ज ५।५७ तवयंति ज ७।५४ सू ४।१० तविंसु सू १९।१ तविस्संति ज २।१३१ सू १०।१३२ तवेंति ज ७।१ सू ३।१ तवेंसु सू १९।८ तवेति सू ३।२

तवणिज्ज (तपनीय) प १।४८।५९; २।३१,४८ ज ३।२४,३५,१०९,११७; ४।४६; ५।३८,६७; ७।१७८

तवणिज्जमय (तपनीयमय) ज ४।७,१३,८६,२०९, २५१,२५२; ५।३४

तवविसिट्ठया (तपोविशिष्टता) प २३।२१

तवविहीणया (तपोविहीनता) प २३।२२

तविय (तप्त) ज ३।३५,१०९; ७।११२।५ सू १०।१२९।५

तवोकम्म (तपःकर्मन्) उ २।१०; ३।१४,५०; ४।२४; ५।२८,३६,४३

तवोवहाण (तपउपधान) उ ३।८३

तव्वइरित्त (तद्व्यतिरिक्त) प २३।१९१,१९३

तव्वतिरित्त (तद्व्यतिरिक्त) प २३।१९२

तसकाइय (त्रसकायिक) प ३।५० से ५२,५९,६०, ७२ से ७४,८३ से ८७,९५,१७१ से १७३; १८।२८,३०,३६,४७,५४

तसकाय (त्रसकाय) प १५।५३,५४

तसणाम (त्रसनामन्) प २३।३८,११७

तसरेणु (त्रसरेणु) ज २।६

तसित (तृषित) प २।२३

तसिय (तृषित) प २।२० से २२,२४ से २७ उ १।८९

तह (तथा) प १।१।३ ज ३।११ चं ४।१ गू १।८ उ ३।७९

तह (तथ्य) उ १।२४; ३।१०३

तस्संठित (तत्संस्थित) ज ४।३

तहत्ति (तथेति) ज ३।५३,१००

तहप्पगार (तथाप्रकार) प १।२०,२३,२६,२९,

३५ से ३७,३६ से ५१,५६,६०,६३ से ६६,
७०,७१,७५,७६,७८,६६,६६;११।२१ से २५
तहा (तथा) प १।३५।३ ज ३।१०७ सू ८।१
उ १।७
तहारूव (तथारूप) उ १।१७;२।१०,१२;३।१४,
१६१;५।३६,४१,४३
तहाविह (तथाविध) प १।४८।७,१० से ३७,४१,
४३
तहिं (तत्र) प २।६४।५
तहेव (तथैव) प १।४८।२ ज १।५१ सू १।१७
उ १।७
ता (तावत्) सू १।१०
ताओ (ततस्) ज १।२० उ २।१३;३।१८
तागंधत्त (तद्गन्धत्व) प १६।४६;१७।११५,११६,
११८,१४८,१४६
ताडिज्जमाण (ताड्यमान) सू ६।३
ताण (त्राण) ज ५।२१
ताफासत्त (तत्स्पर्शत्व) प १६।४६;१७।११५,
११६,११८,१४८,१४६
तामरस (दे०) प १।४६
तामलित्ति (ताम्रलिप्ति) प १।६३।१
ताय (तात) उ १।४२ से ४४
तायत्तीसा (त्रयस्त्रिंशत्) प २।३२,३३,३५,५०,५१
ज २।६०
तार (तार) प ११।२५
तारंतर (तारान्तर) ज ७।१६८।२
तारगग्ग (तारकाग्र) चं ५।२ सू १।६।२
तारग (तारक) सू १६।२२।११
तारग्ग (ताराग्र) ज ७।१२७।१,१३१।२,१६७।१
सू १०।५५;१६।२२।२,२६
तारया (तारका) प २।४८ ज ५।२१
सू १०।५५;१६।२२
तारसत्त (तद्रसत्व) प १६।४६;१७।११५,११६,
११८,१४८,१४६
तारा (तारा) प १।१३३ ज ३।७६,११६,१८५,
२०६;७।१३१,१७७।३,१८२ सू १०।५५,
५६,५७,५६,६१,६२;१५।१;१८।४,१८,१६,
३७;१६।२२।१,१६।२२,३१
तारागण (तारागण) ज ३।६,१७,२१,३४,१७७,
२२२;७।१।१,१७० सू १८।४;१६।१,५।३,
८।३,११।४,१५।४,१६,२१।५,८,१६।२२।३२,
१६।३१,३५,३८
ताराविण्ड (ताराविण्ड) सू १६।२२।१
तारारूव (तारारूप) प २।४६ से ५१.६३
ज ४।२७;७।५५,५८,१६८,१७३,१७४,
१७८।२,१७६ से १८२,१६७ सू १५।१;
१८।१ से ३,१८ से २०,३७;१६।२३,२६;
२०।७ उ २।१२;५।४१
ताराविमाण (ताराविमान) प ४।२०१ से २०६;
६।८५ ज ७।१६५,१६६ सू १८।१,८,१३,
१७,३५,३६
तारिस (तादृश) १०।१६४;२०।७
तारिसग (तादृशक) सू २०।७ उ १।३३;२।८,२०;
५।१३,१५,३१
तारूवत्त (तद्रूपत्व) प १६।४६;१७।११५,११६,
११८ से १२८,१४८ से १५२,१५४,१५५
ताल (ताल) प १।४७।१;२।३०,३१,४१,४६
ज १।४५;२।६५;३।८२,१८६,२०४,२०६,
२१८,२२२;५।१,१६;७।५५,५८,१८४
सू १८।१३;१६।२३,२६
ताल (ताड) प १।४३।१
√ताल (ताडय्) तालेइ उ ५।१६ तालेहिं
उ ५।१५
तालण (ताडन) ज ७।१७८
तालपुडग (तालपुटक) उ १।८६,६०
तालायार (तालाचार) ज ३।१२,२८,४१,४६,५८
६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३
तालिय (ताडित) उ ५।१७
तालियंट (तालवृन्त) ज ३।११;५।१०,५५

तालु (तालु) प २।३१ ज २।१५; ३।३५,१०६, ७।१७८
ताव (तावत्) प २४।७ उ १।५१
ताव (ताप) ज ७।३२ उ ३।५०
तावइय (तावत्) ज १।१६,३।८;४।१२१,१४०।२, २१७
तावक्खेत्त (तापक्षेत्र) सू २।३; ४।५; ६।१; १६।२२।१४,१६।२३,२६
तावक्खेत्तसंठिति (तापक्षेत्रसंस्थिति) ज ७।३१,३५, सू ४।१,३,४,६
तावखेत्त (तापक्षेत्र) ज ७।३२,५५,५८,१६८,२१२, २१३
तावखेत्तपह (तापक्षेत्रपथ) सू १६।२२।५
तावण्णत्त (तद्वर्णत्व) प १६।४६; १७।११५, ११६,११८,१४८,१४६
तावतिय (तावत्) प १५।५१,५२,६२ ज ४।१०
तावत्तीस (त्रायस्त्रिंश) ज ५।५०
तावत्तीसग (त्रायस्त्रिंशक) प २।३२,३३,३५,४६ से ५१ ज ५।१६
तावत्तीसय (त्रायस्त्रिंशक) ज २।६०
तावत्तीसा (त्रायस्त्रिंशक) प २।३० से ३२
तावस (तापस) प २०।६१ उ ३।५०,५५
तावसत्त (तापसत्व) उ ३।५०,५५
तार्हि (तत्र) प २४।६
ताहे (तदा) ज ७।५६ उ १।५२; ३।१२३
ति (त्रि) प १।१३ ज १।७ चं ३।३ सू १।७ उ १।१४
तिउड (दे०) ज ४।२०२
तिंदु (तिन्दु) प १।३६।१
तिंदुय (तिन्दुक) प १६।५५
तिंदूय (तिन्दुक) प १।४८।४८
तिक्ख (तीक्ष्ण) ज २।१३३; ७।१७८
तिक्खग्ग (तीक्ष्णाग्र) ज ७।१७८
तिक्खधार (तीक्ष्णधार) ज २।१३१; ३।१०६
तिक्खुत्तो (त्रिस्) ज १।६; २।६०; ३।५,८८,८६, ६८,१३१,१३५,१५५,१५६;५।५,२१ से २४, ४४,४६,५८ उ १।१६,२१; ३।१०३,११३; ४।१३,१६
तिग (त्रिक) ज २।६५; ३।१८५,२१२,२१३; ५।७२,७३; ७।१३१।१ उ १।६८
तिगिंछद्दह (तिगिच्छद्रह) ज ४।८८ से ६१
तिगिच्छकूड (तिगिच्छकूट) ज ४।२७५
तिगिच्छायण (चिकित्सायन) सू १०।११६
तिगुण (त्रिगुण) ज २।६; ७।७,६६,६०,११८,१२१, सू १०।६०,६१,१८।६ से १३
तिगुणित (त्रिगुणित) सू १६।२२।२३,२५
तिजमलपय (त्रियमलपद) प १२।३२
तिट्ठाणवडित (त्रिस्थानपतित) प ५।१२,१४,१६, २०,२६,५३,५७,५६,६३,६८,७२,७४,७८,८३, ६४,६७,१०१,११२,११५,११६,१२२
तिट्ठाणवडिय (त्रिस्थानपतित) प ५।१८
तिणिस (तिनिश) ज ३।३५,१७८
तिण्ण (तीर्ण) ज ५।२१
√तितिक्ख (तितिक्ष्) तितिक्खइ ज २।६७
तित्त (तृप्त) प २।६४।१६
तित्त (तिक्त) प १।४ से ६;५।५,७,२०५;११।५८, १३।२८;२३।४६;२८।२०,३२,६६ ज २।१४५
तित्तिर (तित्तिरि) प १।७६ सू १०।१२०
तित्तीस (त्रयस्त्रिंशत्) ज ४।६८
तित्थ (तीर्थ) ज ३।१४,१५,१८,२०,२२,३०,३१; ४।३,२५;५।५५;६।६,१२ से १४
तित्थकर (तीर्थंकर) ज २।६३,१२५
तित्थगर (तीर्थंकर) प २०।१।१ ज २।६०,६५, १०१ से १०३,११३ ११४,११६,१५३; ५।७,२२,७०,७३
तित्थगरचियगा (तीर्थंकरचितका) ज २।१०५ से ११२
तित्थगरणाम (तीर्थंकरनामन्) प २३।३८,५६, १२६,१४६,१७४,१८६
तित्थगरणामगोय (तीर्थंकरनामगोत्र) प २०।३६
तित्थगरत्त (तीर्थंकरत्व) प २०।३८ से ४०,४५, ४६,५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तित्थगरवंस (तीर्थंकरवंश) ज २।१२४,१५५
तित्थगरसरीरग (तीर्थंकरशरीरक) ज २।९९
तित्थगरसिद्ध (तीर्थंकरसिद्ध) प १।१२
तित्थयर (तीर्थंकर) ज ४।२४८,२५० से २५२, ५।१.३.५,८ से १४,१६,१७,२१.२२,४४,४६, ६०,६२,६४,६६ से ६९.७२.७३;७।१९८
तित्थयरमाउ (तीर्थंकरमातृ) ज ५।९ से १२
तित्थयरमायरा (तीर्थंकरमातृ) ज ५।५,१४,१७
तित्थयरमाया (तीर्थंकरमातृ) ज ५।७,८,४६,६७
तित्थयराइसय (तीर्थंकरातिशय) उ ४।१३
तित्थयरातिसय (तीर्थंकरातिशय) उ १।१६;४।१८
तित्थयराभिसेय (तीर्थंकराभिषेक) ज ५।५४ से ५६
तित्थसिद्ध (तीर्थसिद्ध) प १।१२;१६।३६
तिधा (त्रिधा) ज १।१८
तिपएसिय (त्रिप्रदेशिक) प ५।१३१,१५६;१०।८
तिपडोयार (त्रिप्रत्यवतार,त्रिपदावतार) सू १९।३५
तिपदेस (त्रिप्रदेशिक) प १०।१४।१
तिभाग (त्रिभाग) प २।६४।४,६,७,९;६।११६; २१।९१;२३।७८,७९,१४७,१६२,१६९, ज १।२०;४८;२।५८,१२६,१५५,१५७,१५९; ३।१;७।३२,३४ सू १।२३;४।५८;९।३
तिभागतिभाग (त्रिभागत्रिभाग) प ६।११६
तिभागतिभागतिभागावसेसाउय (त्रिभागत्रिभागत्रिभागावशेषायुष्क) प ६।११५, ११६
तिभागतिभागावसेसाउय (त्रिभागत्रिभागावशेषायुष्क) प ६।११५
तिभागावसेसाउय (त्रिभागावशेषायुष्क) प ६।११५, ११६
तिभागूण (त्रिभागोन) प २।६४।७ सू १।२३
तिभाय (त्रिभाग) ज २।५५ से ५७,५९,१५६,१५८
तिमि (तिमि) प १।५६
तिमिंगिल (तिमिङ्गिल) प १।५६
तिमिर (तिमिर) प १।४१।१ ज ३।९५,१५९
तिमिसगुहा (तिमिस्रागुहा) ज १।२४;३।६८,६९, ८३,८५,८८ से ९०,९३,९५ से ९७ १०२, १०६,१५५;४।३७.१७२।१,१७४;६।१३
तिमिसगुहाकूड (तिमिस्रागुहाकूट) ज १।३४
तिय (त्रिक) प १६।१५ ज ७।१२१।१
तिय (इंदिय) त्रीन्द्रिय प १७।९६
तियभंग (त्रिकभंग) प २४।७,१२; २६।४,९; २८।११२,११६,११९,१२१,१२३,१२५,१२६, १२८,१२९,१३२,१३३,१३६ से १४५
तिरिक्ख (तिर्यच्) प १०।३३; २१।७
तिरिक्खजोणिणी (तिर्यग्योनिकी) प ३।३९,१२८, १८३;१७।४४,६२,६५ से ६९,८९;१८।४,१०; २०।१३;२३।१९४,१९६,१९८
तिरिक्खजोणिय (तिर्यग्योनिक) प १।५२,५४,५५, ६० से ६२,६६ से ६८,७५,७७,८१; २।२८; ३।२४,३८,३९,१२७,१८३; ४।१०४ से १५७; ५।३,२२,८२,८३,८५,८६,८८,८९,९२,९३, ९६,९७;६।२१,२२,४८,५८,६५,७०,७१,७८, ८१,८२,८३,८७,८९,९२,९६,९९ से १०३, १०५,१०७,११२-११६; ८।६,७;९।६,७,१६, १७,२२,२३; ११।४६;१२।४,११;१३।१८; १५।३५,४६,८७,१०८,१२१,१३८;१६।७,१४, २५,२७; १७।२३,३५,३८,४१ से ४३,५८, ६३ से ६६,८६ ८७,८९,९७,१०४;१८।३,१०; १९।४;२०।१३,१७,२३,२५,२९,३४,३५,४८; २१।८ से १६,२९ से ३२,४३,५३,६०,६८, ७७,८२,८८;२२।३१,७४,८७,९९;२३।७९, १९४,१९६,१९८,१९९;२४।७;२८।४७,४८, ११९,१३०,१३६,१३७,१४४;२९।१५,२२; ३१।४;३२।३; ३३।१,१२,२१,२८,३२,३६; ३४।३,८,३५।१४,२१;३६।७,४०,५१,५७, ७२,७३ ज २।१३७,१३५ से १३७
तिरिक्खजोणियअसंखेज्जआउय (तिर्यग्योनिकासंख्यायुष्क) प २०।६४
तिरिक्खजोणियत्त (तिर्यग्योनिकत्व) प १५।९७, १०३,१००९

तिरिक्खजोणियाउय (तिर्यग्योनिकायुष्) प २०।६३;२३।७६,१४७,१५८,१६२,१६५,१७०
तिरिच्छ (तिर्यच्) सू १।६।१
तिरिच्छगति (तिर्यग्गति) सू २।१ चं २।१
तिरिय (तिर्यच्) प २।४१ से ४३,४६,४८; ११।६५,६६;१५।५२;२०।५३;२१।८७,६० से ६३;२३।३६,८२,११२,११५,१४८;२८।१५,१६,६१,६२;३१।६।१;३२।६।१;३३।१६,१७ ज २।४६,७१,६०,१३७;३।७६,११६,११८; ४।५२;५।५,४४;७।४४,५४ सू २।१;४।१०; १८।१;१६।२२।१२
तिरियगति (तिर्यग्गति) प ६।२-७;२३।१७२
तिरियगतिपरिणाम (तिर्यग्गतिपरिणाम) प १३।३
तिरियगतिय (तिर्यग्गतिक) प १३।१६ से १८
तिरियगामि (तिर्यग्गामिन्) ज १।२२,५०;२।५८, १२३,१२८,१४८,१५१ १५७;४।१०१
तिरियलोग (तिर्यक्लोक) प २१।८६
तिरियलोय (तिर्यक्लोक) प २।१,४,८,१०,१३, १६ से १६,२८;३।१२५ से १७३,१७५,१७७
तिरियवाय (तिर्यग्वात) प १।२६
तिरियाउय (तिर्यगायुष्) प २३।१८
तिरीड (किरीट) प २।४६ ज ३।३१
तिल (तिल) प १।४५।१,१।४७।३ ज २।३७,११६
तिलक (तिलक) ज ३।१०६
तिलग (तिलक) ज ३।१२,८८,१७२;५।५८; ७।१७८
तिलचुण्ण (तिलचूर्ण) प ११।७६
तिलतंदुलग (तिलतण्डुलक) सू १०।१२०
तिलपप्पडिया (तिलपर्पटिका) प १।४७।३
तिलपुप्फवण्ण (तिलपुष्पवर्ण) सू २०।८,२०।८।३
तिलय (तिलक) प १।३६।३;२।४८;१५।५५।२ ज ४।४६ उ ३।११४
तिलसिंगा (तिल'सिंगा') प ११।७८ तिल की फली
तिवई (त्रिपदी) ज ३।१७८;५।५७
तिवण्ण (त्रिवर्ण) प ७।१७८
तिवलि (त्रिवलि) ज ३।१३८।१
तिवलियवलिय (त्रिवलिकवलित) ज २।१५
तिवलिया (त्रिवलिका) ज ३।२६,३६,४७ उ १।२२,११५,११७,१४०
तिविह (त्रिविध) प १।१।१;१।५४,६०,६६,७५, ७६,८१,८५;६।१,६,१३,२०,२६;१३।७,१०, ११,१३;१५।७५;१६।४,२४;१७।११,२५, ३०,१३६;१८।५६,६४,७७ ६०,१०५;२१।८; २२।४ से ६;२३।३३,४२;२६।७;३०।३; ३५।१,६,८ से १० चं १।४ उ ३।३८,४२
तिव्व (तीव्र) प २।२७,२६
तिसत्तखुत्तो (त्रिसप्तकृत्वस्) प ३६।८१
तिसमइय (त्रिसामयिक) प ३६।६०,६७ से ६६, ७१,७५
तिसरय (त्रिसरक) ज ३।६,२२२
तिहा (त्रिधा) ज १।२०;२।५५;१५५
तिहि (तिथि) ज ३।२०६;७।११८,१२१ सू १।६
तीत (अतीत) ज ७।३६
तीतवयण (अतीतवचन) प ११।८६
तीय (अतीत) प १५।५८।२ ज २।६०;३।२६,३६, ४७,५६,१३३,१३८,१४५;५।३,२२;७।५२
तीर (तीर) ज ४।३,२५,६७
तीस (त्रिंशत्) प १।८४ ज १।२० सू १।१८ उ ३।१४
तीसइ (त्रिंशत्) सू १०।४
तीसति (त्रिंशत्) सू १०।३५
तीसतिविह (त्रिंशद्विध) प १।८७
तु (तु) सू १६।२२
तुंग (तुङ्ग) प २।३१,४८ ज २।१५;३।८१,१५१, ४।४६;५।४३ उ ५।५
तुंड (तुण्ड) ज ३।२४
तुंब (तुम्ब) प १।४८।४८ उ ३।३०,३५,११६
तुंबी (तुम्बी) प १।४०।१
तुच्छ (तुच्छ) ज ७।११८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुच्छत्त (तुच्छत्व) प १५।४४,४५
तुच्छा (तुच्छा) सू १०।६०
तुट्ठ (तुष्ट) ज २।१४६; ३।२,६,८,१५,१६,२६, ३१,४२,५०,५२,५३,५६,६१,६२,६७,६६, ७०,७५,७७,८४,६१,१००,११४,१३७,१४१, १४२,१४८,१५०,१६५,१६६,१७३,१८१, १८६,१६२,१६६,२०८,२१३;५।५,१५,२१, २३,२७ से २६,४१,५५,५७,७० उ १।२१, ४२,४५,१०८; ३।१३,१०१,१०३,११३,१३६, १६०; ४।११,१४,२०; ५।५,३८
तुट्ठि (तुष्टि) ज २।७१ उ १।७१,७२
तुडित (तूर्य) प २।३०,३१,४६
तुडित (त्रुटिक) ज १।३१;३।२६
तुडित (त्रुटित) प २।३०,३१
तुडिय (त्रुटित) प २।३०,३१,४१ ज ३।६,६,२६, ३६,४७,५६,६४,७२,१३३,१३८,१४५,२११, २२१; ५।२१,५८
तुडिय (दे० त्रुटित) ज २।४ संख्या विशेष
तुडिय (तूर्य) प २।३०,३१,४१,४६ ज १।१४५; २।६५; ३।१४,३०,४३,५१,६०,६८,८२,१३०, १३६,१४०,१४६,१७२,१८०,१८५,१८६, १८७,२०४,२१८; ५।१,१६,२२,२६; ७।५५, ५८,१८४
तुडिय (दे०) ज ७।१६८।२ सू १८।२३ अन्तःपुर
तुडियंग (दे० त्रुटितांग) ज २।४
तुडियंग (तूर्याङ्ग) ज ३।१६७।१०
तुण्णाग (तुन्नाय) प १।६७
√**तुयट्ट** (त्वग् + वृत्) तुयट्टंति ज १।१३,२०, ३३; २।७; ४।२ तुयट्टेज्ज प ३६।६१
तुरग (तुरग) ज १।३७; २।१०१; ३।३,२३,२८, ३५,३७,४१,४५,६७,४६,१७८; ४।२७; ५।२८
तुरगरूवधरि (तुरगरूपधारिन्) सू १८।१४ से १७
तुरय (तुरग) ज ३।१३१,१३५
तुरिय (तूर्य) ज ३।१२,७८
तुरिय (त्वरित) ज २।६५,६०; ३।६,२६,३६,४७, ५६,६४,७२,७८,११३,१३३,१३८,१४५,१८०, २०६; ५।५,२१,२६,२८,४४,४७,६७
तुरुक्क (तुरुष्क) प २।३०,३१,४१ ज २।६५,१०६, ११०; ३।७,१२,८८; ५।७,५८ सू २०।७
तुल (तुला) ज ७।१३३।२
तुलसी (तुलसी) प १।३७।१,१।४४।३
तुलासंठिय (तुलासंस्थित) सू १०।८०
तुल्ल (तुल्य) प ३।३८ से १२०,१२२ से १२४, १७४,१७६,१७८ से १८२;५।५,७,१०,१२,१६, १८,२०,२४,२८,३०,३२,३४,३७,४१,४५,४६, ५३,५६,५६,६३,६८,७१,७४,७८,८३,८६, ८६,६३,६७,१०१,१०२,१०४,१०७,१११, ११५,११६,१२६,१३२,१३४,१३६,१३८, १४०,१४२,१४५,१४७,१५०,१५४,१६२, १६६,१६६,१७०,१७२,१७४,१७७,१८४, १८७,१६०,१६३,१६७,२००,२०३,२०७, २११,२१४,२१८,२२१,२२४,२२८,२३४, २३५,२३७,२३६,२४२; ६।१२३;८।५,७,६, ११; ६।१२,१६,२५; १०।३ से ५,२६ से २६; ११।७६,६०; १५।१३,१६,२६,२८,३१,३३, ६४; १७।२६ से ६६,७१ से ७६,७८ से ८३, १४४ से १४६; २०।६४; २१।१०४,१०५; २२।१०१,२८।४१,४४,७०;३४।२५,२६।३५ से ४१,४८,४६,८३।१ ज ३।३,३५;७।१६८,१६७ सू १८।२,३,३७
तुल्लत्त (तुल्यत्व) ज ७।१६६ सू १८।३
तुवर (तुवर) ज ३।२०६;५।५५,५६
तुवरी (तुवरी) सू १०।१२०
तुसार (तुषार) प २।६४
तुसिणीय (तूष्णीक) ज २।६० उ १।३८,६१,६२, ८६,८७,१००; ३।५६,५६,६१,६४,६८,७१, ७४,७६
तूल (तूल) सू २०।७
तूलफास (तूलस्पर्श) ज ४।१३
तूली (तूली) ज ४।१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तूवरी (तुवरी) प १।३७।३

तेइंदिय (त्रीन्द्रिय) प १।५०;२।७; ३।८,४० से ४२,४६,४६,१४७ से १४६,१८३;४।६८ से १००;५।३,२१,८१;६।२०,६५,७१,८३,८६, १०४,११५;६।४;११।४५; १५।३४,७५,८१, ८६,१३७; १७।४०,६२,१०३;१८।१५,२२; २०।८,२३,२८,३३,४७; २१।६,२८,४२; २२।३१;२३।८७,१५१,१६०,१६१; २८।४५ से ४७,१०१,१२५,१३६; २६।१३;३०।११, २१,३१।३;३४।६

तेइंदियत्त (त्रीन्द्रियत्व) प १५।६७.१४२

तेउ (तेजस्) प ६।८६,६२,१०४.११५; १३।६, १६; १७।४०,६६; १८।२६;२०।८.२३,२८, ५७;२१।८५;२२।२४

तेउकाइय (तेजस्कायिक) प १।१५;२।७ से ६;३।५० से ५२,५६,६० से ६३,६७,७१ से ७४,७८,८४ से ८७,६१,६५,१६२ से १६४,१८३;४।७२,७५ से ७७;५।३,१३,१४;६।११६,१०२

तेउकाइयत्त (तेजस्कायिकत्व) ज ७।२१२

तेउक्काइय (तेजस्कायिक) प १।२४;२।७; ३।४, १६४,१८३;६।५;१२।२२; १५।२६,८५,१३७; १७।६१ से ६३,१०३; १८।३,३८,४०,५१; २०।२७,२६,३१,४५; २१।२५,४०;२२।३१

तेउलेस (तेजोलेश्य) प १३।१५; १७।६५,६६, १०२,१६८

तेउलेसट्ठाण (तेजोलेश्यास्थान) प १७।१४६

तेउलेसा (तेजोलेश्या) प १७।५५,१२१,१४६

तेउलेस्स (तेजोलेश्य) प ३।६६; १३।१६,२०; १७।३३,५६,५६,६०,६२,६४,६६ से ६८,७१ से ७६,७८ से ८४,८७,८६,६५,१०१,१०२, १६७; १८।७२; २८।१२३

तेउलेस्सट्ठाण (तेजोलेश्यास्थान) प १७।१४६

तेउल्लेस्सा (तेजोलेश्या) प १६।४६; १७।३४ से ३६,३६,५०,५३,५४,६३,६६,११७,११८, १२१,१२२,१२६,१२६,१३३,१३७.१४४, १५३,१६२ से १६४; २८।१२३

तेउलेस्सापरिणाम (तेजोलेश्यापरिणाम) प १३।६

तेंदिय (त्रीन्द्रिय) प १।१४.५०; ३।४२,४६,४६

तेंदुय (तिन्दुक) प १७।१३२,१३३

तेंदूस (तिन्दुस) प १।४८।४८

तेगिच्छायण (चिकित्सायन) ज ७।१३२।४

तेणबहुल (स्तेनबहुल) ज १।१८

तेण (तेन) सू ६।१

तेणउति (त्रिनवति) सू १२।१२

तेणउय (त्रिनवति) ज ४।६२

तेणामेव (तत्रैव) प ३४।२२ ज ३।५

तेतलि (तेजस्तलिन्,तेतलिन्) ज २।५०,१६४; ४।१०६,२०५

तेतालीस (त्रिचत्वारिंशत्) सू ११।६

तेत्तीस (त्रयस्त्रिंशत्) प २।६४।६ ज ४।६८ सू १।२० उ १।१२६

तेदुरणमज्जिया (दे०) प १।५०

तेपण्ण (त्रिपञ्चाशत्) सू १२।२०

तेय (तेजस्) प २।२०,३१,४१.४६;२८।१४१ ज २।१३३;३।३,१८,६३,१८०,१८८;७।११२।५ सू १०।८८,१२६।५ उ ३।४८,५०,५५,६३, ६७,७०,७३,१०६,११८

तेयंसि (तेजस्विन्) ज ३।७७,१०६

तेयग (तैजस) प २१।७६;३६।३२

तेयगसमुग्घाय (तैजससमुद्घात) प ३६।८,१२,२६, ३२,३५,३७,४१,५३,५५,५७,५८,७३

तेयगसरीर (तैजसशरीर) प २१।७५ से ८१,८३, ६०.६४,१००,१०३,१०४

तेयगसरीरय (तैजसशरीरक) प १२।१०

तेयय (तैजस) प १२।१ से ५;२१।१;३६।१।१

तेयलि (दे०) प १।४३।१

तेयलेस्स (तेजोलेश्य) ज १।५

तेयस्सि (तेजस्विन्) ज २।६८,१३८

तेया (तैजस) प १२।१४,१८,२१.२५.२६.२६,३५. २१।६६,१०२,१०४,१०५;२३।६२;३६।६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेया (तेजा) ज ७।१२०।२ सू १०।८८।२

तेयाल (त्रिचत्वारिंशत्) ज १।२३

तेयालीस (त्रिचत्वारिंशत्) सू १०।१५६

तेयासमुग्घाय (तैजससमुद्घात) प ३६।१,५,७,४०

तेयासरीर (तैजसशरीर) प २१।८४ से ९३

तेयाहिय (त्र्याह्निक) ज २।४३

तेरस (त्रयोदशन्) प ३६।८१ ज १।७ सू १।१४

तेरसक (त्रयोदशक) सू १३।१२,१३,१७

तेरसम (त्रयोदश) प १०।१४।३ सू १०।७७;
१३।१०

तेरसविह (त्रयोदशविध) प १६।७

तेरसी (त्रयोदशी) ज २।८८;७।१२५

तेरिच्छिय (तैरश्चिक) प २०।६१ ज ३।९२,११९

तेलापूय (तैलापूप) प ३६।८१ ज १।७ सू १।४

तेलोक्क (त्रैलोक्य) प १।१।१;३।१२५ से १७३,
१७५,१७७

तेल्ल (तैल) प १।१०१।७;१५।१।२;१५।५०
ज ३।११।३,५।१४ उ ३।१३०

तेल्लकेला (तैलकेला) उ ३।१२८

तेल्लसमुग्ग (तैलसमुद्ग) ज ५।५५

तेल्लसमुग्गहत्थगय (हस्तगततैलसमुद्ग) ज ३।११

तेल्लोक (त्रैलोक्य) उ ५।५

तेवट्ठ (त्रिषष्टि) ज ७।२० सू २।३

तेवट्ठि (त्रिषष्टि) ज २।६४

तेवण्ण (त्रिपञ्चाशत्) प ४।१३४ ज ४।६२
सू ११।३

तेवत्तरि (त्रिसप्तति) ज २।४

तेवीस (त्रिविंशति) प २।४९ ज २।१२५ सू २।३

तेवीस (त्रिविंशतितम) प १०।१४।३

तेवीसइम (त्रिविंशतितम) प १०।१४।२

तेवीसतिम (त्रिविंशतितम) सू १२।१६

तेसट्ठि (त्रिषष्टि) ज ७।३३

तेसीइ (त्र्यशीति) ज २।६४

तेसीत (त्र्यशीति) सू १।२३

तेसीति (त्र्यशीति) सू १।२३

तेसीय (त्र्यशीति) सू १।१४

तेहिय (त्र्याह्निक) ज २।६

तो (ततस्) प २।२७।३

तोट्ठ (दे०) प १।५१

तोण (तूण) प ३।३१,३५,१७८ ज ३।३१,३५
१७८ उ १।१३८

तोमर (तोमर) ज ३।३५,१७८

तोयधारा (तोयधारा) ज ५।११,६३,६४

तोरण (तोरण) प २।१,३०,३१,४१ ज १।३७;
२।१५,२०;३।७,१७८,१९५;४।५,२३,२७ से
३०,३५,३७,३८,४०,४२,६५,६७,७१,७३,
७५,७७,९० से ९२,९४,११८,१२८,१४४,
१७४,१८३,१८९,१९५,२२१,२४६;५।३१

त्ति (इति) प ११ चं १।४

त्थिभग (स्तिभक) प १।४८।१

त्थिमिय (स्तिमित) ज १।२,२६;३।१,३,१८,३१,
१८० चं ६ सू १।१ उ १।१,६,२८;३।१५७;
५।२४

त्थिहु (स्तिभु) प १।४८।१

थ

थंभणया (स्तम्भन) प १६।५३

थंभिय (स्तम्भित) प २।३०,३१,४१,४९ ज ३।९,
२२२;५।२१,२८

√थक्कार (दे०) थक्कारेंति ज ५।५७

थण (स्तन) ज २।१५;३।१३८ उ ३।९८,१३०;
४।९

थणगंतर (स्तनकान्तर) उ ४।२१

थणपाय (स्तनपाय) उ ३।१३०

थणमूल (स्तनमूल) उ ३।९८

थणित (स्तनित) सू २०।१

थणिय (स्तनित) प २।३०।१,२।४०।२,८,१०
ज ५।२२

थणियकुमार (स्तनितकुमार) प १।१३१;४।५५;
५।३,८,५१;६।१८,५२,६१,८१,८५,१०२,१०९,
११४;७।३;८।३;९।३,१५;११।४४;१२।२,
१९;१३।१५;१५।१९,७१,७८,८४,१३६;

१६।३,११;१७।१७,६३,१०१;१६।१;२०।८,१२,२१,२३,२४,२७,३५;२११५५,६१,७०,६०;२२।२३,३०,३६,७३,६८;२४।५;२८।२७,६८,११६;२६।७,१६;३०।७,१७;३१।२;३३।११,२०,२७,३१,३५;३४।२;३५।१८;३६।५,२४,३७,७२

थणियकुमारत्त (स्तनितकुमारत्व) प १५।६५,१४१;३६।२२,२५

थद्ध (स्तब्ध) ज ३।१०६ सू २०।६।२

थल (स्थल) प १।७५ ज २।१३१,१३४;३।३२,६८ उ ३।५५

थलय (स्थलज) प १।४८।४०

थलय (स्थलक) ज ५।७

थलयर (स्थलचर) प १।५४,६१,६२,६६ से ६८ ७६;३।१८३;४।१२२ से १४८;६।७१,७८;२१।८,११ से १६,३५,४४,५३,६०

थवईरयण (स्थपतिरत्न) ज ३।३२।१

थाल (स्थाल) प ११।२५ ज २।१५;३।११;५।५५

थालइ (स्थालकिन्) उ ३।५०

थारुकिणिया (थारुकिनिका) ज ३।११।१

थालीपाक (स्थालीपाक) सू २०।७

थालीपाग (स्थालीपाक) ज २।३०

थावरणाम (स्थावरनामन्) प २३।३८,११७

थासग (स्थासक) ज ३।१०६,१७८;७।१७८

थिग्गल (दे०) प १५।१।२

थिबुग (स्तिबुक) प १५।२६;२१।२४

थिर (स्थिर) ज ७।१२४,१२५,१७८

थिरणाम (स्थिरनामन्) प २३।३८,१२२

थिरीकरण (स्थिरीकरण) प १।१०१।१४

थिल्ली (दे०) ज २।३३

थी (स्त्री) प १।८४

थीणद्धि (स्त्यानर्द्धि) प २३।१४,२७

थीविलोयण (स्त्रीविलोचन) ज ७।१२३ से १२५

थुरय (दे०) प १।४२।२

थूणा (स्थूणा) प १५।१।२,१५।५२

थूभ (स्तूप) प ११।२५ ज २।१५,२०,३१;४।१२५,१२६

थूभियग्ग (स्तूपिकाग्र) प २।६४

थूभिया (स्तूपिका) प १।१६,३७;४।१०,४६

थूभियाग (स्तूपिका) प २।४८ ज १।३८;४।१०,११५,२१७,२२६

थेज्ज (स्थैर्य) उ ३।१२८

थेर (स्थविर) प १६।५१ सू २०।६।४ उ २।१०,१२;३।१४,१५६,१६१,१६७;५।३६ ४१,४३

थेरग (स्थविरक) ज २।१३३

थोव (स्तोक) प ३।१ से १७,२४ से १२०,१२२ से १८१,१८३;६।१२३;७।२,३;८।५,७,६,११;६।१२,१६,२५;१०।३ से ५,२६,२७;११।७६,६०;१५।१३,१६,२६,२८,३१,३३,३४,६४;१७।५६ से ५६,६१,६४,६६ से ६८,७१ से ७४,७६,७८ से ८३,१४४ से १४६;२०।६४;२१।१०४,१०५;२२।१०१;२८।४१,४४,७०;३४।२५;३६।३५ से ४१,४८ से ५१,८२ ज२।४।२,६६ सू ८।१;२०।५

थोवतराग (स्तोकतरक) प ३५।२

थोवूण (स्तोकोन) ज २।१५

द

दओदर (दकोदर) ज २।४३

दंड (दण्ड) प २।३०,३१,४१;३६।८५ ज २।६,६० से ६२;३।३,१२,८८,११७,१७८,१६२;४।२६;५।५,७,५८;७।१७८ उ १।३१

दंडग (दण्डक) प ६।१२३;११।८३,८५;१४।६,८,१०,१८;२०।५;२२।२०,२५,२८,४५,५६,५८ ७६;२३।८,१२;२८।१४५;३६।८,१२,२०,२६ से ३१,३३,३४,४४,४५

दंडणायग (दण्डनायक) ज ३।६,७७,२२२

दंडणीइ (दण्डनीति) ज २।६० से ६२;३।१६७।६

दंडदारु (दण्डदारु) उ ३।५१।१

दंडपति (दण्डपति) ज ३।१०६

दंडय (दण्डक) प ११।८०,८२ से ८४;१४।३४; १५।१०२,१४०;१७।८९;२२।३३,३५,४१,५४

दंडरयण (दण्डरत्न) ज ३।८८,८९,१५५,१५६, १७८,२२०

दंडरयणत्त (दण्डरत्नत्व) प २०।६०

दंडि (दण्डिन्) ज ३।१७८

दंडिया (दण्डिका) ज ३।३५

दंत (दन्त) प २।३१ ज २।४३,१३३,१३४; ३।१०९,१७८;७।१७८

दंततर (दन्तान्तर) उ १।९७

दंतग्ग (दन्ताग्र) ज ७।१७८

दंतमाल (दन्तमाल) अ २।८

दंतमूसल (दन्तमूसल) उ १।९७

दंतार (दन्तकार) प १।९७

दंति (दन्तिन्) प १।४८।४ ज ३।२२१ उ १।१४, १५,२१,२२,२५,२६,१२१,१२५,१२६,१३२, १३३,१३६,१३७,१४०,१४७

दंतुक्खलिय (दन्त'उक्खलिय') उ ३।५०

दंस (दंश) उ ३।१२८

दंसण (दर्शन) प १।१०१।१०;२।६४।१२; ३।१।१;५।२१,२४,२८,३०,३२,३४,३७,४१, ४९,८०,८३,८४,८६,८७,८९,९४,९९,१०१, १०२,१०४;१०५,१०७,१११,११२,११५, ११७;१३।१९;१८।१।१,२०।६१;२३।२६, २८,६२,१३४,१७८;३०।२६,२८ ज २।७१, ८५;३।१७८,२२३;५।४३ उ ३।४४;५।१३, ३१

दंसण (उवउत्त) (दर्शनोपयुक्त) प ३६।९३,९४

दंसणधर (दर्शनधर) ज ५।२१

दंसणपरिणाम (दर्शनपरिणाम) प १३।२,१४,१६, १८,१९

दंसणमोहणिज्ज (दर्शनमोहनीय) प २३।३,३२,३३

दंसणवत्तिय (दर्शनप्रत्यय) ज ५।२७

दंसणारिय (दर्शनार्य) प १।९२,१०० से ११०

दंसणावरण (दर्शनावरण) प २४।९

दंसणावरणिज्ज (दर्शनावरणीय) प २३।१,३,८, १२

दक्ख (दक्ष) ज ५।५,५२

दक्खिण (दक्षिण) ज १।४६;४।५२,५५,८१,८६, ९८,१०८,१४३,१५१।१,१५६,१६४,१६५, १८५,१९३,१९७,१९९,२००,२०४,२०६ से २०८,२१३,२२७,२३०,२३७,२३८,२४९, २६२,२६५,२६८,२७१,२७७;५।४८;६।२३; ७।१२६

दक्खिणकूल (दक्षिणकूल) उ ३।५०

दक्खिणा (दक्षिणा) उ ३।४८,५०

दक्खिणिल्ल (दाक्षिणात्य) ज १।२६;३।१६३; ४।३५,६५,७१,९०,११०,१४१,२०२,२१२, २२८,२२९,२३८;५।४९;७।१७८

दग (दक) प १७।१२८ ज ३।१२;५।७; ७।११२।४ सू १०।१२९।४,२०।८,२०।८।३

दगकलसग (दककलशक) ज ५।७

दगकुंभग (दककुम्भक) ज ५।७

दगथालग (दकस्थालक) ज ५।७

दगपणवण्ण (दकपंचवर्ण) २०।८,२०।८।३

दगपिप्पली (दकपिप्पली) प १।४४।२

दगरय (दकरजस्) प २।३१,६४;१७।१२८ ज २।१५

दगवण्ण (दकवर्ण) सू २०।८

दगवारग (दकवारक) ज ५।७

दट्ठव्व (द्रष्टव्य) प १५।२९

दड्ढ (दग्ध) प ३६।९४

दढ (दृढ) ज ३।२४;५।५;७।१७८

दढपइण्ण (दृढप्रतिज्ञ) उ १।१४१;२।१३

दढरह (दृढरथ) उ ५।२।१

दत्त (दत्त) उ ३।२।१,३।१७१

दद्दर (दे०) प २।३०,३१,४१ ज ३।७,२४,१८४, २२१;५।५५

दद्दु (दद्रु) ज २।१३३

दद्दुर (दर्दुर) सू २०।२ प २।४९ सू २०।२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दधि (दधि) ज ४।१२५;५।६२ सू १०।१२०
दप्पण (दर्पण) ज ३।१२,१७८;४।२८;५।५८
दप्पणिज्ज (दर्पणीय) प १७।१३४ ज २।१८
दप्पिय (दर्पित) ज ३।२४;७।१७८
दब्भ (दर्भ) ज ७।१२९।३ उ ३।५१ ५६
दब्भपुप्फ (दर्भपुष्प) प १।३०
दब्भसंथार (दर्भसंस्तार) ज ३।२० ३३,५४,६३, ७१,८४,१३७,१६७,१८२ उ ५।४३
दब्भसंथारग (दर्भसंस्तारक) ज ३।२०,३३,५४, ६३,७१,८४,१३७,१४३,१६६
दब्भियायण (दार्भ्यायन) सू १०।११२
दमणग (दमनक) प १।४४।३ ज ५।५८ दौनावृक्ष, द्रोणलता
दमणगपुड (दमनकपुट) ज ४।१०७
दमणय (दमनक) ज ३।१२,८८
दमिल (द्रमिल,द्रविड) प १।८९
दमिली (द्रविडा,द्रमिला) ज ३।११।२
दरि (दरि) ज २।३८;३।८८,१०९
दरिवहुल (दरिवहुल) ज १।१८
दरिय (दृप्त) ज २।१२;३।३४
दरिसणावरणिज्ज (दर्शनावरणीय) प २२।२८; २३।१४,२६;२६।७;२७।४
दरिसणिज्ज (दर्शनीय) प २।३०,३१,४१,४८, ४९,५९,६३,६४ ज १।८,२३,३१ ४२;२।१२, १४,१५;३।१७८;४।३ ९,१३,२५,२७,२९, ३३,४९,११६;५।२८ ४३,६२ सू १।१ उ ५।४ से ६
दरी (दरी) उ ३।५५
दल (दल) ज २।१५; ३।१०९ चं १।१
दलइत्ता (दत्वा) ज ३।६
√**दलय** (दा) दलइस्संति उ ३।१२८ दलाइ ज ३।६;४।६१;५।४६ उ १।१०९;३।११४ दलयंति ज ५।५७ दलंति ज ३।८८ दलयह उ १।१०२ दलयामि उ १।१०३;३।११२ दलयामो उ ४।१८
दलयित्ता (दत्वा) ज ३।८८
दलिय (दलिक) ज ३।३५
दव (द्रव) प २।४१
दवकारग (द्रवकारक) ज ३।१७८
दव्व (द्रव्य) प १।१०।१९; ३।१२४,१७७,१७८; १०।५;११।४७,५३,५५,५७,५९,७० से ७३,७९ से ८५;१५।५७,१६।५०;२१।१।१;२१।२२; २२।१३,१५,१७,१९,८०,८२;२८।५; ३५।१।१ उ १।४०
दव्वओ (द्रव्यतस्) प ११।४८,४९; १२।७,१०; २८।५,५१; ३५।४,५ ज २।६९
दव्वजाय (द्रव्यजात) ज २।६९
दव्वट्ठ (द्रव्यार्थ) प ३।११६ से १२०,१२२, १७९ से १८२; १०।३ से ५,२६ से २९; १७।१४४ से १४६;२१।१०४
दव्वट्ठता (द्रव्यार्थ) प ३।११६ से ११८
दव्वट्ठया (द्रव्यार्थ) प ३।११४,११९,१२०,१२२, १७९ से १८२;५।५,७,१२,१४,१६,१८,२०, २४,२८,३०,३२,३४,३७,४१,४५,४९,५३, ५६,५९,६३,६८,७१,७४,७८,८३,८६,८९, ९३,९७,१०१,१०४,१०७,१११,११५,११९, १२९,१३१,१३४,१३६,१३८,१४०,१४३,१४५, १४७,१५०,१५४,१६३,१६६,१६९,१७२, १७४,१७७,१८१,१८४,१८७,१९०,१९३, १९७,२००,२०३,२०७,२११,२१४,२१८, २२१,२२४,२२८,२३०,२३२,२३४,२३७, २३९,२४२;१०।३ से ५,२६ से २९, १७।१४४ से १४६;२१।१०४ ज ७।२०९ उ ३।४४
दव्वहलिया (द्रव्यहलिका) प १।४७
दव्विंदिय (द्रव्येन्द्रिय) प १५।५८।२,१५।७६ से ८४,८६,९१,९४ से ९७,१००,१०४ से १०६, १०८,१०९,११४,११५,११७ से १२०,१२३, १३१,१३२,१४०,१४२,१४३
दव्वी (दार्वी) प १।४४।२ दारुहरिद्रा
दव्वीकर (दर्वीकर) प १।६९,७०

दव्वेंदिय (द्रव्येन्द्रिय) प १५।१०३,१२६,१२६, १४३

दस (दशन्) प १।६६ ज १।२३ सू १।२४ उ १।१७

दस (दशम) प १०।१४।३

दसगुण (दशगुण) प ५।१५१;२८।७,५३

दसण (दशन) ज २।१५;३।३५,१३८;५।२१

दसणह (दशनख) ज ३।२६,३६,४७,५६,६४,७२, ७७ १३३,१८८;५।२१

दसण्ण (दशार्ण) प १।६३।४

दसद्धवण्ण (दशार्धवर्ण) ज २।१०;३।१२,८८; ४।१६६;५।७,५८

दसधणु (दशधनुष्) उ ५।२।१

दसपएसिय (दशप्रदेशिक) प ५।१३०,१६१,१७६, १६५,२१६

दसपदेसिय (दशप्रदेशिक) प ५।१२७,१७६

दसम (दशम) प १०।१४।२;११।२३।१,११।३४।१ ज ७।६७,१०२,११४।२ चं ५।४ सू १।६; १०।७७,१२४।२;१२।२६;१३।८ उ १।७; २।१०,२२;३।१४,८३,१५०,१६१;४।२४; ५।२८,३६,४३

दसमी (दशमी) ज ७।११८,१२५ सू १०।६०

दसरह (दशरथ) उ ५।२।१

दसविध (दशविध) सू १२।२६

दसविह (दशविध) प १।३,१०१,१३१;५।१२४; ११।३३,३४,३६;१३।२,२१;२३।१३

दससमयट्ठिईय (दङसमयस्थितिक) प ५।१४८

दसहा (दशधा) प २।३०।१

दसार (दसार) उ ५।५,१०,१७,१६

दसारवंस (दसारवंश) ज २।१२४,१५२

दह (द्रह) प २।४,१३,१६ से १६,२८;११।७७; १५।५५।२ ज २।३१;३।१३३;४।३,६४,८८, १४०।२,१४१,१४२,२०७,२६८,२७४;५।५५; ६।६।१

√दह (दह्) दहइ ज ३।१२

दहफुल्लइ (दे०) प १।४०।५

दहबहुल (द्रहबहुल) ज १।१८

दहावई (द्रहावती) ज ४।१८८,,१८६

दहावईकूड (द्रहावतीकूट) ज ४।१८८

दहावती (द्रहावती) ज ४।१८७,१६०

दहि (दधि) प ११।२५;१७।१२८ ज २।१५; ७।१७८

दहित्ता (दग्ध्वा) ज ३।१२

दहिघण (दधिघन) ज २।३१;१७।१२८

दहिमुह (दधिमुख) ज २।११६

दहिमुहपव्वय (दधिमुखपर्वत) ज २।११८,११६

दहिवण्ण (दधिपर्ण) प १।३६।३

√दा (दा) दिंति सू १०।१२६ देइ ज ७।११२।४ सू १०।१२६ उ १।११० देंति ज ७।११२।३; उ ३।६८

दाइज्जमाण (दर्शयमान) ज ३।१८६,२०४

दाइय (दायिक) ज २।६४

दाऊण (दत्वा) ज ५।५८

दाडिम (दाडिम) प १।३६।१ ज २।१५

दाढा (दंष्ट्रा) ज ७।१७८

दाण (दान) ज ३।११७।१

दाणंतराइय (दानान्तरायिक) ब २३।५६

दाणंतराय (दानान्तराय) प २३।२३

दाणकम्म (दानकर्मन्) ज ३।३२

दाणव (दानव) ज ३।११५,१२४,१२५

दाम (दामन्) प २।४८ ज ३।१६७;४।४६,१२६; ५।३८

दामणिसंठिय (दामनीसंस्थित) सू १०।४६

दामणी (दामनी) ज ७।१३३।३ सू १०।४६

दामिणी (दामिनी) ज २।१५

दामिली (द्राविडी) प १।६८

दाय (दाय) ज २।६४ उ २।६;५।१३,२५,५२

दायव्व (दातव्य) सू २०।६।५

दार (द्वार) प २।१ ज १।१५ से १७,३८; ३।१०६,१६३;४।१०,६४,११५,१२१,१२२, १४७,२१७,२६२ चं ५।४ सू १।६।४;१०।१३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दार (दार) उ ३।४८,५०

दारग (दारक) उ १।५३ से ५५,५७ से ५९,६१ से ६३,७८,८९,८२;२।९; ३।९२,९८,१०१, १०६,१३०,१३१

दारगरूव (दारकरूप) उ ३।१२९,१३४

दारय (दारक) ज ५।५७ उ १।५१,५४,५६,६० से ६२,७६,७९;२।९,१०; ३।११४,१२३,१२४

दारियत्त (दारिकात्व) उ ३।१२५

दारिया (दारिका) उ ३।९२,९८,१०१,१०६,११४, १२३,१२६,१२८,१३०;४।५,९,११ से १६,१८, १९,२०

दारु (दारु) ज ३।३२

दारुग (दारुक) ज ३।७८

दालयित्ता (दारयित्वा) ज ४।३५

दालित्ताणं (दलयित्वा) प १।७४

दालिम (दाडिम) प १६।५५; १७।१३२

दास (दास) ज २।२९; ३।१०३ उ १।५४,५५,७९, ८०

दासी (दासी) प १।३७।५ काकजंघा, नीलाम्ला, नीलभिंटी

दासी (दासी) ज ३।१०३

दाह (दाह) ज २।४३

दाहिण (दक्षिण) प २।१०,३२,३३,३५,४३,५० से ५२,५४,५६ ५८ से ६०;३।१ से २७,१७६, १७८ ज १।१८,२०,२३,२५,२८,३२,४६,४८, ५१; २।६५,११३;३।१६,१२,३६,१३६,१३७, १४९,१५०,१८६,२०७;४।१,३,१९,२३,२६, ३७,५५,६२,६५,८१,८४,८६,८८,९०,९८, १०३,१०६,१०८,१२९,१६२,१६७ से १६९, १७२ से १७४,१७७,१७८ १८० १८१,१८३, १८७,१८९ से १९१,१९४,१९६ २०१ से २०३,२०५,२१०,२१४,२२० २३८,२६२, २६८,२७१,२७४;५।२,२१,३९,५३,५८; ७।१०१,१०२,१२९ १७८ उ ११५ से १७, १९;२।१;८।१;१०।७५;१३।७,८;१८।१४; २०।२ उ ३।५१,५३,६२

दाहिणअवर (दक्षिणापर) ज ३।८१

दाहिणउत्तरायया (दक्षिणोत्तरायता) ज ४।१४१

दाहिणओ (दक्षिणतस्) प २।४०।३

दाहिणड्ढ (दक्षिणार्ध) प २।५० सू २।१;८।१

दाहिणड्ढकच्छ (दक्षिणार्धकच्छ) ज ४।१६८ से १७४

दाहिणड्ढभरह (दक्षिणार्धभरत) ज १।१९,२१ से २३,४५ से ४७;३।१,२०८;४।३५ उ ५।१०

दाहिणड्ढभरहकूड (दक्षिणार्द्धभरतकूट) ज १।३४, ४१,४५,४६

दाहिणदारिया (दक्षिणद्वारिका) सू १०।१३१

दाहिणद्धभरह (दक्षिणार्द्धभरत) ज १।२०

दाहिणपच्चत्थिम (दक्षिणपाश्चात्य) प ३।१७६, १७८ ज ३।३०,३१,१७२,१७३;४।१९,१६३, २०८,२०९,२२३,२२९,२३०;५।३९,४९ सू २०।२

दाहिणपच्चत्थिमिल्ल (दक्षिणपाश्चात्य) ज ४।२३८

दाहिणपडीण (दक्षिणापाचीन) सू १।१९

दाहिणपुरत्थिम (दक्षिणपौरस्त्य) प ३।१७६,१७८ ज ४।१९,१०६,२०३,२२२,२२७,२२८;५।३९, ४९ सू २।१,२०।२

दाहिणपुरत्थिमिल्ल (दक्षिणपौरस्त्य) ज ४।२३८; ५।४४,४९ सू १।१९;२।१; १२।३०

दाहिणभुयंत (दक्षिणभुजान्त) सू २०।२

दाहिणवाय (दक्षिणवात) प १।२९

दाहिणवेयालि (दक्षिण'वेयाली') प १६।४५

दाहिणिल्ल (दाक्षिणात्य) प २।३२,३३,३५,३६, ३८,४३,४४,४७;३।१८ से २३;१६।३४ ज १।२६,५१;२।११९;३।१४ ज १।२६,५१; २।११९;३।१४,१५,१८,३९,५१,५७,६१,८३, ८५,८८ से ९०,९२,९३,१२९,१६२,२०६,२१६; ४।१७४ से १७६,१८२,१८३,१८८,१९५, २०१,२०२,२१२,२४८,२५१;५।१४,४२,४५,

५२ सू १०।१४२,१४७

दिगिंदलय (दे०) उ ३।११४

दिट्ठ (दृष्ट) प ११।१०।१३,८ ज ३।१२६

दिट्ठंत (दृष्टान्त) प १७।१४८; उ ३।८,२६,६३

दिट्ठंतिय (दार्ष्टान्तिक) ज ५।५७

दिट्ठाभट्ठ (दृष्टाभाषित) उ ३।५५

दिट्ठि (दृष्टि) प २८।१०६।१ ज ३।१०५;५।६७

दिट्ठिवाय (दृष्टिवाद) प १।१।३;११।१०।१८

दिट्ठीविस (दृष्टिविष) प १।७०

दिणकर (दिनकर) सू १९।११।२,१९।२१।३, १९।२२।१२,१३

दिणयर (दिनकर) ज ३।१८८ सू १९।२२।३० उ ३।४८,५०,५५,६३,६७,७०,७३,१०६,११२

दिण्ण (दत्त) प २।३०,३१ ज ३।७,१८४;५।२६ उ १।९६,१०३,१०९,११०,११३,११४; ३।४८;५०

दित्त (दीप्त) प २।४९ ज ३।९,१८,९३,१०३, १८०,२२२;७।१७८ सू १९।११।२,२१।३, १९।२२।३०

दित्त (दृप्त) ज ३।१०३

दित्ततव (दीप्ततपस्) ज १।५

दित्तसिरय (दीप्तशिरस्क) ज ३।९,१८

दिन्न (दत्त) प २।४१

दिप्पंत (दीप्यमान) ज ३।९,१७,२१,३४,१७७, २२२

दिप्पमाण (दीप्यमान) ज ३।१८,९३,१८०

दिल्ली (दे०) प १।५८

दिवड्ढ (द्वयर्ध,द्वयपार्ध) प २३।७३,८३,१३५, १५२,१७२;३३।७,८ ज ६।८।१ सू ३।२;९।३; १८।१

दिवड्ढखेत्त (द्वयपार्धक्षेत्र) सू १०।४,५

दिवस (दिवस) प २८।२७,७३ से ७६ ज २।६४; ३।७९,९५,९६,११६,१२०,१३९,१६०,२०९; ७।२६ से ३०,११२।५,११७,११८,१२६,१५६ से १६७ चं ५।२ सू १।९।३,१।१३,१४,१६, २१,२२,२४,२७;२।३;३।२;४।८,९;६।१; ८।१;९।२,३;१०।५,६३ से ७४,८६।३,१२९।५ १९।२२।१८ उ १।६३;३।६४,६८,७१,७४, ७६,१२६;५।१३,४५

दिवसखेत्त (दिवसक्षेत्र) ज ७।२७,३०

दिवसतिहि (दिवसतिथि) सू १०।८९,९०

दिवा (दिवा) ज ७।१२५

दिव्व (दिव्य) प २।३०,३१,४१,४९ ज १।३१, ४५;२।६७,९०,१००;३।४,५,१२,१४,१५,१८, २६,३०,३१,३९,४३,४४,४७,५१,५२,५६, ६०,६१,६४,६८,६९,७२,७९,८८,९२,९५, १०९,११३,११६,११७,११९,१२२,१२३,१२६, १३०,१३१,१३३,१३६ से १३८,१४०,१४१, १४५,१४९,१५०,१५९,१७२,१७३,१७८, १८०,२०९,२११;५।१,३,५,७,१९,२२,२६, २८,३०,४१,४३ से ४५,४७,५५,५७,५८, ६७;७।५५,५८,१८४,१८५ सू १८।२२,२३; १९।२६ उ ३।१७,८५,९४,१२२,१२३,१६३; ४।२५

दिव्वा (दिव्याक) प १।७१

दिसा (दिशा) प २।३०,३१;२।४०।२,८,१०, २।४१,४९ ज १।३८; २।१३१; ३।१४,१५, २२,३०,३१,४३,४४,५१,५२,६०,६१,६८,६९, १०० से १११,१२५,१३०,१३१,१३६,१३७, १४०,१४१,१४९,१५०,१७२,१७३,१९५, २११;४।१०,१२१,१५३,१६३,२१२,२१७, २३८;५।५२,७४;७।१७८ सू १।४;५।१ उ १।२२,१४०;३।५१,५३,५५,६३,६७,७०, ७३

दिसाकुमार (दिशाकुमार) प १।१३१;५।३; ६।१८

दिसाकुमारी (दिशाकुमारी) ज ५।१ से ३,५ से १०,१२ से १७

दिसाचक्कवाल (दिशाचक्रवाल) ३।५०

दिसाणुवाय (दिशानुपात) प ३।१ से १७,२४ से

३७,१७६,१७८
दिसादि (दिशादि) ज ४।२६०।२ मेरुपर्वत
दिशापोक्खि (दिशाप्रोक्षिन्) उ ३।५०
दिसापोक्खिय (दिशाप्रोक्षिक) उ ३।५०,५५
दिसापोक्खिय(तावस) (दिशाप्रोक्षिकतापस) उ ३।५०
दिसाहत्थिकूड (दिशाहस्तिकूट) ज ४।२२५ से २३३
दिसि (दिश्) प २।२७,२।३०।१;२।६३;३।१।१; ११।६६,६६।१;२१।६५,६६;२८।१६,२१,६५; ३६।५६,६६,६८,७०,७२ से ७४ ज ४।२०४, २१०,२१६,२२०;५।३०;७।४८,५०,५२,५३ उ १।२४;३।५१,५३,६२,८१,१४३,१५६
दिसीभाग (दिग्भाग) ज ३।२०८;५।५,४४,४५ उ ३।११३;४।२०
दिसीभाय (दिग्भाग) ज १।३;३।१६२,२०४, २०८;४।१२०,१३६;५।५,७ चं ७ सू १।२ उ ५।५
दीण (दीन) उ १।१५,३५;३।६८
दीणस्सर (दीनस्वर) ज २।१३३
दीणस्सरता (दीनस्वरता) प २३।२०
दीव (द्वीप) प १।७४,७५,८०,८१,८४;२।१,४,७, १३,१६ से १६,२८,२६,३०।१,२।३२,३३,३५, ३६,४०।२,६,११,२।४३,५०,५१;१५।१।२, १५।५४,५५;१६।३०;३३।१० से १२,१५ से १७;३६।८१ ज १।७,१५ से १८,२०,२३, ३४,३५,४६,४८,५१;२।१,७,५२,५६,६०,११६, १६१,१६४;३।२६,३६,४७,५६,११३,१३३, १३८;४।१,३१,३२,३४,४१,५२,५५,६२,६८, ६६,७६,८१,८६,६०,६३,६८,११४,१५६, १६०,१६५,१६७,१६६,१७२ से १७४,१७८, १८१,१८२,२०१ से २०३,२०६,२१३,२६२, २६५,२६८,२७१,२७४,२७७;५।३,२१,२२, २६,४४,५२,७४;६।१ से ५,७ से २६;७।१, ३,४,८ से १४,३१,३३,३६ से ३६,५२,५४, ६२,६३,६७ से ७२,८६,८७,६१,६२,१०१, १०२,१७५,१८२,१६८ से २०८,२१० से २१३ सू १।१४,१६,१७,१६ से २२,२४,२७;२।१, ३;३।१,२;४।३,४,७,१०;६।१;८।१;१०।१३२, १४२,१४७;१२।३०;१८।७,२०;१६।१,२,६, ७ ८।३,६,१२ से १४,१५।३,१६।१६,१६।२२, २४,१६।२८,३१ से ३४ उ १।६;३।७,६१, १२५,१५७;५।२४,४३
दीवकुमार (द्वीपकुमार) प १।१३१;५।३;६।१८
दीवग (द्वीपिक) सू १०।१२०
दीवणिज्ज (दीपनीय) प १७।१३४ ज २।१८
दीविग (द्वीपिक) ज २।३६
दीविय (द्वीपिक) प १।६६;११।२१ ज ३।१३६; ५।३२
दीवियग्गाह (दीपिकग्राह) ज ३।१७८
दीविया (दीपिका) प ११।२३
दीवियाहत्थगय (हस्तगतदीपिका) ज ५।१२
√दील (दृश्) दीसंति प १।४८।५७ ज ७।३६,३८
दीह (दीर्घ) प २।६४।४;१३।२३ ज २।१५,६६; ३।१०६,१६७।११
दीहतर (दीर्घतर) ज ४।८०
दीहवेयड्ढ (दीर्घवैताढ्य) ज ६।१०
दीहिया (दीर्घिका) प २।४,१३,१६ से १६,२८; ११।७७ ज २।१२
दु (द्वि) प १।१३ सू १।१४
दुइय (द्वितीय) प ३।२२
दुंदुभय (दुन्दुभक) ज ७।१८६।२ सू २०।८
दुंदुहय (दुन्दुभक) सू २०।८।२
दुंदुहि (दुन्दुभि) ज ३।१२,७८,१८०,२०६;५।५, २२,२६,४६,४७,५६,६७ उ १।१२१,१२२, १२५,१२६,१३३,१३४,१३८;३।१११;४।१८; ५।१६
दुक्कालबहुल (दुष्कालबहुल) ज १।१८
दुक्ख (दुःख) प २।६४।२२;६।११०;२०।१८; ३५।१।१,२,३५।१०,११;३६।८८,६२,६४।१ ज १।२२,२७,५०;२।५८,७१,८८,८६,१२३,

१२८,१५१,१५७; ३।७७,९२,१०९.११६,
१२१।१,१२५;४।१०१,१७१ सू १९।२२।१३
उ १।९३,१४१;३।८६;५।४३
दुक्खत्त (दुःखत्व) प २८।२४
दुक्खभागि (दुःखभागिन्) ज २।१३३
दुक्खुत्तो (द्विस्) सू १।१२
दुखुर (द्विखुर) प १।६२,६४
दुग (द्विक) ज ७।१२१।२
दुगुंछा (जुगुप्सा) प २३।३६,७७,१४५
दुगुण (द्विगुण) सू १९।२२।२३
दुगुणिय (द्विगुणित) ज २।२५
दुगूल (दुकूल) सू २०।७
दुग्ग (दुर्ग) उ ३।५५
दुग्गइगामि (दुर्गतिगामिन्) प १७।१३८
दुग्गंध (दुर्गन्ध) ज २।१३३ उ ३।१३०,१३१,१३४
दुग्गम (दुर्गम) ज ३।७७,१०९
दुग्गबहुल (दुर्गबहुल) ज १।१८
दुग्गुल (दुकूल) ज ४।१३
दुघण (द्रुघण) ज ५।५
दुजडि (द्विजटिन्) सू २०।८
दुज्जम्मय (दुर्जन्मक) उ ३।१३१,१३४
दुज्जाय (दुर्जात) उ ३।१३१,१३४
दुट्ठाणवडिल (द्विस्थानपतित) प ५।१३४,१४३,
१४८,१५१,१६३,१६४,१८१,१९७,२१८
दुट्ठु (दुष्टु) उ १।८८,९२
दुत्तीस (द्वात्रिंशत्) ज ४।९४
दुद्दंत (दुर्दान्त) उ ५।१०
दुद्दंसणिज्ज (दुर्दर्शनीय) ज २।१३३
दुद्ध (दुग्ध) प ११।२५ उ ३।९८
दुधा (द्विधा) सू १९।१६
दुन्निकम्म (दुर्निष्क्रम) ज २।१३२
दुपएसिय (द्विप्रदेशिक) प ५।१५३,१५४,१५७,
१५९,१६०,१७६,१७७,१९२,१९३,२१३,
२१४; १०।७;११।४९; ३०।२६
दुपदेस (द्विप्रदेशिक) प १०।१४।१
दुपदेसिय (द्विप्रदेशिक) प ५।१२७,१३०,१३१;
१६।३९
दुप्पउत्तकाइया (दुष्प्रयुक्तकायिकी) प २२।२
दुप्पव्वइय (दुष्प्रव्रजित) उ ३।५८,६०,७६ से ७९
दुप्पवेस (दुष्प्रवेश) ज १।२४
दुफास (दुःस्पर्श) ज २।१३३
दुबत्तीस (द्वि द्वात्रिंशत्) सू १०।१३८ से १४१,
१४८,१५२,१२।२२
दुब्बल (दुर्बल) ज २।१३३
दुब्भि (दुर्) प १३।२७,३१;२३।१०७
दुब्भिक्खबहुल (दुर्भिक्षबहुल) ज १।१८
दुब्भिगंध (दुर्गन्ध) प १।४ से ९; २।२० से २७;
५।५,७,२०५; ११।५६;१७।१३६; २८।२०,
३२,६६ ज ५।५
दुब्भूय (दुर्भूत) ज २।४३
दुभागमंडल (द्विभागमण्डल) सू १५।३७
दुम (द्रुम) ज २।८,१३,२०;५।५०
दुय (द्रुत) ज ५।५७ अभिनय का प्रकार
दुरंतपन्तलक्खण (दुरन्तप्रान्तलक्षण) ज ३।२६,
३९,४७,१०७,११४,१२२,१२४,१३३
उ १।८९,११५,११६
दुरभि (दुरभि) प २३।४८
दुरस (दूरस) ज २।१३३
दुरहियास (दुरध्यास,दुरधिसह) प २।२० से २७
दुरुढ (आरूढ) ज ३।१७,२१,२२,३५,३६,७७,
९१,१७७,१७८,१८३,२०१,२०२,२१४,२१७;
५।२२,२६,४३
√दुरुह (आ + रुह्) दुरुहइ ज ३।२०,३३,५४,६३,
७१,८१,८४,१०६,११७,१३७,१४३,१६६,
२०४,२२४;५।४१,४२ उ १।१९ दुरुहंति
ज ३।१११;;४।५;५।५ दुरुहति प १७।१०९,
१११
दुरुहित्ता (आरुह्य) प १७।१०९ ज ३।२० उ १।१९
दुरूढ (आरूढ) उ १।१२४,१३१;४।१२;५।१४
दुरूव (दूरूप) ज २।१३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√**दुरूह** (आ+रुह्) दुरूहइ उ १।११०;४।१५ दुरूहेइ उ ४।१८
दुरूहित्ता (आरुह्य) उ १।११०;४।१५
दुरूहेत्ता (आरुह्य) उ ४।१८
दुल्लह (दुर्लभ) ज ३।११७ सू २०।६।१
दुव (द्वि) ज १।२५ चं ४।३ सू १।८।३ उ १।१११
दुवयण (द्विवचन) प ११।८६
दुवण्ण (दुर्वर्ण) ज २।१५,१३३
दुवार (द्वार) ज ३।८३,८५,८८ से ६०,६३,१०३, १५४,१५७,१६२,१८६
दुवालस (द्वादशन्) प २।६४ ज १।२० सू १।१३ उ २।१०
दुवालसंसिय (द्वादशास्रिक) ज ३।६४,१३५,१५८
दुवालसक्खुत्तो (द्वादशकृत्वस्) सू १२।२ से ६,११
दुवालसमा (द्वादशी) सू १०।१४१,१४६,१४८,१५५, १६०
दुवालसमी (द्वादशी) सू १०।१४८,१५०
दुवालसविह (द्वादशविध) प १।३४; १२।३७ ज ७।१०४ सू १०।१२६ उ ३।७६,१४३
दुविध (द्विविध) सू ४।१
दुविह (द्विविध) प १।१,२,४,१०,११,१६ से १८ २० से ३२,३४,४८ से ५१,५३,५७,५९ से ६१,६६,६७,६६,७५,७६,८१,८२,८८,९०, १००,१०२ से १२३,१२५ से १२६,१३१ से १३८;५।१,१२३;६।११५,११६;११।३१,३२, ३५,३६,४१;१२।७ से १३,१६ से १८,२०, २१,२३,२४,२७,३१ से ३३;१३।१,८,२२ २३,२७,३१;१५।१८,१९,४८,४९,६८,७१, ७२,७५,७६;१६।५,२८,३३,३५;१७।२,४,६, ९,१६,२३,२५-२७;१८।१३,२५,५५,६३,६७ ६८,७६,७९,८६,९४,९७,९९ १०१,१०६, १०९,१११,१२७;२१।४ से ७,९ से २०,४९, ५५,५८,५९,६१,६५,६६,७०; २२।२,३,८; २३।६,२६,२९,३२,३४,४८,५६,५७;२८।४, ४०,५०,६९; २६।१-५,८,९,११,१४;३०।१,५, ७,११,१२;३३।१;३४।१२;३५।१।२,३५।१२, १४,१६,१८,२३ ज २।१,५,६;५।१६;७।११४ सू १०।८६,१२१,१२४; १८।२०; २०।३ उ ३।३१,३८,४०,४२,४४
दुव्विसय (दुर्विषय) ज २।३१
दुसमइय (द्विसामयिक) प ११।७१;३६।६०,६७, ६८,७१,७५
दुसमयद्विठतीय (द्विसमयस्थितिक) प ११।५१
दुसमसुसमा (दुष्षमसुषमा) ज २।१४९
दुस्समदुस्समा (दुष्षमदुष्षमा) ज २।२,३,६
दुस्समसुसमा (दुष्षमसुसमा) ज २।२,३,६,४९
दुस्समा (दुष्षमा) ज २।२,३,६
दुहओ (द्वितस्,द्वय) ज ४।६१ सू १०।१३६;२०।७
दुहओवत्त (द्वितआवर्त) प १।४९
दुहणाम (दुःखनामन्) प २३।२०
दुहट्ट (दुघाट्ट) उ १।५२,७७
दुहता (दुःखता) प २३।१६
दुहतो (द्वितस्,द्वय)सू १०।१७३
दुहतोनिसहसंठिय (द्वितोनिषधसंस्थित) सू ४।३
दुहत्त (दुःखत्व) प २८।२६
दुहया (दुःखता) प २३।३१
दुहा (द्विधा) ज १।१९,२०,२३;४।१,४२,६२,९४, १०८,१७२
दूइज्जमाण (द्रूयमाण) ज ३।१०९ उ १।२,१७; ३।२९,९९,१३२;५।३६
दूभगणाम (दुर्भगनामन्) प २३।३८,१२४
दूमिय (दे० धवलित) सू २०।७
दूमिय (दून) उ १।५९,६३,८४
दूय (दूत) ज ३।६,७७,२२२ उ १।९२,१०७ से ११६,१२७
दूर (दूर) प २।४९,५०,५२,५३,६३;१७।१०६ ज ७।३६,३८ सू।२।१
दूरतराग (दूरतरक) प १७।१०८,११०
दूस (दूष्य) ज २।२४,६५,६९;३।६,२२२
दूसमदूसमा (दुष्षमदुष्षमा) ज २।१३०,१३८, १३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूसमसुसमा (दुष्षमसुसमा) ज २।१२१

दूसमा (दुष्षमा) ज २।१२६,१४०

दूसरणाम (दुःस्वरनामन्) प २३।३८,१२५

दूसि (दूष्य) प १७।११६

देय (देय) सू २०।९।२

देयड (दे० दृतिकार) प १।९७

देव (देव) प १।५२,१३०,१३८; २।३० से ३९, ४१ से ४३,४६,४७।१,४८ से ६३,२।६४।१४; ३।२६ से ३६,३८,२९,१३१,१३३,१३५,१३७, १३९,१८३;४।२५ से २७,३१ से ३३,३७ से ३९,४३ से ४५,४९,५५,१६५ से १६७,१७१, १७७ से १७९,१८३ से १८५,१८९ से १९१, १९५ से १९७,२०१ से २०३,२०७,२१३ से २१५,२२५ से २२७,२३७ से २४३,२४६, २४९,२५२,२५५ से २९९;६।२७ से ३८,४१ से ४३,५०,५२,५६,६५,७०,८१,८२,८५ से ८७,८९,९०,९२,९३,९५,९६,९८,९९,१०१, १०३,१०५,१०९,११०,११२,११३;७।८ से ३०;८।१०,११;९।११; १२।४५,५५।३,८७ से ९३,१०८,१०९,११४,११५,११७,१२५,१२९, १३२,१३९,१४३;१६।२५,२९,३१;१७।४९, ५१,५२,७१,७३,७४,७६,७८ से ८१,८३,८९; १८।५,११;२०।४९,२१।५१,५५,६१,६२,७०, ७१,७७,८३,९१ से ९३;२२।४१,४२,४५,७६; २३।३९,५४,८४,११४,१४६,१७२,१९४, १९६,१९८;२८।९७,१०२,१०५,१३३,१४३ से १४५;३३।१,१६ से १८,२४,२५;३४।१५, १६,१८ से २५;३६।५०,८१ ज १।१३,२४, ३०,३१,३३,३६,४५ से ४७,५१;२।६४,९०, ९५ से ९९,१०० से १०२,१०४ से ११६, १२०;३।२०;२४।१,२,२५ से २८,३०,३२।२, ३३,३८ से ४१,४३,४६ से ४९,५१,६३ से ६५,६८,७१ से ७४,७६,८४,९२,१११ से ११५,११९,१२३ से १२५,१३१।१,२,१३२ से १३४,१३६,१५०,१५१,१६७।१३,१७८,१८४, से १८६,१८८,१८९,१९१,१९२,१९८,१९९, २०७ से २१०,२१९,२२१,२२४,२२६;४।२, १३,१९,२०,५१ से ५४,६०,६१,८०,८४,८५, ९७,१०२,१०६,१०७,११२,११३,११४,१२०, १४१,१४२,१५०,१५९ से १६१,१६३,१६५, १६६,१७७,१८०,१८४,१८६,१८७,१९३, १९६ से २००,२०३,२०४,२०८ से २१२, २१५,२२६ से २३४,२३९,२४७,२४८,२५० से २५२,२६१,२६४,२६६,२६७,२७०,२७२, २७३,२७६,२७७; ५।१,३ से ५,१४,१५,१९, २२,२३,२६ से २९,३९,४२,४३,४५,४७,४९, ५०,५३ से ५६,६१,६७,६९ से ७४;६।१६; ७।५५,५६,५९,१६९,१७८।१,१८५,१८७, १८९,१९१,१९३,१९५,२१३,२१४ सू ९।१; १३।१७;१७।१;१८।२ से ४,१४ से १७,२१, २३,२५,२७,२९,३१,३३,३५;१९।२३,२४, २६,२७;२०।१,२,४,७ उ २।१३;३।५१,५६ से ६२,६५,६६,६९,७२,७५ से ९१,१५१, १५२,१५६,१६२ से १६५ ; ५।५,२९,३०,४२, ४३

देव (देव) सू १९।३६,३८ देव नामक द्वीप

देवअनण्णिआउय (देवासंज्ञ्यायुष्) प २०।६२,६४

देवउल (देवकुल) ज ५।५,७

देवकहकहग (देवकहकहक) ज ५।५७

देवकुमार (देवकुमार) उ ३।९२

देवकुमारिया (देवकुमारिका) उ ३।९२

देवकुरा (देवकुरु) ज ४।९४,९९,२०३,२०६ से २०८,२१३

देवकुरु (देवकुरु) प १।८७;१६।३०;१७।१६४ ज २।६;४।२०४।१,२०७,२०८,२१०।१

देवकुल (देवकुल) ज २।६५ उ ३।३६

देवगइ (देवगति) ज २।९०;३।२६,३९,४७,५६, ६४,७२,११३,१३३,१४५;५।५,४४,४७,६७

देवगइय (देवगतिक) प १३।२०

देवगति (देवगति) प ६।४,९

देवगतिपरिणाम (देवगतिपरिणाम) प १३।३

देवगतिय (देवगतिक) प १३।१५

देवगामि (देवगामिन्) ज १।२२,५०;२।५८;१२३, १२८,१४८,१५१,१५७;४।१०१

देवच्छंदग (देवच्छंदक) ज ४।२१६

देवच्छंदय (देवच्छंदक) ज १।४०;४।१३६,१४७, २१६

देवजुइ (देवद्युति) ज ३।२६,३६,४७,१२२,१२६, १३३

देवजुति (देवद्युति) ज ५।४४ उ ३।८५,१२२

देवज्जुइ (देवद्युति) उ ३।१२३

देवड्ढि (देवर्द्धि) ज ३।२६,३६,४७,१२२,१३३

देवता (देवता) चं ५।२ सू १।६।२

देवत्त (देवत्व) प १५।६६ से १०१,१०४ से १०६, १०८,११२,११४ से ११७,११६ से १२३, १२५,१२७ से १२६,१३१,१३२,१४३, उ २।१२;३।१५०,१६१;५।२८,४१

देवदारु (देवदारु) प १।४०।२

देवदाली (देवदाली) प १।३६।२;१७।१३०

देवदालिपुप्फ (देवदालीपुष्प) प १७।१३०

देवदुहदुहग (देवदुहदुहक) ज ५।५७

देवदूस (देवदूष्य) ज २।६५,१००,२११;५।५८ उ ३।१४,८३,१२०,१६१;४।२४

देवपव्वय (देवपर्वत) ज ४।२१२

देवमइ (देवमति) ज ३।१०६

देवय (देवता) प २।४८ ज ७।१२७।१,१६७।१

देवय (दैवत) ज २।६७;३।८१ सू १८।२३, उ १।१७,७२,८८,६२;५।३६

देवया (देवता) ज ३।३२,१०४,१०५;४।५३, १०६,२०४,२१०;७।३० सू १०।७८ से ८३

देवराय (देवराज) प २।५० से ५६ ज १।३१; २।८६ से ६३,६५,६७,६६,१०१,१०३,१०५, १०७,१०६,१११,११३,११४,११७ से ११६, १८६,२१७;४।२२१;५।१८;२० से २३,२६ से २६,३६ से ४१,४३ से ४८,५४,५६,६०, ६१,६२,६५ से ६८,७१ से ७३ उ ३।१२२, १५०

देवलोग (देवलोक) प २०।६१ ज २।४६,१५६; ३।१ उ २।१३;३।१८,८६,१२५,१५२,१६५; ४।२६;५।३०,४३

देवलोय (देवलोक) ज २।४६ उ ५।४

देवसंघाय (देवसंघात) ज ७।१७६

देवसयणिज्ज (देवशयनीय) उ ३।१४,८३,१२०, १६१;४।२४

देवसयसहस्सीसर (देवशतसहस्रेश्वर) ज ३।१२६।३

देवसिरि (देवश्री) उ ३।१७१

देवाउय (देवायुष्क) प २०।६३,२३।१८,३७,८०, १४६,१७०

देवाणंदा (देवानन्दा) ज ७।१२० सू १०।८८।३ उ ३।११३;४।२०

देवाणुप्पिय (देवानुप्रिय) ज २।६५,६७,१०१, १०५,१०७,१०६,१११,११४,१४६;३।५,७, १२,१५,१८,२१,२६,२८,३१,३४,३६,४१, ४७,४६,५२,५६,५८,६१,६४,६६,६६,७२, ७४,७६,७७,८३,६०,६१,६६,१०५,१०७, ११३,११४,१२५,१२६।४,१२८,१३३,१३८, १४१,१४५,१४७,१५१,१५४,१५७,१६४, १६८,१७०,१७३,१७५,१८०,१८३,१८८, १६१,१६६,२०७,२१२;५।३,५,७,१४,२२, २६,२८,४६,५४,६८,६६,७२,७३ उ १।१७, ३७,३६,४१,४४,५४,५७,६६,७६,८८,६८, १०७,१०६,१११,११३,११५,११६,१२१, १२३,१२७,१२६,१३१;३।१३,७८ से ८१, १०२,१०३,१०६,१०८,११२,११५,१३६, १३८,१३६,१४८;४।११,१४ से १६,१६,२२; ५।१५,१८,२७,३२,४०

देवाणुभाग (देवानुभाग) ज ३।१२६

देवाणुभाव (देवानुभाव) ज ३।२६,३६,४७,१२२, १३३;५।४४ उ ३।८५,१२२,१२३

देवाहिव (देवाधिप) ज ५।५४

देविंद (देवेन्द्र) प २।५० से ५६ ज १।३१;२।८६ से ६५,६७,६६,१०१,१०३,१०५,१०७,१०६,

१११,११३,११४,११८,११६;४।२२१;५।१८,
२० से २३,२६ से २६,३६,४०,४३ से ४८,
५४,५६,६० से ६२,६५ से ६८,७१ से ७३
उ ३।१२३,१५०

देविड्ढि (देवर्द्धि) ज ५।४४ उ ३।१७,८५,६४,
१२२,१२३,१६३;४।२५

देवित्त (देवीत्व) उ ३।१२०

देवी (देवी) प २।३० से ३३,३५,४१,४३,४८ से
५१;३।३६,१३२,१३४,१३६,१३८,१४०,
१८३;४।२८ से ३०,३४ से ३६,४० से ४२,
४६ से ४८,५२,५५,१६८ से १७०,१७४,१८०
से १८२,१८६ से १८८,१६२ से १६४,१६८
से २००,२०४ से २०६,२१० से २१२,२१६
से २२४,२२८ से २३६;१७।५०,७२,७३,७५,
७६,७८,८०,८२,८३;१८।६,८,१२;२३।
१६४,१६६,१६८ ज १।३,१३,३०,३३,३६,
४५;२।६०;३।५२ से ५८,६०,१४०,१४१,
१४३ से १४७,१४६;४।२,१७ से २०,२२,३३,
३४,५३,६४,८६,१५६,१६४,२०३,२३७,
२३८,२४८,२५० से २५२;५।१,५,१६,२६ से
२८,४२,४३,४५,४७,६७,७२,७३;७।१८३,
१८५,१८८,१६०,१६२,१६४,१६६,२१४;
चं ८ सू १।३;१८।२१,२३,२६,२८,३०,३२,
३४,३६;२०।४ उ १।१० से १३,१५,१७,१६
से २४,३० से ४१,४३,४४;४६,४८ से ५५,
५७,५८,७० से ७४,८८,६५,६७,६६ से १०२,
१०६,११०,११३,११४,१४४ से १४६;२।४ से
६,१६,१७,१६,२०;३।६०,६२,६४,१२१ से
१२५;४।२५,२६;५।१०,१२,१३,१७,२५,३०,
३१

देवुक्कलिया (देवोत्कलिका) ज ५।५७

देवोद (देवोद) सू १६।३८

देस (देश) प १।३,४;२।६४।११;४।४३,४५,४६,
४८,४६,५१,५२,५४;५।१२४,१२५;१५।५३;
५४,५७;१८।५६,६४,७७,८१,८३,८४,८६ से
६१,६६,१०८;२१।७४,२२।५५,५६,५८,७६
ज १।३०;३।३,२२४;४।२२,३४,८३,११३,
११४,१६६;५।२६;७।२१३ सू १।१६;६।१;
६।३;१०।१३८ से १५१,१६२ से १६६;
१२।३०;१३।२

देसपंत (देशप्रान्त) उ १।१३३,१३४

देसभाग (देशभाग) प २।१६,१७,३०,३१,४१,५०,
५२ ज २।१२,६५;३।३,११७;५।३५ सू ३।६८

देसभाय (देशभाग) प २।१८,१६,२८,५१,५६,६४
ज ३।७;५।३३,३८

देसमाण (दिशत्) ज २।७२

देसि (देशिन्) प २।४१

देसिय (देशित) ज ३।२२,२६,६३,६६ १०६,१६३,
१८०

देसूण (देशोन) ज १।१२,१४,१७,२३,३५,३७,५१;
२।४४,४५;४।११४

देसूणग (देशोनक) ज ३।२२५;४।६,३२,१४७,
१५५,२४२

देसोहि (देशावधि) प ३३।१।१,३३।३१ से ३३

देह (देह) ज ३।१०६

देहधारि (देहधारिन्) प २।४१ ज ३।३

देहमाण (दे० पश्यत्) ज ३।२२२;५।६७

दो (द्वि) प २०।५६ ज १।७ ; १।१४ उ १।१३५

दोच्च (द्वितीय) प ६।८०।१;३३।१६,३६।६२
ज ३।१२८,१५१,१६९;७।२३,२५,२८ से
३०,१५७,१६१,१६५,१७० सू १।१३,१४,
१६,१७,२१,२४,२७;२।३;६।१;१०।६४,६८,
१२७,१३६,१४०,१४४,१४५,१५८;११।२ से
४;१२।३,२०,२५;१३।१,१२,१३ उ १।३६,
४०,१११,१४३;२।१,१५,२१;३।१,२०,२२
२३,५१,५३ ६०,६१,७७,७८,१०८

दोच्चा (द्वितीया) प ३।१८३

दोणमुह (द्रोणमुख) प १।७४ ज २।२२,१३१;
३।१८,३१,३२,१६७।२,१८०;१८५,२०६,
२२१ उ ३।१०१

दोला (दे०) १।५१

दोवारिय (दौवारिक) ज ३।९,७७,२२२

दोस (दोष) प ११।३४।१; २२।२०; २३।६ ज ३।३२,११७ सू २।२; २०।९।६ उ ३।३५

दोसणिस्सिया (दोषनिश्रिता) प ११।३४

दोसपुरिया (दोषपूरिका) प १।९८

दोसिणा (दे० ज्योत्स्ना) चं २।४ सू १।६।४; १४।१ से ४; १६।१,२

दोसिणापक्ख ('दोसिणा'पक्ष) सू १३।१; १४।१ से ४,६,७

दोसिणाभा ('दोसिणा'आभा) ज ७।१८३ सू १८।२१;२०।६

दोसिणलक्खण ('दोसिणा'लक्षण) चं २।४ सू १।६।४

दोसिणालक्खण ('दोसिणा'लक्षण) सू १६।१

दोस्सिय (दौष्यिक) प १।९६

दोहग्ग (दौर्भाग्य) ज २।१५

दोहल (दोहद) उ १।३४,३५;४०,४१,४३,४४, ४९,७४

ध

धंत (ध्मात) प १।४८।५६ ज ३।२४

धंतधोयरुप्पपट्ट (ध्मातधौतरूप्यपट्ट) प १७।१२८

धण (धन) ज २।६४,६९;३।१०३; १६७।१४

धणंजय (धनञ्जय) ज ७।११७।२,१३२।१ सू १०।८६।२ ९७

धणवइ (धनपति) ज ३।१,३,१८,३१,९३,१८० १८३

धणिट्ठा (धनिष्ठा) ज ७।११२।१,१२८ से १३०, १३६,१३८,१४१,१४९,१५६,१५७ सू १०।१ से ६,८,२०,२३,२९,५७,६३,६४,७५,८०,९४, १२०,१३१ से १३३,१५२

धणु (धनुष्) प १।७५; २।६४।६; २१।४६,४७, ४७।१,२;२१।६५ से ६७;३६।८१ ज १।७,९, १०,२३,२५,३८,४०,४३;२।६,१६,५२,५६, ५८,८६,१२३,१५१,१५७,१५९,१६१; ३।३, २३,२४,३५,३७,९५,१३१,१५९,१६०,१७८; ४।१०,१२,५५,६२,८१,८६,९८,१०१,१०८, ११०,११४,१४७, ५४,२४८,२६२,२६५, २६८,२७१,२७४; ७।१८२,२०७ सू १।१४; १८।१३,२० उ १।२२,१३८,१४०

धणुग्गह (धनुर्ग्रह)ज २।४३

धणुप्पट्ठ (धनुष्पृष्ठ) ज १।१८,२०,२३,४८; ४।१,१७२

धणुपुहत्तिय (धनुःपृथक्त्विक) प १।७५

धणुवर (धनुर्वर) ज २।६९;३।७९,११६,११९, १२०,१६७।३,१८५,२०९

धणुह (धनुष्) ज ३।३१

धण्ण (धान्य) प ११।२६ से २८ ज २।६९;३।७९, ११६,११९,१२०,१६७।३,१८५,२०९ उ ३।४०;५।१४

धण्ण (धन्य) ज ५।५,४६,५८ उ १।३४,४०,४१, ४३,४४,७४;३।९८,१०१,१३१;५।३६

धन्न (धन्य) ज २।६४ उ ३।३८

धमाससार (धमाससार) प १७।१२५

धम्म (धर्म) प २०।१७,१८;२२,२५,२८,२९,३४, ४५ ज १।४;२।६४,७२,११३,१३३ चं ९ सू १।४ उ १।२,२०,२१;३।१३,१०२,१०३,१३४ से १३६,१३८,१४२,१४७; ४।१४; ५।२०,२७

धम्मंत (ध्मायमान) ज ३।११७

धम्मकहा (धर्मकथा) उ ३।७१

धम्मचरण (धर्मचरण) ज २।१२९,१५८

धम्मजागरिया (धर्मजागरिका) उ २।११;५।३६

धम्मणायग (धर्मनायक) ज ५।२१

धम्मत्थिकाय (धर्मास्तिकाय) प १।३;३।११४ से ११६,१२२; ५।१२४; १५।५३,५४,५७; १८।१२५

धम्मदय (धर्मदय) ज ५।२१

धम्मदेसय (धर्मदेशक) ज ५।२१

धम्मरुइ (धर्मरुचि) प १।१०१।१,१२

धम्मरुक्ख (धर्मरूक्ष) प १।४३।१

धम्मवर (धर्मवर) ज २।६३;५।२१,२८

धम्मसारहि (धर्मसारथि) ज ५।२१,
धम्मिय (धार्मिक) उ १।१७,१९,२४;४।१२,१३, १५
धय (ध्वज) उ ३।१०८,१८४
धर (धर) प २।३०,३१,४०।१०,२।४१,४९ से ५४
√**धर** (धृ) धरेइ ज ५।४६,६०,६६
धरण (धरण) ज २।३४,३५,४०।६ ज ३।१८५, २०९;५।५२
धरणि (धरणि) ज २।१३२
धरणिखील (धरणिकील) सू ५।१
धरणितल (धरणितल) प १७।१०७,१०६,१११ ज ३।६।१२,३५,१०९;४।२१३,२१५;५।२१, ५८
धरणिसिंग (धरणिश्रृंग) सू ५।१
धरणीयल (धरणीतल) ज ३।१०६,११७;५।५,४४ उ १।२३,६१
धरिज्जमाण (ध्रियमाण) ज ३।६,१८,७७,७८,९३, १८०,२२२
धरेंत (धरत्) ज ३।९२
धव (धव) प १।३६।३
धवल (धवल) प २।३१ ज १।३७;२।१५;३।९, १७,२१,३१,३४,३५,११७,१७७,१७८,२११, २२२;५।५८,७।१७८
धवलवसभ (धवलवृषभ) ज ५।६२,६३
धस (दे०) उ १।२३,६१
धाइकम्म (धातृकर्म) उ ३।११५
धाई (धातृ) उ १।६४
धाय (धातृ) प २।४७।२
धायइसंड (धातकीषण्ड) प १५।५५;१६।३०; १७।१६५ सू ८।१;१९।७,८।१,२,१९।९; १९।२२।२५
धायई (धातकी) प १।३५।२;१५।५५।१
धायईसंड (धातकीषण्ड) सू १९।२२।२३,२४
√**धार** (धारय्) धारे ज ३।१२६।१
धारणा (धारणा) ज ३।३
धारणिज्ज (धारणीय) प २२।१५,८०
धारा (धारा) ज २।१४१ से १४५;३।१२,११५, ११६,१२२,१२४
धाराहय (धाराहत) ज ५।२१
धारि (धारिन्) प २।३०,३१,४१,४९
धारिणी (धारिणी) ज १।३;२।१५ चं ८ सू १।३
धारेयव्व (धर्तव्य) सू २०।९।५
धावण (धावन) ज ३।१७८;७।१७८
धिइ (धृति) ज ४।८९ उ ४।२।१
धिइकूड (धृतिकूट) ज ४।९६
धिक्कार (धिक्कार) ज २।६२
धिति (धृति) सू २०।९।३,५
धुर (धुर) सू २०।८
धुरय (धुरक) सू २०।८।५
धुरा (धूर्) ज ३।३५,१७८,१८८
धुव (ध्रुव) ज १।११,४७;३।१६७,२२६;४।२२, ५४,६४,१०२,१५९;७।२१०
धुवराहु (ध्रुवराहु) सू २०।३
धूमकेउ (धूमकेतु) प २।४८ सू २०।८।४
धूमकेतु (धूमकेतु) सू २०।८
धूमप्पभा (धूमप्रभा) प १।५३;२।१,२०,२५; ३।१५,१९,२०,१८३;४।१६ से १८; ६।१४,७७,७८;१०।१;२०।७,४१;२१।६७; २३।७,१६
धूमवट्टि (धूमवर्ति) ज ३।१२,८८;५।५८
√**धूमाय** (धूमाय्) धूमाहिंति) ज २।१३१
धूया (दुहितृ) ज २।२७,६९ उ ३।११४;४।९,१९
धूलि (धूलि) ज २।१३१,१३२
धूव (धूप) प २।३०,३१,४१ ज १।४०;२।६५; ३।७,९,११,१२,२१,३४,८५,८८,४।१३०, १३९,२१८,२४२;५।७,५७,५८ सू २०।७ उ ३।५०,११०
धोत (धौत) ज ३।११७
धोय (धौत) प २।३१ ज ३।२४
धोरण (दे०) ज ३।१७८;७।१७८
√**धोव** (धाव्) धोवइ उ ४।२१ धोवसि उ ४।२२

धोव्व (दे०) ज ३।१६७।६

न

न (न) उ १।३७
नउय (नयुत) ज २।४
नउयंग (नयुताङ्ग) ज २।४
नंद (नन्द) ज २।६४;३।१८५,२०९
नंदण (नन्दन) उ २।२।१
नंदणवण (नन्दनवन) उ ५।६,७,३६ ३७
नंदा (नन्दा) उ १।३०,३१
नंदि (नन्दि) प १५।५५।१
नंदिघोस (नन्दिघोष) ज ३।१७८
नंदिय (नन्दित) ज ३।५,६,८,१५,१९ ३१,५३, ६२,७०,७७,८४,९१.१००,११४,१४२,१६५, १७३,१८१,१८९,१९९.२१३;५।२७
नंदीमुह (नन्दिमुख) ज २।१२
नंदीसरवर (नन्दीश्वरवर) ज २।११६
नक्खत्त (नक्षत्र) प १।१३३;२।२३ से २७,४८,५०, ६३ उ २।१२
नगर (नगर) प १।७४ ज २।७१;३।९,७७,२२२
नगरावास (नगरावास) प २।४३
नगरी (नगरी) उ १।११०
नग्गभाव (नग्नभाव) उ ५।४३
नच्चंत (नृत्यत्) ज ३।१७८ उ १।१३६
√नज्ज (ज्ञा) नज्जइ उ १।५४
नट्ट (नाट्य) प २।३०,३१,४९ ज १।४५
नट्टविहि (नाट्यविधि) उ ३।७,२१,२५,९२,१५६, १६९;४।५
नट्ठ (नष्ट) ज २।१३३
नत्ती (नप्त्री) उ ३।११४,११५,११९
नत्तु (नप्तृ) ज २।६९ उ २।२२
नत्तुय (नप्तृक) उ १।१०९,११०,११३,११४; ३।११४
नत्थि (नास्ति) प १।८१;५।१५५;३६।३३
नदी (नदी) प २।४,१३.१६ से १९,२८; १५।५५।२
नपुंसकलिंगसिद्ध (नपुंसकलिङ्गसिद्ध) प १।१२
नपुंसग (नपुंसक) प १।४९ से ५१,६०,७५,७६, ८१;११।२७
नपुंसगवेद (नपुंसकवेद) प १८।६२;२३।७५
नपुंसगवेदग (नपुंसकवेदक) प ३।९७;१३।१९
नपुंसय (नपुंसक) प ६।७९
नभ (नभस्) ज २।६५
√नमंस (नमस्य्) नमंसइ ज १।६;५।५८ उ १।१९;३।८१;४।१३;५।२० नमंसंति उ ४।१९;५।३६ नमंसीहामि उ ३।२९ नमंसेज्ज ज २।६७
नमंसमाण (नमस्यत्) उ १।१९
नमंसित्ता (नमस्यित्वा) ज १।६ उ १।१९;३।८१; ४।१४;५।२०
नमिऊण (नत्वा) चं १।२
नय (नय) सू १।२५;२।२;४।२ उ १।३८,४०,४२
नयण (नयन) उ १।१५.३५;३।९८
नयर (नगर) उ १।१२,२८,२९.१२१,१२२;३।४, २१,२४,८९,१५५,१६८,१७१;४।४,६.७,१३, १५,१८,२८;५।२४ से २६,४३
नयरी (नगरी) चं ६,७,८ सू १।१ से ३ उ १।९, १०,१२,१९ ९३,९५ ९७,९८,१०५ से १०७, ११०,१११,११५,१२२,१२५,१२६,१३०. १३२,१४४.१४५;२।४,५,१६,१७;३।९,११, २१ २७ से २९,४६,४८,५०,५५,९५,९६,९९, १००,१११,१५७,१५८,१६९,१७१;५।४,५.९, ११,१९,३०,३३
नर (नर) ज २।६५,७१
नरग (नरक) प २।२२ से २७,२।२७।३,४ उ १।२६
नरच्छाया (नरच्छाया) प १६।४७
नरय (नरक) प २।२३;६।८०।२ उ १।१४०
नरवइ (नरपति) उ १।१२४,१३१;५।१९
नलिण (नलिन) प १।४६,१।४८।४४
नलिणहत्थगय (हस्तगतनलिन) ज ३।१०
नलिणिगुम्म (नलिनीगुल्म) उ २।२।१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नव (नवन्) प १८।१ ज ३।१०६ सू १।१४ उ १।५३
नव (नवम) प १०।१४।३
नवणउति (नवनवति) सू १।२१
नवणउय (नवनवति) सू १।२६
नवणवति (नवनवति) सू १।२१
नवति (नवति) सू २।३
नवम (नवम) प १०।१४।१,२ उ १।७;२।२२
नवरं (दे०) प २।४०,४४,६२;५।४२,४३,४६, ५०,५४,६४,८७,६८,१०२,१०५,१०८,११२, ११७,१२२,१३२,१४८,१५१,१६७,१७०, १७५,१७८,१७६,१८२,१८५,१८८,१६४, १६८,२०४,२०५,२०८,२१३,२१५,२१६, २१६,२२२,२२५,२३५,२४०,२४३;६।४६, ५६,७४ से ७८,८०,८१,८३,८४,८६,८६;६२, ६४,१००,१०७,१०८,११२;११।८२,८३; १२।३१;१३।१५;१५।६०,६२,६६,६७,१४३; १७।६६;३६।६ सू १।२२ उ १।१४८;२।२०; ३।७,१३;४।५;५।१३
नवविह (नवविध) प १७।१३६
नह (नख) उ १।३६,५५,५८,८०,८३,६६,११६ ११८;३।१०६,१३८;५।१७
नाइ (ज्ञाति) उ ३।४२,११०,१११;४।१६,१८
नाइय (नादित) ज ३।७८;५।२२
नाग (नाग) प २।३०।१,२।४०।१० ज ३।१८५, २०६
नागकुमार (नागकुमार) प १।१३१;२।३५;४।४३ से ४५,५५;५।८;६।१८,६१
नागकुमारत्त (नागकुमारत्व) प ३६।२४
नागकुमारराय (नागकुमारराज) प २।३६
नागकुमारी (नागकुमारी) प ४।४६ से ४८
नागपव्वय (नागपर्वत) ज ४।२१२
नागमाल (नागमाल) ज २।८
नागलता (नागलता) प १।३६।१
नाडइज्ज (नाटकीय) ज ३।७४
नाण (ज्ञान) प २।६४।१२;५।४३,८७,१०२,१०५, ११५ ज २।७१,८५;३।२२३;५।२१ उ ३।४४
नाणत्त (नानात्व) प २।४०
नाणा (नाना) ज ४।१३
नाणाविह (नानाविध) उ ५।५
नादित (नादित) ज ३।२०६
नाम (नामन्) प १।१०१।५;२।३०।१,२।५८,६१; २३।१५१ ज १।४६;३।२४;४।२६२ चं ६,७, ८,१० सू १।१ मे ३,५,६ उ १।१ से ३,६ से १३,२८ से ३२,६५,१४४ से १४६,१४८; २।४ से ७,१६ से २०,२२;३।४,६;१०,२१, २७,२८,४८,५०,५५,८६,६५ से ६७,१३२, १५५,१५७,१५८,१७१;४।७ से ६,२८; ५।२।१,४ से ७,६,११ से १३,२१,२४ से २६, ४०,४१
नामधिज्ज (नामधेय) प २।६४
नामधेज्ज (नामधेय) ज ३।१३५।१ सू १०।८४ उ १।६३;२।६;३।१२६
नामय (नामक) चं ५।२ सू १।६।२
नायव्व (ज्ञातव्य) प १।४८।६,१।१०१।४,१२ सू १।२५;२।२
नारी (नारी) ज २।६५
नालिएरी (नालिकेरी) प १।४३।२,१।४७।१
नालियावद्ध (नालिकावद्ध) प १।४८।४१
नासा (नासा) ज ३।२११;५।५८
निउण (निपुण) प २।४१ ज ५।७
निओय (नियोग) ज ३।१७८
√निंद (निन्द्) निंदंति उ ३।११६
निंदिज्जमाण (निन्द्यमान) उ ३।११८
निंबकरय (निम्बकरज) प १।३५।३
निकुरंब (निकुरम्ब) उ ३।४६
निक्कंकड (निष्कङ्कट) ज १।३१
निक्कंकडछाया (निष्कङ्कटछाया) प २।३०,४६, ५६,६३,६४
निक्कंखिय (निष्काङ्क्षित) प १।१०१।१४
निक्कट्ठ (निकृष्ट) उ १।१३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निक्खंत (निष्क्रान्त) उ ३।१७०;४।२८;५।२७
√निक्खम (निर्+क्रम्) निक्खमइ उ १।११६
निक्खमण (निष्क्रमण) ज ४।१७७ उ ३।१०६; ४।१६
निक्खममाण (निष्क्रामत्) सू १।८।२,१।१२,१४, १६,१८,१६,२१ २४,२७; २।३;६।१
निक्खमित्ता (निष्क्रम्य) उ १।११६
निक्खित्त (निक्षिप्त) उ ३।४८,५०,५५
निक्खेव (निक्षेप) उ १।१४८
निगम (निगम) प १।७४ ज ३।६,७७,२२२
निगर (निकर) ज ३।१२,८८; ५।५८
√निगिण्ह (नि+ग्रह्) निगिण्हइ ज ३।२३,३७, ४४
निगिण्हित्ता (निगृह्य) ज ३।२३
निगोद (निगोद) प ३।६१ से ६३,७० से ७४,८२, ८४ से ८७,६४,६५,१८३; १८।४६
निगोय (निगोद) प १।४८।५६ से ५८;३।८७
निग्गंथ (निर्ग्रन्थ) ज २।७२ उ ३।३८,४०,४२, १०३,१३६; ४।१४;५।२०
निग्गंथी (निर्ग्रन्थी) ज ३।१०२,११५,११७,११८; ४।२२ उ ३।१०२,११५,११७,११८; ४।२२
√निग्गच्छ (निर्+गम्) निग्गच्छइ उ १।१६; ३।१३; ४।१३;५।१६
निग्गच्छित्ता (निर्गत्य) उ १।१६;३।२६;४।१३
निग्गय (निर्गत) चं ६ सू १।४ उ १।२,१६;२।६; ३।५,१२,२४,८६,१४७ १५५,१५६; ४।४,१०; ५।१४,२६,२७,३७,३८
निग्घोस (निर्घोष) ज ३।१२,७८
निघस (निकष) ज १।५
निचिय (निचित) ज ५।५
निच्च (नित्य) प २।२४,२६,२७
निच्चच्छणय (नित्यासनक, नित्यक्षणक) उ ५।५
निच्चालोय (नित्यालोक) सू २०।८।६
निच्चिट्ठ (निश्चेष्ट) उ १।६०,६१
निच्छुभिउकाम (निक्षेप्तुकाम) उ १।७३
निच्छय (निश्चय) उ ३।११
√निच्छुहाव (नि+क्षेपय्) निच्छुहावेइ उ १।११७
निच्छुहाविय (निक्षेपित) उ १।११६
निच्छूढ (निक्षिप्त) उ १।११८
√निज्जर (निर्+जॄ) निज्जरंति प १४।१८ निज्जरिंसु प १४।१८ निज्जरिस्संति प १४।१८ निज्जरेंसु प १४।१८
निज्जरा (निर्जरा) प १४।१८।१
निज्जाणसंठिय (निर्याणसंस्थित) सू ४।३
निज्जाणभूमि (निर्याणभूमि) ज ५।४८
निज्जाणमग्ग (निर्याणमार्ग) ज ५।४४ उ ३।६१
निज्जुत्त (निर्युक्त) प २।३०
निज्झर (निर्झर) ज २।४,१३ १६ से १६,२८
निट्ठियट्ठ (निष्ठितार्थ) प ३६।६४
निण्ण (निम्न) ज ३।७७,१०६
नितंब (नितम्ब) ज ४।१६४
नित्तेय (निस्तेजस्) उ १।३५
निदाया (दे०) प ३५।१८,१६
निदाह (निदाघ) ज ७।११४।२
निद्दा (निद्रा) प २३।६१
निद्दायमाण (निद्रायमाण) उ ३।१३०
निद्ध (स्निग्ध) प १।४ से ६; ५।५,७,१२६,२१४, २१८,२२१,२२६; १३।२२; १७।१३८ ज ३।१०६
निम्न (निम्न) उ ३।५५
निप्पंक (निष्पङ्क) प २।३०,३१,४६,५६,६३, ६४ ज १।३१
निप्पट्ठपसिणवागरण (निःस्पृष्टप्रश्नव्याकरण) उ ३।२६
निप्पाण (निष्प्राण) उ १।६०,६१
√निप्फज्ज (निर्+पद्) निप्फज्जए ज ७।११२।४ सू १०।१२६।४ निप्फज्जंति प ६।२६
निप्फन्न (निष्पन्न) ज २।१८
निप्फाव (निष्पाव) प १।४५।१ ज ३।११६ सेस
√निब्भंछ (निर्+भर्त्स्) निब्भंच्छेइ उ १।५७
निब्भंच्छणा (निर्भर्त्सना) उ १।५७,८२

निभ (निभ) ज ३।१०६
निमज्जग (निमज्जक) उ ३।५०
निमित्त (निमित्त) उ १।४१,४३
निम्मंस (निर्मांस) उ १।३५
निम्मम (निर्मम) प २।६४।१
निम्मल (निर्मल) प २।३१,४१,४६,५६,६३,६४ ज ७।१७८
नियग (निजक) ज २।६३ उ १।१६,१३६; ३।५०, ६८,११०,१११,१२८; ४।१३,१६,१८
नियत्त (निकृत्त) उ १।२३,६१
नियत्थ (दे०निवसित) उ ३।५१,५३,५५,६३,६७, ७०,७३
नियम (नियम) प ६।११६; १०।६,२१; ११।५५; २१।१०३; २२।५० से ५२,६७; २७।२ उ ३।३१
नियमसो (नियमशस्) प २।६४।११
नियमा (नियमा) ज ७।४८
नियल (निगड) उ १।६५,६६,६८,७२,८८,६२
निरंगण (निरङ्गण) प ११।२५
निरंजण (निरञ्जन) ज २।६८
निरंतर (निरन्तर) प ६।४७ से ५८,१०६,११०; १०।३५ से ३६,४१ से ५३; ११।७०; २०।१६, ४४,६०; २२।११,२७,५३; ३६।२४ ज ५।५,७
निरय (निरय) प २।१,१० ज २।१३३
निरयगति (निरयगति) प ६।१,६
निरयपत्थड (निरयप्रस्तर) प २।१
निरयावलिया (निरयावलिका) प २।१,१० उ १।५ से ८,१४२,१४३,१४८; २।१; ५।४५
निरयावास (निरयावास) प २।२५
निरवकंख (निरवकाङ्क्ष) ज २।७०
निरवयव (निरवयव) उ ३।७६
निरवसेस (निरवशेष) प ३४।२१ ज ४।१६०,२७७ उ १।१४७
निरालंबण (निरालम्बन) ज २।६८
निरालोय (निरालोक) उ १।२२,१४०
निरावरण (निरावरण) ज ३।२२३
निरुवक्कमाउय (निरुपक्रमायुष्क) प ६।११५,११६
निरुवलेव (निरुपलेप) ज २।६८
निरुवहय (निरुपहृत) उ ३।३२
निरोदर (निरुदर) ज २।१५
निलाड (ललाट) उ १।२२,११५,११७,१४०
निवइय (निपतित) ज ३।२५,३८,४६
√निवज्जाव (नि+सादय्) निवज्जावेइ उ १।४६
निवज्जावेत्ता (निप.द्य) उ १।४६
निवडिय (निपतित) उ १।२२,१४०
निवड्ढेत्ता (निवर्ध्य) ज ७।२७
निवड्ढेमाण (निवर्धयत्) ज ७।२५,२७,३० सू १।२०
निवत्त (निवृत्त) उ १।६३
निवयउप्पय (निपातोत्पात) ज ५।५७
निवह (निवह) ज २।६५; ३।६३,१५७,१६३
√निवार (नि+वारय्) निवारेंति उ ३।११७
निवारिज्जमाण (निवार्यमाण) उ ३।११८
निवुड्ढित्ता (निवर्ध्य) सू १।१४
निवुड्ढेत्ता (निवर्ध्य) सू ६।१
निवुड्ढेमाण (निवर्धमान) सू १।१४,२१,२७; २।३; ६।१
निवेदण (निवेदन) ज २।३०
निवेस (निवेश) प १।७४ ज ३।१८,६१,६६, १३१,१३७ उ १।१३३,१३४
निवेसिय (निवेशित) उ ३।६८
निव्वत्त (निर्वृत्त) प २।६७।१ ज ३।१४,४३,१४६
निव्वत्तणया (निर्वर्त्तन) प ३४।१,२,३
निव्वत्तणा (निर्वर्त्तना) प १५।६०,६५
निव्वत्तणाहिकरणिया (निर्वर्तनाधिकरणिकी) प २२।३
निव्वत्ति (निर्वृत्ति) प १।४८।५३
निव्वाघाइय (निर्व्याघातिक) ज ७।१८२
निव्वाघातिम (निर्व्याघातिन्,निर्व्याघातिम) सू १८।२०
निव्वाघाय (निर्व्याघात) ज २।७ ज ३।२२३
निव्विट्ठ (निर्विष्ट) ज ३।३२।१,२२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निव्विट्ठकाइय (निर्विष्टकायिक) प १।१२७
निव्विण्ण (निर्विण्ण) उ १।५२,७७
निव्वितिगिच्छा (निर्विचिकित्सा) प १।१०१।१४
निव्विसमाण (निविशमान) प १।१२७
निव्वुइकर (निर्वृतिकर) ज ५।३८
√निव्वुड्ढ (नि+वर्धय्) निव्वुड्ढेइ सू ६।१
निव्वुय (निर्वृत) उ १।६१,६२,८६,८७
√निव्वेड्ढ (निर्+वेष्टय्) निव्वेड्ढेइ सू २।२
निव्वेढेति सू २।२
निव्वेयण (निर्वेदन) उ १।६१,६२,८६,८७
निसंत (निशान्त) उ ३।१३८
निसढ (निषध) ज ४।६४ उ ५।२।१,५।१३,२०,
२२,२३,३१,३२,३४ से ४३
निसम्म (निशम्य) ज ३।९१ उ १।२१;३।१३;
४।१४;५।३०
निसामित्तए (निशमितुं) उ ३।१०२,१३४
निसास (निःश्वास) ज ३।२२१ उ ५।४३
√निसीय (नि+षद्) निसीयइ उ १।४१
निसीयित्ता (निषद्य) उ १।४१
निसीहिया (निषीधिका,नैषेधिकी) उ ४।२१ से २३
निसेग (निषेक) प २३।७४
निस्संकिय (निःशंकित) प १।१०१।१४
निस्सग्ग (निसर्ग) प १।१०१।१
निस्सासविस (निःश्वासविष) प १।७०
निहाण (निधान) प १।१।२
निहिरयण (निधिरत्न) ज ३।१६६ से १६८
√नीण (नी) नीणेइ उ १।६७
नीय (नीच) उ ३।१००,१३३
नीरय (नीरजस्) प २।४१,४९,५६,६३,६४
नील (नील) प १।४ से ६; ५।२०५;११।५३;
२८।२० ज ४।२६
नीलपत्त (नीलपत्र) प १।५१
नीलमत्तिया (नीलमृत्तिका) प १।१९
नीललेस्स (नीललेश्य) प १७।९४
नीललेस्सा (नीललेश्या) प १७।३७
नीलवंत (नीलवत्) ज ४।१४२।३,१७८,१८०,२०७
२२७
नीलासोय (नीलाशोक) प १७।१२४
नीली (नीली) प १।३७।१ नील
नीव (नीप) ज ५।२१
√नीसस (निर्+श्वस्) नीससंति प ७।१ से ४,
६ से ३०; १७।२५
नीसा (निश्रा) ज २।१३३
नीसास (निःश्वास) प १।४८।५३ ज २।४।१;
५।५८
नीहरण (निर्हरण) उ १।९२
नूणं (नूनम्) उ ३।३८
नेउर (नुपूर) ज १।२६
नेमि (नेमि) ज ३।३५
नेयव्व (नेतव्य) प २।४७।३; ३६।२७ ज ४।७५
सू २।२;४।२ उ १।१४८; २।२२;५।४५
नेरइय (नैरयिक) प १।५२,५३;२।२० से २७;
३।१० से २३ ३८,३९,१२६,१८३;४।१,२१
से २४;५।३ से ५,८,२२,२७ से ३४,३६,३७,
४०,४१,४४,४५;६।१० से १६,४५,४७,५१,
५८,६०,६५,६८,७०,७३ से ७८,८० से ८४,
८७,८८,९० से ९३,९६,९९,१०१ से १०३,
१०५,१०६,११०,११४,११७,११९,१२१;
७।१; ८।२,४,५;९।२,१४,२१,२४;१०।४,
५१; ११।४०,४१,१५।६०,६१,८८; १९।३१;
१७।९,१०१; १८।२; २०।६३;२७।३९;
२८।१०६;३६।२२ उ १।२६,१४०
नेरइयअसण्णिआउय (नैरयिकासंज्ञ्यायुष्क)
प २०।६४
नेरइयत्त (नैरयिकत्व) उ १।२६,२७,१४०
नेवत्थ (नेपथ्य) ज ३।१७८
नेसप्प (नैसर्प) ज ३।१६७।१
नेह (स्नेह) उ १।७२,७३,८७,८८,९२
नो (नो) प ५।२ सू १।१८ उ १।१५,३।३४;
४।२२
नोइंदियउवउत्त (नोइन्द्रियोपयुक्त) प ३।१७४

नोइंदियजवणिज्ज (नोइन्द्रिययापनीय) उ ३।३२, ३४

नोजुग (नोयुग) सू १२।७

नोपज्जत्तगनोअपज्जत्तग (नोपर्याप्तकनोअपर्याप्तक) प ३।११०

नोपज्जत्तनोअपज्जत्त (नोपर्याप्तनोअपर्याप्त) प ३।११०

नोपरित्तनोअपरित्त (नोपरीतनोअपरीत) प ३।१०९

नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धिय (नोभवसिद्धिकनोअभवसिद्धिक) प ३।११३

नोसंजतनोअसंजतनोसंजतासंजत (नोसंयतनोअसंयतनोसंयतासंयत) प ३।१०५

नोसंजयनोअसंजयनोसंजतासंजत (नोसंयतनोअसंयतनोसंयतासंयत) प ३।१०५

नोसण्णिनोअसण्णि (नोसंज्ञिनोअसंज्ञिन्) प ३।११२

नोसुहुमनोबादर (नोसूक्ष्मनोबादर) प ३।१११

प

पइट्ठ (प्रतिष्ठ) ज ७।११४।१

पइट्ठा (प्रतिष्ठा) ज ५।२१

पइट्ठाण (प्रतिष्ठान) ज ३।१६७।११,३।२०९, २१०;४।२६;५।५६

पइट्ठिल (प्रतिष्ठित) प २।६४।२

पइट्ठिय (प्रतिष्ठित) प २।६४।३; १४।१८।१

पइण्ण (प्रकीर्ण) ज ३।१२०

पइण्णग (प्रकीर्णक) प १।१०१।८

√पउंज (प्र+युज्) पउंजइ ज २।९०,९३;३।५६, १४५;५।२१,५८ पउंजंति ज २।१८; ३।११३; १८५,२०९; ५।३

पउंजमाण (प्रयुञ्जान) ज ३।१७८

पउंजित्ता (प्रयुज्य) ज २।९०

पउट्ठ (प्रकोष्ठ) ज ७।१७८

पउम (पद्म) प १।४६,१।४८।४१,४४,६२; २।४९;११।२५ ज १।५१;२।४,१५,१६;३।३, १०,१०९;२०९;४।६,७,१४,१५,१७ से २२, ३०,६०,६४,८४,१५४,१५५,२६६,२७२; ५।५५ ५६;७।१७८ उ २।२,९ से १३

पउम (कंद) (पद्मकन्द) प १।४८।४२

पउमंग (पद्माङ्ग) ज २।४

पउमगुम्म (पद्मगुल्म) उ २।२।१

पउमद्दह (पद्मद्रह) ज ४।३,४,६,२२,२३,३७, ३८,६४,८९,१४१;५।५५

पउमपत्त (पद्मपत्र) ज ५।३२

पउमप्पभा (पद्मप्रभा) ज ४।१५४,१५५।१,२२१

पउमभद्द (पद्मभद्र) उ २।२।१

पउमलता (पद्मलता) प १।३९।१

पउमलया (पद्मलता) ज १।३७; २।११,१०१; ४।२७;५।२८,३२ ३४;७।१७८

पउमवरवेइया (पद्मवरवेदिका) ज १।१० से १२, १४,२३,२५,२८,३२,३५,५१;४।१,३,२५,३१, ३६,४३,४५,५७,६२,६८,७२,७६,७८,८६, ९५,१०३,११०,११८,१४१,१४३,१४८,१४९, १७८,१८३,२००,२०१,२१३,२१५,२३४,२४० से २४२

पउमसेण (पद्मसेन) उ २।२।१

पउमा (पद्मा) प १।४८।४ ज ४।१५५।१,२२१

पउमहत्थगय (हस्तगतपद्म) ज ३।१०

पउमावई (पद्मावती) ज ५।१०।१ उ १।११, ९९ से १०२,१४४;२।४,७ से ९,१६;५।२५

पउमुत्तर (पद्मोत्तर) प १७।१३५ ज ४।२२५।१, २२६

पउमुत्तरा (पद्मोत्तरा) ज २।१७ चीनी,खांड

पउमुप्पलपिधाण (पद्मोत्पलपिधान) ज ३।२०९

पउय (प्रयुत) ज २।४

पउयंग (प्रयुताङ्ग) ज २।४

पउर (प्रचुर) ज २।१३१; ३।१०३ उ ५।५

पउरजंघा (प्रचुरजंघा) ज २।५३,१६२

पउरजण (पौरजन) ज २।६५

पउल (दे०) प १।४८।६

पउस (पओस) प १।८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउसिया (बकुसिका) ज ३।१११।१
पएस (प्रदेश) प १।४,१।४८।५८,५९;२।६४,
२।६४।११;३।१८०;५।१३२,१३९ से १४५,
१६०,१६१,१७९ १९५,२१४,२१६;१०।२ से
५,१८ से २४,२६ से ३०;११।५०;१५।१।१;
१५।१२,२५,५४;१७।१४१;२१।२।१;
२२।५६;३६।८२ ज २।१५;३।११७;५।३८;
६।१,३;७।१७८
पएसट्ठया (प्रदेशार्थ) प ३।१२२,१८०;५।२४,
२८,६८,७८,८९,११५,१३६,१३८,१४०,१४३,
१४७,१५०,१५४,१६३,१६६,१९३,१९७,
२००,२१४,२१८,२२१,२३०,२४२;१०।३,२७
से २९;१५।१३,२६,३१;१७।१४४ से १४६;
२१।१०४ उ ३।४४
पओग (प्रयोग) प १।१।५;१६।१ से ८,१८
ज ३।१०३,११५,१२४,१२५
पओगगति (प्रयोगगति) प १६।१७ से २१
पओगि (प्रयोगिन्) प १६।१० से १५
पओय (प्रयोग) उ ३।१०१
पंक (पङ्क) प १६।५४
पंकगति (पङ्कगति) प १६।३८,५४
पंकप्पभा (पङ्कप्रभा) प १।५३;२।१,२०,२४;
३।१४,२०,२१,१८३;४।१३ से १५;६।१३,
७६,७७;१०।१;२०।६,१०,४०;२१।६७;३३।६,
१६ उ १।२६,२७,१४०
पंकबहुल (पङ्कबहुल) ज २।१३२
पंकय (पङ्कज) ज ३।३५
पंकावई (पङ्कावती) ज ४।१९३ से १९६
पंकावती (पङ्कावती) ज ४।१९५
पंच (पञ्चन्) प १।७४ अ १।९ चं ३।३ सू १।७
उ १।२
पंच (पंचम) प १०।१४।४ से ६
पंचक (पञ्चक) प २३।१।४
पंचग (पञ्चक) प २३।१५५,१७७,१८०
ज ७।१३१।२
पंचगुलितल (पंचांगुलितल) ज ३।५९
पंचंगुलिया (पञ्चाङ्गुलिका) प १।४०।१
पंचग्गि ((पञ्चाग्नि) उ ३।५०
पंचणउय (पञ्चनवति) ज ४।११८
पंचतीस (पञ्चत्रिंशत्) सू १३।२५
पंचपएसिय (पञ्चप्रदेशिक) प १०।१०
पंचम (पञ्चम) प ३।१९,१८३;६।८०।१;
१०।१४।३;१२।३२;१७।६५;२२।४१,४२;
३३।१६;३६।८५,८७ ज २।८८;४।१०६;
७।१०१ से ११०,१३१।१ सू १०।७७,१२७;
९।३;११।२,६;१२।६;१३।१० उ २।२२;
३।७४,७९,१५४,१६६,१६७;५।१,३,४५
पंचमी (पञ्चमी) ज ३।२४।४;३७।२;४५।२,११८,
१२५,१३१।४ सू १०।९०;१२।२८
पंचमुट्ठिय (पंचमुष्टिक) ज ३।२२४ उ ३।११३
पंचय (पञ्चक) प २३।२६,२७,६१
पंचराइय (पञ्चरात्रिक) ज २।७०
पंचलइया (पंचलतिका) ज ३।८८
पंचवण्ण (पंचवर्ण) ज १।१३,२१,२६,३३,३७,
३९;२।७,५७,१२२,१२७,१४७,१५०,१५६,
१६४;३।१,७,२६,३९,४७,५६,६४,७२,८८,
११३,१३३,१३८,१४५,१९२;४।६३,११४;
५।३२,४३ सू २०।२
पंचवण्णिय (पंचवर्णिक) ज ३।११७
पंचविध (पञ्चविध) सू २०।७
पंचविह (पञ्चविध) प १।४,१४,१५,५५,५८,६९,
१२४,१३३,१३८;११।७२;१३।४,९,१२,२४
से २६,२८;१५।५८ से ६०,६२,६३,६५ से
६७;१६।५,१७,२५,२७;२१।२,३,५५,७५,७६,
९४;२३।१७,२३,२५,२७,४०,४१,४३,४४,४९,
५९;२४।१७,१८ ज २।१४५;३।८२,१८७,
२१८;७।१०५,१११,११२ सू १०।१२७ से
१२९;१९।२२।२१ उ ३।१५,८४,१२१,१६२;
४।२४;५।२५
पंचवीस (पञ्चविंशति) सू १।२१

पंचसइय (पञ्चशतिक) ज ४।१९२,१९८,२०४,
२१०,२३७,२६३,२६९,२७५
पंचसतर (पञ्चसप्तति) सू १९।२२।३२
पंचसत्तर (पञ्चसप्तति) सू १८।४
पंचाणुव्वइय (पञ्चानुव्रतिक) उ ३।७९
पंचाल (पाञ्चाल) प १।९३।२
पंचावण्ण (दे० पञ्चपञ्चाशत्) ज ७।८१,८४
पंचासीइ (पञ्चाशीति) ज ७।२५
पंचासीत (पञ्चाशीति) सू १३।१
पंचासीति (पञ्चाशीति) सू २।३
पंचिंदिय (पञ्चेन्द्रिय) प १।५२,५४,५५,६६,
१३८; २।१९,२८;३।१५३ से १५५,१८३;
४।१०५;५।३;६।१०७;१२।५;१३।१४;१५।३५;
१७।२३;२०।३४,३५; २१।४३,७०; २२।३१;
२३।१९५ ज ३।१६७।५
पंचिंदियरयण (पञ्चेन्द्रियरत्न) ज ३।२२०;
७।२०३,२०४
पंचेंदिय (पञ्चेन्द्रिय) प १।१४,६० से ६२,६६ से
६८,७६,७७,८१; ३।२४,४० से ४२,४८,४९,
१८३;४।१०४,१०६ से १५७;५।२२,८२,८३,
८५,८६,८८,८९,९२,९३,९६,९७;६।२१,२२,
५४,६५,७१,७८,८३,८७,८९,९२,१००,१०२,
१०५,१०७,११६; ९।६,७,१६,१७,२२,२३;
११।४६;१२।३१;१३।१८,१९;१५।१७,४६,
८७,९७,१०२,१०३,१०९,१२१,१३८;१६।७,
१४,२७;१७।३३,३५,४१ से ४३,६३ से ६८,
८९,९७,१०४;१८।१६,१८,२४;१९।४;
२०।१३,१७,२३,२५,२९,३४,४८;२१।२,७ से
१६,१९,२०,२९ से ३२,३६,४९,५१ से ५५,
५८ से ६२,६५,६८,६९,७१,७७,८२,८८,९४;
२२।७४,८७,९९;२३।४०,८९,१५०,१६७,
१७१,१७६,१७७,१९६,१९९ से २०१;२४।७;
२८।४७,४८,९८,११९,१३०,१३६,१३७,
१४२,१४४;२९।१५,२२;३१।४;३२।३;३३।१,
१२,२१,२८,३०,३६;३४।३,८;३५।१४,२१;
३६।७,४०,५१,५७,७२,७३,९२
पंजर (पञ्जर) प २।४८ ज ३।११७;४।४९
पंजलिउड (प्राञ्जलिपुट) ज ३।१२५,१२६;५।५७
उ १।१९
पंजलियड (प्राञ्जलिपुट) ज १।६;२।९०;३।२०५,
२०६;५।५८
पंडग (पण्डक) उ ३।३६
पंडगवण (पण्डकवन) प २१।८७ ज ३।२०८;
४।२१४,२४१,२४२,२४४,२४५,२४९,२५१,
२५२;५।४७,५५
पंडर (पाण्डुर) प २।३१;४०।८
पंडिय (पण्डित) ज ३।३२
पंडुकंबलसिला (पाण्डुकम्बलशिला) ज ४।२४४,
२४९
पंडुमत्तिया (पाण्डुमृत्तिका) प १।१९
पंडुय (पाण्डुक) ज ३।१६७।३
पंडुयय (पाण्डुक) ज ३।१६७।१,१७८
पंडुर (पाण्डुर) ज ३।११७,१८८
पंडुरोग (पाण्डुरोग) ज २।४३
पंडुलइयमुही (पाण्डुरकितमुखी) उ १।३५
पंडुसिला (पाण्डुशिला) ज ४।२४४ से २४७
पंति (पङ्क्ति) ज २।६५;३।२०४;४।११९
सू १९।२२।७,८,९
पंतिया (पङ्क्तिका) उ ३।११४
पंसु (पांशु, पांसु) ज २।१३३;३।१०९
पंसुकीलियय (प्रांशुक्रीडितक) उ ३।३८
√पकड्ढ (प्र+कृष्) पकड्ढइ ज ५।४६
पकड्ढिज्जमाण (प्रकृष्यमाण) ज ५।४४
√पकर (प्र+कृ) पकरेंति प ६।११४ से ११६;
२०।८ से १३ ज ७।५६ सू १९।२४
पकरेति प २०।६३
पकरेमाण (प्रकुर्वत्) प ६।१२३;२०।६३
पक्क (पक्व) प १६।५५
पक्कणिय (दे०) प १।८९
पक्कणी (दे०) ज ३।११।२

पक्कमंत (प्रकामत्) ज ३।१०६

पक्किट्टगसंठाणसंठित (पक्वेष्टकसंस्थानसंस्थित) सू १६।२६

पक्किट्टगसंठाणसंठिय (पक्वेष्टकसंस्थानसंस्थित) ज ७।५८

पक्कीलिय (प्रक्रीडित) ज ३।१,१२,२८,४१,४६,५८,६६,७४,१४७,१६८,२१२,२१३

पक्ख (पक्ष) प ७।२,७ से ३० ज २।४,६४,६६,८८;७।११५,११६,११८,११६,१२६,१२७ सू ६।१;८।१;१०।८५,८७,६०,६१

पक्खच्छाया (पक्षच्छाया) सू ६।४

√पक्खल (प्र+स्खल्) पक्खलेज्ज उ ३।५५

पक्खि (पक्षिन्) प ६।८०।१; ११।४; २११४७।१ ज २।१३१ सू २०।२

पक्खित्त (प्रक्षिप्त) प १२।३२ उ १।६०

√पक्खिप्प (प्र+क्षिप्) पक्खिप्पई ज ३।६८

√पक्खिव (प्र+क्षिप्) पक्खिवइ उ १।४६;३।५१ पक्खिवंति ज २।१२०;५।१६ पक्खिवेज्जाहि सू २०।६।३

पक्खिवित्ता (प्रक्षिप्य) ज २।१२० उ १।६१;३।४१

पक्खिविराली (पक्षिविराली) प १।७८

पक्खुभिय (प्रक्षुभित) ज ३।२२,३६,७८,६३,६६,१०६,१६३,१८०

पक्खेवाहार (प्रक्षेपाहार) प २८।४०,६६,१०२,१०३

पक्खेवाहारत्त (प्रक्षेपाहारत्व) प २८।४०,६६

पक्खोलणय (प्रस्खलत्) उ ३।१३०

पगइ (प्रकृति) ज २।१६; ३।३,११७; ७।१८० उ ५।४०,४१

पगइभद्द (प्रकृतिभद्र) ज १।४१;२।३६,४१

पगडि (प्रकृति) प २३।१।१

पगय (प्रगत) उ ५।२।१

पगरेमाण (प्रकुर्वत्) प ६।१२३

पगार (प्रकार) ज ३।८१

पगास (प्रकाश) प २।३१ ज २।१५; ३।३५,११७,१८८;४।१२५; ५।६२; ७।१७८ उ ५।६

√पगास (प्र+काश्) पगासइ ज ४।६१,२७३,७।१७८ पगासेति सू ३।१ पगासेति सू ३।२

पगिज्झिय (प्रगृह्य) उ ३।४२

√पगिण्ह (प्र+गृह्) पगिण्हइ ज ३।२०,३३,५४,६३,७१,८४,१३१,१३७,१४३,१६६,१८२ पगिण्हंति ज ३।१११

पगिण्हित्ता (प्रगृह्य) ज ३।२०

पग्गहेत्तु (प्रगृह्य) ज ३।१२,८८; ५।५८

पघंसिय (प्रघर्षित) ज ३।३५

पच्चक्ख (प्रत्यक्ष) ज ३।१,२४।३,३७।१,४५।१,१३१।३ उ ५।४

पच्चक्खयाविणीय (प्रत्यक्षविनीत) ज ३।१०६

पच्चक्खवयण (प्रत्यक्षवचन) प ११।८६

पच्चक्खाण (प्रत्याख्यान) प २०।१७,१८,३४

पच्चक्खाणावरण (प्रत्याख्यानावरण) प १४।७; २३।३५

पच्चक्खाणी (प्रत्याख्यानिनी) प ११।३७।१

पच्चणुभवमाण (प्रत्यनुभवत्) प २।२० से २७

पच्चणुभवमाण (प्रत्यनुभवत्) ज १।१३,३०,३६; ३।१२६,४।२ सू २०।७ उ १।११,६८,६६; ३।११४,११५,११६

पच्चत्थाभिमुहि (पश्चिमाभिमुखिन्) ज ४।४२,७७,२६२

पच्चत्थिम (पाश्चात्य) प ३।१ से ३७,१७६ १७८, ज १।१६,१८,२०,२३,२४,३५,४१,४६,४८,५१; ३।१,४४,६८,६६,६७,१२८;४।१,१६,२६,३७,४२,४५,४८,५५,५७,६२,७७,८१,८४,८६,६४,६८,१०३,१०८,१२६,१३५,१४३,१५१।२,१६२,१६७,१६६,१७२ से १७८,१८१,१८२,१८४,१८५,१६०,१६१,१६३,१६४,१६६,१६७,१६८,२०० से २०३,२०५,२०६,२०८,२०६,२१३,२१५,२२६,२३२,२३८,२५१,२६२,२६५,२६६,२७१,२७२,२७४,५।१०,३६; ६।१६ से २४,२६; ७।१७८ सू २।१; ८।१;१३।३२,१४,१६;१८।१४;

२०।२ उ ३।५४

पच्चत्थिमलवणसमुद्द (पाश्चात्यलवणसमुद्र) ज ४।२६८,२७७

पच्चत्थिमिल्ल (पाश्चात्य) प १६।२४ ज १।२०, २३,४८;२।११९,३।४७,७६,९५,१४९,१५०, १५९,१६१,१६४;४।३७,५५,६२,८१,८६,९८, १०८,१७२,२१२,२१३,२३०,२३१,२३८; ७।१७८ सू २।१;१०।१४२;१३।१४,१६

पच्चत्थुय (प्रत्यवस्तृत) ज ३।११७

√पच्चप्पिण (प्रति+अर्पय्) पच्चप्पिणइ ज ३।३२,१७१;५।७१ पच्चप्पिणंति ज ३।८, १३,१६,२९,४२,५०,५९,६७,७५,१४८,१६९, १७४,१७६,१९८,२००,२१३;५।७०,७३ पच्चप्पिणति ज ३।१९,५३,६२,७०,१४२, १६५,१८१;५।५ पच्चप्पिणह ज २।१०५; ३।७,१२,१५,४१,४९,५८,६६,७४,१३०,१४७, १६८,१७३,१७५,१९१,१९९,२१२;५।६९ ७२ उ १।१७;४।१६;५।१८ पच्चप्पिणामि उ १।१०९ पच्चप्पिणामो उ १।१२७ पच्चप्पिणाहि ज ३।१८,३१,५२,६१,६९,७६, ८३,९८,१२८,१४१,१५१,१५४,१६४,१७०, १८०;५।२८,६८ उ १।११५ पच्चप्पिणिज्जइ उ १।१२८ पच्चप्पिणेज्जा प ३६।९१

पच्चय (प्रत्यय) ज ३।१०९

पच्चामित्त (प्रत्यमित्र) ज २।२८

√पच्चाया (प्रति+आ+जन्) पच्चायाति ज ६।४ पच्चायाति ज २।६४ पच्चायाहिइ उ ५।४३

पच्चायात (प्रत्याजात) ज २।१३३

पच्चावड (प्रत्यावर्त) ज ५।३२

पच्चावरण्ह (प्रत्यापराण्ह) उ ३।५६,६४,६८,७१, ७४,७९

पच्चुट्ठित्तए (प्रत्युत्थातुम्) उ ३।५५

√पच्चुण्णम (प्रति+उत्+णम्) पच्चुण्णमइ ज ५।२१,५८

पच्चुण्णमित्ता (प्रत्युन्नम्य) ज ५।२१

√पच्चुत्तर (प्रति+उत्+तृ) पच्चुत्तरइ ज २।२८, ४१,४९ उ ३।५१

पच्चुत्तरित्ता (प्रत्युत्तीर्य) ज ३।२८ उ ३।५१

पच्चुप्पण्ण (प्रत्युत्पन्न) ज २।९०;३।२६,३९,४७, ५६,१३३,१३८,१४५;५।३,२२

√पच्चुवसम (प्रति+उप+शम्) पच्चुवसमंति ज ५।७

पच्चुवसमित्ता (प्रत्युपशम्य) ज ५।७

√पच्चुवेक्ख (प्रति+उप+ईक्ष्) पच्चुवेक्खइ ज ३।१८७

पच्चुवेक्खित्ता (प्रत्युप्रेक्ष्य) ज ३।१८७

पच्चोयड (दे०) ज ४।३,२५

पच्चोरुभित्ता (प्रत्यवरुह्य) ज ४।१३

√पच्चोरुह (प्रति+अव+रुह्) पच्चोरुहइ ज ३।६,२०,३३,५४,६३,७१,१४३,१५१,१६६, १८२,१८६,२०४,२१४;५।२१,४४ उ १।१९; ३।५१ पच्चोरुहंति ज ३।२१५;५।५,४५ पच्चोरुहिति ज ३।२८,४१ पच्चोरुहेइ ज ३।१११;४।१८

पच्चोरुहित्ता (प्रत्यवरुह्य) ज २।६५ उ १।१९, ३।५१;४।१५

√पच्चोसक्क (प्रति+अव+ष्वष्क्) पच्चोसक्कइ ज ३।१२,८८,१५५ पच्चोसक्कति सू २०।२ पच्चोसक्कित्था ज ३।८९,१०२,१५६,१६२

पच्चोसक्कित्ता (प्रत्यवष्वष्क्य) ज ३।१२

पच्छंभाग (पश्चाद्भाग) सू १०।४,५

पच्छा (पश्चात्) प ३४।१,२;३६।८५,८८ सू १०।५ उ ३।७,५१,५३,५४,९१,१०७,११८,१३९; ४।२१

पच्छाकड (पश्चात्कृत) सू ८।१

पच्छिम (पश्चिम) ज २।५५,५७ से ५९,६४,१२९, १५५,१५९;३।१३५।१

पच्छिमकंठभाओवगता (पश्चिमकण्ठभागोपगता) सू २।४

पच्छिमदारिया (पश्चिमद्वारिका) सू १०।१३१

पच्छिमग (पश्चिमक) प १७।७०

पच्छिमड्ढ (पश्चिमार्ध) प १६।३०

पच्छिमद्ध (पश्चिमार्ध) प १६।३०;१७।१६५

√पच्छोल (प्र+क्षालय्) पच्छोलेंति ज ५।५७

पच्छोववण्णग (पश्चादुपपन्नक) प १७।४,६,१६,१७

पजंपिय (प्रजल्पित) उ ३।६८

पज्जत्त (पर्याप्त) प १।१७,२२,३१,४८।६०, १।४६ से ५१,६०,६६,७५,७६,८१;२।१६ से ३६,४१ से ४३,४८ से ६३; ३।१।२,४३ से ४६,५३ से ६०,६४ से ७१.७५ से ८४,८८ से ६५,११०,१७४;४।५५,७८,८७,६०,६१, ६४,६७,१००,२३६,२४२,२४५,२४८,२५१, २५४,२५७,२६०.२६३,२६६,२६६,२७२, २७५,२७८,२८१,२८४,२८७,२६०,२६३, २६६,२६६;६।६८; १८।१।२;२१।६,१६,१८, २३ से ३४,३६,४०,४१,४४,४८,५०,५३,५५; २३।१६३,१६५

पज्जत्तग (पर्याप्तक) प १।२०,२३,२५,२६,२८, २६,४८ से ५१,५३,१३१ से १३३,१३५, १३७,१३८;२।१ से १६; ३।४२ से ४६,५२ से ६०,६३ से ७१,७४ से ८४,८७ से ८६,६१,६२, ६४,६५.११०,१४३,१४६,१८३; ६।७१,७२, ८३,६७,१०२,११३;११।३६,४१;१५।४६; २१।५,१०,१३,२०,४१,५२ से ५५,७२; ३४।१२; ३६।६२

पज्जत्तगणाम (पर्याप्तकनामन्) प २३।३८,१२०

पज्जत्तभाव (पर्याप्तभाव) उ ३।१५,८४,१२१, १६२;४।२४

पज्जत्तय (पर्याप्तक) प ३।७४,८७,८६,६०,६२, ६३,६५,१४६,१५२,१५५,१५८,१६१,१६४, १६७,१७०,१७३,१७४,१८३;४।३,६,६,१२, १५,१८,२१,२४,२७,३०,३३,३६,३६,४२, ४५,४८,५१,५४,५८,६१,६४,६७,६८,७१,७४, ७५,८१,८४,१०३,१०६,१०६,११२,११५, ११८,१२१,१२४,१२७,१३०,१३३,१३६, १३६,१४२,१४५,१४८,१५१,१५४,१५७, १६०,१६४,१६७,१७०,१७३,१७६,१७६, १८२,१८५,१८८,१६१,१६४,१६७,२००, २०३,२०६,२०६,२१२,२१५,२१८,२२१,२२४, २२७,२३०,२३३,२३६;६।७१,७२,७६,८३, ६७,६८,१०२;११।३१ से ३४;१८।६ से १२, १६ से २४,३१ से ३६,४०,४६ से ५१,५३, ५४,११३;२१।४०,४२,४४,४५;२३।१६६, १६६ से २०१; २८।१४२;३६।६२

पज्जत्ति (पर्याप्ति) प १।८४;२३।१६५,१६६, १६६ से २०१;२८।१०६।१,२८।१४२ उ ३।१५,८४,१२१,१६२;४।२४

पज्जव (पर्यव) प ३।१२४;५।१ से ७,६ से २०, २३,२४,२७ से ३४,३६ से ३८.४० से ४२, ४४,४५,४८,४६,५२,५३,५५,५६,५८,५६, ६२,६३,६७,६८,७०,७१,७३,७४,७७,७८, ८२,८३,८५,८८,८६,६२,६३,६६,६७,१०० से १०७,११० से ११२,११४,११५,११८, ११६,१२८ से १३०,१३३ १३७ से १३६, १४४,१४६,१४६,१५०,१५४,१५६,१६३, १६०,१६३,१६७,२००,२०३,२०५,२०७, २११,२१४,२१८,२२१,२२४,२२८,२३० से २३२,२३७,२३६.२४१,२४२,२४४;१०।५ ज २।५१,५४,७१,१२१,१२६,१३०,१३८, १४०,१४६,१५४,१६०,१६३;७।२०६ उ ३।४७

पज्जवसाण (पर्यवसान) प ११।६६,६७; १४।१८; २८।१६,१७,६२,६३;३६।२० ज २।६४;५।५६; ७।२३,२५,२८,३०,४५ सू १।१४,१६,१७, २१,२४,२७;२।३;६।१;१०।१;११।२ से ६ उ ३।४०

पज्जवसित (पर्यवसित) सू ११।२ से ६

पज्जवसिय (पर्यवसित) प ११।३०

पज्जुण्ण (प्रद्युम्न) प ५।१०

पज्जुवट्ठिय (प्रत्युपस्थित) प १६।५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

√**पज्जुवास** (परि+उप+आस्) पज्जुवासइ ज २।६०,६३;५।४८,५०,५८,६५ उ १।१६; ३।१३;४।१३;५।१६ पज्जुवासंति ज ३।२०५, २०६;५।४६ उ ५।३६ पज्जुवासामि उ १।१७ पज्जुवासिज्जा उ ५।३६ पज्जुवासीहामि उ ३।२६ पज्जुवासेज्ज ज २।६७

पज्जुवासणया (पर्युपासन) उ १।१७

पज्जुवासणिज्ज (पर्युपासनीय) ज ७।१८५ सू १८।२३

पज्जुवासमाण (पर्युपासीन) ज १।६ चं १० उ १।४;५।२२

पज्झंझमाण (प्रझञ्झमान) ज ५।३८

पट्ट (पट्ट) ज ३।२४,३५,७७,१०७,११७,१२४; ४।१३ सू २०।७ उ १।१३८

पट्टगार (पट्टकार) प १।६७

पट्टण (पत्तन) प १।७४ ज २।२२,१३१; ३।१८, ३१,३२,८१,१६७।२,१८०,१८५,२०६,२२१ उ ३।१०१

पट्टणपति (पत्तनपति) ज ३।८१

पट्टिया (पट्टिका) ज ३।७७,१०७,१२४ उ १।१३८

पट्ठ (पृष्ट) ज २।१५;३।१०६।११७ उ १।६७

पट्ठविय (प्रस्थापित) प २०।३६

पट्ठित (प्रस्थित) प १६।५२

पट्ठिय (प्रस्थित) प १६।५२

पड (पट) ज ३।६,८१,१२५,१२६,२२२

√**पड** (पत्) पडइ उ १।५१

पडमंडव (पटमण्डप) ज ३।८१

पडल (पटल) ज २।१३१; ३।११; ४।३,२५

पडलग (पटलक) ज ५।५५

पडलहत्थग (पटलहस्तक) ज ३।११

पडसाडय (पटशाटक) ज २।६६

पडह (पटह) ३३।२२ ज३।१२,७८,१८०,२०६

पडाग (पताका) प २।४१,४८ ज १।३७ २।१५; ३।३,३१

पडागसंठिय (पताकासंस्थित) सू १०।४२

पडागा (पताका) प १।५६,७१;१५।२६;२१।२६, ५७ ज ३।३५,१०८ से १११,१७८;४।४६; ५।४३;७।१३३।२,१८४ उ १।२२,१४०

पडागाइपडागा (पताकातिपताका) ज ३।७,१८४; ४।३०

पडागातिपडागा (पताकातिपताका) प १।५६

पंडिसुया (प्रतिश्रुत्) ज २।६५

√**पडिकप्प** (प्रति+क्लृप्) पडिकप्पेइ ज ३।१५, २१,३३ पडिकप्पेह ज ३।२१,३४,७७,६१, १७३,१७५,१६६उ १।१२३

पडिक्कंत (प्रतिक्रान्त) उ २।१२; ३।१५०,१६१; ५।२८;३६,४१

√**पडिक्कम** (प्रति+क्रम्) पडिक्कमेहि उ ३।११५

पडिगय (प्रतिगत) ज १।४;३।१२५;५।७४ चं ६ सू १।४ उ १।२,२४;३।७,२१,२५,४५,६२, ६६,६६,७२,८१,१४३,१५६;४।५;५।२०

√**पडिचर** (प्रति+चर्) पडिचरइ सू १।१८ पडिचरंति सू १।१८ पडिचरति सू १३।१२

√**पडिच्छ** (प्रति+इष्) पडिच्छइ ज ३।४०,४८, ५७,६५,७३,१३४,१३६,१४६,१५१,१५२ पडिच्छंति ज ५।१५ पडिच्छंतु ज ३।२६,३६, ४७,५६,६४,७२,१३३,१३८,१४५ उ ३।११२; ४।१६ पडिच्छाहि ज ३।७६,१२८,१५१

पडिच्छण्ण (प्रतिच्छन्न) ज २।८,६,१३

पडिच्छमाण (प्रतीच्छत्) ज २।६५;३।१८,३१, १८०,१८६,२०४

पडिच्छायण (प्रतिच्छादन) ज ४।१३ सू २०।७

पडिच्छित्ता (प्रतीष्य) ज ३।७६ उ १।३३

पडिच्छिय (प्रतीष्ट) उ ३।१३८

पडिजागरमाण (प्रतिजाग्रत्) ज ३।२०,३३,८४, १८२,१६० उ १।६५ १०५

पडिण (प्रतीचीन) सू १।१६

पडिणिकास (प्रतिनिकाश) ज ३।६५,१५६

√**पडिणिक्खम** (प्रति+निर्+क्रम्) पडिणिक्खमइ ज ३।५,१२,१४,१७,२१,२८,३०,३४,४१,४३, ४६,५१,५८,६०,६६,६८,७४,७७,८४,८५, १३६,१३६,१४०,१४७,१४६,१६८,१७२,

१७७,१८७,१८८,१९९,२१४,२१८,२१९,
२२२,२२४;५।२३ पडिणिक्खमंति ज ३।८,
१५३;५।७३ पडिणिक्खमेंति ज ३।१३
पडिणिक्खमित्ता (प्रतिनिष्क्रम्य) ज ३।५
पडिणिक्खमेत्ता (प्रतिनिष्क्रम्य) ज ३।१३
पडिणियत (प्रतिनियत) ज ३।८१
पडिणिव्वुड (प्रतिनिर्वृत) ज २।६८
पडिणीय (प्रत्यनीक) ज २।२८ सू २०।९।२
पडिदिसि (प्रतिदिश्) सू २०।२
पडिदुवार (प्रतिद्वार) प २।३०,३१,४१ ज ३।७,
१८३
√**पडिनिक्खम** (प्रति+निर्+क्रम्) पडिनिक्खमइ
उ १।४२;३।४६;४।१२ पडिनिक्खमंति
उ १।४५;३।१४५ पडिनिक्खमति उ ३।२९
पडिनिक्खमह उ १।१२१
पडिनिक्खमित्ता (प्रतिनिष्क्रम्य) उ १।४२;३।२९;
४।१२
पडिनिग्गच्छित्ता (प्रतिनिर्गत्य) उ १।१२४;५।१९
√**पडिनियत्त** (प्रति+नि+वृत्) पडिनियत्तति
प ३६।८८
पडिनियत्तित्ता (प्रतिनिवृत्य) प ३६।८८
पडिपाति (प्रतिपातिन्) प २३।१३४,१३५,१३८,
१४०,१४२,१४३,१५१ से १५५,१५७,१६०,
१६१,१६४,१६६ से १६८,१७१ से १७३
पडिपाद (प्रतिपाद) ज ४।१३
पडिपुच्छण (प्रतिप्रच्छन) उ १।१७
पडिपुच्छणिज्ज (प्रतिप्रच्छनीय) उ ३।११
पडिपुण्ण (प्रतिपूर्ण) प २१।७४ ज २।१५,७१,
८५;३।११७,१६७।१२,२०९,२२३,२२५;
५।५६,७।१७८
पडिपुण्णचंद (प्रतिपूर्णचन्द्र) प २।५४,६०;३६।८१
ज १।७ सू १।१४
पडिबंध (प्रतिबन्ध) ज २।६९ उ ३।१०३,११२,
१३६,१४८;४।११
पडिबुद्ध (प्रतिबुद्ध) उ १।३३;२।८;५।१३
पडिबोहण (प्रतिबोधन) ज ५।२६
पडिमंजरी (प्रतिमंजरी) ज ७।२१३
पडिमोयण (प्रतिमोचन) ज २।१२
पडिय (पतित) उ ३।१३१,१३४;४।९
पडियाइक्खिय (प्रत्याख्यात) ज ३।२२४
√**पडियागच्छ** (प्रति+आ+गम्) पडियागच्छइ
सू २।१
पडियागच्छित्ता (प्रत्यागत्य) सू २।१
पडिरह (प्रतिरथ) उ १।२२,१४०
पडिरूव (प्रतिरूप) प २।३० से ३२,३४,३५,३७,
३८,४१ से ४३,४५;४५।१,२,४६,४८ से ५२,
५८ से ६१,६३,६४ ज १।८ से १०,२३,२४,
२६,३१,३५,४२,५१;२।१२,१४,१५;३।१,
१९५;४।१,३,९,१३,२५,२७ से ३०,३३,४९,
१४६,१७८,२०३;५।३१,३३,३४,६२ सू १।१;
१८।८उ ५।४ से ६
पडिरूवग (प्रतिरूपक) ज ३।१९५;४।४,५,२६,
२७,८९,११८,१४४,२४६;५।३०,३१,४६,६७
पडिरूवय (प्रतिरूपक) ज ३।१९५,२०४ से २०६,
२१४,२१६;५।४१,४२,४४,४५
पडिरूविय (प्रतिरूपित) ज ३।१२०
√**पडिलाभ** (प्रति+लाभय्) पडिलाभेइ उ ३।१३४
पडिलाभेत्ता (प्रतिलाभ्य) उ ३।१०१
√**पडिलेह** (प्रति+लिख्) पडिलेहेइ ज ३।२२४
पडिलेहित्ता (प्रतिलिख्य) ज ३।२२४
पडिलोम (प्रतिलोम) ज २।६,६७
पडिलोमच्छाया (प्रतिलोमच्छाया) सू ९।४
पडिवक्ख (प्रतिपक्ष) प ५।२२६
√**पडिवज्ज** (प्रति+पद्) पडिवज्जइ प ३६।९२
उ ३।१०४;५।२० पडिवज्जति सू ८।१
पडिवज्जाहि उ ३।११५ पडिवज्जिसु
ज २।५१,५४,१२१ पडिवज्जिस्सइ
ज २।१२६,१३०,१३८,१४०,१४९,१५४,१६०,
१६३;३।१३४
पडिवज्जित्तए (प्रतिप्रत्तुम्) प २०।१७,१८,३४
उ ३।१११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिवज्जित्ता (प्रतिपद्य) ३।४५,१०४,१४३;५।२०
पडिवडितसम्मद्दिट्ठि (प्रतिपतितसम्यक्दृष्टि) प ३।१८३
पडिवण्ण (प्रतिपन्न) प ३६।९२ ज ३।१४,२६, ३०,३९,४३,४७,५१,५६,६०,६४,६८,७२, ११३,१३०,१३६,१३८,१४०,१४५,१४९, १७२ सू ८।१ उ ३।६६,७९
पडिवत्ति (प्रतिपत्ति) चं ९ सू १।७।३,१।८।१,२, ३,१।२० से २३,२५,२६;२।१ से ३;३।१;४।२, ३;५।१;६।१;७।१;८।१;९।१ से ३;१०।१, १३१;१७।१;१८।१;१९।१;२०।१,२ उ १।११६
पडिवया (प्रतिपत्) ज २।१३८
पडिवा (प्रतिपत्) ज ७।१२५
पडिवाइ (प्रतिपातिन्) प ३३।११,३३।३५
पडिवाति (प्रतिपातिन्) प ११।११४
पडिवादिवस (प्रतिपत्दिवस) ज ७।११६ सू १०।८५
पडिवाराइ (प्रतिपत्रात्रि) ज ७।११९
पडिवाराति (प्रतिपत्रात्रि) सू १०।८७
पडिवालेमाण (प्रतिपालयत्) उ १।१३३
√**पडिविसज्ज** (प्रति+वि+सर्जय्) पडिविसज्जइ उ ३।१०४ पडिविसज्जेइ ज ३।६,२,७,४०, ४८,५७,६५,७३,१२७,१३४,१३९,१४६,१५२, १७१,१८६,२१९ उ १।१०९;३।१३७
पडिविसज्जिय (प्रतिविसर्जित) ज ३।१७१ उ १।३३,११०
पडिविसज्जेत्ता (प्रतिविसर्ज्य) ज ३।६
पडिसंखेवेमाण (प्रतिसंक्षिपमाण) ज ५।४४
√**पडिसंवेद** (प्रति+सं+वेद्) पडिसंवेदेति प १५।३८
पडिसत्तु (प्रतिशत्रु) ज ३।१३५।१
√**पडिसाहर** (प्रति+सं+हृ) पडिसाहरइ ज ५।६७ पडिसाहरंति ज ३।१२५ पडिसाहरति प ३६।८५
पडिसाहरित्ता (प्रतिसंहृत्य) प ३६।८५ ज ३।१२५
पडिसाहरेमाण (प्रतिसंहरत्) ज ५।४४
√**पडिसुण** (प्रति+श्रु) पडिसुणंति ज ५।७३ पडिसुणेइ ज ३।१६,५३,६२,७०,७७,८४, १००,१४२,१६५,१८१;५।२३,६९ उ १।५५; ३।१४० पडिसुणेंति ज ३।८,१३,१०७,११३ १८९,१९२ उ १।४५ पडिसुणेमि उ १।८३
पडिसुणेत्ता (प्रतिश्रुत्य) ज ३।८ उ १।४५
पडिसेविय (प्रतिसेवित) ज २।७१
√**पडिसेह** (प्रतिषेध) प ६।७४ से ७८,८०,११०; २०।२५
√**पडिसेह** (प्रति+सेध्) पडिसेहेइ ज ३।११० पडिसेहेंति ज ३।१०८
पडिसेहित्तए (प्रतिषेद्धुम्) ज ३।११५,१२४,१२५
पडिसेहित्ता (प्रतिषिध्य) उ १।११९
पडिसेहिय (प्रतिषिद्ध) ज ३।९५,१०९,१११,१५९ उ १।२७
पडिसेहेयव्व (प्रतिषेधव्य) प ६।९८;१०।६ से ९
पडिस्सुइ (प्रतिश्रुति) ज २।५९,६०
√**पडिहण** (प्रति+हन्) पडिहणंति सू ५।१
पडिहत (प्रतिहत) प २।६४।२,३ ज ४।२५
पडिहता (प्रतिहता) सू ९।४
पडिहय (प्रतिहत) चं २ सू १।६;५।१
पडीण (प्रतीचीन) प २।१०,५० से ६२ ज १।१८, २०,२४,३।१;४।१,३,८६,८८,९८,१०३,१०८, १४१,१६२,१६७,१६९,१७८,१८५,१८७, १९१,२००,२०३,२४५,२५१;७।१०१ सू १।१९;२।१
पडीणउदीण (प्रतीचीनोदीचीन) सू ८।१
पडीणवाय (प्रतीचीनवात) प १।२९
पडीणा (प्रतीची) ज १।१८,२०,२३,२५, २८,३२,४८;३।१;४।१,३,५५,६२,८१,८६,८८, ९८,१०३,१०८,१७२,२०५,२१४,२४६, २५२,२६२,३६८
पडु (पटु) प २।३०,३१,४१,४९ ज १।४५;३।८२, १८५,१८७,२०९,२१८;५।१,१९;७।५।' ५८,१८४ सू १८।२३;१९;१९।२३,२६

पडुच्च (प्रतीत्य) प १।७४;२।७;६।६३;८।४,६, ८,१०;११।४६,५३,५५,५७,५६;१४।५; १८।१;२१।६५;२३।६३,१७६;२८।६,६,२० २६,३१,५२,५५,६८ से १०१ ज ४।५४ सू ६।२

पडुच्चसच्च (प्रतीत्यसत्य) प ११।३३,११।३३।१

पडुप्पण्ण (प्रत्युत्पन्न) प १२।१२,३२,३८ ज ७।३६,५२ सू १।२७

पडुप्पण्णभाव (प्रत्युत्पन्नभाव) प २८।६८ से १०१

पडुप्पण्णवयण (प्रत्युत्पन्नवचन) प ११।८६

पडेंसुया (प्रतिश्रुत्) ज ५।२५

पडोयार (प्रत्यवतार) प ३०।२५,२६ ज १।७,२१, २२,२६,२७,२६,३३,४६,५०;२।७,१४,१५, २०,५२,५६,५८,१२२,१२३,१२७,१२८,१३१, १३२,१३३,१३६,१४७,१४८,१५०,१५१, १५६,१५७,१५६,१६४;४।५६,८२,६६ से १०१,१०६,१३०,१३१

पडोल (पटोल) प १।३७।२,१।४०।१,१।४८।४८

पढम (प्रथम) प १।१०३,१०६,१०७,१०६,११०, ११३,११४,११६,११६,१२०,१२२,१२३; २।३१;६।८०।१;१०।१४।१ से ३;१२।१२, १६,३१,३२;२२।३३,४१;३६।८५,८७,६२ ज २।५५,५६,६३,६४,१३८,१५५ से १५८; ३।३०,१३५,२१७;४।१४२।३,१५३,१५४, १८०;७।१८,२०,२३,२६,२८,६७,१०१,१०६, १५६,१६०,१६४ चं ३।३ सू १।७,१३,१४, १६,२१,२४,२७;२।३;६।१;८।१;१०।६३, ६७,७७,१२७,१३८,१३६,१४३,१४४,१४८, १५०,१५२;११।२,३;१२।२,१६,२०,२४; १३।१,७,६,१०;१४।३,७ उ १।६ से ८,६३, १४२,१४३,१४८;२।१,३,१४,१५,२२;३।३, १६,२० ५०,५१;४।३,२७;५।३,४४

पढमणरीसर (प्रथमनरेश्वर) ज ३।१२६।३

पढमत्ता (प्रथम) प १।४८।५१

पढमया (प्रथम) ज ३।२११;४।१८०,५।५८ सू १०।५

पण (पञ्चन्) सू १०।५७

पणगजीव (पनकजीव) प ३६।६२

पणगमत्तिया (पनकमृत्तिका) प १।१६

√पणच्च (प्र+नृत्) पणच्चंति ज ५।५७

पणट्ठ (प्रनष्ट) प १।४८।३६

पणतालीस (पञ्चचत्वारिंशत्) प १।८४ सू १६।२०

पणतीस (पञ्चत्रिंशत्) सू १।२०

पणतीसतिभाग (पञ्चत्रिंशत्भाग) प २३।८६,८८, ६५ से ६८;११८,१५१

पणपण्ण (दे० पञ्चपञ्चाशत्) प ४।२८ ज ४।१७२ सू १२।७

पणय (दे०) प १।४६,१।४८।१,१।६५ ज २।१३३

पणय (प्रणत) ज ३।८१,१०६

पणयबहुल ('पनक'[1]बहुल) ज २।१३२

पणयाल (पञ्चचत्वारिंशत्) ज ७।१३४ सू १।२१

पणयालीस (पञ्चचत्वारिंशत्) ज १।६ सू ४।३ उ ५।२८

पणव (प्रणव) ज ३।१२,७८,१८०,२०६;५।५

पणवण्ण (पञ्चपञ्चाशत्) ज ४।५५

पणवण्णिय (पणपन्निक) प २।४१

पणवन्निय (पणपन्निक) प २।४७।१

पणवीस (पञ्चविंशति) प २।२२ ज १।२३ सू १।२१

पणवीसतिविध (पञ्चविंशतिविध) सू ६।४

पणाम (प्रणाम) ज ३।५,६,१२,८८

√पणाव (प्र+नामय्) पणावेइ उ १।११६ पणावेहि उ १।११५

पणावेत्ता (प्रणाम्य) उ १।११५

पणासित (प्रणाशित) सू २०।७

पणिधाय (प्रणिधाय) प १७।१११ सू ६।१

पणिय (पणित) ज २।२३

पणिवइय (प्रणिपतित) ज ३।१२५

पणिवय (प्र+नि+पत्) पणिवयामि ज ३।२४।१, १३।१।१

1. पनकः प्रतलः कर्दमः—टीका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणिहाय (प्रणिधाय) प १७।१०६ से १११
ज ४।५४,८०; ७।२७,३० सू १।१४,२४
पणुवीस (पञ्चविंशति) प ४।२७३ उ ३।७
पणुवीसइम (पंचविंशतितम) प १०।१४।३
पणट्ठ (प्रणष्ट) ज ३।३
पण्णट्ठ (पञ्चषष्टि) ज ७।६५,६६
पण्णट्ठि (पञ्चषष्टि) ज ४।१६५ सू १०।१५२
पण्णत्त (प्रज्ञप्त) प १।१ ज १।७ सू १।१४ उ १।४
पण्णत्तर (पञ्चसप्तति) ज ४।४५
पण्णत्तरि (पञ्चसप्तति) ज ४।१४२
पण्णत्ति (प्रज्ञप्ति) सू २०।६।१ उ ३।१६०
पण्णर (पञ्चदशन्) प १०।१४।४,५
पण्णरस (पञ्चदशन्) प १।७४ ज १।२३ सू १।१३
पण्णरसइ (पञ्चदशन्) सू १६।२२।१६
पण्णरसति (पञ्चदशन्) सू २०।३
पण्णरसम (पञ्चदश) ज ७।६७ सू १०।७७;
१२।६; १३।१,१०६; १४।३,७; १६।२२,
२०।३
पण्णरसविह (पञ्चदशविध) प १।८८; १६।१,२;
८,१८,१६
पण्णरसी (पञ्चदशी) सू १०।६०; १३।१; १४।३,७
पण्णरसीदिवस (पञ्चदशीदिवस) ज ७।११६
सू १०।८५
पण्णरसीराइ (पञ्चदशीरात्रि) ज ७।११६
पण्णरसीराति (पञ्चदशीरात्रि) सू १०।८७
√पण्णव (प्र + ज्ञापय्) पण्णवेइ ज ७।२१४
उ १।६८ पण्णवेहिंति सू १६।२२।३
पण्णवणा (प्रज्ञापना) प १।१।२,४,४६,१३८;
२८।६८ से १०१ उ ३।१०६
पण्णवणी (प्रज्ञापनी) प ११।४ से १०,२६ से २६,
३७।१,८७
पण्णवित्तए (प्रज्ञप्तुम्) उ ३।१०६
पण्णवीस (पञ्चविंशति) प २।२७।४
पण्णा (दे०) प २।४०।३ ज ५।४६
√पण्णा (प्र + ज्ञा) पण्णायए ज ७।१६६
पण्णावग (प्रज्ञापक) ज ३।६५,१५६
पण्णास (पञ्चाशत्) प २।५५ ज १।२३ सू १२।३,
८ उ ५।१३
पण्हय (प्रस्नत) उ ३।६८
√पतणतण (प्र + तनतनाय्) पतणतणाइस्सइ
ज २।१४१,१४५ पतणतणायंति ज ३।११५;
५।७
पतणतणाइत्ता (प्रतनतनाय्य) ज २।१४१
पतर (प्रतर) प १२।१२,१६
√पतव (प्र + तप्) पतवंति ज ५।५७
√पताव (प्र + तापय्) पतावेंति सू ६।१
पतिट्ठिय (प्रतिष्ठित) प १४।३
पतिसम (प्रतिसम) ज ३।६२,११६
पत्त (प्राप्त) प २।६४।२०; ३।६८; ५१।७२; २३।१३
से २३; ३६।६४।१ ज २।८५; ३।२६,३६,४७,
१२२,१२६,१३३; ४।७ उ ३।८५,६८,१०१,
१२२,१५०,१६१; ४।२५; ५।२३,२८,३१,३६,
४१
पत्त (पत्र) प १।३५,३६,४७।१,१।४८।६,१६,२६,
३६,४५,४७,४६,५१,६३ ज २।८,६,१२,१५,
६८,१४५,१४६; ३।११।३,३।१२,८८,६८,
१०६;४।३,२५; ५।५,५८; ७।१७८ उ ३।५०,
५१,५५
पत्त (प्राप्त, पात्र) उ १।१२८
पत्तउर (पत्तूर) प १।३७।३
पत्तकयवर (पत्रकचवर) ज २।३६
पत्तच्छण्ण (पत्राच्छन्न) ज २।१२
पत्तट्ठ (दे०) ज ५।५
पत्तपुड (पत्रपुट) ज ४।१०७
पत्तल (पत्रल) ज २।१५; ३।१०६; ७।१७८ चं १।१
पत्त (वासा) (पत्रवर्षा) ज ५।५७
पत्तविच्छुय (पत्रवृश्चिक) प १।५१
पत्तामोड (पत्रामोट) उ ३।५१
पत्तासव (पत्रासव) प १७।१३४
पत्ताहार (पत्राहार) प १।५० उ ३।५०
पत्तिय (पत्रित) उ ३।४६

√पत्तिय (प्रति+इ) पत्तिएज्जा प २०।१७, १८,३४ पत्तियामि उ ३।१०३

पत्तेय (प्रत्येक) प १।४८।४७,४७,४६,६०;२।४८; ६।१८;६।४;१०।१४;१६।१५ ज १।४६; ३।२०६;४।५,२७,११०,११४,११६,११८, १२२,१२५,१२८,१३६;५।१ से ३,५,७,३१, ४२,५६ उ १।१२१,१२२,१२६

पत्तेयजिय (प्रत्येकजीव) प १।४८।६

पत्तेयजीविय (प्रत्येकजीवित) प १।३५,३६

पत्तेयबुद्धसिद्ध (प्रत्येकबुद्धसिद्ध) प १।१२

पत्तेयसरीर (प्रत्येकशरीर) प १।३२,३३,४७; ४७।२,३; ३।७२ से ७४,८१,८४ से ८७,६५, १८३;१८।४४,५२

पत्तेयसरीरणाम (प्रत्येकशरीरनामन्) प २३।३८, १२१

पत्थ (पथ्य) ज ४।३,२५

पत्थड (प्रस्तट) प २।१,४,१०,१३,४८,६० से ६२ ज ४।४६

पत्थाइत्तए (प्रस्थातुम्) उ ३।५५

पत्थाण (प्रस्थान) उ ३।५१,५३,५५

पत्थिज्जमाण (प्रार्थ्यमान) ज २।६५; ३।१८६,२०४

पत्थिय (प्रार्थित) ज ३।२६,४७,५६,८७,१२२, १२३,१३३,१४५,१८८;५।२२ उ १।१५,५१, ५४;६५,७६,७६,६६,१०५;३।२६,४८,५०, ५५,६८,१०६,११८,१३१;५।३६,३७

पत्थिय (प्रस्थित) उ ३।५१,५३,५५

पत्थिव (पार्थिव) ज ३।३

पद (पद) प १।१०१।७;१२।३२;१८।१।२; २८।१४५;३६।७२ ज ३।३२ सू १०।६३ से ७४

पदाहिण (प्रदक्षिण) सू १६।२२।१०,११; १६।२३

√पदीस (प्र+दृश्) पदीसई प १।४८।१० से १७,१६ से २३ पदीसए प १।४८।११ से १३ पदीसति प १।४८।२५ से २६ पदीसती प १।४८।१८,२४

पदेस (प्रदेश) प १।३,४;२।६४।१,११;३।१२४, १८०,१८२;५।१२४,१२५,१३१,१६१,१७७, १७६,१६३,२१६,२१८;१०।२,४,५,१८,१६, २१ से २३,२५,२६;१२।३०,५३,५७; १७।११४।१;२२।५८,७६;२८।५,५१ ज २।६५; ४।१४३ सू १६।२६

पदेसघण (प्रदेशघन) प २।६४।५

पदेसट्ठता (प्रदेशार्थ) प ३।११६ से १२०,१२२

पदेसट्ठया (प्रदेशार्थ) प ३।११५,११६,१२०,१२२, १७६ से १८२;५।५,७,१०,१४,१६,१८,२०,३०, ३२,३४,३७,४१,४५,४६,५३,५६,५६,६३,७१, ७४,८३,८६,६३,६७,१०१,१०४,१०७,१११, ११६,१२६,१३१,१३४,१४५,१६६,१७२, १७४,१७७,१८१,१८४,१८७,१६०,२०३, २०७,२११,२२४,२२८,२३२,२३४,२३७, २३६;१०।३,४,५,२६,२७;१७।१४४,१४६; २१।१०४

पदेसणामणिहत्ताउय (प्रदेशनामनिधत्तायुष्क) प ६।११८

पदेसणामनिहत्ताउय (प्रदेशनामनिधत्तायुष्क) प ६।११६,१२२

√पधार (प्र+धृ) पधारेइ ज ५।७२,७३ पधारेति प २२।४

पधोत (प्रधौत) ज ३।१०६

पन्नरस (पञ्चदशन्) प १।८४

पन्नरसविह (पञ्चदशविध) प १।१२; १६।३६

पप्प (प्राप्य) प १६।४६; १७।११५ से १२२, १४८,१५४; २३।१३ से २३; २८।१०५; ३४।१६

पप्पडमोदय (पर्पटमोदक) प १७।१३५

पप्पडमोयय (पर्पटमोदक) ज २।१७

पप्फुल (प्रफुल्ल) ज ४।३,२५

पब्भट्ठ (प्रभ्रष्ट) ज ३।१२,८८;५।७,५८

पब्भार (प्राग्भार) प २।१ ज ३।८८,१०६ उ १।२७,१४०; ५।५

पभंकर (प्रभङ्कर) सू २०।८,२०।८।७

पभंकरा (प्रभङ्करा) ज ४।२०२;७।१८३

सू १८।२१,२४;२०।६

पभंजण (प्रभञ्जन) प २।४०।७

पभणिय (प्रभणित) उ ३।६८

पभव (प्रभव) प ११।३०।२

√पभव (प्र+भू) पभवति प ११।३०।१

पभा (प्रभा) प २।३०,३१,४०।१०;२।४१,४६ ज ३।३५;२११;४।२२,३४,६०,२७२;५।१८, ३२

पभाव (प्रभाव) ज ३।६५,१५६,२२१

पभावई (प्रभावती) उ १।३३

पभावणा (प्रभावना) प ११।०१।१४

पभास (प्रभास) ज ४।२७२;६।१२ से १४

√पभास (प्र+भाष्) पभासइ ज ४।२११

√पभास (प्र+भास्) पभासंति ज ७।१ पभासिंसु ज ७।१ सू १६।१६ पभासिस्संति ज ७।१ सू १६।१ पभासेंति ज ७।५१,५८ सू १६।१ पभासेंसु सू १६।१ पभासेति सू १६।१

पभासंत (प्रभासमान) सू १६।१५।२

पभासतित्थ (प्रभासतीर्थ) ज ३।४३,४४,४६

पभासतित्थाधिपति (प्रभासतीर्थाधिपति) ज ३।४६

पभासतित्थाहिवइ (प्रभासतीर्थाधिपति) ज ३।४७

पभासतित्थकुमार (प्रभासतीर्थकुमार) ज ३।४७ से ४६,५१

पभासेमाण (प्रभासमान) प २।३० से ३३,३५,३६, ४१,४८ से ५२,५८

पभिइ (प्रभृति) ज २।१४६;३।८६,१७८,१८६, १८८,१८६,२००,२१०,२१६,२१६,२२१ उ ३।१०१;५।१०,१७,१६,३६

पभिति (प्रभृति) ज ३।१० सू १६।२२।२५

पभु (प्रभु) ज ५।५,४६;७।१८३,१८४,१८५ सू १८ से २३ उ ५।३२

पभूय (प्रभूत) ज ३।८१,१०३,१६७।१४;५।७

√पमज्ज (प्र+मृज्) पमज्जइ ज ३।१२,२०,३३, ५४,६३,७१,८८,१३७,१४३,१६६

पमज्जित्ता (प्रमृज्य) ज ३।१२

पमत्त (प्रमत्त) प १७।३३;२१।७२ ज ५।२६

पमत्तसंजत (प्रमत्तसंयत) प ६।६८

पमत्तसंजय (प्रमत्तसंयत) प ६।६८;१७।२५;२२।६१

पमद्द (प्रमर्द) ज ७।१२६ सू १०।७५ उ १।१३६

पमद्दण (प्रमर्दन) ज ५।५

पमाण (प्रमाण) प ११०।१६;१२।१२,३८; १५।१०,२३;२१।११,२१।८४,८६,८७,६० से ६३;३०।२५,२६;३३।१३;३६।५६,६६,७०, ७४ ज १।३२,३५,४१;२।४;६।१,१५,१३३, १३८,१४१ से १४५;३।१०६,११७,१३८, १६७।३;४।१,६,२५,६४,७०,७६,८६,६०, १०६,१२३,१३३,१३६,१४०।२,१३४ से १६०, १६२ से १६५,१७४,१७५,१६४,२०२,२२२।१, २३५,२३६,२४६,२५०,२५१;५।४६,४६; ७।३५,१६८।२,१७८ सू १।२७;२।३;४।६ उ १।१३८;३।१११

पमाणभूय (प्रमाणभूत) उ ३।११

पमाणमित्त (प्रमाणमात्र) ज ३।६५,११५,११६, १५६;५।३८

पमाणमेत्त (प्रमाणमात्र) ज १।४०;२।१३३,१३४, १४१ से १४५;३।१६,८८,६२,११६,११६, १२२,१२४;४।१०;५।७,५८;६।७

पमाणसंवच्छर (प्रमाणसंवत्सर) ज ७।१०३,१११ सू १०।१२५,१२८

पमुइय (प्रमुदित) प २।४१ ज १।२६;२।६५;३।११, १२,२८,४१,४६,५८,६६,७४,१४७,१६८, २१२,२१३ सू १।१

पमुह (प्रमुख) ज ७।१७८ सू २०।८;२०।८।५

पमोय (प्रमोद) ज ३।२१२,२१३,२१६

पम्ह (पक्ष्मन्) प २।४६;४।२०६,२१०,२१२; २१२।१

पम्ह (पद्म) ज १।५,२५१

पम्हकूड (पक्ष्मकूट) ज ४।१८४ से १८७,२१०

पम्हगंध (पद्मगंध) ज २।५०,१६४;४।२०६,२०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पम्हगावई (पक्ष्मावती) ज ४।२१२,२१२।१

पम्हल (पक्ष्मल) ज ३।९,२११,२१२;४।५८

पम्हलेस (पद्मलेश्य) प १७।१६८

पम्हलेसट्ठाण (पद्मलेश्यास्थान) प १७।१४६

पम्हलेसा (पद्मलेश्या) प १७।१२१

पम्हलेस्स (पद्मलेश्य) प ३।९९;१३।२०;१६।४९;
१७।३५,५६,६४,६६ से ६८,७१.७३,७९ से
८१,८३,८४,११२,१६७,१८।७३;२८।१२३

पम्हलेस्सट्ठाण (पद्मलेश्यास्थान) प १७।१४६

पम्हलेस्सा (पद्मलेश्या) प १६।४९;१७।३५,३६,
५४,११७,११८,१२१,२२५,१२७,१२९,१३४,
१३७,१४४,१५३ से १५५

पम्हलेस्सापरिणाम (पद्मलेश्यापरिणाम) प १३।६

पम्हावई (पक्ष्मावती) ज ४।२०२।२,२१२

पय (पद) प १।१०१।७;२२।४५;२३।१४६;
२८।१।२;२८।१२३;३६।६९,७२ ज ३।६,१२,
८८,१५५,१६७।७;५।२१,५८;७।१५६ से
१६७ उ ३।१०१,१३४

पयंग (पतङ्ग) प १।५१।१

पयग (पतग, पदक) ज २।४१,२।४७।१

पयडि (प्रकृति) प २३।१।१

पयणु (प्रतनु) ज २।१६

पयत (पतग,पदग) प २।४७।३

पयत (प्रयत) ज ३।१२ ८८;५।५८

पयत्त (प्रवृत्त) ज ५।२४,५७

पययपइ (पतगपति,पदगपति) प २।४७।३

पयर (प्रतर) प १।४८।६०;१२।८,२७,३६,३७

पयरग (प्रतरक) ज ३।१०९;५।३८,६७

पयरय (प्रतरक) प ११।७५

पयराभेद (प्रतरभेद) प ११।७५,७९

पयराभेय (प्रतरभेद) प ११।७३

पयला (प्रचला) प २३।१४

पयलाइय (दे०) प १।७६

पयलापयला (प्रचलाप्रचला) प २३।१४

पयलिय (प्रचलित,प्रगलित) ज ३।६;५।२१

पयल्ल (प्रकल्प) सू २०।८,२०।८।५

पया (प्रजा) ज २।६४;३।१८५,२०९

√पया (प्र+जन्) पयाएज्जा उ ३।१०१ पयामि
उ १।७८;३।९८ पयाहिइ उ ३।१३९

पयात (प्रयात) ज ३।१४,१५,३१,४३,४४,५१,
५२,६०,६१,६८,६९,१३०,१३१,१३६,
१३७,१४०,१४१,१४९,१५०,१७२

पयाय (प्रयात) ज ३।३०,१४६,१६७,१७२

पयाय (प्रजात) उ १।५३;३।१३४

पयायमाण (प्रजनयत्) उ ३।१२९

पयार (प्रचार) ज २।१३१

पयालवण[1] (प्रगालवन) ज २।९

पयावइ (प्रजापति) ज ७।१३०,१८६।३

पयावइदेवया (प्रजापतिदेवता) सू १०।८३

पयाहिण (प्रदक्षिण) ज १।६;२।९०;३।५;५।५,
४४,४६ उ १।१६,२१;३।११३;४।१३

पयाहिणावत्त (प्रदक्षिणावर्त) ज २।१५;७।५५

पयोहर (पयोधर) ज २।१५

पर (पर) प १।१०१।४;२।६३;३।३६;६।८०।२;
१४।३;२२।४ से ६;२३।१३ से २३ सू १।१९;
६।१;१३।१२, १४ से १७

पर (परं) प ११।८९

परंगण्य (पर्यङ्गत्) उ ३।१३०

परंपर (परम्पर) प २०।६ से ८ ज ७।४२

परंपरगत (परम्परगत) प २।६४।२१

परंपरसिद्ध (परम्परसिद्ध) प १।११,१३;१६।३५,
३७

परंपरा (परम्परा) उ १।१११,११२

परंपराघाय (परम्पराघात) प ३६।६४,७८

परंपरोगाढ (परम्परावगाढ) प ११।६३

परंपरोववण्णग (परम्परोपपन्नक) प १५।४९;
३४।१२

परक्कम (पराक्रम) प २३।१९,२० ज २।५१,५४,
१२१,१२६,१३०,१३८,१४०,१४६,१५४,

1. पियालवण इति कल्पनापि जायते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६०,१६३; ३।३,७७,१०६,१११,१२६,१२६, १८८; ७।१७८ सू २०।१
परक्कममाण (पराक्रममाण) उ ३।१३०
परघर (परगृह) उ ५।४३
परट्ठाण (परस्थान) प ६।६३;१५।१२१;३६।२०, २४,२७,४७
परपरिवाय (परपरिवाद) प २२।२०
परपुट्ठ (परपुष्ट) प १७।१२३
परभवियाउय (परभविकायुष्क) प ६।१११,११४ से ११६
परम (परम) प २।२० से २७; २३।१६६ ज २।४, ६६,७१,१३३; ३।३,५,६,८,१५,१६,३१,५३, ६२,७०,७७,८१,८२,८४,६१,१००,११४, १४२,१६५,१७३,१८१,१८६,१६६,२१३; ५।२१,२७ उ १।२१,४२; ३।५१,५६,१३०, १३१,१३४,१४४
परमत्थ (परमार्थ) प १।१०१।१३
परमाणु (परमाणु) प १०।१४।१ ज २।६।३
परमाणुपोग्गल (परमाणुपुद्गल) प १।४; ३।१७६, १८२;५।१२५,१२७ से १२६,१७३,१७४,१८६, १६०,२०२,२१०,२११,२२६; १०।६;१६।३४, ३६,४३;३०।२६,२८
परलोय (परलोक) ज २।७०
परवस (परवश) उ ३।१२६
परसु (परशु) उ १।२३,८८,८६,६१
परस्सर (पराशर) प १।६६;११।२१ ज २।१३६
परस्सरी (पराशरी) प ११।२३
परहुय (परभृत) ज ३।२४
पराघायणाम (पराघातनामन्) प २३।३८,५३,११०
√**पराजय** (परा+जि) पराजिणिस्सइ उ १।१५
परामुट्ठ (परामृष्ट) ज ३।७६,८०,११६,११८
√**परामुस** (परा+मृश्) परामुसइ ज ३।१२,२३, ३७,४५,७८,८८,६४,११६,११७,११६,१३१, १३५ उ १।२२
परामुसित्ता (परामृश्य) ज ३।१२ उ १।२२
√**परावत्त** (परा+वृत्) परावत्तेइ ज ३।२८,४१, ४६,१३५
परावत्तेत्ता (परावृत्य) ज ३।२८
√**परिकह** (परि+कथय्) परिकहेइ उ १।२०;४।१४ परिकहेंति उ ३।१३५ परिकहेमो उ ३।१०२ परिकहेह उ १।४२
परिकहण (परिकथन) उ ५।१३
परिकहेउं (परिकथयितुम्) प २।६४।१७
परिकिण्ण (परिकीर्ण) उ ३।१४१; ४।१२,१३
परिक्खित्त (परिक्षिप्त) ज ३।२२,२४,३०,३६,७६, ७८,१७८; ४।११०,११६,११८;५।२८,४४ उ १।१६; ५।१७
परिक्खेव (परिक्षेप) प २।५०,५६,६४; ३६।८१ ज १।७,१०,१२,१४,२०,२३,३५,४८,५१; २।६;४।१,२१,२५,३१ ४०,४१,४५,४८,५३ से ५५,५७,६२,६७,६८,७५,७६,८०,८१,८४, ८६,६२,६३,६६,६८,१०८,११०,११४,११८, १४३,१६५,२१३,२२६,२४१,२४२; ७।७,१४ से १६,३१,३३,६६,७३ से ७८,६०,६३,६४, ६८ से १००,२०७ सू १।१४,१६,१७,१६,२१, २४,२६,२७;२।३;३।१; ४।४,७;६।१;१०।१३२; १५।२ से ४; १८।६;१६।१,४,५।१,७,१०,१४, १८,२०,३०,३१,३४,३५,३७
परिगय (परिगत) ज ३।३०,११७;४।२७;५।२८ उ ५।५
परिगर (परिकर) ज ३।२४।३,३१;३७।१,४५।१, १३१।३
परिगायमाण (परिगायत्) ज ५।५,७ से १२,१७ उ ३।११४
परिग्गह (परिग्रह) प २२।१८,१६ ज २।४६
परिग्गहसण्णा (परिग्रहसंज्ञा) प ८।१,२,४ से ११
परिग्गहिय (परिगृहीत) प ४।२१६ से २२१,२३१ से २३३ ज २।१५६;३।५,६,८,१२,१६,२६, ३६,४७,५३,५६,६२,६४,७०,७२,७७,८४,८८, ६०,१००,११४,१२६,१२७,१३३,१३८,१४२, १४५,१५१,१५७,१६५,१७८,१८१,१८६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०५,२०६,२०९,५।५,२१,४६,५८ उ १।३६, ४५,५५,५८,६४,८०,८३,९९,१०७,१०८, ११६,११८,१२२;३।१०६,१३८,१४८;४।१५; ५।१७
परिग्गहिया (पारिग्रहिकी) प १७।११,२२,२३, २५; २२।६०,६२,६७,७०,७६,९२,१०१
परिघट्ठ (परिघृष्ट) ज ४।१२८;५।४३
परिछण्ण (परिच्छन्न) ज २।१२
√**परिजाण** (परि+ज्ञा) परिजाणइ उ १।३८; ३।५८ परिजाणाइ उ १।१०० परिजाणेंति उ ३।११८
परिज्जय (दे०) सू २०।२
परिणत (परिणत) प १।४ से ६,१।४८।५६
√**परिणम** (परि+णम्) परिणमंति प २८।२४ से २६,३६,४२,४५,४६,७१,७४,१०५;३४।२०, २२ से २४ ज ७।१२२।१,३,५ सू १०।१२९।१, ३,५ परिणमति प १६।४६;१७।११५ से १२२, १३६,१४८ से १५२,१५४,१५५
परिणममाण (परिणमत्) ज ३।२१,३४,५५,६४, ७२,८५,११२,१३८,१४४,१६८,१८३,१९१ उ १।९०
परिणय (परिणत) प १।४,६ से ९ ज २।१६;५।५ उ ३।३८,४०,१२७,१२८; ५।४३
परिणयव्व (परिणन्तव्य) ज २।१३३
परिणाम (परिणाम) प १।१।५; १३।१;१७।११४।१, १३९; २३।१३ से २३,१९५,१९९ से २०१ २८।१।१ ज २।१६,१३१; ३।२२३; ७।१३६।१, २११
√**परिणाम** (परि+नमय्) परिणामेंति प १७।२; २८।२१,३३,६७
परिणामणया (परिणामन) प ३४।१ से ३
परिणामिय (परिणामित) प २३।१३ से २३
परिणामेमाण (परिणमयत्) उ १।४१,४३
परिणाह (परिणाह) ज ४।१०२
परिणिट्ठिय (परिनिष्ठित) ज ३।३५
√**परिणिव्वा** (परि+नि+वा) परिणिव्वंति ज १।२२,५०; २।५८,१२३,१२८;४।१०१ परिणिव्वाइ प ३६।८८ परिणिव्वायंति प ६।११० परिणिव्वाति प ३६।९२ परिणिव्वाहिंति ज २।१५१,१५७
परिणिव्वाण (परिनिर्वाण) ज २।११६
परिणिव्वुड (परिनिर्वृत) ज २।६८;३।२२५
परिणिव्वुय (परिनिर्वृत) ज २।८५,९०
परितंत (परितान्त) उ १।५५,७७
परित्त (परीत) प १।४८।२० से २६,३४ से ३७, ४३,५२,५६; ३।११२,१०९;१८।१२,१०६; सू १३।२;१४।४,८
परित्तमिस्सिया (परीतमिश्रिता) प ११।३६
परित्तास (परित्रास) ज २।७०
√**परिधाव** (परि+धाव्) परिधावेंति ज ५।५७
√**परिनिव्वा** (परि+नि+वा) परिनिव्वाहिइ उ ५।४३
परिनिव्वुड (परिनिर्वृत) ज २।८८,८९
परिपीलइत्ता (परिपीड्य) प २८।२०,३२,६६
परिपीलिय (परिपीडित) ज २।१३३
परिपुंछणा (परिप्रच्छन) ज ७।१७८
परिभट्ठ (परिभ्रष्ट) ज २।१३३
परिभाएत्ता (परिभाज्य) ज २।६४
परिभाएमाण (परिभाजयत्) उ १।३४,४१,७४
परिभाग (परिभाग) सू १०।१७३
परिभुंजेमाण (परिभुञ्जान) उ १।३४,४१,७४
परिभुज्जमाण (परिभुज्यमान) ज ४।१०७
परिभोगत्त (परिभोगत्व) ज २।२४,३४,३५,३७; ७।२०२,२०४,२०७
परिमंडल (परिमण्डल) प १।४ से ९;१०।१५ से २४,२६ से ३०; ११।२५;१३।२४ ज ५।५,७, २२ से २४
परिमंडिय (परिमण्डित) ज १।३७; ३।१,३५, १०९,११७,११८,१७८;५।४३;७।१७८
परिमाण (परिमाण) ज २।६;४।१९८,२४३
परियच्छिय (परिकक्षित) ज ५।४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परियण (परिजन) ज ३।१८१
√परियर (परि+चर्) परियरइ चं ३।१
सू १।७।१
परियाइत्ता (पर्यादाय) प १६।२०
परियाइयणया (पर्यादान) प ३४।१ से ३
परियाग (पर्याय) उ २।१२; ३।१४,८३,१२०,
१५०,१६१; ४।२४; ५।२८,३६,४१,४३
परियागय (पर्यागत) प १६।५५
परियाण (परि+ज्ञा) परियाणइ उ ३।१०८
√परियादि (परि+आ+दा) परियादियंति
ज ३।१६२
परियादित्ता (पर्यादाय) ज ३।१६२
परियाय (पर्याय) ज २।८३,८४; ४।२७२ उ २।२२;
३।१६६
परियायंतकरभूमि (पर्यायान्तकरभूमि) ज २।८४
परियायसंगइय (पर्यायसाङ्गतिक) उ ३।५५
परियारणया (परिचारण) प ३४।१ से ३
परियारणा (परिचारणा) प ३४।२; ३४।१ से ३,
१७,१८
परियारणिड्ढि (परिचारणर्द्धि) सू १८।२३
परियारिड्ढि (परिचारर्द्धि) ज ७।१८५
परियारिय (परिवारित) प २।३१
परियारेमाण (परिचारयत्) सू २०।२
परियाल (परिवार) ज २।१३३; ५।२२,२६
उ १।१६,६३,६७,६८,१०५ से १०७
√परियाव (परि+तापय्) परियावेंति प ३६।६२
परियावण्ण (पर्यापन्न) प १७।१३३
परियावण्णग (पर्यापन्नक) प २।३,६,६,१२,१५
परिरय (परिरय) ज ४।१४२।२,१५६।१,२३४,
२४०; ७।१६,१६,७५,७८ सू १।२७; १८।६ से
१३; १६।८।१,११।१,१५।१,२१।२
परिलिंत (परिलीयमान) ज २।१२
परिली (दे०) प १।३७।५
परिवंदिय (परिवन्दित) चं १।२
परिवज्जिय (परिवर्जित) उ ४।६
√परिवड्ढ (परि+वृध्) परिवड्ढति
सू १६।२२।१८ परिवड्ढिज्जंति प ५।१६१
परिवड्ढमाण (परिवर्धमान) प ११।७२ ज ४।३६,
४३,७२,७८,६५,१०३,१७८ उ ३।४६
परिवड्ढि (परिवृद्धि) ज २।१३८,१४०,१४६,
१५४,१६०,१६३
परिवड्ढेमाण (परिवर्धमान) ज २।१३८,१४०,
१४६,१५४,१६०,१६३
परिवय (परि+व्रज्) परिवयंति ज ५।५७
√परिवस (परि+वस्) परिवसइ प २।३८
ज १।४५,४७; ३।१२१; ४।५१,५४,६०,६१,
६४,८०,८६,६७,१०२,१०७,१६१,१६६,
१८६,१६३,१६६,१६६,२०३,२०८,२१०,
२६१,२६४,२६६,२६७,२७०,२७२,२७३,
२७६; ७।२१३ उ ३।२८ परिवसई उ ३।१५८;
४।७ परिवसंति प २।२० से २७,३० से ३६,
४१ से ४३,४८,४६,५१ से६४ ज १।२४,२६,
३१; ३।१०३; ४।१०२ परिवसति प २।३२,३३,
३५,३६,३६,४४,५१,५३ से ५५,५७ से ५६
परिवसह ज ३।१२७ परिवसामो ज ३।१२६।४
परिवसण (परिवसन) ज २।१६
√परिवह (परि+वह्) परिवहइ उ १।५०
परिवहंति ज ७।१७८ सू १८।१४ परिवहति
सू १८।१६ परिवहामि उ १।७५
परिवाडी (परिपाटी) प १५।५५; २३।१०८
परिवायणी (परिवादनी) ज ३।३१
परिवार (परिवार) ज २।६३,६४; ५।५६;
७।१६८।१,१७०,१८३ सू १८।४,२१,२३;
१६।२२।३१,३२ उ १।१६; ४।५,१३
परिवारणा (परिचारणा) ज ४।१४०।१
परिवारिय (परिवारित) प २।३०,४१
√परिविद्धंस (परि+वि+ध्वंस्) परिविद्धसेज्जा
ज २।६
परिविद्धंसइत्ता (परिविध्वस्य) प २८।२०,२२
परिवुड (परिवृत) ज ५।४४ उ ४।११,१३
परिवुड्ढि (परिवृद्धि) प ५।१३२,१६१,१७६,

१९५,२१६; ११।७२;१३।१७; १५।३४,७५
ज ४।१०३,१७८

परिवेढिय (परिवेष्टित) प १५।५१ ज २।१३३

परिव्वायग (परिव्राजक) प २०।६१ ज ३।१०९

परिसडिय (परिशटित) ज ३।१३३ उ ३।५०

परिसप्प (परिसर्प) प १।६१,६७,७६; ६।७१;
२१।११,१४,५३,६०

परिसा (परिषत्) प २।३० से ३३,३५,४१,४३,
४८ से ५१ ज १।४,४५; २।६४,९०;४।१९;
५।१९,३९,४९ से ५१,५६; ७।५५,५८ चं ९
सू १।४; १८।२३; १९।२३,२६ उ १।२,१६,
२०;२।९; ३।५,१२,२४,२८,८९,१५५,१५९;
४।४,१०,१४; ५।१४,२६,३७

परिसाड (परिशाट) प १।८४

√**परिसाड** (परि+शाटय्) परिसाडेंति
ज ३।१९२; ५।५,७

परिसाडइत्ता (परिशाट्य) प २८।२०,३२,६६

परिसाडेत्ता (परिशाट्य) ज ३।१९२;५।५

परिहत्थ (दे०) ज ४।३,२५

√**परिहव** (परि+भू) परिहवेति सू २।२

परिहा (परिखा) प २।३०,३१,४१ ज ३।३२

परिहा (परि+हा) परिहायति सू १९।२२।१४

परिहाण (परिधान) प २।४०

परिहाणि (परिहाणि) प २।६४ ज २।५१,५४,
१२१,१२६,१३०; ४।१०३,१४३
सू १९।२२।१६,२०

परिहायमाण (परिहीयमाण) प २।६४ ज २।५१,
५४,१२१,१२६,१३०; ४।१०३,१४३,२००,
२१०,२१३ उ ३।४७

परिहारविसुद्धिय (परिहारविशुद्धिक) प १।१२४,
१२७

परिहारविसुद्धियचरित्तपरिणाम
(परिहारविशुद्धिकचरित्रपरिणाम) प १३।१२

परिहावेतव्व (परिहापयितव्य) सू ८।१

परिहित (परिहित) सू २०।७

परिहिय (परिहित) प २।३१,४१,४९ ज ३।२६,
३९,४७,५६,६४,७२,८५,११३,१३३,१३८,
१४५ उ १।१९

परिहीण (परिहीण) प २।६४।९; ३६।९२
ज ५।२२,२६ से २८ सू १९।८।१; २०।९।४

परीसह (परीषह) ज २।६४

परुप्पर (परस्पर) ज ४।१८०

परूढ (प्ररूढ) ज २।६,१३३,१४५,१४६

√**परूव** (प्र+रूपय्) परूवेइ ज ७।२१४ उ १।९८

परूवण (प्ररूपण) ज २।६

परेंत (दे० पर्यन्त) ज ३।१२६

परोक्खवयण (परोक्षवचन) प ११।८६,८७

परोप्पर (परस्पर) प २२।५१,७३,७४ ज १।४६

√**पलंघ** (प्र+लङ्घ्) पलंघेज्ज प ३६।९१

पलंडु (कन्द) (पलाण्डुकन्द) प १।४८।४३

पलंब (प्रलम्ब) प २।३०,३१,४१,४९ ज २।१५;
३।१७५;५।१८;७।१७८ सू २०।८

पलंबमाण (प्रलम्बमान) ज ३।६,९,२२२;५।२१,
३८

पलवमाण (प्रलपत्) उ ३।१३०

पलास (पलाश) प १।३५।१ ज ४।२२५।१

पलिओवम (पल्योपम) प १।२४,४।३०,३४,३६,
४०,४२,४३,४५,४६,४८,४९,५१,५२,५४,
१०४,१०६,११०,११२,१२४,१४९,१५१,
१५५,१५७,१५८,१६०,१६२,१६४,१६५,
१६७,१७१,१७३,१७७,१७९,१८०,१८२,
१८३,१८५,१८६,१८८,१८९,१९१,१९२,
१९४,१९५,१९७,१९८,२००,२०१,२०३,
२०४,२०६,२०७,२०९,२१०,२१२,२१३,
२१५,२१६,२१८,२१९,२२१,२२२,२२४,
२२५,२२७,२२८,२३०,२३१,२३३,२३४,
२३६;६।४३; १२।२४; १८।४,६,१०,१२,६०,
७० से ७२; २०।६३;२३।६१,६४,६६,६८,७३,
७५ से ७७,७९,८१,८३ से ८६,८८ से ९०,
९२,९५ से ९९,१०१ से १०४,१११ से ११४,
११७,११८,१३४,१३५,१३८,१४०,१४२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४३,१५१ से १५३,१५५ से १५७,१६०,
१६१,१६४,१६६ से १६६,१७१ से १७३
ज १।२४,३१,४५ से ४७; २।५,६,४४,५२,
५६,५६,१५६,१६१; ३।१६७,२२६; ४।२२,
३४,५४,६०,६१,६४,८०,८५,८६,६७,१०२,
१४२,१६१,१६६,१६७।१३,१७७,१८६,१६६,
२०८,२६१,२६६,२७०,२७२; ७।१८७ से १६६
सू ६।१; ८।१; १८।२५ से ३६ उ ३।१६,८५,
१२४; ४।२५

पलिभाग (प्रतिभाग) प १२।२७,३६,३७; १५।५० ज २।६८

पलिभागभाव (प्रतिभागभाव) प १७।१५०,१५२

पलिमंथ (परिमन्थ[1]) प १४५।१

पलिय (पलित) ज २।१५,१३३

पलियंक (पर्यङ्क) ज १।१८,४८; ४।५५,६२,६८,
१६७,१६६; ७।१३३।२

पलुग (पलुआ) प १४८।६ सन की जाति का एक पौधा

पल्ल (पल्य) ज २।६

पल्लग (पल्यक) प ३३।२० ज ४।५७

पल्लल (पल्वल) प २।४,१३,१६ से १६,२८

पल्हत्थ (पर्यस्त) ज ३।१०५

पल्हत्थमुह (पर्यस्तमुख) उ १।१५; ३।६८

पल्हव (पल्हव) प १।८६

पल्हविया (पल्हविका) ज ३।१११।१

पल्हायणिज्ज (प्रह्लादनीय) प १७।१३४ ज २।१८,
१८५

पवंच (प्रपञ्च) प २।६४

पवग (प्लवक) ज २।३२

√पवड (प्र+पत्) पवडइ ज ४।२३ से २५,३८
से ४०,६५ से ६७,७३ से ७५; ६० से ६२
पवडेज्ज उ ३।५५

पवडणया (प्रपतन) प १६।५३

पवण (पवन) प २।३०।१ ज ३।३५ १०६; ५।५

√पवत्त (प्र+वर्तय्) पवत्तइ प १।६८; १६।३६

४०,५५ पवत्तति प १६।४३

पवत्त (प्रवृत्त) ज ३।११५,१२३

पवत्ति (प्रवर्तिन्) प १६।५१

पवत्ति (प्रवृत्ति) ज ४।२३,३८,६५,७३,६०,६१

पवयण (प्रवचन) प १।१०१।५,११ सू २०।६।४

पवर (प्रवर) प २।३०,३१,४१,४६ ज ३।७,६,
१२,१५,१७,२१,२२,२४,२६,३१,३२,३४
से ३६,३६,४७,५६,६४,७२,७७,७८,८१,
८५,८८,६१,१०८ से १११,११३,१३३,१३८,
१४५,१६७।५,१७३,१७५,१७७,१७८,१६६,
२२२; ५।५,७,४६,५८ सू २०।७ उ १।१७,
१६,२२,२४,१२३,१४०; ४।१२,१३,१५;
५।१८

पवह (प्रवह) ज ४।३६,४३,७२,७८,६०,६५,
१७४,१८३,२६२; ६।१८

पवा (प्रपा) ज २।६५; ५।५,७ उ ३।३६

पवाइत (प्रवादित) प २।३१,४६

पवाइय (प्रवादित) प २।३०,३१,४१ ज १।४५;
३।१२,७८,८२,१८०,१८५,१८७,२०६,२१८;
५।१,५ १६; ७।५५,५८,१८४ सू १८।१३;
१६।२३.२६

पवात (प्रपात) उ ५।५

पवादित (प्रवादित) ज ३।२०६

पवाय (प्रपात) ज २।३८; ३।८८; ४।२३,३८,४२,
६५,६७,६८,७१,७३,६० से ६४

पवायबहुल (प्रपातबहुल) ज १।१८

पवाल (प्रवाल) प १।२०।२,१।३५,३६; १।४८।१५,
२५,६३; २।३१ ज २।२४,६४,६६,१३१,१४४,
१४५,१४६; ३।३५,११७,१६७।८

पवालंकुर (प्रवालाङ्कुर) प १७।१२६

पवालि (प्रवालिन्) ज ७।११२।३ सू १०।१२६।३

पविचरिय (प्रविचरित) ज ४।३

√पविज्जुय (प्र+विद्युत्) पविज्जुयाइस्सइ
ज २।१४१ से १४५ पविज्जुयायंति ज ३।११५

पविज्जुयाइत्ता (प्रविद्युत्य) ज २।१४१

---

१. वनस्पतिकोश में हरिमन्थ शब्द मिलता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पविज्जुयायित्ता (प्रविद्युत्य) ज ३।११५
पविट्ठ (प्रविष्ट) प १५।११,१५।३६,४०,४२ ज ३।१०५,१७८,२२३;७।१७८
पविट्ठित्ता (प्रविश्य) सू १०।१३६,१३।५,६
√**पवित्थर** (प्र+वि+स्तृ) पवित्थरइ ज ३।७९, ११६,११८
पविभत्त (प्रविभक्त) ज १।१८,२०,४८;४।१६७, २१५
पविभत्ति (प्रविभक्ति) सू १५।३७
पवियरिय (प्रविचरित) ज ४।३,२५
पवियारण (प्रविचारण) प १।१।७
पविरल (प्रविरल) ज २।१३३;५।७
√**पविस** (प्र+विश्) पविसंति ज ३।१८३
पविसंत (प्रविशत्) चं ४।२ सू १।८।२;१९।२२।४
पविसमाण (प्रविशत्) ज ३।२०३;७।१३,१६,२३ से २५,२८ से ३०,७२,७८,८४ सू १।१२,१४, १६,१८,१९,२१,२४,२७;२।३;६।१;१३।६ से १०,१४ से १६
√**पवुच्च** (प्र+वच्) पवुच्चइ सू ५।१
पवूढ (प्रव्यूढ) ज ३।९७,१६१;४।२३,३५,३८,४२, ६५,७१,७३,७७,९०,९१,९४,१७४,१८३, १९५,२६२
पवेस (प्रवेश) ज १।१६,३८;३।१२,४१,४९,५८, ६६,७४,७७,१०९,१४७,१६८,२१२,२१३; ४।१०,११५,१२१,२१७ उ ५।४३
पव्व (पर्वन्) प १।४८।४७;११।२५ ज ७।१०६ से ११० सू १०।१२७;१२।१६,१७;१३।१,२
पव्वइत्तए (प्रव्रजितुम्) प २०।१७,१८ उ ३।५०; ५।३२
पव्वइय (प्रव्रजित) ज २।६५,६७,८५,८७ उ २।९; ३।१३,२१,५०,५५,५८,६०,७६,७७,७९,११३, ११८;५।३८
पव्वंस (दे०) उ ५।२५ शिशिर ऋतु
पव्वग (पर्वक) प १।३३।१;१।४१,१।४८।४६ ज २।१४४ से १४६;३।३१
√**पव्वज्ज** (प्र+व्रज्) पव्वज्जिहिइ उ ५।४३
पव्वज्जा (प्रव्रज्या) उ ३।१६९
पव्वत (पर्वत) प २।३२,३६,५०,५१;१७।१११ ज १।४६;३।२२४ सू ५।१;१९।२६
पव्वतराय (पर्वतराज) सू १९।२३
पव्वतिंद (पर्वतेन्द्र) सू ५।१
पव्वय (पर्वक) प १।४२।१
पव्वय (पर्वत) प २।३३,३५,४३,४४;१६।३०; १७।१०९ ज १।१६,१९,२०,२३ से २५,२८, ३२,३३,४६।१,४७,४८,५१;२।३१,९०,११७, ११८,११९,१३१,१३३;३।१,६१,८१,१३०, १३१,१३५ से १३७,२२४;४।२३,३८,४८, ५७,५८,६०,६५,७१,७३,८४,९०,९१,९४, १०३,१०६,११०,१११,११३,११४,१४२, १६०,१६२,१६३,१६७,१६८,१७२,१७३, १७५,१७६,२००,२०५ से २०९,२१२ से २१६,२२०,२२१,२२५,२२६,२३४,२३५, २३७,२३९ से २४१,२५३,२५४,२५७,२५९, २६० से २६२;५।४४,४७,४८,४९,५५;६।६।१; ६।१०,१६,२३,२४;७।८ से १३,३१,३३,५५, ५८,६७ से ७२,९१,९२,१७१ सू ४।४,७;७।१; ८।१;१८।५ उ ३।५५;५।५,६
√**पव्वय** (प्र+व्रज्) पव्वयाइ उ ३।११२ पव्वयामि उ ३।१३;४।१४ पव्वयाहि उ ३।१०७
पव्वयग (पर्वतक) ज १।१३
पव्वयबहुल (पर्वतबहुल) ज १।१८
पव्वयराय (पर्वतराज) ज ७।५५ सू ५।१;७।१
पव्वयसमिया (पर्वतसमिका) ज १।२३,२५;२८
पव्वयाउय (पर्वतायुष्) ज ५।१६
पव्वराहु (पर्वराहु) सू २०।३
पसंत (प्रशान्त) ज २।६८;५।७,२६
पसढिल (प्रशिथिल) प २।४९
पसण्णा (प्रसन्ना) उ १।३४,४९,७४
पसत्त (प्रसक्त) ज ५।२६
पसत्थ (प्रशस्त) प १७।१३३,१३४,१३८;२३।५६, १०९,११६;३४।१३ ज १।३७;२।१५;३।३,९,

१८,३५,६३,१०६,१८०,२२२,२२३;७।१७८

पसय (दे०) प ११६४ ज २।३५

√पसर (प्र+सृ) पसरइ उ ३।५१ पसरई १।१०१।७

पसरित्ता (प्रसृत्य) उ ३।५१

√पसव (प्र+सू) पसवंति ज २।४६

√पसार (प्र+सारय्) पसारेइ उ ३।६२

पसासेमाण (प्रशासयत्) ज ३।२ उ ५।६,११

पसिण (प्रश्न) ज ७।२१४ उ ३।२६

पसिय (प्रसृत) ज ३।३५

पसु (पशु) प ११।४ उ ३।३६,४८,५०

पसूय (प्रसूत) ज ३।१०६ उ ३।४८,५०,५५

पसेढी (प्रश्रेणी) ज ५।३२

पसेणइ (प्रसेनजित्) ज २।५६,६२

पसेणी (प्रश्रेणी) ज ३।१२,१३,२८,२६,४१,४२, ४६,५०,५८,५६,६६,६७,७४,७५,१४७,१४८, १६८,१६६,१७८,१८६,१८८,२०६,२१०, २१६,२१६,२२१

पह (पथ) ज ३।१८५,१८८;२१२,२१३;५।७२, ७३ सू १६।२२।१५ उ १।६८

पहंकरा (प्रभङ्करा) ज ४।२०२।२

पहकर (दे०) ज २।१२ ६५;३।१७,२१,१७७

पहगर (दे०) ज ३।२२,३६,७८

पहत (प्रहत) ज २।१३१

पहरण (प्रहरण) ज ३।३१,३५,७७,१०७,१२४, १६७।६,१७८;४।१३७ उ १।१३८

पहरणरयण (प्रहरणरत्न) ज ३।३५

पहराइया (प्रभाराजिका, प्रहारातिगा) प १।६८

पहव (प्रभव) प ११।३०

पहसिय (प्रहसित) प २।४८ ज १।४२;४।४६, २२१;७।१७६ सू १८।८

पहा (प्रभा) प २।३१ ज १।२४

पहाण (प्रधान) ज २।१५,६४,१३३;३।३,३२, ११७।१,१३८,१७५;७।१७८

पहार (प्रहार) ज ३।१०६ उ ३।१३१,१३४

√पहार (प्र+धारय्) पहारेत्थ ज २।६;३।६, १८३ उ १।८८

पहारेमाण (प्रधारयत्) प ३४।२४

पहाविय (प्रधावित) ज २।६५

पहिय (प्रथित) ज ३।१७,१८,२१,३१,६३,१७७, १८०

पहीण (प्रहीण) ज २।८८,८६;३।२२५

पहु (प्रभु) ज ७।१६८।२

पाई (पाची) प १।४४।१ एकलता, मरकतपत्री

पाइक्क (दे०) ज २।६५

पाईण (प्राचीन) प २।१०,५० से ५२,५४ से ६२ ज १।२०,२३ से २५,२८,३२,४८;३।१, १२६।४;४।१,३,५५,६२,८१,८६,८८,६८, १०३,१०८,१४१,१६२,१६७,१६६,१७२, १७८,१८५,१८७,१६१,२००,२०३,२०५, २१५,२४५,२४६,२५१,२६२,२६८;७।१०१, १०२ सू ८।१

पाईणपडिणायता (प्राचीनापाचीनायता) सू १।१६; २।१;१०।१४२,१४७;१२।३०

पाईणपडीणायता (प्राचीनापाचीनायता) प २।५० से ६२ ज १।२०

पाईणपडीणायया (प्राचीनापाचीनायता) ज १।२०; ३।१;४।१,३,८६,८८,६८,१०८

पाईणवाय (प्राचीनवात) प १।२६

√पाउण (प्र+आप्) पाउणइ उ ३।१४;५।३६ पाउणति प ३६।६२ पाउणिस्सइ उ ५।४३

पाउणित्ता (प्राप्य) प ३६।६२ ज २।८८; ३।२२५ उ २।१२;३।१४;४।२४;५।२

पाउप्पभाय (प्रादुष्प्रभात) ज ३।१८८ उ ३।४८, ५० ५५,६३,६७,७०,७३,१०६,११८

√पाउब्भव (प्रादुस्+भू) पाउब्भवंति ज ५।२७ पाउब्भवह ज ५।२२,२६ उ १।१२१ पाउब्भवत्था उ ३।२६ पाउब्भवित्था ज ३।१०४ पाउब्भविस्सइ ज २।१४१ से १४५

पाउब्भवमाण (प्रादुर्भवत्) ज ५।२८

पाउब्भूय (प्रादुर्भूत) ज ३।१०५,११३,१२५;

५।७४ सू ११४ उ १।२४,३४,४०,४३,७४; ३।५७,६२,६५,६६,७२,७५,८१,१४३,१५६
पाउब्भविसए (प्रादुर्भवितुम्) ज ३।११३
पाउया (पादुका) ज ३।६,१७८; ५।२१
पाउस (प्रावृष्) ज ७।१२६ सू १२।१४ उ ५।२५
पाओ (प्रातस्) प २।१
पाओवगय (प्रायोपगत) उ २।११
पाओसिया (प्रादोषिकी) प २२।४६,५६
पागड (प्रकट) ज ३।३ चं १।३
पागडभाव (प्रकटभाव) ज २।६८
पागडिय (प्रकटित) ज २।४८,४६
पागड्डि (प्राकर्षिन्) ज ५।५,४६
पागत (प्राकृत) सू १९।२२।३
पागसासण (पाकशासन) प २।५० ज ५।१८
पागार (प्राकार) प २।३०,३१,४१ ज ३।१; ४।११४,११६; ७।१३३।२
पागारच्छाया (प्राकारच्छाया) सू ९।४
पागारसंठिय (प्राकारसंस्थित) सू १०।४३
√**पाड** (पातय्) पाडेइ उ ३।५१ पाडेंति ज ५।१६
पाडण (पातन) उ १।५१,८६
पाडल (पाटल) ज ३।१२,८८; ५।५८
पाडला (पाटला) प १।३७।५
पाडलिपुत्त (पाटलिपुत्र) ज ४।१०७
पाडिएक्क (प्रत्येक) ३।११८; ४।२२
पाडिसए (पातयितुम्) उ १।५१,७६,७७
पाडियंतिय (प्रात्यन्तिक) प ३।५७
पाडिवया (प्रतिपद्) सू २०।३
पाडिहारिय (प्रातिहारिक) प ३६।९१
पाडेत्ता (पातयित्वा) ज ५।१६ उ ३।५१
पाढा (पाठा) प १।४८।४; १७।१३१
पाण (प्राण) प २।६४; ३६।६२,७७ ज २।१३१; ३।१०८ से १११; ७।२१२
पाण (प्राण, पान) ज २।४।१,२
पाण (पान) उ ३।५०,५५,१०१,११०,११४,१३४; ४।१६
पाणक्खय (प्राणक्षय) ज २।४३
पाणत (प्राणत) प १।१३५
√**पाणम** (प्र+अन्) पाणमंति प ७।१ से ४,६
पाणय (प्राणत) प २।४६,५८,५६,५६।२,६३; ३।१८३; ४।२५८ से २६०; ६।३६,५६,६६; ७।१७; १२।८८; २१।७०; २८।८४; ३३।१६; ३४।१६,१८ ज ५।४६ उ २।२२
पाणय (पानक) उ ३।११४; ४।२१
पाणयग (प्राणतज) ज ५।४६
पाणयवडेंसय (प्राणतावतंसक) प २।५८
पाणाइवातकिरिया (प्राणातिपातक्रिया) प २२।१
पाणाइवाय (प्राणातिपात) प २२।६ से ११,२१ से २३
पाणाइवायकिरिया (प्राणातिपातक्रिया) प २२।६, ४६,४७,५०,५२,५७,५६
पाणाइवायविरत (प्राणातिपातविरत) प २२।८३, ८४,९१ से ९४,९६
पाणाइवायवेरमण (प्राणातिपातविरमण) प २२।७७ से ७६
पाणातिवातकिरिया (प्राणातिपातक्रिया) प २२।६
पाणि (प्राणिन्) ज ३।१७८
पाणि (पाणि) ज ५।५ उ १।११ से १३,३०,३२; २।७; ४।८; ५।१२,२५
पाणिग्गहण (पाणिग्रहण) उ ५।१३
पाणिय (पानीय) उ ३।१३०
पाणियग (पानीयक) ज २।१३१
पाणिलेहा (पाणिरेखा) ज २।१५
पाणी (पाणि) प १।४०।४
पात (प्रातस्) सू १०।५,१३६
पाती (पात्री) ज ३।११; ५।५
पाद (पाद) प १७।१११ ज ४।१३
पादपीढ (पादपीठ) ज ३।१७८ उ १।११५
पादीणपडीणायया (प्राचीनाप्रतीचीनायता) ज १।१८
√**पादुब्भ** (प्रा+दुर्+भू) पादुब्भवंति प ३४।१६,२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पादो (प्रातस्) सू २।१
पादोसिया (प्रादोषिकी) प २२।१,४,५६
पामोक्ख (प्रमुख,प्रमुख्य) ज १।२६; २।७४,७७; ४।१३७ उ ५।१०,१७,१६
पाय (पाद) ज ३।१२५,१२६,२२०,२२४;५।५,७ सू २०।८।६ उ १।११,१३,३० से ३२,७१, ११५,११६; २।७; ३।११४; ४।८,२१; ५।१२
पाय (प्रातस्) सू १०।१३६
पायचारविहार (पादचारविहार) ज २।३३
पायच्छित्त (प्रायश्चित्त) ज ३।७७,८१,८२,८५, १२५,१२६ सू २०।७ उ १।१६,७०,१२१; ३।११०,११५; ५।१७
पायत्त (पादात) ज ३।१७८
पायत्ताणीय (पादातानीक,पादात्यनीक) ज ३।१७८
पायत्ताणीयाहिवई (पादातानीकाधिपति, पादात्यनीकाधिपति) ज ५।२२,२३,२६,४८ से ५२,५३
पायत्तिय (पादातिक) उ १।१३८
पायदद्दरय (पाददर्दरक) ज ५।५७
पायपीढ (पादपीठ) ज ३।६; ५।२१ उ १।११५
पायमूल (पादमूल) उ ३।१२५
पायरास (प्रातराश) उ १।११०,१२६,१३३
पायव (पादप) ज २।६५,७१; ३।१०४,१०५ उ १।१,६१; ३।५६,६४,६६,६८,७१,७४,७६
पायवंदय (पादवन्दक) उ १।७०;४।११
पायविहारचार (पादविहारचार) उ ३।२६
पायसीस (पादशीर्ष) ज ४।१३
पायहंस (पादहंस) प १।७६
पायाल (पाताल) प २।१,४,१०,१३
पायावच्च (प्राजापत्य) ज ७।१२२।२ सू १०।८४।२
पाईण (प्राचीन) ज २।५३
पायोवगय (प्रायोपगत) ज ३।२२४
√पार (पारय्) पारेइ ज ३।२८,४१,४६,५८,६६, ७४,१३६,१४७,१८७
पारगत (पारगत) प २।६४।२१
पारगामि (पारगामिन्) ज ३।७०
पारणग (पारणक) उ ३।५१,५३,५४
पारस (पारस) प २।८६
पारसी (पारसी) ज ३।११।२
पारिणामिया (पारिणामिकी) उ १।४१,४३
पारिप्पव (पारिप्लव) प १।७६
पारियावणिया (पारितापनिकी) प २२।१,५,५०, ५२,५६
पारेत्ता (पारयित्वा) ज ३।२८
पारेवत (पारापत) प १६।५५; १७।१३२
पारेवय (पारापत) प १।७६; ज ३।३५
पारेवयगीवा (पारापतग्रीवा) प १७।१२४
√पाल (पालय्) पालयाहि ज ३।१८५ पालेंति ज १।२२,५०,५८,१२३,१२८; ४।१०१ पालेहिंति ज २।१४८
पालइत्ता (पालयित्वा) ज २।८८
पालंब (प्रालम्ब) ज ३।६,६,२२२; ५।२१
पालक्का (पालक्या) प १।४४।१
पालण (पालन) ज ३।१८५,२०६
पालय (पालक) ज ५।२८,२६,४६।३
पालियायकुसुम (पारिजातकुसुम) प १७।१२६
पालेत्ता (पालयित्वा) ज १।२२
पालेमाण (पालयत्) प २।३०,३१,४१,४६ ज १।४५;३।१८५,२०६,२२१; ५।१६ उ १।६५,६६,७१,६४,१११,११२; ५।१०
√पाव (प्र+आप्) पावे प २।६४।१५
पाव (पाप) प १।१०।१२;११।८६
पावयण (प्रवचन) उ ३।१०३,१३६; ४।१४;५।२०
पाववल्ली (पावकवल्ली) प १।४०।२
पावा (पावा) प १।६३।५
√पास (दृश्) पासइ प १७।१०८ से ११०; ३०।२८ ज २।७१,६०,६३;३।५,१५,२६,३१, ३६,४४,४७,५२,५६,६१,१०६,११६,१३१, १३७,१४१,१७३;५।३,२१,२८,६३ उ १।१६; ३।७;४।१३,५।२२ पासउ ज ५।२१ पासंति

प २।६४।१३;१५।४६ से ४६;३३।२ से १३, १५ से १८;३४।६ से ६,११,१२ ज ३।१०५, ११३ उ १।३६ पासति न १५।३७,४१,४४, ४५;१७।१०६ से १११;२३।१४;३०।२५ से २८;३६।८०,८१ पासह ज ३।१२४ पासिज्जा उ ११५ पासिहिति ज २।१४६ पासिहिसि उ १।२२ पासेइ उ १।५७ पासेज्जा उ १।२१

पास (पास) प १।८६

पास (पार्श्व) ज २।१५;३।३२;४।१४२,२०२,२१२; ५।१७,४३,४६,६०,६६ ; ७।३१,३३ सू ४।३,४; २०।२ उ ३।१२,१४,२१,२८,२६,४६,५१,७६; ४।१०,११,१३,१५,१६,२०,२८

पास (पाश) ज ३।१०६

पासंडबहुल (पाषण्डबहुल) ज १।१८

पासंडधम्म (पाषण्डधर्म) ज २।१२६

पासग (पाशक) ज ७।१७८

पासग्गाह (पाशग्राह) ज ३।१७८

पासणया (दर्शन,पश्यत्ता) प १।१।७;३०।१,५,८,१०

पासत्थविहारि (पार्श्वस्थविहारिन्) उ ३।१२०

पासमण (पश्यत्) ज २।७१

पासवण (प्रस्रवण) प १।८४

पासाईय (प्रासादीय,प्रासादिक) प २।३१,४८,५६, ६३ ज १।२३,४१;२।१५;४।३,६,१३,२५,२६, ३३,४६,१४६;५।६२ उ ५।६

पासाण (पाषाण) ज ३।१०६;४।३,२५;७।१७८

पासाद (प्रासाद) २।६५

पासादच्छाया (प्रासादच्छाया) सू ६।४

पासादसंठित (प्रासादसंस्थित) सू ४।२

पासादीय (प्रासादीय,प्रासादिक) प २।३०,४१,४६, ६४ ज १।८,३१;२।१२,१४,४।२७ सू १।१ उ ५।४,५

पासाय (प्रासाद) ज १।४२,४३ ; २।२०,६५;३।३२, ८२,१८७,२१८,२१६;४।३,४६,५०,५३,५६, १०६,११२,११६,११६;१२०,१४७,१५५,१५६, २२१ से २२४,२२६,२३५,२३७,२३८,२४०, २४३;५।१,६,२५ उ १।४६,६४;२।६;५।१३, २०,२७,३१

पासायवडेंसय (प्रासादावतंसक) ज ४।१०२,११६, २२१,२२२,२२३।१,२२४।१

पासि (पार्श्व) ज १।२३,२५,२८,३२;३।१७६; ४।१,४३,६२,७२,७८,८६,६५,६६,१०३,१७८, १८३,२००,२०१;५।४६,६०,६६

पासिउं (द्रष्टुम्) प १।४८।५७

पासिउकाम (द्रष्टुकाम) प २३।१४

पासित्ता (दृष्ट्वा) प २३।१४ ज २।६० उ १।१६; ३।१०१,४।१३;५।१३

पासित्ताणं (दृष्ट्वा) उ १।३३ ; २।८

पासियव्व (द्रष्टव्य) प २३।१४

पासेत्ता (दृष्ट्वा) उ १।५७

पाहाण (पाषाण[1]) ज ५।१६

पाहुड (प्राभृत) ज ३।८१ चं ३।२,३ ; ५।४ सू १।७; ६।४,२५;१०।१७३

पाहुडत्थ (प्राभृतस्थ) सू २०।६

पाहुडपाहुड (प्राभृतप्राभृत) चं ५।४ सू १।६

पाहुणिय (प्राघुनिक) ज ७।१८६।१ सू २०।८

पाहुय (प्राभृत) प १।५०

पि (अपि) उ ३।३०

पिइ (पितृ) उ १।६१;५।४३

पिइदेवया (पितृदेवता) सू १०।८३

पिउ (पितृ) ज ७।१३०,१८६।४ उ १।५२,५४, ७६,७६;३।५१,५६

पिउसेणकण्ह (पितृसेनकृष्ण) उ १।७

पिंगल (पिङ्गल) ज ३।६,१६७।४,२२२

पिंगलक्ख (पिंगलाक्ष) ज ७।१७८

पिंगलक्खग (पिंगलाक्षक) ज २।१२

पिंगलग (पिंगलक) ज ३।१६७

पिंगलय (पिंगलक) ज ३।१६७।१,१७८ सू २०।२, ८,२०।८।४

पिंगायण (पिङ्गायन) ज ७।१३२।३ सू १०।१०८

---

1. दे १।२६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिंडय (पिण्डक) ज ६।६।१
पिंडवाय (पिण्डपात) उ ५।४३
पिंडित (पिण्डित) प २।६४।१५,१६
पिंडिम (पिण्डिम) ज २।१२;५।५
पिक्क (पक्व) प १७।१३३
पिक्खुर (दे०) ज ३।८१
पिच्छय (पिच्छक) उ १।५९,६३,८४
पिच्छि (पिच्छिन्) ज ३।१७८
पिट्ट (दे०) उ ३।११४
पिट्ठओ (पृष्ठतस्) ज ३।१०,११,८६,८७,१७९; ५।४६,६०,६६
पिट्ठओउदग्गा (पृष्ठतउदग्रा) सू ६।४
पिट्ठंत (पृष्ठान्त) उ ३।३
पिट्ठंतर (पृष्ठान्तर) उ २।१६; ५।५
पिट्ठीय (पृष्ठ) उ ३।११४
पिट्ठिकरंडक (पृष्ठकरण्डक) ज २।१६
पिट्ठिकरंडग (पृष्ठकरंडक) ज २।४८,१५६
पिट्ठिकरंडुक (पृष्ठकरण्डक) ज २।५२,१६१
पिट्ठिकरंडुय (पृष्ठकरण्डक) ज २।५६
पिडग (पिटक) सू १९।२२।४,५,६
पिडय (पिटक) सू १९।२२।४,५
पिणद्ध (पिणद्ध) ज ३।९,७७,१०७,१२४,२२२ उ १।३८
√**पिणद्ध** (पि+नह्) पिणद्धेंति ज ३।२११
√**पिणद्धाव** (पि+नाहय्,पि+नि+धापय्) पिणद्धावेइ ज ५।५८
पिणद्धावित्ता (पिनाह्य,पिनिधाप्य) ज ५।५८
पिणद्धेत्ता (पिनह्य) ज ३।२११
पितिपिंड (पितृपिण्ड) ज २।३०
पित्त (पित्त) प १।८४
पित्तिय (पैत्तिक) उ ३।३५,११२,१२८
पिप्परि (पिप्पली) प १।३६।२
पिप्पलिचुण्ण (पिप्पलिचूर्ण) प ११।७६;१७।१३१
पिप्पलिया (पिप्पलिका) प १।३७।२
पिप्पली (पिप्पली) प १७।१३१
पिप्पलीमूलय (पिप्पलीमूलक) १७।१३१
पिप्पीलिया (पिपीलिका) प १।५०
पिय (प्रिय) प २।४१; २८।१०५ ज २।६४; ३।५, ९०,१५७,१८५,२०९; ५।५८ उ १।४१,४४; ३।१२८;५।२२
√**पिय** (पा) पियंति उ ३।९८
पिय (पितृ) उ १।७२,८८,९२; ४।२८
पियंगाल (दे०) १।५१
पियंगु (प्रियङ्गु) प २।४०।९
पियट्ठया (प्रियार्थ) ज ३।५,११५,१२५
पियतर (प्रियतर) ज २।१८; ४।१०७
पियतरिया (प्रियतरका) प १७।१२६ से १२८, १३३ से १३५ ज २।१७
पियदंसण (प्रियदर्शन) ज ३।९,१७,२१,२८,३४, ४१,४९,१३९,१७७,२२२ सू २०।४ उ ५।५,२२
पियर (पितृ) प ११।१३,१८
पियस्सरता (प्रियस्वरता) प २३।१९
पिया (पितृ) ज २।२७
पिया (प्रिया) ज २।६९ उ ४।८,९
पियाल (प्रियाल) ज १।३५।२
पिरिली (पिरिली) ज ३।३१
पिलग (पिलक) ज २।१३७
पिलुक्खरुक्ख (प्लक्षरूक्ष) १।३६।२
पिल्लण (प्रेरण) ज ३।१०९
पिव (इव) ज ३।२२ उ १।१३८; ३।५०
पिवासा (पिपासा) उ ३।११४,११५,११९,१२८
पिसाय (पिशाच) प १।१३२; २।४१ से ४३,४५ ४६; ६।८५
पिसायइंद (पिशाचेन्द्र) प २।४२ से ४४
पिसायराय (पिशाचराज) प २।४२ से ४४
पिसुय (पिशुक) प १।५० ज २।४०
पिधान (पिधान) ज ५।५६
पिहुजण (पृथक्जन) प ६।२६
पिहुल (पृथुल) ज २।१५; ७।३१,३३ सू ४।३,४, ६,७
पीइगम (प्रीतिगम) ज ५।४६।३; ७।१७८
पीइदाण (प्रीतिदान) ज ३।६,२६,२७,३६,४०,

४७,४८,५६,५७,६४,६५,७२,७३,१३३,१३४, १३८,१३९,१४५,१४६
पीइमण (प्रीतिमनस्) ज ३।५,६,८,१५,१६,३१,५३, ६२,७०,७७,८४,९१,१००,११४,१४२,१६५, १७३,१८१,१८६,१९९,२१३; ५।२१,२७ उ १।२१,४२; ३।१३६
पीइवद्धण (प्रीतिवर्धन) ज ७।११४।१
पीढ (पीठ) प ३६।९१ उ ३।३६
पीढग्गाह (पीठग्राह) ज ३।१७८
पीढमद्द (पीठमर्द) ज ३।९,७७
√पीण (प्रीणय्) पीणेंति ज ५।५७
पीण (पीन) ज २।१५
पीणणिज्ज (प्रीणनीय) प १७।१३४
पीणित (प्रीणित) सू १२।२९
पीतय (पीतक) सू २०।२
पीति (प्रीति) उ १।१११,११२
पीतिदाण (प्रीतिदान) ज ३।१५०
पीतिवद्धण (प्रीतिवर्धन) सू १०।१२४।१
पीय (पीत) ज ३।२४,३१
पीयकणवीरय (पीतकरवीर) प १७।१२७
पीयबंधुजीवय (पीतबन्धुजीवक) प १७।१२७
पीयासोग (पीताशोक) प १७।१२७
पीलु (पीलु) प १।३५।१
पीवर (पीवर) ज २।१५; ७।१०८
पीलिज्जमाण (पिष्यमाण) ज ४।१०७
पीहगपाय ('पीहग'पान) उ ३।१३०
पुंख (पुङ्ख) ज ३।२४
पुंज (पुञ्ज) प २।३०,३१,४१ ज २।१०; ३।७,८८ ४।१६६; ५।७
पुंडरीका (पुण्डरीका) ज ५।११।१
पुंडरीगिणी (पुण्डरीकिणी) ज ४।२००।१
पुंडरीय (पुण्डरीक) प २।४८ ज ३।१०; ४।४९,२७४
√पुक्कार (पुक्कारय्) पुक्कारेंति ज ५।५७
पुक्खर (पुष्कर) प १५।५५।१ ज २।६८ सू १९।२१।१
पुक्खरकण्णिया (पुष्करकर्णिका) प २।३०,३१,४१; ३६।८१ ज १।७ सू १।१४
पुक्खरद्ध (पुष्करार्ध) प १५।५५; १७।१६५ सू १९।२१।२,५
पुक्खरवर (पुष्करवर) सू १९।१२ से १६; २१।३,२८
पुक्खरवरदीवड्ढ (पुष्करवरद्वीपार्ध) प १६।३० सू १९।२१
पुक्खरवरोद (पुष्करवरोद) सू १९।२८ से ३१
पुक्खरसारिया (पुष्करसारिका) प १।९८
पुक्खरिणी (पुष्करिणी) प २।४,१३,१६ से १९, २८; ११।७७; २१।८७ ज १।१३,३३; २।१२; ४।१४०,१५४,२२१ से २२४,२३५,२४३
पुक्खरोद (पुष्करोद) ज ५।५५ सू १९।२८ से ३१
पुक्खल (पुष्कल) ज ४।१९६
पुक्खलकूड (पुष्कलकूट) ज ४।१९८
पुक्खलचक्कवट्टिविजय (पुष्कलचक्रवर्तिविजय) ज ४।१९४,१९५
पुक्खलविजय (पुष्कलविजय) ज ४।१९७
पुक्खलसंवट्टय (पुष्कलसंवर्तक) ज २।१४१,१४२
पुक्खलावइचक्कवट्टीविजय (पुष्कलावतीचक्रवर्ति विजय) ज ४।२००
पुक्खलाई (पुष्कलावती) ज ४।१९९
पुक्खलावईकूड (पुष्कलावतीकूट) ज ४।१९९
पुग्गल (पुद्गल) प २८।३५
√पुच्छ (प्रच्छ्) पुच्छइ चं १।४ उ २।१२ पुच्छिज्जंति सू १०।६२ पुच्छिस्सामि उ १।१७; ३।२९
पुच्छणी (प्रच्छनी) प ११।३७।१
पुच्छा (पृच्छा) प २।४४; ४।५० से ५४,५६ से ६४; ६६,६७,६९,७०,७१,७३,७४,७६,७७,८०,८१ से ८७,८९,९०,९२ से ९४,९६,९७,९९,१००, १०२,१०३,१०५ से ११२,११४ से १३०, १३२ से १३६,१४१ से १४८,१५० से १५७, १५९ से १६४,१६६,१६७,१६९,१७०,१७२, १७३,१७५ से १८२,१८४ से २०६,२०८, २०९,२११,२१२,२१४ से २९३,२९५,२९६,

२९८; ५।१३,१५,१९,५५,५८,६२,६७,७०, ७३,८८,९६,१३०,१३३,१३५,१३७,१३९, १४२,१४४,१४६,१४९,१५३,१५६,१५९, १६२,१६५,१६८,१७१,१७३,१७६,१८०,१८३, १८६,१८९,१९२,१९६,१९९,२०२,२०६, २१०,२१३,२१७,२२०,२२३,२२७,२२९, २३३,२३६,२३८;६।२४ से २६,२८ से ४२, ७४,७६,७७,११०,११२;९।२२; १०।७ से १३, २२ से २४;१२।२४,३३;१४।१५;१५।४ से ६, ९,१०,४२,५७,८१,८२,८५,८६,९२,९३; १६।४,६ से ८; १७।१४,१७,२८,२९,३३,४१ से ५५,९५,१०२,१०४,१३१ से १३४,१५८, १६२,१६४; १८।२९,९२,११२,११८,१२१, १२३,१२४,१२७;१९।२,३,५;२०।४,७,१६, ३०,३५,४१ से ४४,४६ से ४८,५३,५४; २१।३७,६७; २२।६८,६९,९५,९९;२३।४८ से ५०,६५,६९ से ७९,८१,८३ से ८६,८८ से ९०,९५,९८,९९,१०१ से १०४,१०६,१११ से ११८,१२८,१२९,१३१ से १३३,१५४,१७३; २४।६,८;२६।६,१०; २८।७६ से ९७,९९, १०९,११०,१२९,१४५;२९।८,११,२०,२१; ३०।१२,१८,२०,२२;३१।२,३,६;३२।३,४,६; ३३।७ से ९,२० से २६,२८,२९,३२,३३,३६; ३४।७ से ९,११;३५।२,११,१९,२२;३६।३४, ५०,५१,५५ से ५७ ज ४।२०४,२१०,२५८, २५९;७।६३,७४,७७,८३,८४,१०८,१४२ से १४४ सू ९।३;१०।१५१;१८।१० से १३,३५, ३६;१९।५,८,११,१५,१९,२१,३१,३५,३८ उ २।१३;३।८,२१,२६,९४,१५६,१६९; ४।५; ५।२३

√पुच्छिज्ज (प्रच्छ्) पुच्छिज्जइ प ३।१२१ पुच्छिज्जंति प ११।८२,८३,८५;१७।३०; २१।६१; २८।११५,११७ पुच्छिज्जति प २८।१४५

पुट्ठ (स्पृष्ट) प २।६४।१०,११; ११।६१,६२, ६९।१;१५।१।१,१५।३६ से ४०,४५;२०।३९; २२।५९;२३।१३ से २३;२८।११,१२,५७,५८ ज १।१८,२०,२३,४८; ३।३५; ४।१,५५,६२, ८१,८६,९८,१०८,१७२; ६।१,३; ७।४०,५०, ५३

पुड (पुट) ज ५।१४,१७ उ १।५५,५७,६१,६२, ८०,८२,८६,८७;३।११४

पुढवि (पृथ्वी) प १।२०।१,१।४८।३८;१।५३, २।१,२० से २७,३० से ३७,४१ से ४३,४६, ४८ से ५१,६३,६४;३।११ से २३,१८३;४।४ से २४;६।१० से १६,४५,५१,७३ से ७८,८०; ८०।१,२;६।८८,९१,९२,१००,१०६;१०।१ से ३;११।२६ से २८;१५।५५।२;१६।२६; १७।३३; १८।१०७,११६;२०।६ से १०,३८ से ४२,४९,५६;२१।५२,५९,६६,८५,८७, ९०;२२।२४; २८।१२३; ३०।२५ से २८, ३३।३ से ८,१६,१७ ज २।१६,१७,६८; ३।२२४; ४।२५४; ७।११२।४,२११,२१२ सू १०।१२९।४

पुढविकाइय (पृथ्वीकायिक) प १।१५,१६; २।१ से ३;३।२,५० से ५२,५४,६० से ६३,६५ ७१ से ७४,७६,८४ से ८७,८९,९५,१५६ से १५८.१८३;४।५६ से ६४,६८;५।३,९,१०, ५२,५३,५५,५६,५८,५९,६२,६३;६।१९,५३, ६२,८२,८३,८६,८९,१०२,१०३,११५; ७।४;८।३;९।४,१६;१२।२०,२१,२३,२५,२६; १३।१६;१५।२० से २८,५३,५४,७२ से ७४, ७९.१३७;१६।१२;१७।९५,१०२;२०।२४; २२।३७; २८।२८;२९।२० ज २।७२ सू २।१

पुढविकाइयत्त (पृथ्वीकायिकत्व) प १५।९६;३६।२२ ज ७।२१२

पुढविक्काइय (पृथ्वीकायिक) प १२।३,२४; १५।५७,८५;१६।४;१७।१८ से २२,४०,६०, ८७,९४,९५,९७,१०२;१८।२६,३२,३८,४०,

पुढविकाय (पृथ्वीकाय) सू २।१

४२,५०;१९।२;२०।१३,२२,२४ से २६,२८,
३२,३५;२१।३ से ५,२३,४०,७६,८०;
२२।३१,७३;२४।६;२८।२९,३०,३३ से ३६,
३८,९९;२९।८ से १०,२०;३०।८,९,१८,१९;
३१।३;३४।३;३५।१९,२०;३६।६;२५,२६,
३८,५१
पुढविक्काइयत्त (पृथ्वीकायिकत्व) प १५।१४१;
३६।२६
पुढविसिलापट्टक (पृथ्वीशिलापट्टक) उ ५।८
पुढविसिलापट्टग (पृथ्वीशिलापट्टक) ज ३।२२३
पुढविसिलापट्टय (पृथ्वीशिलापट्टक) उ १।१
पुढविसिलावट्टय (पृथ्वीशिलापट्टक) ज १।१३
पुढवी (पृथ्वी) सू २।१;९।३;१८।१ उ १।२६,२७,
१४०,१४१
पुण (पुनर्) प ६।८०।१ सू १।२० उ १।१७
पुणं (पुनर्) उ ३।१०२
पुणब्भव (पुनर्भव) प २।६४
पुणरवि (पुनरपि) प ३६।६४ ज २।६;३।८१;
७।११८,१२१ सू २।१
पुणव्वसु (पुनर्वसु) ज ७।१२८,१२९;१३४ से
१३६,१४०,१४९,१६१ सू १०।२ से ६,१३,
२४,४०,६२,६८,७५,८३,१०५,१२०,१३१
से १३३,१५५,१६१;११।२ से ४
पुणो (पुनर्) ज ३।१०९ सू १९।२२ उ ३।९८
पुण्ण (पूर्ण) प २।४०।६ ज २।६०,१०३,१०६,
१०८,१७८;३।९,२२२;४।३,२५,१७२।१;
५।४६;७।१७८
पुण्ण (पुण्य) प १।१०१।२ ज ३।११७।१;५।५,४६
पुण्णकलस (पूर्णकलश) प २।३० ज ५।४३
पुण्णचंद (पूर्णचन्द्र) ज ३।३,११७
पुण्ण (**भद्द**) (पूर्णभद्र) उ ३।२।१
पुण्णभद्द (पूर्णभद्र) प २।४५,४५।१ ज ४।१६२।१,
१६५ उ १।९,१९,१४४;२।१४,१६;३।१५६,
१५८,१६० से १६५,१६९,१७१;५।८
पुण्णभद्दकूड (पूर्णभद्रकूट) ज १।३४,४६;४।१६५
पुण्णमासी (पौर्णमासी पूर्णमासी) ज ७।११२।२,
१४२ चं ५।१ सू १।९।१;१०।२१
पुण्णा (पूर्णा) सू १०।९०
पुण्णाग (पुन्नाग) प १।३५।३ ज ३।१२,८८;५।८
पुण्णिमा (पूर्णिमा) ज ७।१२५,१२७।१,१३७ से
१४५,१५४,१५५,१६७।१ सू १०।९ से १७,
१९ से २२,२६
पुण्णिमासी (पौर्णमासी) ज ७।१३८,१४१ चं ५।१
सू १०।७,८,१८,२०,२२,१२९।२,१३६ से
१५६;१३।१ से ३,६
पुत (पुत) उ ४।९
पुत्त (पुत्र) ज २।२७,६४,६६,१३३ उ १।१०,१३,
१५,२१ से २३,३१,४३,५७,७२,७४,८२,८७,
९५,१०९,११०,११३,११४,१४६;२।६,९,१८,
२२;३।४८,५०,५५,११४
पुत्तंजीवय (पुत्रजीवक) प १।३५।२
पुत्तत्त (पुत्रत्व) उ ५।३०,४३
पुप्फ (पुष्प) प १।३५,३६;१।४८।१७,२७,४०,४१,
४७,६३;२।३०,३१,४०।१०,४१;१५।२ ज २।८
से १०,१२;१५ से १८,६५;१४५,१४६;३।७,
११,१२,२१,३४,७८,८५,८८,१०९,१८०,
२०९;४।१६६;५।७,२२,२६,४८,४९,५५;
७।३१,३३,३५,५५,११२।३,४ सू ४।३,४,६,
७,९;१०।२०,१२९।३,४;१९।२२।२,१५;
१९।२३;२०।८।९ उ १।३५;३।५०,५१,५३,
११०,११४;५।६
√पुप्फ (पुष्प्) पुप्फंति ज ३।१०४,१०५
पुप्फकेतु (पुष्पकेतु) सू २०।८
पुप्फचंगेरी (पुष्प 'चंगेरी') प ३३।२५ ज ३।११;
५।७,५५
पुप्फचूला (पुष्पचूला) उ ४।२०,२२,२८
पुप्फचूलिया (पुष्पचूलिका) उ १।५;४।१ से ३,
२७;५।११
पुप्फछज्जिया (पुष्पछादिका) ज ५।७
पुप्फपटलहत्थगय (हस्तगतपुष्पपटल) ज ३।११
पुप्फपडलग (पुष्पपटलक) ज ५।७
पुप्फबद्दलय (पुष्पवार्दलक) ज ५।७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुप्फमाला (पुष्पमाला) ज ५।१।१
पुप्फय (पुष्पक) ज ५।४६।३
पुप्फ (वासा) (पुष्पवर्षा) ज ५।५७
पुप्फविंटिय (पुष्पवृन्तक) प १।५०
पुप्फाराम (पुष्पाराम) उ ३।४८ से ५०,५५
पुप्फारुहण (पुष्पारोहण पुष्पारोपण) ज ३।१२,८८
पुप्फासव (पुष्पासव) प १७।१३४
पुप्फाहार (पुष्पाहार) उ ३।५०
पुप्फिय (पुष्पित) उ ३।४९
पुप्फिया (पुष्पिका) उ १।५;३।१ से ३,१९,२०, २२,२३,८७,८८,१५३,१५४,१६६,१६७,१७०; ४।१
पुप्फुत्तर (पुष्पोत्तर) प १७।१३५
पुप्फुत्तरा (पुष्पोत्तरा) ज २।१७ शक्कर की जाति
पुप्फोदय (पुष्पोदक) ज ३।९,२२२;
पुप्फोवयार (पुष्पोपचार) ज ७।१३३।१
पुप्फोवयारसंठिय (पुष्पोपचारसंस्थित) सू १०।१३०
पुम (पुंस्) प ११।५ से १०,२४,२६ से २८
पुमवयण (पुंस्वचन) प ११।२९,८६
पुर (पुर) ज २।६४
पुरओ (पुरतस्) ज ३।१२,८८,१७८,१७९,२०२, २१७;४।५,२७,१२२,१२४,१२७;५।३१,४३, ४४,४६,५७,५८,६०,६६ उ ३।५०,११२;४।१९
पुरओउदग्गा (पुरतउदग्रा) सू ९।४
पुरंदर (पुरन्दर) प २।५० ज ५।१८
पुरक्खड (पुरस्कृत) सू ८।१
पुरजण (पुरजन) ज ३।१२,२८,४१,४९,५८,६६, ७४,१४७,१६८,२१२,२१३
पुरतो (पुरतस्) सू २।२
पुरत्थाभिमुह (पौरस्त्याभिमुख) ज ३।६,१२,२८, ४१,४९,५८,६६,७४,१४७,१८८,२०४,२१९, २२२;५।२१,४१,४७,६० उ १।४१;३।९१
पुरत्थाभिमुहि (पौरस्त्याभिमुखिन्) ज ४।२३,३५, २६२
पुरत्थिम (पौरस्त्य,पूर्व) प ३।१ से ३७,१७६,१७८ ज १।१६,१८,२०,२३,२४,३५,४१,४६,४८, ५१;३।१,१४,१५,२२,२६,५१,५२,१६१;४।१, १८,२६,३५,४५,५५,५७,६२,७१,८१,८४,८६, ९०,१०३,१०६,१०८,१२९,१५१।१,१५३, १६२,१६७,१६९,१७२,१७८,१८१,१८२, १८४,१८५,१९०,१९१,१९३,१९४,१९६, १९७,१९९ से २०३.२०५,२०६,२०८,२०९, २१३,२१५,२१६,२२८,२३३,२३५,२३८, २४३,२४५,२६२,२६५,२६६,२७१,२७२, २७४,२७७;५।८,१०,३९,४७;६।१९ से २४; ७।१७८ सू २।१;८।१;१३।१२,१५;१५।८ से १३;१८।१४ से १७;२०।२ उ ३।५१
पुरत्थिमपच्चत्थिम (पौरस्त्यपाश्चात्य) सू २।१; ८।१
पुरत्थिमलवणसमुद्द (पौरस्त्यलवणसमुद्र) ज ४।२६८
पुरत्थिमिल्ल (पौरस्त्य) प १६।३४ ज १।२०;२३, ४८;२।११७;३।२६,९५,९७,९९,१३५,१५१, १५९,१७०,२०४,२१४;४।१,२३,५५,६२,८१, ८६,९८,१०८,१४३,१४७,१५६,१७२,२२६, २२७,२३७,२३८,२६२;५।१४,४४;७।१७८ सू २।१;१०।१४७;१३।१५
पुरवर (पुरवर) ज ३।३२,३५,२२१
पुरा (पुरा) ज १।१३,२०,२३,२७;४।२
पुराण (पुराण) ज ३।१६७
पुरिसकंठभाओवगता (पूर्वकण्ठभागोपगता) सू ९।४
पुरिमड्ढ (पूर्वार्द्ध) प १६।३०
पुरिमताल (पुरिमताल) ज २।७१
पुरिमद्ध (पूर्वार्द्ध) प १६।३०;१७।१६५
पुरिस (पुरुष) प १।६०,६६,७५,७६,८१,८४; २।६४।१९;३।१८३;६।७९;१६।४८,५२,५४; १७।१०८,१०९,१११ ज ३।७,८,१५,१६,२१, ३१,३४,३५,७७,८१,१२५,१६७।४,१७३, १७६,१७८,१८३,१९९,२००,२१२,२१३ च ४।२ सू १८।२;२०।७ उ १।१७,१८,४४, ४५,१२३,१३१;३।११०,१११;४।१६ से १८;

५।५,१५ से १८
पुरिसकार (पुरुषकार) सू २०।९।३
पुरिसक्कार (पुरुषकार) प २३।१९,२० ज २।५१, ५४,१२१,१२६,१३०,१३८,१४०,१४९,१५४, १६०,२६३;३।१२६,१८८;७।१७८ सू २०।१
पुरिसच्छाया (पुरुषच्छाया) ज ७।२२,२५ सू २।३
पुरिसजुग (पुरुषयुग) ज २।८४
पुरिसवरगंधहत्थि (पुरुषवरगन्धहस्तिन्) ज ५।२१
पुरिसवरपुंडरीय (पुरुषवरपुण्डरीक) ज ५।२१
पुरिसलिंगसिद्ध (पुरुषलिङ्गसिद्ध) प १।१२
पुरिसवेद (पुरुषवेद) प १८।६१;२३।१४२,१८७; २८।१४०
पुरिसवेदग (पुरुषवेदक) प ३।९७;१३।१४,१८,१९
पुरिसवेय (पुरुषवेद) प २३।२९,७४,८४,१४४
पुरिसवेयग (पुरुषवेदक) प १३।१५
पुरिसवेयपरिणाम (पुरुषवेदपरिणाम) प १३।१३
पुरिससीह (पुरुषसिंह) ज ५।२१
पुरिसादाणीय (पुरुषादानीय) उ ३।१२,२९,७९; ४।१०,११,१३,१४,१९
पुरिसोत्तम (पुरुषोत्तम) ज ५।२१
पुरीष (पुरीष) उ ३।१३०,१३१,१३४
पुरेक्खड (पुरस्कृत) प १५।८३ से ८५,८७,८९ से १०१,१०३ से १०६,१०८ से ११०,११२ से १२३,१२५ से १३२,१३५ से १४३;३६।८ से २६,३० से ३४,४४,४५,४७
पुरेखडिय (पुरस्कृतक) प १५।५८।२
पुरोहियरयण (पुरोहितरत्न) ज ३।१७८,१८६, १८८,२०६,२१०,२१६,२१९,२२०
पुरोहियरयणत्त (पुरोहितरत्नत्व) प २०।५८
पुलग (पुलक) प १।५८ ज १।५;५।५
पुलय (पुलक) प १।२०।४ ज ३।३५
पुलाकिमिया (दे०) प १।४९
पुलिंद (पुलिन्द) प १।८९
पुलिंदी (पुलिन्दी) ज ३।११।२
पुलिण (पुलिन) ज ४।१३ सू २०।७
पुलिय (पुलित) ज ३।१७८;७।१७८
पुव्व (पूर्व) प १६।२१;३६।९२ ज २।४,१६१; ३।१८५,२०९,२२१;४।१३५,२३८; ७।३८, २१२ चं १।३ सू ३।१।८।१;१८।१,२१ उ १।९६,१०९,११०,११३,११४
पुव्वंग (पूर्वाङ्ग) ज २।४;७।११७।१ सू ८।१; १०।८६।१
पुव्वंभाग (पूर्वभाग) सू १०।४,५
पुव्वकोडाकोडि (पूर्वकोटिकोटि) ज ३।१८५,२०९
पुव्वकोडि (पूर्वकोटि) प ४।१०७,१०९,११३,११५, ११६,११८,११९,१२१,१३१,१३३,१३७,१३९, १४०,१४२,१४६,१४८;१८।४,६०,८१,८४, ८९,९६;२३।७८,७९,१४७,१५८,१६२,१६५, १६९ ज २।१२३,१५१;३।१८५,२०९;४।१०१
पुव्वग (पूर्वक) प ११।४६
पुव्वचिंतिय (पूर्वचिन्तित) उ ३।७९
पुव्वण्णत्थ (पूर्वन्यस्त) ज ५।४२
पुव्वण्ह (पूर्वाह्ण) ज २।७१,८८
पुव्वदारिया (पूर्वद्वारिका) सू १०।१३१
पुव्वपडिवण्ण (पूर्वप्रतिपन्न) उ ३।८१,८२
पुव्वपोट्ठवया (पूर्वप्रोष्ठपदा) सू १०।६४
पुव्वफग्गुणी (पूर्वफल्गुनी) ज ७।१२८,१२९,१३६
पुव्वभद्दवया (पूर्वभद्रपदा) ज ७।१२८,१२९,१३६, १३९,१४२ सू १०।६
पुव्वभव (पूर्वभव) उ ३।९,२१,२६,१४९,१५६, १६९,१७१;४।५,२८
पुव्वभाव (पूर्वभाव) प २८।६८ से १०१
पुव्वरइतगुणसेढीय (पूर्वरचितगुणश्रेणिक) प ३६।९२
पुव्वरत्त (पूर्वरात्र) उ १।५१,६५,७६;३।४८,५०, ५५,५७,६६,७२,७५,७९,९८,१०६,१३१
पुव्ववण्णिय (पूर्ववर्णित) ज २।५२,१६१;३।१७१; ४।९६,१०१,१०९,१६०,२३७,२४३;५।६,७; ७।३५,१६७
पुव्वविदेह (पूर्वविदेह) प १६।३०;१७।१६१ ज २।६;४।९६,९९,२१३,२६३।१
पुव्ववेयाली (पूर्व 'वेयाली') प १६।४५

पुव्वसंगइय (पूर्वसांगतिक) उ ३।५५
पुव्वसयसहस्स (पूर्वशतसहस्र) ज २।६४,८७,८८; ३।१८५,२२५
पुव्वाणुपुव्वी (पूर्वानुपूर्वी) उ १।२,१७;३।२६,६६, १३२,१४६,१५६;४।११;५।३६
पुव्वा (पूर्व) सू १०।५,१२०;११।३;१२।२३
पुव्वापोट्ठवता (पूर्वप्रौष्ठपदा) सू १०।५६
पुव्वापोट्ठवया (पूर्वप्रौष्ठपदा) सू १०।४,५,६,२१, २३,३१,८२,६६,१३१,१३२
पुव्वाफग्गुणी (पूर्वफल्गुनी) ज ७।१४०,१४८, १५१,१६३ सू १०।२ से ६,१५,२३,४४,६२, ७०,७५,८३,१०६,१२०,१३१ से १३३,१५२; १२।२३
पुव्वाभद्दवया (पूर्वभद्रपदा) ज ७।१४६,१५७ सू १०।२,३,५,७५,१३१,१३३
पुव्वामेव (पूर्वमेव) प ३६।६२ उ ४।२१
पुव्वावर (पूर्वापर) ज १।२६;४।२१,१४२,२५६; ६।१०,११,१४,१५,१८ से २२,२६;७।४,६३, ८७,११०,१८३
पुव्वासाढा (पूर्वाषाढा) ज ७।१२८,१३६,१४०, १४६,१६७ सू १०।२ से ६,१६,२३,५३,६२, ७४,८३,११८,१३१ से १३५
पुव्विं (पूर्वम्) उ ३।११८
पुव्विल्ल (पूर्वीय) ज ५।४१
पुव्वोववण्णग (पूर्वोपपन्नक) प १७।४,६,१६,१७
पुस (पुष्य) ज ७।१२६।१
पुस्स (पुष्य) ज ७।१३६,१४०,१४६,१६१,१६२ सू १०।२,३,५,६,१३,२४,४१,६२,६८,६६, ७५,८३,१०६,१२०,१३१ से १३३,१५६; ११।६;१६।२२।१७
पुस्सदेवया (पुष्यदेवता) सू १०।८३
पुस्सफल (पुष्यफल) प १।४८।४८
पुस्सायण (पुष्यायण) ज ७।१३२।२ सू १०।६८
पुहत्त (पृथक्त्व) प ७।३,६ से ६;११।८१,८३,८४; १२।६;१५।६;१८।४,१६,२४,३१,३६,४६,५४, ६०,६१,११३,११६;२१।४४ से ४७,४७।१, २,६,२१।६८;२४।१४,१५;२५।२,४;२७।२,६; २८।२७,७३ से ७६,१२१,१२४,१२७ से १३२,१३६,१४३,१४५;३६।१७,३४
पुहत्तय (पार्थक्तिवक) प ११।८५
पुहवी (पृथ्वी) ज ३।३,३५;५।१०।१
पूअफलीवण (पूगफलीवन) ज २।६
पूइ (पोई) प १।३५।३
पूइत्त (पूतित्व) ज २।६
पूइय (पूजित) ज ३।८१;५।५
पूजित (पूजित) उ ३।४८,५०
पूय (पूज) प १।८४;२।२० से २७ ज ३।१२० उ १।५६,६१,६२ ८४,८६,८७
पूयणय (दे०) प १।६५
पूयणवत्तिय (पूजनप्रत्ययम्) ज ५।२७
पूयणिज्ज (पूजनीय) सू १८।२३
पूयफली (पूगफली) प १।४३।२
पूया (पूजा) उ ३।५१
√पूर (पूरय्) पूरयंते ज ३।३१ पूरेइ प ३६।८५ ज ७।१११२।५ पूरेंति ज ५।१३ पूरेति सू १०।१२६।५
पूरग (पूरक) ज ३।८८
पूरयंत (पूरयत्) ज २।६५;३।३१
पूरिम (पूरिम,पूर्य्य) ज ३।२११
पूरेंत (पूरयत्) ज ३।३०,४३,५१,६०,६८,१३०, १३८ से १४०,१४६;७।१७८
पूरेत्ता (पूरयित्वा) ज ५।१३
पूस (पुष्य) ज ७।१२८,१३०,१८६।३ सू १०।४; १२।१६ से २३,२६
पूसफली (पुष्पफली) प १।४०।१
पूसमाणय (पुष्यमाणव) ज ३।१८५
पूसमाणव (पुष्यमाणव) २।६४;५।३२
पेच्छणिज्ज (प्रेक्षणीय) ज २।१५
पेच्छा (प्रेक्षा) ज २।२०,३२
पेच्छाघरसंठिल (प्रेक्षागृहसंस्थित) सू ४।२
पेच्छाघरमंडव (प्रेक्षागृहमण्डप) ज ३।१६३;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४।१२३,१२४;५।३३

पेच्छिज्जमाण (प्रेक्ष्यमाण) ज २।६५;३।१८६,२०४

पेज्ज (प्रेयस्) प ११।३४।१;२२।२०

पेज्जणिस्सिया (प्रेयोनिश्रिता) प ११।३४

पेढ (पीठ) ज ४।१४३,२०८;५।१३

पेम्म (प्रेमन्) ज २।२७

पेरंत (पर्यन्त) ज १।१६;३।१२६।४;४।१४३, २४५,२४९,२५१;७।१७८

पेलव (पेलव) ज ३।२११;५।५८

पेस (प्रेष्य) ज २।२६

√**पेस** (प्र+इष्) पेसिज्जइ उ १।१२८ पेसेइ उ १।११० पेसेमि उ १।१०९ पेसेमो उ १।१२७ पसेह उ १।१०७ पेसेहि उ १।११५

पेसल (पेशल) प १७।१३४

पेसित्तए (प्रैषितुम्) उ १।१०७

पेसिय (प्रेषित) उ १।११९,१२७

पेसुण्ण (पैशुन्य) प २२।२०

√**पेह** (प्र+ईक्ष्) पेहति प १५।५०

पेहमाण (प्रेक्षमाण) प १५।५०

पेहुणमिंजिया ('पेहुण' मञ्जिका) प १७।१२८

पोंडरीय (पौण्डरीक) प १।४६,७९ ज ४।३,२५

पोंडरीयदल (पौण्डरीकदल) प १७।१२८

√**पोक्ख** (प्र+उक्ष्) पोक्खेइ उ ३।५१

पोक्खरत्थिभय (पुष्करास्थिभाग) ज ४।७

पोक्खरपत्त (पुष्करपत्र) ज ३।१०९

पोक्खरवर (पुष्करवर) सू १९।१५।१,२

पोक्खरवरदीव (पुष्करवरद्वीप) सू १९।१५

पोक्खल (पुष्कर) प १।४६

पोक्खलत्थिभय (पुष्करास्थिभाग) प १।४६

पोक्खलावतीचक्कवट्टिविजय (पुष्कलावतीचक्रवर्तिविजय) ज ४।१९७

पोग्गल (पुद्गल) प १।८४;३।१।२,१२४,१७५, १७६,१८० से १८२;५।१४०,१४३,१४५, १४७,१५०,१५४,२३३,२३४,२३६ से २३९, २४१,२४२;९।२६;१५।४० से ४७,४९; १६।३३,३४;१७।२,२५;२१।१।१,९५,९६; २३।१३ से २३;२८।२०,२२ से २४,३२,३४, ३६,३९ से ४२,४४,४५,४८,६६,६८ से ७१, १०५;३४।१।१,३४।६,१९,२०;३६।५९,६१, ६२,६६,७०,७३,७४,७६,७७,७९ से ८१; ज २।६;३।१९२;५।५,७;७।२११ सू ५।१; ७।१;९।१;२०।२

पोग्गलगति (पुद्गलगति) प १६।३८,४३

पोग्गलत्थिकाय (पुद्गलास्तिकाय) प ३।११४ ११५,१२०,१२२

पोग्गलपरियट्ट (पुद्गलपरिवर्त) प १८।३,२७,४५, ५९,६४,७७,८३,९०,१०८

पोच्चड (दे०) उ ३।१३०

पोट्ट (दे०) ज २।४३

पोट्टलिया (पोट्टलिका) ज ५।१६

पोट्ठवई (प्रौष्ठपदी) ज ७।१३९,१४२,१४८,१५१, १५५

पोट्ठवती (प्रौष्ठपदी) सू १०।७,९,२१,२३,२६

पोट्ठवय (प्रौष्ठपद) सू १०।५,१२०,१५३

पोडइल (पोटगल) प १।४२।१ नल तृण

पोत्तिया (दे०) प १।५१।१

पोत्तिय (पौत्रिक) उ ३।५०

पोत्थगग्गाह (पुस्तकग्राह) ज ३।१७८

पोत्थयरयण (पुस्तकरत्न) ज ४।१४०

पोत्थार (पुस्तकार) प १।९७

पोरग (पोर) प १।४४।१ इक्षु

पोराण (पुराण) प २८।२०,२६,३२,६६ ज १।१३,३०,३३,३६;४।२

पोरिसिच्छाया (पौरुषीच्छाया) सू १।६।३;९।१ से ३

पोरिसी (पौरुषी) ज ७।१५६ से १६७ सू १०।६४ से ७४

पोरिसीच्छाया (पौरुषीच्छाया) चं २।३

पोरेवच्च (पौरपत्य पौरोवत्य) प २।३० से ३३, ३५,४१,४८ से ५१ ज १।४५;३।१८५,२०९, २२१;५।१९ उ ५।१०

पोलिंदी (पौलिन्दी) प १।९८

पोस (पौष) ज २।१६;७।१०४ सू १०।१२४ उ ३।४०
पोसह (पौषध) ज २।१३५
पोसहघर (पौषधगृह) ज ३।३२
पोसहसाला (पौषधशाला) ज ३।१८ से २१,३१, ३३,३४,५२ से ५४ ५८,६१,६३,६६,६९,७०, ७१,७४,८४,८५,१३७,१३९,१४१ से १४३, १४७,१६४ से १६८,१८० से १८३,१९०, १९९ उ ५।३५
पोसहिय (पौषधिक) ज ३।२०,३३,३५,५४,६३, ७१,८४,१३७,१४३,१६७,१८२
पोसहोववास (पौषधोपवास) प २०।१७,१८,३४,
पोसी (पौषी) ज ७।१३७,१४०,१४६,१४९,१५५, सू १०।७,१३,२२,२३,२६
पोहत्त (पृथक्त्व) प १५।१।१,१५।८ से १०,२३, ३०.१४०;२४।९
पोहत्तिय (पार्थक्त्विक) प २२।२५,२८;२३।८,१२

फ

फग्गुण (फाल्गुन) ज २।७१;७।१०४ सू १०।१२४ उ ३।४०
फग्गुणी (फल्गुनी) ज ७।१३७,१४०,१४९,१५३, १५५;१०।१२०;१२।२३ सू १०।७,१५,२३. २५,२६,१२०,१५३,१५८;१२।२३
फणस (पनस) प १।३६।१;१६।५५;१७।१३२
फणिज्जय (फणिज्झक) प १।४४।३ मरुआ
फरिस (स्पर्श) ज ३।८२,१८७,२११,२१८;५।५८ सू २०।७ उ ५।२५
फरुस (परुष) ज २।१३१,१३३
फल (फल) प १।३५,३६;१।४८।९,१८,२८,६३; २३।१३ से २३ ज १।१३,३०,३३,३६;२।८, ९,१२,१६,१७,१८,७१,१४५,१४६; ३।११७, २२१;४।२;७।११२।३,४ सू १०।१२०, १२९।३,४ उ १।३४,९८,९९;३।५०,५३,९८, १०१,१३१;५।६
फलग (फलक) प ३६।९१ ज ३।३१ उ ३।३६
फलगग्गाह (फलकग्राह) ज ३।१७८
फलय (फलक) ज ४।२६ उ १।१३८
फल (वासा) (फलवर्षा) ज ५।५७
फलविंटिय (फलवृन्तक) प १।५०
फलहसेज्जा (फलकशय्या) उ ५।४३
फलासव (फलासव) प १७।१३४
फलाहार (फलाहार) उ ३।५०
फलिय(फलित) उ ३।४९
फलिहकूड (स्फटिककूट) ज २।५१,५९
[1]**फलिहामय** (स्फटिकमय) सू १८।८
फाणिय (फाणित) प १५।१।२,१५।५०
फालिय (स्फटिक) ज ४।३,२५
फालियामय (स्फटिकमय) प २।४८ ज ७।१७६, १७८
फास (स्पर्श) प १।४ से ९;२।२० से २७,३०,३१, ४१,४८,४९;३।१८२;५।५,७,१०,१२,१४,१६, १८,२०,२४,२८,३०,३२,३४,३७ ३९,४१,४५, ५३,५६,५९,६१,६३,६८,७१,७४,७६,७८, ८३,८६,८९,९१,९३,९७,१०१,१०४,१०७, १०९,१११,११५,११९,१२९,१३१,१३४, १३६,१३८,१४०,१४३,१४५,१४७,१५०, १५२,१५४,१६३,१६६,१६९,१७२,१७४, १७७,१८१,१८४,१८७,१९०,१९३,१९७, २००,२०७,२११,२१४,२१८,२२१,२२४, २२८,२३०,२३२,२३४,२३७,२३९,२४२, २४४;१०।५३।१;११।५९; १५।३८,७७,८१, ८२;१७।१३२ से १३४;२३।१३ से २३,१०९, २८।९,१०,२०,३२,५५,५६,६६; ३४।१।२; ३६।८०,८१ ज १।१३;२।७,१८,६८,१४२; ३।१३८;४।२७,४९,८२;५।३२;७।२०९ सू २०।७,८,२०।८,४
फासओ (स्पर्शतस्) प १।५ से ९;११।६०; २८।१०,२०,२६,५६
फासचरिम (स्पर्शचरम) प १०।५२,५३

---

1 हे० १।१९७

फासणाम (स्पर्शनामन्) प २३।३८,५०

फासतो (स्पर्शतस्) प ११६ से ९;२८।३२,६६

फासपज्जव (स्पर्शपर्यव) ज २।५१,५४,१२१,१२६, १३०,१३८,१४०,१४९,१५४,१६०,१६३; ७।२०९

फासपरिणाम (स्पर्शपरिणाम) प १३।२१,२९

फासपरियार (स्पर्शपरिचार) प ३४।२१

फासपरियारग (स्पर्शपरिचारक) प ३४।२८,२१,२५

फासपरियारणा (स्पर्शपरिचारणा) प ३४।१७,२१

फासमंत (स्पर्शवत्) प ११।५२,५९;२८।५,६,५१; ५५

फासविण्णाणावरण (स्पर्शविज्ञानावरण) प २३।१३

फासादेस (स्पर्शादेश) प १।२०,२३,२६,२९,४८

फासावरण (स्पर्शावरण) प २३।१३

फासिंदिय (स्पर्शेन्द्रिय) प १५।१,६,७,१० से १८, २० से २७,३०,३१,३५,४२,५८ से ६४,६६,७०, ७३,७४,८०,८५,१३३;२८।४२,४५,४६,७१ उ ३।३३

फासिंदियत्त (स्पर्शेन्द्रियत्व) प २८।२४,२६;३४।२०

फासिंदियपरिणाम (स्पर्शेन्द्रियपरिणाम) प १३।४

फासु (प्रासु) उ ३।३६

फासुय (प्रासुक,स्पर्शुक) उ ३।११४

फासुयविहार (प्रासुकविहार) उ ३।३०,३६

फासेंदिय (स्पर्शेन्द्रिय) प १५।१९,२८,३१ से ३३, ६४ से ६७,७९,१३४;२८।३६

फुट्ट (दे०) ज २।१३३

√**फुट्ट** (स्फुट्) फुट्टउ उ ५।७२ फुट्टिहि ज ५।७३

फुट्टमाण (स्फुटत्) ज ३।८२,१८७,२१८

फुड (स्पृष्ट) प १५।५३ से ५७;३६।५९,६०,६६ से ६८,७०,७१,७४,७५,८१ चं १।३

फुडित्ता (स्फुटित्वा) प ११।७८

फुडिय (स्फुटित) प २।१३३

फुल्ल (फुल्ल) ज ३।१८८

फुल्लावलि (फुल्लावलि) ज ५।३२

√**फुस** (स्पृश्) फुसइ ज ३।१२१ फुसई प २।६४।११ फुसंति प ११।७२ सू ५।१ फुसंतु ज ३।११२

फुसमाण (स्पृशत्) प १३।२३

फुसमाणगति (स्पृशद्गति) प १६।३८,३९

फुसित्ता (स्पृष्ट्वा) प १५।५१;१६।३९;३६।७९,८१ ज ३।१३१

फुसिय (स्पृष्ट) ज ५।७

फेण (फेन) ज ३।३५;४।१२५;५।६२;७।१७८

फेणमालिनी (फेनमालिनी) ज ४।२१२

ब

बउल (बकुल) प १।३५।१

बउस (बकुश) प १।८९

बंध (बन्ध) प ३।१।२;१३।२२।१,२;१४।१८।१; २६।१२ ज २।१३३

√**बंध** (बन्ध्) बंधइ प २३।३,१९८;२४।३ से १५ उ ३।५५ बंधति प १८।१८;२२।२२,२३, ८६,९०;२३।५,७,१३४,१३५,१३७ से १४०, १४२,१४३,१४६,१४७,१५१ से १५८,१६० से १६२,१६४,१६६,१६७,१६९,१७१ से १७४,१७६,१७७,१८१,१८५,१८६,१९०; २४।४,५,१० से १२,१५;२६।४,९ ज ५।१३ बंधति प २२।२१,८३,८६,८७;२३।१।१, २३।४,६,१९४ से १९६,१९८ से २०१;२४।२, ३,१०,१५;२६।२,३,८ बंधिंसु प १४।१७ बंधिस्संति प १४।१८ बंधेंसु प १४।१८ बंधेसि उ ३।७९

बंधग (बन्धक) प ३।१७४;२२।२२,२३,८४,९०; २३।६३; २४।४ से ८,१० से १३;२६।४ से ६,८ से १०;२७।५

बंधण (बन्धन) प २।६४।२२;१६।५५,३६।८२।१, ८३।१,९४।१ ज २।२७,२९,८६,८९,१३३; ३।२२५ उ १।६६,६८,७२,८८,९२

बंधणछेदणगति (बन्धनछेदनगति) प १६।१७,२३

बंधणपरिणाम (बन्धनपरिणाम) प १३।२१,२२

बंधणविमोयणगति (बंधनविमोचनगति) प १६।३८,५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंधमाण (बध्नत्) प २२।२६,२७;२४।२ से ५,६ से १५;२५।२,४,५

बंधय (बन्धक) प ११।६२;२२।२१ ८३,८६,८७; २३।१।१,२३।१६१ से १६३; २४।२,३,७,८, १०,१२;२६।२ से ४,६,८ से १०

बंधित्ता (बद्ध्वा) ज ५।१३ उ ३।५५

बंधुजीवग (बन्धुजीवक) प १।३८।१ ज २।१०; ३।३५

बंधेउकाम (बद्धुकाम) उ १।७३

बंधेत्ता (बद्ध्वा) ज ५।१६ उ ३।७६

बंभ (ब्रह्मन्) प २।५४;१५।८८ ज ७।१२२।१ सू १०।८४।१

बंभचेर (ब्रह्मचर्य) ज ७।१६६ सू १८।३

बंभचेरवास (ब्रह्मचर्यवास) उ ५।४३

बंभण्णय (ब्राह्मण्यक) उ ३।२८,३८,४०,४२

बंभयारि (ब्रह्मचारिन्) ज ३।२०,३३,५४,६३,७१, ८४,१३७,१४३,१६७,१८२

बंभलोग (ब्रह्मलोक) प २।४६,५४,५५,६०;७।१२; ३३।१६; ३४।१६

बंभलोय (ब्रह्मलोक) प १।१३५;२।४६,५४ से ५७, ६३,३।३३,१८३;४।२४३ से २४५;६।३१,५६, ६५; २०।६१;२१।७०;२८।७६; ३४।१८ उ २।२२;५।२८

बंभलोयग (ब्रह्मलोकज) ज ५।४६

बंभलोयवडिंसय (ब्रह्मलोकावतंसक) प २।५४

बंभी (ब्राह्मी) प १।६८ ज २।७५

बकुल (बकुल) ज ३।१२,८८;५।५८

बग (बक) प १।७६

√बज्झ (बंध) बज्झति उ ३।१४२

बत्तीस (द्वात्रिंशत्) प २।२२ सू २।३ उ ३।१२६; ५।३५

बत्तीसइ (द्वात्रिंशत्) ज ३।१८६,२०४

बत्तीसइविह (द्वात्रिंशत्विध) ज ५।५७ उ ३।१५६

बत्तीसग (द्वात्रिंशत्) ज ७।१३३।१

बत्तीसजणवयसहस्सराय (द्वात्रिंशद्जनपदसहस्र-राजन्) ३।१२६।२

बत्तीसमंगुलमूसियसिर (द्वात्रिंशदङ्गुलोच्छ्रितशिरस्क) ज ३।१०६

बत्तीसविह (द्वात्रिंशत्विध) ज ३।१५६

बदर (बदरा) प १।३७।२ कपास का पौधा

बद्ध (बद्ध) प १५।५८।२;२०।३६; २३।१३ से २३ ज ३।२४,३५,७७,८२,१०७,१२४,१७८,१८६, १८७,२०४,२१४,२१८,२२१; ४।३,२५ उ १।१३८

बद्धग (दे०) ज ७।१७८ एक आभूषण

बद्धेल्लग (दे०) प १२।८ से १३,१६,२०,२१,२३, २४,२७,२८,३१ से ३३;१५।८३ से ८६,८६ से ६३,६५ से ६७,६६ से १०६,१०८ से १२३, १२५ से १३२,१३५,१३६ से १४१,१४३

बद्धेल्लय (दे०) प १२।७,८,१२,२०; १५।६४

बब्बर (बर्बर) प १।८६ ज ३।८१

बब्बरी (बर्बरी) ज ३।११।१

बम्ह (ब्रह्मन्) ज ७।१३०,१७६,१८६।३

बम्हदेवया (ब्रह्मदेवता) सू १०।७८

बरग (दे०) ज ३।११६ शालि विशेष

बरहिण (बर्हिन्) प १।७६

बल (बल) प २०।१।१;२३।१६,२० ज २।५१,५४, ६४,७१,१२१,१२६,१३०,१३८,१४०,१४६, १५४,१६०,१६३;३।३,१२,३१,७७,७८,८१, १०१,१०३,१०६,११७,१२६,१२६,१५१, १८०,१८८,२०६;४।२३६;;५।५,२२, २६,७।१७८ सू २०।१,७,६।३,५ उ १।६६, ६६;११५,११६;३।२।१,१७१

बलकर (बलकर) ज ३।१३८

बलकूड (बलकूट) ज ४।२३६,२३६

बलदेव (बलदेव) प १।७४,६१;६।२६ ज २।१२५, १५३;७।२०० उ ५।१० से १२,३०

बलदेवत्त (बलदेवत्व) प २०।५५

बलव (बलवत्) ज ५।५;७।१२२।१ सू १०।८४।१

बलवग (बलवत्क) उ २।५

बलविसिट्ठया (बलविशिष्टता) प २३।२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बलविहीणया (बलविहीनता) प २३।२२
बलाग (बलाक) ज ३।३५
बलागा (बलाका) प १।७९
बलावलोय (बलावलोक) ज ३।८१
बलाहगा (बलाहका) ज ५।६।१
बलाहया (बलाहका) ज ४।२१०.२३८
बलि (बलि) प २।३१.३३; ४०।७ ज २।११३, ११६; ५।५१ उ ३।५१,५६,६४
बलिकम्म (बलिकर्मन्) ज ३।५८,६६,७४,७७,८२, ८५,१२५,१२६,१४७ सू २०।७ उ १।१६, ७०,१२१; ३।११०;५।१७
बलिपेढ (बलिपीठ) ज ४।१४०
बलिमोडय (दे०) प १।४८।४७
बव (बव) ज ७।१२३ मे १२५
बहल (बहल) ज ३।१०९
बहलतर (बहलतर) प १।४८।३० से ३३
बहलिय (बहलीक) प १।८९
बहली (बहली) ज ३।११
बहव (बहु) ज १।१३,३१;२।७,१०,२०,६५,१०१, १०२,१०४,१०६,११४ से ११६,१२०;३।१०, ८६,१०३,१७८,१८५,२०६,२१०;४।२२,८३, ९७,११३,१३७,१६६,२०३,२६६,२७६;५।२६, ७२ से ७४ सू १८।२३ उ ३।४८ से ५०,५५, ९२,१२३;५।१७
बहस्सइ (बृहस्पति) सू २०।८,२०।८।४
बहस्सइदेवया (बृहस्पतिदेवता) सू १०।८३
बहस्सति (बृहस्पति) प २।४८
बहस्सतिमहग्गह (बृहस्पतिमहाग्रह) सू १०।१२६
बहिं (बहिस्) प २।४८
बहिता (बहिस्तात्,बहिस्) सू १९।२२।२७
बहिया (बहिस्तात्,बहिस्) ज १।३; २।७१;७।५८ सू १।२;९।१.३; १९।२२।१ उ १।२; ३।२६, ४६,४८.५०.५५,१४५; ५।५,३३
बहु (बहु) प १।४८।५४; २।२० से २७,३० से ३५, ३७ से ३९,४१ से ४३,४६,४८ से ५५,५८ से ६१,६३,६४;३।१८३;९।२६;११।२२; १७।१३९; २२।१०१; ३६।८२ ज १।४५; २।११,१२,५८,६५,८३,८८,९०,१२३, १२८ १३३,१३४,१४५,१४८,१५१,१५७; ३।९,११,२४,३२।१,८१,८७,१०३,१०४ १०५,११७,१७८,१८५,१८६,१८८,२०४, २०९.२१६,२१९,२२१,२२२.२२५;४।२,३, २५,२८ से ३०,३४,६०,१४०,१५९,२४८, २५०,२५१,२५२; ५।१,५,१९,४३,४६,४७, ६७;७।११२।१,२,७।१६८,१८५,१९७,२१३, २१४ चं २।४ सू १।६।४; २।१; १०।१२९।१, २; १४।१ से ८;१८।२३; १९।१६; २०।७ उ १।१९,४१,४३,५१,५२.७६,७७,९३,९८; २।१०,१२;३।११,१४,२८,५५,८३,१०१,१०६, १०९,११४,११५,११९,१२०.१३० से १३२, १३४,१५०,१६१,१६९;४।२४;५।७.१०
बहुआउपज्जव (बह्वायुःपर्यव) ज १।२२,२७,५०
बहुउच्चत्तपज्जव (बहूच्चत्वपर्यव) ज १।२२,२७,५०
बहुग (बहुक) प २।४९,५०,५२,५३,५५,६३
बहुजण (बहुजन) ज ३।१०३
बहुणाय (बहुज्ञात) उ ३।१०१
बहुतराग (बहुतरक) प १७।१०८ से १११
बहुतराय (बहुतरक) प १७।२,२५
बहुपडिपुण्ण (बहुप्रतिपूर्ण) ज २।८८; ३।२२५ उ १।३४,४०,४३,५३,७४,७८;२।१२;५।२८, ३९,४१
बहुपढिय (बहुपठित) उ ३।१०१
बहुपरियार (बहुपरिचार) उ ३।९९,१५९;५।२६
बहुपरिवार (बहुपरिवार) उ ३।१३२
बहुपुत्तिय (बहुपुत्रिक) उ ३।९०,१२०
बहुपुत्तिया (बहुपुत्रिका) उ ३।२।१,९०,९२,९४, १२०,१२५;४।५
बहुप्पयार (बहुप्रकार) ज २।१३१
बहुबीयग (बहुबीजक) प १।३४,३६
बहुबीया (बहुबीजक) प १।३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुमज्झदेसभाग (बहुमध्यदेशभाग) ज १।३७; ४।३५ सू १९।१६

बहुमज्झदेसभाय (बहुमध्यदेशभाग) ज १।१०,१९, ४०,४२,४३;३।१,९७,१६१,१६३,१६४,१६७; ४।३,६,९,१२,३१,३३,४१,४७,४९,५७,५६, ६४,६८,७०,७६,८४,८८,९३,९८,११२,११८, ११९,१३९,१४१,१४३,१४५ से १४७,१५६, १६८,१७७,२०७,२०८,२१३,२१८,२२१,२४२, २४८,२५०,२५२,२६६,२७२;५।१३

बहुमय (बहुमत) उ ३।१२८

बहुय (बहुक) प १।४७।३,१।४८।५४;३।३८ से १२०, १२२ से १२४,१७४,१७९ से १८२;६।१२३; ८।५,७,९,११;९।१२,१९,२५;१०।३ से ५,२६ से २९;११।७९,९०;१५।१३,१६,२६,२८,३१, ३३,६४;१७।५६ से ६६,७१ से ७६,७८ से ८३,१०६,१०७,१४४ से १४६;२०।६४; २१।१०४,१०५;२८।४१,४४,७०;३४।२५; ३६।३५ से ४१,४८,४९ सू १८।३७

बहुल (बहुल) प २।४१ ज २।१२,६४,६५,७१, ८८,१३३,१३४,१३८;४।२७७;७।१२६

बहुलपक्ख (बहुलपक्ष) ज ७।११५,१२५ सू २०।३

बहुवत्तव्व (बहुवक्तव्य) प १।१।४

बहुवयण (बहुवचन) प ११।८६

बहुविह (बहुविध) प २।६४।१७;१७।१३९ ज ३।६,२२२

बहुसंघयण (बहुसंहनन) ज १।२२,२७,५०

बहुसंठाण (बहुसंस्थान) ज १।२२,२७,५०

बहुसच्च (बहुसत्य) ज ७।१२२।१ सू १०।८४।१

बहुसम (बहुसम) प २।४८ से ५१,६३;३।३६; १७।१०७,१०९,१११ ज १।१३,२१,२५,२६, २८,२९,३२,३३,३६,३७,३९,४०,४२,४९; २।७,१०,३८,५२,५६,५७,१२२,१२७,१४७, १५०,१५६,१५९,१६१,१६४;३।८१,१९२, १९३,१९६,१९७;४।२,३,८,९,११,१२,१६, ३२,४६,४७,४९,५०,५६,५८,५९,६३,६९,७०, ८२,८७,८८,१००,१०४,१०९,१११,११२, ११७,११८,१३१,१६६,१७०,१७९,२३४,२४० से २४२;२४७,२४८,२५०;५।३२,३५ सू २।१; ९।३;१८।१,२०।७

बहुस्सुय (बहुश्रुत) उ ३।९९,१५९;५।२६

बाउच्चा (बाकुची) प १।३७।२

बाण (बाण) प १।३८।२ बाण का फल

बाणउति (द्वानवति) सू १।१९।१;१९।१५।१

बाणउय (द्वानवति) ज १।४८

बाणकुसुम (बाणकुसुम) प १७।१२४

बाताल (द्विचत्वारिंशत्) सू १३।१

बातालीस (द्विचत्वारिंशत्) सू १९।१;२१।२

बादर (बादर) प २।१,२,४,५,७,८,१०,११,१३, १४;३।७२ से ९५,१११,१८३;४।६२ से ६४, ६९,७०,७६,७७,८५ से ८७,९२ से ९४;६।८३, १०२;११।६४;१८।४१ से ४४,४६,४७,४९, ५०,५४,११७;२१।४,५,२५,४०,४१,५०; २८।१४,१५,६०,६१ सू २०।१

बादरआउक्काइय (बादरअप्कायिक) प १।२१,२३

बादरकाय (बादरकाय) प १।२०।२

बादरणाम (बादरनामन्) प २३।३८,११९

बादरतेउक्काइय (बादरतेजस्कायिक) प १।२४,२६

बादरवणस्सइकाइय (बादरवनस्पतिकायिक) प १।३०,३२,३३,४७,४८

बादरवाउकाइय (बादरवायुकायिक) प १।२७,२९

बादरसंपराय (बादरसंपराय) प १।११४

बायर (बादर) प ६।१०२;११।६५,६९।१;१८।५२; २१।२३,२४,२६,२७ ज ७।४३

बायरसंपराय (बादरसम्पराय) प १।११२;२३।१९२

बायाल (द्विचत्वारिंशत्) ज ४।८६,१०८ सू ३।१

बायालीस (द्विचत्वारिंशत्) प २।६४ ज २।६ सू ३।१ उ ५।९

बायालीसइविह (द्विचत्वारिंशत्विध) प २३।३८

बार (द्वादश) प १०।१४।३

बारवई (द्वारवती) उ ५।४,५,९,११,१९,३०,३३

बारवती (द्वारवती) प १।९३।३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारस (द्वादशन्) प १।७४ ज १।८ सू ३।१ उ ५।४५
बारस (द्वादश) ज ७।११४।२ सू १०।१२४।२
बारसग (द्वादशक) प २३।६८,१४०,१८३,१८४
बारसम (द्वादश) प १०।१४।२ सू १०।७७; १२।१७; १३।८
बारसविह (द्वादशविध) प १।१३५; २१।५५
बारसाह (द्वादशाह) उ १।६३; ३।१२६
बारसी (द्वादशी) ज ७।१२५
बाल (बाल) ज २।६५; ३।२४;७।१७८
बालग (बालक) ज १।३७
बालचंद (बालचन्द्र) उ ३।२४
बालदिवागर (बालदिवाकर) प १७।१२६
बालभाव (बालभाव) उ ३।१२७,१२८; ५।४३
बालव (बालव) ज २।१३८;७।१२३ से १२६
बालिंदगोव (बालेन्द्रगोप) प १७।१२६
बालुया (बालुका) ज ४।१३
बावट्ठ (द्वाषष्टि) ज ४।४७
बावट्ठि (द्विषष्टि) प २१।६७ सू १०।१३७
बावण्ण (द्विपञ्चाशत्) ज १।१७ सू १।२१
बावत्तर (द्वासप्तति) ज ४।११०
बावत्तरि (द्वासप्तति) प २।३० ज २।६४ सू २।३; १९।११;२१।३
बावीस (द्वाविंशति) प ४।१९ ज २।८१ चं ५।४ सू १।९
बावीसइम (द्वाविंशतितम) प १०।१४।५
बावीसग (द्वाविंशतितम) प १०।१४।४
बासीत (द्वयशीति) सू १।१२
बाहल्ल (बाहल्य) प १।७४;२।२१ से २७,३० से ३६,४१ से ४३,४६,४८,६४;१५।१।१;१५।७, २२.३०;२१।८४,८६,८७,९० से ९३;३६।५९, ६६,७०,७४ ज १।४३;२।१४१ से १४५; ४।६,७,१२,१४,१५,२४,३९,६६,७४,९१, ११४,११८,१२३,१२४,१२६ से १२८,१३२, १३९,१४०,१४३,१४५,१४७ २१७,२४५, २४८,२५७,२५८,२५९;५।३५;७।७,६६,९०; १७७।१,२,३ सू १।२६,२७;१८।१,९ से १३
बाहा (बाहु) ज १।२३,४८;२।१५;३।९९ से १०१; ४।१,२६,५५,६२,८१,८६,९८,११५,१७२; ५।१४,१७;७।३१,३३,१६८।१.१७८ सू ४।३, ४,६,७ उ ३।५०
बाहाओ (बाहुतस्) सू ४।३,४,६,७
बाहिं (बहिस्) प २।२० से २७,३० से ३९.४१ से ४३; ३३।२७ से २९ ज १।१२,३१;४।४९, ११४,२३४,२४०; ७।३१,३३,१६८।१ सू ४।३, ४,६,७;१९।२२।१५,१९
बाहिर (बाह्य) प १।४८।४५; १।१०९।६; १५।५५;३३।१।१ ज २।१२;४।७.२१;५।३९; ७।१० से १३.१६,१८.१९,२२,२५.२७ से ३०,३५,५५,५८,६९ से ७२,७५,७७,७८,८१, से ८४,९६,१२९।१,१७५ सू १।११,१२,१४, १६,१७,२१,२२.२४,२७ से ३१;२।३;३।२; ४।९; ६।१;९।१,२;१०।७५;१३।१३ से १६; १९।२२।१२; १९।२३,२६;२०।७
बाहिरओ (बाह्यतस्) ज ३।२४।१,१३१।१; ७।१२९
बाहिरपुक्खरद्ध (बाह्यपुष्करार्द्ध) सू १९।१६
बाहिरय (बाहिरक, बाह्यक) प १।७५,८०,८१ ज ७।५,१७,६४,७६,८८ सू १।१२
बाहिरिया (बाहिरिका) ज ३।५,७,१२,१७,२१, २८,३४,४१,४९,५८,६६.७४,७७,१३५,१४७, १५१,१७७,१८४,१८८,२१९;४।१९;७।३१, ३३ सू ४।३,४,६,७ उ १।१९,४१,४२,१२४; ४।१२;५।१९
बाहिरिल्ल (बाह्य) प २१।९० सू १८।७
बाहु (बाहु) ज ३।१२७;५।५
बि (द्वितीय) प १०।१४।४ से ६ सू १।२६
बि (द्वि) ज ४।९३; ६।१४ सू १।२६
बिइंदिय (द्वीन्द्रिय) प १७।९६
बिइय (द्वितीय) प २।३१; ३६।८५ ज ३।३;

७।१०७ उ २।२२;३।६४
बिइया (द्वितीया) ज ७।११७,१२५ सू १०।१४८, १५०
बिइयादिवस (द्वितीयादिवस) ज ७।११६
बिंदु (बिन्दु) प १।१०।१७;१५।२६;२१।२४ ज ३।१०६;७।१३३।२
बिंब (बिम्ब) प २।३१,३२
बिंबफल (बिम्बफल) प २।३१ ज ३।३५
बिंहणिज्ज (बृंहणीय) ज २।१८
बिगुण (द्विगुण) ज २।४
बिडाल (बिडाल) प १।६६ ज २।३६
बितिय (द्वितीय) प १।१४२,८८;१२।१२,३८; २२।३३,४१;३६।८७ ज ३।१६५;४।१४२।३ सू १०।७२,७७,८५,८७;१३।१,८;१४।३,७ उ १।६३
बितियादिवस (द्वितीयादिवस) सू १०।८५
बितियाराति (द्वितीयरात्रि) सू १०।८७
बिब्बोयण (दे०) ज ४।१३
बिभेलय (बिभीतक) प १।३५।२
बिराल (बिडाल) ज २।१३६
बिल (बिल) प २।४,१३,१६ से १६,२८ ज २।१३४,१४६
बिलपंतिया (बिलपङ्क्तिका) प २।४,१३,१६ से १६,२८ ज ४।६०,११३
बिलवासि (बिलवासिन्) ज २।१३३ उ ३।५०
बिल्ल (बिल्व) प १।३६।१;१६।५५;१७।१३२ सू १०।१२०
बिल्लाराम (दे०) उ ३।४८,५५
बिल्ली (बिल्ली) प १।३७।२ एकसण, वथुला
बिल्ली (बिल्वी) प १।४४।१
बीभच्छ (बीभत्स) उ ३।१३०
बीय (बीज) प १।४५।२,१।४८।१६,२६,५१,६३; ३६।६४ ज २।१०,१३३;३।१६७।३ उ ३।५१, ५३
बीय (द्वितीय) प १२।१२ सू १०।७७
बीयय (बीजक) प १।३८।१ बिजौरानीबु
बीयरुइ (बीजरुचि) प १।१०१।१,७
बीयरुह (बीजरुह) प १।४८।३
बीय (वासा) (बीजवर्षा) ज ५।५७
बीयविटिय (बीजवृन्तक) प १।५०
बीयाहार (बीजाहार) उ ३।५०
√बुक्कार (दे०) बुक्कारेंति ज ५।५७
√बुज्झ (बुध्) बुज्झइ प ३६।८८ बुज्झंति प ६।११० ज १।२२,५०;२।५८,१२३,१२८; ४।१०१ बुज्झति प ३६।६१ बुज्झिहिइ उ १।१४१;३।८६;५।४३ बुज्झिहिंति ज २।१५१,१५७ बुज्झेज्जा प २०।१७,१८,२६,३४
बुज्झित्ता (बुद्ध्वा) उ ५।४३
बुद्ध (बुद्ध) प २।६४।२१ ज २।८८,८६;३।२२५; ५।५,२१,४६,५८
बुद्धंत (बुध्नान्त) सू २०।२
बुद्धबोहिय (बुद्धबोधित) प १।१०५,१०७,१०८, १२०
बुद्धबोहियसिद्ध (बुद्धबोधितसिद्ध) प १।१२
बुद्धि (बुद्धि) ज ३।३,३२;४।२६६।१ उ ४।२।१
बुध (बुध) सू २०।८
√बुय (ब्रू) बुयापि प ११।११,१६
बुयमाण (ब्रुवाण) प ११।११,१६
बुह (बुध) प २।४८ सू २०।८।४
√बू (ब्रू) बेमि सू १०।१७३ उ १।१४२;२।१४; ३।१६;५।४४
बूर (दे०) प्र २०।७
बे (द्वि) प १२।३७ सू १३।६
बेइंदिय (द्वीन्द्रिय) प १।४६;२।१६;३।७,४० से ४२,४५,४६,१४४,१४५,१८३;४।१६५ से ६७; ५।३,१६,२०,६७,६८,७०,७१,७३,७४,७८; ६।२०,५४,६४,७१,८३,८६,१०२,१०४,११५; ८।४,२२;११।४५;१२।२७,१३।१७,१५।३० से ३३,७५,८०,८६,१३७;;१६।६,१३;१७।४०,६२,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०३;१८।१५,२१;१६।३;२०।८,२३,२८,३२,
४७;२१।६,२८,४२,८६,८८; २२।३१;२३।८६,
१५१,१५५ से १५७,१६३,१६६,१६७,१७५;
२८।३७ से ४०,४२,१००,१०३,११६,१२५,
१३६;२६।११ से १३,२१;३०।१० से १२,
२०,२१;३१।३;३६।३६,६२

बेइंदियत्त (द्वीन्द्रियत्व) प १५।६७,१४२

बेंटट्ठाइ (वृन्तस्थायिन्) ज ५।७

बेंदिय (द्वीन्द्रिय) प १।१४,४६;३।४२,४५,४६,
१४६;५।५७;६।७१

बेतेयालसतविह (द्वित्रिचत्वारिंशत्शतविध)
प १७।१३६

बेयाहिय (द्व्याहिक) ज २।४३

बेहिय (द्व्याहिक) अ २।६

बोंडइ (दे०) प १।३७।१

बोंदि (दे०) प २।३०,३१,४१,४६;६४।२,३
ज ५।१८

बोद्धव्व (बोद्धव्य) प १०।१४।२;३४।१।२
ज ४।१५६।१,१६२।१,२०४।१,२२०।१;
७।११७।२,१२०।१,१३२।१,१६७।१,
१७७।१,२,१८६।४ सू १०।८६,८८;२०।८।८
उ १।१७; ३।२।१;४।२।१

बोधव्व (बोद्धव्य) प १।२०।४,३३।१,३५।२,
३६।२,३७।३,४२।२,४३।२,४८।८,४०,
१।८१।१; २।६४।६,७;६।८०।२;१०।५३।१;
११।३७।२; १७।१।१; २८।१।१ सू २०।८।७

बोर (बदर) प १।५५;१७।१३२

बोल (दे०) प २।४१ ज २।४२,६५;३।२२,३६,
७८,६३,६६,१०६,१६३,१८०;५।२६;७।५५,
१७८ सू १६।२३ उ १।१३८

बोहग (बोधक) ज ५।५,४६

बोहय (बोधक) ज ३।१८८;५।२१

बोहि (बोधि) प २०।१७,१८,२६,३४

बोहिदय (बोधिदय) ज ५।२१

बोहिय (बोधित) ज २।१५;३।३

भ

√भइज्ज (भज्) भइज्जंति प २२।७४
भइज्जति प २२।७३

भइत्ता (भक्त्वा) सू १२।१० से १२

भइत्त (भक्त) प २।६४।१६

भंग (भङ्ग) प १।४८।१० से २६;१०।६ से ६;
१४।२।६;१६।१०,१५,२१;२२।२५,८४,८६;
२४।५,८,१२;२६।४,६,६,१०;२८।११८

भंगुर (भङ्गुर) ज २।१५

भंगी (भृङ्गी) प १।४८।५;१७।१३१

भंगी (भङ्गी) प १।६३।५

भंगीरय (भृङ्गिरजस्) प १७।१३१

भंड (भाण्ड) ज ३।७२,१५०;४।१०७,१४०
सू २०।४ उ १।६३,१०५,१०६,११६;३।५०,
५५,६३,७०,७३,१२८

भंडग (भाण्डक) उ ३।५०,५५

भंडवेयालिय (भाण्डवैचारिक) प १।६६

भंडार (भाण्डकार) प १।६७

भंडी (भण्डी) प १।३७।५ शिरीष का पेड़

भंत (भदन्त) प १।७४,८४;२।१ से ३६,४१ से
४३,४६,४८ से ६४;३।३८ से १२०,१२२ से
१२४,१७४,१७६ से १८३;४।१ से ४६,५२,
५६ से ५८,६५,७२,७६,८८,६५,६८,१०१,
१०४,११३,१३१,१४०,१४६,१५८,१६५,
१६८ से १७१,१७४,१७७,१७८,१८०,१८१,
१८३,२०७,२१०,२१३,२६४,२६७;५।१ से
७,६ से १२,१४,१६ से १८,२०,२३,२४,२७
से ३४,३६,३७,४०,४१,४४,४५,४८,४६,५२,
५३,५५,५६,५८,५६,६२,६३,६७,६८,७०,७१,
७७,७८,८२,८३,८५,८६,८८,८६,६२,६३,
६६,६७,१००,१०१,१०३,१०४,१०६,१०७,
११०,१११,११४,११५,११८,११६,१२३ से
१२६,१३१,१३४,१३६,१३८,१४०,१४३,
१४५,१४७,१५०,१५३,१५४,१५६,१५७,
१६२,१६३,१६५,१६६,१६८,१६६,१७१,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७३,१८०,१९२,१९६,१९९,२०२,२०३,
२१०,२१७,२२७,२२९,२३१,२३३,२३६,
२३८,२४१;६।१ से २३,२७,४३ से ४५,४७
से ५५,५७,५८,६० से ६४,६७,६८,७०,७५,
७८,८० से ८२,८७,९०,९३,९४,९६,९९,
१०१,१०३,१०५,११०,११४ से ११६,११८
से १२१,१२३;७।१ से ४,६ से ३०;८।१ से
११;९।१ से ४,६ से १६,१९ से २१,२५,२६;
१०।१ से १३,१५ से २४,२६ से ५३;११।१
से ४४,४६ से ४८,६१ से ७३,७९ से ९०;
१२।१ से ५,७ से १३,१५;१६,२०,२१,
२३,२७,३१ से ३३;१३।१ से ३१;
१४।१ से ३,५,७,९,११ से १५,१७;१५।१ से
३,७,८,११ से २८,३० से ३३,३६ से ४१,४३
से ५४,५६ से ७४,७६ से ८०,८३,८४,८९,
९१,९४ से ९७,१००,१०३ से १०६,१०९,
११४,११५,११७,११८ से १२०,१२३,१२६,
१२९,१३२ से १३५,१४०,१४१;१६।१ से
३,१० से १३,१५,१७,१९ से २१;१७।१ से
६,८ से १६,१९ से २१,२४,२८,२९,३३,३६
से ४०,५१,५६ से ६९,७१ से ७६,७८ से ८७,
९० से ९२,९४,९५,९९ से १०४,१०६ से
११६,११८ से १२०,१२२ से १३०,१३५ से
१३७,१३९ से १५२,१५४ से १५७,१५९ से
१६१,१६६,१६७,१६९ से १७२;१८।१ से
१०,१२ से ३७,३९,४१ से ४७,४९ से ५१,
५४ से ८२,८४ से ९०,९३ से १११,११३,
११४,११६ से १२०,१२२,१२३,१२५ से
१२७;१९।१;२०।१ से ३,६,७,९ से १५,१७
से २५,२७ से २९,३२ से ३४,३८ से ४०,
४५,४९ से ५१,६१ से ६४;२१।१ से १५,
१९ से २५,२८ से ३२,३६,३८,४०
से ४२,४८,४९,५६ से ६६,६८ से ८१,
८३ से ९६,९८ से १०१,१०३ से १०५;
२२।१ से १९,२१ से २३,२६,२७,२९,३०,
३२ से ५०,५२ से ६९,७६ से ७९,८१ से
८४,८६,८७,८९ से ९४,९७ से ९९,१०१;
२३।१ से ७,९,११,१३ से ४८,५७ से ६२,
८१,९०,१३४,१३५,१३७ से १४०,१५४,
१५५,१५७,१६०,१६१,१६४,१६७,१७१,
१७६,१७७,१९१ से १९६,१९८ से २०१;
२४।१ से ५,८,११,१२,१४;२५।१,२,
४,५;२६।१ से ४,८,९;२७।१ से ३,६;
२८।१,३ से ५,११ से १९,२१ से २५,२८
से ३१,३३ से ४२,४४,४५,४८ से ५०,
५१,५७ से ६०,६२ से ६५,६७ से ७१,
९८,१०२,१०४,१०६ से १०८,१११ से
१२०,१२२,१२३,१२५,१२७,१२८,१३२;
२९।१ से ३,५ से ७,९,१०,१२,१३,१६ से
१९;३०।१ से ३,५ से ११.१३,१५ से १७,
१९,२१.२५ से २८;३१।१;३२।१,२,४;३३।१
से ३,५,६,१२ से १८,२०,२२;३५।१,२,४ से
१३,१६ से १८,२०,२३;३६।१ से २२,३०
से ४९,५३,५४,५८ से ६७,७०,७१,७३ से
८८,९२,९४ ज १।७,१५ से १८,२० से २३,
२६,२७,२९,३३ से ३५,४१,४५ से ५१;२।१,
४,७,१४,१५,१७,४३,५२,५६,५७,५८,१२२,
१२३,१२७,१२८,१३१ से १३७,१३९,१४७,
१४८,१५०,१५१,१५६,१५७,१६१,१६४;
३।१,९८;४।१,२२,३४,४४,४५,४८,५१,५२,
५४.५५,५६.५७,६०,६२,७९ से ८२,८४ से
८६,९६ से ९८,१०० से १०३,१०६ से ११०,
११३,११४,१४१,१४३.१५९ से १६७,१६९
से १७८,१८० से १८२,१८४,१८५,१८७,
१८८,१९० से १९४,१९६,१९७,१९९ से
२०३,२०५ से २०९,२११ से २१५,२२५,
२२६,२३४,२३६,२३७,२३९ से २४१,२४४,
२४५,२४९,२५१ से २५५,२५७,२६० से
२७७;६।१,२,४,७ से २६;७।१ से४८,५०,
५२ से ७३,७६.७८ से १०७,१११ से १४५,
१४७ से १५१,१५४ से १६७,१६९ से १७८,
१८० से १८५,१८७,१९७ से १९९,२०१ से

२१३ उ १।४,६,८,२१,२४,२५,१४१,१४३; २।१,३,१३,१५; ३।१,३,८,१६,१८,२० २३, २६,३० से ३२,३५ से ४१,४४,८६,८८,९३, ९४,१२३ से १२५,१५२,१५४,१६४,१६५, १६७; ४।१,३,१४,२६; ५।१,३,२०,२२,२३, ३२,४०,४३

भंतसंभंत (भ्रान्तसम्भ्रान्त) ज ५।५७

भंभा (दे०) ज ३।३१

भंभाभूय (भंभाभूत) ज २।१३१,१३९

भक्खेय (भक्ष्य) उ ३।३७ से ४२

भग (भग) ज ७।१३०,१३३,१८६।४ सू १०।३५

भगंदर (भगंदर) ज २।४३

भगदेवया (भगदेवता) सू १०।८३

भगव (भगवत्) प १।१।३; ३६।८१ ज १।५,६; २।६८,७०,७२,९०,९३,९५,९६,१०१ से १०३,११३,११४; ५।३,५,७ से १४,२१,२२, २६,४४,४६,५८,६०,६२,६४,६७ से ७०,७२ से ७४; ७।२१४ चं १० सू १।५; २०।९।६ उ १।२,४ से ८,१६,१७,१९ से २६,१४२, १४३; २।१ से ३,१० से १२,१४,१५,२१; ३।१ से ३,७,८,१९,२०,२२,२३,२६,८७,८८,९०, ९३,१५३,१५४,१५९,१६१,१६६,१६७,१७०; ४।१ से ३,२७; ५।१ से ३,४४

भगवंत (भगवत्) प २।६४ ज २।६९,७१,८३; ५।१,२१ उ १।१७

भगवती (भगवती) सू २०।९।१

भगसंठिय (भगसंस्थित) सू १०।३५

भगिणी (भगिनी) ज २।२७,६९

भग्ग (भग्न) प १।४८।१० से २९ उ ३।१३१,१३४

भग्गवेस (भार्गवेश) ज ७।१३२।२ सू १०।१००

भज्जमाण(भज्यमान) प १।४८।३८

भज्जा (भार्या) ज २।२७,६९ उ १।१२,१४५; २।५,१७

भज्जिय (भर्जित) उ १।३४,४९,७४

भट्टित्त (भर्तृत्व) प २।३०,३१,४१,४९ ज १।४५; ३।१८५,२०९,२२१; ५।१९ उ ५।१०

भट्टिदारय (भर्तृदारक) प ११।१५,२०

भट्ठरय (भ्रष्टरजस्) ज ५।७

भट्ठि (दे०) ज २।१३१

भड (भट) ज ३।१७,२१,२२,३६,७८,१७७

भडग (भटक) प १।८९

√भण (भण्) भणइ उ ३।६९ भणंति प १७।८९

भणित (भणित) प १।४८।९,४७; १।९३।६; २।४०; ३।१८२; ५।२४४; ६।५९,६९,८३,८९,९२, १००; १५।५५; २१।७७ सू १०।१४८; २०।७

भणितव्व (भणितव्य)सू ८।१; १०।१४८,१५०; १५।९

भणिय (भणित) प १।४८।५२; २।२७।३,४७; ६४।४,६,८; ५।१५२; ११।८०; १२।१३,१५, २१; १५।१८,३०,१४०; १६।१८; १७।७,९७; २०।२६,३५; २१।७६,९४; २२।५४; २३।१००, १०८,१५६,१७९,१८१,१८५,१९०; २४।८,९; २९।१५; ३६।२०,२४,४६ ज २।४।३,२।१५; ३।१०९,१३८; १६७।३,४; ४।२०० चं ४।३ सू १।८।३; १०।१५०; १९।२२।१,२

√भण्ण (भण्) भण्णइ प ५।२२६ ज ७।१४६ भण्णंति प ५।२०५ भण्णति प ५।२०५,२११; ३६।६८

भत्त (भक्त) ज २।६५,७१,८८; ३।२२५ उ २।१२; ३।१४,१२०,१५०,१६१,१६९; ५।२८,३९,४१, ४३

भत्तपाण (भक्तपान) ज ३।१०३,२२४

भत्तसाला (भक्तशाला) ज ३।३२

भत्ति (भक्ति) ज ३।१६७।६

भत्तिचित्त (भक्तिचित्र) प २।४८ ज १।३७; २।१०१; ३।३९,१२,५६,८८,१०९,११७, १४५,२२२; ४।२७,४९; ५।१६,२८,३२,३४, ५९ सू १८।८; १९।२२।१,२

भत्तिय[1] (दे०) प १।४२।१

भद्द (भद्र) प २।३१ ज २।६४,८१; ३।३,१२,५६, ८८,११७,१३८,१८५,२०९; ४।४९; ५।२८;

---

१. वनस्पति कोष में भूतीक शब्द मिलता है।

७।११८ उ २।२; ३।९६ से ९८,१००,१०१;
१०६ से ११२
भद्दग (भद्रक) ज २।१६
भद्दमुत्था (भद्रमुस्ता) ज १।४८।६
भद्दय (भद्रक) ज ३।१०९ उ ५।४०,४१
भद्दवत (भाद्रपद) सू १०।१२४
भद्दवय (भाद्रपद) ज ७।१०४,११३।१,११४
सू १०।१२६ उ ३।४०
भद्दसालवण (भद्रशालवन) ज ४।९४,२१४,२१५,
२१६,२२०,२२१,२२५,२२६,२३४,२६२
भद्दसेण (भद्रसेन) ज ५।५२
भद्दा (भद्रा) ज ५।१०।१;५।६८;७।११८ सू १०।२,
९०
भद्दासण (भद्रासन) ज ३।३,५६,१७८;४।२८,
११२;५।३९,४२
भद्दिलपुर (भद्दिलपुर) प १।९३।३
भमंत (भ्रमत्, भ्रम्यत्) ज ४।३,२५
भमर (भ्रमर) प १।५१;१७।१२३ ज २।१२;३।२४
भमरावली (भ्रमरावली) प १७।१२३
भमास (दे०) प १।४२।१,१।४८।४६
भय (भय) प १।२।१;२।२० से २७;११।३४।१;
२३।३६,७७,१४५ ज २।६९,७०;३।९२,१११,
११९,१२२।१,१२५,१२७ उ १।८९;३।११२,
१५९;४।१९
भयंकर (भयङ्कर) ज २।१३१
भयग (भृतक) ज २।२६
भयणा (भजना) प १।४८।५०
भयणिस्सिया (भयनिश्रिता) प ११।३४
भयभेरव (भयभैरव) **ज** २।६४
भयव (भगवत्) प १।१।२ ज २।९०;५।३,१४,
१६,१७,२१,६६
भयसण्णा (भयसंज्ञा) प ८।१,२,४,५,७,९,११
√भर (भृ) भरेइ उ ३।५१
भरणी (भरणी) ज ७।११३।१,१२८,१२९,१३४।२,
१३५।२,१३६,१४०,१४४,१४९,१५९,
१७५ सू १०।१ से ६,११,२३,३५,६२,६६,
७५,८३,१००,१२०,१३१ से १३४;१८।७
भरह (भरत) प १।८८;१६।३०;१७।१६०
ज १।१८ से २०,२३,४६,४७,५१;२।७ से
१५,२१ से ४५,५०,५२,५६,५७,५८,६०,१२२,
१२३,१२७,१२८,१३१,१३२,१३३,१३९,
१४१ से १४७,१५०,१५६,१५७,१५९,१६१,
१६४;३।१ से १३,१५,१७,१९ से २३,
२५ से ३४,३६ से ४२,४४ से ५०,५२ से ५९,
६१ से ६७,६९,७७,८३,८४,९० से ९४,९६,
९९,१००,१०१,१०३,१०६ से १०९,११५ से
१२९,१३१ से १३५।१,१३७,१३८,१३९,१४१
से १४८,१५० से १५४,१५७,१५८,१६०,
१६३ से १७०,१७३,१७५,१७७,१७८,१७९,
१८१ से १९२,१९८,१९९,२०१,२०२,२०४
से २२६;४।१,४८,५३,१०२,१७२,१७४,१७७,
२७७;५।५५;६।७,९,१२,१९
भरहकूड (भरतकूट) ज ४।४४,४८
भरहवास (भरतवर्ष) ज २।१५;४।३५
भरहवासपढमवति (भरतवर्षप्रथमपति)
ज ३।१२६।२
भरहाहिव (भरताधिप) ज ३।१८,८१,९३,१२१।१,
१३५।२,१६७।१४,१८०,२२१
भरिय (भृत) ज २।६;३।१७८
भरिली (भरिली) प १।५१
भरु (भरु) प १।८९
भरेत्ता (भृत्वा) उ ३।५१
भल्लाय (भल्लात) प १।३५।२
भल्ली (भल्ली) प १।४०।४
भव (भव) प २।६४।५,९;३।१।२;१०।५३।१;
१८।१।२,१८।९५;२३।१३ से २३ ज ३।२४,
१३१
भव (भवत्) उ ३।४३
√भव (भू) भवइ ज १।४७;२।६९ सू १।१३
उ १।२० भवउ ज २।६४,१५७ भवंति
प १।४९ से ५१,६०,८०,८१;५।४३;१६।१५;
२१।८४;२३।१५२;३६।२०,८२,९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज ४।१५।१।१ सू ३।१ उ १।१४१; ३।५०
भवति प १४।५ २८,३२,६६; २।४७।३;
१५।५८।१;३६।१।१ ज १।२६ सू १।१३
भवतु ज २।६४ भवइ उ १।४२ भविस्सइ
ज १।४७,१२७; २।७१,१३१ उ १।४१;५।४३
भविस्संति ज २।१३३ भवे प १।४८।३० से
३८ ज २।६ सू १९।१।१;५।३;१५।१,४,
१९।२२।१३,१५;२१।४,५ भवेज्जा उ ३।८१

भवंत (भवत्) ज ३।२४।१,२,१३।१।१,२

भवक्खय (भवक्षय) प २।६४।१० उ ३।१८,१२५,
१५२;४।२६;५।३०,४३

भवचरिम (भवचरम) प १०।३६,३७

भवण (भवन) प २।१,४,१०,१३,३० से ४०,
४०।३,४,२।४२,४३;११।२५ ज १।३१,५१;
२।१५,२०,६५,१२०; ३।३,२५,२६,३२।२,
३८,३९,४६,४७,५१,५२,१०३,१४०,१४१,
१८३,१८६,२०४;४।९,१०,११,३३,४१,७०,
९०,९३,१४७,१५३,१५६,१७४,१८२,२२८,
२४३;५।१,५ से ७,१७,४४,६७,७० उ १।३३

भवणपति (भवनपति) ज ३।१८६,२०४

भवणपत्थड (भवनप्रस्तट) प २।१

भवणवइ (भवनपति) प १६।२९;२०।५४ ज २।९५,
९६ १०० से १०२,१०४,१०९,११०,११३ से
११६,१२०;४।२४८,२५०,२५१;५।४७,५९,
६७,७२ से ७४

भवणवति (भवनपति) प ६।१०९;३४।१६,१८

भवणवासि (भवनवासिन्) प १।१३०,१३१;२।३०,
३०।१,२।३२; ३।२६,१३३,१८३;४।३१ से
३३;६।८५;१७।५१,७४,७६,७७,८१,८३;
२०।६१;२१।५५,६१,७० ज २।९४;५।५२
सू २०।७

भवणवासिणी (भवनवासिनी) प ३।१३४,१८३;
४।३४ से ३६;१७।५१,७५,७६,८२,८३

भवणावास (भवनावास) प २।३० से ३९

भवत्थकेवलि (भवस्थकेवलिन्) प १८।९९,१०१

भवधारणिज्ज (भवधारणीय) प १५।१८,१९;
२१।५८,५९,६१,६२,६५ से ६७,७०,७१

भवपच्चइय (भवप्रत्ययिक) प ३३।१

भवसिद्धिय (भवसिद्धिक) प ३।११३,१८३;
१८।१२२;२८।१११,११२

भवित्ता (भूत्वा) प २०।१७ ज २।६५ उ ३।१३
४।१४;५।३२

भविय (भविक) प १।१।२;२८।१०६।१

भविय(भव्य) ज ५।५८ उ ३।४३,४४

भवोवग्गह (भवोपग्रह) प ३६।८३।१

भवोववायगति (भवोपघातगति) प १६।२४,३१,
३२

भव्व (भव्य) प १६।५५; १७।१३२ कमरख,
करेला

भव्वपुरा (भव्यपुरा) ज ३।१६७।७

भसोल (दे०) ज ५।५७

भाइणेज्ज (भागिनेय) उ ३।१२८

भाइयव्व (भेतव्य) ज ५।५,७ से १०,१२,१३,४६

भाइल्लय (दे०) ज २।२६

भाग (भाग) प २।१०,११;२३।१६०,१६४,१६७,
१७५; २८।४०,४३,६९ ज २।६४ चं ५।१
सू १।१९,२४ २६,२७,२९,३०; २।१,३;३।२;
४।४,५,७,१०; ६।१;९।३;१०।२,१३३,१३५,
१३८ से १४२,१४४ से १६३;११।२ से ६;
१२।२,३,६ से ९,१२,१३,१९ से २८,३०;
१३।१,३,४,७ से १२,१४ से १७;१४।३,७;
१५।२ से २०,२२ से २९ ३१,३२,३४;१८।९,
१०,२५,२६;१९।२२।१९;२०।३

भागसय (भागशत) ज ७।८१,८४,९८,९९,१००

भागसहस्स (भागसहस्र) ज ७।८१,९५,९६

भाणितव्व (भणितव्य) प २।३२,४०,४२,५०;
३।१८२;४।६८;५।२२.३९,४३,६१,७६,९९,
१०९,११७,१२२.१५२,२०९,२२६,२४४;
६।४६,५९,६९,८१,८३,८६,८९,९२,९५,
१००,१०२,१०३ १०७,१०८;१०।१४;१६।२०
सू १।१४,२२,२५

भाणिय (भणित) ज ३।२४,१३१

भाणियव्व (भणितव्य) प २।४३,४५,४७,६२; ५।६१,११७,१२०,२०५;६।६१,१२३;६।४; १०।२८; ११।४१,४६,८३,८५;१२।८ से १३, १५ से १७,२१,२५;१५।३०,५६,६२,८४, १०२,१०३,१२१,१३४,१३८,१४०;१६।१८, २१,३२;१७।७,२८,२६,३३,३५,६५,७०,७७, ८६,६७,१०२,१०३,१०४,१४६,१४८,१६५, १६७;२०।२५,२६;२१।३५,४३,७७,८०,६४; २२।२०,२५,२८,३३,३५,४१,४५,५४,५८, ८३,८४,८६;२३।१००,१०८,१५२,१५६, १६०,१६४,१६७,१७५,१७६,१६०,१६१; २४।८,६,११,१५;२५।५;२६।६ से १२;२७।४, ५;२८।१०,२५,५६,८७,१०२,१४५;२६।१५; ३४।२१;३६।२०,२४,२६ से ३०,३२,३४,४६, ४७,६५ ज १।१६,२३,२६,४४,४६;२।७, ७२,६३;३।१२६,१५५,१७१;४।३,४,२५,३१, ३६,४१,५२,५७,७०,७६,८२,८४,६०,६३, १०६,११०,११२,११६,११८,१२८,१६५, १७५,१७७,१८४,१६३,१६६,२०१,२०२, २०४,२०८,२१२,२१५;२१७,२२० से २२२,२२६,२३७,२४०,२४८,२४६,२६२, २६५,२७१;५।३,७,१३,३२,४६,५५,५६,६५; ६।३;७।१८६ सू ४।६;५।१;८।१;१५।११; २०।६ उ १।१४७,१४८;२।२२;४।२८; ५।१७,२५

भाणी (दे०) प १।४६,१।४८।६२

√भाय (भाज्) भाएंति ज ५।५७

भाय (भाग) ज १।१८,४८;३।१,१३५।१;४।१, २३,३८,५५,६२,६५,८१,८६,६१,६८,१०३, १०८,११०,१४१,१६७,१७८,२००,२०५,२०७, २१२,२१४,२४०;७।७,६,१०,१२,१३,१५, १६,१८ से २५,३१,३३,५४,६४,६६,६८,६६, ७१,७२,७६,१३४,१७७।१,२ उ १।६६,६४

भाय (भ्रातृ) ज २।२७,६६ उ १।६५

भायण (भाजन) ज ३।३२ उ १।४६

भारंडपक्खि (भारण्डपक्षिन्) प १।७८

भारग्गस (भाराग्रशस्) ज २।१०६,११०

भारद्दाय (भारद्वाज) ज ७।१३२।२ सू १०।१०३

भारह (भारत) ज १।३४,३५;२।१;३।१३५।२ सू १।१८,१६;४।३ उ १।६,३।१२५,१५७; ५।२४

भारहग (भारतक) ज ४।२५०

भारहय (भारतक) सू १।१६

भारियत्त (भार्यत्व) उ ३।१२८

भारिया (भार्या) ज २।६३ सू २०।७ उ ३।६७, ११२,१२८;४।८

भाव (भाव) प १।१।२,१०।१३,४,६;२।६४।१३; ११।३३।१ ज २।६६,७१ उ ३।४३,४४

भावओ (भावतस्) प ११।४८,५२,५३,५५; २८।५,६,६,५१,५२,५५;३५।४,५ ज २।६६

भावकेउ (भावकेतु) ज ७।१८६

भावकेतु (भावकेतु) उ २०।८,२०।८।६

भावचरिम (भावचरम) प १०।४४,४५;५३।१

भावणा (भावना) ज २।७१

भावणागम[1] (भावनागम) ज २।७२

भावतो (भावतस्) प ११।५७,५६

भावरुइ (भावरुचि) प १।१०१।१०

भावसच्च (भावसत्य) ज ११।३३

भाविअप्प (भावितात्मन्) प १५।४३

भाविंदिय (भावेन्द्रिय) प १५।५८।२,१५।७६,१३३ से १३५,१४०,१४१,१४३

भावित्ता (भावयित्वा) उ ३।१६१

भाविय (भावित) प १७।८८

भावियप्प (भावितात्मन्) प ३६।७६ ज ७।१२२।२ सू १०।८४।२

भावेमाण (भावयत्) ज १।५;२।७१,८३ उ १।२, ३;२।१०;३।१४,२६,८३,६६,१३२,१४४,१५०; ४।२४;५।२६,२८,३२,३६,४३

---

१. आयारचूला पञ्चदशाध्ययनानुसारी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावेयव्व (भावयितव्य) प २२।४५

√भास (भाष्) भासइ ज ७।२१४ उ १।६८ भासंति प ११।४३ से ४६ भासती प ११।३०।१,२ भासिति प १।६८

भास (भस्मन्) सू २०।८,२०।८।८

भासंत (भाषमाण) प ११।८६

भासग (भाषक) प ३।१।२;१०८;११।३८ से ४१; १८ गा २

भासज्जात (भाषाजात) प ११।४२

भासज्जाय (भाषाजात) प ११।८८,८६

भासत्त (भाषात्व) प ११।४७,७० से ७२,८० से ८५

भासमणपज्जत्ति (भाषामनःपर्याप्ति) उ ३।१५,८४ १२१;४।२४

भासमाण (भाषमाण) प ११।८६

भासय (भाषक) प १८।१०४

भासरासि (भस्मराशि) प २।५०,५६,६० सू २०।८

भासरासिप्पभ (भस्मराशिप्रभ) प २।५४,५८

भासरासिवण्णाभ (भस्मराशिवर्णाभ) सू २०।२

भासा (भाषा) प १।११५,१।६८;२।३१; १०।५३।१;११।१ से १०,२६ से ३०,३०।१, २,११।३१ से ३७,३७।१,२;११।४३ से ४६, ८२,८३,८७,८६;२८।१४२,१४४,१४५ ज ३।७७,१०६

भासाचरिम (भाषाचरम) प १०।३८,३६

भासारिय (भाषार्य) प १।६२,६८

भासासमिय (भाषासमित) ज २।६८ उ ३।६६

भासुर (भासुर) प २।३०,३१,४१,४६ ज ५।७,१८

भिउडि (भृकुटि) ज ३।२६,३६,४७,१३३ उ १।२२,११५,११७,१४०

भिंग (भृङ्ग) प १७।१२४

भिंगनिभा (भृङ्गनिभा) ज ४।२२३।१

भिंगपत्त (भृङ्गपत्र) प १७।१२४

भिंगप्पभा (भृङ्गप्रभा) ज ४।१५५।२

भिंगा (भृङ्गा) ज ४।१५५।२,२२३।१

भिंगार (भृङ्गार) प ११।२५ ज ३।३,११,१७८; ५।६,४३,५५

भिंगारग (भृङ्गारक) ज २।१२

भिंडिमाल (भिण्डिमाल, भिन्दिपाल) ज ३।३१,१७८

भिक्खायरिया (भिक्षाचर्या) उ ३।१००,१३३

भिज्जमाण (भिद्यमान) प ११।७६

भिण्ण (भिन्न) प ११।७२ सू २०।२

भित्तिकडग (भित्तिकटक) ज ३।६७

भित्तुं (भेत्तुम्) ज २।६।१

भिब्भिसमाण (बाभाष्यमाण) ज ४।२७;५।२८

भिस (बिस) प १।४६,१।४८।४२ ज २।१७; ४।३,२५

भिसंत (दे० भासमान) ज ३।१७८;७।१७८

भिसकंद (विषकंद) प १७।१३५

भिसमाण (दे०) ज ४।२७;५।२८

भीत (भीत) प २।२० से २७

भीम (भीम) प २।२० से २७,४५;४५।१ उ १।१३६

भीय (भीत) ज २।६०;३।१११,१२५ उ १।८६; ३।११२;४।१६

√भुंज (भुज्) भुंजइ ज ३।३ भुंजए ज ४।१७७ भुंजाहि उ ३।१०७

भुंजमाण (भुञ्जान) प २।३० से ३२,४१,४६ ज १।३३,४५;२।६१,१२०;३।८२,१७१, १८५,१८७,२०६,२१८;४।११३;५।१,१६; ७।५५,५८,१८४,१८५ सू १८।२२,२३; १६।२६ उ ३।६०,६८,१०१,१०६,१२६ से १३१,१३४;५।२५

√भुंजाव (भोजय्) भुंजावेइ उ ३।११४

√भुकुंड (दे०) भुकुंडेति ज ३।२११

भुक्खा (दे० बुभुक्षा) उ १।३५ से ३७,४०

भुजंग (भुजङ्ग) ज २।१५

भुज्जो (भूयस्) प १६।४६;१७।११५ से १२२, १५४;२८।२४ से २६,३६,४२,४५,४६,७१, ७४;३४।२०,२२ से २४ ज ३।१२६;७।२१४

भुत्त (भुक्त) ज २।७१;३।८२ सू २०।७ उ ४।१६
भुत्तभोइ (भुक्तभोगिन्) उ ३।१०७,१२६
भुमगा (भ्रू) ज २।१५
भुयग (भुजग) प २।४६ चं १।२
भुयगवइ (भुजगपति) प २।४१
भुयपरिसप्प (भुजपरिसर्प) प १।६७,७६;४।१४० से १४८;६।७१.७५;२१।१४,१६,३५,४६,६०
भुयमोयग (भुजमोचक) प १।२०।३
भुयय (भुजग) प २१।४७।१
भुयरुक्ख (भूतवृक्ष) प १।४३।२
भुया (भुजा) प २।३०,३१,४१,४६ ज ५।२१,५८, उ ३।६२
भुस (तुष) प १।४२।१
भू (भू) सू २।१
भूत (भूत) प २।६४ सू १६।३८
भूतिकम्म (भूतिकर्मन्) ज ५।१६
भूतोद (भूतोद) सू १६।३८
भूमि (भूमि) प १।७४ ज १।२६
भूमिगय (भूमिगत) ज ३।१०५
भूमिचवेडा (भूमिचपेटा) ज ५।७
भूमितल (भूमितल) ज ५।५
भूमिभाग (भूमिभाग) प २।४८ से ५१,६३; १७।१०७,१०६,१११ ज १।१३,२१,२५,२६, २८,२६,३२,३३,३६,३७,३६,४०,४२,४६; २।७,१०,३८,५२,५६,५७,१२२,१२७,१४१, १४७,१५०,१५६,१५६,१६१,१६४;३।८१, १६२,१६३,१६६,१६७;४।२,३,८,६,११,१२, १६,३२,४६,४७,४६,५०,५६,५८,५६,६३,६६, ७०,८२,८७,८८,६३,१००,१०४,१०६,१११, ११२,११७,११८,११६,१२२,१२३,१३१, १६६,१७०,१७६,२१७,२३४,२४० से २४२, २४७,२४८,२५०;५।३२,३३,३५;७।३३ सू २।१;६।३;१८।१;२०।७
भूमिया (भूमिका) ज ३।३२
भूमी (भूमि) ज १।२।१३२,१४२,१४३;४।११६
भूय (भूत) प १।१३२;२।४१,४५,६४;१५।५५।३; ३६।६२,७७ उ २।१०,३१,१३१;३।१,६,२२, ३६,७८,८०,८१,६२,६३,६५,६६,११६,१२१, १५१,१५६,१६०,१६३,१८०,२२२;७।२१२ उ १।१३८;३।४३.४४,४६;५।४
भूय (भूयस्) ज ३।३
भूयग्गह (भूतग्रह) ज २।४३
भूयणय (भूतृणक) प १।४४।३
भूयत्थ (भूतार्थ) प १।१०१।२
भूयवाइय (भूतवादिक) प २।४१,२।४७।१
भूया (भूता) उ ४।६,११ से १६,१८ से २४
भूयाणंद (भूतानंद) प २।३४,३६,४०।७
भूसण (भूषण) प २।३०,३१,४१ ज ३।८१,१६८; ७।१७८
भूसणधर (भूषणधर) ज ३।६,२२१;५।२१
भूसिय (भूषित) ज ३।३०,३५,१७८
भे (भोस्) उ ३।३८,४०,४२,४४
भेद (भेद) प १।४८।३८;६।८३;११।७४,७६ से ७८; १५।५३;२१।१६,४०,४३,४४,५२,५५,७६,७७, ६४,२२।२०;२३।१।१
भेदग (भेदक) ज ३।१०६
भेदपरिणाम (भेदपरिणाम) प १३।२१,२५
भेय (भेद) प ११।७२,७३,७५;१६।३२;२१।७७ उ १।३१
भेयघाय (भेदघात) चं ४।१,३ सू १।८।१,३;२।२
भेयपरिणाम (भेदपरिणाम) प १३।२५
भेरि (भेरि) ज ३।१२,७८,१८०,२००
भेरी (भेरी) उ ५।१५ से १७
भेरुतालवण (भेरुतालवन) ज २।६
भेसज्ज (भैषज्य) उ ३।१०१
भेसण (भीषण) ज २।१३३
भो (भोस्) ज २।६५,६७,१०१,१०५,१०७,१०६, १११,११४;३।७,१२,२६,३६,४७,४६,५२, ५६,६१,६६,८३,६१,६६,११३,११५,१२२, १२४,१२७,१२८,१३३,१४१,१४७,१५१, १५४,१६८,१७०,१७५,१८०,१६६,२०७,

२१२;५।३,१४,२२,२६,५४,६८,६९,७२
उ १।१७,१२३,१३१;४।१६;५।१५,१८
भोग (भोग) प १।६५ ज २।६५;३।३ सू १८।२२,
२३;१९।२६ उ १।२७,९३,१४०;३।९८,१०१,
१०६,१०७,१२९ से १३१ १३४,१३९
भोगंकरा (भोगङ्करा) ज ४।१०६;५।१।१
भोगंतराय (भोगान्तराय) प २३।२३
भोगत्थिय (भोगार्थिक) ज ३।१८५
भोगभोग (भोगभोग) प २।३०,३१,४१,४९
ज २।६१,१२०;३।१७१,१८५,२०९;५।१,१९;
७।५५,५८,१८४,१८५
भोगमालिणी (भोगमालिनी) ज ४।१६४;५।१।१
भोगवइया (भोगवतिका) प १।९८
भोगवई (भोगवती) ज ४।१०६;५।१।१;७।१२१
सू १०।९१
भोगविस (भोगविष) प १।७०
भोच्चा (भुक्त्वा) सू १०।१२०
भोत्तूण (भुक्त्वा) प २।६४।१९
भोम (भौम) ज ७।१२२।३ सू १०।८४।३
भोमेज्ज (भौमेय) प २।४१,४३ ज ३।२०९;
५।५५,५६
भोमेज्जग (भौमेयक) प २।४१,४३,४६
भोमेज्जा (भौमेयक) प २।४१,४२
भोयण (भोजन) प २।६४।१९ ज २।१८ चं ५।३
सू १।९।३;१०।१२०;२०।७ उ ३।११०,११४
भोयणजाय (भोजनजात) ज २।१८
भोयणमंडव (भोजनमण्डप) ज ३।२८,४१,४९,
५८,६६,७४,१३९,१४७,१४९,१८७,२१८

म

मइ (मति) ज ३।३२
मइअण्णाणि (मत्यज्ञानिन्) प ३।१०२,१०३;
१८।८३;२८।१३७
मइल (दे० मलिन) ज २।१३१ उ ३।१३०
मउड (मुकुट) प २।३०,४८ से ५०;५।१८
ज ३।३,६,९,१८,२९,३१,४७,९३,१८०,२११,
२२१,२२२;५।१८,२१
मउय (मृदुक) प १।४ से ९;३।१८२;५।५७,२०९;
१५।१५,१६,२७,२८,३२,३३;२८।२६,३२,६६
ज २।१५;३।३;५।५,७,१७८
मउल (मुकुट) प २।४१
मउल (मुकुल) ज २।१५;३।१७८;७।१७८
मउलि (मुकुलिन्) प १।६९,७१
मउलि (मौलि) प २।३०,३१,४१,४९
मउलिय (मुकुलित) ज ३।६;५।२१
मंकुणहत्थि (मत्कुणहस्तिन्) प १।६५
मंख (मङ्ख) ज २।६४;३।१८५
मंगल (मंगल) ज २।६७;३।९,१२,१८,७७,८२,
८५,८८,९३,१२५,१२६,१८०,२२२;५।५,४६
सू १८।२३;२०।७ उ १।१७,१९,७०,१२१;
३।११०;५।१७,३६
मंगलग (मंगलक) ज ३।१७८;४।१५८;५।५८
उ ५।१९
मंगलावई (मंगलावती) ज ४।१९१,२०२,२०३
मंगलावईकूड (मंगलावतीकूट) ज ४।२०४।१
मंगलावत्त (मंगलावर्त) ज ४।१९३,१९५
मंगलावत्तकूड (मङ्गलावर्तकूट) ज ४।१९२
मंगल्ल (मांगल्य) ज २।६४;३।८५,१८५,२०९;
५।५८ उ १।४१,४४
मंगुस (दे०) प १।७६
मंच (मञ्च) सू १२।२९
मंचाइमंच (मञ्चातिमञ्च) ज ३।७,१८४
मंचातिमंच (मञ्चातिमञ्च) सू १।२९
मंजरिका (मञ्जरिका) ज ५।७२,७३
मंजिट्ठावण्णाभ (मञ्जिष्ठावर्णाभ) सू २०।२
मंजु (मञ्जु) ज २।६५;३।१८६,२०४
मंजुघोसा (मंजुघोषा) ज ५।५२,५३
मंजुपाउयार (मञ्जुपादुकाकार) प १।६७
मंजुल (मञ्जुल) उ ३।९८
मंजुस्सर (मंजुस्वर) ज ५।५२,५३
मंजूसा (मञ्जूषा) ज ३।१६७;४।२००।१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंडण (मण्डन) ज ३।१०९
मंडल (मण्डल) ज ३।३०,३५,६५,९६,१०९,१५६, १६०;७।२,१०,१३,१६,१९ से ३१,३५,५५, ५९,७२,७५,७८ से ८४,९५,९६,९८,९९, १००,१०४,१२६।१ चं २।१;३।२ सू १।६।१; १।७।२;१।११,१२,१४,१८ से २५,२७;२।१ से ३;३।२;४।४,७,९;६।१;९।२;१०।७५, १३८ से १५१,१७३;१२।३०;१३।४,५,१३; १५।२ से ४,१४ से ३६;१९।२२।१० से १२, १९।२३
मंडलगइ (मण्डलगति) प २।४८
मंडलग्ग (मण्डलाग्र) ज ३।३५
मंडलवति (मण्डलपति) ज ३।८१
मंडलरोग (मण्डलरोग) ज २।४३
मंडलवत (मण्डलवत्) सू १।२५ से ३१
मंडलसंठिति (मण्डलसंस्थिति) सू १।२५
मंडलि (मण्डलिन्) प १।७१
मंडलिय (माण्डलिक) प १।७४;२०।१।१
मंडलियत्त (माण्डलिकत्व) प २०।५७
मंडलियराय (माण्डलिकराज) ज ३।२२५
मंडलियावाय (मण्डलिकावात) प १।२९
मंडव (मण्डप) ज ३।८१;५।३५
मंडवग (मण्डपक) ज १।१३;२।१२
मंडव्वायण (माण्डव्यायन) ज ७।१३२।३ सू १०।१०७
मंडित (मण्डित) प २।३१ ज ३।१८४
मंडिय (मण्डित) प २।३१ ज ३।७,१८,३१,१८०; ५।२१,३८
मंडुक्की (मण्डूकी) प १।४४।२
मंडूकपुत्त (मण्डूकपुत्र) सू १२।२९
मंडूय (मण्डूक) प १६।४४
मंडूयगति (मण्डूकगति) प १६।३८,४४
मंत (मन्त्र) ज ३।११५,१२४,१२५ उ ३।११,१०१
मंति (मन्त्रिन्) ज ३।९,७७,२२२
मंथ (मन्थ) प ३६।८५
मंद (मन्द) ज २।६५;५।३८,५७;७।५८ सू २।३; १८।१८
मंदकुमारय (मन्दकुमारक) प ११।११ से १५
मंदकुमारिया (मन्दकुमारिका) प ११।११ से १५
मंदगइ (मन्दगति) चं ४।२ सू १।८।२
मंदर (मन्दर) प २।३२,३३,३५,३६,४३,४४,५०, ५१;१५।५५।३;१६।३० ज १।१६,२६,४६,५१; २।६८;३।२;४।९४,१०३,१०६,१०८,११४, १४३,१६०,१६२,१६३,२०३,२०५,२०८, २०९,२१२ से २१६,२१९ से २२२,२२५, २३३ से २३५,२३७ से २४१,२५३,२५४, २५७,२५९,२६०।१,२६१,२६२;५।४७ से ५०, ५३;६।१०,२३,२४;७।८ से १३,३१,३३,६७ से ७२,९१,९२,१६८।१,१७१ सू ४।४,७; ५।१;७।१;८।१;१८।५ उ १।१०,२९,६९
मंदरकूड (मन्दरकूट) ज ४।२३६;६।११
मंदरचूलिया (मन्दरचूलिका) ज ४।२४१,२४२, २४३,२४५,२४९,२५१,२५२
मंदरपव्वय (मन्दरपर्वत) प १६।३० सू ४।४,७
मंदलेस (मन्दलेश्य) सू १९।२२।३०;१९।२६
मंदायवलेस (मन्दातपलेश्य) ज ७।५८ सू १९।२६
मंदिर (मन्दिर) सू ७।१
मंस (मांस) प १।४८।४९;२।२० से २७ सू १०।१२० उ १।३४,४०,४३ से ४६,४८, ४९,५१,५४,७४,७६,७९
मंसकच्छभ (मांसकच्छप) प १।५७
मंसल (मांसल) ज २।१५;७।१७८
मंसाहार (मांसाहार) ज २।१३५ से १३७
मंसु (श्मश्रु) ज २।१३३
मक्कार (माकार) ज २।६१
मगइत (दे०) उ १।१३८
मगइय (दे०) ज ३।३१
मगत (दे०) उ १।१३८
मगदंतिया (मदयंतिका) प १।३८।२ ज २।१० मेंहदी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मगर (मकर) प १।५५,५९;२।३० ज १।३७; २।१०१;४।२४,२७,३९,६६,६१;५।३२ सू २०।२

मगरंडग (मकराण्डक) ज ५।३२

मगरज्झय (मकरध्वज) ज २।१५

मगरमुहविउट्टसंठाणसंठिय (मकरमुखविवृतसंस्थानसंस्थित) ज ४।२४,७४

मगसिरी (मार्गशिरी) सू १०।७,१२

मगसीसावलिसंठिय (मृगशीर्षावलिसंस्थित) सू १०।३८

मगह (मगध) प १।९३।१

मगूस (दे०) प ११।७८

मग्ग (मार्ग) ज २।६४;३।२२,३६,९३,९९,१०६, १६३,१७५,१८०

मग्गओ (दे० पृष्ठतस्) ज ५।४३

मग्गण (मार्गण) ज ३।२२३

मग्गदय (मार्गदय) ज ५।२१

मग्गदेसिय (मार्गदेशिक) ज ५।५,४६

मग्गमाण (मार्गयत्) उ ३।१३०

मग्गरिमच्छ (मकरीमत्स्य) प १।५६

मग्गसिर (मार्गशीर्ष) ज ७।१०४,१४५,१४९ सू १०।१२४ उ ३।४०

मग्गसिर (मृगशिरस्) ज ७।१४०,१४५,१४९

मग्गसिरी (मार्गशिरी) ज ७।१३७,१४०,१४५, १४९,१५२,१५५ सू १०।७,१२,२३,२५,२६

√मग्गिज्ज (मार्गय्) मग्गिज्जइ प १२।३२

मघमघेंत (दे० प्रसरत्) प २।३०,३१,४१ ज ३।७, ८८;५।७ सू २०।७

मघव (मघवन्) प २।५० ज ५।१८

मघा (मघा) ज ७।१२८,१२९,१३६,१४० सू १०।५,६२

मच्छ (मत्स्य) प १।५५,५६;६।८०।२ ज २।१५, १३४;३।१७८;४।३,२५,२८;५।३२,५८ सू २०।२

मच्छंडग (मत्स्याण्डक) ज ५।३२

मच्छंडिया (मत्स्यण्डिका) प १७।१३५ ज २।१७

मच्छाहार (मत्स्याहार) ज २।१३५ से १३७

मच्छिय (मक्षिका) प १।५१।१

मच्छियपत्त (मक्षिकापत्र) प २।६४

मज्जण (मज्जन) ज ३।९,२२२

मज्जणघर (मज्जनगृह) ज ३।९,१७,२१,२८,३१, ३८,४१,४९,५८,६६,७४,७७,८५,१३९,१४७, १५३,१६८,१७७,१८७,१८८,२०१,२१८, २१९,२२२ उ १।१२४;५।१९

मज्जणय (मज्जनक) उ १।९७

मज्जणविहि (मज्जनविधि) ज ३।९,२२२

मज्जाया (मर्यादा) ज २।१३३

मज्जार (मार्जार) प १४४।१ चित्रक

√मज्जाव (मज्जय्) मज्जावेंति ज ५।१४

मज्जावेत्ता (मज्जयित्वा) ज ५।१४

मज्जिय (मज्जित) ज ३।९,२२२

मज्झ (मध्य) प १।४८।६३; २।२१ से २७,२७।३, २।३० से ३६,३८,४१ से ४३,४६,५० से ५९, ६४; ११।६६,६७; २८।१६,१७,६२,६३ ज १।८,३५,४६,४७।१,५१;३।९,१७,२१, २४।३,३४,३७।१,४५।१,१०९,१३१।३,१७७, १८५,२०९,२२२,२२४,२२५;४।१३,४५, ११०,११४,१२३,१४२।१,२,१५५,१५६।१, २१३,२२२,२४२,२६०।१;५।१४,१५,१७,३३, ३८;७।४५,२२२।१ सू १२।३०;२०।७

मज्झंमज्झ (मध्यंमध्य) ज २।६५,९०; ३।१४, १७२,१८३,१८४,१८५,२०४,२२४;५।४४ सू २०।२ उ १।१९,९७,११०,१२५,१२६, १३२,१३३;३।२९,१११,१४१;४।१३,१५, १८;५।१९

मज्झंतिय (मध्यान्तिक) ज ७।३६,३७,३८

मज्झगय (मध्यगत) ज ७।२१४

मज्झयार (दे० मध्य) ज ७।३२।१

मज्झिम (मध्यम) प २।६४।७;२३।१९५ ज २।५५, ५६,१५५,१५९;४।१९,२१;५।१३,१६,३९ सू २।३ उ ३।१००,१३३

मज्झिमउवरिम (मध्यमउपरितन) प २८।९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मज्झिमउवरिमगेवेज्जग (मध्यमउपरितनग्रैवेयक) प १।१३७;४।२८२ से २८४;७।२५
मज्झिमग (मध्यमक) प २।६१
मज्झिमगेवेज्ज (मध्यमग्रैवेयक) प ६।४०
मज्झिमगेवेज्जग (मध्यमग्रैवेयक) प २।६१,६२; ३।१८३;६।५६;३३।१६
मज्झिममज्झिम (मध्यममध्यम) प १८।६१
मज्झिममज्झिमगेवेज्जग (मध्यममध्यमग्रैवेयक) प १।१३७;४।२७९ से २८१;७।२४
मज्झिमय (मध्यमक) प २।६२।१
मज्झिमहेट्ठिम (मध्यमाधस्तन) प २८।९०
मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जय (मध्यमाधस्तनग्रैवेयक) प १।१३७;४।२७६ से २७८;७।२३
मज्झिमिल्ल (मध्यम) ज ४।२५३,२५५,२५८
मज्झिय (मध्यक) ज २।१५
मज्झिल्ल (मध्यम) ज ३।१
मट्टिया (मृत्तिका) ज ३।२०९;५।५५,५६
मट्ठ (मृष्ट) प २।३०,३१,४१,४९,५६,६३,६४ ज १।८,२३,३१;२।१५;४।१२८;५।४३ सू २०।७
मट्ठमगर (मृष्टमकर) प १।५९
मडंब (मडम्ब) प १।७४ ज २।२२,१३१;३।१८, ३१,८१,१६७।२,१८०,१८५,२०६,२२१ उ ३।१०१
मण (मनस्) प २२।४;२३।१५,१६; ३४।१।२, ३४।२४ ज २।६४,७१;३।३,३५,१०५,१०९; ४।१०७,१४६; ५।३८,७२,७३ सू २०।७ उ १।१५,३५,४१ से ४४,७१;३।६८
मणगुत्त (मनोगुप्त) ज २।६८ उ ३।६६
मणजोग (मनोयोग) प ३६।८६,८८,८९,९२
मणजोगपरिणाम (मनोयोगपरिणाम) प १३।७
मणजोगि (मनोयोगिन्) प ३।६६;१३।१४,१९; १८।५६;२८।१३८
मणपज्जत्ति (मनःपर्याप्ति) प २८।१४२,१४४,१४५
मण (पज्जवणाण) (मनःपर्यवज्ञान) प २९।१७
मणपज्जवणाण (मनःपर्यवज्ञान) प ५।२४,११५, १७।११२,११३; २०।१८,३२,४७; २९।२; ३०।२
मणपज्जवणाणारिय (मनःपर्यवज्ञानार्य) प १।९९
मणपज्जवणाणि (मनःपर्यवज्ञानिन्) प ३।१०१, १०३;५।११७।१८।८१;२८।१३६;३०।१६,१७
मणपज्जवनाण (मनःपर्यवज्ञान) प २०।३३
मणपज्जवनाणपरिणाम (मनःपर्यवज्ञानपरिणाम) प १३।९
मणपरियारग (मनःपरिचारक) प ३४।१८,२४,२५
मणपरियारणा (मनःपरिचारणा) प ३४।१७,१८, २४
मणभक्खण (मनोभक्षण) प २८।१०५
मणभक्खत्त (मनोभक्षत्व) प २८।१०५
मणभक्खि (मनोभक्षिन्) प २८।१।२,२८।१०४, १०५
मणसमिय (मनःसमित) ज २।६८
मणसाइय (मनःस्वादित) ज ३।११३
मणसीकत (मनीकृत) प २८।१०५
मणसीकय (मनीकृत) प ३४।१९,२१ से २४
मणसीकरेमाण (मनीकुर्वत्) ज ३।५४,६३,७१, १११,११३,१३७,१४३,१६७
मणहर (मनोहर) ज २।१२,६५;३।१३८,१८६, २०४;४।१०७;५।५,२८,३८;७।१७८
मणाभिराम (मनोभिराम) ज ३।१०९
मणाम (दे० 'मन' आप) प २८।१०५ ज २।६४; ३।१८५,२०९;५।५८ उ १।४१,४४; ३।१२८; ५।२२
मणामतर (मनःआपतर) ज २।१८;४।१०७
मणामतरिय ('मन' आपतरक) प १७।१२६ से १२८,१३३ से १३५ ज २।१७
मणामत्त ('मन' आपत्त) प २८।२६;३४।२०
मणि (मणि) प १।२०।२;२।३१।४१,४८;१५।१।२, १५।५० ज १।१३,२१,२६,३३,४९;२।७,२४, ५७,६४,६९,१२२,१२७,१४७,१५०,१५६, १६४;३।१,९,२०,२४,३०,३३,३५,५४,५६,

१. भिक्षुशब्दानुशासन ८।२।१९ अरुर्मनश्चक्षु····

६३,७१,८१,८४,६५,१०६,११७,१३७,१४३, १४५,१५६,१६७।८,१२,१७८,१८२,१६२, २२२;४।३,१६,२५,४६,६३,८२,११४;५।१६, ३२,३८ सू २०।७,१८

मणिकंचण (मणिकाञ्चन) ज ४।२६६।१

मणिदत्त (मणिदत्त) उ ५।२४,२६

मणिपेढिया (मणिपीठिका) ज १।४३,४४;४।१२, १३,३३,१२३,१२४,१२६,१२७,१३२,१३३, १३६,१३६,१४५,१४६,१४७,२१८,२१६; ५।३५

मणिमय (मणिमय) प २।४८ ज १।४३;३।२०६; ४।५,७,१२,१३,२६,२७,४६,११४,१२३, १२४;५।३५,५५

मणिरयण (मणिरत्न) ज ३।६,१२,२४,३०,८८, ६२,६३,११६,१२१,१७८,२२०,२२२;४।१६, ४६,६७;५।२८,५८;७।१७८

मणिरयणक (मणिरत्नक) ज १।३७;३।६३

मणिरयणत्त (मणिरत्नत्व) प २०।६०

मणिवइया (मणिमती) उ ३।१५०,१५८

मणिवई (मणिमती) उ ३।१६६

मणिवर (मणिवर) ज ३।६२,११६

मणिसिलागा (मणिशलाका) प १७।१३४

मणुई (मनुजी) ज २।१५

मणुण्ण (मनोज्ञ) प २३।१५,३०;२८।१०५; ३४।१६,२१ ज २।६४;३।१८५,२००; ४।१०७;५।३८,५८ सू २०।७ उ १।४१,४४; ३।१२८;५।२२

मणुण्णतर (मनोज्ञतर) ज २।१८;४।१०७

मणुण्णतरिय (मनोज्ञतरक) प १७।१२६ से १२८, १३३ से १३५ ज २।१७

मणुण्णत्त (मनोज्ञत्व) प ३४।२०

मणुण्णस्सरता (मनोज्ञस्वरता) प २३।१६

मणुय (मनुज) प ६।८०।२,६।८१;२०।५३, २३।३६,८३,११३,१४६,१७२;२८।१४४, १४५;३१।६।१;३२।६।१ ज १।२२,२७,५०; २।१४,१६,१६,२१ से २६,२८ से ३७,४१ से ४६,५६,५८,६४,१२३,१२८,१३३,१३४, १३५,१४६,१४८,१५१,१५७,१५६;४।८५, १०१,१७१ उ १।१४,१५,२१;३।६८,१०१, १३१;५।२३,३१

मणुयअसण्णिआउय (मनुजासंज्ञ्यायुष्क) प २०।६४

मणुयगति (मनुजगति) प ६।३,८

मणुयगतिय (मनुजगतिक) प १३।१६

मणुयगामि (मनुजगामिन्) ज १।२२,५०;२।१२३, १२८,१४८,१५१,१५७;४।१०१

मणुयगतिपरिणाम (मनुजगतिपरिणाम) प १३।३

मणुयरयण (मनुजरत्न) ज ३।२२०

मणुयलोग (मनुजलोक) सू १६।२१।८

मणुयलोय (मनुजलोक) सू १६।२२।१,३ से ६

मणुयवइ (मनुजपति) ज ३।३

मणुयाउय (मनुजायुष्क) प २०।६३,२३।१८,१५८

मणुस्स (मनुष्य) प १।५२,८२ से ८५,१२६; २।२६;३।२५,३८,३६,१२६,१८३;४।१५८ से १६४;५।३,२३,२४,१००,१०१,१०३,१०४, १०६,१०७,११०,१११,११४,११५,११८ से १२०;६।२३,२४,४६,५५,६५,६६,७०,७२, ७६,८१,८२,८४,६०,६२,६४,६६,६७,६६ से १०४,१०८,११०,११३,११६;७।४;८।८,६; ६।८ से १०,१६,१७,२२,२३;११।२१,२२, २४,२६;१२।५,३२;१३।१६;१५।१२२; १७।४५,४६,१२६,१६४,१७१;१६।४;२१।७, ४८;२२।३६;२३।१६४,१६८;२६।१५; ३४।३;३६।१।१,३६।४१,५२ ज २।६,७,५०, ५३,१६२,१६४;३।६८,१७८,२२१ सू २।३; १६।२२।१३;२०।२ उ १।१२१,१२२,१२६, १३३,१३६,१३७,१४०

मणुस्सखित्त (मनुष्यक्षेत्र) प १।७४

मणुस्सखेत्त (मनुष्यक्षेत्र) प १।८४;२।७,२६ सू १६।२२।२१

मणुस्सगामि (मनुष्यगामिन्) ज २।५८

मणुस्सरुहिर (मनुष्यरुधिर) प १७।१२६

मणुस्सलोय (मनुष्यलोक) सू २०।२

मणुस्साउय (मनुष्यायुष्क) प २३।१४७,१६२,१६५, १७०

मणुस्सी (मानुषी) प ३।३६,१३०,१८३; ११।२३; १७।४८,१६०; २३।१६४,१६८,२०१ ज २।७

मणूस (मनुष्य) प ६।८४,८७; १५।३५,४४,४५, ४७ से ५० ८७,६१,६८,१०३ से १०६,११५, १२१ १२३,१२६,१३८; १६।८,१५,२५,२८; १७।२४,२५,३०,३३,३५,४७,७०,६७,१०४, १५७,१५६ से १६३,१६६,१६७,१७०,१७२; १८।४,१०; २०।४,१३ १८,२५,३०,३२,३५, ३६,४८; २१।१६,२०,३६,५४,६०,६६,७२, ७७,८२,८६; २२।३१,४५,७५,७६ ८०,८३ से ८५,८८,६०,६६,१००; २३।१०,१२,७६, १६६,२००; २४।३,८,१०,१२; २५।४,५; २६।३,४,६,८,१०; २७।२,३; २८।२,४६ से ५१,६७ से ६६,७१,१०३,११६ से १२१, १२४,१२८,१३०,१३६ से १३८,१४१ से १४३; २६।२२; ३०।१४,२४; ३१।४; ३२।४; ३३।१,१३,२१,२६,३३,३६; ३४।६; ३५।१४, २१; ३६।७,१०,११,१३ से १५,१७,२६,३०, ३१,३३,३४,५८,७२,८०,८१ ज ४।१०२; ७।२० से २५,७६,८२ सू २।३

मणूसखेत्त (मनुष्यक्षेत्र) प २१।६२,६३

मणूसत्त (मनुष्यत्व) प १५।६८,१०४,११०,११५, १२६,१३०; ३६।२२,२६ ३०,३१,३३,३४

मणूसाउय (मनुष्यायुष्क) प २३।७६

मणूसी (मनुष्यणी) प २७।१५८,१५६,१६१ से १६४; १८।४,१०; २०।१३; २३।१६६,२०१

मणोगम (मनोगम) ज ७।१७८

मणोगय (मनोगत) ज ३।२६,३६,४७,५६,१२२, १२३,१३३,१४५,१८८; ५।२२ उ १।१५,५१, ५४,६५,७६,७६,६६,१०५; ३।२६,४८,५०, ५५,६८,१०६,११८,१३१; ५।३६,३७

मणोगुलिया (मनोगुलिका) ज ४।१२६

मणोज्ज (मनोज्ञ) प १।३८।१ ज २।१०

मणोणुकूल (मनोनुकूल) सू २०।७

मणोमाणसिय (मनोमानसिक) उ १।६३

मणोरम (मनोरम) प २४।१६,२१,२२ ज ४।२६०।१; ५।४६।३; ७।१७८ सू ५।१ उ ५।२८

मणोरह (मनोरथ) ज ३।८८,२२१

मणोहरमाला (मनोरथमाला) ज २।६५; ३।१८६, २०४

मणोसिला (मनःशिला) प १।२०।२ ज ३।११।३

मणोहर (मनोहर) प ३४।१६,२१ ज २।१२; ७।११७।१ सू १०।८६।१

√**मण्ण** (मन्) मण्णामि प ११।१ मण्णे ११।५; ३।६८

मति (मति) प १३।१० ज ३।१

मतिअण्णाण (मत्यज्ञान) प ५।५,७,१०,१२,१४, १६,१८,२०,५६,६३; २६।२,६,६,१२,१७,१६ से २१

मतिअण्णाणपरिणाम (मत्यज्ञानपरिणाम) प १३।१०

मतिअण्णाणि (मत्यज्ञानिन्) प ३।१०३; ५।८०,६६, ११७; १३।१४,१६,१७; १८।८३

मतिणाण (मतिज्ञान) प २६।६

मत्त (मत्त) ज २।१२

मत्त (अमत्र) सू २०।४ उ १।६३,१०५,१०६

मत्तंग (मत्ताङ्ग) ज २।१३

मत्तजला (मत्तजला) ज ४।२०२

मत्तियावई (मृत्तिकावती) प १।६३।४

मत्थगसूल (मस्तकशूल) ज २।४३

मत्थय (मस्तक) ज ३।५,६,८,१२,१६,२६,३६, ४७,५३,५६,६२,६४,७०,७७,८१,८२,८४, ८८,६०,१००,११४,१२६,१३३,१३८,१४२, १४५,१५१,१५७,१६५,१८१,१८७,१८६, २०५,२०६,२०६,२१८; ५।५,२१,४६,५८ उ १।३६,४५,५५,५८,८०,८३,६६,१०७, १०८,११६,११८,१२२; ३।१०६,१३८; ४।१५; ५।१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मदणसलागा (मदनशलाका) प १।७६
मदणसाला (मदनशाला) उ ५।५५
मद्दग (दे०) प १।३७।४
मद्दव (मार्दव) ज २।१६,७१
मद्दुग (मद्गुक) ज २।१३७
मधु (मधु) प १७।१३४ ज २।१०६,११०
मधुर (मधुर) ज ३।१८६,२०४
√मन्न (मन्) मन्ने ज ३।१०५
मम्म (मर्मन्) उ १।६६
मम्मण (मन्मन) उ ३।६८
मय (मद) च १।१
मयकिच्च (मृतकृत्य) उ १।६२
मयणिज्ज (मदनीय) प १७।१३४ ज २।१८
मयूर (मयूर) प १।७६ ज २।१५ उ ५।५५
मरगय (मरकत) प १।२०।३ ज ३।१०६
मरण (मरण) प १।१।१; २।६४; २।६४।६,२२; ३६।१।१,३६।८३।२,६४।१ ज २।७०,८८, ८६,१०३,१०४; ३।२२५ सू २०।६।६ उ ३।११२,१५६; ४।१६
मरीइ (मरीचि) ज १।३७
मरीइया (मरीचिका) ज ५।३२
मरुदेव (मरुदेव) ज २।५६,६२
मरुदेवा (मरुदेवा) ज २।६३
मरुय (मरुक) प १।८६
मरुयग (मरुबक) प १।४४।३ मरुआ
मरुयरायवसभकप्प (मरुद्राजवृषभकल्प) ज ३।१८,६३,१८०
मरुयापुड (मरुबकपुट) ज ४।१०७
मलय (मलय) प १।८६,१।६३।३ ज १।२६; ३।२, २११; ५।५५ उ १।१०,२६,६६; ५।११
मलयगिरि (मलयगिरि) ज ३।२४
मलिण (मलिन) ज २।१३३
मलिय (मृदित) ज ३।२२१ उ १।३५; ३।५०, ११०,११३; ४।२०
मल्ल (माल्य) प २।३०,३१,४१,४६ ज २।१२०; ३।६,११,१२,२१,३४; ५।५५,५७ उ १।३५; ३।५०,११०
मल्ल (मल्ल) ज २।३२; ३।७८,८५,८८,१८०, २०६,२११,२२१; ५।२२,२६
मल्लइ (मल्लकि) उ १।१२७ से १३०,१३२
मल्लदाम (माल्यदामन्) प २।३०,३१,४१ ज ३।७,६,१२,१८,२८,३०,३५,४१,४६,५८; ६६,७४,७७,७८,८८,६३,११७,११६,१४७, १६८,१७८,१८०,२१२,२१३,२२२
मल्ल (वासा) (माल्यवर्षा) ज ५।५७
मल्लि (मल्लि) ज ३।१०६
मल्लिया (मल्लिका) प १।३८।२ ज २।१०; ३।१२,८८,१७८; ५।५,५८; ७।१७८
मल्लियापुड (मल्लिकापुट) ज ४।१०७
मविज्जमाण (माप्यमान) प १।४८।५६
मवेज्जमाण (माप्यमान) प १।४८।५८
मसग (मशक) प १।५१।१ ज २।४० उ ३।१२८
मसारगल्ल (दे०) प १।२०।३ ज ३।१०६; ५।५
मसि (मसि, मषि) ज २।२३
मसूर (मसूर) प १।४५।१,१।७६; १५।३,२१; २१।२३,८० ज २।३७
मह (महत्) प २।३०,३१,४१,४६,६२; २३।१६३; ३६।८१ ज १।१२,१४,३७,४०,४२,४३; २।३१; ३।२४,१६१,१६३,१६४,१६७; ४।३, ६,६,१२,१३,२४,२५,३१,३३,३६ से ४१,४७, ४६,५६,६६ से ६८,७०,७४,७५,७६,८८,६३, १५६,२१६,२१८,२२१,२३५,२४३,२५०; ५।५,७,३५ से ३८,५४,६७; ७।५०
√मह (मथ्) महिंति ज ५।१६ महेइ उ ३।५१
महआस (महाश्व) ज ३।१७६
महइ (महती) प २।२७ ज १।१०; २।११४,११५; ५।४३
महइमहालिय (महतीमहत्) ज १।२०; ४।१४
महंत (महत्) प २३।१६३ ज १।६,२६; ३।२ उ १।१०,२६,६६; ५।११

महंतत्तर (महत्तर) ज ४।८०,१०२

महग्गय (महाग्रह) ज ७।११३

महग्गह (महाग्रह) ज ७।१,१०४,१७० सू १०।१३०; १९।५,८; ११।३,१५।३,१६, २१।४,७;१९।२२।६,१३; २०।८ उ ३।२५, ८४ से ८६

महग्गहत्त (महाग्रहत्व) उ ३।८३

महग्घ (महार्घ) ज ३।८५,२०७,२०८,२२२; ५।५४ सू २०।७ उ १।१९,४२; ३।२९,१४१;४।१२

महज्जुइ (महाद्युति) ज १।२४,३१;३।११५,१२४, १२५,२२६; ४।१६५; ५।१८

महज्जुइय (महाद्युतिक) प २।४९

महज्जुतीय (महाद्युतिक) प २।३०,४१; ३६।८१

महड्ढिय (महर्द्धिक) प २।४६

महड्ढीय (महर्द्धिक) ज ४।१७७

महण (मथन) ज ३।२२१

महत (महत्) सू १८।२३

महति (महती) ज ३।३१

महतिमहालय (महतीमहत्) प २।६३

महत्तरग (महत्तरक) उ १।१९

महत्तरगत्त (महत्तरकत्व) प २।३०,३१,४१,४९ ज ३।१८५,२०९,२२१;५।१९ उ ५।१०

महत्तरिया (महत्तरिका) ज ४।१८;५।१ से ३,५ से १०,१२ से १७ उ ३।९०; ४।५

महत्थ (महार्थ) ज ३।२०७,२०८;५।५४,५५

महदंडय (महादण्डक) प ३।१।२

महद्दह (महाद्रह) ज ५।५५; ६।१७

महप्पत्थाण (महाप्रस्थान) उ ३।५५

महप्प (महात्मन्) ज ३।७७,१०९

महब्बल (महाबल) प २।३०,३१; ३६।८१ उ ५।२५

महया (महत्) ज १।२६,४५;२।१२,६५;३।२,१२, २२,३६,७८,८२,८८,८९,९३,९९,१०२,१०६, १५५,१५६,१८०,१८५,१८७,२१२,२१३, २१४,२१८; ४।२३,३८,६५,७३,९०,९१,१७७; ५।२२,२६,५६,५७,५८,७२,७३;७।५५,५८, १७८,१८४ सू १९।२३,२६ उ १।१०,२३, २९,६०,६२,६५,६८,६९,७२,८५,८७,९१ से ९३,१३८,१३९;५।८,११,१६,२०,२७

महरिह (महार्ह) ज ३।९,८१,११७,२०७,२०८, २२२;५।५४

महव्वय (महाव्रत) ज २।७२

महा (मघा) ज ७।१४७,१५०,१६२,१६३ सू १०।१ से ४,६,१४,२३,६९,७०,७५,८३,१२०,१३१ से १३३

महाओहस्सर (महौघस्वर) ज ५।५१

महाकंदिय (महाक्रन्दित) प २।४१,४२,४७।१

महाकण्ह (महाकृष्ण) उ १।७

महाकच्छ (महाकच्छ) ज ४।१८२ से १८५

महाकच्छकूड (महाकच्छकूट) ज ४।१८६

महाकम्मतराग (महाकर्मतरक) प १७।४,१६

महाकाय (महाकाय) प २।४१,४५,४५।२

महाकाल (महाकाल) प २।२७,४४,४५,४५।१, २।४६,४७ ज ३।१६७।१,८,१७८ सू २०।८, २०।८।५ उ १।७

महाघोस (महाघोष) प २।४०।७ ज ५।४८,४९

महाचाव (महाचाप) ज ३।२४।४,३७।२,४५।२, १३१।४

महाजस (महायशस्) सू १७।१; २०।१,२

महाजाइ (महाजाति) प १।३८।३ ज २।१०

महाजुतिय (महाद्युतिक) प १७।१;२०।१,२

महाजुतीय (महाद्युतिक) प २।३४

महाजुद्ध (महायुद्ध) ज २।४२

महाणई (महानदी) ज १।१६,१८,२०,४८;२।१३३; १३४;३।१,१४,१५,१८,५१,५२,७६,७८,८१, ९७ से १०१,१११,११३,१२८,१४९ से १५१, १६१,१६४,१७०;४।२३,२४,२५,३५,३६,३८ से ४०,४२,५७,६५ से ६७,७१,७३,७४,७७, ७८,८४,९० से ९२,९४,९५,११०,१४१,१४३, १६७,१६९,१७४,१७७,१७८,१८१,१८३ से १८५,१८७,१८९,१९०,२००,२०१,२०२,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०६,२०८,२१२,२१५,२३२,२६२;५।५५;
६।१ से २२ उ १।६७;३।७१,५६,५८
महाणक्खत्त (महानक्षत्र) सू १०।२५,४३,१०८
महाणदी (महानदी) ज ४।१६५,२६८
महाणिरय (महानिरय) प २।२७
महाणिहि (महानिधि) ज ३।१७८,१८३,२२०,
२२१
महाणुभाग (महानुभाग) प २।३०,३१,४१,४६;
३६।८१ ज १।२४,३१;३।११५,१२४,१२५,
२२६;४।६०;५।१८ सू १७।१;२०।१,२
महाणुभाव (महानुभाव) सू १७।१;२०।१,२
महातव (महातपस्) ज १।५
महादंडय (महादण्डक) प ३।१८३
महाद्दुम (महाद्रुम) ज ५।५१
महाधणु (महाधनुष्) उ ५।२।१
महानिहि (महानिधि) ज ३।१६७।१,१०
महानील (महानील) प २।३१ से ३३
महापउम (महापद्म) ज ३।१६७।१,६,१७८
उ २।२,२०
महापउमद्दह (महापद्मद्रह) ज ४।६४,६५,७३,८६
महापउमा (महापद्मा) उ २।१६,२०
महापम्ह (महापक्ष्म) ज ४।२१२,२१२।१
महापह (महापथ) ज ३।१८५,२१२,२१३;५।७२,
७३ उ १।६८
महापाताल (महापाताल) प २।१६१
महापुंडरीय (महापुण्डरीक) ज ४।२६८
महापुंडरीयहत्थगय (हस्तगतमहापुंडरीक) ज ३।१०
महापुरा (महापुरा) ज ४।२१२।२
महापुरिस (महापुरुष) प २।४५,२।४५।२
महापुरिसपडण (महापुरुषपतन) ज २।४२
महापोंडरीय (महापौण्डरीक) प १।४६ ज ४।३,२५
महाफल (महाफल) उ १।१७
महाबल (महाबल) प २।३१,४१,४६ ज १।२४,
३१;३।७७,१०६,११५,१२४,१२५,१२६,
२२६;५।१८ सू १७।१,२०।१,२ उ २।६;
५।१३,२५
महाभीम (महाभीम) प २।४५,२।४५।१
महामंडलिय (महामाण्डलिक) प १।७४
महामंति (महामन्त्रिन्) ज ३।६,७७,२२२
महामहिम (महामहिमन्) ज २।११७,११८;
३।१२,१३,१४,२८,३०,४१,४२,४६ से ५१,
५८ से ६०,६६ से ६८,७४ से ७६ १३६,१३६,
१४७ से १५१,१६८,१६६,१७०;५।७४
महामेह (महामेघ) ज २।१०,१४१,१४२,१४५;
३।६,१७,२१,३१,३४,३५,१७७,२२२ उ ३।४६
महायस (महायशस्) प २।३०,३१,४१,४६;
३६।८१ ज १।२४,३१,३।११५,१२४,१२५,
२२६;५।१८
महारह (महारथ) ज ३।३५
महाराय (महाराज) ३।२०७,२०८,२२५ उ ३।५१,
५३,५४
महारायवास (महाराजवास) ज २।६४
महारुधिरपडण (महारुधिरपतन) ज २।४२
महारोरुय (महारौरुक) प २।२७
महालय (महत्, महालय) प २।२७,६३
ज २।११४,११५;५।४३
महावच्छ (महावत्स) ज ४।२०२।१,२०३
महावप्प (महावप्र) ज ४।२१२,२१२।३
महाविजय (महाविजय) ज २।१७
महावित्त (महावृत्त) ज ५।५८
महाविदेह (महाविदेह) प १।७४,८८;२।७
ज ४।८६,६८ से १०३,१०८,१६२,१६७,
१६६,१७२ से १७४,१७८,१८१,१८२,१८४,
१८५,१८७,१८८,१६०,१६१,१६३,१६४,
१६६,१६७,१६६,२०० से २०३,२०५,२०६,
२१३,२६२;६।६,१४,२२ उ १।१४१,१४७;
२।१३,२२;३।१८,२१,८६,१५२,१६५,१६६;
४।२६,२८;५।४३
महाविमाण (महाविमान) प २।६४
महावीर (महावीर) प १।१।१ ज १।५,६;७।२१४
चं १० सू १।५ उ १।२,४ से ८,१६,१७,१६
से २६,१४२,१४३;२।१ से ३,१० से १२,१४,

१५,२१; ३।१ से ३,७,८,१२,१९,२०,२२, २३,२६,८७,८८,९१,९३,१५३,१५४,१६६, १६७,१७०; ४।१ से ३,२७;५।१ से ३,४४
महावेदणतराग (महावेदनतरक) प १७।९,२७
महासंगाम (महासंग्राम) ज २।४२
महासत्थपडण (महाशस्त्रपतन) ज २।४२
महासमुद्द (महासमुद्र) ज ३।२२,३६,७८,९३,९९, १०६,१६३,१८०
महासरीर (महाशरीर) प १७।२,२५
महासुक्क (महाशुक्र) प २।४९,५६,५७; ३।३५, १८३; ४।२४९ से २५१; ६।३३,५६; ७।१४; २१।७०; २८।८१; ३३।१६; ३४।१६,१८ उ २।२२
महासुक्कग (महाशुक्रज) ज ५।४९
महासुक्कवडेंसय (महाशुक्रावतंसक) प २।५६
महासुमिण (महास्वप्न) उ १।४० ४३
महासेणकण्ह (महासेनकृष्ण) उ १।७
महासेत (महाश्वेत) प २।४७।३
महासोक्ख (महासौख्य) प २।३०,३१,४१,४९; ३६।८१ ज १।२४,३१; ३।११५,१२४,१२५, २२६; ५।१८ सू १७।१; २०।१
महाहिमवंत (महाहिमवत्) प १६।३० ज ४।५४, ५५,६१ से ६३,७९ से ८१,२६८
महिड्ढिय (महर्द्धिक) प २।३१,३७,३९,४२,४३, ४८,५०,५२; १७।८४ से ८७,८९; ३६।८१ ज १।२४,३१,४५,४७,५१; ३।११५,१२४, १२५,२२६; ४।२२,३४,५१,५४,६०,६१,६४, ८०,८४,८५,९७,१०२,१०७,११३,१५६, १६१,१६५,१६६,१७७,१८०,१८४,१८६, १९६,१९८,२०३,२११,२६१,२६४,२६६, २७२; ५।१८; ७।१८१,२१३ सू १७।१; १८।१९; २०।१,२
महिंद (महेन्द्र) ज १।२६; ३।२ उ १।१०,२९,६९; ५।११
महिंदज्झय (महेन्द्रध्वज) ज ४।१२८,१३३,१३६; ५।४३,४४,४९,५०,५२,५३ उ ३।७
महिड्ढीय (महर्द्धिक) प २।३०,३४,३५ से ३७, ३९,४१,४६,४९,५०,५८
महित्ता (मथित्वा) ज ५।१६
महित्थ (दे०) प १।३७।४
महिमा (महिमन्) प २।३१,९०,११६;५।३,७,२२, ४६,७४ ज २।३१,९०,११६;५।३,७,२२,४६, ७४
महिय (महित) प २।३०,३१,४१ ज १।३७;३।७, १०८ से १११
महिय (मथित) उ १।२२,१४०
महिया (महिका) प १।२३
महिला (महिला) ज २।१५,६४; ३।१३८,१६७।४
महिलिया (महिलिका) ज ३।१२६।३
महिवइ (महीपति) ज ३।११७
महिस (महिष) प १।६४; २।४९; ११।२१ ज ३।२४,१०३
महिसी (महिषी) प ११।२३ ज २।३४; ७।१६८।२
महु (मधु) ज ७।१७८ उ १।३४,४९,७४; ३।५१
महु (मधुक) प १।४८।३
महुयरी (मधुकरी) ज २।१२
महुर (मधुर) प १।४ से ९; ५।५,७,२०५; ११।५८; १३।२८; २३।४९,१०८; २८।२६, ३२,६६ ज २।१२,१५,६५,१४५;४।३,२५; ५।२८; ७।१७८ उ १।४१,४४;३।९८
महुरतण (मधुरतृण) प १।४२।२
महुरयर (मधुरतर) ज ५।२२ से २४
महुररस (मधुररस) प १।४८।४
महुरा (मथुरा) प १।९३।५
महुसिंगी (मधुश्रृङ्गी) प १।४८।३
महुस्सर (मधुस्वर) प ५।५२
महेत्ता (मथित्वा) उ ३।५१
महेसर (महेश्वर) प २।४७।२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महोरग (महोरग) प १।६८,७५,१३२; २।४५
ज ३।११५,१२४,१२५
महोरगच्छाया (महोरगच्छाया) प १६।४७
मा (मा) उ १।४१; ३।१०३,११२; ४।११
माइ (मातृ) उ १।४८; ३।२२; ४।२८; ५।४३
माइमिच्छद्दिट्ठि (मायिमिथ्यादृष्टि) प १५।४६;
१७।२२; ३४।१२; ३५।२३
माइमिच्छद्दिट्ठिउववण्णग
(मायिमिथ्यादृष्ट्युपपन्नक) प १७।२७,२९
माइमिच्छद्दिट्ठीउववण्णग
(मायिमिथ्यादृष्ट्युपपन्नक) प १७।२७
माइय (मायिक) ज २।१५
माईवाह (मातृवाह) प १।४९
माउय (मातृक) ज ५।६ से १२,१७,४६,७२,७३
माउलिंग (मातुलिङ्ग) प १।३६।१
माउलिंगाराम (मातुलिङ्गाराम) उ ३।४८,५५
माउलिंगी (मातुलिङ्गी) प १।३७।१
माउलुंग (मातुलिङ्ग) प १६।५५; १७।१३२
मागह (मागध) ज ५।५५; ६।१२ से १४
मागहकुमार (मागधकुमार) ज ३।१३१
मागहतित्थ (मागधतीर्थ) ज ३।१४,१५,१८,२२;
२६; ५।५५
मागहतित्थकुमार (मागधतीर्थकुमार) ज ३।२०,
२६,२७,२८,३०
मागहतित्थाधिपति (मागधतीर्थाधिपति) ज ३।२५
मागहतित्थाहिवइ (मागधतीर्थाधिपति) ज ३।२६
माघी (माघी) ज ७।१४०
माडंबिय (माडम्बिक) प १६।४१ ज २।२५; ३।६,
१०,७७,८६,१७८,१८६,१८८,२०६,२१०,
२१६,२१६,२२१,२२२ उ १।६२; ३।११,
१०१; ५।१०
माढरी (माठरी) प १।४८।४
माढी (माठी) ज ३।३१
माण (मान) प ११।३४।१; १४।४,६,८,१० से १४;
२२।२०; २३।६,३५,१८४ ज २।१६,६६,१३३;
३।६५,१३८,१५६,१६७।३,२२१ सू १२।१७।१
उ ३।३४
माणकसाइ (मानकषायिन्) प ३।६८; २८।१३३
माणकसाय (मानकषाय) प १४।१
माणकसायपरिणाम (मानकषायपरिणाम) प १३।५
माणकसायि (मानकषायिन्) प ३।६८
माणणिस्सिया (माननिश्रिता) प ११।३४
माणसूरण (मानभञ्जन[1]) ज ५।५८
माणवग (माणवक) ज २।१२०; ३।१६७।१,६,
३।१७८; ४।१३५ सू २०।८
माणवय (मानवक) ज ४।१३३; ७।१८५
सू १८।२३; २०।८४
माणस (मानस) प ३५।१।२,३५।६,७ ज ५।२६
माणसंजलणा (मानसंज्वलना) प २३।७०
माणसण्णा (मानसंज्ञा) प ८।१,२
माणसमुग्घाय (मानसमुद्घात) प ३६।४२,४६,
४८ से ५२
माणि (मानिन्) ज ४।१७२।१ सू २०।६।२
माणिक्क (माणिक्य) ज ३।१०९
माणिभद्द (माणिभद्र) प २।४५,२।४५।१ ज १।३;
७।२१४ चं ७,९ सू १।२,४ उ ३।२।१,३।१६९
माणिभद्दकूड (माणिभद्रकूट) ज १।३४,४६
माणुस (मानुष) प २।६४।१४ ज २।१५,६७;
३।९२,११६,४।१७७ सू १९।२२।२; २०।२
माणुसखेत्त (मानुषक्षेत्र) सू १९।२१।१,२,१९।२६
माणुसणग (मानुषनग) सू १९।२२।२७,२९
माणुसलोय (मानुषलोक) सू १९।२१।६; २०।२
माणुसुत्तर (मानुषोत्तर) ज ७।५५,५८ सू १९।१६
माणुस्सग (मानुष्यक) उ ३।१३७
माणुस्सय (मानुष्यक) ज ३।८२,१८७,२१८,
२२१; ४।१७७ सू २०।७ उ १।११,३४; ५।२५
माता (मात्रा) प २।६४
√**माय** (मा) माएज्जा प २।६४।१६
मायंजण (माताञ्जन) ज ४।२०२
मायाकसाइ (मायाकषायिन्) प ३।६८,१८।६५
मायणि (मादनि) उ ५।२।१

1. हे० ४।१०६

माया (माया) प ११।३४।१; १४।४,६,८,१० से १४; २२।१०; २३।६,३५,१८४ ज २।१६,६६, १३३ उ ३।३४
माया (मातृ) ज २।२७,६६; ५।५,७ से १०,१२, १४,१७,४६,६७ उ १।१४८
माया (मात्रा) ज ४।३६,४३,७२,७८,६५,१०३, १४३,१७८,२००,२१३
मायाकसाइ (मायाकषायिन्) प २८।१३३
मायाकसाय (मायाकषाय) १४।१
मायाकसायपरिणाम (मायाकषायपरिणाम) १३।५
मायानिस्सिया (मायानिश्रिता) ११।३४
मायामोस (मायामृषा) प २२।२०,८०
मायामोसविरय (मायामृषाविरत) प २२।८५,६६
मायावत्तिया (मायाप्रत्यया) प १७।११,२२,२३, २५; २२।६०,६३,६८,७१,६३,६६,१०१
मायासंजलण (मायासंज्वलन) प २३।७१
मायासण्णा (मायासंज्ञा) प ८।१,२
मायासमुग्घात (मायासमुद्घात) प ३६।४६
मायासमुग्घाय (मायासमुद्घात) प ३६।४२,४८ से ५१
मारणंतियसमुग्घाय (मारणान्तिकसमुद्घात) प १५।४३; २१।८४ से ६३; ३६।१,४,७,२७, २६,३५ से ४१,४६,५३ से ५८,६६
मार (मार) ज ५।३२
√मार (मारय्) मारिस्सइ उ १।८६
मारिबहुल (मारिबहुल) ज १।१८
मारुय (मारुत) ज ५।५
मारेउकाम (मारयितुकाम) उ १।७३
माल (मालक) प १।३७।५ नीम
माल (माला) प २।५० ज ५।१८
मालव (मालव) प १।८६
मालवंत (माल्यवत्) ज ४।१०८,१४२।३,१४३, १६२।१,१६३ से १६७,१६६,१७२ से १७४, २०३,२०७,२०६,२१०,२१५,२६२
मालवंतकूड (माल्यवत्कूट) ज ४।१६३
मालवंतद्दह (माल्यवत्द्रह) ज ४।२६२
मालवंतपरियाय (माल्यवत्पर्याय) प १६।३० ज ४।२७२
माला (माला) प २।३०,३१,४१,४६ ज ३।६,२०, ३३,४७,५४,६३,७१,८४,११३,१३७,१४३, १६७,१८२,१८६,२०४,२२२
मालागार (मालाकार) ज ५।७
मालि (मालिन्) प १।७१ सांप विशेष
मालिया (मालिका) ज ७।१७८
मालुय (मालुक) प १।३५।१
मालुया (मालुका) प १।४०।५,१।५०
मास (मास) प ४।१०१,१०३; ६।५,१३ से १६, ३५,३६,४४; १८।२३; २३।६६,७०,१६५, १८४ ज २।४,६४,६६,८३,८८; ३।११६; ७।११४।२,११५,१२६,१२७,१३६।१,१५६ से १६७ चं ५।३ सू १।६; ६।१; ८।१; १०।६३ से ७४,१२४; १२।३ से ६,१० से १२,१५; १३।३,१४,१७; १५।१४ से २८; २०।३ उ १।३६,४०,४३,५३,७४,७८; ३।४०
मास (माष) प १।४५।१ ज २।३७; ३।११६ उ ३।३६,४०
मासखमण (मासक्षपण) उ २।१०; ३।१४,८३; ४।२४; ५।२८,३६,४३
मासचुण्ण (माषचूर्ण) प ११।७६
मासद्ध (मासार्ध) उ २।१०; ३।१४ ८३; ४।२४; ५।२८,३६,४३
मासपण्णी (माषपर्णी) प १।४८।५
मासपुरी (मासपुरी) प १।६३।५
मासल (मांसल) प १७।१३४
माससिंगा (मास 'सिंगा') प ११।७८ उडद की फली
मासवल्ली (माषवल्ली) प १।४०।४
मासिय (मासिक) ज ३।२२५
मासिया (मासिकी) उ २।१२; ३।५०,१६१,१६६; ५।२८,४३
माह (माघ) ज २।८८; ७।१०४ सू १०।१२४ उ ३।४०

माहण (माहन) उ ३।२८,२६,४५;४७,४८,५०,
५५,५८,६०,७५,७६,७६
माहणकुल (माहनकुल) उ ३।१२५
माहणरिसी (माहनर्षि) उ ३।५१ से ५७,६२,८२
माहणी (माहनी) उ ३।१२६ से १३१,१३४ से
१४४,१४७,१४८
माहिंद (माहेन्द्र) प १।१३५;२।४६,५३,५४,६३;
३।३२,१८३;४।२४० से २४२;६।३०,५६,६५,
१५।८८;२१।७०;२८।७८;३४।१६,१८
ज ५।४६;७।१२२।१ सू १०।८४।१ उ २।२२
माहिंदग (माहेन्द्रक) प २।५३;७।११;३३।१६
माहिंदवडेंसय (माहेन्द्रावतंसक) प २।५३
माही (माघी) ज ७।१३७,१४६,१५३,१५४
सू १०।७,१४,२३,२५,२६
माहेसरी (माहेश्वरी) प १;६८
मिउ (मृदु) ज २।१६;३।११७;७।७८
मिंजा (मज्जा) प १।४८।४५,४६
मिग (मृग) प २।४६ सू १०।१२०
मिगसिरा (मृगशिरा) ज ७।१३६,१६०,१६१
सू १०।२ से ५,१२,२३,३८
मिगसीसावलि (मृगशीर्षावलि) ज ७।१३३।१
मिच्छत्त (मिथ्यात्व) प २३।३ उ ३।४७
मिच्छत्तवेदणिज्ज (मिथ्यात्ववेदनीय) प २३।१६८,
१८२
मिच्छत्तवेयणिज्ज (मिथ्यात्ववेदनीय) प २३।१७,
३३,६६,१३८,१५७,१६१,१६६
मिच्छत्ताभिगमि (मिथ्यात्वाभिगमिन्) प ३४।१४
मिच्छद्दिट्ठि (मिथ्यादृष्टि) प १।७४,८४;
३।१००,१८३;६।६७;१३।१४,१६,१७;
१७।११,२३,२५;१८।७७;१६।१ से ५;
२१।७२;२३।१६६,२००;२८।१२६
मिच्छादंसणपरिणाम (मिथ्यादर्शनपरिणाम)
प १३।११
मिच्छादंसणवत्तिया (मिथ्यादर्शनप्रत्यया)
प १७।११,२२,२३,२५;२२।६०,६५,६६,
६६,७२ से ७४,६४,६५,६७ से ६६,१०१
मिच्छादंसणसल्ल (मिथ्यादर्शनशल्य) प २२।२०,२५
मिच्छादंसणसल्लविरय (मिथ्यादर्शनशल्यविरत)
प २२।८६,८७,८६,६०,६७ से ६६
मिच्छादंसणसल्लवेरमण (मिथ्यादर्शनशल्यविरमण)
प २२।८१,८२
मिच्छादंसणि (मिथ्यादर्शनिन्) प २२।६५
मिच्छादिट्ठि (मिथ्यादृष्टि) प २३।१६५
मिज्जमाण (मीयमान) सू १२।२
मित (मित) उ १।४१,४४
मित्त (मित्र) ज २।२६;३।१८७;७।१२२।१,
१३०,१८८।४ सू १०।८४।१ उ ३।३८,५०,
११०,१११;४।१६,१८
मित्तदेवया (मित्रदेवता) सू १०।८३
मिय (मृग) प १।६४;११।४ ज २।३५ उ ५।५
मिय (मित) ज २।१५
मियंक (मृगाङ्क) सू २०।४
मियगंध (मृगगन्ध) ज २।५०,१६४;४।१०६,२०५
मियलुद्ध (मृगलुब्ध) उ ३।५०
मियवालुंकी (मृगवालुंकी) प १।४८।४;१७।१३०
मियवालुंकीफल (मृगवालुंकीफल) प १७।१३०
मिरिय (मरिच) प १७।१३१
मिरियचुण्ण (मरिचचूर्ण) प ११।७६;१७।१३१
मियसिर (मृगशीर्ष) ज ७।१२८
मिरीइ (मरीचि) ज ३।११७
मिरीचि (मरीचि) सू २।१
मिरीया (मरीचि) सू २।१
मिलक्खु (म्लेच्छ) प १।८८,८६ ज ३।७७,१०६
मिलाइत्ता (मिलित्वा) ज ५।६४
√मिलाय (मिलय्) मिलायइ उ १।१२५ मिलायंति
ज ३।१११
मिलायित्ता (मिलित्वा) ज ३।१११
मिलिय (मिलित) प १६।१५;२२।८४
मिसिमिसित (दे०) ज ३।१०६;५।२१
मिसिमिसेंत (दे०) ज ३।६,२४,२२२;५।२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिसिमिसेमाण (दे०) ज ३।२६,३६,४७,१०७,
१०६,१३३ उ १।२२,५७,८२,११५,१४०
मिस्स (मिश्र) प १।४७।२
मिस्सकेसी (मिश्रकेशी) ज ५।११।१
मिस्साकूर (मिश्राकूर) सू १०।२०
मिहिला (मिथिला) प १।६३।३ ज १।२,३;
७।२१४ चं ६ से ८ सू १।१ से ३ उ ३।१७१
मिहुण (मिथुन) ज २।१२; ४।३,२५ उ ५।५
मीसग (मिश्रक) प ३२।६।१
मीसजोणि (मिश्रयोनि) प ९।१६
मीसजोणिय (मिश्रयोनिक) प ९।१६
मीसय (मिश्रक) ज २।६५,६६
मीसाहार (मिश्राहार) प २८।१,२
मीसिय (मिश्रित) प ९।१३ से १७
मुइंग (मृदंग) प २।३०,३१,४१,४६;३३।२४
ज १।४५;३।१२,२८,४१,४६,५८,६६,७४,
७८,८२,१४७,१६८,१८०,१८५,१८७,२०६,
२१२,२१३,२१८;५।१,५,१६;७।५५,५८,
१८४ सू १८।२३;१९।२३,२६
मुइंगपुक्खर (मृदंगपुष्कर) ज २।१२७
√मुंच (मुच्) मोच्छिहिति ज २।१३१
मुंजपाउयार (मुञ्जपादुकाकार) प १।६७
मुंड (मुण्ड) प २०।१७,१८ ज २।६५,६७,८५,८७
उ ३।१३,१०६ से १०८,११२,११८,१३६,
१३८,१३९;४।१४,१६;५।३२
मुंडभाव (मुण्डभाव) उ ५।४३
मुंडि (मुण्डिन्) ज ३।१७८
मुक्क (मुक्त) प २।३०,३१,४१ ज २।१०,१५;
३।७,८८;४।१६६;५।७
मुक्केलग (दे०) प १२।८ से १३,१६,२०,२१,
२३,२४,२७,२८,३१ से ३३
मुक्केलय (दे०) प १२।७ से १०,१६,२०,२४,२७,
२८,३६
मुगुंद (मुकुन्द) ज ३।३१
मुग्ग (मुद्ग) प १।४५।१ ज २।३७;३।११६
मुग्गचुण्ण (मुद्गचूर्ण) प ११।७६
मुग्गपण्णी (मुद्गपर्णी) प १।४८।५
मुग्गसिंगा (मुद्ग'सिंगा') प ११।७८ मूंग की फली
मुग्गसूव (मुद्गसूप) सू १०।१२०
√मुच्च (मुच्) मुच्चइ प ३६।८८ मुच्चंति
प ६।११० ज १।२२,५०;२।५८,१२३,१२८;
४।१०१ उ ३।१४२ मुच्चति प ३६।९१
मुच्चिहिइ उ १।१४१;३।४६;५।४३
मुच्चिहिंति ज २।१५१ मुच्चेज्जा प २०।१८
मुच्छिय (मूर्च्छित) ज ५।२६ उ १।४७;३।११४,
११५,११६
मुट्ठि (मुष्टि) ज २।१४१ से १४५;३।११५,
११६,१२२,१२४
मुट्ठिय (मौष्टिक,मुष्टिक) ज २।३२;५,५
मुणाल (मृणाल) प १।४६,१।४८।४२;२।६४
ज ३।१०९;४।३,२५
मुणालिया (मृणालिका) प २।३१
मुणेयव्व (ज्ञातव्य) प १।३८।३;२।४०।९,११;
१५।१४३ ज ४।१४२।३;७।१३४।४
सू १९।२२।११,२२
मुत्त (मुक्त) २।८८,८९;३।७९,११६,११७,२२५;
५।५,२१,४६
मुत्त (मूत्र) उ ३।१३०,१३१,१३४
मुत्तजाल (मुक्तजाल) ज ३।१७७
मुत्तमाण (मूत्रयत्) उ ३।१३०,१३१,१३४
मुत्ता (मुक्ता) ज ४।२७
मुत्ताजाल (मुक्ताजाल) ज ३।३०,४७,२२२
मुत्तादाम (मुक्तादामन्) ज ५।३८
मुत्तालय (मुक्तालय) प २।६४
मुत्तावलि (मुक्तावलि) ज ३।२११;४।२३,३८,
६५,७३,९०,९१
मुत्ति (मुक्ति) प २।६४ ज २।७१
मुत्तियाजालय (मौक्तिकजालक) ज ३।१०९
मुत्तिसुह (मुक्तिसुख) प २।६४।१५
मुत्तोली (दे०) ज ३।१०९
मुद्दा (मुद्रा) प २।३१

मुद्दिया (मृद्वीका) प १।४०।४
मुद्दिया (मुद्रिका) ज ३।६,२११,२२२
मुद्दियासारय (मृद्वीकासारक) प १७।१३४
मुद्ध (मूर्धन्) ज ५।२१,५८,६४,७२,७३;७।१७८
मुद्धंत (मूर्द्धान्त) सू २०।२
मुद्धय (दे०) प १।५८
मुद्धागय (मूर्द्धगत) ज ३।६२,११६
मुम्मुर (मुर्मुर) प १।२६
मुम्मुरभूय (मुर्मुरभूत) ज २।१३२,१४१
√मुय (मुच्) मुक्ति सू २०।२
मुयंत (मुञ्चत्) ज २।१२
मुरव (मुरज) ज ३।१२,७८,१८०,२०६
मुरुंड (मुरुण्ड) प १।८६
मुरुंडी (मुरुण्डी) ज ३।११।२
मुसल (मुसल) प २।३०,३१,४१ ज २।६,१४१, १४५; ३।३,२०,३३,५४,६३,७१ ८४,११५, ११६,१२२,१२४,१३७,१४३,१६७,१८२; ७।१७८
मुसावाय (मृषावाद) प २२।१२,१३,८०
मुसावायविरय (मृषावादविरत) प २२।८५
मुसुंढी (दे०) प १।४८।१; २।३०,३१,४१
मुह (मुख) ज २।७१,१३३;३।१०५,१०६, १६७।११;४।२३,३६,३८,३६,४३,६५,६६, ७२,७३,७८,६०,६१,६५,१८३,२६२;७।१७८ उ ३।५५,५६,६३,६४,६७,६८,७०,७१,७३, ७४,७६; ४।२१
मुहफुल्लय (मुखफुल्लक) ज ७।१३३।२
मुहफुल्लसंठिय (मुख'फुल्ल'संस्थित) सू १०।४७
मुहभंडग (मुखभाण्डक) ज ३।१७८
मुहमंगलिय (मुखमाङ्गलिक) ज २।६४;३।१८५
मुहमंडव (मुखमण्डप) ज ४।१२२
मुहुत्त (मुहूर्त्त) प ६।१ से ४,६ से १०,१७,१८,२२ से ३०,४५;७।३,६ से ६;२३।६३,१२७,१३१, १८८ ज २।४।२,३,२।६६,१३४;३।३२।२, २०६;७।२० से ३०,३६ से ३८,७६ से ८२, ६५,६६,६८ से १००,१२२,१२६,१२७, १३४।१,२,३,१३५।१ से ४ चं ३।१;४।१;५।२ सू १।७।१,१।८।१,१।६।२,१।१०,१३,१४,१६ से १८,२१,२२,२४,२७;२।३;३।२;४।८,६; ६।१;८।१; ६।२;१०।२ से ५,८४,१३३,१३४, १५२ से १६५; ११।२ से ६; १२।२ से ६, १२,१३,१६ से २८;१३।१,३;१४।३,७; १५।२ से ४,८,६,११,१२,३७;१७।१ उ १।२४,४७, ६०,६२
मुहुत्तगइ (मुहूर्त्तगति) चं ४।३
मुहुत्तग्ग (मुहूर्त्ताग्र) चं ५।१ सू १।६।१; १०।२; १२।२ से ६
मूल (मूल) प १।३५,३६;१।४८।१०,२०,३०,३४, ५१ ज १।८,३५,५१;२।६;३।२२२०;४।७,१५, ४३,४५,७२,७८,६०,६५,११०,११४;१२०, १४२।१,१४६,१५६।१,१७४,२१३,२४२; ५।६७; ७।३६,३८,१२४।१,१२८,१२६, १३२।४,१३६,१४०,१४६,१५२,१६६,१६७, १७५ सू १०।२ से ६,१८,२३,५२,६२,७३ से ७५,८३,११७,१२०,१३१ से १३३; १२।२७; १८।७ उ ३।५०,५१,५३
मूलग (मूलक) प १।४४।२,१।४५।२ ज ३।११६
मूलग्ग (मूलाग्र) प १।४८।६३
मूलपासायवडेंसय (मूलप्रासादावतंसक) ज ४।१२०
मूलय (मूलक) प १।४८।२
मूलाग (मूलक) उ १।६२
मूलापण्ण (मूलकपर्ण) सू १०।१२०
मूलाबीय (मूलकबीज) ज २।३७
मूलाहार (मूलाहार) उ ३।५०
मूसग (मूषक) प ११।७८
मूसा (मूषक) प १।७६
मेइणी (मेदिनी) ज २।१५
मेइणीय (मेदिनीक) ज ३।१८,३१,१८०
मेंढक (मेंढक) सू १०।१२० मेढासिंगी लता
मेंढमुह (मेंढमुख) प १।८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेघ (मेघ) ज ३।२२४
मेघमालिनी (मेघमालिनी) ज ४।२३८
मेघस्सर (मेघस्वर) ज ५।५२
मेच्छ (म्लेच्छ) प २।६४।१७
मेच्छजाइ (म्लेच्छजाति) ज ३।८१
मेढी (मेढी) उ ३।११
मेढीभूय (मेढीभूत) उ ३।११
मेत्त (मात्र) प १।४८।६०,१।७४,८४; १२।१२, २४,३८;१५।१०,२३; २१।८४,८६,८७,९० से ९३;३३।१३;३६।५९,६६,७०,७४ ज २।१३४ उ ३।८३,१२०,१२१,१२७,१२८,१६१; ४।२४;५।२३
मेद (मेदस्) प २।२० से २७
मेधावि (मेधाविन्) ज ५।५
मेय (मेद) प १।८९
मेरग (मैरेय) उ १।३४,४९,७४
मेरय (मैरेय) प १७।१३४
मेरा (मर्यादा) ज ३।२६,३९,४७,७६,१३२,१३३, १३८,१५१,१८८ सू २०।१४
मेराग (मर्यादाक) ज ३।१२८,१५१,१७०,१८५, २०९,२२१ उ ५।१०
मेरु (मेरु) ज ४।२६०।१;७।३२।१,७।५५ सू ५।१; ७।१;१९।२२।१०,११,१९।२३
मेरुतालवण (मेरुतालवन) ज २।९
मेलिमिंद (दे०) प १।७०
मेसर (दे०) प १।७९
मेह (मेघ) ज २।१३१; ३।७,९३,१०६,१२५, १७७,१६३;५।२२ से २४ उ २।११
मेहंकरा (मेघंकरा) ज ४।२३७;५।६।१
मेहकुमार (मेघकुमार) उ २।१११,११२
मेहमालिणी (मेघमालिनी) ज ५।६।१
मेहमुह (मेघमुख) प १।८६ ज ३।१११ से ११५ १२४ से १२६
मेहवई (मेघवती) ज ४।२३८;५।६।१
मेहवण्ण (मेघवर्ण) उ ५।२४,२६
मेहा (मेघा) ज ३।३
मेहाणीय (मेघानीक) ज ३।११५,१२४,१२५
मेहावि (मेधाविन्) ज ३।१०९
मेहुण (मैथुन) प २२।१६,१७,८०
मेहुणवत्तिय (मैथुनप्रत्यय) ज ७।१८५ सू १८।२३, २४;२०।६
मेहुणसण्णा (मैथुनसंज्ञा) प ८।१ से ५,७ से ९,११
मोंढ (दे०) प १।८९
मोक्ख (मोक्ष) ज २।७१
मोगली (मोगली) एक जंगली पेड़ प १।४०।५
मोग्गर (मुद्गर) प १।३८।२;२।४१ ज २।१०
मोग्गलायण (मौद्गलायन) ज ७।१३२।१ सू १०।९२
मोत्ति (मौक्तिक) ज ३।१६७।८
मोत्तिय (मौक्तिक) प १।४९ ज २।२४,६४,६९; ३।३५
मोद्दाल (दे०) ज २।८
मोयई (मोची) प १।३५।१ हिलमोचिका साग
मोयग (मोचक) ज ५।२१
मोरगीवा (मयूरग्रीवा) प १७।१३४
मोसभासग (मृषाभाषक) प ११।९०
मोसमण (मृषामनस्) प १६।१,७
मोसमणजोग (मृषामनोयोग) प ३६।८९
मोसवइजोग (मृषावाक्योग) प ३६।९०
मोसा (मृषा) प ११।२ से १० २६ से २९,३२, ३४,४२,४३,४५,४६,८२,८४,८५,८७ से ८९
मोह (मोह) प २३।१६१ ज २।२३३
√मोह (मोहय्) मोहंति ज १।१३
मोहणिज्ज (मोहनीय) प २२।२८;२३।१,१२, १७,३२,१९२;२४।१३;२६।१२;२७।६
मोहरिय (मौखरिक) ज ३।१७८

य

य (च) प १।१० ज १।७ सू १।७ उ १।७; ३।२।१;४।२।१;५।२।१
या (च) उ ३।२।१

√याण (ज्ञा) याणंति प १५।४६,४८,४६; ३४।११,१२ याणति प २३।१३ याणामो उ १।३६

याव (यावत्) प १।२०,२३,२६,२६,३६,३७,३६ से ४७,१।४८।७.१० से ३७,४१,४३,१।४८ से ५१,५६,६०.६३ से ६६,७०,७१,७५,७६,७८, ६६,६७

र

रइ (रति) प २।४१ ज ५।२६

रइकरग (रतिकरक) ज ५।४८,४६

रइकरगपव्वय (रतिकरकपर्वत) उ ५।४४

रइत (रचित) प ३६।६२

रइत (रतिद) ज ३।३५

रइय (रचित) प २।३०,३१,४१ ज १।३७;२।१५, ३।६,६,१८,२४,२५,६३,१०६,११७,१७८, १८०,२२१,२२२;५।४३;७।५५

रइय (रतिक) प २।४८

रइय (रतिद) ज २।१५

रइयामय (रजतमय) ज ४।१३

रउस्सल (रजस्वल) ज २।१३१

रएत्ता (रचयित्वा) उ १।१३७;३।५१

रंग (रङ्ग) ज ३।१६७।६

रक्खस (राक्षस) प १।१३२;२।४१,४५ ज ७।१२२ सू १०।८४।३

रक्खा (रक्षा) ज ५।१६

रज्ज (राज्य) ज २।६४;३।२,१७५,१८८ उ १।६६, ६४,६६,१०३,१०६,११०,११३,११४,१२१, १२२,१२६;५।६,११

√रज्ज (रञ्ज्) रज्जति सू १३।१

रज्जधुरा (राज्यधूर्) उ १।३१

रज्जवास (राज्यवास) ज २।८७

रज्जसिरि (राज्यश्री) उ १।६५,६६,७१,६४,६८, ६६,१११,११२

रज्जु (रज्जु) ज ३।१०६;७।१७८

रज्जुच्छाया (रज्जुच्छाया) सू ६।४

रट्ठ (राष्ट्र) उ १।६६,६४,६६

रट्ठकूड (राष्ट्रकूट) उ ३।१२८ से १३१.१३३, १३६,१३८ से १४०,१४७,१४६

रणभूमि (रणभूमि) उ १।१३५

रतण (रत्न) प २।४८

रतणप्पभा (रत्नप्रभा) प २।४८,४६;३।१८३; ६।६१;१०।२,३

रतणवडेंसय (रत्नावतंसक) प २।५१

रतणामय (रत्नमय) प २।४६

रति (रति) प २३।३६,७६,१४४

रतिणाम (रतिनामन्) प २३।६४

रतिपसत्त (रतिप्रसक्त) सू २०।७

रत्त (रक्त) प २।३१,२।४०।१० ज ३।७,२४,२५, १८४,१८८;७।१७८ सू १३।१;२०।३,७ उ १।७२,७३,८७,८८,६२

रत्त (रात्र) ज २।६।१,२।१४१ से १४५;३।११५, ११६,१२१,१२२,१२४

रत्तंसुय (रक्तांशुक) ज ४।१३ सू २०।७

रत्तकंबलसिला (रक्तकम्बलशिला) ज ४।२४४, २५२

रत्तकणवीरय (रक्तकरवीरक) प १७।१२६

रत्तचंदण (रक्तचन्दन) प २।३०,३१,४१

रत्तबंधुजीवय (रक्तबन्धुजीवक) प १७।१२६

रत्तरयण (रक्तरत्न) ज २।२४,६४,६६;३।१६७

रत्तवई (रक्तवती) ज ४।२७४;६।१६

रत्तवईकूड (रक्तवतीकूट) ज ४।२७५

रत्तसिला (रक्तशिला) ज ४।२४४,२५१

रत्ता (रक्ता) ज ४।२७४;६।१६

रत्ताकूड (रक्ताकूट) ज ४।२७५

रत्ताभ (रक्ताभ) प २।४६

रत्तासोग (रक्ताशोक) प १७।१२६

रत्ति (रात्रि) ज ३।६५,१५६

रत्तुप्पल (रक्तोत्पल) प १७।१२६ ज २।१५; ७।१७८

रत्था (रथ्या) ज ३।७

√रम (रम्) रमंति ज १।१३,३०,३३;३।७;४।२

रमंत (रममाण) ज ३।१७८

रमण (रमण) ज ३।१३८

रमणिज्ज (रमणीय) प २।३१,४८ से ५१,६३; १७।१०७,१०६ १११ ज १।१३.२१,२५,२६, २८,२६,३२,३३,३६,३७,३६,४०,४२,४६; २।७,१०,१५,३८,५२,५६,५७,१२२,१२७, १४७,१५०,१५६,१५६,१६१,१६४;३।६,८१, १६२,१६३,१६६,१६७,२२२;४।२,३,८,६,११, १२,१६,३२,४६,४६,४७,४६,५०,५६,५८,५६, ६३,६६,७०,८२,८७,८८,१००,१०४,१०६, १११,११२,११७,११८,१३१,१६६,१७०, १७६,२०२।१,२३४,२४० से २४२,२४७, २४८,२५०,२६७;५।३२,३५;७।१७८ सू २।१;६।३;१८।१

रम्म (रम्य) ज २।१०,१२;३।८१;४।२०२।१ उ ३।४६;५।६

रम्मग (रम्यक) ज ४।१०२,२०२

रम्मगकूड (रम्यककूट) ज ४।२६३।१,२६६।१

रम्मगवास (रम्यकवर्ष) प १।८७;१६।३० ज ४।१०२,१६२,२६६ से २६८;६।६,२१

रम्मय (रम्यक) प १७।१६४ ज ४।२०२।१,२६५ से २६७

रम्मयवास (रम्यकवर्ष) ज २।६

रय (रजस्) ज ३।२२३;५।७

√रय (रच्य्) रएइ उ १।१३७;३।५१ रएंति ज २।६६ रएह ज २।६५ रयइ उ ३।११४

रयण (रत्न) प १।१।२;१।३,४८;२।३०,३१,४१, ४८;११।२५;१५।५५।२;२०।१।१ ज २।६४, ६६;३।६,१२,१८,२४,३०,३१;३२।१,३५, ५६,६४,७६,७७,८१,११७,१२५ से १२८, १३८,१४५,१५१,१५२,१६७।१,५,१२,१४; ३।१६८,१७५,१७८,१८०,१८४,१६२,२११, २२१,२२२;४।४६,१३७;५।५,७,१३,१६, ३८,५८;७।१७८ सू १८।८;२०।७ उ १।१११, ११२,१२३,१३१

रयणकरंड (रत्नकरण्ड) ज ३।११

रयणकरंडग (रत्नकरण्डक) ज ५।५५ उ ३।१२८

रयणकुच्छिधारिय (रत्नकुक्षिधारिका) ज ५।५,४६

रयणचित्त (रत्नचित्र) ज ३।५६,१४५

रयणप्पभा (रत्नप्रभा) प १।५३;२।१ २०,२१, ३० से ४६,४१ से ४३,४६,५०,५१,६३; ३।११.२१;४।४ से ६;६।१०,४५,५१,७३, ८८,६१,१०६;१०।१ से ३,२८,३०;१६।२६; २०।६,६,३८,३६,४६,५०,५६;२१।५२,५६, ६६;३०।२५ से २८;३३।३,१६ सू २।१; ६।३;१८।१

रयणप्पभापुढविणेरइय (रत्नप्रभापृथिवीनैरयिक) प २०।५०,५१

रयणवडेंसय (रत्नावतंसक) प २।५६

रयण (वासा) (रत्नवर्षा) ज ५।५७

रयणमय (रत्नमय) प २।३०,३१,४१ से ४३, ४६,५० से ५२,५८ से ६०,६३ ज १।६,१०, ३१,३५,४०,४६।१;२।११४,११५;३।६६, १००,१०१;४।२८,३०,४१,४५,५७,६२,७४, ७६,१०३,११४,१३६,१७८,२१२,२१७,२७६; ५।३७

रयणसंचया (रत्नसंचया) ज ४।२०२।२

रयणावली (रत्नावली) ज ३।२११

रयणि (रत्नि) प १।७५;२१।६४।७,८;२१।६६,६७, ७०,७१,७४ ज २।१३३

रयणि (रजनि) सू १।१४;६।१

रयणिकर (रजनिकर) ज ३।१०६ सू १६।२२।१२, १३

रयणिखेत्त (रजनिक्षेत्र) ज ७।२७,३०

रयणिगर (रजनिकर) ज ३।११७

रयणिपुहुत्तिय (रत्निपृथक्त्विक) प १।७५

रयणिय (रत्निक) उ ४।१०

रयणियर (रजनिकर) ज २।१५;३।११७

रयणी (रत्नि) ज २।६,१२८,१३३,१४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयणी (रजनी) ज २।१२८,१३३;३।१८८;७।१२० सू १०।८८।३ उ ३।४८,५०,५५,६३,६७,७०,७३,१०६,११८

रयणुच्चय (रत्नोच्चय) सू ५।१

रयणोच्चय (रत्नोच्चय) ज ४।२६०।१

रयत्ताण (रजस्त्राण) ज ४।१३ सू २०।७

रयमत्त (रतमत्त) ज २।१२

रयय (रजत) ज ३।१०३;४।२५,१२५,१४६;१६२।१,२३८,२५५;५।५,६२;७।१७८

रययकूड (रजतकूट) ज ४।१६४,२३६

रययखंड (रजतखण्ड) प ११।७४

रययवालुया (रजतवालुका) ज ४।३

रययामय (रजतमय) ज १।२३;३।१२,८८;४।३,१३,२५,६४,८८,२०३;५।५८;७।१७८

रव (रव) प २।३०,३१,४१,४६ ज १।४५;२।६५ ३।२२,३६,७८,८३,९३,९६,१६३,१८०,१८३,१८५,१८७,२०४,२०९,२१३,२१९;५।१,५,९,२२,२६,४४,४६,४७,५६,६७;७।५५,५८,१७८,१८४ सू १८।२३;१९।२३,२६ उ १।१२१,१२२,१२५,१२६,१३३,१३४,१३८;३।१११;४।१८;५।१९

रवभूय (रवभूत) ज ३।१०६

रवि (रवि) ज २।१५;३।३,३०;७।१२७।१,१६७ सू १०।७७;१९।८।२;२२।३

रविकिरण (रविकिरण) ज २।१५

रस (रस) प १।४ से ९;३।१८२;५।५,७,१०,१२,१४,१६,१८,२०,२४,२८,३०,३२,३४,३७,३९,४१,४५,५३,५६,५९,६१,६३,६८,७१,७४,७६,७८.८३,८६,८९,९१,९३,९७,१०१,१०४,१०७.१०९,१११,११५,११९,१२९,१३८,१५०,१५२,१५४,१९०,२०५,२०७,२११.२१४,२२८,२४२,२४४;१०।५३।१;११।५७,५८;१५।३८;१७।११४।१;२३।१५,१६,१९,२०,१०८;२८।२०,३२.६६;३६।८०,८१ ज २।१८,४५,१४२;३।८२,१८७,२१८;७।११२।४,२०९ सू १०।१२९।४;२०।७ उ ५।२५

रसओ (रसतस्) प १।५ से ९;२८।२६,३२,६६

रसचरिम (रसचरम) प १०।५०,५१

रसणाम (रसनामन्) प २३।३८,४९

रसतो (रसतस्) प १।६,८,९;११।५८;२८।८,२०,५४

रसदेवी (रसदेवी) उ ४।२।१

रसपज्जव (रसपर्यव) ज २।५१,५४,१२१,१२६,१३०,१३८,१४०,१४९,१५४,१६०,१६३

रसपरिणाम (रसपरिणाम) प १३।२१,२८

रसभेय (रसभेद) प १।४८।५

रसमंत (रसवत्) प ११।५२,५७;२८।५,५१

रसमेह (रसमेघ) ज २।४५

रसविण्णाणावरण (रसविज्ञानावरण) प २३।१३

रसादेस (रसादेश) प १।२०,२३,२६,२९,४८

रसावरण (रसावरण) प २३।१३

रसिंदियत्त (रसेन्द्रियत्व) प ३४।२०

रसिय (रसित) ज ३।३५;५।२२ से २४,२६

रसोदय (रसोदक) प १।२३

रस्सि (रश्मि) ज ३।३,१८८

रह (रथ) ज १।२६;२।१२,३३,६५,१३४;३।३,१५,१७,२१ से २३,२८,३१,३६,३७,४१,४५,४९,७७,७८,९१,९८,१०९,१३१,१३५,१७३,१७५,१७७ से १७९,१९९,२२१;५।५७ उ १।१४,१५,२१,२२,१२१,१२६,१३३,१३६ से १३८;४।१५;५।१८

रहचक्कवाल (रथचक्रवाल) प ३६।८१ ज १।७ सू १।४

रहच्छाया (रथच्छाया) प १६।४७

रहनेउरचक्कवाल (रथनूपुरचक्रवाल) ज १।२६

रहपह (रथपथ) ज २।१३४

रहमुसल (रथमुसल) उ १।१४,१५,२१,२२,२५,२६,१३६,१३७,१४०

रहरेणु (रथरेणु) ज २।६

रहवर (रथवर) ज २।१५;३।२२,३६,४४

रहसिर (रथशिरस्) ज ३।१३१,१३५
रहस्स (रहस्य) उ ३।११
रहस्सियग (राहसिक) उ १।४६
रहस्सियय (राहसिक) उ १।४४
√रहस्सीकर (रहस्यीकृ) रहस्सीकरेसि उ १।३९
रहिय (रहित) प ३२।६।१;३५।१।२ ज २।१५, १३३ सू २०।९।६
रहोकम्म (रहःकर्मन्) ज २।७१
राइ (रात्रि) ज २।१५; ३।११७,७।२६ से ३०, १२०,१२१ चं ५।२ सू १।९।३; २।१,३; १९।१।१।१
राइ (राजन्) उ ५।१०
राइंदिय (रात्रिंदिव) प ६।३०; १८।३३,५१; २३।१६२ ज २।४९,५२,५६,१५९,१६१; ७।२७,३०,१५८,१६१से १६७ सू १।११, १४,२२ से २४,२७; २।३; ६।१; ८।१; १०।१६६ से १६९; १२।२ से ९,१३,१५; १५।३२,३४,३७ उ १।५३,७८
राइंदियग्ग (रात्रिंदिवाग्र) सू १।११; १२।२ से ९, १५
राइण्ण (राजन्य) प १।९५ ज २।६५
राईसर (राजेश्वर) ज ३।९,७७,८६,१७८,१८६, १८८,२०६,२१०,२१६,२१९,२२१,२२२ उ ३।११,१०१;५।१०,१७,३६
राग (राग) प २।४१; १७।११६; २३।६ ज २।२९; ३।७,३५,१८४,१८८ सू १३।२
राति (रात्रि) सू १।१३,१४,१६,२१,२२,२४,२७; २।३; ३।२; ४।८,९;६।१; ८।१; ९।२; १०।५, ८८।३
रातिंदिय (रात्रिंदित्र) प ४।७२,७४,७६,७८,९८, १००;६।११,२९,३१ से ३४; १८।२२
रातीतिहि (रात्रितिथि) सू १०।८९,९१
राम (राम) प १।९३।६
रामकण्ह (रामकृष्ण) उ १।७
राय (राजन्) प १६।४१ ज १।३,२६; २।१९,२५, ६३;३।२ से ७,९ से १३,१५,१७ से २४,२६ से २९,३१ से ३४,३६ से ४२,४४ से ५०,५२ से ५९,६१ से ६७,६९ से ७४,७६,८३,८८, ९० से ९४,९६,९९ से १०१,१०६ से १०९, ११५ से १२०,१२१।१,१२२ से १२५; १२६।१,१२७,१२८,१३१ से १३४,१३५।१, १३७ से १३९,१४१,१४३,१४५ से १४७, १५० से १५४,१५७ से १६०,१६३ से १६७, १७०,१७३,१७५,१७७,१८१ से १८३,१८५ से १९२,१९८,१९९,२०१,२०२,२०४ से २१२,२१४,२१५,२१८,२१९,२२१ से २२३; ४।१७७,१८१,२००;५।५,७ चं ८ सू १।३,४ उ १।१० से १२,१४,१५,२१,२२,२५,२६,२९ से ३२,३४,३६ से ४४,४६,४९,५७,५८,६१, ६२,६५,६६,६८ से ७४,८२,८३,८६ से ९६, ९८ से ११९,१२१,१२७,१२९ से १४५; २।४,५,१६,१७;३।४,१५ से १८,२१,२४,८९, १५५,१६८;४।४,६;५।९,११ से १३,२५,३०
रायकुल (राजकुल) उ १।११,११२;५।४३
रायगिह (राजगृह) प १।९३।१ उ १।१,२,२८,२९, ९३;३।४,२१,२४,८९,१५५,१६८; ४।४,६,७, १३,१५,१८
रायग्गल (राजार्गल) सू २०।८;२०।८।९
रायत (राजत) ज ३।११७
रायतेय (राजतेजस्) ज ३।१८,९३,१८०,१८७
रायधम्म (राजधर्म) ज २।१२९,१५८
रायपवर (राजप्रवर) ज ३।९५,९९,१५९
रायप्पसेणइज्ज (राजप्रश्नीय) ज ४।११५;५।३२
रायबहुल (राजबहुल) ज १।१८
रायमग्ग (राजमार्ग) ज २।६५
रायलच्छी (राजलक्ष्मी) ज ३।११७
रायवण्णय (राजवर्णक) ज १।२६;३।३
रायवर (राजवर) ज ३।२२,३६,९३,९९,१०६, १६३,१७५,१७८,१८०,१८८,२१९,२२४
रायवल्ली (राजवल्ली) प १।४८।४
रायसरिस (राजसदृश) उ १।१२८
रायहंस (राजहंस) प १।७९

रायहाणी (राजधानी) प १।७४ ज १।१६,४५,४६,५१; २।२२,६५; ३।१,२,७,८,१४,१७२,१७३,१८०,१८२ से १८५,१९१,१९२,२०४,२०८,२०९,२१२,२२०,२२१,२२४; ४।५२,५३,६०,८४,९६,१०६,११४ से ११७,१५९,१६०,१६३ से १६५,१७४,१७५,१७७ १८०,१८१,१९२,२००,२०२,२०४,२०६,२०७,२०८,२१०,२१२,२२६ से २३३,२३७ से २३९,२६३,२६६,२६९ २७२,२७५; ५।५०; ६।१६;७।१८४,१८५ उ ३।१०१

रायाभिसेय (राज्याभिषेक) ज २।८५;३।१८८,२०९,२१२,२१४ उ १।६५,६८,७२

रायारिह (राजार्ह) ज ३।८१

रालग (रालक) प १।४५।२ ज २।३७; ३।११९ दक्षिण भारत के जंगलों में मिलने वाला एक सदाबहार पेड़

√राव (रावय्) रावेंति ज ५।५७

रावेंत (रावयत्) ज ३।१७८

रासि (राशि) प २।६४।१६; १२।३२;१७।१२६

राहु (राहु) प २।४८ सू २०।२,८,२०।८।४

राहुकम्म (राहुकर्म) सू २०।२

राहुदेव (राहुदेव) सू २०।२

राहुविमाण (राहुविमान) सू १९।२२।१७; २०।२

रिउव्वेय (ऋजुर्वेद) उ ३।२८

रिक्ख (ऋक्ष) ज ३।९,१७,२१,३४,१७७,२२२ सू १५।३७; १९।२२।२६

रिगिसिगि (दे०) ज ३।३१ वाद्य विशेष

रिट्ठ (रिष्ट) ज ३।९२; ५।५,७,२१

रिट्ठपुरा (रिष्टपुरा) ज ४।२००।१

रिट्ठा (रिष्टा) ज ४।२००।१

रिट्ठामय (रिष्टमय) ज ४।७,२६

रिद्ध (ऋद्ध) ज १।२,२६;३।१ चं ६ सू १।१ उ १।१,९,२८;३।१५७;५।२४

रिसह (वृषभ) ज ७।१२२।३ सू १०।८४।३

रुइल (रुचिर) प २।४८ ज २।१५;३।३५;४।४९; ७।१७८

रुंद (दे०) ज ७।३२।१

रुक्ख (रूक्ष) प १।३३।१,१।३४,३६,४७।१; १७।१११ ज २।२०,३१,१३१,१४४ से १४६; ३।३२,१०९,१२६ उ ५।५

रुक्खगेहालय (रूक्षगेहालय) ज २।१९,२१

रुक्खमूल (रूक्षमूल) प १।४८।६१ ज २।८,९

रुक्खबहुल (रूक्षबहुल) ज १।१८

रुक्खमूलिय (रूक्षमूलिक) उ ३।५०

रुट्ठ (रुष्ट) ज ३।२६,३९,४७,१०७,१०९,१३३ उ १।२२,१४०

रुद्द (रुद्र) ज ७।१३०,१८६।३

रुद्ददेवया (रुद्रदेवता) सू १०।८३

रुप्प (रूप्य) प १।२०।१ ज ३।१६७।८ उ ३।४०

रुप्पकला (रूप्यकला) ज ४।२६८,२६९।१,२७२; ६।२०

रुप्पपट्ट (रूप्यपट्ट) ज ४।२९,२७०

रुप्पमणिमय (रूप्यमणिमय) ज ५।५५

रुप्पमय (रूप्यमय) ज ४।२६; ५।५५

रुप्पामय (रूप्यमय) ज ३।२०९;४।२७०

रुप्पि (रुक्मिन्) प १६।३० ज ४।२६५,२६८, २६९।१,२७०,२७१ सू २०।८,२०।८।३

रुप्पिणी (रुक्मिणी) उ ५।१०

रुप्पोभास (रूप्यावभास) सू २०।८

रुयग (रुचक) प २।३१ ज १।२३,२।१५;३।३२; ४।१,६२,८६,२३८; ५।८ से १७ सू १९।३५

रुयगकूड (रुचककूट) ज ४।९६,२३६

रुयगवर (रुचकवर) सू १९।३५

रुयगवरोद (रुचकवरोद) सू १९।३५

रुयगवरोभास (रुचकवरावभास) सू १९।३५

रुयय (रुचक) प १।२०।३ सू १९।३२ से ३४

रुरु (रुरु) प १।४८।२ ज १।३७;२।३५,१०१; ४।२७;५।२८

रुहिर (रुधिर) प २।२० से २७ ज ३।३१ उ १।४४ से ४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुहिरकद्दम (रुधिरकर्दम) उ ११।३६
रुहिरबिंदु (रुधिरबिन्दु) ज ७।१३३।२
रुहिरबिंदुसंठिय (रुधिरबिन्दुसंस्थित) सू १०।३६
रूत (रूत) ज ४।१३ सू २०।७
रूयंसा (रूपांशा) ज ५।१३
रूयगावई (रूपकावती) ज ५।१३
रूया (रूपा) ज ५।१३
रूव (रूप) प ११।२५,३३।१; १२।३२; १५।३७, ४१;२२।१७,८०; २३।१५,१६,१६,२०, ३४।१,२,३४।२० से २२ ज २।१५,१३३; ३।३,६,७६,८२,१०३,१०६,११६,११७,११६, १३८,१७८,१८६,१८७,२०४,२१८,२२२; ४।२७,४६;५।२८,४१,४३,५७,६८,७० सू २०।७ उ ३।१२७;५।१२५
रूवग (रूपक) ज ४।२७; ५।२८;७।१७८
रूवपरियारग (रूपपरिचारक) प ३४।१८,२२,२५
रूवपरियारणा (रूपपरिचारणा) प ३४।१७,२२
रूवविसिट्ठया (रूपविशिष्टता) प २३।२१
रूवविहीणया (रूपविहीनता) प २३।२२
रूवसच्च (रूपसत्य) प ११।३३
रूवि (रूपिन्) प १।२,४,६; ५।१२३,१२५,१४४ सू १३।१७
रूवी (रूपिका) प १।३७।१ सफेद आक का वृक्ष
रूसमाण (रुष्यत्) उ ३।१३०
रेणु (रेणु) ज २।६,६५,१३१;५।७
रेणुबहुल (रेणुबहुल) ज २।१३२
रेणुया (रेणुका) प १।४८।५ रेणुका, संभालू के बीज
रेरिज्जमाण (रारराज्यमान) उ ३।४६
रेवई (रेवती) ज ७।११३।१,१२८,१२६,१३६, १४०,१४३,१४६,१५८ सू १०।१ उ ५।१२, १३,३० ३१
रेवतय (रैवतक) उ ५।५
रेवती (रेवती) सू १०।२ से ६,१०,२२,२३,३३, ६१,६५,७५,८३,६८,१२०,१३१ से १३३; १२।२२
रेवयग (रैवतक) उ ५।६
रोइंदग (रोविन्दक) ज ५।५७
रोग (रोग) ज २।४३,१३१ उ ३।३५,११२
रोगबहुल (रोगबहुल) ज १।१८
रोज्झ (दे०) प १।६४
रोद्द (रौद्र) ज ७।१२२।१,१२६ सू १०।८४।१
रोम (रोमन्) प १।८६ ज २।१५,१३३
रोमक (रोमक) ज ३।८१
रोमकूव (रोमकूप) ज ५।२१
रोमग (रोमक) प १।८६
रोमराइ (रोमराजि) ज २।१५
√रोय (रुच्) रोएइ प १।१०१।२ रोएज्जा प २०।१७ १८,३४ रोयए प १।१०१।५
√रोय (रोचय्) रोएमि उ ३।१०३
रोय (रोग) उ ३।१२८
रोयणागिरि (रोचनगिरि) ज ४।२२५।१,२३३
रोयमाण (रुदत्) उ १।६२; ३।१३०
रोरुय (रोरुक,रौरव) प २।२७
√रोवाव (रोदय्) रोवावेइ उ ३।४८
रोवावित्तए (रोदयितुम्) उ ३।४८
रोवाविय (रोदित) उ ३।५०,५५
√रोह (रुह्) रोहंति ज ३।७६,११६
रोहिणिय (रोहिणीक) प १।५०
रोहिणी (रोहिणी) ज ७।१३।१,१२८,१२६, १३४।३,१३५।३,१३६,१४०,१४५,१४६,१६० सू १०।२ से ६,१२,२३,२७,६२,६७,७५,८३, १०२,१२०,१३१ से १३३
रोहियंस (रोहितांश) प १।४२।१ एक प्रकार का तृण
रोहियंसकूड (रोहितांशकूट) ज ४।४४
रोहियंसदीव (रोहितांशद्वीप) ज ४।४१
रोहियंसप्पवायकुंड (रोहितांशाप्रपातकुण्ड) ज ४।४० से ४२
रोहियंसा (रोहितांशा) ज ४।३८ से ४०,४२,४३, ५७,१८२,२७०;६।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रोहियकूड (रोहितकूट) ज ४।७९
रोहियदीव (रोहितद्वीप) ज ४।६८,६९
रोहियप्पवायकुंड (रोहितप्रपातकुंड) ज ४।६७,६८,
७१
रोहियमच्छ (रोहितमत्स्य) प १।५६
रोहिया (रोहिता) ज ४।६५ से ६७,७१,७२,२६८;
६।२०
रोहीडय (रोहितक) उ ५।२४ से २६

ल

लउड (लकुट) ज ३।११
लउय (लकुच) प १।३६।३
लउल (लकुट) ज ३।१७८
लउस (लकुश) प १।८६
लउसिया (लकुशिकी) ज ३।११।२
लंख (लङ्ख) ज २।६४;३।१८५
लंघण (लङ्घन) ज ३।१०९,१७८;५।५;७।१७८
लंतग (लान्तक) प २।४९,५५,६३;६।२२,५६,
६५;७।१३;१५।८८;२१।७०;३३।१६;३४।१६,
१८ ज ५।४९
लंतगवडेंसय (लान्तकावतंसक) प २।५५
लंतय (लान्तक) प १।१३५;२।५५,५६;३।३४,
१८३;४।२४६ से २४८;२०।६१;२८।८०
उ २।२२
लंबिय (लम्बित) ज ७।१७८
लंबूसग (लम्बूसक) ज ५।३८,६७
√**लंभ** (लभ्) लंभंति ज ३।३५
लंभणमच्छ (लम्भनमत्स्य) प १।५६
लक्ख (लक्ष) प १।८१।१ ज ३।१०३
लक्खण (लक्षण) प १।४८।५५;२।६४।१२
ज २।१४,१५,९९;३।३,३५,७७,१०९,१३८,
१६७।१२;७।१७८ चं २।४ सू १।६।४;१६।२,
४,६ उ १।३४
लक्खणधर (लक्षणधर) ज २।१५
लक्खणधारि (लक्षणधारिन्) ज २।१५
लक्खणसंवच्छर (लक्षणसंवत्सर) ज ७।१०३,११२
सू १०।१२५,१२९
लक्खणसहस्सधारक (लक्षणसहस्रधारक)
ज ३।१२६।१
लक्खारस (लाक्षारस) प १७।१२६
लख (लक्ष) ज ३।३१
लच्छिकूड (लक्ष्मीकूट) ज ४।२७५
लच्छिमई (लक्ष्मीमती) ज ५।९।१
लच्छी (लक्ष्मी) ज ३।१८,९३,१८० उ ४।२।१
लज्जिय (लज्जित) ज २।६० उ १।५८,८३
लट्ठ (लष्ट) ज १।३७;२।१५;३।९,३५,११७,
२२२;४।१२८;५।४३;७।१७८
लट्ठदंत (लष्टदंत) प १।८६
लट्ठि (यष्टि) ज २।१५
लट्ठिग्गाह (यष्टिग्राह) ज ३।१७८
लडह (दे०) ज २।१५
लण्ह (श्लक्ष्ण) प २।३०,३१,४१,४९,५९,६३,६४
ज १।८,२३,३१;४।१
लता (लता) प १।३३।१
लद्ध (लब्ध) ज ३।२६,३९,४७,१०३,११७,१२२,
१२६,१३३,१८५,२०९ उ १।१७,५७,८२,९९,
१०७,१२७;३।१३,२९,३८,८५,१२२,१४७,
१६०;४।११,२५;५।१५,२३,३१,३८,४२
लद्धट्ठ (लब्धार्थ) सू २०।७
लद्धि (लब्धि) प १।१४६;१५।५८।१,१५।६२
√**लब्भ** (लभ्) लब्भइ ज ७।१४३
√**लभ** (लभ्) लभइ ज ७।१५१ लभति सू १०।५
लभेज्जा प २०।१७,१८,२२ २५,२८,२९,३४,
३८,३९,४१ से ४३,४५,४९ से ५२,५४,५५,
५९
लय (लता) ७।१७८
लया (लता) प १।३९ ज २।११,६७,१३१,१४४
से १४६;३।१०९ उ १।२३;५।५
लयाबहुल (लताबहुल) ज १।१८

लयावण्ण (लतावर्ण) ज २।११
√लल (लल्,लड्) ललंति ज १।१३,३०,३२; २।७
ललंत (ललत्) ज ३।१७८;७।१७८
ललाड (ललाट) ज ७।१७८
ललित (ललित) ज ३।६,२२
ललिय (ललित) ज ३।६,१७८,२२२;७।१७८
ललियबाहा ([1]ललितबाहु) ज २।१५
लव (लव) २।४।२,२।६६; ७।११२।५ सू ८।१; १०।१२६।५
√लव (लप्) लवंति सू २०।१
लवंगरुक्ख (लवङ्गरूक्ष) प १।४३।२
लवण (लवण) प १५।५५।१ ज ६।१,२,४;७।४, ३२।१,६३,८७ सू ८।१; १६।२,३,५; १६।२२।२३
लवणजल (लवणजल) सू १६।५।३
लवणतोय (लवणतोय) सू १६।५।२;१६।२२।२४
लवणसमुद्द (लवणसमुद्र) प १५।५५; १६।३० ज १।१६,१८,२०,२३,३५,४८,४६; ३।१,२२, २८,३६,४१,४४,४६; ४।१,३५,३७,४२,४५, ५५,६२,७१,७७,८१,८६,६०,६४,६८,२००, २०१,२६२,२६५,२७१,२७४;६।३,५,१६ से २६; ७।३१,३३,८७ सू १।२२;४।४,७; ८।१; १६।३ से ६
लवणोदधि (लवणोदधि) सू १६।५।१
लवणोदय (लवणोदक) प १।२३
लहु (लघु) ज ३।३५,४८,४६; ७।१७८
लहुपरक्कम (लघुपराक्रम) ज ५।४८,४६
लहुभूय (लघुभूत) ज २।७०
लहुय (लघुक) प १।४ से ६;३।१८२; ५।५,७, २०६; १५।१५ से १७,२८,३२,३३;२८।२६, ३२,६६
लहुयत्त (लघुकत्व) प १५।४४,४५
लाइय (दे०) प २।३०,३१,४१ ज १।३७;३।७;१८४
लाउय (अलाबुक) ज ३।११६
लाउयवण्णाभ (अलाबुकवर्णाभ) सू २०।२
लाघव (लाघव) ज २।७१
लाढ (लाढ) प १।६३।५
लाभ (लाभ) ज ३।१७८; ७।१७८
लाभंतराय (लाभान्तराय) प २३।२३
लाभत्थिय (लाभार्थिक) ज ३।१८५
लाभविसिट्ठया (लाभविशिष्टता) प २३।२१
लाभविहीणया (लाभविहीनता) प २३।२२
लायण्णत्त (लावण्यत्व) प ३४।२०
लाला (लाला) ज ७।१७८
लालाविस (लालाविष) प १।७०
लावग (लावक) प १।७६
लावणग (लावणिक) सू १६।२२।२३
लावण्ण (लावण्य) प २३।१६,२० ज २।१५; ५।६८,७० उ ३।१२७
√लास (लासय्) लासेंति ज ५।५७
लासग (लासक) ज २।३२
लासिया (लासिका,ल्हासिका) ज ३।११।२
लिक्खा (लिक्षा) ज २।६,४०
लित्त (लिप्त) प २।२० से २७
लिवि (लिपि) प १।६८
लिहिय (लिखित) ज ७।१७८
लीला (लीला) ज ५।३,२८
लुक्ख (रूक्ष) प १।४ से ६; ५।५,७,१२६,१५२, १५४,२११,२१८,२२१,२२६,२४४; ११।५६ से ६१;१३।२२।२,१३।२२,२६;१७।१३८; २३।५०; २८।६ से ११,२०,३२,५५ से ५७,६६
लुक्खत्तण (रूक्षत्व) प १३।२२।१
लुक्खया (रूक्षता) प १३।२२।१ ज २।१३१
लुद्धग (लुब्धक) उ ३।६८
√लूह (मृज्,रूक्षय्) लूहेइ ज ५।५८ लूहेंति ज ३।२११
लूहिय (मृष्ट,रूक्षित) ज ३।६,२२२
लूहेत्ता (मृष्ट्वा,मार्जयित्वा,रूक्षयित्वा) ज ३।२११; ५।५८

[1]. टीका में 'ललितो बाहु' है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेक्ख (लेख्य) १।६८

लेच्छइ (लिच्छवि,लेच्छवि) उ १।१२७ से १३०, १३२

लेट्ठु (लेष्टु) ज २।७०,७१ ; ३।३५,६५

लेप्पार (लेप्यकार) प १।६७

√लिस (लिश्) लेसेंति प ३६।६२

लेसणया (श्लेषण) प १६।५३

लेसा (लेश्या) प १।१।५ ; २।३०,३१,४६;३।१।१; १७।४३ से ४५,४७,६६,६७,११४,१४७,१५६ से १५८,१६१,१७२ चं २।२ ज ३।६५,१५६, २२३;७।३८,५८ सू १।६।२; १।७।१;६।१ से ३;१६।२६;२०।२,३

लेसागति (लेश्यागति) प १६।३८

लेसापडिघाय (लेश्याप्रतिघात) ज ७।३८

लेसापरिणाम (लेश्यापरिणाम) प १३।२

लेसाहिताव (लेश्याभिताप) ज ७।३८

लेसुद्देस (लेश्योद्देश) सू ६।२

लेस्सा (लेश्या) प २।४१;१६।५०;१७।१।१,१७।७, १७,१८,३०,३६ से ४१,८८,६७,११४,१२६, १३६,१३७,१४७,१५६,१५७,१५६,१६० से १६३;१८।१।१;२८।१०६।१

लेस्सागति (लेश्यागति) प १६।४६

लेस्साणुवायगति (लेश्यानुपातगति) प १६।३८,५०

लेस्सापरिणाम (लेश्यापरिणाम) प १३।६,१४,१६, १८ से २०

लेह (लेख) ज २।६४ उ १।११५,११६

लेहट्ठ (रेखास्थ) ज ७।१५८,१६१,१६४,१६७ सू १०।६५,६८,७१,७४

लोअण (लोचन) ज २।१५

लोइय (लौकिक) ज ७।११४ सू १०।१२४ उ १।६२

लोउत्तरिय (लोकोत्तरिक) ज ७।११४ सू १०।१२४

लोक (लोक) ज ३।१०६,१६७

लोग (लोक) प १।४८।६० ; २।१०,१६,३०,३२, ३४,३५,३७,३८,४१ से ४३,४८,५० से ५२, ५८ से ६१,६३;१०।२,३,५;१२।७,१०,२०; १५।१।२;१५।४३,४५,५६;१६।३४; १८।३, २६,२७,३७,३८; ३६।७६,८१,८५ ज २।६५, ७१;३।३५,६५,१५६,१६७;४।२६०।१ सू १६।२२

लोगंत (लोकान्त) प २।६४;११।३०;२१।८४,८६, ८६ ज ७।१,६८,१६८।१,१७२

लोगणाली (लोकनाली, लोकनाडी) प ३३।१८

लोगणाह (लोकनाथ) ज ५।५,२१,४६

लोगपईव (लोकप्रदीप) ज ५।२१

लोगपज्जोयगर (लोकप्रद्योतकर) ज ५।२१

लोगपाल (लोकपाल) प २।३० से ३३,३५,४६ से ५१ ज २।६०,११८,११६;५।१६,५०,५६

लोगमज्झ (लोकमध्य) ज ४।२६०

लोगमज्झावसाणिय (लोकमध्यावसानिक) ज ५।५७

लोगसण्णा (लोकसंज्ञा) प ८।१,२

लोगहिय (लोकहित) ज ५।२१

लोगागास (लोकाकाश) प १।४८।५८; २।१०

लोगाधिवति (लोकाधिपति) प २।५०,५१

लोगालोग (लोकालोक) प १०।५

लोगाहिवइ (लोकाधिपति) ज २।६१;५।१८,४८

लोगुत्तम (लोकोत्तम) ज ५।५,२१,४६

लोण (लवण) प १।२०।१

लोद्ध (लोध्र) प १।३६।३

लोभ (लोभ) प ११।३४।१;१४।४,६,८,१० से १५,१७; २२।२०;२३।६,३५,१८४ ज २।१६, १३३ उ ३।३४

लोभकसाइ (लोभकषायिन्) प ३।६८;१३।१४; १८।६६; २८।१३३

लोभकसाय (लोभकषाय) प १४।१,२;३६।४६

लोभकसायपरिणाम (लोभकषायपरिणाम) प १३।५

लोभणिस्सिया (लोभनिश्रिता) प ११।३४

लोभसंजलणा (लोभसंज्वलना) प २३।७२,१४०

लोभसण्णा (लोभसंज्ञा) प ८।१,२

लोभसमुग्घात (लोभसमुद्घात) प ३६।४७

लोभसमुग्घाय (लोभसमुद्घात) प ३६।४२,४४ से ४६,४८ से ५१

लोम (लोमन्) प २।२० से २७ ज ३।३,१०६; ७।१७८

लोमपक्खि (लोमपक्षिन्) प १।७७,७९

लोमहत्थ (लोमहस्त) ज ३।८८

लोमहत्थग (लोमहस्तक) ज ३।१२

लोमहत्थगपटलहत्थगय (हस्तगतलोमहस्तकपटल) ज ३।११

लोमाहार (लोमाहार) प २८।१।२,२८।४०,६६, १०२,१०३

लोमाहारत्त (लोमाहारत्व) प २८।६०,६६

लोय (लोक) प १।४८।५८,५९;२।१ से ३१,४६, ४९;३३।१३ सू २।१;१९।१,२१ उ ३।१३

लोय (लोच) ज २।६५;३।२२४ उ ३।११३

लोयंत (लोकान्त) प २।६४।१०;११।७२ सू २।१; १८।६

लोयग्ग (लोकाग्र) प २।६४,२।६४।३

लोयग्गथूमिया (लोकाग्रस्तूपिका) प २।६४

लोयग्गपडिबुज्झणा (लोकाग्रप्रतिबोधना) प २।६४

लोयण (लोचन) ज ७।१७८

लोयणाभि (लोकनाभि) सू ५।१

लोयमज्झ (लोकमध्य) सू ५।१

लोयाणी[1] (दे०) प १।४८।६

लोल (लोल) ज २।१२

लोह (लोभ) ज २।६६

लोह (लोह) ज ३।३,३५,१६७।८

लोहकडाह (लोहकटाह) उ ३।५०,५५

लोहकसाइ (लोभकषायिन्) प ३।६८

लोहदंडग (लोहदण्डक) ज ३।१०९

लोहबद्ध (लोहवर्ध) ज ३।३५

लोहयक्खमय (लोहिताक्षमय) ज ४।१३

लोहि (लोहि) प १।४८।१ सफेद सुहागा

लोहिच्च (लौहित्य) ज ७।१३३।२

लोहिच्चायण (लौहित्यायन) सू १०।१०४

लोहित (लोहित) प ५।२०५ सू २०।२

लोहितक्ख (लोहिताक्ष) ज ७।१८६।१ सू २०।८

लोहिय (लोहित) प १।४ से ९;५।५,७;११।५३; १७।१२९;२३।१०३;२८।३२,६६ ज ४।२६ सू २०।२

लोहियक्ख (लोहिताक्ष) प १।२०।३;२।३१,३२ ज ४।१०६;५।५ सू २०।८।१

लोहियक्खकूड (लोहिताक्षकूट) ज ४।१०५

लोहियक्खमणि (लोहिताक्षमणि) प १७।१२६

लोहियक्खमय (लोहिताक्षमय) ज ४।२६

लोहियक्खामय (लोहिताक्षमय) ज ३।३०

लोहियपत्त (लोहितपत्र) प १।५१

लोहियमत्तिया (लोहितमृत्तिका) प १।१९

लोहियसुत्तय (लोहितसूत्रक) प १७।११९

ल्हसणकंद (लशुनकन्द) प १।४८।४३

ल्हसिय (ल्हासिक,लासिक) प १।८९

व

व (वा) प १।१०१।६ ज ३।११३ चं २।१ सू १।६

वइ (वाच्) प १६।१,७;२३।१५,१६ ज २।६८

वइउल (दे० व्याल) प १।७१

वइगुत्त (वाग्गुप्त) ज २।६८

वइजोग (वाग्योग) प २८।१३८;३६।८६,८८,९०, ९२

वइजोगपरिणाम (वाग्योगपरिणाम) प १३।७

वइजोगि (वाग्योगिन्) प ३।९६;१३।१४;१८।५६; २८।१३८

वइत्ता (वदित्वा) ज ५।३

वइयरिय (व्यतिचरित) सू २०।२

वइयोगि (वाग्योगिन्) प १३।१७

वइर (वज्र) प १।२०।१;२।३० ज ३।१२,१८, २४,३५,८८,१०९,१८४,२१९;४।३,२५,४६, ६७,२३८,२५४;५।५,१३,२८,५८;७।१७८

वइरउसह (वज्रऋषभ) ज ३।३

वइरकूड (वज्रकूट) ज ४।२३६

वइर (वासा) (वज्रवर्षा) ज ५।५७

---

१. लोचनी—बड़ी गोरखमुण्डी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वइरवेइया (वज्रवेदिका) ज १।३७;४।२७;५।२८
वइरसारमइया (वज्रसारमतिका) ज ३।८८
वइरसेणा (वज्रसेना) ज ४।२३८
वइराड (वैराट) प १।९३।४
वइरामय (वज्रमय) ज १।७,८,११,२४;२।१२०; ३।३०;४।३,७,१३,१५,२४ से २६,२९,३१, ३९,६६,६८,७४,९१,९३,१२८,१४६;५।३८, ४३;७।१७८,१८५ सू १८।२३
वइरोयणराय (वैरोचनराज) प २।३३ ज २।११३
वइरोयणिंद (वैरोचनेन्द्र) प २।३३ ज २।११३
वइरोसभणाराय (वज्रऋषभनाराच) प २३।४५, ९४ ज २।४६
वइसमिय (वाक्समित) ज २।६८
वइसाह (वैशाख) ज ३।२४;७।१०४,१४९,१५५ सू १०।१२४ उ १।२२,१४०;३।४०
वइसाही (वैशाखी) ज ७।१३७ सू १०।७,१७,२३, २६
वइस्सदेव (वैश्वदेव) उ ३।५१,५६,६४
वउ (वाच्) प ११।५,८,२१ से २६
वंक (वक्र,वङ्क) ज २।१३३
वंकगति (वङ्कगति, वक्रगति) प १६।३८,५३
वंग (वङ्ग) प १।९३।१ ज २।१५
वंजण (व्यञ्जन) ज २।१४ सू २०।७
वंजणोग्गह (व्यञ्जनावग्रह) प १५।५८।२, १५।६८,६९,७१ से ७३,७५
वंजुलग (वञ्जुलक) प १।७९
वंझा (वन्ध्या) उ ३।९७,१३१
वंत (वान्त) प १।८४ सू २०।२
√वंद (वन्द्) वंदइ ज १।६;२।९०;५।२१,६५ उ १।१९;३।८१;४।१३;५।२० वंदंति उ ४।१९;५।३६ वंदामि प १।१।१ ज ५।२१ सू २०।९।६ उ १।१७ वंदिज्जा उ ५।३६ वंदीहामि उ ३।२९ वंदेज्ज ज २।६७
वंद (वृन्द) ज ३।२२,३६,७८ उ १।१९
वंदण (वन्दन) उ १।१७
वंदणकलस (वन्दनकलश) ज ३।७,८७;५।५५
वंदणकलसहत्थगय (हस्तगतवन्दनकलश) ज ३।११
वंदणवत्तिय (वन्दनप्रत्यय) ज ५।२७
वंदणिज्ज (वन्दनीय) सू १८।२३
वंदिऊण (वन्दित्वा) चं १।४
वंदित्ता (वन्दित्वा) ज १।६ उ १।१९;३।८१; ४।१४;५।२०
वंदिया (वन्दिका) उ ४।११
वंस (वंश) प १।४१।२ बांस
वंस (वंश) प ११।७५ ज २।१२४,१५२;३।३१, १०९ उ ५।४३
वंसमूल (वंशमूल) प १।४८।८
वंसी (वंशी) प १।४७
वंसीपत्त (वंशीपत्र) प ९।२६
वंसीमुह (वंशीमुख) प १।४९
वक्कंत (अवक्रान्त) प १।४८।५३ ज २।८५
वक्कंति (अवक्रान्ति) प १।१।४
√वक्कम (अव+क्रम्) वक्कमइ प १।४८।५१ वक्कमंति प १।२०,२३,२६,२९,४८;९।२६ वक्कमति सू १९।२२।१९
वक्कल (वल्कल) उ ३।५१।१
वक्कवासि (वल्कवासिन्) उ ३।५०
वक्ख (वक्षस्) ज २।१५
वक्खार (वक्षस्कार) प २।१;१५।५५।२ ज ४।२१२; ६।१०
वक्खारकूड (वक्षस्कारकूट) ज ४।२०२;६।११
वक्खारपव्वय (वक्षस्कारपर्वत) ज ४।९४,१०३ से १०८,१४३,१६२,१६३,१६६,१६७,१६९, १७२ से १७४,१७६,१७८ से १८१,१८४, १८५,१९०,१९१,१९६,१९७,१९९,२००, २०२ से २०५,२०८ से २१२,२१५,२६२; ५।५५;६।१०
वग (वृक) प ११।२१ ज २।१३६
वगी (वृकी) प ११।२३
वग्ग (वर्ग) प २।६४।१५,१६;१२।१०,३२,३६, ३७ उ १।५ से ८;२।१;३।१,२;४।१,३;५।१,

३,४५
√वग्ग (वल्ग्) वग्गंति ज ५।५५
वग्गण (वल्गन) ज ३।१७८
वग्गणा (वर्गणा) प ११।७२;१७।११४।१,१४२
वग्गमूल (वर्गमूल) प १२।१२,१६,२७,३१,३२,३८
वग्गु (वल्गु) प २।६४।१५ ज २।६४;३।१८५, २०९;४।२१२,४।२१२।३;५।५८
वग्गु (वाच्) उ १।४१,४४
वग्गुरा (वागुरा) उ ५।१७
वग्गुलि (वल्गुलि) प १।७८
वग्घ (व्याघ्र) प १।६६;११।२१ ज २।३६,१३६
वग्घमुह (व्याघ्रमुख) प १।८६
वग्घारिम (दे०) ज ३।८८
वग्घारिय (दे०) प २।३०,३१,४६ ज २।७,८८, ११७
वग्घावच्च (व्याघ्रापत्य) ज ७।१३२।४ सू १०।११९
वग्घी (व्याघ्री) प ११।२३
√वच्च (वच्) वच्चंति ज ७।१३५।२,३
√वच्च (व्रज्) वच्चइ सू १।६
वच्छ (वक्षस्) प २।३०,३१,४१,४९ ज ३।३,६, ९,१८,९३,१८०,२२१,२२२;५।२१
वच्छ (वत्स) प १।९३।४ ज ४।२०१,२०२।१,२४८
वच्छगावई (वत्सकावती) ज ४।२०२।१
वच्छमित्ता (वत्समित्रा) ज ४।२०४,२३८;५।६
वच्छल (वत्सल) प ३।१२५;५।५,४६
वच्छल्ल (वात्सल्य) प १।१०१।१४
वच्छाणी (वत्सादनी) प १।४०।४ सू १०।१२० गजपीपल, गुडूची
वच्छावई (वत्सावती) ज ४।२०२
वज्ज (वज्र) प १।४८।७ वज्रकंद, कोकिलाक्षवृक्ष, तालमखाना
√वज्ज (वर्जय्) वज्जेज्ज प १०।१४।४
वज्ज (वज्र) ज २।१५
वज्ज (वर्ज्य) प २।४०।५,२।५२;६।४६,५९,६९, ८६,९४,९५,१०२,१०४;१०।३९;११।४१,८०, ८४;१२।३,१३।२२।२;१५।९८,११५,१२१, १२९;१६।३२;१७।५८;२०।५६ से ५८; २२।२५;२३।१९१,१९७;२४।१३;२५।३; २६।४;२८।११२,१२३,१२६,१२७,१२९, १३२,१३३,१३७ से १४१,१४३ ज २।७०, १३१;३।६;४।१७७,२१०,२४०,२४८;५।१३, ४९,५२।१
वज्ज (वाद्य) ज ५।५७
वज्जकंदय (वज्रकंदक) प १७।१३०
वज्जण (वर्जन) प १।१०१।३
वज्जणिज्ज (वर्जनीय) ज २।१४६
वज्जपाणि (वज्रपाणि) प २।५० ज ५।१८,४६,६६
वज्जमाण (वाद्यमान) उ १।१३८
वज्जरिसभणाराय (वज्रऋषभनाराच) ज १।५; २।४६
वज्जरिसहणाराय (वज्रऋषभनाराच) ज २।१६,८६
वज्जरिसहनाराय (वज्रऋषभनाराच) सू १।५
वज्जसंठिय (वज्रसंस्थित) प ११।३०
वज्जसूलपाणि (वज्रशूलपाणि) ज ५।५७
वज्जिऊण (वर्जयित्वा) प २।२७।३
वज्जित्ता (वर्जयित्वा) प २।२२,३२,३४ ज ४।१३४
वज्जिय (वर्जित) प १०।१४।६ ज ५।५२ सू २०।७
वज्जेत्ता (वर्जयित्वा) प २।२१,२३ से २७,३०, ३१,३३,३५,३६,४१ से ४३,४६
वज्झ (बध्य) ज ३।९२,११९
वज्झार (वर्ध्रकार) प १।९७
वज्झियायण (बध्यायन) ज ७।१३२।४ सू १०।११८
√वट्ट (वृत्) वट्टंति उ ३।३३ वट्टति प १६।२२
वट्ट (वृत्त) प १।४ से ९,१।९३।५;२।२० से २७, ३० से ३९,४१ से ४३;१०।१५,२६;३६।८१ ज १।७,३१;२।१५;३।७,८८,११७;४।३,२५, ६७,११४,१२८,२३४,२४०,२४१;५।५,४३; ७।३१,३३,१६७,१७८ सू १।१४;४।३ से ७; १०।७४;१९।२,६,९,१२,१६,२८,३२,३६
वट्टग (वर्तक) प १।७९ ज ५।१६
वट्टगमंस (वर्तकमांस) सू १०।१२० कमलकंद
वट्टमाण (वर्तमान) प २।३१ ज २।७१;३।१३८,

५।५७
वट्टवेयड्ढ (वृत्तवैताढ्य) प १६।३० ज ४।४२, ५७,५८,६०,७१,७७,८४,२६६,२७२;५।५५; ६।१०
वट्टि (वर्ति) प १।४७।२
वट्टिय (वर्तित) ज २।१५; ७।१७८
वट्टिया (वर्तिका) प १।४७।२
वड (वट) प १।३६।१ उ ३।७१
वड (दे०) प १।५६ मत्स्य विशेष
वडगर (दे०) प १।५६ मत्स्य विशेष
वडभी (वडभी) ज ३।१११।१
वडिसग (अवतंसक) प २।५४,५८
वडिय (पतित) ज ३।१२५,१२६
वडेंस (अवतंस) ज ४।२२५,२३२,२६०।१
वडेंसग (अवतंसक) प २।५०,५२,५५ से ५६ ज १।४३;३।१७८,१८३;४।५०,१०६,११२, ११६,१५५,१५६,२३७,२३८,२४०,२४३
वडेंसगधर (अवतंसकधर) ज ७।२१३
वडेंसय (अवतंसक) प २।५० से ५३,५६ ज १।४२;३।१८६;४।४६,५६,१०२,११६, १२०,१४७,२२१ से २२४,२३७;५।१,६,१८; ७।१८४,१८५
√वड्ढ (वृध्) वड्ढति सू १९।२२।१६,२० वड्ढते सू १९।२२।१४ वड्ढिज्जंति प ५।१७६, २१६
√वड्ढ (वर्धय्) वड्ढेइ उ ३।५१ वड्ढेसि उ ३।७६
वड्ढइरयण (वर्द्धकिरत्न) ज ३।१८,१६,३१,५२, ५३,६१,६२,६६,७०,६६,१००,१४१,१४२, १६४,१६५,१७८,१८०,१८१,१८६,१८८, २०६,२१०,२१६,२१६,२२०
वड्ढइरयणत्त (वर्द्धकिरत्नत्व) प २०।५८
वड्ढमाणय (वर्धमानक) प ३३।३५
वड्ढावय (वर्धापक) उ ३।११
वड्ढियय (वर्धितक) उ ३।३८
वड्ढेत्ता (वर्धयित्वा) उ ३।५१
वड्ढोवुड्ढि (वृद्ध्यपवृद्धि) चं ३।१ सू १।७।१, १।१०,१४; १३।१
वण (वन) ज ४।२००,२०१,२१२,२१४,२१५, २३४,२३६,२३७,२४०,२४१,२४४,२४५, २४६,२५१,२५२;५।५५,५७; ७।११४
वणप्फइ (वनस्पति) प १८।१४,१०५,११०,१२०; २०।२२
वणप्फइकाइय (वनस्पतिकायिक) प ६।११६,८३; १२।२६;१३।१६; १५।२६,५३,५५,७४;१४०; १६।४;१७।६२,६६,१०२;१८।३८; १६।२; २०।१३,२६,४६; २१।३,२७,७६,८५;२२।२४; २८।३६,१२३;२६।१०,२०; ३०।६;३६।१३ से १६,३४,३८
वणप्फइकाइयत्त (वनस्पतिकायिकत्व) प १५।६६
वणप्फतिकाइय (वनस्पतिकायिक) प १६।१२; १७।४०
वणमाला (वनमाला) प २।३०,३१,४१,४६ ज १।३८,४।१०,१२१,१४७,२१७; ५।१८
वणयर (वनचर) ३१।६।१
वणराइ (वनराजि) प १७।१२४ ज २।१२
वणलय (वनलता) प १।३६।१
वणलया (वनलता) ज १।३७;२।१०१;४।२७; ५।२८
वणविरोह (वनविरोध) ज ७।११४।२
वणविरोहि (वनविरोधिन्) सू १०।१२४।२
वणसंड (वनषण्ड) ज १।१२ से १४,२३,२५,२८, ३२,३५;४।१,३,२५,३१,३६,४३,४५,५७,६२, ६८,७२,७६,७८,८६,६०,६३,६५,१०३,११०, ११६,११८,१४१,१४३,१५२ १५३,१५४, १५६,१७४,१७६,१७८,१८३,२००,२१२, २१३,२१५,२२१,२३४,२४०,२४१,२४२, २४५;७।२१३ उ ५।८
वणस्सइ (वनस्पति) प ६।१०४; १७।३३; १८।५७,६२; २०।२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वणस्सइकाइय (वनस्पतिकायिक) प १।१५,३०; २।१३ से १५; ३।६,५० से ५२,५८,६० से ६३, ६६,७१ से ७४,८० ८१,८४ से ८७,६३,६५, १६८ से १७०,१८३; ४।८८,६० से ६४;५।३, १७,१८,६६;६।५३,८६,१०२,११५;६।२१; १५।८५,१२१,१३७;१८।२७,३५,४०,४३, ४४,५२;२०।८;२१।५,४१;२२।३१;३६।३३ ज २।१३१,१४४

वणस्सइकाइयत्त (वनस्पतिकायिकत्व) ज ७।२१२

वणस्सति (वनस्पति) प ६।१०२;६।४

वणस्सतिकाइय (वनस्पतिकायिक) प ३।५०,५१, ६०,६३,६५,१८३;४।८६;५।१८;६।६३,८३; १५।७६; २४।६;३०।१६

वणिज (वणिज) ज ७।१२३ से १२५ करण नाम

वणिय (वणिज्) ज २।२३

वणीमगबहुल (वनीपकबहुल) ज १।१८

√वण्ण (वर्णय्) वण्णइस्सामि प १।१।३

वण्ण (वर्ण) प १।४ से ६; २।२० से २७.३०,३१, ४०,४०।६;२।४१,४८,४६,६४;३।१८२,५।५, ७,१०,१२,१४,१६,१८,२०,२४.२५,२८,३०, ३२,३४,३७ से ३६,४१,४५,४६,५३,५६,५६, ६१,६३,६८,७१,७४.७६,७८,८३,८६,८६,६१, ६३,६७,१०१,१०४,१०७,१०६,१११,११५, ११६,१२६,१३१,१३४,१३६,१३८,१४०, १४३,१४५,१४७,१५०,१५२,१५४,१६३, १६६,१६६,१७२,१७४,१७७,१८१,१८४, १८७,१६०,१६३,१६७,२००,२०३,२०७, २११,२१४,२१८,२२१,२२४,२२८,२३०, २३२,२३४,२३७,२३६,२४२,२४४; १०।५३।१;११।५३;१७।११,१७।७,१७,१८; ११४।१,१२३ से १२६,१३२ से १३४; २३।१०८,१६०;२८।६,७,२०,२६,३२,५२, ५३,६६; ३०।२५,२६;३६।८०,८१ ज १।१३, २६; २।७,१८,१३३,१४२; ३।३,११,१२,८८, २११;४।२२,३४,३६,६०,८२.८४,८६,६४, १३५,१६६,२६६,२७२;५।३२,५८; ७।१७८

वण्णओ (वर्णतस्) प १।५ से ६;११।५४; २८।७, २०,२६,५३

वण्णग (दे०वर्णक) उ ३।११४

वण्णग (वर्णक) ज १।३२; ३।६,२०,३३,५४,६३, ७१,८४,१३७,१४३,१६७,१८२,१६३,१६७, २२२;४।१,११७;५।१३;७।५५

वण्णचरिम (वर्णचरम) प १०।४६,४७

वण्णणाम (वर्णनामन्) प २३।३८,४७,१०१ से १०६,१०६

वण्णतो (वर्णतस्) प १।८,६;२८।३२,६६

वण्णनाम (वर्णनामन्) प २३।१०१

वण्णपज्जव (वर्णपर्यव) ज २।५१,५४,१२१,१२६, १३०.१४०,१४६,१५४,१६०,१६३;७।२०६

वण्णपरिणाम (वर्णपरिणाम) प १३।२१,२६

वण्णमंत (वर्णवत्) प ११।५२,५३;२८।५,६,५१, ५२

वण्णय (वर्णक) प २।३२,४२,४३ ज १।२,३,१२, १६,२३,२५,२८,३१,३५,३८; २।११,८३; ४।३,२५,३१,३६,४०,४७.५७,६७,७६,११०, ११२,११५ से १२०,१२६,१२८,१३५,१३६, १४१ से १४४,१४७ से १४६,१५३ से १५६, १७८,१८३,२००,२०१,२१३,२१५,२१६, २२१,२३४,२४०,२४५,२४६,२४८; ५।३, २६ से ३३,३५ से ३७ चं ६,७,८ सू १।२,३ उ १।१; ३।६१;४।१०; ५।१४

वण्णय (दे०वर्णक) उ ३।११४

वण्ण (वासा) (वर्णवर्षा) ज ५।५७

वण्णादेस (वर्णादेश) प १।२०,२३,२६,२६,४८

वण्णाभ (वर्णाभ) प २।२० से २५,५०,५६,६० ज ४।२२,३४,६०,६४,८४,११३,२६६,२७२

वण्णावास (वर्णव्यास) ज १।११,४६;३।१६५, १६७;४।४,७,१५,२६,८४,१४६; ५।१३

वण्णिय (वर्णित) प १।१।३;१६।२१

वण्हिदसा (वृष्णिदशा) उ १।५,६;५।१ से ३

√वत्त (वर्तय्) वत्तइस्सामि प ३।१८३ वत्तेंति प ३६।६२

वत्तमंडल (वृत्तमण्डल) ज ३।१७८

वत्तव्व (वक्तव्य) ज ४।२६६;७।१४१ से १४५, १५० से १५२,१५४,१८६ सू १०।२० से २२ २५

वत्तव्वया (वक्तव्यता) प २।४०,४४;५।१५२, २०५,२४४;११।८०;१५।१८ ज ३।१५०, १६१,२७७;४।५३,६४,७५,७६,८३,८६,६०, ६२,१०६,११५,१२६,२००,२०५,२०७,२०८, २४०,२४६,२६२,२६८,२७७;७।१०२

वत्थ (वस्त्र) प २।३०,३१,४१,४६ से ५४; १५।५५।२;१७।११६ ज ३।६,११,१२,२६, ३६,४७,५६,६४,७२,७८,८१,८५,११३,१३३, १३८,१४५,१६७।६,१८०,२२१ सू २०।७, उ १।१६,३५;३।५१,५३,६३,६७,७०, ७३,११०

वत्थधर (वस्त्रधर) ज २।६१;५।४८

वत्थव्व (वास्तव्य) ज ५।१ से ३,५ से ७

वत्थारुहण (वस्त्रारोहण,वस्त्रारोपण) ज ३।१२,८८

वत्थि (वस्ति) ज २।१५;३।११७

वत्थिकम्म (वस्तिकर्मन्) उ ३।१०१

वत्थिपुडग (दे०) उ १।४४ से ४६

वत्थिभाग (वस्तिभाग) ज ३।११६

वत्थु (वस्तु) प १४।५ ज ३।३२;७।१०१,१०२ सू १०।१;१५।१,३७

वत्थुपरिच्छा (वस्तुपरीक्षा) ज ३।३२

वत्थुप्पएस (वस्तुप्रदेश) ज ३।३२

वत्थुल (वास्तुक) प १।३७।२,३८।२,४४।१ ज २।१०

√वद (वद्) वदह उ ३।७७ वदंति सू २०।२ वदह ज ३।११३;५।७२ उ १।२४ वदामो सू ५।१ वदिस्संति ज २।१४६ वदेज्जा सू ६।१२

वदित्ता (उदित्वा) ज ३।१२५

वद्ध (वर्ध) ज ३।३५

वद्धमाण (वर्धमान) प २।३० ज ३।३२

वद्धमाणग (वर्धमानक) ज २।६४;३।३,१२,१७८; ४।२८;५।३२;७।१३३।२ सू २०।८,२०।८।६

वद्धमाणगसंठिय (वर्द्धमानकसंस्थित) सू १०।४१

वद्धमाणय (वर्धमानक) ज ३।१८५

वद्धाव (वर्धय्) वद्धावेइ ज ३।५,२६,३६,४७, ५६,६४,७२,६०,१३३,१४५,१५१,१५७ उ १।११० वद्धावेंति ज ३।११४,१२६,१३८, २०५,२०६ उ १।१२२;५।१७ वद्धावेहि उ १।१०७

वद्धावेत्ता (वर्धयित्वा) ज ३।५ उ १।१०७

वध (वध) उ ३।४८,५०

वप्प (वप्र) ज ४।३,२५,२१२,२१२।३,२५१

वप्पगावई (वप्रकावती) ज ४।२१२।३

वप्पावई (वप्रावती) ज ४।२११

वप्पिण (दे०) प २।४,१३,१६ से १६,२८

वमण (वमन) उ ३।१०१

वममाण (वमत्) उ ३।१३०

वमिय (वमित,वान्त) उ ३।१३०,१३१,१३४

वम्म (वर्मन्) ज ३।३१

वम्मिय (वमित) ज ३।७७,१०७,१२४ उ १।१३८

√वय (वच्) वुच्चइ चं २।१ वोच्छं प २।६४।१८ चं १।३

√वय (वद्) वएज्जा ज ७।३१ सू १०।१० वयंति ज २।६।१,६४ वयह उ ३।१०३;४।१४ वयामि उ १।७६ वयामो सू १।२० वयासी ज १।६; २।६४,६०,६५,६७,१०१,१०५,१०७,१०६, १११,११४;३।५,७,१२,१८,२१,२६,२८,३१ से ३४,३६,४१,४७,४६,५२,५६,५८,६१,६४, ६६,६६,७२ ७४,७६,७७,८३,६०,६१,६६, १०५,१०७,११३ से ११५,१२४,१२५,१२७, १२८,१३३,१३८,१४१,१४५,१५१,१५४, १५७,१६४,१६८,१७०,१७३,१७५,१८०,१८५,

१८८,१९१,१९९,२०६;५।३,५,१४,२१,२२,२६ २८,४६,५४,६९,७२ चं १० सू १।५ उ १।४; ३।२९;४।१४;५।१५ वयाहि ज ५।२२ उ १।१०७

वय (वयस) ज २।३१

वय (व्रत) प २०।१७,१८,३४ उ ३।४८,५०,५५

वयंस (वयस्य) ज २।२९

वयगुत्त (वचोगुप्त) उ ३।९९

वयण (वचन) प ११।८६ ज २।१३३; ३।३,८, १३,१९,२४,३२।२,५३,६२,७०,७७,८४, १००,१३१,१४२,१६५,१८१,१९२,२१३; ५।१५,२३,२६,२७,६९,७३ उ १।३३,४५,१०८

वयण (वदन) ज २।१५,१६;३।६;५।२१ उ १।१५,३५;३।९०

वयणमाला (वदनमाला) ज २।६५;३।१८६,२०४

वयमाण (वदत्) प ११।२९,८७

वर (वर) प २।४०।८,२।४९;३६।८३।२ ज १।१६,३७,३८;२।१५,२०,६५,७१,८५, ९५,९६,१००,१२०; ३।३,६,७,१२,१८,२२, २४,२८,३१,३२,३५,४१,४९,५२,५८,६१, ६६,६९,७४,७६,७७,७८,८२,८८,९३,१०७; १०९,१२४,१२५,१२८,१३१,१३७,१३८, १४१,१४७,१५१,१५२,१६३,१६४,१६८; १७५,१७८,१८३,१८६,१८७,२०९,२१०, २१३,२१८,२२१,२२३; ४।१०,११५,२१७; ५।७,२१,४३,५६,५८; ७।१७८ सू १९।११।१ उ १।१,४१,४६,६४,९१,१२१,१३८;२।९; ३।५६,६४,६६,६८,७९,८१; ५।५,१३,१९, २०,२५,२७,३१

वर (वरक) प १।४५।२ तृण धान्य, चीनाधान

√वर (वरय्) वरति सू १९।२२।१९ वरयंति चं २।२ सू १।६।२ वरयति सू ७।१

वरकणगणिहस (वरकनकनिकष) प १७।१२७

वरग (वरक) ज २।३७ तृणधान्य

वरग (वरक) उ ४।९

वरगंध (वरगन्ध) प २।३०,३१,४१

वरगंधधर (वरगन्धधर) सू १७।१

वरगंधित[1] (वरगन्धिक) सू २०।७

वरगय (वरगत) ज ३।६,१२,१८,२८,४१,४९, ५८,६६,७४,७८,८२,९३,१३९,१४७,१८०, १८७,१८८,२१२,२१३,२१८,२१९,२२२; ५।४७,६०

वरचंपग (वरचम्पक) ज ३।३ राजचंपक

वरण (वरण) प १।९३।४

वरदत्त (वरदत्त) उ ५।२१,२२,२४,३१,४०,४१,४३

वरदाम (वरदामन्) ज ३।३०,३१,३३,३६,३९,४१; ६।१२ से १४

वरदामतित्थकुमार (वरदामतीर्थकुमार) ज ३।३३, ३९ से ४१,४३

वरदामतित्थाधिपति (वरदामतीर्थधिपति) ज ३।३८

वरपसण्णा (वरपसन्ना) प १७।१३४

वरपुरिसवसण (वरपुरुषवसन) प १७।१२७

वरबोंदिधर (वर'बोंदि'धर) सू १७।१;२०।१

वरमल्लधर (वरमाल्यधर) सू १७।१;२०।१,२

वरवत्थधर (वरवस्त्रधर) सू १७।१;२०।१,२

वरवारुणी (वरवारुणी) प१७।१३४

वरसीधु (वरसीधु) प १७।१३४

वराडा (वराटक) प १।४९

वराभरणधर (वराभरणधर) सू १७।१

वराभरणधारि (वराभरणधारिन्) सू २०।१,२

वराह (वराह) प १।६४;२।४९ उ २।३५

वराहमंस (वराहमांस) सू १०।१२० वाराहीकंद

वराहरुधिर (वराहरुधिर) प १७।१२६

वरिट्ठ (वरिष्ठ) ज ३।८१;५।२१

वरिस (वर्ष) ज ३।१७५

वरिसारत्त (वर्षरात्र) सू १२।१४ उ ५।२५

वरुट्ट (वरुड) प १।९७ पिच्छिकार, वेंत का काम करने वाला

वरुण (वरुण) प १५।१५५।१ ज ७।१२०,१८६।३ उ ३।५४

---

१. अतोऽनेकस्वरात् इति इक प्रत्ययः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरुण (काइय) (वरुणकायिक) ज १।३१
वरुणदेवया (वरुणदेवता) सू १०।८१
वरुणवर (वरुणवर) सू १६।३१
वरुणोद (वरुणोद) सू १६।३१
वरेल्लग (दे०) प १।७६
वलभीघर (वलभीगृह) ज २।२०
वलभीसंठित (वलभीसंस्थित) सू ४।२
वलय (वलय) प १।३३।१,१।४३ ज ३।६,२२२
वलयाकारसंठाणसंठिय (वलयाकारसंस्थानसंस्थित) ज ४।२३४,२४०,२४१
वलयागार (वलयाकार) सू १६।२,६,६,१२,१६,२८,३२,३६
वलवा (वडवा) प ११।२३
वलि (वलि) ज २।१५,१३३ उ १।३४,४०,४३,४६,४८,४६,५१,५४,७४,७६,७६
वलिय (वलित) ज २।१५; ३।१०६; ५।५
वल्लभ (वल्लभ) ज १।२६
वल्लि (वल्ली) ज २।१३१,१४४ से १४६; ३।३२ उ ५।५
वल्ली (वल्ली) प १।३३।१ १।४०,१।४८।६१
वल्लीबहुल (वल्लीबहुल) ज १।१८
ववगय (व्यपगत) प १।१।१; २।२० से २७ ज १।२४; २।१५,२३,२५,२६,२८,३० से ३२,३६,४०,४२,४३; ७०; ३।२०,३३,५४,६३,७१,८४,१३७,१४२,१६७,१८२
√**ववरोव** (वि+अप+रोपय्) ववरोवेइ प २२।६ उ १।२२
ववरोविय (व्यपरोपित) उ १।२५,२६
ववसाय (व्यवसाय) ज ४।१४०।१
ववसायसभा (व्यवसायसभा) ज ४।१४०
ववहार (व्यवहार) प ११।३३।१; १६।४६ उ ३।११
ववहारसच्च (व्यवहारसत्य) प ११।३३
√**वस** (वस्) वसइ ज ३।१२२ वसाहि ज ३।१८५
वस (वश) ज ३।५,६,८,१५,१६,३१,५३,६२,७०,७७,८४,६१,१००,११४,१४२,१६५,१६७।१४,१७३,१८१,१८६,१६६,२१३; ५।२१,२७,४१ उ १।२१,४२; ३।३३,१३६
वसंत (वसन्त) प ७।१४४।२ सू १२।१४ उ ५।२५
वसंतमास (वसन्तमास) सू १०।१२४।२
वसंतलय (वासन्तीलता) ज ५।३२
वसट्ट (वशार्त) उ १।५२,७७
वसण (वसन) प २।४०।१०,११ ज ३।७,१८४ उ ३।१३०
वसणब्भूय (व्यसनभूत) ज २।४३
वसभमंस (वृषभमांस) सू १०।१२०
वसभवाहण (वृषभवाहन) प २।५१ ज २।६१; ५।४८
वसभाणुजाल (वृषभानुजात) सू १२।२६
वसमाण (वसत्) प ३।१८,३१,१८० उ १।११०,१२६,१३३
वसह (वृषभ) ज २।६१; ७।१७८ चं १।४
वसहरूवधारि (वृषभरूपधारिन्) ज ७।१७८ सू १८।१४
वसहि (वसति) ज २।१६; ३।१८,३१,१४० उ १।११०,१२६,१३३; ३।३६
वसा (वसा) प २।२० से २७; १५।१।२,१५।५०
वसिट्ठकूड (वाशिष्ठकूट) ज ४।२०४।१
वसु (वसु) ज ७।१३०,१८६।३
वसुंधरा (वसुन्धरा) ज ५।६।१
वसुदेवया (वसुदेवता) सू १०।८०
वसुहर (वसुधर) ज ३।१२६।१
वसुहा (वसुधा) ज ३।१८,३१,१८०
√**वह** (वध्) वहेंति ज ७।१६८।२
वह (वध) उ १।१३६; ३।४८,५०
वह (व्यथ) उ ५।२।१
वह (वह) उ ५।२।१
वहय (वधक) ज २।२८
वहस्सइ (वृहस्पति) ज ७।१३०,१८६।३
वहिय (व्यथित) ज ३।१११,१२५

वा (वा) प ११।८७ ज २।३९ सू १।१४ उ १।२७;
३।१०१

√**वा** (वा) वाहिति ज २।१३१

वाइ (वादिन्) ज २।८०

वाइंगण (दे० वातिकुण) प १।३७।१ बैंगन का गाछ

वाइंगणिकुसुम ('वाइंगणि'कुसुम) प १७।१२५

वाइत (वादित) प २।३०,३१,४९

वाइय (वादित) प २।४१

वाइय (वाद्य) ज १।४५;२।६५;३।८२,१८५,
१८६,१८७,२०४,२०९,२१८;५।१,१९;७।५५,
५८,१८४ सू १८।२३;१९।२३,२६

वाइय (वातिक) उ ३।११२,१२८

वाउ (वायु) प ६।८६,१०४,११५;६।४;१३।१६;
१७।४०,९६;२०।८,२३,२८,५७;२१।८५;
२२।२४ ज २।१६;३।१७८;४।४९;५।४३,५२;
७।१२२।१,१३०,१८६।४ सू १०।८४।१

वाउकाइय (वायुकायिक) १।१५;२।१० से १२;
३।५,५० से ५२,५७,६० से ६३,६८,७१ से
७४,७९,८४ से ८७,९२,९५,१६५ से १६७,
१८३;४।७९,८०,८२,८३,८५ से ८७;५।३,
१५,१६;६।१९,६२,९२,१०२

वाउकाय (वायुकाय) सू २०।१

वाउकुमार (वायुकुमार) प १।१३१;२।४०।१,
९,११;५।३;६।१८ ज २।१०७,१०८

वाउक्कलिया (वातोत्कलिका) प १।२९

वाउक्काइय (वायुकायिक) प १।२७;२।११;
१२।३,४,२३;१५।२९,८५,१३७;१६।५,१२;
१७।६१,१०३;१८।२६,३४,३८,४०.४२,५२;
२०।३१,४५;२१।२६,४०,५०,५७,६४;२२।३१;
३४।३;३६।६,३८,५६,७२.७५

वाउकाइयत्त (वायुकायिकत्व) ज ७।२१२

वाउक्काय (वायुकाय) ज २।१०७,१०८

वाउब्भाम (वातोद्भ्राम) प १।२९

वाउभक्खि (वायुभक्षिन्) उ ३।५०

वाउल (व्याकुल) ज २।१३१

वाकरेमाण (व्यागृणत्) ज २।७८

√**वागरा** (वि+आ+कृ) वागरेहिति उ ३।२९
वागरेहिती उ ३।२९

वागरण (व्याकरण) ज ७।२१४ सू ९।३ उ १।१७;
३।२९

वागल (वल्कल) उ ३।५१,५३,५५,६३,६९,७०,
७३

वागली (दे०) प १।४०।२ बागुची, एक औषधि

वाघाइय (व्याघातिक) ज ७।१८२

वाघात (व्याघात) प १।७४;२१।९५

वाघातिम ('व्याघातिम,व्याघातिन्) सू १८।२०

वाघाय (व्याघात) प २।७;२८।३१ उ १।६५,६६

वाण (वाण) प १।३७।४

वाणपत्थ (वानप्रस्थ) उ ३।५०

वाणमंतर (वानव्यन्तर) प १।१३०,१३१;२।४१,
४३;३।२७,१३५,१८३;४।१६५ से १६७;
५।३,२५,१२१;६।२५,५६,६५,८५,९३,१०९,
१११,११७;७।५;९।११,१८,२४;१२।६,३६;
१३।२०;१५।३५,४८,८७,९९,१०४,१०७,
१११,१२४;१६।९,१६;१७।२६,३०,३२,३४,
५२,७७,८१,८३,९८,१०५;१९।४;२०।१३,
१९,२५,३०,३५,३७,४८,५४,६१;२१।५५,६१,
७७,९०;२२।३१,३९,७५,८८,१००;२४।८;
२८।७२,११७,११९;२९।१५,२२;३१।४;
३२।५;३३।१४,२२,३०,३४,३७;३४।४,१०,
१६,१८;३५।१५,२१;३६।२५,४१,७२
ज १।१३,३०,३३,३६;२।९४,९५,९६,१००
से १०२,१०४,१०९,११०,११३ से ११६,
१२०;४।२,२४८,२५० से २५२;५।४७,
५३,५९,६७,७२ से ७४ सू २०।७

वाणमंतरत्त (वानव्यन्तरत्व) प ३६।२२,२६

वाणमंतरी (वानव्यन्तरी) प ३।१३६,१८३;

१. भावादिमः इति सूत्रेण इमः ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४।१६८ से १७०; १७।५२,८२,८३; २०।१३
वाणारसी (वाराणसी) प १।६३।१ उ ३।२७ से २९ ४६,४८,५०,५१,६५,६६,६६,१००,१११
वाणिज्ज (वाणिज्य) ज २।२३
वातिय (वातिक) उ ३।३५
वाबाध (व्याबाध) ज २।३६,४१
वाम (वाम) ज २।११३; ३।६.१२,२४।४,३७।२, ४५।२,८८,११७,१३१।४; ५।२१.५८ उ १।११५,११६; ३।६२
वामण (वामन) प १५।३५; २३।४६
वामणी (वामनी) ज ३।११११
वामभुयंत (वामभुजान्त) सू २०।२
वामेय (वामेय) प २।३१
वाय (वात) प २।४८ ज २।६.१०,१३१,१३३; ३।११,२४।३,३७।१,४५।१,११७,१३१।३, २११; ४।१६६; ५।३८,५८
√वाय (वाचय्) वाएंति ज ५।५७
वायंत (वादयत्) ज ३।१७८
वायकरग (वातकरक) ज ३।११; ५।५५
वायमंडलिया (वातमण्डलिका) प १।२९
वायस (वायस) प १।७९
वायुदेवया (वायुदेवता) सू १०।८३
वारि (वारि) ज ३।२०९; ५।५६
वारिसेणा (वारिषेणा) ज ४।२१०; ५।६।१
वारुण (वारुण) ज ७।१२२।२ सू १०।८४।२
वारुणी (वारुणी) ज ५।११।१
वारुणोदय (वारुणोदक) प १।२३
वाल (व्याल) ज ३।२२२ उ ३।१२८
वाल (बाल) ज ७।१७८
वालग (व्यालक) ज १।३७; २।४१,१०१; ३।२०; ४।२७; ५।२८
वालग्ग (वालाग्र) ज २।६; ७।१७८
वालग्गपोइया (दे०) ज २।२०
वालग्गपोतियासंठित ('वालाग्रपोतिका'संस्थित) सू ४।२,३
वालपुच्छ (व्यालपुच्छ) ज ७।१७८
वालिधाण (वालधान) ज ७।१७८
वालिहर (वालिधर) ज ७।१७८
वाली (पाली) ज ३।३०
वालुंक (वालुक) प १।४८।४८ कपित्थ की छाल
वालुयप्पभा (वालुकाप्रभा) प १।५३; २।१,२०, २३; ३।१३,२१,२२,१८३; ४।१० से १२; ६।१२,७५,७६; १०।१; २०।६,३६; २१।६७; ३३।५
वालुया (बालुका) प १।२०।१; २।४८ ज ३।१११, ११३; ४।१३,२५,४६ सू २०।७ उ ३।५१,५६
वावण्ण (व्यापन्न) प १।१०१।१३
वावण्णग (व्यापन्नक) प २०।६१
वावहारिय (व्यावहारिक) ज २।६
वाविय (व्यापित) ज ३।७६,११६
वावी (वापी) प २।४,१३,१६ से १९,२८; ११।७७ ज १।३३; २।१२,१५; ४।६०,११३; ७।१३३।१
वास (वर्ष) प १।४९; २।१; ४।१,३,४,६,२५,२७, २८,३०,३१,३३,३४,३६,३७,३९,४०,४२, ४३,४५,४६,४८,४९,५१,५२,५४,५६,५८, ६२,६४,६५,६७,६९,७१,७९,८१,८५,८७, ८८,९०,९४,१२५,१२७,१३४,१३६,१४३, १४५,१५२,१५४,१६५,१६७,१६८,१७०, १७१,१७३,१७४,१७६,१७७,१७९,१८०, १८२,१८३,१८५,१८६,१८८; ६।३७ से ४१; १६।३०; १८।२,६,९,१२,२०,२१,२८,३२, ३४,३५,४७,५०,५२; २०।६३; २३।६० से ६४, ६६,६८,६९,७३ से ७८,८१,८३,८५ से ९०, ९२,९५ से ९९,१०१ से १०४,१११ से ११४, ११६ से ११८,१२७,१३०,१३१,१३३,१४७, १५८,१६९,१७६,१७७,१८२,१८३,१८७, २८।२५,७४ से ८७,९७ ज १।१८ से २३, ३४,३५,४७ से ५१; २।१,४,६ से १५,२१ से ४५,५०,५२,५६ से ५८,६५,७१,८८,९०, १२२,१२३,१२६ से १२८,१३० से १३४,

१३८ से १५०,१५४,१५६,१५७,१५९,१६१,
१६४; ३।१,३,२६,३२,३९.४७,५६,६४,७२,
७७,७९,१०३,१०९,११३,१२४,१२६,१३३,
१३५।२,१४५,१६७.१७५,१८५.१८८,२०९,
२२१,२२५,२२६;४।१,३५,४२,५५,५६,६१,
६२,७१,७७,८१ से ८३,८५,८६,९४,९८,
९९ से १०३,१०८,१६२,१६७।७,१६९ १७२
से १७४,१७८,१८१,१८२.१८५,१८७,१९३.
१९४,१९६,१९९ से २०३,२०५,२०९,२१३,
२६२,२६५,२६६,२७१ से २७३,२७७;
५।५५; ६।६।१,६।९,१२,१३,१४,१९; ७।१५६
से १५९,१८७ से १९० सू ४।३;६।१; १०।६३
से ६६; ८।१;१८।२५ से ३०;२०।७ उ १।९,
१४१,१४७; २।१२,१३,२२; ३।१४,१६,१८,
२१,८३,८६,१०४,११८,१२५,१५०,१५२,
१५७,१६१,१६५,१६९; ४।२४,२६,२८;
५।२४,२८,३९,४१,४३

वास (वर्ष) वर्षा ज ३।११५,११६; ५।७;
७।११२।३,४ सू १०।१२९।३,४

√**वास** (वृष्) वासंति ज ३।१८४; ५।७,५७
वासति सू १०।१२९।३ वासह ज ३।१२४
वासिस्सइ ज २।१४१ से १४५ वासिहिंति
ज २।१३१

वासंतिय (वासन्तिक) ज २।१०

वासंतिलता (वासन्तीलता) प १।३९।१

वासंती (वासन्ती) प १।३८।२ ज २।१५

वासघर (वासगृह) ज ३।३२ सू २०।७ उ १।३३;
२।२८

वासपुड (वासपुट) ज ४।१०७

वासमाण (वर्षत्) ज ३।११६

वासयंत (वासयत्) ज २।६५

वासरेणु (वासरेणु) ज २।६५

वासहर (वर्षधर) प १५।५५।२ ज २।६५;३।१३१;
४।१०३,१०८,११०,१४३,१६२,१६७,१८१,
१८२,१८४,१९०,२००;६।१०,१८

वासहरकूड (वर्षधरकूट) ज ६।११

वासहरपव्वय (वर्षधरपर्वत) प २।१; १६।३०
ज १।१८,४८,५१;३।१३१;४।१.२,४४,४५,
४८,५४,५५,६१ से ६३,७९ से ८१,८६,८७,
९६ से ९८,१०२,१०३,१०८,११०,१४३,
१६२,१६६,१७३ से १७६.१७८,१८०.१८४,
१९०,२०० से २०६,२०८,२०९ २६२ से २६४
२६८ से २७०,२७३ से २७६; ५।१४.१५;
६।१०,१८

वासावास (वर्षावास) ज २।७०

वासिउं (वर्षितुम्) ज ३।११५

वासिकी (वार्षिकी) सू १२।१८ से २३

वासिट्ठ (वाशिष्ठ) ज ७।१३२।२ सू १०।१५

वासित्ता (वर्षयित्वा) ज ५।७

वासी (वासी) ज २।७०

वासुदेव (वासुदेव) प १।७४,९१;९।२६;२०।११
ज २।१२५ १५३;७।२०० उ ५।९.१५,१७ से
१९

वासुदेवत्त (वासुदेवत्व) प २०।५६

वाहण (वाहन) ज २।६४; ३।१७,२१,३१,३२,
८१,१०३,१०९,१७७;५।१८,२२,२६
उ १।६६,९४,९९,११५,११६

वाहि (व्याधि) ज २।१५,१३१,१३३

वाहिनी (वाहिनी) उ ३।११०; ४।१६,१८

वि (अपि) प १।५ ज १।१६ सू १।९ उ १।१७

विइक्कंत (व्यतिक्रान्त) ज २।७१,१३८,१४०

√**विउक्कम** (वि + उत् + क्रम) विउक्कमंति
प ९।२६

√**विउट्ट** (वि + वृत्) विउट्टेहि उ ३।११५

विउट्ट (निवृत्त) ज ४।३९,६६,९१

विउल (विपुल) प २।३०,३१,४१ ज १।५;
२।६४,६५.९१,१२०.३।३,६,७.१०३ १८५,
२०९;५।२६,५४; ७।१७८ उ १।१७.९३;
२।११; ३।७,५०,५५,९१.९८.१०१,१०६
१०७.११०.१२९,१३१,१३४,१३९.१४९;
४।१६

विउलमइ (विपुलमति) ज २।८०
√विउव्व (वि + कृ) विउव्वइ ज ५।४१,४६,६०, ६६ उ ३।९२ विउव्वंति प ३४।१९ २१ से २३ ज २।१०२,१०६,१०८;३।११५,१९२,१९४, १९५,१९७,१९८; ५।५५,५७ विउव्वह ज २।१०१,१०५;५।३ विउव्वाहि ज ५।२८ विउव्वेह ज ३।१९१
विउव्वणगिड्ढिपत्त (विक्रियर्द्धिप्राप्त) सू १३।१७
विउव्वणया (विकरण) उ ३४।१ से ३
विउव्वणा (विकरणा) उ ३।७
विउव्वमाण (विकुर्वाण) सू २०।२
विउव्वित्तए (विकर्तुम्) ज ७।१८३ सू १८।२१
विउव्वित्ता (विकृत्य) प ३४।१९,२१ से २३ उ ३।१२३
विउव्विय (विकृत) प २।४१
विउव्वेत्ता (विकृत्य) ज ३।१९१
विउसमण (व्यवशमन) सू २०।७
विंज्झगिरि (विन्ध्यगिरि) उ ३।१२५
विंट (वृन्त) प १।४८।४९
विंहणिज्ज (बृंहणीय) प १७।१३४
√विकंप (वि + कम्प्) विकंपइ चं ३।२ सू १।७।२
विकंपइत्ता (विकम्प्य) सू १।२४
विकंपमाण (विकम्पमान) सू १।२४
विकप्प (विकल्प) ज ३।३२
विकप्पिय (विकल्पित) ज ३।१०९
विकल (विकल) ज २।१३३
विकिण्ण (विकीर्ण) ज ७।१७८
विकियभूय (विकृतभूत) ज ५।५७
विकिरणकर (विकिरणकर) ज ३।२२३
विकिरिज्जमाण (विकीर्यमाण) ज ४।१०७
विकुस (विकुश) ज २।८,९
विक्कंत (विक्रांत) ज ३।१०३
विक्कम (विक्रम) ज ३।३;७।१७८ चं १।१
विक्खंभ (विष्कम्भ) प १।७४; २।५०,५९,६४; २१।८४,८६,८७,९० से ९३; ३६।५९,६६, ७०,७४,८१ ज १।७ से १०,१२,१४,१६,१८, २०,२३ से २५,२८,३२,३५,३७,३८,४०,४२, ४३,४८,५१;२।६,१४१ से १४५;३।९५,९६, १५९,१६०,१६७;४।१,३,६,७,९,१०,१२,१४, २४,२५,३१,३२,३६,३९ से ४१,४३,४५,४७, ४८,५९,५२ से ५५,५७,५९,६२,६४,६६ से ६९,७२,७४,७५,७६,७८,८०,८१,८४ से ८६, ८८,८९,९१ से ९३,९५,९६,९८,१०२,१०३, १०८,११०,११४ से ११६,११८ से १२७, १३२,१३९,१४०,१४३,१४५ से १४७,१५४ से १५६,१६२,१६५,१६७।११,१६९,१७२, १७४,१७६,१७८,१८३,२००,२०१,२०५, २१३,२१५ से २१९,२२१,२२६,२३४,२४० से २४२,२४५,२४८; ५।३५;७।७,१४ से १९, ६६,७३ से ७८,९०,९३,९४,१७७,२०७ चं ३।२ सू १।७।२;१।१४,२६,२७; १८।९ से १३; १९।४,७,१०,१४,१८,२०,२१।१,३०, ३१,३४,३५,३७
विक्खंभसूइ (विष्कम्भसूचि) प १२।१२,१६,२७, ३१ ३६ से ३८
विक्खय (विक्षत) ज २।१३३
विक्खुर (दे०) प ७।१७८
विग (वृक) ज २।३६
विगत (विगत) प १।८४
विगतजोइ (विगतज्योतिस्) सू १४।१०; १५।८ से १३
विगय (विकृत) ज २।१३३
विगयमिस्सिया (विगतमिश्रिता) प ११।३६
विगलिंदिय (विकलेन्द्रिय) प ११।८३ से ८५; १५।१०३; २०।३५;२२।८२;२८।११५,१२७, १३८;३१।६।१,३४।१४;३५।१२,३५।७; ३६।५६
विगलेंदिय (विकलेन्द्रिय) प ११।८२
विगोवइत्ता (विगोप्य) ज २।६४
विग्गह (विग्रह) प ३६।६०,६७ से ६९,७१,७५ ज ५।४४ उ ३।९१

विचारि (विचारिन्) सू १६।१
विचित्त (विचित्र) प २।३०,३१,४१,४६ ज २।१२;
३।६.१०६,२२२;७।१७८ सू २०।७ उ २।१०;
३।१४,८३,१०२,१३५,१४२;४।२४,५।२८,
३६,४३
विचित्तकूड (विचित्रकूट) उ ६।१०
विचित्तपक्ख (विचित्रपक्ष) प १।५१
विचित्ता (विचित्रा) ज ५।११।१
विच्छड्डयित्त (विच्छर्द्य) ज २।६४
विच्छड्डिय (विच्छर्दित) ज ३।१०३
विच्छिण्ण (विस्तीर्ण) प २।५१,५२,५४,५६,६०
ज १।८.१८,२०,२३,२५,३२,३५,४८,५१;
२।१५;३।१,१८,३१,३५,५२,६१,६६,१०३,
१०६,१३१,१३७,१३८।१,१४१ १६४,१८०;
४।१,३,४५,५५,६२,८६,८८,६८,१०३,१०८,
११०,११४,१४१,१५६,१६२,१६७,१६६,
१७२,१७८,१८५,१८७,१६१,२००,२०३,
२०५,२१३,२१५,२४२,२४५,२४६,२५१,
२५२,२६२,२६८;५।३,२८,४६;७।१७७।१,२
उ ३।३७
विच्छिण्णतर (विस्तीर्णतर) ज ४।१०२
विच्छिप्पमाण (विस्पृश्यमान[1]) ज २।६५;
३।१८६,२०४
विच्छुत (वृश्चिक) प १।५१
विच्छुयअल (वृश्चिकाल) ज ७।१३३।३
विच्छुयनंगोलसंठिय (वृश्चिकलांगूलसंस्थित)
सू १०।५२
विजडि (द्विजटिन्) सू २०।८,२०।८।८
विजय (विजय) प १।१३८;२।१,४८.६३;
४।२६४ से २६६;६।४२,५६;७।२६;
१५।५५।२,१५।८६,६२,१००,१०५,१०८,
१०६,११३,११४,११६,१२०,१२१,१२३,
१२५,१२६,१३१,१३६;२८।६६ ज १।१५,
१६,४६,५१;२।१७;३।५,१८,२४।४,२६,
३१,३५,३७।२,३६,४५।२,४७,५२,५६,६१,
६४,६६,७२,८१,६०,११४ से ११६,१२२,
१२४,१२६,१३१।४,१३३,१३५,१३७,१३८
१४१,१४५,१५१,१५७,१६४,१७२,१७८,
१८०,२०५,२०६,२०८,२०६;४।४६,५२,
१०३,१६२,१६७ से १७८,१८१ से १८४,
१८७ से १६१,१६३,१६५,१६७,१६६ से
२०३,२०६,२१२,२६२;५।४३,५५,५७,५८;
६।६।१;७।१२४,१२२।२ च ५।४ सू १०।८४।
२,१२४।१ उ १।१०७,११०,११६,११८,
१२२,१३०;५।१७
विजय (विजय) सू १।६
विजयखंधावार (विजयस्कन्धावार) ज ३।१७२
विजयदूस (विजयदूष्य) ज ३।२४८;५।१७
विजयपुरा (विजयपुरा) ज ४।२१२
विजयवेजइया (विजयवैजयिकी) ज ३।१२,२८,
४१,४६,५८.६६,७४,१४७,१६८
विजया (विजया) ज ४।२१२,२१२।४;५।८।१;
७।१२०।२,१८६
√विजह (वि+हा) विजहति सू १५।८
√विज्ज (विद्) विज्जइ ज ३।१२२।१
विज्जल (दे०, विजल) ज २।३८
विज्जा (विद्या) उ ३।१०१
विज्जाहर (विद्याधर) प १।६१,२१।६३ ज ३।१३७
से १३६,२६०;४।२७,२७२;५।२८ उ ५।५
विज्जाहरसेढी (विद्याधरश्रेणी) ज १।२५ से २८;
४।१७२;६।१५
विज्जु (विद्युत्) प १।२६;२।३०।१,२।४०।६,११
ज ४।२१०।१ सू २०।१
विज्जुकुमार (विद्युत्कुमार) प १।१३१;५।३;
६।१८
विज्जुकुमारिंद (विद्युत्कुमारेन्द्र) प २।४०।२
विज्जुदंत (विद्युद्दंत) प १।८६
विज्जुप्पभ (विद्युत्प्रभ) ज ४।८,२०७ से २१०
विज्जुप्पभकूड (विद्युत्प्रभकूट) ज ४।२१०
विज्जुप्पभद्दह (विद्युत्प्रभद्रह) ज ४।६४

1. हे० ४।२५७

विज्जुप्पह (विद्युत्प्रभ) ज ४।२१५
विज्जुप्पहवक्खार (विद्युत्प्रभवक्षस्कार) ज ४।२०५
विज्जुमुह (विद्युन्मुख) प १।८६
विज्जुसेह (विद्युत्सेन) ज २।१३१;४।२११;
५।५२
√विज्जुय (विद्यु॰) विज्जुयायंति ज ५।७
विज्जुयाइत्ता (विद्युतियत्वा) ज ५।७
विज्झडिय (दे०, विध्वित) ज २।१३३
विज्झडियमच्छ (विज्झडिय'मत्स्य) प १।५६
विट्ठि (विष्टि) ज ७।१२३ से १२५
विडंबिय (विडम्बित) ज ७।१७८
विडिम (दे०, विटप) प २।४९ ज ४।१४६
विडिमंतर (दे०, विटपान्तर) ज २।१६
विड्डा (व्रीडा) उ १।५८,८३
विणट्ठ (विनष्ट) ज २।१०३,१०४
विणमि (विनमि) ज ३।१३७,१३८,१३९
विणय (विनय) प १।१०१।१० ज १।६;२।६०,
९०,१३३;३।८,१३,१९ ५३,६२ ७०,७७,८४,
१००,१४२,१४७,१६५,१८१,१८९,१९२,
२०५,२०६ २१३;५।१५,२३,५८,६९,७३
सू २०।९।४,६ उ १।१९,४५,५५,५८ ६७,
८०,८३,१०८ ११६,१२०,३।१२०
विणास (विनाश) प १।७४
विणासण (विनाशन) ज ३।८८,१०९;५।७
विणिग्गमंत (विनिर्गच्छत्) ज ३।१०९
विणिम्मुयंत (विनिर्मुञ्चत्) ज १।३७;३।१२,
८८,५।५८
√विणी (वि+णी) विणेइ उ १।४९ विणेंति
उ १।३४ विणेमि उ १।७४
विणीता (विनीता) ज ३।१८२
विणीय (विनीत) उ ५।४०,४१
विणीया (विनीता) ज २।१६,६५;३।१ २,७,८,
१४,८७,८८,१०९,१७२,१७३,१८०,१८३ से
१८५,१९१,१९२,२०३,२०४,२०८ २०९,
२१२ २२०,२२२,२२४;४।१७७
विण्णय (विज्ञक) उ ३।१२७,१२८;५।४३
√विण्णव (वि+ज्ञपय्) विण्णवेइ उ १।१०१
विण्णवणा (विज्ञापना) उ ३।१०९
विण्णविज्जमाण (विज्ञप्यमान) उ १।१०२
विण्णवित्तए (विज्ञपयितुम्) उ १।९९
विण्हु (विष्णु) ज ७।१३०,१८६।३
विण्हुदेवया (विष्णुदेवता) सू १०।७९
वितत (वितत) ज ५।३२,५७
विततपक्खि (विततपक्षिन्) प १।७७,८१
वितत्त (वितृप्त) सू २०।८,२०।८।८
वितत्थ (वित्रस्त) सू २०।८,२०।८।८
वितत्थि (वितस्ति) ज २।६
वितिमिर (वितिमिर) प २।६३;३६।९३,९४
वितिमिरतराग (वितिमिरतरक) प १७।१०८,११०
वित्त (वित्त) ज ३।१०३;५।५८
वित्त (वेत्र) ज ३।१०९
वित्ति (वृत्ति) ज १।१३,३०,३३,३६;२।१३४;
४।२
वित्थड (विस्तृत) ज ३।११७;७।३०,३१,३३
सू ४।३,४,६,७;१९।२२।१५
वित्थय (विस्तृत) ज ३।३२,१०९
वित्थर (विस्तर) ज २।१३४
वित्थाररुइ (विस्ताररुचि) प १।१०१।१,९
वित्थिण्ण (विस्तीर्ण) प २।५०,५६,५८ ज १।२४,
२८ उ ३।९१;५।४
विदिसा (विदिशा) ज ४।१०६,१५५,२०४,२१०,
२१२,२३५,२३७;५।१२
विदिसि (विदिश्) प ३६।७०,७२ ज ५।१२
विदिसीवाय (विदिक्वात) प १।२९
विदेह (विदेह) प १।९३।३,९४।१ उ १।१२६,
१३३
विदेहजंबू (विदेहजम्बू) ज ४।१५७।१
विद्दुम (विद्रुम) ज ३।३५
विद्ध (विद्ध) ज ३।२५
विद्धंस (विध्वंस) प ११।७२;२८।४०,४३,६९
√विद्धंस (वि+ध्वंस्) विद्धंसइ सू २।१ उ १।५१
विद्धंसेहिति ज २।१३१

विद्धंसइत्ता (विध्वस्य) प २८।६६
विद्धंसण (विध्वंसन) उ १।५१,५२,७६,७७
विद्धंसित्तए (विध्वंसितुम्) उ १।५१,५२,७६,७७
विद्धि (वृद्धि) ज ७।१८६।३
विधाउ (विधातृ) प २।४७।२
विधुय (विधुत) ज २।१०;४।१६६
विपुल (विपुल) ज २।६६;३।८८,१०९
विपुलतर (विपुलतर) ज ४।१०२
विप्पजढ (विप्रहीण) उ १।९०,९१
√**विप्पजह** (वि + प्र + हा) विप्पजहंति प ३६।९२
सू १५।८
विप्पजहण (विप्रहाण) प ३६।९२
विप्पजहित्ता (विप्रहाय) प ३६।९२
विप्पडिवण्ण (विप्रतिपन्न) उ ३।४७
विप्पमुक्क (विप्रमुक्त) प २।६४।१,९;१६।५५;
३६।८३।२ ज ३।१२,८८,९२,११९;५।७,
५८ उ ३।१५९
विप्परिणामइत्ता (विपरिणम्य) प २८।२०,३२,६६
विप्पलायमाण (विप्रलायत्) उ ३।१३०
विप्पवसित (विप्रोषित) सू २०।७
विप्पहय (विप्रहत) उ ३।१३१,१३४
विबुद्ध (विबुद्ध) ज ३।३
विब्बोयण (दे०) सू २०।७ उपधान
विब्भल (विह्वल) ज २।१३३
विभंगअण्णाणपरिणाम (विभंगाज्ञानपरिणाम)
प १३।१०
विभंगणाण (विभङ्गज्ञान) प ५।५,७;२९।२,६,
१७,१९;३०।६
विभंगणाणि (विभंगज्ञानिन्) प ३।१०२,१०३;
५।९९,१०७;१३।१४,१७;१८।८४;२८।१३७;
३०।१६
विभंगनाण (विभंगज्ञान) प ३०।२
विभंगु (दे०) प १।४२।२
√**विभज** (वि + भज्) विभज्जइ ज २।५५
विभजिस्सइ ज २।१५५
विभत्त (विभक्त) ज २।१५,१३३
विभयमाण (विभजमान,विभजत्) ज १।१९,४७;
४।४२,७१,७७,९४,१६८,१८३,१८९,१९५,
२६२ सू १९।१६
विभाग (विभाग) ज ३।३२
विभावणा (विभावना) प २८।१।२
√**विभास** (वि + भाष्) विभासिज्जा ज ५।५५
विभासेज्जा ज ५।५७
विभासियव्व (विभाषितव्य) ज ५।४०,५७
विभु (विभु) ज ५।५,४६
विभूइ (विभूति) ज ३।१२,७८,१८०;५।२२,२६
विभूति (विभूति) ज ३।२०९
विभूसा (विभूषा) ज ३।१२,७८,१८०,२०९;
५।२२,२६
विभूसिय (विभूषित) ज २।९९,१००;३।९,३५,
७८,१०९,२११,२२२;५।१४,४१,४३,५८;
७।१७८ उ १।७०;३।११०;४।१८;५।१७
विभेल (विभेल) उ ३।१२५,१३२,१३३,१४१,१४५
विमण (विमनस्) ज २।९०,१०३,१०६,१०८
उ १।३५
विमय (दे०) प १।४१।२
विमल (विमल) प २।३१,६४ ज १।३७;२।१५;
३।९,१२,१८,७७,८१,८८,१०७,११७,१२४,
१५१,१७८,२२२;४।३,२५,१२५,२०४।१;
५।५,४९।३,५८,६२;७।१७८ सू २०।८।८
उ १।१३८
विमलवाहण (विमलवाहन) ज २।५९,६१
विमाण (विमान) प २।१,४,१०,१३,४८ से ५२,
५९।२,२।५९ से ६३;७।२९;११।२५;२१।९२,
९३;२३,१६,१७ ज २।१२०;३।३,११७;
४।११५;५।३,५,१८,२२,२५,२६,२८,३०,३२,
४१,४३ से ४५,४९,५०,५२,५३;७।१७८।१,
१७९,१८४ से १९६ सू ९।१,१८।२२ से २४;
२०।२ से ४ उ ३।६,७,१४,२५,८३,९०,१२०,
१५६,१६१,१६९,१७१;४।५,२४,२८;५।२८,
४१

विमाणकारि (विमानकारिन्) ज ५।४८ से ५०,५३
विमाणवास (विमानवास) ज ३।११७
विमाणावलिया (विमानावलिका) प २।१,४,१०,१३
विमाणावास (विमानावास) प २।४८ से ६३
ज ५।१८,१६,२४,४८
विमाणोववण्णग (विमानोपपन्नक) सू १६।२३,२६
विमुक्क (विमुक्त) प २।६४।१०,१६,२२; ३६।६४।१
विमोक्खण (विमोक्षण) ज २।७१
वियट्टछउम (विवृत्तछद्मन्) ज ५।२१
वियड (विकट) प ६।२० से २३ ज २।१५ चं १।३
सू २०।८,२०।८
वियडजोणिय (विकटयोनिक) प ६।२५
वियडावइ (विकटापातिन्) ज ४।७७,८४,२६६
वियडावति (विकटापातिन्) प १६।३०
वियत्थि (वितस्ति) प १।७५
वियत्थिपुहत्तिय (वितस्तिपृथक्त्विक) प १।७५
√**वियर** (वि+तृ) वियरह ज ३।१८८
वियरस (दे०) ज ५।१३
वियरिय (विचरित) ज २।१२
वियल (विकल) प २४।७
वियसंत (विकसत्) प २।४१
वियसिय (विकसित) प २।३१,४८ ज ३।६;
४।४६; ५।२१
√वियाण (वि+ज्ञा) वियाणाहि प १४८।३८,३६
वियाणंत (विजानत्) प २।६४।१७
वियाणय (विज्ञायक) ज ३।३२,७७,१०६
वियाणित्ता (विज्ञाय) उ ५।३७
वियाणिय (विज्ञात) ज ३।८७
वियालय (विकालक) ज ७।१८६।१ सू २०।८।१
विरइय (विरचित) ज ३।३,६,२२२
√**विरज्ज** (वि+रञ्ज्) विरज्जति सू १३।१
विरत (विरत) प २६।१०
विरति (विरति) प २०।४१
विरत्त (विरक्त) सू १३।१;२०।३
विरय (विरजस्) सू २०।८,२०।८।७
विरयाविरति (विरताविरति) प २०।४२
विरल्लिय (तत[1]) प १५।५१
√**विरव** (वि+रचय्) विरवेइ उ १।४६
विरवेत्ता (विरच्य) उ १।४६
विरसमेह (विरसमेघ) ज २।१३१
विरह (विरह) उ १।६५,६६,१०५
विरहित (विरहित) प ६।५ से ७,४३ सू १६।२५
विरहिय (विरहित) प ६।१ से ४,८ से २३,२७,
४४,४५ ज २।४०;७।५७,६० सू १०।७७
विराइय (विराजित) प २।३०,३१,४१,४६
ज २।१५;३।११७;७।१७८
विराग (विराग) सू १३।२
विरायंत (विराजमान,विराजत्) ज ३।६;५।२१
विराल (विडाल) प ११।२१
विराली (विडाली) प ११।२३
√**विराय** (वि+राजय्) विरावेहिति ज २।१३१
विराहणी (विराधनी) प ११।३
विराहय (विराधक) प ११।८६
विराहिय (विराधित) उ ३।१४,२१,८३
विराहियसंजम (विराधितसंयम) प २०।६१
विराहियसंजमासंजम (विराधितसंयमासंयम)
प २०।६१
√**विरिंच** (वि+भज्) विरिंचइ उ १।६४
विरिंचित्ता (विभज्य) उ १।६६,६४
विरिय (वीर्य) प २३।१६,२० ज ३।१०७,११४
विरेयण (विरेचन) उ ३।१०१
विलंब (विलम्ब) प २।४०।६
विलवमाण (विलपत्) उ १।६२;३।१३०
विलास (विलास) ज २।१५;३।१३८ सू २०।७
विलिय (व्रीडित) ज २।६० उ १।५८,८३
विलिहिज्जमाण (विलिख्यमान) प २।५०
ज ५।१८
विलेवण (विलेपन) ज ३।६,२०,३३,५४,६३,७१,
८४,१३७,१४३,१६७,१८२,२२२
विव (इव) ज १।३८,६८ उ १।२३;३।१२८

---

१. हे० ४।१३७

विवंचि (विपञ्ची) ज ३।३१
विवज्जिय (विवर्जित) उ ३।३६
विवडिय (विपतित) ज ३।१०८ से १११
√**विवड्ढ** (वि+वृध्) विवड्ढंति ज ३।९५,१५९
विवड्ढंत (विवर्धमान) प १।४८।५२
विवण्ण (विवर्ण) उ १।१५;३।९८
विवत्थ (विवस्त्र) सू २०।८
विवर (विवर) ज २।६५ उ ५।५
विवरीत (विपरीत) सू २०।९।२
विवरीय (विपरीत) ज ३।११७।१
विवाग (विपाक) प २३।१३ से २३
विवाह (विवाह) सू २०।७
विविह (विविध) प २।४१,४८ ज ३।२४,११७,
१६७।१२;४।२७,४९;५।३८,६७;७।१७८
सू १८।८ उ ३।३५,११२,१२८
विस (विष) उ १।८९,९०
विसंधि (विसन्धि) सू २०।८।५
विसंधिकप्प (विसन्धिकल्प) सू २०।८
विसज्जिय (विसर्जित) ज ३।८१
विसप्पमाण (विसर्पत्) ज २।१५;३।५,६,८,१५,
१९,३१,५३,६२,७०,७७,८४,९१,१००,११४,
१४२,१६५,१७३,१८१,१८९,१९९,२१३;
५।२१,२७,४१ उ १।२१,४२;३।१३६
विसम (विषम) प १३।२२।२;१६।५२;३६।८२।१
ज २।३८,१३१,१३३;३।७६,८८,१०९,१२८,
१५१,१७०;७।११२।३ सू १०।१२९।३
उ ३।५५
विसमचउक्कोणसंठित (विषमचतुष्कोणसंस्थित)
सू १।२५;४।२
विसमचउरंससंठाणसंठित (विषमचतुरस्रसंस्थान-
संस्थित) सू १।२५
विसमचउरंससंठित (विषमचतुरस्रसंस्थित) सू ४।२
विसमचक्कवालसंठाणसंठित (विषमचक्रवालसंस्थान-
संस्थित) सू १९।९
विसमचक्कवालसंठित (विषमचक्रवालसंस्थित)
सू १।२५;४।२;१९।३,६,१३,१७,२९,३३,३६
विसमचारि (विषमचारिन्) ज ७।११२।२
सू १०।१२९।२
विसमबहुल (विषमबहुल) १।१८
विसमाउय (विषमायुष्क) प १७।१३
विसमेह (विषमेघ) ज २।१३१
विसमोववण्णग (विषमोपपन्नक) प १७।१३
विसय (विषय) प २।४८;११।६९।१;१५।१।१,
१५।४०,४१;३३।१।१ ज २।४;३।१०४,१०५,
१०७,११४,१२६।४;५।४६;७।१७८ सू १८।१
विसय (विशद) ज २।४,६५,१२६
विसयवासि (विषयवासिन्) ज ३।२४।२,३।२६,
३९,४७,५६,६४,७२,१३१।२,१३३,१३८,१४५
विसयाणुपुव्वी (विषयानुपूर्वी) ज ७।५०
विसह (विषय) ज २।६८
विसहरण (विषहरण) ज ३।९५,१५९
विसाएमाण (विस्वादयत्) उ १।३४,४९,७४
विसायणिज्ज (विस्वादनीय) ज २।१८
विसारय (विशारद) ज ३।७७,१०९ उ १।३१
विसाल (विशाल) प २।४७।२ ज २।१५;३।१७८;
४।१५७।२;७।१७८ सू २०।८,२०।८।८
विसाहा (विशाखा) ज ७।१२८,१२९,१३४।३,
१३५।३,१३६,१४०,१४९,१६५,१६६
सू १०।२ से ६,१७,२३,४९,६२,७२,७३,७५,
८३,११४,१२०,१३१ से १३३;१२।२१
विसाही (वैशाखी) ज ७।१४०
विसिट्ठ (विशिष्ट) प २।४०।७ ज १।३७;२।१५,
२०;३।९,३५,१०९,११७,२२१,२२२;५।४३;
७।१७८
विसिट्ठतर (विशिष्टतर) सू २०।७
विसुज्झमाण (विशुध्यमान) प १।११३,१२८;
२३।२००,२०१ ज ३।२२३
विसुद्ध (विशुद्ध) प २।६३;१७।१३८;३६।९३,९४
ज २।८,९;३।३,१०९;५।५८ उ ५।४३
विसुद्धतर (विशुद्धतर) ज २।७१

विसुद्धतराग (विशुद्धतरक) प १७।१०८ से १११
विसुद्धलेस्सतराग (विशुद्धलेश्यातरक) प १७।७
विसुद्धवण्णतराग (विशुद्धवर्णतरक) प १७।६,१७
विसेस (विशेष) प १।१।४;२।६४।१८,१२।३१; १५।२६,३०;१७।३०,१४६ ज १।१३,३० ३३,३६;२।४५,१४५;३।३२;४।२,२५ सू २।२;४।४,७;१५।५ से ७;१६।८;२२।१३
विसेसाहिय (विशेषाधिक) प २।६४;३।१ से ६, २४ से ३२,३७ से १२०,१२२ से १२५,१२७, १४१ से १४३,१५६ से १७०,१७४ से १८३, ६।१२३;८।५,७,६,११;६।१२,१६,२५;१०।३ से ५,२६ से २६;११।७६,६०;१५।१३,१६, २६ से २८,३१,३३;१५।५८।१,१५।६४; १७।५६ से ६६,७१ से ७६,७८ से ८३,१४४ से १४६;२०।६४;२१।१०४,१०५; २२।१०१;२८।४१,४४,७०;३४।२५;३६।३५ से ४१,४८,४६,५१,८१ ज १।७,२०,४।४५, ५७,६२,६८,११०,१४३,२१३,२३४,२४१; ७।१४,१६,७३ से ७५,६३,१६७,२०७ सू १।१४,२७;१८।३७;१६।१०
√**विसोह** (वि+शोधय्) विसोहेहिइ ज ३।११५
विस्स (विश्व) ज ७।१३०,१८३।४
विस्संभर (विश्वम्भर) प १।७६
विस्सदेवया (विश्वदेवता) सू १०।८२
विस्सुत (विश्रुत) ज ३।३५
विस्सुय (विश्रुत) ज ३।७७,१०६,१२६,१६७
विहंगु (दे०) प १।४८।४६
विहग (विहग) ज १।३७;२।६८,१०१;४।२७; ५।२८
विहप्फइ (बृहस्पति) ज ७।१०४
√**विहर** (वि+हृ) विहरइ प २।५० से ५३ ज १।५,४५;२।७० ६१,३।२,२०,२३,३३, ८२,८४,१५३,१७१,१८२,१८६,२१८,२१६, २२४;४।१५६;५।१६ उ १।२;२।७;३।६; ४।११;५।६ विहरंति प २।२० से २७,३० से ३७,३६ से ४२,४६,४८ से ५२,५४,५५,५७ से ५६ ज १।१३,३०,३३;२।८३,१२०;४।२, ११३;५।१,३,८ से १३,६८;७।५६,५६ सू १६।२४ उ ३।५०;५।२६ विहरति प २।३२,३३,३५,३६,४३ से ४५,४८,५१ ५३ से ५६ ज २।७२;३।१२६;५।८ से १३ सू २०।७ विहरसि उ ३।८१ विहरामि उ १।७१;३।३६ विहराहि ज ३।१८५,२०६ विहरिस्संति ज १।१३४,१४६ विहरेज्जा सू २०।७ उ ५।३६
विहरमाण (विहरत्) ज २।७१ उ १।२,२०
विहरित्तए (विहर्तुम्) ज ७।१८४,१८५ सू १८।२२ उ १।६५,३।५०
विहरिय (विहृत) उ ३।५५
विहव (विभव) ज ५।४३
√**विहाड** (वि+घटय्) विहाडेइ ज ३।६०,१५७ विहाडेहि ज ३।८३,१५४
विहाडिय (विघटित) ज ३।६०
विहाडेत्ता (विघट्य) ज ३।८३
विहाण (विधान) प १।२०।२,१।२०,२३,२६,२६, ४८,६८
विहाणमग्गण (विधानमार्गण) प २८।६,६,५२,५५
विहायगति (विहायोगति) प १६।१७,३८,५५
विहायगतिणाम (विहायोगतिनामन्) प २३।३८, ५६,११६,११७,११६,१२८,१३२
विहार (विहार) ज २।७१
विहि (विधि) प २।४५;२१।११ ज ३।२४।२, सू १६।२२
विहिण्णु (विधिज्ञ) ज ३।३२
विहूण (विहीन) प १०।१४।५ ज ४।६४,८६,१३६, २०८
विहूसण (विभूषण) ज ४।१४०।१
वीइ (वीचि) ज ३।१५१
वीइक्कंत (व्यतिक्रान्त) ज २।५१,५४,७१,८८, ८६,१२१,१२६,१३०,१४६,१५४,१६०,१६३; ३।२२५ उ १।५३,७८;३।१२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीइभय (वीतिभय) प १।६३।४
वीइय (वीजित) ज ३।६,२२२
वीइवइत्ता (व्यतिव्रज्य) ज १।१६,४६,४।५२ उ ५।४१
वीईवयमाण (व्यतिव्रजत्) ज २।६०; ३।२६,३६, ४७,५६ ६४,७२,१३३,१४५;५।४४,४७,६७;
वीचि (वीचि) ज २।१५;३।८१
वीणग्गाह (वीणाग्राह) ज ३।१७८
वीतराग (वीतराग) प १।१०७ से ११०,११५, ११७ से १२३
वीतरागसंजय (वीतरागसंयत) प १७।२५
वीतसोग (वीतशोक) सू २०।८
वीतिमिर (वितिमिर) । २।६३
वीतिवयमाण (व्यतिव्रजत्) ज ३।११३;५।४४
√**वीतीवय** (वि+अति+व्रज्) वीतिवयति सू २०।२
वीतीवतित्ता (व्यतिव्रज्य) प २।६३
वीयणी (वीजनी) ज ३।३
वीयराग (वीतराग) प १।१००,१०४ से १०७, १०६ से १११,११५,११६,११८,१२१ से १२३
वीयराय (वीतराग) प १।१०२ से १०४,११६, ११७,११६,१२०,१२२
वीयसोय (वीतशोक) ज ४।२१२,२१२।२ सू २०।८।७
वीर (वीर) ज ३।६,१०३,१०८ से १११,२२२ चं १।१ उ १।२२,१४०;२।५,१०
वीरंगय (वीराङ्गद) उ ५।२५,२७ से ३०
वीरकण्ह (वीरकृष्ण) उ ५।१०
वीरण (वीरण) प १।४१।१
वीरवर (वीरवर) सू २०।६।६
वीरसेण (वीरसेन) उ ५।१०
वीरिय (वीर्य) प २३।६ ज २।५१,५४,७१,१२१, १२६,१३०,१३८,१४०,१४६,१५४,१६०, १६३;३।३,१२६,१८८;७।१७८ सू २०।१, २०।६।३,५
वीरियंतराइय (वीर्यान्तरायिक) प २३।५६
वीरियंतराय (वीर्यान्तराय) प २३।२३
वीवाह (विवाह) ज २।१३०
वीस (विस्र) प २।२० से २७
वीस (विंशति) प २।२४ ज १।२३ सू ७।१ उ ५।२८
वीस (विंशतितम) प १०।१४।४
वीसइ (विंशति) ज ३।१०६ चं २।५ सू १६।५
वीसइअंगुलवाहाक (विंशत्यंगुलबाहुक) ज ३।१०६
वीसति (विंशति) प २३।७५
वीसतिम (विंशतितम) सू १२।१७
वीसधा (विंशतिधा) सू १२।३०
वीससा (विस्रसा) प १६।५५; २३।१३ से २३
वीससेण (विश्वसेन) ज ७।१२२।२ सू १०।८४।२
वीसहा (विंशतिधा) सू १०।१४२,१४७
वीसायणिज्ज (विस्वादनीय) प १७।१३४
वीसुत (विश्रुत) ज ३।३५,११६
वीहि (व्रीहि) प १।४५।१ ज २।३७
√**वुच्च** (वच्) वुच्चइ प ५।७,३४,१०१,११६,१६६; ११।३,४१; १७।२,१३,२०,२७,११६,११६, १५२,१५५;२०।३६ ज १।४५,४७; २।४।१; ३।१,६८,२२६; ४।२२,३४,५१,५४,६०,६१, ८०,८५,८६,६७,१०२,१०७,११३,१५६,१६१, १६६,१७७,२०८,२११,२६१,२६४,२७०, २७३,२७६;७।१६६,१८५,२०६,२१३,२२६ उ ३।३८ वुच्चंति प २२।४५;३०।१७ वुच्चति प ५।३,५,७,१०,१२,१४,१६,१८,२०,२४, २८,३०,३२,३७,४१,४५,४६,५३,५६,५६, ६३,६८,७१,७४,७८,८३,८६,८६,६३,६७, १०४,१०७,१११,११५,१२७,१२६,१३१, १३४,१३६,१३८,१४०,१४३,१४५,१४७, १५०,१५४,१५७,१६३,१६६,२०३,२४२; १०।३;११।३,३६,४१; १५।४५,४८,६८; १७।२,४,६,६,११,१६,१७,२०,१०७,१०६, १११,११६,११६,१५०,१५५; २०।३६,५१; २२।८,४५; २३।१६०; २६।१७,१६ से २१;

३०।१६,१६,२१,२३,२६,२८;३४।१२,१६, १८;३५।१८,२०,२३;३६।२८,८१,६४
वुट्ठि (वृष्टि) ज ३।११७
वुड्ढकुमारी (वृद्धकुमारी) उ ४।६
वुड्ढय (वृद्धक) ज २।६५
वुड्ढा (वृद्धा) उ ४।६
वुड्ढि (वृद्धि) प ३३।१।१ ज ७।१,१०,१३,१६, १६,६६,७२,७५,७८ चं २।४ सू १।६।४,१।२७; १३।१७
वुत्त (उक्त) ज ३।८,१३,१६,२६,४२,५०,५३,५६, ६२,६८,७०,७५,७७,८४,१००,१२५,१२६, १४२,१४८,१६५,१६६,१८१,१८६,१६२; ५।१५,२२,२६,७० चं २।४,५;५।२ सू १।६।४,१।६।३ उ १।४०,४५,५५,५८,८०, ८२,१०८;३।७८,८२;११३;४।२०
√वेअ (वि+इ) वेअति सू ६।१
वेइगा (वेदिका) ज ४।१२८
वेइया (वेदिका) प २।१;२१।६० ज २।२०;४।३, २५,३६,५७,६३,११०,१४८,१५६,२२१,२४५
वेउव्वि (वैक्रियिन्) प २।४६
वेउव्विय (वैक्रियक) प १२।१,२,४,५,८,१४,१८, २४,२८,३३,३६;१६।५;२१।१,८३,१०४, १०५;२३।४२,६०,६२,१४६,१७३;३६।१।१, ३६।३२ ज २।८०;५।४०,५६;७।५५,५८ सू १६।२३,२६
वेउव्वियमीससरीर (वैक्रियमिश्रशरीर) प १६।१, ३,७,१०
वेउव्वियमीसासरीर (वैक्रियमिश्रकशरीर) प १६।११,१२,१५;३६।८७
वेउव्वियसमुग्घाय (वैक्रियसमुद्घात) प ३६।१,४ से ७,२८,३५ से ३८,४०,४१,५३ से ५८,७० ७३ ज ३।११५,१६२,२०८;५।५,७,२६,५५
वेउव्वियसरीर (वैक्रियशरीर) प १२।१२,१६; १६।१,३,७,१२,१५;२१।४६ से ६५,६८ से ७१,७७,८१,६६,६८,१०१,१०४,१०५; ३६।८७
वेउव्वियसरीरग (वैक्रियशरीरक) प १२।३६
वेउव्वियसरीरय (वैक्रियशरीरक) प १२।८,२१,३१
वेउव्वियसरीरि (वैक्रियशरीरिन्) प २८।१४१
वेंट (वृन्त) प १।४८।४५
वेंटबद्ध (वृन्तबद्ध) प १।४८।४०
वेग (वेग) प २।२१ से २७,३० ज २।१६
वेगच्छिग (वैकक्षिक) ज ७।१७८
वेच्च (दे०,व्युत,व्यूत) ज ४।१३
वेजयंत (वैजयन्त) प १।१३८;२।६३;४।२६४ से २६६;६।४२,५६;७।२६;१५।८६,६२,१००, १०५,१०८,१०६,११३,११४,११६,१२०, १२१,१२३,१२५,१२६,१३१,१३६;२८।६६ ज १।१५
वेजयंती (वैजयन्ती) प २।४८ ज ३।३१,१७८; ४।४६,२१२;५।८।१,५।४३;७।१२०।२,१८६
वेज्झ (वेध्य) ज ३।३२
वेड्ड (दे० व्रीडित) ज २।६०
वेढ (वेष्ट) ज २।१३६
√वेढ (वेष्ट्) वेढेइ उ १।४६
वेढय (वेष्टक) ज २।१३६
वेढल (दे०) प १।५८
वेढिम (वेष्टिम) ज ३।१११
वेढिय (वेष्टित) ज ३।३२
वेढेत्ता (वेष्टित्वा) उ १।४६
वेणइया (वैनयिकी,वैणकिया) प १।६८ उ १।४१, ४३
वेणुदालि (वेणुदालि) प २।३७,३६,४०।७
वेणुदेव (वेणुदेव) प २।३७,३८;४०।६ ज ४।२०८
वेणुयाणुजात (वेणुकानुजात) सू १२।२६
वेत्त (वेत्र) प १।४१।१;११।७५ ज २।६७
√वेद (वेदय्) वेदेइ प २३।१।१;२५।४ वेदेंति प १७।२०;२३।११;२५।४,५;२७।२,३;३५।२, ३,५,७,६,११,१३,१४,१७ से २०,२२,२३ वेदेति प २३।६,१०,१२ से २३;२५।२;२७।२, ५,६

वेद (वेद) प १।१।६;३।१।२ ; १८।१।१; २८।१०६।१ उ ३।४८,५०

वेदग (वेदक) प १।६४।१;२५।१;२७।३

वेदणा (वेदना) प २।२३,२६;१७।१७ २०,२७, २६,३२,३३;२२।५ ; ३५।१।१,३५।१ से ७,६, ११ से १४,१६ से २०,२२,२३ ज २।१३१

वेदणासमुग्घाय (वेदनासमुद्घात) प ३६।१,२,४ से ८,१२,१८ से २०,३२,३६ से ४१,४६,५३ से ५६,६५

वेदणिज्ज (वेदनीय) प २३।१,१२;२४।१२;२५।५; २६।६,११;२७।५ ; ३६।८२,६२

वेदपरिणाम (वेदपरिणाम) प १३।२,१४,१५,१८, १६

वेदय (वेदक) प २७।२

वेदि (वेदि) उ ३।५१,५६,६४,६८,७१,७४,७६

वेदिया (वेदिका) ज १।१४

वेदेमाण (वेदयत्) प २६।२ से ४,८,६,१२ ; २७।२, ३,५,६

वेमाणिणी (वैमानिकी) प ३।१४०;४।२१० से २१२; १७।५५,८०,८२,८३ ; २०।१३

वेमाणिय (वैमानिक) प १।१३०,१३४,१३८; २।४६ से ५१; ३।१३६;४।२०७ से २०६; ५।३,२६,१२२;६।४६,५६,६६,८५,८६,६२, ६५,१०६,१११,११७,११६,१२१;७।७; ८।३;६।११,१८,२४;१०।३२ से ५३;११।४६, ८०,८१,८४;१२।६,३८; १३।२०;१४।२,३, ५,७,६,११ से १५,१८;१५।३५,४६,५६ से ६३,६५ से ६७,७५,८२,१३४; १६।६,१६, २०,२१,२६;१७।२७,२८,३०,३४,३५,५४,७६ से ८१,८३,८६ से ६१,६६,१०५; १६।४; २०।१,४,५,१३,१६,२५,३०,३५,३७,५४,५६; २१।५५,६२,७१; २२।११ १३,१५,१७,१६, २०,२६,२७ ३१,३५,३७,३६,४१,४२,४४, ४७,५३ से ५८,६६,७५,७६,७६,८२,८८, ६०,१०० ; २३।२,४ से ७,१०,११ ; २४।१,३, ८,१०,११,१४,१५ ; २५।१,२,४ ; २६।१,३,४, ८,६ ; २७।१,२,६ ; २८।१,७४,१०१,१०२, १०५,१०६,१०६,१११,११५ से ११७,१२२, १२७,१३२ ; २६।१५,२२;३०।१४,२४; ३१।५,६।१;३२।५ ; ३३।३०,३४,३७; ३४।४,५,११ से १४ ; ३५।३,५,७,६,१११५, २३ ; ३६।७ से ६,११ से १३,१५,२०, २६,२७,३०,३२ से ३४,४१,४३ से ४५,४७, ५०,६५,६६,७२,७३ ज १।६०,६५,६६, १००,१०१,१०२,१०४,१०६,११०,११३ से ११६,१२०;४।२४८,२५० से २५२;५।१६, २६,२८,४७,६७,७२,७३,७४

वेमाणियत्त (वैमानिकत्व) प ३६।१८,२०,२२,२४, २६,२७,३० से ३४,४६,४७

वेमायत्त (विमात्रत्व) प २८।३६,४२,४५,४६,७१

वेमाया (विमात्रा) प ७।४; १३।२२।१;२८।३८

√**वेय** (विद्) वेइंसु प १४।१८ वेइस्संति प १४।१८ वेएइ प २३।१५,१६,१८ से २० वेएंति प १४।१८

वेय (वेत्र) प १४२।१

वेय (वेद) प १४।१८।१

वेयग (वेदक) प २७।५

वेयड्ढ (वैताढ्य) ज १।१८ से २०,२३ से २५, २८,३२,३३,४६।१,४७,४८; २।१३३ ; ३।१, ६१,१३७,२२०;४।१६७ से १६६,१७२।१, १७३,१७७

वेयड्ढकूड (वैताढ्यकूट) ज १।३४,४६;६।११

वेयड्ढगिरि (वैताढ्यगिरि) ज २।१३१;३।२२० उ ५।१०

वेयड्ढगिरिकुमार (वैताढ्यगिरिकुमार) ज १।४७; ३।६३ से ६६,६८,७२

वेयड्ढपव्वय (वैताढ्यपर्वत) ज १।३४,३५,४१; ३।६०,६१,१३६,१३७;४।३५,३७,१६७,१७४

वेयणा (वेदना) प १।१।७;२।२० से २२,२४,२५, २७;३५।८,१०,२०;३६।१।१ ज २।४३ उ १।६०,६२,८५,८७

वेयणासमुग्धाय (वेदनासमुद्‌घात) प ३६।३५,३७,
३६,४१
वेयणिज्ज (वेदनीय) प २२।२८;२३।२६;२४।१०,
११;२५।३,४;२६।८;३६।८२ ज ३।२२५
वेयय (वेदक) प २५।४
वेयवेयय (वेदवेदक) प १।१।६
वेर (वैर) ज १।४२,१३३
वेरमण (विरमण) प २०।१७,१८,३४
वेराणुबंध (वैरानुबन्ध) ज २।४२
वेराणुसय (वैरानुशय) ज २।२८
वेरिय (वैरिक) ज २।२८
वेरुलिय (वैडूर्य) प १।२०।४ ज १।३७;३।१२,
८८,६२,११६,१६७।१२,१७८;४।२४२,
२६४;५।५,१६,५८;७।१७८
वेरुलियकूड (वैडूर्यकूट) ज ४।७६
वेरुलियमणि (वैडूर्यमणि) प १७।११६,१४८
ज ४।३,२५
वेरुलियमय (वैडूर्यमय) ज ३।१२,८८;४।७,२६,
१६२,२४२,२६४;५।५८
वेलंबग (विडम्बक) ज २।३२
वेलंबय (विडम्बक) ज २।३२
वेला (वेला) प २।१ उ ३।११०
वेलु (वेणु) प १।४१।२
वेलुय (वेणुक) प १।४८।६१
वेस (वेष) प २।४१ ज २।१५;३।१३८,१७८
सू २०।३
वेसमण (वैश्रमण) ज ३।१८,३१,६३,१८०;
४।१७२।१;५।६८ से ७१;७।१२२।२
सू १०।८४।२ उ ६।५४
वेसमण (काइय) (वैश्रमणकायिक) ज १।३१
वेसमणकूड (वैश्रमणकूट) ज १।२४,४६;४।४४,
८३,२०२
वेसाणिय (वैशाणिक) प १।८६
वेसाली (वैशाली) उ १।१०५ से १०७,११०,१११,
११५,११६,१२६,१३०,१३२
वेसासिय (वैश्वासिक) उ ३।१२८
वेहल्ल (वैहल्ल) उ १।६५ से ६६,१०२ से ११७,
११६,१२७,१२८ राजा श्रेणिक का एक पुत्र।
वेहास (विहायस्) ज २।१३१,१३२;५।६४
उ १।६७
वेहासकडच्छाया (विहायस्कृतच्छाया) सू ६।४
वोकाण (दे०) प १।८६
√**वोच्छ** (ब्रू) वोच्छामि ज ७।१२५।१
सू १६।२२।३१
√**वोच्छिद** (वि + अव + छिद्) वोच्छिजिस्सइ
ज २।१२६,१५८
वोच्छिण्ण (व्यवच्छिन्न) सू ८।१ उ ३।३४
वोच्छिण्णदोहल (व्यवच्छिन्नदोहद) १।५०,७५
वोच्छेयकडुइ (व्यवच्छेदकटुकी) प १७।१३४
√**वोज्झ** (वह्) वोज्झिहिति ज २।१३४
वोज्झ (उह्य) ज ३।२११;५।५८
वोडाण (दे०) प १।४४।१
वोयड (व्याकृत) प ११।३७।२
वोलीण (व्यतीत[1]) सू २०।६।४
वोसट्ठकाय (व्युत्सृष्टकाय) ज २।६७
वैसाह (वैशाख) ज ७।१०४
व्व (इव) प १।२०।७;२।४८ ज २।१५;
३।२४।३,२७।१,४५।१,१३१।३ उ १।३५

स

स (स्व) प २।३०,३१,४१ ४६,५०,५८ ज १।१६;
२।१२०;३।१२,१७८ सू १०।७४ उ ३।२६,
५५,१४१;४।१२
स (स) प १।४८।४६;२।३०,३१,३२,४१,४६,५६,
६३,६६ ज १।८,१६,२३,२६,३१,३५;२।६४,
७१,७२,७७ से ८२;३।६,१७,१८,२१,२८,
३०,३५,४१,४६,५८,६६,७४,७६,८१,१०१,
११६ से ११८,१२८,१४७,१५१,१६७,१६८,
१८०,२१२,२१३,२२०;४।३,१३,२१,२५,
३६,४०,४१,५०,५१,५६,६७,११२,११४,

1. हे० ४।१६२

११६,१३५,१४७,१५५,१५६,२२१ से २२४, २५६,२७७;५।१,२१,३२,४१,४३,५०,५८; ६।१०,११,१४,१५,१८,१६,२१,२२,२६; ७।४,४६,६३,६६,८७,६०,११०,११४,१३२, १६७,१८३,१६४ सू १८।२१; २०।२,७ उ १।२६,४४ से ४६,६३,१०५,१०६,११५, ११६,११६,१३८,१४८; ४।५;५।२८

सअंतर (सान्तर) प ६।१।१

सइं (सकृत्) सू १।१२,१४

सइंदिय (सेन्द्रिय) प ३।४० से ४३,४६;१८।१३, १८,१६

सइय (शतिक) ज ४।१६२,१६८,२०४,२१०, २३६,२६६,२७५

सउण (शकुन) ज २।१२;४।३,२५

सउणरुय (शकुनरुत) ज २।६४

सउणि (शकुनि) ज २।१६;७।१२३ से १२५, १३३।१

सउणिपलीणगसंठिय (शकुनिप्रलीनकसंस्थित) सू १०।२६

संकड (संकट) ज ३।२११

संकप्प (संकल्प) ज ३।२६,३६,४७,५६,१०५, १२२,१२३,१३३,१४५,१८८;४।१४०।१; ५।२२ उ १।१५,३५,४१ से ४४,५१,५४,६५, ७१,७६,७६,६६,१०५;३।२६,४८,५०,५५, ६८,१०६,११८,१३१;५।३६,३७

संकम (संक्रम) प १०।३० ज ३।६६ से १०१,१६१ सू १६।२२।१२

√संकम (सं+क्रम्) संकमति सू २।२

संकमण (संक्रमण) सू १६।२२।१२

संकममाण (संक्रामत्) ज ७।१०,१३,१६,१६,२२, २५,२७,३०,६६,७२,७५,७८,८१,८४ सू १।१४,१६,१७,२१,२४,२७;२।२,३;६।१

संकला (शृंखला) ज ३।३

संकाइय (दे०) ३।५१,५३,५५,५६,६३,६४,६७,६८, ७१,७३,७४,७६

संकाइयग (दे०) उ ३।५१

संकास (संकाश) प १।४८।५६ ज २।७८;३।११

संकिलिट्ठ (संक्लिष्ट) १७।११४।१,१३८; २३।१६५

संकिलिस्समाण (संक्लिश्यमान) प १।११३,१२८

संकिलेसबहुल (संक्लेशबहुल) ज १।१८

संकुचियपसारिय (संकुचितप्रसारित) ज ५।५७

संकुड (दे० संकुच) सू १६।२२।१५

संकुडिय (दे० संकुचित) ज २।१३३

संकुय (संकुच) ज ७।३१,३३ सू ४।३,४,६,७

संकुल (संकुल) ज २।६५;३।१७,२१,१७७;५।२५

संख (शंख) प १।४६;२।३१;१७।१२८ ज २।१५, २४,६४,६८,६६;३।३,१२,७८,१६७।१,१०, १७८,१८०,२०६;४।८५,१२५,२१२,२१२।१; ५।६२;७।१७८ सू २०।८,२०।८।२

संखणग (शंखनक) प १।४६

संखणाभ (शङ्खनाभ) सू २०।८

संखदल (शङ्खदल) प २।६४

संखधमा (शंखध्मायक) उ ३।५०

संखमाल (शङ्खमाल) ज २।८

संखवण्णाभ (शङ्खवर्णाभ) सू २०।८

संखसणाम (शंखसनामन्) ज ७।१८६।२

संखायण (शंखायन) ज ७।१३२।१ सू १०।६३

संखार (शंखकार) प १।६७

संखावत्त (शंखावर्त) प १।२६

संखिज्ज (संख्येय) ज ३।१६२;५।५

संखित्त (संक्षिप्त) ज १।८,३५,५१;४।४५,११०, ११४,१५६,२१३,२४२

संखित्तविउलतेयलेस्स (संक्षिप्तविपुलतेजोलेश्य) ज १।५ उ १।३

संखिय (शांखिक) ज २।६४;३।३१,१८५

संखेज्ज (संख्येय) प १।१३,२०,२३,२६,२६,४०, ४८,१।४८।८,४०,५७;३।१८०;५।२,३,५,१२६, १२७,१४२,१४३;६।३५ से ४१,६०,६१,६४, ६६,६८;१०।१६,१८ से २७,२६;११।५०, ७२;१२।३२,३३,३६;१५।८३,८४,८७,८६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९१,९३ से ९९,१०३,१०४,११०,११२,१२२, १२३,१३० से १३२,१३५ से १३७,१३९, १४२,१४३;१८।१५,२० से २३,२८,३२ से ३५,४७,५० से ५२;३३।११,१५;३६।८,१४, १७ से २०,२२,२३,२५,३३,४४,७०,७२,७४ २।४,५८,१५७;५।७ सू १९।३०,३१

संखेज्जइभाग (संख्येयभाग) प ६।४३; २१।६५ से ७०;३६।७२

संखेज्जगुण (संख्येयगुण) प ३।४ २५,३७,३९,४३, ४४,४९,५३ से ५८,६०,६४ से ७१,८८ से ९५,९७,९९,१०६,११०,१२८ से १४०,१४४ से १५५,१७१ से १७४,१७७,१७९ से १८३; ५।५,१०,२०,३२,१२९,१३४,१५१;६।१२३; ८।५,७,९,११;१०।२६,२७; १५।१३,३१; १७।५६,६३,६४,६६ से ६८,७१ से ७३,७६, ७८,८० से ८३;२१।१०५;२८।७,५३; ३४।२५;३६।३५ से ४१,४८ से ५१ ज ७।१६७ सू १८।३७

संखेज्जजीविय (संख्येयजीवित) प १।४८।४१

संखेज्जतिभाग (संख्येयभाग) प १२।१६; १५।४१

संखेज्जपएसिय (संख्येयप्रदेशिक) प ५।१३४,१६२, १६३,१८१,१९६,१९७,२१७,२१८; १०।१४, १७,२६,२९

संखेज्जपदेसिय (संख्येयप्रदेशिक) प ३।१७९; ५।१२७,१३३,१८०,१८१;१०।१८,२१,२६

संखेज्जभाग (संख्येयभाग) प ५।५,१०,२०,३०, ३२,१२९,१३४

संखेज्जवासाउग (संख्येयवर्षायुष्क) प ६।७१

संखेज्जवासाउय (संख्येयवर्षायुष्क) प ६।७१,७२, ७९,९७,९८,११३,११६;२१।५३,५४,७२

संखेज्जसमयट्ठितीय (संख्येयसमयस्थितिक) प ३।१८१;५।१४८

संखेज्जसमयठितीय (संख्येयसमयस्थितिक) प ३।१८१

संखेव (संक्षेप) प १।१०१।१

संखेवरुचि (संक्षेपरुचि) प १।१०१।११

संखोहबहुल (संक्षोभबहुल) ज १।१८

संग (सङ्ग) ज २।७०

संगइय (साङ्गतिक) ज २।२९

संगंथ (संग्रन्थ) ज २।६९

संगत (सङ्गत) सू २०।७

संगय (सङ्गत) ज २।१४,१५; ३।१०९,१३८; ७।१७८

संगह (संग्रह) प १६।४६

संगहणिगाहा (संग्रहणीगाथा) प २।४७;२१।४७

संगहणी (संग्रहणी) ज १।१७;६।६।१;७।१६७ सू १९।१ उ ३।१७१; ४।२८;५।४५

संगहणीगाहा (संग्रहणीगाथा) प १०।५३

संगहिय (संगृहीत) ज ३।३५

संगाम (संग्राम) ज ३।९२,११९ उ १।१४,१५, २१,२२,२५,२६,१२६,१३७,१४०

संगामेमाण (सङ्ग्रामयत्) उ १।२२,२५,२६,१४०

संगेल्लि (दे०) ज ३।१७९

√संगोव (सं + गुप्) संगोवेंति ज २।४९,५६ संगोवेस्संति ज २।१५९

संगोविज्जमाण (संगोप्यमान) ज २।४९

संगोवेत्ता (संगोप्य) ज २।४९

संगोवेमाण (संगोपयत्) उ १।५७,५८,८२,८३

संघ (सङ्घ) प २।३०,३१,४१ ज १।३१; २।१२१ उ ५।५

√संघट्ट (सं + घट्) संघट्टेंति प ३६।६२

संघट्टा (संघट्टा) प १।४०।३ इस नाम की लता

संघबाहिर (संघबाह्य) सू २०।९।४

संघयण (संहनन) प २।३०,३१,४१,४९;२३।९८, १०५,१०७,१६० ज १।५,२।१६,४६,५८,८६, १२३,१२६,१२८,१४८,१५१,१५७,४।१०१, १७१ सू १।५

संघयणणाम (संहनननामन्) प २३।३८,४५,९४ से ९७,९९,१००

संघयणपज्जव (संहननपर्यव) ज २।५१,५४,१२१, १२६,१३०,१३८,१४०,१४९,१५४,१६०,१६३

संघरिससमुट्ठिय (संघर्षसमुत्थित) प १।२६
संघाइम (संघातिम) ज ३।२११
संघाड (संघाट) प १।४८।६२
संघाडय (संघाटक) उ ३।१००,१३३
√संघात (सं+घातय्) संघातेंति सू १।१८
संघाय (संघात) प १।४७।२,३ ज ७।१७८
√संघाय (सं+घातय्) संघाएंति प ३६।६२
संचय (संचय) ज २।१३; ३।१६७।१४
संचाय (सं+शक्) संचाएइ उ १।५२;३।१०६ संचाएज्जा प २०।१७,१८,३४ संचाएमि उ १।६५; ३।१२१ संचाएमो उ १।६६ संचाएहिइ उ ३।१३०
संचारिम (संचारिम) ज ३।११७
√संचिट्ठ (सं+स्था) संचिट्ठइ उ १।३८;३।५६ संचिट्ठति उ १।८६;३।७६
संचिय (सञ्चित) प २३।१३ से २३ ज ३।२२१
संछण्ण (संछन्न) ज ४।३,२५
संजत (संयत) प ३।१०५;६।६७,६८;२१।७२; ३२।६।१
संजतासंजत (संयतासंयत) प ६।६८;२१।७२; ३२।१,३
संजतासंजय (संयतासंयत) प ३२।४
संजम (संयम) प १।११।७ ज १।५; २।८३;३।३२।१ उ १।२,३;३।२६,३१,६६,१३२; ५।२६
संजय (संयत) प ३।११,१०५;६।६८; १७।२५, ३०,३३; १८।११,१८।८६;२१।७२; २८।१०६।१,२८।१२८; ३२।१ से ४,६ ६।१
संजयासंजय (संयतासंयत) प ३।१०५; ६।६७; १७।२३,२५,३०;१८।६१;२१।७२;२२।६२; २८।१३०; ३२।१,२,६
संजलण (संज्वलन) प १४।७; २३।३५
संजलणा (संज्वलना) प २३।१८४
संजाय (सञ्जात) ज ३।१११,१२५ उ १।८६
संजायकोउहल्ल (संजातकौतूहल) ज १।६
संजायसंसय (संजातसंशय) ज १।६
संजायसड्ढ (संजातश्रद्ध) ज १।६
संजुत्त (संयुक्त) प १५।५७
संजोग (संयोग) प २१।१।१ ज ५।५७;७।१३४।२,३
संजोय (संयोग) प १।८४; १६।१५
संजोयणाहिकरणिया (संयोजनाधिकरणिकी) प २२।३
संझब्भराग (सन्ध्याभ्रराग) प १७।१२६
संझा (सन्ध्या) प २।४०।११
संठाण (संस्थान) प १।४ से ६,४७।१; २।२० से २७,३०,३१,४१,४८ से ५०,५४,५८ से ६०, ६४,६४।१,४,५,६;१०।१५ से २४,२६ से ३०;१५।१।१,१५।२ से ६,१८,१६,२१,२६, ३०,३५;२१।१।१,२१।२१ से ३७,५६ से ६२, ७३,७८ से ८०,६४; २३।१००,१६०;३०।२५, २६; ३३।१।१,३३।२१ से २३;३६।८१ ज १।५, ७,८,१८,२०,२३,३५,५१;२।१६,२०,४७, ८६,१२३,१२८,१४८,१५१,१५७;३।३,६५, १५६;४।१,३६,४५,५५,५७,६२,६६,७४,८४, ८६,६१,६७,६८,१०१,१०२,१०३,१०८,११०, १६७,१७८,२१३,२४२,२४५; ७।३१,३२।१, ३३,३५,५५,१२७।१,१२६।१,१३३।३,१६७।१; १६८।२,१७६ चं ३।२ सू १।७।२,१।१४; १०।६; १३।१७;१८।८ उ १।३
संठाणओ (संस्थानतस्) प १।५ से ६
संठाणतो (संस्थानतस्) प १।७ से ६
संठाणणाम (संस्थाननामन्) प २३।३८,४६
संठाणपज्जव (संस्थानपर्यव) ज २।५१,५४,१२१, १२६,१३०,१३८,१४०,१४६,१५४,१६०,१६३
संठाणपरिणाम (संस्थानपरिणाम) प १३।२१,२४
संठाणा (दे०) सू १०।६,६२,६७,६८,७५,८३, १०३,१२०,१३१ से १३३; १२।२० मृगशिरा नक्षत्र
संठिइ (संस्थिति) ज ७।३१,३३,३५ चं २।१;३।१, ५।१ सू १।६।१,१।७।१,१।६।१
संठित (संस्थित) प २।२० से २७,३०,३१,४१,

४८ से ५०,५४,५६,६०,६४ सू १।२५;३।२; ४।२ से ४,६,७,६,३३,३६; १०।२७ से ३१, ३३,३४ से ४४,४६ से ५४;१८।८; १६।२,३, ६,६,१२,१३,१६,१७;२२।२,१५
संठिति (संस्थिति) ज २।४६ सू १।१५,१६,१७, २५;४।१ से ४,६,७,६;६।१;८।१; ६।२; १३।१७
संठिय (संस्थित) प २।४८,६४; १५।२ से ६,१८, १६,२१,२६,३०,३५; २१।२१ से ३७,५६ से ६२,७३,७८ से ८१,८३; ३३।१६ से २६; ३६।८१ ज १।५,७,८,१८,२०,२३,३५,३७, ४८,५१; २।१५,१६,२०,४७,८६; ३।६,६४, ६५,१३३,१३५,१५८,१५६,१६७,२२२; ४।१, २३,३८,३६,४५,५५,५७,६२,६५,६६,७३,७४, ८६,६०,६१,६७,६८,१०३,१०८,११०,१२८; १६७।११,१६६,१७८,२१३,२४२,२४५; ५।४३;७।३१ से ३३,३५,५५,१३३,१६७, १७६,१७८ सू १।५,१४;४।६ उ १।३
संड (षण्ड) ज ३।११७,१८८
संडिल्ल (शाण्डिल्य) प १।६३।३
संणय (सन्नत) ज ३।१०६
संत (सत्) प १।४७।३ ज २।६४,६६ सू २०।६।२
संत (शान्त) ज २।६८
संत (श्रान्त) उ १।५२,७७
संतइभाव (संततिभाव) प ८।४,६
संततिभाव (सन्ततिभाव) प ८।८,१०
√संतप्प (सं+तप्) संतप्पंति सू ६।१
संतप्पमाण (संतप्यमान) सू ६।१
संतय (सन्तत) प ७।१
संतर (सान्तर) प ६।४७ से ५८; ११।७०,७१
संताणय (सन्तानक) सू २०।८
√संताव (सं+तापय्) संतावेंति सू ६।१
संतिकर (शान्तिकर) ज ३।८८
√संथर (सं+स्तृ) संथरइ ज ३।२०,३३,५४,६३, ७१,८४,१३७,१४३,१६६ संथरेंति ज ३।१११
संथरित्ता (संस्तृत्य, संस्तीर्य) ज ३।२०
संथरेत्ता (संस्तृत्य, संस्तीर्य) ज ३।१११
संथव (संस्तव) प १।१०१।२३
संथार (संस्तार) ज ३।११३
संथारग (संस्तारक) ज ३।१११
संथारय (संस्तारक) ज ३।१११
√संथुण (सं+स्तु) संथुणइ ज ५।५८
संथुणित्ता (संस्तुत्य) ज ५।५८
संथुय (संस्तुत) ज २।६६
संथुव्वमाण (संस्तूयमान) ज ३।१८,६३,१८०
संदमाणिया (स्यन्दमानिका) ज २।१२,३३
संधि (सन्धि) प १।४८।३६ ज २।१५,१३३;४।१३, २६
संधिकम्म (सन्धिकर्मन्) ज ३।३५
संधिवाल (सन्धिपाल) ज ३।६,७७,२२२ उ १।६२
√संधुक्क (सं+धुक्ष्) संधुक्केइ उ ३।५१
संधुक्केत्ता (संधुक्ष्य) उ ३।५१
√संधुक्ख (सं+धुक्ष्) संधुक्खंति ज ५।१६
संधुक्खित्ता (संधुक्ष्य) ज ५।१६
संनिक्खित्त (सन्निक्षिप्त) ज १।४०
संनिचित (सन्निचित) उ ५।५
संनिवडिय (संनिपतित) उ १।२३,६१
संनिविट्ठ (संनिविष्ट) ज ४।२७; ५।४
संनिसण्ण (संनिषण्ण) उ ३।६१
संपउत्त (संप्रयुक्त) ज ३।३५,८२,१०३,१७८, १८७,२१८
संपक्खालग (सम्प्रक्षालक) उ ३।५०
संपग्गहिय (सम्प्रगृहीत) ज ३।३५,१७८
संपट्ठित (सम्प्रस्थित) प १६।२२
संपट्ठिय (सम्प्रस्थित) ज ३।१७८,१७६,२०२, २१७; ५।४३
संपणदित्त (संप्रणदित) प २।३०,४१
संपणदिय (संप्रणदित) प २।३१
संपणादित (संप्रणादित) ज १।३१
संपण्ण (संपन्न) उ १।२; ३।१५६; ५।२६

संपत्त (सम्प्राप्त) ज ५।२१ सू २।३ उ १।४ से ८,६३,६३,१४२,१४३; २।१ से ३,१४,१५, २१;३।१ से ३,२०,२३,२६,८८,१२६;१५३, १५४,१६६,१६७,१७०;४।१ से ३,२७;५।१, ३,४४
संपत्ति (सम्प्राप्ति) उ १।४१,४३,४४
संपत्थिय (सम्प्रस्थित) उ ३।६३,६७,७०,७३
संपन्न (सम्पन्न) ज २।१६
√**संपमज्ज** (सं+प्र+मृज्) संपमज्जेज्जा ज ५।५, ७५ से ७६
संपया (संपदा) ज २।७४
संपराइयबंधग (साम्परायिकबन्धक) प २३।६३
संपराइयबंधय (साम्परायिक बन्धक) प २३।१७६
संपराय (सम्पराय) ज ३।१०३
संपरिक्खित्त (सम्परिक्षिप्त) ज १।७,६,२३,२५, २८,३२,३५; ४।१,३,६,१४,२५,३१,३६,४३, ४५,५७,६२,६८,७२,७६,७८,८६,६०,६५, १०३,१४१,१४३,१४८,१४६,१५२,१७४, १७६,१७८,१८३,२००,२१३,२१५,२३४, २४०,२४१,२४२,२४५; ५।३८ सू ३।१;१६।२, १२,२८,३२,३६ उ ५।८
संपरिवुड (सम्परिवृत) ज २।८८,६०; ३।६,१४, १८,२२,३०,३१,३६,४३,५१,६०,६८,७७, ७८,६३,१३०,१३६,१४०,१४६,१७२,१८०, १८६,२०४,२१४,२२१,२२२,२२४; ५।१,५, २२,४६,४७,५६,६७ उ १।२,१६,६२,६३,६७, ६८,१०५ से १०७,१२१,१२२,१२६ से १२८, १३३; ३।१११; ४।१८; ५।१६
संपलग्ग (सम्प्रलग्न) ज ३।१०७,१०६ उ १।१३८
संपलियंक (संपर्यङ्क) ज २।८८
संपाविउकाम (सम्प्राप्तुकाम) ज ५।२१
संपिंडिय (सम्पिण्डित) प १६।१५ ज २।१२
संपिणद्ध (संपिनद्ध) ज २।१३३; ३।२४
संपुच्छण (सम्प्रच्छन) ज ५।५
संपुण्ण (सम्पूर्ण) ज ३।२२१ उ १।३४
संपुण्णदोहल (सम्पूर्णदोहद) उ १।५०,७५
√**संपेह** (सं+प्र+ईक्ष्) संपेहेइ ज ३।२६,३६,४७ उ १।१७; ३।२६ संपेहेति ज ३।१८८ संपेहेमि उ १।७६
संपेहेत्ता (सम्प्रेक्ष्य) ज ३।२६ उ १।१७; ३।२६
संब (शम्ब) उ ५।१०
संबंधि (सम्बन्धिन्) ज ३।१८७ उ ३।५०,११०, १११; ४।१६,१८
संबद्ध (संबद्ध) ज २।२० से २७
संबद्धलेसाग (संबद्धलेश्याक) सू १६।११।२
संबररुहिर (शम्बररुधिर) प १७।१२६
संबाह (सम्बाध) ज २।२२;३।१८,३१,१८०,२२१ उ ३।१०१
संबुद्ध (सम्बुद्ध) उ ३।४५
संभंत (सम्भ्रान्त) उ १।३७
संभम (सम्भ्रम) ज ३।२०६;५।२२,२६
संभव (सम्भव) ज ७।११४
संभिन्न (सम्भिन्न) प ३३।१८
संभिय (श्लेष्मिक) उ ३।३५
संभूयग (सम्भूतक) उ ३।६८
संभोग (सम्भोग) उ १।२७,१४०
संमज्जग (सम्मज्जक) उ ३।५०
संमज्जण (सम्मार्जन) उ ३।५१,५६,७१,७६
संमज्जिय (सम्मार्जित) ज २।६५; ३।७,१८४; ५।५७
संमट्ठ (सम्मृष्ट) ज २।६; ३।७;५।५७
संमुच्छ (सं+मुर्च्छ्) संमुच्छंति सू ६।१ संमुच्छति सू २०।१
संमुच्छित्ता (सम्मूर्च्छ्य) सू २०।१
संमुच्छिय (सम्मूर्च्छित) सू ६।१
√**सम्माण** (सं+मानय्) सम्माणेइ उ १।१०६; ३।११० सम्माणेंति उ ५।३६ सम्माणेमि उ १।१७
संलवमाण (संलपत्) उ १।४७
संलाव (संलाप) ज २।१५;३।१३८ सू २०।७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संलेहणा (संलेखना) ज ३।२२४ उ २।१२;३।१४, ८३,१२०,१५०,१६१,१६६;५।२८,४३

संवच्छर (संवत्सर) प ४।६५,६७; २३।७४,१८७ ज २।४,६६,६६;७।२०,२५,२६,३७,१०३, १०४,११२।२,३,११३,११४,१२६ चं २।३; ५।३ सू १।६।३; १।६,१३,१४,१६, १७,२१,२४,२७;२।३; ६।१; ८।१;१०।१२४ से १२७,१२६।२,३,१३०,१३८ से १६१; ११।१ से ६; १२।१ से ६,१० से १३,१६ से २८,३०; १३।२;२०।३ उ ३।१२६,१३४

संवच्छरण (संवत्सरण) सू १।६।३

संवच्छरिय (सांवत्सरिक) ज २।४;३।२१२,२१३, २१६;७।११०,१२७ सू १०।१२२,१२३

संवट्टकप्प (संवर्तकल्प) उ १।१३६

संवट्टग (संवर्तक) ज २।१३१

संवट्टगवाय (संवर्तकवात) प १।२६ ज ५।५

√संवड्ढ (सं+वृध्) संवड्ढेइ उ १।५८ संवड्ढेमि उ १।८३ संवड्ढेहि उ १।५७

संवड्ढमाण (संवर्धमान) उ १।५४

संवड्ढिज्जमाण (संवर्ध्यमान) उ ३।४६

संवत्त (संवृत्त) ज ३।१०६

संवड्ढिय (संवर्द्धित) ज ३।३५

संवर (शंवर) प १।६४ मृग की जाति

संवर (संवर) प १।१०१।२

संवाह (संवाह) प १।७४ ज २।२२

संविकिण्ण (संविकीर्ण) प २।४१ ज १।३१

संविगिण्ण (संविकीर्ण) प २।३०,३१

संविणद्ध (संविनद्ध) ज ३।३१

संवुक्क (दे०) प १।४६

संवुड (संवृत) प ६।२० से २३ सू २०।७

संवुडजोणिय (संवृतयोनिक) प ६।२५

संवुडवियड (संवृतविवृत) प ६।२० से २३

संवुडवियडजोणिय (संवृतविवृतयोनिक) प ६।२५

संवुत्त (संवृत्त) ज ४।१३

संवुय (संवृत्त) ज ३।२२२

संसयकरणी (संशयकरणी) प ११।३७।२

संसत्त (संसक्त) उ ३।१२०

संसत्तविहारि (संसक्तविहारिन्) उ ३।१२०

संसार (संसार) प २।६४,६४।१ ज २।७० उ ३।११२

संसारअपरित्त (संसारापरीत) प १८।१०६,१११

संसारत्थ (संसारस्थ) प ३।१८३

संसारपरित्त (संसारपरीत) प १८।१०६,१०८

संसारपारगामि (संसारपारगामिन्) ज २।७०

संसारसमावण्ण (संसारसमापन्नक) प १।१०,१४, १५,४६ से ५२,१३८

संसारसमावण्णग (संसारसमापन्नक) प ११।३६; २२।८

संसिय (संश्रित) ज ३।८१ उ ३।५५

संहित (संहित) प १।४७।३

संहिय (संहित) ज २।१५

सकथा (सकथा) उ ३।५१।१

सकसाइ (सकषायिन्) प ३।६८,१८३; १८।६४; २८।१३२

सकहा (दे०) ज २।११३

सकाइय (सकायिक) प ३।५० से ५३,६०;१८।२५; ३०,३१

सकिरिय (सक्रिय) प २२।७,८

सकोरंट (सकोरण्ट) ज ३।६,१८,७७,७८,६३, १८०,२२२

सक्क (शक्य) प १।४८।५७ ज २।६।१

सक्क (शक्र) प २।५०,५१ ज १।३१; २।८६,६०, ६३,६५,६७,६६,१०१,१०३,१०५,१०७,१०६, १११,११३,११८;३।११५,१२४,१२५; ४।१७२,२२२,२२३।१,२३५,२४०,२४३; ५।१८,२० से २३,२७ से २६,३६,४१,४३, ४५ से ५०,६१,६२,६५ से ६६,७२,७३ उ ३।१२३,१५०

सक्करप्पभा (शर्कराप्रभा) प १।५३;२।१,२०,२२; ३।१२,२२,२३,१८३;४।७,८,६;६।११,७४, ७५;१०।१; २०।५१,५४;२१।६७; ३३।४,१६

सक्करप्पभापुढविणेरइय (शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिक) प २०।५२,५५

सक्करा (शर्करा) प १।२०।१; १७।१३५ ज २।१७,९८;४।२५४

सक्कार (सत्कार) ज २।२५; ३।२१७ उ १।९२; ५।१७

√सक्कार (सत्कारय्) सक्कारेइ ज ३।६,२७,४०, ४८,५३,५७,६५,७३,९१,१२७,१३४,१३९, १४६,१५१,१५२,१८६,२१९ उ १।१०९; ३।११० सक्कारेंति उ ५।३६ सक्कारेज्ज ज २।६७ सक्कारेमि उ १।१७

सक्कारणिज्ज (सत्कारणीय) सू १८।२३

सक्कारवत्तिय (सत्कारप्रत्यय) ज ५।२७

सक्कारिय (सत्कारित) ज ३।८१

सक्कारेत्ता (सत्कार्य) ज ३।६ उ ३।५०

सक्कुलिकण्ण (शष्कुलिकर्ण) प १।८६

सक्कोस (सक्रोश) ज १।२३,३५

सखिखिणी (सकिंकिणी) ज ३।२६,३०,३९,४७, ५६,६४,७२,११३,१३३,१३८,१४५,१७८

सग (स्वक) प २१।९२,९३; ३३।१६,१७ ज २।१२०;३।८१,८९,१०२,१५६,१६२

सग (शाक) प १।८९

सगंथ (सग्रन्थ) ज २।६९

सगड (शकट) ज २।१२,३३,७१; ७।३१

सगडवूह (शकटव्यूह) उ १।१३७

सगडुद्धिसंठिय (शकट 'उद्धि' संस्थित) सू १०।३७

सगडुद्धी (शकट 'उद्धि') ज ७।१३३।१

सगडुद्धीमुहसंठिय (शकट 'उद्धि' मुखसंस्थित) ज ७।३१,३३

सगडुद्धीसंठिय (शकट'उद्धि' संस्थित) ज ७।३२।१

सगल (शकल) प १।४७।२; २।३१ ज ७।१७८ सू ८।१; १३।३

सगोत (सगोत्र) सू १०।९२ से ११९

सचित्त (सचित्त) प ९।१३ से १७ ज २।६९

सचित्तकम्म (सचित्तकर्मन्) सू २०।७ उ २।८

सचित्तजोणि (सचित्तयोनि) प ९।१९

सचित्तजोणिय (सचित्तयोनिक) प ९।१९

सचित्ताहार (सचित्ताहार) प २८।१,२

सच्च (सत्य) प १।१०१।१० उ १।२४

सच्चभासग (सत्यभाषक) प ११।९०

सच्चमण (सत्यमनस्) प १६।१ से ३,७,८,१०, ११,१५,१८ से २१

सच्चमणजोग (सत्यमनोयोग) प ३६।८९

सच्चवइजोग (सत्यवाक्योग) प ३६।९०

सच्चा (सत्य) प ११।२,३,३२,३३,४२ से ४९,८२, ८४,८५,८८,८९

सच्चामोस (सत्यामृषा) प ११।२,३,३५,३६,४२, ४३,४५,४६,८२,८४,८५,८८,८९

सच्चामोसभासग (सत्यामृषाभाषक) प ११।९०

सच्चामोसमण (सत्यामृषामनस्) प १६।१,७

सच्चामोसमणजोग (सत्यामृषामनोयोग) प ३६।८९

सच्चामोसवइजोग (सत्यामृषावाक्योग) प ३६।९०

सच्चित्त (सचित्त) प २८।१।१

सच्छंद (स्वच्छन्द) प २।४१

सच्छंदमइ (स्वच्छन्दमति) उ ३।११९; ४।२२

सच्छीर (सक्षीर) प १।४८।३९

सजोगि (सयोगिन्) प ३।९६,१८३; १८।५५; २८।१३८;३६।९२

सजोगिकेवलि (सयोगिकेवलिन्) प १।१०८,१०९, १२१,१२२

सजोगिभवत्थकेवलि (सयोगिभवस्थकेवलिन्) प १८।१०१,१०२

सज्ज (सज्ज) ज ३।१७८

सज्जाय (सर्जक) प १।४८।४९ पीत शालवृक्ष

√सज्जाव (सज्जय्) सज्जावेंति उ १।१३५

सज्जावेत्ता (सज्जयित्वा) उ १।१३५

सज्झाय (स्वाध्याय) उ ३।३१

सट्ठ (षष्ठ) ज ३।१७८ सू १।२१

सट्ठाण (स्वस्थान) प २।१,२,४,५,७,८,१०,११; १३,१४,१६ से ३१,४६; ५।३५,४२,४६,५४, ५७,६०,६४,६९,७५,७९,९०,९४,९८,१०८,

११२,११६,१२२,१५१,१६४,१६७,१६१;
१६४,१६८,२०१,२०४,२०८,२१२,२१५,
२१६,२२२,२२५,२४३,२४४;६।६३;
१५।१०२,१२१,१२२,१२७;३६।२०,२४,२६,
२७,४७

सट्ठि (षष्टि) प २।३३ ज १।२६ उ २।१२
सट्ठिग (षष्टिक) ज ३।११६
सट्ठिभाग (षष्टिभाग) ज ७।२१,२२,२५ सू १।१०
सट्ठिभाय (षष्टिभाग) ज ७।२४
सट्ठिय (षष्टिक) सू १।१८
√सड (शट्) सडइ उ १।५१
सड्ढइ (श्राद्धकिन्) उ ३।५०
सण (शण,सण) प १।३७।४,१।४५।२ ज २।३७;
३।७६,११६
सणंकुमार (सनत्कुमार) प १।१३५;२।४६,५२ से
५८,६३;३।३१,१८३;४।२३७ से २३६;
६।२६,५६,६५ ८५,११२;७।१०;१५।८८,
१३८;२१।७०,६१;२८।७७;३३।१६;३४।१६,
१८ उ २।२
सणंकुमारग (सनत्कुमारज) ६।६५ ज ५।४६
सणंकुमारवडेंसय (सनत्कुमारावतंसक) प २।५२
सणप्फद (सनखपद) प १।६२,६६
सणिक्खमण (सनिष्क्रमण) ज ४।२७७
सण्णिक्खित्त (संनिक्षिप्त) ज ७।१८५ सू १८।२३
सणिच्चरसंवच्छर (शनैश्चरसंवत्सर) ज ७।१३३
सणिच्चारि (शनैश्चारिन्) ज २।५०,१६४;
४।१०६,२०५
सणिच्छर (शनैश्चर) प २।४८ ज ७।१८६।१
सू १०।१३०;२०।८।१
सणिच्छरसंवच्छर (शनैश्चरसंवत्सर) ज ७।१०३,
११३ सू १०।१२५,१३०
सणिय (शनैस्) ज ३।२२४
सण्णज्झिउं (सन्नद्धुं) ज ३।१२३
सण्णद्ध (सन्नद्ध) ज ३।१०७,१२४ उ १।१३८
सण्णय (सन्नत) ज ७।१७८
सण्णवणा (संज्ञपना) उ ३।१०६
√सण्णवित्तए (संज्ञपयितुम्) उ ३।१०६
सण्णा (संज्ञा) प १।१।४;८।१।३ ज १।१३३
सण्णासण्णि (संज्ञासंज्ञिन्) प ३१।६।१
√सण्णाह (सं+नाहय्) सण्णाहेह ज ३।१५,२१
३१,३४,७७,६१,१७३,१७५,१६६ उ १।१२३;
५।१८
सण्णि (संज्ञिन्) प १।१।७;३।१।२,११२;११।११
से २०;१८।१।२,१८।११६;२३।१७६,१७७,
१६५,१६६,१६६ से २०१;२८।१०६।१,
२८।११५,११६;३१।१ से ३,५,६,६।१;
३६।६२
सण्णिकास (सन्निकाश) ज ३।२२३;४।८५
सण्णिखित्त (संनिक्षिप्त) ज ७।१८५
सण्णिचिय (सन्निचित) ज २।६
सण्णिणाद (संनिनाद) ज ३।३०,३१,४३,५१,६०,
६८,७८,१३०,१३६,१४०,१४६
सण्णिणाय (सन्निनाद) ज ३।१२,१४,१७२,१८०,
२०६,२२४;५।२२,२६;७।१२७।१
सण्णिभ (सन्निभ) ज ३।३,१७,१८,३१,८१,६१,
६३,१७७,१८०,१८३,२०१,२१४
सण्णिभूय (संज्ञिभूत) प १५।४८;१७।६;३५।१८
सण्णिवाइय (सन्निपातिक) उ ३।११२,१२८
सण्णिवात (सन्निपात) सू १०।२६
सण्णिवाय (सन्निपात) चं ५।१ सू १।६।१
सण्णिविट्ठ (सन्निविष्ट) ज १।३७;३।६६ से
१०१,१६३;४।६,२३,१२०,१४७,२१६,२४२;
५।३,२८,३३
सण्णिवेस (सन्निवेश) प १६।२२ ज २।२२;
३।३२,१८५,२०६ उ ३।१०१,१२५,१३२,
१३३,१४१,१४५;५।३६
सण्णिवेसमारी (सन्निवेशमारी) ज २।४३
सण्णिसण्ण (सन्निषण्ण) ज ३।६,२०४;५।२१,
४१,४७,६०
√सण्णिसीय (सं+नि+षद्) सण्णिसीयइ
ज ३।१२

सण्णिसीयित्ता (संनिषद्य) ज ३।१२
सण्णिहिय (सन्निहित) प २।४७।२
सण्ह (श्लक्ष्ण) प १।१८,१९;२।३०,३१,४१,४८, ४९,५९,६३,६४ ज १।८,२३,३१,३५,५१; ३।१२,८८,१९४;४।२४,२५,२९.४९,६७, ८८,११०,१७८,२१३;४।१०;५।५८
सण्हमच्छ (श्लक्ष्णमत्स्य) प १।५९
सण्हसण्हिय (श्लक्ष्णश्लक्ष्णिक) ज २।६
सत (सत्) सू १३।२
सत (शत) प २।४१ से ४३,४६,४८ से ५२,५८ से ६४;४।१८६,१८८;६।३४,३९,६७; १८।१९,२४,४९,५४,६०,६१,११९;२०।१३; २१।६७,६८;२३।६३,६८,६९,७३,७५ से ७७,८१,८३,८५,८७,९०,९२,९६,९७,११२, ११४,११६,१२७,१६४,१६६;३६।१७,३४, ४१ सू १।१८ से २०,२४;२।३;३।१;६।१; ९।३;१०।१२७,१६५;१२।२ से ९,१२,१३, ३०;१३।१ से ३;१४।७;१५।२ से ४,१७ से १९,२२,२५ से २९,३१,३२,३४ से ३७; १८।१,४ से ६,१७,२०;१९।१,४,५।३,१९।७, ८,१०,१५।१,२,४,१९।१८ से २०;२१।४; १९।२२।३२
सतक्कतु (शतक्रतु) प २।५०
सतक्खुत्तो (शतकृत्वस्) सू० १२।१२
सतत (सतत) प ७।१
सतपोरग (शतपोरक) प १।४१।१
सतभिसत (शतभिषग्) सू १०।६४
सतभिसय (शतभिषग्) सू २०।२ से ६,९,२१,२३, ३०,५८,७५,८१,९५,१२०,१३१ से १३५; १२।२५
सतरा (सप्तति) सू १९।११।१
सतवच्छ (शतवत्स) प १।७९
सतवत्त (शतपत्र) प १।४८।४४
सतवाइया (शतपादिका) प १।५०
सतसहस्स (शतसहस्र) प १।२०,४९,५०,७५,७६, ८१;२।२० से २७,२७।२,२९ से ३३,३६ से ३९;४०।२;२।४१ से ४३,४८ से ५३,५४, ५९।१,२।६३,६४;४।१७१,१७३,१७७,१७९; ६।४१;२१।६३,६९,७० सू १५।२;१८।२५; १९।५।१,३;१९।८।१,३,१९।२१।१,८, १९।२२।९
सतहा (सप्तधा) ज ५।७२,७३
सता (सदा) सू १९।११
सतीणा (दे०) प १।४५।१
सतेरा (शतेरा) ज ५।१२
सत्त (सप्तन्) प १।४९ ज १।२० चं ३।३ सू १।७ उ ३।१०१
सत्त (सत्त्व) प २।६४;३६।६२,७७ ज २।१३२; ३।३;७।२१२ उ १।३;३।५१
सत्तंग (सप्ताङ्ग) उ ३।५१
सत्तग (सप्तक) ज ७।१३१।२
सत्तट्ठि (सप्तषष्टि) सू १०।२
सत्तट्ठिधा (सप्तषष्टिधा) सू १०।१५२ से १६०, १६२,१६३;११।२ से ६;१२।७,८,१९ से २८
सत्तट्ठिहा (सप्तषष्टिधा) सू ११।२
सत्तणउत्ति (सप्तनवति) सू १८।१
सत्तत्तरि (सप्तसप्तति) ज ३।२२५
सत्ततीस (सप्तत्रिंशत्) ज ४।५५
सत्तत्तीस (सप्तत्रिंशत्) ज ४।१४२।२
सत्तधणु (सप्तधनुष्) उ ५।२।१
सत्तपएसिय (सप्तप्रदेशिक) प १०।१२
सत्तपदेस (सप्तप्रदेशिक) प १०।१४।५
सत्तभाग (सप्तभाग) प २३।६१,६४,६८,७३,७५ से ७७,८१,८३ से ८५,८९,९०,९२,९९, १०१,१११ से ११४,११७,१२१,१२२,१३०, १३४,१३५,१४०,१४२,१४३,१५२,१५३, १५५,१६०,१६४,१६७,१७१ से १७३
सत्तम (सप्तम) प ६।८०।२;१०।१४।३;३६।८५, ८९ ज ७।९७ सू १०।७७;१२।१६;१३।१० उ २।२२
सत्तमी (सप्तमी) ज ७।१२५
सत्तर (सप्तदशन्) प १०।१४।४ से ६ ज ७।२०२

सत्तरस (सप्तदशन्) प ४।१६ ज ३।७९ सू ८।१
सत्तरसविह (सप्तदशविध) प १६।३८
सत्तरि (सप्तति) प २।५३ ज ५।४९ सू १९।१४
सत्तविह (सप्तविध) प १।१९,५३;१६।२६,३२; २२।२१ से २३,८३,८४,८६,८७,९०; २४।२ से ८,१० से १३;२५।४,५;२६।२ से ६,८ से १०;२७।२,३;३६।७
सत्तसट्ठ (सप्तषष्टि) ज ४।९८
सत्तसट्ठि (सप्तषष्टि) सू १०।२२
सत्तसिक्खावइय (सप्तशिक्षाव्रतिक) उ ३।७९
सत्तहत्तरि (सप्तसप्तति) ज २।४।२
सत्तहा (सप्तधा) ज ७।६५,६८,६९,७१,७२,७४, ७५,७७.७८;५।७२.७३
सत्ताणउइ (सप्तनवति) प २।४९
सत्ताणउत (सप्तनवति) प २।४८
सत्ताणउय (सप्तनवति) ज ७।१८ सू १।२७
सत्तातीस (सप्तत्रिंशत्) प ४।२७९
सत्तालीस (सप्तचत्वारिंशत्) सू १०।१५१
सत्तावण्ण (सप्तपञ्चाशत्) ज ४।६२;७।२१; सू २।३ उ १।१३
सत्तावीस (सप्तविंशति) प ४।२७९ ज १।७ सू १।१०
सत्तावीसइविह (सप्तविंशतिविध) प १७।१३९
सत्तासीय (सप्ताशीति) ज ७।७७
सत्ति (शक्ति) प २।४१ ज ३।३५,१७८
सत्तिवण्ण (सप्तवर्ण) प १।३६।३ उ ३।६४
सत्तिवण्णवडेंसय (सप्तपर्णावतंसक) प २।५०,५२
सत्तिवण्णवण (सप्तपर्णवन) ज २।९;४।११६
सत्तु (शत्रु) ज ३।३,३५,८८,१०९,१७५,२२१
सत्तुस्सेह (सप्तोत्सेध) ज १।५ सू १।५
सत्थ (शस्त्र) ज २।६।१;३।२०,३३,५४,६३,७१, ७७,८४,१०९,११५,१२४,१२५,१३७.१४३, १६७,१८२ उ ३।३८,४०
सत्थ (शास्त्र) उ ३।२८
सत्थवाह (सार्थवाह) प १६।४१ ज २।२५;३।९, १०,७७,८६,१७८,१८६.१८८,१८९,२०६, २१०,२१६,२१९,२२१,२२२ उ १।९२; ३।११,९६,९८,१००,१०१,१०६ से ११२; ५।१०,१७,१९,३६
सत्थवाही (सार्थवाही) उ ३।९८,१०१ से १०५, १०७,१०८,११० से ११३
सत्थीमुहसंठित (स्वस्तिमुखसंस्थित) सू ४।३,४,६,७
सदा (सदा) प २।३०,३१,४१
सदेवीय (सदेवीक) प २०।१२;३४।१५,१६
सद्द (शब्द) प २।३०,३१,४१;१५।३६,३९,४०; १६।४६;२३।१५.१६,१९,२०,३०,३१; ३४।१।२,३४।२३ ज १।१३,२९,३१;२।७, १२.६५;३।९,१२,१४,१८,३० से ३२,४३, ५१,६०,६८,७७,७८,८२,८८,८९,९३,१३०, १३६ १४०,१४९,१५५,१५६,१७२,१७८,१८०, १८५,१८७,२०९,२१२,२१३,२१८,२२२; ४।३,२५,८२;५।२२,२६,३८,५७,५८,७२,७३, ७।१७८ सू २०।७ उ १।६० से ६२,८५ से ८७; ५।१६,१७,२०,२५,२७
सद्दपरिणाम (शब्दपरिणाम) प १३।२१,३१
सद्दपरियारग (शब्दपरिचारक) प ३४।१८,२३,२५
सद्दपरियारणा (शब्दपरिचारणा) प ३४।१७,२३
सद्दव्वया (सद्द्रव्यता) ज ३।३
√सद्दह (श्रत्+धा) सद्दहइ प १।१०१।४,१२ सद्दहाइ प १।१०१।३ सद्दहामि उ ३।१०३; ४।१४;५।२० सद्दहेज्जा प २०।१७,१८,३४
सद्दहणा (श्रद्धान) प १।१०१।१३
√सद्दाव (शब्दय्) सद्दाविस्संति ज २।१४६ सद्दावेइ ज २।९७,१०५,१०७,१११;३।७, १२,१५,१८,२१,२८,३१,३४,४१,४९,५२, ५८,६१,६६,६९,७४,७६,७७,८३,९१,९९, १७०,१७३,१७५,१८०,१८३,१८८,१९१, १९९,२०७,२१२;५।२२,२८,५४,६१,६८,६९, ७२,१२८,१४१,१४७,१५१,१५४,१६४,१६८ उ १।१७;३।९१;४।१६;५।१५ सद्दावेंति ३।१०५,१०७,११३;५।३,१४ सद्दावेमि उ १।७९

सद्दावइ (शब्दापातिन्) ज ४।४२,५७,५८,६०,७१, ७४

सद्दावति (शब्दापातिन्) प १६।३०

सद्दावित्ता (शब्दयित्वा) ज २।१४६

सद्दावेत्ता (शब्दयित्वा) ज २।६७ उ १।१७;३।७; ४।१६;५।१५

सद्दुण्णइय (शब्दोन्नतिक) ज २।१२;४।३,२५

सद्ध (श्राद्ध) ज २।३०

सद्धा (श्रद्धा) सू २०।६।३

सद्धि (सार्धम्) प ३४।१६,२१ से २४ ज २।६५, ८८,६०;३।६,२२,३६,७७,७८,१८६,२०४, २२२,२२४;५।१,५,४१,४४,४६,४७, ५६, ६७,१३४;७।१३५,१८४ सू १०।२ उ १।२; ३।६८;४।१८;५।१६ उ १।२;३।६८;४।१८; ५।१६

सन्नद्ध (सन्नद्ध) ज ३।७७

सन्निकास (सन्निकाश) ज ३।२४

सन्निभ (सन्निभ) प २।३१

सन्निवाइय (सान्निपातिक) उ ३।३५

सन्निहिय (सन्निहित) प २।४६,४७

सपक्ख (स्वपक्ष) उ १।२२,१४०

सपक्खि (स्वपक्षिन्) उ १।४६

सपक्खि (सपक्षम्) प २।५२ से ५६,६१; १६।३०

सपज्जवसिय (सपर्यवसित) प १८।१३,२५,५५, ५६,६३,६४,६७,६८,७६,७७,७६,८३,८६, ६०,१०५,१११,१२२,१२६

सपडिदिसि (सप्रतिदिश्) प २।५२ से ५६,६१; १६।३० उ १।२२,४६,१४०

सपरिनिव्वाण (सपरिनिर्वाण) ज ४।२७७

सपरियार (सपरिचार) ३४।१५,१६

सपरिवार (सपरिवार) प २।३२,३३,३५,४३, ४८ से ५१ ज १।४४,४५;२।६०;४।५०,५६, १०२,११२,१३५,१४७,१५५,२२१,२२२, २२३।१,२२४।१;५।१,१६,४१,५०,५८

सपुव्वावर (सपूर्वापर) ज ४।२१,२५६ सू ३।१; १०।१२७;१८।१,२१

सप्प (सर्प) ज ७।१३०,१८६।३

सप्पदेवया (सर्पदेवता) सू १०।८३

सप्पभ (सप्रभ) प २।३१,४१,४६,५६,६३,६६ ज १।८,२३;५।३२

सप्पसुयंधा (सर्पसुगन्धा) प १।४८।३ धवलवघुआ

सप्पह (सप्रभ) प २।३० ज १।२१

सप्पुरिस (सत्पुरुष) प २।४५,४५।२

सप्फाय (दे०) प १।४८।५०

सबर (शबर) प १।८६

सबरी (शबरी) ज ३।१११२

सब्भितर (साभ्यन्तर) ज ३।७,१८४

सभा (सभा) ज २।६५,१२०;४।१२०,१२१,१२६, १३१,१४०;५।५,७,१८,२२,२३,५०;७।१८४, १८५ सू १८।२२,२३ उ ३।६,३६,६०,१५६, १६६;४।५;५।१५,१६

सभाव (स्वभाव) ज २।१५

सभावणग (सभावनाक) ज २।७२

सम (सम) प १।४८।१० से १६;१३।२२।१,२; १७।१।१;२१।१०२;२२।६६,७०;२३।१६७; २६।६,६;३६।८२।१ ज २।७१;३।३५,१३८, १५१,१७०,२११;४।३,२५,५७,६७,१८०; १८३;५।१८,४३;७।३७,३८,१३५।१,४,१६८, १७८

समइक्कंत (समतिक्रान्त) प २।३१

समइच्छमाण (समतिक्रामत्) ज २।६५;३।१८६, २०४

समंतओ (समन्ततस्) ज २।६५

समंता (समन्तात्) प १७।१०६ से १११ ज १।७, ६,२३,३२,३५;२।१३१;४।३,६,१४,२०,२१, २५,३१,४५,४७,५७,६८,७६,८६,१०३,१०७, १३१,१४३,१४८,१४६,१५२,२११,२१३, २१५,२३४,२४० से २४२,२४५;५।५,७,३८, ५७;७।५८ सू ३।१ उ ५।८

समकम्म (समकर्मन्) प १७।३,४,१५,१६

समकिरिय (समक्रिय) प १७।१।१,१७।१०,११,२१
समक्खेत्त (समक्षेत्र) सू १०।४,५
समग (समक) प १६।५२ ज १।२३,२५,३२; ३।७८;७।११२।२ सू १०।१२६।१,२
समग्ग (समग्र) ज ३।२२१;४।३५,३७,४२,७१, ७७,६०,६४,१७४,१८३,२६२;६।१६ से २२; सू २०।७
समचउक्कोणसंठित (समचतुष्कोणसंस्थित) सू १।२५;४।२
समचउरंस (समचतुरस्र) प २।३०;१५।१६,३५; २१।२६,३१,३२,३६,६१,७३;२३।४६ ज १।५;२।१६,४७,८६;७।१६७ उ १।३
समचउरंससंठाणसंठिय (समचतुरस्रसंस्थानसंस्थित) सू १।५,२५
समचउरंससंठित (समचतुरस्रसंस्थित) सू ४।२; १०।७४
समचक्कवालसंठित (समचक्रवालसंस्थित) सू १।२५;४।२;१६।३,१३,१७,१६,२३
समजस (समयशस्) प २।६०
समजोगि (समयोगिन्) ज ५।५८
समज्जुतीय (समद्युतिक) प २।६०
समट्ठ (समर्थ) प ११।११ से २०; १५।४४; १७।१,३,५,८,१०,१२,१४,१५,२४,१२३ से १२८,१३० से १३२,१३४,१३५;२०।२,३,१४ से १७,१६ से २५,२७ से ३०,३३,३४,४० से ४८,५२,५३,५६,६०;२२।७६,८०,८२,६२, ६४,६५;३०।२५;३६।८०,८१,८३,८८,६२ ज २।१७,१८,२१ से २३,२५,२८,३० से ३३, ३८ से ४०,४२,४३;४।१०७;७।१८४ सू १८।२२
समण (श्रमण) प २।३,६,६,१२,१५,२० से २७,६० से ६३;३।३६;१५।४३,४५;३६।७६,८१ ज १।५,६;२।१६,१६ से २१,२३,२५,२६, २८,३० से ३३,३६,३६ से ४३,४८,४६,५१, ५४,५६,६८,७२,७४,८२,१२१,१२६,१३०, १३८,१४०,१४६,१५४,१५६,१६०,१६३; ५।५८;७।१०१,१०२,१२६,२१४ चं १० सू १।५;८।१;२०।७ उ १।२,४ से ८,१६, १७,१६ से २६,१४२,१४३;२।१ से ३,१०, १२,१४,१५,२१;३।१ से ३,७,८,१२,१६,२०, २२,२३,२६,३८,४०,४४,८७,८८,६१,६३, १५३,१५४,१६६ १६७,१७०;४।१ से ३,२७, ५।१ से ३,३७,४४
समणी (श्रमणी) ज ७।२१४ उ ३।१०२,११५, ११७,११८;४।२२
समणुगम्ममाण (समनुगम्यमान) ज २।६४
समणोवासग (श्रमणोपासक) ज २।७६ उ ३।८३
समणोवासय (श्रमणोपासक) उ १।२०;५।३४
समणोवासिया (श्रमणोपासिका) ज २।७७ उ १।२०; ३।१०५,१०६,१४४
समण्णागय (समन्वागत) ज ५।५ उ १।६३
समतल (समतल) ज ३।६५,१५६
समतिक्कंत (समतिक्रान्त) प २।६७
समत्त (समस्त) प २।६४।१५ ज ३।१७५ उ ३।६१
समत्त (समाप्त) ज ३।१६७;४।२००;५।५८; ७।१०१,१०२ सू १३।१०,१३,१४ से १६ उ १।१४८;३।६१
समत्थ (समर्थ) ज ३।१०६;५।५ सू २०।७
समपज्जवसिय (समपर्यवसित) सू १२।१० से १२
√**समप्प** (सं+अर्पय्) समप्पेइ ज ३।१३८;४।३५, ३७,४२,७१,७७,६०,१७४,१८३,१८६,२६२; ६।२१ से २४ समप्पेंति ज ३।६७,१६१; ६।१६,२५,२६;४।६४ सू १०।५ समप्पेति सू १०।५
समबल (समबल) प २।६०,६३
समभिरूढ (समभिरूढ) प १६।४६ ज ३।१०६
समभिलोएमाण (समभिलोकमान) प १७।१०६ से १११
√**समभिलोय** (सं+अभि+लोक्) समभिलोएज्जा प १७।१०७,१०६,१११
समय (समय) प १।१३,१०३,१०६,१०७,१०६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११०,११३,११४,११६,११६,१२०,१२२,
१२३;२।६४।५;६।१।१,६।१ से १८,२० से
४५,६० से ६४,६७,६८; १०।३०।१,२,
१०।७०,७१; १२।२४,३३;१५।५८।१;१६।३४,
३७; १८।५६,६०,६२,६३,६७,८०,८१,८४,
८७,८६,६५,६८,१०२.१०४; २०।१।१,२०।६
से १३; २२।५४,५६,५८,५६.७६;२३।६३,
१६३;३०।२५,२६;३६।८५,८७,६२ ज १।२,
४,५,१४;२।४,७१,८८,८६ ६१,१३१,१३४,
१३८,१४१;३।१०३;५।१,६,८,६ से १३,१८,
४८,५० से ५२;७।५७,६०,११२।१ चं ६।६,
१० सू १।१,४,५; ६।१;८।१; ६।२;१०।१५२
से १६१; ११।२ से ६,१६ से २८,३०;
१३।१,२; १७।१; १६।२५; २०।३,५,७
उ १।१ से ३,६,१६,२८,५१,६५,७६,१४४;
२।४,१७;३।४ से ६,६,१२,२१,२४,२५,२७,
४८,५०,५५ से ५७,६४,६८,७१,७४,७६,८६,
६०,६५,६८,६६,१०६,१३१,१३२,१५५ से
१५७.१५६,१६८,१६६;४।४ से ६,१०;५।४,
१४,२१,२४,२६,३६,४०,४१

समय (समक) ज १।१४

समयक्खेत्त (समयक्षेत्र) सू १६।२०,२१

समयखेत्त (समयक्षेत्र) प २१।८६

समर (समर) ज ३।३,३५.१०३

समवण्ण (समवर्ण) प १७।५,६,१७

समवेदण (समवेदन) प १७।१।१,१७।८,६,१६,२०

समसरीर (समशरीर) प १७।१,२,२८,२६

समसोक्ख (समसौख्य) २।६०,६३

समा (समा) ज २।७ से १५,२१ से ४५,५० से
५६,८८,१२१ से १३३,१३८ से १४०,१४७
से १५०,१५२ से १६४;३।१३५।१;४।१८०,
१८३;७।३७ सू ६।४;१८।२,३

समाउय (समायुष्क) प १७।१।१,१७।१२,१३

समागम (समागम) ज २।४,६

समाण (सत्) प १५।५१,५२;१७।११६;
२८।१०५;३४।१६,२१ से २४;३६।६२,७७
ज २।६० से ६२,७१,१४२ से १४५;३।३,८,
१३,१४,१६,२२,२५,२६,३०,३६,३८,४२,
४३,४६,५०,५१,५३,५६,६०,६२,६७,६८,
७०,७५,७७,८०,८२,८४,८६,६७,१००,
१११,११८,१२५,१२६,१३२,१३६,१४२,
१४८,१४६,१५६,१६१,१६५,१६६,१७८,
१८१,१८६,१६२,२०२,२०८,२१२ से २१४,
२१७,२१६;४।२३,२५,३५,३७,३८,४२,६५,
७१,७३,७७,६०,६१,६४,१७४,१८३,१८६,
१६५,२६२;५।१५,२२,२४,२६,२६,४३.७०
सू ६।१ उ १।१७,२३ से २६,३७,४०,४५,
५२,५५ से ५८,६०,६२,७४,७७,८० से ८३,
८५,६० से ६३,६६,१०७,१०८,११०,११८,
१२७; ३।१३,१५,२६,५०,५५,७८,८२,८४,
१०६,१०८,११२,१२१,१४७,१६०,१६२;
४।११,२०;५।१५,१७,३८

समाण (समान) ज ३।११७ सू २०।७ उ ३।१२८

√समाण (सं+आप्) समाणेइ ज ७।१०४
सू १०।१३० समाणेति सू १०।१२६

समाणीत (समानीत) उ ३।४८,५०

समाणुभाव (समानुभाव) प २।६०,६३ ज २।१३१;
४।५६

√समादह (सं+आ+धा) समादहे उ ३।५१

समादीय (समादिक) सू १२।१० से १२

समायरित्तए (समाचरितुम्) उ ३।१०२

समारंभ (समारम्भ) उ १।२७,१४०

समारूढ (समारूढ) ज ३।१२१

√समालभ (सं+आ+लभ्) समालभइ
उ ३।११४

समावण्णग (समापन्नक) ज ७।५५,५८

समास (समास) प ३।३८,३६ ज ७।१०१,१०२
सू १६।२२।१

समासओ (समासतस्) प १।४८।५४;१।४८
ज २।६६

समासतो (समासतस्) प १।४,२०,२३,२६,२६,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६ से ५१,५३,६०,६६,७५,७६,८१,८८, १३१ से १३३,१३५,१३७,१३८
√समासाद (सं+आ+सादय्) समासादेति सू १५।८
समासादेत्ता (समासाद्य) सू १५।८ से १३
समासादेमाण (समासादयत्) सू २।३
√समासास (सं+आ+श्वासय्) समासासेइ उ १।४१
समासासेत्ता (समाश्वास्य) उ १।४१
समाहय (समाहत) ज ५।५
समाहार (समाहार) प १७।१,२,१४,२४,२५,२८, २६
समाहारा (समाहारा) ज ५।६।१;७।१२०।२ सू १०।८८।२
समाहि (समाधि) उ ३।१५०,१६१;५।२८,३६,४१
समाहिय (समाहित) ज ५।५८
समिइ (समिति) प १।१०१।१० ज २।४,६;३।२२१ उ १।६३
समिड्ढिय (समर्द्धिक) प २।६०,६३
समित (समित) सू ६।१
समिद्ध (समृद्ध) ज १।२,२६; २।१२; ३।१,८१, १६७।१४,१७५ चं ६ सू १।१ उ १।१,६,२८; ३।१५७; ५।६,२४
समिरीय (समरीचिक) प २।३०,३१,४१,४६,५६, ६३,६६ ज १।८,२३,३१
समिहा (समिध्) ज ५।१६
समिहाकट्ठ (समिध्काष्ठ) उ ३।५१
समीकर (समी+कृ) समीकरेहिंति ज २।१३१
समीकरण (समीकरण) ज ३।८८
समीकरणया (समीकरण) प ३६।८२।१
समुइय (समुदित) ज २।१४५,१४६
समुक्खित्त (समुत्क्षिप्त) उ १।१३८
समुग्गपक्खि (समुद्गपक्षिन्) प १।७७,८०
समुग्गय (समुद्गत) प ३६।८१
समुग्गयभूय (समुद्गतभूत) ज ३।१२१
समुग्घात (समुद्घात) प २।२१
समुग्घाय (समुद्घात) प १।१।७;२।१,२,४,५,७,८, १०,११,१३,१४,१६ से २०,२२ से ३१,४६; ३६।१,४ से ७,४७,५३ से ५८,८२,८३;८३।१ २;३६।८६,८८
समुज्जाय (समुद्वात) ज २।८८,८६;३।२२५
√समुट्ठ (सं+उत्+ष्ठा) समुट्ठेति प १।७४
समुत्त (समुक्त) ज ३।६,१७,२१,३४,१७७,२२२
समुत्तिण्ण (समुत्तीर्ण) ज ३।८१
समुदय (समुदय) ज २।४,६;३।३,१२,३१,७८, १८०,२०६; ५।२२,२६,३८,६७ उ १।६२; ५।१७
समुदाण (समुदान) उ ३।१००,१३३
समुदीरेमाण (समुदीरयत्) प ३४।२३
समुद्द (समुद्र) प १।८४; २।१,४,७,१३,१६ से १६, २८,२६; १५।५५;२१।८७,६०,६१;३३।१० से १२,१५ से १७;३६।८१ ज १।७,४६,४८; २।६०,६७,६८;३।१,३६;४।५२;५।४४,५५; ६।१,२,४; ७।४,६३,८७ सू १।१४,१६,१७, १६ से २२,२४,२७;२।३;३।१;४।४,७;६।१; ८।१;१०।१३२;१६।१ से ३,५,६ से १२; १६।२२।२६;१६।२८,२६ से ३२,३५,३६,३८ उ १।१३८
समुद्दय (समुद्रक) प १।७५,८०,८१
समुद्दलिक्खा (समुद्रलिक्षा) प १।४६
समुद्दवायस (समुद्रवायस) प १।७८
समुद्दविजय (समुद्रविजय) उ ५।१०,१७,१६
√समुप्पज्ज (सं+उत्+पद्) समुप्पज्जइ प २८।७५,१०५;३४।१६,२१ से २४ ज २।२७; २६,५६;४।१७७,१८१ समुप्पज्जंति ज ५।१ उ १।१११ समुप्पज्जति प २८।४,२५,२७,२६, ३८,४७,५०,७३,७४,६७;३४।२३ समुप्पज्जित्था ज २।५६,६३,१२४,१२५; ३।२,४,२६,३६,४७,५६,१२२,१३३,१४५, १८८;५।२२ समुप्पज्जिस्सइ ज २।१५६ समुप्पज्जिस्संति ज २।१५,२१,५३
समुप्पण्ण (समुत्पन्न) ज ३।१२३,२१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुप्पन्न (समुत्पन्न) ज २।७१,८५; ३।५
उ १।१११,११२
समुप्पन्नकोउहल्ल (समुत्पन्नकौतूहल) ज १।६
उ १।१११,११२
समुप्पन्नसंसय (समुत्पन्नसंशय) ज १।६
समुप्पन्नसड्ढ (समुत्पन्नश्रद्ध) ज १।६
समुब्भव (समुद्भव) ज ५।५,४६
समुल्लालिय (समुल्लालित) उ १।१३८
समुल्लावग (समुल्लापक) उ ३।६८
समुल्लावय (समुल्लापक) उ ३।६८
समुवगूढ (समुपगूढ) ज ४।६१,२७३
समुस्सासणिस्सास (समुच्छ्वासनिःश्वास) प १७।१,
२,२८,२६
समुस्सासणीसास (समुच्छ्वासनिःश्वास) प १७।२
समूसिय (समुच्छ्रित) ज ३।१७८; ५।४३
समोगाढ (समवगाढ) प २।६४।१० सू १६।२६
समोच्छण्ण (समवच्छन्न) ज ३।१२१
समोप्पणा (समर्पणा) ज ३।११७
समोयर (सं+अव+तॄ) समोयरंति ज ७।६७
समोवण्णग (समोपपन्नक) प १७।१३
समोसढ (समवसृत) ज १।४ चं ६ सू १।४
उ ३।५,१२,२१,२४,२८,२६,८६,१५६;४।४;
५।३७
√समोसर (सं+अव+सृ) समोसरइ ज ५।५०
समोसरंति ज ५।४६
समोसरण (समवसरण) ज ५।५३ उ ३।२१;४।१०
समोसरिय (समवसृत) ज ५।४८ उ १।१६;२।६३;
३।१५५,१६८;५।१४
समोहणित्ता (समवहत्य) प ३६।५६,६६,७०,७३,
७४ ज ३।११५
√समोहण (सं+अव+हन्) समोहण्णंति प
३६।८३ ज ३।११५,१६२,२०८;५।५,७
समोहण्णति प ३६।८२
समोहत (समवहत) प ३।१७४
समोहय (समवहत) प ३।१७४;१५।४३;२१।८४
से ६३; ३६।३५ से ४१,४८ से ५२,५६,६५,
६६,७०,७३,७४,७६
सम्म (सम्यक्) सू १०।१२६।४
सम्मं (सम्यक्) ज २।६७; ३।१८५,१८६,२०६;
७।११२।३,४
सम्मट्ठरत्थंतरावणवीहिय
(संमृष्टरथ्यान्तरापणवीथिक) ज ५।५७
सम्मत (सम्मत) प ११।३३।१
सम्मतसच्च (सम्मतसत्य) प ११।३३
सम्मत्त (सम्यक्त्व) प १।१।५,१।१०१।६,७,१३;
३।१।१,१८।१।१; २०।३६; २३।१७४;३४।१।२
ज २।१३३ उ ३।४७,८३
सम्मत्तवेदणिज्ज (सम्यक्त्ववेदनीय) प २३।१८१
सम्मत्तवेयणिज्ज (सम्यक्त्ववेदनीय) प २३।१७,३३,
६५,१३७
सम्मत्ताभिगमि (सम्यक्त्वाभिगमिन्) प ३४।१४
सम्मद्दंसणपरिणाम (सम्यक्दर्शनपरिणाम)
प १३।११
सम्मद्दिट्ठि (सम्यक्दृष्टि) प ३।१००;६।६७,६८;
१३।१४,१७;१७।११,२३,२५;१८।७६;१६।१
से ५; २१।७२; २३।२००,२०१;२८।१२५,१३५
सम्मय (सम्मत) उ ३।१२८
सम्मा (सम्यक्) प १३।११
सम्माण (सं+मानय्) सम्माणेइ ज ३।६,२७,४०,
४८,५७,६५,७३,६१,१२७,१३३,१३६,१४६,
१५२,१८६,२१६ सम्माणेज्ज ज २।६७
सम्माणणिज्ज (सम्माननीय) सू १८।२३
सम्माणवत्तिय (सम्मानप्रत्यय) ज ५।२७
सम्माणियदोहद (सम्मानितदोहद) उ १।५०,७५
सम्माणेत्ता (सम्मान्य) ज ३।६ उ ३।५०
सम्मामिच्छत्त (सम्यक्मिथ्यात्व) प २३।१७४
सम्मामिच्छत्तवेदणिज्ज (सम्यक्मिथ्यात्ववेदनीय)
प २३।६७,१८१
सम्मामिच्छत्तवेयणिज्ज (सम्यक्मिथ्यात्ववेदनीय)
प २३।१७,३३,१३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मामिच्छत्ताभिगमि (सम्यक्मिथ्यात्वाभिगमिन्) प ३४।१४
सम्मामिच्छद्दिट्ठि (सम्यक्मिथ्यादृष्टि) प ६।६७; १३।१४,१७;१७।११,२३,२५;१८।७८;१६।१ से ५;२१।७२;२८।१२७,१३८
सम्मामिच्छादंसणपरिणाम (सम्यक्मिथ्यादर्शनपरिणाम) प १३।११
सम्मामिच्छादिट्ठि (सम्यक्मिथ्यादृष्टि) प ३।१००
√**सम्मुच्छ** (सं+मुर्च्छ्) सम्मुच्छंति प १।८४ सम्मुच्छति प १।८४
सम्मुच्छिम (संमूर्च्छिम्) प १।४६ से ५१,६०,६६, ७५,७६,८१ से ८४;३।१८३;४।१०७ से १०६,११६ से ११८,१२५ से १२७,१३४ से १३६,१४३ से १४५,१५२ से १५४,१६१; ६।२१,२३,६५,७१,७२,७४,८४,६४,६७,१००, १०२,१०८;६।६,१६,२२;१६।२८;१७।४२, ४६,६३ से ६५,६७,८६; २१।६,१०,१२,१३, १५ से १६,३०,३३,३५,३७,४३ से ४७; २१।४७।२,२१।४८,५३,५४,७२
सम्मुति (सन्मति) ज २।५६,६०
सय (शत) प २।४१ से ४३,४६,५५,५८,५६।२, ६२।१;२।६३,२।६४।६;१२।३६,३७;१८।३१, ३६,६०,११३;२१।६५;२२।४५;२३।७४,८६, ८८,८६,६५,६८,६६,१०१ से १०४,१११, ११३,११७,११८,१३०,१३१,१६४,१८३,१८७ ज १।७,६,१०,१८,२०,२३,२६,२७,३८,४०, ४८; २।४।३,१६,४८,५२,६४,७५,७७,७८, ८०,८६,१२८,१४८,१५७,१६१;३।१,१८,३१, ३५,६३,६५,६६ से १०१,१०४,१०५,१०६, १२६,१५६,१७८,१८०,१६३,२०६,२१०, २१६,२२१,२२२;४।६,१०,१२,१३,२३,२५, ३२,४६,५५,५७,६२,६५,६७,७२,७३,७५, ७६,८१,८६,६०,६१,६३,६५,६८,१०३,११०, १२०,१४१,१४२।१,२,१४३,१४७,१५४,१६३ से १६५,१६७,१६६,१७८,१८३,२००,२०५ से २०७,२१३ से २१६,२२१,२२६,२३४,२४०, २४१,२४५,२४८;५।३,४,२८,३३,५२,५३,५८; ६।७,६।११,१४,१५;७।११,७।२ से ४,१०, १२,१४ से २५,२७,३०,३२,३४,५४,६२ से ६४,६७ से ८१,८४,८६,८७,८८,६१ से ६६,६८ से १०२,११०,१२७,१३।११,१७१ से १७४, १६०,२०१ से २०७ सू १।८।२,१।१० से १२, १४,१६ से २४,२६ से ३१;२।१,३;४।४,५, ७,८,१०;६।१;८।१;१०।१३८ से १५१, १६२ से १६४,१६६ से १६६;१२।२,५; १३।४;१४।३;१८।१,१३,३०;१६।५।२, १६।८।१,२,१६।२१।५,१६।२८।६,६ उ १।२; ३।५५,६२;५।२८,४१
सय (स्वक) ज ३।७७,८४,१०२,१५३,१६२, १७८,१८३,१८६,२२४;५।१,६,८,१०,१३, २२,२६,४३,५६ उ १।३३,४२,४४,१०८, १२१,१२२,१२६; ३।११,४३,५३,१४८;४।१५
सय (शी,स्वप्) सयंति ज १।१३,३०,३३; २।७; ४।२,८७,२१५,२४७;६।८
सयं (स्वयं) प १।१०१।३; २३।१३ से २३ सू १६।११।३
सयंजय (शतञ्जय) ज ७।११७।२ सू १०।८६।२
सयंपभ (स्वयंप्रभ) ज ४।२६०।१ सू ५।१;२०।८, २०।८।६
सयंबुद्ध (स्वयंबुद्ध) प १।१०५,१०६,११८,११६
सयंबुद्धसिद्ध (स्वयंबुद्धसिद्ध) प १।१२
सयंभुरमण (स्वयंभूरमण) प २१।८७,६०,६१
सयंभूरमण (स्वयम्भूरमण) प १५।५५,५५।२ सू १६।३८
सयंसंबुद्ध (स्वयंसंबुद्ध) ज ५।२१
सयक्कउ (शतक्रतु) ज ५।१८
सयग्घी (दे०) प २।३०,३१,४१
सयज्जल (शतज्वल) ज ४।२१०।१;
सयण (शयन) प ११।२५ ज ३।१०३ सू २०।४,७ उ ३।५०,११०,१११;४।१६,१८
सयण (स्वजन) ज २।६६
सयणिज्ज (शयनीय) ज ४।१३,३३,७६,६३,१३५,

१३६,१४०,१४७,१५३;५।१७ सू २०।७ उ १।४६;५।१३,२५,३१

सयधणु (शतधनुष्) उ ५।२।१

सयपत्त (शतपत्र) प १।४६ ज ४।३,२५

सयपत्तहत्थगय (हस्तगतशतपत्र) ज ३।१०

सयपाग (शतपाक) ज ५।१४

सयपुप्फा (शतपुष्पा) प १।४४।३ सौंफ

सयभिसया (शतभिषग्) ज ७।११३।१,१२८; १३४।२;१३५।२,१३६,१३९,१४२,१४६,१५७

सयमेव (स्वयमेव) प १।१०१।३ ज २।६५; ३।१०२,१६२,२२४ सू १३।५,६,१२,१३,१७ उ १।६५,६६,७१,८८,९४;३।८१,८२,११३; ४।२०

सयरिसह (शतवृषभ) सू १०।८४।३

सयरी (शतावरी) प १।३६।२

सयल (सकल) ज ३।३१ सू १९।२१।६

सयवत्त (शतपत्र) प २।३१,४८ ज ४।४६

सयवसह (शतवृषभ) ज ७।१२२।३

सयसहस्स (शतसहस्र) प १।२३,२६,२९,४८,४९, ५१,६०,६६,८४; २।२२,२५,२।२७।४,२।३०, ३३ से ३५,४०।३,४,२।४६,४९;१५।४१; ३६।८१ ज १।७; २।४,१८,६४,८७,८८; ३।१७८,१८५,२०६,२२१,२२५;४।२५९,२६२; ५।१८,२४,२५,२८,४४,४८,४९।२;६।८।१, २० से २६; ७।१।१,७।१४ से १९,७३,७४, ७८,९३,९४,९८ से १००,१८७,२०७ सू १।१४,२१,२७;२।३;३।१;६।१;८।१; १०।१६५,१७३;१२।९;१८।२७;१९।१।१, १९।४,८,११,१४,१५।४,१८,२०; २१।१,५ उ ३।१६

सयसाहस्सिय (शतसाहस्रिक) सू १९।२६

सयसाहस्सी (शतसाहस्री) ज ४।२१;६।८; ७।५८

सया (सदा) ज ७।१२९,१७० सू १०।७५,७७, १३६,१७३; १९।१,११,२१;२०।२

सयावरण (सदावरण) ज ३।१०९ मसहरी

सर (शर) प १।४१।१ ज ३।२४।१,२;३।२५,२६, ३१,३५,३८,३९,४६,४७,१३१।१,२,१३२, १३३,१३५,१७८ उ १।१३८

सर (सरस्) प २।४,१३,१६ से १९,२८; ११।७७

सर (स्वर) ज २।१२,१३३; ३।३;४।३,२५;५।२८; ७।१७८

सरंब (दे०) प १।७६

सरग (शरक) ज ५।१६ उ ३।५६

सरड (सरट) प १।७६

सरण (शरण) ज ३।१२५,१२६;५।२१

सरणदय (शरणदय) ज ५।२१

सरणागय (शरणागत) ज ३।८१ उ १।१२८

सरद (शरद्) सू १२।१४

सरपंतिया (सरःपंक्तिका) प २।४,१३,१६ से १९, २८;११।७७

सरभ (शरभ) प १।६४ ज १।३७;२।३५,१०१; ४।२७;५।२८

सरय (शरक) उ ३।५१

सरय (शरद्) उ ५।२५

सरल (सरल) प १।४३।१,१।४७।१

सरलवण (सरलवन) ज २।९

सरस (सरस) प २।३०,३१,४१ ज २।९५,९६,९९, १००;३।७,९,१२,८२,८८,१८४,२११,२२२; ५।१४,१५,५५,५८

सरसर (सरःसरस्) ज ३।१०२,१५६,१६२

सरसरपंतिया (सरःसरःपंक्तिका) प २।४,१३,१६ से १९,२८;११।७७

सराग (सराग) प १।१००,१०१,१११ से ११४; १७।३३

सरागसंजय (सरागसंयत) प १७।२५

सरासण (शरासन) ज ३।७७,१०७,१२४ उ १।३८

सरि (सदृक्) ज ३।१६७।१३ उ ३।१७१;४।२८

सरिच्छ (सदृश) ज ३।१८,५२,६१,६६,१३१, १३६,१३७,१४१,१६४,१८०

सरिस (सदृश) प १।४८।३८;२।३१ से ३३

ज १।४१,४६;२।१५,१६;३।३,३५,७६,११६, १३५,१८८;४।५२,१०६,१६३,१७२,१७४, १७७,२००,२०४,२१०,२१२,२२६;७।१७८ सू १०।१६२;१६।३१,३५,३८ उ १।१४८; २।२२

सरिसय (सदृशक) ज १।४६

सरिसव (सर्षप) प १।४४।२,४५।२,१।४७।२ ज २।३७ उ ३।३७,३८

सरिसवय (सदृशवयस्) उ ३।३८

सरिसवय (सर्षपक) उ ३।३८

सरिसवसमुग्ग (सर्षपसमुद्ग) ज ५।५५

सरिसवा (सदृश्वयस्) उ ३।३८,४०,४२

सरीणामय (सदृग्नामक) ज १।४६

सरीर (शरीर) प १।११५,१।४७।२,३,१।४८।५३, ५७;११।३०;३०।२;१२।१;१४।५;१५।१०,२३; १६।२३;१७।११;२१।११;२१।३८,४० से ४२,४८,५३,५६,६१,६३ से ६६,६८ से ७१, ७४,८४ से ९३;२८।१२,९८ से १०१; १०६।१;३६।५६,६६,७०,७४ ज २।४५,४७, ६०;३।८२,८५,१०९,१३८ सू २०।७ उ १।१६,३५,४२;३।८,२६,३५,१२७,१४१; ४।१२,१८

सरीरंगोवंगणाम (शरीराङ्गोपाङ्गनामन्) प २३।३८,४२,९२

सरीरग (शरीरक) ज २।९९,१००,१०३,१०४, १०७,१०८

सरीरणाम (शरीरनामन्) प २३।३८,४१,८९ से ९३,१४६,१७३,१७४

सरीरत्थ (शरीरस्थ) प ३६।८५

सरीरपज्जत्ति (शरीरपर्याप्ति) प २८।१४२,१४३ उ ३।१५,८४

सरीरबंधणणाम (शरीरबन्धननामन्) प २३।३८, ४३,९२

सरीरबाओसिया (शरीरबाकुशिका) उ ४।२१,२२, २८

सरीरय (शरीरक) प १२।२ से ५;२१।१,२१।६२

सरीरसंघातणाम (शरीरसंघातनामन्) प २३।४४

सरीरसंघायणाम (शरीरसंघातनामन्) प २३।३८, ४४,९३

सरूव (स्वरूप) ज ५।४३

सललिय (सललित) चं १।१

सलाइया (शलाकिका) ज ५।५

सलागा (शलाका) ज ३।११७;५।५

सलिंगसिद्ध (स्वलिङ्गसिद्ध) प १।१२

सलिंगि (स्वलिङ्गिन्) प २०।६१

सलिल (सलिल) ज ३।७९,१०९;४।३,२५,९४ सू ३।१

सलिलबिल (सलिलबिल) ज २।१३१

सलिला (सलिला) ज ३।७९,११६;४।३५,३७,४२, ७१,७७,९०,९४,१७४,१८३,२६२;६।६।११, ६।१९ से २६

सलिलावई (सलिलावती) ज ४।२१२,४।२१२।१

सलील (सलील) ज २।१५

सलेस (सलेश्य) प १८।६८;२८।१२२,१२३

सलेस्स (सलेश्य) प ३।९९,१७।२८,५६

सल्ल (दे०) प १।७६

सल्लई (सल्लकी) प १।३५।१,१।३७।१

सल्लगत्तण (शल्यकर्तन) ज ५।५८

सवंतीकरण (सवर्णीकरण) उ १।४६

सवण (श्रवण) ज २।१५;३।२२५;७।११३।१, १२८,१३०,१३६,१३८,१४१,१४९,१५६ सू १०।१ से ६,८,२०,२३,२८,५६,६३,७५, ७९,९३,१२०,१२२,१३० से १३५;१५।९

सवणता (श्रवण) प २०।२८

सवणया (श्रवण) प २०।१७,१८,२२,२५,२९, ३४,४५ उ १।१७,३६,४०,४२,४३

सवहसाविय (शपथशापित) उ १।५७,८२

सवालुइल्ल (सवालुक) ज ३।१०९

सविणय (सविनय) ज ३।८१

सवितु (सवितृ) ज ७।१३०,१८६

सवियादेवया (सवितृदेवता) सू १०।८३

सविलेवण (सविलेपन) प ३६।८१

सविसय (स्वविषय) प ११।६७,६८;२८।१७,१८, ६३,६४ ज ७।४६
सविसेस (सविशेष) ज २।६;४।१५६;७।७,६६, ६० सू १८।६ से १३
सवेद (सवेद) प २८।१४०
सवेदग (सवेदक) प ३।६७
सवेदय (सवेदक) प १८।५६
सवेयग (सवेदक) प ३।६७
सव्व (सर्व) प १।१।२ ज १।७ चं १।२ सू १।१० उ १।७०
सव्वओ (सर्वतस्) प १७।१०६ से १११;२८।१।१, २८।२१,६७ ज १।७,६,२३,३५;४।३,२१०, २१४,२४१,२४२ सू ३।१ उ ५।८
सव्वओभद्द (सर्वतोभद्र) ज ३।३२;५।४६।३
सव्वंग (सर्वाङ्ग) ज २।१५ उ १।२३,६१
सव्वकज्जवड्ढावय (सर्वकार्यवर्धापक) उ ३।११
सव्वकामसमिद्ध (सर्वकामसमृद्ध) ज ७।११७।१ सू १०।८६।१
सव्वकालतित्त (सर्वकालतृप्त) प २।६४।२०
सव्वक्खरसंनिवाइ (सर्वाक्षरसन्निपातिन्) ज २।७८
सव्वक्खरसंनिवाति (सर्वाक्षरसन्निपातिन्) ज १।५
सव्वखुड्डाय (सर्वक्षुद्रक) सू १।१४
सव्वग्ग (सर्वाग्र) ज ४।६,१४,१४६,२५६;७।१६८, १६६,२०१,२०३,२०५,२०७
सव्वज्जुणसुव्वणमती (सर्वार्जुनस्वर्णमयी) प २।६४
सव्वट्ठ (सर्वार्थ) ज ७।१२२ सू १०।८४।३
सव्वट्ठगसिद्ध (सर्वार्थकसिद्ध) प ६।११०
सव्वट्ठसिद्ध (सर्वार्थसिद्ध) प १।१३८;२।६३; ६।५६,६२;२०।६१;२१।७७ उ ५।४१
सव्वट्ठसिद्धग (सर्वार्थसिद्धक) प ४।२६७ से २६६;६।४३;७।३०;१५।६०,६३,१०१,१०६, १०८,११४,११५,११७,१२०,१२१,१२३, १२५,१२८,१२६,१३२,१३६,१४३;२०।४६; २८।६७
सव्वण्णु (सर्वज्ञ) ज २।७१;५।२१
सव्वतो (सर्वतस्) प २।६४।१३;२८।२१,३३,६७; ज ४।१०७;५।५,७ सू १६।२,१२,२६,२८
सव्वत्थ (सर्वत्र) प २।३२;२१।३५,४२;२२।२५; ३६।४७ ज ३।१०६;४।५७,१८३;७।३७,१६७ सू १८।३७ उ २।२२
सव्वदरिसि (सर्वदर्शिन्) ज २।७१;५।२१
सव्वपाणभूतजीवसत्तसुहावहा (सर्वप्राणभूतजीव-सत्त्वसुखावहा) प २।६४
सव्वप्पभा (सर्वप्रभा) ज ५।११।१
सव्वबल (सर्वबल) ज ३।१२,७८,१८०,२०६; ५।२२,२६
सव्वब्भंतराय (सर्वाभ्यंतरक) सू १।१४
सव्वभाव (सर्वभाव) ज २।७१
सव्वरयण (सर्वरत्न) ज ३।१६७,१७८
सव्वसिग्घगइ (सर्वशीघ्रगति) ज ७।१८०
सव्वसिग्घगइतराय (सर्वशीघ्रगतितरक) ज ७।१८०
सव्वसिद्धा (सर्वसिद्धा) ज ७।१२१ सू १०।६१
सव्वहेट्ठिम (सर्वाधस्तन) सू ६।३
सव्वाउय (सर्वायुष्क) ज २।८८;३।२२५
सव्वामयणासिणी (सर्वामयनाशिनी) ज ३।१३८
सव्विंदिय (सर्वेन्द्रिय) ज २।१८
सव्वोउय (सर्वर्तुक) ज २।१२;३।३०,३५,२२१;५।५ उ ५।१६
सव्वोहि (सर्वावधि) प ३३।३१ से ३३
ससंभम (ससम्भ्रम) ज ३।६;५।२१
ससक्कर (सशर्कर) ज ३।१०६
ससग (शशक) प १।६६ ज २।१३६
ससबिंदु (शशबिन्दु) प १।४०।५
ससय (शशक) प ११।२१
ससरीरि (सशरीरिन्) प २८।१४१
ससरुहिर (शशरुधिर) प १७।१२६
ससि (शशिन्) प २।३१ ज २।१५;३।६,१७,२१, २८,३४,४१,४६,६३,१०६,१३६,१५७,१६३, १६७।१२,१७७,२२२;७।११२।२;७।१६८।१ सू १०।७७,१२६।२;१६।८।२,१६।२२।३,२३, २६,२६,३१;२०।४

ससिया (शशिका) प ११।२३

सस्स (शस्य) गु १०।१२६।४

सस्सिरीय (सश्रीक) प २।३०,३१,४१,४८,४६,
५६,६३,६४ ज १।३१; २।६४,३।६,३५,११७,
१८५,२०६,२२२;४।२७,४६;५।२८,५८
उ १।४१,४४

सह (सह) प २३।१५६,१६०,१६४,१७५
ज २।५०,१६४;४।१०६,२०५;७।१३५।४
उ ३।३८

√सह (सह्) महइ ज २।६७

सहगत (सहगत) प २२।१७

सहगय (सहगत) प २२।८०

सहजायय (सहजातक) उ ३।३८

सहपंसुकीलियय (सहपांशुक्रीडितक) उ ३।३८

सहरिस (सहर्ष) ज ३।८१

सहवड्ढियय (सहवर्धितक) उ ३।३८

सहसम्मुइ (स्वसंस्मृति) प १।१०१।२

सहस्स (सहस्र) प २।२१ से २७,३० से ३६,४०।५,
४१ से ४३,४६,४६ से ५२,५५ से ५७,५६,
५६।१.३;२।६३,६४;४।१,३,४,६,२५,२७,२८,
३०,३१,३३,३४,३६,३७,३६,४०,४२,४३,
४५,४६,४८,४६,५१,५२,५४,५६,५८,६२,६४,
६५,६७,६६,७१,७६,८१,८५,८७,८८,६०,६४,
१२५,१२७,१३४,१३६,१४३,१४५,१५२,
१५४,१६५,१६७,१६८,१७०,१७४,१७६,
१८०,१८२,१८३,१८५;६।४०;१२।६;१८।२,
६,६,१२,१६,२०,२८,३२,३४,३५,४७,५०,
५२,८५;२०।६३;२१।३८,४१,४३,४५,४७।१,
२;२१।६५,६७,८७;२३।६० से ६२,६४,६६,
७८,८१,८४,६०,१११,१३३,१४७,१६७ से
१६६,१७१ से १७३,१७५ से १७७,१८२;
२८।२५,४०,४३,६६,७४ से ८७,६७;३६।६८,
८१ ज १।७।१,१।१६,१७,२०,२३,४६,४८;
२।४।३,२।६,१६,५२,५६,६५,७१,७७ से ८२,
८८,१२६,१३०,१३४,१३८,१४०,१४६,१५४,
१५६,१६१;३।१४,१८,२२,३०,३१,३६,४३,
५१,५६,६०,६८,६३,६६,१०६,११७,१२०,
१२२,१२६।३;३।१३०,१३६,१४०,१४५,
१४६,१६३,१७२,१७५,१८०,१८५,१८६,
१८८,१८६,२०६,२१०,२१४,२१५,२१६,
२२१,२२४;४।१,२७,३५,३७,४२,४५,५२,
५५,५७,६२,६४,७१ ७७,८१,८६,८८,६०,६१,
६४,६८,१०३,१०८,११०,११४,११६,१५१११,
१६५,१६७,१६६,१७४,१७८,१८३,२००,
२०५,२१३,२१५,२३४,२४०,२५७ से २५६,
२६२;५।२८,३२,४३,४८,४६।१,५०,५२।१,
५३,५५,५६;६।८।१,१६ से २६;७।१।१,७।८
से २५,३१,३३,३४,५४,६७ से ८४,६५,६६,
१२७,१७०,१७८।१,२,१८३,१८८,१८६,२०७
गु १।१४,२० से २२,२६,२७;२।१,३;३।१;
४।३ से ८,१०;६।१;८।१;६।३;१०।१३५,१६४;
१२।२ से ७,६;१८।१,४,२०,२१,२६,२८,
२६;१६।१।१,१६।४,५।३,७,८।३,१०,११।१,
३,४;१६।१४,१५।१,३,४,१६।१८,१६,
१६।२२।२,४,५,७,१६।२२।२८,३२,१६।३०
उ १।१४,१५,२१,२२,२५,२६,१२१,१२६,
१३२,१३३,१३६,१३७,१४०,१४७;३।७,६१,
११०,१११;४।१६,१८;५।१७,२७

सहस्सक्ख (सहस्राक्ष) प २।५० ज ५।८

सहस्सग्गसो (सहस्राग्रशस्) प १।२०,२३,२६,२६,
४८

सहस्सपत्त (सहस्रपत्र) प १।४६ ज ३।८६;४।३,
२२,२५,३०,३४;५।५५

सहस्सपत्तहत्थगय (हस्तगतसहस्रपत्र) ज ३।१०

सहस्सपाग (सहस्रपाक) ज ५।१४

सहस्सरस्सि (सहस्ररश्मि) उ ३।४८,५०,५५,६३,
६७,७०,७३,१०६,११८

सहस्सवत्त (सहस्रपत्र) प १।४८।४४

सहस्सार (सहस्रार) प १।१३५; २।४६,५७,५८
५६।१,६३;३।३६,१८३;४।२५२ से २५४;
६।३४,५६,६५,८६,६२,१०६; १५।८८;
२०।५६,६१;२१।७०,६१;२८।८२;३४।१६,१८

ज ५।४६।२ उ २।२२
सहस्सारग (सहस्रारक) प ६।११२;७।१५; ३३।१६
सहस्सारवडेंसय (सहस्रारावतंसक) प २।५७
सहि (सखि) ज २।२६,६६
सहित (सहित) सू १६।२२।२५
सहिय (सहित) प २६।२१ ज २।१५;३।३१,६५, १५६;७।१८६।२ सू २०।८,२०।८।२
सहोयर (सहोदर) उ १।६५
साइ (स्वाति) ज ७।१२८,१३४।२,१३५।२,१३६, १४०,१४६,१६५,१७५
साइम (स्वाद्य) उ ३।५०,५५,१०१,११०,१३४; ४।१६
साइयार (सातिचार) प १।२६
साइरेग (सातिरेक) प १८।७६;२३।६५ ज १।३५, ४०,५२;२।१२८,१४८;४।६,१४ २३,३१,३८, ४१,६५,६८,७३,६०,६१,११६,११६,१२२, १३६,१४६,१४७,२१६,२४२;७।२५,१६६, २०७ सू ८।१;१८।३७
साउफल (स्वादुफल) ज २।१२
साएय (साकेत) प १।६३।२
सागर (सागर) प २।६८;३।३,७६,७६,८१,१०५, ११६,१२६।४,१२८,१५१,१७०,१८५,१८८, २०६,२२१;४।१६२।१,२३६;५।३२,५८ ज २।६८;३।३,७६,७६,८१,१०५,११६, १२६।४,१२८,१५१,१७०,१८५,१८८,२०६, २२१;४।१६२।१,२३८;५।३२,५८ सू १६।२१ उ २।१२;५।१०
सागरकूड (सागरकूट) ज ४।१६४
सागरचित्त (सागरचित्र) ज ४।२३८
सागरचित्तकूड (सागरचित्रकूट) ज ४।२३६
सागरोवम (सागरोपम) प ४।१,३,४,६,७,६,१०, १२,१३,१५,१६,१८,१६,२१,२२,२४,२५,२७, ३१,३३,३७,३६,२०७,२०६,२१३,२१५, २२५,२२७,२३७,२३६,२४०,२४२,२४३, २४५,२४६,२४८ २४६,२५१,२५२,२५४, २५५,२५७,२५८,२६०,२६१,२६३,२६४, २६६,२६७,२६६,२७०,२७२,२७३,२७५, २७६,२७८,२७६,२८१,२८२,२८४,२८५, २८७,२८८,२६०,२६१,२६३ २६४,२६६, २६७,२६६;१८।२,३ १६,१६,२४,२८,३१, ३६,४२,४४,४६,४८,४६,५४,६१,६६ से ७४, ७६,७६,८४,८५,८७,११२,११६;२३।६० से ६६,६८,६६,७३ से ७८,८१,८३ से ६०,६२, ६५ से ६६,१०१ से १०४,१११ से ११४, ११६ से ११८,१२०,१२६ से १३१,१३३ से १३५,१३८,१४०,१४२,१४३ १५१,१५३,१५५ से १५७,१६०,१६४,१६६ से १६८,१७१ से १७३,१७५ से १७७,१८२,१८३,१८६,१८७, १६० ज २।५,[illegible] ५४,१२१,१२६,१५४, १६०,१६३ सू ६।१;८।१ उ १।२६,१४०; ३।१५०,१६४,१६६,१७१;५।२६,४२
सागार (साकार) प २८।४।२२;२३।१६५,१६६ से २०१;२६।११;३०।२६,२८
सागारपस्सि (साकारदर्शिन्) प ३०।१५ से १८, २०,२२,२३
सागारपासणया (साकारदर्शिता) प ३०।२७
सागारपासणया (साकारदर्शन) प ३०।१,२,५,६, ८ से १२,१६,२१
सागाराणागारोवउत्त (साकारानाकारोपयुक्त) प २८।१३६
सागारोवउत्त (साकारोपयुक्त) प ३।१०६,१७४; १३।१४;१८।१३;२६।१६ से २१;३६।६२
सागारोवओग (साकारोपयोग) प २६।१,२,५,६, ८ ६,१२
सागारोवओगपरिणाम (साकारोपयोगपरिणाम) प १३।८
साडग (शाटक) ज ३।१२५,१२६
साडय (शाटक) ज १।[illegible] ५,५२,७६,७७
साडियाए (शाटिका[illegible]) [illegible] १,२१,५२,७६,७७
साडय (शाट[illegible]) प [illegible] ज २।३३

सात (सात) प ३५।१।१,२,३५।८,६

सातावेदग (सातवेदक) प ३।१७४

सातावेदणिज्ज (सातवेदनीय) प २३।१५,२६, १४६,१७६

सातावेयणिज्ज (सातवेदनीय) प २३।१५,३०,६३, १३५

सातासात (सातासात) प ३५।८,६

सातासोक्ख (सातसौख्य) सू २०।७

साति (सादि) प २३।४६

साति (स्वाति) सू १०।२ से ६,१७,२३,४८,६२, ७२,७५,८३,११३,१३१ से १३४; १८।७

सातिरेग (सातिरेक) प ४।३१,३३,३७,३६,१६८, २००,२०४,२०६,२२५,२२७,२२८,२३०, २३१,२३३,२३४,२३६,२४०,२४२;७।२,६, ११;१५।४१;१८।१६,१६,३१,३६,४६,५४, ६१,७६,८५,८७,११३,११६; २१।३८,४१, ६३,६६,८७;२८।२५,७६,७८; ३६।६८ सू २।३; ६।३; १२।१५

सादि (सादि) प १५।३५

सादि (स्वाति) सू १०।१२०

सादिय (सादिक) प २।६४

सादीय (सादिक) प १८।७,१७,२६,५८,५६,६३, ६७,७५ से ७७,७६,८२,८३,८८,६०,६२, १००,१०५,११२,११५,११८,१२१,१२४,१२७

√साध (साध्) साधेंति सू १०।१२० साधेति सू १०।१२०

साभाविय (स्वाभाविक) ज ३।२०६;५।५६

साम (श्यामा) प १।३७।४

साम (सामन्) उ १।३१

सामंत (सामन्त) उ १।३,३।२६

सामग (श्यामक) प १।४५।२

सामण्ण (सामान्य) सू १०।७७

सामण्ण (श्रामण्य) उ २।१२;३।१४,२१,१२०, १५०,१६१;४।२४;५।२८,३६,४१,४३

सामण्णओविणिवाइय (सामान्यतोविनिपातिक) ज ५।५७

सामण्णपरियाय (श्रामण्यपर्याय) ज २।८८; ३।२२५

सामल (श्यामल) ज ३।१०६

सामलता (श्यामालता) प १।३६।१

सामलया (श्यामालता) ज २।११

सामली (शाल्मली) ज ४।२०८

सामा (श्यामा) प २।४०।६;१७।१२४

सामाइय (सामायिक) प १।१२४,१२५ उ २।१०, १२;३।१४,१५०,१६१; ५।२८,३६,४१

सामाइयचरित्तपरिणाम (सामायिकचरित्रपरिणाम) प १३।१२

सामाण (समान) प २।४६,४७,४७।२

सामाणिय (सामानिक) प २।३० से ३३,३५; ४०।५,४१,४३,४८ से ५६ ज १।४५;२।६०; ४।१७,११३,१५० १५६;५।१,५,६,१६,३६,४२, ४४,४५,४६,४६।२,५०,५१,५२।१,५३,५६, ६५,६७;७।५६,५६,१८५ सू १८।२३;१६।२४, २७ उ ३।६,२५,६०,१५०,१५६,१६६; ४।५

सामि (स्वामिन्) १।४;३।८,१६,४३,६३,७०,७७, ८४,१००,१२६।२,१४२,१६५,१८१,१६२; ५।५५,५७,५८ चं ६ सू १।४ उ १।१६,३६,४० ४२,४५,६६,१०३,१०७,१०८,११० से ११२, ११४,११६,१२८,१३६;२।६,११;३।५,२४, ८६ १५५,१६८; ४।४

सामित्त (स्वामित्व) प २।३०,३१,४१,४६ ज १।४५;३।१८५,२०६,२२१; ५।१६ उ ५।१०

सामिय (स्वामिक) ज ३।८१

सामुदाणिय (सामुदानिक) उ ३।१५ से १७

सायं (सायं) सू २।१; १०।५ १३६

सायावेदणिज्ज (सातवेदनीय) प २३।१५

सायावेयणिज्ज (सातवेदनीय) प २३।१४१

सार (सार) प १।७६ ज १।२६; २।६४,६६; ३।२,३,२४,३५ चं १।३ उ १।१०,२६,६६; ५।११

सायर (सागर) सू १६।२२।२४

सारइयबलाहक (शारदिकबलाहक) प १७।१२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारंग (सारङ्ग) प १।५१ ज ३।३
सारकल्लाण (सारकल्याण) प १।४३।१
√सारक्ख (सं+रक्ष्) सारक्खंति ज २।४६,५२, ५६ सारक्खिस्संति ज २।१५६,१६१
सारक्खमाण (संरक्षत्) उ १।५७,५८,८२,८३
सारक्खिज्जमाण (संरक्ष्यमान) उ ३।४६
सारक्खित्ता (संरक्ष्य) ज २।४६
सारय (शारद) ज ३।११७
सारस (सारस) प १।७६ ज २।१२ उ ४।५
सारहि (सारथि) ज ३।३५,१७८
सारिक्ख (सादृश्य) प २।६४।१८
सारीर (शारीर) प ३५।१।१; ३५।६,७
सारीरमाणस (शारीरमानस) प ३५।६,७
साल (शाल) प १।३५।१,१।४३।१,१।४८।१४,२४ सू २०।८,२०।८।८
सालंबण (सालम्बन) ज ३।६९ से १०१
सालभंजिया (शालभञ्जिका) ज १।३७; ५।३,२८
सालवण (शालवन) ज २।६
साला (दे०) प १।३५,३६,१।४८।३३,३७
सालि (शालि) प १।४५।१ ज २।३७;३।११६; ४।१३; ७।१७८
सालिंगण (सालिंगन) सू २०।७
सालिपिट्ठरासि (शालिपिष्टराशि) प १७।१२८
सालिसच्छियामच्छ (शालिसाक्षिकामत्स्य) प १।५६
सालिसय (सदृशक) सू २०।७
सावइज्ज (स्वापतेय) ज २।२४,६४
सावगधम्म (श्रावकधर्म) उ ३।४५,७६,१०३,१०४; १४३;५।२०
सावण (श्रावण) ज २।१३८;७।१०४,११४,१२६ सू १०।१२४,१२६ उ ३।४०
सावतेय (स्वापतेय) ज २।६६
सावत्थी (श्रावस्ती) प १।६३।५ उ ३।६ से ११,२१
सावय (श्वापद) ज २।३६
सावय (श्रावक) ज ७।२१४
सावयबहुल (श्वापदबहुल) ज १।१८
साविट्ठी (श्राविष्ठी) ज ७।१३७,१३८,१४१, १४७,१५०,१५४ सू १०।७,८,२०,२३,२५,२६
साविया (श्राविका) ज ७।२१४
सावेंत (श्रावयत्) ज ३।१७८
सास (श्वास) ज २।४३
सास (सस्य,शस्य) ज ७।११२।४
सासग (सस्यक,शस्यक) प १।२०।२
सासग (शासक) ज ३।३५
सासण (शासन) ज ३।८१,१५१ उ १।१३६
सासत (शाश्वत) ३६।६४
सासय (शाश्वत) प २।६४,२।६४।२०,२२; ३६।६३,६४,६४।१ ज १।११,४७;३।२२६; ४।२२,३४,५४,६४,१०२,१०७,११३,१५६, १६१; ७।२०८ से २१०
सासवसमुग्गयहत्थगय (हस्तगतसर्षपसमुद्गत) ज ३।११
सासेंत (शासत्) ज ३।१७८
√साह (साधय्) साहेइ उ ३।५१
साहट्टु (संहृत्य) ज ३।१२ उ १।२२
√साहर (सं + हृ) साहरइ ज २।६५;३।२६,३६, ४७,१३३;५।२१,५८ साहरंति ज २।६६; ५।१५,७०,६८,११० साहरइ ज २।६५,६७, १०६;५।१४,८६ साहराहि ज ५।६८
साहरिज्जमाण (संह्रियमाण) ज ४।१०७
साहरित्ता (संहृत्य) ज २।६५
साहस्सिय (साहस्रिक) सू १६।२३,२६ उ ३।६१
साहस्सी (साहस्री) प २।३० से ३३,३५,४१,४३, ४८ से ५६ ज १।४५; २।७४ से ७७,६०; ३।२२१; ४।१७,१६,२०,११२,११३,१२६, १५०,१५१।८,१५६;५।१,५,६,१६,३६,४०, ४४ से ४६,४६ से ५३,५६,६५,६७; ७।५५, १७८,१८५ सू १८।१४ से १७,२१,२३ उ ३।६,१२,२५,६० १५६,१६६;४।५;५।१०
साहारण (साधारण) प १।४८।५४,५५,६०
साहारणसरीर (साधारणशरीर) प १।३२,४८

साहारणसरीरणाम (साधारणशरीरनामन्)
प २३।३८,१२१
साहाविय (स्वाभाविक) ज ५।५५
√साहि (कथय्) साहिज्जइ प १७।१२६
साहिज्जंति प १७।१२६ साहिज्जति
प १७।१२६
साहिय (साधिक) प ४।२४० ज २।६६;३।७६,
११६,११८;७।१६४
साहीय (साधिक) प २।६४।८
साहु (साधु) चं १।२
साहेला (साधिका) उ ३।५१
सिउंढि (दे०) प १।४८।१
सिंग (शृङ्ग) ज ३।१०६;५।६३;७।१७८
सिंगग्ग (शृंगाग्र) ज ३।२४
सिंगबेर (शृंगबेर) प १।४८।२;१७।१३१
सिंगबेरचुण्ण (शृंगबेरचूर्ण) प ११।७६;१७।१३१
सिंगभूत (शृंगभूत) ज ३।१८६
सिंगभूय (शृंगभूत) ज ३।२१७
सिंगमाल (शृंगमाल) ज २।८
सिंगार (शृंगार) प ३४।१६,२१ ज २।१५
सू २०।७
सिंगारागार (शृंगारागार) ज ३।१३८
सिंगिरिड (शृंगिरीट) प १।५१।१
सिंघाडग (शृंगाटक) प १।४८।६ ज २।६५;
३।१८५,२१२,२१३;५।७२,७३ उ १।६८
सिंघाडय (दे०) सू २०।२ राहु का नाम
सिंघाण (सिंघाण,शिंघाण) प १।८४
सिंदुवार (सिन्दुवार) प १।३७।४,१।३८।१
ज २।१०;३।३५
सिंदुवारवरमल्लदाम (सिन्दुवारवरमाल्यदामन्)
प १७।१२८
सिंदूर (सिन्दूर) ज ३।३५
सिंधु (सिन्धु) ज १।१८,२०,४८;२।१३१,१३३,
१३४;३।१,५१,५२,५४,६०,७६,७८,६७,६६,
१११,११३,१२८;४।३७,१६७,२७४ से २७६,
२७४;६।१६
सिंधुआवत्तणकूड (सिंधुआवर्तनकूट) ज ४।३७
सिंधुकुंड (सिन्धुकुण्ड) ज १।५१;४।१७४,१७५
सिंधुकूड (सिन्धुकूट) ज ४।४४
सिंधुगम (सिन्धुगम) ज ३।६४,१५१
सिंधुदेवी (सिन्धुदेवी) ज ३।५१,५२,५४,५६,५७,
५८
सिंधुद्दीप (सिन्धुद्वीप) ज ४।३७
सिंधुप्पवायकुंड (सिन्धुप्रपातकुण्ड) ज ४।३७
सिंधुसागरंत (सिन्धुसागरान्त) ज ३।८१
सिंधुसोवीर (सिन्धुसौवीर) प १।६३।४
सिंभिय (श्लैष्मिक) उ ३।११२,१२८
सिंहल (सिंहल) प १।८६
सिंहलय (सिंहलक) ज ३।८१
सिंहली (सिंहली) ज ३।११।१
सिंहासण (सिंहासन) ज १।४४
सिक्खा (शिक्षा) प ११।४६ उ १।२०
सिक्खिय (शिक्षित) ज ३।१७८;७।१७८
सू २०।६।३,५
सिग्घ (शीघ्र) ज २।६०;३।२६,३६,४७,५६,६४,
७२,१०६,११३,१२३,१३८,१४५;५।५,२८,
४४,४७,६७ सू २।३;१५।१,३७;१८।१८
सिग्घगइ (शीघ्रगति) ज ७।१८० चं २।४;४।२
सू १।६।४,१।८।२
सिग्घगामि (शीघ्रगामिन्) ज ३।३५,१०६
सिग्घया (शीघ्रता) ज ३।१०६
√सिज्झ (सिध्) सिज्झइ प ३६।८८ सिज्झई
प २।६७।२,३ सिज्झंति प ६।५७,६७,११०
ज १।२२,५०;२।५८,१२३,१२८,१४८;
४।१०१,१७३ सिज्झति प ३६।६२
सिज्झहिइ उ १।१४१;२।२०;३।१८;४।२६;
५।४३ सिज्झिहिंति ज २।१५१,१५७
उ २।१२;४।२८ सिज्झेज्जा प २०।१८
सिज्झणया (सेधन) प ३।२,४४

सिणेहभाव (स्नेहभाव) ज २।१४३
सित (सित) प २।३१
सिल (सिक्त) ज २।६५;३।७,११६;५।५७
सिद्ध (सिद्ध) प १।१।१,१।१३;२।६४,२।६४।२ से ४,६ से १२,१४,१६,१८,२० से २२;३।३७ से ३६,१८३;५।३;६।४४,४६,५७,५६,६७,६६;११।३६;१२।७,१०,२०;१६।२५,३०,३२,३३,३५,३७;१८।७;१६।५;२२।८;२८।१०७,११०,११३,११४,१२०,१२१,१२४,१२५,१३१,१३८,१३६,१४१;३१।६;३२।६;३६।६३,६४ ज २।५।१,२।८२,८८,८६;३।२२५;४।१६२।१,१७२।१,२०४।१,२१०।१,२६३।१,२६६।१;५।५८;७।११७ चं ११२
सिद्धकेवलि (सिद्धकेवलिन्) प १८।६८,१००
सिद्धगति (सिद्धगति) प ६।५
सिद्धत्थ (सिद्धार्थ) उ ५।२६,२८
सिद्धत्थग (सिद्धार्थक) ज ३।२०६;५।५५,५६
सिद्धत्थवण (सिद्धार्थवन) ज २।६५
सिद्धत्थिया (सिद्धार्थिका) प १७।१३५
सिद्धमणोरम (सिद्धमनोरम) ज ७।१६७।१ सू १०।८६।१
सिद्धायतणकूड (सिद्धायतनकूट) ज १।३४ से ३६,४१;४।४४,४५,४८,७६,६६,१०५,१०६,१३६,१६२,१६७,१८६,१६२,१६८,२१०,२११,२३५,२३७,२४२,२६३
सिद्धायतण (सिद्धायतन) ज ४।१४७,१६३,१८०,२१६,२१७,२२०,२३५,२३७,२४२
सिद्धाययणकूड (सिद्धायतनकूट) ज ४।२१२,२७५
सिद्धालय (सिद्धालय) प २।६४
सिद्धि (सिद्धि) प २।६४;३६।८३।२
सिद्धिगइ (सिद्धिगति) ज ५।२१
सिप्प (शिल्प) ज २।६४;३।१६७।७;५।५,७
सिप्पारिय (शिल्पार्य) प १।६२,६७
सिप्पिया (शिल्पिका) प १।४२।२
सिप्पिसंपुड (शुक्तिसंपुट) प १।४६
सिबिया (शिबिका) ज २।१०१,१०२
सिंभ (श्लेष्मन्) ज २।१३३
सिय (स्यात्) प १।४८;५।५,१०,२०,३०,३२,१०२,१२६,१३१,१३२,१३४,१६०,१७७,१८३,२१४,२२८;६।११५,११६;१०।७ से १३,१७,१६,२०,३१,३२,३४,३६,३८,४०,४२,४४,४६,४८,५०,५२;११।२,३;१२।६,२४,३२,३३;१५।५३,५४,६१,१२२,१२३;१७।६४,६५,१०२ से १०४,११६,१५०,१५२;२१।६५,६८ से १००;२२।२६,२६,३०,३२,३३,३८ से ४०,४२,५० से ५२,६७ से ६६,७१,७४,६१,६३,६७,६६;२८।३१,१०६,१११,११५,११७,१२०,१२२,१२५,१२८,१२६,१३२,१४३;३६।१४,१७,१६,२२,२३,२५,२७,३३,३४,६२,६३,७७ ज ७।२०८,२०६
सिया (स्यात्) ज ५।७
सियाल (शृगाल) प १।६६;११।२१ ज २।३६,१३६
सियाली (शृगाली) प ११।२३
सिर (शिरस्) ज २।१३३;१८०,२२१
सिरय (शिरस्क) प २।४६ ज २।१५;३।६,१८,६३,१८०,२२२
सिरसावत्त (शिरसावर्त) ज ३।५,६,८,१२,१६,२६,३६,४७,५३,५६,६२,६४,७०,७२,७४,७७,८४,८८,६०,१००,११४,१२६,१३३,१३८,१४२,१४५,१५१,१५७,१६५,१८१,१८६,२०५,२०६,२०६;५।५,२१,४६,५८ उ १।३६,४५,५५,५८,८०,८३,६६,१०७,१०८,११६,११८,१२२;३।१०६,१३८;४।१५;५।१७
सिरसिज (शिरसिज) ज ३।१३८
सिरि (श्री) ज २।८,६,१५;४।२।१,४।१७ से २०,२२;५।११।१,५।३८;७।२१३
सिरिकंता (श्रीकान्ता) ज ४।१५५।२,२२४।१
सिरिकंदलग (श्रीकन्दलक) प १।६३

सिरिकूड (श्रीकूट) ज ४।४४
सिरिघर (श्रीगृह) ज ३।२२०
सिरिचंदा (श्रीचन्द्रा) ज ४।१५५,२२४।१
सिरिणिलया (श्रीनिलया) ज ४।२२४।१
सिरिदाम (श्रीदामन्) ज ५।६७
सिरिदेवित्त (श्रीदेवीत्व) उ ४।२४
सिरिदेवी (श्रीदेवी) उ ४।५
सिरिनिलया (श्रीनिलया) ज ४।१५५।२
सिरिमहिया (श्रीमहिता) ज ४।१५५।२,२२४।१
सिरिवडिंसय (श्रीअवतंसक) उ ४।५
सिरिवडेंसय (श्रीअवतंसक) उ ४।२४
सिरिवच्छ (श्रीवत्स) ज ३।३,३६,११३,१७८; ४।२८
सिरिवच्छा (श्रीवत्सा) ज ५।४६।३
सिरिसंभूया (श्रीसंभूता) ज ७।१२०।१ सू १०।८८।१
सिरिहिरिधिइकित्तिपरिवज्जिय (श्रीह्रीधृतिकीर्तिपरिवर्जित) उ १।८६,११५,११६
सिरीय (श्रीक) ज ३।७६
सिरीस ([illegible]) १।३६।३
सिरीसव ([illegible]) [illegible] ६।८८।१
सिला (शिला) प १।२७।१;२।३१ ज २।२४,६४, ६८;३।२५,११६,१६७।८;४।२४५,२४६ २५१,२५५
सिलिंध ([illegible]) प २।३१,२।४०।१०
सिलुच्चय ([illegible]) [illegible] ५।१
सिलेस ([illegible]) प १।४७।२
सिलोच्चय (शिलोच्चय) ज ७।२६०।१
सिव (शिव) प २।२०,२८,४१ ज २।६४;३।१८५, २०६;५।५,२१,५८;७।११४।१ सू १०।१२४।१ १।४१,४४;३।२।१,१७१
सिसिर (शिशिर) ज ७।११७।१ सू १०।१२४।१
सिस्स (शिष्य) प २।१६
सिस्सिणीभिक्खा (शिष्यणीभिक्षा) उ ४।१६
सिरिसणी ([illegible]) [illegible]
सिस्सिणीभिक्खा (शिष्याभिक्षा) उ ४।१६
सिहंडि (शिखण्डिन्) ज ३।१७८
सिहर (शिखर) प २।४८ ज १।३७; ३।२४; ४।४६;५।४३ उ ५।५
सिहरतल (शिखरतल) ज १।३२,३३; ४।२४१
सिहरि (शिखरिन्) प २।१;१६।३० ज ३।१८६, २१७;४।२७१,२७३,२७४,२७७
सिहरिकूड (शिखरिकूट) ज ४।२७५
सिहरिसंठाणसंठिय (शिखरिसंस्थानसंस्थित) ज ४।२७६
सिहि (शिखिन्) ज २।१३७
सीउण्ह (शीतोष्ण) ज २।१३३;३।१३८
सीओदप्पवायकुंड (शीतोदाप्रपातकुण्ड) ज ४।९२ से ९४
सीओदा (शीतोदा) ज ४।९३,९४
सीओदाकूड (शीतोदाकूट) ज ४।९६
सीत (शीत) प १५,७ से ९;५।७,२११,२१२, २१४,२१५,२१८,२२० से २२६;९।१ से ११; २८।१०५;३४।१६;३५।१।१
सीतजोणिय (शीतयोनिक) प ९।१२
सीतल (शीतल) सू २०।२
सीता (सीता) प २।६४ सू २।३
सीतालीस ([illegible]) सू २।३
सीतोदय (शीतोदक) [illegible] १।२३
सीतोदा (शीतोदा) ज ४।९१,९२,९५,२१०।१, २१२,२१५,२२९ से २३१;६।२२
सीतोदामुहवणसंड (शीतोदामुखवनषण्ड) ज ४।२१२
सीतोसिणजोणिय (शीतोष्णयोनिक) प ९।१२
सीतोसिण (शीतोष्ण) प ९।१ से ११; ३५।१ से ३
सीधु (सीधु) उ १।३४,४९,७४
सीभर (शीकर) उ १।२७
सीमंकर (सीमङ्कर) ज २।५९,६०
सीमंधर (सीमन्धर) ज २।५९,६०
सीमागार ([illegible]) प १।५८
[illegible] सू १०।१३५

सीय (शीत) प १।४ से ६;५।५,१२६,१५४,
२१०,२१३ से २१५,२१७ से २१६,२२१;
११।५६,६०;१७।१३८;२८।२०,३२,६६,
१०५;३५।२,३ ज २।१३१,१३४ उ ३।१२८
सीयउरय (दे०) प १।३७।३
सीयल (शीतल) ज २।२०;४।३,२५
सीया (शिबिका) ज २।१२,३३,६४,६५,१०३,१०४
उ ३।११० १११;४।१६,१८
सीया (शीता) ज १।१६;४।११०,१४१,१४३,
१६२।१,१६७,१६६,१७२,१७४,१७७,१७८,
१८०,१८१,१८३ से १८५,१८७,१८६ से
१६१,१६३,१६६,१६७,१६६ से २०२,२१२,
२१५,२२६,२२७,२३२,२३३,२६२,२६३।१;
५।१०।१;६।२२;७।२२
सीयामहाणई (शीतामहानदी) ज ४।२००
सीयामुहवण (शीतामुखवन) ज ४।१६६ से २०२
सीयालीस (सप्तचत्वारिंशत) ज ७।२० सू ४।१०
सीयोया (शीतोदा) ज ४।२०६,२०७,२०८,२१२,
२२८
सीयोयामुह (शीतोदामुख) ज ४।२१२
सील (शील) प २०।१७,१८,२४ ज ३।३;५।५८
सीवण्णी (श्रीपर्णी) प १।३५।३
सीस (शीर्ष) उ १।६७;३।११४;४।२१
सीसपहेलियंग (शीर्षप्रहेलिकाङ्ग) ज २।४
सीसपहेलिया (शीर्षप्रहेलिका) ज २।४ सू ८।१
सीसय (सीसक) प १।२०।१
सीसवा (शिंशपा) प १।३५।३
सीसवेयणा (शीर्षवेदना) ज २।४३
सीसाखंड (सीसखण्ड) प ११।७४
सीसिणिभिक्खा (शिष्याभिक्षा) उ ३।११२
सीह (सिंह) प १।६६;२।३०,४६;६।८०।१;
११।२१ ज २।१५,३६,१३६ उ १।३३;२।८
५।१३,१५
सीह (शीघ्र) ज २।३६,१३६;३।२६,३६,४७,५६,
६४,७२,११३,१३३,१३८,१४५;५।५,४४,४७,
६७
सीहकण्ण (सिंहकर्ण) प १।८६
सीहकण्णी (सिंहकर्णी[1]) प १।४८।१
सीहगइ (शीघ्रगति) ज ७।१६८।२
सीहघोस (सिंहघोष) ज २।१६
सीहणाद (सिंहनाद) सू १६।२३
सीहणाय (सिंहनाद) ज ३।२२,३१,३६,७८,६३,
६६,१०६,१६३,१८०;५।२,५७;७।५५,१७८
उ १।१३८
सीहणिसाइ (सिंहनिषादिन्) ज ७।१३३।३
सीहणीसाइसंठिय (सिंहनिषादिसंस्थित) सू १०।५४
सीहनाय (सिंहनाद) उ १।१३८
सीहपुरा (सिंहपुरा) ज ४।२१२,२१२।२
सीहमुह (सिंहमुख) प १।८६
सीहरूवधारि (सिंहरूपधारिन्) ज ७।१७८
सू १८।१४ से १७
सीहस्सर (सिंहस्वर) ज २।१६
सीहसीया (सिंहस्रोता,शीघ्रस्रोता) ज ४।२१२
सीहासण (सिंहासन) ज ३।३,६,१२,२६,२८,३६,
४१,४७,४६,५८ ६६,७४,१३३,१४५ १४७,
१७८,१८८,१६७,२०४,२१४,२१६,२२२;
४।५०,५३,५६,११२,११६,१२३,१३५,१४७,
१५५,२२३।१,२२४।१,२४८,२५० से २५२;
५।१३,१४,१८,२१,३६,३६ से ४१,४७,५०,
५५,६० सू १८।२३ उ १।४१;३।६,२५,६०,
६१,१३६,१५६;४।५
सीहासणहत्थगय (हस्तगतसिंहासन) ज ३।११
सीही (सिंही) प ११।२३
सु (सु) ज १।१३,३७;२।६,१२,१५;३।६,१२,२८,
३५,४१,४६,५८,६६,७४,११७,११६,१३८,
१७८,२२२;४।१३,१०२,१२८,१४६,१५७,
१७८,१८०,१८१,१८२,२०२,२०४,२११;
५।५,७,६,५३;७।१२०
सुइ (शुचि) २।१५;३।६,२२२;४।२६;५।५७
सुइग (शुचिक) ज २।६५;३।७
सुइभूय (शुचीभूत) ज ३।८२ उ ३।५१,५६

---

1. वनस्पति कोश में सिंहपर्णी शब्द मिलता है।

सुईभूय (शुचीभूत) उ ४।१६
सुउत्तार (सूत्तार) ज ४।३,२५
सुंकलितण (शूकरीतृण) प १।४२।२
सुंगा (शौङ्गा[1]) ज ७।१३२।३
सुंगायण (शौङ्गायन) ज १०।११४
सुंठ (शुण्ठी) प १।४२।२,१।४८।४६
सुंदर (सुन्दर) ज २।१५; ३।१३८;७।१७८
सुंदरी (सुन्दरी) ज २।१५,७५
सुंब (सुम्ब) प १।४१।१
सुंसुमार (शुंशुमार,शिशुमार) प १।५५,६०
सुकच्छ (सुकच्छ) ज ४।१७८,१८१ से १८३
सुकण्ह (सुकृष्ण) उ १।७
सुकत (सुकृत) प २।३१,४१
सुकय (सुकृत) प २।३१,४१ ज १।३७; ३।७,६, १८,२४,३५,६३,१०६,१७८,१८०,२२२; ७।१७८
सुकरण (सुकरण) ज ३।३५
सुकाल (सुकाल) उ १।७,१४६,१४७;२।१८,१६
सुकाली (सुकाली) उ १।१४५,१४६; २।१७,१८
सुकुमाल (सुकुमार) ज २।१५; ३।३,६,१०६, २०६,२११,२२२ उ १।१४६
सुकुल (सुकुल) ज ३।१०६
सुकुसल (सुकुशल) ज ३।११६
सुक्क (शुक्र) प १।८४,१३५;२।४८,६३ सू २०।८, २०।८।४ उ ३।२।१,३।२५,८३,८६
सुक्क (शुक्ल) प १३।६
सुक्क (शुल्क) उ ३।१२८
सुक्क (शुष्क) उ ३।३५ से ३७,४०,४३
सुक्कपक्ख (शुक्लपक्ष) ज ७।११५,१२५ सू १६।२२।१८
सुक्कछिवाडिया (दे०) प १७।१२८
सुक्कलेस (शुक्ललेश्य) प १७।५८,१०४,१६८; २३।२००
सुक्कलेसट्ठाण (शुक्ललेश्यास्थान) प १७।१४६
सुक्कलेसा (शुक्ललेश्या) प १७।४७,१३६

1. शौङ्कायन गोत्रस्य संक्षिप्त रूपम् ।

सुक्कलेस्स (शुक्ललेश्य) प ३।६६; १३।१८,२०; १७।३५,५६,५८,६३ से ६६,७१,७३,७६ से ८१,८३,८४,८६,८६,१०४,११३,१६७; १८।७४,२३।२०१; २८।१२३
सुक्कलेस्सट्ठाण (शुक्ललेश्यास्थान) प १७।१४६
सुक्कलेस्सा (शुक्ललेश्या) प १६।४६,५०; १७।३५, ३६,३८,४१,४३,५४,११४,११७ से १२२, १२६,१३५,१३७,१४० से १४५,१४७,१५३ से १६१
सुक्कलेस्सापरिणाम (शुक्ललेश्यापरिणाम) प १३।६
सुक्कवडिंसय (शुक्रावतंसक) उ ३।२५,८३
सुक्किल (शुक्ल) प १।४ से ६; ५।५,७,२०५; ११।५३,५४;१३।२६;२३।४७,१०१,१०६; १०६; २०।६,७,२६,३२,५३,६६ ज १।१३; २।७,१६४;३।२४,३१; ४।२६,११४ सू २०।२
सुक्किलपत्त (शुक्लपत्र) प १।५१
सुक्किलमत्तिया (शुक्लमृत्तिका) प १।१६
सुक्किलसुत्तय (शुक्लसूत्रक) प १७।११६
सुक्किलय (शुक्लक) प १७।१२६ सू २०।२
सुक्किल्ल (शुक्ल) प २८।५२
सुग (शुक) प १।७६
सुगइगामि (सुगतिगामिन्) प १७।१३८
सुगंध (सुगन्ध) प २।३०,३१,४१ ज २।१५,६५; ३।७,१२,८८,२११;५।७,५५ सू २०।७ उ ३।१३१
सुगंधि (सुगन्धिन्) ज २।१२
सुगंधिय (सुगन्धिक) प १।४६
सुगपत्त (शुकपत्र) ज ३।१०६
सुगूढ (सुगूढ) ज २।१५
सुघोसा (सुघोषा) ज ५।२२,२३,२४,४६
सुचक्क (सुचक्र) ज ३।३५
सुचरिय (सुचरित) ज २।७१
सुचिण्ण (सुचीर्ण) ज १।१३,३०,३३,३६; ४।२
सुजाणु (सुजानु) ज २।१५
सुजाय (सुजात) ज २।१४,१५;३।१०६;४।३,२५, १५७; ७।१७८

सुजाया (सुजाता) ज ४।१५७।२
सुजोइय (सुयोजित) ज ७।१७८
सुज्झ (दे०) ४।३,२५
सुट्ठिय (सुस्थित) ज ७।१७८
√सुण (श्रु) सुणंतु ज ३।२४।१,२,३।१३।१,२
सुणह प २।६४।१८ सुणेइ प १५।३६
सुणेति प १५।३६,४०
सुणग (शुनक) प १।६६ ज २।३६,१३६
सुणक्खत्ता (सुनक्षत्रा) ज ७।१२०।१ सू १०।८८।१
सुणमिय (सुनत) ज ७।१७८
सुणय (शुनक) प ११।२१
सुणिम्मिय (सुनिर्मित) ज २।१५
सुणिरिक्खण (सुनिरीक्षण) ज ७।१७८
सुणिया (शुनिका) प ११।२३
सुणिवेसिय (सुनिवेशित) ज २।१२
सुण्हा (स्नुषा) ज २।२७,६६
सुत (णाण) (श्रुतज्ञान) प २६।१६
सुतअण्णाण (श्रुताज्ञान) प ५।७,१२,२०,५६;
२६।६,१२,१७,१६,२०
सुतअण्णाणि (श्रुताज्ञानिन्) प ३।१०२,१०३;
५।८०,११७;३०।२३
सुतणाण (श्रुतज्ञान) प ५।७,२०,२४,४१,४६,६७,
१११;२६।१७,२१;३०।६,११
सुतणाणि (श्रुतज्ञानिन्) प ३।१०१,१०३;५।४३,
८०,६५,११३;२८।१३६
सुतिक्खण (सुतीक्ष्ण) ज २।६।१
सुतोवउत्त (श्रुतोपयुक्त) प २३।१६५,१६६ से २०१
सुत्त (सूत्र) प १।१०१।६;२१।३५
सुत्त (सुप्त) ज ३।१७४
सुत्त (श्रुत) प १।१०१।६
सुत (रुइ) (सूत्ररुचि) प १।१०१।१
सुत्तग (सूत्रक) ज ३।३६,१०६
सुत्तत्तय (सूत्रत्रय) प ४।५५
सुत्तरुइ (सूत्ररुचि) प १।१०१।६
सुत्तवेयालिय (सूत्रवैचारिक) प १।६६
सुत्तीनई (शुक्तिनदी) प १।६३।४

सुदंसण (सुदर्शन) प २।६४;३।३०;४।१४६,
१४७,१५०,१५७,१५६,२०८,२६०।१;
७।२१३ ज २।६४;३।३०;४।१४७,१५०,
१५६,२०८,२६०।१;७।२१३ सू ५।१ उ ४।७
से ६,१६,१८
सुदंसणभद्दसालवण (सुदर्शनभद्रशालवन) ज ५।५५
सुदंसणा (सुदर्शना) ज ४।१५७।१,२
सुदिट्ठ (सुदृष्ट) प १।१०१।१३
सुदुल्लह (सुदुर्लभ) ज ३।११७।१
सुद्ध (शुद्ध) प १७।११४।१,१७।११६ सू २०।७
सुद्धदंत (शुद्धदन्त) प १।८६
सुद्धप्पावेस (शुद्धप्रावेश,शुद्धात्मवेश,शुद्धप्रावेश्य)
ज ३।८५ सू २०।७ उ १।१६
सुद्धवाय (शुद्धवात) प १।२६
सुद्धागणि (शुद्धाग्नि) प १।२६
सुद्धोदय (शुद्धोदक) प १।२३ ज ३।६,२२२
सुधम्म (सुधर्म) ज ४।१४०।१
सुधम्मा (सुधर्मा) ज ४।१३१ सू १८।२३
सुनिउण (सुनिपुण) ज ५।५,७
सुपइट्ठ (सुप्रतिष्ठ) ज ५।४३,५५ सू १०।१२४।१
उ ३।२१
सुपइट्ठाभ (सुप्रतिष्ठाभ) ज २।१५;३।११
सुपइट्ठिय (सुप्रतिष्ठित) ज २।१४;४।१४६;
५।४३
सुपतिट्ठ (सुप्रतिष्ठ) ज ४।१२८
सुपम्ह (सुपक्ष्मा) ज ४।२१२,२१२।१
सुपरक्कंत (सुपराक्रान्त) ज २।१३,३०,३३,३६;
४।२
सुपरिनिट्ठिय (सुपरिनिष्ठित) उ ३।२८
सुपव्वइय (सुप्रव्रजित) उ ३।८०,८१
सुपसत्थ (सुप्रशस्त) ज ३।११७
सुपिक्कखोयरस (सुपक्वक्षोदरस) प १७।१३४
सुपीय (सुपीत) ज ७।१२२।१ सू १०।८४।३
सुपुट्ठ (सुपुष्ट) ज ३।११७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुप्पइण्णा (सुप्रकीर्णा) ज ५।६।१
सुप्पबुद्धा (सुप्रबुद्धा) ज ४।१५७।१;५।६।१
सुप्पभा (सुप्रभा) ज ७।१७८
सुप्पमाण (सुप्रमाण) ज २।१५
सुप्पमाणतर (सुप्रमाणतर) ज ४।१०२
सुफुल्ल (सुफुल्ल) ज ३।१०६
सुबद्ध (सुबद्ध) ज २।१५;७।१७८
सुबहु (सुबहु) उ ३।५०,५५
सुब्भि (सु) प १३।२७,३१;२३।१०६
सुब्भिगंध (सुगन्ध) प १।४ से ६;५।५,७,२०५;
 ११।५६;१७।१३७;२८।२६,३२,६६
सुभ (शुभ) प २८।१०५ ज १।१३,३०,३३,३६;
 ३।२२३;४।२
√**सुभ** (शुभ्) सोभंति सू १६।११ सोभिंसु सू १६।५
 सोभिस्संति सू १६।१ सोभेंति सू १६।१
 सोभेंसु सू १६।१ सोभेस्संति सू १६।३८
सुभंकर (शुभंकर) ज ३।८८
सुभग (शुभग) प १।४८।४४,१।५० ज ४।३,२५;
 ५।६८;७।१७८ सू २०।४
सुभगणाम (शुभगनामन्) प २३।३८,१२४
सुभगत्त (शुभगत्व) प ३४।२०
सुभगा (शुभगा) प १।४०।२ ज ४।१६४;५।१।१
सुभणाम (शुभनामन्) प २३।१६,३८,१२३
सुभद्द (सुभद्र) उ २।२
सुभद्दा (सुभद्रा) ज २।७७;३।१३८;४।१५७।२
 उ ३।६७,६८,१०१ से १२०,१४६;४।२२
सुभय (शुभग) प १।४६
सुभय (शुभक) उ ५।५
सुभा (शुभा) ज ४।२०२।२
सुभोगा (सुभोगा) ज ४।१६४;५।१।१
सुमणदाम (सुमनोदामन्) ज ३।२११;५।५५,५८
सुमणसा (सुमनस्) प १।४०।३ मालतीपुष्पलता
सुमणा (सुमनस्) ज ४।१५७।२,२०३
सुमहग्घ (सुमहार्घ्य) ज ३।६,२२२
सुमहुर (सुमधुर) उ ३।६८
सुमिण (स्वप्न) उ १।३३;२।८;५।१३,२५,३१
सुमिणपाठग (स्वप्नपाठक) उ १।३३
सुमेहा (सुमेघा) ज ४।२३८;५।६।१
सुय (श्रुत) प १।१।२,३;१।१०१।६;१३।१०
 चं १।३
सुय (शुक) प १७।१२४
सुय (शुक) प १।४२।१ बालतृण
सुयअण्णाण (श्रुताज्ञान) प ५।५,१०,१४,१६,१८,
 ६३;२६।२,६,२१;३०।२,६,६,११,१६,२१
सुयअण्णाणपरिणाम (श्रुताज्ञानपरिणाम) प १३।१०
सुयअण्णाणि (श्रुताज्ञानिन्) प ५।६५,६६;१३।१४,
 १६,१७;१८।८३;२८।१३७;३०।१६
सुयक्खंध (श्रुतस्कन्ध) उ ५।४५
सुयणाण (श्रुतज्ञान) प १।१०१।८;५।५,७८,६३;
 १७।११२,११३;२०।१७,१८,३४;२६।२,६,
 १२;३०।२,२१
सुयणाणारिय (श्रुतज्ञानार्य) प १।६६
सुयणाणि (श्रुतज्ञानिन्) प ३।१०१,१०३;१३।१४,
 १७;१८।८०;३०।१६,२३
सुयतोंड (शुकतोण्ड) ज ३।३५
सुयनाणपरिणाम (श्रुतज्ञानपरिणाम) प १३।६
सुयधम्म (श्रुतधर्म) प १।१०१।१२
सुयपुच्छ (शुकपिच्छ) प १७।१२४
सुयमुह (शुकमुख) ज ३।१८८
सुयविंट (शुकवृन्त) प १।५०
सुयविसिट्ठया (श्रुतविशिष्टता) ज २३।२१
सुयविहीणया (श्रुतविहीनता) ज २३।२२
सुयात (सुजात) ज ३।१०६
सुर (सुर) प २।६४।१५;३१।६।१ ज ३।११७
सुरइय (सुरचित) प २।४१
सुरट्ठ (सौराष्ट्र) प १।६३।३
सुरत्त (सुरक्त) ज ७।१७८
सुरप्पिय (सुरप्रिय) उ ५।७,८
सुरभि (सुरभि) प २।३१,४१;२३।४८ ज २।१२,
 १६;३।७,६,३०,८८,१०६,२०६,२११;५।५,
 ७,१४,२१,५६,५८;७।१७८ उ ३।१३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरम्म (सुरम्य) ज २।१२;४।१३ सू २०।७
सुरवर (सुरवर) ज ५।७
सुरवरिंद (सुरवरेन्द्र) ज ३।१०६
सुरहि (सुरभि) प २।३० ज ३।६,१२,३५,८८, २२१,२२२
सुरा (सुरा) उ १।३४,४६,७४
सुरादेवी (सुरादेवी) ज ४।४४,२७५;५।१०।१ उ ४।२।१
सुरिंद (सुरेन्द्र) प २।५० ज २।६१;३।३५;५।१८, २१,४८,५२
सुरूया (सुरूपा) ज ५।१३
सुरूव (सुरूप) प २।३०,३१,४१,४५,४५।१,४८ ज ३।१०६,१३८;४।२६ सू २०।४ उ १।१२, १३,३१,५३,७८,६५;५।५,२२
सुलद्ध (सुलब्ध) उ १।३४;३।६८,१०१,१३१
सुलस (सुलस) ज ४।६४,२०७
सुलित्त (सुलिप्त) उ ३।१३०,१३१,१३४
सुवग्गु (सुवल्गु) उ ४।२१२,२१२।३
सुवच्छ (सुवत्स) प २।४७।२ ज ४।२०२।१
सुवच्छा (सुवत्सा) ज ४।२०४,२३८;५।६।१
सुवण्ण (सुपर्ण) प २।३०।१,४०।१,८,१०;५।३ ज ३।२४।१,२,१३१।१,२
सुवण्ण (सुवर्ण) प १।२०।१ ज २।२४,६४,६६; ३।६,२०,३३,५४,६३,७१,८४,६५,१०६, ११७,१३७,१४३,१५६,१६७।८,१८२,१८४, २२२;४।३,२५,२६;५।३८,५२,५५,६७,६८ उ ३।४०
सुवण्णकुमार (सुपर्णकुमार) प १।१३१;२।३७ से ४०;४।४६;६।१८
सुवण्णकुमारराय (सुपर्णकुमारराज) प २।३७ से ३६
सुवण्णकुमारिंद (सुपर्णकुमारेन्द्र) प २।३७,३६
सुवण्णकुमारी (सुपर्णकुमारी) प ४।५२
सुवण्णकूड (सुवर्णकूट) ज ४।२७५
सुवण्णकूला (सुवर्णकूला) ज ४।२७२,२७४,२७५; ६।२०
सुवण्णजूहिया (सुवर्णयूथिका) प १७।१२७ पीलीजूही
सुवण्णमय (सुवर्णमय) ज ४।२६;५।५५
सुवण्ण (वासा) (सुवर्णवर्षा) ज ५।५७
सुवण्णसिप्पि[1] (सुवर्णशुक्ति) प १७।१२७
सुवण्णिंद (सुपर्णेन्द्र) प २।३८
सुवप्प (सुवप्र) ज ४।२१२,२१२।३
सुवयण (सुवचन) उ १।१७
सुविण (स्वप्न) उ १।३३;५।२५
सुविभत्त (सुविभक्त) ज १।३७;२।१४,१५;३।३ सू २०।७
सुविरइय (सुविरचित) ज २।१५;३।२४;४।१३ सू २०।७
सुव्वत (सुव्रत) सू २०।८
सुव्वय (सुव्रत) सू २०।८।८
सुव्वया (सुव्रता) उ ३।६६,१००,१०६ से १०८, १११ से ११३,११५,११६,११८,१३२,१३३, १३६,१४१ से १४३,१४५,१४६,१४८,१५०
सुसंगोविय (सुसङ्गोपित) उ ३।१२८
सुसंठिय (सुसंस्थित) ज ७।१७८
सुसंपरिहिय (सुसंपरिहित) उ ३।१२८
सुसंवुय (सुसंवृत) ज ३।६,२२२
सुसज्ज (सुसज्ज) ज ५।४३
सुसद्द (सुशब्द) ज ७।१७८
सुसमण (सुशमन) ज २।५३,६२
सुसमदुस्समा (सुषमदुष्षमा) ज २।२,३,६,७,५४,५६
सुसमसुसमा (सुषमसुषमा) ज २।२,३,६,७,५२ १६१,१६३,१६४;४।१०६
सुसमा (सुषमा) ज २।२,३,६,५१,५२,१६०,१६१; ४।८३
सुसमाहिय (सुसमाहित) ज ३।३५
सुसवण (सुश्रवण) ज २।१५
सुसारक्खिय (सुसंरक्षित) उ ३।१२८
सुसाहय (सुसंहत] ज २।१५

---

1 हे० २।१३८ सिप्पि (शुक्ति)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुसिणिद्ध (सुस्निग्ध) ज २।१५

सुसिलिट्ठ (सुश्लिष्ट) ज १।३७;३।६,१२,१७८, २२२;४।१२८;५।४३;७।१७८

सुसीमा (सुसीमा) ज ४।२०२।२

सुसीस (सुशिष्य) ज ३।१०६

सुसेण (सुषेण) ज ३।७६,७७,७८,८०,८२ से ६१, १०६ से १११,१२८,१५१ से १५७,१७०,१७१

सुस्सर (सुस्वर) ज २।१५;५।५२,५३

सुस्सूसमाण (शुश्रूषमाण) ज १।६; २।६०; ३।२०५, २०६;५।५८ उ १।१६

सुह (सुख) प २।४८,२।६४।१५,१६,२०;३५।१।२, ३५।१०,११;३६।६४।१ ज २।१२,२०,७१; ३।६,८१,६६,१००,१०१,११७।१,१२१,२२२; ४।२७,४८,१७७; ५।२६,२८ सू १६।२२।१३ उ १।११०,१२६,१३३

सुह (शुभ) प २।४६ ज २।१२,२०;३।६

सुहंसुह (सुखंसुख) ज २।१४६;३।१२१,१२७, २२४;५।६७ उ १।२,५०,७५

सुहणामा (शुभनामा) ज ७।१२१ सू १०।६१

सुहता (सुखता) प २३।१५

सुहत्त (सुखत्व) प २८।२४,२६

सुहत्थि (सुहस्तिन्) ज ४।२२५।१,२२८

सुहफास (सुखस्पर्श, शुभस्पर्श) ज ५।२८

सुहम्मा (सुधर्मा) ज २।१२०;४।१२०,१२१,१२६, १३८; ५।१८,२२,२३,५०; ७।१८४,१८५ सू १८।२२,२३ उ ३।६,६०,१५६,१६६; ४।५; ५।१५,१६

सुहया (सुखता) प २३।२०

सुहलेसा (शुभलेश्या) ज ७।५८

सुहलेस्सा (शुभलेश्या) सू १६।२२।३०

सुहावह (सुखावह) ज ४।२१२

सुहासण (सुखासन) ज ३।२८,४१,४६,५८,६६, ७४,१३६,१४७,१८७,२१८

सुहि (सुखिन्) प २।६४।२०; ३६।६४।१ ज २।२६

सुहिरण्णियाकुसुम (सुहिरण्यिकाकुसुम) प १७।१२७

सुहुम (सूक्ष्म) प २।३,६,६,१२,१५,३१;३।१।२, ६१ से ७१,८५ से ६५,१११,१८३;४।५६ से ६१,६८,७५,८२,८३,६१;६।८३,१०२; १५।४३,४५;१८।१।२,३७ से ३६,११६; २१।४,५,२३ से २७,४०,४१,५०;२३।१२१; ३६।७६,८१,६२ चं १।३ ज २।६;७।१७८

सुहुमआउक्काइय (सूक्ष्मअप्कायिक) प १।२१,२२

सुहुमणाम (सूक्ष्मनामन्) प २३।३८,११८,१२०

सुहुमतेउक्काइय (सूक्ष्मतैजस्कायिक) प १।२४,२५

सुहुमवणस्सइकाइय (सूक्ष्मवनस्पतिकायिक) प १।३०,३१

सुहुमवाउक्काइय (सूक्ष्मवायुकायिक) प १।२७,२८

सुहुमसंपराय (सूक्ष्मसंपराय) प १।११२,११३, १२४,१२८; २३।१६१

सुहुमसंपरायचरित्तपरिणाम (सूक्ष्मसंपरायचरित्र-परिणाम) प १३।१२

सुहोतार (सुखावतार) ज ४।३,२५

सुहोदय (सुखोदक, शुभोदक) ज ३।६ २२२

सुहोवभोग (सुखोपभोग) ज २।१४५,१४६

सुइ (शुचि) ज ४।२६

सूईमुह (सूचीमुख) प १।४६

सुई (सूची) प १५।२६;२१।२५

सूणा (सूना) उ १।४४,४५

सूमाल (सुकुमार) ज ३।२११;५।५६;७।१७८ उ १।११ से १३,३० से ३२,५३,७८,६५, १४५;२।५,७,१६;३।६७;४।८;५।१२

सूमाला (सुकुमारा) ज ३।२२१;५।५८

सूय (शूप) ज ३।१७८,१८६,१८८,२०६,२१०, २१६,२१६,२२१

सूयलि (दे०) प १।८६

सूर (सूर) प १।१३३; २।२० से २७,४८; १५।५५।३ ज १।२४; २।६८; ३।३५,६५, ११७,१५६,१६७।१२,१८८,२०७,२१२; ५।५६; ७।१०२,१३५।१,४,१७७।२,१७८।१, १८०,१८१ सू १०।३,१२३,१३४,१४३ से १४७,१५० से १६१,१६६ से १६६,१७२,

१७३;११।२ से ६;१२।१६ से २८;१५।१,५,
७,११,१२,१३,१५,१८,२१,२४,२७,३०,३३,
३६;१८।१,१८,१६,३४,३७;१६।१।१,
१६।२२।४,१०,१५,२१,२३,२४,२७ से ३०,
३२;१६।३५;२०।२,३,५,६ उ २।१२;
३।२।१,२१,४८,५५,६३,६७,७०,७३,१०६,
११८
सूर (शूर) ज ३।१०३;४।६४
सूरकंत (सूरकान्त) प १।२०।४
सूरकंतमणिणिस्सिय (सूरकान्तमणिनिश्रित)
प १।२६
सूरणकंद (सूरणकन्द, शूरणकंद) प १।४८।७
सूरत्थमण (सूरास्तमयन) ज २।१३४
सूरपण्णत्ति (सूरप्रज्ञप्ति) ज ७।१०१
सूरपव्वय (सूरपर्वत) ज ४।२१२
सूरप्पभा (सूरप्रभा) सू १८।२४
सूरमंडल (सूरमण्डल) ज ७।२ से १६,१७७
सूरलेस्सा (सूरलेश्या) सू १६।३,४
सूरवडंस (सूरावतंसक) सू १८।२४
सूरवर (सूरवर) सू १६।३५
सूरवरोभास (सूरवरावभास) सू १६।३५,३६
सूरवल्ली (सूरवल्ली) प १।४०।३
सूरविमाण (सूरविमान) प ४।१८३ से १८८
ज ७।१७३,१७४,१७६,१८६,१६० सू १८।१,
८,१०,१४,२६,३०
सूरसेण (शूरसेन) प १।६३।५
सूरादेवीकूड (सूरादेवीकूट) ज ४।४४
सूराभिमुह (सूराभिमुख) उ ३।५०
सूरिय (सूर्य) प २।४८ से ५१,६३ ज २।१३१;
७।१,१३,२० से ३१,३५ से ३६,५४,५८,६६,
१०१,१५६ से १६८,१८०,१८१,१६७
चं २।२,५ सू १।६।२,५;२।१।१,१२,१४,१६
से २४,२७;२।१ से ३;३।१,२;४।१,२,४,७,६,
१०;५।१;६।१;७।१;८।१;६।१ से ३;१०।६३
से ७४,१३२,१३४,१७१;१५।१,३;१७।१;
१८।२,३,१८,१६,३७;१६।१;५।२,१६।११,
१५।२,१६,२१।६,१६।२२।२३,२६;२०।१।७
उ ५।४१
सूरियगत (सूर्यगत) सू १।१६
सूरियपडिहि (सूर्यप्रतिधि) सू ६।३
सूरियाभ (सूर्याभ) ज ५।५५ उ ३।७,६० से ६२,
१५६;५।२३
सूरियाभगम (सूर्याभगम) ज ५।४०
सूरियावत्त (सूर्यावर्त) ज ४।२६०।२ सू ५।१
सूरियावरण (सूर्यावरण) ज ४।२६०।२ सू ५।१
सूरुग्गमण (सूर्योद्गमन) ज २।१३४
सूरोद (सूरोद) सू १६।३५
सूल (शूल) ज ३।३१,१७८
सूलपाणि (शूलपाणि) प २।५१ ज २।६१;५।४८,
६०
सूसर (सुस्वर) ज २।१६;५।२२,२६
सूसरणाम (सुस्वरनामन्) प २३।३८,१२५
सूसरणिग्घोष (सुस्वरनिर्घोष) ज २।१६
सूसरा (सुस्वरा) उ ३।७,६१
से (दे०) प १।१० उ १।१५;३।३३
सेउ (सेतु) ज २।१२
सेज्जंस (श्रेयांस) ज २।७६ सू १०।२४।१
सेज्जभंड (शय्याभाण्ड) उ ३।५१।१
सेज्जा (शय्या) प ३६।६१ उ ३।३६;४।२१
सेट्ठि (श्रेष्ठिन्) प १६।४१ ज २।२५;३।६,१०,
७७,८६,१७८,१८६,१८८,२०६,२१०,२१६,
२१६,२२१,२२२ उ १।६२;३।११,१३,१०१
सेडिय (दे०) प १।४२।१
सेडी (दे०) प १।७६ लोमपक्षी विशेष
सेढि (श्रेणि) प २।३१;१२।८,१२,१६,२७,३१,
३२,३६ से ३८;२१।६३ ज २।१३३,२२०;
४।१७२,२००;५।३२;६।६।१,१५
सेणगपट्ठसंठित (सेनकपृष्ठसंस्थित) सू ४।३
सेणा (सेना) ज ३।१५,१७,२१,३१,३४,७७,७८,
८८,१०६,१५६,१७३,१७५,१७७,१८०,
१६६ उ १।१२३,१२७,१२८;५।१८
सेणावइ (सेनापति) प १६।४१ ज २।१५;३।६,

१०,७६ से ७८,८० से ६१,१०६ से १११, १२८,१२६,१५१ से१५७,१७०,१७८,१८६, १८८,२०६,२१०,२१६,२१६,२२१,२२२ उ ११६२;३।११,१००;५।१०

सेणावइरयण (सेना विरत) ज ३।१७८,१८६, १८८,२०६,२१०,२१६ २२०,२२१;५।१६

सेणावइरयणत्त (सेना विरतत्व) प २०।५८

सेणावच्च (सैनापत्य) प २।३०,३१,४१,४६ ज १।४५;३।१८५,२०६,२२१;५।१६ उ ५।१०

सेणि (श्रेणि) ज ३।१२,१३,२८,२६,४१,४२,४६, ५०,५८,५६,६६,६७,७४,७५,१४७,१४८, १६८,१६६,१७८,१८६,१८८,२०३,२१६, २१६,२२१

सेणिय (श्रेणिक) उ १।१०,१२,२६ से ३२,३४, ३६ से ४४,४६ से ४६,५७,५८,६१,६२,६५, ६६,६८,७२ से ७४,८२,८३,८६ से ६२,६५, ६६,१०३,१०६ से ११४,१४५;२।५,१७,२२; ३।४,२१,२४,८६,१५५,१६८;४।४

सेण्ण (सैन्य) ज ३।१५,२१,३१,३४,७७,७८,६१, ६५,१५६,१७३,१८५,१६६

सेण्हा (श्लक्ष्णक) प १।३५।३

सेत (श्वेत) प २।४७।३,२।६४ ज ३।१२,८८

सेत (श्वेतम्) सू १०।८४।१

सेतसप्प (श्वेतसर्प) प १।७०

सेय (श्वेत) प २।४६ ज १।१६,३८;३।१८,३१, ३५,६३,१८०;४।१०,८५,११५,१२१ १२५, २१७;५।६२;७।१७८ चं २।१ सू ११६ उ १।४९;५।१६

सेय (स्वेद) प १६।५४

सेय (श्रेयस्) प ३।१६३;१३८।१;७।१२२।१ उ १।५१ ५४,६६,७६,७६,६६,१०७,११६; ३।४८,५०,५५,१०६,११८

सेयंकर (श्रेयस्कर) प २०।८,२०।८।७

सेयंस (श्रेयांस) ज ७।१२४।१

सेयकणवीर (श्वेतकणवीर) प १७।१२८

सेयणग (सेचनक) उ १।६६,१०२ से ११६,१२७; १२८

सेयणगसंठित (सेचनकसंस्थित) सू ४।३

सेयणय (सेचनक) उ १।६६ से ६६,१०३,१११, ११२

सेयता (श्वेतता) सू ४।१

सेयबंधुजीवय (श्वेतबन्धुजीवक) प १७।१२८

सेयमाल (श्वेतमाल) ज २।८

सेयविया (श्वेतविका) प १।६३।६

सेया (श्वेतता) चं ६ सू ११६।१

सेयाल (एष्यत्काल) प २८।२२,३४,३६,६८

सेयासोय (श्वेताशोक) प १७।१२८

सेरियय (सैरेयक) प १।३८।१

सेरिया (सेरिका) ज २।१०;४।१६६

सेरुतालवण (सेरुतालवन) ज २।६

सेल (शैल) प २।१;११।२५

सेलसिहर (शैलशिखर) ज २।८८

सेलु (शेलु) प १।३५।१

सेलेसि (शैलेशी) प ३६।६२

सेलेसिपडिवण्णग (शैलेशीप्रतिपन्नक) प ११।३६; २२।८

सेल्लार (दे० कुन्तकार) प १।६७ भाला बनाने वाला

सेवणा (सेवना) प १।१०१।१३

सेवाल (शैवाल) प १।३८।२,१।४६,१।४८।१, १।६२ ज २।१०

सेवालभक्खि (शैवालभक्षिन्) उ ३।५०

सेस (शेष) प १।१०१।११;२।३२,३४,३६ से ४०, ५१ से ५४,५८,६०,६२;३।१८२;५।६४, १५२,१५४,२०५,२४४;६।८१,८३,८४; १०।१४।६;१२।३८;१३।१५ से १८;१५।१८, १६,३४,७५,८२;१७।२३,२५,२७,२६,३४, ३५;२०।८,५६,६०;२२।४५,५५,८०; २३।५६,१५६,१५६,१६३,१६१,१६३,१६६; २४।८,६;२५।४;२८।२६,३८,४६,७४,१०१, १२३,१४५;३०।१४;३२।६।१;३४।२२ से २४;३५।१।२;३६।३३,६७ से ६६,७१,७३

ज १।४६; २।५२,८८,१६१; ३।१५०,१५३, १५७,१६१,१८३;४।३७,४१,५३,७०,६३, १०६,१४१,१४७,१५३,१५५,१५६,१६५, १७२,१७७,१८४,१८५,१८७ से १६१,२०३; ५।८,५१; ७।१३५।१ सू ८।१; ६।३;१०।२५, १५२ से १६१;११।२ से ६;१२।१६ से २८; १८।२४;१६।२२।२२ उ १।४८;२।६,२२; ३।७;४।२२,२८;५।१६,४५

सेसय (शेषक) प २३।१६०

सेसवई (शेषवती) ज ५।६।१

सेसिय (शेषित) ज ७।१४६

सेह (दे०) प १।७६

सोइंदिय (श्रोत्रेन्द्रिय) प १५।१,२,७,८,११ से १८, ४०; १५।५८ से ६७,६६,७०,१३३,१३४; २८।७१ उ ३।३३

सोइंदियत्त (श्रोत्रेन्द्रियत्व) प २८।२४;३४।२०

सोइंदियपरिणाम (श्रोत्रेन्द्रियपरिणाम) प १३।४

सोंड (शौण्ड) ज ७।१७८

सोंडमगर (शौण्डमकर) प १।५६

सोंडा (शुण्डा) उ १।६७

सोक्ख (सौख्य) प २।६४।१४,१८,२२

सोक्खुप्पाय (सौख्योत्पाद) सू २०।६।६

सोग (शोक) प २३।३६,७७,१४५ ज २।१५,७०; ३।१०५

सोगंधिय (सौगन्धिक) प १।२०।४,१।४८।४४ ज ३।१०; ४।३,२५; ५।५

सोच्चा (श्रुत्वा) ज ३।६ उ १।२१;३।१३; ४।१४;५।२०

सोणि (श्रोणि) ज २।१५

सोणिय (शोणित) प १।८४ ज ३।३६ उ १।५६, ६१,६२,८४,८६ ८७

सोणीक (श्रोणिक) ज ३।१०६।१

सोत्त (श्रोत्र) प १५।७७

सोत्तिय (शौक्तिक) प १।४६

सोत्तिय (सौत्रिक) प १।६६

सोत्थिय (स्वस्तिक) प २।६४ ज २।१५; ३।३, ३२,१७८;४।२८;५।३२ सू २०।८,२०।८।६

सोत्थियसाय (स्वस्तिकशाक) प १।४४।२

सोदामिणी (सौदामिनी) ज ५।१२

√सोभ (शुभ्) सोभंति ज ७।१ सोभते ज २।१५; ३।२४।३,३७।१,४५।१,१३१।३ सोभिंसु ज ७।१ सोभिस्संति ज ७।१ सू १६।१ सोभेंति सू १६।१ सोभेंसु सू १६।१

सोभंत (शोभमान) ज २।१५

सोभग्ग (सौभाग्य) ज ५।६८,७०

सोभण (शोभन) ज ३।२०६

सोभमाण (शोभमान) ज ३।२४।३,३७।१,४५।१, १०६,१३१।३

सोभयंत (शोभमान) ज ७।१७८

सोभा (शोभा) ज ७।१

सोभावेंत (शोभयमान) ज ३।१७८

सोभिय (शोभित) ज ३।३५,२२१; ७।१७८

सोभेंत (शोभमान) ज ३।१७८

सोम (सोम) ज ४।२०३; ७।१३०,१८६।२ सू २०।८,२०।८।२ उ ३।५१,१५१,१५२

सोम (सौम्य) ज २।१५ सू २०।४ उ ५।५,२२

सोमंगलक (सौमङ्गलक) प १।४६

सोम(काइय) (सोमकायिक) ज १।३१

सोमणस (सौमनस) ज ४।२०३,२०४।१,२०५, २०८,२१५; ५।४६।३,५५; ७।११७।२ सू १०।८६।२

सोमणसवक्खार (सौमनसवक्षस्कार) ज ४।२०५

सोमणसवण (सौमनसवन) ज ४।२१४,२४०, २४१,२४३

सोमणसा (सौमनस्या) ज ४।१५७।१; ७।१२०।१ सू १०।८८।१

सोमणस्सिय (सौमनस्यित, सौमनस्यिक) ज ३।५, ६,८,१५,१६,३१,५३,६२,७०,७७,८४,६१, १०७,११४,१४२,१६५,१७३,१८१,१८६, १६६,२१३;४।२०३;५।२१,२७ उ १।२१,४२; ३।१२६

सोमदंसण (सौम्यदर्शन) ज २।६८
सोमदेवया (सोमदेवता) सू १०।८३
सोमया (सोमता) ज ३।३
सोमरूव (सौम्यरूप) उ ५।२२
सोमा (सोमा) उ ३।१२६ से १३१,१३४ से १४४, १४७,१४८,१५०
सोमाण (सोपान) ज ५।४१,४२,४४,४५
सोमिल (सोमिल) उ ३।२८ से ३२,३५ से ४५, ४७,४८,५० से ६५,६७ से ८३
सोय (श्रोतस्) ज २।१३४
सोय (शोक) उ १।२३,९१,९३
सोयमाण (शोचत्) उ १।९२
सोयविण्णाणावरण (श्रोत्रविज्ञानावरण) प २३।१३
सोयामणी (सौदामिनी) ज ३।३५
सोयावरण (श्रोत्रावरण) प २३।१३
सोरिक (सौरिक) प १।९३।२
सोल (षोडश) प १०।१४।४ से ६ ज ४।१४२ सू २।३
सोल (षोडशन्) सू १९।१९
सोलस (षोडशन्) प २।२५ ज १।७ सू १।१४ उ ३।१२,१२९;५।१०
सोलसअंगुलजंघाक (षोडशांगुलजङ्घाक) ज ३।१०९
सोलसग (षोडशक) प २।२७।१,२
सोलसम (षोडश) सू १२।१७
सोलसमंडलचारि (षोडशमण्डलचारिन्) सू १३।५
सोलसविह (षोडशविध) प ११।८६;२३।३५
सोला (षोडशन्) सू १९।१९
सोल्ल (दे० पक्व) उ १।३४,४०,४९,७४
सोल्लिय (दे० पक्व) उ ३।५०
सोवक्कमाउय (सोपक्रमायुष्क) प ६।११५,११६
सोवचिय (सोपचित) ज २।७१
सोवच्छिय (सौवस्तिक) प १।५०
सोवण्णिय (सौवर्णिक) ज ३।१३५,२०९;४।१३; ५।५५,५६
सोवत्थिय (सौवस्तिक) ज ४।२१०।१;५।३२ सू २०।८,२०।८।६
सोवाण (सोपान) ज ३।१९५,२०४ से २०६, २१४ से २१६;४।४,५,२६,२७,८९,११८, १२८,१४४,२४६;५।३०,४१,४२
सोस (शोष) ज २।४३
सोहंत (शोभमान) प २।१
सोहग्ग (सौभाग्य) प ३४।२० ज २।६५;३।१८६, २०४
सोहम्म (सौधर्म) प १।१३५;२।४९ से ५२,५८, ६३;३।२९,१८३;४।२१३ से २२४;६।५६,६५, ८५,९५,१११;१०।२,३;१५।८७;२०।६१; २१।६१,७०,९०;२८।७५;३०।२६;३४।१६, १८ ज ५।१८,२४,२५,४४ उ २।१२,२२; ३।९०,१२०,१५६,१६१;४।५,२४,२८;५।४१
सोहम्मकप्प (सौधर्मकल्प) प ६।२७
सोहम्मकप्पवइ (सौधर्मकल्पपति) ज ५।२६
सोहम्मकप्पवासि (सौधर्मकल्पवासिन्) ज २।६० ५।१६,२६,४३
सोहम्मग (सौधर्मज) प २।५०,५१;७।८;१५।९९, १०८,११२,१२५;२०।४९;३३।१६,२४ ज ५।४९
सोहम्मगकप्पवासि (सौधर्मककल्पवासिन्) प २।५०
सोहम्मवडेंसय (सौधर्मावतंसक) प २।५६
सोहम्मवडेंसय (सौधर्मावतंसक) प २।५०,५४ ज ५।१८
सोहा (शोभा) ज ३।९,२२२
सोहिय (शोभित) ज २।१२

हं

हंत (हन्त) ज २।२४,२७,२९,३४ से ३७,४१,६४, ६६;४।२७३;५।६८ से ७०;७।३६,३७,१०१
हंता (हन्त) प १।१;१५।४३;१७।१६६;२०।१०, २२;२८।३ उ ५।३२
हंदि (दे०) ज ३।२४।११,३१।१;५।२७,७२,७३
हंभो (दे०) उ १।११५,११६; ३।५८,६०,७६,७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हंस (हंस) प ११२०।४,७६ ज २।१२,१५ उ५।५
हंसगब्भ (हंसगर्भ) ज ५।५
हंसलक्खण (हंसलक्षण) ज २।६६
हंसस्सर (हंसस्वर) ज २।१६;५।५२
हक्कार (हाकार) ज २।६०
√हक्कार (आ+कारय्) हक्कारेंति ज ५।५७
हट्ठ (हृष्ट) ज २।४,१४६;३।५,६,८,१३,१५,१६, २६,३१,४२,५०,५२,५३,५६,६१,६२,६७, ६६,७०,७५,८४,६१,१००,११४,१३७,१४१, १४२,१४८,१५०,१६५,१६६,१७३,१८१, १८६,१६२,१६६,२०८,२१३;५।५,१५,२१, २३,२७ से २६,४१,५५,५७,७० उ १।२१, ४२,४५,१०८;३।१३,१०१,१०३,११३,१३४, १३६,१४७,१६०;४।११,१४,२०;५।१५,३८
हडप्पग्गाह ('हडप्प'ग्राह) ज ३।१७८
हढ (हठ) प १।४६,१।४८।६,१।६२
हणमाण (घ्नत्) ३।१३०
हणुगा (हनुका) ज २।१५
हत्थ (हस्त) प २।३०,३१,४१,४६ ज २।६५; ३।६,२४।४,३७।२,४५।२,१०६,१३३।४,१८६, २०४;५।२१;७।१२८,१२६।१,१३३।२,१३६, १४०,१४६,१६४ सू १०।२ से ६,१६,२३, ४६,६२,७१,७५,८३,१११,१२०,१३१,१३२, १५६;१२।२४ उ १।८८,८६;३।५१,५६,६८; ४।२१ से २३
हत्थग (हस्तक) ज ४।३०;५।५
हत्थगय (हस्तगत) ज ३।६,२१,३४,८५ से ८७; ५।८ से ११,५७
हत्थसंठिय (हस्तसंस्थित) सू १०।४६
हत्थि (हस्तिन्) प १।६५;११।२१ ज २।३५, ६५;३।३१,६८,१६७,१७८;५।५७ उ १।१२१, १३१;५।१८
हत्थिखंध (हस्तिस्कन्ध) ज ३।१८,७८,६३,१८०, २१२,२१३
हत्थिणपुर (हस्तिनापुर) उ ३।१७१
हत्थिणाउर (हस्तिनापुर) उ ३।७१
हत्थिणिया (हस्तिनिका) प ११।२३
हत्थितावस (हस्तितापस) उ ३।५०
हत्थिमुह (हस्तिमुख) प १।८६
हत्थिरयण (हस्तिरत्न) ज ३।१५,१७,२०,३१,३३, ५४,६३,७१,७७,६१,६२,१४३,१५१,१६६, १७३,१७५,१७७,१७८,१८२,१८३,१८६, १६६,२०२,२०४,२१४,२१७,२२० उ १।१२३, १३१
हत्थिरयणत्त (हस्तिरत्नत्व) प २०।५६
हत्थिसोंड (हस्तिशौण्ड) प १।५०
हदमाण (हदमान) उ ३।१३०
हम्ममाण (हन्यमान) उ १।१३०
हम्मिय (हर्म्य) ज २।२०
हम्मियतलसंठित (हर्म्यतलसंस्थित) सू ४।२
हय (हय) प २।३०,४६ ज २।६५;३।३,१५,१७, २१,२२,३१,३४,३६,७७,७८,६१,१०८ से १११,१७३,१७५,१७७,१८५,१८७,१६६, २०६,२१८ उ १।१२३,१३८;५।१,७,१८
हय (हत) ज २।६० से ६२;३।२२१;७।१८४ उ १।२२,१४०;३।१२३,१२६
हयकण्ण (हयकर्ण) प १।८६
हयच्छाया (हयच्छाया) प १६।४७
हयपोसण (हयपोषण) ज ३।३
हयरूवधारि (हयरूपधारिन्) ज ७।१७८
हयलाला (हयलाला) ज ३।२११;५।५८
हयवति (हयपति) ज ३।१२६।२
हयहेसिय (हयहेसित) ज ३।३१;५।५७;७।१७८
√हर (हृ) हरेज्जा ज २।६
हरओ (हरतस्) ज ४।१४०
हरडय (हरीतक) प १।३५।२
हरतणुय (हरतनुक) प १।२३,१।४८।६
हरि (हरित्) ज ३।३५;४।८४,६०;६।२१ सू २०।८,२०।८।४
हरिकंत (हरिकान्त) प २।४०।६
हरिकंतदीव (हरिकान्तद्वीप) ज ४।७६

हरिकंतप्पवायकुंड (हरिकान्ताप्रपातकुण्ड) ज ४।७५, ७६,७७
हरिकंता (हरिकान्ता) ज ४।७३ से ७५,७७,७८, ८४,६०,२६२,२६८;६।२१
हरिकंताकूड (हरिकान्ताकूट) ज ४।७६
हरिकूड (हरिकूट) ज ४।६६,२१०।१
हरिणेगमसि (हरिनैगमेषिन्) ज ५।२२,२३,४६
हरितग (हरितक) प १।४४।१
हरिता (हरितक) ज २।१४४,१४५
हरिमेला (हरिमेला) ज ३।१७८; ७।१७८
हरिय (हरित) प १।६४।१ ज ३।२४ उ ३।५१,५३
हरियग (हरितक) उ ३।४६
हरिया (हरितक) प १।३३।१,१।४४ ज २।१४५, १४६
हरियाल (हरिताल) प १।२०।२;१७।१२७ ज ३।११
हरियालगुलिया (हरितालगुलिका) प १७।१२७
हरियालभेद (हरितालभेद) प १७।१२७
हरियालिया (हरितालिका) ज ५।१३
हरिवास (हरिवर्ष) प १।८७;१६।३०;१७।१६४ ज २।६;४।६२,७७,८१ से ८६,१०२,२६५; ६।६,२१
हरिवासकूड (हरिवर्षकूट) ज ४।७६,६६
हरिस (हर्ष) प २।२० से २७ ज ३।५,६,८,१५, १६,३१,५३,६२,७०,७७,८४,६१,१००,११४, १४२,१६५,१७३,१८१,१८६,१६६,२१३;५।२१ २७,४१ उ १।२१,४२,७१,७२;३।१३१;५।२२
हरिस्सह (हरिसह) २।४०।७ ज ४।१६२।१,१६५, २१०
हरिस्सहकूड (हरिसहकूट) ज ४।१६५,२३६
हलउलेमाण (दे०) उ ३।११४
हलधरवसण (हलधरवसन) प १७।१२४
हलिद्दपत्त (हरिद्रापत्र) प १।५१
हलिद्दा (हरिद्रा) प १।४८।२
हलिद्दी (हरिद्रा) ज ३।११६
हलिमच्छ (हलिमत्स्य) प १।५६
हलीमुह (हलीमुख) ज ३।३५
हलीसागर (हलीसागर) प १।५०
√हव (भू) हवइ प २।४७।२;३६।६४ ज ७।१३२।४,१७७।३ सू १६।२२।६ हवंति प १।३८।३,१।४८।५८,५६ ज ७।१७८।१,२ चं ३।३ सू १।७।३;१२।७१;१६।१।१, १६।२२।८,२१ हवति प १।३७।३ ; ३५।१।१ ; ३६।६४ हवेज्ज प २।६४।४ हवेज्जा प २।६४।१६
हव्व (अर्वाच्) प ३६।८१ उ १।२२,७०,८६,१०७, १०८,११५ से ११७,११६,१२७,१२८
हव्व (हव्य) ज २।६,२४,३४,३५,३७;३।१०७, ११४;७।२० से २५,७६,८२,२०२,२०४,२०६ सू २।३;२०।७
√हस (हस्) हसंति ज २।७
हसंत (हसत्) ज ३।१७८
हसमाण (हसत्) उ ३।१३०
हसित (हसित) सू २०।७
हसिय (हसित) प २।४१ ज २।१५;३।१३८
हस्स (ह्रस्व) प २।६४।४;१३।२३
हस्सतर (ह्रस्वतर) ज ४।५४
हाण (मल्लिघ्राण) ज ३।१०६
हायमाणय (हीयमानक) प ३३।३५
हार (हार) प २।३०,३१,४१,४६,६४ ज ३।६,६, १८,२६,३५,६३,१८०,२११,२२२;४।२३, ३८,६५,७३,६०,६१;५।२१,३८,६७ उ १।६६,१०२ से ११७,११६
हारितग (हारितक) ज ३।११६
हारोस (दे० हारोष) प १।८६
हालाहल (हालाहल) प १।५०
हालिद्द (हारिद्र) प १।४ से ६;५।५,७,२०५; ११।५३;२३।१०२;२८।२६,३२,६६ ज ४।२६ सू २०।२
हालिद्दगुलिया (हारिद्रगुलिका) प १७।१२७
हालिद्दमत्तिया (हारिद्रमृत्तिका) प १।१६
हालिद्दय (हारिद्रक) प १७।१२६

हालिद्दवण्णाभ (हारिद्रवर्णाभ) सू २०।२
हालिद्दसुत्तय (हारिद्रसूत्रक) प १७।११६
हालिद्दा (हरिद्रा) प १७।१२७
हालिद्दाभेद (हरिद्राभेद) प १७।१२७
हास (हास) प २।४१,२।४७।३;११।३४।१;
२३।३६,७६,१४४ ज २।६६,७०
हासकारग (हासकारक) ज ३।१७८
हासणिस्सिया (हासनिश्रिता) प ११।३४
हासरइ (हासरति) प २।४७।३
हासा (हासा) ज ५।११।१
हाहाभूय (हाहाभूत) ज २।१३१,१३६
हिंगुरुक्ख (हिंगुरूक्ष) प १।४३।२
हिंगुलय (हिंगुलक) प १।२०।२ ज ३।११
हिंगुलुग (हिंगुलुक) ज ३।३५
हिट्ठिम (अधस्तन) प २।२७।१
हिट्ठ (अधस्) प २।२४ से २७ रू १८।२,३;
१६।२२।१७
हिट्ठि (अधस्) ज ७।१६८।१
हिट्ठिल (अधस्तन) ज ७।१७५
हिट्ठिलग (अधस्तन) ज ७।१७५
हिट्ठिल्ल (अधस्तन) सू १८।७
हितकर (हितकर) ज ३।८८
हिदय (हृदय) ज ३।१३८
हिमय (हिमक) प १।२३
हिमवंत (हिमवत्) ज १।२६;३।२,३५;४।१७७
उ१।१०,२६,६६;५।११
हिमवयकूड (हिमवत्कूट) ज ४।२३६
हिमसीतल (हिमशीतल) सू २०।२
हिय (हित) ज २।६४,७१;३।८८;५।२६
हियईसर (हृदयेश्वर) ज ३।१२६।३
हियकर (हितकर) ज ३।१६७
हियकारग (हितकारक) ज ५।५,४६
हियय (हृदय) ज ३।५,६,८,१५,१६,३१,३५,
५३,६२,७०,७७,८४,६१,१००,११४,१४२,
१६५,१७३,१८१,१८५,१८६,१८६,१६६,
२१३;५।२१,२७,४१,५८ सू २०।६।१
उ १।२१,४२;३।१३१
हिययगमणिज्ज (हृदयगमनीय) ज २।६४;३।१८५,
२०६;५।५८
हिययपल्हायणिज्ज (हृदयप्रह्लादनीय) ज २।६४
३।१८५,२०६;५।५८
हिययमाला (हृदयमाला) ज २।६५;३।१८६,२०४
हिययसूल (हृदयशूल) ज २।४३
हिरण्ण (हिरण्य) ज २।२४,६४,६६;४।२७३;
५।६८ से ७०
हिरण्णवय (हैरण्यवत) प १।८७
हिरण्णवास (हिरण्यवास) ज ३।१८४;५।५७
हिरण्णविहि (हिरण्यविधि) ज ५।५७
हिरि (ह्री) ज ४।६४;५।११।१ उ ४।२।१
हिरिकूड (ह्रीकूट) ज ४।७६
हिरिसिरिधीकित्तिधारक (ह्रीश्रीधीकीर्तिधारक)
ज ३।१२६।१
हिरिसिरिपरिवज्जिय (ह्रीश्रीपरिवर्जित) ज ३।२६,
३६,४७,१०७,११४,१२२,१२४,१३३
हिलियमाण (अभिलीयमान) ज ३।१०६
हिल्लिय (दे०) प १।५०
हीण (हीन) प २।६४।४;५।५,१०,२०,३०,३२,
१०२,१२६,१३१,१३२,१३४,१६०,१७७,
१६३,२१४,२२८
हीणपुण्णचाउद्दस (हीनपुण्यचातुर्दश) ज ३।२६,
३६,४७,१०७,११४,१२२,१२४,१३३
हीणपुण्णचाउद्दसिय (हीनपुण्यचातुर्दशिक) उ १।८६,
११५,११६
हीणस्सरता (हीनस्वरता) प २३।२०
हीनस्सर (हीनस्वर) ज २।१३३
हीर (हीर) प १।४८।२० से २६
हीरमाण (ह्रियमाण) ज ७।३१,३३ सू ४।४,७
√हील (हेलय्) हीलेंति उ ३।११७
हीलिज्जमाण (हेल्यमान) उ ३।११८
√हु (भू) हुंति ज १।१७;४।१४२।१;७।१२४।१,४;
१७२।१ चं ४।३ सू १।८।३,१६।२२।४,५,१५,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०,२३,२७,३१
हुंड (हुण्ड) प १५।१८,३०,३५;२१।२८ से ३३, ३५ से ३७,५८,५९; २३।४६
हुंबउट (दे०) उ ३।५०
हुडुक्क (हुडुक्क) ज ३।२०९
१ **हुण** (हु) हुणइ उ ३।५१
हुत (हुत) उ ३।४८,५०
हुतवह (हुतवह) ज ३।१०९
हुयवह (हुतवह) ज २।३१
हुहुय (हुहुक) ज २।४
हुहुयंग (हुहुकाङ्ग) ज २।४
हूण (हूण) प १।८९
हेउ (हेतु) प १।१०१।५ उ ३।९
हेट्ठ (अधम्) प २।२१ से २३,३० से ३६,४१ से ४३,४६;१२।३२; ३६।६१ ज ३।१८३; ४।१३४
हेट्ठा (अधम्) सू १२।३०; १७।१;२०।६
हेट्ठिम (अधस्तन) प २।६२।१; ३३।१६
हेट्ठिमउवरिम (अधस्तनउपरितन) प २८।८९
हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जग (अधस्तनउपरितनग्रैवेयक) प १।१३७;४।२७३ से २७५; ७।२२
हेट्ठिमग (अधस्तन) ज ७।१३६।१
हेट्ठिमगेवेज्ज (अधस्तनग्रैवेय) प ६।३९
हेट्ठिमगेवेज्जग (अधस्तनग्रैवेयक) प २।६० से ६२;३।१८३;६।५६
हेट्ठिममज्झिम (अधस्तनमध्यम) प ४।२७१; २८।८८
हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जग (अधस्तनमध्यमग्रैवेयक) प १।१३७; ४।२७०,२७२; ७।१
हेट्ठिमहेट्ठिम (अधस्तनाधस्तन) प ४।२६८,२६९
हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जग (अधस्तनाधस्तनग्रैवेयक) प १।१३७; ४।२६७; ७।२०; २८।८७
हेट्ठिल्ल (अधस्तन) प १६।३४;२१।६०;३३।१६, १७ ज २।११३; ४।२५३,२५४,२५७;७।१७४, २७५ सू १८।१
हेतु (हेतु) प ३०।२५,२६ सू १।१४,१९,२१,२४, २७;२।३;४।४,७; ६।१
हेम (हेम) प २।५० ज ४।६१;५।१८
हेमंत (हेमन्त) ज २।७०,८८; ७।१६० से १६३ सू ८।१; १०।६७ से ७०;१२।१४ उ ५।२५
हेमंती (हेमन्ती) सू १२।२४ से २८
हेमंतीय (हैमन्तीक) सू १२।१८
हेमजाल (हेमजाल) ज ३।४७
हेमव (हेमवत्) ज ७।११४।१ सू १०।१२४।२
हेमवय (हैमवत) प १।८७; १६।३०;१७।१६३ ज ३।१७८;४।१,४२,५३,५५,५६,५७,६१,६२, ७१,७६,१०२,२३८,२७१;६।६,२०
हेमवयकूड (हैमवतकूट) ज ४।४४,७६
हेमाभ (हेमाभ) उ १।२६,४०
हेरण्णवय (हैरण्यवत) प १६।३० ज ४।१०२, २६४।१,२६८,२७१ से २७४;६।६,२०
हेरण्णवयकूड (हैरण्यवतकूट) ज ४।२६९,२७५
√**हो** (भू) होइ प १।४८।५२;१८।१ से १०,१२ से ३७,३९,४१ से ५१,५४ से ५९,६१ से ९०, ९२ से ११४,११६,११७,११९,१२०,१२२, १२३,१२५ से १२७ ज १।१६७।४,८;३।९, ११९; ४।१४२।२; ७।११२।१,१८२।२, १५१।२,१७७।१,२ सू १९।२२।६,७,१७,२८, २९;२०।८।८ उ ४।२।१ होई प १।१०१।८; २।२७।१ होउ उ १।६३;२।९ होंति प १।४७।२,१।४८।४७,४९,१।७५,७६, ८१।१; २।२७।३,२।४७।८ से ११ २।६४।९; २२।२५ ज १।१६।४।१५१।२;७।११२।१, १७२।१ सू १०।१२९।२,५;२०।८।३,२०।९ उ २।२२ होज्ज प २२।९०;२८।१०९ होज्जा प १६।१०,११,१३,१५,२१;१७।११२;२२।२३; २४।४,५,८,११,१२;२५।५;२६।४,६,९,१०; २७।३ होति प १।४३।२,१।४८।३९,५०; २।४७।१,२।६४।६;१०।१४।१;१२।२२।१ १८।१।२,१८।५९ ज १।४७।१;७।१७२।१; सू १९।२२।१६ होत्था ज १।२;२।६६ चं ६ सू १।१ उ १।१;२।४;३।९;४।८;५।४
होतए (भवितुम्) उ ४।२२
होत्तिय (हौत्रिक) प १।४८।१ उ ३।५०
होमाण (भवत्) प १७।११२,११३
होरंभा (होरम्भा) ज ३।३१

शुद्धि पत्र

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
		पण्णवणा	
६	१७	संठाओ	संठाणओ
४४	१६	कोलोभासा	कालोभासा
४५	२३	परमममुहं	परममसुहं
८१	२१	अभि०	आभि०
६०	२६	गब्भवक्कं०	गब्भवक्कं०
१२५	२०	बण्णादि	वण्णादि
१४२	२८	०देवेहुतो	० देवेहिंतो
१५४	४	सोतोसिणा	सीतोसिणा
१७४	१२	पडुच्च	पडुच्च
१६६	६	परिमंडलस्य	परिमंडलस्स
१७६	१८	ओसपप्पि ०	ओसप्पि ०
१८०	२३	पडुप्पणं	पडुप्पण्णं
१८२	२५	वाणमंतरणं	वाणमंतराणं
१६५	८	एणठ्ठेणं	एणट्ठेणं
२००	१	पुविक्क०	पुढविक्क०
२००	२	पुच्छाए	पुच्छाए
२००	४	बद्धेलग०	बद्धेल्लग०
२०६	३२	जस्सस्थि	जस्सत्थि
२०२	१६	बा	वा
२०८	४	०सरीकाय०	०सरीरकाय०
२०८	१६	०मीससरीर०	०मीसासरीर०
२१०	१	०आहाग०	आहारग०
२१०	२२	०मीसारीर०	०मीसासरीर०
२२६	७	पुरिस	पुरिसे
२२६	१५	होज्चा	होज्जा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३१	पा० ४	भवेतारुवे	भवेतारूवे
२३२	पं० २०	पोंडरिय०	पोंडरीय०
२४३	१७	इत्थवेदे	इत्थिवेदे
२५६	२	तिरिक्ख०	तिरिक्खजोणिय०
२५६	३	गब्भक्क०	गब्भवक्क०
२८१	१५	छहव्वि०	छव्वि०
२८५	१३	जाव	जहा
२८६	२३	पण्णत्ते	×
२९२	२४	व	य
२९७	१३	०सागरोव०	०सागरोवम०
३२४	४	सागारोव	०सागारोव०
३४१	६,१	सरीरा	सारीरा
३४१	१२	सरीर०	सारीर०
३४२	१६	समुग्घया	समुग्घाया
३४३	२	०उवण्णगा	०उववण्णगा

जंबुद्दीव

३५६	१०	०पह्मगोरे	०पम्हगोरे
३५६	१२	महावीस्स	महावीरस्स
३६६	१६	०कुडे	०कूडे
३६६	२०	०कुडे	०कूडे
३७६	६	मत्तंगाणाणं	मत्तंगाणामं
३७८	१५	मणम०	मणाम०
३८०	१६	वोवाह	वीवाह
३८०	२०	ना	वा
३८०	२४	इणट्टे	इणट्ठे
३८५	१०	अज्झावसत्ता	अज्झावसित्ता
३९५	१७	०दूसमणामं	०दूसमाणामं
३९९	अंतिम	अभिरमाणा	अभिरममाणा
४०८	१४	०निग्घोषणा०	०निग्घोसणा०
४१२	१८	मिसिमिस	मिसिमिसे
४१३	२८	खिप्पमेव	खिप्पामेव
४१४	२	महाहिमं	महामहिमं
४१५	२२	खिप्पमेव	खिप्पामेव
४१६	१७	०इंदणी०	०इंदणील०
४१८	१५	अणुप्पबाए	अणुप्पवाए
४२०	३३	अटटारस	अटठारस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२२	१७	०वासिण्णो	०वासिणी
४२२	२१	पीइदिणं	पीइदाणं
४२३	२	उस्सवक्कं	उस्सुक्कं
४२३	१०	पूरंतं	पूरेंतं
४२३	११	पव्वयभि०	पव्वयाभि०
४२३	अन्तिम	णेयवव्वो	णेयव्वो
४२५	३७	हरि०	हिरि०
४३९	पा० ४	(स)	(स) ०अत्थमंतमेत्त (शा वृ पा)
४४२	पा० २	नं०	जं०
४४५	४	मपंड्ढियं	संपड्ढियं
४४५	८	त णं	तए णं
४४५	२३	सद्धावेत्ता	सद्दावेत्ता
४६०	पा० ६	०पीढं	०पीठं
४६३	१४	०फहिलह०	०फलिह०
४९३	६	धव०	धूव०
४९६	९	धण०	धणु
४९८	१०	जंव	जंबू
५६८	१	विहप्फइ	विहप्फई
५७०	८	पणत्ताओ	पण्णत्ताओ

सूरपण्णत्ति

६१५	९	जोयय०	जोयण०
६५९	७	मुहुता	मुहुत्ता
६६८	८	बावट्ठि०	बावट्ठि०
६८६	१२	ससुद्दं	समुद्दं
६९४	१३	वराभण०	वराभरण०
६९७	४	०वितिाए	०विताणए
६९७	७	धुम०	०धूम

उवंगा

७२३	५	सवंनीकरणेणं	सवण्णीकरणं
७२३	पा० ५	सवण्णीकरणं (क)	सवंतीकरणेणं (ग)
७३४	पं १९	०वंक०	०वंकं
७८०	४	पुडिवुद्धा	पडिबद्धा
७८१	७	पाबयणं	पावयणं
७८४	१७	०पारियाणं	परियाणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दकोश

क्रमांक	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१.		अउज्झ	अओज्झ
२.	अंगपरियारिया	(अंगपरिचारिका)	(अंगप्रतिचारिका)
३.		अगक्छमाण	अगच्छमाण
४.	अगरुयलहुयपज्जव	ज २।१६३	ज २।१६३
५.	अट्ठावण्ण	(अष्टपञ्चाशत)	(अष्टपञ्चाशत्)
६.		अधमत्थिकाय	अधम्मत्थिकाय
७.	अपज्जुवासणआ	(अपर्युपासना)	(अपर्युपासन)
८.	अप्प	अप्प (अल्प) जवासा	अप्पा (अल्पा)
९.		अप्पिण	√अप्पिण
१०.	अप्फोड	(आ+स्फोटय)	(आ+स्फोट्य)
११.		अब्भंग	√अब्भंग
१२.		अब्भंतरपुरक्खरद्ध	अब्भंतरपुक्खरद्ध
१३.		अब्भुक्ख	√अब्भुक्ख
१४.		अब्भुट्ठ	√अब्भुट्ठ
१५.		अभिणंद	√अभिणंद
१६.		अभिवुड्ढ	√अभिवुड्ढ
१७.	आगासथिग्गल	(आकाश थिग्गल)	(आकाश 'थिग्गल')
१८.	आहारगसरीरय	(आरारकशरीरक)	(आहारकशरीरक)
१९.	इच्छामण	(इच्छामनस)	(इच्छामनस्)
२०.	उज्झरबहुल	(निर्झरबहुल)	(उज्झरबहुल)
२१.	उत्तमपुरिस	(उत्तमपुरु)	(उत्तमपुरुष)
२२.		उत्पन्न	उप्पन्न
२३.	उवदंसित्तए	(उपदर्शयितुभ्)	(उपदर्शयितुम्)
२४.	ओघमेघ	(ओधमेघ)	(ओघमेघ)
२५.		ओलंग	√ओलंब
२६.		कक्खंत्तर	कक्खंतर
२७.	कच्छभी	(कछभी)	(कच्छपी)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८.		कल (कल)	(कलम)
२९.	कलंबुया	(कदम्बक)	(कलम्बुका)
३०.		कहिंचि	कहिंचि
३१.		कहिय	कहिय
३२.		कालहेसि (कालहेसिन्)	×
३३.	कुंभिक्क	(कौम्भिक)	(कौम्भिक)
३३.	कुमुदा	(कुमुद)	(कुमुदा)
३५.		गरह	√गरह
३६.		गवेस	√गवेस
३७.		गा	√गा
३८.		गाह	√गाह
३९.		गिण्ह	√गिण्ह
४०.		√गुणड्ढ	गुणड्ढ
४१.		गेवज्ज	√गेवेज्ज
४२.	चउपएसिय	चःतु प्रदेशिक	(चतुःप्रदेशिक)
४३.		चय	√चय
४४.		चय	√चय
४५.		चर	√चर
४६.		चि	√चि
४७.		चिंत	√चिंत
४८.	चुल्लहिमवंत	(चुल्लहिमवत्)	(क्षुल्लहिमवत्)
४९.		छज्ज	√छज्ज
५०.	छायाछाया	(छायाछाया)	(छायाच्छाया)
५२.		छिंद	√छिंद
५२.	छिन्नसोय	(छिन्नस्रोतस)	(छिन्नस्रोतस्)
५३.		छेद	√छेद
५४.		छेय	√छेय
५५.	जटियायलय	(दे० जटिकायिलक)	(दे० जटिकायलक)
५६.		जा	√जा
५७.		जाणियत्व	जाणियव्व
५८.		जोयणसत्तपुहत्तिय	जोयणसतपुहत्तिय
५९.	णिवुड्ढत्ता	(निवर्ध्य)	(निवृध्य)
६०.	णिव्वत्त	(निर्वृत्त)	(निवृत्त)
६१.		णिव्वाण	णिव्वाय
६२.	णेरइयअसण्णिआउय	(नैरयिकासंज्ञ्यायुष्)	(नेरयिकासंज्ञ्यायुष्क)
६३.	तउसी मिंजिया	(त्रपुसीमिञ्जिका)	(त्रपुसीमज्जिका)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६४.		तंडव	√तंडव
६५.	तट्ठुदेवया	(त्वष्ट्रदेवता)	(त्वष्टृदेवता)
६६.	तट्ठु	(त्वष्ट्र)	(त्वष्टृ)
६७.	तित्तीस	(त्रयस्त्रिंशत्) ज० ४।९८	×
६८.	तिरिक्खजोणियअसण्णिआउय	(तिर्यग्योनिकासंज्ञ्यायुष्)	(तिर्यग्योनिकासंज्ञ्यायुष्क)
६९.	तिरियाउय	(तिर्यगायुष्)	(तिर्यगायुष्क)
७०.	दलयित्ता	(दत्वा)	(दत्त्वा)
७१.	दाऊण	(दत्वा)	(दत्त्वा)
७२.	दुट्ठु	(दुष्टु)	(दुष्ठु)
७३.	दुरभि	(दुरभि)	(दुर्)
७४.	दुहट्ट	(दुधाट्ट)	(दुर्घट्ट)
७५.	देवअसण्णिआउय	(देवासंज्ञ्यायुष्)	(देवासंज्ञ्यायुष्क)
७६.	पंचसतर	पञ्जसप्तति	पञ्चसप्तति
७७.	पच्चोसक्किता	प्रत्यवष्कष्क्य	प्रत्यवष्वष्क्य
७८.	पडिसेहित्तए	प्रतिषेध्दुभ्	प्रतिषेद्धुम्
७९.	पम्ह	(पद्म) २५१	(पद्म) ४।२५१
८०.		परिणित्वा	परिणिव्वा
८१.		परियाण	√परियाण
८२.		परिवय	√परिवय
८३.		परिहा	√परिहा
८४.	पल्हायणिज्ज	(प्रह्लदनीय)	(प्रह्लादनीय)
८५.		पिट्ठीय	पिट्ठि
८६.		पुक्खलाई	पुक्खलावई
८७.	पुप्फपडलग	(षुष्पपटलक)	(पुष्पपटलक)
८८.		पुस्वरत्त	पुव्वरत्त
८९.	पूइय	पूर्जित	पूजित
९०.	पेहुणमिंजिया	'पेहुण' मञ्जिका	पेहुणमज्जिका
९१.	पोट्ठवई	प्रौष्ठपदी	प्रोष्ठपदी
९२.	पोट्ठवती	प्रौष्ठपदी	प्रोष्ठपदी
९३.	भंत	प १३।१ से ३१	प १३।१ से १३,२१ से ३१
९४.	भणित	प १।४८।४७	प० १।४८।४१
९५.	भत्तिचित्त	ज० ३।३९; ५।५९	ज० ३।३,९,५।५८
९६.	भवोववायगति	(भवोवपघातगति)	(भवोवपपातगति)
९७.	भासग	प ३।१।२,………१०८	प ३।१।२,१०८
९८.	भूमिचवेउ	ज ५।७	ज ५।५७
९९.	मंडलवता	मंडलवतप (मंडलवप्र)	[illegible]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१००.	माणवग	(माणवक)	(मानवक)
१०१.	मालवंतपरियाय	(माल्यवत्पर्याय)	(माल्यवत्पर्याय)
१०२.	मेहुणसण्णा	मैथुन संज्ञा	मैथुन संज्ञा
१०३.	रयण (वासा)	(रत्नवर्षा)	(रत्नवर्षा)
१०४.	रयणिय	(रत्निक)	(रत्निक)
१०५.	रिसह	(वृषभ)	(वृषभ)
१०६.	लोम	(लोमन)	(लोमन्)
१०७.		वरगंधधर	वरगंधधर
१०८.	वरदामतित्थाधिपति	(वरदामतीर्थधिपति)	(वरदामतीर्थाधिपति)
१०९.		वालिघाण	वालिधाण
११०.	वालुंक	कपिथ्य	कपित्थ
१११.	संवत्त	(संवृत्त)	(संवर्त)
११२.		सगोत	सगोत्त
११३.		सत्तणउत्ति	सत्तणउति
११४.		सम्माणियदोहद	सम्माणियदोहल
११५.		सय	√सय
११६.	सिलिंध	(सिलीन्ध्र)	(सिलीन्ध्र)
११७.	सुदुल्लह	(सुदर्लभ)	(सुदुर्लभ)
११८.		स्यपुच्छ	सुयपुच्छ
११९.		सुसमससमा	सुसमसुसमा
१२०.			अट्टरूसग (अटरूषक) प १।३७।४
१२१.			एरावण (ऐरावत) प १।३७।४
१२२.	कुहण	×	प १।४८।५०
१२३.		णल (नड) प० १।४१।१	×
१२४			पोवलइ (दे०) प १।४८।३
१२५.			वेणु (वेणु) प १।४८।४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org